(महर्षि कृष्णेरेनशायनरताम अवा उप

সপ্তকাতঃ

মূল ও বঙ্গামুবাদ সহ জীনাথো মিশ্র কর্তৃক সংগৃহাত ও

কলিকাভা বড়বাজার হইতে তৎকর্ত্বক প্রকাশিত।



শ্ৰীযুক্ত নীলকান্ত তৰ্কবাগীশ কৰ্ত্তক অমুবাদিত।

কলিকাতা।

২৫ নং গঙ্গাধর বাবুর লেন চীপ্সাইড প্রেদে বি, এচ, ব্যানার্জী এও ∢কাং ঘারা মুদ্রিত।

১২৯০ সাল

राधाशकीया केंग्रहा कीरहा खनली राम ॥ >

সাধারণের নিমিত্ত ইহার মূল্য ৬, ছয় টাক। ও রাজ। মহারাজা মহোদয়পণের নিমিত্ত ১২ বার টা

ा डाममिट्री मुख्या छ यह ६ दक्तिन में महा

শুদ্ধিপত্র।

স্পূ দি	শুদি	সৃষ্ঠ।	কলম	পংক্তি	অণ্ডদ্ধি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	কণম	প ংক্তি
7 18	च्यञ्	٤	• • •	৯	 देवङ्ग्र	বৈদ্গ্য	•9	•••	00
গ্ৰন্থ	প্রত্যুত	২	•••	7₽	ভাগব	७ वन	૭૧	২	ડેર
वेया	বিষ্য	ર		२२	मृक्षत्री	मक्षत्री	•9	Þ.	20
ভ দহি	ত দ্রহি	p b	• • •	8	• •क	গুলুফ	•9	>	3 6
गृष	ग् या	>>		>>	किकिनी, धग्न, जूब,	ছৰ্কা,			
প্রত্যুক্ত	প্রত্যুত	\$8.	•••	٥٤	কিঙ্কিণী, ধর, ভুঞ্জ,	দ্ৰবি1	•9		> ¢
কামৰ পূৰ্ণা	কামনা পূৰ্ণ	30	•••	20	সমূজ্ঞ	শমু জ্জ্ল	•9	•••	₹•
শা বিভূত	আ বিভূতি	79	•••	₹8	७ यः	এষ	અ	•••	24
:ক\ন্ত	কেব্যিভ	9 6	***	o	নমোক্ত	নমোহস্ত	40	۰ ۶	9
राजा	নায়া	>%	• • •	ર	জগত্তরং	জগত্রহং	9F-	ء	æ
७ क्य	ত শ্ৰুম	১৬	•••	Œ	মুপৈপতি	মুলৈভি	co	•••	>>
শ্ৰ ভাক	প্রত্যুক	>७	•••	24	मृ ष्टे1	ष्ट्र १	8 0	•••	>•
<u> </u>	পুত্ৰো	> 9	• • •	*	মধ	ম্থ	8 9	۰ ۶	. 8
<u>্</u> ব্ৰ	পুতো	5 9 -	٠	9	দিভোমিত	দিতোহমিত	8 •	ء	
় ≉•ত্রণ	তৃষ্ণাতৃরা	۶ ۹	•••	>७	ত ্ৰশ্মঃ	영화되	8 >		z
मृ व	চুচুখ	۶5	•••	• •	লন্ধণ:	লক্ষণাঃ	8 👁	•••	20
[]	. ह रूक्ष	24	•••	۷,۶	ষথা	मथ ।	8-9	•••	34
াচূৰ	. প্রচুর	૨ ¢	•••	૨૭	গডক প1	্ লকণ্য	88	•••	8 ,
প্ররা	লেয়া	90	•••	9	প্রাভ্য	জীভা	88	•••	Œ
2 1	मृष्टे ।	٥,১	•••	a	মধোজপান্	্ময়েশজ্পান্	8 &	•••	> @
সূত্ৰণ	नप्र ब्द	• ৭	•••	. B O	नका	नक्।	8 (۶	, 9

				(4	·).				
অশুছি	छ•िक्	পৃষ্ঠা	কলম	পুংস্থি	অশুদ্	* ভূমি	পৃষ্ঠা	কল্ম	ग्: ि
শৃক্ষিত	মৃ লিছ্ ত	t la	>	>>	হ,্ৰি ন্ত া	ফ ুবি ত্ব া	48	•••	•
খোরানি	খোরগণি	8 %	•••	•	ত ভং	ভভ:	¢ a	•••	9
म् क	त्र्क	8 %	• • •	~	উচ্ছীয়ভাং	উ व्हि य खाः	aa	,	23
म नग	মণ্ডল	8 🌣	•••	22	यमा	यम्य	e c	২	•
নালা	ग १ मा	8 🕸	२	b	বোড়ৰ	ষোড়শ	49	•••	>
য† স্ব	या उ	8 9	•••	٥,	নৃপা ল নে	নূপাক্ষণে	45	• • •	۵
শক্ত	ল কা	8 9	•••	2	তেৰ	তেষ্	æ5		25
মঞ্জ শ	মঞ্জস1	8 9	۰ ۶	. 3	প্রাণভ্য	প্রণত্যু	45		4,5
ভূতোষ	ভূভোষ	8 9	۶	•	म्यावा	म्याजी	a a		. 39
বৃক্ত	যুক্ত	89	>	٣	র	3 1	49	• • •	₹७
ত্ৰি	িছ্ৰঃ	89	₹	۶۰	ধেক্ষ ত্তি	ষেক্ষ্যতি	49	ર	Í
উৎপৎসে	উৎপৎস্থে	8 9	3	, ১৩	ক†ক্ষেশ্ব	ক†জ্জগ	۹۵		. ২৩
ভাগ	ভাগ্	86	٠ ۶	2	চাৰ্যাত্ব	চার্ঘাত্ত্ব	d a	٠,	. 28
বোগা	বোগাৎ	86	•••	Œ	রুষা	रूष ।	80		>>
যান্তাং	যাণ্ড ্যাং	€8		2,	নাশ্বয়	নাশ্বর	62	• •	>*
यमाद	यम् य९	₹8	•••	٩	ভ্যকে	ভ্যক্ষো	65	• •	> •
দ্য স্থা	न्य ख	85	• • •	>	য স্তোষাৰ্থ	সন্তো ষাৰ্থ	<i>9</i> 2		>0
ब्राटमटेन	রামেটণ	£8	३	•	রাশাভাদর	রামাত্যুদয়	6 2.		*
माज	नरा ज	¢5	•••	٩	ভজাদৃষ্টা	ভতাদৃষ্ট ।	७ २		8
শর চন্দ্র	मंत्र इक स	۵۶	•••	b *	ভামুচু:	ভাষ্ঠঃ	% 2		ર ક્
গুদ্দৰ্শনা	खकर्मन!	¢ >	\$	e (t	ব্ৰুচি	ত্রাহি	60	s) #	34
चरः প্র	অন্তঃপুর	ده	=	د ۲۵	मनथ	শপ	% 2	••	२ २१
ৰক্ষণো	বক্ষণো	42	;	१ >०	धब्र •	स्त्रः	45	•••	22
ब्रहा रड	ভাগতে	42	•••	4	কিল ৰেড	বিশংখত	40		२ ५२
म्णाधि	মূপাধি	(ર	•••	20	গৃহীষ্ট	গৃহীৰ	₩8		38
চিন্দ বি	চিন্মাত্র	٥×	•••	20	মিত্যকঃ	মিত্যুক্ত:	₩8	***	ડર
ভূমি	ত্বরি	¢ø.	•••	, ,	ভ কা মহে	जका गट्ह	90	•••	2 50
বাৰা	জাম্বা	4.0	•••	8	কোন্ত্ৰ	কৌজুভা	**	•••	ર ૨

						,					
						অত্তি	শুদ	পৃষ্ঠা	কলম	ત્ર ્દિ	ş
						চিরাৎ	र्हित्रा ९	98	•		. •
						ডক্ষা সি	দ্ৰ ক্ষ সি	98	>	:	> >
						ষদ্যক্তৰ	य मय छ व	9¢	•••	4	Ł
					•	নাহয়	ৰাহ্ য	3 f	•••	*	•
						কুটুৰ	कृष्रेष	9 @		•	2
	ক্জর *	৬৮			39	ख९	ৰঙ	40	•••		8
জ্জর ীয়ন্ডা	হীয় ন্ত।	৬৮			36	উচুঃ	<u> च</u> ्रहः	99	•••		•
ı	इ म्ट ङ	৬৮		২	2	বাদীত।	বাদিভা	99	•••		24
ह म्टब्ब हेन्ड	হ্য ে ড চিৎ	৬৮	•••	` \$	4	কৃৰ্ম	কৃশ্ব	ዓ ৮	•••		>
	স্বরূপং	৬৮		2.	৮	रुटेनाव	स्ट्रेमा व	45	•••		7
হরপং নূর্ধ গা	य शार सृध् र	<i>ج</i> و			৬	ভূবি	ভূবি	«۴			٦
শ্র স আয়ু	ত্যায়ু	90			•	নাল্পৈব	नाटेग्रव	αf	•••		>0
म ञ्	মস্	95			٥	हेख् ख्र	ইত্যুক্ত্ৰ।	₽•			b -
শবু দগরং	নগর নগর	43	•••		•	য়ানস:	মানসঃ	b -5			٠
ৰুত্য	मृ ञ्	95	• • •		\$	মধ্	मध्	b -2.			>0
रूर संयु	मा श्	93		٤	৩	সংপৃ ষ্ঠ	সংপৃষ্ট	4		ર	9
<u>दबारजीशाः</u>	ব্রোগে বাঃ	95	. • •	2	8	পূরা	প্রা	P-0	•••		9
বিশিষ্ঠাদি	বিষ্টাদি	95	•••	Ł	24	সুষাপ	হুষাপ	P-0	•••		8
रुक् न ३	স্পন	92			•	সংস্কৃত্তে	সংস্কৃতে	80	•••		8
প্যান	পুমান্	42	• • •		Œ	তাৰ্দা	खान्। मा	p-8			5
বুদাদিভো	বুদ্ধাবদিভো	42		2	8	यम् उपमु	यम्यम् य	F8	•••		8
इः दर्श देशः	ङ्ः ८थो दे घः	42		2	٩	ভবে	७ टवः	p-8	•••		*
लक्ष्	লস্মণং	93	•••		>5	শর্প	ন্মর্থন	b-8	•••		>8
শশ্বিত	শশি ন্ত	90	•••		૭	যদ্য	थनय	re	•••		8
•						-					

অগুদ্ধি	ভঙ্জি	পৃষ্ঠা	কলম	পুংক্তি	অভ্ৰদ্ধি				
তে হলে;হন্য	ভে হৰ্যোন্য	₽9 ∙	•••	26	ख्ममा				
কুলম	কুলম্	4	×	8	क ग्र _् ः				
स ्टकऋगः	সুজে কণং	64	٠ ٦	۶.	নম্পা	•,			
त्रम	ब्रम्	66	•••	>>	স†ড1	দীতা	> · c	ર	a
ভোহমি শম্	ডো হনিশম্	44	•••	28	यज	य द्व) o o		40
তামাং	ভা ৰাং	42	•••	& .	नम्ध	नगैः .	. >	2	>
व लि ट्:	বাদহং	दच	•••	۶•	কিমভ	কিমেভ	٠٠	٤.	- > }
শতায়াং	শ্তারাং	44		30	মূনি	মূনি	١٠٩		'
কর নোহমব ং	ক রনো হভ ব	१७०	•••	>>	ভ বিষং	ভবিষ্যং	>• 9	ર	e
७ व ारक द्र	তথাহকর	90	२	۶۰	কামযূক্	ক†মসূক্	509	3	5 R.
ত্বামৃক্তে	ভামুক্তো	27	•••	7	রামবন	ৱাম ভবন	٠٠. خەد		ે ે ર
হ্ বসৰ	হ্ বসন্	27	•••	৬	मामि	ঋষি	5°b		> (
লক্ষণেন	লন্ম ণেন	ネ マ	• • •	8	म रर्थे}	ल्य यि	5•b	2	3
ইন্ডো:	শক্রে1:	0	•••	Œ	পূন:	લ્ નક	55 9		4
র্ভোডা।	ভীত্য ।	7 C	•	2	₹ *	क	>>° ···		હ
বারা	প্রাপ্তঃ	2.6	•••	w	रेक मी	हेक् मो	>>>	ર	3
চক্র ভূ ল্চ	চুক্ত্ৰু শুশ্চ	२७	২	>	পূরং	পুরং	>>>		ت
ইত্যুক,ুা	ই ত্যুক্ত1	26	ء	۲	কুৰ্য্য সভ্যং	কুৰ্যামসভাং	225		ъ
স্বাত্ৰৰী	ন্বাব্ৰী	24	۶	>•	যদ্য	यनय	>> ···		5+
ष्ट ह्रे । श्रि	ৰ্ টোহসি	96	•••	•	कार्ष्यः	কাৰ্য্যং	>>8		8
ভো	ভোঃ	つり	•••	>4	ন নূভাং	নানৃতং	228 ···		3 5 .
মৃক্তকণ্ঠা	মুক্ত কণ্ঠা	22	•••	>	মোক্ষদে	Çमाकारम्	55¢		> ,
र्म का	ল ক্ৰ	. 5 0.0	•••	>2	मृ क	দৃক্	>5¢		2
প্ৰভূ:	প্রভূ:	200	•••	>5	রা জ প	রাজোপ	35¢		2
∌ :	न् यः	>.>		2	श्चनद्रः	त्रा, नहः	۶۶		54
কোট্য-	কোটয়ো	5.2		υ,	.:	۵,	>2.		
,									

অন্ত দ্ধ	ভূদি	পৃষ্ঠা	কলম	প ংক্তি	অত্তি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	译明	¥	পংক্তি
মকতধ্য:	মকৰাষঃ	5 28	•••	২	কিম	কিম্	202	-		ર
क ग्र ू	≄গ্:	> > 8	•••	ે	কাৰ্যয়া	ক (জ্বন্ত্র)	>8 .	***		3 5
কেশা	्क श) 	•	>	मर्डाकः		>8.		ર	¥
ন্থ ী কু	হুতীক্ন:	> 2 ¢	Times.	20	বদ্ধা	বদ্ধ।	28.	*******	2	b
जहें :	अक ृः	১ २७		9	চারচক	5 135%	282	,		*
माख		३२ १		ર	गत्थ	সংখ্যে	282	•		•
আগন্ত্য	ব: নকম্বা ১২৪ ২ কিম কিম ১০০ ক্লামু ১২৪ ৯ কাজ্যা কাজ্যা ১৪ ক্লামু ১২৪ ৯ বিদ্ধান্ধ ১৪ ক্লামু ১২৭ ক্লামু ১২৭ ক্লামু ১২৭ ক্লামু ১২৭ ক্লামু ১২০ ক্লামু ১২০ ক্লামু ১২০ ক্লামু ১২০ কলামু ১২০ কলামু ১২০ কলামু ১২০ কলামু ১৯৯ কলামু ১৯৯		>=							
সং ধৈশ্চ	সং বৈশ্ চ	254	*****	5	মুহাকা	मृतय का	>8 >	•••		9
गार्कः	শাৰ্দ্ণ	ンミン		9	क्रमिख	क्रमञ्जी	>82			٥.
ভ ুবা	ङ्गा	7.20		٩	কামিণীকে	কামিনীকে	>8₹			3.
वृक्षिटेक छरेनः	वृक्षिटेक्ख देनः	200	3	Œ	म क्षं	मर्ख	582		ર	•
क्ष ्ठा रक ।	ऋष्ठावश	200	··· ą	3 5	मञ्चा	মহ্ধা	582	-	*	53
नाई	म्यर्ह	>°5	man unite	8	কুলেহমৃৎ	কু লেহ ভূৎ	>8≥	* 1441	2	72
বিভূ ষিত ঃ	বিভূষিভ:	५ ७२	•	5	সঃ	স	580			>
ভভাষিত:	<i>মু</i> ভাষিত:	>७२		>	কুতাভিখ ং	কুজাতিখ্য ং	288			b-
ৰন্থ্যে	বক্তে	>00	-	2	বৃদ্ধিমান	বুজিমান্	>88			>>
বৃদ্ধিন	ৰুদ্দিনা	>00	•••	b -	ভার্য্যা	ভাষ্যা	288	*****	2 .	>
সভেক্পা	मः(क्रा	>-08	***	ب د	হত্য	হত্ব।	588		ર	>>
बनार	यम्य ९	200		•	ভূ গ	মুগ	>8 €			8
ভন্ন:	ভ ন্ শঃ	204		\$	मूजम न्	मू म् बसन्	>84			>•
প্ রু	ઋ્વ	300	****	ર	চতৃদ্দিক	इ ज् र्किक्	>8¢			>6
হফু ভিভোগ	হস্ ডিভো	1200	Annual property of the Contract of the Contrac	¢	न् वस्थाः	श नकाब	>84			24
য়ন	বেৰ	505		4	নখভি	নশ্ভি	>8%			7 8
ভবেদ্য থা	ভবেদ্যথা	200		b	বাক্যভোশূণ্ৰ	ৰাক্যভোহশূ ণুম	>8%		ર	8
স ইমভারা ং	শন্মতা না	८ ५७७		۶•	পুরা	পুর।	589			4
হিতোহমনিশং	ৰিজোহহমনি শং	100		۵	repie	চেন্যৎ	>89			b
भ ्राध्य			_	>>	ল া	্ৰুত্ত া	38 9			>•
কিন্তো ৰ	কি ৰে ংত	704		>>	रजामाप्ति	२ जानगि	>8 9			>

শভ িদ্ধ	ভিদ্ধি	পृष्ठं।	कलभ	পংক্তি	অশুদ্ধি .	^{্শুদ্ধি}	পৃষ্ঠা	क ल ग	পংক্তি
गको	গভো	>8 9	\$	•	ऋ ट ल	ऋृ्टल	১৬৩		a
नवारि	সম্বাদে	584	*	>	মিতীৰ্ঘত	্ মিতীযাঁতে		ę.	>
ভক্তামুবাম্পী	ভক্তামুকব্দী	द8८ वि		৬	উরস্থলং	উরঃস্থূলং	200	⇒.	8
ক কূ ং	কর্ত্	£8¢		Ĥ	কুক্ষিনা ড্যো	কুমিনাডে	11200	٤	<i>১৬</i>
গভা ৰে	২ভাবে	282		۶.	यमन्त्रिः	य দ স্থিন্	>७8		•
र का	বদ্ধ	£82		>8	অপীষ্য বয়সং	অপীভ্যবয়দং	263		> 0
চিন্তা	চিন্তা	> (°		ä	বুধ্যা	বুদ্ধ্যা	5% @		>
^{भू} रक	ভুজা	< % > % >		> 0	পূ ং (ञ्च	शृ ং छ	5 ७ ₹		.so
পুর	পুর	> @ >		>0	4	٩١	>% ?		5
গ্যতি	ছাতিং	> @ &		> •	মদ্ব্ধ্যা	মদ্বুদ্ধা প	১৬৭		•
उ ष्ट्रे ।	७९ पृष्ट्री	> @ 2		22	তাক্তা	ভাকু	<i>≈</i> ⊌∠		2
ভি ষ্ঠেত ঃ	তি ষ্ঠে তি	> 0 >	\$	•	ا اهد اه	পম্প	37°		۶
কোশমানাং	কোশমানাং	540		ь	नामा	নামা	5 43		•
मना रम	भ ञ्चा टल	>(%)		23	ह रु	ভ েগ	293		ь
শু হু।	জ্ঞাত্ত্বা	8 20 6		•	তদমূত	° দছু ত	DFC		53
इक् (का	উদ্বাক্য	300		\$	নিঃপতাৰ	ৰি প্ৰ পন্	&f		3
ত্রবং	এবং	> 6 %		4	মিত্রাযু লা	মিআগ্রুনি।	5 94		ь
वभूक्षिष्ठ्र ।	ৰ পু দ্ ষ ু 1	>৫৬		>>	अ टेश्	র ৈদ্যব	599	3	. %
বাহ ন্	বাহান্	১৫৬	٥.	b -	যর্তকাং	য ভন্ম াং	>96		2,
ভূবি	ভুবি	F D <		> ₹	द्रशृमक्मन	রঘু ন কন ঃ	4F C	ą	ь
গণান্	পণান্	P D C	ş	₹.	ত চ্ছুমা	ত কু হা	af :		:
ভ ৰাস্ত	ভ ্ৰা ভূছ	১৬০		૭	অযধ্যেত্র	অযেশধ্যেত	af c'		۸
বেন্তিকৌ	বেষ্টিভৌ	১৬৽		क	পূন	পুন	>6.45		æ
यम्	यमय	5.60	5 ,	2	ত্বা	ধৃত্বা	242		>>
পুরা	পুরা	১৬১		•	ন্ম গ্রীয়স্তাতি	ন্ম গ্ৰী বস্থান্তি	742	ર	> 0
নাপ্ ভাৱক	শাপস্থান্তঞ্জ	\ % \		•	मभूमृग्कः:	नभू त्यू 🖝 :	>46		•
ভুৰি।	ভূঁজা ১	৬১		٩	বালীন	বালিন	2P.5		•
ই ভাক্তো	े हेक्रा रक। ३	ঙ ং		٩	পতসয়ৎ	পতঞ্বৎ	22,		b.

অণ্ডব্ধি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	, কংলম		পৃংক্তি ,	অ শুদ্ধি	শু,দ্ধি	পৃষ্ঠা	কলম	Б	ং। জু	
वृक्षाम्य (स्त	युशामाटनो	` :b-२			3 2	मि श्चर्यः	সিদ্ধাৰ্থং	262		>	\$	
বু ৰ)ৰ (জ্য বা লী নং	वाणिनः	568		ş	•	মদ্ধ্যা	तृ ष्ठा।	222		>	20	
ভত্বা	ভূ ত্ব 1	562		\$	٩	য লস্থার	ঘলকার	>>>		₹,	28	
ধনুরালয়া	ধনু রালস্ব্য	১৮২		ə	۾	অভি ষ্ট	অভীষ্ট	246		> :	२ १-৯	
ব লা	ব ক্ষ ঃ	> कर		ą	>>	পুম	পুন	' ५৯३			•	
হৰ্কা	দ ृर् य ।	2₽×		٥	25	ब्हू इप्रा	জুহুর1	220		>	ર	
লক	লক্ষ্য	১ ৮२		¢.	>0	माथ1	ल्यश	520		₹	8	
র †জথ শ্ম	রাজধর্ম	:60			•	यमामि	यमय मि	223		>	4	
দেখিবা	দেখিবা	240			٥٥	প্রকাভাসং	প্রভাজতং	०द८		>	>>	
অন্য (মি	আনয়†মি }					নিশ্চেত্তং	নিম্ভেতুং	386		>	78	
মুহু ভার্যাদাদি মু	হুঠাজীদযদি (240		٥	٦	হঃ খা তা	হঃথাৰ্ত্তা	७ दर			•	
	^ ক পিত্ব ংৎ	2F-8		5	ે છ	अ क ानार	প*51 দ্যৎ	<i>७५</i> ८			22	
কতিত্বাৎ	• চ্ছু জু	>₽8			\$	নিৰ্মলগ্ৰামঃ	নিৰ্মালাত্মা	6 c c 3 F			1 53	
ভ দ ুহা	শ্রিরং	> b= 8			<u>ت</u>	মুহাকো	মুদৃযুক্তে।	224			>	
শ্রিয়	প্দমুভ্ৰম্			\$.		मागीयाः	माभी পाः	ンなみ			8	
পদযুত্তমণ্	े चून न नः	Sort			æ	ত চছ ্ত্ৰা	ভচ্ছ খ	ンンみ		5	<u> </u>)
রুগুনন্দ ন ং	গিক্ত	े जिंद			>8	যুথপানাং	য ুখপানা ং	724			5 €	2
শিক্ত		200			ъ.	ন্ গৃপতে:	বঘুপতেঃ	なない			۵	
	ৰহস্বস্থাং দ যদ্যুক্তং	>pp			a	ान	यान्	ななべ		2	ર	
য দ্রাক্ত ং _>*	मुरिशा	े कं क			4	वन्म छः	नम् खर	₹० ●			>,	
भूटे थ यूथ ेट न र्व १ ग टे तः				•	20	হ্নুমটে 1	হৰুমভো	> 0 •			۵	
·	স্তার হা) p -p-			>•	कन्क	কনক	૨ • ;	>		٩	
ন্তাঃরয়া	ভাতৃপ্ত	266			44	অজিনস্থ	অ জিনাহ	রে ২০১	•		۲	2
লা হুম্পূত্ৰ মঞ্জন	मक्षद्रन्	****			٩	জাম্বানাৰ	জাপুৰা ল	†म २०२			2.	
সঞ্জন্ মেঘ শস্তর	মেঘাভ্যন্তর		•		۶۰	বায় পুডেশ	বায়,পুং	ন্ত্ৰা ২০১			t	
ভক্তাশ	ভক্তার				22	*	नव,	२ ० २			2.	``
५,७५ १	म्यथ।	: <i>ح</i> د			> 8	ষুবরাদং	যুবরাজ					
विष्ट ६	বা চেৎ	:ac	,		ર, 8	বাস্ববন্ত ং	জ্ স্বুবস্ত	१ २०४			Ą	
• • •												

				(H-O)				
অশুভি	56	পৃষ্ঠা	ক লম	পংক্তি	্অশুদ্ধি	' শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	本門 和	পংক্তি
नः श्कः	সং <u>ষ</u> ুক্তং	₹••		50	क् बारवः	ৰু পাৰে	२১৫		•
পৃষ্ণবাঃ	পুৰুবা:	₹ *	ર	¢	सटर्ज	#रख{	१ ३६	Ę	b
কণক	केनक	૨ •8		5*	ऋष्ड	র ঢ়ত্ত্ব	२ऽ৫	*	>•
व्य विनका	যৱনিকা	2.00		۲	গেশীত্ব	পশিস্থ	१५७	ર	۶z
द्रायावः ,	নামার	२०७		2	স্থামাগড	ষ্থাসত	236		>>
দ্ধপিন	ক্সপিণ	२०७		2•	ब्रट्डन	ब्रास्तु न	25%	ع,	•
यम्	यम्य	२ • १		8	कूष्ट्रेव	কুট ু স্ব	२১७	2	>•
তপ্স	তপদঃ	२०१		•	বিনিভ্'কং	বিনিশ্ম ক্ত	२১१		50
ब ण्टळा हे १	द्रष्ट्र्दाहेर	209	ş	ર	পুৰণবে	श्रूनर्दवी	ጽ አ br		8
ক প্লং	कण्णः	40,€		>	मः	न	3>2		ù
র যুক্তমের	রঘৃতমেয়	२०৮	2	4	যানসা	সানস	2 5%		> 9
য়দি	यिन	२०५		•	জারবাংস্ত	काम् वाःख	२३२	*	8
इर्दाश्वरखा टक	হুৰোধন্বন্তেন	ভ ২১•		\$	জাহ্বা	वाष्त्र	2 2 p		9
গৃহীতা শঃ	গ্ ীতা: সং			\$5	পুর্বাৎ	श् कार	220		*
মহাচলম	মহাচলম্	43 5		ą	काय , वाबीद्या	नर्सिशायि			
ভূঃপার	হস্পায়	₹>>		e	काच वाबी।	রোদর্গরিষা মি	२२,		b-
ভ্ৰমাত	ভ্ৰমতা	355		۵	চিত্রেন	हित्बन	३ २०		*
ভক্ষো	ভক্যো	255		Ÿ	কাৰ্য্যৰ্থ	कार्यार्थ	२२०	·Ð	**
বাাহারগন্তঃ	ব্যাহরন্তঃ	252		9	শ্বতঃ	শ্বত	२ २०	R	br.
ग्रह्म	ৰ স্ত	२५०		2	কিণামাহং	কিপামাছ:	१२५		•
রব ণং	রাবণং	4 2 &		9 ·	রাম	রামং	२२२		8
नव रित	ज्ञवादम	250		>\$	ৰিচাৰ্যং	विठार्या	१११		>•
तांत्रिगी	দায়িনী	२५०		>%	श्र्या न्	হৰুমান্	૨૨ ૨		સ
वानदः	वानदाः	₹58		۵	७ ₩:	运动]:	२२७		ť
न्द्रकाम थ व	लू शामकन	:₹58		*	হতুৰা	रुया	२२७		6
সমূস্ত্ৰ:	मभू दुव:	२ऽ€		ર	হতুসারাহ	হৃত্যানাহ	२२७		> 2
ৰুধৰ 1	বুদ্ধা	२५६		•	(का	ভো:	२ २8		2
क्रांपादमाञ्डः	ভাদাস্থাতঃ						•		

শুজ ভূমি পূঠা কলম পৃংক্তি আভূমি ভূমি পূঠা কলম সিদার্থং সিদার্থং ২২৪ ৭ কেম কেন ২৪১ কলাভূপং ভালাভূপং ২২৪ ১১ মস্ত মাস্ত ২৪১ শুলৈংড শুলৈত ২২৪ এ ১ বালিবং বালিবং ২৪১	9 9 2 > 2 4
ভলাত্ণ ভলাত্শং ২২৪ ১১ মন্ত মান্ত ২৪১	e 2
ে ব্যক্তিক সংক্রিভঃ ১৪১	e. 4
मृदेकःख मृदेकख २२८ 🗗 🤉 वाश्यर राज्यर	
	> 0
হত্যা ওং ভত্মতঃ ২২৫ ৫ ভবাসুধে ৯৪৩	
দ্বরনয ভ্রান্য ২২৫ — ১২ স্নেদেশি স্নোদশি ২৪৪	٤
ভৰিষ্যতি ভৰিষ্যতি ২২৬ ১০ তুৰ্বখোহৈ তুৰ্ঘাংছাহৈ ২৪৫	> . 8
স্মীনো সংলীনো ২০৮ ১ বিভীষ্ণ স্মী বিভীষ্ণ ভশ্মী ২৪৭	8
্ৰফীভ ৰেফিড ২২৮ ১৩ উৎপ্লুভা জলবো-	
নহম মহম্ উৎপ্লুভ্য কলধৌ ২৪৬	¢
मुक्की मृक्कें। २२४ ১७-३ मत्ज्ञटम मन्त्रटम २८९	•
प्रको। प्रकेश २२b @ b मौढ़ा मीडार २8b	> >
	> 4
লাকং ৰাক্যং ২০৯ ১৩ নিজ্প নিজ্মু ৪৯	b
ংদ বশ্ব ২৩০ ৩ কপি কপিম্ ২৪৯	70
ন্ধোপেতা সুধোপেতা ২৩° ৯ চপটে চপেটে ২৪৯	22
ৰ্বাক্যদণ্ডকা ব্যাদ্যণকা ২৩২ ১১ কপি কপি ২৪৯	22
ঞেসয়ামাস প্রেষয়ামাস ২০২ ১১ যুখানতীব সুমানতীব ২৫০	2
শীরুৰং পীযুষং ২৩-৩ >> মার্গনাথ নার্গনার্থং ২৫০	2 8
मुद् <mark>ठी मुद्रे</mark> २०० ৫ वमक वमका २८२	¢
সাজ্যতি সংহতি ২৩৩ ১৪ রপ্যগমং রপ্যাগমং ২৫২	22
	e
ভূনঃ পুনঃ ২৩৬ ১২ বদজেন যদভোন ২৫৩	æ
হন্মছোমডো হন্মস্তমণো ২৩৮ এ ১ রক্ষিতাং রক্ষিতাং ২৫০	२ २
ক্রৌধৈঃ ক্রৌবৈঃ ২৩৮ ··· ঐ ২ চিস্তান্ত্রাফ চিস্তান্ত্রাজ ২৫০ ···	2 50
	2 39
পদাস্কং পদাস্কং >৪০ ১ ১ গছামে গছামে গছামে গছামে	\$
	২ &

অভ দি	(4)	961	क 🕶 म	পংক্তি	অভিদ	, গুদ্ধি	পৃষ্ঠা	कम्ब	সংখি
ুষ্ রং	छ्ड १९	₹ (6 क		9	ইতৃজ্1	हेक्। हु।	29•	•••	8
নাভূত র	ন্যভূত্তৰ	2 (10	• • •	ù	मृष्टे!	ज़ है 1	۶9۰	• • •	8
যাপ্সমেটে	য। স্থানতে	ab:	• • •	ú	ইত্যুক্তো প	ইভূঃজেন্†প	२१२		>
আদেশক্ষণ	আদেশকরুৰ	२०२	•••	₹.8	বিক্ষাক্তে:	বিখ্যাকে;	> 9 to		8
বিভোক:	বিশেক্ষঃ	२७०	•••	b -	७४८४	ভঙ্গুরে	२१७ .	•••	>
তাৰক্ৰত:	ভাবদ্ ক্ত ং	२७०	••	₹ 8	তত্মাত্রং	তশাৎ তুং	২ ৭ ৪		২ ১:
বিমোকদে	বি যোক্ যদে	<i>₹ % •</i>	,	2 (t	শ ব ধ্ব	শৰু 1	÷ 98		> >
গতে	গতে।	₹७•	;	à 4	বভীষণ ভাজি	যু ম্ বিভীষণ-ভ াজিযু	ম্ ২ ৭ ৫	•••	8
অনার্যেণ	व्यन्।र्या त	২৬>	ર	. •	হক	₩ ক	२,१८	•••	2 0
ধেশহন্ত	(वर्ङ्ग	2.65	•••	æ	চ্ছকে।	क्टू दक:	₹ 9 ¢	•••	a
त्भदम्ब	ভেদেন	२७১	•••	50	ভূক:	ভুক্তং	२१७		54
ল্রাডা	ভাত্ৰা	ર છ ા	•••	¢	ভোক্ত	ভোক্তা	> 9 %		د د
শুনোভোষঃ	পৃ ণো ভ োষ	360		b	অবিচার্যের	অবিচাথ্যের	2 9 %	:	> 58
বপাণীয়াং শ্চ	ৰপা ণীয়াং ক	રહ્ય		٩	ा वन्।मा	ভাগ বদ্য দা	299	:	• •
পুক্ষ	श्रुक्यः	200		ર રૂ	পৃতাত্মা	পূভাসা	29 6	•••	5
সন্ধৃতি	সদ্ ভক্তি	२७৫	•••	ę ¢	मृतकाटना र्नेड	मूक् का देवाः	₹.95	•••	\$
্ৰাগাখং	যোগাৰ্য:	ર ૭ (२		তরুংক্ষোৎপাট	্ ভক্তংশ্চোৎপাট	J = 92		>
প্রমিড়া জং	ভ্নিত্যুক্।				জন্ম হৈ ক্ষ	জ্মুব্রেজেস।	२४ १	17-	ৰ ৭
হীভে!	প্রীতো ∫	२७७	***	4	তচ্ছ ুখা	उन्हुं द !	2 b-2		53
भटिकास्त्र निर्वद	। भट्ठे म्यस्य नि (अम्यः	२.७७	>	>	মূৰ্ কায়	ষসুযু জোর	२४-२		?.
ভাৰদ্ৰালঃ	ভাবদ্রাজ্য ং	२७७	3	۹ ۹	नश्रृ	यम्	१५२		ś 8
ॱ इष्ट्रं वृ	ক্ষু বু	२७७	>	. 35	थर्ट#	यटे काः	२५-२		· (¢
পরিষজা	পরি খ জ্ঞা	2 96	३	5 2 5	শক্তি	শক্তি:	२४२		ર 🤏
मू थ यः	. मूबाब ः	269	• • •	ર	युटक	यू एक	२४७	•••	>
यू ब टे প इ	. यृष्टेनः	૨૭ ३	• • •	ર	মহাসতং	মহাসত্বং	२४०		خ
मवीद	শ ৱবীৎ	२७१	•••	7	হরেন্ডনো	कृदत्र च टनाः॥ २॥	२৮७	:	? b -
प र्या	मरू टर १	२७३	• • • •	Ó	विकः	विकृश	3 6-8	• • •	ڼ
নিপাড্যকাৰ	<u>ৰিপাভ্যভাম্</u>	502	• • • •	ર ૨		ब ही जूका मः	े ५ ह	•••	.#

					J•)				
ষ্ণ শুদ্ধি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা,	কলম্.	পং ক্তি	40 E	9 .8	लुका	কল্ম 📍	12° (35-
बर्श् भणा	ब्र व † ग ाट्ख	२५-८	•••	b	মূভা বিভাগ	ম্ঘাবভায়	٠٠٠	• • •	હ
ৰাখুলেশ	वाग्र्रवरशन	ર જે હ	• • •	٩	ম্ফিডেঃ তুন	ষ্ডিছ ৩: পুন	৩৽৬	¥.	•
বা গ্রিম ত	বাগ্নিমং	२৮৮		4	বুদ্ধা	বৃদ্ধ।	90%		د ژ .
পষ্যো	अ न्दर्यो	₹66	• • •	6	বিস্তর	বিস্তৱ	400		> &
9 5 .	₩3€ .	2 b-j-	•••	50	বিষ্কৃষী	विष्ठ्धीः .	• 4	۶	•
<u>বৈক্ষিন(য়</u> ম্	যোজনায়তম্	5 P-2		৬	কহিয়াণেন	কৰিয়াছিলে	न ७०৮		2
হনুমা-বকা	হতুম্ব-বদ্ধা	5 75 a		ર ડ્ર	সজ্দ	কুজ#	00F	•••	١.
স সং	774	275	• • •	2	व् यटेश ः	যুণবৈপ:	004	٠ ع	ર
পদ্ম	পদম্	875	•••	8	প্রেশাভ	(श्रयाड	0°2	•••	ے د
भवा टम	সম্বাদে	२२%		, ,	বিবিশুক্তক্ত	বিবিশু জ'ত য	म ् ७० ह	3.	٠.
					প্রহর্ষিতাঃ	প্ৰহৰ্ষিত্যং	055		¢
মূৰ্ প্তৰ্ ং	ভূবুপ্ত ার্থং	32.0		(পরিষাস্থ্যন্	পরিসা স্থ য়ন্	9:5		હ
HTES CO.	HT TOS THE	5 2º18	•••	•	্ৰ ণ গু	च् षु	७५२	• •	8
বাবনরান	বানরান্	5 Z 9	•••	5 22	কো ণী-কচিন্	কেণী কচিৎ	6	>	۶ :
বি খাসাকি	বিশ্বসাক্ষি	عود _ك		>	মিশ্বমারাচ	নিধনায়চ	૭ 5૨		١:
द क् रम	র ক্ষ ণে	रुष्ट		æ	বণৈঃ সুষীদ্ৰগৈ:	বালে:-সুশীঘ্	रेग ०: ७	• • •	æ
ख्व ्य (व	গুরুক্ত।ৰ	5 25 Pa	• • •	>>	८य१कः	(याकृः	3 1.8		.
রামন্তং	ৱ ামন্ত '	522	•••	٥.	। নি শচকামা থ	নিশ্চক্রণমাথ	9:8		٩
শেব:	८०४वइ	1007	***	8	ंश्वाचा त्राट्याकरम	পশ্চানার। মোক	ादम ७५५		4
মার।	শারাং	۵ ۰۶		> &	অন্তুপ্ত	অস্ত্র শস্ত্র	678	5	`* (
দেশিত্র 🗅	সৌমিজিং	• 00₹	•••	Œ	ভোষদঃ	(जीतमः	9 5¢	•••	5
যু ণপা:	यं श ना १६	900	•	•	ঋাত্য	আছুরং	9: @	٠ ٦	v
डे ब्र	हैं व	000	• • •	15	রযুক্তমম্	র্ভুত্মম্	2:0	۶	3
সোচত:	লোচনঃ	008		ь	मचर्ड(का	সম্বর্ <u>ত</u> সম্বর্ত্ত	9	۶	3
শত্ৰং	শক্ত্ৰ	40,8		२ 8	ৰ্যক্ত	ৰু কি	924	•••	- د
যু ক্তো ং	বুধ্যে ভাং	ပ ှာရွ		۶ ۵۵	স্মীপজে	্ ন্মীপত্থে।	७১৮		3
मञ्जीर्घकानः	সুদীর্ঘ কালং	3 • 9		ર ફુક	गःश्रद ः	स् द (क्व)	102b	۶	,
মূহৰ্ভ	মুত্যু ত	್ರ 8		•	বাহ্ডাং	বাহ্ডাাং	926	,,, ર	9

অশুদ্ধি	9 [4	পৃষ্ঠা		ক ল ম	পংতি	অচুদ্ধি	ভা দ্ধি	5		
काजनामानश	জ। বছাল	ামালং ৩১৯			٦	ह्य क		পৃষ্ঠা	李明 和	श ः पि
ক াৰ্মকং	কাৰ্মুক	<i>دره</i> ۶			^ર		ट्रिक	დ8 •	W-14 - ,	ર ૭
ভাষানপন্ন	ভাবাপন্ন	જીર ે			અહ	11071	মাত্যাঃ	484		
विकासवी	বিষ্ণুদে	के ७३०				নি ৰ্যান্ত	নিৰ্যান্ত	•\$ •	>	১২
নিব র মৃত্	নিবারয়					स्राचित्रः	জা য়বস্তং	◆94	•	>
•			• •	. २	4	ততো লক্ষ	गगमामान्य देवरा	हीः नाम	কীৰ্ত্তয়ন	ı
(শাগাস্থনা ভম্ক)	যোগাদাঝুনা-ড	०१० छि	٠	. २	•	1	ত প্রীতো ভরভ			
टेन्डब	टेम्हब	• ২৪	••	•	ь	1		॰ ८व्यनार	4010 11 B	רע ון
ञ्गामय	স্তু দিয়	. •> ২ 8			2	मयुक्तः	সং মৃতঃ	289		ኔ
চিভাাং	feete) s C	•••			গুরুণা	'শুরুণা	-89	***	٠
স ৰ্ক্মকো	সৰ্ব্যক্ত				b	ড ৰ্	जा का	-89		٩
হ ৰ্ষ	हर्ष		• •		>•	পাণিয়ধা	পাৰিয়খা	◆9 }-		٠
গুজামানো		૭ ૨.૯	• •	. >	9	নিন†দেশ্চ	निन्। टेम न्ह	480		, 7
	পুজ্যমানে		•	- ર	> .	हब्र देश	Бब्र टवर्	000		ર
ध्यम् श मग्र।	হৰ্ম দ্গদ	য়ো ৩১৭	••	۰ ۲	•	र्न्छिम	ৰ্ভিসি	000	<u> a</u>	23
ত্ত্ৰৱং	ই 'ছ শক্তহ	45 > 9			٩	ক্ত	শত্ৰু	005	•	8
শবির্চাং	নিবিকার্চ	११ ७२४		×	5	গিবেশে	গ গিবেশ	9 (1)	٠.	
ভহতো	নিছতো	995	•		%	ন্ম ক্তি	ন্ম ডিক		ঐ	9
नश्रः	रक्र	995		>	8			e10		> 0
3	রত্ত্ব	৩৩১		>	•	শতা	সীতা	810	Ġ	¢
নি	ভূবি	৩৩১				ভুংক্য	ভুংক	* 69	È	5
শূলকল	খিল			•,	ь	শক্ত-ধৰ্ষিতো	শত্ৰ-ধৰিতঃ	969		>
তিবিশ্ব	প্রতিবিশ্ব	৩৩ ২	*		2	সংগ্হ	সংগ্ৰহ		9	ь
রামং	স্থা ভাবস্ব বর্গভং	9.00			2	≨ \$1	তৃষ্ণ1	<i>৩</i> ৬০		>>
₹5 %		993		*	b	মধুপকার্থ	মধুপর্কার্য্য 🔻	99 5		20
	শ্র চচ জ্র	ಅತಿ		\$	e ,	न(क)	म ং(४)	৩৬১		
গৰান্	ভগৰান্	200	***		•	ব্ৰাহ্মণঃ		৩৬১		b-
য়ানসং	ছিমানস্থং	D. 6	-		b	অসংফুচিত	অসঙ্চিত	***		¢
জমানং	লজামানাং	009		\$. 1	নভীপ্সাসি	3. 6			59
नेन:	म निन ः	೨೦ನ		২	- 1	শূর্পনথা		৩৬৪	(১৬
গ্ৰাং	ভূভানাং	∞ 8 •	-		1	•		৩৬৪	्रहे	>>
	4, - 4 44 4				b	হ্মদিখ্যিতে:	হৃদি স্থিতো	200		6

শশু দ্ধি	শুদ্ধি	र्युष्टे।	कलगं	পংক্তি	অত:জ	3 (পৃষ্ঠা	কলম	পংক্তি
পরিষ ল ্য	পরিছন্ত্য	3 69	\$	११	खगी	প্রতী	ويون		ь
বাস্ব	বাপ	৩৬৮		¢ .	এ यः	এষ	०त७	2	•
≖ र्	मृ ग्	966		4	বৃদ্ধি	বৃদ্ধি	० २५		a
ॐ वू	ज् ष्	994		>2	শ্বকত্ত	(স্ব্ৰ ,	০৯ ১		; o
হুন্ত্ৰ	ভা ক ৃ 1	~	À	>	२ इस	२१म क	८८०	ঐ	ď
কা ল থঞ্	কাল ধঞ্জ	200		১৭	কৃষি	হপ্যকৃষি	८६७	(a)	৬
দৰ্কে ক্ৰথন্ম	দ ৰ্কে ছব্ৰবন্ধে	200	ঐ	\$	অ ন	ন্থান	७৯२		>
মেতু দিয়মঃ	মেত্রাদ্যমঃ	•95		2	स्रा	N	8 6 0		8
পুৰ ন্ত ্যভূত	পিবস্তা মৃত	695	(a)	ર	রণবন	ब्र भ्य	७৯८		;0
বৃহ্যক	ত্ত্বছক্ত	995	A	Œ	र्यमीनश	यानी मः	8 60	B	Œ
ময়যন্তা	ময়স্যা	৩৭২	(de	>%	ट्रिन् य	ঠেম্মম	Dec	ঐ	>
দেশেহজ	দেশেখ্যুক	৩৭৩	ক্র	৮	হৰ্ষ	२ व	250	(4)	>2
স হা য্যা ৰ্থে	সাহা য্যাৰ্থে	998	A	>	क्ष दर्श	इश्र त्य ।	8CC		>>
रे ष्ट्रारङ ्।	ইত্যুক্তে।	•98	ል	2	हे जु ।	ইত্যুক্ত্ব।	& C &	ঐ	8
ক্রিয়া নেষ	किश्रादन्य	•98	ঠ	ર	ভার্য্যা	ভাৰ্য্যা	ಅದಲ	À	24
क्शक्रद्र:	क्र भणाथातः	•9		>2	গ্ৰে	গৃহে	るかみ		\$≥.
যোদকাম:	যোদ্কামঃ	395	ঐ	ર	ভর	ভরং	924	Ú	>
পর†ত্মান	পরাত্মানং	« P &		>	नान्त्रीत्क	বান্সীক্ষে	460	ক্র	8
ভ্ৰম	ভন্	७१ व	ঠ	•	ক্রক:	क्क	800		Œ
ক্ <u>ব</u> ীত		>>	•	Œ	ब्राब्द ः	রাখব:	8 0 2		œ
	<i>গ্ৰে</i> ছ	•৮২		ર	নিধিখ্যাসন †ন	ख निषिधाननानः	हत्र ४०५		78
ে					निटका	निएकी	8 - 2	(a)	9
हेळ्डा इ	हेष्ट्राक:	७৮२	4	٩	भृक्टि दब	न्क रवब्र	36 %	Ø	> 9
ধী সো	थीरमा	७৮८	, હો	2	সাভা	সভা	8 • >	à	20
ত্য নাভ্য না	ভ্যমা	0F9	4	2	ज्रावश्र क	प्र् रवशक	8 • 2		6
टेचा डी	ধ্যেতৃ	9	d	>9	বা ন্মী কিং	বাগ্মীকি	8 • 2	(de)	٠
ন্নাভাং	স্তাং	66 6	de la	>•	গেরার	গেৰিবং	8 • 2	W	>
সদৃশং	, সংদৃশং	02·	ঠ	' >	8°२ द्वा	র পাতার ২৩ (শাকের পর	যে শে	াক জাছে

অন্তরি	ণ্ডব্দি	পৃষ্ঠা	কলম্	পংক্তি	অভূতি	ofs	781	কল্ম	পংক্তি
মম্যশ্ৰম	ম্মাশ্ৰম	800		>>	সমরিত	সমশ্বিভ	8 2 8		>\$
क्राटेडव	क्टा टेजुर	8 • ৫		2	বিজি	বিশ্বি	8 2 4		•
অধার	আধার	8 • %	2	>0	বনঃ	মহাবলঃ	8 >. (1		•
পরিশুদ্ধান্তবেশ	প্রিভদ্ধান্তরো	8 9 9		ર	আ পতোহশ্বি	মহাতেজ 🧎	8 ² (t		> 0
সংতি স্ম ্	সং ষ্ §•ম্	809	(a)	Œ	আগতোহস্থি	মহাভুজং।∫	0 4		•
আৰু বৈয়	আশহৈ	8.A		2	গমনা বিঞ্চি	গমলে বিদ্ধি	8 % (6		22
পুকৃত্ত:	शू क्षः	006		>	••	٠5	8 2 (£		>
মবাশাসি	মবাপ্যাসি	408		ર	٥٥	७२	8 ২ ৫	2,	9
মেবাধিগম	८ मदाधिशमा	8 . 4.	É	> /	•ર	••	8 < 4	ঐ	۴
পুষ্প	父军	8 . 1		> 0	••	⊘ 8	8 2 (¢	(a)	>>
পুষরবভ্যা	পুষরাবতী	6 • 8		24	শ্ৰংস্বা	শ্ৰ'ৰ	824		5
ছরিম	হরিম্	8>•		٣	म। भृष	মা মৃষা	8 ? (t	ঐ	28
ল ক্ ণম্	লক্ষণম্	825.	<u>ئ</u>	ર	ৰা ন	বানর	8 २ ७		*
বি সজ্জি ভঃ	रिमर्किः	8.5.5	<u>(a)</u>	ь	র্যন্থ থি	সন্থ্যি	820		7.5
সদাত্ত্বী	স সত্বে	१८३	٨	ર	व्यनस्त	অনন্তর	8 २ %		2 %
কার্যান্তবে	কাৰ্য্যান্তবে	8 5 C		>	म ्क्कक्	मटक २ क व	9 2 %	Ā	৯
ভূ (ক্ত্ৰু	ভূ কৈ ৷	8>%		٩	जी	A	82%	ক্র	> 0
रे ऋू।	ই হছ়	8 > %		54	•8	• (8214	ર	> 0
मिक्काम	সিদ্ধার	8 > 5		>9	00	99	826		৬
অরাজুধো	অবাল্ম ুখো	8 > 49	ঐ	٠	26	৩৭	७२७		> •
माञ्	ষভ্বা ন্থ	859		. 2	• 9	৩৮	8 2 \&	4	२
্মেটব মেটব	टेमटब	8 7 F		>	ক্যবিঃ ॥	কান্তি॥ ৩৯	# 8₹%	١	•
মারেশ	র†ল্মো	826			৩৮	৩৯	৪ ২৬	ঠ	>•
সূহা	সছ	a ¢ 8	- ঐ	•	শস্ত্রানি শ'স্ত	ানি শস্ত্রাণি শাস্ত্র	tf4 829		>
পতিতস্তাং	পতিতাস্তাঃ	852		& .	জগাুজ্ত বি	ব্যুছো }			
দন্তিতাম্	দ ক্তিনাম	8 २ २	فا	•	জগাঃ ক্ত	বিগ্ৰেহা }	82 9	ı	
শু ৰু	শত্ৰুত্বা	822.	ট	20	বিশ্ৰো :	বিণ্ডাছা	8.29		•.
নিয় পূণং	নিৰ্যাণং	820		•	ده	83.	829		. 8

				(u	(مار				
অন্তৰি	ভঙ্জি	गृ ष्ठे1	কল্ম	শংক্তি	মণ্ড ি	of s	পৃষ্ঠা	কলম	পং ক্তি
প্র জনবাসীর।	পুর বাসীজ নের)	8२ १	2	>%	ভৰ†ব্বি	ভবান্ধি	8 403		*
কিব্লগী	কি র্শ্ব	829	١	>p	নাথ	না খং	802		>>
৩ ৮	৬৭	8-७२		58	স্থরপম	শ্বর শন	€°8		>8
ঞ্ তীনাং সাৰ্ছং	- শ্ৰতীনাং দাৰ্দ্ধং	8२१		Œ	মশ্বত	- यम्र छः	8.00	\$	¢
স্বিস্তত	সু বি শু ,ভ	826	(a)	٤5	प न्द	वन्द	40.8		ė
उ १	তে	823	ৰ্	٩	म रेख्य य	শ'জৈব*চ	880		>0
=6 क म दर्श	শ্চক্রশ্বরৌ	800		>>	অন্ধকার	অন্ধার নাশকরিতে	88•		> 4
শুদ্ধাৰ	স্থা ব	8.07	4	2	বিভূতিন	বিভূতিদং	88•	હો	8
সাস্তানিকান্যাস্থ	সান্তান্তিকান্ যাৰ	8 8 3 5		25	ভাপশ	ভাপস	8 8 •	٨	>2
দেবর্ঘি	দেবর্ধি	8-07		>>	खगर	ন্তথা	885		ર
কলে র	कटनवद्ग	8.05	ک	29	ধৰ্মা	ধৰ্ম	885		2
मण्डाः	সংজাঃ	8-७२		ડર	छ्ड ू श्याम	চ হ_পুয়াদ্	885	ৰ্জ	¢
সান্তনিকা	স ∶ ন্ত নি ক	8 ७ २		5 2	রামান্তিকচি	রামাৎ কিঞ্চি	882	ঐ	>0
• 9	8 9	826		•	শ্রেষ	শ্রেষ্ঠ	888	ক্র	× 9
স্প ৃষ্ট্যা	च्ला <u>च्ल</u> ा	8.02	ર્	ર	প্রভং জ্বন	थ छ छ्वन	88%	,,	8
ते छ है	র <i>হ</i> ণ	8 25	Á	2	যাতপ্ৰভ	জনসুত ভত্ত্ব যোগিজ	ন কধিত-	—ইহার প	রিবর্তে
- ভানন্তয়	হানান্ত হ	8 ७२	ক্র	3 5	"খুনীন্দ্রগণ	কর্তৃক উত্তমরূপে ব্য	াখ্যাত পর	ম তত্ত্ব প	ানতনয়
নয়কস্থাস্য	ন†য়কস্ত	ee 8		>	হৰুমান্ যাঁহ	ার সম্পুথে ব্যক্ত করিব	তছেন"—	इ हेटव	
সংস্থাত মে	সংস্তৃতং মে	800	ঠ	8	बूका।	বুৰী।	884	(A)	8
লম্ভার	নমস্ক †র	8 👁 8	•	>40	क्षमञ	ধর্মস্থ	880		•
সৰ্ব্বাস্ত্রের	দৰ্ক শাংক্তর	828		2 O	তীনিষ্টিতঃ	নিষ্ঠিতঃ	88 (- 6
সৌমিত্র	সৌমিত্রি	800	ক্র	b	তীকায়	্ ভিডিকার	880	À	>9
ভাঙ্ ত	সূত্ৰালয় ভ	3 જ હ	ঠ্ৰ	78	চিত্ৰ কূচ	চিত্ৰ কুট	88%	اف	> @
वीर्वाः	ৰীৰ্যাং	809	٤	•	বশিষ্টাদি	, तिक्छे। नि	88%	Ġ	>6
र्जः	ङगर	8.0%	র্	ه ۶	নেকাণ্ডা	নে ক্যপ্ৰ	889		•
्क ्निटनाग्र श	(क भटन ग्रः	8.09	&	7 6	গমন্ত	शंमन्	889		>0
নিরবৎ	নিয়বদ্য	8-01-		> b-	হহাক্ত†ম্ভ	ছদযুক্ত†ন্	889	Ġ	¢
कानकीर	ज् रानकी	१० ७	4	>{	নিনবস্তা	নিবসতা	889	Ú	b

	ভঙ্জি	পৃষ্ঠ।	ক্ৰম পংক্তি	পণ্ডৰি -	ভাৰি	পৃষ্ঠা	কল্ম '	পংক্তি
শশ্ব		ξυ.		প্রবয়া	खनग्राम्	886	ર	•
শৃষ্ঠিত:	मृधिह ७:	889	5 2.	প্রনরা স্থাব	হুগ্রীবঃ	488	&	\$5
ভৰৱাক্যং	ভশ্বক্যং	889	€ >8	ব্ থাক চাছিং	(প্রস্থ্য চাছি	88	ঠ	> 40
গৃ ধং	गृ खर	488	8	স্থগ্রীব ক্রেক্স চাহিং রামাষ্ট	রামাষ্ট ক	862		
চারিশীমং	চারিণীম	88	>0	রামর	বানর	>20		
রাঘৰমং	बा यवम्	884	>>	নীতা ও লক্ষ ণের	লক্ষণের	79,		> (

শুদ্ধিপত্ত সমাপ্ত।

স্ট্রিগত।

প্ৰক্ৰণ ৷		शृष्ट्या ।	প্রকরণ।		श्रुष्ठे। ।
উমামহেশ্বর সাধার্	2	á	জটায়ুৰ সন্থিত কথা ও বাম লক্ষ্যাৰ ক্ৰোপা		- .
व्य ेत¹म ञ ्जल	૭	>5	ক্থন	:00	3 00 9
রামাবভারো ২পভি	> 5	>4	শ্প্ৰথার নাসিকা ও কৰ্ণচ্ছদ	> 0 b	285
৵ ষ;শৃ ৻জ্ াপা খ ান	১৬	22	রাবণ মারীচ সম্বাদ	288	239
রামাদির উংপাত্তি বিখ্যামত্তের সহিত্ত ব্যম্মত্তের ব্নগ্রন ও ভারকাবধ	25 3 0	65 5.6	কাৰ্য্গাক্ষেষণে রামের গমন সীভার কটুবচনে লক্ষ্মণের তেথা হইতে গামন ভিক্ষুক বেশে রাধ্বণের অগ্গমন ও তেংকভ্রি		
সংস্কা মারীচ সুবাত্র নিধন বিবরণ ছাই- লার শাপামোচন ও তংক্ত লীরাম-	•		সীভা হরণ সীতার অদর্শনে রামের বিলাপ ও জাটায়ু	8 b−	213
চক্ষের স্থান	ఇ	9స	মুখে সীতাহরণের কণা প্রবণ ও		
ভং ধতুর্ভজ ও রামাদির বিবাহ পর ভরামের পরাজ্ র ৩৪ রা মাদির অ যোধণ	8 0	8 &	ভাটিয়ে্ব মৃত্যু কৰম বেধ	> €3 > 90	2 4 5 2 9 4
ाशक्रमा । अभिकास च वा नागित्र जार्याच्या सञ्दर्भ सिव्यम	8 %	₫ 0	শ্বরীর উপা্থান	5 5 18	ひかる
त्रभ भावन सवान	άz	ú 8	শ্বামৃক পর্বতে বানবাদি দর্শন ও জ্ঞীরের সহিত জীবামচলের মৈত্রতা	290	
নশিষ্ঠের সভিত দশরণের ও কৈকেরীর সভিত মস্থ্রার মন্ত্রণা	ય હ	95	শ শু তাল বেধ ও বালি বধ		حقا∓ نـ
			ताम छोत। मन्नाम	- 46	1-8
কৈকেয়ীর সন্থিত দশর্থের কথা ও কৈকেয়ী কর্ত্তক রামের নমগ্রমনে বর প্রার্থিন	رد يا.	ሄ ৮	রাম লক্ষ্মণের ক্রোপেকখন	354C	. 70
াম স্থমিতা স্থাদ। লক্ষণ ও শীভার সহিত তীরামের বন গমন	८४	4 5	স্থাীবেৰ উপেক্ষাদর্শনে রামের ভোগ প্রকাশ ও লক্ষাণের কিছিদ্ধাপেরীতে	••	,
গুহকের সহিত মৈত্রভা।	99	ن ن	গ্ৰন	528	> 0 .
গুহকের বিদায়, ভারসাঞ্জ মুনির চরণ বল্লা করিয়া চিত্রকৃট পর্বত সমীশে বাল্মি-			সীভাৱেষণে বানর গণের গমন ৩ যোগিনী সন্থাদ	₹• 5	مواد د
কীর আগ্রেমে শ্রীরামচক্রের ফাগমন	5-8	८६	বাদনর গণের থেদ ও সম্পাতি দর্শন	۵•۶	250
			সম্পাতির পুর্বারভান্ত	* > 8	اط د د
স্থ্যান্ত্রের অধোধান্য আগমন, দশরবের অন্ন মুনিকত অভিশাপের কপন ও মুপতির			মাগর দ র্শনে বান র গাণের শক্ষ্য	425	>,> \$
মৃত্যু এবং ভরতের আগ্রমন	2 >	५०२	<u> ভকুমানের সাগর লভেম্ম</u>	3,5,5	> 3 .5
ভরতের রামচজ্রতে লইয়া আসিতে বন গমন	200	500	হতুমানের অশোকবনে প্রবেশ সীভাদশন		
त्राय ७ जतरुकत करवाशकणम	なっく	229	এবং তথায় রাবণের দীতাবধে উদেযাগ	> > 9	202
ধ্যমাদির দণ্ডকারণ্যে প্রবেশ ও বিরাধ র্ভান্ত	224	> 2. 2	সীঙা ও হতুমানের কণোপকগন	₹ • ₹	> g •
শর ভঙ্গাতামে গমন সুতীক্ষ এবং অংগজ্য মুমির আতিথ্য গ্রহণানন্তর রামাদির পঞ্চবটীৰ বনে গমন	১২৩	્ર ે ર	পাশবদ্ধ হটর। রাবণ সভার হনুমানের প্রবেশ তৎক্ত পরিচয় প্রদান ও হত্- মান কর্ক লকাদাহ	ર 8 ●	→ 8 %

প্রকরণ।		7011	শ্রকরণ ।	পু	ष्ट्रा ।
শীতার নিকটে বিদায় গছয়৷ আগমন ও ৰামর গণেব মধুবনে প্রবেশ রামাদির মিকটে শীতা দশনের কথা প্রকাশ	5 4 4		ধানণ বধে দেবগণ কর্তৃক গ্রামচন্দ্রের স্তোত্র ভব্তের আক্ষেপ ও রামাভিষেকার্থ ক্ষিসিণের আগমন, মহাদেব, পিতৃগণ ও গঙ্কার্ক- গণের স্তোত্র যথাযোগ। সংকার পূর্বক	.	€હે.€
সমুদ্রীরে শ্রীরামচন্দ্রে শিবির স্থাপন মত্রিগণের স্থিতি রাবণের মন্ত্রেণা বিক্তাবন বাকো ক্রেছ ছইয়া তাহাকে অব্যান্নণ ও বিভীষ্ণের শ্রীরাম নিকটে আল্মন	> (*)	> ((°; > · v y::	অঞ্চল, বিভীষণগদির স্থাধ স্থানে গ্রহন ভ্যোধ্যা নগরে ক্ষমিগণের আগগমন অগস্তা কড়িত বাবণেব পুরুপুরুষের ও রাবণ	000	# A
ি ভীরণের স্থিত মিত্রণা দাগরের মূর্তি- ধারণ করিয়া অগ্গমন ৩৪ তৎকট্তক	Jus	. 5-	কুন্তক ্দির স্কুখান্ত কগন বাশিক্ষ্টীবেড গড়ক্ক্	න ල ං නු∵ ප	بهريد. خارج
শ্রীরগম চন্ত্রের ক্তব নাল বামার কইক সমুদ্রেবন্ধান ও শুক বাবিণ স্থাদ	\$ 5.5	२ ५ ० ३ ५ ०	নাবদ রাবণের কথা পূজাকরথের প্রভান শীতারামের কথা বাতা ও দীতাবর্জন	ভণচ	%b
শংকর অপমান ও আফাণমূর্ভিধারণ, মাল্য- বানের হিত্রচনে বাবনের অংশজা উভয় পজেন্দুজ ওঅভিকার বধ	> 9 ((े क रे	লক্ষা-ক্লাভ শ্রীরামক্তোত্তি শুলুত্ব কতুক লবিণাহাব বধ, শ্রীরামের অথমেধ সহল, কুলাবাত্তীকির কথাপিত্তা	එ ታ 8	5 % d
ংক্ষাণের শক্তিশেল, কালমেমি রাবণস্থাদ স্থান কর্তৃক কলেনেমি বধ, লক্ষণের চৈত্র। কুপুকুল বধ	520 5P0		বাদের নিকটে কুশলবেধ রামায়ণ গান, সীভার স্থিত পুনকার মুনিবরের ভ্থায় আগমন এবং বালাকৈ কভুক বলেক্ষয়ের প্রিচয়	4	
ইপ্ৰিৎ বয়	•00		প্রদান কালের আগ্রমন, ঐবিনের প্রতিক্ত: ৩ লক্ষ্ণ	و ه ع	p f tr
রাব্যাবর গোপনে আছিতি প্রানান বনির্বাণ কর্তৃক যজ্জ ভেঙ্গ ও মন্দোদরীর অপ- মান এবং উভ্যের কথাবাতী। রাম রাবণের যুদ্ধ ও রাবণ বধ	978 90F	৩ ১৩ ৩১১	বজ্জন কুশ লব্ধে বাজ্যপ্রদান, কামরূপী বনেরগণের আম্বিভাব বিভীষণ ও মারুজি বাভীত স্কলের শ্রীবামচ্ছাদির স্থিত গ্যন,	802	8.2%
সমুদ্র তীরে শিবিকারোখণে সীভার আগমন			স্বয় নদীর জলে সকলের কলেবর ভাগে.		
ও সীতার অগ্নি প্রীকা	955	ಶಿಶೀ	পুকরিপ গার্গ, ন্বগণের স্তব	y > v	8-5-5
ন্দ্রা ও ইঞাদি দেবগণের স্তব ও কথায় দেববেশে দশরখের আগমন ইন্দ্রপ্রেতি পুষ্পক রথে আরোহণ করিয়া রণ্মাদির গমন, পথিমধ্যে ভরহাজ, গুহুক	ిల,	∌ ∌ 99	জীরণ্মচজ্রের ক্তব সংক্ষিপ্ত রামারণ রামাউক	5 3 4 888	83% 83% - (64
ও ভরতের নিকটে আগমন বার্তা প্রদান	- ৩৩৮	- e,e, vg	ন্ধায়ণ কৰ	800	50 a

বিজ্ঞাপন ভূমিকা।

ব্রকাওপুরাণান্তর্গত সপ্তকাও জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণ গ্রন্থ অভিপ্রাচীন ও বিবিধ-সতুপদেশ পূর্ণ। ইহা-মনোযোগ পূর্ব্বক পাঠ বা শ্রবণ করিলে, নরপতিগণের রাজনীতি, প্রজাবর্গের রাজভক্তি, যোগপরায়ণ মুমুকু তপান্থবর্গের তপঃপ্রকরণ, আচার্য্যগণের শিষ্যের প্রতি ব্যবহার, শিষ্যগণের গুরুভক্তি নারী-রুন্দের পতিপরায়ণতা-প্রভৃতি শিক্ষা হয়। ইহার স্থমধুর-বচন-বিন্যাদ শ্রবণ করিলে, মুমুর্ব্যক্তির অন্তরে সাহস, 'নদারণ-শোক-সম্ভপ্ত ব্যক্তির হৃদয়ের শান্তি ও ঘোরমহাপাতকগ্রস্তব্যক্তির অভঃ-করণেও হুখ-প্রদায়িনী আশার উদ্রেক হয়। এই স্থগভীর অধ্যাত্মরামায়ণ-সমুদ্রে যে নানাপ্রকার রাজ-নীতি, সমাজনীতি ও ধর্মনীতিরুপ মুক্তাকলাপে পরিপুর্ণ, তাহা আর ভারতবাসীগণের অবিদিত নাই। অধুনা যবন-কর নিমুক্ত ভারত-ভূমি শশাক্ষরেথার আয় প্রতিদিন পরিবর্দ্ধিত হইতেছে। ইহার বিমল কিরণে গৌড়ীয়শাহিত্যসংশার উজ্জ্বল ভাব ধারণকরিয়াছে। অতএব এমন সময়ে যে সমস্ত মানবমওলীরস্থপথ প্রদর্শক, বিশেষতঃ সমস্ত সাংসারিকগণের প্রধান আগ্রোম্পদ ও ভবিষাৎ কবি গণের কল্লতক্ত্রক্রপ অধ্যাল্রামায়ণ গ্রন্থ মহামূল্য পরিচ্ছদ ধারণ করিয়া, মনের আনন্দে অভাভ গ্রন্থাপেকাও অধিকতর স্থ্যধুর ধ্বনিকরতঃ বঙ্গবাদীগণের কর্ণকুহরে স্থা বর্ষণ করিবেন, তাহাতে সন্দেহ কি। বঙ্গদাহিতে রে প্রধান আশ্রয়াম্পাদ মহামান্য শ্রীযুক্ত কালিপ্রসন্ধ সিংহ মহোদয় ও শ্রীযুক্ত বৰ্জ্বমানাধিপতি মহারাজাধিরাজ বাহাছুর স্থানিদ্ধ মহাভারত গ্রন্থের অনুবাদত্তত উদ্যাপন করিয়া যে সমস্ত শিক্ষিত ভূথণ্ডের ধন্যবাদ-রূপ-ফলভোগী হইয়াছেন, তাহা কাহারও অবিদিত নাই। কিন্ত এই তুই মহোদয়ের অনুবাদিত পুস্তকের ন্যায় মদ্মুবাদিত অধ্যাত্মরামায়ণও ষেজন সমাজে আদরণীয় হইবে, এরপ আশা ছ্রাশামাত্র। ইদানীন্তন বিশ্ববিদ্যালয়ে সংক্ত সাহিত্যের আলোচনা দেখিয়া অনেকে অনেক পুরাতন প্রদিদ্ধ মহাকাব্য ও দৃশ্যকাব্যাদি মুদ্রাঙ্কন করিতে যত্নবান্ হইয়াছেন। কিন্তু সহ পদেশের সমষ্ঠিদরূপ অধ্যাত্মরামায়ণের প্রতি কেহুই কটাক্ষপাত করেন নাই। সংস্কৃত ভাষার আলোচনার সহিত এই সময়ে এই গ্রন্থকে মূল ও অবিকল বাঙ্গালা অনুবাদে স্থানোভিত করিতে পারিলে ভারতবাসিগণের অনেক উপকার সংসাধন করা হয়। আমি এই বিবেচনায় আমার ভারতবাসী আতৃগণের সেই উপকার সংসাধনে স্থিরপ্রতিজ্ঞ হইয়া জনসমাজে দণ্ডায়মান হইয়াছি, এইক্ষণ কৃত্রবিদ্য দেশ-হিতৈষী মহাশয়গণ কুপা করিয়। এই অধ্যাত্মরামায়ণের উন্নতি সাধনবিষয়ে কিঞ্ছিৎ কটাক্ষ রাখেন তাহা হইলেই সকল পরিশ্রম সফল হয়।

> ঙং নং রামমোহন মন্ত্রীকেব রীট্। বড়বাজার অধ্যাক্সরামারণ কার্ম্যালর।

গ্রীনাথো মিশ্র।

অধ্যাত্য-রামায়ণম্।

আদিকাণ্ডঃ।



অনুক্রমণিকাধ্যারঃ।

সূত-উবাচ।

কদাচিরারদো যোগী পরাত্রগ্রহবাঞ্যা।
পর্যাটন্ সকলান্ লোকান্ ব্রহ্মলোকমুপাগমৎ॥>॥
তত্র দৃষ্টা মৃত্তিমন্তিশ্ছন্দোভিঃ পরিবেষ্টিতম্।
বালার্কপ্রভয়া সম্যগ্-ভাসয়ন্তঃ সভাগৃহম্॥ ২॥
মার্কভেয়াদিমুনিভিঃ স্তুয়মানং প্রজাপতিম্।

সর্বাত্মগোচরজ্ঞানং সরস্বত্যা সমন্বিত্য ॥ ৩ ॥
চতুমুখিং জগন্নাথং ভক্তাভীকফলপ্রদম্।
প্রাথ্য দণ্ডবদ্ভূমো তুন্টাব মুনিপুঙ্গবং ॥ ৪ ॥

স্ত কহিলেন,—কোন সময়ে ভ্বনহিতৈবী, মহাযোগীল ভগবান্ নারদঋষি, সমস্ত লোক পর্যটনকরতঃ, ব্রহ্মলোক পনন করিলেন (১)। তপার দেখিলেন,—মৃর্ত্তিমান্ বেদ সকলে পরি-বেটিত হইয়া, প্রজাপতি নবোদিতস্থ্যত্ন্য প্রভাষারা সভাগৃহ উদ্ধাষিত করিতেছেন (২)। এবং ব্রহ্মতেজঃসমপ্রভ তপোবীর্য্যন প্রদীপ্তদেহ মাক্রেরাদি মুনিগণ কর্ত্ব, সর্বাত্মগোচর সর্বাত্ত-র্যামী প্রজাপতি ব্রহ্মা, বান্দেবী ভারতীর সহিত স্ত্র্যমান হইতে ছেন (৩)। সেই ভক্তজনাভীপ্তফলপ্রদ, চতুর্থ জগলাথকে, সাষ্টান্ধে দশুবৎ প্রণাম করিয়া, ম্নিপ্রেব নারদ তব করি-লেন (৪)।

সন্তুষ্টন্তং মূনিং প্রাছ স্বয়ন্তু কৈঞিবোভমম্।
কিং প্রস্তু কামস্তুমদি তদ্বদিষ্যামি তে মুনে ॥ ৫ ॥
ইত্যাকর্ণ্য মুনিশ্রেষ্ঠো বাক্যং ব্রহ্মাণমব্রবীৎ।
নারদ উবাচ॥ ৬॥

ষতঃ প্রাতং ময়া সর্বাং পূর্বিমেৰ শুভাশুভম্।
ইদানীমেকমেবাস্তি প্রোতব্যং স্থরসত্তম ॥ ৭ ॥
তদ্রহস্থমপি ক্রহি যদি তেহকুগ্রহো ময়ি॥ ৮ ॥
প্রাপ্তে কলিযুগে ঘোরে নরাঃ পুণ্যবিবর্জিতাঃ।
হুরাচাররতাঃ সর্বের্ব সত্যবার্তাপরাগ্মুখাঃ॥ ৯॥

অনন্তর স্বয়ন্ত্ প্রজাপতি ব্রহ্মা, বৈফবচ্ ভামনি নারদের হুবে পরিতৃত্ব হইয়া কহিলেন, বৎদ ! স্বাভিপ্রায় প্রকাশ কর ; তোমার প্রাথনামুরূপ অভিলবিত সমন্তই অকপটে কহিব (৫)। ইত্যাদি ব্রহ্ম বাক্যাবসানে নারদ স্বাভিপ্রায়ায়ুসারে প্রতৃত্বর প্রদানে প্রবৃত্ত হইয়া, কহিলেন (৬)। হে স্করসত্তম ! পুর্বের দ্বীয়-ম্থ-বিনির্গত শুভাশুভ সমন্ত তম্ববার্তা প্রবণ করিয়াছি, এক্ষণে অপর একটা প্রোতব্য আছে (৭)। তাহা নির্জ্জনে অয়ক্ষণোপ্রকাশপূর্বক ব্যক্ত করিলে, ক্ষতার্থ হই(৮)। ভ্রানক কলিযুগ উপস্থিত হইলে, সমন্ত লোক পুণ্যজনক ধর্মাক্রম্ম, পরাপ্রালে পুর্বক হ্রাচারে রত্ত এবং সত্যবার্তায় পরাম্ব্র্ম, পরাপ্রাদে

অধ্যাত্মরামায়ণম্। .

পরাপবাদনিরতাঃ পরদ্রব্যাভিলাবিশঃ।
পরস্ত্রীসক্তমনসঃ পরহিংদাপরায়ণাঃ॥ >৽ ॥
দেহাত্মদৃষ্টয়ো-মূঢ়া নান্তিকাঃ পশুবুদ্ধয়ঃ।
মাতৃরিভুক্তমেবাঃ স্ত্রীদেবাঃ কামকিররাঃ॥ >> ॥
বিপ্রা-লোভভয়প্রস্তা-বেদবিক্রমজীবিনঃ।
ধনার্ভনার্থমভ্যতিকর্মাণঃ প্রায়ণঃ পরবঞ্চকাঃ॥ >> ॥
তক্ত্যস্থ্রাতিকর্মাণঃ প্রায়ণঃ পরবঞ্চকাঃ।
ক্ষত্রিয়াশ্চ তথা বৈশ্যাঃ সধর্মত্যাগশীলিনঃ॥ >০ ॥
তদ্বচ্ছুদ্রাশ্চ যে কেচিৎ ব্রাহ্মণাচারতৎপরাঃ।
ব্রিয়শ্চ প্রায়ণো ভ্রতী-ভর্ত্রবজ্ঞাননির্ভরাঃ॥ >৪ ॥
শুত্রক্রোহকারিণ্যো-ভবিষ্যন্তি ন সংশয়ঃ।
এতেষাং নক্তবুদ্ধিনাং পরলোক কথং ভবেৎ॥ >৫॥
ইতি চিন্তাকুলং চিন্তং জায়তে মম সন্ততম্।
লঘুপায়েন মেনেষাং পরলোকগতি-র্ভবেৎ॥ >৬ ॥

নিরত, পর দ্রের অভিলাষী, পরস্বীতে আসক্তিত্ত, পরহিংসা পরারণ (৯) (১০)। নিজ দেহকে আত্মা জানিয়া তৎপ্রতিপালনে তৎপর, কর্জনাকর্জনারিচারবিষ্ট, পশুবৃদ্ধি, জনক জননীর প্রতি ভক্তিহীন,প্রত্যুত ক্ষ্টভাবে শুরুজন সন্তাবণকারী, স্ত্রীবশীভ্ত, কামাত্র (১১)। ব্রাহ্মণগণ সদা অসৎপ্রতিপ্রহ প্রভৃতিতে লোলুণ, ভর্ঘবিজ্ঞান, বেদবিক্রয়োপজীবী অর্থাৎ গ্রন্থ বিক্রয় ও অধ্যাপনাকর বেতনাদিয়ারা জীবিকানির্মাহকারী, অর্থকরী বিদ্যাভাগিগর্মের বিমোহিত (১২)। স্বজাতি কর্মত্যাগী এবং মত্যুত্ত পরপ্রভারণাপরায়ণ; ক্ষত্রির ও বৈশ্রগণও স্বর্মান্ত্রাগালীর (১৩)। কজন শৃত্রগণ ব্রাহ্মণাচার তৎপর; স্ত্রীক্ষাতি ক্ষতান্ত জ্বানারিণী, ভর্ভার প্রতি অবজ্ঞাকারিণী (১৪)। ও খণ্ডর প্রভৃতি জ্বন্দনের অনিষ্টকারিণী হইবে, সন্দেহ নাই। এই সমন্ত নই-মতি জনগণের পরকালে মৃক্তির সন্তাবনা কোথার ? (১৫)। এই চিন্তার আমার চিত্ত সক্তর আকৃল হইতেছে। বে সামান্য উপার্ধে উক্ত জনগণের পর্যলোকে গড়ি হয় (১৬)। জাপনি

তমুপায়মুপাথ্যাহি সর্বাং বেত্তি যতো ভবান্। ইত্যুবের্বাক্যমাকর্ণ্য প্রত্যুবাচামুজাসনঃ ॥ ১৭ ॥

ত্রকোবাচ।

শাধু পৃষ্ঠং স্বয়া সাধো বক্ষে তচ্ছুণু সাদরম্।
পুরা ত্রিপুরহন্তারং পার্ববতী ভক্তবৎসলম্ ॥ ১৮ ॥
শ্রীরামতত্ত্বং জিজ্ঞাস্থঃ পপ্রচ্ছ বিনয়ান্বিতা।
প্রোয়ে-গিরিশন্তক্তৈ গৃঢ়ং ব্যাখ্যাতবান্ স্বয়ম্ ॥১৯॥
পুরাণোত্তম-মধ্যাত্মরামায়ণ-মিতি স্মৃতম্।
তৎপার্ববতী জগদ্ধাত্রী পূজ্যিত্বা দিবাদিশম্ ॥ ২০ ॥
আলোচয়ন্তী সানন্দমগ্লা তিন্ঠতি সাম্প্রতম্।
প্রচরিষ্যতি তল্লোকে প্রাণ্যদৃষ্টবশাদ্-যদি ॥ ২১ ॥
তস্থাধ্যয়নমাত্রেণ জনা-যাস্থান্তি সদ্গতিম্।
তাবদিজ্মতে পাপং ব্রহ্মাছ্ত্যাপুরঃসরম্॥ ২২ ॥

সেই উপায় ব্যক্ত করুন, যেহেতু আপনি সর্বজ্ঞ। ঋষির এই বাক্য শ্রবণ করিয়া অধুজাসন ব্রহ্মা প্রত্যুত্তরে প্রসৃত্ত হই লেন (১৭)।

ব্রহ্মা কহিলেন,—হে সাধাে! তুমি অত্যুৎকৃষ্ট প্রশ্ন করিরাছ। আমি ঘণীর প্রশ্নের উত্তর দিতেছি, তুমি সাদরে প্রবণ
করে। প্রাকাশে ত্রিপ্রাপ্রনাশক ভক্তবৎসল (মহাদেবকে)
পার্কাতী (১৮)। বিনয় বচনে শ্রীরামতত্ব কিজ্ঞাসা করিলে, স্বয়ং
গিরিশ প্রিয়ার নিকট (অহ্যাত্মরামায়ণ রূপ) নিগুড় (বিষয়)
ব্যব্যা করিয়াছিলেন(১৯)। ক্রগদাবী পার্কাতী প্রাণপ্রধান সেই
অধ্যাত্ম রামায়ণ দিবানিশি অর্চন ও আলোচনা করতঃ সানন্দছিত্তে অবস্থিতি করিতেছেন। এক্শলে প্রাণিগণের গুভাদ্টবশতঃ
ভায়াই লোকে প্রচারিত হইবে (২০) (২১)। তাহার অধ্যয়নরাত্রেই জনগণ সালতি লাভ করিবে। মাবৎ জগৎসংসারে
অধ্যাত্মরামারণের আহির্ভাব না হইবে, তাবৎ ব্রহ্মহত্যাপ্রভৃতি
মহাপাপের প্রাত্র্ভাব থাকিবে এবং সমন্ত শাস্ত্র পরক্ষর বিষদ-

ষাবজ্জগতি নাধ্যাত্মরামায়ণ-মুদেষ্যতি। ভাবং সর্ব্বাণি শাস্ত্রাণি বিবদন্তে পরস্পরম্ ॥ ২৩॥ যাৰজ্জগতি নাধ্যত্মরাশায়ণ-মুদেষ্যতি। তাবৎ স্বরূপং রামস্থ চুর্কোধং মহতামপি॥ ২৪॥ যাবজ্বগতি নাধ্যাত্মরামারণ-মুদেব্যতি। তাবৎ সর্ব্যপুরাণানি প্রবর্তন্তে মহীতলে॥ ২৫॥ যাবজ্ঞগতি নাধ্যাত্মরামায়ণ-মুদেষ্যতি। তাবৎ কলিমাহোৎদাহঃ সঞ্জিষ্যতি নির্ভয়ঃ ॥২৬॥ चामराजातामाय्यमः कीर्जन अवगानिक्या। ফলং বক্তুং ন শকোমি কাৎস্থেটন মুনিদত্তম ॥২৭॥ তথাপি তদ্য মাহাত্মং বক্ষ্যে কিঞ্চিত্রানঘ। শৃণু চিত্তং সমাধায় শিবেনোক্তং পুরা মম॥ ২৮॥ অধ্যাত্মরামায়ণতঃ শ্লোকার্দ্ধং শ্লোকমেব বা। য়ঃ পঠেন্ডক্তিসংযুক্তঃ স-পাপান্মুচ্যতে ক্ষণাৎ ॥২৯॥ বস্তু প্রত্যহ মধ্যাত্ম রামায়ণ মন অধীঃ। যথাশক্তি পঠেন্দ্রক্ত্যা স জীবন্মুচ্যতে নর: ॥ ৩० ॥

মান হইবে (২২)(৩৩)। যাবৎ জগতে অধ্যাত্যরামায়ণ না উদিত
১ইবে, তাবৎ মহৎ বাক্তিরাও শ্রীরামচন্দ্রের স্বরূপপরিজ্ঞানে
অসমর্থ থাকিবে (২৪)। যতদিন না পৃথিবীতে অধ্যাত্যরামায়ণ
শ্রেকাশিত হইবে, তাবৎ সমস্ত প্রাণ শাস্ত্র অপ্রবর্ত্তিত থাকিবে
(২৫)। যত দিন না মংসাবে অধ্যাত্যরামায়ণ প্রাত্ত্রত হইতেছে,
তাত দিন কলিযুগ মহোৎসাহসহকাবে নির্ভয়চিত্তে বিচরণ
করিবে (২৬)। হে মুনিসন্তম! যদিও আমি অধ্যাত্যরামায়ণের
সংকীর্ত্তন ও প্রবাদিজনিত পুণ্যকল সংস্কৃত্রিপে বর্ণন করিছে
অসমর্থ (২৭)। তথাপি, হে অনম্ব! যাহা আমি পুর্বেষ মহাদেবের
নিকট প্রবণ করিয়াছি, তাহার কিঞ্ছিৎ মাহাত্যা বর্ণন করিছিছি, তৃমি অবহিত চিত্তে প্রবণ কর(২৮)। বে বাক্তি অধ্যাত্যরামারণের একটী স্লোক বা শ্লোকার্দ্ধ ভক্তিস্কুকারে পাঠ করেন,
তিন সমস্ত পাপরাশিকে কণকালমাত্রে ভস্মাৎ করিরা মুক্ত
হইতে পারেন (২৯)। থিনি অন্যাচিত্ত হইয়া ভক্তিপুর্বক প্রতি-

বো ভক্তার্কয়তেহধ্যাত্মরামায়ণ-মতক্রিত:।

দিনে দিনেহশ্বমেধদ্য ফলং তদ্য ভবেমুনে ॥ ০১ ॥

যদৃচ্ছয়াপি যোহধ্যাত্মরামায়ণ মনাদরাহ।

অন্যতঃশৃণ্য়ামার্তাঃ সোহিপি মুচ্যেত পাতকাহ ॥ ০২ ॥

নমস্করোতি যোহধ্যাত্মরামায়ণ মদূরতঃ।

দর্বদেবার্কনফলং দ প্রাপ্রোতি ন সংশয়ঃ ॥ ০০ ॥

লিথিছা পুস্তকেহধ্যাত্মরামায়ণমশেষতঃ।

যো দদ্যাদ্রামভক্তভাস্তদ্য পুণ্যফলং শৃণু ॥ ০৪ ॥

অধীতেয় চ বেদেয় শাস্তেয় ব্যাহ্মতেয় চ।

যহ ফলং ছল্ল ভং লোকে তহফ নং তদ্য সংভবেহ॥ ০৫ ॥

একাদশীদিনেহধ্যাত্মরামায়ণ-মুপোষিতঃ।

যো- রামভক্তঃ দদ্দি ব্যাকরোতি নরোত্মঃ ॥ ০৬ ॥

তদ্য পুণ্যফলং বক্ষ্যে শৃণু বৈষ্ণবদত্তম ।

প্রত্যক্ষরস্ক গায়ত্রীপুরশ্চর্যাফলং লভেহ ॥ ০৭ ॥

निवन यशांभक्ति अधां बातायां भार्र करतन, जिनि की वसूक হইতে পারেন(৩০)। যিনি ভক্তিপূর্ব্বক নিরাশস্ত হটক্রা অধ্যাত্য-রামায়ণ পুস্তক পূজা করেন, তিনি দিন দিন অশ্বনেধজজীয় क्नां के किंद्रिक शादान (७১)। य नद यमुक्का क्रिया जनामरत य কোন ব্যক্তি হইতে অধ্যাত্মরামায়ণ শ্রবণ করেন, তিনি পাত্ত হইতে মুক্ত হয়েন (৩২)। যিনি আবৃরতঃ অধ্যাতারামায়ণকে প্রণাম করেন, তিনি সর্বাদেবের অর্চনকল লাভ করিতে পারেন, তাহার সংশয় নাই (৩৩)। (হে নারদ!) যিনি ক্লংশ্ব অধ্য। আ-রামায়ণ পুস্তক লিথিয়া রামভক্ত জনে প্রদাণ করেন, তাঁহাৰ श्राम्म अवग कत (०८)। निशिन (तम अधामन कतितन तो সমস্ত শাস্ত্র ব্যাথ্যা করিলে, যে ফল হয় আর তৈলোক্যে যে ফল তুর্ল ভ, তাঁহার সেই সমস্ত ফল লাভ হয় (৩৫)। একাদশীদিনে যে রামভক্ত নরোত্তম উপোষিত হইয়া সভামগুলীতে অধ্যাত্ম-রামায়ণ ব্যাণ্যাকরেন (৩৬)। হে বৈষ্ণবেশ্তম নারদ! ভাষার পুণাফল কীর্ত্তন করি শ্রবণ কর। (উক্ত ব্যক্তি) গায়ত্রী পুরশ্চৰ ণের প্রতি অকরের ফল লাভ করেন (৩৭)। জীরামনব্দীদিনে

অধ্যাত্মরামায়ণম্।

উপবাদত্তং কৃষা শ্রীরামনবমীদিনে।
রাজোজাগরিতোহধ্যাত্মরামায়ণ মনস্থীঃ।
যঃ পঠেং শৃণুয়াদাপি তদ্য পুণ্যং বদাম্যহম্॥ ৩৮॥
কৃক্ষেত্রাদিনিখিলপুণ্যতীর্থেদনকশঃ।
আত্মত্ল্যং ধনং সূর্য্যপ্রহণে সর্বতোমুখে॥ ৩৯॥
বিপ্রেভ্যো ব্যাদমুখ্যেভ্যো দক্ত্রা যথ ফল মন্মুতে।
তৎফলং সম্ভবেং তদ্য দত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ॥৪০॥
যো-গায়তে মুদা ধ্যাত্মরামায়ণ মহর্নিশন্।
আজ্ঞাং তদ্য প্রতীক্ষন্তে দেবা ইন্দ্রপরোগ্যা ॥৪১॥
পঠন্ প্রত্যহমধ্যাত্মরামায়ণ মতন্ত্রিতঃ।
যদ্যৎ করোতি তৎকর্ম তত্তৎ কোটীগুণং ভবেং ॥৪২॥
তত্র শ্রীরামহাদয়ং যঃ পঠেৎ স্থদমাহিতঃ।
সব্রহ্মন্থোপ পূতাত্মা ত্রিভিরেব নিনোর্ভবেং॥৪০॥
শ্রীরামহাদয়ং য-স্ত হত্মৎ প্রতিমান্তিকে।
ত্রিঃপঠেৎ প্রত্যহং মৌনী স সর্ব্বেন্সিতভাগ্ভবেং॥৪৪

নিরাহার জাগরিত ও অনক্সচিত্ত হইরা বিনি অধ্যায়রামায়ণ পাঠ বা প্রবণ করেন, তাঁহার পুণাফল বলিতেছি (৩৮)। বারম্বার কৃকক্ষেত্র প্রভৃতি নিথিল পুণাতীর্থ পর্যাটন করিলে বা সর্ম্বগ্রাসচন্ত প্রস্থাগ্রহণকালে বেদব্যাসদম বিপ্রদক্ষকে নিজ বিহবায়্ন্সারে ধন দানকরিলে, যে ফল হর, উক্ত মহাত্মার সেই ফল হয়, ইহার সত্যতাবিদয়ে সংশয় নাই (৩৯) (৪০)। যে জন ক্সইচিত্তে দিবারাত্রি অব্যাত্ম রামায়ণ গান করেন, ইক্র প্রভৃতি দেবগণ তাঁহার আজা প্রতীক্ষাকরেন (৪১)। নিরালক্ষ ব্যক্তি প্রতাহ অধ্যাত্মরামারণ পাঠ করিয়া যে ধর্মকর্ম করেন, তাঁহার দে সমস্তই কোটগুণ হয় (৪২)। যে ব্যক্তি সাবধান হইয়া অধ্যাত্মরামায়ণরের অন্তর্গত প্রীরামন্ত্রদয় পাঠ করেন, তিনি ব্রক্ষম হইলেও, দিবসত্রর মধ্যে প্রত্ত্রহরেন (৪৩)। যে ব্যক্তি মৌনী হইয়া হয়্মৎ প্রতিমানিকটে প্রতিদিন বারত্রয় শ্রীরামন্ত্রদয় পাঠ করেন, তিনি ব্রক্ষীয় ফললাভ করিতে পারেন (৪৪)। যিনি তুলসী

পঠন্ শ্রীরামহৃদয়ং তুলস্যশ্বথেয়ে র্যনি ।
প্রদক্ষিণং প্রক্রবীত ব্রহ্মহত্যা নিবর্ত্তে ॥ ৪৫ ॥
শ্রীরামগীতমাহাত্মং সর্বর্ধ জানাতি শঙ্করঃ ।
তদর্জং গিরিজা বেত্তি তদর্জং বেদ্মহং মুনে ॥ ৪৬ ॥
তত্তে কিঞ্চিং প্রবক্ষ্যামি কৃৎস্রং বক্তুং ন শক্যতে ।
যজ্জ্ঞাত্বা তৎক্ষণালোকশ্চিত্তভিদ্ধিমবাপুয়াৎ ॥ ৪৭ ॥
শ্রীরামগীতা বহু পাপং ন নাশ্রতি নারদ ।
তন্ন পশ্যামহং লোকে মার্গমাণোহিপি সর্ব্বেদা ॥ ৪৮ ॥
রামেণোপনিষ্ দিন্ধুম্মথ্যোহ পাদিতাং পুরা ।
রামলক্ষ্মণযোগীতাং স্থপং পীত্বামরো ভবেহু॥ ৪৯ ॥
যমদ্মিস্ত্তঃ পুর্বর্ধ কার্ত্বীর্য্যধ্বেশয়া ।
ধর্মবির্দ্যামভ্যদিতুং মহেশ্ব্যান্তিকে বস্ম্ ॥ ৫০ ॥
অধীর্মানাং পার্বত্যা রামগীতাং প্রযুক্তঃ ।
ভাত্বা গৃহীত্বা স্থপঠন্ নারায়ণকলামগাহু ॥ ৫১ ॥

বা অখথবৃক্ষ প্রদক্ষিণপূরঃদর শ্রীরামহাদয় আবৃত্তি করেন, তিনি
ব্রহ্মহত্যাপাপ ইইতে নিজ্তি পাইতে পারেন (৪৫)। হে নারদ!
শ্রীরামগীত মাহাত্যা শহর মহাদেব সমস্তই বিদিত আছেন,তদ্দি
গিরিজা জানেন এবং তদদ্ধি আমি জানি(৪৬)। অতএব তোমার
নিকট সমস্ত কীর্ত্তন করিতে অসমর্থ ইইলেও আমি তাহার
কিঞ্চিনাত্র কহিতেছি, যাহা বিদিত ইইলে মুহূর্ত্তমধ্যে শোবের
চিন্ত নির্দ্দেশ ইইতে পারে (৪৭)। হে নারদ! সর্বাদা ব্রহ্মাণ্ডমধ্যে অবেবণ করিয়াও আমি এমন পাপ দেখিতে পাই না,
শ্রীরামগীতা যাহা ধ্বংস করিতে অসমর্থ (৪৮)। পূর্বের শ্রীরাম
সাগর মন্থন করিয়া রামলক্ষণের গীতাক্ষপ যে স্থা উৎপন্ন
করিয়াভিলেন, উক্ত স্থাপানে সমস্ত বেদ অমর ইইয়াছেন(৪৯)।
পূর্বের যমদ্যিতনয় পরস্তরাম কার্ত্রীর্যাবশাভিলায়ী ইইয়া

পূর্ব্বে যমদ গ্রিতনয় পরুপ্তরাম কার্ভিবীর্যাবধাভিদাধী ইইরা ধর্মবিদ্যা অভ্যাসকরিবার নিমিত্ত মহাদেবের নিকট অবস্থিতি করতঃ (৫•)। পার্ব্বভাকর্তৃক অধীয়সান,রামগীতা যতুসহকারে প্রবন, গ্রহণ ও পঠন-পূর্ব্বক নারায়গাংশ শাভকরিয়াছেন (৫১)। ব্রন্মাহত্যাদিপাপানাং নিষ্কৃতিং যদি বাঞ্ছি ।
রামগীতাং মাসমাত্রং পঠিছা মুচ্যতে নরঃ ॥ ৫২ ॥
ফুপ্রতিগ্রহ্রভোজ্যন্তরালাপাদিসম্ভবম্ ।
পাপং সক্ৎকীর্ত্তনেন রামগীতা বিনাশয়েৎ ॥ ৫০ ॥
শালগ্রামশিলাগ্রে চ তুলস্যখ্যসন্ধি ।
যতীনাং পুরত-স্তম্ব-দ্রামগীতাং পঠেতু যঃ ।
স তৎফলমবাপ্নোতি যদ্বাচোহপি ন গোচরম্ ॥ ৫৪॥
রামগীতাং পঠন্ ভক্ত্যা যঃ প্রাদ্ধে ভোজয়েদ্দিজান্ ।
তস্য তে পিতরঃ সর্বেব যান্তি বিক্ষোঃ পরংপদম্ ॥ ৫৫॥
একাদশ্যাং নিরাহারো নিয়তো-দাদশীদিনে ।
স্থিয়াগস্ত্যতরোম্লে রামগীতাং পঠেতু যঃ ।
স-এব রাঘবঃ সাক্ষাৎ সর্বনেবৈশ্চ পূজ্যতে ॥ ৫৬ ॥

বিনা দানং বিনা ধ্যানং বিনা তীর্থাবগাহনম্।
রামগীতাং নরোহধীত্য তদন্তরফলং লভেৎ ॥ ৫৭ ॥
বহুনা কি-মিহোক্তেন শৃণু নারদ তত্ত্তঃ।
শ্রুতিপুরাণেতিহাসাগ্যশতানি চ।
নাইন্তি নাল্লা-মধ্যাত্মরামায়ণকলা-মিপ ॥ ৫৮ ॥
অধ্যাত্মরামচরিতস্য মুনীশ্বরায়
মহাত্ম্য-মেতছদিতং কমলাসনেন।
যঃ শ্রুদ্বা পঠতি বা শৃণুয়াৎ স মর্ত্ত্যঃ
প্রাপ্রোতি বিষ্ণুপদবীং স্থরপূজ্যমানঃ ॥ ৫৯ ॥
ইতি ব্রহ্মাণ্ডপুরাণে উমামহেশ্বরসংবাদে উত্তর্থণ্ডে

এক্ষ্টিতমোহধ্যায়ঃ।

যে নর ব্রহ্মাহত্যাদি নানাবিধু পাশহইতে নিজ্ তি বাঞ্চাকরিবেন তিনি মাসমাত্র রামগীতা আবৃত্তি করিলেই মুক্ত হইতে পারিবেন (৫২)। একৰারমাত্র রামগীতাকীর্ত্তনকারীর নিন্দিত প্রতিগ্রহ, অভোজ্যভোজন, অসং আলাপন প্রভৃতি জনিত পাশ বিনষ্ট হয় (৫৩)। শালগ্রামশীলা, তুলসী, অখথ ব্র্যুক্তির রামগীতা পাঠ করেন বাক্তের সমূথে যে ব্যক্তি রামগীতা পাঠ করেন বাক্তের অতীত ফল লাভ করিতে পারেন (৫৪)। যিনি গাদি সাংবৎসরিক পিতৃশ্রাদ্ধ দিবসে ব্রাহ্মণভোজন সমরে প্রকিক শ্রীরানগীতা পাঠ করেন, তাঁহার সমস্ত পিতৃলোক শর্ম পদ প্রাপ্ত হন (৫৫)। একাদশীদিনে নিরাহার ও দিনে (অর্থাৎ পারণদিবসে) একাগ্রমনে যিনি অগন্ত্যারামগীতা পাঠকরেন, তিনি সাক্ষাৎ রাঘবক্ষরূপ এবং পূজ্য হন (৫৬)। দান, ধ্যান ও তীর্থাবগাহন-ব্যক্তি

মনুষ্য রামগীতা অধ্যয়ন করিলেই অসীম ফল লাভ করিতে পারেন (৫৭)। হে নারদ! এ বিষয়ে ভোমায় আর অধিক কিকহিব; ক্রতি, স্মৃতি, প্রাণ, ইতিহাস ও শতজাগম আবৃত্তিকরিলেও অধ্যাত্মরামাণের এক কলার তুল্য ফল লাভ হয় না (৫৮)। কমলাসন ব্রহ্মা মূনীশ্বর নারদকে যে অধ্যাত্মরামায়ণ-মহাত্ম্য কহিয়াছিলেন, মানবগণ শ্রদ্ধা ও ভক্তি-সহকারে ভাহা পাঠ বা শ্রবণ করিলে দেবগণ কর্ত্বক প্রামান হইয়া বিষ্কুপদ্বী প্রাপ্ত হয়েন (৫৯)।

এই ব্রহ্মাণ্ড প্রাণে উমা ও মহেশবের কণোপ কথনে উত্তর্থণ্ডে একষ্টিতম অধ্যায় উক্ত হইল।

প্রথমোহধাায়ঃ।

खरमार्गाठ।

যাং পৃথ্বীভরবারণায় দিবজৈঃ সংপ্রাথিত শিচনায়ঃ
সংজ্ঞাতঃ পৃথিবীতলে রবিকুলে মায়ামসুষ্যোহব্যয়।
হত্বা রাক্ষণপুস্বং পুনরগাদ্ ব্রহ্মত্বমাদ্যাং ভিরোম্
কীর্ত্তিংপাপহরাংবিধায়জগতাংতংজানকীশংভজে॥১॥

বিখোদ্ভবন্থিতিলয়াদিষু হেছুমেকং
মারাশ্রমং বিগতমায়মচিন্তামৃর্ট্ডিম্।
আনন্দসাক্রমমলং নিজবোধরূপং
দীতাপতিং বিদিততত্ত্বমহং নমামি॥২॥
পঠন্তি যে নিত্যমন্ত্যচেত্দঃ
শৃণুন্তি চাধ্যাত্মকসংজ্ঞিতং শুভম্।
রামায়ণং সর্ব্বপুরানসম্মতং
বিধুতপাপা-হরিমের বান্তি॥৩॥

ব্রহ্মা কহিলেন,—হে নারদ! যিনি চিন্নর, অব্যয় ভূভার হ্রণার্থ স্বর্গণ-কর্তৃক প্রাথিত হইয়া, ভূতলে ভাস্কর কূলে মায়া-মুষ্যভাবে জগৎসংসারের পাশহরা অচলা কীর্ত্তি বিধান করিয়া রাক্ষ্যশ্রেষ্ঠ দশানন বধানস্কর পুনর্কার ব্রহ্মসাযুজ্যপদ প্রাপ্ত হইয়াছেন এরূপ জানকীশ রামচন্দ্রকে ভজনাকরি (১)। যিনি ব্রহ্মাণ্ডের স্পষ্টি, ছিতি, লয়ের মুখ্য কারণ, মায়ার আধার অথচ মায়াবিরহিত, অচিন্তনীয়মূর্ত্তি, আনন্দরসমগ্ন, নির্শাল্ভান-স্বরূপ, নিজবোধরূপ, সমস্ভত্ত্ব বিদিত; সেই সীতাপতিকে প্রণাম করি (২)।

বাঁহারা অন্সচিত হইয়া প্রতিদিন সর্কপ্রাণ সমত অধ্যাত্ম-রামায়ণ পাঠ বা শ্রবণ করেন, তাঁহারা বিধ্তপাপ হইয়া বৈক্ঠ-ভবনে গমন করেন (৩)। যিনি ভববদ্ধন হইতে মুক্তি লাভ অধ্যাত্মরামায়ণমের নিত্যং
পঠেদ্-যদীচ্ছেন্ত্রবন্ধস্ক্তিম্।
গবাং দহস্রায়তকোটিদানজং
ফলং লভেদ্-যঃ শৃণুয়াৎ দ নিত্যম্॥ ৪॥
পুরারিগিরিসস্তৃতা শ্রীরামার্ণবসংজ্ঞিতা।
অধ্যাত্মরামগঙ্গেয়ং পুনাতি ভুবনত্রয়্ম ॥ ৫॥
কৈলাদাত্রে কদাচিদ্রবিশতবিমলে মন্দিরে রক্পীঠে
সংবিষ্টংধ্যাননিষ্ঠংত্রিনয়নমভয়ংদেবিতংদিদ্ধসংঘৈঃ।
দেবী বামাঙ্গসংস্থা গিরিবরতনয়া পার্ববতী ভক্তিন্ত্রা
প্রাহেদংদেবমীশংসকলমলহরংবাক্যমানন্দকন্দম্॥৬॥

পার্ব্বহ্যুবাচ।

নমোহস্ত তে দেব জগদ্বিবাদ সর্বাত্মদৃক্ ত্বং প্রমেশ্বরোহদি।

করিতে বাসনা করিবেন, তিনি প্রতিদিবদ অধ্যাত্মরামারণ পাঠ করিবেন এবং যিনি নিত্য উক্ত রামারণ প্রবণ করেন, তিনি কোটিসহস্রায়ত সবৎসা ধেমুদানের ফল লাভ করেন (৪)। হিমাগরিসম্ভবা ত্রিপথগামিনী ভালীরথীর স্তার কৈলাদশিথর-সম্ভূত শ্রীরাম-সাগর-সঙ্গতা অধ্যাত্মরামারণ গঙ্গা ত্রিভূবন পরিত্র করিতেছেন (৫)। একদা কৈলাসাপ্রে মহাদেবের বামউর-তলবাসিনী ভক্তিনমা গিরিবরতনরা পার্কতী শতস্থ্যভূল্যবিমল মন্দিরে রত্মমর পীঠোপরি উপবিষ্ট ধ্যাননিষ্ঠ সিদ্ধসমূহ সেবিত অভয় ত্রিনয়ন দেবদের মহাদেবকে আনন্দরসপূর্ণ কলুষবিনাশক বাক্যে জিজ্ঞান। করিলেন(৬),—হে দেব জগরিবাস। আপনাকে

পৃচ্ছামি তত্ত্বং পুরুষোত্তমদ্য

সনাতনত্বঞ্চ সনাতনোহদি ॥ १ ॥

গোপ্যং যদত্যন্তমনন্তবাক্যং

বদন্তি ভক্তেরু মহাকুভাবাঃ ।

তদপ্যহোহহং তব দেব ভক্তা।

প্রিয়োহদি মে ত্বং বদ যতু পৃষ্ঠিম্ ॥ ৮ ॥

জ্ঞানং সবিজ্ঞানমধাকুভক্তি

বৈরাগ্যমুক্তঞ্চ মিতং বিভাস্থন্ ।

জানাম্যহং যোষিদ্দি স্বন্ধক্তং

যথা তথা ক্রহি তরন্তি যেন ॥ ৯ ॥

পৃচ্ছামি চান্সচ্ছ পরং রহদ্যং

তদেব চাগ্রে বদ বারিজাক্ষ ।

নমস্বার, আপনি সর্বাত্মদৃক্ ও পরমেশ্বর; আপনাকে পুরুষোত্ত-নের তত্ব ও গনাতনত্ব জিজ্ঞাসা করিতেছি, যেহেতু আপনিও সনাতন (৭)। যদিও শিববাক্য অতিশয় গোপনীয়, তথাপি মহামুভব ব্যক্তিরা ভক্তজনে বিতরণ করিয়া থাকেন, কারণ আমিও আপনার অভিভক্তিপ্রিয়া, অতএব হে ভক্তিপ্রিয়! আমার প্রশ্নের উত্তর দেওয়া আপনার সর্বতোভাবে বিধের (৮)। হে বিভাস্থন ! যদিও আপনি আমায় পূর্ব্বে জ্ঞানযোগ, বিজ্ঞান-र्यान, चिक्तर्यान ७ देवजानग्रत्यान श्रुकान कतिग्राह्मन, এदः বদিও আমি উক্ত যোগচতুষ্টম জানি, তথাপি যোষিবিধান আমাকে পুনর্কার কহিতে অনুমতি হয় (অর্থাৎ সম্যানুসারে সকল কণা সর্বাদা আমার স্মৃতিপথবর্ত্তিনী হয় না: শ্রুতিরূপা ভবদীয় বাণী প্রবণ করাই আমাদের কর্ত্তব্য, কারণ শ্রুতি ও মুতির পরম্পর বিরোধ হইলে শ্রুতিই বলবতী হয়), অতএব মন্দবৃদ্ধি ব্যক্তিরা যেরূপে উদ্ধার হইতে পারে, তজ্ঞপ বলিতে আজা হয় (১)। আমি আপনার সমীপে আর একটি যে রহস্থ কথা জিজাসা করিতেছি, হে বারিজাক্ষ! আপনি আমার

<u>জীরামচন্দ্রে</u> ২থিল তত্ত্বসারে ভক্তিদু ঢ়া নৌ ভবতি প্রসিদ্ধা। ১০।। ভক্তিঃ প্রসিদ্ধা ভবমোকণায় নান্যন্ততঃ সাধনমস্তি কিঞ্ছিৎ। তথাপি হৃৎসংশয়বন্ধনং মে বিভেত্ত্বৰ্ষস্বাহ্যাক্তিভিস্তৃম্ ॥ ১১ ॥ বদস্তি রামং পরমেকমাদ্যং নিরস্তমায়াগুণসংপ্রবাহম্। ভজন্তি চাহনিশ্মপ্রমতাঃ পরং পদং যান্তি তথৈব সিদ্ধাঃ ॥১২ ॥ বদন্তি কেচিৎ পরমোহপি রামঃ স্ববিদ্যয়া সংরতমানসঃ স্বম্। জানাতি নাত্মানমতোহপরেণ সংবোধিতো-বেদপরাত্মতত্ত্বম্ ॥১৩॥ যদি প্ৰজানাতি কুতো-বিলাপঃ সীতা হতা তেন কুতঃ পরেণ।

তাহা প্রকাশ করিয়া বলুন। অথিলতত্ত্বার শ্রীরামে কিরুপে আমাদিগের অনপারিনী অসাধারণী প্রদিদ্ধ ভক্তি জন্মিতে পারে (১০)। ভক্তিই ভবমোচনের নিমিত্ত প্রসিদ্ধা, তদপেকা অন্ত কোন সাধন নাই,তথাপি আপনি আমার মানসসংশয়বন্ধন ছেদন করিবার উপযুক্ত পাত্র (১১) অপ্রমন্ত সিদ্ধ ব্যক্তিরা শ্রীরামকে শ্রেষ্ঠ অদিতীয়,আদ্য ও মায়াগুণ প্রবাহরহিত জানিয়া দিবারাত্র ভল্লনা করিয়া পর্য পদ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন (১২)। নিজ বিদ্যাদারা আচ্ছন্নচিত্ত কোন কোন ব্যক্তিরা শ্রীরামকে পর্ম বলিয়া বিদিত আছেন, কিন্তু ভাঁহাদের নিজ আত্মত হবাধ না থাকার, অপরবোধিত ব্যক্তিকর্ত্বক স্ক্রোধিত হইয়া, বেদ পর্মাত্মতত্ত্ব জানিয়া থাকেন (১৩)।

সীতা শত্রুহন্ত গৃহীতা ইইবেন এইটা যদি জানেন তবে শ্রীরাম কি হেতু বিলাপ করিবেন ক্রার যদি এ বিষয় অবিজ্ঞাত জানাতি নৈবং যদি কেন সেব্যঃ
সমো-হি সর্বৈরপি জীবতাতৈঃ ॥ ১৪ ॥
অত্যোত্তরং কিং বিদিতং ভবদ্তিস্তদ্ধ হি মে সংশয়ভেদি বাক্যম্ ॥ ১৫ ॥
শ্রীমহেশ্বর-উবাচ ।

ধন্যাদি ভক্তাদি পরাত্মনস্ত্রং

যজ্জাতুমীহা তব রামতত্ত্ম।
পুরা ন কেনাপ্যভিনোদিতোহহং

বক্তুং রহস্তং পরমং নিগূদ্ম॥ ১৬॥

দ্বয়াদ্য ভক্ত্যা পরিণোদিতোহহং

বক্ষ্যে নমস্কৃত্য রঘূত্তমন্তে।
রামং পরাত্মা প্রকৃতেরনাদিরানন্দ-একং পুরুষোভ্যোহি॥ ১৭

দ্বমায়্যা কৃৎস্নমিদং হি স্ফ্রা
নভোবদন্তর্কহিরাস্থিতো যং।

দর্ব্যান্তর্যোহি নিগূদ্- আত্মা

স্বমায়্যা স্ফ্রিদিং বিচ্টে ॥ ১৮॥

ছিলেন, তাখা হইলে সমস্ত জীবের জনক তুল্য হইয়া জীরাসকোন ৰাক্তি কর্তৃক বা সেব্য হইবেন (১৪) ? ইহার প্রাকৃতির কি, সংশয় ভেদী বাক্য দারা সবিস্তারে ব্যক্ত করুন (১৫)।

শ্রীমহাদেব কহিলেন,—হে পার্কাত! তুনি ধন্যা ও পরনায়ার পরমভক্তা, যেহেতু শ্রীরামতত্ব জানিতে তোমার সমূচিত
চেন্তা হইরাছে; পূর্ব্বে এরপ নিগৃচ পরম রহস্ত বলিবার নিমিত্ত
কেইই আমাকে অনুরোধ করে নাই (১৬)। অদ্য আনি
ভোমার ভতিতথেমে বণীভূত হইরা রবৃত্তম শ্রীরাম চরণারবিদ্দে
প্রণতিপূর্বক তদীর প্রশ্নের প্রভ্যুত্তর দানে প্রবৃত্ত ধইণাম; রাম
পরমাত্মা প্রকৃতির অনাদি সদানন্দময় অদ্বিতীয় পূর্ববাত্তম (১৭)
বিনি নিজ্মায়া প্রভাবে এই চরাচর স্থাবর জন্সম প্রভৃতি সমস্ত
বন্ধাও স্থাই করিয়া নভামওলের ন্থায় অভ্যন্তরে ও বাহে স্বপ্রক্ষাপ স্ক্রিয়ামী নিগৃচ আয়ারারণে অব্স্থিতি করিতেছেন

জগন্তি নিত্যং পরিতো ভ্রমন্তি
যৎসনিধে চুম্বকলোহবদ্ধি।
এতন্ন জানন্তি বিমূচ্চিত্তাং
স্ববিদ্যা সংবৃত্যানসন্তে॥ ১৯ ॥
স্বাজ্ঞানমপ্যাত্মনি শুদ্ধবোধে
স্বারোপয়ন্তীহ নিরস্ত্যায়ে।
সংসারমেবামুসরন্তিযে বৈ
পুল্রাদিসক্তাং পুরকর্মায়ুক্তাঃ॥ ২০ ॥
জানন্তি নৈবং হৃদয়ন্তিহে বৈ
চামীকরং কঠগতং যথাজ্ঞাঃ॥ ২১ ॥
যথা প্রকাশো-নতু বিদ্যুতে রবে

জ্যোতিংস্বভাবাৎ পরমেশ্বরে তথা।
বিশুদ্ধবিজ্ঞান্যনে রঘুত্তমেহবিদ্যা কথং স্যাৎ পরতং প্রাত্মনি ॥২২॥

(১৮)। এই সমস্ত জগং চুম্বকলোহের ভায় নিয়ত বাঁহার চতুদ্দিকে ভ্রমণ করিতেছে; (অর্থাৎ চুম্বকপ্রস্তরের সারিধ্য-বশতঃ বেরূপ , অটেচত ভ জড়পদার্থ লৌহাদি বস্তুর চলনশকি জিনায়া থাকে, তজপ অসামাজ্যায়াশক্তিবিশিষ্ট বিশ্বভাবন পরমাত্রা ঈশ্বরের সালিধ্যে এই দেহাদি অতৈকতা জড়পদা-র্থের চৈত্র জনিয়া থাকে। ইহা মুগ্ধাস্ত:করণ নিজমায়াচ্ছ্রচিত্ ব্যক্তিরা জানিতে পারে না (১৯), রবং সচ্চিদানক নির্বিকার নিরস্তমায় নিশ্মলবোধ প্রমান্ত্রা ঈশ্বরের প্রতি নিজের অজ্ঞানতা রূপ দোষারোপণ করত: প্রারন্ধ কর্মের ভোগ বশত: পুলাদি বিষয়ে আসক্তচিত হইয়া ঘোরতর সংসারের অনুসরণ করিয়া থাকে (२•)। অজ ব্যক্তি যেমন কণ্ঠস্থিত চামীকর জানিতে भारत ना, তজপ मर्लङ्ग्डमयक्ति नेश्वरक मामाय लाहक কিরূপে জানিতে পারিবে (২১)। জ্যোতিঃম্বভাবহেতু যেরূপ স্ব্যবিষয়ক জ্ঞান বোধ হয়, তজ্ঞপ ঈখরের কার্য্য প্রকাশহেতৃ ঈশরকারণ জ্ঞান প্রকাশিতহয়, অতএব পরাৎপর পরমাত্মা বিশুদ্ধ-विकान द्रपृत्व द्रागहत्क व्यविगात म्हावना काथाय ? (२२) বধা হি চাক্ষো-অ মতো-গৃহাদিকং
বিনফদ্ফে-অমতীব দৃশ্যতে।
তথৈব দেহেন্দ্রিরকর্ত্রায়নঃ
কৃতং পরো-য়্রপ্ত জনো-বিমুছতি ॥ ২০ ॥
নাহো-ন রাত্রিঃ দবিতু-র্যথা ভবেৎ
প্রকাশরপো-ব্যভিচারতঃ কচিৎ।
জ্ঞানং তথাজ্ঞানমিদং দয়ং হরে
রামে কথং স্থাস্যতি শুদ্ধচিদ্যনে ॥ ২৪ ॥
তত্মাৎ পরানন্দময়ে রঘূত্তমে
বিজ্ঞানরপো হি ন বিদ্যতে তনঃ।
ভজ্ঞানসাক্ষিণ্যরধিন্দলোচনে
মায়াশ্রয়স্থান বিমোহকারণম্॥ ২৫ ॥
তত্ত্ব তে কথয়িষ্যামি রহস্যমপি ত্রল্ল ভম্।
সীতারামমরুৎসূত্রসংবাদং মোক্ষ্যাধনম্ ॥২৬

পুরা রাময়ণে রামো-রাবণং দেবকন্টকম্।

হন্বা রণে রণশ্লাঘী সপুত্রবলবাহনম্॥ ২৭ ॥

সীতয়া সহ হৃত্রীবলক্ষাণাভ্যাং সমন্বিতঃ।

অযোধ্যামগমজামো-হন্মংপ্রমুথে-র্বতঃ ॥ ২৮ ॥

অভিবিক্তপরিরতো-বিশিষ্ঠান্য-র্মহান্তভিঃ।

সিংহাসনে সমাসীনঃ কোটিসূর্য্যসমপ্রভঃ ॥ ২৯ ॥

দৃষ্ট্বা তদা হন্মস্তং প্রাঞ্জলিং পুরতঃ দিতেম্।

কৃতকার্যাং নিরাকাক্ষণং জ্ঞানাপেক্ষণং মহামতিম্ ॥৩০॥

রামঃ সীতা-মুবাচেদং জহি তত্ত্বং হন্মতে।

নিক্ষল্মবোহয়ং জ্ঞানস্পাত্রং নৌ নিত্যভক্তিমান্॥৩১॥

তথেতি জানকী প্রাহ তত্ত্বং রামবিনিশ্চিতম্।

হন্মতে প্রপন্নায়্ম সীতা লোকবিমহিনী ॥ ৩২ ॥

কিংবা নয়নছয়ের ভ্রমবশতঃ গৃহাদি বস্তস্কল मर्गान चार्गाहत इत, गात जात्मत चनाथा इहेरन भूनव्हात छैहा দৃষ্টির বিষয়ীভূত হইয়া থাকে, ভক্রণ দেহেক্সিকর্তা পরমেখনে কর্তৃক এইরূপ সমস্ত ঘটনা ঘটিতে পারে। ইহাতে সাধারণ करनत मूख रहेवात विलक्ष मुखावना (२७)। अथवा पूर्वा एक ८१क्रम निवाध ब्राब्धि-विधासम्ब कात्रम नरहन, ब्याजिः प्रकावरहकृ क्षन क्षकाममान ७ क्थन क्षकाम बाद्यन, उक्तम कान ७ অজ্ঞান এই ছইটী উক্ত ওছচিত সচ্চিদানক প্রমাত্ম ত্রীয়াবে কিরপে থাকিতে পারে ? (২৪) অতএব পরানন্দমর বিজ্ঞান-कातन (पर्शा दिकान अन पानित्र जी बादम विकासन बहियादह) রঘৃত্তম রামচক্রে ডমোওণ নাই এবং মারালয়ত্ব প্রযুক্ত অক্সান-দাক্ষী অরবিন্দলোচন দেই রামে কেন মোহের কারণ উপস্থিত क्रेट्र ? (२¢) अख्यक, दि शार्सिक ! आंत्रि खात्रात निक्रे সীতা, রাম ও হনুমান-সংক্রোভ ৰোক্সাধন স্বন্ধল রহত কীর্তন করিতেছি, (ভূমি অবহিতা হইরা প্রবণ কর) (२७)।

পূর্বেরামায়ণে শ্রীরামচন্দ্র, সপুত্রবলবাহন দেবকন্টক রাহণ গকে রণে বিনাশপূর্বক রণশ্লাঘী হইয়া (২৭) সীতা, স্থ্রীর ও লকণের সহিত মিলিভ এবং হন্মং প্রমুধ বানরগণে পরিবেটিভ হইয়া নিজ রাজধানী অযোধ্যাপুরী গমন করিয়াছিলেন (২৮)। পরে তিনি বশিষ্ঠ প্রভৃতি মহাআ ধ্বিগণ কর্ভ্ক পরিবৃত্ত ও রাজ্যাভিবিক হইয়া সিংহাসনে উপবেশনপূর্বক কোটিস্ব্যাভূল্য দীপ্তি ধারণ করিয়াছিলেন (২১), ভবন তিনি সক্ষ্মবর্জী বন্ধালি কৃতকার্য্য নিরাকাক্ষ জ্ঞানাপেন্দী মহামতি হন্মান্কে অবলোকন করিয়া (৩০) (প্রিরংবদা জনকনন্দিনী) সীতাকে (ইন্সভ্রারা) কহিলেন,—হে প্রিয়ে! ক্ষাৎ প্রাণকুমারকে কিঞ্চিৎ ভবজানের কথা বল, এ ব্যক্তি নিক্ষম, ক্ষানের ভাজন এবং আমাদের প্রতি সভত ভক্তিমান্ (০১)। সর্বালোক-বিমোহিনী জনকনন্দিনী বে আজা বলিয়া জতিবশংবদ শরণাণ্ড সমীরণস্থকে রামবিনিশ্রিত ভব্বক্ষা বর্ণনক্রিতে সমুদাতা হইলেন (২২)। সীতা কহিলেন,—হে প্রনভনর। ভূমি শ্রীরারণ

দীতোবাচ।

রামং বিদ্ধি পরং ব্রহ্ম সচ্চিদানন্দ মহুয়ম্।
সর্ব্যোপাধিবিনিম্ক্রং সন্তামাত্রমগোচরম্॥৩০॥
আনন্দং নির্দ্ধানং শান্তং নির্বিকারং নিরপ্তনম্।
সর্ব্যোপিনমাত্মানং স্বপ্রকাশ মকল্মষম্॥ ৩৪॥
মাং বিদ্ধিম্লপ্রকৃতিং সগস্থিত্যন্তকারিণীম্।
তল্য সন্ধিমাত্রেণ স্কামীদমতক্রিতা॥ ৩৫॥
তংলানিধ্যান্ময়া স্ফং তন্মিন্নারোপ্যতে বুধৈঃ॥৩৬॥
অংল্যাধ্যানগরে জন্ম রঘুবংশেহতিনির্দ্ধালে।
বিশ্বামিত্রসহায়ত্বং মথসংরক্ষণং ততঃ॥ ৩৭॥
অহল্যাপাপশমনং চাপভঙ্গো মহেশিত্বং।
মৎপাণিগ্রহণং পশ্চাদ্ভার্গবদ্য মদক্ষয়ঃ॥ ৩৮॥
অথোধ্যানগরে বাদো-ময়া দ্বাদশবার্ষিকঃ।
দশুকারণ্যগমনং বিরাধ্বধ-এব চ॥ ৩৯॥

মায়ামারীচমরণং ছায়াসীতাহৃতিস্তথা।

জটায়ুয়ো-মোক্ষলাভঃ কবন্ধস্য তথৈব চ ॥ ৪০ ॥

শবর্ষ্যাঃ পূজনং পশ্চাৎ স্থাীবেণ সমাগমঃ।

বালিনশ্চ বধঃ পশ্চাৎ সীতান্বেষণমেব চ ॥ ৪১ ॥

সেতৃবন্ধশ্চ জলধাে লক্ষায়াশ্চ নিরোধনম্।
রাবণস্য বধাে-যুদ্ধে সপুজ্রস্য ছরাজানঃ ॥ ৪২ ॥

বিভীষণে রাজ্যদানং পুজ্পকেণ ময়া সহ।

অযোধ্যাগমনং পশ্চাদ্রাজ্যেরামাভিষেচনম্ ॥ ৪০ ॥

এবমাদীনি চান্থানি ময়েরাচরিতান্থপি।

আরোপয়ন্তিরামেইস্মিন্ নির্বিকারেই থিলাজানি॥৪৪॥
রামোন গচ্ছতি ন তিষ্ঠতি নান্ধশােচত্যাকাজ্কতে ত্যজতি নোন করােতি কিঞ্ছিং।

আনন্দমূর্তি রচলঃ পরিণামহীনাে
মায়াগুণানসুগতােহি তথা বিভাতি ॥ ৪৫ ॥

চক্রকে পরমত্রন্ধ, সচিদানন্দ, অদিতীয়, সর্ব্বোপাধি বিরহিত সভামাত্র, অংগাচর, নির্মাল, নির্ব্বিকার, নিরঞ্জন, শাস্তবভাব, সর্ব্ববাপী, স্ব প্রকাশ, বিধোতপাপ বলিয়া জানিবে (৩৩) (৩৪) এবং আমাকে মূলপ্রকৃতি ওক্ষ্টি স্থিতি প্রলয়কারিণী বলিয়া জান। আমি অতন্তিতা হইয়া রামচক্রের সারিধ্যবশতঃ এই ত্রন্ধাণ্ড করিয়াছি (৩৫)। রামসহযোগে আমি যাহা কৃষ্টি করিয়াছি,পণ্ডিতগণ তাহাই শ্রীরামে আরোপিত করিয়া থাকেন (৩৬)। বিশেষতঃ অযোধ্যানগরে অতি পবিত্র র্বুবংশে শ্রীরামের জন্ম, ভগবান্ বিশামিত্র থাধির সহায়তা এবং ধার্মিগণের যজ্ঞ রক্ষা; (৩৭) পরে অহল্যার শাপমোচন, মিথিলানগরে মহাক্রের ধন্মত্রন্ধ, আমার পাণিগ্রহণ এবং ভ্রুবংশশ্রেষ্ঠ ভার্মব বামদ্যাের দর্পক্ষয় (৩৮); তৎপরে আমার সহিত হাদশ্বর্ধব্যাপী জ্বোধ্যানগরবাস, দণ্ডকারণ্যামন এবং বিরাধাণ্ড রাক্ষ্য-বদ

(৩৯); অনন্তর মায়ামারীচমারণ, ছায়াসীতাছরণ, জটায়ুর নৃঞ্জিলাভ এবং কবদ্ধের মোক্ষপ্রাপ্তি (৪০); তদনস্তর শবরী ১ইছে পূজা গ্রহণ, স্থগীবের সহিত সমাগম, বালি বধ এবং সীতার অধ্বেষণ (৪১); পশ্চাৎ জলধিতে সেতৃবন্ধন, লক্ষানিরোধন এবং য়দ্দে সপ্ত হরাম্মা রাবণের বধ (৪২); তৎপশ্চাৎ বিভীষণে রাজ্যদান, পূজাকরথারোহণে আমার সহিত অব্যাধ্যাগমন এবং রাজ্যে রামাভিষেচন (৪০); ইত্যাদি ও অন্যান্ত নানা কার্য্য আমাকর্ত্বক আচরিত হইলেও নির্বিকার অবিলাম্মা সেই রামে আরোপিত হইয়া থাকে (৪৪)। রামচন্দ্র গমন স্থিতি, শোক, আকাজ্যা প্রভৃতি কিছুই করেন না, কেবল সানন্দ্রম্ভি, অচল, পরিণামহীন ও মায়াওণাস্থাত ইইয়া দীপ্তি পাইয়া থাকেন (৪৫)।

শ্রীমহেশ্বর-উবাচ!

ততো-রামঃ স্বয়ং প্রাহ হন্মন্তম্পন্থিতম্।
শূণু তত্ত্বং প্রবিক্ষ্যানি হ্যাত্মানাত্ম পরাত্মনাম্ ॥ ৪৬॥
আকাশদ্য যথা ভেদন্তিবিধো-দৃশ্যতে মহান্।
জলাশ্য়ে মহাকাশন্তদবচ্ছিন্ন-এব হি॥ ৪৭॥
প্রতিবিশ্বাথ্যমপরংদৃশ্যতে ত্রিবিধং নভঃ।
বুদ্ধবচ্ছিন্নচৈতন্যমেকং পূর্ণং তথাপরম্॥৪৮॥
আভাসস্থপরং বিশ্বভূতমেবং ত্রিধা চিতিঃ।
আভাসবুদ্ধেঃ কর্তৃম্ববিচ্ছিন্নেহ্বিকারিণি॥৩৯॥
সাক্ষিণ্যারোপ্যতে ভ্রান্ত্যা জীবত্বঞ্চ তথাবুধৈঃ।
আভাসস্ত ম্বা বুদ্ধিরবিদ্যাকার্য্য-মুচ্যতে॥ ৫০॥

শীতা হন্মান্কে ইত্যাদি সমস্ত কীর্ত্তনকরিলে সন্মুথে দণ্ডা-রমান মহামতি বায়ুপুলকে ব্যুনাথ স্বয়ং তত্ত্তানের কথা कृष्टिक देवाल इहेल्या। এই कृषा उन्नाखराखावती अध्यानी भारतं शिक (प्रतापिट्य मश्राद्यात अवग कडा श्रेट एक । (श्रे পুল। মূদ্রপ ত্রিবিধ আকাশ দেখিতে পাওয়া যায়, ভক্তপ আয়ুত্র ও অনায়ত্র এবং প্রমায়ুত্র ত্রিবিধ কীর্ত্তন করি, শ্রবণ কর (৪৬)। সোপাধিক, নিরুপাধিক ও প্রতিবিম্বাণ্য এই ত্রিবিধ আকাশের মধ্যে জল শূন্য জলাশয়ে বা ঘটাদিতে বে আকাশ দৃষ্ট হয় তাহাকে সোপাধিক কহে, আর নিরূপাধিক ষে नास्त्राय अल पृष्ठे दय जादात्क महाकाम करह, धवर पर्ननामित्क যে আকাশ তাহাকে প্রতিবিশ্বাগ্য আকাশ বলা যায়। উক্ত ত্রিবিধ আকাশকে প্রথম বৃদ্ধ্যবচ্ছিন্ন চৈতন্য, দিতীয় পূর্ণ অর্থাৎ মহাকাশ, তৃতীয় বিশ্বভূত আভাদরূপ এই ত্রিবিধ জ্ঞান জ্মিয়া পাকে। জ্ঞান ভ্রমপ্রমাসাধারণ হেতু দ্বিবিধ, —ভ্রমাত্মক ও প্রমা-ত্মক; তাহাতে আমি করি বা করিতেছি ও করিব ইত্যাদি আত্যার আভাসবৃদ্ধির কর্তৃককর্ম্মাদি যে জ্ঞান তাহাকে ভ্রমজ্ঞান বলা যায়, এবং ভ্রমবশতঃ অবিচ্ছিন্ন অবিকারী অজ্ঞানসাক্ষী যে আত্যা তাহাতে বুধগণ জীবত্ব আরোপিত করিয়া থাকেন, কিন্তু আভাসবুদ্ধি মিথ্যা অবিদ্যাকার্য্য অর্থাৎ মায়ার কার্য্য (৪৭) (8) (8) (0 •) । वृक्षाविष्ठन्न (य टिंडना डिर्निरे बिक्स श्रम-

অবিচ্ছিন্নস্ত তদু স্না বিচ্ছেন্স্ত বিকল্পিতঃ।
অবিচ্ছিন্নস্ত পূর্ণেন একরং প্রতিপদ্যতে ॥ ৫১ ॥
তন্ত্বসন্যাদি বাকৈয়শ্চ সাভাসন্য মহস্তথা।
ঐক্যজ্ঞানং যদোৎপন্নং মহাবাক্যেন চাল্লনোঃ ॥৫২॥
তদা বিদ্যা স্বকার্য্যেশ্চ ন সংশয়ঃ।
এবং বিজ্ঞায় মন্তক্তো মন্তাবায়োপপদ্যতে ॥ ৫৩ ॥
মন্তক্তিবিম্থানাং হি শাস্ত্রমাত্বেয়ু মূহ্যতাম্।
ন জ্ঞানং নচ মোক্ষংস্থাৎ তেযাং জন্মশতৈরপি ॥৫৪॥

ইদং রহস্যং হৃদয়ং ম্যাত্মনোময়ৈব সাক্ষাৎ কথিতং তবান্ত্য ।
মন্তক্তিহীনায় শঠার ন ত্ত্যা
দাতব্যমৈন্দ্রাদপি রাজ্যতোহধিকম্ ॥ ৫৫ ॥

वांठा, कांद्र विष्ण्या विकत्निक, वर्षा कथन बन्न भागा वांठा वा कथन कीवलमवांहा, शब्द ववः वाहाबाहक छावरह इ वृक्षा-বচ্ছিন্ন চৈতন্য পূৰ্ণজ্ঞানের সহিত একত্ব প্রাপ্ত হইলে তং ত্বম অসি, তৎ জীবাত্মা, তং প্রমাত্মা, অসি একত্বজ্ঞান অর্থাৎ সেই তুমি ইত্যাদি মহা বাক্য দারা সাভাস বুদ্ধির তেজঃ প্রকাশ হয়, তবে উক্ত মহাবাক্যদারা জীবাত্যা প্রমান্ত্রা উভ্যের যংকালে ঐক্যজ্ঞান উৎপন্ন হয়, ডৎকালে আত্যকার্য্যদারা অবিদ্যারূপে निজ निজ মায়া বিনষ্টা इंटेट পারে তদিবয়ের সংশার নাই, অতএব বায়ুপুত্র এবংপ্রকারে মন্তক্ত জীবলোক বিজ্ঞাপিত হইলে মদীয় পদ প্রাপ্ত হইতে পারেন (৫১)(৫২)। আমাতে ভব্জি বিমুগ ব্যক্তিরা শাস্ত্রমাত্রেই মুগ্ধ হইতে পারেন এবং তাঁহা-দিগের শতবার জন্ম হইলেও জ্ঞান বা মুক্তিলাভ হয় না (৫৪)। যে অন্যে হে নির্মালে। আমার আত্যার অর্থাৎ শ্রীরামের এই রহস্তহ্বদয় তোমার নিকট কহিলাম, যদি দেবরাজ ইক্র হইতেও অধিক রাজ্য প্রাপ্ত হয় তাহা হইলেও মন্তক্তিহীন বা শঠতা-চারিকে কদাচ দিবে না (ce); কারণ যে জীরামহৃদয় बीर्टन

শ্রীমহেশর-উবাচ।

এতত্তিং ভিহতং দেবি জীরামহাদয়ং য়য়া।
আতি গুহুতমং হাদ্যং পবিত্রং পাপশাতনম্ ॥ ৫৬ ॥
সাক্ষাদ্রামেশ কথিতং সর্ব্যবেদাস্তসংগ্রহম্।
য়ঃ পঠেৎ সততং জক্ত্যা স মুক্তো-নাত্র সংশয় ॥৫৭॥
বিক্ষাহত্যাদিপাপানি বছজন্মার্জিতাক্সপি।
নশ্যস্ত্যেব ন-সন্দেহো-রামস্য বচনং যথা॥ ৫৮॥
জাতিভ্রফো-ইতিপাপী পরধন পরদারেষু নিত্যোদ্যতো-বা
স্তেয়ী ব্রক্ষান্ধাতাপিভ্রধনিরভো-

(यागित्रमालकाती।

য়: সংপূজ্যাভিরামং পঠতি চ হাদয়ং রামচন্দ্রস্য ভক্ত্যা যোগীক্রৈ-রপ্যলভ্যং পদ-মিহ লভতে সর্বাদেবিঃ-স পূজ্য: ॥ ৫৯ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বসংবাদে আদিকাণ্ডে
শ্রীরামহৃদয়ং নাম প্রথমোহধ্যায়: ॥ ৬০ ॥ ১ ॥

করিলাম, ইহা অভিশুপ্ততম ও হ্বল্য, পরম পবিত্র এবং পাপনাশন (৫৬)। সাক্ষাৎ শ্রীরাম কহিষাছেন, এই সর্কবেদাস্তসংগ্রহ রামহৃদয়, যে ব্যক্তি নিরস্তর ভক্তি পূর্বক পাঠকরিবেন,
তিনি মুক্ত হইবেন ভাহার সংশর নাই (৫৭), প্রভ্যুত রামবাক্যান্স্লারে বহুজয়ার্জিড যে ব্রশ্বহত্যাদি পাপনাশ হইবে
ভাহার ও অফুমাত্র সংশয় নাই (৫৮)। বিশেষ কাতিভ্রন্ট, অভিপাত্রকী, পরধন ও পরদারে মিত্য উদ্যত, স্তেমী, ব্রশ্বর, জনক
ক্রনীবধে নিরত, যোগিগণের অপকারী ইত্যাদি পাপাচরণ

করিলেও যিনি শ্রীরামকে পৃত্ন করিরা ভক্তিযোগসঙ্কারে উক্ত রামহাদয় পাঠ করেন, তিনি স্পট্দিব পূজ্য অত্তে যোগীক্রগণের অবভ্য পরমপদ প্রাপ্ত হউবেন (৫১)।

এই অধ্যান্মরামারণের উমানচের্ররকথোপকথনে আদিকাণ্ডের রামহাদ্রনামে প্রথম অধ্যার
উক্ত হইল॥ ৬ • ॥ ২ ॥

দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

পার্ব্যকাচ।
ধত্যাম্মানুগৃহীতাম্মি কৃতার্থাম্মি জগৎপ্রভো।
বিচ্ছিনো-মেহতিসন্দেহ গ্রন্থি-ভ্রদন্ম গ্রহাৎ॥ ১

বিচ্ছিনো-মেহতিসন্দেহ গ্রন্থি-র্ভবদকু গ্রহাৎ॥ ১॥ তুন্মুখাদ্গলিতং রামতত্ত্বামৃতরসায়নম্।

পিবন্ত্যা মে মনো-দেব ন তৃপ্যতি ভবাপহম্॥ ২॥ শ্রীরামদ্য কথাতত্ত্বং শ্রুতং সংক্ষেপতো ময়া।

ইদানীং শ্রোতুমিচছামি বিস্তরেণ স্ফুটাক্ষরম্॥ ৩॥

শ্রীমহেশ্বর-উবাচ।

শৃণু দেবি প্রবক্ষ্যামি গুহাদ্গুহ্যতরং মহৎ।
অধ্যাত্মরামচরিতং রামেণোক্তং পুরা মম॥ ৪॥
তদদ্য কথয়িষ্যামি শৃণু তাপত্রায়াপহম্।
যচ্ছুত্বা মূচ্যতে জন্ত রজ্ঞানাদ্য মহাভয়াৎ॥ ৫॥

গার্বাতী কহিতেছেন,—হে জগৎপ্রভা! আপনাকর্ত্ব অম্গ্রীতা, ধন্তা ও ক্বতার্থা হইলাম; যে হেতু ভবদীয় অসাধারণ অম্থাহরলে অদ্য আমার চিত্তদোষের অপনোদন হইল (১)। হে দেব! সংক্ষেপতঃ অপুনর্ভব ভবদীয় মুখারবিন্দগলিত শ্রীরামতত্ত্বপীযুবরসায়নস্থাত্নপানে আমার চিত্ত পরিতৃপ্ত হইতেছে না (২)। ইদানীং সবিস্তর অমৃতাক্ষর শ্রীরামচরিত্রশ্রবণে অধিনীর ব্রুপোচিতবলবতীমনোহভিলাবিত-ফল-স্কার্থিনীকুত্মমবতীআশাল্ডার তাদৃক্ফল বিতরণে তুর্ণ কামন পূর্ণা করুন্(৩)। পরে পার্ম্বাতীর পূর্ম্বপক্ষের দার্চ্যতা জানিয়া শ্রীমহেশ্বরসিদ্ধান্তাত্মকুল তর্কবিন্যাসবিতরণে সক্ষম হইতেছেন।হে দেবি পার্ম্বাতি ! আধ্যাত্মিক আধিভৌতিক, আধিদৈবিক এই ভাপত্রয়নাশক এবং গুপ্ত হইতেও গুপ্ততম বেমহৎ অধ্যাত্মরামচরিত্র পূর্ম্বে আমার নিকট শ্রীরাম কহিয়াছিলেন, তাহা অদ্য সবিস্তর কীর্ত্তন করিতেছি; শ্রবণকর। বাহা শ্রবণকরিলে কীরলোক অক্তান বা মহাভয়-

প্রাপ্রোতি পরমায়দিং দীর্ঘায়ং পুত্রসন্ততিম্॥ ৬॥
ভূমি-ভারেণ ময়া দশবদনম্থাশেষরক্ষোগণানাং
ধূলা গোরপমাদে দিবিজমুনিগণৈঃ দাকমজাদনস্ত।
গল্পা লোকংরুদন্তী ব্যদনমুপগতং ব্রহ্মণেহপ্যাহ দর্কং
ব্রহ্মাধ্যাহাম্ছুর্তংদকলমপিছদাবেদশেষাল্পতত্বান্।
তত্যাৎ ক্ষীরদমুদ্রতীর-মগন-দুক্ষাথ দেবৈ-র্ তোদেব্যা চাথিললোকছৎস্থমজরং দর্বজ্ঞমীলং হরিম্।
অস্তোষীচ্ছু, তিশুদ্ধনির্মালপদেঃ স্তোব্রিঃপুরাণোদ্ভবৈ
ভক্ত্যাগদাদ্যাগিরেতিবিমলৈরানন্দবাস্পৈর্ তঃ॥৮॥
ততঃ ক্ষুরাৎদহস্রাংশুদহস্রদদ্শ প্রভঃ।
আবিরাদীৎ হরিঃ প্রাচ্যাং দিশাং ব্যপনয়ংশুমঃ ॥৯॥
কথিকদ্ ফ্রবান্ প্রহ্মা তুর্দশক্তাল্যনাম্॥ ১০॥

হইতে মুক্ত হইয়া পরম্যাম্পত্তি ও দীর্ঘজীবী পুত্র সন্তান লাভ করিতে পারে (৪)(৫)(৬)। দশানন-প্রভৃতি নিথিলঅশেষ রজনীচরনিকর চরণচার ভারবহনাসহমানা গোরপধরা ধরিত্রী অমর মুনিগণের সহিত কমলাসনের সমীপে ব্যসন বিজ্ঞাপন পুরঃসর রোক্ষদ্যমানা হইলে, প্রজাপতি ব্রহ্মা মুহূর্ভকালমধ্যে অশেষ আত্মতত্ব বিদিত হইয়া দেবতাদিগের সহিত ক্ষীরোদ্সমুর্দ্র-ভীরে গমনকরিলেন (৭)। অনন্তর ব্রহ্মা বস্ত্রমাভী-প্রভৃতি দেবগণসমভিব্যাহারে ভক্তিগদ্গদ্চিত্তে, বাস্পাকুললোচনে শ্রুতিজ্ব, বিমলপদ্যুক্ত ও নানাপুরাণোত্তব স্তৃতিদারা সর্বাস্তর্ধানী সর্বজ্ঞ ও অজর ঈশ্ব হরিকে স্তব করিতে লাগিলেন (৮)। পরে দীপ্রিবিশিষ্ট সহস্রাংগুসহস্রসদৃশ প্রভ হরি পূর্বাদিক নিজ প্রথরকরকদম্বারা ঘোরতর তিমির দ্রীকরণপূর্বক আবিভৃত হইলে,দর্শনোৎস্ক বিশ্বক্তা বিধাতা সাধারণের হৃদর্শজ্গৎপাতা হরিকে কথঞ্জিৎ কটে দৃষ্টি করিলেন (৯) (১০)। ইন্দ্রনীল-

ইন্দ্রনীলপ্রতীকাশং স্মিতাস্যং পদ্মলোচনম্।
কিরীটহারকেয়ুরক্গুলৈঃ কটকাদিভিঃ॥ ১১॥
বিভ্রাজমানং শ্রীবৎদকৌস্তপ্রভারা যুত্ম।
স্থবদ্ভিঃ দনকাদ্যৈশ্চ পার্দ্রিঃ পরিবেষ্টিতম্॥ ১২॥
শঙ্বাচক্রগদাপদ্মবনমালাবিরাজিতম্।
স্থবিজ্ঞাপবীতেন স্বর্ণবর্ণাশ্বরেণ চ॥ ১৩॥
ভারো ভূম্যা চ সহিতং গরুড়োপরি সংস্থিতম্।
হর্ষগদাগদ্মা বাচা স্থোতুং সমুপ্রক্রমে॥ ১৪॥
ভ্রাদ্রোবাচ।

নতোহস্মি তে পদং দেব প্রাণবৃদ্ধী ক্রিয়াদিভি:।

যশ্চিন্ত্যতে কর্ম্মপাশাদ্ধ দি নিত্যমুমুক্ষ্ভি: ॥ ১৫ ॥

মায়য়া গুণমব্যা ত্বং স্ক্রদ্যবিদ লুম্পদি।

জগতেন ন তে লোপঃ স্বানন্দান্ত্তবাত্মনঃ ॥ ১৬ ॥

তথা শুদ্ধি-র্ন ছুক্টানাং দানাধ্যয়ন কর্মভিঃ।

শুদ্ধাত্মন-স্তে যশ্দি সদা ভক্তিমতাং যথা॥ ১৭ ॥

সমবরণ, ঈষৎ-হাস্তবদন, পদাপলাশলোচন, মুকুট হার তাড়া কুণ্ডল বলয় প্রভৃতি নানা ভলকারে অলকরিফু, প্রীবৎসকোন্তভ্রু প্রভাজালে শোভিতবক্ষঃস্থল, অলকতিলকাবলি-পূজিতগণ্ডস্থল, পার্যদপরিবেষ্টিজ, সনকাদি শ্ববিগণকর্ত্বক স্কুরমান (১১) (১২), শগ্র-চক্র-গদা-পদ্ম বনমালা বিরাজিত, পাঁতবজ্ঞে। পরীত্যান্তর্বর, ক্ষীরসাগরস্থতাহিত, গরুড়োপরি রোচিফুইতাাদি অশেষ অলোকিকরণ ও লাবণ্য দেখিয়া, আত্মাকে শভ শত সার্বাদলানে হর্মপুলকোদগমন্ত্রনগরীর স্বয়্র প্রভিত্তি ভানাপ্রাণভাষা উল্যারণপুরঃসর নিজমতি পরিপাকাবিধি স্তব ক্রিতে সক্ষম হইলেন (১৩) (১৪)।—হে দেব! প্রাণ বৃদ্ধি ইন্রিয়াদি স্বাষ্টাঙ্গদারা ভ্রপারতরণি ভ্রদীয় প্রতিরণারবিল্যুগলে অভিবাদনকরি, যে পাদপদ্ম চিন্তা করিলে মুমুক্র্ ব্যক্তিরা কর্মপাশহইতে মুক্ত হবেন (১৫)। আপনি আনন্দান্তভ্র আত্মার ও গুণমন্ধী মায়াশক্তিদারা ব্রহ্মাণ্ডের স্টেস্থিতি ও প্রলম্ব করিয়া থাকেন। ভ্রত্থব ক্রণতে অন্ত উপদ্রব হইবার সন্তাবনা

অত-ন্তবাজ্যি-মে দৃষ্ট-শ্চিত্তদোষাপত্মতয়ে।
সদ্যোহন্তর্গ দয়ে নিতাং মুনিভিঃ সাস্থতিপ্প তঃ॥১৮॥
ব্রহ্মাদৈঃ স্বার্থসিদ্ধার্থ মন্মাভিঃ পূর্ব্বসেবিতঃ।
অপরোক্ষানুভ্ত্যর্থং জ্ঞানিভিন্ন দি ভাবিতঃ ॥১৯॥
স্বদন্ত্যি পূজানির্মান্যতুলসীমালয়া বিভো।
স্পর্ধতে বক্ষসি পদং লব্ধাপি ব্রীঃ সপত্নিবৎ ॥২০॥
অত-ন্তৎপাদভক্তেমু তব ভক্তিঃ ব্রিয়োহধিকা।
ভক্তিমেবাহিবাঞ্জি স্বদ্ভক্তাঃ সার্বেদিনঃ ॥২১॥
অত-ন্তৎ পাদকমলে ভক্তি-রেব সদাস্ত মে।
সংসারাময়তপ্রানাং ভেষজং ভক্তিরেব তে ॥২২॥
ইতি ক্রবাণং ব্রহ্মাণং বভাষে ভগবান্ হ্রিঃ।
কিং করোমীতি তে বেধঃ প্রত্যুবাচাতিহ্বিতঃ।২০॥

কি আছে ? দানাধ্যয়ন কথা করিলে মন্দবৃদ্ধি বাজি বি:গর চিত্ত ভিদ্ধি জনাইতে পারে না; সদাভজিনুক্ত শ্রদ্ধান ব্যক্তিরটি কর্মনাজেই যশসী হয়েন। অতএব অদ্য ভবদীয় ভাঁচরণারবিন্দর্শন সমবলোকনকরিরা মদীর চিত্তদোশের অপানাদন হইল্। সম্প্রণাবলম্বী মৃনিগণ হুংপালে ভবদীয় পাদপদ্ধ যোগ করিরা আয়াকে কৃতকৃত্য মানিতেছেন (১৬) (১৭) (১৮)। আমানিগের অভীপ্রসাধনজ্ঞ অচিন্তনীয় ভবদীয় ছাঁচরণারবিন্দ পূর্বে ব্রদ্ধাদিকর্তৃক সেবিত হুইয়াছিল, সম্প্রতি দেবতাদিগের অত্বৈশ্বর্য যে তব চরণ, তাহা জ্ঞানিগণ চিত্তে স্ক্র্যা ভাবনা ক্রিতেছেন (১৯)।

হে বিভো! আপনকার শ্রীপাদপদ আমাদিগের পূজানির্মাল্য ও তুলদীমন্ত্রীমালারদারা লক্ষলন্ত্রীক হইলেও ক্ষীরসাগরস্থতার সপত্নীর ন্তায় কি আশ্চর্য্য বনমালা-চিহ্ন বক্ষঃস্থলে
বিরাজমান দেখিতেছি। হে নাথ! তব পাদশাদের ভক্তুমে
ব্যক্তি, সে তব ভক্তিপ্রিপা লক্ষ্মী-অপেক্ষিত অধিক ভক্ততম;
কারণ ভগবন্তক্ত সার বেদি ব্যক্তিরা,ভক্তিমাত্রেই বাস্থাকরেন।
অতএব ভবদীয় পদারবিন্দে আমাদিগের ভক্তি যেন অনপায়িনী
হয়, তাহার বীজ এই যে ভবরোগণীজিত ব্যক্তিদিগের ভগবৎ
পাদশাদে ভক্তি মাত্রই পরমৌষধী হয় (২০) (২২)।

ভগবন্ রাবণো নাম পোলস্ত্যতনয়ো-মহান্।
রাক্ষসানা মধিপতি-শ্মদ্ভবরদর্পিতঃ ॥ ২৪ ॥
ত্রিলোকীং লোকপালাং-শ্চ বাধতে বিশ্ববাধকঃ।
মানুষেণ মৃতি স্তস্ত মুয়া কল্যাণকল্পিতা ॥ ২৫ ॥
অতস্ত্রং মানুষো ভূত্বা জহি দেবরিপুং বিভো ॥২৬॥
শ্রীভগবানুবাচ।

কশ্যপদ্য বরো দত্ত স্তপদা তোষিতেন মে।

যাচিতঃ পুজ্রভাবায় তথেত্যঙ্গীকৃতং ময়া॥ ২৭॥

দ ইদানীং দশরথো-ভূত্বা তিষ্ঠতি ভূতলে।

তদ্যাহং পুজ্রভামেত্য কোশল্যায়াং শুভোদয়ে॥২৮॥

চতুর্দ্ধায়ানমেবাহং স্কামীতরয়োঃ পৃথক্।

যোগমায়াপি নীতেতি জনকদ্য গৃহে তদা॥ ২৯॥

এবতা গারে পিতামধ্রে স্তবে পরিকৃষ্ট ভগবান্ হরি কহিলেন্ যে, হে চঙুরানন! আমি তোমার কি করিব ? এই হরিবাক্যা-বসানে সংশ্ব ভূতভাবন বিশ্বস্থা স্কুষ্টমনা বিধি ভগবাকোর প্রকৃত্তর প্রদানে মাহসী হইলেন (২৩)। হে ভগবন্! পৌলস্ত্য-তন্ম রাবণনামে মহান্ রাজ্যাধিপতি আছে। সম্প্রতি অক্ষত্ত-বর্দপিতি বিশ্ববাধক রাবণ স্বর্গ মন্ত্য ও রসাতল দেবরাজ ইক্রাদি গোকপাল প্রভৃতি সমস্ত ব্যক্ষণ্ডের অশেষ ক্রেশপ্রদান করিতেছে। কিন্তু মানবহুইতে তহোর নিধনক্রণ ক্লাণ ক্রনা পূর্কেই স্থির করিয়:ছি। তে প্রভো! এক্ষণে মানব্রুপে অবনীমণ্ডলে অবতীর্ণ হইয়া দেব তাদিগের শক্ত বিনাশক্রন্ (২৪) (২৫) (২৬)।

এই শিভামহের বাক্যাবদানে মহাত্মতা ত্রিলোকপাবন ভ্রতারহরণৈক কারণ ভূতভাবন ভগবান্ হরি রাবণবাবের প্রতি বিবিকে সবিশেষ বিধিবিতরণে ছিরচিত্ত করিতেছেন। পূর্বেক ক্রপনামক প্রজাপতি সাতিশন্ন কঠোর তপস্থার অনুষ্ঠান করিয়া পূল্ভাব যাজ্ঞাকরতঃ আমাকে অসাধারণ আরাধনা করিয়াছিল। আনি উক্ত ব্যক্তির অলৌকিক আরাধনার সম্ভূষ্ট হইয়া পূল্ভ অক্সাকার করিরাছি। একণে উক্ত প্রজাপতি অযোধ্যানগরীতে দশর্থনামে নরপতি বিখ্যাত ইইয়াছেন। উক্ত নুপত্তির ধর্মপত্তী কৌশল্যা-ক্রঠরে চতুদ্ধা অংশে জ্মগ্রহণ করিয়া রাজা দশর্থের মনোবাছা পূর্ণ করিয়া, (আর যোগ্যামা সীতা

উৎপৎস্যতে ময়া সার্দ্ধিং সর্বাং সম্পাদ্যাম্যহম্।
ইত্যুক্ত্যান্তর্গধে বিষ্ণু-ব্রহ্মা দেবানথাব্রধীৎ॥ ৩০॥
বিষ্ণু-মান্ত্র্যরূপেণ ভবিষ্যতি রঘোঃ কুলে।
যূয়ং স্বজ্বরং সর্বােহপি বানরেষংশসম্ভবান্॥ ৩১॥
বিফোঃ সহায়া-ভবত যাবৎ স্থাস্যতি ভূতলে।
ইতি দেবান্ সমাদিশ্য সমাশ্বাশ্য চ মেদিনীং।
যানো ব্রহ্মা স্বভবনং বিজ্বঃ স্ল্যু-মাস্থিতঃ॥ ৩২॥
দেবা-শ্চ সর্বেব হরিরূপধারিণং
স্থিতাঃ সহায়ার্থ মিতস্ততা হরে।
মহাবলাঃ পর্ব্যব্রহ্মযোধিনঃ

বহাবলাঃ শব্ব তর্মবোষিনঃ প্রতীক্ষমাণা-ভগবন্ত মীশ্বম্ ॥ ৩২ ॥ ইতি শ্রীমদধ্যাত্মবামায়ণে উগামহেশ্বসন্থাদে আদি-কাণ্ডে ব্রহ্মণা সহ রামাবতারোৎপত্তিকথনং

নাম দিতীয়োহধ্যায়ঃ॥ ২ ॥

মিপিলাদেশোদ্ধৰ জনকরাজভবনে সমৃদ্তা ইইবেন্) অত এব যোগমায়া সীভার সভিত ভূতলে অবতার্ণ ইইয়া,ভূভারহরণকারণ তোমাদিগের সর্ক্রায়া সম্পাদনকরিবো। এই কথা একাকে কহিয়া বিষ্ণু অন্তর্ত ইইলে, জগংশতি ব্রহ্মা বস্ক্রা প্রাভৃতি সমস্ত দেবভাদিগকে কহিতেছেন্ (২৭) (২৮) (২৯) (৩০)।

বিষ্ণু মানবরূপে রঘুক্লে অবতীর্ণ হইবেন্ আর বাবংকাল বিষ্ণু ভূতলে পাকিবেন্, তাবং ভোমরা বানররূপে সমৃত্ত ইইবা বিষ্ণুর সহায়তা করিবে (৩১)। এইরূপে প্রজানাথ ব্রহ্মা দেবতা-দিগের আদেশ প্রদানাস্থে, "হে মেদিনি। জং মাজৈঃ," এইরূপ বারস্থার মেদিনীকে আখাদ প্রদানে নানাবিধ সান্তনাবাক্যে নিয়ন চিত্ত করিয়া স্থাচিতে ব্রহ্মা ব্রহ্মণোক গমন করিলেন্(৩২)। অন-ন্তর মহাবলপরাক্রান্ত ও পর্বত কৃষ্ণবাধি দেবতাসমন্ত হরিসহা-যার্থ ইতন্ততঃ মর্থাৎ চতুর্দিক্ বানররূপ ধারণ করিয়া ভূতলে ভূত ভাবন ভগবনীশ্বরে প্রতীক্ষার কলিক্ষ্যে সক্ষম ইইলেন্ (৩০)। এই শ্রীমদধ্যান্মরামায়ণে উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাণ্ডে রামাবতারের উৎপত্তিকথন দ্বিতীয় অধ্যায় উক্ত হইল।

তৃতীয়ো২ধ্যায়ঃ।

সূর্য্যবংশে-হ্ভবদ্রাজা দিলীপ-ইতি বিশ্রুতঃ।
তক্ষ পুজোহ্ভবন্ধান্ধা অজ-ইত্যভিবিশ্রুতঃ॥ ১॥
তক্ষ পুজোহ্ভবন্ধান্ধা অজ-ইত্যভিবিশ্রুতঃ॥ ১॥
য-শ্চক্রে হয়মেধানাং শত-মিন্দ্র সমপ্রভঃ॥ ২॥
অথ রাজা দশরথঃ শ্রীমান্ সত্যপরাক্রমঃ।
অযোধ্যাধিপতি-বীরঃসর্বলোকেয়ু বিশ্রুতঃ॥ ৩॥
অনপত্যত্বহুংখেন পীড়িতো-গুরুমেকদা।
বিশিষ্ঠং মুনিশার্ছল-মভিবাদ্যেদ-মত্রবীৎ॥ ৪॥

প্রথমত: স্থ্যবংশীর দিলীপনামক এক সম্রাট্ছিলেন। পরে তত্ত পুত্র অজনামক মহারাজ বিখ্যাত ছিলেন। তদনন্তর ত্ত্য পুত্র মহাবল পরাক্রাস্ত শ্রীমান্ দশরথনামধেয় নরপতি শত-অশ্বনেধ-যাগান্তে পৃথিবীতলে পুরন্দরসম-দীপ্ত ও সত্যপরা-ক্রম অযোধ্যাপতি বীর সর্বলোকে প্রথিত ছিলেন (১) (২) (৩)। তাঁহার কি অভূতপূর্ব রাজকার্য্য, কিবা শৌর্যুবীর্য্যো-मार्याखन, किया छेत्रमभूजवर প্রজাপালন, किया দানাধ্যয়ন, দেবপূজন, অতিথিদেবন, নিত্যহোমী-গুরুদেব-মুনিবিপ্রপিতৃ-মাতৃভক্তিপরায়ণতা, কি স্থন্দর প্রৌতস্মার্ত-ক্রিয়াচরণ,সর্কবিষয়ে অভিজ্ঞতা ইত্যাদি রাজধর্ম, দানধ্ম, গাহস্তাধর্ম, দাম্পত্য-ধর্ম প্রভৃতি সমস্ত বিষয়েই মহারাজ কি আশ্চর্যা পারদর্শী ছিলেন, তাহা অনির্কাচনীয়। মহারাজের কতই গুণ! বোধ হয়, প্রাক্তনসংস্পার ভতৎকালে আবিভূতি হইত। মহারাজের ঐশর্য্যের ইয়তা নাই; কেবল অনপত্যহংথে হংথিত। একদিবস নুপতি মুনিপুঙ্গব কুলপুরোহিত বশিষ্ঠ গুরুদেৰের শ্রীচরণারবিন্দে সাষ্টাঙ্গ প্রণতিপূর্ব্যকরপ অভিবাদনাতে জিজাসা করিলেন (৪):

স্বামিন্ পুত্রাঃ কথং মে স্থ্যঃ সর্বলক্ষণলক্ষিতাঃ।
পুত্রহীনস্য মে রাজ্যং সর্ববং ছঃখায় কল্পতে ॥ ৫ ॥
নানপত্যস্য লোকো ছিন্ত শ্রুতি রেষা সনাতনী ॥৬॥
অপুত্রস্য ধনং ব্যর্থং অপুত্রস্য ফলং যশঃ।
অধোগতি-রপুত্রস্য ভবতীত্যকু শুশ্রুমঃ॥ ৭ ॥
ধিগ্জন্ম তেষাং বোগীশ যেযাং গেহেহনপত্যতা।
নিরাশঃ পিতরো-যান্তি হনপত্যস্য নিত্যশঃ॥ ৮ ॥
অতো-হব্রবীদ্বশিষ্ঠ-স্তং ভবিষ্যন্তি স্থতা স্তব।
চত্ত্রারঃ সন্ত্রসম্পন্না-লোকপালা-ইবাপরে॥ ৯ ॥
শান্তাভর্ত্তার মানীয় ঋষ্যশৃঙ্গং তপোধনং।
অস্মাভিঃ সহিতঃ প্ত্রকামেষ্টিং শীঘ্র-মাচর॥ ১০ ॥

সামিন্! দর্মলকণলকিত পুত্রমুখদনর্শন সম্পত্তি কোথায়? কারণ পুত্রহীন রাজার সমস্তরাজ্য হংখভোজ্য, পুত্রহীন জনের পরলোক নাই, বিশেষ অপুত্রের ধন, ফল, যশ ও যাহা কিছু বৈদিক বা পৌরাণিক, পারলোকিক কার্য্য সমস্তই ব্যর্থ, অস্তে অধাগতি, ইহা আপনার নিকট বিলক্ষণ শ্রুত আছি। হে বোগীশ! সেই সকল পুরুষের ধিক্জন্ম,যাহাদিগের সন্তাননাই! প্রত্যুত্ত পিতৃলোকের পিওলোপ, ইত্যাদি রাজা দশরথের বহু-বিধ বিলাপ শ্রবণ করিয়া ব্যাকৃলিতচিত্ত ক্লপুরোহিত বশিষ্ঠ-মুনি তপোবলে বলিতেছেন (৫)(৬)(৭)(৮)। মহারাজ দিতীরলোকপালসম ও মহাসত্ত্বসম্পার আপনকার চারিটি পুত্র-সন্তান জন্মিবে (৯)।

সম্প্রতি শাস্তাপতি তপোধন গ্রমণ্ক ম্নিকে আনয়নকরিয়া
আাসাদিগের সহিত শীঘ্র পুতেটিযাগাম্ছান করুন্ (>•)। একদা

আনাতো-লোমপাদেন অনার্ষ্টিনির্ভয়ে॥ ১১॥
শান্তাং ক্যাং দদো তিয়ে দক্ষিণার্থে মহীপতিঃ।
ইতি শ্রুষা দশরথং পপ্রচছ মুনিসভ্রম্॥ ১২॥
কো-বা ক্সা স্তঃ কীদৃক্ প্রভাব-স্তুস্য তম্বদ।
ইতি শ্রুষা বচ স্তন্য মুনিঃ প্রোবাচ সারদম্॥ ১৩॥
বিভাগুক্স্য বিপ্রষ্থে-স্তুপসা ভাবিতাত্মনঃ।
অমোঘবীর্যুস্য স্তৃতঃ প্রজাপতিসমত্যুতিঃ ॥ ১৪॥
শৃণু পুত্রো যথা জাত-থায়শৃঙ্গং প্রভাপবান্।
মহাইং স মহাতেজাঃ বালঃ হবিরস্মতঃ ॥ ১৫॥
মহাইদং সমাসাদ্য কাশ্যপ ত্রপসি হিতঃ।
দীর্যকালপরিশ্রান্ত-খ্যি- দ্বেব্যসভ্নঃ ॥ ১৬॥

অনার্টিকারণবশতঃ লোনপাদ মহারাজকর্ত্ব আনীত হইয়া স্মহাতপা মূনিপুঙ্গব ঝব্যশৃন্ধ অনার্টিদোবশান্তিজ্ঞ সর্ব্বাঙ্গো-পেত সপ্ততন্ত নির্বিলে সমাপনকরিলে, পূর্ণননোরথ নরপতি লোনপাদনহারাজ কর্মসান্ধতার্থ বাচংব্মম্নিকে শান্তানান্ধিত্যা দানকরিলাছিলেন। এইরূপ বশিষ্ঠবাক্য শ্রবণকরিয়া মহারাজ দশরথ মূনিসত্ত্য বশিষ্ঠ মহাশাকে স্বাভিপ্রায় প্রকাশকরিতে-ছেন (১১) (১২)। ভগবান্ধ্র্যশৃন্ধনামক তপোধন কে এবং কেন্ মহাআর তনর, কীদৃক্পভাব, কিহেতু ঝ্র্যশৃন্ধনাম, এই সমন্ত জানিতে বাসনাকরি, প্রকাশকরিয়া কিন্তরের চিন্তা দূর কর্মন। এইরূপ দশরথের বাক্য শ্রবণকরিয়া মহাত্তব বশিষ্ঠম্ন ধ্রাশ্রের তাবং বিবরণ কথনে সাদরে সক্ষম হইলেন (১৩)। নরনাথ ঝ্র্যশৃন্ধমূনি কোন্ মহাত্মার তনয়, তাহা প্রকাশকরি, শ্রবণকর্মন। তপোবলপ্রভাবে সর্ব্বদা পরমাত্মত্ম্বিভাবিত অনোঘরীর্য বিভাওক বিপ্র ঝ্রির পুত্র, তিনি প্রজাপতিসম্প্রভ (১৪)।

পবে উক্ত ম্নির কিরপে প্রভাব ও কিপ্রকারে জন্ম, পুত্রস্বরপ ব্যাখ্যানকরি, প্রবণকর। অসীমতেজা অসাধারণ প্রতাপ
ঋষ্যশৃক্ষম্নি বালক হইলেও বৃদ্ধসন্মত (১৫)। মহারাজ একদিবস
মহাহ্রদমধ্যে সমাধিস্থ দেবর্ষিসন্তম কশ্মপপুত্র বিভাগুক মুনির

তদ্য রেতঃ প্রচন্ধন দৃষ্ট্যাপ্সরসম্ব্রশীন্।
অপ্পূপস্পৃশতো রাজন্ মূলী তচ্চাপিবভালা । ১৭ ॥

দহ তোয়েন ত্ষিতা গুবিলী দাভবভতঃ।

দা পুরোক্তা ভগবতা প্রক্ষণা লোককর্ত্ণা ॥ ১৮ ॥

দেবকন্থে মূলী ভূজা মূনিং দুয় বিমোক্ষ্যদে।
অমোঘসাদ্বেশ্চিব ভাবিস্থাদৈবনির্দ্যিতৈঃ ॥ ১৯ ॥

তন্যাং মূল্যাং দমভবভদ্য পুত্রো মহান্ষিঃ।
খাষ্যশৃঙ্গ-স্তপোনিষ্ঠো বন-এবাভ্যবদ্ধত ॥ ২০ ॥

তদ্যবিঃ শৃঙ্গং শির্দি রাজ-নাদী-মহাত্মনঃ।
তেনর্ধ্যশৃঙ্গ-ইত্যেব দদা দ প্রথিতোহভবৎ ॥ ২১ ॥

ন তেন দৃষ্টঃ পূর্বোহন্তঃ পিতু-রন্থত্র মানুষঃ।
তন্মাভদ্য মনো-নিত্যং ব্রক্ষচর্য্যেইভবন্ধ প ॥ ২২ ॥

এতন্মিন্ধেব কালে তু স্থা তব মহামতে।

তেন কামাৎ কৃতং মিধ্যা ব্রাক্ষণদ্যেতি ন শ্রুতিম্॥২৩

দীর্ঘকাল পরিশ্রান্তিবশতঃ (১৬) উর্কাশীনায়ী অপ্রাবলোকনে জলন্মণ্যে রেতঃপাত হয়। পরে তৃষ্যাতুরা মৃগী দেই জলপান করিয়া গর্ত্বতী হইয়াছিল। মহারাজ ঐ মৃগীকে পূর্ব্বে দেবকস্তাবস্থার স্থিকর্তা ভগবান্ত্রনা কোন অপরাধে অভিসম্পাত করেন (১৭) (১৮)। হে দেবকন্যে। তৃমি মৃগী ইইয়া মৃনিপুত্র প্রস্বকরিলে, অভিশাপ হইতে পরিত্রাণ পাইবে। অব্যর্থ বীর্যাহেতু ও দৈবনির্বারশতঃ দেই মৃগীর গর্ত্তহইতে বিভাওকম্নিকুমার মহান্ ঋষি তাপসকুঞ্জর ঋষ্যশৃঙ্গমূনি সমৃত্ত হইয়া বনমধ্যে ক্রমশঃ বর্দ্ধিত হন্ (১৯)(২০)। অনন্তর প্রজানাথ ম্নিজননী মৃগীর মন্তকে শৃঙ্গ বিদ্যানে ম্নিমন্তকেও অব্স্তই শৃব্দাৎপত্তি সন্তাবনাহয়, এই কারণ ঋষ্যশৃঙ্গনামধেয় ভূতলে প্রতিষ্ঠিতইইলেন (২১)। পরে উক্ত মৃনি জনকভিন্ন অন্ত মানব আর নিরীক্ষণকরেন নাই, এই হেতু ঋষ্যশৃঙ্গ মৃনির চিত্ত সর্বান্ই ব্রন্ধচর্যাম্প্রানে থাকিত (২)।

ইত্যবসরে, হে মহামতে ! তব স্থা লোমপাদনামা নুপজি ব্রাহ্মণসম্বনীয় কোন বস্তবিচারে জ্ঞানকৃত মিণ্যা কহিয়াছিলেন স ব্রাহ্মণৈঃ পরিত্যজ্য-স্তদা বৈ জগতঃ পতিঃ।
প্রোহিতাপচারা-চ্চ তদ্য রাজ্যো-যদ্চ্ছয়া॥ ২৪॥
নববর্ষং সহস্রাহ্ম-স্ততঃ পীভান্ত তৎপ্রজাঃ।
স ব্রাহ্মণান্ পর্য্যপুচ্ছ-ত্রপোযুক্তা-ন্মীষিণঃ॥ ২৫॥
প্রবর্ষণে স্থরেক্রদ্য সমর্থান্ পৃথিবীপতে।
কথং প্রবর্ষেৎ পজ্জ্য-উপায়ঃ পরিদৃশ্যতাম্॥ ২৬॥
ত-মুচ্-শ্চেদিতা-স্তেন স্থক্তানি মনীষিণঃ।
তত্র ত্বেকো-মুনিবর-স্তং রাজান-মুবাচ হ॥ ২৭॥
ক্পিতা-স্তব রাজেক্র ব্রাহ্মণা-নিষ্কৃতিং চর।
ঝায়শৃঙ্গং মুনিস্ত-মানয়স্ব চ পার্থিব॥ ২৮॥
বালোহয়মনভিজ্ঞোহপি নারীণা-মার্ত্বেরতঃ।
স চে-দ্বতরে-দ্রাজন্ বিষয়-স্থে মহাতপাঃ॥ ২৯॥

(২৩) সেই অপরাধে ত্রাহ্মণগণ উক্ত নরপতিকে অসাধারণ দোষে দৃষিত জানিয়া কহিলেন যে, মহারাজ ! পুরোহিতের অপ-চারহেতু আত্মেছার অধীনতাবশত: সমস্ত ব্রাহ্মণগণকর্তৃক যে व्यापनि পরিতাজা হইলেন, এমত নহে; দেবরাজ পুরন্দরও ভবতের দোষামুসন্ধানে ভবদীয় রাজ্যে নববর্ষসহস্রপর্যান্ত বারি বিতরণে বিরত হইয়া যুম্মদীয় প্রজাপীড়নে ষম্বান্ হইয়াছেন। পরে অতিবিষশ্লবদন লোমপাদ নূপতি বান্ধণগণের মৃথপদ্ম-বিনির্গত এই অশ্রুতবাক্য শ্রুবণকরিয়া, হে পৃথিবীপতে ! ইন্দ্রের প্রবর্ষণে বিশেষ সক্ষম তপোযুক্ত তাবৎ ব্রাহ্মণগণকে জিজ্ঞাসা कतिशो कश्टिलन (य, क्षेक्रांश कि छेशांत्र कतिहल, शब्कं छ जनमान कद्र, देश छे भागा खता बधातर मह भरतम अनात मनी म ताका রক্ষাকরিতে অনুমতি হয় (২৪)(২৫)(২৬)। অনস্তর তাবন্দনীধিগণ लामशान नद्रभिक्तिक कहित्नन, महादाख ! जाशनकांत्र यनि शृर्व-मक्षिष्ठ स्कृष्ठि थात्क एट्टरमवत्राक हेन्द्र जीवनात्न প्रकागरनत कीवनमान कतिर्ज्ञादान। अंहे कथा मनीियांग कहिरत मग्राज-একজন মুনিবর লোমপাদ নরপতিকে বলিলেন বে, (২৭)। হে পার্থ ! তোমার প্রতি সমস্ত বিপ্র কুপিত আছেন; একণে মদ্যপি বালক ও সর্কবিষয় অনভিজ্ঞ, তথাপি বছপ্রাচীনসন্যত মহারাজ, স্হাতপা বিভাওকম্নিকুমার ঋষ্যপুক ম্নিপুক্র যদি সদ্য প্রবর্ষ ও পর্জ্জন্য-ইতি তে নাম্র সংশয়ং।

এতচ্ছু হা বচো-রাজন্ কৃষা নিক্কতিমান্ত্রনঃ॥৩০॥

দ পত্বা পুন-রাগচ্ছেৎ প্রসমের দিজাতিরু।

রাজান- মাগতং দৃষ্ট্রা প্রতিসংজন্ত্রিয়ুং প্রজাং॥৩১॥

ততোহঙ্গপতি-রাহুয় সচিবান্ মন্ত্রকোবিদান্।

ঋষ্যশৃঙ্গাগমে যত্র-মকরো-মন্ত্রনিশ্চরাৎ॥৩২॥

দোহধ্যগচ্ছ-তৃপায়-স্ত তৈ-রমাত্যৈ-মহীপতে।

শান্ত্রক্তি-রথিলার্থ জৈ-নিত্যক পরিনিষ্ঠিতৈঃ॥৩০॥

তত্র হাজ্ঞাপয়ামাদ বারম্খ্যা-মহীপতিঃ।

বেশ্যাং পর্বত্র নিফাতা- স্তা-উবাচ মহীপতিঃ॥৩৪॥

ঋষ্যশৃঙ্গ-ম্বেঃ পুত্র-মানয়্ধর-ম্পায়তঃ।

লোভয়িয়া দ্যাশ্বাদ্য বিষমং মম শোভনাঃ॥৩৫॥

প্রমদাগণের আর্ত্তবে আশক্ত হইয়া ভবদীয় রাজ্যে শুভাগমন করেন(২৮) (২৯), তাহা হইলে পর্জ্জন্ত সদ্যঃ প্রবর্গকরিবে এবং ছম্বতি হইতে নিজনিম্বতিলাভে নির্ব্তিল রাজ্যরক্ষা করিতেও শক্য হইবেন, তবিষরের অসুমাত্র সন্দেহ নাই। পরে মুনিবর হইতে সাতিশয় আহ্লাদজনকবাক্য প্রবণে প্রস্তুটাত্মা লোমপাদ নুপতি নিজনিম্বতিলাভ করিবার বাসনায় ফলবৎ প্রদক্ষিণাভিবাদনম্তির্ক্রিয়াদারা তাবৎ বিপ্রাগণকে স্বসম্ভই করিয়া নিজ্বাজ্যানী চম্পানগরীপ্রতি সাবধান হইলেন (৩০)।

অনন্তর স্মাগতলোমপাদন্পতিদর্শনে প্রজাগণ সসম্ভ্রমগাত্ত্রোখান পূর্কক বন্দনাদি করিতেলাগিল (৩১)। পদ্দাৎ
অঙ্গপতি লোমপাদ নূপতি সম্মন্ত্রিৎ মন্ত্রিকে সাদরে স্মাহ্রান
করিয়া রাজ্যে বিভাগুক্ম্নিক্মার ঋষ্যশৃঙ্গম্নির শুভাগমন
বিষয়ে বন্ধসহকারে মন্ত্রণার স্থিরতর হইলে (৩২), নিভ্যপরিবেষ্টিত নিথিলশাস্ত্রার্থ পারদর্শি অমাত্যবর্গসহিত (সম্যক্) সত্রপার
সমবগত হইরা কহিলেন, হে কোশলাধিপতে! পরমকার্ফানিক
সভাধিপতি লোমপাদে রাজা স্ক্রকর্মকুশলা কতিপয় বারাষ্ণাদিগকে স্বিধ্যে আনিয়া আন্দ্রশ প্রদানে সাহসী হইয়া (৩৩)
(৩৪), কহিলেন, ছে অক্স্মাঃ! অশেষলোভ প্রদর্শন পুরঃসর

32

তা-রাজভয়ভীতা-শ্চ শাপভীতা-শ্চ যোষিতঃ।
অশক্য-মূচু-স্তৎ কর্ম বিবর্ণগতচেতসং॥ ৫৬॥
তত্র ত্বেকা বারঘোষা রাজান-মিদ-মত্রবীৎ।
প্রযতিষ্যে মহারাজ তমানেতুং তপোধনম্॥ ৩৭॥
অভিপ্রেতাং-স্ত মে কামাং-স্ত-মনুজ্ঞাতু-মর্হিদ।
ততঃ শক্ষোম্যানিয়িতু-মৃষ্যশৃঙ্গ-মৃষ্যে স্থতম্॥ ৩৮॥
তদ্যাঃ দর্ব্ব-মভিপ্রেত-মনুজানীৎ দ পার্থিবঃ॥ ৩৯॥
নাবি বৃক্ষা-ম্থা-রোপ্য ফলকারাংশ্চ মোদকান্।
স্ব্রসাং-শ্চ স্থগন্ধীনি মধ্নি রস্বন্তি চ॥ ৪০॥

বিষমাখাসযুক্ত প্রীযুক্ত বিভাওক ঋষিস্থত ঋষাশৃঙ্কমুনি মহাশরের মদীয় রাজ্যে শুভাগননার্থ ধ্বোচিত যত্ন করিবে (০৫)।
এইরূপ নৃপতি বারাঙ্গণাগণকে আজ্ঞা প্রদান করিলে, বেখাগণ
একে রাজভয়ভীতা, তাহে যোষিদ্বিধায় শাপভয়াদি উভয় ভয়
ভীত হইয়া প্রথমতঃ বিবর্ণগতচিতে বিষধ্বদনে কর্ত্ব্যকার্য্যে
অপারগতা জানাইল (৩৬)।

পরে বারাঙ্গণাগণমধ্যে কোন একা বারনারী নৃপতিকে কহিতেছে, মহারাজ ! উক্ত তপোধনকে আনিতে সমর্থাহই, যদি মদীরাভিপ্রায়ে স্বমত সংস্থাপন করেন, তাহা হইলেই আগস্তুক কার্য্যে সাহস করিতে, অর্থাৎ ঋষিপুত্র ঋষ্যশৃঙ্গমূনিকে আনিতে পারি (৩৭) ৷ এই কথা বলিয়া ভৃষ্ণীস্তাবাবলম্বনে নৃপতি সন্মুখে অঞ্জলিবদ্ধা বারনারী দণ্ডায়মানা রহিলে, রাজা কহিলেন, স্কর্মর ! ভক্রং; তুমি বাহা অভিপ্রায় করিয়াছ, তাহাই উত্তম পরামর্শ। এই বলিয়া নর্মাথ তন্মতে অহ্নমত হইলেন (৩৮)(২৯)

ততো-রূপেণ সম্পন্ধা বয়সা চ মহীপতে। ব্রিয়-আদায় কাশ্চিৎ সা জগাম বন-মঞ্জসা ॥ ৪১ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে ঋষ্যশৃঙ্গোপাখ্যানে তৃতীয়ো-হধ্যায়ঃ ॥ ৩ ॥

ভদনস্তর তরণীমধ্যে ফলপত্রবিশিষ্ট ক্কজিম নানাবিধ বৃক্ষরোপন করিয়া স্থান স্থান্ধ মধুর রসভাবযুক্ত নোদক পড্ড্ কালি নানাবিধ ভক্ষ্যভোজ্যমাল্যভাষ্ লাদি লইয়া নানা স্থললিত ভিরবসন্তাদিষড় রাগ ভৈরবী পুভৃতি ষট্জিংশদ্রাগিণীসংগুক্ত যন্ত্রভাত্মিত নিষাদাদি বর্ত্তমান সপ্তান্ধর আলাপন তালমান-সহিত নানা রসভাবযুক্ত নাট্যোক্তি সম্পুদায়ক অঙ্গবিক্ষেণ-পূর্বক নৃত্যগীভাদি কীর্ত্তনকরতঃ বারাঙ্গণাত্র সমভিব্যাহারে রপ্যোবনসম্পন্না প্রধানা বারনারী বনবিচরণে, অর্থাৎ ঋষ্যশৃক্ষ-ম্নিকুমারাশ্রমে শীত্র গমন করিয়াহিল (৪০) (৪১)।

এই শ্রীমদধ্যাস্থরামায়ণের উমামহেশ্বরকথোপকথনে গ্রন্থাশৃঙ্গ উপাথ্যানে তৃতীয় অধ্যায় উক্ত হইল।

চতুর্থোঽধ্যায়ঃ।

মহেশ্ব উবাচ।

সাতৃ স্থিয় কিয়-দূরং সংস্থাপ্যা-শ্রম-মূত্রমম্।
সন্দেশাট্চের নৃপতেঃ অবুদ্ধা হৈব রাঘব ॥ ১ ॥
নানাপুষ্পাকলৈ-র কৈঃ কৃত্রিমে-রূপশোভিতম্।
কৃষা নাব্যাশ্রমং রম্যং অভুতং সৌম্যদর্শনম্ ॥ ২ ॥
ততো নিরূপ্যতাং নাব মদ্রে কাশ্যপাশ্রমাৎ।
বাহয়ামাস পুরুষে বিহারং তস্ত বৈ মুনেং ॥ ৩ ॥
ততো হহিতরং বেশ্যাং সমাধায়েতি কর্তৃতাম্।
দৃষ্ট্যান্তরং কাশ্যপস্য প্রাহিণোদুদ্ধিসম্মতাম্ ॥ ৪ ॥
সা তত্র গথা কুশলী তপোনিষ্ঠস্য সনিধা ।
আশ্রয়-ন্ত সমাসাদ্য দদর্শ ত মুষ্টে প্রতম্।
উবাচ মধুরং বাক্যং শ্লুক্ষং মধুরয়া গিরা ॥ ৫ ॥

কচ্চি-মুনে কুশলং তাপনানাং
পিতা চ তে কচ্চি-দহীনতেজাঃ।
কচ্চিৎ প্রিয়া ন রমতে চাশ্রমেহস্মিন্
ছাঃ বৈ দ্রুষ্টুং সাম্প্রতং চাগতোহস্মি॥ ৬॥

তচ্চিত্তবোর্দ্ধতে তাপসানাং
কচিত্তরার্দ্ধলং প্রভৃতম্।
কচিত্তরার্দ্ধলং প্রভৃতম্।
কচিত্তরা পীয়তে চৈব বিপ্র
কচিত স্বাধ্যায়ঃ ক্রিয়তে চর্য্যাঙ্গ ॥ ৭ ॥
ইতি শ্রুত্বা বচ-স্তস্য মুনিবেশধরস্য হি।
উবাচ বাক্যং বাক্যজ্ঞাং মুনিবেশবিধারিণীম্ ॥ ৮
ঝদ্ধ্যা ভবান্ জ্যোতি-রিব প্রকাশতে
মত্যে চাহং ত্বা-মভিবাদনীয়ম্।
পাদ্যং বৈ সংপ্রদাস্যামি যথা
দিধ্যেৎ কর্মাকলানি চৈব ॥ ৯ ॥
কৌশ্যাং র্ন্যামাস যথোপবেশং
কৃষ্ণাজিনে বার্তায়াং প্রথায়াম্।
ক চাশ্রম স্তব কিং নাম চেদং

ব্ৰাক্ষ্যং ভাঙি তদেব ব্যক্তম্ ॥ ১০ ॥

প্রথমতঃ প্রধানা খারনারী মুনিকুমারাশ্রমসমীপবর্তী কিয়দুরে থাকিয়া লোমপাদ মহারাজের আদেশারুসারে এবং নিজবৃদ্ধিপ্রাথর্যবশতঃ কর্ত্রিম নানাপুস্ফলবৃক্ষপত্রাদিরারা মুনিবিহার জনক নাব্যাশ্রম অতিরমণীয় নির্মাণ কবিয়া মুনির অস্তরস্থ অভিপ্রায় জানিবার বাসনার মুনিবেশধারিণী একটী
বেশ্রা অন্তমধুর বাক্যে জিজ্ঞাসা করিতেছে (১) (২) (০)
(৪) (৫),—মুনে! কুশনীতাপসগণমধ্যে ভবৎপিতা অতি-

তেজন্বী। এ আশ্রমে আপনকার রমণী আপনার সহিত রমণ
বেনত ? আমি আপনকার প্রিয়াকে দেখিবার কারণ সম্পৃত্তি
আসিয়াছি (৬)। ভবদীয় তপস্তা বর্দ্ধমানা হইতেছে ? অনুপ্রিম
ফলমূল ভোজন করেন ত ? নিত্যহোম ও বেদবেদাঙ্গ পাঠ হয়
তো (৭) ? এইরপ মুনিবেশধারিণীর অতিমনোহর বাক্য শ্রবণে
মুনি মুনিবেশধারিণী বেশ্যাকে সাক্ষাৎ জ্যোভিষরপ দেখিয়া
কহিয়াছিলেন (৮),—আমি প্রণাম করি; পাদ প্রক্ষালনককন;
অদ্য আনার তপস্তারকল স্থাসিরহইল (০) ; কুশাস্তরণে বা ক্লঞাজিনে যথাস্থ উপবেশন করুন; আপনকার আশ্রম কোথায় ?
কি নাম ? বোধহর, সাক্ষাৎ ব্রহ্মণ্যদেব বিরাজ্যান (১০)।

ভতো-বেশ্যা প্রভাবাচ দিক্তের:
শহাযুক্তা কাশ্যপস্থাগমে তু।
মমাশ্রমঃ কাশ্যপপুত্র রম্যস্থিযোজনং শৈলমিমং পরেণ ॥ ১১ ॥
ভত্র স্বধর্মোহনভিবাদনং মে
ন চোদকং পাদ্য-মূপস্পৃশামি ॥ ১২ ॥
ভবতা নাভিবাদ্যোহহ-মভিবাদ্যো- ভবাশ্রয়া।
ব্রত-মেতাদৃশং ব্রহ্মন্ পরিষেজ্যো ভবাশ্রয়া ॥ ১৩ ॥
ইতি শ্রুতা বচ-স্তস্থ পুন-রাহ তপোধনঃ।
ফলানি পকানি দ্দানি তেহহম্
ভল্লাতকান্যামলকানি চৈব।
করষকানীস্কুদকানি তাবৎ

यर्थाभरयायः कनमञ जुङ्क् ॥ >8 ।

সা তানি সর্বাণি বিবর্জায়ত্বা

ভক্ষ্যং মহার্হং প্রদদে তিতাহস্ত।

মূনি ইত্যাদিরপ পরিচয়গ্রহণে প্রাথিতে হইলে, বিভাগুকঝির
আগমনে অতিশয়শকাকুলচিতা মুনিবেশধারিণী বারনারী কহিতেছে, হে কাশ্রপপুত্র! আমার আশ্রম অতিরমণীর; এই
পর্বতহইতে তিন যোজন পথ দ্রগামী (১১)। ভাহাতে
আমার অনভিবাদন নিজধর্ম, অর্থাৎ আমরা কাহাকেও প্রণাম
করি নাই এবং কাহারও পাদ্যজল স্পর্করি না (১২)।

আপনকার আমি অনভিবাদ্য ও আপনি আমার অভিবাদ্য।
হৈ ব্রহ্মন্! এক্ষণে আমার এই ব্রত, বাহাতে আপনি আমাকে
আলিক্ষন করেন্(১০)। এই কথা কহিলে, তপোবন মুনিবেশধারিণী বারনারীকে পুনর্কার কহিতেছেন,—বস্তু ফল মূল
প্রদানকরি, ভক্ষণ কর। বিশেষ ভল্লাতক, হরীতকি, আমলকী,
কর্ষব, ইসুদ, নাগরক, জম্বীর, নীবার, কলার, করু, তিল,
সুদ্গ, যব, গোর্ম, হৈমন্তিক মূলক, কেমুক, নারিকেল, শ্রীফল,
কদল লহণী, লকুচ, পনস, আগ্র, মরীচ ইত্যাদি সুমস্ত

তান্যযাশৃঙ্গদ্য মহার্যানি ভূশং হুরপাণি রুচিং দছু হিঁ ॥ ১৫ ॥ मर्गा চ ग्रान्यानि इगक्रिविख চিত্রাণি বাসাংসি চ ভানুমস্তি। পানানি চাগ্র্যাণি ততো-গৃহীত্বা मूर्यान ठिकिए जशम टारेकः ॥ ১৬ ॥ তদা চুচুস্বামলগগুমূলে বিলজ্জ্মানা ফলিতা লতেৰ। পাত্রৈ-শ্চ গাত্রাণি নিষেবমাণা সমালিষ-চদক্-দৃষ্যশৃঙ্গম্ ॥ ১৭ । বিলজ্জমানেব মলাভিভূতা প্রলোভয়ামাস স্থতং মহর্ষে:। অথব্যশৃঙ্গং বিকৃতং নিরীক্ষ্য পুনঃ পুনঃ পীডা চ কায়মদা। আবেক্যমানা শনকৈ-জগাম কুতাগ্নিহোত্রদ্য তদাপদেশং ॥ ১৮ ॥

ফলমূল অত্যুত্তম, ভোজনে অতিস্থাত। মুনি এই বলিয়া বারাসনাকে ফলদান করিলে, (১ঃ) মুনিবেশধারিণীবার নারী মুনিদত্ত
তাবৎ ফল পরিত্যাগ করিয়া নিজসঞ্চিত শোভিত উত্তমরসাযাদিত নানাবিধ ভক্ষান্তব্য ও স্থপক্ষমাল্য, বিচিত্ত বসন, কপুর
বাসিত্তামূলাদিহারা মুনিকে মথেই পরিত্তাকরিয়া মুনির সহিত
হাস্থপরিহান্তআমোদপ্রমোদরপ কিয়ৎকাল বিহার করিলে,
বিল্লুনানা ফলিতা লভা যজ্ঞপ বৃক্ষকে বার্মারপরিবেইনকরে,
তজ্ঞপ বৃক্ষরপ মুনিকে লভারপা বারনারী বার্মারম্বচ্ছনগাত্তস্পর্শানালিকন প্নঃপ্ন:কারপীড়নাদিকরভঃম্নিকে পর্মাহলাদসাগেরে নিমগ্র দেখিয়া বিভাত্তকের আগমনে ব্যাক্লুচিতা বারা
নারী নোকাশ্রমে প্লায়ন করিল (১৫) (১৬) (১৭) (১৮)।

তস্যাং গভায়াং মদনেন চিত্ত-বিচেতনঃ প্রীতবদৃষ্যশৃস্ণ। তামেব চিত্তেন গতেন শূরো বিনিঃশ্বদ-মার্ত্তবপু-ব্বভূব ॥ ১৯ ॥ ততো-মুহুর্ত্তং হরিপিঙ্গলাক্ষঃ প্রবেষ্ট্রিতো-রোমভি-রানথাগ্রাৎ। স্বাধ্যায়বান্ হাউসমাধিষুক্তো-বিভাওকঃ কাশ্যপ-আবিরাসীৎ ॥ ২০ ॥ সোহপশ্য-দাসীন মুপেত্য পুত্ৰং ধ্যায়ন্ত-মেবং বিপরীতচিত্রং। বিনিঃশ্বসন্তং মুহুর্ব্ধদৃষ্টিং বিভাগুকঃ পুত্র-মুবাচ দীনস্ ॥ ২১ 🛊 नरेत-र्था পূर्व-भिवामि পুত চিন্তাপর-শ্চাপি বিচেতন-শ্চ। দিনোহপি মাত্রং ত্বমিহাদ্য কি-মু পুচ্ছামি ত্বাং ক-ইহাভ্যাগতোহভূৎ 🛚 ২২ 🖡 ন কল্ল্যন্তে সমিধঃ কি-মু তাত কচ্চি দ্বৃতং চাগ্নিছোত্রং ত্বয়াদ্য। ম্বনির্ণিক্তং ত্রুকৃত্রুবং হোমধেনু: কচ্চিৎ সৰৎসা চ কৃতা হয়াদ্য ॥ ২৩ ॥

পরে মদনমুগ্ধানসাক ঝযাশৃক প্রভৃতনিঃখাসপরিত্যাগ পূর্ব্ব অসাধারণ পরিশ্রমবশতঃ শুভ্বদনে বিরাজিত আছেন (১৯)।
ইত্যবসরে অগ্রিহোত্রপরারণ, হরিপিক্ষলাক্ষ্ণ, যাধ্যায়সফলসমাথি
ক্রশ্রপপুত্র বিভাশুক ঋষি ক্ষণকাল মধ্যে আয়াজাশ্রমে আসিয়া
(২০] বিপরীতচিত্ত, মৃত্যুল্নিঃখাস্যুক্ত, উর্দ্ধিট এবস্প্রকারে
ছঃথিত মুথাবলোকনে জিজাসা করিভেছেন, (২১) পুত্র!
সামান্ত বিচেতন মানবের স্তায় কি হেতু চিস্তাগর দেখিতেছি ?
এত্বানে কি অন্য কোন ব্যক্তি আসিয়াছিল ? (২২) সমিধ্করনা

ইতি শ্রুত্বা পিতৃ স্তদ্য বচো-মুগ্ধাক্ষরং পরম্। উবাচ বাক্যং বাক্যজ্ঞং পিতরং করুণাশ্বিতং ॥২৪॥

ইহাগতো-জটিলো-ব্রহ্মচারী
ন বৈ ব্রস্থা নাতিদীর্ঘো-মন্সী ।
স্বর্ণবর্ণঃ কমলায়তাক্ষঃ
স্থতং স্থরাণা মিব লোভমানঃ ॥ ২৫ ॥
স্থান্ধরূপ্রং সবিতেব দ্বীপ্তঃ
স্থান্থ্যাক্ষি নতীবগোরঃ ।
নীলা বিবিক্তা চ জটা স্থান্ধা
হিরণ্যরজ্জুগ্রথিতা স্থলীর্ঘা ॥ ২৬ ॥
স্থান্ধ্যানা পুন-রস্য কঠে
বিদ্যোততে বিদ্যু-দিবা-স্তরীক্ষে ।
দ্বৌ মাংসপিণ্ডা-বধ্রেণ কঠা-দলোমশো চাপি মনোহরো চ ॥ ২৭ ॥
বিলগ্নমধ্যশ্চ স নাভিদেশে
কটিশ্চ তস্যাপি বৃহৎ প্রমাণা ।

হইরাছে ? অগ্নিহোত্র হবনকর্ম্ম সম্পন্ন হইরাছে ? ক্রক্ ক্রাদি প্রকালন করিয়াছ ত ? সবৎসা হোমধের প্রভৃতির ও ক্রাম হইয়াছে ? ভাবিদিনের কুশব্রজমৌঞ্জী-মেথলাদির আরোহণ করি রাছ ত ? (২০) জনকের এইরপ বাক্য প্রবণকরিরা করুণাম্বিত বাক্যক্র জনকের প্রতি অব্যাশুর প্রত্যান্তর প্রদান করিয়াছিলেন্ (২৪)। পিতঃ! এস্থানে একজন জটিল আসিয়াছিলেন্। ছিলেন্ (২৪)। পিতঃ! এস্থানে একজন জটিল আসিয়াছিলেন্। ছিলেন্ (২৪)। পিতঃ! অস্থানে একজন জটিল আসিয়াছিলেন্। ছিনি অতিশয় হুম্ম এবং অতিশয় দীর্মণ্ড নহেন্। মহামান্ত, স্বর্ণবর্ণ, কমলায়ভাক্ষ, দেবতাগণের লোভমান, (২৫) স্থাম্মির রূপরিক্ষতা ও সমদীপ্রিশালী, স্থারক্ষণান্ধি, স্পরিক্ষতা ও গর্মানাদিত হিরণ্যরজ্জু গ্রথিত স্থান্মর্বজনী (২৬) গর্গণমঞ্জলে বিহাৎসম শোভায়মান জটিল কণ্ঠদেশে আলম্বমানা, আর পারিজাতবিনিন্দিত ওঠাধর, এবং বক্ষঃম্থল বিরাজিত অলোমশ অতিমনোহর মাংস্পিওছর (২৭)ও বেদিবিল্যাবৎ বিলয়মধান্থিত

অথাস্য চীরাস্তরতঃ প্রভাতি হিরথায়ীব মম মেখলেয়ম্॥ ২৮ । অফা-চ তদ্যান্তু তদর্শনীয়ং विकृष्किতः পाषरग्नाः मःविदर्शेषि । পাণ্যোশ্চ তদ্বক্রচিরং নিবদ্ধৌ কলাপকা-রক্ষমালা যথেয়ং॥ ২৯॥ বিচেইযানসাচ তদ্য নাভিঃ क्জिख रःगाः भतनीय मढाः। চীরাণি তদ্যান্তু তদশাননি লোমানি তন্ত্ৰ-মাম রূপবন্তি॥ ৩০ ॥ বক্তুঞ্চ তদ্যাদ্ভদর্শনীয়ং প্রব্যাহ্নতং জ্লাদয়তীব চেত:। পুংস্কোকিলস্যেব চ ত্যা বাণী তাং শৃণতো মে ব্যথিতান্তরাত্মা॥ ৩১ স মে সমাল্লিষ্য পুনঃ শরীরং জটাত্ত গৃহ্বাত্য বন্ম্য বক্তুম্।

বক্তেণ বক্তুং প্রণিধার শব্দং চকার তামে জনয়েৎ প্রহর্ষ ।। ৩২ 🛭 ন চাপি পাদ্যং বহুমন্যতে-হসে ফলানি চেলানি ময়া হৃতামি। এবং ব্রতোহস্মীতি চ মা-মবোচৎ ফলানি পাদ্যানি ন চাদদ শ্রে॥ ৩৩ । ময়োপযুক্তানি ফলানি তস্য নেমানি তুল্যানি রদেন তেষাং। তোয়ানি চৈবা-তির্নানি মহং প্রাদাৎ স বৈ পাতু মুদাররূপঃ । ৩৪ ॥ পীত্বৈ যান্য-ভাষিকঃ প্রহর্মে 1-মমাভব-দ্ভূ-শ্চলিতেব চাদীৎ। ইমানি চিত্রাণি চ গন্ধবস্তি লাল্যানি তস্যোদ্গ্রথিতানি পট্টে॥ ৩৫॥ ইচ্ছামি তদ্যান্তিক মেব তাত কা নাম দা ব্ৰতচ্ব্যা সু তদ্য।

নাভিদেশ আর বৃহৎপ্রমাণ নিতম্বদেশ, তাহে কুল্বসনাশ্রিত মম মেধলাসমা হিরগুড়ী মেধলা জাজল্যমানা (২৮)।

আর ব্রহ্মচারির পদ্যুগলে কি অুত্তদর্শনীর ক্রেঞ্চবক্
বিরাজ করিতেছে এবং করতলগ্বে যক্ত্রপ আমার এই অক্ষমালা
তক্ষপ স্থান্দির কলাপক্ষর ব্রহ্মচারির পাণিতলগ্বে নিবদ্ধ
আছে (২৯); এবং শরংকালপ্রাপ্ত প্রমন্ত হংস যাদৃক্ সর্বাদা
শব্দায়মান হইরা থাকে, তাদৃক ব্রহ্মচারির বিচেট্টমান নাভি ও
অক্ষারিরপাসম আশুর্যাদর্শন লোমাবলি এবং চীর বসন (৩০)।
ফ্রদ্যাহলাদকর কি আশুর্যা দর্শনীয়বিহারবক্তা, বিশেষ প্ংস্কোকিলোপম বাণী প্রবণে তদবধি আমার অন্তরাম্মা ব্যথিক
আছেন্ (৩১)। উক্ত ব্রহ্মচারী অক্ষানীয় শরার পুনঃ পুনঃ
আলিক্ষন দানে এবং কটাজুট গ্রহণে মনীয় বক্তা অরনত করিয়া

মুখে মুখ প্রণিধানকরত: কি অপূর্বে শব্দ করিয়া আনার প্রকৃষ্ট হর্য জল্লিল, তাহা বলিতে অসমর্থ (৩২); এবং অক্সন্ত ফলমূল ও চেলবসন উক্ত জটিল বছমানিত না করিয়া আমাকে কহেন বে, আমার এই ব্রত ভবদত্ত পালা ও ফল মূলাদি স্বীকার করি না (৩৩)। অনস্তর উদাররূপ ব্রক্ষায়ী আমার পানার্থ উত্তম স্ব্রাহ্ ও ওঠাবলোপ্য নিজস্ঞিত ফল মূল আমাকে প্রদান করিলেন (৩৪)।

অভাষিক ঋষি প্রহর্ষ হইয়া ব্রহ্ম রিমন্ত ফলমূল ভোরাদি পানকরিবামাত আমাসম্বন্ধে, বোধ হর, যেন পৃপিবী চলিতা হন্ আর পট্ট স্ত্রমারা ব্রহ্মচারিকর্জ্ক প্রথিত আশ্চর্য্যান্ধবিশিষ্ট এই সমস্ত পৃস্পামাল্য (৩৫)। অতএব, হে তাত। একণে ব্রদ্ধ-চারির নিকটে বাসক্রিতে ইচ্ছাক্রি। পিড়ঃ! এ ব্রচর্মাব কি ইচ্ছান্যহং চরিতং তেন সার্দ্ধং

যথা তপঃ স চরত্যুগ্রকর্মা ॥ ৩৬ ॥

ইত্যেব বাক্যং মুনি-রাত্মজন্য
শ্রুত্বা মহাবাক্যবিশারদোহসৌ ।

উবাচ বাক্যং পরিশান্তয়ন্ হি

বিভাণ্ডক স্তপসা জ্ঞাততত্ত্বঃ ॥ ৩৭ ॥

রক্ষাংসি চৈতানি চরন্তি পুত্র
রপেণ তেনান্তুতদর্শনেন ।

অতুল্যবীর্য্যাণ্য-তিরূপবন্তি

বিল্লং সদা তপস-শ্রুত্তন্ত্রান্তি ॥ ৩৮ ॥

ন তানি সেবেত মুনি-র্যতাত্মা

ফলানি পেয়ানি মধূনি তানি ।

মাল্যানি চৈতানি ন বৈ মুনীনাং
গ্রাহ্মাণি চিত্তোৎপলগন্ধবন্তি ॥ ৩৯ ॥

রক্ষাংদি তানীতি নিবার্য্য পুত্রং
বিভাণ্ডক শুপদে নির্জাগাম।
যদা পুন: কাশ্যপো-নির্জাগাম
ফলানি হর্তুং বিধিনা বনা দ্বি ॥ ৪০ ॥
তদা পন-লোভিয়িতুং জগাম
সা বারযোষা মুনি-মুষ্যশৃঙ্গং ।
দৃষ্টের তা-মুষ্যশৃঙ্গং প্রস্কৃত্তঃ
সংভ্রান্তরপো-পত্যপত-ভদানীং ॥ ৪১ ॥
প্রোবাচ চেনাং ভবদা শ্রমায়
গচ্ছামি যাব-ম পিতা মেতি।
ততো-বেশ্যা কাশ্যপস্থৈকপুত্রং
প্রবেশ্য যোগেন বিমুচ্য নাবং ॥ ৪২ ॥
প্রমোদয়ন্ত্যো-বিবিধৈ-রূপায়ৈরাজ্যু-রঙ্গাধিপরাজধানীং।

নাম ? ব্রন্ধচারির সহিত এই ব্রতাচরণ করিতে আমি বিলক্ষণ বাসনা করি; যেহেতু সেই ব্রন্ধচারী এই ব্রতাচারণ করিয়াউগ্র-কর্মা হইয়াছেন্ (৩৬)। অনন্তর মহাবাক্যবিশারদ, তপসাজ্ঞাতসমন্ততত্ব বিভাপ্তক মুনি আত্মজের এইরূপ বাব্য প্রবণ করিয়া নানাবিধ হিতবাক্যরূপ-জ্বলসেক্ষারা কামবাণানল-দগ্মচিত্ত তনরকে সাজনাকরতঃ কহিয়াছিলেন (৩৭),—পুত্র! আশ্চর্যাদর্শন হেতু মন্মতে বিবেচনা হর যে, এস্থানে সেই সমস্ত রাক্ষসগণ বিচরণে আসিয়া থাকিবে; কেন না, ভাহাদিগের শোধ্য বীর্যা ঔদার্য্য ক্রপ শুণের তুলনা নাই। স্বাভাবিক তাহারা তপস্থার বিম্নাচরণ সর্ব্বদা করিয়া থাকে (৩৮)। সংবত্যামা মুনিগণ ভাহাদিগের সহিত একত্র কথন বাস করেন নাই এবং অত্মদ্ভ কলমূল ও মধুপান করেন নাই, ভাহা ধর্মানাই বিশেষ নিষেধ আছে, আর বিশেষ চিভোৎপলগদ্ধস্থক বাল্য মুনিগণের স্থাক্ (৩৯)। পরে সেই সমস্ত রাক্ষাদ

বলিয়া সাভশয়মেহবশতঃমন্তমাতক্ষবৎ ধৈর্যগুণাবলম্বনে অসহ-মান পুত্র ঋষাশৃক্ষকে বারম্বার নিৰারণক্ষম পিতা ফাশুপ বিভাওকম্নি বিধিৰোধিত তপস্থার নিমিত্ত কাননহইতে ফলক্স্মসবিধ্ সঞ্যানবাসনায় যৎকালে আশ্রমান্তর প্রস্থান করেন, তৎকালে ব্রন্ধচারিরপথারিণী বারনারী ঋষাশৃক্ষম্নির নিক্ট পুনরায় উপস্থিতা হইল (৪০)।

অশেষ লোভদর্শনুলোলনায় যৎকালে বারনারী ঋষ্যশৃক
মূনির নিকট উপস্থিতা ইইল। তৎকালে প্রস্থাইচিত ঋষ্যশৃক
বারনারীকে দৃষ্টমাত্রেই সদংভ্রাস্তরূপে গাত্রোখান (৪১) কিরিয়া বারনারীকে কহিলেন যে, যাবৎকাল আমার পিতা
এ আশ্রমে না আসিবেন, তাবৎকাল ভবদীয় আশ্রমে আমি
ভতাগমন করিব। পরে বারনারী মুনির নিকট এই কথা শ্রবণমাত্র কোন যোগংলে পর্ণশালার প্রবেশ করিয়া কাশ্রসের
শ্রেষ্টপূত্র ঋষ্যশৃক্ষমূনিকে সর্ক্ষিৰয় অনাশক্ত জীবাত্মপর্মাত্মতত্ত্বের অভেদচিত্তনরূপ সমাধি ভক্ক করিয়া তরণীমধ্যে অবরোহ্ব করাইল (৪২)। পশ্রাৎ অশেষ উপায়ে ধ্বাশৃক্ষমূনি-

অন্তঃপুরে তন্ত নিবেশ্য রাজা
বিভাণ্ডকস্থাত্মজমেক পুত্রম্ ॥ ৪০ ॥
দদর্শ দৈবং সহসা প্রবৃষ্ঠমাপ্র্যানাক্ষ জগজ্জলেন।
স লোমপাদঃ পরিপূর্ণকামঃ
স্থতাং দদৌ ঋষ্যশৃঙ্গায় শান্তাম্ ॥ ৪৪ ॥
ক্রোধপ্রতীকারকরক চক্রে
গা শ্চৈব মার্গের্ চ কর্ষকাণি।
বিভাণ্ডকস্যাত্রজতঃ স রাজা
পশ্ন্ প্রভূতান্ পশুপাংশ্চ বীরান্ ॥ ৪৫ ॥
সমাদিশৎ পুত্রমার্গী মৃহর্ষিবিভাণ্ডকঃ পরিপুচ্ছেদ্-যদা বঃ।
স বক্রবঃং প্রাঞ্জলিভি-ভবিদ্তঃ
পুত্রস্য তে পশবঃ কর্ষকঞ্চ ॥ ৪৬ ॥

অথোপজাত সমুনি শ্চুকোপ
স্থমাশ্রমং ফলমূলং গৃহীতা।
অন্তেমগণশ্চ ন তত্র পুত্রং
দদশ চুক্রোথ ততো-ভূশং সং॥ ৪৭॥
ততঃ স কোপেন বিদীর্যামাণআশক্ষমানো-নূপতে-বিধানম্।
জগাম চম্পাং প্রতিবীক্ষ্যমাণস্ত-মঙ্গরাজং সপুরং সরাস্ত্রম্ ॥ ৪৮॥
স বৈ প্রান্তঃ ক্ষুধিতঃ কাশ্রপ-স্তান্
ঘোষান্ দেশান্ সাদিচরান্ সম্কান্।
গোপৈশ্চ তৈর্বিধিবৎ পূজ্যমানোরাজেব তাং রাত্রি-ম্বাস তত্র ॥ ৪৯॥
আবাপ সৎকার-মতীব তক্ষ
প্রোবাচ কস্য প্রহিতাঃ স্থ গোপাঃ।

স্মভিব্যাহারে সাতিশয় প্রমোদমান বারাঙ্গণাগণ অঙ্গাধিপ-রাজধানী সমুপস্থিত হইলে, বারাজণাত্রয়সমভিব্যাহারে কাশুপ विजा ७ क पूज श्रया मुझ मूनि बाक् धानी चानि बाहिन, वहेक्यी দৃতমুখাৎ প্রবণমাত্রে সাতিশয় আনন্দ চিত্ত নৃণতি অন্তঃপুরমধ্যে মুনিকে প্রবেশ করাইবামাত (৪০) দৈব্য অমৃতবর্ষণকরতঃ জগৎসংসার পরিপুরণ করিলেন্। এই ष्यां कि क वार्शात नर्गान शूर्वमन द्वाम लामशान नत्र शिष्ठ अया-শৃঙ্গন্কে শাস্তানামী ক্লাপ্রদান করিলেন (৪৪)। অনস্তর অংথজের অপেষণার্থ রাজ্যে অবশ্রুই গুভাগমনকারী বিভাওক-মুনির ক্রোধপ্রভিকারকর কতিপয় স্বৎ্যাধেরুও কর্ষকর্যণ প্রভূত পণ্ড এবং বীরপশুপদকল পথিমধ্যে নরপতি লোমপান স্থানে স্থানে নিয়োজিত করিয়া (৪৫) তাহাদিগকে লোমপাদ নরপতি এই অনুমতি করিলেন্ ষে, পুত্রমার্গী মহর্ষি বিভা-ওকমুনি এপর্যান্ত আসিয়া, এই সকল পশু ও পশুপাল কোন ताजात ? এই कथा यथन टाभानिशतक जिल्लामा कतिरवन, ত্যন তোমরা কুতাঞ্জলিপুর্বক অতিবিনীতভাবে কছিলে যে,

এই সমস্ত পশু ও কর্ষকগণ মহাশয়ের পুত্রের (৪৬)। অনস্তর বহুক্ষণ পুত্রদর্শনলালসায় সাতিশয়োৎস্থক কলমূলহস্ত অগ্নিহোত্র-পরায়ণ বিভাওকম্নি অবিলম্বে আশ্রমপদপ্রাপ্তে স্বাশ্রমে পুত্রকে না দেখিয়া ইতস্ততঃ অবেষণকরতঃ নিভাস্ত ক্রোধ-পরবশ হইলেন্ (৪৭)। পশ্চাৎ ক্রোধাগ্রিবিদীর্যমাণ মুনি লোমপাদনপতির চরিত্রের চাতুর্যুতা আশক্ষা করিয়া ভ্রাবিক্ষেপে সপুর সরাষ্ট্র অঙ্গরাজ অবলোকনকরতঃ চাম্পানগরী প্রতি ধাব-মান হইয়া (৪৮) কিয়দ্রে আসিয়া পথিমধ্যে শ্রাস্ত ও ক্ষ্পিত কাশ্রপ ঘোষ দেশ প্রভৃতি প্রচূর পশ্বাদিবিভ্ষিত বিলম্পণ-সম্পত্রিযুক্ত নগর দেখিয়া তত্রস্থ গোপগোপিকা গোপবালক-কর্ত্বক রাজবৎ যণাবিধি পূজ্যমান মুনি এক রজনীকাল অতিবাহিত করিয়া (৪৯), অতিসৎকারপ্রাপ্ত মুনি তত্ত্রস্থ পশুপালক গোপগণকেভিজ্ঞাসা করিলেন যে,ওহে বাপু গোপগণ। ভোমরা কাহাকর্ভ্বক প্রেরিত হইয়াছ ? এই কথা শ্রবণমাত্র অতিবিনীত ভাবৎ গোপগণ মুনির নিকট ক্ষতাঞ্জলিভাবে আসিয়া "এই

উচু ন্তত তেহভূপগম্য দর্কে ধনং তবেদং বিহিতং স্কৃত্রস্য ॥ ৫০॥। এবং সদেশেষভিপূজ্যমান- * खाः-रिम्हरः मृगुन् सश्कृ श्रामाभान्। প্রশান্তভূয়িষ্ঠরজাঃ প্রহাটঃ সমাসসাদাঙ্গপতিং পুরস্থ্য n ৫১ দ পূজিত-স্তেন নরর্ষভেণ ममर्भ भूजः मिति (मत-शिक्तः। শান্তাং সুষাং চৈব দদৰ্শ তত্ত্ৰ त्मीनामिनीयूक्तत्रखीः यत्थव ॥ ৫२ ॥ আমাংশ্চ ঘোষাংশ্চ হুত্স্য দৃষ্ট্য শান্তাঞ শান্তস্য পরঃ সকোপঃ। চকার তাম্মে চ পরং প্রসাদং বিভাণ্ডকো-ভূমিপতের্নরেন্দ্রঃ ॥ ৫৩ স তত্র নিঃক্ষিপ্য স্থতং মহর্ষি-রুবাচ সূর্য্যাগ্রিসমপ্রভাবঃ।

সমস্ত ধন আপনার পুত্রের" এই কণা গোপগণ নিবেদন করিল (৫০)। পরে সেই দেশে এইরূপ সর্বভোভাবে পূজ্যমান এবং পশুরব ও পশুপালক গোপগোপিকাদিগের মধুরালাপ-শ্রবণে প্রশাস্তভূমির্চরজা প্রস্কৃতিকা কাশুপ পুরস্থ অঙ্গতিকে ক্রমশঃ প্রাপ্ত ইইলেন্ (৫১)।

জনন্তর, নরশার্দ্দৃল লোমপাদন্পতিপৃত্তিত মৃনি যেন দেবালয়ে দেবরাজইক্রসমতনর এবং অলোকিকরপদেদী-পামান। দৌদামিনাসদৃশী শাস্তানায়ী পুত্রবধুমুবসমবলো-কনে স্তৃচিত্ত পুত্রের পূর্বেক্তি গ্রামপশুলোষবর্গ প্রভৃতি অভ্ল ঐর্থা দেবিয়া বিভাগুক প্রচণ্ড হইলেও ভূমিপতির প্রতি পরম প্রসন্ন হইলেন (৫২)(৫০)। তৎপরে লোমপাদন্পতি-রাজ্যে পুত্র ও পুত্রবধ্ রাধিয়া ত্র্যা অগ্নিমপ্রভ মহর্ষি মহারা-জার সমস্ত প্রিয়কর্ম্ম সম্পাদনান্তে ও তোমার পুত্রোৎপত্তি হইলে জাতে তু পুত্রে বনমাত্রজেথা
রাজ্ঞঃ প্রিয়াণ্যস্য সর্বাণি কৃত্বা ॥ ৫৪ ॥
স তদচঃ কৃতবান্য্যশৃঙ্গো
যযৌ চ যত্রাস্য পিতা বভূব।
শাস্তা চৈনং পর্যাচরদ্যথা বৈ
থে রোহিণী সোম-মেবং তথা সা ॥ ৫৫ ॥
অরুদ্ধতী বা স্তভগা বশিষ্ঠং
লোপামুদ্রা বাপি তা হুগস্ত্যম্।
তথা শাস্তা ঋষ্যশৃঙ্গং বনস্থং
প্রীত্যা যুক্তা পর্যাচরন্ধরেক্তঃ ॥ ৫৬ ॥
ইতি তে সর্বমাথ্যাতং ঋষ্যশৃঙ্গপরাক্রমং।
তমানয় মহারাদ্ধ যস্তে যজ্ঞং করিষ্যতি ॥ ৫৭ ॥
তথেতি মুনিমানীয় মন্ত্রিভিঃ সহিতঃ শুচিঃ।
যক্তবর্গ্ম সমারেভে মুনিভিবীতকলাবৈঃ ॥ ৫৮ ॥

বানপ্রস্থাশ্রম গমন করিবে (৫৪),পুত্রকে এইরপ আদেশ প্রদান করিলে অতিবিনীত ঋষ্যশৃঙ্গ যে আজ্ঞা বলিয়া পিতৃবাব্য প্রতিপালনে তৎপর হইলে, বিভাশুক স্বস্থানে প্রস্থান করিয়া-ছিলেন (৫৫)। পরে বশিষ্ঠসমীপে স্বভগা অকল্পতী প্র অগস্ত্যান্নিসমীপে রাজকন্তা লোপামুদ্রা, ইহারা যদ্রপ পত্তি-সেবার্টানে আশক্তা ছিলেন, তদ্রপ গগণমগুলে রোহিণীসমা শাস্তা শশধরসদৃশ বনস্থ ঋষ্যশৃঙ্গপতি শুক্রষাপরায়ণা ছিলেন (৫৬)। তৎকালে বশিষ্ঠমুনি রাজা দশরথের নিকট এইরশ সমস্ত ঋষ্যশৃক্ষর পরাক্রম নিবেদনকরিরা কহিলেন যে, মুখারাজ। যিনি আপনকার যক্ত করিবেন,সেই ঋষ্যশৃক্ষমুনির আন্মরনে যত্বান্ হউন (৫৭)।

অনস্তর অযোধ্যাপতি শ্রীমান্ দশরণ কৃতায়ালিভাবে
কৃলপুরোহিত গুরু বশিষ্ট-বাক্যশ্রবণে সচিবস্থিত পরামশ
সমাপনাস্তে অফাধিপরাজধানী চম্পানগরী হইতে বভুনহকারে
মহর্ষি বিভাগুকম্নিকুমার মহাতপা তপোধন ঋষাশৃক্ষম্নি
অপুরে সমানীত হইলে পরমপ্ষিত্রভাবে নিতাক্কত্যনিকাহে
বীতক্ষ্ম উক্ত মুনিগণের সহিত ষ্থাৰিধি পুত্রেষ্টিয়ন্ত ক্ষ

শ্রেমানেইমো তপ্তজাম্নদপ্রভঃ।
পায়দং স্বৃপাত্তমং গৃহীজোবাচ হব্যরাট্॥ ৫৯॥
গৃহাণ পায়দং দিবাং পুত্রার্থং দেবনির্মিতং।
লক্ষ্যদে পরমাত্মানং পুত্রত্বেন ন দংশয়ঃ॥ ৬০॥
ইত্যক্ত্রা পায়দং দত্বা রাজে দোহন্তদ্বেইনলঃ।
ববন্দে মুনিশাদূলো রাজা লক্ষমনোরথঃ॥ ৬১॥
বশ্চি-ঝ্যাশুসাভ্যামনুজ্ঞাতোদদো হবিঃ।
কৌশল্যায়ৈ সকৈকয়ৈয় হর্দ্মর্দ্ধণ বিভজ্য দং ম ৬২॥
ততঃ স্থমিত্রা সংপ্রাপ্তা জগৃহে পৈষ্টিকং চরংং।
কৌশল্যা তু স্বভাগার্দ্ধং দদো তদ্যৈ মুদান্বিতা॥ ৬৩॥
কেকয়ী চ স্বভাগার্দ্ধং দদো প্রাতিসমন্বিতা।
উপভুজ্য চরুং সর্ব্বাং দ্রিয়ো গর্ত্ত্বসমন্বিতাঃ॥ ৬৪॥
দেবতা-ইব তা-রেজুং স্বভাসারাজমন্দিরে॥ ৬৫॥

ছারস্ত করিলেন্ (৫৮)। পরে অতিশ্রদাভক্তিসহক্ত প্রবৃদ্ধ यक्कीम एठा भन श्रम् अस्तिक र्कृक आहू मनान ६ हे ल्, उश्रकाश्र নদ্প্ত হ্বারাট্স্ব্পাত্রস্ পার্স গ্রহণক্রিয়া মহারাজকে ক্হিলেন্ বে,(৫৯) মহারাজ ৷ এইপুত্রার্থ দেবনিশ্বিত দিবাপায়স গ্রহণ করুন। ইহাতে প্রমাত্রা পুত্লাভ করিতে পারিবেন, তাহার সংশয় নাই; (৬০) এইবলিয়া রাজাদশরথকে পায়স প্রদা-নাত্তে পূর্ণাহৃতি হ্রনদানে অতিস্পুর্ত্ত অনল অইছিত হউলে, लक्ष प्रतातथ ताङा न न तथ प्रतिश्रुष्ठ व निष्ठे अधा मृष्ठ प्रतिगरनत শ্রাচরণারবিক্ষযুগলে সাষ্টাঙ্গে প্রাণিপাত করিলেন (৬১)। অন-স্তুর অবনিপাল বশিষ্ট ঝ্যাশৃঙ্গকত্ত্বক অনুজ্ঞাত হবি ছই অংশে বিভক্ত করিয়া, একাংশ কৌশল্যাকে অপরাংশ কৈকেয়ীকে व्यमान कतिरलन् (७२)। পरत व्यव्यका त्वाना निकाश्यन অদ্ধাংশ পৈষ্টিকচরু স্থানিতাকে প্রদান করেন আর প্রীতি ভারোপরা কৈকেরীও নিজাংশের অর্দ্ধাংশ চরু স্থমিতাকে সমর্পণ করিলে, একতা তিস্ত রাজমহিয়া পায়সচরু ভোজনাত্তে সকলেই গর্কক্ষণ ধারণকরতঃ রূপগুণ ও দিব্য।লক্ষার বস্তাদিবিভূষণের সম্ভল্লতার অধিকতাহেতু দেবতাসমা রাজভবনে বিরাজ क्तिर ड नाशिन (७०) (७४) (७८)।

দশমে মাদি কৌশল্যা সমুবে পুত্রমব্যাং।
মধুমাদে দিতে পক্ষে নব্যাং কর্কটে শুভে ॥ ৬৬ ॥
পুনর্বস্ক্রসহিতে উচ্চত্তে প্রহপক্ষকে।
মেষং পূষণি সংপ্রাপ্তে পুষ্পর্ষ্টিসমাক্লে ॥ ৬৭ ॥
আবিরাদীজ্জগন্নাথঃ পরমাত্মা সনাতনঃ।
নীলোৎপলদলশ্যামঃ পীতবাসাশ্চভুভু দিম্ ॥ ৬৮ ॥
জলদারুণনেত্রান্তঃ স্ফুরৎ কুগুলমণ্ডিতঃ।
সহস্রার্ক প্রতীকাশঃ কিরাটা কু কেতালকং ॥ ৬৯ ॥
শঙ্কাচক্র গদাপদ্মবন্মালাবিরাজিতঃ।
অনুগ্রহাথ্যক্রংকেন্দুন্চকঃ স্মিতচন্দ্রকঃ॥ ০ ॥
করুণারস্বংপুরাদ্বিভূষণঃ॥ ৭১ ॥
দ্বীবৎসহ্রকেয়্রন্পুরাদ্বিভূষণঃ॥ ৭১ ॥
দ্বী তং পর্মাত্মানং কৌশল্যা বিস্মাক্লা
হর্ষাপ্র্নাম্যনা নত্রা প্রাঞ্জিন্মব্রবিৎ॥ ৭২ ॥

অনস্তর কৌশলা সম্পূর্ণদশনমাস প্রাপ্তাবহার ক্রাদের মেষরাশি গমন করিলে, কর্থাৎ চাল্র-চৈত্রমাসের শুরুপকাষ নবমীতিথিতে কর্কটলয়ে পুনর্বস্থাক প্রথমকতে প্রহপঞ্চক উচ্চপদ্ধ হুটলে, মধ্যাকুলালে অক্ষরপুত্র প্রস্ব করিবার সময়ে অমরগণ কুস্থাবর্ষণে ব্যাক্লিত হুটলে, প্রমাত্মা সনাতন জলনাথ আবিভূতি হুটলেন (৬৬) (৬৭) *। নীলোৎপল্দল্খান, পীত্রসন, চতুভূজি, কোকন্দবৎ অরুণ্বর্ণ নয়নান্ত, দীপ্তি-বিশিষ্ট কর্বক্ষালশোভিত, সহস্রস্থাসদৃশম্কুটালকার, প্রভিভ্ অলক্তিলকার্ণা, শৃষ্ঠাক্রাপ্রাদিবিভ্রণ, হুর্লাঞ্প্র-স্বন্ধ, চল্লস্টক ঈষ্দাশ্রম্প্রাদিবিভ্রণ, হুর্লাঞ্প্র-নম্মা বিশ্বশাকুলা কৃতাঞ্জলি কৌশল্যা ঈদৃশ প্রমাত্মারূপ পুদ্ধ

*৬৬ — ৬৭। উক্ত মূলে যদাপি মধ্যাক্ষকাল কাই, তথাপি অতিতেজঃপুঞ্জ
যাস্যবংশীয় জীরামচন্দ্রের জন্মকালিন সমস্ত অন্ধকার পালায়ন করিয়াছিল,
একারণ অক্ষবাদে লেখা হইল যেহেতু প্রাণান্তরে মধ্যাক্ষকাল বিশেষ বর্ণিক
আছে; "কিম্বা মধ্যাহে জন্ম ভাবরেং" ইতি তিথিতকে আর্ভিভটোচার্যা মহাশরের লিখিত আছে, অতএব অনুবাদ অত্যন্ত নীরসভাবহেতু সধ্না নধ্যাক্ষকাল উল্লেখ হইল।

किंगतारायाः।

দেবদেব নমস্তভ্যং শশ্বচক্রগদাধর।
পরসায়াচ্যতোহনস্তঃ পূর্ণস্তিং পুরুষোভন ॥ ৭৩॥
বদস্তাগোচরং বাচাও বুদ্ধাদীনামতীব্রিয়ন্।
দ্বাদেবেদিনঃ সভামাত্রং জ্ঞানৈকবিগ্রহন্॥৬৪॥
দ্বাদেগুলিঃ সূথ্য এবামলঃ সদা॥ ৭৫॥
করোদাব ন কর্তা হং গচ্ছসীব ন গচ্ছসি।
ন শুণোষি শুণোষীব পশ্যসীব ন পশ্যসি॥ ৭৬॥
সপ্রাণোহ্যনাঃ শুলুইত্যাদি শ্রুতির্ব্রহি।
সমঃ সর্বেষ্ ভূতেষু তিষ্ঠন্নপি ন লক্ষ্যসে॥ ৭৭॥
স্থানেবান্তি ভানাং ব্যক্ত-এব স্তমেধসাম্।
দ্বির তব দৃশান্তে ব্রন্ধাণ্ডঃ প্রমাণ্ডঃ॥ ৭৮॥

হং মমোদরশং ভূত ইতি লোকান্ বিজ্সাদে।
ভক্তেমু পারবশ্যন্তে দৃষ্ট্যং মেবদ্য রঘুদ্ধহ ॥ ৭৯ ॥
সংসারসাগরে মগা পতিপুত্রধনাদিষু।
ভ্রমামি মায়গা তেহদ্য পাদমূল মুপাগতা ॥ ৮০ ॥
দেব স্বজ্ঞপমেতন্মে সদা তিষ্ঠতু মানসে।
আরণোতু ন মাং মায়া তব বিশ্ববিমোহিনী ॥ ৮১ ॥
উপসংহার বিশ্বাজ্মান্তজ্ঞপমলোকিকম্।
দর্শয়র্শ মহানন্দং বালভাবং স্তকোমলম্।
ললিতালিঙ্গনালাপৈ স্তরিষ্যামূৎকটং তমঃ ॥৮২॥

শ্রিভগবানুবাচ।

যদ্যদিষ্টং তবাস্ত্যন্ত তত্তত্ত্বতু নাম্থা। ৮৩। অহস্ত ব্রহ্মণা পূর্ববং ভূমের্ভারাপকুত্ত্যে।
প্রাথিতোরাবণং হস্তঃ মানুষত্বমুপাগতঃ। ৮৪।
ত্থ্যা দশর্থেনাহং তপদারাধিতাঃ পুরা।

সক্ষানে বিনীতভাবে কহিতে লাগিলেন (৬৮) (৬৯) (৭০)

হে দেবদেব ! তুভাং নমামি, হে শত্মচক্রগদাধর ! তং পরমাত্মা, ও অচাত, অর্থাৎ পতন না থাকায় অচ্যত, অন্ত না থাকায় অনন্ত অংশ না থাকায় পূর্ণ, অবক্ষতা না থাকায় পূর্কষোত্ম (৭০), তুমি বাকোর অগোচর, বৃদ্ধ্যাদির অতীক্রিয়, ভগবদ্ধাদিবেদিগণ আপ নাকে জ্ঞানময়মাত্র শরীর, অর্থাৎ সচিদানন্দবিগ্রহ সন্তামাত্র বিলিয় বিদিত, আছেন (৭৪)। তুমিমায়াদারা সচরাচার ব্রহ্মাণ্ডের স্ট্রন্থিতি প্রলয়করণের মুখ্য কর্তা; সত্ত্ররজন্তমোণ্ডণযুক্তবপুং, সাক্ষাৎক্রোতিঃ পদার্থ, স্থ্যবৎ নির্ম্মণ (৭৫); তুমি কর্ম্ম কর, কিন্তু । কর্মের কর্তা নও; তুমি গমন কর, কিন্তু গমনের কর্তা নও; তুমি প্রবাকর; কিন্তু শুন নাই; তুমি দেখেও দেখ নাই (৭৬); তুমি অপ্রাণ, অমন, নিতাণ্ড ভাইত্যাদি ক্রান্তি কহেন। তুমিসর্কপ্রাণিতে সমভাব অবলম্বন করিলেও কাহাকর্ত্বক লক্ষিত হও নাই (৭৭); তুমি অপ্রাণির জ্ঞানদাতা, অব্যক্তজনের ব্যক্তরূপ; তব জঠরে পরমাণক্রপ সমস্ত ব্রহ্মাণ্ড দৃষ্ট ইইতেছে (৭৮)। তুমি এই হত-ভাগ্যার উদরে উৎপন্ন হইয়া কি সমস্তলোকবিত্রনা করিতেছ ?

হে রঘুকুলোদ্ব ! অদ্য ভবদীয় ভক্তের প্রতি পারবশ্বতা আমা
কর্ত্ব দৃষ্ট হইল (৭৯)। ভগদিখবিমোহিনী মায়া বাধ্যবশত:
পতিপুত্রধনাদিরূপসংসারসাগর তীব্রতরঙ্গকল্লোলে অনবরত
ভ্রমণ করিয়া অদ্য ভবদীয় শ্রীপাদপদ্মম্ল প্রাপ্ত হইলাম(৮০)।হে
দেব। তোমার এইরূপ মম মানসে যেন সর্কদাই থাকে,তাহাতে
তব বিশ্ববিমোহিনী মায়া আমায় যেন আবরণ না করিতে
পারে(৮১)। হে বিশ্বাস্থন্! এই অলৌকিকরূপলাবণ্যসম্বরণকরিয়া
সম্প্রতি নহানন্জনক বাল ভাব অতিস্ক্রেমালরূপ নয়নপদ্ম
আনিয়া আলিঙ্গন ও আলাপনস্ভাষণাদিদ্বারা উৎকটতমোরাশিকে বিনাশ করিয়া ভব্যস্ত্রণাহইতে পরিস্তাণ পাই (৮২)।

অনন্তর কৌশলার এবং প্রকারে ত্তবে পরিতৃষ্ট জগবান্ কৌশল্যাকে কহিয়াছিলেন, হে মাতঃ! তোমার বাহা বাহা অভীষ্ট আছে, তাহা তাহাই সিদ্ধ হইবে, তাহার অন্তথা হইবে না (৮৩)। আমি ভূভারহরণ করিবার বাসনায় পূর্কে ব্রহ্মাকর্ভৃক্ প্রাথিত হইয়া দশাননবধ করিবার নিমিত্ত মানবজন্ম প্রাপ্ত হইন য়াছি (৮৪)। হে অনিশিতে! পূর্কে আমায় পুর্বেচ্ছাকরতঃদশরথ মংপুত্রস্থাভিকাজিশ্য তথা কৃতমনিন্দিতে ॥ ৮৫॥ রপমেতত্ত্ব্যা দৃষ্টং প্রাক্তনং তপসং ফলং।
মদ্দর্শনং বিমোক্ষায় কল্পতে হায়ত্ব্র্লভং ॥ ৮৬॥ সম্বাদমাবয়োর্যস্ত পঠেদ্বা শৃণুয়াদপি।
স যাতি মম সারূপ্যং মরণে মংস্থৃতিং লভেৎ ॥৮৭॥ ইত্যুক্ত্বা মাতরং রামোবালোভূত্বা রুরোদ হ ॥৮৮॥ বালোমহেন্দ্রনীলাভো-বিশালাকোহতিহ্বন্দরঃ। বালারুণপ্রতীকাশোলালিতাখিললোকপঃ ॥৮৯॥ অথ রাজা দশরথং শ্রুত্বা পুত্রভবোৎসবং। আনন্দার্ণবমগ্রোহ্সাবায্যে গুরুণা সহ॥ ৯০॥ রামং রাজীবপত্রাক্ষং দৃষ্ট্যা হ্রাশ্রেচ্সংপ্লুতঃ। গুরুণা জাতকর্মাণি কর্ত্ব্যানি চকার সং॥৯১৪ কৈকেয়ী চাথ ভরতমসূত কমলেক্ষণং।

স্থানি বামাণ কাতে। পূর্ণেন্দুসদৃশাননো ॥৯২ ॥
তদা প্রামসহস্রাণি ব্রাক্ষণেভ্যো-মুদা দদৌ ।
স্থানি চ রত্বানি বাসাংসি স্থারভীঃ শুভাঃ ॥ ৯০ ॥
যুক্মিনুমন্তে মুনয়ো-বিদ্যয়া জানবিপ্লবে ।
তং গুরুঃপ্রাহরামেতি রমণাজাম-ইত্যাপি ॥ ৯৪ ॥
ভরণান্তরতোনাম লক্ষণং লক্ষণান্থিতং ।
শক্রত্বং শক্রহন্তারং এবং শুরুরভাষত ॥ ৯৫ ॥
লক্ষণো রামচন্দ্রেণ শক্রত্বো-ভরতেন চ ।
দক্ষিভ্য চরন্তো তো পায়সাংশানুসারতঃ ॥ ৯৬ ॥
রামস্ত লক্ষণেনাথ বিচরন্ বাললীলয়া ।
রম্য়ামাস পিতরো চেষ্টিতৈর্ম্ভ্ভাষিতৈঃ ॥ ৯৭ ॥
ভালে স্থামণিব্রাতং মধ্যে দ্বীপিনখাঞ্চিতং ॥৯৮॥
কণ্ঠে লগ্মণিব্রাতং মধ্যে দ্বীপিনখাঞ্চিতং ॥৯৮॥

ও তোমাকর্ত্ব অভিকঠোর তপস্থাচরণ করিলে, আমি উক্ত তপস্থায় আরাধিত হইরা পুত্রত্তাবঅঙ্গীকার করি। একণে সেই প্রাক্তনতপস্থার ফলবশতঃ আমার এই অলোকিকরপ তৃমি দর্শন করিলে, অস্তের স্থল্ল আমার এই রপদর্শন কেবল তোমার মৃক্তিনিমিন্ত কল্লিত হইরাছে (৮৫)(৮৬)। যে জন আমাদিগের ছই জনের কথোপকথনরূপ সন্ধাদ পাঠবা প্রবণ করিবেন্ তাঁহারা আমার সারূপরূপপদ প্রাপ্ত হইরা মৃত্যুকালে আমার নামন্মরণ লাভ করিতে সমর্থইইবেন্ (৮৭)। শ্রীরামমাতাকে এইবলিয়াবাল-ভাবপ্রাপ্তে রোদন করিতে বাসনা করিলেন্ (৮৮)। উক্ত বালক মহেন্দ্রনীল পর্বতের স্থার নীলবর্ণ, বিশালচক্ষ্, জতি স্থগঠন হেত্ সন্দর, প্রাতঃকালের অরুণসদৃশ পদতল, যাহার পালনে সমস্ত লোক প্রতিপালনহয় (২৯)। অনস্তর পুত্রোৎপত্তিজন্য মহামহোৎ সব প্রবণে আনন্দার্গবে মন্ম রাজা শ্রীমান্ দশর্থ পুত্রমুথ সমব-লোকনার্থ গুরু বশিষ্ঠ মুনির সহিত স্থিকাবানে সমন করি য়াছিলেন্ (১০)।

পরে পদ্মপলা শলোচন প্রীরামম্থদর্শনে, পর্ম হর্ষ সাগ্রেন্থিত নয়নধারাতিবিক দশর্থ কুলগুরু বশিষ্ঠমূনি কর্তুক কর্ত্তব্য

জাতকর্মাদি সম্পাদন করিলে (১১), কৈকেয়ী ভরতকে ও স্থমিত্রা পূর্ণেন্সদৃশানন লক্ষণ আর শক্তম হুইপুত্র প্রস্ব করিলেন্(৯২)। অনস্তর গ্রামসহস্র ও স্বর্ণাদি নানারত্ব সবস্ত্র ধেরু ব্রাহ্মণদিগের বাজা প্রদান করিতে লাগিলেন্ (৯৩)। পশ্চাৎ যে জ্ঞান সাগরে মুনিগণ বিদ্যাহেতু রমণ করেন, তাহাকে রাম বলিয়া গুরু বশিষ্ঠ সম্ভাষণ করিলেন, অথবা রমণাৎ রামরমণ হেতু রামনাম প্রকাশ করিলেন, (১৪)। পরে গুরু ভরণ-হেতু ভরত, লক্ষ্পযুক্ত দেখিয়া লক্ষণ, শক্রবিনাশে সক্ষম দেখিয়া শক্রত্ব নাম রাখিলেন্ (৯৫)। এইরূপে পুত্রচতুষ্টয়ের নামকরণ নিষ্পত্তি হইলে, রামের সহচর লক্ষণ,ভরতের সহচর শত্রুত্ব,এইরূপ ছন্দীভাবে পায়সাংশারুসারে ৰিচরণ করিতে লাগিল (৯৬)। অনস্তর শ্রীরাম বাল্যাবস্থায় লক্ষ-ণের সহিতইতস্ততঃ বিচরণকরতঃ কোমল অস্পন্তাক্ষর বাক্যমার অভ্যেক্ত চরিত্রের সুশীলতাচরণদারা জনকজননীকে কি পর্যাস্ত আনন্দচিত্তে রাথিতেন, তাহা অনির্বাচনীর (৯৭)। জ্রীরাম বালা।-বস্থায় কি কি বেশভূষণ ছিল,গ্রন্থকার ভাগা বর্ণনা করিভেছেন্। কপালে স্বর্ণময় অখখপত্র আর মুক্তাফলের স্তায় রূপে দেদীপ্য-মান কঠে মণিময় হার,তাহার মধ্যন্থিত ব্যাস্ত্রনথশোভিত বক্ষঃ- কর্ণয়োঃ স্বর্ণসপদ্ধরত্বোজ্বলকপোলকং।

শিপ্তানমণিমঞ্জীরকটিস্ত্রাঙ্গদৈর্ঘুতং ॥ ৯৯॥

শ্বিতবক্তাল্পদশনমিন্দ্রনীলমণি প্রভং।
অঙ্গনে রিঙ্গমাণং তং তস্ত্র কালামুসর্বতঃ॥ ১০০ ।

দৃষ্ট্যা দশরথো রাজা কৌশল্যা মুমুদে তদা।
ভোক্ষ্যমাণোদশরথোরামমেহীতি চাদকৃৎ ॥১০১॥
আহ্বয়ত্যতিহার্দ্ধনে প্রেম্মা নায়াতি লীলয়া।
আনয়েতি চ কৌশল্যামাহ দা দ্মিতা হৃতম্॥১০২
ধাবত্যতি ন শক্ষোতি প্রফুং যোগিমনোহতিগং।
প্রহ্মন্ স্বয়মায়াতি কর্দ্মান্ধিত পাণিনা॥ ১০০॥
কিঞ্চিদ্গৃহীতা কবলং পুনবেব পলায়তে।

এবমানন্দদন্দোহো জগদানন্দকারকং।

মায়াবালবপুর্ম্বা রময়ামাস দম্পতীং॥ ১০৪॥

স্থল বিরাজিত নিষ্ক (৯৮)। এবং স্বর্ণময় কর্ণকুণ্ডলস্থিত যে রত্ত্ব, তাহাতে উজ্জ্বলিত গণ্ডযুগল, শব্দারমান মণিময় নৃতন নৃপুর, কটিস্ত্রস্থিত কেয়ুরয়্ক্ত (৯৯), কথন কখন ঈষ্ৎ হাশ্মযুক্তবদন্হইতে অল অল দস্তদ্ভদ দৃষ্ট হয়, ইক্রনীলমণি সদৃপর্বপ শ্রিরাম তত্ত্বংবালে এইরূপ পুরস্থিত প্রাক্ষানে স্থাভিত থাকি তেন (১০০)।

এই দেখিরা রাজা দশরথ ও কৌশলা পরমপ্রীতি প্রাপ্ত

হইতেন্। পরে ভোজন সমরে ক্ষিতিপতি দশরথ স্বেহভাব

বশত: "রাম! আইস আইস" বলিয়া বারম্বার সাদরে আহ্বান

করিলে (১০১), প্রেমলীলাভাব প্রযুক্ত কথন রাম মহারাজের

নিকট না আসিলে, মহারাজ কৌশল্যাকে কহিতেন্, "রামকে

আনরন কর।" পরে হাস্তবদনা কৌশল্যা পুপ্রের প্রতিধাবমানা

হইতেন (১০২), কিন্ত যোগিগণের অধ্ব্যি প্রীরামকে ধরিয়া

আনিতে সমর্থা হইতে না। পরে ধ্লিধ্সিরিত হস্ত রাম স্বরং

হাস্তবদনে নিকটে আসিয়া এক গ্রাস গ্রহণ করিয়া প্রনার

পলায়ন করিতেন্। এইরপে আনন্দরসে পরিপূর্ণ এবং জগদা
নন্দকারক রাম মায়াভাববশতঃ বালবপুঃ ধারণ-করিয়া উক্ত

কৃশ্লিতীকে পরিতৃপ্ত করিতেন্ (১০৩)(১০৪)। অনস্তর কিয়ং-

অথ কালেন তে সর্বের কৌমারং প্রতিপেদিরে।
উপনীতা-বনিষ্ঠেন সর্ব্রবিদ্যাবিশারদাঃ ॥ ১০৫ ॥
ধন্মর্বেদে চ নিরতাঃ সর্ব্রশাস্ত্রান্ত্রবেদিনঃ।
বস্থুর্ব্জগতাংনাথা-লীলয়া নররূপিণঃ ॥ ১০৬ ॥
লক্ষণস্ত তদা রামমন্থগচ্ছতি সাদরং।
সেব্যসেবকভাবেন শক্রুদ্মো-ভরতস্তথা ॥ ১০৭ ॥
রামশ্চাপধরোনিত্যং ভূণীবাণাশ্বিতঃ প্রস্তুঃ।
অশারূটোচনং যাতি মুগয়ায়ৈ সলক্ষণঃ ॥ ১০৮ ॥
হত্বা দুক্তমুগান্ বন্থান্পিত্রে সর্ব্বং ন্থাবেদয়ৎ ॥১০৯॥
প্রাতরুত্থায় স্থুমাতঃ পিতরাবভিবাদ্য চ।
পৌরকার্য্যাণি সর্ব্বাণি করোতি বিনয়াশ্বিতঃ॥১১০॥
বন্ধু ভিঃ সহিতো নিত্যং ভুক্তা মুনিভিন্নহং।
ধর্মশাস্ত্ররহস্থানি শৃণোতি ব্যাকরোত্যপি ॥১১১॥
এবং পর্যাত্মা মনুজাবতারো-

মমুষ্যলোকানমুস্ত্য সর্বান্।

কালাবসানে বালকগণ কুমারাবস্থাপ্রাপ্তে বশিষ্ঠমূনিকর্তৃক উপনীত হইলে, সর্কবিদ্যাবিশারদ ও ধহুর্কেদে নিরত এবং সক্ষশাল্লান্তবিদ্যায় সবিশেষ পারগতা প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন। একারণ
জগতের নাথ লীলাভাবপ্রকাশ করিবার বাসনায় নররূপ ধারণকরিয়াছিলেন (১০৫) (১০৬)। পশ্চাৎ লক্ষ্যণ সাদরে সেবাসেবকভাবে শ্রীরামের অনুগত হইলে এবং শক্রন্ন ভরতের
সহচর হইলে (১০৭), সামুজ্ঞ রাম ধমুর্বাণতৃণীর ধারণ করতঃ
অখাবরোহণে মুগয়ানিমিত্ত বনগমনান্তে বস্তু হুট্ট মুগ বিনাশ
করিয়া শিতাকে সমর্পণ করিছেন্ (১০৮) (১০৯)। পরে
প্রতিদিবস প্রাতঃকালে শ্যাহইতে গাজোখান করিয়া প্রাতঃক্রত্যসমাপনাত্তে স্থলাত রাম জনকজননীর শ্রীচরণারব্দে
অভিবাদনানন্তর বিনীতভাবে সমস্ত্রপৌরকার্য্যনির্কাতে ভোকনাত্তে বন্ধুগণের সহিত প্রত্যাহ মুনিদিগের নিকটে বাইয়া
ধর্ম্মান্ত বাড্রাকাল্যার রহক্ত অধ্যয়ন ও ব্যাখ্যা
করিছেন (১১০) (১১১)। এইক্রপ পরিণাম হীন পরমান্ধা

চক্রেহবিকারী পরিণামহীনো-বিচার্য্যমাণো ন করোতি কিঞ্চিৎ॥ ১১২॥

মন্ত্রকাবতারে সমস্ত মন্ত্রের অধিকারী হইলেও মায়াধীন অনু-গত হইলেন; ক্রিব্র বিচার করিয়া দেখিলে, ঞীরাম কিছুই করেন নাই (১১২)। ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর-সংবাদে আদিকাণ্ডে রামাত্মৎপত্তি-র্নাম চতুর্থোহধ্যায়ঃ॥

এই অধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাতে রামাদির উৎপত্তিকথনত্রণ চতুর্থ অধ্যার উক্ত হইল।

পঞ্চোহ্ধায়ঃ।

শ্রীমহেশর-উবাচ।
কদাচিং কোশিকোহভ্যারাদযোধ্যাং জ্বনপ্রভঃ।
দ্রুত্বার্যাং পরাত্মানং জাতং জ্ঞারা স্বমায়য়া॥>॥
দৃক্তা দশরথোরাজা প্রত্যুথায়াচিরেণ তু।
বশিষ্ঠেন সমাগম্য পূজ্যিয়া যথাবিধি॥২॥
প্রত্যুবাচ মুনিং রাজা প্রাপ্তালিভক্তিন্ত্রধীঃ।
কুতার্থেহিম্ম মুনীক্রাহং জ্বাগমনকারণাং।৩॥
ব্বিধা-যদ্গৃহং যান্তি তব্রেবায়ান্তি সম্পদ্য॥৪॥

শীমংশর কহিয়াছিলেন, অষ্টনঘ্টনপ্টীয়নী স্বকীরমারাশক্তিসহকারে পরমায়া জন্মিরাছেন, এইট অসামান্ত নিজবোগপথাৰল্যনে সমস্ত জানিয়া কোন দিবস শ্রীয়মসন্দর্শনার্থ বৈশানরোপমরূপ কৃশিকতনয় বিশামিত্রমূনি অবোধ্যাপুরী সমাগত(১)
দেখিরা রাজা দশরথ অচিরে প্রত্যুখান করিয়া বশিষ্ঠমূনির
সহিত ব্থাযোগ্য পূজ্যপূজনাস্তে (২) ভক্তিনতকল্পর ভূমিপতিত
ব্দাঞ্জিলিভাবে মূনিকে কহিয়াছিলেন,হে মুনীক্র! ভবদীয় শুভাগমন কারণ আমি ক্লতার্থ হইলাল (৩), বিশেষ ভবদিধ ব্যক্তিগণ
বে স্থানে শুভাগমন করেন সমন্তসম্পত্তির সেন্থানেই আবির্জাব

যদর্থনাগতোহদি স্থং জহি সত্যং করোমি তং।
বিশ্বামিত্রোহপি তং প্রীতঃ প্রত্যুবাচ মহামতিঃ ॥৫॥
অহং পর্বাণি সম্প্রাপ্তে ইন্ট্যা যক্ষুং স্করান্ পিতৃন্।
যদারেভে তদা দৈত্যা বিস্থং ক্র্বেন্ডি নিত্যশং ॥৬॥
খারীচশ্চ স্থবাহুশ্চ পরে চানুচরান্তয়োঃ।
অতস্তরোর্বিধার্থায় জ্যেষ্ঠং রামং প্রযুদ্ধ মে ॥ ৭ ॥

হর (৪)। সম্প্রতি যদ্দিমিত্ত আগমন করিরাছেন,তাহা স্বাভিপ্রার প্রকাশ করন। আমি সে বিবরে সভ্যপ্রতিপালন করিব। পরে মহামতি প্রীতমনা বিশ্বামিত্র দশরথের প্রতি প্রত্যুত্তর প্রদানে সাহস করিতেছেন্ (৫)। চতুর্দদী অষ্টমী অমাবস্তা পোর্ণমাসী ও রবিসংক্রান্তি, এই পঞ্চপর্ককালপ্রাপ্তে দেবলোক ও পিড় লোক ভৃপ্তিকরিবার মানসে আমি দর্শপৌর্ণমাস্বাগ প্রস্তৃতি পিগুপিতৃষজ্ঞাপ্য প্রাদ্ধাদির অম্ভান যৎকালে আরক্ক করি, তৎকালে মারীচ স্থবান্ত প্রভৃতি আর মে কেছ তাহাদিগের অম্ভার আছে, সেই সমন্ত রাক্ষসরূপ দৈত্যুগণ প্রতিদিবস আসিয়া আমার তাবং যজ্ঞ নই করে; এই কারণ তাহাদিগের বধের নিমিত্ত শক্ষ্পান্তর জ্যেষ্ঠ প্রীরামকে যদি আমার সমর্পণ করেন্ (৬) (৭), তাহা ছইলে মহারাক্ত আপনকার পরম-

লক্ষাণেন সহ ভ্রাত্রা তব শ্রেরো ভবিষ্যতি।
বিশিষ্ঠেন মহামন্ত্র্য দীয়তাং যদি রোচতে ॥ ৮ ॥
পপ্রচছ গুরুমেকান্তে রাজা চিন্তাপরায়ণঃ।
কিং করোমি গুরোরামংক্যক্তবুংনোৎসহতে মনঃ॥৯॥
বহুবর্ষ সহস্রান্তে কন্টেনোৎপাদিতাঃ স্ততাঃ।
চহারো মম তুল্যান্তে তেষাং রাখোহতিবল্লভঃ॥১০॥
রামো যদা গচ্ছতি চেন্ন জীবামি কথঞ্চন।
প্রত্যাপ্যাতোযদি মৃনিঃশাপং দাস্তত্যসংশয়ম্॥১১॥
কপং শ্রেয়োভবেন্মহ্য-মসত্যঞ্চাপিন স্পৃশেৎ ॥১২॥
বিশিষ্ঠ-উবাচ।

শৃণু রাজন্ দেবগুহ্যং গোপনীয়ং প্রযন্তরঃ। রামোন মাকুষোজাতঃ পরমাত্মা সনাতনঃ॥ ১০॥ ভূমের্ভারাবতারায় ব্রহ্মণা প্রার্থিতঃ পুরা। সূত্রব জাতোভগবান্ কৌশল্যায়াং ত্রান্ম ॥১৪॥

মঙ্গল চ্ছাবে, সে বিষয় বশিষ্ঠমূনির সহিত সৎপরামর্শ করিরা যদি ভরতের অভিপ্রেড হয়, তবে দাতব্য করুন্(৮)। পরে চিন্তাপরায়ণ রাজা দশরণ নির্জ্জনে শুরু বশিষ্টমূনিকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, শুরো! এক্ষণে আমি কি করি, রামকে নয়ন পথের অতিবাহিত করিতে কোনসতে চিন্ত উৎসাহী হয় না (৯), কারণ বছবর্ষসহস্রান্তে অভিক্ষেত্র মম তুল্য চারি তনর উৎপর হইরাছে। তাহার মধ্যে রাম আমার অতিপ্রিয়-পাত্র (১০)। রাম বদি মুনির সহিত গমন করেন্, তবে তো আমি কথনই জীবিত থাকিবো না, আর মুনি যদি প্রত্যাখ্যাত হয়েন্, তবে নিশ্চয় আমায় অভিশপ্ত করিবেন (১১), তবে কির্মণে আমার নক্ষল হইবে, আর কির্পেই বা স্ত্যকথা প্রতিপালন করিব, উপার কি ? (১২)।

বশিষ্ঠ কহিলেন্,মহারাজ। প্রবণ করুন্। এই দেবভাদিণের শুপুক্থ যত্নপূর্ব্বক গোপন করিবে। রাম সামাল্য মানব নহেন, সাক্ষাৎ সনাত্তন পরমাত্মা (১৩), ইনি ভূভার হরণেচ্ছার পূর্ব্বে ব্রহ্মা কর্তৃক প্রাথিও হইয়া কৌশল্যার কঠরে ক্রব্রগ্রহণ করিয়:- ষস্ত প্রজাপতিঃ পূর্ববং কশ্যপোত্রেক্সণঃ হতঃ।
কৌশল্যা চাদিতিংপূর্ববং দেবমাতা যশস্বিনী ॥১৫॥
ভবস্তো তপ উগ্রং বৈ তেপাতে বস্ত্বৎসরং।
অগ্রাম্যবিষয়ে বিষ্ণুপূজাধ্যানেকতৎপরো ॥ ১৬॥
তদা প্রসন্ধো-ভগবান্ বরদোভক্তবৎসলঃ।
রশীষ্বরমিত্যুক্তো স্থং মে পুত্রো ভবানঘ॥ ১৭॥
ইতি প্রয়া যাচিতো-বৈ ভগবান্ ভূতভাবনঃ।
তথেত্যুক্তাদ্যপুত্রাস্তে জাতোরাম স-এব হি॥ ৮॥
শেষস্ত লক্ষ্যণো ত্বাজন্ রাম্যেবাশ্বপদ্যত।
জাতো ভরতশক্রম্মে শশ্বচক্রে গদাভ্তঃ॥ ১৯॥
যোগমায়া তু সীতেতি জাতা জনকনন্দিনী।
বিশ্বামিত্রোহপি রামায়তাং যোজ্যিতু মাগতঃ॥২০॥
এতদ্পুহ্যতমং রাজন্ ন শক্তব্যং কদাচন॥ ২১॥

ছেন (১৪)। তৃমি পূর্ব্বে ব্রহ্মারপুত্ত কল্পুপ প্রজাপতি ছিলে এবং वभित्रनो कोमलाा अपूर्व (मवमाछ। और्षिछ ছिलान (১৫)। তাহাতে বহুবৎসর অতিকঠোর তপস্তার আশক্তবিধার অস্ত রাজ্যাদি ঐশব্যে অভিলাষ না থাকায় কেব<mark>ুল সেই</mark> পরাৎপর পরমাত্মা বিষ্ণুর পূজন ও চি**স্ক**নাদিতেই একা<mark>(</mark>গ্রচিত্ত ছিল (১৬)। পরে অতিদয়ার্জচিত্ত ভক্তবৎসল ভগবান্ স্বসঞ্লবদনে বরদানে ধাবিত হইলে, ভোমর। দম্পতী ভগবান্কে পুত্রভাবরূপ বর याक्ता कतिरल (১৭), मर्क्क्डिंग्डावन छश्वान रेशानक्विशती ছবি তথাক্ত <লিয়া স্বীকৃতছিলেন। একারণ অদ্য[্]তবপুত্রতভাবে রামনামক রত্মকুলে অবতীর্ণ চ্ট্রমাছেন (১৮)। আগর জীরামের সেবা করিবার বাসনায় স্বরং অনস্তদেব লুগুরণনামে বিখ্যাত হইয়াছেন এবং গদাধরের শঙ্কাচক্রম্বরূপ ভূর্মত ও শক্রম্ব নাম-ধারণ করিয়াছেন (১৯), আর বোগমায়ুর্শসীতানায়ী কন্তা জনক-রাজভবনে জন্মিয়াছেন, সেই কছার্বার সহিত বিবাহ দিবার অভিকামে বিশামিত্রমূনি জীরামকে কাইতে আসিয়াছেন (২০)। যাহা হউক, হে রাজন ! এই গুপ্ততম ব্রাক্য কাহারও নিকটে कमाठ क्षकाम क्षिर्व ना (२১)। अकरनी श्रष्टीखः कद्रार्ग मूनिटक

ষতঃ প্রীতেন মনসা পূজ্যিত্বাথ কোশিকং। প্রেরয়স্ব রমানাথং রামাঞ্চ সহলক্ষাণং ॥২২॥ विभारकेरेनन-यूक-छ রাজা দশরথ-छा। । কৃতকৃত্য-মিবাত্মানং মেনে প্রমুদিতান্তরঃ॥ ২৩॥ আহুয় রামরামেতি লক্ষ্মণেতি চ সাদরং। আলিঙ্গ্য মূৰ্দ্ধ্যবন্ত্ৰায় কৌশিকায় সমৰ্পয়েৎ ॥২৪॥ ততোহতিহুটো-ভগবান্ বিশ্বামিত্রঃ প্রতাপবান্। আশীর্ভি-রভিনন্দ্যার্থ রাজানং রামলক্ষ্যুণী ॥২৫॥ গৃহীয়া চাপভূণীরবাণথড়গধরে শুভো। কঞ্চিদেশ মতিক্রম্য রাম-মাহুয় ভক্তিতঃ ॥ ২৬ ॥ ' দদে বলাঞ্চাতিবলাং বিদ্যে দ্বে দেবনিৰ্দ্মিতে। যয়োগ্র হণমাত্রেণ ক্ষুৎপিপাসা ন জায়তে॥ ২৭॥ তত উত্তীৰ্য্য গঙ্গাং তে তাড়কাবনমাগমন্। বিশ্বামিত্রস্তদা প্রাহ্ রামং সত্যপরাক্রমং॥ ২৮॥ অত্রান্তে তাড়কা নাম রাক্ষদী কামরূপিণী। বাধতে. লোকমথিলং জহি তামবিচারয়ন্॥ ২৯॥ যণাবিধি পূজা করিয়া সলক্ষণ রমানাথ রামকে প্রেরণ করন্(২২)। পরে এই রূপ বশিষ্ঠবাক্য শ্রবণে গ্রহন্তীয়া দশরণ আয়াকে কতক্তা মানিয়া(২০),রাম রাম ! লক্ষ্ণ ! এইরূপ সাদরে সামুজ রামকে অংহ্রান করিয়া আলিঙ্গন মন্তকাদ্রাণে জীবনের সার্থ-কত। করিয়া কুশিক কুমার বিশ্বামিত্র মূনির হুত্তে অকাতরে ममर्थण क जिरलन (२८)।

অনন্তর অতিহৃতীয়া প্রতাপশালী ভগবান্ বিশ্বামিত্র শ্ববি পরমণ্ডভাশীর্লাদবাকাদারা রাজাকে পরমানন্দ রাথিয়া চাপ-ভূণীরবাণগড়াধর রামলক্ষণ সমভিব্যাহারে কিয়দূর অতিবাহিত করিলে, ভক্তিপূর্বক শ্রীরামকে সমাহ্বান করিয়া (২৫) (২৬), যে বিদ্যাগ্রহণমাত্রে ক্র্পেপাসা জনাইতে পারে না, এমত দেব-নিশ্মিত বলা আর অতিবলা-নামী ছুইবিদ্যা প্রদান করিয়া(২৭) গঙ্গার পরকূলবর্তী বিশ্বঘাতিনী তাড়কানামীনিশাচরীর আশ্রমস্থ বনগমন করিলেন। পশ্চাৎ অমিত ও সত্যপরাক্রম রামকে মুনি কহিলেন যে (২৮), এই বনমধ্যে তাড়কানামী কামরূপিণী একা রাক্ষণী সমস্তলোক বাধিত করিয়া আছে; তাহাকে অবিচারে বিনাশ করুন (২৯)। মুনি এইকহিলে, "তথাস্ত্র" বলিয়া রঘুনন্দন

তথেতি ধনু-রাদায় সগুণং রঘ্নন্দনঃ।
টঙ্কারমকরোত্তেন শব্দেনাপূরয়ন্ বনং॥৩०॥
তচ্ছু,ত্ত্বাসহমানা সা তাড়কা ঘোররূপিণী।
ক্রোধসংমুচ্ছি তা রামমভিত্নতোব মেঘবৎ॥৩১॥
তাড়কাং তাড়য়ানাস শরেণৈকেন বক্ষসি।
পপাত বিপিনে ঘোরা বমন্তী রুধিরং মুহুঃ॥৩২॥
ততোহতিস্থন্দরী যক্ষী সর্বাভরণভূষিতা॥
শাপাৎ পিশাচতাং প্রাপ্তা রামপ্রসাদতঃ॥৩৩॥
নত্বা রামং পরিক্রম্য গতা রামাজ্ঞয়া দিবং॥ ৩৪॥

ততোহতিহুক্টঃ পরিরভ্য রামং

মৃদ্ধান মাজায় বিচিন্ত্য কিঞ্চিং।

সর্বাস্ত্রজালং সরহস্তমন্ত্রং

প্রীত্যাভিরামায় দদৌ মুনীব্রুঃ। ৩৫॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানহেশ্বরসংবাদে

তাদিকাণ্ডে বিশ্বামিত্রেণ সহ বনগমনতাড়কাবধো-নাম পঞ্নোহধ্যায়ঃ।

ধন্মজ্যারোপণের টফারশকে বনমধ্যপরিপূরণ নিনাদ-অসহমানা ঘোররূপিণী তাড়কা ক্রোধভরে মূচ্চিতা হইয়া মেঘবৎ রামের প্রতি ধাবমানা হইল। পরে জারম তাড়কার বক্ষঃস্থলে এক শরনিঃক্ষেপকরিয়া বনমধ্যে পতিতা ভয়ানকা নক্তঞ্চরী বারম্বার রুধিরবমন করিলে (৩•)(৩১)(৩২), সর্বাভরণ ভূষিতা অতিস্থলরী যক্ষকতা শাপাধীন পিশাচতা-প্রাপ্ত হইলেও শ্রীরামপ্রসাদাৎ নিদ্ধৃতি পাইবার নিমিন্ত শ্রীরামচরণে প্রণামপ্রদক্ষিণাবসানে রামান্মজ্ঞয়া স্বলে কিগমন করিল (৩৩)(৩৪)। তদনস্তর পরমন্ত্রষ্ট বিশ্বামিত্র মূনিপূক্ষব শ্রীরামকে ক্রোড়ে আনিয়া মস্তকাছাণে স্বিশেষ তৃপ্তিলাভ করিবার মানসে কিয়ৎকাল চিস্তাকরিয়া শ্রীরামকে সরহস্ত সমস্তক সমস্ত অস্ত্রজাল প্রদান করিলেন (৩৫)।

এই শ্রীমদ্ধ্যত্মরামায়ণের উমামহেশ্বর কথোপকথনে
আদিকাণ্ডে বিশ্বামিত্রসহায়তা ও তাড়কাবধনামে
পঞ্চম অধ্যায় উক্ত হইল ॥ ৫ ॥ • ॥

यर्छाइशांतः।

ভক্ত কাম্যাপ্রমে রম্যে কাননে মুনিসঙ্গলে।
উষিষা রজনীমেকাং প্রভাতে প্রস্থিতাঃ শনৈঃ॥ ১॥
দিদ্ধাশ্রমংগতাঃ সর্প্রে সিদ্ধারণসৈবিতং।
বিশ্বামিত্রেণ সন্দিকা-মুনয়-স্তমিবাসিনঃ॥ ২॥
পূজা-ক মহতী-কলু-রামলক্ষাণয়ো দ্রুতং।
শ্রীরামঃ কৌশিকং প্রাহ মুনেদীকা প্রবিশ্যতাং॥ ৩॥
দর্শয়স্ব মহাভাগ কৃত স্তৌ রাক্ষ্যাধমৌ।
তথেত্যুক্তা মুনি-র্যন্ত মারেভে মুনিভিঃ সহ॥ ৪॥
মধ্যাহ্নে দদৃশাতে তৌ রাক্ষ্যো কামরূপিণো।
মারীচশ্চ স্থবাহুশ্চ বর্ষন্তো রুধিরান্থিনী॥ ৫॥
রামোহপি ধনুরানম্য দ্বো বাণো সন্দধে হুধীঃ।
আকর্ণন্তং সমাক্ষ্য বিস্নর্জ্জ তয়োঃ পৃথক্॥ ৬॥

তরোরেকস্ত মারীচং ভাময়ন্ দশযোজনং।
পাতয়ামাদ জলধে তদভূতমিবাভবং॥ ৭ ॥
কিতীয়োহয়িময়োবাণঃ স্থবাত্থ মদহং ক্ষণাং।
অপরে লক্ষ্মণেনাশু হতাস্তদকুবায়নঃ॥ ৮ ॥
পুল্পোঘৈ রাকিরন্ দেবা-রাঘবং সহলক্ষ্মণং।
দেবজুন্ভয়োনেছ স্তম্ভু বুঃ দিদ্ধচারণাঃ॥ ৯ ॥
বিশ্বামিত্রস্ত সংপূজ্য পূজাহং রঘুনন্দনং।
আফ্রেনিবেশ্যচালিক্স্য ভক্ত্যা বাস্পাক্লেক্ষণঃ ॥>০॥
ভোজয়িত্বা সহ ভাত্রা রামং পকফলাদিভিঃ।
পুরাণবাক্যৈ-বিবিধৈ নিনায় দিবসত্রয়ং॥ >> ॥
চতুর্থেহ্হনি সম্প্রাপ্তে কোশিকো রাম মত্রবীং।
রাম রাম মহাযজ্ঞং দ্রেন্টুমিচ্ছামহে বয়ং॥ >২ ॥

অনস্তর বিশ্বামিত্রপুরঃসর সাত্ম প্রীরাম অতিরম্ণীয় কাম্যাশ্রমন্থ কাননে এক যামিনীকাল বাপন করিয়া পরদিন প্রভাতে মল্মলগতিষারা (১), সিক্কারণদেবিত সিক্ষাশ্রম গমন করিলেন্। পরে বিশ্বামিত্রকর্তৃক উপদিষ্ট তত্ত্ত্ব মুনিগণ (২ অবিগঙ্গে রাম লক্ষণের মহতা পূলা করিলে, শ্রীরাম বিশ্বামিত্র-মুনিকে কহিলেন্,হে মুনে! আমাদিগেরদীক্ষাবিদি প্রদানকরিয়া (৩), হে মহাভাগ! কোধায় আছে মারীচ স্থবাত্ত প্রভৃতি রাক্ষণণণ, দেখাইয়া স্থিরচিত্ত হউন। তদনস্তর শ্রীরামবাক্যে সম্মত্ত মুনি "তথাক্ত" বলিয়া মুনিগণের সহিত্ত যাগারস্ত করিলে (৪), মধ্যাহ্নকালে গাণমগুলে কামক্রপ মারীচ স্থবাত্ত রাক্ষসাধ্যম মাংসশোণিত বর্ষণকরতঃ রামলক্ষ্ণকত্ত্ক দৃষ্ট হইলে (৫), অসাধারণ ধীশক্তিসম্পন্ন শ্রীরাম শ্রাসনে তুইশর একত্র সন্ধান-করিয়া আকর্ণ করিলে,উক্ত রাক্ষসাধ্যের প্রতি তুই বাণ পৃথক্ নিংক্ষেণ করিলেন্ (৬)। উভয়বাণের মধ্যে প্রক্

বাণ মারীচনামক রাক্ষদকে দশগোজন ভ্রমণ করাইয়া জলিক্ষিণি যৎকালে মারীচ পতন হইল, তৎকাল যেন অন্তুজ্বাপার হইয়া উঠিল (৭)। পরে দিতীয় অগ্রিময় বাণ ক্ষণকালমধ্যে স্থবান্থ রাক্ষদকে ভক্ষদাৎ করিলে, লক্ষণ তদক্চর নিশাচরগণকে অবিলম্বে অস্তুকের অধীন করিলেন্ (৮)। পশ্চাৎ অমরগণ সলক্ষণরাঘবের প্রতি কুস্কম বারিবর্ষণরূপ পূজাঞ্জান্ধ প্রদানে দেবজন্ভিবাদ্যধনি করিতে লাগিলেন্ এবং নিদ্ধচারণগণ তাব করিতে আরম্ভ করিলেন্ (৯)। অমন্তর বাম্পবারিধারায় ব্যাকুলিভলোচন বিশ্বামিত্র মুনি ভক্তিপূর্ব্বক আলিক্ষন দানে স্বকীয় অক্ষে রাথিয়া লক্ষণসহিত পূজার্হ রত্মনন্দনের ষ্ণানিষি পূজাসমাপনাত্তে (১০) বিবিধ প্রক্ষলাদি ভোজন করাইয়া নানাপুরাণবাক্যে দিবসত্র্যকালক্ষ্মে (১১) চতুর্থ দিবস প্রোপ্তে প্রাতঃক্ত্যাদিনির্ব্বাহে বিশ্বামিত্র মুনি কহিলেন্,রাম। মহায়ক্ষ্কনার্থ ইচ্ছাকরিতেছি (১২)। বিদেহ রাজ নগরস্থ মহাল্পা

বিদেহরাজনগরে জনকস্থ মহাত্মনঃ।
তত্ত্র মাহেশর-ঞ্চাপ-মস্তি অস্তং পিনাকিনা।
দ্রুক্সানি ত্বং মহানত্বং পূজ্যনে জনকেন চ॥ ১৩॥
ইত্যুক্তা মুনিভি-স্তাভ্যাং যযৌ গঙ্গাদমীপগং।
গোত্রমস্যাশ্রমং পুণাং যত্ত্রাহল্যা শিলাময়ী॥ ১৪॥
বিশ্যুপুষ্পকলোপেতং পাদপৈঃ পরিবেস্থিতং।
মুগপক্ষিগণৈ হীনং নানাজস্তুবিবর্জ্জিতং। ১৫॥
দুট্বোবাচ মুনিং শ্রীমান্ রামো রাজীবলোচনঃ।
কদ্যৈতদাশ্রমপদং তপতাং স্থবদং মহং॥১৭॥
তত্ত্র পুষ্পফলৈ যুক্তং জন্তুভিঃ পরিবর্জ্জিতম্।
আহলাদয়তি মে চেতো ভগবন্ জহি তত্ত্বতঃ। ১৭।
বিশ্যামিত্র-উবাচ।

শৃণু রাম পুরারতং গোতমো-লোকবিশ্রুতঃ। সর্বাধর্ম ভূতাংশ্রেষ্ঠ-স্তপদা-রাধয়ন্ হরিং॥ ১৮॥ তথ্যৈ ব্রহ্মা দদৌ কন্তা-মহল্যাং গোকস্কুলরীং।

জনকরাজভবনে সাক্ষাৎ সদাশিবদত্ত অসাধারণগুক যাহা মাহেশ্বর ধন্মং আছে, তাহা একবার দৃষ্টি করিতে যাইলে, বোধ হয়, জনকরাজকর্তৃক সবিশেষ পূচ্যনান ইইবেন্ (১০)।

মূনি এই কথা কহিলে, সগন্ধণ শ্রীরাম যেন্থানে অহল্যা শিলামায়ী আছেন, এমন পুণ্যদ ভাগীরণী-সমীপবর্ত্তী গৌতমা-শ্রম গমন করিয়া (১৪), নানামহীরুহ পরিবেষ্টিত দিব্যক্লকুস্থম-শোভিত ও মৃগপক্ষি-প্রভৃতি জন্তগণ-শ্র্ম স্থানর আশ্রম দেখিয়া রাজীবলোচন রাঘব মৃনিকে কহিলেন, এ আশ্রম কোন মহাশ্বার ? তপন্থিগণের অভিন্থখদ, বিশেষ জন্তবিবর্জ্জিত, মথচ ফলপুন্সযুক্ত ; এই আশ্রম দেখিয়া; ভগবন্! মচিতে নিতান্ত আহ্লাদিত হইয়াছে। ইহার পূর্ববৃত্তান্ত কি ? প্রকাশ করিয়া স্থিরচিত্ত
করিতে অনুমতি হয় (১৫)(১৬)(১৭)। পরে বিশামিত্র
কহিলেন, রাম! পূর্ববৃত্তান্ত শ্রবণকর্মন। এই আশ্রমে থাকিয়া
ধার্ম্মিকশ্রেষ্ট ও সর্বলোক বিধ্যাত গৌতমমুনি তপস্থান্থারা
হরির আরাধনা করেন্ (১৮)। পরে ব্রহ্মা মুনির অসাধারণ ব্রহ্ম-

ব্রহ্মচর্যোগ সন্তুন্তঃ স্থ ক্রাষ্ট্রণপরায়ণাং॥ ১৯॥
তয়া সার্দ্ধ নিহাবাৎসাদ্-গোতন-স্তপতাম্বরঃ।
শক্র স্ত তাং ধর্ষ রত্ন মত্রং প্রেপ্স্নরম্বহং॥ ২০॥
কদাচি ন্মুনিবেশেন নির্গতে গোতমে গৃহাৎ।
তাং ধর্ষ থিয়া নিরগাৎ অরিতং পুন-রপ্যগাৎ॥২১॥
দৃন্টা-য়ান্তং স্বরূপেণ মুনিঃ পরমকোপন।
পপ্রচ্ছ ক-স্তং ছন্টাত্মন্ মন রূপধরো-হ্রমঃ॥ ২২॥
সত্যং ক্রহি নচেদ্-ভন্ম করিষ্যামি ন সংশয়ঃ।
সোহব্রবীদ্দেবরাজোহহং পাহিমাংকামকিঙ্করং॥২৩॥
কৃতং জুগুপ্সিতং কর্ম ময়া কুংসিতচ্তেসা।
গোতমঃ ক্রোধাতাআক্রঃ শশাপ দিবিজাধিপং॥২৪॥
যোনিলম্পট ছন্টাত্মন্ সহস্রভগবান্ ভব।
শপ্তা তং দেবরাজানং প্রবিশ্য স্বাশ্রমে ক্রতং ॥২৫॥

চর্যাাকুর্চানদর্শনে সন্ত হইয়া সেবার্থ লোকস্কলরী অহল্যা নামী ক্সাদান করিয়াছিলেন (১৯)। অনন্তর শুশ্র্ষণপরায়ণা অহলা ভার্য্যার সহিত তপতাম্বর গৌহম এই আশ্রমে বাস করেন। কিন্তু অহল্যাদ্ত্ৰনা ইল্ৰ প্ৰতিদিন এ আশ্ৰমে যাতায়াত করেন (২০)। এক দিবস কুটীর হইতে গৌতম নির্গত হইলে, অর্থাৎ দণ্ডচ মুষ্টয় রজনী দবে প্রাতঃস্থানাদি করিবার মানদে নদ্যাদিতীরগমন করিলে, অবিকল গৌতম বেশবিভাসধর পুরন্দর অহল্যাকে লইয়া ধাবনান হইতেছে (২১)। মুনি স্বরূপে দেখিয়া কোষপরতন্ত্র গৌতম মুনিবেশধারিকে জিজ্ঞাসা করি-লেন, সে পামর ! কন্তং ? তুই কে ? বে গুটাত্মন ! কথং মমরূপ-ধর ? কি হেতৃ আমার রূপ ধারণ করিয়াছিদ্ (২২) ? ইচা অসতা কহিলে, নিঃসংশয় ভত্ম করিব। গৌতম এই বলিলে মৃনিবেশ-धाती कहिल, कामिकि इत (मनताम डेस आमि, आमारक तका-করুন (২৩)। কুৎ িত চিত্তে গহিত কার্য্য কবিয়াছি। পরে দেবরাজ ইন্দ্র এই রূপে গৌতনের বশম্বদ হটলে, ক্রেধিতামাক গৌতম, "রে যোনিলম্পট! রে ছষ্টাত্মন্! স্থা সহস্রভগবান ভব," এইবলিয়া দেবরাজইন্দ্রকে অভিসম্পাতকরতঃ স্বাশ্রবে শীঘ প্রবেশ করিয়া (২৪) (২৫), অঞ্জলিবদ্ধা অতি কম্পিতবতী

দৃষ্টাহল্যাং বেপমানাং প্রাঞ্জলিং গোতমোহত্রবীৎ।
ছফে জং তির্চ ছক্তি ভাকি ভাকি জামান্তমে মম॥ ২৬॥
নিরাহারা দিবারাত্রং তপঃ পরমমাহিতা॥ ৩৭॥
আতপানিলবর্ষ দিসহিষ্ণুঃ পরমেশ্বরং।
ধ্যায়ন্তী রামরামেতি মনসা হুদি সংস্থিতং॥ ২৮॥
নানাজন্তুবিহীনোহয়মাশ্রমো মে ভবিষ্যতি॥ ২৯॥
এবং বর্ষ সহস্রেষু বনেযুপবনেষু চ।
রামো দাশর্থিঃ শ্রীমানাগমিষ্যতি সাকুজঃ॥ ৩০॥
যদা স্থদাশ্রমশিলাং পদাভ্যা-মাক্রমিষ্যতি।
তদৈব ধৃতপাপা স্থং রামং সংপৃজ্য ভক্তিতঃ॥ ৩১॥
পরিক্রম্য নমস্কৃত্য স্তর্খা শাপা-দিমোক্ষ্যমে।
পূর্ববিশ্বম শুশ্রমাং করিষ্যদি যথাস্ত্রখং॥ ৩২॥
ইত্যুক্ত্যা গোতমঃ প্রাগাদ্ধিমবন্তং নগোত্তমং।
তদা হুহল্যা ভূতানা-মদৃস্যা স্বাশ্রমে শুভে॥ ৩৩॥
তব পাদরজঃস্পর্শং কাজ্কন্তী পাপনাশনং।

আস্তেহদ্যাপি রঘ্শ্রেষ্ঠতপো-তুক্কর মান্থিতা॥ ৩৪ ॥
পাবয়য় মুনে-ভার্যা মহল্যাং ব্রহ্মণঃ স্থতাং॥ ৩৫ ॥
ইত্যুক্ত্রা রাঘবং হস্তে গৃহীত্বা মুনি পুস্বঃ।
দর্শয়ামাস চাহল্যা-মুগ্রেণ তপসা স্থিতাং॥ ৩৬ ॥
রামঃ শিলাং পদা স্পৃষ্ট্রা তা-ঞাপশ্য-ভপোধনাং।
ননাম রাঘবোহহল্যাং রামোহহমিতি চাব্রবীং ॥ ৩৭॥
ততোদ্দ্রী রঘুশ্রেষ্ঠং পীতকোমেয়বাসসং।
ধনুর্ববাণধরং রামং লক্ষ্মণেন সমন্বিতং॥ ৩৮ ॥
স্মিতবক্ত্রং পদ্মনেত্রং শ্রীবংসান্ধিতবক্ষসং।
নীলমাণিক্যসন্ধাশং দ্যোতয়ন্তং দিশোদশ॥ ৩৯ ॥
দৃদ্রী রামং রমানাথং হর্ষবিক্ষুরিতেক্ষণা।
গোতমস্য বচং স্মুদ্রা জ্ঞাত্বা নারায়ণং পরং॥ ৪০ ॥
সংপূজ্য বিধিব-দ্রাম-মর্য্যাদিভি-রনিন্দিতা।
হর্ষাক্রেজলনেত্রান্তা দণ্ডবং প্রণিপত্য সা॥ ৪১ ॥
উথায় চ পুন দৃষ্ট্রা রামঃ রাজীবলোচনং।

অহল্যাকে দেখিয়া কহিলেন, ছুটে ! ছু*চবিত্রে ! আমার এই আশ্রমশিলাতে দিবারাত্র অনাহারে পরমতপ্রভাচরণ করিয়া থাক (২৬) (২৭) ।

শীত গ্রীম্মবর্ষাদি সর্ক্ষণল সহ্য করিয়া কেবল হৃদিন্তিত রামরাম প্রমেশ্বর চিন্তা করিয়া ধ্যানযোগে কালক্ষমে পাপক্ষম কর
আর জন্যাবধি এই আশ্রম নানাজন্তবিহীন হইবে (২৮) (২৯)।
এইরপে সহস্রবর্ষকাল সমতীত হইলে, বনে ও উপবনে সাফুজ
দাশরথি শ্রীরাম আসিয়া (৩০), যৎকালে তব আশ্রমশিলাতে
পদর্জ প্রদান করিবেন্, তৎকালে হৃদ্ধতি ইইতে নিদ্ধৃতি পাইয়া
ভক্তিযোগসহকারে শ্রীরামের পূজনন্তবনপ্রণাম-প্রদক্ষিণা দিক্রিয়
করিলে, শাপ হইতে মুক্তি পাইবে, পরে পূর্ববিৎ যথাম্রথ মম
শুক্রমা করিবে (৩১) (৩২), এইকথা কহিয়া গৌতম যদবধি
নগাধিরাজ হিমাচলে গমন করিয়াছেন, তদবধি অহল্যা সর্ব্ব
পাপক্ষম কর ভবদীয় পদারবিন্দরজঃকণাস্পর্শনলালসায় স্বাশ্রমে
স্প্রভূতের অদৃশ্র ভাবে জন্যাপি, হে রল্বংশাবতংস! হৃদ্ধর

তপোনোগালম্বনে আছেন (৩০) (৩৪)। এক্ষণে তপোধন গৌতম মুনির ভার্যা বিশ্বস্ত বিরিঞ্চিতনয়া অহল্যাকে অবি-লম্বে পরিত্রাণ করুন (৩৫), এই বলিয়া ম্নিপুক্ষর বিশ্বামিত্র শীরামের হস্তদম্ম অবলম্বন করিয়া উগ্রতপ্যোগে একাগ্রচিত্রা পাষালম্মী অহল্যাশিলা দৃষ্টি করাইলে (৩৬), শ্রীয়াম স্থাম্মামুর্তি স্থাতিলবিমলশিলার উপরি শ্রীচরণারবিন্দবিস্থাসমাত্রে তপো-ধনা অহল্যাকে দৃষ্টিকরিয়া প্রাণিপাত ক্রিয়াবসানে কহিলেন, 'আমি শ্রীয়াম" (৩৭)। অনস্তর পীতবরণ কৌষেম্বসনবিরাজিত দার্ক্ত ধর্ম্বাণধর ঈষদ্বাস্থান্ত বদন, তাহে পদ্মপলাশবৎ লোচন, বক্ষন্থলবিরাজমান শ্রীবংসপদ্চিহ্লিত নীল্মাণিক্যবং রূপে দিকবিদিক দেদীপ্যমান (৩৮) (৩৯), ঈদৃশ রঘুশ্রেষ্ঠ রমানাথ শ্রীয়ামসন্দর্শনে নয়ন পবিত্র করিয়া হর্ষবিক্ষু রিতলোচনা অহল্যা অমোঘবাক্য পতি বাক্য স্করণ করিয়া পর্ম নারায়ণজ্ঞানে যথা-বিধি অর্য্যাদিদ্বারা হুরারাধ্য রামের পূজাবসানে বিধেতিপাণা স্কলনম্বান্ত অহল্যা দণ্ডবং প্রণামাভিবাদনাত্ত গাত্রোখান পুলকান্ধিত সর্বাঙ্গা গিরা গদ্গদহৈয়ভূয়ৎ ॥ ৪২ ॥

করিরা পুনরার রাজীবলোচন রাম-মুখ নিরীকলে হর্বরোমাঞ্চিত শরীরে ভক্তি গদ্গদ বাক্যে শুব করিতে লাগিলেন্। যথা—

হে মধুস্দন! তব পদতল পরাজিত খত খত বালারণ কিরণ নিকর পালাবতী মুক্ত পদারবিদ্য মকরক্ষ মধ্র রস পানান দিত খত খত বট্পদদেবিত পরম পবিত্র শিব বিরিঞ্চি বাঞ্চিত নানা নির্ভন্ন নির্ভন্নগণ ভক্তেশিয়ারণ গলব্বাপর কিন্নর নর নাগ যক্ষ রকোকুল প্রভৃতি শত সহজ্ঞ শাণিল্য কৌণিন্য माठवा देवजीववा श्रीमा श्रीमकांत्रि ननक ननक ननक ननाकन কপিলাদি মনুমরীচাত্তি পরাশর ব্যাদ বিষ্ণু হারীত যাজ্ঞবক্ষা উদ্দেশে হঙ্গির যম আপস্তম সম্বর্ত কাত্যায়ন শাক্টারন বুহস্পতি শব্দ লিখিত দক্ষ শাতাত্তপ ৰশিষ্ঠ ক্ৰমন্ত্ৰী কাশ্যপ ভরম্বাজ বিশ্বামিত্র গোতমাগল্ভা পুলস্তা পুলহ ক্রতু প্রচেতাদি, চেদিরাজ বস্থাণ, মার্কভেয়াদি মুনিগর্থ, নারদাদি ধ্যিগন, অধিস্থাড়াদি হব্য কৰা বাহনাদি প্রিভূগন, গ্রন্ধা গোপড়ি গোমতী গণপতি গৰুৰ্বে গলাধর গোগণ গোতম গালব গণণ গোলোক গোবদ্ধন গোষ্ঠ গৰুবহ গদাধর গরা গন্তীর গোদাবরী গারতী গ্রহগোপ গোকুল কুল লঙ্কুল, রবাদি मश्र वात, ज्यमाहि शक्षातम जिथि, ज्यश्रिनाहि मश्रविश्मिक नक्क, विक्छानि मर्थविश्मेजि योश, वर्वानि धक्ताने कद्रव, भ्यापि घामन ब्रानि, ब्रानि काल वांद्रदलापि समझ, शकापि नदी, भौगोपि नम, कक्कामि नाग, श्रूरमर्कापि मर्का शर्क्छ, जन**5**त তলচর খচর চরাচর স্থাবর জন্মাদি দমস্ত ব্রহ্মাও ভাতোদ্ধর, मारमामत, क्यीतमाश्रत कुलाधत कुशांतम शान हिव्दतिस्तामन, किन्भू প্রভৃতি প্রবল রিপুদল দমন, দিবাকর স্কু কর কির্প विजावन श्वां विश्वत्मन जवहीत हतन हर्मन खहुत गरवीक विका-भन मत्र निकामन विष्मेष भाषा विमन विमन कम्छ वतार नृजिश्ह रामन च खकून-मश्रद भेद्र अप्राम द्राम दलद्राम कुक कड़ीका। नि দশাবভার রূপধর, মুষ্টিক্তব্য সূত্ত বাস কর, শোক ভাপ হর, তব চরণ পত্তিত শ্রুতি পুরাণ শাঝ্য পাত্রল মীমাংসা বৈশেষিক বেদান্ত বেদান্ধ বেদ তর্কণাত্ত সমূহ শোভিত, त्राज्ञारक्ष्यती ध्रञ्ज (मञीतन मक्तिमांश स्थमांश माध्यक्रतन মনোজীপ্ত দায়ক, পদতলোপরি নগ্রহিত দশংশ শত শত भारतीय स्थारक मृत्र स्टामिया मम्बन गढ गठ स्वक्ष মণিময় প্রধান বাল বৈচ্ছা বজ হীরক নানারত জড়িভ বচিত

অহা কৃতার্থাত্ম জগন্ধিবাস তে
পদাগ্রসংলগ্নজ্ঞকণানহং।
স্পান্য যৎ পদ্ধশুসকুরাদিভি
বিম্গাতে বর্দ্ধিতমানদৈঃ সদা॥ ৪৩ ॥
আহা বিচিত্রং তব রাম চেস্টিতং
মনুষ্যভাবেন বিমোহয়ন্ জগৎ।
চলক্ষপ্রভাং চরণাদিবর্চ্ছিতঃ
সম্পূর্ণ আনক্ষময়োহ্পি মারিকঃ ॥ ৪৪ ॥

হুশোভিত ধ্বজবজান শাহিত মবিমর মূতন মূপ্র প্রলরাদি জনগণ হলর অভিহুধকনক হুখসারণ ত্রিলোকপাবন অশেষ পাতকীগণ নিস্তারণ, হে ভৰতারণ! ভদবসুষ্ঠাসুলি নির্গত নিৰ্মাল মৰ্মা পাৰক ঘৰ্মা জল হিলোল ফুশীতল সমুজৱী তুলদীদল গুণরাশি সুশোভিত সুচার গুরু জাসু জব্ম মনোহ-রোক্ন কটিতট বেষ্টিড কিন্ধিনী জাল বসন ধ্রুর্বাণধ্য, দ্বিভূজ আজাত্রলম্বিতবাহ নব, নিশিত নীল নীয়দ নব হর্জাদল শ্যাম রাম নীলকমলোপমলোচন শ্রুতিযুগল কুওল নাসিকাতিলকাভরণ मिं क दांत क्यूब कितीर करेकामालक्र कर्वक्रम अक्रम वनुमाला বিরাজিত ওঠাধর ধর, জিত দাড়িম্দত্তপংক্তি পলায়িত তর্মণক্তি সমূজল হাস্য পরিহাস্য রদন, সিত্রদন, চর্চিত শীৰংস ভড কোছভ শোডিত বক্ষংস্থল, তিল্কাবলি ভাল वि वृतिक, क्लांक्य क्लांविनान क्रवीक्ना, माध्य जनविनान विवाकत कुल চृष्डामिन धनारेककथाम, खनशाम त्रवृदरमाखन मनद्रथ कृतव, जबर रीकांद्र व धार्तार, दर जानकी जीवन, टकिनिविष्ट्रमन, श्रष्ट्नकन, क्षत्रमञ्द्रक्षन, निष्ठाद्रक्षम, किनिक्चृथ-নাশন, ছুরত্ত কৃতাত বিধ্বংসন, পর্ম কৃপাময়, ছে অনাথ नाथ! ॥ ४२॥

অহল্যা আরও কহিলেন—হে জগরিবাস। বিশ্বিধানস প্রজ্ঞ শহরাদির অনিশ অবেষামাণ আপ্রকার বাহা পদা প্রাসংলগ্ধ রজঃকণা ভাহা স্পর্শ করিয়া অদ্য রুভার্থা হইলাম্ (৪৩)। হে রাম। তব কি চিত্র চরিত্র, যেহেতু মানব দেহে এই অসার সংশারকে অনবরত অনন্ত মায়াজালে মোহিত করিয়া আবার চরণাদি বিহীনে ক্রিপে নির্ভর গ্যনাগ্যম করেন এবং আনন্দ্যর

যৎপাদপঙ্কজপরাগপবিত্রগাত্রা ভাগীর্থী ভববিরিঞ্মিখান পুনাতি। সাক্ষাৎ স এব মম দুখিষয়ে যদান্তে কিং বর্ণাতে মম পুরাক্তভাগধেয়ম্॥ ৪৫॥ মত্যাবতারে মনুজাকৃতিং হরিং রামাভিধেয়ং রম্পীরদেহিন্ম। ধনুর্ধরং পদ্মবিশাললোচনং ভজামি নিত্যং ন পরান্ ভলিষ্যে ॥ ৪৬ ॥ যৎপাদপঙ্কদরজঃশ্রুতিভির্বিমূগ্যং যমাভিপক্ষজভবঃ কমলাসনশ্চ। যন্নাররসিকোভগবান পুরারি ত্তং রাসচন্দ্রমনিশং হৃদি ভাবয়ামি ॥ ৪৭ ॥ যস্তাবতারচরিতানি বিরিঞ্চিলাকে গায়ন্তি নারদমুখা ভবপদ্মজাদ্যা:। আনন্দভাশ্রুপরিষিক্তকুচাগ্রদীমা. বাগীশ্বরী চ ত্মহং শ্বরং প্রপদ্যে॥ ৪৮॥ দোহয়ং পরাত্মা পুরুষঃ পুরাণ এষ: স্বয়ং জ্যোতিরনন্ত আদ্যঃ।

হইলেও পূর্ণায়িক বলিয়া ভ্রনে বিখ্যাত (৪৪)। আর পাদপায়পারাণ স্পর্নারে পাবিত্রণাতা তিপথগা ও শিব বিরিক্তি প্রভৃতি
গীর্জাণগণকে যিনি পরিত্র করিয়াছেন্ সেই স্নাতন প্রমেশ্রর
আমার নরনপথ গোচরের সাক্ষাং প্রত্যক্ষ হইলেন। আহা
পূর্বজন্মকৃত ভাগ্যের কথা কি বর্ণির (৪৫) বিশেষ মর্জ্যারতারে
মনুজাকৃতি ধর্মবাণ্ধর প্রমিবশাললোচন রমণীয় দেহ রাম
নামক হরি ভিন্ন অন্য ভজিবার আর আবশাকতা নাই (৪৬)।
আর যাহার পাদপায়রজ শ্রুতি অবেষণ করেন এবং যাহার
নাভিপায় হইতে কমলাসনের উত্তর ও যাহার নাম স্মরণে ভগবান্
ত্রিপুরারি রসিক, ঈদৃশ শ্রীরামচন্দ্রকে অনুক্রণ চিন্তা করি (৪৭)।
আর যে রাম-চরিত্র নারদ প্রভৃতি শিব বিরিঞ্চি দেবগণ রক্ষালোকে গান করেন্ এবং আনন্দ রস পরিপূর্ণ হেতু নয়ন
বারিধারা পরিষিক কুচাপ্রানীমা বন্ধাণী, ঈদৃশ রামের শরণাগত
হই (৪৮) এবং যিনি স্বরং পর্মান্ধা পুরাণ পুরুষ সাক্ষাই জ্যোতিঃ

 শায়াতকুং লোকবিমোহিনীং যো ধত্তে পরাত্তাহ এষ রাম:॥ ৪৯॥ অয়ং হি বিখোদ্ভবসংয়মানা মেকঃ স্বমায়াগুণ্দমন্বিতোয়:। বিরিঞ্কিষ্টাশ্বর নামভেদান্ ধতে স্বতন্ত্রঃ পরিপূর্ণ আত্মা॥ ৫০ 🕡 নমোস্ত হে রাম তবাজ্যি পঞ্চজং শ্রেয়া ধৃতং বক্ষদি লালিতং প্রয়াৎ। আক্রান্তমেকেন জগতায়ং পুরা ধ্যেয়ং মুনীলৈরভিমানবর্জ্জিভিঃ ॥ ৫১ ॥ জগতামাদিভূতত্ত্বং জগত্তং জগদাশ্রয়ঃ । সর্বভূতেষু সংসক্তএকোভাতি ভবান্ পর:॥ ৫২॥ কার বাচ্যস্ত্রং রাম ওঁবাচামবিষয়ঃ পুমান্। বাচ্যবাচকভেদেন ভবানেব জগন্ময়ঃ॥ ৫৩ ॥ কার্য্যকারণকর্তৃত্বফলসাধনভেদতঃ। একো বিভাদি রাম ছং মায়য়। বহুরূপয়া। ৫৪॥ ত্বনায়ামোহিভধিয়স্ত্রাং ন জানন্তি তত্বতঃ। अक्र जनामि जनस, जिमिहे (लांक विस्मोहिनी मात्रामृर्खि धातरन

পর্যাপ অনাদ অনস্ত, তিলছ লোক বিমোহিনী মায়ামূর্তি ধারণে পরানুতাই বিতরণে অকাতর (৪৯)। যিনি নিজমায়। গুণাবলম্বনে বন্ধাতের কাইটি স্থিতি প্রলামের একমাত্র কারণ ইইয়া বিরিঞ্চি বিষণু মহেশ্বর পৃথক পৃথক নাম ধারণে সক্ষম (৫০)। হে রাম! যে পাদপদ্ম লক্ষ্মী বক্ষঃস্থলে রাথিয়া অঙ্গভূষণ প্রাপ্ত ইইয়াছেন্ এবং ঘে পাদপদ্ম জগতার আক্রমণ করিয়াছেন্ এবং অভিমান্ধান্ম ম্নিগণের সভাত চিজনীয় যে পাদপদ্ম, সেই পাদপদ্মে প্রামাহট (৫১)।

এবং তুমি জগতের আদিকারণ ও জগনার জগদাশ্র সর্মন্ত্তে সংসক্তরণে একমাত্রই দীপ্তি পাইতেছ অভএব আপনকার পর আর কে আছে। (৫২) হে রাম! তুমি প্রণব পদ বাচ্য এবং বাক্রের অগোচর পুরুষ এবং বাচ্য বাচক ভাব-বিশেষে ভবান্মাত্রই জগনার ও কার্য্যকারণ ভাবতেতু কর্তৃত্ব জল সাধনে সক্ষম; বহুরপ মায়াহেতু হে রাম! একমাত্র জগতে দীপ্তি পাইতেছ (৫০,৫৪); ভবদীয় মায়া মোহিত বুদ্ধি বাক্তি সমন্ত জাপান ক যথাই-ভাবে না জানিয়া কেবল প্রমেবর বাক্তি সমন্ত জাপান ক যথাই-ভাবে না জানিয়া কেবল প্রমেবর

মাকুষং স্বাভিমন্যন্তে মায়িনং প্রমেশ্রম্। ৫৫ ॥ আকাশবত্তং সর্বত্ত বহিরন্তর্গতোহমলং। জ্বস্থেই হাচলোনিত্যঃ শুদ্ধোবৃদ্ধঃ দদাৰয়ঃ । ৫৬ । যোষিমূঢ়াহমজ্ঞাতে তত্বং জানে কথং বিভো। তস্মাত্তে শতশোরাম নমস্কুর্য্যা মনন্যধীঃ॥ ৫৭॥ দেবমে যত্র কুত্রাপি স্থিতায়া অপি সর্ববদা। च्रथानकमत्न मळा ভिक्तित्व मनास्य (म ॥ ৫৮ ॥ नगर्छ श्रुक्षांशाक नगर्छ ভक्तद्मल। নমস্তেহস্ত হৃষীকেশ নারায়ণ নমোহস্ত তে ॥৫৯॥ ভবভয়হরমেকং ভাকুকোটিপ্রকাশম্, করপুতশরচাপং কালমেঘাবভাদম্। কনকরুচিরবস্ত্রং রত্নবৎকুগুলাচ্যং, कमलिविभागतिकः मारूषः त्रामभीरम् ॥ ७० ॥ স্তুত্বিবং পুরুষং সাক্ষাৎ রাঘবং পুরতঃ স্থিতং। পরিক্রম্য প্রণ্ম্যান্ড দারুজ্ঞাতা যুয়ে দতী॥৬১॥ অহল্যয়া কৃতং স্তোত্রং যঃ পঠেন্তক্তিদংযুতঃ।

মারা গুণাবলম্বী মানব বলিরা অভিমান্ করে কিন্তু বহিরন্তর্গত সর্বত্ত নির্মাল আকাশ স্বরূপ ও অদক্ষ, অচল, নিত্য, শুদ্ধঃ, অথচ দদা অদ্বর (৫৬)। অতএব যোবিং বিধার মৃঢ়া হেতু হে প্রভা তব তত্ত্ব কিরুপে জানিতে পারিব ? হে বিভো তব চরণে অধিনীর শতশত প্রণাম (৫৭) হে দেব! যেখালে দেখালে অবস্থিতি করিলেও যেন তব পাদপদ্মে মনীর ভক্তি অনুনারিনী হর (৫৮)। হে পুরুষাধাক্ষ! হে ভক্তবংদল হ্যীকেশ হে নারারণ ভূতাং নমঃ (৫৯)। ভব ভর হরণের একমাত্র কারণ, কোটি স্র্য্যা সমরপে জাজলামান, করে ধ্রত বাণ ও ধন্তু, কালমের্য দম বরণ, কলখোত স্থবর্ণবং বসন, রত্ববিশিষ্ট কুগুল যুক্ত, প্রপত্তের ন্যার ভ্রত্মবর্ণ নেত্র, এই রূপ দানুজ শ্রীরামকে স্তব করিরা প্রণাম প্রদাদিক স্থাকাং রাঘ্য পুরুষকে এইরূপে স্তব করিরা প্রণাম প্রদাদিকাশ্বনে দানুজ্ঞাতা অহল্যা দতী হিমাচলন্থ গৌতম প্রির্ম প্র্বিৎ দেবা করিবার মানদে গমন করিলেন (৬১)।

যে ব্যক্তি অহল্যাক্বত শ্রীরামের তাব ভক্তিপূর্বক পাঠ করিবেন্ তিনি যে কেবল অশেষ পাতক হইতে মুক্ত হইবেন্ স ম্চ্যতেইখিলৈঃ পাপৈঃ পরং ব্রহ্মাধিগচ্ছতি ।।৬২ পুত্রাদ্যর্থে পঠেড্ক্ত্যা রামং হৃদি নিধায় চ। সংবৎসরেণ লভতে বন্ধ্যায়ামপি পুত্রকম্ ।। ৬৩ ।। সর্বান্ কামানবাপ্নোতি রামচন্দ্রপ্রাদ্তঃ ।। ৬৪ ।।

ব্রহ্মন্থেক্তক্সগোহিপ পুরুষঃ
ক্রেয়ী স্থরাপোহিপিবা,
মাতৃ ভ্রাতৃ বিহিং সকোপি সততং
ভোগৈকবাঞ্ছাতৃর:।
নিত্যং স্তোত্রমিদং জপন্ রঘুপতিং
ভক্ত্যা হৃদা সংস্মরন্
ধ্যায়ন্ মুক্তি মুপৈপতি কিং পুনরসে
স্বাচারমুক্তোনর:।। ৬৫।।
ইতি শ্রীসদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসংবাদে
আদিকাণ্ডে সদৈন্য-মারীচ-স্বাহ্ত নিধনবিবরণং অহল্যাশাপবিমোচনং তৎকৃতং
শ্রীরাম্স্তোত্রকথনঞ্চ যঠোহধ্যারঃ।

এমং নহে পরম ব্রহ্মপদও প্রাপ্ত হাইতে পারিবেন (৬২)। আর
প্রীরামকে হৃদরে ভাবনা করিয়া ভক্তিযোগ সহকারে বদ্ধাা
যদি পুত্রাদি নিমিত্ত এই স্তব পাঠ করেন্ তাহা হাইলে সম্বংসর
মধ্যে পুত্র লাভ করিতে পারিবেন। বিশেষ প্রীরাম প্রদাদাৎ
সমস্ত কামনাই সিদ্ধি হাইতে পারে(৬৩) পরস্ত ব্রহ্ম গুরুদারগামী
ব্রাহ্মণের অশীতি রন্তিকা স্থবর্গ চৌর্য্যকারী স্থরাপানে রত
মাতৃ ভ্রাস্ত বিহিংসক ও সতত ভোগ বাহ্মাতুর ইহারাও যদি
রঘুপতি রামকে ভক্তিপূর্বেক শ্বরণ বা চিন্তা করিয়া প্রস্তি
দিবস স্থোত্র পাঠ করে, অন্তে নির্ব্বাণপদ প্রাপ্তি হাইতে পারে;
সদাচার নরের কথা কি কহিবো (৬৪)!

এই প্রীঅধ্যাত্ম রামায়ণে উমা মহেশ্বর কথোপকথনে
আদিকাতে সদৈন্য মারীচ স্থাত নিধন বিষর্থ
অহল্যার শাপমোচন এবং অহল্যাক্ত শ্রীরামের স্তব কথন ষষ্ঠ অধ্যায়
উক্ত হইল॥

সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

প্রীমহাদেব উবাচ।

বিশামিজোহপি তং প্রান্থ রাঘবং সহলক্ষনং।
গচ্ছামো বৎস মিথিলাং জনকেনাভিপালিতাম্। >
দৃষ্ট্বা ক্রুত্বরং পশ্চাদঘোধ্যাং গস্তমর্হসি।
ইত্যুক্ত্বা প্রযোগ গঙ্গা মুতীর্য্য সহরাঘবঃ। ২॥
বিদেহস্য পুরং প্রোত্থা ষিরাজঃ সমাবিশৎ।
প্রাপ্তং কৌশিক মাকর্ণ্য জনকোহপি মুদান্থিতঃ। ৩॥
পূজাদ্রব্যাণি সংগৃহ্য সোপাধ্যায়ঃ সমাযযো।
দণ্ডবৎ প্রণিপত্যাথ পূজ্যামান কৌশিকম্॥ ৪॥
পপ্রচ্ছ রাঘবেশ দৃষ্টা সর্বলক্ষণলক্ষিতো।
দেয়াতমন্ত্রী দিশঃ সর্বাশ্চন্দ্রম্যাবিবাপরো। ৫।
কল্যৈতো বরশাদ্রিলা পুজো দেবস্থতোপমো।
মনঃপ্রীতিকরো মে ২দ্য নরনারায়ণাবিব। ৬॥

অন্তর বিশ্বানিতথি সলক্ষণ রাঘৰকে কহিয়াছিলেন বংস জনকণালিতা মিথিলা রাজধানী গমন করিয়া তত্ত্বত্ব মহান্তর দর্শনান্তে আযোগ্যাপুরী গমন করিবেল এই পরামর্শ করিয়া সরাঘব এমিরাট গল্পার পরকূলবর্তি বিদেহপুর প্রাভঃকালে প্রবেশ করিলেম্ পরে জনক রাজা দ্তমুখাৎ রাজ্যে কৌশিক-মহাশহের ভভাগমন রার্জাপ্রেরণ হর্ষে নিজপুরোহিত তী যুক্ত-শতানন্দ সোপাধ্যর সমন্তিব্যাহারে ভগবান্ বিশ্বামিত্র ধ্বির ঘথারিধি আর্চ্চমা করিয়া রাজর্ষি জনক কৌশিক মহাশহের নিকট বালক্ষয়ের পরিচয়লাভে সম্যক্ যত্ত্বান্ হইরা কি আন্চর্যা সর্বলক্ষণ লক্ষিত রূপে দিক্ বিদিক্ দেদীপামান্ শেবস্তোপম যেন সাকাৎ নরনারায়ণ বা অবিনীকুমার কিছা

প্রো দশরথদ্যৈ ভাতরের রামলক্ষাণে ॥ ৭ ।
পুরো দশরথদ্যৈ ভাতরের রামলক্ষাণে ॥ ৭ ।
মথরক্ষণার্থার ময়ানীতো পিতৃ: পুরাৎ ।
আগচ্ছন রাঘবোমার্গে তাড়কাং বিশ্বঘাতিনীম্ ॥৮॥
শরেণৈকেন হতবাংশ্চোদিতো মিতবিক্রমঃ ।
ততো মমাশ্রমং গন্ধা মম যজ্ঞবিহিংসকান্ ॥ ৯ ॥
স্থাত্প্রমুথান্ হন্ধা মারীচং সাগরে ক্রিপৎ ।
ততো গন্ধাতটে পুণ্যে গৌতমস্যাশ্রমে শুভে ॥১০॥
দৃষ্টাহ্ল্যা নমস্কৃত্য তয়া সম্যক্ প্রপ্জিতঃ ।
পাদাস্ক্রজঃপশাৎ সাপি শাপাদিয়োচিতা ॥১১॥

বিতীয় চক্রস্থা এই তুই বালক দেখিয়া আদা আমার সাতিশ্য
মনঃপ্রীতি হুইরাছে ভগবান্ কোন মহাত্মার এই নরশার্দ হুই পুত্র ? এইকথা জনক রাজধিকে জিজ্ঞাসা করিলে তংকালে প্রকৃত্তি বিশামিত জনক রাজধিকে প্রত্যান্তর প্রদানন সাহসী হুইলেন। মহারাজ এই পুত্রম্ব আযোধাাধিপতি রাজা দশরথের, রামলক্ষণ নামক হুই ভাই, ঋষিদিহগর যজ্ঞ রক্ষণার্থ আমাকর্ভূক আনীত হুইয়া অমিডবিক্রেম শ্রীরাম পথিছিতা বিশ্বঘাতিনী তাড়কানায়ী নিশান্তরী বধানত্ত্ব সিদ্ধান্তর নিশান্তর নিধনাত্ত্ব একবাণে মারীচকে সাম্মপারে নিঃকেশ করিয়াছের পরে স্বর্ধনীতীরস্মীপর্ক্তি অতি পুণাদ গৌত্যাশ্রমে আসিয়া কুতারাধিতা অহল্যাকে পাদান্ত্র রজঃস্পর্শান্তর শাণ হুইতে সদ্গতি প্রদান করিয়াছেন। ১১।

ইদানীং দ্রন্থীকানন্তে গৃহে মাহেশ্বরং ধনুঃ।
পূজিতং রাজভিঃ দবৈদ্রে ইিমত্যনুগুল্ফমঃ।১২।।
অতো দর্শর রাজেন্দ্র শৈবং চাপমনুত্রমং।
দৃন্থীযোধ্যাং জিগমিষুঃ পিতরং দ্রন্থীমচ্ছতি।।১০।।
ইত্যুক্তো মুনিনা রাজা পূজার্হে। বহুপূজরং।
পূজরামাদ ধর্মজ্ঞা বিধিদৃষ্টেন কর্মণা।। ১৪।।
ততঃ দংপ্রেষয়ামাদ মন্ত্রিণং বুদ্ধিমন্তরং।
শীস্রমানর বিশ্বেশচাপং রামায় দর্শর।। ১৫।।
ততো গতে মন্ত্রিবরে রাজা কোশিকমন্ত্রবীং।
বদি রামোধনুর্ধ হা কোট্যামারোপয়েদ্গুণ্ম।।১৬।।
তদা মমাত্মজা দীতা দীয়তে রাঘবায় হি।
তথেতি কৌশিকঃ প্রাহ রামমুদ্বীক্ষ্য দক্ষিতম্।।১৭।
শীস্রং দর্শর চাপাগ্রাং রামায়ামিততেজ্ঞ্বে।।১৮।।
এবং বদতি মৌনীশে আগতাশ্চাপবহেকাঃ।।১৮।।

এবং বদতি মৌনীশে আগতাশ্চাপবহেকাঃ ।।১৮।।

হেরাজেল ! রাম নিথিল রাজগণপূজিত মাহেশ্বর ধরু-দর্শন
লালসায় এই স্থানে সমাগত হইয়াছেন (১২)। অতএব এক্ষণে
সম্ভবন হরধরু প্রদর্শন করুন। রাম লক্ষণ হরকোদণ্ড দর্শন করিয়া
ভাবোধ্যা যাইতে বাসনা করিতেছেন, কারণ বহু দিবস হইল ইহাঁরা
পিতাকে দর্শন করেন নাই (১৩)। এই মুনিবাক্যের প্র্যাবসানে
বিবিধ প্র্যালোচনা করিয়া ধর্মজ্ঞ জনক রাজা বিধিদৃষ্ট কর্মা দারা
প্রভাইত্ রঘুনন্দনের পূজা করিয়া (১৪) রাম লক্ষণের অবলোকনার্থ বিশেশশরাসন আনিবার জন্ম শীত্র বুদ্ধিমত্তর মন্ত্রিকে
প্রেরণ করিলেন (১৫)।

তদনস্তর হরকোদশু আনয়ন করিবার জন্ম মন্ত্রিবর অন্তঃপুরনথো গমন করিলে পর রাজা কৌশিকমহাশয়কে কহিলেন,
নদি রাম ধরু ধারণ করিয়া প্রান্তভাগে জ্যারোপণ করিতে সমর্থ
হন (১৬) তাহা হইলে রাঘবকে মদীয়াত্মজা দীতা সম্প্রদান করিব।
তথাস্তবলিয়া ঈষদ্বান্তস্কু রামম্থ নিরীক্ষণ করত কৌশিক কহিলেন (১৭) অমিতবিক্রম শ্রীরামকে সম্বর শিবধন্ত দর্শন করাও।
এই বলিয়া মুনি মৌনভাবাবলম্বনে অবস্থিতি করিলে(১৮) মহা-

চাপং গৃহীত্বা বলিনঃ পঞ্চসাহস্রসংখ্যকাঃ।
ঘণ্টাশতসমাযুক্তং স্বর্গপট্টের্বিভূষিত্রম্।। ১৯।।
দর্শ্যামাস রামায় মন্ত্রী মন্ত্রবিদাংবরঃ।
দৃষ্ট্যা রামঃ প্রহুষ্টাত্মা বদ্ধা পরিকরং দৃঢ়ম্।।২০।।
গৃহীত্বা বামহন্তেন লীলয়া তোলয়দ্ধসুঃ।
আরোপয়ামাস গুণং পশ্চৎস্বখিলরাজস্থ ॥ ২১॥
ঈষদাকর্ষ্যামাস পাণিনা দক্ষিণেন সঃ।
বভঞ্জাখিলছহুদারো দিশঃ শব্দেন পূর্য়ন্।।২২॥
দিশশ্চ বিদিশশৈচ্ব স্বর্গংমর্ত্তং রসাতলম্।
তদ্ভূতমভূত্ত্র দেবানাং দিবি পশ্যতাম্।। ২০।।
আচ্ছাদ্যন্তঃ কুস্থুইমর্দেবাস্তুতিভিনীভূরে।
দেবহুন্দুভ্যোনেহর্ননৃতুশ্চাম্পরোগণাঃ।। ২৪।।
দ্বিধাভগ্যং ধনুদ্বিনা রাজালিস্ক্য রঘুন্ত্রম্ ।
বিশ্বয়ং লেভিরে সন্তোমাতরোহন্তঃপুরাজিরে॥২৫॥

বলপরাক্রান্ত পঞ্চ সহস্র সংখ্যক বাহক শতঘণ্টাবোজিত এবং স্থ্রপিট্রিভূষিত (১৯) কোদও লইয়া সমাগত হইলে মন্ত্রবিদান্তর মন্ত্রী অদীমৃত্রেজা রামের নরনগোচর করাইলে উক্তরেশন্ত দর্শনে প্রস্ত্রীয়া রাম গাত্রীয় কবজাদি পরিকর দৃঢ়কণে বন্ধন করিয়া (২০) অবলীলাক্রমে বামহন্তে পূর্ক্রোক্ত গুরুতর সম্বসম্পন্ন ধূর্জ্রটীধরু উভোলনকরিলেন; সেই আশ্চর্য্য দর্শনে সমস্তরাজগণের দৃষ্টি সমভাবে স্থির হইলে (২১) দক্ষিণ হস্তরারা ঈষং আকর্ষণপূর্ক্রক জ্যারোপণ করিলেন অমনি নিথিলছংসার শ্রীরাম কর্ত্ত্রক ধর্মি ভিশ্ন ইইল (২২); তৎকালে ধরুর শন্দে দিক্ বিদিক্ত স্থর্গমন্ত্রসাতল পরিপূর্ণ হইল, এবং ত্রিদিবস্থ দর্শনকারী দেবতা দিগের উহাতে আশ্চর্য্য জ্ঞান হইল (২৩)।

সুরগণ শ্রীরামের উপর পুষ্পা-বৃষ্টি পরিত্যাগ পূর্ব্বক তথ করিতে লাগিলেন এবং দেব ছুদ্দুভি বাদ্য সহকারে অপ্সরোগণ নৃত্য করিতে নিযুক্ত হইল (২৪)। পরে রাজর্ষি জনক হর-কোদও দিখা ভগ্ন দেখিয়া রঘুকুলোদহ শ্রীরামকে আলিঙ্গন করিলেন এবং পণ্ডিভগণ ও অন্তঃপুরস্থিত রাজমহিষীগণ প্রম বিশার লাভ করিলেন (২৫)। তদনস্তর সুষ্কাশ্রবদনা স্থা- সীতা স্বর্ণমাইং মালাং গৃহীয়া দক্ষিণে করে।

শ্বিতবক্তা স্বর্ণবর্ণা সর্বাভরণভূষিতা ॥ ২৬ ॥

মুক্তাহারৈঃ কর্ণপত্তিঃ কণচ্চলিতনুপুরা।

ছকুলপরিসন্বীতা বন্ত্রান্তর্ব্যঞ্জিতস্তনী ॥ ২৭ ॥

রামস্তোপরি নিক্ষিপ্য স্বায়মানা মুদং যযৌ।

ততামুমুদিরে সর্বের রাজদারাঃ স্বলঙ্কৃতাঃ ॥২৮॥

গবাক্ষজালরক্ষে ভ্যোদৃষ্ট্য লোকবিমোহিনীম্।

ততোহত্রবীম্মুনিং রাজা পত্রং প্রেষয় সম্বরং ॥২৯॥

রাজা দশরথঃ শীভ্রমাগচ্ছতু সপুত্রকঃ।

বিবাহার্থং কুমারাণাং সদারঃ সহ মদ্রিভিঃ ॥৩০॥

তথেতি প্রেষয়ামাস দূতাংস্ক্রিতবিক্রমান্।

তে গত্বা নরশার্দ্লিং রামজ্বেয়োল্যবেদয়ন্॥ ৩১॥

শ্রেত্বা রামকৃতং রাজা হর্ষেণ মহতাপ্লুতঃ।

মিথিলাগমনার্থায় ত্ররামাস মন্ত্রিণম্য। ৩২॥

গচ্ছস্ত মিথিলাং সর্বে গজাখরথপত্তয়ঃ।
রথমানয় মে শীত্রং গচ্ছাম্যদৈর মাচিরং॥ ৩০॥
বশিষ্ঠস্ত,প্রতোষাতু সদারঃ সহিতোহয়িভিঃ।
রামমাতরমাদায় মুনির্মে ভগবান্ গুরুঃ॥ ৩৪॥
এবং প্রস্থাপ্র সকলং রাজর্ষিবিপুলং রথং।
মহত্যা সেনয়া সার্জমারুছ্ম ছরিতোয়মৌ ॥ ৩৫॥
আগতং রাঘবং শুজা রাজা হর্ষসমাকুলঃ।
প্রভ্যুক্জগাম জনকঃ শতানন্দপুরোধসা॥ ৩৬॥
যথোক্তং পূজয়া পূজ্যং পূজয়ামাস সৎকৃতং।
রামস্ত লক্ষাণেনাশু ববন্দে চরণো পিতুঃ॥ ৩৭॥
ততোছফোদশরথো রামং বচনমত্রবীং।
দিষ্ট্যা পশ্যামি তেরাম মুখং ফুল্লামুজোপমং॥৩৮॥
মুনেরসুগ্রহাং সর্বং সম্পন্ধং মম শোভনং॥৩৯॥
ইত্যুক্ত্রাপ্রায় মূর্জানমালিক্ষ্য চ পুনঃ পুনঃ।
হর্ষেণ মহতাবিষ্টো ব্রহ্মানন্দং গতো যথা॥৪০॥

वर्गा म्रक्तां छत्र गण्डिका (२५) मूक्तांशां त छिक्र नि कर्की, कर्ग भव- द्वरां का मना प्रमान नि कर्म्या, त्कां भवक्ष भविष्ठां । विष्ठ में त्र क्षे भवक्ष में विष्ठ कि विष्ठ कि

অনস্তর মহামতি বিশামিত্র তথাস্ত বলিয়া কতকগুলি ছরিত-বিক্রম দৃত প্রেরণ করিলেন। দৃতগণ কোশলাধিপতির নিকট উপস্থিত হইয়া রামের মঙ্গল নিবেদন করিল (৩১)। রাজা দশরথ শ্রীরামক্ষত পূর্বাপর তাবৎ বৃদ্ধান্ত শ্রবণে নিরতিশর হর্বাবিষ্ট হইয়া মিথিলা গমন জন্ত মন্ত্রীকে স্ত্র হুইতে আদেশ করিলেন (৩২)। কহিলেন, গজ, অখ, রথ ও পত্তি সমস্ত মিথিলা গমন করুক।
শীঘ্র আমার রথ আনয়ন কর; অদ্যই গমন করিব; বিলখে
প্রয়োজন নাই (৩০)। গুরু ভগবান্ বশিষ্ঠ মুনি অগ্নিচতুইয় ও
রামমাতাকে লইয়া সন্ত্রীক সর্কাগ্রে যাত্রা করুন (৩৪)।

রাদ্ধর্ষি এইরূপে সকলকে প্রেরণ করিয়া স্বয়ং বৃহৎরথে আরো-হণপূর্বক মহতী সেনা সমভিব্যাহারে যাত্রা করিলেন (৩৫)।

অনস্তর,রাজা দশর্থ আগমন করিয়াছেন শুনিয়া,হর্ষ সমাকুল জনক রাজা শতানল পুরোহিত সহ অগ্রবর্তী হইয়া (৩৬) যথা-যোগ্য বিধানে মাননীর রাজার সম্মান রক্ষা করিলেন। প্রীরাম ও লক্ষণের সহিত অবিলম্বে পিতৃচরণে অভিবাদন করিলেন (৩৭)। তদনস্তর প্রকৃষ্টাত্মা দশর্থ শ্রীরামকে কহিলেন, রাম আমার ভাগ্য বশতঃ তোমার প্রফুল কমলোপম মুখ দর্শন করিলাম (৩৮) সে সমস্তই বিখামিত্র মুনির অন্তগ্রহ বশতঃ স্থান্সার হইয়াছে (৩৯)। এই বলিয়া মন্তকাত্রাণে পুনঃ পুনঃ ক্রোড়ে লইয়া বেন ব্রহ্মানন্দে পরমান্দিত হইলেন (৪০)। পরে অনক রাজ কর্তৃক আবাসে ততো জনকরাজেন মন্দিরে সংনিবেশিতঃ।

শোভনে সর্বভোগাত্যে সদারঃ সংস্থিতঃ হৃথী।।৪১।।

ততঃ শুভে দিনে লগ্নে হৃযুহুর্তে রঘূত্তমং।

আনয়ামাস ধর্মজঃ সভ্রাতৃপিতৃকং তথা ।। ৪২ ।।
রত্নস্তস্তে হৃবিস্তারে হৃবিতানে হৃতোরণে।

মগুপে সর্বভোগাত্যে মৃক্তাপুষ্পফলান্বিতে ।।৪৩।।

বেদবিদ্যিঃ হৃসংবাসে ব্রাক্ষণেঃ বর্ণভূষণেঃ।

হুবাসিনীভিঃ পরিতো নিক্ষকণ্ঠীভিরারতে ।। ৪৪ ।।

ভেরীচুন্ধুভিনির্ঘোষে নৃত্যগীতসমাকৃলে।

দিব্যরক্লাঞ্চিতে স্বর্ণপীঠে রামং ন্যবেশয়ৎ ।। ৪৫ ।।

বশিষ্ঠং কৌশিকঞৈব শতানন্দপুরোহিতঃ।

যথাক্রমং পূজ্মিন্থা রামস্থোভয়পার্শব্যোঃ ।। ৪৬ ।।

হুপিয়িন্থা স তত্রাগ্রিং জ্বালয়ন্থা যথাবিধি।

সীতামানীয় শোভাত্যাং নানারত্বিভূষিতাং ॥৪৭॥

সভার্য্যোজনকঃ প্রাদাৎ রামং রাজীবলোচনম্।
পাদে প্রকাল্য বিধিবদপোমূর্ক্যপারয়ৎ।। ৪৮।।
যা প্রতামূর্ক্ত্রি, সর্বেণ ব্রহ্মণা মূনিভি: সদা।। ৪৯।।
ততঃ সীতাং করে প্রহা সাক্ষ্যতাদকপূর্বকম্।
রামায় প্রদদে প্রীত্যা পাণিগ্রহবিধানতঃ॥ ৫০॥
সীতা কমলপ্রাক্ষী স্বর্ণমূক্তাবিভূষিতা।
দীয়তে মে স্বতা ভূভাং প্রীতোভব রঘূত্তম॥ ৫১॥
ইতি প্রীতেন মনসা সীতাং রামকরেহর্পয়ৎ।
মূমোদ জনকো লক্ষ্মীং ক্লীরাক্রিরিব বিফবে॥৫২॥
উর্মিলাঞ্চোরসীং কত্যাং লক্ষ্মণায় তদা দদে।।
তথৈব প্রুত্তকীর্ত্তিক্ষ মাণ্ডবীং প্রাত্তকত্যকাম্।
ভরতায় দদাবেকাং শক্রন্থায়াপরাং দদে।। ৫০।।
চন্থারোদারসম্পন্না প্রাতরঃ শুভলক্ষ্মণাঃ।
বিরেক্ত্র প্রভয়া সর্বে লোকপালাইবাপরে।। ৫৪।।

নিবেশিত সদার সপ্ত দশরথ স্থাশেভনীয় সর্বভোগাতা রাজমনিরে সংস্থিত হইরা স্থী ইইলেন (৪১)। পশ্চাৎ শুভানিনে
বৈবাহিক লয় মুহুর্ত্তে ধর্মজ্ঞ জনক রাজা সভ্রাতৃপিতৃক রযুত্তম
শীরামকে আবাসস্থান হইতে আনিয়া (৪২) বৃহৎ রদ্ধস্ত
কুক তোরণ চক্রাতপাচ্ছাদিত ছায়ামগুপে মুক্তাপৃশকলাবিত (৪৩)
দর্বভোগাতাস্থানে স্থবর্গভ্বিত বেদবিব্যান্ধণগণবেহিত নিক্কন্তীম্বাসিনী-প্রমদা-বিরাজিত (৪৪) ভেরী ছন্মভি বাদ্যশন্দে মৃত্যা
দীত সমাকুল উত্তম রক্ত পৃজিত স্থবর্ণ পীর্টোপরি উপবেশন করাইলেন (৪৫)। পরে শতানন্দ প্রোহিত জনকরাজা শীরামের উভর
শার্ষস্থিত বশিষ্ঠ আর কৌশিককে ক্রমাণ্রে প্রা করিয়া (৪৬)
ব্যাবিধি প্রজ্বনিত বহি স্থাপনান্তে নানারম্ব বিভ্বিতা শোভাত্যা
দীতাকে ছায়ামগুপে আনিয়া (৪৭)।

সভার্য্য জনক রাজীবলোচন রামের ষ্থাবিধি পাদ প্রক্রালন করাইয়া, শিব বিরিঞ্চি মুনিগণ যে চরণামৃত মন্তকে ধারণ করেন, সেই চয়ণামৃত নিজ্ঞ মন্তকে ধারণ করিলেন (৪৮।৪৯) পরে পাণি গ্রহণ বিধানে সীভাকে করে ধরিয়া মনঃ প্রীতি সহকারে সাক্ষত উদকদানপূর্বক শ্রীরামকে সম্প্রদান করিয়া কহিলেন (৫০) স্বর্ণমুক্তাবিভূবিতা কমলপত্রাক্ষী মদীয় স্বতা সীতা ভোমায় প্রদান করিলাম, হে রম্বন্তম! ভূমি সন্তই হও; (৫১) এই বলিয়া ভূপ্তাননা জনক রামকরে সীতা সমর্পণ করিয়া, ক্ষীর সাগর বিস্কুকে লক্ষী সমর্পণ করিয়া যজপ হাই হইয়াছিলেন, তজপ ভূপ্তি লাভ করিলেন। (৫২) পশ্চাৎ লক্ষণকে উর্দ্মিলা নায়ী ঔরসী কত্যা সম্প্রদান করিলেন; তৎপর ভরতকে শ্রুত্বীর্তি,আর শত্রম্বকে মাণ্ডবী নায়ী শ্রাত্বক্র্যা প্রদান করিলেন, (৫৩) এই রূপ শুভলক্ষণাক্রান্ত শ্রাত্বভূত্বর দারসম্পর হইলে বিতীয় লোকপালসম উজ্লেশভায় বিরাজিত হইলেন। (৫৪) জনভর মিথিলাধিপতি বলিষ্ঠ এবং বিশ্বা-

ততাহব্রীদ্বশিষ্ঠায় বিশ্বামিত্রায় মৈথিলঃ।

স্বস্থতায়া যথোদন্তং নারদেনাভিভাষিত্রম্।। ৫৫।।

যজ্ঞভূমিবিশুদ্ধ্যর্থং ক্ষয়তোলাঙ্গলস্থা মে।

সারথাতসমূৎপন্ধা কৃষ্ণকা শুভলজ্জনা।। ৫৬।।

তামেবৈক্ষমহং প্রাত্যা পুত্রিকাভাবভাবিতা।

অপিতা প্রিয়ভার্য্যায়ৈ শরচ্চক্রনিভাননা।। ৫৭।।

একদা নারদোপ্যাগাৎ বিবিক্তে ময়ি সংস্থিতে।

রণরন্মহতীং বীণাং গায়নারায়ণং বিভূম্॥ ৫৮॥

পুজিতঃ স্থমাসীনো মামুবাচ মুদান্বিতঃ॥ ৫৯॥

নারদ উবাচ॥ ৬০॥

শুণুষ্ব বচনং গুছং তবাভ্যুদয়কারণং।

পরমাত্মা স্থবীকেশো ভক্তানুগ্রহকাম্যুয়া॥ ৬১॥

দেবকার্য্যার্থিদন্ধ্যর্থং রাবণস্থা বধায়চ।

জাতোরাম ইতিখ্যাতো মায়ামানুষরূপপুক্॥ ৬২॥

জাতোরাম ইতিখ্যাতো মায়ামানুষরূপপুক্॥ ৬২॥

আতে দাশরথিস্থা চতুর্ধা পরমেশ্বরং।

যোগসায়াপি সীতে তি জাতা বৈ তব বেশ্মনি॥৬০।
অতস্ত্রাঘবারৈব দেহি সীতাং প্রয়ন্তঃ।
নান্ডেভ্যঃ পূর্বভার্য্যেষা রামস্ত পরমান্মনঃ॥ ৬৪
ইত্যুক্তঃ প্রযযৌ দেবগতিং দেবমুনিস্তদা।
তদারভ্য ময়া সীতা বিফোর্লক্ষমীতি ভাব্যতে॥ ৬৫
কথং ময়া রাঘবায় জানকী দীয়তে শুভা।
ইতিচন্তাসমাবিষ্টঃ কার্য্যমেকমচিন্তয়ম্॥ ৬৬॥
মৎপিতামহগেহেয়ু ত্যাসভূতমিদং ধকুঃ।
ঈশ্বরেণ পুরা ক্ষিপ্তং পুরদাহাদনন্তরম্॥ ৬৭॥
ধনুরেতৎ পণং কার্য্যমিতি চিন্ত্য তথাক্তম্।
সীতাপাণিগ্রহার্থায় সর্বেষাং মাননাশনং॥ ৬৮॥
বংপ্রসাদান্ম্নিশ্রেষ্ঠ রামো রাজীবলোচনঃ।
আনীতোহত্রধকুদ্র ক্রুং ফ্লিতোমে মনোরথঃ॥৬১

মিত্রকে নারদক্ষিত স্বস্থতা সীতার বুত্তান্ত বর্ণন করিতে লাগিলেন; (৫৫) যজভূমি শোধন করিবার জন্ম আমি লাঙ্গলকর্ষণ করিতে ছিলাম; ঐ সময় সীরাথাত হইতে শুভলক্ষণা কন্তা উৎথিত হইল; (৫৬) আমি শরচন্দ্রনিভাননা কন্তাকে পুত্রিকাভাবে প্রহণ করিয়া প্রীতি সহকারে প্রিয় মহিনীকে অর্পণ করিলাম। (৫৭) অনন্তর একদা একাকী উপবেশন করিয়া আছি এমন সময় নারদ মহতী বীণাবাদনপূর্বক বিভূ নারায়ণের গুণগান করিতে করিতে আগমন করিলেন; (৫৮) আমি তাঁহার পূজা করিলাম। তিনি আসনে উপবেশনপূর্বক প্রান্তি দ্র করত তুই হইয়া আমাকে কহিলেন, (৫৯। ৬০) আমি তোমার মঙ্গলের জন্ত এক গোপনীয় বর্ণা কহিতেছি প্রবণ কর; পরমায়া হামীকেশ ভক্তজনের প্রতি দত্ত প্রকাশ, (৬১) দেবকার্য্য সাধন ও রাবণ বধ করিবার জন্ত নারামান্ত্র রূপ ধারণপূর্বক জন্মগ্রহণ করিয়া রামনামে বিথ্যাত চইয়াছেন। (৬২) গ্রমেশ্র চারি অংশে দশরণের চারি পুত্র হইয়া

অবস্থিতি করিতেছেন। আর যোগনায়া সীতা নামে তোনার ে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। (৬৩) অতএব তুমি যত্ন করিয়া রাঘবকে সীতা সম্প্রদান করিবে, অন্ত কাহাকেও দান করিবে ন কারণ ইনি প্রমান্না রামের পূর্কভার্যা। (৬৪) এই কথা বলিং দেবমূনি আকাশপথে প্রস্থান করিলেন। সেই অবধি আমি সীতা বিষ্ণুর লক্ষ্মী মনে করিয়াআসিতেছি। (৬৫) রামকে কি প্রকা শুভলক্ষণা সীতা সম্প্রদান করিব এই বিষয়ে বহু চিন্তা করিয় এক কর্ত্তব্য স্থির করিয়াছিলাম। (৬৬) পূর্ককালে পুরদাহের প মহাদেব আমার পিতামহের নিকট স্থাস স্থর্রপ এই ধন্থ রম্ম করিয়া যান। (৬৭) সীতার বিবাহের জন্ম এই ধন্থ পণ রাধি এইরূপ চিন্তা করিয়া তাহাই করিয়াছিলাম; ইহাতে সকল রাধা মান হানি হইয়াছে। (৬৮) হে মুনিশ্রেষ্ঠ! আপনি প্রসন্ন হটা ধন্ত্র্পূর্ণনি করিবার জন্ম রাজীবলোচন রামকে এইস্থানে আনর্জ করিলেন; আমার মনোর্থ সফল হইল। (৬৯) রাম! আ অন্য মে সফলং জন্ম রাম ছাং দীত্য়া সহ। একাসনন্থং পশামি ভাজমানং রবিং যথা।। १०।। ত্বৎপাদাম্বুধরো ব্রহ্মা স্বস্টিচক্রপ্রবর্ত্তকঃ। विनिखु ९ भारमनिनः ध्रुषा जू कि जिला थिभः ॥ १১ ॥ ত্বৎপাদপাং শুসংস্পর্শাদহল্যা ভর্তৃশাপতঃ। সদ্যএব বিনিমুক্তা কোহস্তম্বভাহধিরক্ষিতা।।৭২॥ তৎপাদপক্ষজপরাগসরাগিযোগি-त्ररेमर्जिङः ভবভয়ং জিতকালচকৈঃ। যন্নামকীর্ত্তনপরাজিতত্বঃখশোকা দেবাস্তমেব শবণং সততং প্রপদ্যে।। ৭৩।। ইতি স্তত্তা নৃপঃপ্রাদাৎ রাঘবায় মহাত্মনে। দাসাদীনাং কোটিশতং রথানামযুতং তথা।।৭৪॥ অখানাং নিযুতং প্রাদান্যজানামযুতং তথা। পত্তীনাং লক্ষমেকঞ্চ দাসীনাং ত্রিশতং দদে।।।৭৫।। **क्तियाचित्रां श्रां श्रां क्रियाचित्रां क्** সীতায়ৈ জনকঃ প্রাদাৎ প্রীত্যা হহিতৃবৎসলঃ ॥৭৬॥

আমার জন্ম সফল হইল; আমি সীতার সহিত তোমাকে একা-সনে স্থ্যের স্থায় বিরাজ করিতে দর্শন করিলাম (৭০)।

ভবদীয় শীচরণামৃত ধারণ করিয়া ব্রহ্মা স্থাইচক্রের প্রবর্ত্তক এবং বলিরাজা দহজাধিপ হইয়াছেন। (৭১) তোমার শীচরণারবিন্দ-রেণু সম্পকে অহল্যা অনায়াসে পতিশাপ হইতে মুক্তি পাইয়াছেন; অতএব তোমা ভিন্ন আর কে রক্ষা কর্ত্তা আছে ? (৭২) ভবদীয় পাদপদ্মে সবিশেষ মনোযোগি যোগিগণ কালচক্র করিয়া সমস্ত ভবভন্ন পরাজন্ম করিয়াছেন্। আর তোমার পরম পবিত্র নামগুণ কীর্ত্তনে দেবগণের সমস্ত ছংখ ও শোক দ্র হয়। অতএব তোমার পাদপদ্মেই সতত শরণাগত হই। (৭৩) জনক রাজা এই বলিয়া মহায়া য়াঘবকে শত কোট দাস ও অমৃত সংখ্যক রথ, (৭৪) নিমৃত অমৃ, অমৃত মাতঙ্গ, একলক্ষ পদাতি, ও ত্রিশত সংখ্যক দাসী প্রদান করিয়া (৭৫) ছহিত্বাৎসল্যপরায়ণ জনক দিব্য বসন ও মৃক্তারম্বাজল হায় সীতাকে দান করিলেন (৭৬) পরে বিশিচাদির

বশিষ্ঠাদীন্ স্থসংপৃক্ষ্য ভরতং লক্ষাণং তথা।
পৃজ্যিত্বা যথা ভায়ং তথা দশরথং নৃপম্।। ৭৭ ॥
প্রত্বাপয়ামাস নৃপো রাজানং রঘুসভ্তমম্।
সীতামালিঙ্ক্য রুদতীং মাতরং সাক্রুলোচনাঃ।।৭৮।।
অক্রবন্ গদগদং ধীরামুজন্ত্যো ছহিতু মুখিম্।
খক্রুলেখণরতা নিত্যং রামমমুব্রতা।। ৭৯ ॥
পাতিব্রত্যমুপালকা তিষ্ঠ বংসে যথা স্থধম্।।৮০॥
প্রয়াণকালে রঘুনন্দনস্থ
ভেরীমুদসানকভূর্যঘোষঃ।
স্বর্বাসিভেরীঘনভূর্যগশদসংমূদ্ধিতো ভূতভয়ঙ্করোইভূৎ ॥ ৮১ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে আদিকাতে হরধসূর্ভঙ্গ রামাদীনাং বিবাহো নাম সপ্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ॰ ॥

ও ভরত লক্ষণ প্রভৃতির এবং রাজা দশরথের যথাবিধি যথাক্রমে পূজা করিয়া (৭৭) জনক রাজা রযুক্লতিলক জীরামকে জ্বোধ্যা ভবন প্রস্থান করাইলেন। অন্তঃপুরবাসিনী জননীগণ কাঁদিতে কাঁদিতে রোক্ষদামানা সীতাকে আলিঙ্গন করত তাঁহার মূথ মুছাইয়া দিয়া গদগদ স্বরে ধীর ভাবে কহিলেন, বংসে! শুলার শুলারণে পরারণা হইবে। আর নিত্য জীরামের জ্মুগত থাকিয়া পাতিব্রত্য ধর্মাবলম্বনে কালক্ষ্ম করিবে। (৭৮। ৭৯।৮০)

রখুনন্দনের অযোধ্যাপুরী যাত্রাকালীন ভেরী, মৃদক্ষ, আনক, তৃর্যা প্রভৃতির শব্দ দেবতাদিগের ভেরী ও ভূর্য্য বাদ্যরবে সংম্-ছিত হইরা ভূতগণের অতি ভয়ন্ধর হইয়াছিল। (৮১)

এই শ্রীমদধ্যাত্ম রামায়ণের উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাণ্ডে হরধহুর্ভঙ্গে রামাদির বিবাহ নাম সপ্তম অধ্যায়॥ । ॥

विकेटमा ३ था।

শ্রীমহাদেব উবাচ।

অথ গছতি জীরামে মৈথিলাদ্যো জনত্ত্রম্।
নিমিত্তান্তাতিঘারানি দদর্শ নৃপদত্তমঃ॥ ১॥
নক্ষা বশিষ্ঠং পপ্রচ্ছ কিমিদং মুনিপুঙ্গব।
বশিষ্ঠন্তমথপ্রাহ ভয়মাগামি দূচ্যতে॥ ২॥
পুনরপ্যভয়ন্তেইদ্য শীস্ত্রমেব ভবিষ্যতি।
মুগাঃ প্রদক্ষিণং যান্তি হ্যবশ্যং শুভদূচকাঃ॥ ৩॥
ইত্যেবং বদতন্ত্রন্ত ববৌ ঘোরতরোইনিলঃ।
মুফাং শ্চক্ষৃংষি সর্বেষাং পাংশুর্স্তিভির্দ্ধির্ম্। ৪
ততোদদৃশে ভগবান্ যামদগ্যঃ প্রতাপবান্।
নীলমেঘনিভপ্রাংশু জঁটামন্দলমণ্ডিতঃ॥ ৫॥
ধকুঃপরশুপাণিশ্চ দাক্ষাৎকাল ইবান্তকঃ।
কার্ত্ববির্যান্তকোরামোভ্ঞঃ ক্ষত্রিয়র্মদিনঃ॥ ৬॥

প্রাপ্তো দশরথস্থাগ্রে কালমৃত্যুরিবাপরঃ।
তং দৃষ্ট্যা ভয়সংত্রস্তো রাজাদশরপস্তদা॥ ৭॥
অর্ঘ্যাদি পূজাং বিস্তৃত্য ত্রাহি ত্রাহী তিচাত্রবীৎ।
দশুবৎ প্রণিপত্যাহ পুত্রপ্রাণান্ প্রযুদ্ধ মে॥ ৮॥
ইতি ব্রুবাণং রাজানমনাদৃত্যু রঘূত্রমং।
উবাচ নিষ্ঠুরং বাক্যং ক্রোধাৎ প্রচলিতেব্রিয়ঃ॥৯॥

যামদগ্র উবাচ।

ত্বং রাম ইতি নাল্লাচ চরিদ ক্ষত্রিয়াধম ।
দক্ষযুদ্ধং প্রবচ্ছাশু যদি ত্বং ক্ষত্রিয়োহদি মে।।১০।।
পুরাণং জর্জ্জরং চাপং ভঙক্ত্রা ত্বং কথদে মুষা।
ইদস্ত বৈফবং চাপমারোপযদি চেদ্ গুণম্।। ১১।।

শ্রীরাম মিথিলা হইতে তিন যোজন পথ আসিলে পথিমধ্যে সহসা উপস্থিত ভ্রানক নিমিত্ত সকল দেথিয়া (১) রাজা
দশরথ বশিষ্ঠ মৃনির শ্রীচরণারবিন্দে প্রণিপাতপূর্বক জিজ্ঞাসা
করিলেন, হে মুনিপুঙ্গব! একি ৫ এই বলিলে সর্ব্ব তত্ত্ববিৎ বশিষ্ঠ
কহিলেন, মহারাজ! হঠাৎ ভয়ের কারণ বটে, (২) কিন্তু অদ্য
অবিলয়েই নির্ভর হইবে; যে হেতু মৃগগণ আমাদিগকে প্রদক্ষিণ
করিয়া যাইতেছে, তাহাতে অবশুই মঙ্গল হইবার সম্ভাবনা
আছে। (৩) এই কথা বলিবামাত্র ঘোরতর বায়ু ধৃলি রাশি
বর্ষণে তত্ত্বস্থ সমস্ত লোকের দৃষ্টি হরণ ও পীড়ন করিয়া বহিতে
আরম্ভ করিল। (৪) পর ক্ষণেই প্রতাপশালী কার্ত্বীর্যান্তকর
ক্ষত্রিয়মর্দন সাক্ষাৎ অন্তক্ত সদৃশ ভূগুবংশীয় ভগবান্ যমদ্বিতনয় রাম দৃষ্টিগোচর হইলেন। উহার হস্তে ধয় ও পরশু;
মস্তক নীল মেঘ সমিভ অত্যারত জটাভারে মণ্ডিত। (৫।৬)

ভার্গব এই বেশে দিতীয় মৃত্যুর স্থায় দশরথের স্থাপে উপস্থিত চুইলেন। রাজা দশরথ তাঁহাকে দর্শন করত ভয়ে বিহবল হইয়া (৭) অর্ঘ্যাদি পূজা প্রদানপূর্বক দণ্ডবং প্রণাম করিয়া বারম্বার বলিতে লাগিলেন, ত্রাণ করুন, ত্রাণ করুন; আমার পুত্রের প্রাণদান করুন। (৮)

রাজা এই কথা কহিলে যামদগ্য তাঁহাকে গ্রাহ্ম না করিনা কোধ হেতু বিচলিতে ক্রিয় হইয়া রবৃত্তম রামকে নিষ্ঠুর বাকেন কহিলেন, (৯) অরে ক্ষত্রিয়কুলাধম! রাম নাম ধারণ করিনা ভূতলে বৃথা পর্যাটন করিতে ছিদ্। যদি ক্ষত্রিয়কুলে জন্ম গ্রহণ করিয়া থাকিদ, তবে শীঘ্র আমাকে দ্বন্দ যুদ্ধ প্রদান কর। (১০) পুরাতন, বহু দিবদ এক স্থানে অবস্থিতি হেতু কীট নিছুষিত জর্জের ধন্মভঙ্গ করিয়া বৃথা অভিমানী হইয়াছিদ্। এই বৈষ্ণব শ্রাদনে যদি জ্যারোপণ করিতে পারিদ্ধ (১১) তবে হে রঘুবংশজ্য তোর দহিত

তদাযুদ্ধং তয়াসার্দ্ধং করোমি রঘুবংশজ।
নোচেৎ সর্বান্হনিষ্যামি ক্ষত্রিয়ান্ত্বকরোস্ম্যহং॥১২॥
ইতি ব্রুবতি বৈ তস্মিংশ্চচার বস্থা।ভূশং।
ভক্ষকারো বভূবাথ সর্বেষামপি চক্ষুষাং॥ ১৩॥
রামোদাশরথিবীরো বীক্ষ্য তং ভার্গবং রুষা।
ধনুরাচিত্য তদ্ধস্তাদারোপ্য গুণমঞ্জসা।। ১৪।।
ভূণীরাদ্বাণমাদায় সন্ধায়াক্ষ্য বীর্য্যান্।
উবাচ ভার্গবং রামং ব্রহ্মন্ শূণু বচোমম।। ১৫।।
লক্ষং দর্শয় বাণস্ত হ্থমোঘো রামশায়কঃ।
লোকান্ পদযুগংবাপি বদ শীত্রং মমাজ্রয়া।।১৬।।
এবং বদতি শ্রীরামে ভার্গবো বিকৃত্যননঃ।
সংস্মরন্ পূর্বেরভান্তমিদং বচনমত্রবীৎ॥ ১৭॥

যামদগ্য উবাচ।

রাম রাম মহাবাহো জানে ত্বাং পরমেশ্বরং। পুরাণপুরুষং বিফুং জগৎস্বর্গলয়োদ্ভবম্॥ ১৮॥

আনি দ্ধ করিব, নতুবা সমস্তই বিনাশ করিব; আমি ক্ষত্রির-কুলের অস্তকর। (১২) পরশুরাম রামের প্রতি এই প্রকার কহিলে মেদিনী অতিশয় কম্পমানা ও সমস্তলোকের চক্ষ্ অন্ধকারে আজ্র হইয়া উঠিল (১৩)।

অনন্তর অসাধারণ বীর দাশরথি রাম ক্রোধ দৃষ্টিতে স্প্রনন্দনকে দর্শন করিয়া তাঁহার হস্ত হইতে ধরু আকর্ষণ করত জ্যারোপণ করিয়া (১৪) তৃণীর হইতে বাণ লইয়া সন্ধানপূর্বকে আকর্ষণ করিয়া পরশুরামকে কহিলেন, হে ব্রহ্মন্! আমার বাক্য শ্রবণ কর (১৫) এই রামশায়ক অব্যর্থ; ইহার লক্ষ্য কোথায় দেখাও; ত্রিভ্বন বা ভবদীয় পদারবিন্দরর ভেদ করিব, আমার আক্রাহ্মসারে শীঘ্র বল। (১৬) শ্রীরামের এই প্রগল্ভ বাক্য শ্রবণে শুস্কবদন ভৃত্তনন্দন পূর্ব বৃত্তান্ত স্মরণ করিয়া কহিতে লাগিলেন। (১৭) হে রাম রাম! হে মহাবাহো! তুমি পরমেশ্বর; আমি জানি তুমি সনাতন পুরুষ ও বিষ্ণু, ব্র্মাণ্ডের স্ষ্টি স্থিতি প্রলম্বের

বাল্যেহং তপ্সা বিষ্ণু মারাধ্য়িতু মঞ্চনা।
চক্রতীর্থং শুভংগত্বা তপ্সা বিষ্ণু মন্বহম্॥ ১৯॥
ভূতোষয়ং মহাত্মানং নারায়ণ মনক্ষধীঃ।
ততঃ প্রসমোদেবেশঃ শহাচক্রগদাধরঃ।
উবাচমাং রঘুশ্রেষ্ঠ প্রসমম্থপক্ষজঃ॥ ২০॥

শ্রীভগবানুবাচ।

উত্তিতপদো ব্ৰহ্মন্ ফলিতন্তে তপোমহৎ ॥২১॥
নচিদংশেন যুক্তন্ত্ং জহি হৈহয় পূস্বম্।
কার্ত্ববির্যাং পিতৃহনং যদর্থং তপসং শ্রমঃ॥ ২২॥
ততন্ত্রি সপ্তক্তন্ত্ং হত্বা ক্ষব্রিয় মণ্ডলং।
কৃৎসাং ভূমিং কশ্যপায়দত্বা শান্তি মবাপহ॥২৩॥
ব্রেতাযুগে দাশর্থি ভূজারামোহহমব্যয়ঃ।
উৎপৎসে প্রয়াশক্তা তদাক্র্ক্যুসিমাং পুনঃ॥২৪॥
মতেজঃ পুনরাদাস্তেত্বিয়দত্বং ময়াপুরা।
তদাতপশ্চরন্লোকে তিঠিত্বং ব্রহ্মণো দিতম্॥২৫॥

এক মাত্র কার্রণ। (১৮) আমি বাল্যাবস্থায় তপস্থা দারা বিফুর আরাধনা নিমিত্ত শুভ চক্রতীর্থে গমন করিয়া তপস্থা দারা বিফুকে প্রতি দিন স্তব করিতাম। (১৯) পরে অনস্ত চিত্তের স্তবে পরিতৃষ্ট মহাত্মা শঙ্খচক্র গদাধর দেবেশ নারায়ণ প্রসন্ন হইলেন। হে রঘুশ্রেষ্ঠ ! সেই প্রসন্নম্থপস্কজ ভগবান্ আমাকে কহিয়াছিলেন, (২০) হে ব্রহ্মনা তপস্থা হইতে নিবৃত্ত হও। তোমার মহন্তপস্থার ফল ফলিয়াছে। (২১) মচ্চিদংশ প্রাপ্ত হইয়া হৈহয়পুস্ব পিতৃহস্তা কার্ত্তবীর্য্যকে বিনাশ কর, যন্নিমিত্ত তোমার তপস্থার পরিশ্রম। (২২) তদনস্তর একবিংশতি বার ক্ষত্রিয়মগুল বিনাশ করিয়া সমস্ত ভূমি কশ্রপকে প্রদান করিয়া শান্তি পাও। (২০) ত্রেতাবুগে অক্ষর আমি দাশর্থি রামনামে পরম শক্তি সহকারে উৎপন্ন হইব; তথন পুনর্বার আমাকে দেখিতে পাইরে (২৪) এখন যে তেজঃপুঞ্জ ত্রাধীন করিলাম, তৎকালে সেই সমন্তই পুনর্বার অন্মৎ শরীরে প্রবেশ করিবে; পরে ব্রহ্ম বাক্যানুসারে তপস্তাচরণে অবন্থিতি-পূর্বাক কাল্যাপন করিবে। (২৫)

ইত্যক্ত নিন্তর্পধে দেবস্তথাসকং কৃতং ময়।
সত্রব বিষ্ণু স্তৃং রাম জাতোহদি ব্রহ্মণার্থিতঃ॥২৬॥
ময়ি হিতস্ত তত্তেজ স্ত্রেমব পুনরাহ্মতম্।
অদ্য মে সফলং জন্ম প্রতীতোহদি মম প্রভো॥২৭॥
ব্রহ্মাদিভিরলভান্তঃং প্রকৃতেঃ পারগোমতঃ।
ছয়ি জন্মাদিষড়, ভাবা ন সন্ত্যজ্ঞানসন্তবাঃ॥২৮॥
নিবি কারোহদি পূর্ণস্তঃং গমনাদিবিবর্জ্জিতঃ।
যথাজলে ফেণজালো ধ্মোবহের্র তথা ছয়ি॥ ২৯॥
ছদাধারা ছদ্বিষয়া মায়া কার্যঃং স্তুজত্যহো।
যাবন্মায়ারতালোকা তাবন্তাং নবিজানতে॥ ৩০॥
অবিচারিতদিক্রেমা বিদ্যাবিদ্যাবিরোধনী॥ ৩১॥
অবিদ্যাক্তদেহাদিসংঘাতে প্রতিবিন্থিতা।
চিচ্ছক্তি জীবলোকেই শ্রেন্ জীব ইত্যভিধীয়তে॥৩২॥

এই কথা কহিয়া ভগবান্ বিষ্ণু অন্তর্ভ হইলে তাঁহার আদেশামুসারে সমস্ত বিষয়ে কৃতকার্য্য হইলাম। অতএব হে রাম ! সেই বিষ্ণু ভূমি ; হিরণ্যগর্ভের প্রার্থনারী অবতীর্ণ হই-য়াছ (২৬) আমাতে ভবদত যে সমস্ত ভেজ:পুঞ্জ ছিল, সে मकनरे मःशांत्र कतिरम । (र প্রভো । অদ্য আমার জন্ম मकन। আজ আমি তোমাকে চিনিতে পারিলাম। (২৭) আপনি ব্রন্ধা-দির অলভ্য এবং প্রকৃতি শক্তির পারগ ; অজ্ঞানজাত জন্মাদি ছয় অবস্থা আপনাতে বিদ্যমান নাই। (২৮) আপনি অনস্ত জ্ঞানসম্ভব নির্বিকার পূর্ণ গমনাদিরহিত। যক্রপ জলে ফেণজাল ও অনলে ধৃমজাল ভজ্ৰপ ভোমাতে আশ্রয়কারিণী এবং তোমার বিষয় (২৯) মারা কি আশ্রুষ্ট্য কার্য্য করিয়াছেন यावरकाल लाक ममख जनमेत्र मात्रात्र मृश्न थात्क, जावरकाल আপনাকে কেহ জানিভে পারে না। (৩০) অবিচারিত অর্থাৎ স্বাভাবিক বিদ্যা আর অবিদ্যাকৃত হুই প্রকার সিদ্ধি আছে তাহাতে অবিদ্যাকৃত দেহাদি সমূহে প্রতিবিশ্বিতারূপে চিৎশক্তি जीवालाक थाकिल जीवी वित्रा वावहरू रहा (७३।७२) यांवरकान (मह मन श्रांन । वृक्तानिष्ठ अञ्चिमान शांक, যাবদেহ মনঃ প্রাণ বৃদ্ধ্যাদিষভিমানবান্।
তাবৎ কর্তৃত্ব ভোক্তৃত্ব স্থথ ক্লংখাদি ভাগভবেৎ॥৩০॥
আত্মনঃ সংস্কৃতির্নান্তি বৃদ্ধে জ্র্জানং নজান্ধিতি।
অবিবেকাত্মংযুক্তো সংসারীতি প্রবর্ততে ॥৩৪॥
জড়স্সচিৎ সমাযোগা চিতংভ্যাদ্যিতে স্তথা।
জড়সঙ্গা জ্জড়ন্থংহি জলাগ্যো মেলনং যথা। ৩৫॥
যাবতৃৎ পাদভক্তানাং সঙ্গুগোখ্যং নবিন্দতি।
তাবৎ সংসার জ্লংখোঘামনিবর্তেমরঃ সদা।। ৩৬।।
সৎসঙ্গলক্ষ্যাভক্ত্যা যদান্ধাং সমুপাসতে।
তদামায়া শনৈর্যাতি ত্বামেবং প্রতিপদ্যতে ॥ ৩৭।।
ততন্ত্বজ্ঞানসম্পন্ধঃ সদগুরুত্বস্থলভাতে।
বাক্যজ্ঞানং গুরোর্লক্ষ্য স্থংপ্রাদাদ্মিচ্যুতে ॥৩৮॥
তত্মাত্দভক্তি হীনানাং কল্পক্ষেত্বস্থাভিরপি।
নমুক্তিশক্ষাবিজ্ঞানশক্ষানৈব স্থথং তথা।। ৩৯।।

তাবৎ কর্ত্ব ভোক্ত্ব রূপ অশেষ স্থু ছ:খাদির বিলক্ষণ ভাগী হইয়া আছার শ্বরণ ও বৃদ্ধি জ্ঞানাদি হইতে পরিভ্রংশপূর্ব্ধক অবিবেকসংযোগে সংসারী বলিয়া প্রথিত হইয়া থাকেন। (৩০। ৩৪) জ্ঞানের সহিত জড়ের সংযোগ হইলে জড়েরও জ্ঞানত্ব জন্মে, আবার জড়ের সহিত সংযোগ হইলে জানেরও জড়ত্ব উৎপন্ন হয়, যেমন জল আর অগ্রির মিলন। (৩৫) মহুষ্য যতদিন তোমার চরণভক্ত সাধুদিগের সঙ্গন্থ লাভ না করে, ততদিন সংসারহংশ্বরাশি হইতে নির্ত্তি পায় না। (৩৬) যথন মানৰ সংসঙ্গ লাভ করিয়া ভক্তি সহকারে আপনাকে ভজনা করে, তথন অবিদ্যা-রূপ মায়া ক্রমশ দ্র হয়; এই প্রকারে তোমাকে প্রাপ্ত হইয়া থাকে। (৩৭) অনস্তর তাহার ভগবভক্তজানসম্পন্ন সদ্প্তক্র সঙ্গতিও লাভ হয়; পরে সদ্প্তক্র হইতে বাক্যজ্ঞান লাভ করিলেই ভবৎ প্রসাদাৎ মুক্ত হয়। (৩৮) অতএব ভগবভক্তি বিহীন জনের কোটশত করেও মুক্তি বা বিজ্ঞান ও স্থুণ লাভ হইতে পারে না। (৩৯)

অতস্ত্ৰ পাদযুগলে ভক্তির্মে জন্মজন্মনি।
ত্যাৎস্কৃতক্তিমতাং সঙ্গোহবিদ্যাঘাভাং বিনশ্যতি॥৪০
লোকে স্বন্ধ কিনির তাস্ত্র দ্বর্মায়তবর্ষিণঃ।
পুনস্তি লোকমথিলং কিং পুনঃ স্বকুলোদ্ভবান্॥৪১॥
নমোহস্ত জগতাং নাথ নমস্তে ভক্তিভাবন।
নমঃ কারুণিকানস্ত রামচন্দ্র নমোহস্ত তে ॥৪২॥
দেব যদ্যৎ কৃতং পুণ্যং ময়া লোকজিগীয়য়া।
তৎসর্বাং তব বাণায় ভ্য়াদ্রাম নমোহস্ততে ॥৪৩॥
ততঃ প্রসন্মো ভগবান্ শ্রীরামঃ করুণাকরঃ।
প্রসন্মোহস্মি তব ব্রহ্মন্ যতে মনসি বর্ত্তে ॥৪৪॥
দাস্যে তদখিলং কামং মাকুরুষাত্র সংশয়ম্।
ততঃ প্রীতেন সনসা ভার্গবো রাম্মব্রবীৎ ॥৪৫॥
যদি মেহসুগ্রহো রাম তবান্তি মধুসূদন।
হন্তক্রসঙ্গত্রপাদপদ্মভক্তিঃ সদাস্ত মে॥ ৪৬॥
বিত্রসঙ্গত্রপাদপদ্মভক্তিঃ সদাস্ত মে॥ ৪৬॥

স্থোত্তমেতৎ পঠেদ্যস্ত ভক্তিহীনোহিপি সর্বাদ।
বিদ্ভক্তিস্ত শবিজ্ঞানং ভূয়াদন্তে শ্বিক্তির ॥৪৭॥
তথেতি রামেনৈবাক্তঃ প্রিক্তম্য প্রণম্য তম্ ।
পূজিতস্ত দমুজ্ঞাতো মহেন্দ্রাচলমন্থগাৎ ॥ ৪৮ ॥
রাজা দশরথো হুটো রামং মৃত্যিবাগতম্ ।
আলিঙ্গ্যালিঙ্গ্য হুর্ষেণ নেত্রাভ্যাং জলমুৎস্তজৎ॥৪৯॥
ততঃ প্রীতেন মনসা স্থাছিতঃ পুরং যুয়ে ॥৫০॥
রামলক্ষ্যাশক্রেম্বাদায় রেমিরে স্বাম্নিদরে॥৫১॥
মাতাপিতৃভ্যাং সংহুটো রামঃ মীতাসমন্বিতঃ ।
রেমে বৈকুণ্ঠভবনে শ্রেয়া সহ যথান্থরিঃ ॥ ৫২ ॥
যুধাজিন্নাম কৈকেয়ীল্রাতা ভরতমাতৃলঃ ।
ভরতং নেতুমাগচ্ছৎ স্বরাজ্যং প্রীতিসংযুতঃ ॥৫৩॥

অতএব ভবদীয় পদারবিন্দযুগলে যেন প্রতি জন্মেই আমার ভক্তি অচলা থাকে এবং ভগবদ্ধক্তিতৎপর ব্যক্তিদেগের স্তিত সঙ্গম হয়; এই উভয়ই অবিদ্যা বিনাশ করে। (৪০) জীবলোকে ঈশর ভক্তিনিরত ব্যক্তিরা ভগবানের ধর্ম কর্ম্মরূপ অমৃত বর্ষণ করত তাবৎলোক পবিত্র করিতেছেন, স্বকুলোম্ভব वाकिमिरात कथा आंत्र कि विनव। (82) रह अगन्नाप! रह ভক্তিভাবন! হে কারুণিক! হে অনস্ত!হে রামচক্র! তোমাকে নমস্কার। (৪২) হে দেব! লোকজিগীবাবশতঃ আমি যাহা যাহা পুণা কর্ম্ম করিরাছি, সে সমস্তই তোমার বাণ ছারা নষ্ট হউক্। হেরাম! তোমাকে প্রণাম করি। (৪৩) পরে করুণাসাগর नत्ना जिलाय धार्थना कतिरव छाहा ममखहे धानान कृतिव সন্দেহ নাই। অনস্তর প্রীতমনা ভৃগুনন্দন পরশুরাম শ্রীরামকে কহিলেন। (৪৪।৪৫) ছেরাম! হে মধুসুদন! यनि আমার প্রতি আপনকার অমুকম্পা হইয়া থাকে, তাহা হইলে যেন ভবস্তু-ক্তসঙ্গ ও ভবদীর পদারবিন্দে আমার ছক্তি থাকে। (৪৬) আর

ভক্তি বিহীন ব্যক্তিও যদি এই স্তবপাঠ করে, তবে ভগবন্ধক্তি ও বিজ্ঞান লাভ করিয়া মৃত্যুকালে তোমার নাম স্থরণ করিতে পারে। (৪৭) পরে শ্রীরাম তথাস্ত বলিলে রামামুক্তাত রাম প্রণাম প্রদক্ষিণ করিয়া মহেক্র পর্বতে গমন করিলেন। (৪৮)

রাজা দশরথ আনন্দিত হইয়া, যেন মৃত্যু মুথ হইতে প্রত্যাগত রামকে বারম্বার আলিঙ্গন করিয়া উভয় নেত্রে আনন্দাশ্র বিসর্জ্জন করিতে লাগিলেন। পরে স্কুছচিত হইয়া প্রীতমনে অযোধ্যা যাত্রা করিলেন। (৪৯। ৫০) অনস্তর দেবোপম রাম লক্ষণ ভরত শক্রম স্ব ভার্যা সমভিব্যাহারে স্ব স্ব ভবনে পরম স্বথে কালক্ষয় করিতে লাগিলেন। (৫১) বৈকুণ্ঠভবনে ক্মলালয়ার সহিত হরি যক্রপ আনন্দে কাল্যাপন করেন, তক্রপ পিতা মাতাকে আফ্লাদচিত্তে রাথিয়া সীতা সহ শ্রীরাম সদানন্দে কালক্ষয় করিতে লাগিলেন। (৫২) এই রূপে কিয়িছিল অভিবাহিত হইলে যুধাজিয়ামক ভরতমাতৃল কেকয়নন্দিনী লাতা প্রীতিভাবে নিজরাজধানীতে ভরতকে লইবার জন্ত সমাগত

প্রেষয়ামাস ভরতং রাজা স্নেহসমন্বিতঃ।
শক্রত্বঞ্চাপি সংযুজ্য যুধাজিতমরিন্দমঃ।। ৫৪।।
কৌশল্যা শুশুভে দেবী রামেণ সহ সীতয়া।
দেবমাতেব পৌলম্যা শচ্যা শক্রেণ শোভনা।।৫৫।।
সাকেতে লোকনাথ-প্রথিতগুণ গণোলোক

সংগীতকীর্ত্তিঃ।

জ্রীরামঃ দীতয়ান্তে হথিল স্থরনিকরানন্দ সন্দোহ

মূর্তিঃ।

নিত্যশ্রীর্নিবিকারো নিরবধিবিভবো নিত্যমায়া নিরাসো মায়াকার্য্যানুসারী মনুজইব সদা ভাতি দেবোহথিলেশুঃ।। ৫৬।।

হইলে (৫৩) অরিন্দম রাজা দশরথ স্নেহ সহকারে শক্রন্থ সমভি ব্যাহারে মাতৃলসহিত ভরতকে প্রেরণ করিলেন। (৫৪) পৌলোমী শচী ও শক্রের সহিত দেবমাতা যদ্ধপ শোভমানা হন, রাম ও সীতার সহিত কৌশল্যাদেবীও ভদ্ধপ শোভা পাইয়াছিলেন। (৫৫) দেথ কি আশ্রুষ্যা, লোকনাথ প্রসিদ্ধ গুণগণ সমস্তলোকে সংগীতকীর্ত্তি নিখিলদেবের আনন্দমূর্ত্তি নিতাশী, নির্ব্ধিকার অতৃল বিভবশালী নিত্যমায়ানিরাসকারী অথিলেশ্বর দেবমায়া কার্যান্ত্র্পারী হইয়া মন্ত্র্যের স্থায় বিরাজ করিতে লাগিলেন। (৫৬) ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসংবাদে আদিকাণ্ডে পরশুরামস্থা পরাজয়বিবরণে রামাদীনামযোধ্যায়ামধিবাসো নামাউমোহধ্যায়ঃ ॥ ॰ ॥

সমাপ্তঞ্চেমাদিকাণ্ডম্।। •।1

এই অধ্যাত্মরামায়ণের উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাওে পরশুরামের পরাজ্য বিবরণে রামাদির অংগাধ্যায় অধিবাদ-নামক অষ্টম অধ্যায়।

আদিকাও সমাপ্ত।

অ যো ধ্যা কা ও ম্।

প্রথমোইধ্যায়ঃ।

প্রীমহাদেব উবাচ।

একদা হুখমাসীনং রামং স্বান্তঃপুরাজিরে।
সর্বাভরণসম্পন্ধং রত্নসিংহাসনে স্থিতম্ ॥ ১॥
নীলোৎপলদলশ্যামং কৌস্তভামুক্তকন্ধরম্।
সীতয়া রত্নদণ্ডেন চামরেণাথ বীজিতম্ ॥ ২॥
বিনোদয়তং তামূলচর্ব্বণাদিভিরাদরাৎ।
নারদোহবাতরৎ দ্রুফ্ট্মম্বরাদ্যত্র রাঘবঃ॥ ৩॥
শুদ্ধম্ফটিকসংকাশঃ শরচন্দ্র ইবামলঃ।
অতর্কিতমুপায়াতো নারদো দিব্যদর্শনঃ॥ ৪॥
তং দৃষ্ট্বাসহসোথায় রামঃ প্রীত্যা কৃতাঞ্জলিঃ।
ননাম শিরসা ভূমো সীতয়া সহ ভক্তিমান্॥ ৫॥

উবাচ নারদং রামঃ প্রীত্যা পরময়া যুতঃ।
সংসারিণাং মুনিশ্রেষ্ঠ তুর্লু ভং তব দর্শনম্।। ৬।।
অস্মাকং বিষয়াসক্তচেতসাং নিতরাং মুনে।
অবাপ্তং মে পূর্বজন্মকৃতপুণ্যমহোদয়ৈঃ।
সংসারিণাপি হি মুনে লভ্যতে সৎসমাগমঃ।।৭।।
অতস্তদর্শনাদেব কৃতার্থোইস্মি মুনীশ্বর।
কিং কার্য্যং তে ময়াকার্য্যং ক্রহি তৎ করবাণি ভো॥৮॥
অথ তং নারদোইপ্যাহ রাঘবং ভক্তবৎসলম্।
কিং মোহয়সি মাং রাম বাকৈয়েল্লোকানুসারিভিঃ॥৯॥

একদা নীলোৎপলদলখাম শ্রীরামচন্দ্র কোস্কভমণি প্রভৃতি নানাবিধ রক্লাভরণে বিভূষিত হইয়া নিজ অন্তঃপূর মধ্যে রক্ল সিংহাসনোপরি স্নগন্ধি তামৃল প্রভৃতি রাজভোগ্য ভোগ দারা চিত্ত বিনোদন করিতেছেন; সীতাদেবী পার্মদেশে দণ্ডায়মানা ইইয়া রক্লণ্ডশোভিত চামর দারা বীজন করিতেছেন, এমন সমরে পরম ভাগবত মহর্ষি নারদ ভগবদর্শক্রের গোন শাক্ষাম পথ হইতে অবভরণ করিলেন। (১।২।৩) শ্রীরামচন্দ্র শরৎকালীন শশধ্রের স্লায় দেদীপ্রমান এবং বিশুদ্ধ মটিক মণিগদ্শ সমুজ্ল ও স্পৃষ্ঠ মহর্ষি নারদের সহয়া অসম্ভাবিভ সমাগমনাবলোকনে সচকিত হইয়া গাজোখান করিলেন, এবং পরম
প্রীতি ও ভক্তি সহকারে কুলাঞ্জলি হইয়া সীতাদেবীর সহিত প্রশাম

क्तिरलन (8 । ৫) এবং সাদরে কহিলেন, ভগবন্! সাধারণ সংসারী ব্যক্তির পক্ষে ভবাদৃশ মহাত্মপুরুষদর্শন হল্ল ভ। বিশে-বতঃ বিষয়াসক্তচিত্ত মাদৃশ ব্যক্তির পক্ষে নিতান্ত অসম্ভব; কারণ নিরবকাশ বশতঃ ধর্ম চিস্তা আমাদিগের হৃদয় হইতে একবারে তিরোহিত হইয়াছে। বোধ করি অদ্য পূর্বকৃত পূণাবলেই আপনার দর্শনস্থলাভ করিলাম। যাহা হউক অদ্য আমি আত্মাকে কৃতার্থ বোধ করিতেছি। একণে অনুমতি করুন আপনার অভিলবিত কোন কার্য্যান্ন্র্চানে ব্যাপ্ত করিয়া এই পঞ্চতময় দেহকে পবিত্র করিব (৬। १।৮) পরম জানী নারদ শীরামের এইরূপ মহুষ্যবদ্যবহার দেখিয়া কহিলেন, ভগবন্! লৌকিক বাক্য দারা আমাকে কি মুগ্ধ করিতেছেন। আপনার প্রসাদে আমার অজ্ঞাত কিছুই নাই। আপনি যে আপনাকে সংসারী করিতেছেন, তাহা মিধ্যা নহে; কারণ ত্রিলোকস্বরূপ গৃহ মধ্যে আপনি প্রধান গৃহস্থ, এবং সমস্ত জগতের আদি কারণ মহামায়া আপনার গৃহিণী। সেই মহা-মায়াম্বরূপা প্রকৃতির সহিত আপনার সংস্কৃ হওয়ায় একা প্রভৃতি সন্তানগণ উৎপন্ন হইয়াছেন। স্বর্জন্তমোগুণময়ী ভবদ-बीना गरामात्रा जननीत खगासूत्राद्य विकू नव्छन, बका द्राकाखन,

সংসার্য্যহমিতি প্রোক্তং সত্যমেতত্ত্য়া বিভো। জগতামাদিভূতা যা সা মায়া গৃহিণী তব।। ১০।। ত্বংসন্নিকর্যাড্জায়ন্তে তস্তাং ব্রহ্মাদয়ঃ প্রজাঃ। ত্বদাশ্রয়া সদা ভাতি মায়া যা ত্রিগুণাত্মিকা।। ১১।। সূতে২জঅং শুক্লকৃষ্ণলোহিতাঃ সর্বাদা প্রজাঃ। লোকত্রমহাগেছে গৃহস্তসুমুদাহৃতঃ।। ১২।। ত্বং বিষ্ণুর্জানকী লক্ষ্মীঃ শিবস্তুং জানকী শিবা। ব্ৰহ্মাত্বং জানকী বাণী দূৰ্য্যস্তুং জানকী প্ৰভা ॥১৩॥ ভবান্ শশাঙ্কঃ সীতাতু রোহিণী শুভলক্ষণা। শক্রস্ত মেব পৌলোমী দীতা স্বাহানলো ভবান্॥১৪॥ যমস্ত ং কালরূপশ্চ দীতা সংযমনী প্রভো। নিখ তিন্তঃ জগন্নাথ তামদী জানকী শুভা ॥১৫॥ রামস্ত মেব বরূণে। ভার্যবী জানকী শুভা। বায়ুস্তৃৎ রাম সীতা তু সদাগতিরিতীরিতা॥ ১৬॥ কুবেরস্তৃং রাম সীতা সর্বসম্পৎ প্রকীর্তিতা।

ও শিব তমোগুণ প্রাপ্ত হইয়াচেন। (১।১০।১১।১২) হে সর্বভূতান্তরাত্মন্! আপনি বিশুদ্ধ পুরুষ, সীতাদেবী প্রমা পুরুষ ভিন্ন জগতে কিছুই নাই। প্রক্বতি। প্রকৃতি আপনি বিষ্ণু, দীতা দাক্ষাৎ লক্ষ্মী; আপনি শিব, দীতা সাক্ষাৎ ভগবতী; আপনি ব্রহ্মা, জনকনন্দিনী সরস্বতী; আপনি জগৎপ্রকাশ আদিত্য, সীতা প্রভা; আপনি চন্দ্র, সীতা রোহিণী; আপনি ইন্দ্র, সীতা শচী; আপনি অগ্নি, সীতা স্বাহা। হে জগদীবর । আপনি সমস্ত ভূতের কালরূপী यम, मौजा मःरमनी। जाशनि निश्वि, मौजामिनी जामनी। আপনি ৰহুণদেব, সীতা ভাৰ্গৰী। আপনি প্ৰনদেব, সীতা সদাপতি। আপনি যক্ষপতি কুবের, সীতা সর্ব্ধসম্পৎ স্বরূপা। ञाननि माकार क्रजरहर, मौला क्रजानी। (১৩।১৪।১৫। ১৬। ১৭)

লোকে স্ত্রীবার্চকং যাবন্তৎ সর্ববং জানকী শুভা। পুনামবাচকং যাবত্তৎ সর্ববং ত্বং হি রাঘব ॥১৮॥ তস্মাল্লোকত্রয়ে দেব যুবাভ্যাং নাস্তি কিঞ্চন ॥১৯॥ ত্বদাভাসোদিতাজ্ঞানমব্যাকৃতমিতীর্য্যতে। তস্মান্মহাংস্ততঃ দূত্রং লিঙ্গং সর্ব্বাত্মকং ততঃ॥২০॥ অহঙ্কার শ্চ বৃদ্ধিশ্চ পঞ্চপ্রাণেত। লিঙ্গমিতুচাতে প্রাক্তৈর্জন্মমৃত্যুত্তখাদিমৎ ॥২১॥ স এব জীবসংজ্ঞ*চ লোকে ভাতি জগন্ময়ঃ। অবাচ্যানাদ্যবিদ্যৈব কারণোপাধিরুচ্যতে ॥২২।। স্থূলং সূক্ষাং কারণাখ্যমূপাধিত্রিতয়ং চিতেঃ। এতৈর্বিশিষ্টো জীবঃ স্থাদিযুক্তঃ পরমেশ্বরঃ ॥২৩॥ জাগ্রৎস্বপ্নস্কস্ত্র্যাখ্যা সংস্কৃতির্ঘা প্রবর্ত্ততে। তথা বিলক্ষণঃ সাক্ষী চিল্মাত্রস্ত্র রঘত্র ॥ ২৪॥

রুদ্রাণী জানকী প্রোক্তা রুদ্রস্ত্বং লোকনাশক্ৎ ॥১৭॥ অধিক কি বলিব, এই জগতে স্ত্রীবাচক যাবৎ শব্দই জানকীকে ও পুরুষবাচক শব্দ মাত্রই আপনাকে বোধ করাইতেছে; অতএব হে দেবদেব ! এই ত্রিলোক মধ্যে আপনারা ছই জন ভিন্ন অন্ত পদার্থই নাই। হে পরমান্ত্রন! আপনার সংস্থাধীন জগৎসজনোমুখী প্রকৃতি অজ্ঞান রূপে পরিণত হয়। ঐ প্রকৃতি रहेरा तुषि उप, तृषि उप रहेरा अरक्षात, अरक्षात रहेरा অহন্ধার বৃদ্ধি পঞ্চ প্রাণ ও পঞ্ ইন্দ্রিয় এই সর্কমিয় লিঙ্গ শরীর উৎপन्न इस । ये निक भरीतरक की व वनिया निर्देश करत । ये জীব জন্ম মৃত্যু ও স্থাদি ভোগ করিয়া থাকে। ঐ জীবও আপনা হইতে পৃথক নহে, কারণ অজ্ঞান পরিণত প্রকৃতির নাম অবিদ্যা ঐ ব্রহ্মের উপাধি। আপনি যথন উপাধির সহিত মিলিত হন, তথন আপনার জীবসংজ্ঞা হয়, আবার অবিদ্যা মুক্ত হইলে শুদ্দ পরমেশ্বর বলিয়া প্রতীতি হয়। (১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩) হে সর্বসাক্ষিন! এই সমস্ত জগতে জাগ্রৎ স্বপ্ন স্মুখ্যবন্থাতে সমন্ত প্রাণী বে যে কার্য্য করিয়া থাকে, তাহা व्यापनात्र व्यविषिष्ठ किहूरे नारे। व्यापनि मकन कार्यात्र वना-

ত্বত্তবে জগজ্জাতং স্ত্রিদর্ববং প্রতিষ্ঠিতম্।

ত্বয্যেব লীয়তে কৃতস্মং তত্মাৎ ত্বং দর্বকারণম্॥২৫॥
রজ্জাবহিমিবাত্মানং জীবং জ্ঞাত্বাভয়ং ভবেৎ।
পরাত্মাহহমিতিহ্বাত্বা ভয়ত্বংথৈবি মূচ্যতে।। ২৬ ॥
চিন্মাত্রজ্যোতিষা দর্ববাং দর্বদেহেষু বৃদ্ধয়ং।
ত্বয়াযত্মাৎ প্রকাশ্যন্তে দর্ববং স্বায়রজ্জাত্মকার ॥২৭॥
অজ্ঞানান্ধশ্যতে দর্বং ত্বয়ারজ্জাভুজঙ্গবং।
ত্বজ্জানান্ধীয়তে দর্বং তত্মাৎ জ্ঞানং দদাভ্যদেৎ॥২৮
ত্বৎপাদভক্তিযুক্তানাং বিজ্ঞানং ভবতি ক্রমাৎ।
তত্মাৎ ত্বত্তিক্যুক্তা যে মুক্তিভাজস্ত এবহি।।২৯।।

মান্ত সাক্ষী ও কলদাতা। (२৪) হে প্রভো! আপনা হইতে এই জগৎ উৎপন্ন ছইয়া আপনাতেই অধিষ্ঠান করিতেছে, এবং সম্যামুসারে আপনাতেই লীন হইতেছে। হে অনস্ত! আপনি এই সকল প্রাণীতে অবস্থিতি করিয়া সকল কার্য্যে তাঁহাদিগকে नियां क्षिত कतिराउ एन । तिरीता लाख रहेमा यांव काल-পর্যাস্ত রজ্জুতে সর্প বৃদ্ধির স্থায় দেহস্থ আত্মাতে জীবের আরোপ করিবে, তাবৎকাল মোহান্ধকারে পতিত হইয়া নিষ্ঠি পাইবে না। সেই আত্মাতে পরমাত্ম বৃদ্ধি হইলে তাহাদিগের পরমপদ লাভ হইবে। হে সর্বভূতেশ্বর! আপনি নিজ জ্ঞানময় জ্যোতি-দারা সকল দেহে অন্তঃকরণবৃত্তি প্রকাশিত করিতেছেন; অতএব সকলের অন্তরাত্ম। আপনি ভিন্ন জগতে কিছুই নাই; মৃঢ়েরা অজ্ঞানবশতঃ আপনাতে কতই আরোপ করিয়া থাকে, দে কেবল রজ্জুতে ভূজঙ্গারোপ মাত্র। স্থাপনাকে যথার্থ कानित्त (परीत नकत अब्बान प्रीकृठ रम, रमरे (रजू नर्सना জ্ঞানাভ্যাদে যত্ন করা বিধেয়। হে জগদীখর। সেই জ্ঞানা-ভাাসের অন্ত উপায় নাই, কেবল আপনার পাদপল্মে একান্ত ভক্তি থাকিলে জান লাভ করিতে পারা যায়, জ্ঞান হইলেই मुक्ति नाछ इस। (२৫। २७। २१। २৮। २२) आमि आभनात অহং স্বস্তুক্ত ভক্তানাং তন্তক্তানাঞ্চ কিং করঃ ।

অতোমামনুগৃহ্নীষ মোহয়স্ব ৰ মাং প্রভা ॥৩০॥

হুমাভিকমলোৎপন্নো ব্রুমা মে জনকঃ প্রভা ।

অতস্তবাহং পৌত্রোহিম্মিভক্তং মাং পাহি রাঘব।।৩১॥

ইত্যুক্ত্রা বহুশোনত্বা স্থানন্দাশ্রুপরিপ্লুতঃ ।

উবাচ বচনং রাম ব্রুমণা নোদিতোইস্মাহম্॥৩২॥

রাবণস্থ বধার্থায় জাতোহিদ রঘুসন্তম ।

ইদানীং রাজ্যরক্ষার্থং পিতান্থামভিষেক্ষ্যতি ॥ ৩৩ ॥

যদি রাজ্যাভিসংসক্তো রাবণং ন হ্নিষ্যাদ ।

প্রতিজ্ঞা তে কুতারাম ভূভারহরণায় বৈ ॥৩৪॥

তৎ সত্যং কুরুরাজেন্দ্র সত্যুদন্ধ স্তুমেবহি ।

শ্রুইতদ্গদিতং রামো নারদং প্রাহ স্থ্যিতম্ ॥ ৩৫॥

শ্রুইতদ্গদিতং রামো নারদং প্রাহ স্থ্যিতম্ ॥ ৩৫॥

ভক্ত মহাপুরুষদিগের দাসত্ব স্থীকার করিতেছি, অভএব আমার প্রতি সদয় হউন, বারস্থার মুগ্ধ করিবেন না। হে প্রভো! আমি আপনার নাভিকমলোৎপল্ল কমলযোনির শরীর হইতে উৎপন্ন হইরাছি, অতএব আমি আপনার পৌত্র; এক্ষণে আমাকে রক্ষা করুন। (৩০।৩১)

নারদ ভক্তিসহকারে এইরপ তব করিয়া কহিলেন, শ্রীরাম!
পিতা কমলযোনি আপনার নিকট আমাকে প্রেরণ করিয়াছেন,
এবং আপনার উদ্দেশে কভিপয় প্রয়োজনীয় বাক্য কহিয়া দিয়াছেন শ্রবণ করুন্। ভগবন্! আপনি রাবণবধার্থ ভূমণ্ডলে জয়প্রহণ
করিয়াছেন; সম্প্রতি রাজা দশরথ আপনাকে যৌবরাজ্যে অভিধিক্ত করিবেন্; আপনি রাজ্যভোগাসক্ত হইয়া যদি রাক্ষসাধমের সম্লোচ্ছেদ না করেন তাহা হইলে আপনার ভূভার হরণ
প্রতিজ্ঞা বিফল হইবে (৩২। ৩৩। ৩৪)। শ্রীরামচন্দ্র শ্রবণ
করিয়া ঈষং হাস্তম্থে কহিলেন, নারদ! শ্রবণ কর। আমার
অবিদিত কিছুই নাই; পুর্বে যে প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, ভাহা
অবিদয়ে সফল করিব; ভোগ ধারা অম্বর্গণের প্রারক্ষম
হইলেই আমার প্রতিজ্ঞা ফলোমুখী হইবে; এজস্ত সময় অপেক্ষা
করিতেছি। হে দেবর্ষে! ভূমি কমলবোনিকে আমার আদেশ
বিজ্ঞাপন কর, যে আগামি দিবসে আমি রাবণবধার্থ কণ্ডকারণ্যে
যাত্রা করিয়া সেই স্থানে কটাবকল ধারী হইয়া চতুর্দশ বর্ষ_াম

শূণু নারদ মে কিঞ্ছিদ্যতেইবিদিতংকচিৎ।
প্রতিজ্ঞাতং চ যৎ পূর্বং করিষ্যে তন্ন সংশয়ঃ॥৩৬॥
কিন্তু কালামুরোধেন তক্তৎপ্রারক্ষণংক্ষয়াৎ।
হরিষ্যে সর্বস্থভারং ক্রমেণাস্থরমণ্ডলম্।। ৩৭॥
রাবণস্থ বিনাশার্থং শ্বোগন্তা দণ্ডকাননম্।
চতুর্দশসমান্তত্র হ্যাষভ্য মুনিবেশ ধুক্॥ ৩৮॥
সীতামিধেণ তং ছফং সকুলং নাশয়াম্যহম্।
এবং রামে প্রতিজ্ঞাতে নারদঃ প্রমুমোদ হ।।৩৯॥
প্রদক্ষণত্রয়ং কৃত্যা দণ্ডবত্প্রণিপত্য তম্।
অনুজ্ঞাতশ্চ রামেণ যথোঁ দেবগতিংমুনিঃ।।৪০॥

করিব ও দীতাহরণাপরাধে রাবণকে দম্লে উন্লেভ করিব।
মহর্ষি জ্রীরামের এইরূপ প্রতিক্তা বাক্যে আনন্দিত হইরা
তাঁহাকে বারত্রয় প্রদক্ষিণ করণানস্তর প্রণাম করিয়া জ্রীরামের
আক্রাহ্মসারে স্বর্গধামে গ্রমন করিলেন। (৩৫। ৩৬। ৩৭।
৩৮।৩৯। ৪০)

সন্ধাদং পঠতি শৃণোতি সং স্মরেদা
যো নিত্যং মুনিবররাময়োঃ স ভক্ত্যা।
সংপ্রাপ্নোত্যমরস্কর্লভং বিমোক্ষং
কৈবল্যং বিরতি পুরঃসরং ক্রমেণ।। ৪১॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে অযোধ্যাকাণ্ডে প্রথমোহধায়য়ঃ।

নারদ ও শ্রীরামচক্র উভয়ের এইরূপ কথোপকথন সম্বাদ বে ব্যক্তি ভক্তিপূর্বক পাঠ কিম্বা শ্রবণ অথবা শ্রবণ করে, সেই মহাত্মা দেবত্ল্ল ভ মুক্তিপদ ক্রমশঃ লাভ করিতে পারে। (৪১)

> শ্রীমদ্ধ্যাত্ম রামারণে উমামহেশ্বর স্থাদে অযোধ্যাকাতে প্রথম অধ্যার :

षि ठौरमा ३ था मह

শ্রীমহাদেব উবাচ।

অথ রাজা দশরথঃ কদাচিদ্রহিদ স্থিতঃ।
বশিষ্ঠং স্বকুলাচার্যমাসুয়েদ মভাসত ॥ ১ ॥
ভগবন্! রামমথিলাঃ প্রশংসন্তি মুক্ত্মুক্তঃ।
পৌরাশ্চ নৈগমা রদ্ধা মন্ত্রিণশ্চ বিশেষতঃ ॥২॥
ততং সর্ব গুণোপেতং রামং রাজীবলোচনম্।
জ্যেষ্ঠং রাজ্যেহভিষেক্ষ্যামি র্দ্ধোহহং মুনিপুঙ্গব।।৩॥
ভরতো মাতুলং দ্রন্তুং গতঃ শক্রেম্বন্থতঃ।
অভিষেক্ষ্যে শ এবাশু ভবাংস্তচ্চানুমোদতাম্।।৪॥
সম্ভারাঃ সংলিয়ন্তাং চ গচ্ছ মন্ত্রয় রাঘবম্।
উচ্ছীয়তাং পতাকাশ্চ নানাবর্ণাঃ স্মস্ততঃ।।৫।।

তোরণানি বিচিত্রাণি স্বর্ণমুক্তাময়ানি বৈ।
আহুয় মস্ত্রিণং রাজা স্থমস্ত্রং মন্ত্রিসভ্মম্।।৬।।
আজ্ঞাপয়তি যদ্যভাং মুনি স্তত্তৎসমানয়।
যৌবরাজ্যেহভিষেক্ষ্যামি শ্বোভূতে রঘুনন্দনম্।।৭:
তথেতি হবাত, স মুনিং কিঙ্করোমী ত্যভাষত।
তমুবাচ মহাতেজা বশিষ্ঠো জ্ঞানিনাং বরঃ।।৮।।
শ্বঃ প্রভাতে মধ্যকক্ষে কন্সকাঃ স্বর্ণভূষিতাঃ।

একদা রাজা দশরথ একাকী বিশ্রাম ভবনে সমাহত কুলগুরু বিশিষ্ঠদেবকে সম্বোধন করিয়া কহিতে লাগিলেন (১) ভগবন্! প্রজাবর্গ সকলেই শ্রীরামচন্দ্রের সর্ব্বদাই প্রশংসা করিয়া থাকেন। বিশেষতঃ পুরবাদিগণ ও শাস্ত্রক্ত বৃদ্ধ মন্ত্রিবর্গেরা শ্রীরামের গুণের নিতান্ত পক্ষপাতী হইয়াছেন (২) এক্ষণে আমি বৃদ্ধ হইয়াছি; অতএব অভিলাষ করি সর্ব্বগুণযুক্ত রাজীবলোচন জ্যেষ্ঠপুত্র শ্রীরামকে যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিব (৩) বিশেষতঃ এ সময় শক্রত্ম সহিত ভরত মাতৃল আশ্রমে গমন করিয়াছেন; এই অবসরে আগামী দিবসেই শুভকার্য্য নির্ব্বাহ করিব; ভরত বাটী আসিলে উক্ত কার্য্যে আপত্তি উত্থাপনের সন্ত্রাবনা হইবে। (৪) মহর্ষে! আপনি এ বিষয়ে অন্থমোদন করিয়া শ্রীরামের সহিত মন্ত্রণা করুন এবং অ পনার অভিশ্রোয়ামুসারে অভিযেকোপ্যোগী শ্রব্য সকল

সমাহুত হউক (৫) অযোধাানগরীতে নানাবর্ণোপশোভিত পতাকা সকল উড্ডীয়মান হউক এবং ৰিচিত্ৰ স্বৰ্ণমুক্তাময় তোরণ সকল নগরীর শোভা সম্পাদন করুক্।(৬) রাজা বশিষ্ঠদেবকে এইরূপ বলিতে বলিতে অতিব্যাগ্রতা সহকারে মন্ত্রিপ্রেষ্ঠ স্থমন্ত্রকে আহ্বান করিয়া কছিলেন, মন্ত্রিবর ৷ আগামী দিবদে শ্রীরামচক্রকে যৌবরাজ্যে অভিষেক করিব, অতএব মহর্ষি যে যে বিষয় তোমাকে আজ্ঞা করেন তুমি তৎপ্রতিপালনে বত্রবান হও। স্থমন্ত্র সাতিশয় সম্ভোয সহকারে তথান্ত বলিয়া ताकाछ। भिरताधार्या कतिया दिशहिरम्बरक कहिरणन, सहर्ष ! আমার প্রতি কি আজা করিবেন করুন (१।৮) প্রমজ্ঞানী বশিষ্ঠদেব কহিলেন্, স্থমন্ত ৷ আগামী প্রভাত সময়ে রাজবাটীর মধাকক্ষে স্থবর্ণালকারভূষিতা প্রম্রপ্রতী ষোড়শ ষোড়শ পোরকক্সা ও স্থচারু দশন চতুইয় শোভিত ঐরাবতবংশোদ্ভব একটা গলরাজ এবং নানাতীর্থোদকপূরিত সহস্রহ স্বর্ণকৃষ্ণ ও স্থচারু শাদ্ল চর্মাত্রয় এবং বিবিধ মুক্তামণি বিরাজিত ও স্বৰ্ণদণ্ডশোভিত একটা খেতছত এবং সহস্ৰ২ স্থগৰিমালা ও কতিপয় স্থচারুবন্ত্র এবং রাজভোগ্য নানাবিধ রত্নাভরণাদি

ভিষ্ঠস্ত ষোড়মগজঃ স্বর্ণরত্বাদিভূষিতঃ।।৯।। চতুর্দ্ধন্তঃ সম্যাতু ঐরাবতকুলোদ্ভবঃ। নানা তীর্থোদকৈঃ পূর্ণাঃ স্বর্ণকুম্ভাঃ সহস্রশঃ ॥>०॥ স্থাপ্যন্তাং নববৈ ব্যান্ত্রচর্ম্মাণিত্রীণিচানয়। শ্বেতচ্ছত্রং রত্নদণ্ডং মুক্তামণি বিরাজিতং ॥১১॥ দিবমোল্যানিবস্তাণি দিব্যান্যাভরণানিচ। মুনয়ঃ দৎকৃতান্তত্র তিষ্ঠন্ত কুশপাণয়ঃ ॥১২॥ নর্ত্তক্যোবারমুখ্যাশ্চ গায়কা বেণুকাস্তথা। নানাবাদিত্রকুশলা বাদয়স্তনুপাঙ্গনে ॥১৩॥ হস্ত্যশ্বরথপাদাতা বহিস্তিষ্ঠস্ত সায়ুধাঃ। নগরেয়ানি তিষ্ঠন্তি দেবতায়তনানিচ ॥১৪॥ তেযপ্রবর্ত্তাং পূজানানাবলিভিরারতা। ৰাজানঃ শীত্ৰমায়ান্ত নানোপায়ন পাণয়ঃ ॥১৫॥ ইত্যাদিশ্য মুনিঃ শ্রীমান্ত্রমন্ত্রং নৃপমন্ত্রিণং। স্বয়ং জগামভবনং রাঘবস্যাতি শোভনং ॥১৬॥ রথমারুহ্য ভগবান্ বশিষ্ঠমুনিসভ্মঃ।

সমৃদয় প্রস্তুত করা আবশুক; অতএব অবিলম্বে তুমি এ বিষয়ে সচেষ্ট হও এবং ঋতিক কর্মকুশল ঋষিগণ কুশপাণি হইয়া ঐ সানে অবস্থিতি করুন। নর্ত্তকী বারাঙ্গনারা নৃত্যু আরম্ভ করুক্। বৈদিক সম্প্রদায়েরা বেদপাঠ আরম্ভ করুন। বাদ্যাকরেরা বিবিধ বাদ্যধ্বনি দারা রাজভবন আনন্দময় করুক্। নগরস্থ দেবতাদিগের পূজা আরম্ভ হউক। নিকটবর্ত্তি রাজগণ নানা প্রকার উপহার গ্রহণ করিয়া যাহাতে অযোধ্যানগরীতে আগমন করেন, ঐরপ উদ্যোগ কর। (১। ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪।১৫)। অনস্তর ভগবান বশিষ্ঠদেব এইরূপ আদেশ করিয়া স্বয়ং রথারোহণপূর্ব্বক শ্রীরাম ভবনাভিমুথে গমন করিলেন (১৬) অবারিত্বার কুলগুরু বশিষ্ঠদেব ক্রমশং কক্ষতিদেন (১৬) অবারিত্বার কুলগুরু বশিষ্ঠদেব ক্রমশং কক্ষতিদেন। শ্রীরামচন্দ্র সমাগত মহর্ষিকে প্রাণত্তাদ্গমনানন্তর

ত্রীণিকক্ষাণ্যতিক্রম্যরথাৎক্ষিতিমবাতরৎ ।। ১৭।। অন্তঃপ্রবিশ্য ভবনং স্বাচ্বার্থস্বাদবারিতঃ। গুরুমাগতমাজ্ঞায় রামস্তুর্ণং কুতাঞ্জলিঃ।। ১৮।।

নমস্বার করিলেন। জনকনন্দিনী সীতা স্বর্ণপাত্রে পাদ্যোদক আনয়ন করিয়া রত্বাসনোপবিষ্ট মহর্ষির পাদ প্রকালন করিয়া দিলেন। শ্রীরামচন্দ্র সীতার সহিত গুরুপাদোদক নন্তকে थात्रण कतित्रा महर्षितक कहित्लन, **ভগবन्। अमा आमि ভ**वमीत्र চরণামৃত মস্তকে ধারণ করিয়া কুতার্থ হইলাম। বশিষ্ঠদেব শ্রীরামের এই রূপ ভক্তিগর্ভ বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন, ভগবন্ বৈকুণ্ঠনাথ! আপনার পাদোদক ধারণ করিয়া দেব দব গিরিজাপতি আত্মাকে কুতার্থ বোধ করিতেছেন। পূজাপাদ মৎ পিতা কমলযোনি ও আপনার চরণামৃত স্পর্শ করিয়া সকল অভভ হইতে পরিত্রাণ পাইয়াছেন। এক্ষণে আপনি যে আমার প্রতি এই সকল গুরুজনোচিত বাক্য প্রয়োগ করিতে-ছেন্ তাহা কেবল লোক শিক্ষার্থ বোধ হইতেছে। যদাপি আপনার প্রদাদে আমি ধ্যানাবলম্বন করিয়া সকলই জানিতেছি যে আপনি প্রমাত্মা দেবতাদিগের কার্য্য সিদ্ধার্থ রাবণ বংধা-দেশে সাক্ষাৎ কমলাদেবীর সহিত ভূমগুলে জন্মগ্রহণ করিয়া ছেন তথাপি দেবকার্য্য বিম্ন সম্ভাবনায় এই সকল গুছা বিষয় কাহার নিকট প্রকাশ করিব না। আপনি আমার প্রতি যে প্রকার পূজাভাব প্রকাশ করিয়া থাকেন্, আমি তদমুসারে শিষ্যভাব প্রকাশ করিব। কিন্তু ভগবন্! আমি বিশেষরূপ অবগত আছি যে আপনি গুরুজনের গুরু ও পিতৃলোকের পিতামহ এবং দ্রকাস্তর্যামী ও দমস্ত জগতের নিয়ন্তা এবং অবাঙ্ মানদগোচর দেই পরমাস্বা শুক্রশোণিত সম্পর্ক ব্যতি-বেকেও শুদ্ধ সহময় দেহ ধারণ করিয়া যোগমায়া দারা এই মনুষ্য জগতে মহুষ্যের ভাষে প্রকাশ পাইতেছেন। হে দেব! আমি পূর্বের ব্রন্ধার প্রমুখাৎ শুনিয়াছি যে ইক্ষাকুবংশে প্রমাত্মা জন্মগ্রহণ করিবেন্ তদবধি তোমার আচার্য্য হইব এই অভি-লাষেই অতি গঠিত পৌরহিত্য কার্য্যও স্বীকার করিয়াছি তে সর্বভৃতান্তরাত্মন্ ! একণে আমার চির মনোরথ সফল হইয়াছে আপনার নিকট একটী প্রার্থনা করি যে আপনার সর্বলোক মোহিনী মহামায়া প্রভাবে মুগ্ধ হইয়া যেন আপনাকে বিশ্বত না হই যদি গুরুজনের নিষ্কৃতি করিতে বাস্থা থাকে তাহা হইলে আমার এই প্রার্থনীয় বিষয়টী সিদ্ধ করিবেন (১৭ ৷ ১৮ ৷

अजून्श मा नमकृजा मखन्छ जिनश्युजः । यर्ग পাত्रেन পাनी स्मानिना साल जानकी ॥ ১२॥ রত্বাসনে সমাবেশ্য পাদে প্রকাল্য ভক্তিতঃ। তদাপঃ শিরসা ধৃত্বা সীত্রা সহ রাঘবঃ।। ২০॥ ধন্যোহস্মীত্যব্রবীদ্রামন্তব পাদামুধারণাৎ। শীরামেণৈর মুক্তন্ত প্রাহসন্মুনিরত্রবীৎ ॥ ২১॥ তৎপাদসলিলং ধৃত্বা ধন্যোংভূদ্গিরিজাপতিঃ। ব্ৰন্ধাপি মুৎপিতা তে হি পাদতীৰ্থহতাশুভঃ॥২২॥ इनानीर ভाষদে यखुर लोकानामू প्रामकृ । জানামি ত্বাং পরাত্মানং লক্ষ্যা সঞ্জাতমীশ্বরং ॥২৩॥ দেবকার্য্যার্থসিদ্ধ্যর্থং ভক্তানাং ভক্তিসিদ্ধয়ে। রাবণস্থ বধার্থায় জাতং জানামি রাঘব ।॥ ২৪॥ তথাপি দেবকার্য্যার্থৎ গুশুং নোদুঘাটয়াম্যহং। यथा दश भाग्रा मर्काः करतायि त्रानमन ! ॥ २०॥ তথৈবানুবিধাস্থেইহং শিষ্যসূৎ গুরুরপ্যহং। গুৰু প্ৰিণাং স্বং দেব! পিতৃণাং স্বংপিতামহঃ॥২৬॥ অন্তর্যামী জগদ্যাত্রাবাধকস্তুমগোচরঃ। শুদ্ধসম্বয়ং দেহং ধৃদ্বাস্থান সম্ভবং।। ১৭।। মনুষ্য ইব লোকেহিমান্ ভাসি ত্রং যোগমায়য়া। পৌরোহিত্যমহং জানে বিগছহ তুষ্ট্রজীবনং ॥২৮॥ इक्षाकृ नाः कृत्व तामः প्रतमाञ्चा कनिष्ठा । ইতি জ্ঞাতং ময়া পূর্বাং ব্রহ্মণা কথিতং পুরা॥২৯॥ ততোহহমাশ্রা রাম! তব সম্বন্ধকাঞ্জন্য।। অকার্যং গহিতিমপি তবাচার্যন্ত্রিদ্ধয়ে॥ ৩০॥ ততো মনোরথো মেহদ্য ফলিতে। রঘুনন্দন। वृत्रधीन। यहायात्रा नर्क्तत्नाटेककत्याहिनी ॥७५॥

মাং যথা মোহয়েরৈর তথা কুরু রঘৃদ্ধ ।
গুরুনিক্ষৃতিকামস্তৃং যদি দেহেতদের মে ॥৩২॥
প্রসঙ্গাৎ সর্ব্যমপুরেতং ন বাচ্যং কুত্রচিন্মরা।
রাজ্ঞা দশরথেনাহং প্রেষিতোহন্মি রঘুদ্ধ ॥৩৩॥
দ্বামামন্ত্ররিত্বং রাজ্যে খোইতিষেক্ষতি রাঘব।
অদ্য ত্বং সীতরা সার্দ্ধমুপবাসং যথাবিধি॥ ৩৪॥
কৃত্রা শুচিভূমিশারী ভব রাম! জিতেক্সিরঃ।
গচ্ছামি রাজসারিধ্যং ত্বং তু প্রাতর্গমিষাসি॥৩৫॥
ইত্যক্ত্বা রথমারুহ্য যযৌ রাজগুরুক্ত তম্।
রামোহপি লক্ষ্মণং দৃষ্বা প্রহুসরিদ্মন্ত্রবীৎ॥৩৬॥
দৌমিত্রে! যৌবরাজ্যেমে খোইভিষেকো ভবিষ্যতি।
নিমিত্তমাত্রমেবাহং কর্ত্বা ভোক্তা দ্ব মেব হি॥৩৭॥

11 >> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <> 11 <>

হে রাম, কথাপ্রসঙ্গে তোমার নিকটেই এই সকল গুহু-বার্ত্তা প্রকাশ করিলাম অন্য কোন স্থানে ব্যক্ত হইবে না, সম্প্রতি রাজা দশরণ তোমার নিকট আমাকে প্রেরণ করিয়া-ছেন, জাঁহার অভিপ্রায় যে আগামি দিবদে তোমাকে যেবরাজ্যে অভিষিক্ত করিবেন, তুমি দীতাদেবীর সহিত অদ্য যথাবিধি উপবাস ও ইন্দ্রিয় সংঘমের অনুষ্ঠান কর এবং বৈধশেচিবলখন করির। ভূমিশ্যা শ্রনদ্বারা অদ্য রজনী অতিবাহিত কর, এক্ষণে আমি রাজসন্নিধানে গমন করি, ভুমি নিশাবসান হইলে মহারাজের সহিত সাক্ষাৎ করিবে। ৩৩। । ৩৪। ৩৫। মহর্ষি রামের সহিত এর ব কথোপকথনান্তে রখারোহণপূর্বাক রাজদদনাভিমুখে গমন করিলেন। ইত্যবসরে জীরাম লক্ষ্মণকে দর্শন করিয়া ঈবং হাস্য সহকারে কহি-লেন। ৩৬। বংগ সেমিত্রে, কুলগুরুবশিষ্ঠদেবের নিকট শুনিলাম পিতা আগামি দিবলৈ আমাকে গৌবরাজ্যে অভি-ষিক্ত করিবেন, ভাতঃ তুমি আমার অন্তরস্থাণ অপেকা-প্রিয়তম, প্রাণের স্বরূপ থেছেতু সর্ব্বদা তোমাকে দর্শন করিয়া মম ত্বং হি বহিঃপ্রাণো নাত্রকার্যা বিচারণা।
ততো বশির্চ্চেন ষথা ভাষিতং তত্তথাকরেছে॥ ১৮॥
বশির্চ্চেইপি নৃপং গড়া ক্বতং সর্বাং ন্যবেদয়ৎ।
বশিষ্ঠপ্র পুরো রাজ্ঞা ছ্যক্তং রামাভিষেচনম্॥ ৩৯॥
যদা তদৈব নগরে ক্রড়া কশ্চিৎ পুমান্ জগো।
কৌশল্যায়ৈ রামমাত্রে স্থান্তায়ৈ তথৈব চ॥৪০॥
ক্রড়া তে হর্ষসম্পূর্ণে দদভুহ রেমুন্তমম্।
তথ্যে ততঃ প্রীতমনাঃ কৌশল্যা পুক্রবৎসলা॥৪১॥
লক্ষাং পর্যাচরদেবীং রামস্বার্থপ্রসিদ্ধয়ে ।
সত্যবাদী দশরথং করোত্যেব প্রতিক্রতম্ ॥ ৪২॥
কৈকেয়ীবশগঃ কিন্তু কামুকঃ কিং করিষ্যতি।
ইতি ব্যাকুলচিন্তা সা ছুর্গাং দেবীমপুজয়ৎ॥৪৩॥

পরিতৃপ্তি লাভ করিভেছি। অতএব পিতৃদত্তরাজ্যের ভোক্তা ও কর্ত্তা তুমিই জানিবা এবিষয়ে কোন বিবেচ্য নাই, অনস্তর জীরামচন্দ্র গুৰুবাক্যানুরূপ অনুষ্ঠান্দে প্রব্ত হইলেন। ৩৭। । ৩৮। বশিষ্ঠদেবও রাজার নিকটে জীরামের গুৰুভক্তি ও সন্ধিবেচকতাদি নানাগুণের পরিচয়প্রদান করিলেন, এমত সময়ে কোন পোরজন রাজীবলোচন রামের রাজ্যাভিষেক সম্বাদ অন্তঃপুরমধ্যে কেশিল্যা গ্রন্থমিতার নিকটে নিবেদন করিল। ৩৯। ৪০। কৌশল্যা ও স্থমিত্রা এই সকল অমৃত-ত্ল্য সম্বাদ শ্রবণ করিয়া মহাম্যোদ মহাণ্ব নীরপুরে নিমগ্রা इहेलन এবং मचानमार्जांक महामूना ऋवर्गाख्यभानि-প্রদান করিলেন, পুত্রবৎসদা কেশিল্যা শুভসম্বাদ অবণাবধি শ্রীরামের অর্থসিদ্ধিকামনা করিয়া কমলাদেবীর পূজারন্ত করিলেন। যদিও দেবী কৌশল্যা রাজা দশরথকে সভ্য প্রতিজ্ঞ জানিতেন তথাপি তাঁহার মন কার্যসিদ্ধিপক্ষে নিতান্ত সংশয়াপর ছিল, যে হেতু রাজাকে কৈকেয়ীবশতাপর এবং কামপরতক্র বলিয়া বিশেষ জ্বানিতেন, স্মতরাং ব্যাকুলচিত্তে বিশ্ববিনাশার্থ সর্কবিশ্ব বিনাশিনী ভগবতীত্বগাদেবীর পূজা-त्रस क्तिल्न। ४>। ४२। ४०। ইভাবসরে দেবগণ এই

এত স্মিয়ন্তরে দেবা দৈবীং বাণামচোদয়ন্।
গচ্ছ দেবি ! ভুবো লোকমযোধ্যায়াং প্রযন্তঃ ॥৪৪॥
রামান্মিকবিল্লার্থং যতস্ব ব্রহ্মবাক্যতঃ ।
মন্তরাং প্রবিশস্বাদে কৈকেয়ীঞ্চ ততঃ পরম্॥৪৫॥
ততো বিল্লে সমুৎপল্লে পুনরেহি দিবং শুভে ।
তথেত্যুক্তবা তথা চক্রে প্রবিবেশায় মন্তরাম্ ॥৪৬॥
সাহিপি কুব্রা ত্রিবকা তু প্রাসাদাগ্রমথারুহৎ ।
নগরং পরিতো দৃষ্ট্রং সর্বতঃ সমলস্কৃতম্ ॥৪৭॥

ব্যাপার দর্শনে শত্রুনাশে হতাশ হইয়া বাগ্দেবীকে কহিলেন দেবি! ব্রহ্মার আদেশাকুসারে অযোধ্যানগরীতে গমন করিয়া প্রীরামচন্দ্রের রাজ্যাভিষেকের বিশ্ন যাগতে হয় এই প্রকার যত্ন কৰুন প্রথমতঃ মন্থ্রাতে প্রবেশ কৰুন, অনন্তর কৈকেয়ীকে আশ্র করিরা উক্তকার্য্যের বিশ্বসম্পাদন করন্। হইলে আমরা ক্লতার্থ হইব, আপনিও স্বলেণিকে আগমন করিবেন। বাগ্দেবী দেবগণের বাক্যে সম্মতা হইয়া প্রথ-মতঃ মন্থরাকে আশার করিলেন। ৪৪। ৪৫। ৪৬। অতি-কুজাকৃতি মন্ত্রা ঐ দিবনে প্রাসাদোপরি আরোহণ করিয়া দেখিলেন অযোধানগারী বিচিত্রয়পতাকাদি দারা সুশো-ভিত হইয়া যেন হত। করিতেছে। এইরপ ব্যাপারাব-লোকনে অতি বিস্ময়াবিষ্ট হইয়া প্রাসাদাগ্র হইতে অব-তরণানস্তর্ মন্তরাদাসী ধাত্রীকে জিজ্ঞাসা করিলেন, মাতঃ, অদ্য প্রাসাদ হইতে দেখিলাম অযোধ্যানগরী বিচিত্র ধজ-পতকাদিদ্বারা বিচিত্র শোভা ধারণ করিয়াছে এবং কেশিশায দেবী আনন্দপূর্ণহৃদয়ে সমুপস্থিত বেদজ্ঞবাল্মণগণকে মহামূল্য বিবিধ বিচিত্রবস্ত্রাদি দান করিতেছেন, ইহার কারণ কিছুই জানিতে পারিলাম না। শুদ্ধান্তচারিণী ধাত্রী কহিল মন্তরে, তুমি অবণ কর নাই—আগামি দিবদে রাজ্ঞা দশরথ গুণাতি-রাম জীরামকে যেবিরাজ্যে অভিবিক্ত করিবেন, এই কারণে নিযুক্ত রাজপুরুষেরা নগরীকে অলঙ্কৃত করিতেছে, মন্থরা সহসা এইরূপ মন্মভেদী সমাদশুরণে সাতিশয় হৃদয়বেদনা-দ্বারা বিষ্ক হইয়া জ্রুত্পাদক্ষেপে কৈকেয়ী ভবনে গমনান্তর निर्व्वन मितिनी अर्थाक्रमात्रिमी विमानलाइन। किक्सीक

নানাভোরণসমাধং পতাকাভিরলঙ্কু কম্।
সর্বোৎসবসমাযুক্তং বিশ্বিতা পুনরাগতম্ ॥৪৮॥
ধাত্রীং পপ্রচ্ছমাতঃ কিং ? নগরং সমলঙ্কু ক্।
নানোৎসবসমাযুক্তা কোশল্যা চাতি হর্ষিতা ॥৪৯॥
দদাতি বিপ্রমুখ্যেত্যে বস্তাণি বিবিধানি চ।
তামুবাচ তদা ধাত্রী রামচন্দ্রাভিষেচনম্ ॥৫০॥
খোভবিষ্যতি তেনাদ্য সর্বাতোহলঙ্কু তং পুরম্।
তচ্ছুত্বা ত্বিতং গত্বা কৈকেরীং বাক্যমন্ত্রবীৎ ॥৫১॥
পর্য্যঙ্কেছাং বিশালাক্ষীমেকাং তে পর্য্যবিস্থতাং!
কিং শেষে পুর্তো! মূঢ়ে মহন্তরমুপস্থিতং ॥৫২॥
ন জানীধেহতিসোক্র্যমানিনী মন্ত্রগামিনী ॥৫৩॥
রামস্যান্ত্রহাদ্রাজ্ঞঃ খোহভিষেকো ভবিষ্যতি।
তচ্ছুত্বা সহসোপ্রার কৈকেরী প্রিরবাদিনী ॥৫৪॥
তইন্ত দিব্যং দদৌ স্বর্ণমূপুরং রত্নভূষিতং।
হর্ষস্থানে কিমিতি মে কথ্যতে ? ভরমাগতং ॥৫৫॥

কহিলেন। হে ছর্তান, হে মন্দবুদ্ধে, তুমি এখন কি শায়ন করিরা রহিয়াছ তোমার অতি ভয়ের কারণ উপস্থিত হইয়াছে।
। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। হে মত্ত গজেন্দ্রগামিনি,
সৌলর্য্য মদে মত্ত হইয়া নিজ শুলাশুভ কিছুই জানিতে পার
না, আমি ধাত্রীর নিকট শুনিলাম যে, মহারাজের অমুগ্রহে
শুলগা তনয় শ্রীরামচন্দ্র আগামি দিবলে যে বরাজ্যে অভিষিক্ত
হইবেন। ৫৩। সরলাজ্য:কয়ণা প্রিয়ভাষণী কৈকেয়ী শুলসন্ধাদ শ্রবণে সহসা শ্রা হইতে গাত্রোখান করিয়া মছরাকে
আনন্দোপহারস্বরূপ দিব্য রত্ত্বনূপুর ও রত্ত্ব ভূষণপ্রদান করিলেন। ৫৪। এবং হর্ষাদেগদ বচনে কহিলেন, মন্থরে। আমি
ভোষার বাক্যের সকল মর্মার্থ ব্রিতে পারিলাম না, কারণ
প্রাণাধিক শ্রীরামের রাজ্যাভিষেকরূপ আনলজনক ব্যাপারকে
তুমি ভয়ের কারণ বলিয়া উল্লেখ করিতেছে, দেশ রাম আমার
ভরত অপেকা প্রিয়্রকারীও প্রিয়ম্বদ নিজগর্ভবারিণী কৌশন্যার

করতাদধিকে। রামঃ প্রিয়ক্তমে প্রিয়ম্বরঃ।
কৌশল্যাং মাং সমং পশুন্ সদাশুক্রমতে হি মাং॥৫৬
রামান্তরং কিমাপারং তব মুঢ়ে বদস্ব মে।
তচ্ছু ত্বা বিষসাদাথ কুজা কারণবৈরিণী ॥৫৭॥
শুণু মদ্বচনং দেবি! যথার্থং তে মহন্তরম্।
তাং তোষয়ন্ সদা রাজা প্রিয়বাক্যানি ভাষতে ॥ ৫৮
কামুকোহতথ্যবাদী চ ত্বাং বাচা পরিতোষয়ন্।
কার্যাং করোতি তন্তা বৈ রামমাতৃঃ স্বপুদ্ধলং ॥৫৯॥৮
মনস্তেরিধারের প্রেষয়ামাস তে স্কতং।
ভরতং মাতুলকুলে প্রেষয়ামাস সামুজং ॥৬০॥
স্থামিত্রায়াঃ সমীচীনং ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ।
লক্ষণো রামমন্থতি রাজ্যং সোহনুভবিষ্যতি।॥৬১॥

কদাচ ত্রুটি করেন না। অতএব হে মুদ্রে, রাম হইতে তোমার কি ভয়ের আশকা হইল, তাহা আমার নিকট ব্যক্ত কর। ৫৫।৫৬। मञ्जा केटकशीवाका अवग् कतिया विषशास्त्रः कत्रत्न कहिलन । দেবি । আমার বাক্য শ্রবণ করুন, তাহা হইলে ভয়ের কারণ বুঝিতে পারিবেন। ৫৭। দেখুন রাজা দশর্থ আপনাকে মিথ্যা প্রিয়বাক্য দারা সভত সম্ভষ্ট করিয়া থাকেন। কিন্তু কৌশল্যা-(प्रवीदक विजनावन कार्या कतिया मछक्के करतन विद्यहमा कक्रन রাজাদিগের কি দ্রদর্শিত ভরত এস্থানে থাকিলে জীরামের রাজ্যপ্রাপ্তিদম্বন্ধে যদি কোন আপত্তি উত্থাপন হয়. এই কার-নেই শক্তম সহিত ভরতকে পূর্বে মাতৃলালয়ে প্রেরণ করিয়াছেন, স্থমিত্রাদেবীর পক্ষেত কোন অনিষ্টাশঙ্কা নাই, বরং ভাহার ইষ্ট হইতেছে। ৫৮।৫৯।৬০। কারণ নক্ষণ শ্রীরামের নিতাস্ত অফুগামী অবশ্যই রাজ্যাংশভাগী হইবে। অতএব শ্রীরামের রাজ্যাভিষেক পক্ষে স্থমিত্রাদেনীর কোনপ্রতিবাদের আৰ-খ্রকতা নাই। স্করাং তোমার গকেই ভয়াবহ হইতেছে, বে হেতু শ্রীরামের জাগ্র ভরতের দাসত স্বীকার করিতে হইবে, अथवा नगत इटेट विश्विष्ठ इटेट इटेट । देनवपरेना वनाख যায় না, চিরাভিমানী ভরত অভিমানে প্রাণত্যাগ করিলেও ক্রিতে পারেন, আর ভোমাকেও কৌশল্যার পরিচ্যা

ভরতো রাঘ্যস্থাত্রে কিন্ধরো বা ভবিষ্যতি।
বিবাস্থাতে বা নগরাৎ প্রাটেশ্বা হাপ্যতেইচিরাৎ॥৬২
ছং তু দাসীব কৌশল্যাং নিতাং পরিচার্ষ্যাদি।
ভতোইপি মরণং শ্রেয়ো যৎসপত্যাঃ পরাভ্যঃ॥৬৩॥
ভতঃ শীমুং যতস্বান্ত ভরতস্থাভিবেচনে।
রামস্থা বনবাদার্থং বর্ষানি নবপঞ্চ চ ॥৬৪॥
ভতো কটোইভরে পুরুত্তব রাজ্ঞি। ভবিষ্যাতি।
উপারত্তে প্রক্ষ্যামি পূর্ব্বমেব স্থনিশ্চিতং ॥৬৫॥
পুরা দেবাস্থরে যুদ্ধে রাজা দশরথং স্বয়ং।
ইল্রেণ যাচিতো ধন্তী সহায়ার্থং মহারথঃ॥৬৬॥
জগাম সেনয়া সার্জং ত্বরা সহ শুভাননে।
যুক্তং প্রক্রেন্তন্তন্ত রাক্ষানৈঃ সহ ধন্নিঃ।৬৭॥
তদাক্ষকীলো ন্যপতিছয়ন্তন্য ন বেদ সঃ।
ছং তুহত্তং সমাবেশ্য কীলরক্ষেহভিবির্য্যতঃ॥৬৮।

স্থিতবত্যসিতাপাঞ্চী পতিপ্রাণপরীপ্সয়া।
ততো হ্রাহসুরান্ সর্বান্ দদর্শ হামরিন্দমঃ ॥৬৯॥
আশ্চর্যাং পরমং লেভে হ্রামালিক্ষ্য মুদাশ্বিতঃ।
রণীষ্ যতে মনদি বাঞ্চিতং বরদোহস্মাহং। ৭০॥
বরদয়ং রণীযুত্তমেবং রাজাহবদৎ স্বয়ম্।
হুয়োক্তো বরদো রাজন্ যদি দহুং বরদ্বয়ং ॥৭১॥
হুয়োবে তিষ্ঠতু চিরং ন্য সভূতং মমানঘ।
যদা মেহবসরো ভূয়ান্তদা দেহি বরদয়ং ॥ ৭২ ॥
হুয়েক্ত্বা স্বয়ং রাজা মন্দিরং ব্রজ স্কুরতে।
হুত্তঃ প্রুতং ময়া পূর্বনিদানীং স্মৃতিমাগতং ॥৭৩॥
সতঃ শীঘুং প্রবিশ্বাদ্য ক্রোধাগারং ক্র্যান্তি।
বিমুচ্য সর্বাভ্রণং সর্বাতো বিনিকীর্য্য চ।
ভূমাবেবশয়ানা হুং ভূক্ষীমাতিষ্ঠ ভামিনী ॥ ৭৪ ॥

কার্য্যে নিযুক্ত হইতে হইবে । ৬১। ৬২। অধিক কি বলিব দেবি, আমি বিবেচনা করি, সপত্মীরদাসীত্ব অপেক্ষা তোমার মরণই শ্রেমস্কর। যদি তোমার জীবন রাখিতে ইচ্ছা থাকে তাহা হইলে শীঘু ভরতের রাজ্যাভিষ্কে ও শ্রীরামের চতুর্দ্ধশ বর্ষ বনবাস বাহাতে হয় তহিষয়ে যত্ম কর, তাহা হইলে তোমার সাঞাজ্য হইবেক । ৬৩ । ৬৪। এসম্বন্ধে তোমাকে স্বযুক্তি প্রদান করিতেছি, স্মরণ করিয়া দেখ—দেবাস্কর সংগ্রামে সাহায্য প্রার্থি দেবরাক্ষ কর্তৃক আহুত হইয়া সমৈন্ত রাজ্য দশর্থ তোমার সচিত দেবভ্রবন গমন করিয়াছিলেন। ৬৫। ৬৬। তৎকালে রাজ্যসগণের সহিত রাণাম্ম মহাবীর মহারাক্ষের রথকীল ছিন্ন হইয়া পড়িত হয়, রাজা কিছুই জানিতে পারেন নাই। ৬৭। ত্মি পতিপ্রাণরক্ষার্থ ঐ কীলস্থানে তৎপরিবর্ত্তে নিজহস্তরক্ষা করিয়া ভৎকালে মহারাক্ষের প্রোণরক্ষার্থ ঐ কীলস্থানে তৎপরিবর্ত্তে নিজহস্তরক্ষা করিয়া ভৎকালে মহারাক্ষের প্রোণরক্ষা করিয়াছ। অনস্কর মহারাজ্য সমর বিজয়লাভ করিয়া তোমাকে আধ্বিম্বন করিলন ও অতিসন্তোধ সহকারে কহিলেন। ৬৮। ৬৯। বিরের,

তুমি এই ঘোরতর ভয়াবহ সমরে কীলপ্রিবর্ত্তে হস্তপ্রশান করিয়া আমার প্রাণরক্ষা করিয়াচ, অতএব তুমি অভিলবিত বরপ্রার্থনা কর॥ আমি তোমাকে বরদয়প্রদানে প্রস্তুত আছি এই প্রকার অতিসভোষকর মহারাজের বাকা প্রবণ করিয়া, তুমি তৎকালে কহিয়া ছিলে যে, মহারাজ দাসীর প্রতি সালুকম্প হ ইয়া যদি বরপ্রদানে দৃঢ়প্রতিজ্ঞা হইয়া থাকেন, সে প্রভিজ্ঞা কশনই বিচলিত হইবে না। ঐ বরদয় আমার প্রহণ করাহিল, এক্ষণে আপনার নিকট স্তুত্ত রাথিলাম্। যে সময় আমার কার্য্য উপস্থিত হইবে, তৎকালে অভিলবিত প্রকাশ করিয়া পুনর্কার গ্রহণ করিব। আমি এই সকল বৃত্তান্ত পূর্বেশ ভানিয়াছি ইদানী শ্বতিপথারা হইল। অতএব সত্তর ক্রোধানারে প্রবেশ কর, এবং রত্বাভরণাদি সকল পরিত্যাগ করিয়া মোনাবল্যনপূর্ব্বক ভূমিশব্যাবল্যন কর। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। বিশ্বা ব্যাকা তোমাকে মলিনা ও অভিমানিনী দেখিয়া যখন

যাবৎ সত্যং প্রতিজ্ঞায় রাজাইভীক্টং করোতি তে। নিশ্চয়ং কুরু কল্যাণি! কল্যাণং তে ভবিষ্যতি। শ্রুত্বা ত্রিবক্রয়োক্তং তন্ত্রদা কৈকয়নন্দিনী ॥৭৫॥ তথ্যমেবাখিলং মেনে দুঃসঙ্গাহিত বিভ্রমা। তামাহ কৈকয়ী দুষ্টা কুতস্তে বুদ্ধিরীদৃশী ॥৭৬॥ এবং ত্বাং বুদ্ধিসম্পন্নাং ন জানে বক্রস্থলরে। ভরতো যদি রাজা মে ভবিষ্যতি স্থত: প্রেয়ঃ ॥৭৭॥ গ্রামান শতং প্রদাস্যামি মম ত্বং প্রাণবল্লভা। ইত্যুক্ত্ব। কোপভবনং প্রবিশ্য দহসা রুষা ॥৭৮॥ বিমুচ্য সর্ব্বাভরণং পরিকীর্য্য সমন্তভঃ। जृटमी भागाना मलिना मलिनाश्वतथातिनी ॥१२॥ প্রোবাচ খুণু মে কুব্রে যাবদ্রামো বনং ত্রত্তেৎ। প্রাণাং স্ত্যক্ষেহথবা বজে শ্রিষ্যে তাবদেব হি।। ৮

ভোমার সভোষার্থ অভীষ্টদানে সত্যপ্রতিজ্ঞা করিবেন, তৎ-কালে ঐ বরদম্বারা ভরতের রাজ্যাভিষেক ও চতুর্দশবর্ষ **জীরামের বনবাদ প্রার্থনা করিবে। কেকয়নন্দিনী মন্থরার এই** সকল নৃশংসভাপূর্ণ বচনাবলীকে হিতকর এবং প্রিয়ভরজ্ঞান করিলেন, কহিলেন মন্থরে, তোমার এইরূপ বুদ্ধির প্রতিভা কিরেপে হইল। যদি আমার ভরত রাজ্যাভিষিক্ত হয়েন, ভাহা হইলে ভোমার বৃদ্ধির অহুরূপ পারিভোষিক প্রদান করিব। তুমি আমার প্রাণ অপেকা প্রিয়তমা তোমাকে শত প্রামপ্রদান করিয়া সম্ভোষ লাভ করিব। অনস্তর সর্কাভরণ-পরিচ্যতা মলিনবদনা কৈকেয়ী ক্রোধাগার মধ্যে ভূমিশব্যা-अर्व क्तिरान । १६ । १७ । ११ । १४ । १३ । क्रितन मस्दत्,

ইভ্যুক্ত্বা প্রথয়ে কুজা গৃহৎ সাপি তথাকরোৎ ।৮১ ধীরো২ত্যস্তদয়াস্বিতোহপিস্বগুণাচারাস্বিতোবাহথবা নীতিজ্ঞো বিধিবাদদেশিক পরো বিদ্যাবিবেকোইথবা ছুফানামতিপাপভাবিত্রিয়াং সঙ্গং সদাচেদ্রজেৎ। তদুদ্যা পরিভাবিতো ব্রন্থতি তৎসাম্যংক্রমেণ ক্ষুটং অতঃ দঙ্গং পরিত্যাক্ষ্যো দুফীনাং দর্মদৈব হি। मूःमही हावटं श्रार्थामारथं त्राक्कनाका ॥ ৮०॥

ইতি এমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে অযোধ্যাকাণ্ডে দ্বিতীয়োহধ্যায়:।

এই শরন করিলাম। প্রীরামের বনগমন করাইব নতুবা প্রাণ-ত্যাগ করিব, এই শ্যা হইতে উঠিব না।৮০। অনস্তর মহিৰি. ভোমার অবশ্রুই কল্যাণ হইবে, এই কথা বলিরা মন্তরা প্রস্থান করিলেন। ৮১। স্থীর অতিদয়ালু এবং বহুগুণ বিশিষ্ট 😻 আচারযুক্ত নীতিবেতা এবং গুরুসেবাপর বিদ্যা বিবেকীব্যক্তিও পাপমতিভ্রষ্টের সহবাদে পাপবুদ্ধির অহুসারী হইয়া ক্রমশঃ ত্তুপদ্বীতে পদার্পন করিয়া থাকে। ৮২। অতএব হুইজন-াংসর্গ সর্বাদা প্রিহার্য্য তুষ্টসংস্গীবাক্তিরা স্বার্থ হইতে পরিচ্যুত হর, কৈকেয়ী তাহার প্রত্যক্ষ দৃষ্টাস্ত হইয়াছেন।৮৩।

বন্ধাওপুরাণান্তর্গত অধ্যাত্মরামায়ণের অংযাধ্যাকাণ্ডে বিতীয়োহধাায়: 1

তৃতীয়ো>ধ্যায়ঃ।

भिश्वादमय खेवाह।

ততো দশরখো রাজা রামাভ্যুদয়কারণাৎ।
আদিশ্য মন্ত্রিপ্রকৃতীঃ সানন্দো গৃহমাবিশং ॥।।
তত্ত্রাদৃষ্ট্বা প্রিয়াং রাজা কিমেতদিতি বিস্কলঃ।
যা পুরা মন্দিরং তস্যাঃ প্রবিষ্টে ময়ি শোভনা॥।।
হসন্তী মামুপায়াতি সা কিং নৈবাদ্য দৃশ্যতে।
ইত্যাত্মন্যেব সংচিন্ত্য মনসাতি বিদূয়তা॥।৩।
পপ্রচ্ছ দাসীনিকরং কুতো বঃ স্বামিনী শুভা ?।
নায়াতি মাং যথা পূর্মিং মৎপ্রিয়া প্রিয়দর্শনা ।৪।।

রাজা দশর্থ প্রীরামের অভ্যুদয়ার্থ অমাত্যবর্গকে আদেশ
ভরিগা বিপ্রামবাদনায় কৈকেরীমন্দিরে আগমন করিলেন এবং
সে ভানে প্রের্মীকে পূর্ববং অবলোকন করিয়া বিকলাস্তকরণে চিস্তা করিতে লাগিলেন। একি সেই সর্কশুণালক্কতা
জীবিভেশ্বরী মহিষী অসময় নিজভবনশৃস্ত করিয়া কোন স্থানে
অবস্থিতি করিভেছেন, পূর্ব্বে যিনি আমাকে অস্তঃপুর সমাগত
দেখিরামাত্র সমাগতা হইয়া সহাস্তবদনে দাদর সম্ভাবণ করিতেন, এইক্ষণে সেই প্রিয়ভমা কোথায়, তদাভাবে অস্তঃপুর
শ্নাময় দেখিতেছি, রাজা মনে মনে এরপ নানা তর্ক করিয়া
দাদীকে জিজাসা করিলেন, পরিচারিকে তোমাদিগের রাজমহিষী কোথায়! দাদী কহিল, মহারাজ! দেবী ক্রোধভবনে
প্রবেশ করিয়াছেন, আমরা ইহার কারণ কিছুই জানিন।
স্লোপনি সেই স্থানে গমন করিলে সকল বিবরণ জানিতে পারিবেন, রাজা দশরণ ভীতাস্তঃকরণে ক্রোধ ভবনে প্রবেশানস্কর
নিজ্বস্তম্বারীর গাত্রস্থান্ক করিয়া কহিতে লাগিলেন।১।

তামুচুঃ ক্রোধভবনং প্রবিষ্ঠা নৈব বিদ্মহে।
কারণং তত্তদেব। ত্বং গড়া নিশ্চেতুমহ সি ॥৫॥
ইত্যুক্তো ভরসন্তভো রাজা তস্যাং সমীপগঃ।
উপবিশ্য শনৈদে হিং স্পৃশদ্বৈ পাণিনাহত্তবীৎ ॥১॥

। ২। ৩। ৪। । ৫। ৬। প্রিয়ে ! অন্য কি কারণে ভূমি রত্নপর্যাক পরিহার করিয়া ভূপৃঠে শয়ান রহিয়াছ। হে ভীরু ! তুমি আমার সহিত আলাপ করিতেছ না এজন্য হৃদয়ে বেদনা পাইতেছি। হে চাক্লভাষিণি ! তুমি কি নিমিত্ত মহামূল্য রক্লাভরণাদি পরি-ত্যাগ করিয়া মলিনাম্বরধারণ করিরাছ আমার নিকট সকল প্রকাশ কর, এক্ষণেই আমি ভোমার অভিল্যিত সম্পাদন করিব। হে চার্ব্যঙ্গি! আমি প্রতিজ্ঞা করিতেছি যে, যে পুরুষেরা স্ত্রীজাতি তোমার অনভিমত কার্য্য করিয়া ক্রোধোদ্দীপন করা-हैबाटक, त्म वाक्ति এहे मध्य मध्यनीव व्यथवा वधा हहेत्व। दह দেবি! তোমার যাহাতে প্রীতি হয়, তাহা হয়ভ হইলেও সিদ্ধ করিতে প্রস্তুত আছি। প্রিয়ে! তুমি আমার অস্তঃকরণ বিশেষ অবগত আছ আমাকেও আজাকারী বলিয়া জানিতেছ, তবে কি হেতু আমাকে থিন করিতেছ ও আপনি বুথা পরি-শ্রম স্বীকার করিতেছ। দেবি! তুমি অহুমতি কর, ভোমার· কোন প্রিয়কারী দরিদ্রকে ধনবান করিব, এবং ভোমার অহিত-কারী কোন্ধনবানকে নিধ্ন করিব, এবং তোমার কোন্ অহিতকর অবধ্য বাক্তির শিরশ্ছেদ করিব অথবা ভোমার প্রিয়-कांत्री कान् वधाईवाकित्क ताक्षमण शहेरल मूक कतिव। প্রিয়ে। অধিক কি বলিব তোমার নিমিও আমি প্রাণপর্য্যস্ত পরিত্যাগা করিতে পারি এবং প্রাণাধিক প্রিয়তম শ্রীরামের উপর শপথ করিয়া বলিতেছি, যে তোমার যাহাতে প্রীতি হর, णांशरे कतिय। देकदक्षी त्राष्ट्रा मन्तरसत्र धरेक्रम नेन्यवाका न्व जनमार्कन कतिया करिएनन--- महाताक।

किং भारत वस्थाशृत्र ? शर्याक्षानीन् विशाय । মাং ত্বং খেদয়সে ভীকু যতো মাং নাবভাষদে ॥१। অলঙ্কারং পরিত্যজ্য ভূমে মলিনবাসসা। কিমর্থং ক্রহি সকলং বিধাস্যে তব বাঞ্চিতং ॥৮॥ का वा ठवाहिष्ड कर्छा नांदी वा शुक्रवाहिल वा। স মে দণ্ডাশ্চ বধাশ্চ ভবিষ্যতি ন সংশয়ং। না। ক্রহি দেবি ! যথা প্রীভিন্তদবশ্যং মমাগ্রতঃ। তদিদানীং সাধ্য়িষ্যে মুদুল ভ মপি ক্ষণাৎ।।১০।। জানাসি তুং মম স্বান্তং প্রিয়ং মাৎ স্ববদে স্থিতং। তথাপি মাং খেদয়দে রুথা তব পরিশ্রমঃ ১১।। জহি ? কং ধনিনং কুর্য্যাৎ দরিদ্রং তে প্রিয়ঙ্করং। ধনিনং ক্ষণমাত্ত্রেণ নিধ নঞ্চ তবাহিতং 15২11 ক্রহি ? কং বা বধিষ্যামি বধাহে । বা বিমোক্ষ্যতে। কিমত্র বহুনোক্তেন প্রাণাং দাস্যামি তে প্রিয়ে৷ ১৩ মমপ্রাণাৎ প্রিয়তবো বামো বাজীবলোচনঃ। তদ্যোপরি শপে ত্রুহি ত্বদ্ধিতং তৎকরোম্যহং॥১৪॥ ইতি ত্রুবাণং রাজানং শপন্তং রাঘ্যোপরি। শনৈবিবিমৃক্য নেত্রে সা রাজানং প্রত্যভাষত ॥১৫॥ यि मि मा अधि जिल्ला हिम भाष्य कुरू य यि । याह्ळार (म मकलार कर्जुर भीघ (मव प्रमर्श । 15%।

দেবাস্থ্রে যুদ্ধে ময়া ছং পরিরক্ষিতঃ।
তদা বরদ্মং দক্তং ড়য়া মে ভুইচেতসা।। ১৭॥
তদ্মং ন্যাস ভূতং মে স্থাপিতং ড়য় স্প্রত।
তব্রিকেন বরেণাশু ভরতং মে প্রিয়ং স্কৃতং।১৮॥
এতিঃ সম্ভূতসম্ভারৈর্ঘেবিরাক্ষ্যেইভিষেচয়।
অপরেণ বরেণাশু রামো গচ্ছতু দশুকান্॥১৯॥
মুনিবেশধর শ্রীমান্ ক্ষটাবলকল ভূষণঃ।
চতুর্দিশসমান্তর কন্দমূলফলাশনঃ। ২০॥
পুনরারাতু তস্যান্তে বনে বা ভিন্ততু স্বয়ং।
প্রভাতে গচ্ছতু বনং রামোরাজীবলোচনঃ।২৯॥
যদি কিঞ্চিৎ বিলম্বেত প্রাণাং স্ত্যক্ষ্যে তবাপ্রতঃ।
ভব সত্য প্রতিজ্ঞন্ত মেতদেব মমপ্রিয়ম্॥২২॥

মদমুষ্ঠিত সেবাবারা সম্ভপ্ত হইয়াছিলেন, এবং অয়াচিত হইয়াও সদভিল্ধিত ব্রহয়প্রদানে প্রস্তুত হইয়াছিলেন। আমি তৎ-কালে ঐ বর্ষয় আপনার নিকট গ্রস্ত করিয়া রাখিয়াছিলাম। একনে তাহার কার্যোপস্থিত হইয়াছে, অতএব মহারাজ প্রতি-জ্ঞত বরষর প্রদানহার। আমাকে চরিতার্থ করুন। প্রার্থনীয় বিষয় প্রকাশ করিতেছি—১এক বরদার। এরামের চতুর্দশ বর্ষ বন-বাদ অপর বরদারা ভরতের রাজ্যাভিষেক হয়, এই কার্য্যন্ত্র মহারাজেরই ইচ্ছাধীন জীরাম চতুর্দশ বর্ষান্তে পুন: প্রত্যাগমন कक्रम, अथवा म्मिरवण ७ अप्रेनवस्थाती हहेशा कन्मभूग कलानि ভক্ষণদারা দণ্ডকারণো কালাতিপাত করুন ভবিষ আমার কোন আপত্তি নাই। হে সত্য প্রতিজ্ঞ, রজনীপ্রভাত হইলেই त्राकीयानावन ताम मखकाताना याजा कक्रन, विनम् रहेएन আমি আপনার সমক্ষে প্রাণ পরিত্যাগা করিব। আমি স্বার্থপরায়ণা হইয়া আপনার নিক্ট এইরূপ প্রার্থনা করিতেছি ইহা বিবেচনা করিবেন না, আপনি প্রতিজ্ঞা ভক্তকা পাপে कन (इंड ना इन हेश याभाव या जिल्ला जानित्वन । ১१। ১৮। । ১৯। ২০: ২১। ২২। বাজা কৈকেয়ীর অভিদাকণ ও রোম-

শ্রুত্ত দারণং বাক্যং কৈকেয়া রোমহর্ষণং।
নিপপাত মহীপালো বজ্ঞাহত ইবাচল ।২৩॥
শ্রেক্মীল্য নয়নে বিমৃত্যা পরয়া ভিয়া।
দুঃস্বপ্রো বা ময়া দৃফো হথবা চিন্তবিভ্রমঃ। ২৪॥
ইত্যালোক্য পুরঃ পত্নীং ব্যাঘূরীমিব পুরঃস্থিতাং।
কিমিদং ভাষদে? ভদ্রে মম প্রাণহরং বচঃ॥২৫॥
রা মঃ কমপরাধং তে ক্তবান্ কমলেক্ষণঃ।
মমাত্রে রাঘ্র গুণান্ বর্ণয়দ্য নিশং শুভান্। ২৬॥
কৌশল্যাং মাং দমং পশ্যন্ শুশ্রুষাং কুরুতে দদা।
ইতি ক্রবন্থী তুং পুরুমিদানীং ভাষদেহন্যথা॥২৭।
রাজ্যং গৃহাণ পুল্রায় রামন্তিষ্ঠতু মন্দিরে।
অনুপ্রীষু মাং বামে রামান্নান্তি ভয়ং তব ॥২৮॥

হর্ষণ বচন প্রবণ করিয়া বজ্রাহত ভূধরের ভার মেদিনীপৃষ্ঠে পতিত হইলেন ১০। কিয়ৎক্ষণ পরে সভয়ে নয়নদ্বয়ের উন্মীলন ও হস্তবারা মার্জ্জন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিতে লাগি-लেन थापि कि जामा ए: यथ मर्भन कतिलाम-अथवा वार्षका-বশতঃ ভ্রান্তি হইয়া থাকিবে। পুনুর্ববার দৃষ্টিপাত করিয়া वार्षित मात्र मग्रूष मधात्रमाना कित्वत्रीक अवत्नाकन করত পূর্ববিদ্নিষাদ পূর্ণান্তঃকরণে কহিলেন। তে ভাজে। একি তুমি বাক্যদারা আমার প্রাণসংহারে উদ্যত হইরাছ ! রাজীবলোচন রাম তোমার নিকট কি অপরাধী হইয়াছে? পূর্ব্বে তুমি আমার নিকট জ্ঞীরামের কতই প্রশংসা করিতে এবং কেশিল্যা নির্বিশেষে তোমার শুক্রাষা করায় জীরামের প্রতি কতই সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছ, এক্ষণে কি হেতু ভাগার বিপরিতাচরণে প্রবন্ত ইইয়াছ। হে চাকভাষিণি ভরতের নিমিও রাজ্য গ্রাহণ কর, আমি এই দণ্ডেই প্রদান করিতেছি, রীরামের বনগমন প্রার্থিমার পরার্থ হও। হে ৰামলোচনে, তুমি আমার ও এরামের প্রতি অনুগ্রহণ্রকাশ

ইত্যুক্ত্ব । ২শ্রুপরীতাক্ষঃ পাদয়ে। নি পপাতহ।
কৈকেয়ী প্রত্যুবাচেদং সাপি রক্তান্তলোচনা ॥২৯।
রাজেন্দ্র কিং ত্বং ভাস্থোহদি উক্তং তদ্ভাষদেহন্যথা
মিথ্যাকরোষিচেৎস্বীয়ংভাষিতং নরকোভবেৎ॥৩•
বনং ন গচ্ছেৎ যদি রামচন্দ্রঃ

প্রভাতকালেংজিনচীরযুক্তঃ। উদ্বন্ধনংবাবিষভক্ষণং বাক্সত্বামরিষ্যেপুরতস্তবাহং ৩১ সত্য প্রতিজ্ঞোহহমিতীহলোকে

বিভ্যমে সর্বসভান্তরেষু।

রামোপরি ত্বং শপর্থং চ কৃত্তা মিথ্যাপ্রতিজ্ঞো নরকং প্রয়াহি। ৩২॥

ইত্যুক্তঃ প্রিয়গ দীনো মগ্নো ছংখার্ণবে নৃপঃ। মূচ্ছিতঃ পতিতো ভূমৌ বিদংছো মৃতকো যথা।।

কর, গুৰুজনবল্লভ্রাম ছইতে ভোমার কোন ভ্রের আশকানাই। রাজা অশ্রুপ্রশিচনে এইরপ বলিতে বলিতে কৈকেন্দ্রীর পাদদ্বরে পতিত ছইলেন, কৈকেয়ী আরক্ত নয়নে দৃটিপাত করিয়া কাহিলেন, মহারাজ আপনি ভ্রান্ত ছইয়া প্রতিজ্ঞালজ্মনে উত্তত ছইয়াছেন, জ্ঞানী ছইয়া মিথ্যাবাদীদিগের পদবীতে পদার্পণ করিতেছেন। যাহাহউক আমি আপনার নিকট প্রতিজ্ঞা করিতেছি, আগামী প্রভাতে যদি জীরামচন্দ্র জটাবল্কল ধারণ করিয়া দশুকারণে গমন না করেন, তাহা ছইলে আমি উদ্বন্ধন অথবা বিষ ভক্ষণ দ্বারা প্রাণপরিযোগ করিয়া তুমি স্বয়ং আপনাকে সত্যবাদী বলিয়া জনসমাজে প্রকাশ করিয়া থাক; কিন্তু এক্ষণে রামের উপর শপথ করিয়া প্রতিজ্ঞাল্জ্মন দোষে নিরয়গামী ছইতেছ । ২৩ : ২৪ : ২৫ : । ২৬ । ২৭ : ২৮ : ২৯ : ৩০ : ৩১ : ৩২ : রাজা কৈকেয়ীর এইরপ বচনানলে দশ্ধ ছইয়া যোরহঃখাণ্বে মগ্ন গুল্য জ্ঞান করিয়া মৃত্তি ছইলেন এবং একরাত্রিকে সংবৎসর তুল্য জ্ঞান করিয়া

এবং রাত্রির্গতা তম্ম ছ:খাৎ সম্বংসরোপম। ।

অরণে দিয়কালেতু বন্দিনো গারকা জন্তঃ ।৩৪!।

নিবারয়িত্বা তান্ সর্বান্ কৈকেয়ীরোষমাম্মিতা।

ততঃ প্রভাত সময়ে মধ্যকক্ষমুপস্থিতা।। ৩৫।।

ব্রাহ্মণাং ক্ষল্লিয়া বৈশ্যা ঋষয়ঃ কন্যকান্তথা।

ছত্রঞ্চ চামরং দিবাং গজোবাজী তথৈব চ॥৬৬॥

অন্যাক্ষ্য বারমুখ্যা যাঃ পৌরজানপদান্তথা।

বশির্কেন যথাজ্ঞপ্তং তৎসর্বিং তত্রসংস্থিতং॥৬৭॥

ব্রিয়ো বালাক্ষ্য র্ক্ষাক্ষ্য রাত্রো নিদ্রাং ন লেভিরে।

কদা দ্রক্ষামহে রামং পীতকোশেরবাসসং॥৬৮॥

কথঞিং অভিবাহিত করিলেন অৰুণোদয়কালে বন্দিগণ স্তুতি পাঠ আরম্ভ করিল। ৩৩। ৩৪। কৈকেয়ী রোষসহকারে তাহাদিগকে নিবারণ করিলেন। এদিকে কুলগুৰুবশিষ্ঠ দেবের আজানুসারে ত্রাহ্মণ ক্ষত্তিয় বৈশ্য ঋষিগণ ও ষোড়শ সেরি-কনা। স্বেডচ্ছুত্র দিব্য চামর গজবাজি প্রভৃতি রাজভোগা বস্তু সকল ও অন্যান্য বারাজনাগাণ ও জানপদর্ক সকলে সমবেভ হইরারাজবাটীর মধ্য কক্ষে উপস্থিত হইলোন। ৩৫। ৩৬। । ৩৭। গত রজনীতে নিদ্রা দেবী বালরদ্ধ ও স্ত্রীজাতি প্রভৃতি কাছারও নয়নস্পর্ল করিতে পারে নাই, কারণ তাছারা শ্য্যা-শরান হইরা সভত চিন্তা করিয়াছিলেন যে শতকন্দর্পকমনীয় নবহুৰ্ব্বাদলশ্যাম রাজীবলোচন রাম পীতাম্বর ও কেস্তিভ প্রভৃতি নানাবিধ রত্বাভরণে বিভূষিত হইগা সহাস্য ব্দনে গ্রাজপুষ্ঠে কথন আবোহণ করিবেন ঠাছার শিরন্থিত রাজমুকুটের সমুজ্জল প্রভায় দশদিক আলোকময় হইবে। শুভ-লক্ষণ সম্পন্ন সুকুমার লক্ষ্মণ তাঁহার অভিষক্ত মন্তকোপরি খেতছত্ত ধারণ করিবেন কথনইবা প্রভাত হইবে আমরা मिरे नव्यन्त्रनम्यक्षेत थाङ्ख्यूर्य मिन्या मन्दर्गन कविशः। **আঝাকে পরিতৃপ্ত করিব স্তর**াৎ এই সকল চিন্তার সবলেই রজনীজাগরণ করিয়া ঔৎস্কা বশত প্রভাত হইতে না

দর্কাভরণসম্পন্নৎ কিরীটকটকোজ্জ্বনং। কোস্তুতাভরণং খ্যামং কন্দর্পশতফুন্দরং ॥৬৯॥ অভিধিক্তং সমায়াতং গজাৰতং স্মিতাননং। খেতছত্রধরং তত্র লক্ষাণং লক্ষণান্বিতং ॥ ৪০॥ রীমং কদা বা দ্রক্ষ্যামঃ প্রভাতং বা কদা ভবেৎ। ইত্যুৎস্থকধিয়ঃ সংবৰ্ধ বভূবুঃ পুরবাসিনঃ ॥১১॥ নেদানীমুম্বিতো রাজা কিমর্থঞ্চেত চিন্তুয়ন। সুমন্ত্রঃ শনকৈঃ প্রায়ান্তত্ত রাজাবতিষ্ঠতে ॥৪২॥ বহ্ময়ন জয়শব্দেন প্রণমন্ শির্সা নৃপং। অতিথিয়ং নৃপং দৃষ্ট্য কৈকেয়ীং সমপৃক্তত ॥৪৩॥ प्रित देकटकशि! वर्ध च कि<? ताङ्गा मृन्गुरण्ड्नावा।</p> তমাহ কৈকয়ী রাজারাত্রো নিদ্রাং ন লব্ধবান্ ॥৪৪ রাম রামেতি রামেতি রামমেবামুচিন্তয়ন। প্রদাগরেণ বৈ রাজা হাস্তম্ভ ইব লক্ষ্যতে। রামমানয় শীঘ্ং স্বং রাজা দ্রফুমিহেচ্ছতি ॥৪৫॥

হইতেই শ্রীরামদর্শনার্থ সেই স্থানে উপস্থিত হইয়াছিলেন।
এই সময়ে মন্ত্রী প্রধান স্থমন্ত্র মহারাজের সমাগমন না
দেখিয়া চিন্তিতান্তঃকরণে অন্তঃপুরমধ্যে রাজসন্ধিনে গমন
করিলেন, এবং মহারাজের জয়হউক বলিয়া প্রণাম করিলেন।
রাজা কিছুমাত্র উত্তর করিলেন না। স্থমন্ত্র অবস্থাদর্শনে
রাজাকে অতি খিন্ন বিবেচনা করিয়া কৈকেয়ীকে জিজ্ঞাসা
করিলেন । ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। দেবি! জাদ্য
উৎসব সময়ে মহারাজকে মলিন দেখিতেছি। কৈকেয়ী
কহিলেন—স্থমন্ত্র, গতরাত্রিতে মহারাজ শ্রীরামেরই শুভাশুতচিন্তা করত জাগরণ করিয়াছেন, অতথব অস্থাছের ন্যায়
োধ হইতেছে, তুনি শীঘ্র শ্রীয়ামকে এস্থানে আনমন কর।
মহারাজ দেখিতে ইচ্ছা করিতেছেন। ৪৪।৪৫।

স্থমন্ত্র উবাচ।

অশ্রুণা রাজবচনং কথং গজ্জামি ভামিনি।
তচ্চুণ্ণ মন্ত্রিণো বাক্যং রাজামন্ত্রিণমন্ত্রবীৎ ॥ ১৬॥
স্থমন্ত্র! রামং জক্ষ্যামি শীঘুমানর স্থন্দরং।
ইত্যুক্তস্ত্ররিতং গড়া স্থমন্ত্রো রামমন্দিরং ॥ ৪৭॥
অবারিতঃ প্রবিটোহয়ং ড্রিতং রামমন্ত্রবীৎ।
শীঘুমাগচ্ছ ভদ্রং তে রাম! রাজীবলোচন!॥ ৪৮॥
পিতুর্গেহং ময়াসার্দ্রং রাজা ডাং দ্রুন্ট্রমিছতি!
ইত্যুক্তো রথমারুছ্ সম্ভ্রমাৎ ত্রিতো বর্ষে।॥ ৪৯॥
রামঃ সার্থিনা সার্দ্ধং লক্ষ্মণেন সমন্ত্রিতঃ।
মধ্যকক্ষে বশিষ্ঠাদীন পশ্রুদ্রেব ত্রান্থিতঃ॥ ৫০॥

স্মচত্র স্মান্ত কহিলেন ভামিনি প্রভুর বাক্য প্রবণ না করিয়া কি হেতু জীগামকে আনয়ন করিব, রাজা মন্ত্রীবাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন, স্থান্ত প্রাণাধিক জীরামকে দর্শন করিতে ইচ্ছা করি, শীত্র আনয়ন কর, সুমন্ত্র রাজকর্তৃক আদিষ্ট হইয়া অবারিভদার জীরামভবনে প্রবেশ করিলেন এবং জীরাম-চস্ত্রকে কৃছিলেন হে রাম! মহারাজ ভোমাকে দর্শন করিতে ইচ্ছা করিতেছেন, শীজ অাগ্যন কর। জীরামচন্দ্র পিতার আজা প্রবর্ণমাত্র ব্যাগ্র হইয়া লক্ষ্মণের সহিত স্থান্ত চালিত-রথে আরোছনপুর্বক গামন করিলেন, মধ্যকক্ষে সমুপস্থিত বশিষ্ঠাদি ঋষিগণকে কার্য্যানুরোধবশত অতিক্রম করিয়া সত্ত্ব পিতৃভবনে গমন করিলেন। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯।৫০। এবং পিতৃদেবের চরণ বন্দন করিয়া দণ্ডায়মান রহিলেন। রাজ। দশর্থ শ্রীরামকে আলিঙ্গন করিবার নিমিত্ত গাভোত্থান করিয়। বাহুদয় বিস্তার করিলেন। কিন্তু তাঁহার সেই আশা विकल इहेल, (यट्ड अव्याधाता नय्नव्यटक महमा कक করিয়া মহারাজের দর্শনশক্তির প্রতিবন্ধক হইল। রাজা সেই ক্লে সমস্ত শুন্যময় অবলোকন করিয়া ভূমিতে পতনোমুধ

পিতৃঃ সমীপং সক্ষম্য ননাম চরণো পিতৃঃ।
রামমালিঞ্চিতৃং রাজা সমুখায় সসম্ভ্রমঃ ॥৫১॥
বাহ্প্রসার্য্য রামেতি ছঃখাম্মধ্যে পপাত হ।
হাহেতি রামন্তং শীঘু মালিঙ্গ্যাঙ্কে ন্যবেশরং ॥৫২॥
রাজানং মূচ্ছিতং দৃষ্ট্ব। চুক্রন্তঃ সর্বয়ােষিতঃ।
কিমর্থং রােদনমিতি বশিক্তােহপি সমাবিশং । ৫৩॥
রামঃ পপ্রচ্ছ কিমিদং রাজ্ঞা দুঃথক্ত কারণং।
এবং পৃচ্ছতি রামে সা কৈকেয়ী রামমত্রবীং ॥৫৪॥
দ্বমেব কারণং হাত্র রাজ্ঞা দুঃখোপশাস্তয়ে।
কিঞ্জিৎ কার্যাং দ্বয়া রাম! কর্ত্রাং নৃপতেহিত্থ॥৫৫

হইলেন। এরামচন্দ্র হা মহারাজ বলিয়া পিতাকে মূর্চ্ছাবস্থায় নিজকোড়ে ধারণ করিলেন, পুরনারীগণ রাজাকে মুচ্ছিত দেখির। রোদন করিতে লাগিলেন। বশিষ্ঠদেব মধ্যকক ছইতে পুরনারীগণের রোদনধনি এবণ করিয়া সত্তর আগমন করি-লেন। ৫১ ৫২।৫৩।৫৪। জীরামচন্দ্র মহারাজের আক-न्मिक पुः थ्वत कात्रन जिल्लामा कतिलन, रेकरकशी किरलन জীরাম তুমিই এক্ষণে মহারাজের ত্রুগশান্তির উপায় হইয়াচ্, অভএব মহারাজের কিঞ্চিং হিতকার্য্য কর, তুমি সভ্য প্রতিজ্ঞ বলিয়া বাল্যকালে খ্যাতিলাভ করিয়াছ, একনে পিতাকে मठावानी कत, शूर्व्य महात्रास महारे इहेश। जामांक जिल् লষিত বর্ষায় প্রদানে প্রতিশ্রুত হইয়াছিলেন, মহারাজের এ সভা রক্ষা ভোমারই অধীন, রাজা স্বরং বলিতে লঞ্জিড হইতেছেন। হে ক্ষত্তিরবর সভ্যপাশবন্ধ রদ্ধ পিতাকে নরক হইতে পরিত্রাণ কর যে সন্তান পুরাম নরক হইতে পিতাকে উদ্ধাং করে সেই ব্যক্তি পুত্র শব্দের বাচ্য হইয়া থাকে। জীগামচন্দ্র কৈকেয়ীর এইরপ বাক্য প্রবণ করিয়া শূলাহতের ন্যায় ব্যথিতান্তঃকরণে কহিলেন মাতঃ ! আমাকে আপনি কি উপ্ৰেশ দিভেছেন আমি পিতার নিমিত্ত জীবনপর্য্যস্ক দান করিতে পাবি এবং উদ্বন্ধ ও বিষশানেও প্রস্তুত আছি। জানকী ও গার্ভধারিনী কেশিলা।, এবং সাম্রাজ্য সমস্ত পরি-ত্যাগ করিতে পারি। যে পুত্র পিতার অভিপ্রায় বুরিয়া কুরু সত্যপ্রতিজ্ঞন্ত্ং রাজানং সত্যবাদিনং। রাজ্ঞা বরদ্বরং দত্তং মম সম্ভুক্তচেত্রসা ॥৫৬॥ इम्धीनः जू जदमर्ताः वक्तूः जाः लक्का नृशः। সত্যপাশেন সম্বন্ধং পিতরং ত্রাতুমহ দি॥৫৭॥ পুত্রশব্দেন চৈতদ্ধিনরকাজায়তে পিতা। রামস্তরোদিতং শ্রুত্বা শূলেনাভিহতো যথা।।৫৮॥ ব্যথিতঃ কৈকরীং প্রাহ কিং মামেবং প্রভাষদে। পিত্রর্থে জীবিতং দাস্তে পিবেরং বিষমুল্বণং ॥৫৯॥ সীতাং ত্যক্ষ্যেথ কৌশল্যাং রাজ্যং চাপি<mark>ত্যজাম্যহং</mark> অনাজ্ঞপোহপি কুরুতে পিতুঃ কার্য্যৎ স উন্তমং ॥৬: উক্তঃ করোতি যঃ পুত্রঃ সমধ্যম উদাহ্বতং। উক্তোহপি কুৰুতে নৈব সপুত্ৰো মল উচ্যতে ॥৬১॥ অতঃ করোমি তৎ সরিং যথামাহ পিতামম। সত্যং সত্যং করোম্যের রামো দ্বিনাভিভাষতে ॥৬২॥ ইতি রাম প্রতিজ্ঞাং সাপ্রদত্ব। বক্তুং প্রচক্রমে। রাম ! ত্বভিষেকার্থং সম্ভারাঃ সম্ভূতাক্ষ যে ॥৬৩॥ তৈরেব ভরতোহবশ্য মতিষেচ্যঃ প্রিয়ো ম্ম। অপরেণ বরেণ'শু চীরবাসা জটাধরঃ ॥ ৬৪॥

আজ্ঞাপ্রভীক্ষা করে না সে উত্তম সন্তান, যে ব্যক্তি আজ্ঞামুসারে পিতৃবাক্য রক্ষাকরে সে মধ্যম, যে ব্যক্তি আদিই হইরা
পিতৃবাক্য লগুন করে সেই সন্তান বিষ্ঠাদির ন্যায় পিতার
মলমাত্র অতএব আমি সতাপ্রতিজ্ঞা করিতেছি পিতা আমাকে
যাহা আজ্ঞা করিবেন তাহা ক্বতার্থ হইরা মন্তকে গ্রহণ
করিব রামচন্দ্র স্বীক্বতবিষয়ে কখনই অন্যথা বাক্য বলিবেন
না। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩।
রামচন্দ্রের এইরূপ প্রতিজ্ঞা বাক্য শ্রবণ করিয়া কৈকেয়ী

বনং প্রয়াহি শীঘুং স্বমক্তোব পিতৃরাজ্ঞয়া।
চতুর্দ্দশ সমাস্তত্র বস মুন্যন্নভোজনং।। ৬৫॥
এতদেব পিতৃস্তেইদ্য কার্যাং স্থং কর্তু মহ সি।
রাজাতু লজ্জতে বক্তুং স্বামেবং রঘুনন্দন।।৬৬॥

শ্রীরাম উবাচ।

ভরতক্তিব রাজ্যং স্থাদহং গচ্ছামি দণ্ডকান্। কিন্তু রাজা ন বক্তীহ মাং ন জানেইত্রকারণং ॥৬৭॥

কহিলেন, হে রাম ভোমার অভিষেকার্থ যে সকল বস্তু আছভ হইয়াছে ঐ সমুদায় বস্তু আমার প্রিয় সন্তান ভরতের রাজ্যাভিষেক সাধন ছউক এবং তুমি মুনিবেশ ও জটাবল্কন ধারণ করিয়া চতুর্দশ বর্ষ দওকারণ্যে বাদ কর;তোমার পিতার এইরূপ অভিপ্রায় তুমি এক্ষণে স্থানিদ্ধকর, মহারাজ তোমাকে স্বয়ং বলিতে লজ্জিত হইতেছেন। 🕮 রাম কহিলেন ভরতের রাজ্য হউক আমি বনগমন করিতে প্রস্তুত আছি, তাহাতে কোন আপত্তি নাই। কিন্তু পিডা যে আমাকে কোন আক্সা করিতেছেন না, ইহার কারণ কি।৬৩।৬৪।৬৫। ৬৬। জীরামের এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া রাজা দশর্থ ছু:খি-ভান্তঃকরণে কহিলেন। বৎস রাম! কুপথগামি দ্রৈণ এবং ভ্রান্তচিত্ত পিতার নি এই করিয়া এই সাম্রাজ্ঞা গ্রহণ কর, ভাহাতে তোামর পাপস্পর্শ হইবে না, আমাকেও মিখ্যা প্রতিজ্ঞাজনিত পাপে লিপ্ত হইতে হইবে না। হা রাম! হা প্রাণবল্লভ : হা জগরাথ ! আমাকে পরিত্যাগ করিয়া তুমি কিরূপে যোর মরণ্য **গমনে সম**ত হইতেছ, রাজা এইপ্রকার বিলাপ সহকারে শ্রীরামকে আলিগন করিয়া মুক্তকণ্ঠে রোদন ক্রিডে লাগিলেন, নীভিজ রাম হস্তবার। পিতার সঞ্জলনয়ন ম জ্ঞা পরিয়া আস্বাস বাক্যে কহিলেন তাত। রোদন করিতে-চেন কেন ? আমি প্রতিজ্ঞা পালন করিয়া পুনর্কার অংযাধাার আগমন করিব, আপনার আশীর্কাদে রাজ্যাপেক্ষা অরণো অধিক সুগ ও পিতৃ সত্যপালনম্বরূপ মহৎকার্য্য সাধন হইবে। रिकरक्षी अवीत्र धिम्रज्य कार्यामाधन ४ श्रुवस्य व्यन्ती व শ্রুবৈভদ্রাবচনং দৃষ্ট্যারামং পুরস্থিতং। প্রাহরাজাদশরথো দুংখিতোত্বংথিতং বচঃ।। ৬৮॥ স্ত্রীজিতং ভান্তহৃদয়মুন্মার্গপরিবর্ত্তিনং। নিগৃষ্ঠ মাং গৃহাণেদং রাজ্যং পাপং ন ভদ্ভবেৎ ॥৬৯ এবং চেদনৃতং নৈব মাং স্পৃদেদঘুনন্দন। উত্যুক্তণ দুংখসন্তপ্তো বিললাপ নৃপন্তদা।: ৭০ ॥ হা রাম ! হা জগন্ধাথ ! হা মম প্রাণবল্লভ !। মাং বিসূজ্য কথং ঘোরং বিপিনং গন্তমহ সি ॥৭১॥ ইতি রামং সমালিষ্য মুক্তকণ্ঠো রুরোদহ। বিমৃজ্যনয়নে রামঃ পিতু: সজলপাণিনা ॥१২॥ व्याश्वामशाम नृष्य गरेनः मनश्रकाविषः। কিমত্র ছুংখেন বিভো। রাজ্যং শামতুমেইজঃ॥৭৩। ष्य হং প্রতিজ্ঞাং নিস্তীর্য্য পুনর্যাস্থানি তে পুরং। রাজ্যাৎ কোটিগুণং সৌখ্যং মম রাজন্বনে সতঃ॥ হুৎ সত্যপালনং দেব কার্য্যং চাপি ভবিষাতি। কৈকেষ্যাশ্চ প্রিয়োরাজন্বনবাসে। মহাগুণঃ ॥৭৫॥ इनानीः शसुभिष्काभिरवाजूमाजून शब्बतः। সম্ভারোশ্চোপত্রীয়ন্তামভিবেকার্থমাগতা:।। ৭৬ !।

াজভিষেকোদ্যোগ ছুগিত হউক, মাতা কেশিল্যাকে আখাস ব্যাহ্য গাহা ও জানকীকে অন্তনয় গায়া সাখিনা করিয়া আপনার ফুলু ব্যক্তি বন্দনা পূর্ব্যক শ্লহাস্থ্যে অগুটি বন গমন করিব। ৬৮। মাতরং চ সমাশ্বাক্ত অন্ধনীয়চ জানকীং।
আগত্য পাদৌবন্দিড়া তব যাত্যে সূথং বনং ॥৭৭॥
ইত্যুক্ত্বা তু পরিক্রম্য মাতরং দ্রুক্ত্বা যথৌ।
কৌশল্যাপি হরেঃ পূজাং কুরুতে রামকারণাং ॥৭৮
হোমং চ কারয়ামাস ব্রাহ্মণেক্ত্যো দদৌ ধনং।
ধ্যায়তে বিষ্ণুমেকাগ্রে মনসা মৌনহাস্থিতা। ৭৯॥

অন্তস্থ মেকংঘনচিতপ্রকাশং
নিরস্তসর্ক্রাতিশয়ম্বরূপং।
বিষ্ণুং সদানন্দময়ং হৃদজ্জেসা
ভাবয়ন্তীনদদর্শরামং । ৮০॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অযোধ্যাকাণ্ডে তৃতীয়োহধ্যায়।

। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। শ্রীরাম পিতাকে এইরপে কথঞ্জিৎ আখাসিত করিয়া কৌশলাগ দর্শনার্থ গমন করিলেন, কৌশলাগদেবীও শ্রীরামের মঙ্গলার্থে বিজ্বপূর্বেশ করিতেছেন এবং রাজগদারা ঐ পূজালহোম করাইতেছেন রাজগগকে ধন বস্তাদি প্রদানদারা সম্ভপ্ত ও একাগ্রচিতে উপবেশন করিয়া ভগবজরনারবিন্দ গ্রান করিতেছেন, এমন সমধে শ্রীরামচল সেই স্থানে উপস্থিত হইলেন। ৭৮। ৭৯। কেশিল্যাদিবী জানমর সর্বাস্তেগামী অদিতীয় ও সদানন্দস্বরূপ ভগবদ বিষ্ণু কে জনমপ্রশোধারণ করিয়া বাহ্য বিষয়ক জ্ঞানে অন্ধ হুইয়া সন্মুথস্থিত শ্রীরামচলকে জানিতে পারিলেন না। ৮০।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উনামহেশ্বরসম্বাদে অঘোধ্যাকাওে
ভূতীয়াধ্যায়ঃ সমাপ্ত।

চতুর্থোঽধ্যায়ঃ।

बिमहादनव खेवाह।

ততঃ স্থমিত্তা দৃষ্টিবৃনং রামং রাজ্ঞীং সসম্ভ্রমা।
কৌশল্যাং বোধয়ামাস রামোহয়ং সমুপস্থিতঃ ॥১॥
শ্রুট্রের রামনামৈষা বহিদ্ প্তিপ্রবাহিতা।
রামং দৃষ্ট্রা বিশালাক্ষমালিস্থাক্ষে ন্যবেশয়ৎ ॥২॥
মূর্দ্র্যাবঘ্রায় পস্পর্শ গাত্রং নীলোৎপলছ্বিং।
ভূজ্জ্রপুত্রেতি চ প্রাহ মিইময়ং ক্ষুধার্দিতঃ ॥৩॥
রামঃ প্রাহ ন মে মাততে কিনাবসয়ঃ কৃতঃ।
দশুকাগমনে শীঘুং মম কালোহদ্য নিশ্চিতঃ ॥৪॥
কৈকেয়ীবরদানেন সত্যসক্ষঃ পিতা মম।
ভারতায় দদে রাজ্ঞাং মমাপ্যারণামুত্তমং ॥৫॥
চতুর্দশসমান্তত্র ভ্যাবিত্বা মুনিবেশধৃক্।
প্রাগমিষ্যে পুনঃ শীঘুং ন চিন্তাং কর্ত্ব মহ সি ॥৬।।

অনন্তর স্থানিতাদেনী জীরামকে দর্শন করিয়া ব্যথাতা সহকারে কেশিল্যাদেনীকে প্রবোধিত করিয়া কহিলেন, দেবি! তোমার প্রাণাধিক রামচন্ত্র আদিয়াছেন কেশিল্যা রাম নাম শ্রবণমাত্রে নয়নোন্মীলন করিয়া বিশাললোচন জীরামকে আণিঙ্গন করিলেন এবং নীলোৎপালদলশ্রাম জীরামের মন্তকাজাণ ও সর্কাঙ্গ স্পর্শ করিয়া কহিলেন, বৎস রাম! ক্ষুধার্ত হইয়াছ এই মিন্টান্ন গ্রহণ করিয়া ভোজন কর॥ ৩॥ জীরাম কহিলেন, মাভঃ আমার ভোজনের অব-সর নাই, পিতৃদেব কৈকেয়ীর অভিল্যিত বরদানে প্রতিশ্রুত স্ইয়া ভরতকে রাজ্য প্রদান করিয়াছেন এবং আমাকে চতু-দিশ বর্ষ মুনিবেশ ধারণ পূর্ব্বক দণ্ডকারণ্য গমনে অনুমতি ফ্রিয়াছেন, এইক্ষণই আমার বনগমনার্থ মিন্টিত ছইয়াছে।

তচ্ছুড়া সহসোদিয়া মৃচ্ছি তা পুনরুপিতা।
আহ রামং স্কুদুংথার্তা দুঃখদাগর সংপ্লুতা ॥ १ ॥
यদি রাম ! বনং সত্যং যাসি চেয়য়মামপি।
ছিদ্বিনা ক্ষণার্দ্ধং বা জীবিতং ধারয়ে কথং ॥৮॥
यথা গৌব লিকং বংসং ত্যক্ত্রা তির্চেমকুত্রচিং।
তথৈব ডাং ন শক্রোমি ত্যক্ত্রুং প্রাণাৎ প্রিয়ং মৃতং
ভরতায় প্রসম্পর্কে রাজ্যং রাজা প্রযক্ত্রু।
কিমর্পং বনবাদায় ডামাজ্ঞাপয়তি প্রিয়ং ॥১০॥
কৈকেয়া বরদো রাজা দর্বস্বং বা প্রযক্ত্রু।
ডুয়া কিমপরান্ধং হি কৈকেয়া বা নৃপস্থ বা ॥১১॥

জননি, আপনি চিন্তা করিবেন না, পিতৃ আজ্ঞা পালন করিয়া তাতি দত্তর অযোধ্যায় আগমন করিব ॥ ৬ ॥ কৌশলায় প্রারামের নিদারুণ বাক্য প্রবণমাত্র মূচ্ছিতা ছইলেন, কিয়ৎ ক্ষণ পরে সংজ্ঞালাভ করিয়া প্রগাঢ় শোক দস্তপ্ত অন্তঃকরণে কহিলেন, বংস রাম! যদি পিতার আদেশামূদারে বনগমন তোমার নিতান্ত অভিমত হইয়া থাকে তাহা হইলে আমাকে পরিত্যাগ করিয়া একাকী গমন করিও না, কারণ—বংস বিরহিত খেহুর নায় তোমাকে না দেখিয়া আমি কোন স্থানেও অবস্থিতি করিতে পারিব না, ভাল রাম! রাজা যদি কৈকেয়ীর প্রজ্ঞি প্রদান হইয়া থাকেন তাহা হইলে ভরতকেই রাজ্য প্রদান করুন, কি অপরাধে তোমাকে বনবাস আজ্ঞা প্রদান করিলেন, ভূমিত কথনই মহারাজ্যে ও কৈকেয়ীর নিকট কোন অপরাধ কর নাই, হে প্রাণাধিক! প্রভ্রের পক্ষে জন্মদাতা অপেক্ষা গভ্রমারিণী অধিকতর গৌরবের পাত্র তাহা তোমার অবিদিত নহে, মহারাজ

পিতা শুরুর্থা রাম তবাংমধিকা ততঃ।
পিত্রাজ্ঞপ্রো বনং গল্পং বারয়েয়মহং স্কুতং ।১২॥
য়িদি গচ্ছিদি মদ্বাকামুল্লজ্ঞ্যা নৃপবাক্যতঃ।
তদা প্রাণান্ পরিত্যক্ষ্য গচ্ছামি যমদাদনং ॥১৩॥
লক্ষাণোহপি ততঃ প্রুদ্ধা কৌশল্যা বচনং রুষা।
উবাচ রাঘবং বীক্ষ্য দহরিব জগজ্ঞরং ॥১৪॥
উন্মন্তং ভ্রান্তমনসং কৈকেয়ীবশ্বর্ত্তনং।
বদ্ধা নিহন্মি ভরতং তদ্বক্ষ্যুন্যাকুলানপি ॥১৫॥
আদ্য পশ্যন্ত মে শৌর্যাং লোকান্ প্রদহতঃ পুরা।
রাম স্মাজিষেকার কুরু যতুমরিনদ্মঃ ॥ ৬॥
ধনুপ্রাণিরহং তত্ত্ব নিহন্যাং বিশ্বকারিণঃ।
ইতি ক্রবন্তং সৌমিত্রিমালিক্ষ্য রঘুনন্দনঃ ॥১৭॥

তোমাকে বনগমনে অনুমতি করিয়াছেন আমিও তাহার প্রতি-রোধ করিতেছি এক্ষণে বিবেচন। কর পিতৃত্যাজ্ঞা অপেক্ষা মাতৃ-আজ্ঞার গৌরব আছে কি না—শাস্ত্রজ্ঞ ইইয়া যদি তুমি মাতৃ-আজা লজ্যন কর তাহাহইলে আমি প্রাণত্যাগ করিব ।। b । > । > । >) । > । > । । २ । अमस्त्र नक्षम (कीमना) (परीव এইরপ কৰুণ গর্জবাক্য ভাবণ করিয়া ক্রোধোদ্দীপুনয়নে যেন ত্রিজগৎ দগ্ধ করিবার নিমিত্ত শীরামের প্রতি দৃষ্টিপাত করি-লেন এবং গন্তীর স্বরে কহিলেন হে দেব! আপনি অন্ত্র্যতি ক্রন আমি এই দঙ্গেই লাস্তচিত স্ত্রীজিত ও উন্মত রাজা দশর্থ এবং ভরত ভাহার বন্ধুগণ ও মাতৃলগণ এই সমস্ত ব্যক্তির প্রাণদংহার করিব। অদ্য চরাচরবাদি শীবগণ আমার ত্রিশোক সংহারক বিক্রম অবলোকন করুন, আমি এই কোদও গ্রহণ করিলাম ৷ আপনার অভিষেক কার্য্যের বিম্নকারী ব্যক্তিগণের म्राक्षा त्करहे निकृष्टि পाইবে ना, আপনি अखिरवर्गार्थ यञ्ज কর্মন। অনস্তর রঘুবীর রাম লক্ষণকে আলিক্স করিয়া শাস্তন্য वाटका कहिएक नातिलन । ১৪। ১৫। ১७ । ১৭। जाउः

করোতি দুংখেন হি কর্মতন্ত্রং
শরীর ভোগার্থ মহনি শং নরঃ।
দেহস্ত ভিন্নঃ পুরুষাৎ সমীক্ষ্যতে
কো বাত্র ভোগঃ পুরুষেণ ভুজ্যতে । ২২॥

বৈধ্যাবলম্বন কর, আমি বিশেষ অবগত আছি যে, তুমি প্রচণ্ড-কোদতে শর সন্ধান করিলে ত্রিজগৎ দক্ষ করিতে পার এবং আমার হিত্যাধনার্থ সকল কার্য্যে প্রস্তৎ আছে। ভ্রাতঃ, তোমাকে আমি দছপদেশ প্রদান করি প্রবণ কর, দেখ এই শরীর-সামাজ্য প্রভৃতি বাহ্য প্রত্যক্ষ বিষয় পদার্থ সকল যদি সত্য হয়, তংহা হইলে তোমার আঘাস সফল হইতে পারে, विविद्या कि विद्या एवं नकनरे जानीक जाना किया विविद्या विविद्य विविद्या विविद्य विविद्या विविद्या विविद्या विविद्या विविद्या विविद्या विविद्या विविद्या विविद्या विविद স্থিত বিহালেশার ভার চঞ্চল, মহুষোর পরমায়ুও অগি সম্ভপ্ত লৌংস্থিত জলবিধুপ্রায় অচিরস্থায়ী, যে রূপ ভূজপ্রলস্থিত ভেকও ভুজসদষ্ট না হইলে কালকবলে পতিত হয় না, তদ্রুপ দেহীমাত্রেই কালরূপ ভূককগ্রস্ত হইয়াও প্রারন্ধকম্মের ভোগাবদান না ২ইলে দেহত্যাগ করে না। অভএব অলীক বিষয়বাদনায় মুগ্ধ হটয়া গুরুজনের আছে। লজ্মন করা অতি অনুচিত কার্য্য, মনুযোরা আত্মশরীরের স্থপভোগবাসনায় দিবা-বাত্র অতি কষ্টকর ধনোপার্জনব্যাপার ঘারা আত্মাকে কলুবিড করিতেছে, কি মোহ ! শরীর জড়পঁদার্থ-নের কথন কি স্থাদির ভোকা হইতে পারে? স্থাদির ভোকা পুরুষ—ঐ পুরুষ হইতে

পিতৃ মাতৃ স্থত ভাতৃ দার বন্ধাদি দঙ্গমঃ।
প্রাথায়ামিব জন্তুনাং নদ্যাং কার্চ্চে ঘবচ্চলঃ।।২৩॥
ছায়েব,লক্ষীশ্চপলা প্রতীতা তারুণ্যমমুর্দ্মবদ্ধ্রবঞ্চ

স্বপ্নোপমং স্ত্রীমুখমায়ুরশ্পং
তথাপি জন্তোরভিমান এমং ॥২৮॥
সংসৃ িঃ স্বপ্নদৃশী সদা রোগাদিসঙ্কুলা।
গন্ধানগরংপ্রখ্যা মূল্স্তামমুবর্ত্ততে॥ ২৫॥
আয়ুব্যং ক্ষীয়তে যম্মাদাদিত্যস্য গতাগতৈঃ।
দৃষ্ট্যানোষাং জ্রামৃত্যু কথঞ্চিন্নৈব বুদ্ধাতে॥ ২৬॥

্দহের বিভিন্নতা স্পষ্টই প্রভীয়নান হইডেছে, শরীরস্থিত পুরুষেরও অ্থাদি ভোগ নিভাস্ত অসম্ভব, যেহেতু পুরুষ বিশুদ্ধসভাব— হু চরাং সকলই অলীক বাসনা, বে রূপ পাণীয় নালায় পিপাসা-্রব জন্তু সকলের এবং মহানদীতে শ্রোতঃ সমানীত কার্ছ-সমূহের একত্র সমাগম হয় তজ্ঞপ মনুষ্যদিগের পিতা মাতা পুল্র ভাতা কলত্র ও বন্ধুগণের সহিত সমাধাম হইয়া থাকে। আশ্চর্যা! মতুষ্যেরা প্রতিক্ষণেই ছায়ার তায় লক্ষ্মীর অস্থিরত্ব ও জলোত্মির ন্যায় যৌবনের অস্থায়িত্ব আয়ুর অল্পতা ও জীসন্তোগ তথের স্বপ্লেপমত্ব অনুভব করিয়াও অভিমান পরতন্ত্র হটয়। অকিঞ্জিৎকর সুথের জন্য আত্মাকে কতই কটদিতেছে, মৃর্থেরাই लक्ष नगवर क्रविध्वःमी ख्रश्नमुग (द्यानामि-मङ्ग मःगाद्व অনুরক্ত হটয়া থাকে ।২৫। স্থ্যের গমনাগমন সময় সার। াবৎ প্রাণির আয়ুক্তর হইতেছে ইছা অপর ব্যক্তির জ্বরামরণ দর্শনে কি অনুভব হয় না? নিশাবসানে দিবস সমাগম হ**ইলে** দিবদ ভোগ্য স্থপান্থভব করিয়া দিবাবদানে রজনী স্থপমা-গামে মনুষ্যোরা কতই অনুরক্ত হইতেছে কি আশ্চর্যা! কালের শ্রোত দেখিয়া ভাহাদের কি কণকালের জন্য পরমানুক্ষরের আশহা হয় না ? এবঞ্চ অপক্ষ কলসন্থিত জলের ন্যায় প্রতি-ক্ষণেই পরমায় ক্ষরণ হইভেছে, রোগ সম্হ প্রবল রিপুর ন্যায় শ্বীরে স্তত প্রহার করিতেছে। জরাও ব্যাঘীর ন্যায় সমূথে ণ গার্মানা হইয়া ভর্জন করিতেছে এবং মৃত্যু সময় প্রতীক্ষা

স এব দিবসঃ দৈব রাজিরিত্যের মূচ্ধিণ ভোগানমুপতত্যের কালবেগং ন পশ্যতি ॥২৭॥
প্রতিক্ষণং ক্ষরত্যেতদায়ুরাম ঘটামুবং।
সপত্ম ইব রোগোধাঃ শরীরং প্রহরন্ত্যহো॥২৮॥
জরা ব্যাঘার পুরতন্তর্জ্যুরন্তাবিষ্ঠতে।
মৃত্যুঃ সহৈব যাত্যের সময়ং সম্প্রতীক্ষতে॥২৯॥
দেহে২হং ভাবমাপেয়ো রাজাহং লোকবিশ্রুতঃ।
ইত্যামিমানতে জন্তঃ ক্লমিবিড় ভ্রমাণ জ্রেতে॥৬০॥
ত্যান্থি মাংস বিগ্রুত্রেরতো রক্তাদি সংযুতঃ।
বিকারী পরিণামী চ দেহ আত্মা কথং বদ ॥৩১॥
যমান্থায় ভবালোকং দগ্ধুমিচ্ছতি লক্ষণ।
দেহাভিমানিনঃ সর্বের দোষাঃ প্রান্ত্রভিতা।
নাহং দেহশ্চিদাত্মেতি বৃদ্ধিবিদ্যুতি ভন্যতে॥৩৩

করিতেছে তথাপি মন্থার। কৃমিবিশিষ্ঠাদিময় দেছে আত্মবৃদ্ধি করিষা আমি জগদিখাতে রাজা ও অভিরূপবান এই সকল
মনে মনে করনা করিয়া থাকেন, কি ভ্রম! ওক্ অন্থি মাংস বিষ্ঠা
মূত্র রেত ও রক্ত এই সকল বস্তু পরিপূর্বিত রসাদিধাতু বিকার
যুক্ত ও বিনশ্বর দেছ কি আত্মা হইতে পারে? যেহেতু আত্মা
অবিকারী ও অবিনশ্বর, তুমি যে দেহাভিমান আশ্রম করিয়া সকল
লোকদগ্প করিতেই ইচ্ছা করিতেছ, ঐ দহাভিমান অতি অকিকিৎকর ও সর্বাদাযের আকর জানিবে ২৬ ২৭ ২৮ ।

২১ ২০ ২০ ১০ শুই । ছেলক্ষণ! দেহাত্মান অতি অকিআমিই দেছ এই প্রকার বৃদ্ধির নাম অবিদ্যা, আমি দেহাভিরিক্ত চিন্মর আত্মা, এই প্রকার বৃদ্ধির নাম বিদ্যা, পূর্ব্বোক্ত
অবিদ্যা সংসারের কারণ, বিদ্যা কেবল সংসার নিবর্ত্তিকা,
সেই হেতু মুমুক্ষ্ বাক্তিদিনের বিদ্যাভ্যাদে যত্ন করা উচিত।
সেই বিদ্যাভ্যাদে কাম ক্রোধ প্রভৃতি প্রবল রিপু—ঐ রিপুগণের
মধ্যে ক্রোধ সর্বাপেকায় মৃক্তির বিদ্বকারী, যে ক্রোধপ্রভাবে

অবিদ্যা সংস্তেহে তুর্বিদ্যা তক্সা নিবর্ত্তিকা।
তক্মাদ্যত্বঃ সদা কার্ব্যো বিদ্যাভ্যাসে মুমুকুভিঃ।
কামক্রোধাদয়স্তত্ত্ব শত্রবঃ শত্রস্থদনঃ। ৩৪।
তত্তাপি ক্রোধ এবালং মোক্ষবিদ্যায় সর্বাদা।
যেনাতিকঃ পুমান হন্তি পিতৃত্তাতৃস্কুত্বৎ সধীন্।
ক্রোধমূলো মনস্তাপঃ ক্রোধঃ সংসারবন্ধনং।
ধর্মক্ষয়করঃ ক্রোধস্তক্মাৎ ক্রোধং পরিত্যক্ষ ॥৩৬॥

অভিভূত হইয়া মহয়েরা পিতা মাতা ভাতা হস্কং ও স্থা এই সকলের বধোপায়ে প্রবৃত হইয়া থাকে। হে লাতঃ! ক্রোধ হইতে মনন্তাপ, সংসার বন্ধন ও ধর্মনাশ হয়। সেই হেতু ক্রোধ পরিত্যাগ কর। ৩৩। ৩৪।৩৫। ৩৬। হে লক্ষণ! ক্রোধ পরম শত্রু ভৃষ্ণা বৈতরণী নদীর ন্যায় ছম্ভরা-সম্ভোব নন্দন বনের ন্যায় ফলপ্রদান করিয়া থাকে, এবং শাস্তি কাম-ধেমুর স্বরূপ দেই হেতু শাস্তি ভজনা কর, তাহা হইলে কেহ শত্রুতাচরণ করিবে না বস্তুগত্যা আত্মা বিশুদ্ধ জ্যোতির্শ্বর নির্বিকার নিরাকার—দেহ ইত্রিয় মন প্রাণ ও বুদ্ধি হইতে বিল-ক্ষণ, মনুষ্যোরা যাবং কালপ্রান্ত দেহ ইক্সিয় প্রাণ হইতে আত্মাকে বিভিন্ন জ্ঞান না করে, তাবৎকাল পর্য্যন্ত বারম্বার সংসার-ছঃখাণ্যে ও মৃত্যু মৃথে পতিত হইবে। সেই হেতু তুমি আমাকে সর্বদ। বুদ্ধাদি হইতে বিভিন্ন জ্ঞান করিবে। কিন্ত लोकिक वावहाद्व माधावन मञ्जात नाम व्यक्तित कतित्व कथन 3 ८थन गुक्त इंटेरव ना, त्नोकिक गुवहारव माधांत्र मञ्जात নাায় আচার করিলে থেদ হওয়া সন্তব, কিন্তু যে ব্যক্তি হৃদয়ে আত্মাকে সর্বাদা দেহাদি হইতে বিভিন্ন চিস্তা করে এবং লৌকিক ব্যবহারে সাধারণের অনুস্ত্রণ করে সেই ব্যক্তি সংসার নিবন্ধন স্থত্ঃথাদি প্রারক ভোগী হইয়াও তাহাতে লিপ্ত হয় না। বিশুদ্ধান্তঃকরণ ব্যক্তি সংসার প্রবাহে পতিত হইয়া লৌকিক ব্যবহারাত্রযায়ী সকল কার্য্য করিলেও পাপ বা পুণো লিপ্ত হয় না। হে লক্ষ্মণ, তুমি বিশেষ যত্নসহকারে মছক্ত এই সমস্ত উপদেশ হৃদয়ে চিন্তা কর তাহা হুইলে কথনই সংসার ছাথে বাধিত হইবে না। হে মাতঃ, আপনিও মহক বচন পরম্পরা

ক্রোধ এব মহান্ শক্তস্ফা বৈতরণী নদী। मर्खार्या नन्मनवनः भाष्ठिरत्व हि कामधुक्॥ ७१॥ তত্মাচ্ছান্তিং ভজস্বাদ্য শক্রবেং ভবেন্ন তে। দেহেন্দ্রিয়মনঃ প্রাণবুদ্ধাদিভ্যো বিলক্ষণঃ॥ ৬৮॥ আত্মা শুদ্ধঃ স্বয়ং জ্যোতিরবিকারী নিরাক্কতিঃ। যাবদেহেন্দ্রিয়প্রাণৈভিন্নত্বং নাল্মনো বিদুঃ ॥৩৯॥ তাবৎ সংসারদুঃখেবিঃ পীডাক্তে মৃত্যসংযুতাঃ। তস্মান্ত্রং সর্বাদা ভিন্নমাত্মানং হৃদি ভাবয়।। ৪০॥ বুদ্ধ্যাদিভ্যো বহিঃসর্ব্য মনুবর্ত্তস্ব মা খিদ। ভুঞ্জন প্রারক্ত মথিলং স্কুখং বা দুঃখমেব বা ॥ ৪১ ॥ প্রবাহপতিতঃ কার্যাং কুর্ম্বন্ন পি ন লিপাতে। বাছে সর্ব্বত্র কর্তুত্মাবহন্নপি রাঘব 🛚 ১২ ॥ অন্তঃশুদ্ধস্বভাবস্তং লিপ্যদে ন চ কর্মভিঃ। এতশ্বরোদিতং ক্লৎস্নং হ্লদি ভাবয় সর্মাদা॥৪৩॥ मःमात्रमूःदेथत्थिदेनर्काभाटम न कनावन। ত্বমপ্যম ময়াদিষ্টং হৃদি ভাবর নিত্যদা ॥ ৪৪॥ ममागमं अञीकाय न कृष्टिंगः भीषारमञ्जिता न मरेनकब मधामः कर्म्यगार्गान्यवर्खिनाम् ॥ ४० ॥ যথা প্রবাহপতিতপ্লবানাং সরিতাং তথা। চতুৰ্দ্দশস্মাসংখ্যা কণ্ৰিমিন জায়তে ॥ ১৬॥

হৃদরে ধারণ করিয়া আমার পুনরাগমন প্রাতীক্ষা করুন, ভাষা হইলে হঃথ পাইবেন না। নদীপ্রবাহ পতিত প্রবের ন্যাম কর্ম্মার্গাত্মসারিদিগের চিরদিন সহাবস্থান কথন সম্ভবেনা, চতুল্দশ বৎসর স্মণার্দ্ধ কালের ন্যায় অতীত হইবে। ৩৭। ৩৮। ১৯।৪০।৪১।৪১।৪১।৪১।৪১। আপনি হৃদর

অনুমন্ত্র মামমৃ! দুঃখং সন্ত্যজ্ঞা দূরতঃ।

এবং চেৎ সুখসস্বাসো ভবিষ্যতি বনে মম॥ ৪৭॥

ইত্যুক্ত্বা দশুবন্ধাতুঃ পাদরোরপতচিত্রম্।

উপাপ্যাক্ষে সমাবেশ্য আশীর্ভিরভিনন্দয়ৎ ॥৪৮॥

সর্ব্বে দেবাঃ সগন্ধর্বো ব্রহ্মবিষ্ণুশিবাদয়ঃ।

রক্ষন্ত ত্বাং সদা ষান্তং ভির্মন্তং নিজয়া যুতং ॥৪৯॥

ইতি প্রস্থাপয়ামাস সমানিক্ষ্য পুনঃপুনঃ।

লক্ষ্মণোইপি তদা রামং নতা হর্ষাশ্রুগদ্গদঃ॥৫০॥

আহ রাম! মমান্তক্ষঃ সংশয়েইয়ং ত্রয়া ক্ষতঃ।

যাস্যামি পৃষ্ঠতো রাম! সেবাং কর্ত্তং তদাদিশ।।৫১

অনুস্ত্রীয় মাং রাম! নোচেৎ প্রাণাং স্তাজাম্যহং।

তথেতি রাঘবোইপ্যাহ লক্ষণং যাহি মা চিরং॥৫২

প্রতম্বে তাং সমাধাতুং গতঃ সীতাপতির্বিভূঃ।

আগতং পতিমালোক্য সীতা স্থাম্মতভাষিণী। ৫৩।

হইতে ছংখাপনয়ন করিয়া আমাকে বনগমনে অনুমতি করুন আপনার অনুমতি হইলে আমি বনবাদে অনুমাত কট পাইব না । ৪৭। শ্রীরাম এইরূপ সদর্ধগর্ত উপদেশ করিয়া মাতার চবণগুগলে পতিত হইলেন, কৌশল্যাদেবীও শ্রীরামকে ক্রোড়ে করিয়া আশীর্কাচন করিলেন। রাম! ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশ্বর প্রভৃতি দেবতাগন ও পর্বর্জাণ জাগরণ ও নিজাবস্থায় তোমাকে রক্ষা করুন, অনুত্তর শ্রীরামকে পুনংপুনঃ আলিক্ষন করিয়া বনগমনে অনুমতি করিলেন, লক্ষ্মণও প্রণাম করিয়া হর্ষণদাদবচনে কহিলেন হে দেব! আপনি সহপদেশের দ্বারা চিরসংশ্রাপনোদন করিয়াছেন, এইক্ষণে আপনার সেবার্থ দণ্ডকারণো অনুগমন করিব আমার প্রতি অনুগ্রহ করিয়া এই অভিলাদপূর্ণ করুন, নতুবা প্রোণত্যাগ করিব। শ্রীরাম তথাক্স বলিয়া লক্ষ্মণের প্রার্থিত বিষয় জন্মমান পূর্বক কহিলেন হে লক্ষ্মণ, শীজ বনগমনের উদ্যোগ কর বিলম্ব না হয়।৪৮।৪৯।৫০।৫১।৫২। অনস্তর শ্রীরাম জানকীকে শ্রীরাফি করিবার জন্য স্বগৃহে প্রস্থান করিলেন; গীতাদেবীও

স্থাপাত্রস্থালিকৈঃ পাদে প্রক্ষাল্য ভক্তিতঃ।
পথাচ্ছ পতিমালোক্য দেবঃ কিং দেনয়া বিনা ॥ ৫৪
আগতোহসি গতঃ কুত্র শ্বেতচ্ত্রপ্প তে কুতঃ।
বাদিত্রাণি ন বাদ্যন্তে কিরীটাদিবিহজিতিঃ ॥ ৫ ৫॥
দামস্তরাজসহিতঃ সম্ভ্রমায়াগতোহসি কিং,।
ইতি স্ম সীতয়া পৃষ্টো রামঃ সন্মিত্যন্তবীৎ ॥ ৫ ৬॥
রাজ্ঞা মে দশুকারণ্যে রাজ্যং দত্তং শুভেহথিলং।
অতস্তৎপালনার্থায় শীঘুং যাস্থামি ভামিনি ! ॥ ৫ ৭॥
অদ্যেব যাস্যামি বনং তৃত্ত শ্বক্রসমীপর্যা।
সুক্রমাং কুরু মে মাতুর্ন মিথ্যাবাদিনো বয়ং ॥ ৫ ৮॥
ইতি ক্রবন্তং শ্রীরামং সীতা ভীতাহন্তবীদ্বনঃ।
কিমর্থং বনরাজ্যন্তে পিক্রা দন্তং মহান্মনা ॥ ৫ ০॥

প্রীরামচন্ত্রকে সমাগত দেখিয়া স্বর্ণপাত্রস্থ সলিল তারা ভক্তি-পূর্ব্বক পাদ প্রকালন করিয়া দিলেন এবং সহাস্য বদনে জিজাসা করিলেন আর্য্য ! আপনি পরিজন রহিত হইয়া একাকী কোথায় আসিয়াছিলেন; আপনার খেতছত্ত ও রাজমুকুটাদি কোথার? আযোধ্যা নগরে নানাবিধ বাদ্যশ্বনি ও অন্যান্য উৎসব কি ২েছ হইতেছে না, আপনি কি অরান্তিত হইয়া সামস্ত রাজগণকে পশ্চা-ভাগে রাধিয়া আসিয়াছেন? সীতাদেবী কর্ত্তক এইরূপ জিজ্ঞাসিত इहेग्रा महाम् वत्तान श्रीताम कहित्तन । ৫ ०। ৫८। ৫७। ८७ । १९ ७८७ १ মহারাজ আমাকে দণ্ডকারণ্যে রাজ্য প্রদান করিয়াছেন, অতএব দেই রাজ্য পালনার্থ অদ্যই গমন করিব তুমি গুরুজন সরিহিছা হইয়া আমার জননীর শুক্রষা কর; মাদৃশ ব্যক্তি গুরুজন সন্নিধানে প্রতিশ্রত হইয়া কখনও মিথা।বাদি হইতে পারিবেনা।৫৭।৫৮। সীভাদেবী জীরামের বাক্য ভাবণ করিয়া কহিলেন দেব। মহারাজ কি কারণে আপনাকে বনরাজ্য প্রদান করিলেন। শ্রীরাম কহিলেন ভদ্রে । মহারাজ কৈকেমীকে বরদ্বয় প্রদান করিয়াছেন-এক বর দারা ভরতের রাজ্যাভিষেক অপর বরদারা আমার চতুর্দশবয

তামাহ রামঃ কৈকেষ্যে রাজা প্রীতো বরং দদৌ।
ভরতায় দদৌ রাজ্যং বনবাসং মমান্যে ॥৬০॥
চতুর্দশসমান্তত্র বাসো মে কিল যাচিতঃ।
তয়া দেব্যা দদৌ রাজ্য সত্যবাদী দয়পেরঃ ॥৬১॥
অতঃ শীঘুং গমিষামি মা বিশ্বং কুরু ভামিনি!।
ক্রুত্বা তদ্যামবচনং জানকী প্রীতিসংযুতা ॥৬২॥
ভহমত্রে গমিষ্যামি বনং পশ্চাজ্বমেষ্যদি।
ইত্যাহ মাং বিনা গল্পং তব রাঘ্ব! নোচিতং ॥৬০।
তামাহ রাঘ্ব: প্রীতঃ স্বপ্রিয়াং প্রিয়বাদিনীং।
কথং বনং ড্বাং নেষ্যেইহং বহুব্যান্ত্রম্পাকুলং ॥৬৪॥

বন্ধাস হইল। সভাবাদী মহারাজ স্ক্রাং পূর্ব প্রতিজ্ঞার আগব হইয়াছেন, অতএব আমি শীঘ্র বনগমন করিব, তুমি বিয়াচরণ করিও না। সীতা রাম বাক্য প্রবণানস্তর প্রীতিসহকারে কছিলেন দেব! আমি অংগ্রেই বনগমন করিব। অনন্তর ভূমি বনগমন করিবে, আমাকে পরিভ্যাগ করিয়া ভোমার গমন করা উচিত হর না। ৫৯। ৬০।৬১।৬২। ৬৩। 🗟রামচন্দ্র প্রিয়বাদিনী প্রিরার প্রণয় গার্ত্তবচনে পরম প্রীত হইয়া কহি-লেন, প্রিয়ে! যে বদে বহুতর ব্যাত্ত মৃগ ও মানুষভোজী ভীষণমূর্ত্তি রাক্ষসগাণ সিংহগণ ও বন্যবরাহ সকল সমস্তাৎ সঞ্চরণ করিতেছে সেই বনে তোমাকে কিরপে সহচারিণী করিব,সে স্থানে কটু,তিক্ত ও অন্ন ফল মাত্র ভক্ষণদ্বারা জীবন যাত্রা নির্বাহ করিতে হইবে। পিউক ও ব্যঞ্জনাদি সে স্থানে অতি অপ্রাপ্য, অভএৰ অতি যৎকিঞ্চিৎ কটু ভিক্ত প্রভৃতি ফলদারা কিপ্রকারে ভোমার তৃপ্তিলাভ ইইবে, কোন কোন দিন বা কটু ভিক্তফলও নয়নপোচর হইবে মা, উপবাদ দারা দিনাতিপাত কৰিতে হইবে—কোন কোন স্থানে শৰ্করা ও কণ্টক এই সকল বস্তুদ্বার। তুর্গম মার্গ সকল স্মচার লক্ষিত হইবে না। बिली ও मश्नामि পরিরত তুর্গম গিরিগহ্বর আমাদিণের বাস স্কবন হইবে, এবংবিধ নানাপ্রকার দোষে অভিদূষিত দণ্ডকা-

রাক্ষনা ঘোররপ। ক্ষ সন্তি মানুষভোজনঃ।

নিংহ ব্যাঘ্বরাহাক সঞ্চরন্তি সমস্ততঃ ॥৬৫॥

কট্মুফলমূলানি ভোজনার্থং স্থমধ্যমে।
অপুপানি ব্যঞ্জনানি বিদ্যম্যে ন কদাচন ॥৬৬॥
কালে কালে কলং বাপি বিদ্যুতে কুত্র স্থানি !
মার্গো ন দৃশ্যতে কাপি শর্করাকণ্টকান্থিতঃ ॥৬৭॥
গুহাগস্থারসম্বাধং বিল্লীদংশাদিভিযুতিং।
এবং বছবিধং দোষং বনং দণ্ডকসংজ্ঞিতং ॥৬৮॥
পাদচারেণ গস্তিবাং শীতবাভাতপাদিমং।
বাক্ষসাদীম্বনে দৃষ্ট্যী জীবিতং হাস্যমে চিরাং ॥
তক্ষাভিদ্রে ! গৃহে তির্চ্চ শীঘুং দ্রক্ষদি মাং পুনঃ।
বামস্য বচনং শ্রুড্বা সীতা দুংখসমন্থিতা॥ ৭০॥

রণ্য পাদচারণ দারা গমন করিতে হইবে,শীভ বাত ও আতপ জ্ঞন্য অসহনীয় কষ্ট সহু করিতে ছইবে। পভিপরায়ণার স্বামি সন্নিধানে সকল কটে নাল করে; কিন্তু দেই যোরতর ভয়হ্বর বনে তুমি জ্রী জ্ঞাতি স্থলত ভীক স্বভাব-বশত ভীনণমূর্ত্তি রাক্ষমাদি দর্শন করিয়া নিশ্চয় প্রাণ পরিযোগ করিবে। ७৪। ७৫। ७७। ७१। ७৮। ७२। ভাস্তে! এই সকল কারণে ভোমাকে বনগমনে নিবারণ করি, গ্রে অবস্থিতি করিয়া' গুরুজনের শুক্রাবা কর শীদ্র আমাকে পুনর্দশন করিবে। জীরামচলের এইপ্রকার উদাদীন বাকঃ এৰণানন্ত্ৰ সীভাদেৰী অহিছঃখিতা হইয়া কুলৰালা স্থলভ নৈসর্গিক মার্দ্দৰ পরিযোগপূর্বক কিঞ্চিৎ কোপসহকারে কছিতে লাগিলেন ছে ধান্মিক প্রবর ! আপনি পতিপরায়ণা নিজ ধর্মপত্নীকে পরিভাগ করিছে ইচ্ছা করিতেছেন। হে দরাময় ! আপনি সমুধবর্তি থাকিলে কেছ কি আমাকে পর:-ভব করিতে পারে? আপনার ভুক্তাবশিষ্ট ঘৎকিঞ্চিৎ ফল-মূলাদি আমি অমৃত ভুলা জ্ঞান করিয়া ভক্ষণ করিব, তাহা-

প্রভারে ক্রম্বন্তা কিঞ্চিৎ কোপসমন্বিতা। কথং মামিচ্ছদে ত্যক্তুং ধর্মপত্নীং পতিব্রভাং ॥৭১। जननना मरनायाः भार धर्मा टब्ला वित नवा श्रवः। ত্ত্ৰমীপে স্থিতাং রাম। কো বামাং ধর্ষয়েদ্বনে ২৭ ফলমূলাদিকং বদ্যন্তব ভুক্তাবশৈষিতং। তদেবামৃতভুল্যং মে তেন ভুষ্টা রমাম্যহং ॥৭৩॥ ত্বয়া সহ চরস্ত্যা মে কুশাঃ কাশাশ্চ কণ্টকাঃ। পুপান্তরণতুল্যা মে ভবিষ্যন্তি ন সংশয়: ॥ ৭৪ ॥ অহং স্বাং ক্লেশয়ে নৈব ভবেয়ং কার্য্যসাধিনী। বাল্যে মাং বীক্ষ্য কশ্চিদ্ধৈ জ্যোতিঃশাস্ত্র বিশারদঃ॥ প্রাহ তে বিপিনে বাসঃ পত্যাসহ ভবিষ্যতি। সত্যবাদী দিজো ভূয়াকামিষ্যামি ত্রা সহ ॥৭৬॥ অন্যথ কিঞ্চিৎ প্রবন্ধ্যামি শ্রুতা মাং নয় কাননং। রামায়ণানি বছশঃ শ্রুতানি বছভিদ্বি হৈছঃ॥ ৭৭॥ সীতাং বিনা বনং রামো গতঃ কিং কুত্রচিদ্বদ ?। অতস্ত্ররা গমিষ্যামি সর্বাপা ত্ব সহায়িনী ॥৭৮।।

তেই আমার পরম পরিতৃপ্তি হইবে, আপনি সন্মুখীন থাকিলে অতিকফকর পদার্থত আমার পরম সুখনাধন হইবে, কুশ-কাশ ও কণ্টক প্রভৃতি কঠিন পদার্থকে কুসুমশ্যাসম জ্ঞান করিব। আমার জন্য আপনার কোন কফ হইবে না। কেবল আপনার দেবাতে নিযুক্তা হইয়া দিন যামিনী যাপন করিব। হে প্রভো! আপনার সহিত আমি বনবাসিনী হইব, ইহা পূর্বেই বিদিত আছি।—একজন জ্ঞোতিষ শাস্ত্র বিশারদ ব্রাহ্মণ বাল্যকালে পিতৃভবনে আমাকে দর্শন করিয়া সহসা কহিলেন এই কন্যাটীর স্থামিসহ বনে বাস করিতে হইবে, ইহা সামজিক লক্ষণদারা বোধ হইতেছে, সত্তৰে হে ভিজ ভক্ত! সেই বাহ্মণকে সত্যবাদী কক্ষন অন্য

যদিগচ্ছনি মাং ত্যক্ত্বা প্রাণাং স্ত্যক্ষ্যামি তেইপ্রত:।
ইতি তং নিশ্চয়ং জ্ঞাড়া সীতায়া রঘুনন্দন: ॥৭০॥
অত্তবীদেবি! গচ্ছ ডং বনং শীঘুং ময়া সহ।
অক্তমত্য প্রক্রাশু হারামাভরণানি চ ॥৮০॥
ত্রাক্ষণেন্ড্যো ধনং সর্ধে দড়া গচ্ছামহে বনং।
ইত্যক্ত্বা লক্ষণেনাশু দ্বিজানাছ্য় ভক্তিডঃ ॥৮১॥

দদে গবাং রক্ষশতং ধনানি
বস্তানি দিব্যানি বিভূষণানি।
কুটুম্ববন্তঃ শুভশীলবন্তো।
মুদা দিজেভ্যো রঘুবংশকেতুঃ ।।৮২।।
অরক্ষতিত দদে সীতা মুখ্যান্যাভরণানি চ।
রামো মাতুঃ সেবকেভ্যো দদে ধনমনেকধা ।।৮৩॥

সন্ধাদ কিঞ্চিৎ বলিব শ্রবণ করিয়া আমাকে সহচারিণী ককন, ব্রাহ্মণ মুখে বহুধা রামায়ণ গ্রবণ করিয়া থাকিবেন, কখন কি সীতা বিরহিত জীরামের বনগমন শুনিয়াছেন? অত্তর্পর, হে দয়াময়! সর্ক্রথা আপনার সহধর্মিণী হইব যদি আমাকে পরিত্যাগ করিয়া বন গমন করেন, তাহা হইলে আপনার সমক্ষে প্রাণ পরিত্যাগ করিব। সীতার এইরপ আগ্রহাতিশয় দেখিয়া জীরাম কহিলেন, দেবি! শীত্র উদ্বেশ্য কর বনগমনে বিলম্ব না হয়। গুরুপত্নী অকন্ধতী-দেবীকে হায় ও অন্যান্য আভরণাদি প্রদান করে। ৭০ ।৭১। ৭২ । ৭৩। ৭৪ । ৭৫ । ৭৬ । ৭৭ । ৭৮ । ৭৯ । ৮০ । বাহ্মণ-গণকে ধনদান করিয়া আমরা সকলে বনগমন করিব। জীরাম এই কথা বলিয়া অনুমত লক্ষ্যণহারা আনীত বেদক্ত এবং বহুপরিবার যুক্ত ব্রাহ্মণগণকে গোরন্দ শত নানাবিধ বন্ধ ও দিবা অলহারাদি প্রদান করিলেন, সীতাদেবীও অকন্ধতী-দেবীকে মহাহরভাতরণাদি প্রদান করিলেন। জীরাম কোশ

শ্বকান্তঃ পুরবাসিত্যঃ সেবকেন্তান্তবৈদ।
পোরজানপদেভ্যান্চ ব্রাহ্মণেভ্যঃ সহস্রশঃ ॥৮৪॥
লক্ষণোহপি সুমিত্রাং তু কৌশল্যায়ৈ সমর্পয়ৎ।
ধন্মঃ পাণিঃ সমাগত্য রামস্যাত্রে ব্যবস্থিতঃ ॥৮৫॥
রামঃ সীতা লক্ষণন্চ জ্ব্মাঃ সর্বে নৃপালয়ং॥৮৬ঃ

লার ও নিজের দাস দাসীগণ পুরবাসী ও জ্ঞানপদ রন্দকে প্রাচুর পরিমাণে ধন বিতরণ করিলেন, লক্ষ্মণ স্থমিত্রাদেবীকে কোশল্যাহন্তে সমর্পণ করিয়া প্রচণ্ড কোশল্যাহন্তে সমর্পণ করিয়া প্রচণ্ড কোদণ্ড গ্রহণপূর্ব্বক প্রীরামের সন্মুখে দণ্ডায়মান হইলেন. জীরাম সীতা ও লক্ষ্মণ সকলে সমবেত ছইয়া রাজভবনাভিমুখে গমন করিলেন। প্রীরাম চন্দ্র সহস্র কন্দর্প সদৃশ স্থমের ও হ্বাদলশ্যামবর্ণ নিজ শরীরের কমনীয় কান্তিদ্বারা দশদিক উজ্জ্ল করত সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত রাজপথে পদার্পণ করিয়া অভূতপূর্ব্ব

শ্রীরামঃ সহসীতয়া নৃপপথে গচ্ছন্ শনৈঃ সামুজঃ
পৌরান্ জানপদান্ কুতুংলদৃশঃ সানক্ষমন্ত্রীক্ষরন্।
শ্রামঃ কামসহস্রফুলর বপুঃ কান্তাা দিশো ভাসয়ন্
পাদন্যাস পবিত্রিতাখিলজগৎ প্রাপালয়ন্তৎপিতুঃ॥
ইতি শ্রীমদধ্যাভাবামায়েণে উমামহেশ্ব স্থাদে

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়েণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অযোধ্যাকাণ্ডে চতুর্পোহধ্যায়ঃ।

রমণীয় রূপ সন্ধর্শনার্থ সমাগত পেরি ও জনপদর্কের উপরি আনন্দপূর্ণ দৃষ্টিপাভ করিতে করিতে মহারাজভবনাভিমুশে গমন করিলেন ৮১। ৮২। ৮৫। ৮৫। ৮৬। ৮৭।

> ইতি শ্রীমদধ্যাস্থরামারণে উনামেছপরসম্বাদে অযোধ্যাকাণ্ডে চতুর্থ অধ্যার।

পঞ্চ মা ২ ধ্যায়ঃ।

अभिश्रिष्य छेवाह ।

আরান্তং নাগরা দৃষ্ট্বা মার্গে রামং সজানকিং।
লক্ষণের সমং বীক্ষা উচুঃ সর্ব্বে পরস্পারং ॥১॥
কৈকেয়া বরদানাদি শ্রুড়া দুঃখসমারতাঃ।
বত রাজা দশরখঃ সত্যসন্ধং প্রিয়ং স্কুডং ॥২॥
স্ত্রী হেতোরতাজ্ঞককামী তস্য সত্যবতা কুডঃ।
কৈকেরী বা কথং দৃষ্ট্বা রামং সত্যং প্রিয়ল্পরং ॥৩॥
বিবাসয়ামাস কথং জুরকর্মাতিমূদ্ধীঃ।
হে জনা নাত্র বস্তবাং গাজ্জামোহদৈয়ে কাননং॥৪॥
বত্র রামঃ সভার্যান্ড সামুজো গান্তুমিজ্জ্তি।
পশান্ত জ্ঞানকীং সর্ব্বে পাদচারেণ গাজ্জ্তীং॥৫॥

নগরবাদিগণ দীতা ও লক্ষণ দমভিব্যাহারে রাজপথে সমাগত জীরামচন্দ্রকে দর্শন করিয়া পরস্পর মুখ নিরীক্ষণ পূর্বক কথোপকথন করিতে লাগিলেন। রাজা দশরথ সভাগুতিজ্ঞ ও সর্বজনাভিগাম জীরামকে কৈকেয়ীর অভিনামাত্র পূরণার্থ পরিত্যাগ করিলেন, তিনি জনসমাজে নিজ সভাচুতি ভীকতা জনর্থের কারণ বলিয়াই প্রকাশ করিয়াছেন; জীজিত পুক্ষের সত্যবাদীতা কোথার? মে যাহা হউক জীজাতি স্থলভ নৈস্থিক কোমল সভাবসম্পন্না ও বিশুক্রংশসমূভা কৈকেয়ী প্রিয়লারী ও সত্যপ্রতিজ্ঞ নবদ্র্বাদলভাম জীরামকে অবলোকন করিয়া কিরপে মূচা প্রস্থাবা নারীর ন্যায় ইহাঁকে বিবাদিত করিলেন। হে জাত! এবিষয়ে আমাদের নিয়েচা কিছুই নাই, একাণে শ্বামারণা মধ্যে সীতা ও লক্ষণ সম্ভিবাহারে জীরাম বাস

পুংভিঃ কদাচিদ্ধী বা জানকী লোকস্করী।

সাপি পাদেন গছন্তী জনসংঘেদ্ধনারতা ॥৬॥

রামোহপি পাদচারেণ গজাশাদি বিবর্জিতঃ।
গচ্ছতি দ্রক্ষাথ বিভূং সর্বলোকৈকস্করং ॥৭॥

রাক্ষী কৈকেয়ী নামী জাতা সর্ববিনাশিনী।

রামস্যাপি ভবেদ্ধং সীতায়াঃ পাদয়ানতঃ ॥৮॥

বলবান্ বিধিরেবাত্র পুং প্রয়াছে দুর্দ্ধলঃ।

ইতি ছঃখাকুলে রুদ্দে সাধূনাং মুনিপুঙ্গবঃ॥না

অত্তরীদ্বামদেবোহধ সাধূনাং সঙ্কমধ্যগঃ।

মানুশোচধ রামং বা সীভাং বা বচ্মি ভত্তঃ॥১০॥

করিতে ইচ্ছা করেন, আমরা সকলে সমবেত ছইয়া সেই ছানে বাস করিব। দেখ দেখ কি ছঃখের বিষয়—অন্ত্যুস্পশ্র রূপা কোমলান্দী জনক নন্দিনী রাজ পথে পদসঞ্জরণ করি-তেছেন। ১। ২। ৩। ৪। ৫। যাঁছাকে জীরাম ব্যাভিরিক্ত জ্বন্য পুরুষেরা কখনই দেখেন নাই, সেই তিলোকস্মন্দরী সীতা জনসমূহ সঙ্কুল নগরমার্গে অনারতা হইয়া গমন করি-তেছেন সর্বালোকৈক স্থান্ত জীরামও গজাখাদি বহিত হইয়া রাজ পথে পদস্করণ করিতেছেন। হা! কৈকেরী রাজসী এই সকল সর্বানাশ্র আদিকারণ, জীরামচন্দ্র ও জানকীকে পৃথিবীতে পদস্করণ করিতেছেন। বিধাতার ইচ্ছাই বলবতী—পুরুষের যত্ন কোন কার্যাকর হয় না রাজপথমধ্যে সাধুসমূহের এইরপ কথোপকথন হইতেছে এমন সময়ে মহাতপা বামদেব মূলি তাঁছাদিন্যের মধ্যবর্তী হইয়া কহিতে লাগিনেন। হে সাধুরুক্য। তোমরা জীরামের ও সীতার এতাল

এষ রামঃ পরো বিষ্ণুরাদিনারায়ণঃ স্মৃতঃ। এষা সা জানকী লক্ষ্মীর্যোগমায়েতি বিশ্রুতা !:>> অসে শেষস্তমশ্বেতি লক্ষ্ণাখ্যক সাম্প্রতং। এষ মায়াগুণৈযু ক্তস্ততদাকারবানিব ॥ ১২॥ এষ এব রজোযুকো ব্রহাং ভূচিখভাবনঃ। সত্বাবিষ্টক্তথা বিষ্ণুব্ৰিজগৎ প্ৰতিপালকঃ ॥ ১৩ ॥ ত্রষ রুদ্রস্থামদোহতে জগৎপ্রলয়কারণং। এষ মৎদ্যঃ পুরা ভূত্বা ভক্তং বৈবস্বতং মন্ত্রং॥১৪॥ নাব্যারোপ্য লয়স্যান্তং পালয়ামাস রাঘবং। সমুদ্রযথনে পুর্বাং মন্দরে সুতলঙ্গতে।। ১৫।।

দৃশ অবস্থা দেখিয়া শোক করিও না. ইহাঁরা সাধারণ বাক্তি নহেন আমি যথার্থ বলিতেছি জীরামচন্দ্র সেই সনাতনবিষ্ণু --জনক নন্দিনী সাক্ষাৎ লক্ষ্মী, ইনিই যোগমায়া বলিয়া জগতে বিখ্যাত আছেন। এই লক্ষ্মণ সাক্ষাৎ অনন্ত দেব জীরামের অনুগমন করিতেছেন; জীরাম পরমাত্মা যৎকালে মায়াগুণ-যুক্ত হন, তথনই সাকার হইয়া থাকেন। ইনিই রজোগুণ সম্পর্কে ব্রহ্মা হইয়া জ্বাৎ স্থান্টি করিরাছেন, সত্ত্বওণ যোগে বিষ্ণুরূপী হইয়া ত্রিজ্ঞাৎ পালন করিতেছেন, এবং তমো-कुन (यार्ग क्षक्रभी इरेश मश्रांत्र क्रित्न, रेनिरे महाक्षनश স্ময়ে মৎস্যরূপী হইরা পরমভক্ত বৈবস্থত মনুকে নেকিশর আরোছন করাইয়া রকা করিয়াছিলেন, ইনিই সমুদ্রমন্থ্ন সমায় কৃষ্ণরূপী হইয়া রসাভল-প্রবিষ্ট মন্দর পর্বভকে পৃষ্ঠ-टिन भारत कतिशाहित्यम अवश देशिहे क्षेत्र मगरम भ्कर-রূপী হইয়া দন্তাগ্রদারা রুসাভল-প্রবিষ্টা পৃথিবীকে উত্তো-প্রহ্মাদকে বর প্রদান ও মহাবল প্রদীপ্ত ত্রিলোক কণ্টক হিবণ্য किनिश्चत वकः छल नथवाता विनीर्न कित्रताहित्नम । यरकातन অধারয়ৎ স্বপৃষ্ঠেং ডিং কুর্মার গী রঘ্তুমঃ। यरी दुर्माञ्लर याजा श्रानात म्करवार्च वर ॥५७॥ তোলয়ামাস দংট্রাত্রে তাং কোনীং রঘুনন্দনঃ। নারসিংহং বপুঃ রুড়া প্রহ্লাদ বরদঃ পুরা ॥ ১৭ ।। ত্রিলোক কণ্টকং রক্ষঃ পাটয়ামাদ ভন্নখৈঃ। পুজরাজ্যং হৃতং দৃষ্ট্য হ্যদিত্যা যাচিতঃপুরা ॥১৮ বামনত্রমুপাগম্য যাচ্ঞারা চাহরৎপুনঃ।* দুষ্টক্ষজির ভূভার নিরুজ্যৈ ভার্গবোহভবৎ ॥১৯॥ স এব জগতাৎ নাথ ইদানীং রামতাং গতঃ। রাবণাদীনি রক্ষাংশি কোটিশো নিহনিব্যতি ॥২০॥ मानूरवरेनव मत्रनः उस्र पृक्षः पृताञ्चनः। রাজ্ঞা দশরথেনাপি তপদারাধিতো হরিঃ।। ২১॥ পুত্রত্বাকাজক্ষয়া বিষ্ণোস্তদা পুত্রোহভবদ্ধরি: । স এব বিষ্ণুঃ জ্ঞীরামে। রাবণাদি বধায় হি ।। ২২ ।।

অণিতি বলি কর্তৃক অপহত নিজপুত রাজা ইহাঁর নিকট প্রার্থনা করিয়াছিলেন তৎকালে ইনিই বামনরূপী হইয়া যাচ্ঞাছলে ঐ রাজ্য পুনর্বার গ্রহণ করিয়াছিলেন। ইনিই তুক্টক ত্রিয়াণ ক্রত ভূভার হরণের নিমিত পরশুনম হইয়াছেম 10191151201221201281201291291271 四年で मिटे खराबाथ **बाबामक्रभी इरेग़ा हिम, जावनानि कांगे** कांगे রাক্ষমগণের উন্মূলন করা জীরানের প্রধান উদ্দেশ্য জানিবে। ভুরাজা রাবণ মনুষ্য হইতে নরণ কামনা করিয়া দেনগণের নিকট বরপ্রাছণ করিয়াছে। রাজা দশর**গ** বিষ্ণুতে প্রত্ত্ব কাম<mark>না</mark> করিয়া বহু তপ্স্যা দ্বারা বিষ্ণুকে সম্ভুক্ট করিয়াছিলেন। ভক্ত-লন করিয়াছিলেন, ইনিই নরসিংছ শরীর ধারণ করিয়া বৎসল হরিও তাঁছার আরাধনায় সম্ভট ইইয়া পুত্রত্ব শ্বীকার্ক্স করিয়াছিলন, জীরান সেই বিফুরাবণ বংগাদেশে লক্ষ্মণ সহায় হইয়া অদ্য বনগমন করিতেছেন। এই সীতা হু ফিছিড গন্তাহদৈয়ব বনং রামো লক্ষণেন সহায়বান্।
এবা সীতা হরেমায়া সৃথিস্থিত্য ন্তকারিনী ॥২৩
রাজা বা কৈকেয়া বাপি নাত্র কারণমন্থপি।
পূর্কেলুর্নারদঃ প্রাহ ভূভারহরণায় চ॥ ২৪॥
রামোহপ্যাহ স্বাহং লাক্ষাৎ শ্বো গমিষ্যামহেং বনং
অতো রামং সমুদ্দিশা চিন্তাং তাজত বালিশাঃ॥
রামরামেতি যে নিতাং জপত্তি মনুজা ভূবি।
তেষাং মৃত্যুত্যাদীনি ন তবন্তি কদাহন॥ ২৬॥
কা পুনহুসা রাম্যা দুঃখশন্তা মহাত্মনঃ।
রামনাস্থৈব মুক্তিঃ সাহি কলো নান্যেন কেনচিৎ॥
মায়া মানুষ্বপ্রপা বিভ্নম্নতি লোকরেং।
ভক্তানাং ভক্তনার্থায় রাবণ্যা বধায়ত॥ ২৮॥

প্রলয়কারিণী বিষ্ণুমায়া স্মতরাং বিষ্ণুর অনুগমন করিবেন 🕫 🛚 । ২১। ২২। ২৩ । রাজা বা কৈকেয়ী এ বিষয়ে অসুমাত্র লোষী নতে; গত দিবদে মহর্ষি নারদ আগমন করিয়া ভূভার হরণ প্রতিজ্ঞা শ্রীরামকে স্মরণ করিয়া দিয়াছিলেন, তাঁহার সমক্ষে শ্রীরামও স্বীকার করিয়াছেন যে, আমি আগামি দিবদে ভূভারহরণের নিমিত্ত বনগমন করিব, অভ্এব ভোমরা মূড়েব ন্যার খ্রীরামের জন্য শোক করিও না। ২৪। ে । মনুষোরা যে রামের নাম জপ করিয়া মৃত্য ভয় হুইতেও পরিত্রাণ পায় সেই রামচন্দ্রের তুঃখবিষয়ে আশঙ্কা কি অধিত ? কি বলিব কলিতে জ্রীরণমের নাম ব্যতীরেকে প্রন্য নাম্যেক্তারণে মুক্তি হইবে না। সেই জ্রীরাম লোকদিগকে শিক্ষা দিবার জনা মারাদ্বারা মনুষ্যরূপ গ্রহণ করিয়া লোক ব্যবহার রক্ষা করিতেছেম এবং বিভিন্ন কচিবিশিষ্ট লোক-দিগের উপাসনার নিমিত্ত উপাস্য মৃতি গ্রাহণ করিয়াছেন: ইহাদারা রাজা দশরখের ইফসৈদ্ধি ও দেবগণের চিরবিদ্বেষী बोबर्बद निधनं जम्मापिक इहेरव ।२७/२१/२৮। महामूनि

রাজ্ঞশ্চভিনি কার্থং মানুষং বপুরাশ্রিতঃ।

ইত্যুক্ত্বা বিররামাথ বাসদেবো মহামুনিঃ ॥২০॥

শ্রুরা তেইপি দ্বিজ্ঞাঃ সর্বেকিরামং জ্ঞাড়া হরিং বিস্তুং

জহুক্ত দেংশয়প্রস্তিং রামমেবাস্বচিস্তরন্॥৩০॥

য ইদং চিন্তরেন্নিতাং রহসাং রামসীতরোঃ।

তদ্য রামে দৃঢ়া ভক্তিভ বৈদ্বিজ্ঞানপূর্বিকা॥৩১॥

রহসাং গোপনীয়ং বো য়য়ং বৈ রাঘবপ্রিয়াঃ।

ইত্যুক্ত্বা প্রথমে বিপ্রস্তেইপি রামং পরং বিদুং॥

হতো রামঃ সমাবিশ্য পিতৃগেহমবারিতঃ।

সাত্রজঃ সীতয়া গড়া কৈকেয়ীমিদমব্রবীৎ॥৩৩॥

বাদদেব এই সমস্ত গুজরতান্ত কহিয়া বিরত চইলেন, সমবেত বাদ্দণগণ তদাকাশনুসারে প্রীকানকে সনাতন বিষ্ণু জানিয়া কদয়ন্তিত সংশয় প্রান্থি অপনোদন করিলেন এবং একাগ্রচিত্তে জীরামকে চিন্তা করিতে লাগিলেন। ২৯। ৩০। যে সকল ব্যক্তি বাম ও সীতাদেবীর এই সমস্ত গুজা রক্তান্ত সর্বাদা চিন্তা করে তাহানিগের বিজ্ঞান ও প্রীরামচক্রে দৃঢ়াভক্তি

অবারিত্থার প্রীরামচন্দ্র সীতা ও লক্ষাণের সহিত্ত পিতৃ গৃহে প্রবেশ করিলা সমুখবর্তিনী কৈকেরীকে কহিলন মাতঃ! আমরা আপনার অভিমহ বনগমনে ক্রতসংকল্প হইরা আসিয়াছি, কিন্তু পিনার অনুমতি আপেক্ষা করিতিছি। কৈকেরী প্রীরামকর্তৃক এইরুগ অভিহিত হইরা সহসা গারোপানপূর্কক রাম সীতা ও লক্ষাণকে পৃথক্ পৃথক্ কক্স থতার প্রদান করিলেন। বাম ও লক্ষাণ উভয়ে পরিধের বস্ত্র তাগ করিরা চীরখণ্ডপরিধান করিলেন, রাজকুমারী জানকী হন্তে চীরখণ্ড ধারণপূর্কক লজ্জাবনত্মুখী হইরা জীরামের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। প্রীরামচন্দ্র জানকী হন্ত হইতে চীরখণ্ড প্রেছণ করিয়া তদীর পরিধের বসনোপরি কেন্টন করিয়া দিলেন। ৩১ ৷ ৩২ ৷ ৩৪ ৷

আগগতান্মো বয়ং মাতস্ত্রয়ন্তে সন্মতং বনং I গন্তং কুতধিয়ঃ শীঘ মাজ্ঞাপয়ত নঃ পিতা॥ ৩৪॥ इंजुङ् । महरमाथात्र हीतानि अनरमी स्रार । রামায় লক্ষণায়াথ দীতায়ৈ চ পৃথক্ পৃথক্।।৩৫॥ রামস্ত বস্ত্রাণ্ডেসুজ্য বনাচীরাণি পর্য্যধাৎ। লক্ষণোহপি তথা চক্রে দীতাতম বিস্থানতী ॥৩৬॥ হত্তে গৃহীত্বা রামস্য লক্ষ্যা মুখনৈকতং। রামো গৃহীত্বা ভক্তীরমংশুকে পর্যাবেষ্ট্রছ ॥ ৩৭॥ एफ् खे । क्क़ पूर मर्स्य ता अपाताः मयस्रु । বশিষ্ঠস্ত ভদাকর্ণ্য রুদিতং ভৎস রন্ রুষা ॥৩৮॥

। ৩৫ । ৩৬ । ৩৭ । রাজমহিষীগণ এই সকল ব্যাপার অব-লোকন করিয়া উচ্চৈ:শ্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। মহর্ষি-ৰশিষ্ঠ রাজমভিষীগণের সকৰুণ রোদন প্রবণে বাথিত হইয়া क्काथमहकादा रेकत्कशीरक कहिलन। (इ प्रकाशित ! अभि ब्राक्कांब निकृत किवल जीवारमद वनगमन आर्थना कविशाह. রাজা তাতাই স্বীকার করিয়াছেন, সুতরাং জীরামকে চীরখণ্ড প্রদান করিতে কোমার অধিকার আছে, পতিব্রভা জানকী মদি স্থেচ্ছাবশতঃ জীরামের অনুগামিনী হন, তাহাতে কাহা রও কিঞ্মিতাত বক্তব্য নাই; এক্ষণে আমি অনুমতি করিতেছি त्व मीलाद्यती मक्तालव्य कृतिका अ किताव्यवधाविती इहेगा স্থামীর সহচারিণী ছউন, ভাষাতে জীরামের বনবাস ত্রুপ নিবারণ হইবেক।

অনন্তর রাজা দশরথ সুমন্ত্রকে কহিলেন সুমন্ত্র রথ আনমন কর, এরামচন্দ্র প্রভৃতি ঐ রথে আরোছণ করিয়া বন গমন কৰুন, ব্ৰাজা এই সকল বলিতে বলিতে রাম সীভাও শক্ষাণের প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া ভূমিতলে পতিত হইলেন এবং অতি হুঃখার্ড হইয়া উঠিছঃখারে রোদন কবিতে আরম্ভ क्रिट्रलन। व्यनस्त्र अम्बानी व ब्रह्म मीलामिरी अथमजः

কৈকেয়ীং প্রাহ্ দুরু তে! রাম এব ত্রা রুতঃ। বনবাসায় দুষ্টে! ত্বং সীতায়ৈ কিং প্রায়ফ্ সি? ॥৬৯॥ যদি রামং সমম্বেতি সীতা ভক্ত্যা পতিব্রতা। দিব্যামরধরা নিত্যং সর্ব্বাভরণ ভৃষিতা ॥ ৪০॥ त्रमश्रञ्जनिमः त्रामः वनक्रःथनिवातिनी। রাজা দশরবোহপ্যাহ স্থমন্ত্র রথমানর ॥ ৪১॥ রথমারুহ্য গচ্ছন্ত বনং বনচর প্রিয়াঃ। ইভূক্তা রামমালোক্য সীতাং চৈব সলক্ষাণং ॥১২॥ ছঃখারিপতিতে। ত মে। করোদাঞ্পরিপ্লুতঃ। আরুরোহ রথং দীতা শীত্রং রামশ্র পশ্যতঃ ।।৪৩॥ রামঃ প্রদক্ষিণং কৃত্বা পিতরং রথমারুহ্ৎ। লক্ষণ: খড়াযুগলং ধনুস্ত্ণীযুগং তথা॥ ৪৪ ॥ গৃহীতা রথমারুহ্য নোদয়ামাদ সার্থিং। তিষ্ঠ তিষ্ঠ সুমন্ত্রেতি রাজা দশরখোহত্রবীৎ ॥৪৫॥ গচ্ছ গচ্ছেতি রামেণ নোদিভোইচোদয়দ্রথং। রামে দূরং গতেরাজা মূচ্ছি তঃ প্রাপতদুবি ॥৪৬॥

আবোহণ করিলেন, লক্ষ্মণ খজান্তম, বনু ও তুণীর হয়গ্রহণ করিয়া রথারোহণ করিবামাত্র সার্থীকে রথচালনে অনুমতি कब्रिलम, राजा मणदश दश ठालम हमि अवनकदिश छेरिकः স্বরে কহিলেন 'হে সুমন্ত্র! ক্ষণকাল প্রভীক্ষা কর—আন্থি একবার শ্রীরামতে দর্শন করি। ৩৮। ৩৯।৪০।।৪১।৪২। ।৪০। ৪৪। ৪৫। জ্রীরাম পিতার আর্ত্তনাদ শুনিয়া কহিলেন-चूमल वर्ष हालन कर, भांक मल्ख निजार वाका सनन করিও না। জীরামের আদেশারুসারে স্থাত্ত কতবেগে त्रथ ठामन कतिलान, कार्यकाम मत्था खीतात्मक द्रथ प्रमान श्रथ অতিক্রম করিল ৷ রাজা দশরণ বছদ্র পর্যান্ত দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন, রথ নয়নপথের অতীত হইলে রাজা মৃচ্ছিত হইরা **फार्त्वाहर कति**रलन जीतायङ शिङारक ध्यमकिन कतिया | ভূত**नে প**তিভ हरेनन। ४७। পूरवामी वाज**रूष ७ वाष**न,

শণ রাজার এইরূপ তুরবন্থা দেখিয়া উচ্চিঃশ্বরে সুম্জুকে-আহ্বান করিতে করিতে রথের অনুগমন করিতে লাগিলেন। অনস্তর রাজা পরিচারকদিগকে বলিলেন, হে পরিচারক গ্ৰ। তোমরা আমাকে জ্রীরাম-জননী কৌশল্যার মন্দিরে রক্ষা- ४४, তাহা হইলে কিঞ্ছিৎকাল জীবন রক্ষার সম্ভব, ফলতঃ রাম বিরহিত হইয়া অধিক কাল জীবিত থাকিব না। পরিচারকের। এটরূপ অভিহিত হইয়া রাজাকে কৌশল্যাগৃছে রক্ষা করিলেন, বাজা গৃহ প্রবেশমাত্রেই পতিত ও মুদ্ধিত হইলেন, কিঞ্চিৎ-কালের পর সংজ্ঞালাভ করিয়া কৌশল্যার প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করত মৌনী রহিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। এদিকে শ্রীরাম-চক্র, সীতা ওালক্ষণ তমসা নদী তীরে উপস্থিত হইয়া বাস করিতে লাগিলেন। ধর্মাত্মা রাম দিবাভাগে ভলমাত্র আহার করিয়া उक्नोरघारण मीठारमधीत महिल निक्तित इहेरजन, के व्यवसाय লক্ষাণ স্থমন্ত্রসমভিব্যাহারে ধহুর্কাণ ধারণ করিরা তাঁহাদিগকে াকা করিতেন। পুরবাসিগণ শ্রীরামকে অযোধ্যায় পুন:প্রভ্যা-शमन कत्राहेरात खना क्रजमङ्ग हरेशा थे शारन जाशमनशृक्तक শীরামের অবিদূরে বাস করিতে লাগিলেন এবং সকলে এইরূপ ঘাঁভপ্রায় প্রকাশ করিলেন যে, প্রীরাম যদি নগর প্রত্যাগমন ন। করেন, ভাছা হইলে আমরা শ্রীরামের অমুগমন করিব 1৫১।

সীতরা সহ ধর্মাত্মা ধনুঃপাণিস্ত লক্ষণঃ।
পালরামাস ধর্মকঃ স্থমক্ষেণ সমন্বিতঃ॥৫২॥
পৌরাঃ সর্বে সমাগত্য দ্বিতান্তস্যা বিদূরতঃ।
শক্তা রামং পুরং নেতুং নোচেদ গচ্ছামহে বনং॥
ইতি নিশ্চরমাজ্ঞায় তেষাং রামোহতিবিস্মিতঃ।
নাহং গচ্ছামি নগরমেতে বৈ ক্লেশভাগিনঃ॥ ৫৪॥
ভবিষান্তীতি নিশ্চিত্য স্থমন্তমিদমত্তবীৎ।
ইদানীমেব গচ্ছামঃ স্থমন্ত্র! রথমানয়॥ ৫৫॥
ইত্যাজ্ঞপ্তঃ স্থমক্তোহপি রথং বাহৈরঘোজ্ঞাং।
আরুহ্য রামঃ সীতা চ লক্ষ্মণোহপি যযুক্ত তং ॥৫৬
অধ্যোধ্যাতিমুখং গড়া কিঞ্চিদ্বং ততো যযুঃ।
তেহপি রামহদ্ধৈত্ব প্রাতরুপার ছুঃখিতাঃ॥৫৭॥

। ৫ - । ৫ ০। এরাম তাহাদিগের এইরপ অভিপ্রায় জানির। অতি বিশ্বর সহকারে স্থমন্ত্রকে কহিলেন, স্থমন্ত্র। আমি চতু-র্দাশ বর্ষ পূর্ণ না হইলে কদাচ নগর প্রভ্যাগমন করিব না। এই সকল পুরবাসিগণ আমার নিমিত্ত বুথা ক্লেশ ভোগ করিতেছে, অতএব আমি এইক্ষণে স্থানাস্তরে গমন করিতে ইচ্ছা করিতেছি র্থ আনম্বন কর, স্থমন্ত জীরামের আনেশামুসারে রথ আনম্বন করিয়া বাছ যোজনা করিলেন। শ্রীরাম সীতা ও লক্ষাণ স্থাত্ত আনীতরথে আরোহণ করিয়া প্রস্থান করিলেন। প্রথমত: বনাভিমুবে গমন করিলে পুরবাদিগণ বিঘাচরণ করিবেন, জীরাম এইরপ ভিন্ন করিয়া অযোধ্যাভিমুখে রথ চালন করিতে অহন মতি করিলেন। সুমন্ত্র প্রভুর আদেশাহুদারে কিয়ৎক্ষণ অবোধ্যাভি মুবে রথ চালন করিয়া বনাভিমুবে অশ্বনিগকে ধাবিত করিলেন। পুরবাসিগণ প্রাতঃকালে গাত্রোখানানন্তর শ্রীরাম সীতা ও লক্ষণকে অবলোকন না করিয়া অতিহ:খি-ভাস্ত:কংশু গ্রীরামের রথ নেমি চিহ্নিত প্রদর্শনামুসারে অবো-ধ্যাভিমুৰে প্ৰভাগনন করিলেন এবং অবোধ্যায় আদিয়া প্ৰতি-দিন সীতা ও জীগাৰচক্ৰকে জ্বদৰে খ্যান করত সংসার স্থ

রথনেমিগতং মার্গং পশাস্তত্তে পুরং যবুঃ
ক্লি রামং সদীতং তে ধ্যারস্তত্ত্তু রস্বহম্॥৫৮॥
সুমস্তোহপি রথং শীঘুং নোদরামাদ সাদরং।
ক্ষীতান্ জনপদান্ পশ্যন্ রামঃ দীভাদমন্বিতঃ॥৫৯॥
গঙ্গাতীরং সমাগচ্ছৎ পৃঞ্চিবেরাবিদূরতঃ।
গঙ্গাং দৃষ্ট্য নমস্ক্ত্য স্নাত্বা সানন্দরানসঃ॥ ৬০॥
শিংশপা রক্ষমূলে দ নিষদাদরঘূত্তমঃ।
ততো গুহো জনৈঃ শুজা রামাগমমহোৎসবং॥৬১
স্থায়ং স্থামিনং দৃষ্ট্র হর্ষাৎ ভূর্ণং স্মাপত্ত।
কলানি মধুপুষ্পাদি গৃহীত্বা ভক্তিসংযুক্তঃ। ৬২॥

कलाञ्जलि श्रानान कतिरलन। ८८। ८८। ८७। ८१। ८৮। श्रीताम-চল্ল নানা জনপদ উত্তীৰ্ণ হইয়া সীতা ও লক্ষ্মণ সমভিব্যাহারে শৃঙ্গবের পুর সমিহিত গঙ্গাতীরে উপস্থিত হইলেন। ভাগীরথী দর্শনানস্তর প্রণাম ও স্নান করিয়া শ্রীরামচন্দ্র সানন্দচিত্তে শিংশপা বৃক্ষমূলে উপবেশন করিলেন। অনন্তর শৃক্ষবের পূরা-ধিপতি গুহক লোক মুখে প্রমন্ত্রণ শ্রীরামের আগমনবার্তা শ্রবণানস্তর দর্শ নার্থ পুলকিত হইয়া দেই স্থানে উপস্থিত হই-লেন। চণ্ডালাধিপতি গুহুক পরমভক্তি সহকারে শ্রীরামচরণে নানাবিধ স্থাত্ ফল ও মধুপূলাদি উপহার প্রদান করিয়া ভূতলে দপ্তবৎ পতিত হইলেন; ভক্তবৎসল শ্রীরাম নিমভক্ত শুহককে ভূমি হইতে সত্তর উত্থাপিত করিয়া প্রম্পাদরে আলিগনান্তর কুশল জিজাস। করিলেন। গুহক জীরাম কর্তৃক পৃষ্ট হইয়া কুডাঞ্জলিপুটে কহিলেন, হে ভগবন ৷ অদ্য আমি ও আমার নৈষাদলনা ধন্য হইল, যেহেতু ত্রিলোকবাসি-দিলের অভিহল্লভ আপনার আলিক্ষন লাভ করিলাম, এই সকল রাজ্য সম্পত্তি আপনার নিমিত্ত রক্ষা করিয়াছি, আপনি অধীর্থর হইয়া এই কিন্ধরকে ক্তার্থ ককন। দ্যাময়! নিযাদ নগরে আগমন করিয়া আমার গৃহাদি পবিত্র করুন, আপনার নিমিত্ত চির্দঞ্চিত ফলমূলাদি আনম্মন করিয়াছি গ্রহণ করিয়া **এ**ই मोरमत श्रांत जास्यार व्यक्त करून । ८३। ७० । ७३।

রামস্তাত্রে বিনিক্ষিপ্য দণ্ডবৎপ্রাপ্তদ্ধ বি। গুহুমুস্বাপ্য তং তূর্ণং রাঘ্য: পরিষস্বলে ॥৬ ः॥ সংপৃষ্ঠকুশলো রামং গুহঃ প্রাঞ্জলিরব্রবীৎ। ধন্যোহহমদ্য যে জন্ম নৈষাদং লোকপাবন! ।।৬৪।। বভূব পরমানন্দঃ স্পৃষ্ট্বা কেইঙ্গং রঘূ**ত্তম**। নৈষাদরাক্সমেততে কিন্ধরশ্র রঘূত্তম।।। ৬৫।। ত্ত্বীনং বসমত পালয়ামান্রঘ্দহ !। আগচ্ছ যামো নগরং পাবনং কুরু যে গৃহং ॥৬৬॥ গৃহাণ ফলমূলানি ত্বদর্থং সঞ্চিতানি মে। অনুগৃহ্লীয় ভগবন্! দাসত্তেহহং সুরোক্তম ! ৷৬৭৷৷ রামস্তমাহ সুপ্রীতো বচনং শুণু মে সংখ। ন বেক্ষ্যামি গৃহৎ গ্রামং নববর্ষাণি পঞ্চ ।। ৬৮।। দত্তমনোন নো ভুঞ্জে ফলমূলাদিকিঞ্চন। রাজ্যং মমৈতত্তে সর্ব্বং বৃং সধা মেহতিবল্লভঃ॥৬১ বটক্ষীরং সমানায্য জটামুকুট্যাদরাৎ। ববন্ধ লক্ষ্মণেনাথ সহিতো রঘুনন্দনঃ।। ৭০।।

। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। শ্রীরাম গুহের এইরপ ভক্তি ও প্রণয়সহকৃত বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন, হে সংখ! শ্রবণ কর আমি চতুদিশ বর্ষ মধ্যে গ্রাম বা গৃহে প্রবেশ করিব না, জনাদন্ত ফলমূলাদি ও ভক্ষণ করিব না, তৃমি পরমস্থান্থ রাচ্যাদি ভোগ কর, তাহাতে আমার পরম সস্তোষ হইবে। বেহেতু তৃমি আমার অতি প্রিয়ভমস্থা। ৬৮। ৬৯। অনন্তর শ্রীরামচক্র ও লক্ষণ চণ্ডালাধিপতি গুছ দারা বটক্ষীর আন-য়ন করিয়া জটাম্কুট বন্ধন করিলেন এবং ঐ স্থানে জলমাত্র ভক্ষণ করিয়া রজনীতে লক্ষণ নির্মিত কুশ শ্যাম অযোধ্যা। প্রাসাদস্থিত রত্ন পর্যাক জ্ঞান করিয়া সীতার সহিত শ্রন-

জলমাত্রন্ত সংপ্রাশা সীতয়া সহ রাঘবঃ। আস্তং কুশপর্ণাল্যঃ শয়নং লক্ষণেন হি।।৭১॥ উবাস তত্র নগরপ্রাসাদাত্রে ষথা পুরা। द्र्याभ তত रिवल्हा शर्यक्र हेव मःकृट्छ।। १२॥ ভতো বিদুরে পরিগৃহ্য চাপং

मवागजूनी तथनुः मलकानः।

ক্রিলেন, লক্ষণ ও গুহ ধন্ত্র্কাণ ও তুণীর গ্রহণ করিয়া চতুদ্দিক

ররক রামং পরিতো বিপশ্যন্ গুহেন সার্কং স্ক্রাসনেন।। ৭৩।।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্র সম্বাদে অবোধ্যাকাতে পঞ্মোহধ্যায়ঃ।

অবলোকন করত তাঁহাদিগকে রক্ষা করিতে লাগিলেন । ৭০। : 45 : 92 | 90 |

> ইতি শ্রীমদব্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে প্ৰোধাৰ্কাতে প্ৰমাহব্যায়:।

यर्छो ३ शासः।

ন্ত গুং রামং সমালোক্য গুহঃ সোহশ্রুপরিপ্লুতঃ।
লক্ষণং প্রাছ বিনয়াদ্ভাতঃ! পশাসি রাঘবম্॥।॥
শরানং কুশপটোঘদংস্তরে সীতয়া সহ।
যঃ শেতে স্বর্ণপর্যন্তে সাস্তীর্ণে ভবনোত্তমে॥ ২॥
কৈকেয়ী রামদুঃখন্ত কারণং বিধিনা কৃতা।
মন্তরাবৃদ্ধিনাস্থায় কৈকেয়ী পাপমাচরং॥ ৩॥
তচ্চুণা লক্ষণঃ প্রাছ সংখ! খুণু বচো মম।
কঃ কন্ত হেডুদুঃখন্ত কন্চ হেডুঃ সুখন্য বা॥ ৪॥
স্বপুর্কাজিতকর্মের কারণং সুখদুঃখয়োঃ। ৫॥

স্থপ্য দুঃখপ্য ন কোহপি দাতা পরো দদাতীতি কুরুদ্ধিরেষা। অহং করোমীতি রথাহভিমানঃ স্বকর্মসূত্রগ্রথিতো হি লোকঃ॥ ৬॥

আনন্তর চণ্ডালাধিপতি গুহ জ্ঞীরামকে কুশ-শ্যার শরন দেখির। সজলনরনে ও বিনীতভাবে লক্ষণকে কহিলেন, হে লাতঃ! অবলোকন করিতেছ যিনি ইতিপূর্ব্ধে অযোধ্যাভ্বন-স্থিত মহামূল্য স্থাপথ্যক্ষে শ্রন করিতেন, আদ্য সেই নবদ্ব্ধা-দল্খাম রাম ২ঠিন কুশপত্র সমূহ বিরচিত শ্যার সীভাদেবীর সহিত শ্যন করিতেছেন। হা বিধাতা! কৈকেয়ীকে এই সকল অনব্ধের কারণ করিয়া দিয়াছেন, কিন্তু এবিষ্য়ে একা কৈকেয়ী নিদান নহে, যেহেতু মহুরা তাঁহার বৃদ্ধি বৃত্তিকে আন্যথা ক্রিয়া দিয়াছে। লক্ষ্যা গুহুকের এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন সংখ! শ্রবণ কর, এই জগতে এক ব্যক্তি অপরের সুহৃদ্মিত্রাযু দাসীনদ্বেষামধ্যস্থবাদ্ধবাং।
স্বায়মেবাচরন্ কর্মা তথা তত্র বিভাব্যতে।। ৭ ॥
স্বথং বা যদি বা ছঃখং স্বকর্মবশগো নর:।
যদ্যযদ্যথাগতং তত্তজুক্ত্বা স্বস্থমনা ভবেৎ।। ৮ ॥
ন মে ভোগাগমে বাঞ্চা ন মে ভোগবিবর্জনে।
আগচ্ছত্বথ মাগচ্ছত্বভোগবশগো ভবে॥ ১ ॥

স্থাবের বা ছঃথের কারণ হইতে পারে না; বেহেতু পূর্বজন্ম-ক্লত নিজ কর্মদারা লোকে স্থধ বা ছঃথ ভোগ করিয়া থাকে, অমুক ব্যক্তিমারা আমার স্থথ বা হুঃথ হইতেছে এই প্রকার মনুষাদিগের বুদ্ধিকে কুবুদ্ধি বলিতে হইবে এবং আমি স্বয়ং তৃঃথজনক বা স্থঞ্জনক কার্য্য করিতেছি, এই প্রকার বৃদ্ধিকে অভিমান বলা যায়। যেহেতুক লোক মাত্রেই কশ্মস্তত্ত্বে এথিত রহিয়া:ছ, অর্থাৎ কাহারও কোন কার্য্যে স্বতঃ যেমন স্থারী পুরুষ স্থাসংযুক্তা কাষ্ট প্রভুতা নাই। পুতলীকে স্ত্ত চালন দাগা নানাপ্রকারে স্ত্য করাইয়া থাকে, সেইরূপ পরমেশ্বর কর্মস্থতে আবস্ধ লোকদিগকে নানা কাখ্যে ভ্রমণ করাইতেছেন ; ধেমন লোকেরা নিজকশ্ববশতঃ শক্রতা বা মিক্রতা লাভ করিয়া ধাকে, সুধ হুঃধাদি বিষয়ে সেইরূপ দেখিতে ছইবে অর্থাৎ সুধজনক কার্য্য করিলে সুধ, চঃখজনক করিলে অবশ্যই হৃঃখ হইরা থাকে। অভএব স্বক্ষবশগ লোকেরা যে সমর যাহা উপস্থিত হইবে স্থধ বা ফুঃখ হউক তাহা অবশ্যই সহনীয় বিবেচনা করিয়া স্মৃছচিত্তে ৰছন করিবে ৷১৷২৷৩৷৪৷ ৫ ৷ ৬ ৷ ৭ ৷ ৮ ৷ হে ভাতঃ ! আমার সুৰ ভোগে বা স্থ বিরামে বাঞ্ছা নাই; স্থধ বা হঃধ হউক অবশ্য সছন করিব কদাচ ভোগের বশবতী ছইব মা, ইছা निकात्र जानि त्य, त्य तमत्न त्य कोल यांश इहेर व वाकि যশিন্দেশ চ কালে চ যশাদ্বা যেন কেন বা।
কৃতং শুভাশুভং কর্মা ভোজ্যং তপ্তত্র নান্যথা।১০।
আলং হর্ষবিষাদাভ্যাং শুভাশুভফলোদয়ে।
বিধাত্রা বিহিতং যদ্যত্তদলস্ক্রাং সুরাস্থরৈঃ।। ১১।
সর্বাদা সুখলুংখাভ্যাং নরঃ প্রত্যবক্ষ্যতে।
শরীরং পুণ্যপাপাভ্যামুৎপন্ধং সুখদুংখবং।। ১২।।
স্থাস্থানন্তরং তুংখং তুংখাস্থানন্তরং সুখন্।
স্থাম্যোনন্তরং তুংখং তুংখাসানন্তরং সুখন্।
স্থাম্যো স্থিতং তুংখং তুংখাম্যে স্থিতং সুখন্।
ভ্রমন্যাহন্য সংযুক্তং প্রোচাতে জনপন্ধবং॥১৪
তন্মান্তির্ঘা বিদ্বাংস ইন্টানিন্টোপপতিয়ু।
ন ক্র্যান্ত্র ন মুক্তি সর্বাং মায়েতি ভাবনাং।।১৫।।

যে যে শুভাশুভ কার্য্য করিবে সেই দেশে সেই কালে তাহা হইতে সেই ব্যক্তি মেই সকল শুভাশুভ কর্ম্মের অবশ্যই ফল ভোগ করিবে। অতএব শুভাশুভ ফল স্ইলে হর্য বা বিষাদ করা অনুচিত; বিধাতা যাহা লিখিয়াছেন তাহা দেবতা বা অস্তর কেছই লজ্জন করিতে পারে না। দেছিমাত্রেরই সুধ হুঃ**খ** ভোগ অবশাই হইবে যেছেতু এই শরীর পাপ ও পুণ্যদ্বারা উৎপন্ন ছইয়াছে, স্মৃতবাং এই শরীরাবচ্ছেদে পাপের পরিনাম তুঃখ ও পুণোর পরিনাম ত্রথ হইবে তাহার সন্দেহ কি? ত্র্থ-ভোগানন্তর তুঃধ ভোগ চুঃধভোগানন্তর স্বথভোগ দেহিমাত্তের অবশ্যই ছইয়া থাকে; দিবসাতে যে বজনী সমাগম—রজনী প্রভাতে পুনর্কার দিবদোদর ইহার প্রধান দৃষ্টান্ত হইরাছে। হে ভ্রাতঃ, যে প্রকার জলস্থিত পঙ্কের মধ্যে জল-ও জলমধ্যে পক্ষ এইরূপে পরস্পরের নিয়ত সম্বন্ধ দেখা যায়, সেইরূপ পুখ ত্ঃথেরও নিয়ত সম্বন্ধ অর্থাৎ স্থাধের মধ্যে হুঃখ ও হঃখে মধ্যেও সুধ থাকে, ডুঃধ বহিত সুথ মসুষা দেহে সম্ভব হয় না-বেমন ঐক্তজালিক বিদ্যাদারা ইষ্টানিষ্ট প্রাপ্ত হইলে কাছারও হর্ষ বা বিষাদ হয় না, তদ্রপ পণ্ডিতেরা স্কার্য্য-বশতঃ ইষ্টানিষ্ট প্রাপ্তি হইলে হুট বা মুগ্ধ হন না।৭।৮।৯।১০। ॥১১।১২।১৩।১৪।১৫। গুহুক ও লক্ষাণের এইরপ কথোপকখন

গুহলক্ষণয়ে বিবং ভাষতোরি মলং নভঃ।
বভূব রামঃ সলিলং স্পৃষ্ঠা প্রাতঃসমাহিতঃ ।৷১৬॥
উবাচ শীঘুং সুদৃঢ়াং নাব্যানয় মে সংখ।
শুজা রামসা বচনং নিষাদাবিপতিও হঃ॥১৭॥
স্বয়মেব দৃঢ়াং নাব্যানিয়ায় স্থলক্ষণাং।
স্বামিয়ারুহাতাং নোকা সীতয়া লক্ষণেন চ॥১৮॥
বাহয়ে জ্ঞাতিভিঃ সার্মিয়মেব সমাহিতঃ।
তথেতি রাঘবঃ সীতামারোপা শুভলক্ষণাং॥১৯॥
গুহসা হস্তালম্য স্বয়ং চারুহদচ্যুতঃ।
আায়ুধাদীন্ সমারোপ্য লক্ষণোহপারেরোই চ॥২০
গুহস্তান্থাইয়ামাস জ্ঞাতিভিঃ সহিতঃ স্বয়ং।
গ্রহ্মামধ্যে গতা গঞ্চাং প্রার্থামাস জ্ঞানকী॥২১॥

ছইতে ছইতেই নভোমওল নিশ্বল ছইয়া উঠিল। খ্রীরামচক্র প্রভাত দর্শনে আনন্দিত হইয়া সলিলস্পর্শ করিলেন এবং কছিলেন।—হে সংখ ! শীত্র স্বদৃঢ়নে কা আনয়ন কর, নিধা-দাধিপতি গুছ শ্রীরামের আদেশাসুসারে স্বয়ং স্নৃদৃঢ় শেকিং আনয়ন করিয়া কহিলেন, প্রভো! আপনি এই নৌকায় সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত আরোছণ করুন, আমি স্বয়ং জ্ঞাতি-বর্গের সহিত সমবেত হইরা নেকি। চালন করিব। জীরাম তথাস্তু বলিয়া অত্যে সীভাদেবীকে আরোহণ করাইয়া স্বরং গুহকের ইস্তাবলম্বন পূর্বক নৌকারোহণ করি লেন। অনন্তর লক্ষ্মণ ঐ মৌকরে অক্তাদিরকা করিয়া আবোহণ করিলেন। গুহত জাতিবর্গের সহিত এই নৌকা বাহন আরম্ভ কণিলেন, জানকী ভাগীরখীর মধ্যবর্তিনী হইয়া প্রার্থনা করিতে লাগিলেন, দেবি, ভগবতি, ভাগীরিথি গঙ্গে তেশমাকে নমকার করি. আশমরা বনবাস হইতে নির্ভ হইয়া নানাবিধ ফল প্তেশাপছার দ্বারা তোমার পূজা করিব। কিন্নৎক্ষণ মধ্যে নেকি। ভাগী বিধির পরকুলে উপস্থিত হইন। রাম দীতা ও লক্ষণ নৌকা ছইতে উত্তীণ হইয়া প্রস্থান

দেবি গঙ্গে! নমস্তভ্যং নিরুত্তা বনবাসতঃ। রামেণ সহিতাহহং ত্বাং লক্ষাণেন চপুজয়ে ॥২২॥ ফলপুজ্পোপহারৈশ্চ নানা বলিভিরাদৃতা। ইত্যক্ত্বা পরকুলং তৌ শূনৈরুতীর্যা জগাতুঃ॥২৩॥ গুহোহপি রাঘবং প্রাহ গমিষ্যামি ত্রা সহ। অনুজ্ঞাং দেহি রাজেন্দ্র নোচেৎপ্রাণাংস্ক্যজাম্যহং ख्या रेनसामयहनः खीतामस्यमथाखरीए। চতুদিশসমাঃ স্থিতা দওকে পুনরপ্যহম্॥ ২৫॥ আয়াস্থাম্যুদিতং সত্যং নাস্ত্যং রাম্ভাবিত্ম্। নিবর্ত্তরামাদ গুহং দোহপি কৃচ্ছাদ্যথো গৃহম্। তত্র মেধ্যং মৃগং হত্বা পক্ত্বা হত্বা চ তে ত্রয়ঃ ॥২৭ ভূক্তা রক্ষদলে মুপ্তা মুখ্যাসত তাং নিশাম্। ততো রামস্ত বৈদেহ্যা লক্ষণেন সমস্বিতঃ।।২৮॥

कविद्याम । ১७ । ১१ । ১৮ । ১৯ । २० । २১ । २२ । २० । গুহুক কিঞ্চিৎ অনুগ্ৰমন করিয়া কহিলেন, ছে সংখ! আমি আপনার অনুগমন করিব, ছে রাজেন্দ্র! অনুমতি করুন, নচেৎ প্রাণতাাগ করিব। জীরাম কছিলেন, হে সথে। তৃমি ছুঃখিত হইও না; চতুর্দশ বর্ষ বন বাসাস্তে প্নর্কার ভোমার এই স্থানেই প্রত্যাগমন করিব, ইহা সত্য কর্ছিলাম জীরামের যাক্য কখন মিধ্যা হইবে না। অনন্তর গুছককে আলিজন ক্রিয়া বিদায় করিলেন চণ্ডালরাজ অতি কফে নিজগৃছে প্রত্যাগ্যমন করিলেন গুছক গ্রমন করিলে, জীরাম সেই স্থানে মৃগরাহত মৃগমাংস পাক করিয়া দেব ও পিতৃ লোকের উদ্দেশে প্রদানানন্তর নিবেদিতাবশিষ্ট মাংস পত্নী ও অরু-জের সহিত ভোজন করিলেন, এবং ব্রহ্মসূলে শার্ম করিয়া রজনী অতিবাহিত করিলেন, প্রাতঃকালে গাত্রোত্থানান-ন্তর সীতা ও লক্ষণের সহিত ভরম্বাজাল্যমে উপস্থিত হইয়া

ভিরদ্বাজাশ্রমপদং গড়া বহিরুপস্থিকঃ!। তত্ত্রৈকং বটুকং দৃষ্ট্ব। রামঃ প্রাহ চ হে বটো ॥ ২৯ রামো দাশর্থিঃ সীতালক্ষণাভ্যাৎ সম্ব্রিতঃ। আন্তে বহিবনস্তেভিছাচাতাং মুনিসল্লিধৌ ॥ ৩০ তচ্ছ্রা সহসা গতা পাদরোঃ পতিতো মুনেঃ। স্বামিন্রামঃ সমাগত্য বনাদ্হিরবস্থিতঃ ॥ ৩১॥ 🕆 সভার্যঃ সামুক্তঃ শ্রীমানাহ মাং দেবসন্মিভঃ। ভরত্বাজার মুনয়ে জ্ঞাপয়স্ব যথোচিত্য। তচ্ছ্তা সহসোপায় ভরদ্বাক্তা মুনীশ্বঃ। ইত্যুক্ত্রালিঙ্গ্য তং ভক্তং সমাশ্বাস্য পুনঃপুনঃ ॥ ২৬ গৃহীত্বাহ্র্য্য চ পাদ্যঞ্চ রামসামীপ্রমায্যো ॥ ৩৩॥

> সমীপবন্ত্রী এক জন বটুকে কহিলেন। হে বটো! তুমি গমন করিয়া মহর্যিকে বিজ্ঞাপন কর, যে সীভা ও লক্ষ্যের সহিত প্রীরামচন্দ্র উপস্থিত হইগা বহিন্দেশে দগুরিমান আছেন |২৪।২৫।২৬।২৭ ২৮।২৯:৩০। অনন্তর বটু মহর্ষি সন্নিধানে গমন করিয়া কছিলেন হে মহর্ষে! সীতা ও লক্ষাণের সহিত জীরামচন্দ্র বহিদেশে উপস্থিত হইয়া আপনাকে বিজ্ঞাপন করিবার জন্য আমাকে আদেশ করিয়া-ছেন। মছর্ষি রাম নাম শ্রবণমাত্র পুলকিত ছইয়া পাদ্য অহা গ্রহণপূর্বক রাম সন্নিধানে উপস্থিত হইলেন। অনন্তর জীরামকে যথাবিধি পূজা করিয়া কছিলেন। হে রাজীব-লোচন রাম! আপনারা সকলে আগমন করিয়া চরণ ধূলি-দারা আমার পর্ণশালা পবিত্র কন্তন, অনন্তর শ্রীরাম সীতা ও লক্ষণের সহিত ভরম্বাজের পর্ণশালায় প্রবেশ করিলেন। মহর্ষি ভরদাজ পুনর্বার গেই স্থানে তাঁহাদিগের পূজাকর-ণানত্তর আতিথা করিয়া কহিলেন, হে রাম! আদ্য আমি আপনার দর্শনে তপঃসিদ্ধি লাভ করিলাম। হে ভগবন্! আমি আপনার অনুগ্রহে ভূত ভবিষ্যৎ সকলই জানিতে পারি সুংরাং, আপনার বর্তমান ও ভবিষ্যাদবস্থা আমার অবিদিত নছে। আপনি পরমাঝা ব্রক্ষার প্রার্থনারু-गादि मामा मन्याक्रण धात्रण कतिया व्यवणीर्ग हरेब्राह्म, এवर

দৃষ্ট্র রামং যথান্যারং পুজরিতা সলক্ষণম্। আহ মে পর্ণশালাং ভো রাম ! রাজীবলোচন !। আগদ্ভ পাদরজ্ঞ পুনীহি রঘুনন্দন!। উত্যুক্তে । তিজমানীয় সীতরা সহ রাঘবে। ।। ৩৫ ॥ ভক্তা পুনঃ পূল্বিড়া চকারাতিথ্যমূত্রমম। অদাহিং তপসঃ পারং গতে হিন্মি তব সঞ্চরাৎ ॥ ক্তাতং রাম ! তবোদন্তং ভূতং চাগামিকং চ য় । জানামি ত্বাং পরাত্মানং মাষ্য্রা কার্য্যমান্ত্রম্ ॥৩৭ যদর্থমবভীর্ণোহসি প্রার্থিতো ব্রহ্মণা পুরা। यमर्थर वनवामरस्य यहकतियानि देव পুরঃ । ৩৮ ।। জানামি জ্ঞানদৃষ্ট্যাইহং জাতয়া স্বদুপাসনাৎ। ইতঃ পরং ত্বাং কি**ং বক্ষে ক্তার্থো**হহংরঘূত্তম॥৬৯ যন্ত্রাং পশ্যামি কাকুৎস্থং পুরুষং প্রকৃতেঃ পরম্। রাম**ন্তমভিবাদ্যাহ সীতালক্ষণসংযুতঃ** ॥ ৪০ ॥ অনুগ্রাস্থারা বন্ধান ! বয়ং ক্ষতিয়বান্ধবাঃ। ইতি সম্ভাষ্যতেহন্যোহন্যমুধিত্বা মুনিসন্নিধৌ ॥ ৪১॥

প্রাতরুখায় য়য়ৢনায়ুভীর্য য়ুনিদারকৈঃ।
কুতাপ্লবেন মুনিনা দৃষ্টমার্গেণ রাঘবং ॥ ৪২ ॥
প্রথমে চিত্রকুটাজিং বাল্মীকের্যত্ত চাশ্রমঃ।
গড়া রামোহধ বাল্মীকেরাশ্রমং ঋষিসংকুলম ।
নানায়গিছিজাকীর্ণং নিত্যপুপ্রফলাকুলম্।
তত্ত দৃষ্ধা সমাসীনং বাল্মীকিং মুনিসভ্রমম্।। ৪৪
ননাম শিরসা রামো লক্ষ্মণেন চ সীতরা।
দৃষ্ধা রামং রমানাধং বাল্মীকিলোকি সুন্দরম্।।৪৫
জানকীলক্ষ্মণোপেতং জ্বীয়ুকুটমপ্তিত্য্।
কন্দর্পসদৃশাকারং ক্যনীয়ায়ুজেক্ষণম্। ৪৬ ॥
দৃষ্টেব্রসহদোভাই বিশ্বয়ানিমিষেক্ষণঃ।
আলিক্ষ্য পর্মানন্দং রামং হ্র্যাশ্রুচেলাচনঃ॥ ৪৭।
প্রুরিড়া জ্বৎপ্রজ্য ভ্রুয়াইঘ্যানিভিরাদৃতঃ।
কল্মুলৈঃ সুমধুরৈর্ভোজ্যিড়া চ লালিতঃ।। ৪৮॥

। ৪১। পরদিন প্রাতঃকালে গাত্রোত্থানানন্তর মুনি বালকগণের সহিত যমুনা পার হইরা প্রাতঃস্কলাত ভরদ্ধান্ধ মুনিকর্জক দর্শিত পথ অবলয়ন পূর্বক মহর্ষি বাল্মীকির ভপোবন শোভিত চিত্রকূটে গমন করিলেন। অনন্তর রাম দীতা ও লক্ষ্মণ মহর্ষি দংকুল—সততঃ পুত্পফশাদি সমাকীর্ণ এবং নানাবিধ মৃগ ও দ্বিজাতিবর্গ কর্জক পরিবেইটিত তপোবনে উপস্থিত হইরা বাল্মীকিকে প্রণাম করিলেন। মহাতপা বাল্মীকি কন্দর্প সদৃশ স্থানর ও জটামুকুট মণ্ডিত রাজীবলোচন রামকে জানকী ও লক্ষ্মণের সহিত সমাগত দেখিয়াবিশ্যর সহকারে সহসা গাত্রোখানানন্তর সহবালিজন করিয়াপরম ভক্তিও আদর পূর্বক পাদ্যার্ঘদারা পূজা করিলেন, এবং স্মধুর ফলমুলাদি আনয়ন করিয়া তাঁহাদিগাকে ভোজন করাইলেন। ৪২।৪৩।৪৪।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮। অনন্তর

রাঘবং প্রাঞ্জলিঃ প্রাহ্ বাল্যাকিং নিয়্রাস্থিতঃ।
পিতৃরাজ্ঞাং পুরক্ত্য দশুকানাগতা বয়ম্।। ৪৯॥
ভবত্যে যদি জানস্তি কিং বক্ষ্যামোইত্রকারণম্।

যত্র মে সুখবাসায় ভবেৎ স্থানং বদস্থ তৎ।। ৫০॥
সীতয়া সহিতঃ কালং কিঞ্জিত্ত্র নয়ামাহম্।
ইত্যুক্তো রাঘবেনাসো মুনিঃ সম্মিতমন্ত্রবীৎ।। ৫১
গ্রমেব সর্মলোকানাং নিবাসসদনানি হি॥ ৫২॥
তবাপি সর্বস্তুতানি নিবাসসদনানি হি॥ ৫২॥
তবং সাধারণং স্থানমুক্তং তে রঘুনন্দন!।
সীতয়া সহিত্যুক্তি বিশেষং পুচ্ছুত্ত্বব।। ৫৩॥
তদ্বন্ধামি রঘুক্রেষ্ঠ। যতে নিয়তমন্দিরম্।
শান্তানাং সমদ্ধীনামদেক্ট্রণাং চ জন্তুমু।
ভামেব ভজতাং নিত্যং ক্লমং তেইধিমন্দিরম্।।৫৪
ধর্মাধর্মান্ পরিত্যজ্য ভামেব ভজতোহমিশম্।
সীতয়া সহ তে রাম! তিয়া ক্লং স্থ্যান্দিরম্।। ৫৫

শ্রীরাম রুতাঞ্জলি ছইয়া কহিলেন, হে মহর্ষে আপনি তপা
প্রভাবে সকলই বিদিত হইয়া থাকিবেন যে, আসরা পিতৃ
আজ্ঞা পালনার্থ দশুকারণ্যে আগমন করিয়াছি ও অধিক
আপনাকে কি জানাইব। এই ক্ষণে আমাদিগের স্থাবাস
যোগ্য স্থান আদেশ করুম, যে স্থানে জানকী সমভিব্যাহারে
কিঞ্চিৎকাল বাস করিতে পারি। বাল্মীকি 'শ্রীরামের বাক্য
শ্রবণানন্তর সহাস্য বদনে কহিলেন, হে রঘুশ্রেষ্ঠ তুমি সর্বন্দাকের আবাস স্থান এবং সর্ব্বভূত্বাণ তোমার আবাসস্থান
এইরূপ তোমার সাধারণ বাসস্থান কহিলাম। কিন্তু সীতা
সহ বস্তি স্থনে বিশেষ করিয়া কহিতেছি শ্রবণ করুম। ৪৯।
1৫০।৫১।৫২।৫০। হে রাম। যে ব্যক্তি লোভ শ্রা

ত্বনাস্ত্রজ্ঞাপকো যন্ত তামের শরণং গতঃ।
নিত্র ক্রো নিস্পৃহস্তদ্য হৃদয়ং তে সুমন্দিরম্। ৫৬
নিরহঙ্কারিণঃ শান্তা যে রাগদ্বেষর জিতাঃ।
সমলোকীশাকণকান্তেষাং তে হৃদয়ং গৃহম্॥ ৫৭।
ত্বির দত্তমনোরুদ্ধির্যঃ সন্তুক্তঃ সদা ভবেৎ।
ত্বির সন্ত্যক্তকর্মা যন্তব্যন্তো শুভং গৃহম্॥ ৫৮।
যোন দেক্টাপ্রিয়ং প্রাপ্য প্রিয়ং প্রাপ্যন হৃষ্যতি
সর্ববং মায়েতি নিশ্চিত্য ত্বাং ভক্তেত্রমনো গৃহম্।
ষড়্ভাবাদিবিকারান্ যোদেহে পশ্যতি নাত্মনি।
স্কুন্ত্ট্ সুখং ভয়ং ছঃখং প্রাণ্রুদ্ধোনি রীক্ষতে।
সংসারধর্মেনি মুক্তিন্ত্রদ্য তে মানসং গৃহম্। ৬১

এবং সরণাগত হইয়া ভোমার মন্ত্র জপ করে, ভাছার মন ভোমাদিগের নিয়ত বাসস্থান এবং শান্তি গুণাবলঘী নির-হক্ষার ও রাগদ্বেষ রহিত হইরা যে, ব্যক্তি লোষ্ট্র কাঞ্চ ও প্রস্তুরে সমজ্ঞান করে, তাহার মন তোমাদিগের বাসস্থান 🗆 হে রঘুনন্দন! যে ব্যক্তি ভোমাভে মন বুদ্ধি ও কৰ্মফল অপ্ৰ করিয়া সর্বাদা সম্ভষ্ট থাকে ভাছার মন ও ভোমাদিগের বাদ স্থান, যে ব্যক্তি অপ্রিয় বস্তুতে দ্বেষ করে না প্রিয় বঞ লাভ করিয়াও হর্ষিত হয় না এবং জগতকে মায়া কিশা-অলীক বিবেচনা করিয়া ভোমাকে ভজনা করে জাঁচার হৃদয় ভোমাদিগের বাসস্থান এবং যে ব্যক্তি জন্ম সক্তাবিনাশ হ্রাস রন্ধি ওবৈপরিত্য এই বডবিধ বিকার আত্মাতে কম্পান না করিয়া নিজ দেহ ধর্ম বলিয়া স্থির করিয়াছে এবং ক্ষ্যা তৃষ্ণা সুথভর ও চুংখ প্রভৃতি গুণকে প্রাণ ও বুদ্ধি এই উভ-য়ের ধর্ম বিবেচনা করিয়া পাপ পুণাাদি রূপ সংসার ধর্ম পরিত্যাপা করিয়াছে তাহার মানস তোমাদিণের বাসস্থান हि जगमीश्वर! याद्यात्रा मर्क्सवराणी अवश् व्यवस्त्र में हिजमा-স্থাপ ও নিলেপি এবং অনুষয় প্রাণময় বিজ্ঞানময় মনোময় আনন্দময় স্বরূপ নিভ্য স্থানে অবস্থিত পরমাত্মাকে তোমা পশ্যন্তি যে সর্ব্বগৃহাশয়স্থং
ত্বাং চিদৃনং সত্যমনন্তমেকং।
অলেপকং সর্ব্বগতং বরেগাং
তেবাং হৃদ্দ্রে সহ সীতয়া বস ॥৬২॥
নিরন্তরাত্যাসদৃঢ়ীক্বতাত্মনাং
ত্বপাদসেবাপথিনির্ছিতামাং।
ত্বামকীর্ত্তা হতকল্মবাগাং
সীতাসমে তস্য গৃহং হৃদ্দ্রে ॥৬৩॥

রাম ! ত্বস্ত্রামমহিমা বর্ণ্যতে কেন বা কথং।

যৎপ্রভাবদিহং রাম ! ব্রহ্মর্যিত্বমবাপ্তবান্ ॥ ৯৪॥

অহং পুরা কিরাতেরু কিরাতেঃ সহ বর্দ্ধিতঃ।

ক্রম্মাত্রদিকত্বং মে শুদ্রাচাররতঃ সদা ॥৬৫॥

শ্রদ্রায়াং বহবঃ পুজা উৎপত্না মেহজিতাত্মনঃ।

তত্তেলারৈক্ত সঙ্গ্যা চোরহহ্মতবং পুরা ॥৬৬॥

হটতে অভিন্ন জ্ঞান করিয়া থাকে তাহাদিগোর হদর
পদ্মে তুমি সীতার সহিত পরম স্থে বাস কর, যাহার। ধ্যানাভ্যাস করিয়া ভোমাতে মন দৃত্তর নিয়োজিত করিয়া ভোমারই পদসেবানুষ্ঠানে সতত রত আছে এবং তোমার নাম
কীর্ত্তন করিয়া সর্ব্ব পাপ হইতে মুক্তি হইয়াছে তাহাদিগোর হৃদয়ে সীতার সহিত বাস কর। ৬৩। হে
রাম! ভোমার নামের অপার মহিমা—কেহ বর্ণন করিতে
পারে না। তোমার নাম প্রভাবে আমি মহর্ষি হইয়াছি।
পূর্ব্বকালে কিরাভাধিষ্ঠত দেশে রাহ্মণকুলে জন্মগ্রহণ করিয়া
কিরাভ বালকগণের সহিত পরিবর্দ্ধিত হইয়াছিলাম; কালক্রেমে শুদ্রাগত্তে আমার প্রসে কতিপর সন্তান উৎপন্ন হইল।
অনত্যে ভাহাদিগের উদর পোষণার্থ চেরিগণের সহিত মিলিড
হইয়া চেরিগ রব্ধি আরম্ভ করিলাম; ৬৬। সর্ব্বদা ধ্যুর্ব্বান

ধয়ুর্বাণধরো নিত্যং জীবানামন্তকোপমঃ।

একদা মুনয়ঃ সপ্ত দৃষ্ট্য মহতি কাননে ॥৬৭॥

সাক্ষামায়া প্রকাশস্তো জ্বলনার্কসমপ্রভাঃ।

তানম্বধাবং লোভেন তেষাং সর্বাপরিজ্বনান্॥৬৮॥

এইীতুকামস্তরাহং তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি চাক্রবম্।

দৃষ্ট্যমাং মুনয়োহপুজ্ব্ কিমায়ানি বিজ্ঞাধম!॥৬৯

অহং তানক্রবং কিঞ্চিদাদাতুং মুনিসন্ত্রমাঃ।

পুক্রদারাদয়ঃ সন্তি বহবো মে বুভুক্ষিতাঃ॥৭০॥

ধারণ পূর্বক নানা পশুপক্ষীদিগের হিংদা করা আমার এক মাত্র वावमात्र इटेन । এकना मश्त्रवा मत्या स्र्धात्रि मनुभ दननीला-মান ও তেজঃপুঞ্জ শরীর বিশিষ্ট সপ্তর্বি দর্শন করিয়া তাঁহা-দিগের যৎকিঞিৎ স্থলমূল্য পরিচ্ছদ গ্রহণাভিলাষে অনুগমন क्रिया উট্ড:श्रद 'िर्छ जिर्छ' এই विमया वाय्यात भन क्रियाम, মুনিগণ আমাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, রে দ্বিজাধম ! কি ছেতু তুমি অনুগমন করিতেছ ? ডৎকালে উত্তর করিলাম—আমি বছকুটুখী ও দরিদ্র, আমার স্ত্রী পুলাদি অলাভাবে কুধার্ত হইয়াছে ভাহা-দিগের উদর পোষণার্থ আমি এই গিরিকাননমধ্যে দস্তুবৃত্তি করিরা ধন গ্রহণ করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি। একণে পরিচ্ছদা-প্রবৃণাশ্বে ভোমাদিগের অনুগ্যন ক্রিভেছি। অন্তর সুনি-গণ আমাকে কহিলেন, রে নরাধম! ভূমি গৃহে গমন করিয়া স্ত্রী পুত্রাদিকে জিজ্ঞানা কর যে, ''আমি তোমাদিগের উদর পোষণার্থ পাপ করিভেছি—তোমরা ভাগার অংশভাগী হইবে— কি আমি একাকী অনন্তকালের জন্য নিরয়গামী হইব ? রে মুর্থ ! তুমি যাবৎকালপর্যান্ত এই বাকোর উত্তর গ্রহণ করিরা না আসিবে তাবংকাল আমরা এম্বানে তোমার অপেকা করিব। অনস্তর মুনিবাকো বিশ্বস্ত হইয়া গৃহে গমনপূর্ব্বক পরিবারগণকে মুনিবাক্যাত্মপারে জিজাসঃ করিলাম্ তাহারা উত্তর করিল বে 'ভূমি গৃহস্বামী—আমরা বংক্তপাপ পুণ্যের অংশভাগী ক্রথনই নতে, বেহেতু আমরা প্রতিপাল্য--ভোমার উপার্জিভ ধনবারা আমরা অবশা মুপভোগ করিব' ৷ ৩৭ ৷ ৩৮ ৷ ৯৬ ৷ তেবাং সংরক্ষণার্থার চরামি গিরিকাননে।
ততো মামূচুরব্যগ্রাঃ পৃচ্ছ গত্বা কুটুম্বকম্ ॥৭১॥
যো যো ময়া প্রতিদিনং ক্রিয়তে পাপসঞ্চয়ঃ।
যূরং তদ্তাগিনঃ কিম্বা নেতি বেতি পৃথক্ পৃথক্ ॥৭২
বয়ং স্থাস্যামহে তাবদাগমিষ্যাসি নিশ্চয়ঃ।
তথেত্যুক্ত্বা গৃহং গত্বা মুনিভির্যদুদীরিতম্ ॥৭৬॥
স্থাপুচ্ছং পুঁল্রদারাদীন তৈরুক্তোহহং রঘুদ্ভম।
পাপং তবৈব তৎসর্বিং বয়ং তু কলভাগিনঃ ॥৭৪॥
তচ্ছুত্বা জাতনির্বেদো বিচার্য্য পুনরাগমং।
মুনিমাং দর্শনাদেব শুদ্ধান্তঃকরণোহমবং।
যম্মাদীন পরিত্যক্ষ্য দশুবৎপতিতোহম্মাহং॥৭৬॥
রক্ষধং মাং মুনিশ্রেষ্ঠা গচ্ছস্তং নিরয়ার্ণবং।
ইত্যুগ্রে পতিতং দৃষ্ট্য মামূচুর্য্য নিসন্তমাঃ ॥৭৭॥

উত্তিষ্ঠোতিষ্ঠ ভত্তং তে সকলঃ সৎসমাগমঃ।
উপদেক্ষ্যামহে ভূভাং কিঞ্চিতেনৈব মোক্ষ্যমে।
পরস্পারং সমালোচ্য দুর তোহয়ং দ্বিজাধমঃ॥৭৮॥
উপেক্ষ্য এব সদ্রতিস্তথাহিপি শরণং গতঃ।
রক্ষণীয়ঃ প্রয়ত্ত্বন মোক্ষমার্গোপদেশভঃ॥৭৯॥
ইত্যুক্ত্বা রাম তে নাম ব্যতক্ষেক্ষরপূর্বকং।
একাগ্রমনসাত্রৈব মরেভি জপ সর্কান ॥৮০॥
জাগচ্ছামঃ পুনর্যাবভাবনুক্তং সলা জপ।
ইত্যুক্ত্বা প্রয়েয়্ব সর্বের মুলারে দিব্যদর্শনাঃ॥৮১॥
অহং মথোপদিষ্টং তৈন্তথাহকরবমঞ্জনা।
জপল্লেকাগ্রমনসা বাহাং বিক্ষ্তবানহম্॥৮২॥
এবং বছতিথে কালে গতে নিশ্চলক্ষিণঃ।
সর্বসঞ্চবিহীনস্য বল্লীকোহভূদ্মমোপরি॥৮৩॥

নিশাকণ বাক্য জাবণ করিয়া অতি তৃঃথিতান্তঃকরণে মুনিগণ দর্শিনে পুনঃপ্রত্যাগমন করিবা মাত্র তাঁহাদিগৈর দিবারূপ-দর্শনে শুক্ষান্তঃকরণ ছইয়া ধরুর্বাণ পরিত্যাগপূর্বক সেই মহাপ্রের চরণে পতিত ইইলাম এবং বিনয়গহকারে কহি লাম, হে মহর্ষিগণ! আপনারা আমাকে অপার নরকার্থ ইইতে পরিত্রাণ করন। মছ্মিগিণ আমাকে অপার নরকার্থ ইইতে পরিত্রাণ করন। মছ্মিগিণ আমাকে মরণাগত দেখিয়া কহিলেন, গাজোখান কর—তোমার মঙ্গল ইইবে—সজ্জনসংস্প অবস্তুই স্ফল ইইয়া থাকে। হে বৎশ! আমরা তোমাকে কিঞ্জিৎ উপদেশ প্রদান করিব, তন্ধারা পাপু ইইতে মুক্ত ইইবে। অনন্তর মহন্ধিগণ পরম্পর মুখাবলোকন করিয়া কথোপকথন করিছে লাগিলেন, যে এই ব্রাহ্মণাধ্য অতিত্র ত্ত—সম্ভব্যক্তি-দিপের নিতান্ত মুণার পাত্র—কিন্তু শ্বণাপ্রদেশ হারা ইহাকে রক্ষা করিতে হইবে। ৭৫।

। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। হে রাম ! অনস্তর মহবির্গণ আমাকে তোমার নামাক্ষর বিপর্যার করিরা জপ করিতে অসুমতি করিরা করিরা করিলে—যে কালপর্যান্ত আমরা এক্সানে প্নঃপ্রত্যাগমন না করিব, তাবৎকাল তুমি এই মরাশব্দ সতত জপ করিবে, দিবা দর্শন ঋষিগণ আমাকে এইরূপ আদেশ করিরা গমন করিলেন। আমিও বাহাজ্ঞান রহিত হইরা মহর্ষির্গণের উপ-দেশামুরূপ জপ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম।৮০।৮১।৮২। এই প্রকারে বহুকাল অতীত হইলে আমার নিঃদল্ল ও নিক্ষণ দেহের উপবিভাগে রহৎ বল্লীক উৎপত্ন ছইল, ক্রমশঃ যুগ্দহ্র অতীত হইলে ঋষিগণ সেই স্থানে প্রক্রপন্থিত হইরা, বংস! গাজোখান কর, এই শন্দোচারণ করিরা আমাকে আহ্বান করিলেন। অনস্তর স্থাদেব নীহার হইতে নির্গত হইরা যেরূপ স্থেকাশিত হন আমিও তক্তপ ঋষিগণের প্রশাস্ত

ততো যুগদহস্রান্তে ঋষয়ঃ পুনরাগমন্।

মামুচুর্নিয়ুমম্বতি তচ্চুত্বা তুর্নমূপিতঃ ॥৮৪॥

বল্মীকার্মির্জন্টাহং নীহারাদিব ভাক্ষরঃ।

মমাপ্যান্থর্মুনিগণা বাল্মীকিন্তং মুনীশ্ব ॥৮৫॥

বল্মীকাৎ সম্ভবো যম্মাৎ তিদ্বীয়ং জমাতেইভবৎ।

ইতুক্ত্বো তে যুর্দিব্যগতিং র্যুকুলোতম ॥৮৬॥

অহং তে রামনামশ্চ প্রভাবাদীদৃশোইভবম্।

অদ্য সাক্ষাৎপ্রপশ্যামি স্পীতং লক্ষ্মণেন চ ॥৮৭

রামং রাজীবপত্রাক্ষং ত্বামুক্তো নাত্র সংশয়ঃ।

আগচ্ছ রাম! ভদ্রং তে স্থলং বৈদর্শয়াম্যুহং ॥৮৮

ভানাকে দেখিয়া কহিলেন, মহর্ষে! যেহেতু বলীক হইতে োমার পুনর্জন হইল, অতএব অদ্যপ্রভৃতি ভোমার বালীকি এই দার্থক নাম হইল, মহর্ষিগণ আমাকে এইরপ আদেশ করিয়া আকাশমার্দে গমন করিলেন। হে রাম! আমি ভোমারই রাম নাম প্রভাবে ঈদৃশাবস্থা প্রাপ্ত হইয়াছি, সে বাহা হউক অদ্য দীতা ও লক্ষণের সহিত ভোমাকে প্রত্যক্ষ করিয়া নিশ্চয়ই নজিলাভ করিলাম। হে দাশরুগে! এয়ানে আগমন কর, ভোমার মক্ষল হইবে। আমি ভোমার মনাভীই বাদস্থান প্রদান করিছে। বাল্মীকি এই দকল বিনয় বাক্যমার। প্রীরামের সম্বোধে পাদন করিয়া শিব্যগণ ও লক্ষ্মণ সম্বভিন্যাহারে ভাগী-রথীও পর্ব্বত উভয়ের মধ্যভূমিতে গমন করিলেন এবং লক্ষ্মণের অভিপ্রারাত্মশার মহর্ষি বাল্মীকি সেই স্থানে পর্বত নিবাসী ভিল্ল ভাতিমারা একটা পর্ণশালা ও পূর্ব্ব পশ্চম বিত্তীর্ণ একটা বাস ভবন এবং উত্তর দক্ষিণ বিত্তীর্ণ অপর বাস ভবন একটা প্রস্তুত করাইলেন, দেবেপেয় প্রীরাম স্কানকী ওলক্ষ্মণের সহিত সেই

এবমুক্ত্বা মুনিং শ্রীমালক্ষণেন সমস্বিতঃ।
শিষ্যৈং পরিরতো গড়া মধ্যে পর্বভগক্ষােঃ॥৮৯॥
তত্ত্ব শালাং স্থবিস্তীর্ণাং কারয়ামান বাসভুঃ!
প্রাক্পশ্চিমং দক্ষিণােদক শোক্তনং মন্দিরদ্বয়ং॥
জানক্যা সহিতো রামো লক্ষণেন সমস্বিতঃ।
তত্ত্ব তে দেবসদৃশা হ্যবসন ভবনোত্তমে॥৯১॥

বাল্মীকিনা তত্ত্ব স্বপুদ্ধিতোহয়ং
রামঃ সদীতঃ দহ লক্ষণেন।
দেবৈৰ্মুনীক্ষৈঃ দহিতো মুদান্তে
স্বৰ্গে যথা দেবপ্ৰতিঃ দশ্চ্যা ॥১২॥

ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে
অব্যোধ্যাকাতে যতেগাহধ্যায়ঃ।

ভবনে বাস করিতে লাগিলেন ৷ ৮৩ | ৮৪ |৮৫ |৮৬ |৮৭ |৮৮ |৮৯ ৷
১০ ৷১১ | দেবরাজ শেরপ স্বর্গধামে শচী ও দেবগণের সহিত বাস
করেন শ্রীরামচন্দ্র বালীকি কর্তৃক পূজিত হইরা সীতা লক্ষ্মণ ও
ম্নিগণ সমভিব্যাহারে দেই রূপে অবৃদ্ধিত করিতে লাগিলেন
। ৯২ ৷

रेडि वीमनशाक्षतामात्रत उमामरहत्रतमत्राटन व्यवसामाकात्व वटहाश्यामः।

मश्रुरमा ३ था सि ।

সুমস্তোহপি তদাহযোধ্যাং দিনান্তে প্রবিবেশ হ।
বিস্তেণ মুখমাচছাদ্য বাষ্পাকুলিতলোচনঃ॥ ১॥
বহিরের রথং স্থাপ্য রাজানং দ্রফী মাযযোঁ।
জয়শব্দেন রাজানং স্তত্তা তং প্রাণনাম হ॥ ২॥
ততো রাজা নমস্তং তং সুমস্তং বিদ্ধলোহত্তবীৎ।
সুমস্ত ! রামঃ কুত্রান্তে সীতয়া লক্ষণেন চ॥ ৩॥
কুত্র ত্যক্তস্ত্রয়া রামঃ কিং মাং পাপিনমত্রবীৎ।
দীতা বা লক্ষণো বাপি নির্দিয়ং মাং কিমত্রবীৎ॥
হা রাম ! হা গুণনিধে ! হা সীতে ! প্রিয়বাদিনি ।
দুংখার্গবে নিময়ং মাং ত্রিয়মাণং ন পশ্যদি॥।।

বিলপ্যিবং চিরং রাজা নিমশ্যো দুংখসাগরে।
এবং মন্ত্রী রুদস্তং তং প্রাঞ্জলির্ব্রাক্যমন্ত্রবীৎ।।৬'
রামঃ সীতা চ সোমিত্রির্ময়া নীতা রথেন তে।
শৃক্ষিবেরপুরাভ্যাসে গঙ্গাকুলে ব্যবস্থিতাঃ।।৭।।
গুহেন কিঞ্চিলানীতং কলমূলাদিকং চ যৎ।
স্পৃষ্ট্রী হস্তেন সম্প্রীত্যা নাগ্রহীদ্বিসমন্ত্র্ক তৎ।।৮।।
বটক্ষীরং সমানাযা গুহেন রম্মুনন্দনঃ।
ক্রটায়ুকুটমাবধ্য মামাহ নূপতে। স্বয়ম্।।৯।।
সুমন্ত্র! ক্রহি রাজানং শোকস্থেইস্ক ন মৎকুতে।
সাকেতাদধিকং সৌধ্যং বিপিনে নোভবিন্যতি।।১০

এদিকে সন্ধ্যাসমন্ত্র রোক্ষণ্যমান স্থমন্ত্র বস্ত্রাঞ্চলঘারা মুথাচ্ছাদন করিয়া বাল্পাকুলিত লোচনে অযোধ্যানগরে প্রবেশ
করিলেন। অনস্তর বহির্দেশে রথ রক্ষা করিবা রাজদর্শনার্থ
অভঃপুরমধ্যে গমন করিলেন। রাজ ভবন প্রবেশানস্তর জয়
শব্দ উচ্চারণ করিয়া রাজাকে প্রণাম করিলেন। রাজা দশারথ
প্রণত স্থমন্ত্রকে অবলোকন করিয়া বিহ্নলাস্তঃকরণে কহিলেন,
হে স্থমন্ত্র। শ্রীরাম সীতা ও লক্ষণ কোথার আছেন, কোন বনে
বা ভাহাদিগকে পরিত্যাগা করিলে? শ্রীরামচক্র প্রভৃতি এই
মহাপাত্তী পিতাকে কি বলিয়াছেন ? রাজা এই কথা বলিতে
বলিতে হা রাম! হা গুণনিধে! হা প্রিয়বাদিনি সীতে। আমি
হংখাণবে নিমগ্র হইয়া শ্রিয়মাণ হইয়াছি ভোমরা একবার অবলোকন কর, এই প্রকার বছ বিলাপ করিতে আরম্ভ করিলেন।
স্থমন্ত্র কৃত্যঞ্জনি হইয়া কহিলেন, মহারাজ! অযোধ্যা হইতে
রথ চালা করিয়া শৃক্ষবের নগর স্থাপবর্তী গ্লাতীরে উপস্থিত

হইরাছিলাম, সেই স্থানে শ্রীরাম সীতা ও লক্ষণ রথ হইতে অবতরণ করিরা বিশ্রাম করিছে আরম্ভ করিলেন, ঐ সমর চণ্ডালাধিপতি গুহক ফলম্লাদি আনমন করিয়া পরম ভক্তিসহকারে ভোজনার্থ তাঁহাদিগকে অর্পণ করিলেন, শ্রীরাম পরম শ্রীতি লাভ করিয়া ঐ ফলমূলাদি স্পর্শ করিলেন, কিন্তু ভোজন করিলেন না । ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ । অনস্থ গুছকের বারা বটক্ষীর আনমন করাইয়া শ্রীরাম ও লক্ষণ জটামুকুট বন্ধন করিলেন এবং আমাকে অমুমতি করিলেন—হে স্থমন্ত্র ! তুমি অযোধ্যায় গমন করিয়া মহারাজকে কহিবে, বে তিনি আমার নিমিত্ত শোকাকুল না হন । বন মধ্যে আমার অযোধ্যায় বাদ অপেকা অধিকতর স্থথ হইবে এবং মাতা কৌশল্যাকে আমার শ্রণাম জানাইয়া বলিবে, তিনি আমার নিমিত্ত শোকার্তান সত্তপ্ত-বৃদ্ধ পিতাকে

মাতুর্মে বন্দনং ক্রহি শোকং ত্যক্ত মৎক্তে।
আশাসয়তুরাজানং রুদ্ধং শোকপরিপ্লুতম্ ।।১॥
সীতা চাশ্রুপরীতাক্ষী মামাহ নৃপসত্তম।
তুংখগদ্গদয়া বাচা রামং কিঞ্চিদবেক্ষতী ।।১২॥
সাফাক্ষং প্রনিপাতং মে ক্রহি শ্বশ্রোঃ পদামুজে।
ইতি প্রক্রদতী সীতা গতা কিঞ্চিদবাজাখী ।।১৩॥
ততন্তেংশ্রুপরীতাক্ষা নাবমাক্রক্ত্রদা ।
যাবদাসাং সমুতীর্য্য গতান্তাবদহং স্থিতঃ ।১৪॥
ততো তুংখেন মহতা পুনরেবাহমাগতঃ ।
ততো ক্রদতী কেশল্যা রাজানমিদমত্রবীৎ ॥১৫॥
কৈকেব্যৈ প্রিয়ভার্যায়ে প্রসম্মো দন্তবান্ বরম্ ।
ত্বং রাজ্যং দেহি তল্যের মৎপুত্রঃ কিং বিবাসিতঃ ॥

কৃত্বা ত্থাব তৎসর্কমিদানীং কিং মু রোদিবি ?
কৌশল্যা বচনং প্রুত্বা ক্ষতে স্পৃষ্ট ইবাগ্নিনা ॥২৭॥
পুনঃ শোকাশ্রুপূর্ণাক্ষঃ কৌশল্যামিদমন্ত্রবীৎ।
তঃখেন দ্রিয়মাণং মাং কিং পুনতু গ্রুয়স্তলম্ ॥১৮॥
ইদানীমের মে প্রাণা উৎক্রমিষ্যন্তি নিশ্চয়ঃ।
শপ্তোহহং বাল্যভাবেন কেনচিন্মুনিনা পুরা ॥১৯॥
পুরাহহং যৌবনে দৃপ্তশ্চাপবাণধরো নিশি।
অচরং মৃগয়াসক্তো নদ্যান্তীরে মহাবনে ॥২০॥
তত্রা দ্বিরাত্রসময়ে মুনিঃ কশ্চিত্রাদিতঃ।
পিপাসাহদিতয়োঃ পিত্রোর্জলমানেতুমুদ্যতঃ।
অপ্রয়্জ্জলে কুন্তং তদা শক্ষোহ্তবন্মহান্॥২১॥

শ্বয়ং আখাস বাকাছারা আখাসিত করিবে। ৯'১০।১১। অনস্তর সকল নরনা জানকী প্রীরামের প্রতি কিঞ্চিল্টিপাত করিয়া এথ মিপ্রিভ গদগদবচনে আমাকে কহিলেন, আর্যা! আপনি শ্বন্ধর ও শ্বন্ধর চরণযুগলে আমার সাষ্টান্ধ প্রণাম জানাইবেন—সম্পূর্ণরূপে বাক্য সমাপ্তি না হইতেই রোদন করিয়া জানকী অধামুখী হইলেন। অনস্তর সকলে রোদন করিয়ো জানকী অধামুখী হইলেন। অনস্তর সকলে রোদন করিছে করিতে নৌকার আরোহণ করিলেন, যাবৎকালপর্যান্ত তাঁহারা ভাগীরখী পরকুলে উত্তীর্ণ না হইলেন ভাবৎকাল আমি সেই স্থানে দণ্ডারমান হইরা অনিমেষলোচনে তাঁহাদিন্দের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলাম, তাঁহারা দর্শন পথ অভীত হইলে ছতাশ হইরা প্রত্যাগমন করিয়াছি। কেশিল্যা স্থমন্ত্রের বাক্য প্রবণান-ন্তর উচ্চেঃস্বরে রোদন করিয়া রাজাকে কহিলেন—মহারাজ! আপনি প্রসন্ম ছইরা কৈকেয়ীকে বর প্রদান করিয়াছেন। ভাল, তাঁহাকে সমস্ত রাজ্যই প্রদান করুন—আমার রামকে কি কারণে বনবাসী করিলেন? হে প্রভো! আপনি এই

সকল অনর্থের নিদান হইয়া কি হেতু রোদন করিতেছেন?
শক্তাঘাত জনিত ত্রণ-বিবরে অগ্নিস্পর্শ হইলে যে রূপ যন্ত্রণা
উপস্থিত হয়, রাজা দশরথ কোশল্যাবাক্যে তাদৃশ যন্ত্রণাগ্রন্থ হইয়া শোকাজ্ঞপূর্ণলোচনে দৃষ্টিপাত করত কৌশল্যাকে
কহিলেন, হে প্রিয়ে! আমি স্বতই হুংখে ত্রিয়মাণ হইয়াছি,
প্নর্ব্রার বাক্শল্য দ্বারা আমাকে রুখা ছুঃখিত করিতেছ—
আমার জীবন এইক্ষণে নির্গত হইবে নিশ্চয় জানিয়াছি।
পূর্বকালে এক জন ঋষিকুমার আমাকে অভিসম্পাত করিয়াছিলেন, বোধ করি সেই শাপ এতদিনে ফলোমুখী হইল—
অভিশাপের কারণ কহিতেছি প্রবণ কর।—

একদা রাত্তিকালে আমি যেবিনমদোম্ত হইয়াধ্যুক্ষাণ ধারণ পূর্বক মৃগয়োদ্দেশে মহাবন সংকূল নদীতীরে জমণ করিতেছিলাম, অর্দ্ধাত্ত সময়ে কোন ঋষিকুমার পিপাসাতৃর রহ্ম পিতাও মাতার নিমিত্ত জলানয়নাখী হইয়া জলমধ্যে কুন্ত-পূরণ করিতেছিলেন, তৎকালে কুন্তপূরণ-জনিত গল্ভীর শব্দ গজঃ পিবতি পানীরমিতি মত্বা মহানিশি।
বাণং ধনুষি সংধায় শব্দবেধিনমক্ষিপম্ ॥২২।
হা হতোহস্মীতি তত্তাভূচ্ছব্দো মানুষস্থচকঃ।
কদ্যাপি ন ক্ষতো দোষো ময়া কেন হতো বিধে!
প্রতীক্ষতে মাং মাতা চ পিতা চ জলকাজ্জয়া।
তচ্ছুত্বা ভয়সন্তস্তস্ততোহহং পৌরুষং বচঃ॥২৪॥
শনৈর্গতাহ্থ তৎপার্খং স্বামিন্! দশর্থোহ্ম্যহং
অজ্ঞানতা ময়া বিদ্যান্ত্র্যভূমহ্লি মাং মুনে!॥২৫॥
ইত্যুক্ত্বা পাদয়োন্তম্য পতিতো গদ্গদাক্ষরঃ।
তদা মামাহ স মুনির্মাতেধীন্ পসত্তম!॥২৬॥
ব্রহ্মহত্যা স্পৃশেন্ন তাং বৈশ্যোহহং তপ্লি স্থিতঃ।
পিতরৌ মাংপ্রতীক্ষেতে ক্ষুত্ভভাংপরিপীড়িতৌ॥

উৎপন্ন হওয়াতে হস্তিক্ত জলপানের শব্দ-ভ্রম জ্বিলি, আমি ধনুতে শব্দ-ভেদী বাণ নিয়োজিত করিয়া ঐশব্দানুসারে পরিত্যাগ করিলাম। অনস্তর, 'হা হতোন্মি' ইত্যাকার শব্দ জ্বেণ করিয়া মনুষ্য জ্ঞান করিলাম। ঋষিকুমার আহত হইয়া কাতর স্বরে কহিলেন, হা বিধাতঃ! আমি কাহারও নিকট কোন অপরাধ করি নাই, আমাকে বিনাদোধে কোন্ ব্যক্তিন্ত করিল; রন্ধ পিতা ও মাতা পিপাসাতুর হইয়া আমার পর্যনিরীক্ষণ করিয়া আছেন।১৭।১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২০। ২৪। ২৫। ২৬। আমি তাদৃশ কাতর বচন শ্রবণানস্তর সভয় হৃদ্যে শক্ষঃ শব্দিঃ শব্দিঃ শব্দির পার্মানের পার্ম্ব দেশে উপ্পিত হইয়া কহিলাম, হে প্রভো! আমি রাজা দুশর্থ — অজানবশতঃ এই অকার্য্য করিয়াছি—আমাকে ক্ষমা করিতে হব্বে। অনন্তর ঋষিকুমার আমাকে নিজ্কচরণ যুগলে পতিতও রোক্ষদ্যান দেখিয়া কহিলেন, হে হৃপতি শ্রেষ্ঠ! তুমি ভীত হইও না—আমি বৈশ্য-সন্তান, অতএব ব্রক্ষ হত্যা জনিত

তরোস্তম্দকং দেহি শীঘুমেবাবিচারয়ন্।
ন চেত্ত্বাং ভস্মসাৎকুর্য্যাৎপিভা মেযদিকুপ্যতি॥
জলং দত্ত্বা তু তৌ নত্বা ক্কতং সর্কাং নিবেদয়।
শল্যমুদ্ধর মে দেহাৎপ্রাণাংস্ত্যক্ষ্যামি পীড়িতঃ॥
ইত্যুক্তো মুনিনা শীঘুং বাণমুৎপাদ্য দেহতঃ।
সঙ্গলং কলশং ধৃত্বা গতোহহং যত্ত্র দম্পতী॥০০॥
অতিরদ্ধাবন্ধদৃশো কুৎপিপাসার্দিতো নিশি।
নায়াতি সলিলং গৃহ্য পুত্রঃ কিম্বাহত্ত্র কারণম্। ৩১
অনন্যগতিকো রন্ধো শোচ্যো তৃট্ পরিপীড়িতো।
আবামুপেক্ষতে কিম্বা ভক্তিমানাবয়োঃ হুতঃ॥৩২॥
ইতি চিন্তাব্যাকুলো তৌ মৎপাদন্যাসজং ধনিং।
গ্রুত্বা প্রাহ পিতা পুত্র! কিং বিলম্বঃ ক্কতন্ত্বয়া॥৩৩

পাপে তুমি কলুষিত হইবে না। কিন্তু রুদ্ধ পিতা ও মাতা পিপাসাতুর হইয়া আমার প্রতীক। করিতেছেন—তুমি জল প্রদান করিয়া তাঁহাদিগের প্রাণদান কর, নচেৎ তাঁহারা কুপিত ছইয়া তোমাকে ভন্মদাৎ করিবেন। হে মহারাজ ! ভুমি জলপ্রদানপূর্বক ভাঁহাদিগকে নমস্কার করিয়া আতা কত-কার্য্য নিবেদন কর, তাহা হইলে অজ্ঞানক্ত পাপ হইতে নিছতি পাইবে। হে মহারাজ! আমার হৃদর হইতে শলা উদ্ধার কর, আমি প্রাণভ্যাগ করি—বহুকাল যুদ্ধা সহ করিতে পারি না ।২৭।২৮।২৯৷ অনন্তর আমি মুনিকুমারের দেহ হইতে বাণ উত্তোলন করিয়া জলপূর্ণ কলস গ্রহণ পুর্বাক দেই রন্ধ ও পিশাদাত্র অজদম্পতীর নিকট গমন করিয়া তাঁছাদিগের কথোপকখন শ্রবণ করিলাম যে, 'কি ছেত বৎস জল লইরা এখন পর্য্যন্ত আগমন করিল না।' অন্যান্য গতিক শোচনীয় দশাগ্রস্থ পিপাদাভুর ও রদ্ধতম পিতা মাতাকে कि উপেক্ষা করিল ? না-কখনই এরপ ছইবে না-যেহেতু বৎস আমাদের অতিভক্ত ও ধার্মিক। অমন্তর আমার পাদবিক্ষেপ জনিত শব্দ অবণ করিয়া ব্যাকুলান্তঃকরণে দেহ্যাবয়োঃ স্থপানীয়ং পিব ত্মপি পুত্রক !।

ইত্যেবং লপতোর্ভোত্যা সকাশগমনং শনৈঃ ॥৬৪॥
পাদয়োঃ প্রণিপত্যাহমক্রবং বিনয়াম্বিতঃ ।
নাহং পুত্রস্তয়োধ্যায়া রাজা দশরথোহমাহেং ॥৩৫
পাপোহহং মৃগয়াসক্তো রাত্রৌ মৃগবিহিংসকঃ ।
জলাবতারাদ রেহহং স্থিত্বা জলগতং ধনিম ॥৬৬
শ্রুত্বাহ্য দেকং বাণমথাত্যজম্ ।
হতোহস্মীতি ধনিং শ্রুত্বা ভয়াতত্রাহ্মাগতঃ ॥৬৭॥
জটাবিকীর্য্য পতিতং দৃষ্ট্রাহহং মুনিদারকং ।
ভীতোগৃহীত্বা তৎপাদৌরক্ষ রক্ষেতি চাক্রবং ।৬৮

মা ভৈষীরিতি মাং প্রান্থ ব্রহ্মহত্যাভয়ং ন তে।
মৎপিত্রোঃ দলিলং দল্ধা নতা প্রার্থয় জীবিতম্।।
ইত্যুক্তো মুনিনা তেন হ্যাগতো মুনিহিংদকঃ।
রক্ষেতাং মাং দয়াযুক্তো যুবাং হি শরণাগতম্।।
ইতি শ্রুতা তু দুংখার্ত্তো বিলপ্য বছশোচ্য তং।
পতিতো নো স্থতো যত্র নয় তত্রাবিলয়য়ন্।। ৪১॥
ততো নীতো স্থতো যত্র ময়া তো য়দ্ধদশতী।
স্পেন্যা স্থতং তো হস্তাভ্যাং বছশোহথ বিলেপতুঃ॥
হা হেতি ক্রন্দমানো তো পুত্র পুত্রেত্যবোচতাম্।
জলং দেহীতি পুত্রেতি কিমর্থং ন দদাস্যলম্ 1।৪৩

র্দ্দদম্পতী কহিলেন, হে প্লু! তুমি কি হেতু জল আনয়নে বিলম্ করিলে, যাহা হউক একণে আমাদিগকে জলপ্রদান করিয়া অবশিষ্ট জল স্বয়ং পান কর। আমি তাঁহাদিগের সকৰন কাভৱেশক্তি শ্ৰবণানস্তৱ ভীত ও হুঃখিত ছইয়া পাদ-ছয়ে নিপ্তিভ হইলাম এবং বিনীত সহকারে কহিলাম. হে মহাত্মন : আমি আপনাদিগের পুত্র নহি, অযোধ্যাধি-পতি দশরথ আমার নাম, আমি অতি পাপকার্য্য করিয়াছি— ক্ষমা করিতে হইবে—অদ্য রজনীতে মৃগরাশক্ত হইরা মৃগ-বধাভিপ্রায়ে জ্বলাবভারের কিয়দ্ধরে ভ্রমণ করিভেছি, এমন সময়ে জলমধ্যে শব্দ শ্ৰবণ করিলাম। জল পানার্থ সমাগত মুগের শব্দ ভ্রম হওয়ায় আমি ঐ শব্দানুসারে শব্দবেধি বাণ পরিত্যাগ করিবামাত্র 'হা হতোন্মি' এই প্রকার মন্মভেদী শব্দ কর্ণগোচর করিলাম, পরম ভীতি সহকারে জলাবভারে উপস্থিত হইয়া দেখিলাম, একটী ঋষিবালক আলুলায়িতকেশে ভূমি-শ্যাায় শ্যান রহিয়াছেন। অনস্তর আমি পরম ভীতি সহকারে তাঁহার পাদগ্রহণপূর্ব্ব ক নিজ নিরপরাধিতা প্রকাশ क्रिया क्रमा धार्थना क्रिनाम। शत्म नमामत्र मूनियानक

কহিলেন—তোমার ভয় নাই—ব্রহ্মহত্যা-জনিত-পাপে কলুবিত হইবে না। কিন্তু আমার পিতা ও মাতাকে জলপ্রদানানন্তর নমন্তার করিয়া নিজ জীবন প্রার্থনা করিবেন। ৩০ ।৩১।
। ৩২ । ৩১ । ৩৪ । ৩৫ । ৩৮ । ৩৮ । ৩৯ । হে মুনে।
আমি দেই মুনিঘাতি নরাধম—ঋষিকুমারের বাক্যানুসারে
আগমন করিয়াছি—দয়াপ্রকাশ পূর্কক শরণাগত বিবেচনা
করিয়া আমাকে রক্ষা কর্কন। অন্ধমুনি-দম্পতী আমার বাক্য
শ্রেবানন্তর শোকসহকারে বহুতর বিলাপ করিয়া আমাকে
কহিলেন, দশরথ! দেই আমাদিগের প্রিয়তম সন্তান যে স্থানে
পতিত আছে এইক্ষণে আমাদিগের প্রিয়তম সন্তান যে স্থানে
পতিত আছে এইক্ষণে আমাদিগের প্রয়তম সন্তান হৈ স্থানে
বতারে আনয়ন করিলাম। অনত্তর তাঁহারা ভূমি পতিত মৃত
সন্তানকে হন্তদারা স্পর্শ করিয়া—হা পুত্র, হা পুক্র! তুমি আমাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া কোথায় গমন করিলে—জল প্রদান
করিয়া আমাদিগকে পরিত্প্ত কয়, হা বৎস! কি হেতু বিলম্ব

ততো মামূচতুঃ শীঘুং চিতিং রচর ভূপতে।
ময়া তদৈব রচিতা চিতিস্তত্র নিবেশিতাঃ।
ত্রয়য়ত্রায়িরুৎসৃষ্টো দক্ষাস্তে ত্রিদিবং যযুঃ ॥৪৪॥
তত্র রদ্ধঃ পিতা আহ স্ব্যপ্যেবং ভবিষ্যাদ।
পুল্রশোকেন মরণং প্রাপ্যাদে বচনাম্মম। ৪৫॥
দ ইদানীং মম প্রাপ্তা শাপকালোহনিবারিতঃ।
ইত্যুক্ত্বা বিললাপাথ রাজা শোক সমাকুলঃ ॥৪৬॥
হা রাম! পুল্ল! হা সীতে! হা লক্ষ্মণ! গুণাকর।
স্বিয়োগাদহং প্রাপ্তো মৃত্যুং কৈকেয়িসম্ভবং ॥৪৭
বদম্বেং দশর্থঃ প্রাণাংস্ত্যক্ত্বা দিবং গভঃ।
কৌশল্যা চ স্থমিত্রা চ তথান্যা রাজ্যোবিতঃ ॥৪৮॥

চুক্র ভূশ্চ বিলেপুশ্চ উরস্তাড়ন পূর্ব্বকং।
বিশিষ্ঠঃ প্রথমী তত্ত প্রাতর্মন্তিভিরারতঃ ।৪৯।।
তৈলদ্যোণ্যাং দশরথং কিপ্তা দূতানথাত্রবীং।
গচ্ছত পরিতং সাখা যুধাজিয়গরং প্রতি ।।৫০।।
তত্তাস্তে ভরতঃ শ্রীমান্ শক্রম্ম সহিতঃ প্রভুঃ।
উচ্যতাং ভরতঃ শীঘুমাগচ্ছেতি মমাজ্রমা ।।৫১।।
অযোধ্যাং প্রতি রাজানং কৈকেয়ীং চাপি পশ্যতু।
ইত্যুক্ত্বা স্ত্রবিতং দূতা গড়া ভরতমাতুলং ।।৫২।।
যুধাজিতং প্রণম্যোচুর্ভরতং সামুজং প্রতি।
বশিষ্ঠস্থাত্রবীদ্যাজন, ! ভরতঃ সামুজঃ প্রভুঃ ।।৫৩।।

করিতেছ ? এইরপ বহুতর বিশাপ করিয়া আমাকে কছিলেন, ছে মহারাজ! অতি সত্ত্বর আপনি চিতা প্রস্তুত করুন। তাঁহাদিগের কথানুসারে আমি তৎক্ষণাৎ চিতা প্রস্তুত করিলাম,
রন্ধদম্পতী মৃতপুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া চিতা-শয়নাস্তে আমাকে
কহিলেন, ছে মহারাজ! 'তোমারও আমাদিগের ন্যায়
পুত্রশোকে মরণ হইবে,' যাহা হউক, এক্ষণে চিতাতে অগ্নি
প্রদান কর, আমিও সেইক্ষণে চিতানল প্রজ্বলিত করিলাম।
অনন্তর তাঁহারা সকলে চিতানলদম্ম হইয়া স্বর্গারোহণ করিলেন। ৪০।৪১।৪২।৪০।৪৪।৪৫। এক্ষণে আমার
দেই শাপ সময় উপস্থিত—নিশ্চয়ই পুত্র শোকে মরণ হইবে।
শোকাকুল রাজা দশরথ এই প্রকার বহু বিশাপানন্তর, হা
রাম, হা পুত্র, হা সীতে, হা লক্ষ্মণ গুণাকর, ভোমাদিগের
বিরহে আমার প্রাণ বিয়োগ হইল। রাক্ষদী কৈকেয়ী এই
সকল অনর্থের কারণ হইয়াছে, এই কথা বলিয়া প্রানত্যাগ
পূর্বক স্বর্গ গমন করিলেম।

কোশল্যা অমিত্রা প্রভৃতি রাজমহিষীগণ মহারাজের

মৃত্যু দর্শনে বক্ষঃস্থল ভাড়ন করিয়া উচ্চৈঃস্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। অনন্তর প্রদিন প্রাতঃকালে বশিষ্ঠ-দেব কতিপয় মন্ত্রিগণের সহিত অন্তঃপুর মধ্যে গমন করিয়া মৃতরাজদেহ তৈল দ্রোণীতে নিক্ষেপ করিতে আদেশ ক্রিলেন এবং দ্তগণকে আহ্বান করিয়া কহিলেন, হে দূতগণ! তোমরা অতি সত্ত্ব অশ্বারোহণ পূর্বক যুধাজি-ন্নগবে গমর্ন করিয়া ভরতকে আমার আজানুসারে কহিবে যে, তুমি সত্তর অযোধাার আগমন করিয়া রাজা ও কৈকেয়ীকে দর্শন কর। অনন্তর বশিষ্ঠদেবের আজ্ঞানুসারে দূত্রণণ জতবেংগ যুধাজিলগরে গমন করিয়া ভরত্যাতুল যুধাজিৎ ভরত ও শক্তমকে প্রণামানন্তর কহিলেন, দেব! বশিষ্ঠদেব আজা করিয়াছেন যে, শত্রুষ্ম সহিত রাজকুমার ভরতের অতি সত্তর অযোধাায় আগামন করিতে হইবে। ভরত বশিষ্ঠদেবের আজ্ঞা প্রবণে অতি ভীত ছইয়া মাতুলাদি-গুরুজনের অনুমতি গ্রাছণ পূর্ববি শক্রয় সমভিব্যা-হারে অবোধ্যাভিমুখে গমন করত পথিমধ্যে মহারাজের ও শীরামের সম্বন্ধে বহুতর অনিষ্ট চিন্তা করিতে লাগিলেন।

শীব্যাগভতু পুরীমবোধ্যামবিচারয়ন্।

ইত্যাজ্ঞপ্তোহথ ভরতস্থাতিং ভরবিহ্বলঃ। ৫৪।!
আববৌ গুরুণাদিউঃ সহ দৃতৈস্ত সানুজঃ।
রাজ্ঞোবা রাঘনস্যাপি দুঃখং কিরিংদুপস্থিতং। ৫৫।

ইতিচিন্তাপরো মার্গে চিন্তাররারার যযৌ।
নগরং ভ্রউলক্ষীকং জনসম্বাধবর্জিতং ॥৫৬॥
উৎসবৈশ্চ পরিত্যক্তং দৃষ্ট্য চিন্তাপরোহভবৎ।
প্রবিশ্য রাজভবনং রাজলক্ষীবিবর্জিতং ।৫৭॥
অপশ্যৎকৈকয়ী তত্র একামেবাসনেস্থিতাম্।
নন্ম শিরসা পাদে মাতুভ ক্তিসমন্থিতঃ। ৫৮॥
আগতং ভরতং দৃষ্টা কৈকেয়ী প্রেমসম্ভ্রমাৎ।
দ্থায়ালিঙ্ক্য রভনা স্বাস্থেমারোপ্য সংস্থিতা ॥৫ না

কিয়ংক্ষণ পরে অযোধ্যায় উপস্থিত হইয়া নগর প্রবেশ দমরে নানাবিধ উৎসব রহিত নগরের পূর্বশোভা অব-লোকন না করিয়া পুনর্বার অভি চিন্তিত হইলেন। অন-তুর পূর্বশোভাবিরহিত রাজ ভবনে প্রবেশ করিবামাত্র কানিনী আসনোপ্রিটা কৈকেযীকে দর্শন করিয়া ভক্তি-পূর্বক জননীর চরণে প্রণাম করিলেন। ৪৬ ৪৭ । ৪৮ । কেকেয়ী সনাগত ভরতকে দর্শনানন্তর সম্মেছ সমালিক্ষন করিয়া নিজ্ঞোড়ে সংস্থাপন কবিলেন। কিয়ৎক্ষণ পরে নস্তকান্তাণ করিয়া নিজ পিতৃকলের মঙ্গল জিজ্ঞাস। করিলেন, হে বৎস! আমার পিতা মাতা ও ল্রাতা সকলে কুশলে আছেন ত?ছে পুল্ল! অদ্য বহুভাগো ভোমাকে কুশলী দেখি-লাম। অনন্তর ভরত কৈকেয়ী বাক্যের প্রত্যুত্তর প্রেদান না করিয়া চিন্তাকুলান্তঃকরণে জননীকে সয়ং জিজ্ঞাদা করি-লেন—মাতঃ! আমাদিব্যের পিতা কোন্ স্থানে অবস্থিতি মূদ্ব্যিষ্য পপ্রচ্ছ কুশনং স্বকুলস্য সা।
পিতা মে কুশলী ভাতা গাতা চ শুনলক্ষণা। ৬০ ।।
দিন্যা অমদ্য কুশলী ময়া দুফোলি স্কুক !।
ইতি পৃষ্টঃ স ভরতো মাতা চিন্তাকুলে ক্রিঃ। ৬১॥
দূর্যানেন মন্সা মাতরং সমপ্রচ্ছত।
মাহঃ! পিতামে কুত্রাস্তে একা ভ্যিহসংক্রিঃ। ৬১
জ্য়া বিনান মে তাহঃ কনাচিত্রসি স্থিতঃ।
ইদানীং দুশাতে নৈব কুত্র তিষ্ঠতি মে বদ ।৬০॥
অদৃষ্ট্যা পিতরং মেহদা ভরং দুংখং চ জায়তে।
আথার কৈবরী পুল্রং কিং দুংখেন তবান্য। ॥৬০॥
যা গতির্ধ র্মাশীলানামশ্রমেধাদিয়াজিনাং।
তাং গতিং গতবান্দ্য পিতা তে পিতৃবৎসল । ১৯০॥
তচ্ছুজ্য নিপপাত্যের্যাং ভরতঃ শোকবিহ্বলঃ।
হা তাত ! কগতোহদি জং তাজ্যামাং রুজিনার্গবে॥
অম্মপ্রির রামার রাজ্যে মাং কগতোহদি জো।

করিতেছেন ওমই বা সামান্যা রমণীর ন্যায় কি কারণে একাকিনী নির্জন দেবা করিতেছ গুমহারাজ ভোনা থাতিবেকে ক্থনই একাকা নির্জন দেবা করিতেন না, এজনে তাঁহাকে তোমার ভবনে দর্শন না করিয়া অতি ব্যাফল হইয়াছি! মাতং! বিলম্ব করিবেন না পিতা কোন স্থানে আছেন বলিয়া আমাকে নিক্তমি কর্ণন— ভাহার অদর্শনে আমার ভয় ও হৃংথ উৎপান্ন হইভেছে। কৈকেয়ীক হিলেন, বংসা ভোমার ভয় ও হৃংথ উৎপান্ন হইভেছে। কৈকেয়ীক হিলেন, বংসা ভোমার ভয় বংধর কারণ কিছুই নাই. হে শিতৃবংসল। মহারাজ অন্ধন্য বাজক ধান্মিকদিশের সমুচিত সদ্গতি লাভ করিয়াছেন। কে। ৬০। ৬১। ৬২। ৬০! ৬৪। ৬৫। অনন্তর ভরত পিতার শোচনীর দশা শ্রবণে শোকবিছবল হইয়া সক্রণ রোদন করত বিলাপ করিতে লাগিলেন,—হা তাত, আমাকে

ইতি বিস্কৃতিং পুলুং পতিতং মুক্তমূর্দ্ধজং ॥৬৭॥
উপাপ্যামৃজ্য নয়নে কৈকেয়ী পুলুমত্রবীৎ।
সমাশ্বাস হি ভদ্রং তে সর্ব্বং সম্পাদিতং ময়া॥৬৮
তামাহ ভরতস্তাতো ত্রিয়মাণঃ কিমত্রবীৎ।
তমাহ কৈকরী দেবী ভরতং ভরবর্জ্জিতা॥৬৯॥
হা রাম! রাম্নীতেতি লক্ষ্মণেতি পুনঃ পুনঃ।
বিলপ্রের স্কৃতিরং দেহং ত্যক্তা দিবং যয়ে॥৭০॥
তামাহ ভরতো হেহ্ম! রামঃ সন্ধিহিতো ন কিং।
তদানীং লক্ষ্মণো বাপি সীতা বা কুত্র তে গতাঃ॥৭১

১ঃসাগেরে বিসজ্জন করিলেন ! ছা পুত্র বৎসল, আমাকে জীরানের হতে সমর্পণ না করিয়া কোথায় গমন করিলেন ? অনন্তর কৈকেয়ী ভূমিশায়িত আলুলায়িত কেশ ও বিহ্বলান্তঃ-করণ ভরতকে ভূমি হইতে উত্থাপিত করিয়া হস্তদারা তাঁহার न्यन्ध्य मार्क्कनान्छत कशिलन, (इ वर्म। आश्वानित इछ ; আমা কর্ত্তক তোমার সমস্ত মঙ্গল সম্পাদিত হুইরাছে। ৬৬। । ৬৭। ৬৮। ভরত কৃহিলেন, মাতঃ । পিতা মরণ সময়ে কি বলিয়াছিলেন ? কৈকেয়ী ভরতবাক্যের তাৎপর্য্যার্থ অবগত না হইয়া নির্ভন্নান্তঃকরণে কহিলেন, মহারাজ মরণ সমরে, হা রাম, ল দীতে, হা লক্ষণ ! এই বাক্য পুনঃ পুনঃ উচ্চারণ করিয়া পর্গে গমন করিয়াছেন। ভরত কহিলেন, মাতঃ! তৎকালে জীরাম সীতা ও লক্ষণ কোনৃ স্থানে ছিলেন, তাঁহারা কি মহা-রাজের সন্নিহিত ছিলেন না ? কৈকেয়ী কহিলেন, বৎস! জাবণ कत,—मरुविश्व बीदारमद्र योववाद्या श्रान्यकार्थ छेन्याभ করিয়াছিলেন, আমি ভোমার নিমিত রাজ্য প্রাথনা করিয়া মহারাজের অভিপ্রেত কার্য্যের বিশ্লাচরণ করিয়াছি। পূর্ব্বে মহা-বাঘ আমার সেবায় সন্তুষ্ট হইয়া বরদ্বয় প্রদানে প্রতিশ্রুত ছিলেন, ভাগার একটা বরষারা তোমার নিমিত্ত সমস্ত রাজ্য াহণ করিয়াছি—অপর বরদারা জীরামের জটাবলল ধারণপূর্কক চতুর্দশবর্ষ বনবাদ ইইরাছে। ধর্মপ্রায়ণ রাম পিতৃ আছে। শ্রবণ । टेकटकबुउवाह।

রামস্য যৌবরাজ্যার্থং পিজা তে সম্ভ্রম্থ কৃতঃ।
তব রাজ্যপ্রদানায় তদাহহং বিষ্নমাচরং ॥৭২॥
রাজ্ঞা দত্তং হি মে পূর্ব্যং বরদেন বর্দ্রম্থ ।
যাচিতং তদিদানীং মে তয়োরেকেন তেইখিলং ॥
রাজ্যং রামস্য চৈকেন বনবাসো মুনিব্রতং ।
ততঃ সত্যপরো রাজা রাজ্ঞাং দত্বা তবৈব হি ॥৭৯॥
রামং সম্প্রেষ্যামাস বনমেব পিতা তব ।
শীতাহপ্যন্থগতা রামং পাতিব্রত্যমুপাশ্রিতা ॥৭৫॥
সৌলাজ্ঞং দর্শয়ন্ রামমন্ত্রাতোইপি লক্ষ্যণঃ ।
বনং গতেরু সর্ব্বেরু রাজা তানেব চিন্তুয়ন্ ॥৭৬॥
প্রলপন্ রাম রামেতি মমার নূপসত্তমঃ ।
ইতি মাতুর্বচং শ্রুম্ব বজ্ঞাহত ইব ক্রমঃ ॥৭৭॥
পপাত ভূমৌ নিঃসংজ্রস্থং দৃষ্ট্যা দুংখিতা তদা।
কৈকেয়ী পুনরপ্যাহ বৎস ! শোকেন কিং ? তব ॥
বিক্রেম্ব প্রার্থাহে বংসা গোকেন কিং ? তব ॥

মাত্র তোমাকে রাজ্যপ্রদান করিয়া বনগমন করিয়াছেন, প্রিপরায়ণা জানকী ও প্রাতৃবৎদল লক্ষ্মণ তাহার অনুগ্রন করিয়াছেন, তাহাদিগের বনগমনানস্তর মহারাজ হা রাম, ২০ লক্ষ্মণ ইত্যাদি বহু বিশাপ করিয়া মৃত্যুমুখে পতিত হইয়াছেন

ভরত কৈকেয়ীর নিদারণ বাক্য শ্রবণানন্তর অচেতন হঠ্যা বজাহত তকর তাম ভূতলে পতিত ইইলেন। কৈকেয়ী ভরতেব তাদৃশাবস্থা দর্শন করিয়া হৃঃখিতান্তঃকরণে কহিলেন, বংস গাল্রোখান কর, তোমার হৃঃখের কারণ কি? বিপুল সমার্থা ভোগের সময় কি হৃঃখ হইতে পারে? ভরত এইপ্রকারে ম্বিতি বাক্য শ্রবণানন্তর মাতাকে যেন কোধানলে দগ্ধ করিবার আশ্রে আরক্ত নমন্বয় বিক্ষারিত করিয়া কহিলেন। ৬৯। ৭০ রাজ্যে মহতি সম্প্রাপ্তে দুংখন্যাবসরঃ কুতঃ।
ইতি ব্রুবন্তীমালোক্য মাতরং প্রদহন্নিব ॥৭৯॥
অসম্ভাষ্যাহিদি পাপে মে ঘোরে তৃং ভর্তৃঘাতিনী।
পাপে তৃদ্গর্ম্মতোহহং পাপবানিম্ম সাম্প্রতং।
অহমগ্রিং প্রবেক্ষ্যামি বিষং বা ভক্ষয়াম্যহং॥৮০॥
যজ্যেন বাথ চাত্মানং হত্তা যামি যমক্ষয়ং।
ভর্তৃঘাতিনি! দুষ্টে তৃং কুম্ভীপাকং গমিষাদি॥৮১॥
ইতি নির্ভংশ্য কৈকেয়ীং কৌশল্যাভবনং যথো।
সাপি তং ভরতং দৃষ্ট্য মূক্তকণ্ঠা ক্ররোদ হ ॥৮২॥

19519 আনও 19819 ৫ | ৭৬ | ৭৭ | ৭৮ | ৭৯ | বে পাণীয়দি ভর্থাতিনি!
তোমার সহিত সন্তাধণ করিলে পাপস্পর্শ হয়—আমি তোমার
ারে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি বলিয়া আগন্তাকে পাপিষ্ট বোধ করিভেছি। অতএব অদ্য অগ্নি প্রবেশ, বিষভক্ষণ বা খড়গাঘাত দারা এই
কেছ নই করিয়া যম সদনে গমন করিব। বে হুটে! ভোমার ভর্তৃবিনাশন জনিত পাপে নিশ্চয়ত কুন্তীপাক নরক ভোগ হুইবে।

ভরত কৈকেরীকে এই প্রকার ভৎসনি। করিয়া কৌশল্যা ভিবনে গমন করিলেন। কৌশল্যা দেবীও ভরতকে অবলোকন করিয়া মৃক্তকণ্ঠে রোদন করিতে আরম্ভ করিলেন।৮০/৮১/৮২। ভরতও কৌশল্যা চরণে পতিত ইইয়া তুল্য রোদন করিতে লাগিলেন; কিরংক্ষণ পরে পতিপরারণা রাম-মাতা ভরতকে আলিঙ্গন করিয়া শোকাশ্রু মিশ্রিত লোচনে দৃষ্টিপাত পূর্ব্বক কহিলেন—পুলা! তুমি বিদেশস্থ পাকায় এই সকল অনর্থ ঘটনা ইইয়াছে। হে বৎস! তোমার মাতার কার্য্য সকল শ্রবণ করিয়াছ—আমার রামচন্দ্র সীতা ও লক্ষণের সহিত জ্বটাবন্ধল ধারণ করিয়া বন্দ্রমান উদরে জন্ম গ্রহণ করিয়াছ তাহা আমি জানি, তথালা আমার উদরে জন্ম গ্রহণ করিয়াছ তাহা আমি জানি, তথালা আমার মন কোন প্রকারে হঃধ ইইতে নির্ভ হয় না। হে রাম! নিশ্চয় জানিলাম—বিধিলিপি কথনই খণ্ডন হয় না। ভরত ঐরপ বিলাপ কারিনী ও শোক-সম্ভর্থা কৌশল্যার চরণ্চয়

পাদয়োঃ পতিতন্ত্ৰস্যা ভরতোইপি তদারুদন।
আলিঙ্ক্য ভরতং সাধী রামমাতা যশস্থিনী ॥৮৩॥
রুশাতিদীনবদনা সাক্রনেত্রেদমন্ত্রীৎ।
পুত্র ! স্বয়ি গতে দূর্মেবং স্ক্রমভূদিদং।
উক্তং মাত্রা শ্রুতং স্ক্রং ত্বয়া তে মাতৃচেন্টিতং ॥৮৪

পুজঃ সভার্যে। বনমেব যাতঃ
সলক্ষণোমে রঘুরামচন্দ্রঃ।
চীরাম্বরো বদ্ধজটাকলাপঃ
সন্ত্যজ্য মাং দুঃখ সমুদ্ধমগ্নাং ॥৮৫॥
হা রাম! হা মে রঘুবংশনাথ!
জাতোহিদি মে ডং পরতঃ পরাত্মা।
তথাপি দুঃখং ন জহাতি মাং বৈ
বিধিবলীয়ানিতি মে মনীষা।॥৮৬॥

স এবং ভরতো বীক্ষ্য বিলপন্তীং ভূশং শুচা পাদৌ গৃহীত্বা প্রাহেদং শুনু মাতর্বটো মম ॥৮৭॥ কৈকেয্যা যৎকৃতং কর্মা রামরাজ্যাভিষেচনে অন্যদ্বা যদি জানামি সা ময়া নোদিতা যদি॥৮৮॥

ধারণ করিয়া পুনর্কার কহিলেন, মাতঃ : প্রবণ করুণ— শ্রীরামের রাজ্যাভিষেক সময়ে কৈকেয়ী যে সকল ব্যবহার করিয়াছেন, তাহা যদি আমার বিদিতপূর্দ্ধ হয়, তাহা হইলে আমি ব্রহ্ম হত্যাশত জ্ঞানিত পাপে অবগ্র কল্যিত হইব, অধিক কি বলিব, ভূতকার্য্য সকল যদি আমার বিদিত বা অভিমত হয়, তাহা হইলে অক্ষতী সহিত কুলগুরু বশিষ্ঠ দেবের হত্যাজনিত পাপে আমি লিপ্ত হইব। ভরত এইপ্রকার শপ্য করিয়া অতিশ্র

পাপং মেংস্ত তদা মাতঃ ! ব্রহ্মহত্যাশতোদ্ধং ।

হতা বশিষ্ঠং থড়েরন অরুদ্ধাত্যা সমস্থিতং ॥৮৯॥

তুয়াত্তৎপাপ মথিলং মম জানামি যদ্যহং ।

ইত্যেবং শপথং কুড়া রুরোদ ভরতন্তদা ॥৯০॥
কৌশল্যা তমথালিক্ষ্য পুত্র ! জানামি মা শুচঃ ।

এত্দ্মিন্নন্তরে শুড়া ভরতদ্য সমাগমং ॥৯১॥

বশিষ্ঠো মন্ত্রিভিং দার্জং প্রথমে রাজমন্দিরং ।

রুদ্ধা রাজা দশরথো জানী সত্যপরাক্রমং ।

তুকুা মত্য সুথং স্ক্রমিন্ট্যা বিপুলদক্ষিণেঃ ॥৯৩॥

অশ্বমেধাদিভির্যজ্ঞেল কা রামং সুতং হরিং ।

অশ্বমেধাদিভির্যজ্ঞেল কা রামং সুতং হরিং ।

অন্তে জগাম ব্রিদিবং দেকেন্দ্রান্তমং প্রভঃ ॥৯৪॥

রোদন করিতে লাগিলেন ১৮৩ ৮৪।৮৫।৮৬।৮৭। ৮৮। ৮৯ ২৯০।
কৌশল্যা দেবী তাঁহাকে সম্প্রেলিজন করিয়া কহিলেন, বংস।
শপ্থ করিতে হইবে না বাল্যাব্ধি তোমার চরিত্র কাহারও
অবিদিত নাই।

অনস্তর বশিষ্ঠদেব ভরত সমাগম শ্রেবণানস্তর স্থমন্ত্র প্রভৃতি
কৃতিপায় মন্ত্রীগণের সহিত রাজভবনে উপস্থিত হইরা রোক্রনামান ভরতকে দর্শনি করিয়া কহিলেন, বংস ভরত। অতি
রক্ষতম পরম জ্ঞানী ও সতা পরাক্রম রাজা দশরথ অখমোধানি যজ্ঞারা বিষ্ণুরূপী সন্থান লাভ করিয়া সর্ব্যম্থ ভোগান্তে যথাসময়ে স্থাগমন করিয়াছেন, সে হানেও অমরেল্রের সহিত অর্ধাসনোপবিত্ত হইয়া দেবগণের সন্সংভাগ্য বিচারে স্বরপতির সাহাত্য ক্রিবেন, অভ্এব অংশাচ্যাবস্থ ও
মোকভাজন পিকার জ্ঞা বৃধা শোক করিতেছ, বাঁহারা আত্মাকে তং শোচদি রথৈব তুমশোচ্যং মোক্ষভাজনং।
আতা নিত্যোহব্যঃ শুদ্ধো জন্মনাশাদিবর্জিতঃ॥৯৫
শরীরং জড়মত্যর্থমপবিত্রং বিনশ্বরং।
বিচার্যমানে শোকস্য নাবকাশঃ কথঞ্চন ।৯৬॥
পিতা বা তনরো বাপি যদিম্ভ্যুবশংগতঃ।
মূঢ়ান্তমন্তশোচন্তি স্বাত্মতাড়ন পূর্বকং।।৯৭॥
নিঃসারে থলু সংসারে বিয়োগো জ্ঞানিনাং যদা।
ভবেবৈরাগ্যহেতুঃ স শান্তিসোথ্যং তনোতি চ।।৯৮
জন্মবান্ যদি লোকেহন্মিন্ তহিতং মৃত্যুরন্থগাৎ।
তন্মাদপরিহার্যোহয়ং মৃত্যুজন্মবতাং সদা।।৯৯।

শুদ্ধ ও নিতা স্থতরাং জন্ম মৃত্যুরহিত এবং শ্রীরকে জাড়, অভি অপ্ৰিত্ৰ ও বিনাশী বোধ করে, ভাহাদিগের কোন কালে শোক হয় না | ৯১ | ৯২ | ৯৩ | ৯৪ | ৯৫ | ৯৬। পিতা বা পুল কাল-কবলে পতিত হইলে মৃঢ়েরাই নিজ বক্ষঃ হল তাড়ন পূর্বক শোক कतिया थाक । दनथ এই अभाव मश्मादत क्रानि वास्किता वन्न-জন বিয়োগ কামনা করিয়া থাকে, বেছেতু বন্ধুজন বিয়োগ বৈরণগ্য ও.শান্তি সুখের কারণ হইয়া থাকে। হে ভরত! জাত ব্যক্তি দিগের অবশ্রুই মৃত্যু হইবে, স্বতরাং জ্ঞাত্তেরই মৃত্যু সাভাবিক ধর্ম, স্বকীয় কর্মানুসারে নিয়মিত সময়ে তাহাদিগের মৃত্যু হইবে—ইহা কেছ অক্তথা করিতে পারে না। হে বৎস ! তুমি এই সমস্ত বিষয়ে অভিজ্ঞ হইয়াও অনভিজ্ঞের ন্যায় বন্ধুজন विरम्भा क्रिक (भारक कांच्य इहेटक -- (मध, कांकि कांकि ব্ৰহ্মাও ৰহুধা বিনষ্ট হইয়াছে—এই সৃষ্টিও বারস্বার পরিবর্তিত হই-Com माग्र मकन ममात्र ७क श्हेत्रा थारक, व्याञ्च थानिगरनत्र ক্ষণ বিধ্বংসী ক্লিবনে কি আহা হইতে পারে ? চঞ্চল পত্রান্ত **मश्नाश क्लाविस्त्र नाम कण छत्र शत्रमाशू जाममाश न हे हहे जा** থাকে, তাহার স্থায়িববিষয়ে কাহারও কি বিশান আছে?

স্বকর্মবশতঃ সর্বজন্থ প্রভবাপ্য রে।
বিজ্ঞানমপাবিদ্বান্যঃ কথং শোচতি বান্ধবান্। ১০০।
ব্রহ্মাপ্তকে টয়োঃ নটাঃ সৃষ্টরো বহুশো গতাঃ।
শুষ্তি সাগরাঃ সর্বে কৈবান্থা কণজীবিতে ॥১০১॥
চলপত্রান্থলয়ামুবিক্ষবৎ কণভঙ্গুরং।
আয়ুস্তাজতাবেলায়াং কন্তত্র প্রত্যয়ন্তব ॥১০২॥
দেহী প্রাক্তনদেহোপ্যকর্মণা দেহবান পুনঃ।
তংদহোপ্যেন চ পুনরেবং দেহঃ সদান্মনঃ ॥১০৩॥
বথা তাজতি বৈ জীর্ণং বাসো গৃহ্লাতি মৃতনং।
তথা জীর্ণং পরিত্যক্ষা দেহী দেহং পুনর্নবং ॥১০৪॥
ভজত্যেব সদা তত্র শোকস্যাবসরঃ কুতঃ।
আন্মান শ্রিয়তে জাতু জারতে ন চ বর্ষতে ॥১০৫॥
বড় ভাবরহিতোহনন্তঃ সত্যবিজ্ঞানবিগ্রহঃ।
আনক্ষরপো বুদ্ধাদিসাক্ষী লরবিবর্জিতঃ। ১০৬॥

এক এব পরো ছাত্ম। ইন্থিতীয়ঃ সমন্তিতঃ।

ইত্যান্থানং দৃদ্ধ জাত্মতালোকং কুরু ক্রিয়াং॥
তৈলজোন্যাঃ পিতৃর্দেইনুৎপৃত্য সচিবৈঃ সই।
কুত্যং কুরু মধা ন্যায়মন্ত্রনিভঃ কুলনন্দন!॥১০৮॥
ইতি সঘোধিতঃ সাক্ষাদ্ভর্ননা ভরতস্তদা।
বিস্ক্র্যাজ্ঞানকং শোকং চক্রে স বিধিবৎক্রিয়াং॥
গুরুণোক্তপ্রকারেণ আহিতাগ্রেম্থা বিধি।
সংক্ত্য স পিতৃর্দেইং বিধিদুক্টেন কর্মনা।॥১১০।
একাদশেহহনি প্রাপ্ত ব্রাহ্মনান্ বেদপার্গান্।
ভোক্রামান বিধিবজ্জনাহথ সহস্রনাঃ॥১১১।
উদ্দিশ্য পিতরং ভত্র ব্রাহ্মনান্ত্রাহ্মরাণি চ॥১১২।
অবসৎ স্বগৃহে তত্র রাম্যেবাহ্মনিস্ত্রন্।
বিশির্থেন সহ ভ্রাতা মন্ত্রিভিঃ পরিবারিভঃ॥১১৬।

প্রাক্তন দেছ কত কর্ম বশতঃ অংশার দেছান্তর সম্প্র হয়—এ
দেহান্তর ক্রত কর্ম-প্রাহ দার। প্ন: পুনর্কার দেহান্তর প্রাপ্তি
চইয়া পাকে, স্তরাং আত্মা দেহ-সংসর্গ পরিভাগে করেন না।
১৯৮৯ ৭০ ১৮ ১৯০ ১০০ ১০১ ১০২ ১০৩। যেকপ
মনুষ্যারা জীর্গরের পরিভাগে করিয়া নৃতন বন্ধ পরিধান করে,
করেণ আত্মান জীর্গ দেছ ভাগে করিয়া নৃতন দেহান্তর প্রহণ
করেন। আত্মার মৃত্যু বা জন্ম, বৃদ্ধি বা ছাস কিছুই হয় না
যেহেতু তিনি সর্কাপ্রার বিকার রহিত এবং অপরি চিছ্র মহিমা—
সভ্য-জানমন্ত্র আনন্দ স্বরূপ এবং যাবং প্রাণিদিগের জন্তঃকরণভ্তিত্র সদ্সাধু দির সাক্ষী, অবিনাশী ও অন্থিটায়। ছে বংব !
স্প্রিদহন্তিত এক আ্যানেক দৃঢ্তর্রপে বিদিত হইয়া শোক

পরিত্যাগ কর এবং সময়োচিত কার্য্যাস্থানে তৎপর হও। হে
ধর্ম পরারণ! অমাত্যগণের সমভিব্যাহারে তৈল-দ্রোণী ছইতে
রাজ-দেহ উদ্ধান করিয়া দাহাদি কার্য্যের উদ্যোগ কর। ভরত
নিজগুরু বশিষ্ঠ দেবের জ্ঞানগার্ভ উপদেশ অবণে জ্ঞান লাভ
করিয়া অজ্ঞান জনিত পোক পরিত্যাণ করিশেন। অনন্তর
সায়িক ক্ষজ্রিদিগোর বিধানামুলা র পিতৃদেহ সংস্কার করিয়া
একাদশ দিবদে শত সহত্র বেদপারগ ব্রাহ্মণদিগকে ভোজন
করাইদেম এবং পিতার পারতিক স্থোক্ষেশে ব্রাহ্মণগণকে বহুপরিমাণে ধন, গোসহত্র, নানা জ্ঞানদি ও রত্নাভরণাদি প্রদান করিয়া বশিষ্ঠ শক্ষম ও ক্তিপর মন্ত্রী কর্তৃক
পরিস্থত হইরা ভরত স্বর্গতে বাস করিতে লাগিলেন ।১০৪।

রামেহরণ্য প্রয়াতে সহ জনকস্কৃত।
লক্ষ্মণাভ্যাং স্কুযোরং মাডা মে রাক্ষমীব
প্রদহতি হৃদয়ৎ দর্শনাদেব সদ্যঃ।
গচ্ছাম্যারণ্যমন্য ছির্মতিরখিলং

দূরতোহপাদ্য রাজ্যং রামং সীতাদমেতং স্মিতক্লচিরমুখং নিত্যমেবান্নদেবে ॥১১৪॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে অযোধ্যাকাতে সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

১০৫। ১০৬। ১০৭। ১০৮। ১০৯! ১১০! ১১১। ১১২। ১১৩।
ভ্রাত্ বৎসল ভরত অযোধ্যা ভবনে বাস করিয়া রাজ কার্য্য
পরিত্যাগ করিলেন, প্রত্যুত অনবরত চিন্তা করিতেন যে,
রাক্ষসীর ন্যায় কৈকেয়ীকে দর্শন করিয়া আমার হুদয় দয়
ছইভেছে, অভএব এস্থানে বাস করিব না—অদ্যই রাজ্য

পরিত্যাগ পূর্ব্বক রাম সীতা ও লক্ষ্মণ যে বনে গমন করিরা-চ্নে সেই বনে গমন করিরা ছির চিত্তে ও সহাস্য বদনে সীতার সহিত শীরামচন্দ্রের চরণ সেবা করিব। ১১৪।

> ইতি জীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অযোধ্যাকাতে সপ্তমোহধ্যারঃ।

অফমো ২ধ্যায়ঃ

শ্ৰীমহাদেব উবাচ।

বলিকো মুনিভিঃ সার্দ্ধং মক্ত্রিভিঃ পরিবারিভঃ।
রাজ্ঞঃ সভাং দেবসভাসন্ধিভামবিশদ্বিভূঃ ॥১॥
ভত্রাসনে সমাসীনশ্চভুমুথ ইবাপরঃ।
আনীয় ভরতং তত্র উপবেশ্য সহামুক্তং ॥২'।
অত্রবীদ্বনং দেশকালোচিভমরিক্দমং।
বৎস! রাজ্যেইভিষেক্ষ্যামস্ত্রমদ্য পিতৃশাসনাৎ।।
কৈকেষ্যা যাচিতং রাজ্যং ত্বদর্থে পুরুষর্যভ!।
সত্যসন্ধো দশর্থঃ প্রতিজ্ঞায় দদৌ কিল ॥৪॥

অভিষেকো ভবর্দ্য মুনি ভিদ্মান্তপূর্বকং।
তচ্ছুত্বা ভরতোহপ্যাহ মম রাজ্যেন কিং মুনে।। ৫॥
রামো রাজাধিরাজশ্চ বয়ং তলৈয়েব কিন্ধরাঃ।
খঃ প্রভাতে গমিষ্যামো রামমানেতুমঞ্জদা।।৬॥
আহং যৃয়ং মাতরশ্চ কৈকেয়ীং রাক্ষদীং বিনা।
হনিষ্যাম্যধুনৈবাহং কৈকেয়ীং মাতৃগন্ধিনীং ॥৭॥
কিন্তু মাং নো রঘুশ্রেষ্ঠঃ স্ত্রীহন্তারং সহিষ্যতে।
ভচ্ছেভুতে গমিষ্যামি পাদচারেণ দশুকান্॥৮॥

অনন্তর কুলগুরু বশিষ্ঠদেব মুনিগণ এবং কতিপয় রাজ মন্ত্রী সমজিব্যাহারে দেবসভা সদৃশ স্থাদৃশ্য রাজসভা মধ্যে প্রবেশ করিয়া দ্বিতীয় কমল্যোনির ন্যায় আসনে উপবেশন করিলেন এবং ভরত ও শক্রমকে আনয়নানন্তর সেই স্থানে উপবেশন করাইয়া দেশকালোচিত বচনাবলী বিন্যাস করিতে আরম্ভ করিলেন—হে বৎস ভরত! অদ্য ভোমাকে স্বর্ণীয় মহারাজের আজামুসারে যোবরাজ্যে অভিবিক্ত করিব; হে পুরুষর্বভ! কৈকেয়ী ভোমার নিমিত্ত মহারাজের নিকট রাজ্য প্রথিনা করিয়াছিলেন, সত্য প্রতিজ্ঞ রাজ্য দশর্থ পূর্বনি প্রভিজ্ঞাবশবর্তী হইয়া সমস্ত রাজ্য ভোমাকে প্রদান করিয়ালিক, এক্সণে সমুপত্তিত মুনিগণ যথাবিধি সন্ত্রোজারণ পূর্ব্বক

অভিষেক কার্য্য সম্পাদন করুন। ভরত মহর্ষির বাক্য প্রবণ করিয়া কহিলেন, হে গুরো! রাজ্যে প্রয়োজন নাই—আমরা রাজ্যধিরাজ প্রীরামের দাস, অতএন তাঁহার দাসত্ব কার্য্য দ্বারা এই অসার দেহকে পবিত্র করিব, হে মহর্ষ্থে! আগামি প্রভাতে আমি মাতৃগণ এবং সমুপস্থিত শ্বিষাণ সমভিব্যাহারে আপনাকে অপ্রসর করিয়া প্রীরামের প্রত্যানয়নার্থ বনগমন করিব, কৈকেয়ীকে সমভিব্যাহারে লইবার কথা দূরে থাকুক প্রত্যুত এই দণ্ডেই সেই রাক্ষসীর প্রাণসংহার করিব—মাতৃসমন্ধের গোঁরব রক্ষা করিব না। ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬। ৭। কিন্তু ইহাও বিবেচনা করিতেছি যে, প্রীহত্যা করিলে প্রীরাম আমাকে প্রীচরণে স্থান দিবেন না, যাহাহতক আপনারা আগামন করুন বা না করুন, আমি শক্রমকে সমভিব্যাহারে লইয়া আগামি দিবসেই পদসঞ্চারণ দ্বারা দণ্ডকারণ্য গমন করিব।৮। রযুকুল প্রদীপ প্রীরামচন্দ্র যতদিন প্রত্যাগমন না

শক্তপুদহিতন্তুর্ণং যুয়মায়ান্ত বা নবা। রামো যথা বনে যাতন্তথাইহং বলকলায়রঃ ।।।। कनपूनक्ठाहातः भक्षप्रनिहेत्व। सूरन !। ভূমিশায়ী জটাধারী যারদ্রামে। নিবর্ততে ॥ ০॥ ইতি নিশ্চিতা ভরতক্ষীমেবাৰতক্ষিবান্। সাধু সাধিতি তং সর্ফো প্রশশংস্কু দান্বিতঃ ॥১১ ততঃ প্রভাতে ভরতং গচ্চত্তং সর্ফাদৈনিকাঃ। অনুজ্গাঃ সুমত্ত্রণ নোদিতাঃ সাম্কুজরাঃ ॥.২৮ কৌশল্যাদ্যা রাজদারা বশিষ্ঠ প্রমুখা ছিজাঃ। চাদরত্যে ভুবং দর্কে পৃষ্ঠতঃ পাশ্ব তোইগ্রতঃ ॥১৬ নিবেদ্যোপায়ননের এ ভরত্স সমন্ততঃ ॥ ১৯॥ শ্সিবেরপুরং গড়া গঙ্গাকুলে সমন্তঃ। উবাস মহতী সেনা শক্রম্পরিচোদিতা।।১।।

ক্রিবেন, তাবৎ কাল আমি শত্রুত্বর সহিত জ্ঞাী বল্কল ধারণ নফল মূলাদি ভক্ষণ ও ভূমি শ্যার শ্য়ন করিয়া সেই जदनः मरक्षांचे फिन्नभूष्ठ कवित । २ । ३० । छदछ धरेक्रभ ক্ষ্মানন্তর মেনাবলম্বন ক্রিলে সমুপস্থিত সভাবর্ষেরা উংহাকে বারম্বার সাধ্বাদ প্রদান করিতে লাগিলেন। ১১। প্রদিন প্রত্যুষ সময়ে ভরতকে বনাভিমুখ প্রস্থানোদ্যত দেথিয়া সুমায় কর্তৃক আদেশিত হস্তাপ্র স্থানাভিত সেমা সমুদর, কৌশ্লা প্রভৃতি রাজন্মহিষীগণ ও বশিষ্ঠ প্রভৃতি ছিজ্ঞাণ মহোংসৰ শোলাহল ছাগ দশ্দিক প্ৰতিশ্বনিত ক্রমানন্ত্র ভরতের অগ্র পৃষ্ঠ ও পার্ম দেশ সমাক্ষাদিত ক্রিয়া অন্নগমন করিতে আরম্ভ করিলেন ১২। ১৩। শক্রয় পরিধাকত দেন: দকল শৃঙ্গবের পুর সমীপবর্ত্তী ভাণিরখী কুলে উপস্থিত হল্যা ঐ দিবস সেই স্থানে বাস করিলেন।১৪।

•আগতং ভরতং শ্রুত্বা গুলঃ শক্ষিত্যানসঃ। মহত্যা সেন্যা সাৰ্দ্ধমাগতো ভরত: কিলঃ।।১৫।। পাপং কর্ত্ন বা ষাতি রামস্যাতিদিতাতানঃ। গত্বা তদ্দ্রং ভেরং যদি শুদ্ধন্তরিব্যতি॥১॥ গঙ্গাং নো চেৎ সমাকুষ্য নাবন্তিষ্ঠন্ত সায়ুধাঃ। জ্ঞাতয়ো মে সমায়তাঃ পশ্যন্তঃ সর্বতো দিশং ॥১৭ ইতি সর্বান্ সমাদিশা গুছো ভরতমাগতঃ। উপায়নানি সংগৃহা নিবিধানি বছুন্যপি ॥১৮॥ প্রবিষা জ্ঞাতিভিঃ সার্দ্ধং বছাভিবি বিধাযুধিঃ।

চ डालाधिदाक ७ इक (लाक मूर्थ-- मरेमना खद्राख्द मग्र-গমন বার্তা প্রবণ করিয়া সংশয়িত চিত্তে জাতিবর্গকে আদেশ করিলেন —হে বন্ধুগণ বৈধিকরি ভরত শ্রীরামের অনিফ্রাচরণ নিমিত্তই সদৈন্যে বনগমন করিভেছেন। যাহা ছউক এক্ষণে নিক্টবত্তী হইলেই ভরতের হৃদয়ভাব অবগত হইব, যদি তাঁহার পবিত্র হৃদয় বুঝিতে পারি তাহা হুটলে গ্রাপার-গমনে কোন বিয়াচরণ করিব না, নচেৎ তোমরা শস্ত্রাদি ধারণ পূর্ব্বক সাংগ্রামিক নে কারোহণ করিয়া সাবধানে চতুদ্দিক অবলোকন করতঃ তদীয় সৈন্যগণের গলপপারগমনে বিদ্ব করিবে। ১৫। ১৬। ১৭। অনন্তর গুহক বিবিধাক্সধারী বহু সংখাক জ্ঞাতিবৰ্গের সহিত উপস্থিত হুইয়া বত্বিধ উপসার প্রদানানন্তর ভাবত ও শক্রয়কে অবনত মন্তক দ্বারা প্রণাম করিলেন। চীরাম্বর জটামুকুট্ধারী নংজলধর শ্রাম ভরত কতিপর মন্ত্রিগণের সন্থিত আসনে উপবেশন করিয়া সাতিশয় শোকসহকারে সতত 'রাম' 'রাম' এই শব্দ উচ্চারণ করিতেছিলেন, সুতরাং বাহ্নজান-শক্তির অভাব বশতঃ স্মাগত গুছককে জানিতে পারিলেন না, গুছক ভরতকে ভাদৃশাবহাপর দেখিয়া কহিলেন, হে সংধ! আমি গুহক দৃষ্ট্বা ভরতমাদীনং সামুজং সহ মন্ত্রিভি:।

চীরাম্বরং ঘনশ্যামং জটামুকুটধারিণং ।২০।

রামমেবানুশোচন্তং রামরামেতি বাদিনং।

ননাম শিরসা ভূমো গুলোহাহিমিতি চারবীং।২১।
শীঘু মুপ্রাপ্য ভরতো গাড়মালিঙ্গ্য সাদরং।

পূক্তীহনাময়মব্যগ্রাং স্থায়মিদমন্ত্রবীং ।২২॥
ভ্রাভন্তং রাঘ্যেণ ত্র সমেতঃ স্মবস্থিতঃ।

রামেণালিঙ্গিতঃ সাত্রনিয়নেনামলাজ্বনা।।২০।

ধন্যোহসি কুতকুত্যো সি যজুরা পরিভাষিতঃ।

বামো রাজীবপ্রাক্ষো লক্ষণেন চ সীত্রা ।২৪॥

যত্র বামস্যা দৃষ্টস্তর মাং নয় স্কুরত!।

সীহুরা সহিতো যত্র স্থাস্তদর্শয়স্ব মে ॥২৫॥

হং রামস্য প্রির্থমা ভক্তিমানসি ভাগ্যবান্।

ইতি সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য রামং সাঞ্রবিলোচনঃ॥২৬

উপস্থিত হইরাছি। ১৮। ১৯। ২০। ২১। তরত প্রবণমাত্র প্রণত গুছকের মস্তক ভূমি হইতে স্বরং উত্তোলন করিয়া গাঢ়ালিজন পূর্বক তাঁগাকে পরম সাদরে অনামর' জিজ্ঞাসা করিয়া কহিলেন, হে ভাঙঃ! এ জগতে তোঁগাকেই কেবল পন্য ও ক্রতার্থ বোধ করিতেছি, যেহেতু বিমলান্তঃকরণ শ্রীরাম কর্তৃক সজল নয়নে অবলোকিত ও আজামূলম্বিত বাহ-গাল দারা সাদরে আলিজিত হইরাছ এবং সীতা ও লক্ষনণ সহিত প্রীরামকে বন্ধভাবে সম্ভাষণ করিয়াছ। ২২। ২৩। ২৪। বাহা হউক, হে সংখ! তুমি তাঁহাকে যে স্থানে দর্শন করিয়া-ছিলে সেই স্থানে আমাকে লইয়া চল, এবং রাজীবলোচন রাম সীতাদেবীর সহিত যে স্থানে শয়ন করিয়াছিলেন সেই স্থান আমাকে দর্শন করাও, হে ভাতঃ! তুমি অতি ভাগ্যবান,

গুহেন সহিতন্তর যত্র রামঃ স্থিতে। নিশি।

যযৌ দদর্শ শায়নস্থলং কুশসমান্তৃতং ॥ ২৭ ॥

সীতা ভরণসংলগস্থানিন্তুভিরঞ্জিতং।

দুঃখসন্তপ্তস্কারী আ সাতৃ ক্লিনকনিনা।

প্রামাদে রত্নপর্যান্ধে কোমলান্তরণে শুভে ॥২৯॥

রামেণ সহিতা শোতে সা কথং কুশবিন্তরে।

সীতা রামেণ সহিতা দুঃখেন মম দোষতঃ ॥৬০॥

বিজ্ঞাং জাতোংশ্মি কৈকেন্যাং পাপরাশিসমানতঃ

মন্মিন্তনিদং ক্লেশং রাম্স্য প্রমাত্মনঃ॥৩:॥

যে ভাগাবলে শ্রীরামর প্রতি একান্ত ভক্তি ও তাঁহার প্রিয়-বন্ধুত্ব লাভ করিয়াছ। ভরত এইরূপ কাত্রোক্তি করিতে করিতে সজল নয়নে জীরামকে স্মরণ করতঃ গুহকের সহিত সীতা রামের নিশাশয়ন প্রদেশে গমন করিয়া কুশসমাস্ত এবং জানকীর রত্নাভরণাঙ্কিত শ্রীরামের শ্রনস্থান অবলোকন করিয়া অতি সন্তপ্ত চিত্তে বিশাপ করিতে লাগিলেন। २৫। ২৬।২৭।২৮। হা বিধাতঃ ! তোমার মনে কি এই ছিল ? যিনি পুর্বের অযোধ্যা ভুবনস্থ প্রাসাদোপরি বিরাজিত এবং স্থ:কা-মল আন্তরণ শোভিত স্থচাক রত্নপর্যাঙ্গে শ্রীরামের সহিত শয়ন করিতেন, দেই কোমলান্ধী জনক রাজকুমারী এক্ষণে কুশনিশ্বিত শ্যাায় শ্য়ন করিতেছেন, বিধাতাকেই বা কি বলিব—আমি এইফ্রে পরমাত্র। রামের ক্লেশের কারণ হইয়াছি। হা বিধে! আমাকে ধিণ-বেখেতু পাশিরদী কৈকেয়ীর গর্ভে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি ৷ অহো! মহাত্মা লক্ষাণের জন্ম অদ্য সফল হইল, যেহেতু তিনি অরণ্য মধ্যেও সহর্ষচিত্তে জীরামের অনুগমন করিতেছেন; আপনি যদি জ্বীমামচন্দ্রের দাসগণের দাসের দাসত্ব স্থীকার করিতে পারি,

আহাহতি সফলং জন্ম লক্ষাণদা মহাত্মনঃ।

বামমেৰ সদান্তেতি বনস্থমপি ক্ষাণীঃ॥৩২॥

আহং রামসা দাসা যে তেষাং দাসদা কিঙ্কাঃ।

যদি সাং সফলং জন্ম মুন্ন ভূরায় সংশায়ঃ॥৩৩॥

ভাতর্জানাসি যদি তহুও গ্রুম মনাখিলং।

বত্র তিষ্ঠতি তত্তাহং গচ্চাম্যানেতুমঞ্জদা॥৩৮॥

গুহল্ শুদ্ধক্ষদায়ং জ্ঞাত্বা সম্মেচমত্রনীং।

দেব! ত্বেব ধনোক্ষি যদ্য তে ভক্তিরীদৃশী॥৩৫॥

রামে রাজীবপত্রাক্ষে সীতায়াং লক্ষ্মণে তথা।

চিত্রকুটাজিনিকটে মন্দাকিন্যাবিদ্রতঃ॥৩৬॥

মুনীনামাশ্রমপদে রামস্থিতি সাল্লঃ।

জানকা সহিতো নন্দাং স্থমান্তে কিল প্রভুঃ॥৩৭

তত্ত্র গচ্ছামহে শীঘুং গঙ্কাং তর্ত্র্মিহাই দি।

ইত্রক্তা ত্রিতং গত্বা নাবঃ পঞ্চশতানি হ॥৩৮॥

ইত্রকা ত্রিতং গত্বা নাবঃ পঞ্চশতানি হ॥৩৮॥

ভাষা হইলে আমার জন্ম দফল হইবে। ২৯।৩০। ৩১।
৩২।৩০। ভরত এইরপ বল বিলাপানন্তর গুছককে কছিলেন,
হে ভ্রাভঃ! প্রীরামচন্দ্র এক্ষণে কোন্ স্থানে অবস্থিতি করিছেছেন তুমি যদি বিদিত থাক ভাষা হইলে ব্যক্ত কর, আমি
এই দণ্ডেই তাঁছাকে আনমনের নিমিত্ত গমন করিব। ৩৪।
চণ্ডালাধিপতি গুছক ভরতকে পবিত্র হৃদয় জানিরা সম্মেহ
বচনে কছিলেন, হে দেব! রাজীবলোচন রাম মীতা ও
লক্ষণের প্রতি ভোমার যেরপে ভক্তি অনুভব করিছেছি
তদ্যরা বোধ হয় তুমিই এ জগতে একমাত্র ধন্য। যাহা হউক
এক্ষণে প্রীরামচন্দ্র দীতা ও লক্ষ্মণের সহিত চিত্রকুট্ট পর্বত
সমীপদ্তী গলাতীরস্থ তপোবনে পরমানন্দে বাস করিছেছেন ।৩৫।০৬।৩৭। হে সংখা আদ্য আমরা সকলেই সে
স্থানে গমন করিয়া আত্মাকে পবিত্র করিব, আপনি গলা-

দ্মানহৎ দদৈন্দ্য তর্ত্বং গঙ্গাং মহানদিং।
স্বয়মেবানিনায়ৈকাং রাজনাবং গুহস্তদা॥৩৯॥
মারোপ্য ভরতং তত্ত্ব শক্তঘ্নং রামমাতরং।
বশিষ্ঠং চ তথাহনাত্র কৈকেয়ীং চানাযোষিতঃ॥৮০॥
তীর্বা গঙ্গাং যথো শুঘু ভরদ্বাজাশ্রমং প্রতি।
দূরে স্থাপ্য মহাদৈন্যং ভরতঃ সানুজো গথো॥৮১॥
আশ্রমে মুনিমানী ং জলহুমির পাবকং!
দৃষ্ট্বা ননাম ভরতঃ সান্ধাঙ্গাম্য সোনিরাটু।
প্রান্তা দাশরথিং গ্রীত্যা পূজ্য়ামান মৌনিরাটু।
প্রান্তা দাশরথং দুষ্ট্বা জটাবক্কলধারিণং॥৪৩॥
রাজ্যং প্রশানতন্তেহদ্য কি মত্হক্কলাদিকং।
আগতোহনি কিম্পুং তুং বিপিনং মুনিসেবিতং॥

ভরণার্থ নৌকারোহণ করুন। গুছক ভবতের সহিত এইরপ কণোপাকথনানন্তর সৈন্য গণের গঙ্গাতরণার্থ জ্ঞাতিবর্গ দারঃ পঞ্চশত নৌকা আনয়ন করাইয়া ভরভের নিমিত্ত স্থান্থ এক রাজ্যোগ্য নৌকা আনয়ন করিলেন ৩৮। ৩৯।

অনস্তর ভরত, শক্রয়, কেশিলা ও বশিষ্ঠদেব গুহকানীত নৌকায়—,কৈকেয়ী ও অনান্য রাজমহিবীগণ অপর নৌকায় আরোহণকরিয়া ভাগিরথী তরণানন্তর সত্তর মহর্ষি ভরদা-জের আশ্রমাভিমুথে প্রস্থান করিলেন। তপোবনের অনতিদ্ধে মহাসৈন্য স্থাপন করিয়া ভরত ও শক্রম্ম উভয়ে মুনি সরিধানে গমন করিলেন।৪০ ৪১। অনস্তর ভরত প্রজ্ঞালিত পাবক সদৃশ ভেজস্বী ভরদ্বাজ্ঞকে আশ্রমোপবিষ্ট অবলোকন কলিয় সাফাল্ল প্রণিপাত করিলেন। ৪২। মেনিব্রত্থারী মহর্ষি ভর্মান্ত সমাগত জটাবল্কলগারী দাশর্থি ভরতকে যথাযোগ্য অভ্যর্থনানন্তর কুশল জিজাদা করিয়া কহিলেন, হে যুবরাজ ! তুনি পিতৃদত্ব রাজ্যের শাসনকার্য্য পরিত্যাগ্য করিয়া জটা লরদাজনতঃ শ্রুত্বা ভরতঃ সাংশ্রুতাশার স্থিতঃ ॥৪৫॥

তথাপি পৃচ্চদে কিঞ্জিত্তদনুগ্রহ এব মে।

কৈকেয়া যৎক্তং কর্মা রামরাজ্ঞাবিঘাতনং ॥৪৬॥

বনবাদাদিকং বাপি ন হি জানামি কিঞ্চন।

ভবৎপাদযুগং মেহদ্য প্রামাণং মুনিসহম!॥१९॥

ইত্যুক্ত্বা পাদযুগলং মুনেঃ স্পৃষ্টার্ভুমানসঃ!

জাতুমহিদি মাং দেব! শুদ্ধো বাশুদ্ধ এব বা ॥৪৮॥

মম রাজ্ঞান কিং স্থামিন্! রামে তির্ভৃতি রাজ্ঞানি

কিন্ধরোহহং মুনিশ্রেষ্ঠ রামান্ত্রদায় শাশ্বতঃ ॥৪৯॥

অতো গত্বা মুনিশ্রেষ্ঠ রামান্য চরণান্তিকে।

পতিত্বা রাজ্যাদন্তারান্ সমর্প্যাত্তিব রাঘবং ॥৫০॥

অভিষেক্ত্যে বশিষ্ঠাল্যৈ পৌরজানপদেঃ দহ।
নেষ্টেই যোধ্যাং রমানাথং দাদঃ দেবেই তিনীচবৎ ॥
ইত্যুদী রিজমাকর্ণ্য ভরত্য্য বচো মুনিঃ।
আনিষ্ক্য মূর্দ্ধ্যবঘুায় প্রশিশংস সবিস্মায়ঃ ॥ १২॥
বৎস! জ্ঞাতং পুরৈবৈত্ত্যুদ্ধিং জ্ঞানচক্ষুষা।
মা শুচস্তং পরো ভক্তঃ শ্রীরামে লক্ষ্মণাদিপি ॥ ৫৩॥
আতি যং কর্ত্তুমি ভামি সবৈন্যুদ্য তবানঘ!।
অদ্য ভুক্ত্যু সবৈন্যস্তং শ্বো গন্তারামসন্মিধিং ॥ ৫৪॥
যথা জ্ঞাপয়তি ক্রাংল্ডথেতি ভরত্যেই ব্রবীৎ।
ভরদ্ধান্ত স্থাত্যু মৌনী হোমগৃহে স্থিতঃ ॥ ৫৫॥
দধ্যে কামদুঘাং কামবর্ষিণীং কামদো মুনিঃ।
অসুক্তি কামধুক্ সর্বাং যথাকামমলৌকিকং ॥ ৫৬॥

বল্কল ধারণ পূর্বক তপান্ধি জন সেবিত গছন কানন মধ্যে অন্য কি হেতু আগমন করিয়াছ ? ভরত ভরদাজের বাক্য শ্রবণ করিয়া সজল নয়নে কহিলেন, হে মহর্ষে ! আপনি সর্বভেত্তর অন্তর্যামী, তপঃপ্রভাবে আপনার অবিদিত কিছুই নাই, এই ক্ষণে মাপনি আমাকে গে কিঞ্ছিৎ জিজ্ঞাসা করিতেছেন ভদ্দারা কেবল অনুতাহ প্রকাশ হইতেছে। যাহাহতক আপনার প্রষ্ঠ-ব্যের প্রত্যুক্তর প্রদান করিতেছি। হে মহর্ষে! আপনার পাদ-স্পর্শ করিয়া কহিতেছি যে, রামচন্দ্রের রাজ্যাভিষেক কার্য্যে কৈকেয়ী যেরূপ বিঘাচৰণ করিয়াছেন এবং শ্রীরামচন্দ্র চতুর্দ্দশ বর্ষ কালের জন্য সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত বনবাসী হইয়াছেন, এই সকল বিষয়ে আমি অনুমাত্র বিদিত ছিলাম না, হে মহা-ক্রন! এ সম্বন্ধে আমি দোষী—কি নির্দ্ধোষী আপনি সকলই জানিতেচেন, হে প্রভা! জীরামচন্দ্র সত্ত্বে আমি কিরাজ্যভার গ্রহণ করিতে পারি ? যেহেতু আমি জীরামচন্দ্রের নিত্য দাস, হে মুনিস্ত্রম! এইক্ষণে মনোমধ্যে এইরূপ স্থির করিয়াছি যে, বনন্ধ্যে আমি জ্রীমচরণে পতিত হইয়া রাজ্যভার প্রদান

পূর্ব্বক বশিষ্ঠদেব, পূর্বাসিগণ ও জনপদর্দ্ধের সহিত মহাসমারোহে তাঁহাকে অভিধিক্ত করিয়া অযোধাগায় প্রভাগামন
করিব এবং অতি নীচ দাসের ন্যায় আজ্ঞানুবভী হইয়া
রাজাধিরাজ শ্রীরামচন্দ্রের চরণ সেবা করিব।৪০৪৪।৪৫।৪৬।
৪৭।৪৮।৪৯।৫০।৫১। অনন্তর মহর্ষি ভরদ্বাজ সম্প্রেণালক্ষন
পূর্ব্বক ভরতের মন্তকাস্তাণ করিয়া বিশ্বর সহকারে বভতব
প্রশংসা করিয়া কহিলেন, হে বৎস! পূর্ব্বেই আমি জ্ঞানচক্ষ্
দারা এই সকল ভবিষাদ্বতান্ত বিদিত হইয়াহি, অতএব শোক
পরিহ্যাগ কর, তুমি লক্ষ্মণ অপেক্ষা শ্রীরামের ভক্ত ।৫২।৫৩।
হে দাশর্থে! আমার জাশ্রমে অবস্থিতি করিয়া আতিথা
গ্রহণ কর — সৈন্যাণ সমন্তির্বাহারে অদ্য এস্থানে ভোজনাদি কার্যা সম্পাদন করিয়া আগ্যামি দিবসে বাম সন্নিধানে
গমন করিবে, অনন্তর ভরত তথান্ত বলিয়া মুনিবাক্যে সন্মত্
হইলেন। মুনিশ্রেষ্ঠ ভরদ্বাহুও তৎক্ষণাৎ হোমগৃছে প্রবেশানস্তর মৌনব্রতাবলম্বন পূর্বক জলস্পার্শ করিয়া কাম-প্রস্বিনী

ভরতন্য সদৈন্যা যথেকং চ মনোরথং। .
তথা ববর্ষ সকলং ভৃপ্তান্তে সর্ববৈদনিকাঃ ॥৫৭॥
বিনিষ্ঠং পূজ্ য়িত্বাত্রে শাস্ত্রদূষ্টেন কর্মাণা।
পশ্চাৎ সদৈনাং ভরতং কুর্পয়ামাস যোগিরাট্॥৫৮
ট্ মিরা দিনমেকন্তু আসুর্টেম স্বর্গসিরিতে।
ভাতবাদ্য পুনঃ প্রাতভ্রমাজং সহামুজঃ।
ভরতন্ত কৃতানুজ্ঞঃ প্রথমে রামসরিধিং॥৫৯॥
চিত্রকূটমন্ত্রপাপ্য দূরে সংস্থাপ্য দৈনিকান্।
রামসন্দর্শনকাজ্কী প্রথমে ভরতঃ স্বয়ং॥৬০॥
শত্রুমে স্থমজ্রেণ গুহেন চ পরত্রপঃ।
তপস্বিয়ণ্ডলং সর্বাং বিচিন্থানো ন্যবর্ত্ত॥৬১॥
অদৃন্ধীরামভ্রনমপৃচ্ছদ্বিমণ্ডলং।
কুত্রান্তে দীত্রা সার্বাং লক্ষাণেন রঘৃত্রমঃ॥৬২॥

কামধেনুকে চিন্তা করিতে লাগিলেন। অনন্তর মুনিবরের তপঃ-প্রভাবে কামধেরু আধানন করিয়া সদৈনা ভরতের উপ-ভোগ যোগ্য অভি মনোহর অলে কিক বস্তু সকল প্রদান করিলেন। ৫৪। ৫৫। ৫৬। যোগিরাজ ভরদ্বাজ প্রথমতঃ বশিষ্ঠ দেবের যথা শাস্ত্র পূঞা করিলেন, অনস্তর মদৈন্যে ভরতকে নানা-বিধ উপভোগাই দিব্য বস্তু প্রদান করিয়া পরম সন্তুষ্ট করিলেন। ৫৭/৫৮) ভরত পরিজন সমভিব্যাহারে স্থর্গদদৃশ মনোহর তপো-বনে একদিন বাস করিয়া প্রদিন মহর্ষির অভিবাদনানস্তর তদীয় অনুজ্ঞানুদারে রামদলিধানে গম্ম করিলেন। অনস্তর চিত্রকুট-পলতে আবোহণ করিয়া কিঞ্চিদ্রে সৈনা স্থাপন পূর্বক শক্রন্ত স্ত্ৰমন্ত্ৰ ও গুছক সমভিব্যাহারে রামদর্শনাভিলাধে গমন করিলেন। ভবত কিয়ক্র প্যান্ত গমন করিয়া কেবল সাদিমগুল দেখিতে লাগিলেন জীরামের বাসভবন কাছারও দৃষ্টিগোচর ২ইল না, স্তঃ: হতাশ হইয়া প্রতিনিবৃত হইলেন। ভর্জ কিয়দূর প্রতি-নিবৃত ছইয়া ঋষিগণকৈ পুন জিজ্ঞানা করিলেন, হে তপোধনগণ! সীতা ও লগাণের সৃষ্ঠিত জীরামচন্দ্র কোনু স্থানে বাদ করিতেছেন ৫৯। ৬০।৬১ ৬২। ব্রধিশণ কহিলেন—চিত্রকুট পর্বতের পশ্চাৎ

উচুরত্থে গিরেঃ পশ্চাদ্গঙ্গায়াথ উত্তরে তটে। বিবিক্তং রামসদনং রম্যথ কানন্মগুতিং। ৬৩। সফলৈরাম্রপন্দৈঃ কদলীখগুসমৃতং।

(কদলীযশুমগুতিং ইত্যাপি পাঠঃ)
চম্পকৈঃ কোবিদারৈশ্চ পুলাগৈর্বিপুলৈন্তথা ॥৬৪॥
এবং দর্শিত মালোক্য মুনিভির্ত্তরতোহগ্রতঃ।
হর্ষাদ্যযৌ রঘুশ্রেষ্ঠ ভবনং মান্ত্রিণা সহ। ৬৫॥
দদর্শ দূরাদতিভাস্তরং শুভং
রামসা গেহং মুনিরন্দসেবিতং।
রক্ষাগ্রসংলগ্রন্থকলাজিনং
রামাভিরামং ভরতঃ সহামুক্তঃ॥ ৬৬॥

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে অযোধ্যাকাণ্ডে অফ্ট্রোহ্ধ্যায়ঃ।

ভাগিরথীর উত্তর ভীরে প্রীয়ামচক্র বিচিত্র কাননমণ্ডিত রমণীয় অতি নির্জন বাদ ভবন প্রস্তুত করিয়াছেন, যাহার চতুনিকৈ কাল পনস এবং কদলা প্রভৃতি তরুগণ কলভরে অবনত হুইছা বিচিত্র শোভা সম্পাদন করিতেছে এবং চম্পক কোবিদারক পুরাষ প্রভৃতি পাদপগণ পুম্পিত হুইয়া চতুন্দিক আমোদিত করিতেছে। ৬০। ৬৪। অনন্তর ভরত পরমানন্দিত হুইয়া পরিজন সমভিবাাহারে মুনির্গণ সন্দর্শিত প্রীয়ামভবনাভিমুথে গমন করিলেন, ভরত শক্রমের সহিত কিয়ন্দর সামনানগুর মুনিজন সমাকীর্ণ জাতি সমুজ্জল প্রীয়ামভবন অবলোকন করিয়া সমীপত্র বৃক্ষশাখা সংলগ্ধ প্রীয়ামভবন অবলোকন করিয়া সমীপত্র বৃক্ষশাখা সংলগ্ধ প্রীয়ামের বন্ধল ও মুয়চম্মাদি সকল সজল নমনে বারস্থার অবলোকন করিছে লাগিলেন। ৬৫। ৬৬।

ইতি শ্রীমদধাণ স্থরামায়ণে উমাম হেশ্বর সহাদে অব্যোগাকাতে অপ্তমোহধারঃ।

নবমোইধ্যায়

श्रीमश्रामत डेवाछ।

অথ গড়াইশ্রমপদসমীপং ভরতোমুদা। দীতারামপদৈযুক্তিং পবিত্রমতিশোভনং ॥১॥

স তত্র বজ্ঞান্ধুশবারিজ্ঞাঞ্চিতপ্রজাদিচিক্সানি পদানি সর্বতঃ।
দদর্শ রামসা ভুবোহতিমঙ্গলান্যাচেক্টরৎপাদরজঃ স সামূজঃ॥২॥
আহো স্থান্যোহহমমূনি রামপাদারবিন্দান্ধিতভূতলানি।
পশ্যামি যৎপাদরজোবিমৃগ্রং
ব্রহ্মাদিদেবৈঃ শ্রুতিভিন্চ নিত্যং।। ।।
ইতন্ত্রেতপ্রমরসাপ্লুতাশরো
বিগাতচেতা রঘুনাথভাবনে।

সমন্তব ভরত প্রমাজ্ঞানে সীতা-রামের চরণচিক্ন শোভিত স্থচাক্র পবিত্র জীশ্রম পদে গমন করিয়া ভবন সমীপে প্রজবজ্ঞাকুশ
পারাদিরপ শ্রীরামের পাদচিক্ন দর্শন করিলেন । অনন্তর শ্রীরামের
পাদচিক্রিত ধূলি সমূহোপরি পতিত হইরা গাত্র লুগুণ করিতে ২
চিপ্তা করিতে লাগিলেন । অহো! প্রকাদি দেবগণ ও শ্রুতিগণ |
বাঁহার চরণধূলিকণা সভাত অবেষণ করিয়া থাকেন, সেই
শ্রীবামের চরণারবিন্দ চিক্তি ভূমিতল দর্শন করিয়া আমরা অতি
বন্য হইলাম। ভরত প্রেমরস পরিপ্রিভাস্কঃকরণে এই সকল
নানা প্রকার চিস্তা করিতে শ্রীরামের আশ্রমে উপস্থিত হইয়া

আনন্দজাশ্রমপিতন্তনান্তরঃ
শনৈরবাপাশ্রমসিয়িধিং হরেঃ ॥৪॥
স তত্র দৃষ্ঠা রঘুনাথমান্থিতং
দূর্ববাদলন্যামলমায়তেক্ষণং ।
জটাকিরীটং নববল্কলাম্বরং
প্রসম্মবক্তবং তরুণারুণদৃষ্টিং ॥৫॥
বিলোকয়ন্তং জনকাত্মজাং শুভাং
দৌমিত্রিণা সেবিতপাদপদ্ধজং ।
তদাভিদুদ্ধাব রঘৃত্তমং শুচা
হর্ষাচ্চ তৎপাদযুগং ত্রাগ্রহীৎ ॥৬॥
রামস্তমাক্ষন্য স্থদীর্ঘবাহ্যদৌভ্যাং পরিষ্ক্র্য সিবিঞ্চ নেত্রকৈঃ
জলৈরথাক্ষোপরি সন্ন্যবেশরৎ
পুনঃপুনঃ সম্পরিষম্বজে বিভুঃ ॥৭॥

আনলাশ্রপূর্ণ লোচনে শ্রীরামকে দর্শন করিলেন। বালারুণ সম্জ্বল নবতুর্বাদলশ্যাম ভটাবন্ধলধারী শ্রীরামচক্ত আসনোপবেশন
করিয়া সহাস্যাবদনে দীতাদেবীর প্রতি আয়ত দৃষ্টিপাত করিতেতেন, শুভ লক্ষণ-সম্পন্ন লক্ষ্মণ দাসের ন্যায় তাঁছার চরণ দেবা
করিতেছিলেন, এমন সময়ে ভরত শোকাবেগ বশভঃ ক্রতবেগে গমন করিয়া পরমানন্দ শ্রীরামের চরণত্তর ধারণ করিলেন। ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । অন্তরে শ্রীরাম স্থদীর্ঘ বাহ্ত-বৃগল
দ্বারা ভরতকে আলিজ্বানন্তর নয়নজ্বল ব্র্গণরারা অভিষক্ত

অথ তা মাতরং দর্কাঃ দমাজগ্মু স্থরাম্বিতাঃ।
রাঘবং দ্রুফু কামাস্তাস্ত্রার্তা গোর্যথা জলং ॥৮॥
রামঃ স্থমাতরং বীক্ষ্য দ্রুফু প্রথার পাদরোঃ।
ববন্দে সাক্রফ সা পুজ্মু লিক্ষ্যাতীব দুঃখিতা॥৯॥
ইতরাক্ষ্য তথা নত্বা জননী রঘুনন্দনঃ।
ততঃ সমাগতং দৃষ্টা বশিষ্ঠং মুনিপুক্ষবং ॥১০॥
সাফাঙ্গপ্রাণিপত্যাহ ধন্যোহন্দীতি পুনঃপুনঃ।
যথাহ মুপবেশ্যাহ দর্কানেব রঘু দহঃ॥১১॥
পিতা মে কুশলী কিম্বা মাং কিমাহাতিছুঃখিতঃ
বশিষ্ঠস্তমুবাচেদং পিতা তে রঘুনন্দন!। ১২॥

স্বিয়োগাভিতপ্তায়া স্থানের পরিচিত্রন্।
রাম!রামেতি সীতেতি লক্ষণেতি মমার হ ॥১৩।
শ্রুণা তৎকর্ণশূলাভং গুরোক্রচনমঞ্জনা।
হা হতোহস্মীতি পতিতো রুদন্রামঃ দলক্ষণঃ ॥
ততোহনু রুকুত্বঃ দক্রা মাতরুদ্ধ তথাপরে।
হা তাত! মাং পরিত্যজ্ঞা রুগভোহিদি ঘূলাকর॥১৮
অনাথোহিমি মহাবাহো মাং কো বা লালয়েদিতঃ ।
বিশেষ্ঠঃ শান্তবচনৈঃ শময়ামাদ তাংশুচং।
ততো মন্দাকিনীং গস্বা স্থাতা তে বীতকল্মবাঃ॥১৭।
রাজ্ঞে দত্বর্জনং তত্ত্ব দর্কে তে জলকাজ্জ্কিলে।
পিণ্ডান্নিক্রাপয়ামাদ রামো লক্ষ্মণসংযুতঃ॥১৮॥

করিয়া স্বকীয় ক্রোড়ে উপবেশম করাইলেন, এবং স্লেছ সহ-কারে বারমার আলিমন করিতে লাগিলেন। ৭। অমস্তর তৃষিত গাভীগণ জল দর্শন করিয়া যেরপ জতবেগে গমন করে. কৌশল্যা প্রভৃতি মাতৃগণও শ্রীরামকে দর্শন করিবার নিমিত তদ্রপ ত্রানিত ছইয়া দেই স্থানে উপত্তিত ছইলেন।৮। খ্রীরাম নিজ জ্বননী কৌশলাকে দর্শন করিবামাত্র সহসা গাতোখান করিয়া তাঁছার পদ-যুগল বন্দনা করিলেন। অতি হুঃথার্তা কৌশল্যাদেধীও জ্রীরামকে জালিঙ্গন করিয়া রোদন করিতে লাগিলেন। ৯। অনন্তর বঘুনন্দন অন্যান্য মাতৃগণকে গুণাম করিয়া স্মাগত বশিষ্ঠদেবকৈ দর্শনানম্ভর সাষ্টাঞ্চ প্রণিপাত করিলেন এবং বাবস্থার কছিলেন, হে গুরো! আমি ধন্য হইলাম যেহেতৃ এই বিজন বনে আপনার দর্শন লাভ করিলাম। অনন্তর রঘৃত্তম রামচন্দ্র গুরুজ্বন ও অন্যান্য পরিজনদিগকে যথাযোগ্য উপবেশন করাইয়া জিজাসা করিলেম।১০।১১। আমাদিগের পিতৃদেব কুশলে অণ্ছেন ? ছঃথার্ত হইয়া আমাকে কি কোন আদেশ করিয়াছেন ? বশিষ্ঠনেব কহিলেন, ছে রঘুনলন ! রাজা

দশরণ ভোমার বিরহে অতি হঃথিত হইয়া গদাদচিত্তে হা রাম! হা লক্ষ্মণ । হা দীতে! এই প্রকারে বহু বিলাপ করত মৃত্যুম্থে পতিত হইয়াছেন। ১২। ১০। শ্রীরাম ও লক্ষ্মণ কর্ণশূল সদৃশ গুরু বাক্য সহসা প্রবণ করিয়া হা হতোত্মি! এইরূপ বহু বিলাপ ও রোদন করত ভূতলে পতিত হইলেন।১৪। শ্রীরামের রোদন ধরনি শ্রবণ করিয়া রাজমহিষীগণ ও অন্যানা সকলে উচ্চেল্ফরে রোদন করিতে লাগিলেন। অনস্তর সীতা ও শক্ষ্মণ বহুতর বিলাপ করিতে আরম্ভ করিলেন, হা তাত দয়ানিধে! আমাদিগকে পরিভ্যাগ করিয়া আপনি কোথায় গমন করিলেন? হা মহারাহো! আমরা এইক্ষণে অনাথ হইলাম, আমাদিগকে অন্য কোন্ ব্যক্তির রক্ষা করিবেন ? ৷১৫৷১৬৷ অনস্তর বিশিষ্ঠদেব শান্ত বাক্যমারা সকলের শোকশান্তি করিলেন। কিয়ৎক্ষণ পরে সকলে সমবেত হইয়া মন্দাকিনী গমনানন্তর স্নাত ও ক্বতাহ্নিক হইয়া মৃতমহারাজের ভৃপ্তি সাধনার্থ জলাঞ্জি প্রদান করিলেন।

ইঙ্গলিফলপিণ্যাকর চিতামাধুসংপ্লা তান্।
বরং বদয়াঃ পিতরস্তদয়াঃ স্মৃতিনোদিতাঃ। ১৯॥
ইতি দুঃখাশ্রুপূর্ণাক্ষঃ পুনঃ স্নাত্বা গৃহং বযৌ।
সর্বের রুদিত্বা স্ফ চরং স্নাত্বা জগ্ম স্তথাশ্রেমম্ ॥২০॥
তিমিংস্ক দিবদে সর্বের উপবাসং প্রচক্রিরে।
ততঃ পরেদ্বার্কিমশে স্নাত্বা মন্দাকিনীজলে॥২১॥
উপবিষ্টং সমাগম্য ভরতো রামমন্ত্রবীৎ।
রাম রাম মহাভাগ! স্বাত্মানমভিষেচয়॥২২॥
রাজ্যং পালয় পিত্রান্তে জ্যেষ্ঠ স্থং মে পিতা তথা।
ক্ষিত্রিয়াণ্যময়ং ধর্মো যৎপ্রজাপরিপালনং ।২ ।॥
ইক্রা যক্তৈর্বিভবিধঃ পুল্লানুৎপাদ্য তন্ত্রে।
বাজ্যে পুতুং সমারোপ্য গমিষাদি ততো বনং ।২৪

ইদানীং বননাসস্য কালো নৈব প্রসীদমে।

মাতৃমে ছুদ্ভং কিঞ্চিৎ স্মর্জুং নাই সি পাহি নং॥
ইত্যুক্ত্বা চরণো ভাতৃঃ শিরস্যাধায় ভক্তিতঃ।
রামস্য পুরতঃ সাক্ষাদপ্তবিষ্পৃতিতো ভূবি ২৬।
উপাপ্য রাঘবং শীঘু মারেইপ্রাক্তেং তিভক্তিতঃ।
উবাচ ভরতং রামঃ ক্লেহার্দনয়নঃ শ নৈঃ॥২৭॥
শুণু বৎস! প্রবক্ষ্যামি ত্রোক্তং যত্তথৈব তং।
কিন্তু মামত্রবীততো নব বর্ষাণি পঞ্চ চ॥ ২৮।
উমিত্বা দপ্তকারণো পুরং পশ্চাৎ সমাবিশ।
ইদানীং ভরতায়েদং রাজং দক্তং ময়া থিলং।২৯।
তহঃ পিত্রৈর স্ব্যুক্তং রাজাং দক্তং ভবৈব হি।
দপ্তকারণ্যরাজ্যং মে দক্তং পিত্রা তথৈব চ।।৩০॥

শ্রীরাম ও লক্ষ্মণ সেই স্থানে ইম্বুদী ফল ও পিণ্যাক দ্বারা পিও নিম্মাণ করিলেন এরং আমিরা এক্ষণে যেরূপ অল্ল ভক্ষণ করি তেছি পিতৃলোক সেইরূপ অন্ন ভোজন ককন এট কথা বলিয়া মধুমিত্রিত ঐ পিগু মৃতমহারাজকে প্রদান করিলেন।১৭।১৮।১৯ অনন্তর পুনর্বার স্নান করিয়া তুঃখাঞাপূর্ণ নয়নে দৃষ্টিপাত করতঃ গৃহে প্রভাগমন করিলেন, অদ্য পরিজনগণও কিঞ্ছিৎ কাল রোদন করিয়া পুনঃ স্থানান্তর গৃহে প্রত্যাগমন করিলেন, এবং বশিষ্ঠদেবের আজ্ঞাত্মারে ঐ দিবস ঐ স্থানে সকলে উপবাস্ত বিশ্রাম করিলেন। প্রদিন প্রাতঃকালে বিমল গলাজলে স্নানাদি কুড়া সমাপন করিয়া জ্ঞীরামচন্দ্র উপবেশন করিয়াছেন এমন সময়ে ভরত সেই স্থানে আলমন করিয়া কহিতে আরম্ভ করি-লেন—হে মহাভাগ! আপনি বৌবরাজ্যে অভিধিক্ত হউন, আপনি আমাদিগের জ্যেষ্ঠ অতএব পিতার ন্যায় পিতৃরাকা প্রতিপালন করা আপনারই সম্চিত কার্যা, হে ধর্মাত্মন্! প্রজা-পালনই ক্ষজিয়দিগের প্রধান ধ্যা—আপনি ধার্ম্মিক ক্খনই यक्षर्त्व भताबाक इटेर्जन ना ।२०।२५ । २२ । २७ । व्याभनात यहि

বনগমন নিতান্ত অভিমত হটয়া থাকে তাহাও ক্ষত্রির্দিগের ধর্ম, কিন্তু তাহার সময় বিশেষ নির্ণীত আছে—ছে মহাবাহে।। किकिए काल अङ्गाभानम, उन्विध यञ्जामा स्थान, এवर वर्णधाता রক্ষার্থ সম্ভানোৎপাদনাদিকার্য্য সমাধা করিয়া অনুরূপ সম্ভানে রাজ্য ভার প্রদান পূর্ব্তক বনগমন করিবেন। ২৪। এক্ষণে আপনার বনগমন করিবার সময় নছে, হে দ্যাময়! আপনি আমার প্রতি প্রদন্ন হইয়া কৈকেয়ীর অকার্যা স্মরণ করি-বেন না, হে প্রভো! আমাদিগকে রক্ষা করুন, ভরত এইরূপ কহিতে কহিতে ভক্তিপূর্বক শীরামের চরণযুগল মস্তকে ধারণ করিয়া সন্মুখে দশুবৎ পতিত হট্লেন। ২৫। ২৬। শ্রীরাম ক্ষেহ-সহকারে ভরতের মন্তকোত্তলন পূর্বক তাঁলাকে নিজ কোড়ে উপবেশন করাইয়া মৃত্সরে কহিলেন, বৎস। শ্রবণ কর তুমি যাহা কহিলে সকলই সভা, কিন্তু পিতা আমাকে আজ্ঞা করিয়াছেন যে, ভূমি চতুর্দশবর্ষ দণ্ডকারণ্যে থাস করিয়া অবোধাায় পুনরাসমন করিবে, আমি ভরতকে সমস্ত রাজ্য প্রদান করিলাম। অতএব পিতার স্পষ্ট অভিপ্রায় যে, তোমাকর্তৃক রাজ্য পালন ও আমা কর্তৃক দওকারণ্য রক্ষা হয়, পি তার ব'ক্য আমাদিগের শিরোধার্যা অতঃ পিতুর্বাচঃ কার্যামাবাভ্যামতিবত্নতঃ।
পিতুর্বাচনমূলজ্ব্য স্বতন্ত্রো যস্ত বর্ত্তে।।৩২॥
স জীবন্নেব মৃতকো দেহাবে নিরয়ং অজেৎ।
অস্মাদ্রাজ্যং প্রশাধি পূহি বয়ং দণ্ডকপালকাঃ।।৩২
ভরতস্ত্রবীদ্রামং কামুকো মূদ্রীঃ পিতা।
স্ত্রীক্রিতো ভাত্তদ্য উন্মত্রো যদি বক্ষ্যতি।
তং সত্যমিতি ন গ্রাহং ভাত্তবাকাং যথা সুধীঃ।
বাম উবাচ।

ন স্ত্রীজিভঃ পিতা ব্রয়ান্নকামী নৈব মূঢ়ধীঃ।
পূর্বাং প্রতিশ্রুতং তদ্যৈ সভাবাদী দদৌ ভয়াৎ।।
অসত্যাদ্রীতির্ধিকা মহতাং নরকাদপি।
কঁরোমীতাহমপ্যেতৎ সতাং তদ্যৈ প্রতিশ্রুতং॥

কথং বাচ্যমহং কুর্য্যামসত্যং রাঘবো হি সন্ ?।

ইত্যুদীরিতমাকর্ণ্য রামস্য ভরতো (পুরতো

ইত্যুদি পাঠঃ) হত্তবীৎ । ৩৬।

তথৈব চীরবদনো বনে বৎস্যামি স্বত্তত !।

চতুর্দিশসমাস্তং তু রাজ্যং কুরু যথা স্বর্থং । ৩৭।

রাম উবাচ।

পিত্রাদন্তং তবৈবৈতদ্রাজ্যং মহাং বনং দদৌ।

ব্যত্যয়ং যদ্যহং কুর্য্যামসত্যং পূর্কবিৎ স্থিতং ।

অহমপ্যাগমিষ্যানি সেবে তাং লক্ষাণো যথা।
না চেৎ প্রায়োপবেশেন ত্যজাম্যেতৎকলেবরং ।
ইত্যেবং নিশ্চয়ং কৃত্যা দর্ভানান্তীর্গ্য চাত্তপে।
মনসাপি বিনিশ্চিত্য প্রাগ্যুখোপবিবেশ সংগ্যা ৪০৪

ভরত উবাচ।

করিতে হটবে, যে ব্যক্তি পিতৃবাক্য উল্লেখন করিয়া স্থাধিনতা অবলাধন করে দেই ব্যক্তির জীবন নিতান্ত অকঞ্চিৎকর এবং মরণ হটলে অবলা উণ্চাকে নরকভোগ করিতে হয়। অতএব আমি সভপদেশ প্রদান করিতেছি—ভূমি রাজ্য শাসন কর। আমরা দশুকারণ্য রক্ষা করিব ।২৭:২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৬২ত কহিলেন হে প্রভো! আমাদিগের পিতা কামান্ধ ও স্তৈপ স্বরাং ভ্রান্তরদন্ধ, যদি উন্মৃত্ত হইয়া মহারাজ্য কোন কথা কহিয়া পাকেন আপনি ভাহা প্রমার্থ বলিয়া গ্রহণ করিবেন না। প্রভিতরা ভ্রান্ত জনের বাক্যা কথা বলিয়া গ্রহণ করিবেন না। প্রভিতরা ভ্রান্ত জনের বাক্যা কথন কি যথার্থ বলিয়া গ্রহণ করেন ও ।৩৩। জ্রীরাম কহিলেন হে ভরত। পিতা আমাকে রৈণতা বা কাম্কতা কিয়া মহান্তরার অধীন হইয়া বনগমনে অনুমতি করেন নাই। স্ত্যাচ্যুতি ভয় বশতই কৈকেয়ীকে পূর্ব প্রতিশ্রত বর্গয় প্রদান করিয়াছিলেন, যেহেতু মহন্যজ্বিয়া নরক অপেক্ষা অসভা ছইতে ভীত হইয়া থাকেন—আমিও পিতার নিকট তলাজ। প্রতিপালনে প্রতিশ্রত ইইয়াছি, হে বৎস।

রবুকুলে জন্মগ্রহণ করিয়। কিরূপে পূর্ব্ব প্রতিক্রান্ত অন্তর্গ করিব। ভরত জীরামের এইরূপ দারুণ বাক্য প্রবণ করিয়। কহিলেন । ৩৪। ৩৫। ৩৬। তে রব্বংশাবতংল! আনি আপনারণ প্রতিনিধি ছইয়া চতুদ্দশ্বর্ষ জটা—বরুল ধারর ও বনবাস করিব। আপনি পরম স্থাবে রাজ্য ভোগ করুন। ৩৭। রাম কহিলেন পিতা ভোমাকে রাজ্য ভ আমাকে অরগ্য প্রদান করিয়াছেন। যদি আমরা ইহার বৈপরীতা করি তাহা হইলেও পিতা মিথ্যা হইতে নিম্নৃতি পাইবেন না।৩৮। অনস্তর ভরত কহিলেন, হেরঘুনন্দন! আপনি যদি বনবাসে দৃচ্চ প্রতিজ্ঞ হইয়া থাকেন, তাহা হইলে আমিও লক্ষ্মণের ন্যার আপনার অফুগামী হইয়া চরণ সেবা করিব, ইহাতে আপনার অস্থামী হইয়া চরণ সেবা করিব, ইহাতে আপনার অস্থামী হইয়া চরণ সেবা করিব, ইহাতে আপনার করিব।৩৯। অনস্তর ভরত প্রমোপবেশনদারা এই শরীর পরিভাগি করিব।৩৯। অনস্তর ভরত প্রমোপবেশনে রতসক্ষম হইয়া আত্রপন্দ সন্তর্গ ভূতনে বিন্যস্ত কুশোপরি পূর্ব্বাস্য হইয়া উপবেশন করি-

জরতস্যাপি নির্দ্ধিকং দৃষ্ট্য রামোইতিবিম্মিতঃ। নেত্রান্তসংজ্ঞাং গুরবে চকার রঘুনন্দনঃ ॥ ৪১॥ একাত্তে ভরতং প্রাহ বশিষ্ঠো জ্ঞানিনাং বরঃ। বৎস! গুহুং শুণুদ্ধেদং মম বাক্যাৎ স্থুনিশ্চিতং ॥৪২ রামো নারায়ণঃ সাক্ষাদ্ত্রকাণা যাচিতঃ পুরা। রাবণস্য বধার্থায় জাতো দশর্থাত্মজঃ॥৪৩॥ যোগমায়াপি সীতেতি জাতা জনকনন্দিনী। শেষোহপি লক্ষণো জাতো রামমন্ত্রতি সর্বদা ॥৪৪ वातिनः इस्तकाभारत्र शिम्यान्ति न नःभावः। रैकटकरा। वत्रमानानि यनान्निष्ठुतन्त्रायनः ॥४०॥ मर्कर (मवक्रबर (म) (हरमवर म! छ। सर्वा ६ कथर ! ক্রমান্ত্রজাগ্রহং তাত। রামস্য বিনিবর্ত্তনে ॥৪৬॥

্লন 18০1 শ্রীরামচন্দ্র ভরতের আগ্রহাতিশয় দর্শনে অভি বিঅয়াপর হুইয়া বশিষ্ঠদেবকে নেত্র ভক্সি দারা সক্ষেত করিলেন। ৪১। জ্ঞানী শ্রষ্ঠ বশিষ্ঠদেব ভরতকে নির্জ্জন প্রদেশে আহ্বান করিয়া কছিলেন—হে বংস! অতিগুছা ব্লুৱান্ত আমার নিকট. প্রবণ কর।

শ্ৰীরাম সাক্ষাৎ বৈকুণ্ঠ নাথ নারায়ণ, রাবণ বধার্থ কমল-যোনি কউক প্রার্থিত হইয়া দশরথ প্রেছ জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন, যোগমায়াও দীতারূপে জনক গৃহে শরীর পরি-াহ করিয়াছেন, অনন্তদেব লক্ষ্মণ রূপে জন্মগ্রহণ করিয়। সর্কাণ শ্রীরামের অনুগমন করিতেছেন। ৪২। ৪৩। ৪৪। এক্ষণে ইহাঁরা সকলেই রাবন বধার্থ নিশ্চয় লক্ষায় গামন ^{ক্}রিবেন, কৈকেয়ী এ সম্বন্ধে যে সকল নিষ্ঠুর ব্যবহার করিয়া-ছেন সেদকল দেবতাদিগোর অভিমত কার্য্য নচেৎ ধর্মপরায়ণ কৈকেয়ী কিছেতু এরপ নিষ্ঠুর ব্যবহার করিবেন ? অভএব হে ভরত ! জীরামের প্রত্যানয়নার্থ আগ্রহাতিশয় ত্যাগা দিবসে আপনি যদি অযোধ্যায় আগমন না করেন, তাহা হইলে করিয়া পরিজন সমভিব্যাহারে অযোধ্যায় প্রতিনিবৃত্ত ছও। রাবণকে সমূলে উল্ল লিভ করিয়া শীতা প্রভ্যানমন

নিবর্ত্তস্ব মহাদৈনাত্রাভৃতিঃ সহিতঃ পুরং। রাবণং সকুলং হল্বা শীঘুমেবাগমিষ্যতি ॥१९॥ ইতি শ্রুতা গুরোকাক্যং ভরতো বিস্ময়াম্বিতঃ। গত্বা সমীপং রামস্য বিশ্বট্রোৎকুল্ললোচনঃ ॥৪৮॥ পালুকে দেহি রাজেন্দ্র! রাজ্যায় তব পূজিতে। তয়োঃ সেবাং করোম্যের যাবদাগমনং তব ॥৪৯॥ ইত্যুক্তা পাদুকে দিব্যে যোজয়ামাস পাদয়োঃ। রামন্য তে দদে। রামো ভরতায়াতিভক্তিতঃ ॥৫০॥ গৃহীত্বা পাদুকে দিব্যে ভরতো রত্বভূষিতে। রামং পুনঃ পরিক্রম্য প্রণনাম পুনঃ পুনঃ ॥৫১॥ ভরতঃ পুনরাহেদং ভক্ত্যা গদাদয়া গিরা। नवशक्षित्रभारत जू अथरम निवत्त यनि ?॥ ०२॥ নাগমিষাদি চেদ্রাম ! প্রবিশামি মহানলং। বাঢ়মিতোৰ তং রামো ভরতং সন্ধাৰ্ত্যুৎ ॥৫৩॥

করিবেন। ৪৫। ৪৬।৪৭: ভরত গুরুদেবের বাকা প্রবণা-নন্তর অতি বিষয়ে সহকারে জীরামের নিকট গমন করিয়া কহি-লেন, হে রাজেন্দ্র ! আপনি পরমার্চ্চনীর পাতুকাদ্বর আযাকে প্রদান করুন, আপনি যাবৎকাল প্রত্যাগমন না করিবেন ভাবৎকাল ঐ পাত্নকাদর সেবা করিয়া রাজ্যপালন করিব। ৪৮।৪৯। অনন্তর ভরত শীরামের চরণদ্বরে পাছকা যোজনা করিলেন, প্রীরাম ভরতের অভিভক্তি দর্শনে দাতিশয় প্রীত হইয়া পাত্রকাদ্র প্রদান করিলেন। ৫ । ভরত রত্নাদি ভূষিত দিবা পাছকা যুগল গ্রহণ করিয়া জীরামকে প্রদক্ষিণ পূর্বক পুনঃ পুনর্কার প্রণাম করিলেন, এবং ভক্তিগাদাদ বাকো কছিলেন, হে প্রভো! চতুর্দশবর্ষ সমাপ্তির অব্যবহিত পর আমি নিশ্চর অনলে প্রবেশ করিব। জীরাম তাঁহার প্রার্থনায় সমত হইয়া ভরতকে নির্ভ করিলেন । ৫১। ৫২। ৫১।

সদৈন্যঃ স বশিষ্ঠ-চ-শক্তপ্নসহিতঃ স্থীঃ।
মাতৃতিমন্ত্রিতিঃ সার্দ্ধং গমনায়োপচক্রমে ॥৫৪॥
কৈকেয়ী রামমেকান্তে ব্রুবমেত্রজ্ঞলাকুলা।
প্রাঞ্জলিঃ প্রাছ হে রাজ তবরাজ্যবিঘাতনং ॥৫৫॥
কৃতং ময়া ছুইটিয়া মায়ামোহিতচেতসা।
ক্ষমস্ব মম দৌরাজাং ক্ষমালারা হি সাধবঃ ॥৫৬॥
ডং সাক্ষাদ্বিফুরবাক্তঃ পরমাজা সনাতনঃ।
মায়ামানুষরূপেণ মোহয়স্থিলং ক্রগত।
উয়েব প্রেরিতো লোকঃ কুরুতে সাধসাধু বা॥৫৭॥

অনন্তর ভরত, বশিষ্ঠ, শত্রুত্ব, মন্ত্রিবর্গ, মাতৃগণ ও সৈন্যগণ কর্ত্তক পরিব্রত ছইয়া প্রত্যাগমনের উদ্যোগ করিলেন। ৫৪। কৈকেয়ী নির্জন স্থানে জীরামকে আহ্বান করিয়া ক্রভাঞ্জলি-পুটে কহিলেন, হে রাম ! আমি ডোমারই মায়ায় মুঝ হইয়া তোমার অহিতাচরণ করিয়াছি, এক্ষণে নিজ্ঞণে আমার পূর্বকৃত দেরিবাত্তা ক্ষমা করিতে হইবে, ক্ষমাশীল সাধু পুরুষেরা শক্রর প্রতিও ক্ষমা করিতে পরাবৃথ হয়েন না। । ৫৫। ৫৬। হে গুণাকর ! ডুমি সাক্ষাৎ পরমাক্ষা-সনাতন विक्र- जाय छन्यत्र, विक्रमृर्खि शालन कवित्रा मारामनूषा ऋत्न সমস্ত জাগৎকে মুগ্ধ করিতেছ। লোক সকল ভোমাকর্ছক প্রেরিভ হইরা স্থ ও অস্থ কার্য্য সমস্তই করিভেছে, এই বিশ্ব তোমারই অধীন স্কুতরাং অস্বতন্ত্র বশত স্বয়ং কি কেছ কোন কার্য্য করিতে পারে? যেমন স্থত্ত সরন্ধ কৃত্তিম পুত্তলিকা কুহক বাজির হত্ত চালনদারা হত্য করিয়া থাকে, ভজপ বহুরূপিণী माम (लामान्डे डेल्हान व्यक्षीन इरेग्रा वरे जरमान मरधा হত্য করিতেছে—হে প্রভো! দেবতাদিগের কার্য্য সিদ্ধার্থ ভোমাকর্ত্ক প্রেরিত হইয়া আমি অতি পাপ কার্য্য করিয়াছি: এক্ষণে বিশেষ রূপে অবগত ছইলাম যে তুমি দেবতা-দিগেরও বাধানাতীত পদার্থ, ছে বিশ্বেশ্বর ! ছে অনস্ত ! ছে জগরাণ! আমি ভোমাকে নমস্কার করি, আমাকে পূর্বাক্ত

বিশ্বনিষ্ঠিত বিশ্বন্ধ তন্ত্রং করোতি কিং? ।

যথা ক্রনিনর্ত্রকো নৃত্যন্তি কুহকেচ্ছয়া।।৫৮॥

স্বদ্ধীনা তথা মায়া নর্জকী বছরুপেনী।

স্বরৈব প্রেরিতাহং চ দেবকার্যং করিষ্যতা॥৫৯॥

পাপিষ্ঠং পাপমনসা কর্মাচরমরিক্দম!।

অদ্য প্রতীতোহিদি মম দেবানামপ্যগোচরঃ॥৬০॥

পাহি বিশ্বেশরানস্ত ! জগয়াথ! নমোহস্ত তে।

ছিল্পিদেহময়ং পাশং পুত্রবিত্তাদিগোচরং॥৬১॥

সক্ত্রানামলথজ্যেন স্থামহং শরণং গতা।

কৈকেয্যা বচনং শ্রুত্রারামঃ সন্মিত্রমত্রবীৎ॥৬২॥

যদাহ মাং মহাভাগে ন নৃতং সত্যমেব তং।

মর্রের প্রেরিতা বাণী তব বক্ত্রাদ্বিনির্গতা॥৬৩॥

দেবকার্যার্থসিদ্ধ্যর্থমত্র দোষঃ কুতন্তব ?।

গচ্ছ স্থং ক্রিদি মাং নিত্যং ভাবয়ন্তী দিবানিশং॥

পাপ হইতে পরিত্রাণ কর, হে ভগবন্! আমি তোমার শরণপার হইলাম—ভত্নজান রূপ আদি দ্বারা আমার ধন প্রাদি স্থেই রূপ রজ্জুকে ছিন্ন কর। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। প্রীরামচন্দ্র কৈকেয়ীর এই প্রকার জ্ঞানগার্ভ বাক্য শ্রহণ করিয়া সহাস্য বদনে কহিলেন—হে মহাভাগো! আপনি আমাকে যাহা কহিলেন ভাছা মিখ্যা নহে, সকলই সত্য—আমিই দেব কার্য্য সিদ্ধার্থ হুই সরস্বতীকে প্রেরণ করিয়া ছিলাম, তিনিই আপনার মুখ হইতে বহির্গত ইইয়া এই সকল অনর্থ ঘটনা করিয়াছেন, এ বিষয়ে আপনার দোষ কি? হে মাতঃ! আমার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিছে হইবে না একণে গমন করুন, কিন্তু নির্মাম হইয়া আমাকে প্রকালিক ভল্তিবিলাভ হইবে। আমি সকল পদার্থে সমজ্ঞান করিয়া ধারি, এই জগতে আমার ছেয় রা প্রিরপদার্থ কিছুই নাই, যেরগ

সর্বতি বিগতরে হা মন্তক্ত্যা মোক্ষণে হ চিরাধ।
আহং সর্বতি সমদৃক ছেষ্যো বা প্রিয় এব বা ॥৯৫
নান্তি মে কশ্পকল্যের ভজতোহমুভজাম্য হং।
মন্মায়ামোহিত ধিয়ো মামম্ব! মনুজাকৃতিং ॥৯৬॥
সুখদু:খাদ্যমুগতং জানন্তি ন তু তত্ত্বতঃ!
দিন্ত্যা মদ্যোচরং জ্ঞানমূৎপক্ষং তে ভবাপহং ॥৬৭॥
স্মরন্তী তিষ্ঠ ভবনে লিপাদে ন চ কর্মান্তিঃ।
ইত্যুক্ত্বা সা পরিক্রম্য রামং সানন্দ্রিস্ময়া ॥৬৮॥
প্রান্ম শতশো ভূমো যথো গেহং মুদান্বিতা!
ভরতন্ত্ব সহামাত্যৈমাতৃতিগুরুণা সহ ॥৬০॥
আযোধ্যামগমন্তীযুৎ রামমেবামুচিন্ত্য়ন্।
পৌরজানপদান্ সর্বান্যোধ্যায়ামুদারধীঃ॥৭০॥

পুজয়িষা যথা রামং গদ্ধপুশাক্ষতাদিভিঃ।
রাণেপচারৈরখিলৈঃ প্রত্যহং নিয়তব্রতঃ ॥৭২॥
কলমূলাশনো দান্তো ক্সটাবল্কলধারকঃ।
অধঃশারী ব্রহ্মচারী শক্রম্মহিতক্তদা ॥৭৩॥
স্থাপয়িষ্বা যথান্যায়ং নিদ্যোমং যযৌ য়য়ং।
তব্রসিংহাসনে নিত্যং পাদুকে স্থাপা ভক্তিতঃ ॥৭১
রাজকার্য্যাণি সর্বাণি যাবস্তি পৃথিবীতলে।
তানি পাছকয়োঃ সম্যক্ নিবেদয়তি রাঘবঃ ॥৭৪॥
গণয়ন্ দিবসান্যের রামাগমনকাজক্ষয়া।
স্থিতো রামার্পিতমনাঃ সাক্ষাদুক্ষমুনির্যথা ॥৭৫॥
বামস্ত চিত্রকুটান্তো বসন্মুনিভিরারতঃ।
সীতয়া লক্ষণেনাপি কিঞ্ছিৎকালমুপাবসং ॥৭৬॥

আন হয় না, আমার ও মনোরত্তি তদ্দপ জানিবেন; কিন্তু যে ব্যক্তি আমাকে অনন্য চিত্তে সতত ভজনা করে আমিও তাহার প্রতি অসুগ্রহ করিয়া থাকি, হে মাতঃ যাহারা আমারই মায়া-বিমোহিত হইয়া আমাকে প্রাকৃত মনুব্য বিবেচনা করে তাহারা আমাকে যথার্থ রূপে জানিতে পারে

। যাত্যহউক অদৃষ্ট বশতঃ আপনার তত্তজান উৎপন্ন
ভ্রাছে পুনর্জ্জন্ম হইবে না। এক্ষণে অযোধ্যার গমন
করিয়া আমাকে দতত স্মরণ পূর্বেক গৃহে অবস্থিতি ককন,তাহা
হইলে সংসার বন্ধন হইতে মুক্ত হইবেন। কৈকেগী জীরামের
সত্তপদেশ বাক্য শ্রবণ করিয়া আনন্দ ও বিস্ময় সহকারে
প্রদক্ষিণ করতঃ জীরামকে অবনত মন্তকে প্রণান করিয়া
অযোধ্যা গমনে ক্রতসংকল্প হইলেন।

সহামতি ভরত জীরামকে চিন্তা করতঃ অমাত্য মাতৃগণ ও বশিষ্ঠদেব সমভিব্যাহারে সত্তর অবোধ্যার গমনানন্তর পুর-বাসিগণ ও জনপদ বর্গকে তথায় রক্ষা করিয়া স্বরং নন্দি- প্রামে গমন করিলেন, এবং কেকরী নন্দন সেই ছানে রাজসিংহাসনোপরি রামপাছকা-যুগল ভক্তি পূর্বক রক্ষা করিয়া গন্ধ পূজা অকত ও অন্যান্য রাজভোগ্য উপচারদ্বারা জ্রীরামপূজার ন্যায় প্রতিদিন পাছকা পূজা করিতে আরম্ভ করিলেন। এইরপে ভরত শক্তয়ের সহিত জটা বল্কল ধারণ, ফল মূল ভক্ষণ, ভূমিশয়ন ও ব্রক্ষচর্য্যানুষ্ঠান করিয়া দিনাভিপাত করিতে লাগিলেন। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭০। এবং সমন্ত পৃথিবা রাজ্যের যাবতীয় কার্যা প্রতিদিন রামপাছকা সন্ধিননে নিবেদন করিয়া রাজপ্রতিনিধির ন্যায় ক্ষরং নির্বাহ করিছেন। দিবসের অধিকাংশ সময় সাক্ষাৎ ব্রক্ষর্যির ন্যায় শ্রীরাম্বভক্তে মনোমিবেশ করিয়া জ্রীরাম্বর প্রভ্যাগ্যমন দিন গণনা করিতেন।

এ দিকে জীরামচন্দ্র মুনিগণ সমারত ছইয়া দীতা ও লক্ষণের সিছিত চিত্রকূট পর্বতে কিঞ্ছিৎ কাল বাদ করিতে লাগি- নাগরাশ্চ সদা যান্তি রামদর্শনলালসাং।
চিত্রকুটস্থিতং জ্ঞাড়া দীতয়া লক্ষ্মণেন চ ॥৭৭॥
দৃষ্ট্বী ভজ্জনসন্থাধং রামস্তর্ত্তীক তং গিরিং।
দশুকারণগিমনে কার্য্যমপ্তান্তি রয়ন্। ৭৮॥
অন্ধণাৎ দীতয়া জাত্রা হাত্রেরাশ্রমমৃত্তমং।
সর্বিত্র স্থেসন্থানং জনসন্থাধবজিতং ॥৭৯॥
গড়া মুনিমুপাদীনং ভাসয়ন্তং তপোবনং।
দশুবৎপ্রণিপত্যাহ রামোহহ্মভিবাদয়ে!।৮০।
পিতুরাজ্ঞাং পুরক্তা দশুকানহ্মাগতঃ।
বনবাসনিষেণাপি ধনোহহং দর্শনান্তব ॥৮১॥
শুজ্রামাস বিধিবস্তক্তা পরময়া মুনিং।।৮২॥

लেन, नशतवामीशन ठिजकृतेष बीतामहत्यतक व्यवशं इरेशा প্রতিদিন তর্দর্শনাভিলাষে সেইস্থানে গমনাগমন করিতে আরম্ভ করিল। করিল। শ্রীরামচন্দ্র চিত্রকূট পর্ব্বতে নগর বাদীগণের সমাগম দর্শনে মছর্ষিগণের আশ্রমোপরোধ সম্ভাবনা এবং নিশাচর পুর্ন দণ্ডকারণ্য গমন নিভান্ত প্রয়োজন বিবেচনা করিয়া চিত্র-কূট পরিত্যাগ পূর্বাক সীতা লক্ষ্মণের সহিত অতি নির্জ্জন এবং সুধবাসতের অতি মুনির আশ্রমে গমন করিলেন । ৭৪। ৭৫। ।৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। অনন্তর ব্রক্ষোপাসনা নিরত তপোধন জ্যোতি স্বরূপ পরম তেজ্ঞাস্থি মছর্ষিকে দণ্ডবং প্রাণাম করিয়া কহিলেন, হৈ মহর্ষে! অভিবাদন করি, আমি রামচন্দ্র পিভার আজারুসারে বনবাস ছলে দণ্ডকারণা আগামন করিয়াছি, যাহাহতক আদ্য আপুনার দর্শনে ধন্য হইলাম। মহর্বি জীরাম বাক্য অবণ মাত্র জীরামকে পরম বিষণু জানিয়া পরমা ভক্তি महकारत यथाविधि शृंखा कतितन धवः वना कन मूनानि হারা অভিথ্য করিয়া আসনোপবিষ্ট শ্রীরামকে পরম সন্তোয সহকারে কহিলেন, হে রাম! আমার অনসূরা নামী ধর্ম-পরায়ণা বধীয়দী ভার্য্যা স্থদীর তপ ছারা অন্তঃপুর মধ্যে

বনৈঃ ফলৈঃ ক্তাতিথ্যমুপ্ৰিন্টং রঘ্তমং।

সীতাং চ লক্ষ্ণাঞ্চৈৰ সন্তুটো বাক্যমন্ত্ৰবীৎ ॥৮৩॥
ভাৰ্যনা মেহতীৰ সমৃদ্ধা হাল্প্ৰেতি বিশ্ৰুতা।
তপশ্চরন্তী স্কৃচিরং ধর্মজ্ঞা ধর্মবিৎসলা ॥৮৪॥
অন্তুত্তিতিতাং সীতা পশুত্তবিনিস্ক্দন!।
তথেতি জানকীং প্রাহ্ রামো রাজীবলোচনঃ। ৮৫
গচ্ছ দেবীং নমক্তা শীঘুমেহি পুনঃ শুভে।
তথেতি রামবচনং সীতা চাপি তথাহকরোৎ॥৮৬।
দশুবৎপতিতামগ্রে সীতাং দৃষ্ট্বাহতি ক্র্ট্রীঃ।
অনুস্রা স্মালিঙ্কা বিহুদে। সীতেতি সাদরং ॥৮৭।
দিব্যে দদে কুগুলে দ্বে নির্মিতে বিশ্বকর্মণা।
দুকুলে দ্বে দদে তলৈ নির্মালে ভক্তিসংযুতা ॥৮৮
অঙ্করাপঞ্জ সীতায়ে দদে নিব্যং শুভাননা।
নত্যক্ষান্তেইক্রাগেণ শোভা ত্বাং ক্মলাননে ॥৮৯

কালাভিপাত করিভেছেন জানকা সেই স্থানে গমন করিরা তাঁহাকে অবলোকন করুন। প্রীরামচন্দ্র মুনিবাক্যে সন্মান্ত হইয়া জানকীকে কহিলেন, হে শুভে! তুমি অন্তঃপুর বাসিনী দেবী অনস্থাকে প্রণাম করিয়া শীস্ত এইস্থানে প্রভাগাম্মন কর। সীতা প্রীরামের বচনামুসারে অন্তঃপুর্মধ্যে গমন করিয়া অনস্থাদেবীকে দশুবৎ প্রণাম করিলেন, অনস্থা সীতাকে দশুবৎ পতিত দেখিয়া সহর্গালিজনানন্তর সাদরে কহিলেন, বংলে সীতে! গাতোগান কর।৮০।৮১।৮২।৮০।৮৪।৮৫।৮৬।৮৭। অনন্তর অনস্থা বিশ্বকর্মা নিশ্বিত কনক কুণ্ডলহয় নির্মাণ ভ্রকল যুগল এবং দিবা অঙ্গরাগ দ্রবা সকল ভক্তি সহকারে জানকীকে প্রদান করিয়া কছিলেন, হে জানকি! এই অঙ্গরাগ লেপন করিলে কম্মিন কালে ভোমার সেন্দর্য্য হানি হইবে না, হে কম্মাননে! পাতিব্রতা অবলয়ন

পোতিত্রতাং পুরস্কৃত্য রামমন্থেছি জানকি ! ।
কুশলী রাঘবো যাতু ত্বা সহ পুনগৃহং ॥৯০
ভোক্সরিত্বা যথা ন্যায্যং রামং দীতাসমন্থিতং
লক্ষ্মণঞ্চ তদা রামং পুনঃ প্রাহ ক্কৃতাঞ্জলিঃ ॥৯১
রাম ! ত্বেমব ভুবনানি বিধায় তেষাং
সংরক্ষণার স্থরমানুষ্তির্যাগাদীন ।

করিয়া স্থামির অনুগ্রমন কর, জীরামচন্দ্র নিরাপদে বনবাস ছইতে নিরত হইয়া তোমার সহিত পুনর্পার গৃছে গ্রমন করুন। অনস্তর মহর্ষি জীরাম, সীতা ও লক্ষ্মণকে যথাযোগ্য ভোজন করাইয়া জীরামকে রুভাঞ্জলি পুটে কহিলেন, হে রাম! তুমি অধিল তুবন নির্মাণ করিয়া তাহার রক্ষার নিমিত্ত বারস্থার দেহান্ বিভর্ষি ন চ দেহগুণৈর্বিলিপ্ত-স্বত্যে বিভেত্যখিলমোহকরী চ মায়া ॥ ১২

हेि श्रीमन्ध्राञ्चतामात्राम केमामट्रभ्रत मः वाटन व्यट्याधाकाटल नवटमारुधातः।

দেব দেহ, মনুষা দেহ, ও তির্যাগাদি দেছ ধারণ করিতেছ, কিন্তু কাম ক্রোধাদি রূপ দেহ গুণ তোমাকে স্পর্লাভ করিতে পারেনা এবং অধিল মোহকারিণী মারাখিলোমা হইতে ভীভ হইয়া দূরে পলারন করে। ৮৮। ৮১। ১০। ১১। ৯২।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামারণে অবোধাকাতে উমামহেশ্বর সন্থাদে নবমোহধ্যারঃ।

অরণ্য কা ওম্।

প্রথমোইধ্যায়ঃ

অথ তত্ত্ব দিনং স্থিয়া প্রভাতে রঘুনন্দনঃ।
নাড়া মুনিং সমামত্ত্য প্ররাণারোপচক্রমে ॥১॥
মুনে ! গচ্চামহে সর্বের্গ মুনিমগুলনপ্রিতং।
বিপিন্ং দগুকং যত্ত্ব ডুমাফ্রাভুমিহার্হ সি ॥২॥
মার্গপ্রদর্শনার্থায় নিষ্যানাক্তপ্রুমহ সি ।
ক্রড়া রামসা বচনং প্রহস্যাত্তিম হাষশাঃ॥৩॥
সর্বিস্য মার্গদ্রকী ত্বং তব কো মার্গদর্শকঃ।
তথাপি দর্শয়িষ্যন্তি তব লোকানুসারিণঃ॥৪॥
ইতি শিষাান্ সমাদিশ্য স্বয়ং কিঞ্ছিত্তমন্থগাছ।
রামেণ বারিতঃ প্রীত্যা অত্তিঃ স্বভবনং যথো॥॥

ख्वानिमाखः ততো গড়া দদর্শ महতीः नमीः।

ख्राद्धः निवास्त्रवाटमः तामा ताकीवानामः॥॥

नम्गाः मखता किन्छ्लाद्या विम्नाटक न वा।

खेठू ख विम्नाद्ध स्नीका छम्म द्यूनन्मन । ।१॥

छात्रविद्याम् व्यस्य क्षणाम् ।

छट्टा नावि मनाद्राला मीजाः तायरलक्षाणी ।।।।

क्षणाः मखात्रवामास्त्रमीः स्निक्नातकाः।

तामाजिनिम्छाः मद्वि क्षण्य द्राख्वशाख्याः।।।

छाद्वि विभिनः (चातः विलीकक्षात्रनामिकः।

नानाम्ग्रनाकीकः मिः स्राध्नाम् ।।।।

প্রীরামচন্দ্র দীতা ও লক্ষাণের সহিত অতিমুনির আশ্রমে ও দিবস বাস করিবা প্রভাতকালে স্নানানন্তর মহর্ষিকে প্রণাম পূর্বক প্রস্থানোদ্যোগ করিলেন এবং বিনীত বচনে কহিলেন মহর্ষে! আমরা মুনিরাণসমাকীর্ণ দশুকারণো গমন করিকে অভিলাষ করিয়াছি আপনি অনুমতি করুন, এবং আমাদিগের অপরিচিত পথ প্রদর্শনার্থ শিষ্যগণকে আদেশ করুন, তীহারা আমাদিগেক পথ প্রদর্শন করাইবেন। মহা ঘলা অতিমুনি প্রারমের বাক্য শ্রবণ করিয়া ঈহৎ ছাল্য পূর্বক কহিলেন, হে রাম! তুমি সকলের পথ-প্রদর্শক অপর কোন্বাক্তি ভোমার পথ-প্রদর্শক হইবে? হাহা ছউক, এক্ষণে তুমি লোক ব্যবহারের অনুসারী হইয়াছ— স্বতরাং আমার শিব্রের। তোমাকে পথ প্রদর্শন করাইবেন । ২ । ৩ । ৪ । অনন্তর মহর্ষি শিষ্যগণকে প্রীরামের পথ প্রদর্শনার্থ জ্যাক্রা করিয়া হয়ংও প্রীরামের জনুগমন করিতে লাগিলেন।

শ্রীরাম বিরুদ্ধ র গমনানন্তর মহর্ষিকে নিবারণ করিলেন—তপোধন অত্রি প্রীরাম কর্তৃক নিবারিত হইরা স্থাহে প্রত্যান্যমন করিলেন। অনস্তর রাজীবলোচন রাম জ্রোশ পরিমিত পথ অতিক্রম করিয়া সমুখন্তিত অতি প্রবলতর' নদী দর্শনে শিষাদিগকে কহিলেন, হে মহাস্থাণ। এই নদী ভরণের উপার আছে কি না? মুনি-শিষাগণ কহিলেন এম্বানে নৌকা আছে, আমরা নেকা বাহন করিয়া ক্ষণকাল মহোতোমাদিগকে পরপারে উত্তীণ করিব। অনস্তর রাম, দীতা ও লক্ষ্মণ সকলে নেকালোহণ করিলেন, মুনিকুমারেরা ক্ষণকাল মণ্যে তাঁছাদিগকে নদীপারে উত্তীণ করিয়া দিলেন, জীরামচন্ত্রম মহর্ষির শিষ্যাগতে বিনর বচনাদি দ্বারা সন্ত্র্যু করিয়া বিদায় করিলেন, তাঁছারাও সেই স্থান ছইতে প্রতিনিক্তি হইয়া মহর্ষির আগ্রমে গমন করিলেন। ৫। ৬। ৭। ৮। ১। শ্রীরাম্বান্তর স্থাতা ও লক্ষ্মণ সমহ্তিরাহারে বিধ্বীক্ষ্মারপূর্ণ ও নানা-

রাক্ষনৈঘে রেক্টপশ্চ দেবিতং রোমহর্ষণম্।
প্রবিশ্য বিপিনং ঘোরং রামে। লক্ষ্মণমন্ত্রবীৎ ॥১১
ইতঃ পরং প্রয়ন্ত্রন গন্তব্যং সহিতেন মে।
ধন্তুপেন সংযোজ্য শরানপি করে দধং ॥১২॥
অত্যেযাস্যাম্যহং পশ্চান্ত্রমম্বেহি ধনুর্ধরঃ।
আবয়োর্মধ্যগা নীতা মায়েবাত্মপরাত্মনাঃ॥১৬॥
চক্ষুণ্চারয় সর্বন্ত দৃষ্টং রক্ষোভয়ং মহং।
বিদ্যাতে দণ্ডকারণ্যে প্রত্তপূর্ব্রমরিক্দম ।॥১৮॥
ইত্যবং ভাষমাণে তৌ জগ্মতুঃ সার্দ্ধিষাজনম্।
তবৈকা পুদ্ধরিণান্তে কল্লারকুমুদোংপলৈঃ॥১৫
অসুকিঃ শীতলোদেন শোভমানা ব্যদৃশ্যত।
তৎসমীপমথো গড়া পীড়া তৎসলিলং শুভম্ ।১৬
উধুন্তে সলিলাভ্যানে ক্ষণং ছায়ামুপাশ্রিতাঃ।
ততো দদৃশ্বরায়ান্তং মহাসত্বং ভয়ানকং ॥১৭॥

বিধ মৃগ সমাকীণ সিংহ বাজে এবং ভীষণ মৃর্টি রাক্ষসগণ ঘারা অভিভীষণ—সভরাং সাধারণের রোমহর্ষণ দশুকারণো প্রবেশ করিয়া লক্ষ্মণকে কহিলেন, হে লক্ষ্মণ! এই স্থানে ধমুর্বাণ ধারণ পূর্ব্বক অভি সাবধানে আমার অমুন্মন কর—মায়া যেরপ জীবান্থা ও পরমান্থার মধ্যবর্ত্তিনী, ভজপ এক্ষণে সীভা আমানিগের মধ্যবর্ত্তিনী হইয়া গমন করুন, এবং চতুর্দ্দিকে দৃষ্টি সঞ্চালন কর, হে অরিন্ম! আমি পূর্ব্বে শুনিয়াছি দশুকারণো অভিশয় রাক্ষ্মন-ভয় আছে। জীরাম ও লক্ষ্মণ এইরপ কথোপকখন করিতে করিতে সার্ব্বিক যোজনপথ অভিক্রম করিয়া কলার ক্ষুদ কমল প্রভৃতি জল-পূজা শোভিত স্থাতিল জলপূর্ণ জলাশয় দশন করিলেন, অনস্তর তাহারা সরোবর সমাপে গমন করিয়া স্থাতিল জলপানী এবং সমীপত্ম ছায়াবলম্বন পূর্বক বিশ্রাম করিতে লাগিলেন।

করালদং উবদনং ভীষয়ন্তং স্বগজ্জিতিঃ।
বামাংশে ন্যন্তশ্লাগ্রগ্রথিতানেকমান্ত্রম্ ॥১৮॥
ভক্ষয়ন্তং গঙ্কব্যাঘুমহিন্ধং বনগোচরং।
জ্যারোপি তং ধন্তুর্ত্বা রামো লক্ষ্মণমন্ত্রবীৎ ॥১৯॥
পশ্য ভাতম হাকায়ো রাক্ষ্মণাহয়মুপাগভঃ।
আয়াত্যভিমুখং নোহগ্রে ভীরণাং ভয়মাবহন্॥২০
সজ্জীক্রতধন্ত্রন্তর্গ মা হৈর্জনকনন্দিনি!।
ইত্নুক্ত্বা বাণমাদায় স্থিতো রাম ইবাচলঃ ।২১॥
স ভু দৃষ্ট্বা রমানাথং লক্ষ্মণং জানকীং ভদা।
অট্রাসং তভঃ কুরা ভীষয়ন্দ্মন্ত্রবীৎ।২২॥
কৌ যুবাং বাণভূণীরজ্ঞাবল্কলধারিণো।
মুনিবেশধরে বালো স্ত্রীসহায়ো স্কুম্নে।।২৩॥

এই সময়ে মহাবল পরাক্রান্ত ভয়ানক দন্তযুক্ত ভীষণগৰ্জন নিশাচর শূলাণ্ডা-প্রাধিত বভসংখ্যক মানুষ্দেহ বামক্ষাত্র নিক্ষেপ: করিয়া হন্তী, মহিষ প্রভৃতি আরণ্যক জস্তু সকল ভক্ষণ করিতে করিতে সেই স্থানে আগগমন করিতে লাগিল। শ্রীরামচন্দ্র ভীষণমূর্ত্তি রাক্ষসকে দর্শন করিবামাত্র গ্রুতে জ্যারোপণ করিয়া লক্ষ্মণকে কছিলেন । ১০ ৷ ১১ ৷ ১২ ৷ ১৩।১৪।১৫।১७।১२।১৮।১**৯। (इ** खोठः! घर-লোকন কর এই মহাদীর্ঘকার রাক্ষ্য ভীক জনের ভয়বর্জন করতঃ আমাদিণের সমুখীন হইতেছে, অতএব সুসজ্জিত ধনুর্ধারণ করিয়া এই স্থানে দণ্ডায়মান হও, ছে-জানকি! তোষার কোন ভর নাই। শ্রীরাম লক্ষ্মণকে এইরূপ আদেশ করিয়া সরং ধনুর্ববাণ ধারণ পূর্বক অচলগিরির নাার সেই স্থানে দণ্ডায়মান রহিলেন। অনন্তর বাক্ষসাধন শীরাম, সীতা ও লক্ষ্মণকে দর্শন করিয়া অট্টাট্রাস্য পূর্ব্বক কহিতে লাগিল. (इ वालकबत्त ! टामामिट्रांत नाम कि ? टामामिश्र के श्रम স্থার এবং আমার মুগ্রাসের উপাযুক্ত দেখিতেছি – কি কারণে জটা বল্কল ধনুর্বাণ এবং তৃণীর ধারণ কৰিয়া পাড়ী ফুন্দরে বত মে বক্ত প্রবিষ্টকবলোপমো।
কিমর্থমাগতো ঘোরং বনং ব্যালনিদেবিতঃ ॥২৪॥
শ্রুরা রক্ষোবটো রামঃ মার্যান উবাট তম।
আহং রামস্ত্রাং জ্রাডা লক্ষাণো মম সন্মতঃ॥২৫॥
এবা সীতা মম প্রাণবল্লভা বয়মাগতাঃ।
পিতৃবাক্যং পুরক্ত্য শিক্ষণার্থং ভবাদৃশাং।২৬।
শ্রুরা তদ্রামবচনমন্তহাসমধাকরোও।
ব্যাদার বক্তং বাছভ্যাং শ্রুমাদার সত্রঃ॥২৭॥
মাং ন জ্ঞানাদি রাম! তং বিরাধং লোকবিশ্রুতং।
মন্তরাম্ম নয়ঃ সর্বে ত্যক্ত্বা বনমিতো গতাঃ॥২৮॥
যদি জীবিত্মিচ্ছান্তি ? ত্যক্ত্বা সীতাং নিরায়ুধো।
পলায়তং ন চেৎ শীঘুং ভক্ষয়ামি যুবামহং।।২৯।

ইত্যুক্তা রাক্ষণঃ সীতামাদাতুমভিত্তকেবে।
রামশ্চিক্তেদ তদ্বাস্থু শরেণ প্রহলমিব ।। ৩০।।
ততঃ ক্রোধপরীভাত্মা ব্যাদার বিকটং মুখং।
রামমভাদ্রবদামশ্চিক্তেদ পরিধারতঃ।
পদদ্বঃ বিরাধদ্য তদ্দু ত্রিবাভব ॥ ৩১।।
ততঃ দপ ইবাদ্যেন প্রসিত্থ রামমাপতং।
ততঃ দপ ইবাদ্যেন বাণেনাদ্য মহচ্ছিরঃ । ৩২।
চিচ্ছেদ ক্রধিরে ঘেণ প্রণাত ধরণীতলে।
ততঃ সীতা সমালিক্ষ্য প্রশশংদ রঘু ত্রমং॥ ৩৩।।
ততো ক্রম্মভারো কেন্তুদিবি দেবগণেরিতাঃ।
নন্তুশ্চাপ্রেরা ক্রী জপ্তর্গন্ত্রিকিয়রাঃ ॥ ৩৪।

সমভিব্যাহারে মুনিবেশে এই হিংল্র জন্ত পরিপুরিত ভয়ন্ধর দণ্ডকারণ্যে আগগমন করিয়াছ ? জীরাম রাক্ষসের বাক্য শ্রবণা নাল্ডর বিশ্বয়াপন্ন ইইরা কহিলেন, ছে নিশাচর! আমার নাম রাম, ইনি আমার লাভা লক্ষণ, এই আমার প্রাণবল্পভা সীতা; এক্ষণে আমরা পিভার আজামুসারে ভোমাদিগের দমনার্থ এই স্থানে উপস্থিত ছইয়াছি । ২০ । ২: । ২২ । ২০ । ২৪ । ২৫ । ২৬ । রাক্ষ্য জীরামের বাক্য জাবণানন্তর অভি সত্তর শুল গ্রহণ করিয়া মুথবিন্তার পূর্বক অটাট্টহাস্য করিল এবং গন্তীর স্থার কহিল, হে রাম! তুমি আমার লোক প্রসিদ্ধ নাম জাবণ কর নাই ? আমার নাম বিরাধ, যাহার ভরে ঋষিগণ দণ্ডকারণ্য পরিত্যাগ করিয়া গমন করিয়াছে; এক্ষণে ভোমাদিগের বাদি জীবনাশা থাকে তাহা ছইলে অন্ত্র শন্ত্র ভোমাদিগেকে ভক্ষণ

করিব। রাক্ষম এই কথা কছিয়া জানকীকে গ্রহণ করিবার
নিমিন্ত ক্রতবেগে আগমন করিতে লাগিল। শ্রীরামচন্দ্র হাস্য
করিতে করিতে বাণ দ্বারা তাহার বাছ্ম্ম ছেদন করিলেন।
অনন্তর রাক্ষম ক্রোধভরে মুখ বিস্তার করিয়া শ্রীরামের প্রতি
ক্রতবেগে ধাবিত হইল। শ্রীরামচন্দ্র ভংক্ষণাৎ শর্মারা তাহার
পদম্ম ছেদন করিলেন, সেই সময় বিয়াধের শরীর অতি অভ্
ত
দর্শন হইল—সর্পের ন্যায় মুখ্বাদান করিয়া শ্রীরামকে গ্রাস
করিবার আশয়ে সর্পের ন্যায় মুখ্বাদান করিয়া শ্রীরামকে গ্রাস
করিবার আশয়ে সর্পের ন্যায় বক্ষংস্থল দ্বারা আগমন করিতে
লাগিল। শ্রীরামচন্দ্র অর্কচন্দ্রাকৃতি বাণহারা ভাহার মন্তক ছেদন
করিলেন। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৯২। প্র মন্তক রক্তাক্ত
হইয়া ভৃতলে পতিত হইল। অনন্তর সীতাদেবী শ্রীরামকে
আলিঙ্গন করিয়া বছতর প্রশংসা করিতে লাগিলেন, এই সময়ে
দেবগাণ হুট্ ইইয়া আকাশ মার্গে হুন্দ্ ক্রিকান করিতে লাগিলেন।
ক্রেন এবং অ্লের্গণ নৃত্য করিতে আরম্ভ করিল, গদ্ধর্ম ও কিয়্রগণ মহোৎসব সহকারে সন্ধ্যিত করিতে লাগিলেন। ৩৩। ৩৪।

বিরাধকায়াদভিস্থন্দরাক্কতিবিজ্ঞাজমানো বিমলামরারতঃ।
প্রভপ্তচামীকরচার ভূমনো
ব্যদৃশ্যভাগ্রে গগনে রবির্যথা॥৩৫।
প্রণম্য রামং প্রণভার্তিহারিণং
ভবপ্রবাহোপরমং ঘূণাকরং।
প্রণম্য ভূয়ঃ প্রণমাম দশুবৎ
প্রপন্মক্রার্তিহরং প্রসন্নবীঃ॥৩৬॥

বিরাধ উবাচ।

শ্রীরাম ! রাজীবদলায়তাক্ষ !

বিদ্যাধরোহহং বিমলপ্রকাশঃ।

দুর্ববিদ্যা কারণকোপমূর্ত্তিনা

শপ্তঃ পুরা দোহদ্য বিমোচিতস্তুরা ॥৩৭।।

ইতঃপরং ভচ্চরণারবিন্দরোঃ

শ্মৃতিঃ দদা মেহস্ত ভবোপশান্তরে।

জনন্তর বিরাধের শরীর হইতে স্থবর্ণালকার ভূবিত কান্তিময় একটা পরম স্থান্দর শরীর নির্গত হইয়া গগনমণ্ডলে দিতীয় ববির নাম্ম শোভা ধারণ করিল। জ্ঞীরাম সীভা ও লক্ষাণ তৎক্ষণাৎ বিজ্ঞরাপন হইরা জানিমেষ লোচনে সেই অন্তুত ব্যাপার অব-লোকন করিতে লাগিলেন। নিশাচর শরীরান্তর পরিগ্রহ করিয়া শরণাগত-প্রতিপালক দ্যাময় রামকে ভ্রবন্ধন মোচনার্থ প্রেন্থাকরত্বে দণ্ডবৎ প্রথম করিয়া কহিলেন।৩৫ ৩৬।

ছে রাজীবলোচন রাম! আমি বিদ্যাধর কুলে জনাগ্রহণ করিয়াছি, পর্বাকালে ছর্বাসা মুনি অকারণে আমার প্রতি কোপ প্রকাশ করিয়া অভিশালাৎ করিয়াছিলোন, তদবধি ব্রহ্মশালে পাতিত হইয়া এতাবৎকাল রাক্ষস রূপে এই দওকারণো সঞ্চরণ করিয়াছি, অন্য আপনি ব্রহ্মশাপ হইতে মুক্ত করিলেন, হে দয়ময়! আমি এক্ষণে আপনার নিকট এই প্রার্থনা করি বে,

ব্য়ামসংকীর্ত্তনমেব বাণী
করোতু মে কর্ণপুটং স্থলীয়ম্ ॥৩৮॥
কথামৃতং পাতু করদ্বরং তে
পালারবিন্দার্চনমেন কুর্যাৎ।
শিরশ্চ তে পাদ্যুগপ্রণামং
করোতু নিত্যং ভবদীয়মেবং ॥৩২॥
নমস্তত্যং ভগবতে বিশুদ্ধজ্ঞান মূর্ত্তরে।
আত্মারামায় রামার দীতারামায় বেধদে ॥৪০॥
প্রপন্ধং পাহি মাং রাম ! যাস্যামি স্থদমুক্তরা।
দেবলোকং রমুপ্রেষ্ঠ ! মায়া মাং মা রুণোতু তে॥

ইতি বিজ্ঞাপিভুতস্তেন প্রসম্মোরঘুনন্দনः।

দলে বরং তদা প্রীতো বিরাধায় মহামতিঃ ॥৪২॥

অদ্যাবধি আমার মন আপনার পাদপ্রযুগলে সর্কাদ। অনু-রক্ত থাকে কদাচ বিস্মৃত না হয়, এবং আমার বাণী আপনার নাম সন্ধীর্ত্তন পরিত্যাগ করিয়া রুথালাপে কালাভিপাভ না করে, হে রাম! আমার কর্ণ যুগল আপনার কথা-মৃতপানে সর্বাদা রত থাকে, এই কর যুগল আপনার পাদপদ পূজার বিরত ন। হয় এবং আমার মন্তক নিভাই আপনার পাদযুগলে প্রণাম করে—হে ভক্তাভীষ্টদ! আমার এই সকল অভিলাষ দয়া প্রকাশ পূর্বেক স্থাসিদ্ধ করিবেন---হে ভগবন্! আপনাকে নমস্থার করি- বেছেতু আপনি আত্মারাম বিশুদ্ধ জ্ঞানময় ব্রহ্মপদার্থ, এক্ষণে রামরূপে জন্মগ্রহণ করিয়া সীতারূপিণী প্রকৃতির সহিত মিলিত হইয়াছেন—ছে রাম! আমি আপনার শর্ণীপর হইয়াছি, অভএব আমাকে রক্ষা করুন। হে রঘুত্রেষ্ঠ! এক্ষণে দেবলোকে গমনার্থ আপনার অনুমতি অপেকা করিতেছি—হে প্রভো! আপনার নিকট কাতর হইয়া বারস্বার প্রার্থনা করি যে, আপনার বিশ্ব-মোছিনী মারা পুনর্কার আমার জ্ঞানপথ রোধ না করে।৩৭। ৩৮।৩৯।৪০।৪১। গ্রীরামচন্দ্র এই প্রকার বিবিধ স্তববাক্যে সন্তষ্ট গছ বিদ্যাধরাশেষমায়াদোষগুণী জিভাঃ।
ত্বয়া মদ্দর্শনাৎ দদ্যো মুক্তো জ্ঞানবতামরঃ॥৪৩।
মন্তক্তিদুর্ল ভা লোকে জাতা চেন্মুক্তিদায়তঃ।
অতত্ত্বং ভক্তিসম্পায়ঃ প্রং যাহি মমাজ্ঞা॥৪৪॥

त्रात्मन तत्कानिधनः स्ट्राहाः भाषािष्ठमुक्तित्रनानत्मवः।

ছইরা বিরাধকে অভিল্যিত বর প্রদান করিলেন, ছে বিরাধ!
তুমি গমন কর, পুনর্কার আমার মারা গুণে আবদ্ধ হইবে না—
হে জ্ঞানিবর! তুমি আমাকে দর্শন করিরা অবশ্যই মোক্ষলাভ করিবে, বেছেতু এই জগতে মুক্তিদায়িনী মন্তক্তি অভি তুর্লভ হইলেও ভোমাতে বিলক্ষণরূপে লক্ষিত হইতেছে। প্রীরামচক্র বিরাধকে রাক্ষদদেহ বিনাশানতর ব্রক্ষশপ হইতে মুক্ত

বিদ্যাধরতং পুনরের লকং
রামং গৃহয়েতি নরোহথিলার্থান্ ॥৪৫॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে
অরণ্যকাতে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

করিয়া অভিলয়িত বর প্রদান করিলেন, বিরাধণ্ড পুনর্কার বিদ্যাধর দেহ লাভ করিল—ইহা বিচিত্র নহে। প্রমন্ত্রক্ষ জীরামকে স্তব্বাক্যে সন্তুফ্ট করিলে জীবগণ ইহা অপেক্ষা ভূপ্রাপ্য অভীষ্ট বস্তুণ্ড অনারাসে লাভ করিতে পারে। ৪২ ৪০। ৪৪। ৪৫।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরণমারণে উমামতেশ্বর সম্বাদে ভারণ্যকাণ্ডে প্রথমোহ্দারিঃ।

দ্বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ।

ঐমহাদেব উবাচ।

বিরাধে স্বর্গতে রামো লক্ষাণেন চ দীতয়া।
জগাম শরভঙ্গা বনং দর্বস্থাবহং ॥১॥
শরভঙ্গতো দৃষ্ট্রা রামং সৌমিত্রিণা দহ।
আরাজং দীতয়া দার্দ্ধং দদ্রমাদু্প্থিতঃ স্থুধীঃ ॥২॥
অভিগম্য স্থান্দ্পুজ্য বিইন্বর্যুপবেশয়ৎ।
আভিগ্যমকরোত্তেষাং কন্দমূলফলাদিভিঃ ॥৩॥
প্রীত্যাহ শরভঙ্গোহপি রামং ভক্তপরায়ণং।
বছকালমিহৈবাসং তপদে কুতনিশ্চয়ঃ ॥৪॥
তব দন্দর্শনাকাজ্জী রাম ! জং পরমেশ্বয়ঃ।
আদ্য মত্তপদা দিলং যৎ পুণ্যং বছবিদ্যতে।
তৎ দর্মং কব দাস্যামি ততো মুক্তিং ব্রজামাহেং॥

বিরাধের স্বর্গামনানস্তর জ্ঞীরামচন্দ্র দীতা ও লক্ষ্মণের সহিত মিলিত হইয়া মহর্ষি শরভঙ্গের পরম রমণীয় তপোবনে গমন করিলেন—তপোধন শরভঙ্গ শ্রীরাম দীতা ও লক্ষ্মণকে গমাগত দেখিয়া সমস্ত্রমে গাত্রোত্থানানস্তর প্রত্যুক্ষামন করিলেন এবং পাদ্যাগ্যাদি স্বারা তাঁছাদিগের পূজা করিয়া আসন প্রদান করিলেন। শ্রীরামচন্দ্র দীতা ও লক্ষ্মণের সহিত আসনোপবেশন করিয়া মহর্ষিক্ত আতিথ্য স্বীকার করিলেন। অনস্তর মহর্ষি শরভঙ্গ ভক্তবংশল রামকে পরম প্রীতি সহকারে কহিলেন—ছে রাম! আমি তোমার পাদপদ্ম দর্শনাভিলাযে তপস্যানিরত হইয়া বল্লকাল এই বনে কালাতিপাত করিতেছি, এক্ষণে চিরাভিলায় সিদ্ধ ছইল—হে পরমেশ্বর! আমি স্থদীর্ঘ তপস্যা হারা যে সকল পূণ্য সঞ্চয় করিয়াছি—ভাছা তোমাতে

সমর্পা রামদা মহৎসূপুণ্যফলংবিরক্তঃ শরভঞ্চযোগী।

চিতিং সমারোহয়দপ্রমেয়ং
রামং সদীতং সহসা প্রশমা ॥৬॥

ধ্যায়ংশ্চিরং রামমশেষক্রংস্থং

দূর্বাদলশ্যমেলমন্ত্রকাকং।

চীরাম্বরং স্লিক্ষটাকলাপং

সীতাসহায়ং সহলক্ষ্মণং তম্॥৭॥

কো বা দ্যালুঃ স্মৃতকামধেনুরন্যো জগত্যাং রঘুনায়কাদহো।

স্মৃতে ময়া নিত্যমন্যভাজা

জাত্বা স্মৃতিং মে স্বর্মের যাতঃ ॥৮॥

অর্পণ করিলাম—তদ্ধার। অবশ্যই মুক্তিলাভ করিব ।১।২।
৩।৪।৫। পরম বিরাগী বোগৈক সাধন শরভক চিরসঞ্জিত স্থদীর্ঘ পুণ্যফল জীরণমে সমর্পণানন্তর তাঁহাদিগকে
প্রণাম করিয়া চিতারোহণ করিলেন, এবং ভক্তি সরতিতির
সর্বান্তর্যামী নবহুর্বাদলশ্যাম রাজীবলোচন রামের চীরাম্বরণরত স্থান্থি জটাকলাপ মণ্ডিত পরম রমণীর মৃত্তি চিন্তা করিতে
করিতে কহিলেন, এই জিলোক মধ্যে দর্মার জীরাম ভিন্ন
ভক্তজনের অভিলাম পুরণে কেছ সমর্থ নছে—ভক্তবংসল
রাম ভক্তের মনোর্ভি অবগত হইরা জামার অন্তঃকরণে
স্বরং আবিভূতি ইইরাছেন; যাহাছ্টক এক্ষণে আমি স্বনীয়

পশ্যতিদানীং দেবেশো রামো দাশরধিং প্রভুগ্রদ্ধানীং দেবেশো রামো দাশরধিং প্রভুগ্রদ্ধানীং দেবেশা রামো দাশরধিং প্রভুগ্রদ্ধানী ব্রদ্ধানাক্রমকলাবং ॥৯॥ অবোধ্যাধিপতির্মেইস্ত ক্ষদরে রাঘবং দদা। বছামাল্পে ভি্তা দীতা মেঘদ্যের তড়িল্লতা ॥১০॥ ইতি রামং চিরং ধ্যাত্বা দৃষ্ট্বা চ পুরতঃ স্থিতম । প্রজ্বাল্য দহসা বক্ষিং দগ্ধা পঞ্চাত্মকং বপুঃ ॥১১। দিবাদেহধরং সাক্ষাৎযয়ে লোকপতেঃ পদম । ততাে মুনিগণাঃ দর্বে দগুকারণ্যবাদিনঃ। আজ্বা রাঘবং দেবুং শরভঙ্গনিবেশনম ॥.২॥ দৃষ্ট্যা মুনিসমূহং তং জানকীরামলক্ষ্মণাঃ। প্রশেষ্ণ দহসা ভূমে মারামান্যবন্ধিণঃ ॥১৩॥ আশীভিরভিনন্দ্যাথ রামং দর্বহাদিস্থিতম ! উচ্ঃ প্রাঞ্জেলয়ঃ দর্বের ধন্ত্র্বাণধরং হরিম ॥১৪॥ উচ্ঃ প্রাঞ্জলয়ঃ দর্বের ধন্ত্র্বাণধরং হরিম ॥১৪॥

ভূমেভারাবভারায় জাতোহিদি ব্রহ্মণাথিতি ।
জানীমন্ত্রং হরিং লক্ষ্মীং জানকীং লক্ষ্মণং তথা ॥
শেষাংশং শঙ্খাচক্রে দ্বে ভরতং সামূজং তথা ।
অতশ্চাদৌ ঋষীণাং তুং দুঃখং মোক্তুমিহার্হ দি ॥

আগচ্ছ বামে: মুনিদেবিতানি
বনানি সর্বাণি রঘুত্ম ! ক্রমাৎ ।
দেই ফুমিত্রাস্থতকানকীভ্যাং
তদা দয়াশ্মৎ স্কুদ্টা ভবিষাতি ॥:৭॥
ইতি বিজ্ঞাপিতো রামঃ কুতাঞ্জলিপুটেবিভূঃ !
জগাম মুনিভিঃ সার্দ্ধং দ্রুইং মুনিবনানি সঃ ॥১৮॥
দদর্শ তত্র পতিতান্যনেকানি শিরাংসি সঃ ।
অস্থিভূতানি সর্বত্র রামে: বচনমত্রবীৎ ॥১৯॥

দেহ দক্ষ করিয়া ব্রহ্মলোকে গমন করিব—দেবদেব দাশরথি
স্বয়ং অবলোকন করন। ৬। ৭। ৮। ৯। আমার অন্য কোন
অভিলাব নাই, সেই অঘোধাধিপতি রামচক্র আমার হৃদয়ে
সর্কা সারিহিত হউন—ঘাহার বামভাগে মেঘ সমিছিত
বিদ্বাল্লভার ন্যায় জনকনন্দিনী সীভা বিরাজ করিতেছেন।
জনন্তর মহর্ষি শরভঙ্গ সমুখন্তিত জ্রীরামচক্রকে দর্শন করিতে
করিতে প্রজ্ঞানত চিভানলে দেহ দন্ধ করিয়া দিবা দেহ ধারণানতর ব্রহ্মলোকে গমন করিলেন; এই অবসরে দণ্ডকারণান্রাসী মুনিগণ জ্রীরাম দর্শনাভিলাষে শরভঙ্গাশ্রমে আগমন
ক্রিলেন। মায়ামমুয়য়পী রাম সীতা ও লক্ষ্মণ সকলে সমাগত
মহর্ষিণ্ডল সহসা অবলোকন করিয়া দণ্ডবৎ প্রণাম করিলেন।
১০০০ সহর্ষিণ সর্কান্তর্যামী ধনুর্কাণধারী হরিকে
আশীর্কান দারা অভিনন্দন করিয়া রতাঞ্জিপিটে কহিলেন,
হে বৈষ্ঠানাধা। ভূভারহ্রণের নিমিত ব্রহ্মার প্রার্থনাস্পারে

আপনি মনুষারপে জমতাহণ করিয়াছেন এবং লক্ষ্মী জানকীরপে— অনন্তদেব লক্ষ্মণরপে এবং আপনার করক্ষলন্তির শঙ্কা ও চক্র ভরত শক্রম রূপে অবতীর্ণ হইরাছেন, আমরঃ এই দকল রুভান্ত পূর্বেই অবগত হইরাছি, অভএব হে,ভগবন্দ আপনি এক্ষণে দশুকারগ্যবাসী মুনিগণের হুঃখনোচন করুন, হে রাম! আপনি সীতা ও সেমিত্রি সম্ভিব্যাহারে আগমন করিরা মুনি-দেবিভ অরণ্য সকল ক্রমশঃ অবলোকন করুন ভাষা হইলে আমাদিগের অবস্থা জানিতে, পারিবেন এবং আপনার নৈস্থিকি দয়ার্জহারে আমাদিগের প্রভি অবশাই দয়ার সঞ্চার হইবে। জ্রীরাম্চন্দ্র ক্রভাঞ্জনিপুটে শ্ববিগণ কর্ত্বক এই প্রকার বিজ্ঞাপিত হইরা তাহাদিগের সহিত ভূপোবন দশ্নির্থ গামন করিলেন। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। কিরদ্ধর গামনান্তর ভূমিপতিত অন্থিময় নরমন্তক অবলোকন করিরা জিজ্ঞাণা করিলেন, হে মছর্ষিগণ, এই সকল অন্থিময় মন্তক কাহাদের—কিজ্বন্যই বা ভূতলে প্রতিত হইতেছে?

অস্থানি কেশামেতানি কিমর্থং পতিতানি বৈ।

তমূচুর্ম নিয়া রাম! ঋষীণাং মন্তকানি হি ॥২০॥
রাক্ষসৈতিকিতানীশ! প্রমন্তানাং সমাধিতঃ।
অন্তরায়ং মুনীনাং তে পশ্যস্তোহন্ম চরস্তি হি ॥২১॥
প্রত্যামকরোজামো বধায়াশেষরক্ষসাং ॥২২॥
প্রজ্যমানঃ সদা তত্র মুনিতির্বনবাসিতিঃ।
জানক্যা সহিতো রামো লক্ষণেন সমন্বিতঃ ॥২৩॥
উবাস কতিচিত্তত্র বর্ষাণি রঘুনন্দনঃ।
এবং ক্রমেণ সম্পান্ ঋষীণামাশ্রমান্ বিভুঃ ॥২৪
স্থতীক্ষ্ণ্যাশ্রমং প্রাগাৎ প্রখ্যাতম্বিসংকুলম্।
স্কর্তি গুণাম্পায়ং সর্ককালম্থাবহ্ম্ ॥২৫॥
রামমাগতমাকণ্য স্থতীক্ষ্ণ স্বয়্মাগতঃ।

শ্বিণাণ কহিলেন, হে রাম! রাক্ষন ভক্ষিত শ্বিণাণের মন্তক সকল ভূতণে লক্ষিত হইভেছে, হে দরাময়! স্শংস রাক্ষণণ তপঃ প্রমত্ত শ্বিণাণের তপোবির করত এই যোরতর অরণ্য মধ্যে সর্বাদা সঞ্চরণ করিভেছে, এক্ষণে আপনি এই বিপদ হইতে আমাদিগকে রক্ষা করুন। জীরামচন্দ্র শ্বিণাণের ভয়ন্থংশমিশ্রিত বাক্য প্রবণানন্তর রাক্ষসকুলের সম্লোচ্ছেদনে প্রতিজ্ঞা করিয়া অরণ্যনান্তর রাক্ষসকুলের আগ্রাহাম্পারে সীতা ও লক্ষ্যণের সহিত কতিপর বর্ষ সেই প্রদেশে বাস করিতে লাগিলেন ।১৯২০।২১।২২।২৩:২৪। অনন্তর শ্রীয়ামচন্দ্র সেইত্থানে কিঞ্চিৎ কাল অতিবাহিত করিয়া সর্বাধৃত্বগ্রাদ স্ববিখ্যাত মহর্ষিক্লমন্তিত স্থতীক্ষ আশ্রামে গ্রমন করিলেন। রামনজ্রোপাসক আগন্তাশিয় স্থতীক্ষম্নি শ্রীরামের সমাগ্রমনবার্তা শ্রবণ করিয়া ক্ষং প্রভালামনানন্তর

অগক্তিশিব্যো রামদ্য মস্ত্রোপাদনতৎপরঃ। বিধিবৎ পূজয়ামাদ ভক্ত্যুৎকণ্ঠিতলোচনঃ ॥২৬॥ স্থৃতীক্ষ্ণ উবাচ।

' তথাপ্তকাপ্যহমনন্ত গুণাপ্রমের !

সীতাপতে ! শিববিরিঞ্চিনমান্ত্রিতাজেবু ! ।

সংসারসিন্ধুতরণামলপোতপাদ !

রামাভিরাম ! সততং তব দাসদাসঃ ॥২৭॥

মামদ্য সর্বজ্ঞ গতামবিগোচরস্ত্রং

তথাররা হতকলত্রগৃহাককুপে

মগ্রং নিরীক্ষ্য মলমুকালপিওমোহপাশান্তবন্ধ হুদরং স্বর্মাগতোহিনি ॥২৮॥

তং সর্বভ্তহ্লদয়ের কুতালয়োহপি

তথ্যক্রজাপ্যবিমুখের তুনোসি মারাং ।

তথ্যক্রপাধনপরেদ্ধপরাতি মারা

সেবান্থ্রপকলদোহনি বথা মহীপঃ । ২৯॥

বিশ্বস্থা স্টিলয়সংস্থিতিহেতুরেক
ত্রং মারয়াত্রিগুণারা বিধিরীশ্বিষ্ণ ।

নিনি মেষচক্ষে জীরামকে পুনঃপুনঃ দর্শন করত ভক্তিযোগে ফ্রঞ্চাবিধি পূজা করিয়া কছিলেন।২৫।২৬। ছে অনস্ত গুণাশ্রয়! হে অপ্রেমেয়। হে নীতাপতে। তোমার পাদপদ্ম যুগল সংসারসাগর তরণে পোত স্বরূপ এবং শিব ও প্রকাদি দেবগণের আশ্রয়। হে রাম! আমি চিরদিন ভোমার মন্ত্রজপ করিডেছি। হে অভিনাম! আমি তোমার দাদের চিরদাদ। ছে রাম! আমি তোমান রই মায়াপ্রভাবে স্ত্রী পুত্রগৃহাদিস্বরূপ অন্ধৃত্বে পতিত হইরাছি এবং নলমূত্রাদি পরিপূর্ণ অকিঞ্চিৎকর শ্রীরে সর্বাদা আল্লাভিন

ভাদীশ! মোহিতধিয়াং বিবিধাক্কতিত্ব যন্ত দ্বিঃ সলিলপাত্ত গতো ছেনেকঃ ॥৩০॥ প্রভাকতোহদ্য ভবতশ্চরণার বিন্দং পশ্যামি রাম! ভমসঃ পরতঃ ছিত্স্য দৃগুপত ভ্রমসভামবিগোচরোহিপি। স্বান্তপুত হৃদয়েয়ু সদা প্রসমঃ ॥৩১॥ পশ্যামি রাম! তব রূপমক্ষপিণোহিপি মায়াবিভ্রমকৃতং সুমন্তব্যম্। কন্দর্পকোটিস্ভগং কমনীয়চাপ-বাণং দয়ার্জ হৃদয়ং শ্বিতচাক্রবজুং॥৩২। দীতাসমেত্মজিনাম্বরমপ্রধৃষ্যং দৌমিত্রিণা নিয়ভ্রেবিভপাদপদ্মম্ নীলোৎপলত্যতিমনন্ত গুণং প্রশাস্তং ভত্তাগধেয়মনিশং প্রণমামি রামং॥ ৩৩॥

মান করিয়া থাকি। হে দয়ামর ! তুমি সর্বজ্ঞানের অতীন্দ্রির পাদার্থ, কেবল আমাকে উদার করিবার অতই মায়া মহ্যারপ্রপার করিয়া এই স্থানে আগমন করিয়াছ। হে ভর্মবন্! তুরি সমস্ত ভূতের অন্তঃকরণে জাগরণ করিছেছ, কিন্তু সমস্ত ভ্রপন্র করিয়া থাক, অতএব প্রজারা রাজা ইইতে যেরপ সেবাস্দৃশ ফললাভ করে মহু য়োরাও তোমা ইইতে তাদৃশ সেবাছ্নক্রপ ফললাভ করেয়া থাকে; তুমি একাকীই সমস্ত জগতের স্ঠিতি সংহারের কারণ, কেবল স্ত্ব রক্ষ ন্তমোঞ্জনমী মায়ার্রপ উপাধি ভেদে বিষ্ণু ব্রহ্মা শিব এই ব্রিভয় মূর্ভিধারণ করিয়া এই জ্লগতে ভিয়বৎ প্রকাশ পাইভেছ। ছে সম্বর ! মৃঢ় চিত্তেরা ভোমার বিভিয় আরুতি দেখিয়া ঈশ্বরকে সলিলপাত্রিভূভ রিবির ভার অনেক্রিধ জ্ঞান করে। হে জ্লগনীশ্র ! অদ্য তোমার

ভানন্ত রাম'! তব ৰূপমশেষদেশকালাভাপাধিরহিতং ঘনচিৎপ্রাকাশং
প্রভাকতোহদ্য মম গোচরমেতদেব।
ৰূপং বিভাতু হৃদয়ে ন পরং বিকাজ্ফে ॥৩৪।
ইত্যেবং স্তবতন্তম্য রামঃ সন্মিত্মপ্রবীৎ।
মুনে! জানামি তে চিন্তং নির্মালং মছুপাসনাৎ॥
অতোহহমাগতো দ্রন্টুং মদৃতে নান্যাধনম্।
মন্মন্ত্রোপাসকা লোকে মামেব শরণং গতাঃ ॥৩৬॥

চন্নণারবিন্দ প্রাক্তাক করিরা বিবেচনা করিলাম যে, ভূমি অনদ্ব্যক্তির দৃষ্টি প্রের অগোচর হইলেও তন্মস্ত জপদারা যে সকল অসম্ভাক্তির হৃদয় পবিত হইয়াছে তাহাদিগের প্রতি সর্বাদা প্রসন্ন আছে। ছে পরমাত্মন্! আমি বিশেষরাপ অবগত আছি যে, তুমি রূপাদি বিষয় রহিত, কিন্তু অদ্য ভোমার ধহুর্কাণধারী অজিনাম্বরশোভিত সহাস্ত্রদন এবং কোট-कमर्भ कमनीय ज्ञानम्भन्न नी ला १ भनमा अख वर अनस् छ । দরার্ড্রমূর্ত্তি ও লক্ষণ সেবিত পাদপন্মযুগল এবং ছদীয় বাম-ভাগন্থিত সীতাদেবীকে অবলোকম করিতেছি, অতএব পুরাক্ত নিজ ভাগাকেই প্রণাম করি। হে পরমাত্মন্! অক্ত যোগিরা ভোমাকে বাল্পনোতীত শুদ্ধ চৈতন্য স্বরূপ এবং দেশকালাদি দারা অপরিছিন্ন বোধ করিয়া তাহাতেই প্রীতি-লাভ করুন, কিন্তু আমার তাছাতে প্রীতি নাই—কেবল দৃখ্য-মান তোমার এই রামরূপ আমার হৃদয়ে সর্বদা বিরাজিত इडेक 1 टर थ्राटा! जामि এडडिन ब्लायनात निक्रे किहूरे व्यार्थना क्षि ना । २१। २४। २३। ७०। ७५। ७२। ७०। ७४। শ্রীরামচল্র মহর্ষির এই প্রকার স্তববাক্যে সম্বর্ভ হইকা ঈবৎ হাস্তপূর্বক কহিলেন, ছে মুনে! মহুপাসনা হারা ভোমার চিত্ত ভূদি হইয়াছে জানিয়া আমি তোমার দর্শনার্থ এভানে আসি-মাছি, রাম ভক্তি বাভিরেকে জগতে অন্যাসাধন নাই, যাহারা नितरभक् इंदेश जामात मरहाशामन। करत्र धवः जामात्रहे नत्रणः নিরপেক্ষা নান্যগভাব্তেষাং দৃশ্যোইহমস্বহম্।
ভোত্তিমেতৎপঠেদ্যস্ত তৃৎকৃতং মৎপ্রিরং দদা॥৩৭
দন্তক্তিমে ভবেত্ত্ব্য জ্ঞানং চ বিমলং ভরবং।
তৃং মমোপাদনাদেব বিমুক্তোইসীই সর্বতঃ।৩৮।।
দেহাত্তে মম সাবুজ্ঞাং লক্ষ্যদে নাত্র সংশ্রঃ।
গুরুং তে দ্রুইমিচ্ছামি হ্যগস্তাং মুনিনায়কং।
কিঞ্জিৎ কালং তত্ত বস্তুং মনো মে ত্রয়ত্যালম্।।৩৯

মুতীক্ষোংপি তথেত্যাহ শোগমিক্ষান রাঘব!।
অহমপ্যাগমিধ্যামি চিরাদৃক্টো মহামুনিঃ ॥৪০॥
অথ প্রতাতে মুনিনা সমেতো
রামঃ সসীতঃ সহ লক্ষণেন চ।
আগল্ভ্যসম্ভাষণলোলমানসঃ।
শনৈরগল্ড্যান্ত্রমন্দিরং যথে ॥৪১॥

ইতি এমদধ্যাশ্বরামায়ণে উমামহেশ্বরদংবাদে অরণ্যকাণ্ডে দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

গাত হইয়া অন্য মৃত্তির উপাসনা করে না—আমি সভত তাহাদিগের নয়নগোচর থাকি, যে ব্যক্তি আমার প্রীতিজনক বং
কতন্তব সর্মানা পাঠ করিবে, সেই ব্যক্তির আমাতে ছায়িভক্তি
এবং নির্মাল জ্ঞানলাভ হইবে। হে মুনে! তুমি আমার উপাসনা ঘারা সর্মভোভাবে বিমুক্ত ছইয়াছ, দেহাতে নিক্তম আমার
সাযুক্তা লাভ করিবে, যাহা হউক তোমার গুরু মুনিশ্রেষ্ঠ অগতের দর্মন করিতে ইছে। করি এবং তাঁহার নিকটে কিঞিৎ
কাল বাস করিব এইরূপ আমার নিভান্ত অভিলাব ছইয়াছে।

স্তীক্ষ শ্রীরামব‡ক্যে সমত হইয়া কহিলেন—আগামি দিবদে আপনি দেই স্থানে গামন করিবেন আমি বছদিন গুরু দর্শন করি নাই, অতএব আপনার অমুগমন করিব, অনস্তর পর-দিন প্রভাতকালে অগস্ত্য দর্শনোংস্ক শ্রীরামচন্দ্র, দীতা, লক্ষণ ও'মুতীক্ষ সমভিব্যাহারে অগস্ত্যাশ্রমাভিমুখে গমন করিলেন।
। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ১৪। ৪১।

ইতি প্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানহেশ্বর সন্থাদে অরণ্যকাঞ্ছে বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

তৃতীয়ো২ধ্যায়ঃ।

অথ রামঃ স্থাকে কামক্যা লক্ষণেন চ।

অগস্তাস্যান্তহানং মধ্যাকে সমপদ্যত ॥১॥

তেন সম্পৃত্তিতঃ সম্যক্ ভুক্ত্বা মূলকলাদিকং।

পরেদুঃ প্রাতরুপায় জগ্ম স্তেইগস্তামগুলম্ ॥২॥

সর্বর্জ কলপুষ্পাত্যং নানামগগণৈযু তং।

পক্ষিসংবৈশ্চ বিবিধৈন দিতং নন্দনোপমম্ ॥৩॥

ব্রহ্মবিভিদেবর্ষিভিঃ সেবিতং মূনিমন্দিরৈঃ।

সর্বতোইলঙ্ক হং সাক্ষাদ্ ব্রহ্মলোকমিবাপরম্।।৪॥

বহিরেবাশ্রমস্যাথ স্থিয়া রামোহব্রবীম্মুনিং।

স্থাকীক্ষ গচ্ছ তং শীঘুমাগতং মাং নিবেদয়॥৫॥

অগস্তামুনিবর্যায় সীভয়া লক্ষণেন চ।

মহাপ্রসাদ ইত্যুক্ত্বা স্থাকীক্ষ্ণ প্রথমে গুরোঃ॥৬॥

আশ্রমং ত্রয়া তত্ত ঋষিসঞ্জসমারতম্।
উপবিষ্টং রামভকৈর্বিশেষেণ সমাযুতম্।।।।।
ব্যাখ্যাতরামমন্ত্রার্থং শিষ্যেত্যুশ্চাতিভক্তিতঃ।
দৃষ্ট্বাগল্ডাং মুনিশ্রেজং স্থতীক্ষ্ণঃ প্রথয়ে মুনেঃ।।৮।
দশুবৎপ্রাণিপত্যাহ বিনয়াবনতঃ স্থবীঃ।
রামো দাশরথিত্র কান্! সীতয়া লক্ষণেন চ।
আগতো দর্শনার্থং তে বহিস্তিষ্ঠতি সাঞ্জিলিঃ॥৯॥

অগন্ত্য উবাচ।

শীঘুমানয় ভদ্রতে রামং মম হৃদিস্থিতং। তমেব ধ্যায়মানো২হং কাজক্ষমাণো২ত্র সংস্থিতঃ।।

অনন্তর শ্রীরাম, নীতা লক্ষ্মণ ও স্থতীক্ষের সহিত গমন করিতে করিতে মধ্যাহ্নকালে পথিমধ্যে অগন্ত্যামুজের আশ্রম প্রাপ্ত হইলেন, অগন্ত্যামুজ মহর্ষি তাঁহাদিগের যথাবিধি পূজা করিরা কলমূলাদি দারা আতিথ্য করিলেন, উচ্ছারাও ঐ স্থানে ঐ দিবদ বিশ্রাম করিরা পারদিন প্রত্যুষ্টে গাত্রোখানানন্তর প্রস্থান করিলেন এবং কিরন্দুর গমনানন্তর দর্ম প্রকার ফলপুপ্রশোভিত, নানাবিধ মৃগগণ সঙ্গুল, বিবিধ বিহন্ধম কলনাদ্পূর্ণ বিতীয় নন্দনকাননোপম এবং দেবর্ষি ব্রন্ধর্মণ সেবিত ব্রন্ধনাক সদৃশ ও চতুদ্দিকে মুনি মন্দির দারা সমলঙ্কত অগন্ত্যাশ্রমে উপস্থিত হইলেন । ১ । ২ । ৩ । ৪ । শ্রীরামচক্র আশ্রমের বহির্দেশে দণ্ডার্মান হইয়া স্থতীক্ষ মুনিকে কহিলেন, তেই মহর্ষে ! তুমি শীত্র গমন করিরা অগন্ত্যের নিকট দীতা

লক্ষমণের সহিত আমার সমাগম সম্বাদ নিবেদন কর, স্থাতীক্ষমনি প্রীরামের আজ্ঞা অতিসাদরে শিরোধারণ করিয়া অগস্ত্যাশ্রমে প্রবেশ করিলেন এবং অনতিদূরে অবলোকন করিলেন
যে, আসনোপবিষ্ট মহর্ষি অগস্ত্য জ্রীরামতক্ত মহর্ষি গণ কর্ত্বক
পরিবৃত হইয়া শিষ্যগণকে প্রীরাম মন্ত্রবাধ্যা উপদেশ করিতেছেন। অনস্তর স্থতীক্ষমূনি গুরুসনিধানে গ্রন করিয়া দণ্ডবৎ
প্রনিপাতানস্তর বিনয় বচনে কহিলেন—হে ব্রহ্মন্! দাশর্মপি
জ্রীরামচন্দ্র, সীতা লক্ষণের সহিত কতাঞ্জলি হইয়া আপনার
দর্শনার্থ বহির্দ্দেশে দণ্ডায়মান আছেন। রে। ৬ াব।৮। ৯।
অগস্ত্য রামনাম প্রবণমাত্র ব্যগ্র হইয়া কহিলেন। হে স্থতীক্ষ,
তোমার মঙ্গল হউক—এক্ষণে আমার হাদয়াধিষ্টিত প্রীরামচন্দ্রকে
এই স্থানে আনয়ন কর, যাঁহার দর্শনাভিলাবে ধানাবলম্বন
করিয়া স্বরণানধ্যে বাদ করিতেছি। অগস্ত্যমূনি স্করীক্ষকে

ইত্যুক্তা স্বরম্পার মুনিভিঃ সহিতো জ্বতং।
অভারাৎপররা ভক্তা গড়া রামমথাত্রবীৎ ॥১১॥
আগচ্ছ রাম! ভচুন্তে দিন্ট্যা ভেহদ্য সমাগমঃ।
প্রিরাতিথির্মমপ্রাপ্তোহ্সদ্য মেসকলং দিনম ॥১২
রামোহিপি মুনিমারান্তং দৃন্ট্যা হর্ষসমাকুলঃ।
সীতরা লক্ষণেনাপি দণ্ডবৎপতিতো ভুবি ॥১৩॥
জ্বতম্পাপ্য মুনিরাট রামমালিঙ্গ্য ভক্তিতঃ।
তদ্যানস্পর্শজালাদ্রবন্ধেত্রজলাকুলঃ॥ ১৪॥
গৃহীড়া করমেকেন করেণ রঘুনন্দনম।
জ্বগাম স্বাশ্রমং ক্রেটা মনসা মুনিপুঙ্গবং॥১৫॥
স্বেগেপবিন্টং সম্পূজ্য পূজ্রা বছবিশুর্ম।
ভোজরিড়া যথান্যারং ভোক্ত্যেক্বিন্যরনেকধা॥১৯।

মুখোপবিউনেকান্তে রামং শশিনিভাননং।

কৃতাঞ্জলিরুবাচেদমগত্যো ভগবান্ধিঃ॥১৭॥

ঘদাগমনমেবাহং প্রতীক্ষন্ সমবস্থিতঃ।

ঘদা ক্ষীরসমুদ্রান্তে ব্রহ্মণা প্রাথিতঃ পুরা॥ ১৮॥

ভূমের্ভারাপমুত্ত্যর্থং রাবণস্য বধায় চ।

তদাদিদর্শনাকাঞ্জ্যী তব রাম! তপশ্চরন্।

বসামি মুনিভিঃ সার্দ্ধং ত্বামেব পরিচিন্তয়ন্॥ ১৯॥

স্কেঃ প্রাণেক এবাদীয়ির্ফিকশ্পোহমুপাধিকঃ।

ঘদাশ্রমা ছিষয়া মায়া তে শক্তিরুচ্যতে॥ ২০॥

ঘামেব নিগুলং শক্তিরার্ণোতি যদা তদা।

অব্যাক্তমিতি প্রান্থকিদান্তপরিনিন্তিতাঃ॥ ২১॥

মূলপ্রক্রতিরিত্যেকে প্রান্থমানিতি কেচন।

অবিদ্যা সংস্তিরিক্ষ ইত্যাদি বছধোচ্যতে॥ ২২॥

এইরপ আদেশ করিয়া স্বয়ং ঋষিগণের সহিত জ্ঞারাম সমীপে উপস্থিত হইলেম, অনস্তর পরম ভক্তিসহকারে কুশল জ্ঞারামনস্বর জ্ঞারামকে কহিলেন, হে রাম। আগমন কর, অদ্য আমি বহুভাগো ডোমার সমাগম লাভ করিয়াছি, একাণে চিরাভিল্রিত অভিথি সংকার করিয়া দিন সফল করিব। জ্ঞারামন্চক্র সমাগত আগস্তা ঋষিকে দর্শন করিয়া দীতা লক্ষণের সহিত ভূতলে দশুবং পতিত হইলেন, ম্নিরাজ অগস্তা শ্রীরামকে সত্ত্রর ভূমি হইভে উত্থাপিত করিয়া ভক্তিসহকারে আলিক্ষন করিবেন এবং বদক্ষপশ জনিত আনন্দাক্রপূর্ণলোচনে বারম্বার দৃষ্টিপাত করত নিজ্বহন্তম্বারা জ্ঞারামের কর গ্রহণ করিয়া নিজ্পুহে উাহাদিগকে আনম্বন করিলেন।১০৭১১।১২।১৩।১৪।১৫।

অনন্তর মছর্ষি প্রীরামকে আসনোপবেশন করাইর। বছ-বিস্তর পূজানস্তর বছবিধ বনা ফলমূলাদি দ্বারা মথাযোগ্য-ভোজন করাইলেন, এবং সীতা লক্ষণকেও সেইরূপ যথাযোগ্য ভোজন করাইরা শ্রীরামকে নির্জনস্থানে আনরনপূর্কক আসন প্রদান করিলেন। পূর্ণচন্দ্র সদৃশ প্রীরামচন্দ্র পাসনোপবেশন করিলে পাসন্তামুনি কৃতাঞ্জিপিটে তাঁছাকে কহিলেন। ১৬। ।১৭। ছে ভগবন্! যৎকালে কমলযোনি ভূভারাপনোদনের নিমিত্ত ক্ষীর সমুদ্র তীরে প্রাপনাকে প্রার্থানা করিয়াছিলেন—তৎকালাবধি আমি তোমার দর্শনাকাক্ষী হইরা অনন্যচিত্তে তপোস্থঠান করত এই অরণ্যমধ্যে মুনিগণের সহিত বাস করিতেছি। ছে পরমাত্মন্। স্থাইর পূর্বকালে তোমাতে মায়ারূপ উপাধির সম্বন্ধ না থাকার এই ক্ষণং প্রপঞ্চ উৎপন্ন হর নাই, তৎকালে ভূমিই গুণাতীত এক মাত্র পদার্থ ছিলে, অন্ত পদার্থ কিছুই ছিলনা। স্থাইকালে দ্বনীয় শক্তিরূপ মায়া তোমাকে প্রাবরণ করে, বেদান্তিকেরা ঐ শক্তিকে তদবস্থায় অবাক্ষত বলিয়ানির্দেশ করে। ১৮।১৯। ২০।২১। সাধ্যের তাঁছাকে মূল প্রকৃতিবলে,কোন কোন পণ্ডিতের। অবিদ্যাসংসার ও বন্ধন এইরূপ নানাবিধ সংজ্ঞা দ্বারা তাঁছাকে নির্দেশ করেন,

আহন্তারো মহন্ত ত্বসংক্ত ব্রেবিধোহতবৎ।
সাত্তিকো রাজসন্চৈর তামসন্চেতি তণ্যতে । ২৩
তামসাৎ স্ক্রতশাত্তাণ্যাসন্ ভূতান্যতঃ পরম্।
স্কুলানি ক্রমশোরাম ! ক্রমোন্তরগুণানি হ ॥ ২৪
রাজসানীন্তিয়াণ্যের সাত্তিকা দেবতা মনঃ।
তেত্যোহতবৎ স্ত্ররূপং লিক্ষং সর্ক্রগতং মহৎ।।২৫
ততো বিরাট্ সমুৎপন্নঃ স্থ লাস্ভ্রকদম্কাৎ।
বিরক্তঃ পুরুষাৎ সর্কং জ্বাৎ স্থাবর্জক্সং ॥২৬॥

মূলপ্রকৃতি হইতে বৃদ্ধিতত্ব উৎপন্ন হয়, 🗳 বুদ্ধিতত্বের নামান্তর মহতত্ব, মহতত্ব হইতে অহস্কার উৎপন্ন হয়-এ অহকার তিবিধ; দাভিক, রাজদ, তামস (অর্থ ৭ৎ) মূলপ্রকৃতির সত্ত রজ স্তমেণ-গুণ থাকায় তত্ৎপন্ন মহন্তত্বেরও ঐ ত্রিবিধ গুণ দংক্রমিভ হয়। ক্রমশ মহতত্বজন্য অংফারেও কারণ গুণারুসারে ঐ তিবিধ গুণ উৎপল হয়, ভামস আহহ†র হইতে শব্দ সপ্শ রপ রস গক এই পাঁচটী স্থন্মত মাত্র উৎপন্ন হয় , স্ক্ষমতন্মাত্র হইতে সুল পঞ্চ-ভূত উৎপন্ন হয়—অর্থাৎ শব্দ হইতে আকাশ; শব্দ ও স্পর্শ হইতে বায়ু; শব্দ, স্পর্ণ ও রূপ হইতে তেজ ; শব্দ স্পাশ রূপ রম হইতে জল; শক পাশ রূপ রস ও গন্ধ এই পঞ্চইতে भृभिनी छे९भन्न इत्र । २२ । २७ । २৪ । রাজস **अ**ह-স্কার হইতে ইব্রিয় উৎপন্ন হয়—তন্মধ্য বাক্, পাণি, পাদ, পায়ু, উপস্থ এই পাঁচটী কর্মেন্সিয়—চক্ষু, শ্রোত্ত, ত্বক্, রসনা, खान এই পাঁচটी জ্ঞানে खिन्न- माजिक जहकात इरेट ठकून অধিষ্ঠাতারবি, শ্রোত্তের দিক্, ত্রােব্রিয়ের বায়ু, রসনার বকণ, জাণেব্রিয়ের অশ্বিনী কুমার, বাক্যেব্রিয়ের অগ্নি, পাণির ইন্দ্র, পাদের উপেন্দ্র, পাউর মিত্র, উপস্থের ব্রহ্মা, এই সকল ইন্দ্রিরাধিষ্ঠাত্রী দেবতা ও মনোরূপ অন্তরেন্দ্রির উৎপন্ন হয়। স্ক্ষম তথ্যত্রাদিরপ অহঙ্কারের কার্য্য হইতে স্ক্রম সমষ্টিরপ रित्रनागर्शक नामक निक्रमंत्रीय छेर्प्य इत्र, छाराय नामाखर স্থা, সেই স্তা হইতে স্থূল সমষ্টি রূপ বিরাট পুৰুষ উৎপন্ন হর-বিরাট পুক্ষ হইতে স্থাবর জন্ম সমস্ত উৎপন হইগাছে;

দেবতির্যাগ্রন্থ বাদ্য কালকর্মাক্রমেণ তু।
ত্বং রজোগুণতো ব্রহ্মা জগতঃ সর্বকারণম ॥ ২৭
সত্বাবিষ্ণু স্থমেবাস্য পালকঃ সন্তিরুচ্যতে।
লয়ে রুদ্ধে স্থমেবাস্য স্মায়াগুণভেদতঃ॥ ২৮॥
জাগ্রৎস্থপুরুষ্ণ্যাথ্যা রুদ্রো বৃদ্ধি গুণৈঃ।
তাসাংবিলক্ষণো রাম। তুং সাক্ষী চিম্ময়েহব্যরঃ॥
সৃষ্টিলীলাং যদা কর্জুমীহদে রঘুনন্দন!।
অক্ষীকরোষি মায়াং তুং তদা বৈ গুণবানিব॥৩০॥
রাম! মায়া দ্বিধা ভাতি বিদ্যাবিদ্যেতি তে সদা।
প্রস্তিমার্গনিরতা অবিদ্যাবশ্বর্জিনঃ।
নির্বিষ্ঠমার্গনিরতা বেদাস্তার্থবিচারকাঃ॥ ৩১॥

তন্মধ্যে দেবতা তির্যাগযোগি ও মনুষ্যরপ জন্ম পদার্থ কাল-সহক্ত অদৃষ্টের বশবর্ত্তী হইয়া উৎপন্ন হইয়াছে। হে জগ-দীশ্বর ! এই জগতে তুমি ভিন্ন কিচুই নাই, তুমি কখন রজোগুণ রূপ উপাধিযোগে ত্রন্ধা হইয়া জগতের নিশ্মাণ করিভেছ, কখন সত্ব গুণ যোগে বিষ্ণু ছইয়া পালন করিতেছ, প্রলয় কালে ত্রমোগুণমন্ন কন্তরূপী ছইয়া সমস্ত জগতের সংহার করিতেছ। ২৫।২৬।২৭।২৮। যৎ কালে প্রাণিগণের বুর্দ্ধি সজ্ঞণাব-লম্বিনী হয় তৎকালে তাহাদিগের জাঞাদবস্থা, রজোগুণাব-ৰশ্বিনী হইলে স্বগ্লাবস্থা, তমোগুণাবলন্বিনী হইলে তাহাদের সুযুপ্ত্যবস্থা হইয়া থাকে। হে রাম ! তুমি সাক্ষিস্তরপ হইয়া তাহাদিগের ঐ সকল অবস্থা অবলোকন করিতেছ, অর্থাৎ তোমার কোন কালে অবস্থান্তর হয়না, বেচ্ছেতু তুমি নিত্য চৈতনাস্বরূপ। হে রঘুনন্দন! যৎকালে ভোমার জগৎ স্টিরপ লীলা করিতে ইচ্ছা হয় তৎকালে মায়া ভোষাকে অবশ্যন করে; হে পরমাত্মন্ ! তুমি নিওণি কিন্তু মারা সম্বন্ধ ছইলে সগুণের ন্যায় ভোমার প্রকাশ হর। ছে জগদীশ্বর! ভোমার মায়াই সংসার বন্ধন ও মুজি ত্ত ক্তিনিরতা ষে চ তে বৈ বিদ্যাময়াঃ স্মৃতাঃ।
তথি বিদ্যান্যপাগা ষে তু নিত্য মুক্তান্ত এব হি।। ২২
বিদ্যাভ্যাসরতা যে তু নিত্য মুক্তান্ত এব হি।। ২২
লোকে ছক্তিনিরতান্ত স্মান্তোপাসকাক্ষ যে।
বিদ্যা প্রাদুর্ভবৈতে ষাং নেতরে ষাং কদাচন।। ৩৩
ত্বত্ত ক্তিসম্পন্না মুক্তা এব ন সংশয়ঃ।
ত্বত্ত স্মৃতহীনানাং মোক্ষঃ স্বপ্লেহপি নো ভবেত।
কিং রাম! বছনোক্তেন সারং কিঞ্ছিন্ত্রবীমি তে।
সাধুসক্ষতিরেবাত্র মোক্ষহেত্র দাক্ষতা।। ৩৫।।
সাধবঃ সমচিতা যে নিস্পৃহা বিগতিষিণঃ।
দান্তাঃ প্রশান্তান্ত ক্তানিরতাথিলকামনাঃ॥ ৩৯।

উভরের সাধন, যেহেতু মায়া দিবিধ, একের নাম অবিদ্যা— অপরের নাম বিদ্যা। অবিদ্যা বশবর্ত্তী লোকেরা প্রবৃত্তিমার্গে রত হয়, স্মতরাং তাছাদের মৃক্তি হয়না—ক্রমশঃ সংসার বন্ধন হয়,বিদ্যাবশবর্ত্তী লোকেরা নিরুত্তি মার্গে রত হইয়া তোমাতে দৃঢ় ভক্তি লাভ করে স্বভরাং ভাহাদের মোক হয়, যাহারা ভজিপূর্বক তোমার মন্ত্রোপোসনা করে তাছারাই বিদ্যাবশ-বন্তী হইয়া থাকে। অভএব ত্বস্বস্ত্রোপাসক ভক্ত দিগের নিশ্চর মুক্তি লাভ হইবে—তন্তুক্তি শূন্য ব্যক্তি দিগের স্বপ্নেও মুক্তিলাভ ছইবে না। ২৯। ৩০। ৩১।৩২।৩৩।৩৪ হে রাম। থাছারা বিপদে সম্পাদে সমচিত্ত নিস্পৃছ, তপঃক্লেশ সহিষ্কৃ, শান্তিগুণাবলম্বী, এবং তোমার ভক্ত হর্ষ বা বিষাদ সময়ে ছঠ वा विषक्ष नट्ड अवर मर्समा निर्द्धन चातन कामनाविष्ठ इदेशा বন্দচিন্তা করে, যম, নিয়মাসন, প্রাণারাম, প্রত্যাহার, ধান, भावना अममाधि त्रभ माना खन युक्त इत्र, जाहा वाहे এरे क्रगांज माधू, माधू मक्टे (माक्कित कांत्रन (यर्ट्यू मदमक इटेल छक् ক্ষা ভাবণে অনুরাগ হয়,অনুরাগ হবৈলে ভোমাতে দৃঢ় ভক্তি, ভিক্ত इरेलरे विश्रम विकान-विकान इरेल अवगारे मुक्ति

ইউপ্রাপ্তিবিপত্ত্যোক্ষ সমাঃ সঙ্গবিবর্জিতাঃ। সংন্যস্তাখিলকর্মাণঃ সর্বাদা ভ্রন্মতৎপরাঃ॥ ৩৭॥ যমাদিগুণসম্পন্নাঃ সন্ত্ৰী যেন কেন্চিৎ। সৎসক্ষমা ভবেদ্যহি স্বৎকথা প্রবণে রতিঃ।। ৩৮ 🛭 সমুদেতি ততো ভক্তিন্ত্রি রাম। সনাতনে। ছন্তকাবুপপন্নায়াং বিজ্ঞানং বিপুলং ক্ষুটম্।।৩৯। উদেতি মুক্তিমার্গোইয়মাদ্যকত্রদেবিতঃ। তস্মাদ্রাঘব ! সম্ভক্তিস্ত্রয়ি মে প্রেমলক্ষণা !।। ৪০।। সদা ভূয়াদ্ধরে ! সঙ্গস্তুতক্তেযু বিশেষতঃ। व्यम् ८म मकनः क्रम्म छव रममर्गनाम जूर ॥ १५ ॥ খদ্য মে ক্রডবঃ সর্কে বভূবুঃ সকলাঃ প্রভো।! দীর্ঘকালং ময়া তপ্তমনন্মতিনা তপঃ। তদ্যেহ তপ্রে। রাম ! ফলং তব যদর্চনম্ ॥ ६২॥ সদা মে সীতয়া সাদ্ধং হৃদয়ে বস রার্ঘব গচ্ছতন্তিষ্ঠতো বাহপি স্মৃতি: স্যাম্মে সদা ডব্লি॥৪৩ ইতি স্তত্ত্বা রামনাথমগন্ত্যো মুনিসত্ত্যঃ। मत्नी ठां पर मरहरक्तन द्वामार्ट्स स्वाभिष्टर भूदा।।८८ লাভ হয়,পণ্ডিতের। এই প্রধান মুক্তিমার্গ সেবা করিয়া থাকেন। ছেরাম! আমি ভোমার নিকট প্রার্থনা করিযে, ভোমাডে আমার প্রেম রূপ ভক্তি ও সাধুসঙ্গ হউক। হে দাশরথে ! অদ্য (जामात नर्मान क्यामात क्या ७ यांश यळानि मकन इरेजार्ड, मीर्घकान व्यवसाहित्व (य मकन ज्लानूर्वान कविशाहि वना वृत्तीत्र शृक्षांकद्रश (मारे जकल उलमा) द कल विरवहना कदिए हि ।৩৫।৩৬।৩৭।৩৮।৩৯।৪०।৪১।৪২। বাহা হউক রাম! ভোমার নিকট আমি প্রার্থনা করি যে, ভূমি দীতাদেবীর সহিত আমার হৃদয়ে সর্বাদা বাস কর, এবং আমি গমন ও উপবেশন কালে ভোমাকে হৃদয়ে স্মরণ করিতে পারি। অগস্তামুনি এই রূপ স্তব করিয়া শ্রীরাম চন্দ্রকে একটা অতুল্য কোদও অক্সয়

আক্ষেয়ে বাণভূণীরে খজো রত্ন বিভূষিতঃ ॥ ৪৫॥

আহি রাঘব! ভূভারভূতং রাক্ষমশুলং ॥ ৪৫॥

যদর্থমবতীর্ণোহসি মারয়া মনুজাক্কতিঃ।

ইতো যোজনযুগ্মে ভু পুণ্যকাননমন্তিতঃ ॥ ৪৬॥

অভি পঞ্বটীনামা আশ্রমো গোভমীতটে।

নেতব্যক্তর তে কালঃ শেষো রযুকুলোদ্বং!॥৪৭॥

তবৈব বহুকার্য্যাণি দেবানাং কুরু সৎপতে !॥৪৮।

শ্রুত্ব তদাগস্তাশুভাষিতং বচঃ স্তোত্তপ্প তত্বার্থসমন্থিতং বিভুঃ মুনিং সমাভাষ্য মুদান্বিতো যথে। প্রদর্শিতং মার্গমশেষবিদ্ধারিঃ॥ ৪৯ ট

ইতি শ্রীমনধ্যাত্মরামায়ণে অরণ্যকাণ্ডেউমামহেশ্বর সম্বাদে তৃতীয়োহধ্যার ।

তৃণীর বাণ ও রত্ন ভূষিত খজা প্রদান করিলেন, যাহা প্রীরামকে
দিবার নিমিক্ত স্থরপতি পূর্ব্বকালে অগস্ত্যের নিকট স্থাপিত
করিয়াছিলেন। অনুস্তর অগস্তামুনি কহিলেন হে রাম আপনি
ভূতারহরণের নিমিক্ত অগতীর্ণ হইরাছেন, এক্ষণে ভূতারস্থরপ রাক্ষ্য বংশ দমূলে উচ্ছিন্ন করুন, এ স্থান হইতে যোজন
দ্বর পরিমিত পথ অতিক্রম করিয়া গোত্নী নদীতটে পঞ্চবটী
নামক আশ্রম দেখিতে পাইবেন, সেই স্থানেই চতুদ্দিবর্ষের

অবশিষ্ট কাল অতিবাহিত করতঃ দেবতাদিগের বছতুর কার্যা সাধন করন। জীরাম চন্দ্র অগন্তোর বাক্য ও তৎক্রতসদর্থ পূর্ব-স্তব প্রবণানন্তর আনন্দ সহকারে মুনিকে সন্তাবণ করিয়া তৎপ্রদর্শিত পথাবলম্বন পূর্বক পঞ্চবটীমুখে গমন করিলেন। ৪৩। । ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯।

ইভিশ্রীমদধ্যাত্মরামান্ত্রণে উমামহেশ্বরসম্বাদে অরণ্যকাণ্ডে তৃতীরোহধ্যার।

চতুর্থাইধ্যায়ঃ।

স্ত উবাচ।

মার্গে ব্রহ্মনদর্শাথ শৈলখৃষ্কমিব ছিতম্।
রক্ষং জটায়ুবং রামঃ কিমেতদিতি বিস্মিতঃ॥ ১॥
ধনুরানয় সৌমিত্রে! রাক্ষসোহয়ং পুরঃ ছিতঃ!
ইত্যাহ লক্ষণং রামো হনিব্যাম্যবিভক্ষকম ॥ ২॥
তচ্ছুলা রামবচনং গুধুরাট, ভয়পীড়িতঃ।
বধাহোঁহহং ন তে রাম! পিতুল্ডেইহং প্রিয়ঃ সধা॥
জটায়ুর্নাম ভদ্রন্তে গুধ্বোইয়ং প্রিয়ক্রন্তব॥ ৪॥
পঞ্চবট্যামহং বস্ত্যে তবৈব প্রিয়কাম্যা।
মৃগয়ায়াং কদাচিত্র প্রয়াতে লক্ষ্মণেইপি চ॥ ৫॥

স্ত কহিলেন—তদন্তর রাম গমন করিতে করিতে পথিমধ্যে পর্কত শৃক্ষ সদৃশ রন্ধ জটায়ুকে সন্দর্শন করিয়া অতি বিশ্ময় সহকারে লক্ষাণকে কহিলেন—হে সৌমিত্রে! দেখা দেখা আমাদিগের পুরোজাগে একটা রাক্ষম রহিয়াছে, অতএব শীঅ ধনুরানয়ন কর আমি ঐ শ্ববিভক্ষককে বিনাশ করিব। জীরামের বাক্য শ্রবণ করিয়া গ্ররাজ ভয়বাগকুলিত হইয়াকহিলেন, হে শ্রীরাম! আমি ভোমার পিতার পরম বন্ধু জটায়ু নামক পকী—ভোমার হিতকারী, অতএব ভোমার অবধ্য। ভোমারই হিত কামনোর্দেশে পঞ্চবটী বনে বাম করিভেছি, দেখ কোম দিন লক্ষাণদেব মৃগয়ায় গমন করিলে আমি জনক নন্দিনী জানকীকে পরম যত্মের সহিত রক্ষা করিব। রামচন্দ্র

নীতাজনককন্যা যে রক্ষিত্ব্যা প্রয়েত্তঃ।
ক্রমা তদ্গৃধ্বচনং রামঃ সম্প্রেছমন্ত্রীৎ॥॥॥
নাধু গৃধুমহারাজ! তথৈব ক্রু মে প্রিয়ম্।
অত্তিব যে সমীপছে৷ নাতিদূরে বনে বসন্॥ १॥
ইত্যামন্ত্রিতমালিক্য যয়ে। পঞ্চবটাং প্রভুঃ।
লক্ষণেন সহ ভাতা গীত্রা রত্মন্দনঃ॥ ৮॥
গড়া তে গৌতমীতীরং পঞ্চবট্যাং স্বিক্তর্ম।
মন্দিরং কার্যামান লক্ষণেন সুবৃদ্ধিন।॥ ১॥

সাধু, তবে এই বনের অনতি দ্রে থাকিরা আমার প্রিয় কার্য্য উত্তমরূপে সম্পন্ন কর। এই প্রকার আমন্ত্রণ করিরা রয়ুনন্দন রাম তাহাকে আলিঙ্গন পূর্বক লক্ষাণ ও সীতা সমভিব্যাহারে পঞ্চবটা গমন করিলেন। তাঁহারা গোদাবরী তীরে আগমন করিলে রাম ধীশক্তি সম্পন্ন লক্ষ্যণ কর্ত্তক পঞ্চবটা বনে প্রশস্ত বাস গৃছ নির্মাণ করাইলেন। ১।২।০।৪।৫।৬। ৭।।৮।৯। তাঁহারা সেই কদম্ব পনস চূত প্রভৃতি পাদপ সমায়ুক্ত, লোকোপদ্রব ও রোগ বিরহিত গঙ্গার উত্তর তীরে অবন্থিতি করিতে লাগিলেন। জ্ঞারাম জনকাত্মনা জানকীর আনন্দ বর্দ্ধন করতঃ সর্ব্ব শাস্ত্র বিশারদ লক্ষ্যণের সহিত দেব লোক ইক্রের ন্যায় পরম স্থাথে অবন্থিতি করিতে লাগিলেন। লক্ষ্যণ জ্ঞারামের সেবার জন্য প্রতিদিন কন্দ-মূল ও ক্ষলান্দি আহরণ করিয়া তাঁহাদিগকে প্রদান করিতে লাগিলেম এবং ধুমুর্ব্বাণ ধারণ করতঃ নিত্য নিত্য রাজি জ্ঞাগরণ করিতেন। তাঁহারা তিন জনে গোদাবরীর নির্মান সনিলে অবগাহন

তত্র তে ন্যবদন্ দর্কে গঙ্গারা উত্তরে তটে। कत्रभावानिकन्द्रक्रमभाकुरन ॥ ১०॥ বিবিক্তে জনসমাধবর্জিতে নীরুজস্থলে। वित्नामयन् अनक्षाः लक्षांत्वन विश्व किला ॥ ५०॥ অধ্যবাস সূথং রামোদেবলোক ইবামরঃ। कम्म यूलक लोगीनि लक्कार गारे सुनिन ९ उर्गाः ॥ १२ ॥ चानीয় প্রদদে রামদেবাতৎপরমানসঃ। ধমুর্ব্বাণধরো নিত্যং রাত্রো জাগর্ত্তি সর্ব্বতঃ ॥ ১৩॥ স্থানং কুর্বস্তানুদিনং ত্রয়স্তে গৌতমীজলে। উভয়োর্মধ্যনা সীতা কুরুতে চ নমানমৌ ॥ ১৪॥ আনীয় সলিলং নিত্যং লক্ষণঃ প্রীতমানসঃ। সেবতেহ্ররহঃ প্রীত্যা এবমাসন্ স্থুখং ত্রয়ঃ ॥ ১৫ একদা লক্ষণো রামমেকান্তে সমুপস্থিতম্। বিনয়াবনতো ভূড়া পপ্রচ্ছ পরমেশ্বরম্।। ১৬॥ ভগবন্! শ্ৰোতুমিচ্ছামি মোক্ষটেকাভিকীং গতিম্ ত্তঃ কমলপত্রাক ! সচ্চেক্ষপাত্তকু মহ সি ? ॥১৭॥

পূর্ব্বক স্নান করিতেন, এবং রাম ও লক্ষ্মণের মধ্যবর্ত্তিনী হইরা সীতা গমনাগমন করিতেন। লক্ষ্মণ প্রীতান্তঃকরণে গোতমী নদী ছইতে জলানয়ন করিয়া জ্রীরাম ও সীতার সর্বাদা সেবা করিতেন; । ১০।১১।১২।১৩।১৪।১৫।

একদিন বিশ্বপৃতি রাম একাকী উপবেশন করিয়া আছেন ইত্যবসরে লক্ষ্মণ সবিনয় প্রণিপাত করিয়া তাঁছাকে জিজাসা করিলেন হে ভগবন্! আপনি ভিন্ন ভূমওলে আর কেছই বক্তা নাই, অতএব আমি আপনার নিকট মোক্ষের ঐকান্তিক কারণ প্রবণ করিতে বাসনা করিতেছি—হে কমল লোচন! ভাছা কি সংক্ষেপে কছিবেন ? হে রঘু কুল শ্রেষ্ঠ! ভক্তি ও বৈরাগ্য দারা পরিবর্দ্ধিত মননাদিরপ জান ও নিদিধাসন জানং বিষ্ণানসহিতং ভক্তিবৈরাগ্যরংহিতম্। আচক্ষ্ব যে রঘুশ্রেষ্ঠ ! বক্তা নান্যোহন্তি ভূতলে॥১৮

প্রিরাম উবাচ।

শূণু বক্ষ্যামি তে বৎস ! গুহাদ্গুহতরং পরম্।
যদিজায় নরো জহাৎ দদ্যো বৈকল্পিকং ভ্রমন্।
আদে মায়াস্বরূপং তে বক্ষ্যামি তদনন্তরম্।
ভোনস্য সাধনং পশ্চাৎ জ্ঞানং বিজ্ঞানসংযুত্য ॥২০
ভ্রেয়ং চ পরমান্ত্রানং যক্ত্রাত্বা মুচ্যতে ভ্রাৎ।
ভ্রনাত্রনি শরীরাদাবাত্রবৃদ্ধিস্ত যা ভবেৎ ॥ ২১ ॥
বৈব যায়া তরৈবাসে সংসারঃ পরিকল্পাতে ॥২২ ॥
কপে ত্বে নিশ্চিতে পূর্কাং যায়ায়াঃ কুলনন্দন! ॥২৩

জনিত আত্মসাক্ষাৎকার স্বরূপ বিজ্ঞান এই ভূইটা বিশেষ করিয়া আমাকে বলুন।১৬ : ২৭ | ১৮ |

শ্ৰীরাম কহিলেন—হে বৎস! যাহা অবগত হইলে লোক মাত্রই বৈকশ্পিক ভ্রম (অর্থাৎ অলীক জগভের সত্য স্বরূপে প্রতীতি) হইতে সদ্য মুক্তি প্রাপ্ত হয়, তাহার নিগ্ঢ় বিষয় বর্ণনা করিব শ্রবণ কর। ছে লক্ষণ! অত্যে মায়া স্বরূপ কহিব-তাহার পর জ্ঞানের সাধন—ভদনস্তর বিজ্ঞান সংযুক্ত জ্ঞানের বিষয় বর্ণনা করিব—পরিশেষে জ্ঞাতব্য পরমাত্মার কথা বলিব—ছে' লক্ষ্মণ ! ঐ সমস্ত অবগত ছইলে সংসার ভয়ের লেশমাত্র থাকে না। শরীর প্রভৃতি সমুদর পদার্থ আমার নছে, কিন্তু ঐ সকল আমার বলিয়া প্রতীতি হওয়ার নাম মায়া এবং উছা হারাই সংসার পরিক্ষিত হইয়া থাকে; হে কুল-ननन । श्रे मात्रात्र जानि दृष्टे त्रश निर्मिष्ठे जा (इ, -- वित्कश শক্তি ও আবরণ শক্তি, ইছার মধ্যে প্রথমটী মহজ্বাদি ব্রহ্মা পর্য্যন্ত স্থান ও স্ক্রম ভেদে বিশ্বকে প্রকাশ করে, এবং অপর-টী অখিল জ্ঞান আবরণ করিয়া অবস্থিতি করে। হে লক্ষাণ! চৈতন্য অপ্রকাশিও থাকিলে মনুষ্যেরা বিক্ষেপ শক্তি কম্পিত জগতকে সত্য বলিয়া প্রত্যয় করে। ভাষ্টি বশতঃ বজ্জুত্

বিক্ষেপাবরণে তত্ত্ব প্রথমং কম্পারেক্ষণং।

ক্রিশ্বাদ্যা প্রক্ষাপর্য স্থান্থ স্থান্দ ক্রিলিল । ২৪ ॥

অপরং ত্বিলং জ্ঞানং ক্রপমারত্য তির্কৃতি।

মারয়া কম্পিতং বিশ্বং প্রমাত্মনি কেবলে ॥ ২৫ ॥

রক্ষে ভুক্ত কর্তান্তা বিচারে নান্তি কিঞ্চন।

ক্রমতে দৃশ্যতে বদ্যৎ স্মর্যাতে বা নরৈঃ সদা॥ ২৬

অসদেব হি তৎসর্বং যথা স্থাননোরথো।

দেহ এব হি সংসাররক্ষমূলং দৃঢ়ং স্মৃত্ম ॥ ২৬ ॥

তন্মুলঃ পুজ্রদারাদিবক্ষঃ কিন্ত্যেইন্যথাত্মনঃ ॥ ২৭ ॥

দেহস্ত স্থানাং পঞ্চন্মাত্রপঞ্চকম্।

অহঙ্কারশ্চ বুদ্ধিশ্ব ইন্দ্রিয়ানি তথা দশা॥ ২৮ ॥

চিদাভাসো মনশ্চৈব মূলপ্রকৃতিরেব চ।

এতৎক্ষেত্রমিতি জ্রেয়ং দেহ ইত্যভিধীয়তে॥ ২৯ ॥

ষেমন ভুজস্ব জ্ঞান হয়, সেইরপ অধিষ্ঠান তত্বজ্ঞান বিচার করিলে কিছুই নাই; মনুষোরা যাহা কিছু শ্রবণ করে—
দর্শন করে, অথবা সারণ করে, সে সমস্তইসপ্র-দৃষ্টবস্তুর ন্যায় মিথ্যা। এই দেহ সংসাররপ রক্ষের দৃঢ় মূল স্বরূপ, এবং তাহাই পুল্র দারাদির উৎপত্তির মূল—অতএব ঐ.দেহ না থাকিলে আত্মার কিছুই নাই। অর্থাৎ পুল্রাদির উৎপত্তি হয় না। দেহ হুই প্রকার—স্থূল ও স্থা। স্থূল দেহ স্থূলপঞ্চত (অর্থাৎ ক্ষিতি জ্ঞল তেজ বায়ু আকাশ এই সমস্ত পদার্থন্ময়) স্থল্ম শরীরের নাম বিজদেহ—ঐ লিক্ষদেহ স্ক্ষমভূত (অর্থাৎ রূপরস গন্ধ স্পার্শ শব্দ) এবং অহলার বৃদ্ধি ও পাঁচটী কর্মেন্দ্রের ও পাঁচটী জানেন্দ্রির এবং মনোরপ অন্তরেন্দ্রির এই অফীদশ পদার্থের স্বরূপ, ঐদেহেতে মনুষোরা অহং বৃদ্ধি করিয়া থাকে। হে ভাতঃ! মনুষ্যাদি শরীর বিকৃতি (অর্থাৎ জন্ম), ক্রার শরীর মূলপ্রকৃতি (অর্থাৎ নিত্য), এই শরীর ক্রড়পদার্থ, এই কারণে পশ্তিক্রো ইহাকে ক্ষেত্র বিশ্বা

এতৈর্বিলক্ষণে জীবঃ পরমাত্মা নিরাময়ঃ।
তক্স জীবক্স বিজ্ঞানে সাধনান্যপি মে শৃণু ॥ ৩০ ॥
জীবক্ষ পরমাত্মা চ পর্যায়ো নাত্র ভেদধীঃ।
মানভোবস্তথাদন্তহিংসাদিপরিবর্জনম্ ॥ ৩১ ॥
পরাক্ষেপাদিসহনং সর্ব্রাবক্রতা তথা।
মনোবাক্ষায় সন্তক্ত্যা সদ্গুরোঃ পরিসেবনম্ ॥ ৩২ ॥
বাহ্যাভ্যন্তরসংশুদ্ধিঃ স্থিরতা সংক্রিয়াদিয়ু ।
মনোবাক্ষায়দগুক্ষ বিষয়েয়ু নিরীহতা ॥ ৩০ ॥
নিরহক্ষারতা জন্মজরাদ্যালোচনং তথা।
অসক্তিঃ স্নেহশ্ন্যত্বং পুক্রদারধনাদিয়ু ॥৩৪॥
ইক্টানিক্টাগমে নিতাং চিক্তক্য সমতা তথা।
ময়ি সর্ব্বাত্মকে রামে হ্যনন্যবিষয়া মতিঃ ॥ ৩৫ ॥

নির্দেশ করেন, জীব দেহ হইতে বিভিন্ন, জীব হইতে নিরা-ময় প্রমাত্মার বৈলক্ষণ্য নাই। হে কুলনন্দন! আমি সেই জীবের বিজ্ঞান সাধন কিঞ্চিৎ বলিতেছি শ্রবণ কর। ১৯।২০। 1251 221 201 28 1261 261291 271 201 মুমুক্ষুব্যক্তিরা জীব হইতে প্রমাত্মাকে কথনই ভিন্ন জ্ঞান করিবে না এবং অভিমান দম্ভ হিংসা প্রভৃতি মানদিক রভি পরিত্যাগ করিবে। পরক্রত নিন্দা সহন কায়মনোবাক্য স্থারা ভক্তি দ্বারা সদ্গুরু সেবন ও সর্ব্বপ্রাণির সহিত সরল বাব-হার করিবে এবং বাছ ও আন্তরিক শৌচ অবলম্বন করিবে। পরের অনিষ্ঠ চিন্তা, পরনিন্দা ও পরকে হস্তাদিদ্বারা প্রহার क्तित्व नां, এবং नित्रह्यांत्र इरेशा (मरहत अन्य 'ब्रदा मर्ग আলোচনা করিবে স্লেছ্শুন্য হইয়া পুত্র দারা ধনাদির আসক্তি পরিভাগে করিবে এবং ইফীনিফ সমাগমে চিত্তকে সমভাবে রাখিয়া আমাতে অন্যান্য বিষয়ামতি অর্পন कित्रिया ७५ । ७२ । ७० । ७८ । ७৫ । সমাধ রহিত বিশুদ্ধভানে বাস করিয়া প্রাকৃত জনসমূহের

জনসম্বাধরহি : শুদ্ধদেশনিষেবণম ।
প্রাকৃতৈর্জনসঞ্জৈশ্চ হ্যরতিঃ সর্বাদা ভবেৎ ॥৩৬॥
আয়ক্তানে সদোদ্যোগো বেদাস্তার্থাবলোকনম্।
উক্তৈরেতৈর্ভবেজ্জানং বিপরীতৈর্বিপর্যয়ঃ ॥৩৭॥
বৃদ্ধিপ্রাণমনোদেহাহশ্কভিভ্যা বিলক্ষণঃ ।
চিদাস্থাহং নিতাশুদ্ধো বৃদ্ধ এবেতি নিশ্চয়ম্ ॥৩৮॥
যন জ্ঞানেন সংবিত্তে তজ্জ্ঞানং নিশ্চিতং চু মে ।
বিজ্ঞানঞ্চ তদৈবৈতৎ সাক্ষাদম্ভবেদ্যদা ॥ ৩৯॥
আত্মা সর্ব্বর পূর্ণঃ স্থাচিদানন্দাস্মকোহ্বয়ঃ ।
বুদ্ধাদ্যুপাধিরহিতঃ পরিণামাদিবর্জ্জিতঃ ॥ ৪০ ॥
সপ্রকাশেন দেহাদীন্ ভাষয়য়নপারতঃ ।
এক এবাদ্বিতীয়শ্চ সত্যজ্ঞানাদিলক্ষণঃ ॥ ৪১ ॥

সহবাস পরিত্যাগ করিবে। অনবরত আত্ম তত্ত্বজানে উদ্-(वंशि अ ममरत नमरत दिना अ भारत अर्थाटनाइन। कतिरव। ट्र वरम ! क्वांत्मकू वाक्तिता **এ**हेन्नभ कार्या कतित्म अनाशास्म জ্ঞান লাভ করিতে পারে, ইহার বৈপরীত্যাচরণে বিপরীত ফল লাভ হয় ৷ হে ভ্ৰাতঃ ! আবা, বুদ্ধি, প্ৰাণ, মন, দেহ, ও জহ-স্কার হইতে অতিরিক্ত চিদাঝ্যুরপ এবং নিত্য ও শুদ্ধ এই প্রকার নিশ্চয় যে জ্ঞান হইতে উৎপন্ন হয়, ঐ জ্ঞানের নাম জ্ঞান—পরমা**ত্মা সাক্ষাৎকা**রের নাম বিজ্ঞান, ঐ বিজ্ঞান দার। गर्तवाभी मक्किमान्स यक्रभ व्यवाश निक्रभाषि धवर मर्द्यमा দ্মানাবস্থাপন্ন অপ্রকাশ দারা দেহাদি প্রকাশক, স্তরাং স্বয়ং প্রকাশ বিশিষ্ট সন্ধর্মছত অদিতীয় সভাজ্ঞানস্থরপ এবং স্বকীয় প্রভা দারা সমস্ত জগতের ক্রেক্টা সেই পরমাত্মাকে জানিতে পারা যায়। হে লক্ষণ! যংকালে মনুষ্যেরা আচার্যাশাস্ত্রোপ-(नशाचूनादत जीवांका शतमात्रा पत्त्रत जाउन कान करत, তৎকালে তাহাদিবের মূল অবিজ্ঞা স্থুল ও ইন্দ্রোদিরণ স্ক্ষা-পদার্থের সহিত পরমাক্ষাতে লীন হয়, ঐ অবিভালয়াবস্থাকে মোকাবস্থা বলিয়া পণ্ডিভেরা নির্দেশ করিয়াছেন। ছে

শ্বসঙ্গং স্থান্তে দ্রুটা বিজ্ঞানেনাবগম্যতে।
আচার্যগান্ত্রোপদেশাদৈক্যজ্ঞানং যদা ভবেৎ ॥৪২
আত্মনাজীবপরয়োমূলাবিদা তদৈব ছি।
লীরতে কার্যকরণৈঃ সহৈব পরমাত্মনি ॥ ৪৩॥
সাবস্থা মুক্তিবিভূক্তো ছাপচারোহয়মাত্মনি।
ইদং মোক্ষর্মপং তে কথিতং রঘুনন্দন। ॥ ৪৪।
জ্ঞানবিজ্ঞানবৈরাগ্যসহিতং মে পরাত্মনঃ।
কিং ত্বেতদ্ তুর্লভং মন্যে মন্তুক্তিবিমুখাত্মনাম্ ॥৪৫
চক্ষুয়ভামপি যথা রাজ্রে সম্যক্ ন দৃশ্যতে।
পদং দীপসমৈভানাংদৃশ্যতে সম্যোবে ছি ॥ ৪৬॥
এবং মন্তুক্তিযুক্তানামাত্মা সম্যক্ প্রকাশতে।
মন্তুক্তে কারণং কিঞ্জিক্ষ্যামি শৃণু ভক্ত্তঃ ॥৪৭॥

রঘুনন্দন! তোমাকে এইরপ জান বিজ্ঞান ও বৈরাগ্য মিশ্রিত মোক্ষপদার্থ কহিলাম। কিন্তু মন্তক্তি রহিত ভক্তদিগের এই মোক্ষ অতি হল্ল ভ।৩৬।৩৭।৩৮।৩৯।৪০।৪১।৪২। ৪৯।৪৪। ৪৫। যেরপ চক্ষুমান্ ব্যক্তি রাজিকালে সম্যক্ দর্শন করিতে পারে না, কিন্তু দীপদংযোগ হইলে অনায়াসে দেখিতে পার, তজপ মন্তক্তি যোগ থাকিলে আত্মাকে মনুষ্যেরা অনায়াসে দেখিতে পার, এইক্ষণে মনু-ঘ্যেরা যে প্রকারে আমাতে ভক্তিলাভ করিতে পারে ভাহার কিছু উপার ব্যক্ত করি শ্রেবণ কর।

যাহারা নিরন্তর মন্তক্তের সহিত সঙ্গ ও আমার ভক্তের সেবা, একাদশীতে উপবাস এবং আমার পর্কাদিনে উৎসব করে এবং আমার কথা রামায়ণের পাঠ ও ব্যাখ্যা শুনিতে অনুরক্ত এবং আমার নামকীর্ত্তন ও পূজাদি কার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়া থাকে, সেই সকল সভত যোগীপুরুষদিগের আমাতে অব্যভিচারিণী ভক্তি জ্বিরা থাকে, ভক্তি জ্বালিলে কোন বস্তুর অভাব থাকে না, যেহেতু ভক্তিহইতে জ্বান, বিশ্লাদ মন্তক্তনকো মৎদেবা মন্তক্তানাং নিরম্ভরম।

একাদশ্রপাদাদি মম পর্বান্ধমোদনম্ ।। ৪৮ ॥

মৎকথাশ্রবণে পাঠে ব্যাখ্যানে সর্বাদা রক্তিঃ।

মৎপূজাপরিনিষ্ঠা চ মম নামামুকীর্ত্তনম্ ॥ ৪৯ ॥

এবং সতত্যুক্তানাং ভক্তিরব্যভিচারিণী।

মরি সঞ্জারতে নিত্যং ততঃ কিমবশিষ্যতে ॥ ৫০ ॥

অতো মন্তক্তিযুক্তশ্র জ্ঞানং বিজ্ঞানমেব চ।

বৈরাগ্যং চ ভবেজ্যান্তং ততো মুক্তিমুবাপ্লুরাং।

কথিতং সর্বমেতত্তে তব প্রশ্নানুসারতঃ।

অন্মিম্মনঃ সমাধার মন্তিষ্ঠেৎ স তু মুক্তিভাক্।।৫২।

ন বক্তব্যমিদং যত্নাৎ মন্তক্তিবিমুখার হি।

মন্তক্তার প্রদাতব্যমাহুরাপি প্রয়তঃ। ৫০॥

ও বৈরাগ্য অভিসন্তর উৎপর হইয়া থাকে, বিজ্ঞানা দি হইলে
মুক্তিলাভ হয় । ৪৬ । ৪৭ । । ৪৮ । ৪৯ । ৫০ । ৫১ । হে বৎস !
তোমার প্রশাল্দারে এই দকল গুফ বিষয় ব্যক্ত করিলাম ।
যে ব্যক্তি আমার এই দকল উপদেশবাক্যে মনোনিবেশ
করিবে দেই ব্যক্তি মুক্তিলাভ করিবে, । অতএব হৈ লক্ষমণ !
তুমি মন্তক্তি বিরহিত ব্যক্তিদিগের নিকট আমার এই
উপদেশ মত্ব পূর্বেক বাক্ত করিবে এবং আমার ভক্তপুক্ষদিগকে আহ্বান করিয়া এই সমন্ত কহিবে। হে ভাতঃ! ব্য

য ইদন্ত পঠেরিত্যং শ্রদ্ধাভক্তিসমন্থিতঃ। অজ্ঞানপটলধান্তং বিধূয় পরিমুচ্যতে॥ ৫৪॥

ভক্তানাং মম যোগিনাং
ম্বিমলস্বাস্তাতিশান্তাত্মনাং
মৎদেবাভিরতাত্মনাং চ
বিমলজানাত্মনাং স রিদা।
সঙ্গং ফুরুতে সদোদ্যতমতিঃ সংসেবনানন্যধীর্মোক্ষস্ত করে ভিতোহমনিশং
দুশ্যো ভবে নান্যধা॥ ৫৫॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানহেশ্বরসম্বাদে অরণ্যকাণ্ডে চতুর্থ:

ব্যক্তি মংক্কত উপদেশ শ্রদ্ধান্ত জ্ঞিসংকারে প্রতিদিন পাঠ করে
সেই ব্যক্তি অজ্ঞান রূপ অন্ধ্রকার হইতে মুক্ত হয়।৫২।৫৩।৫৪।
যে সকল ব্যক্তি মংসেবনে অনন্য বুদ্ধি হইরা মন্তক্ত নির্ম্মলান্তঃকরণ শান্তপ্রকৃতি এবং মংসেবাপরারণ পরমজ্ঞানী
যোগীগণের সন্ধ করে, আমি সর্বাদা তাহাদিগাের দর্শন পথে
অবস্থিতি করি; এবং হুল্ল ভ মুক্তিপদার্থ ভাহাদিগাের করস্থিত
জানিবে। ৫৫।

ইতি শ্রীমদ্ধ্যাক্সরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে চতুর্থোধ্যায়ঃ।

পঞ্চ মো ২ ধ্যায়ঃ।

ভিষিন্ কালে মহারণ্যে রাক্ষদী কামকপিণী।
বিচচার মহাসন্ত্বা জনস্থাননিবাসিনী॥ ১॥
একদা গোতমীতীরে পঞ্চবট্যাঃ সমীপতঃ।
পদ্মবজ্ঞাঙ্গুশাস্কানি পদানি জগতীপতেঃ॥ ২॥
দৃষ্টা কামপরীতাত্বা পাদসে দর্য্যমোহিতা।
পশ্সন্তী সা শনৈরারাদ্রাঘবস্থা নিবেশনম্॥ ৩॥
তত্র সা তং রমানাথং সীতয়া সহ সংস্থিতম্।
কন্দর্পসদৃশং রাক্ষিদৃষ্টা কামবিমোহিতা॥৪॥
রাক্ষদী রাঘবং প্রাহ্ কন্যা? ত্বং কং ? কিমাশ্রমে ?।
যুক্তো জটাবন্কলাদ্যৈঃ সাধ্যং কিস্তোত্ত্র ? মে বদ ॥ ৫

সেই কালে দওকারণাবাসনী মহাবলপরাক্রান্তা কামরপিণী এক রাক্ষসী মহারণ্যমধ্যে সর্বাদা বিচরণ করিতেন।
একদা প্র রাক্ষমী পঞ্চবটা সমীপবর্তী গোভমী নদী ভারে শ্রীরামচন্দ্রের প্রন্ধ বজ্রাঙ্কুশ চিছ্লিভ চরণচিত্রসোন্দর্য্য সন্দর্শনে কাম
মোহিত হইরা চরণ চিক্লের অনুসরণ করতঃ শ্রীরাম ভবনে
উপন্থিত হইল। অনন্তর রাক্ষসী সীতাদেবীর সহিত একাসনোপবিষ্ট কন্দর্প সদৃশ শ্রীরামকে দর্শন করিয়া কামভাবে
জিজ্ঞানা করিল—তুমি কোন্ ব্যক্তির সন্তান এবং ভোমার নাম
কি কারণেইবা জটাবলক্ষ্ম ধারণ করিয়া আশ্রমে বাস
করিতেছ গ এছানে বাস করিবার উদ্দেশ্যই বা কি গ এই সকল
র বাস্ত আমার নিকট ব্যক্ত কর। আমি স্পণিধানা মাক্ষামর্পিণী
রাক্ষ্মাধিপতি মহান্তা রাবণের ভাগিনী ধরনামক অপর
জ্ঞাতার সহিত এই অরণ্য মধ্যে বাস করিয়া থাকি। ১। ২। ৩।

অহং শূর্পণখা নাম রাক্ষনী কামৰূপিণী।
ভগিনী রাক্ষ্যেক্ষ্য রাবণন্য মহাজ্মনঃ॥ ৯॥
খরেণ সহিতা ভাত্রা বসামাত্রের কান্নে।
রাজ্ঞা দন্তঞ্চ মে সর্বাং মুনিভক্ষা বসাম্যহম্॥ ৭॥
জাং তু বেদিতুমিচ্ছামি বদ মে বদতাম্বর!।
তামাহ রামনামাহমযোধ্যাধিপতেঃ হৃতঃ॥ ৮॥
এষা মে সুন্দরী ভার্য্যা সীতা জনকনন্দিনী।
স তু ভাতা কনীয়ান্ মে লক্ষ্মণোহতীব সুন্দরঃ॥ ৯
কিং ? ক্বতান্তে ময়া ক্রহি কার্যাং ভুবনস্থন্দরি!।
ইতি রাম্বচঃ শ্রুড়া কামার্ত্রা সাত্রবীদিদম্॥ ১০॥

18।৫।৩।৭। একবে তোমাকে জানিতে ইচ্ছা করি। তে বদতাশ্বর! নিজ নাম ও ধাম ব্যক্ত কর। জীরামচক্র কহিলেন হে স্থন্দরি! আমি অযোধ্যাপতি রাজা দশরথের পুত্র আমার নাম রাম—এই পরমাস্থন্দরী জনকনন্দিনী সীতা আমার ভার্যা এবং আমা অপেকা অতি স্থন্দর লক্ষণ আমার কনিষ্ঠ ভাতাতিনি ও এশ্বানে আছেন—হে ত্রিভ্র মোঁহিনি! আমা দারা তোমার কি কার্য্য সাধনে ইচ্ছা আছে তাহা ব্যক্ত কর। কামার্তা রাক্ষ্যা জীরামের এইরপ বাক্য জ্ববণ করিয়া ক্ছিল—হে রাম! আগমন করিয়া আমার সহিত গিরিকানন মধ্যে রমণ কর— হে কমল্ফলাটন! আমি এক্ষণে অতি কামার্তা ছইয়াছি এহি রাম। ময়া সার্দ্ধং রমস্ব গিরিকাননে।
কামার্জাহং ন শক্রোমি ত্যক্তবৃং ত্বাং কমলেক্ষণম্।১১
রামঃ সীতাং কটাক্ষেণ পশ্যন্ সন্মিতমন্তবীং।
ভার্য্যা মমৈষা কল্যানী বিদ্যুতে হ্যনপায়িনী। ১২
ত্বং তু সাপত্যুদ্ধংখন কথং স্থাস্যাস্ত্র ফুদরি!।
বহিরাস্থে মম প্রাতা লক্ষ্মণোহতীব ফুদ্দরঃ।। ১ গা
তবামুর্রাপ্তো প্রতিরো প্রতির্বে সঞ্চর।
ইত্যুক্তব্ব লক্ষ্মণং প্রাহ্ পতির্বে ভব ফুন্দর!।১৪।
ভাতুরাজ্ঞাং পুরক্ত্য সঙ্গচ্চাবোহদ্য মা চিরম্।
ইত্যাহ রাক্ষনী হোরা লক্ষ্মণং কামমোহিতা।১৫।

অতএব তোমাকে কোন রূপে ভ্যাগ করিতে পারিনা।৮।১ ১০। ১১। অনন্তর প্রীরামচন্দ্র সীতার প্রতি কটাক্ষ নিক্ষেপ করিয়া সহাস্য বদনে রাক্ষসীকে কহিলেন—হে স্করি! আমার এই কল্যানি ভার্য্যা বিদ্যমান আছে ইহাকে কোন ক্রমে ত্যাগ করা উচিত নহে, তুমি আমাকে পতিভাবে স্বীকার করিয়া যাব-জ্ঞীবন সাপত্না ছুঃথেকি জন্য পীড়িতা হইবে? এক্ষণে ভোমাকে সত্পদেশ প্রদান করিতেছি জাবণ কর—মামার জাতা পরম স্থনর লক্ষণ বহির্দেশে আছেন তিনিই তোমার অফুরূপ পতি इटेर्दिन छाटात प्रहिछ এटे कानन भर्गा प्रश्नत् कद्र। त्राक्षत्री এরিকার বাক্যজাবণানস্তর বহির্দেশে গমন করিয়। লক্ষ্মণকে কহিলেন-হে হলর ! ভুমি জ্যেষ্ঠ ভাতার অনুমত্যানুসারে আমার পতি হও, একণে আমরা উভয়ে মিলিভ হই বিলম্ব क्रिया। लक्ष्मण द्राक्तभीत बाका अवन क्रिया कारितम-ছে সাধিব! আমি শ্রীরামচন্দ্রের দাস তুমি আমাকে পতিতে বরণ করিলে জাঁহার দাস্য স্বীকার করিতে হইবে ইহা অণেকা ছ:খতর আর কি আছে ?—হে ভদ্রে ! তুমি জ্ঞীরামচন্দ্রের নিকট গমন কর, তিনি ভ্লাখিল ব্রহ্মাণ্ডের ঈশ্বর, অতএব তদ্বারা তামাহ লক্ষণঃ সাধি! দাসোহতং তক্স ধীমতঃ!!
দাসী ভবিষাসি ত্বন্ত ততো দুঃখতরং মু কিম?॥১॥
তমেব গচ্ছ ভক্ষং তে স তু রাজাখিলেশ্বরঃ!
তচ্ছুত্বা পুনরপ্যাগাদ্রাঘবং দুউমানসা॥১॥
কোধাদ্রাম! কিমর্থং মাং প্রাময়স্যুনবস্থিতঃ।
ইদানীমেব তাং সীতাং ভক্ষরামি তবাগ্রতঃ॥১৮॥
ইত্রাক্ত্বা বিকটাকারা জানকীমন্থধাবতী।
ততো রামাজ্রয় খজ্লমাদায় পরিগৃহ্যতাম্॥১৯।
চিচ্ছেদ নাসাং কর্ণো চ লক্ষ্মণো লঘুবিক্রমঃ।
ততো ঘোরশ্বনিং কৃত্বা ক্রধিরাক্তবপুদ্ধ তম্॥ ২০॥
কক্ষমানা পপাতাগ্রে খর্স্য পর্ব্বাক্ষরঃ।
কিক্টেদিতি তামাহ খরঃ খ্রত্রাক্ষরঃ॥ ২১॥

ভোমার মঙ্গল হইবে। রাক্ষণী লক্ষ্মণের বাক্যপ্রবাদনন্তর
শ্রীরামের নিকট আগমন করিয়া ক্রোধ সহকারে কহিল—হে
রাম! তুমি অব্যবস্থিত চিত্তের ন্যায় কি জন্য মিথাবাক্যপ্রারণ
আমাকে ভ্রমণ করাইতেছ এক্ষণে তোমার অগ্রেই দীতাকে
ভক্ষণ করিব । ১২ । ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ । অনন্তর রাক্ষণী বিকটাকৃতি ধারণ করিয়া জানকীর প্রতি ধাবিত
হইল। অমিত পরাক্রম লক্ষ্মণ শ্রীরামের আজ্ঞান্ত্যারে রাক্ষনীকে গ্রহণ করিয়া শাণিত প্রজান্তারা তাহার নাসিকা ও
কর্ণযুগল ছেদন করিলেন। অনন্তর ক্রধিরার্জ দেহা রাক্ষণী
ঘোরতর ধ্বনিসহকারে ক্রন্মন ও থরের প্রকৃতি কঠোরবাক্যোচোরণ করিতে করিতে থরের নিকটগমন করিল। অনন্তর প্রবন্ধন
তর বাদী থর কহিল, একি কোন ব্যক্তি মৃত্যু মুখে প্রবেশ
কামনা করিয়া তোমার এইরূপ অবস্থা করিয়াছে তুমি তাহার
নাম ব্যক্ত কর ? বদাপি সে ব্যক্তি কালসদৃশ পরাক্রমশালী হয়,
তাহা হইলেও ফণকাল্মধ্যে তাহাকে বধ করিব । ১৯ ৷ ২০ ৷

কেনৈবং কারিভানি ত্বং মৃত্যোবজ্ঞান্তবর্তিনা।
বদ মে তং বধিষ্যামি কালকপামপি কণাৎ॥ ২২॥
তমাহ রাক্ষনী রামঃ দীভালক্ষণসংশ্বতঃ।
দশুকং নির্ভয়ং কুর্ফানাস্তে গোদাবরীতটে॥ ২৩॥
মামেবং কৃতবাংস্তদ্য ভাতা তেনৈব চোদিতঃ।
যদি ত্বং কুলম্বাভোহদি বীরোহদি? জহি তৌ রিপ্রতর্যেন্ত রুধিরং পাদ্যে ভক্ষয়ে তৌ স্বদুর্মদৌ।
নোচেৎপ্রাণান্ পরিত্যক্ষ্য যাদ্যামি যমসাদনম্॥২৫
তক্ষ্ তা ত্বিতং প্রাণাৎ খরঃ ক্রোধেন মুক্তি তঃ।
চতুর্দিশসহস্রাণি রক্ষ্যাং ভীমকর্মণাম্॥ ২৬॥
চোদয়ামাস রাম্যা সমীপং বধকাঞ্জারা।
খরশ্চ ত্রিনিরাইশ্চব দূষণইশ্চব রাক্ষ্যঃ। ২৭
সর্ব্বে রামং যয়ঃ শীঘুং নানাপ্রহরণোস্ততাঃ।
প্রক্ত কোলোহলং তেষাং রামঃ দেই মিত্রিমত্রবীৎ।২৮

া ২১। ২২। স্থাণিথা কহিল—রাম সীতা ও লক্ষাণের সহিত দণ্ডকারণ্যে নির্ভয় করিয়া গোদাবরী তটে অবস্থান করিতেছে। রামের কনিষ্ঠ লাতা লক্ষ্মণ জ্যোষ্ঠের আজায় আমার এইরপ অবস্থা করিষাছে। যদি তৃমি রাক্ষ্মকৃষ্ণে জ্বন্যগ্রহণ করিয়া থাক ও যথার্থ বীর হও তবে সেই শক্রম্বাকে বিনাশ কর, আমি তাহাদিগের ক্ষরির পানও মাংস ভক্ষণ করিব। আর যদি তাহাদিগের ক্ষরির পানও মাংস ভক্ষণ করিব। আর যদি তাহাদিগকে উপেক্ষা কর, তবে আমি প্রাণ পরিত্যাগ করিয়া যমালয়ের অতিথি হইব ।২৩। ২৪।২৫। থর প্রবণানস্তর ক্রোধে অধীর হইরী বহির্গত হইল। অনস্তর রামের বিনাশ বাসনায় চতুর্দশসহস্ররাক্ষ্ম সৈত্ত প্রেরণ করিয়া দূষণ ও ত্রিশিরার সহিত নানা অল্পস্ত্রে সজ্জিত হইয়া স্বয়ং রামের নিকট গমন করিল। সৈন্যগণের কোলাহল প্রবণ করিয়া রাম লক্ষ্মণকে কছিলেন—হে লক্ষণ! ঐ শুন ভীষণ কোলাহল হইতেছে,নিশ্চম রাক্ষ্মণণ আগমন করিতেছে। অদ্য আমার সহিত ভয়ানক

व्यव्यक्ति विश्व निका महा स्वाप्त स्व स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

যুদ্ধ করিবে। হে মহাবল! তুমি দীতাকে লইরা পর্বত গুহার মধ্যে অবস্থান কর। আমি বোর দর্শন রাক্ষ্যগণকে বিনাশ করিব তুমি এ বিষয় কোন আপত্তি করিও না আমার দিবা। লক্ষ্মণ রামবাক্য স্বীকার করিয়া দীতার সহিত পর্বত গুহার গমন করিলেন। রামচন্দ্র কঠোর কোদণ্ড ও অক্ষয় শর তৃণীর ঘরধারণ করিলেন, ও বন্ধপরিকর হাইয়া যুদ্ধ করিব আশরে অবস্থান করিতে লাগিলেন। অনস্তর রাক্ষ্যগণ আগমন শূর্বক রামের উপর অন্ত্রশন্ত্র শিলাখণ্ড ও রক্ষ্য সকল পরিভাগি করিতে লাগিল। রামচন্দ্র অবলীলাক্রমে ক্ষণ মধ্যে সেই সকল অন্তাদি তিলপ্রমাণে ছেদন করিলেন। এবং প্রহর্মান্ধ্যে খর দূষণ ত্রিশিরা ও সমস্ত রাক্ষ্য গণকে বিনাশ করিলেন। ২৬ । ২৭ । ২৮ । ২৯ শ্বিণ । ৩২ ।

লক্ষণে হিপি গুহামধ্যাৎ দীতামাদায় রাঘবে।

দমর্প্য রাক্ষদান দৃষ্ট্বা হতান্ বিশ্বয়মায্যে । ৩৬।

দীতা রামং দমালিক্য প্রদন্তমুখপক্ষজা।

শস্ত্রণানি চাক্ষেয়ু মমার্জ জনকাত্মজা ॥ ৩৭ ॥

দাপি ছুদাব দৃষ্ট্বা তান্ হতান্ রাক্ষদপুক্ষবান্।

লক্ষাং গড়া দভামধ্যে জোশভী পাদদন্তিধে ॥ ৩৮

রাবণস্থা পপাতোর্ব্যাং ভিনিনীং ভয়বিস্থলাম্॥ ৩০

উত্তিষ্ঠোত্তিষ্ঠ বৎদে! ডং বিৰূপকরণং তব।

কৃতং শক্ষেণ বা ভদ্দে! যমেন বর্জণেন বা ॥ ৪০ ॥

কুবেরেণাথ বা ক্রহি ভন্মীকুর্য্যাং ক্ষণেন তম্।

রাক্ষদী ভমুবাচেদং ডং প্রমন্ত্রো বিমূচ্ধীঃ ॥ ৪১ ॥

তিতাত হাত হাত আনন্তর লক্ষণ গুহামধ্য হইতে সীতাকে লইয়া রামচন্দ্রের নিকট সমর্পণ করিলেন ও নিহত রাক্ষসগণকে অব-লোকন করিয়া অতিশয় বিস্মিত হইলেন। সীতা প্রসম মুখে রামকে আলিন্ধন করিয়া রামের শরীরের অস্ত্র ক্ষত দেশে হস্ত মার্জ্জন করিতে লাগিলেন। ৩৬। ৩৭। রাক্ষসগণকে নিহত দেখিয়া রাবণস্থা শূর্পণখা ভরে পলায়ন করিল এবং লক্ষায়া-গমন পূর্বক সভামধ্যে রাবণচরণ সমীপে ভূমিতলে পতিত হইয়া রোদন করিতে লাগিল। রাবণ ভাহাকে ভয়বিহ্বলা দেখিয়া কহিল হে বৎসে! উচ, উচ, ভোমার বিরূপতার কারণ কি বল। ইন্দ্র, যম, বক্ষণ, বা কুবের, কে এ কার্য্য করিয়াছে বল? আমি ভাহাকে ক্ষণকাল মধ্যে ভস্মাবশেষ করিব।

শূপণিখা কছিল—তুমি একণে প্রমত্ত হইরাছ—তোমার বুদ্ধি বিলুপ্ত প্রায় হইয়াছে—কি রূপে রাজ্য রক্ষা করিবে? হার, রাক্ষসশক্ত রাম শ্বর, দ্বণ, ত্রিশিরা ও চতুর্দশসহস্ত নৈন্যাগণকে যুদ্ধে বিনাশ করিয়াছে। জনস্থানে মুনিগণ নির্ভয়ে বিচরণ করিতেছে, তুমি ইছার কিছুই বিদিত নছ— পানাসক্তঃ দ্রীবিজিতঃ ষণ্ডঃ সর্বত্ত লক্ষ্যদে
চারচক্ষবিহীনস্তং কথং রারা ভবিষাদি ॥ ৪২ ॥
ধরশ্চ নিহতঃ সঙ্খে দুষণস্তিশিরাস্থা।
চতুর্দশসহস্রাণি রাক্ষসানাং মহাত্মনাম ॥ ৪৩ ॥
নিহতানি ক্ষণেনৈব রামেণাস্ব্রশক্রণা।
জনস্থানমশেষেণ মুনীনাং নিভরং কৃতম।
ন জানাদি বিমূদ্স্ব্মতএব ময়োচ্যতে ॥ ৪৪ ॥

রাবণ উবাচ।

কো বা রামঃ কিমর্থং বা কথং তেনাসূরাহতাঃ। সম্যক্রথয় মে তেষাং মূলঘাতং করোম্যহম্॥ ৪৫॥

পূর্পণখোবাচ।

জনস্থানাদহং যাতা কদাচিদ্গোতমীতটে। তত্ত্ব পঞ্চৰটা নাম পুরা মুনিজনাশ্রয়া॥ ৪৬॥

এইজন্য তোমাকে বিমৃত্ বলিতেছি। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। রাবণ কছিল—রাম কে, কি প্রয়োজনে— কেন রাক্ষমগণকে বিনাশ করিল? তুমি তাহা সবিস্তরে বল—আমি তাহাকে সমূলে বিনফ্ট করিব। ৪৫।

শূর্পণখা কহিল—আমি একদা জনস্থান হইতে গোদাবরী
তীরে গমন করিতেছিলাম। মুনিগণের আবাসস্থান পঞ্চবটা
কাননে দেখিলাম প্রকৃত্র রাজীবলোচন ধমুর্ব্বণিধর, জটাবল্কল বিভূষিত, পরম রূপবান্ রাম সেই স্থানে বিরাজ্ত করিতেছেন। তাঁছার কনির্চ লক্ষ্মণও তাঁছার ন্যায় স্থানর,
তাঁছার ভার্যা আয়ত লোচনা—ছিতীয় লক্ষ্মীর ন্যায় স্থানরী।
দেবলোক, গর্ক্বলোক, ভূজদ্ব লোক, বা মনুষ্যলোকে তাদৃশী
স্থানী রমণী আমি কখন দেখি নাই, শ্রবণও করি নাই। সে
সেই কানন আলোকিত করিয়া অবস্থান করিতেছে। আমি তত্তাশ্রমে ময়া দৃষ্টো রামো রাজীবলোচনঃ।

ধনুর্বাপ্পরঃ শ্রীমান্ জটাবলকলমন্তিতঃ ॥ ৪৭ ॥
কনীয়ানমুক্তন্ত লক্ষণোহিপি তথাবিধঃ।
তক্ত ভার্য্যা বিশালাকী রূপিনী শ্রীরিবাপরা ॥৪৮॥
দেবগন্ধর্বনাগানাং মন্থ্যাগাং তথাবিধা।
ন দৃষ্টা ন শ্রুতা রাজন্! তোতয়ন্তী বনং শুভা॥৪০
আনেতুমহমুত্যুক্তা তাং ভার্যার্থং তবানঘ!
লক্ষণো নাম তদ্ভাতা চিচ্ছেদ মম নাসিকাম্॥৫০
কর্ণে। চ নোদিভন্তেন রামেন স মহাবলঃ ॥
তত্তোহহমতিদুংখেন ক্রদন্তি খরমন্থগাম্॥ ৫১ ॥
সোহপি রামং সমাসাদ্য যুক্ষং রাক্ষসমূথপৈঃ!
ততঃ ক্ষণেন রামেণ তেনিব বলশালিনা ॥ ৫২ ॥

সেই কামিণীকে তোমার ভার্মণ করিব বলিয়া আনিতে উদ্যোগ করিলে রামের কনিও লক্ষনণ রামের আজ্ঞায় আমার নাসিকা ও কর্ণ ছেদন করিরাছে। অনন্তর আমি রোদন করিতে করিতে থবের নিকট গমন করিলাম। থরও রামের সহিত যুদ্ধ করিয়া রাম কর্তৃক ক্ষণমধ্যে সেনা ও সেনাপভির সহিত বিনম্ভ ইইরাছে। আমার বোধ হয় রাম ইল্ছা করিলে নিমিবার্থে ত্রৈলোক্য ভন্মাবর্শেষ করিতে গারে সন্দেহ নাই। যদি রামের ভার্যা ভোমার প্রণিয়ণী হয় তবেই ভোমার জীবন সফল, অভএব হে রাজেলা ! পদ্মপত্র বিলোচনা, সর্কলোক স্কল্মরী সীভা রাহাতে ভোমার প্রেরণী হয় তাহার চেন্টাকর। তৃমি রামের সাক্ষাতে আব্দান করিতে পারিবে না। মারাজ্ঞালে রামকে মোহিত করিয়া জানকী লাভ করিতে পারিবে। রাবণ জবণ করিয়া মধুর বাক্য, রন্মান ও দানধারা শূর্পণথাকে সমাধৃত্ত করিয়া শ্রনাগারে গমন করিল। তথার কর্ব্য চিন্তা করিছে করিয়া শ্রনাগারে গমন করিল। তথার কর্ব্য চিন্তা করিছে করিয়া শ্রনাগারে গমন করিল। তথার কর্ব্য চিন্তা করিছে করিয়া শ্রনাগারে

দর্বে তেন বিন্টা বৈ রাক্ষ্যা ভীমবিক্তমাঃ।

যদি রামো মনঃ কুর্যাজৈলোক্যং নিমিষার্কতঃ ॥৫৩
ভন্মীকুর্যায় সন্দেহ ইতি ভাতি মম প্রভা ! ।

যদি সা তব ভার্যা স্থাৎ সফলং তব জীবিতম্ ॥৫৪॥
অতো যতম্ব রাজেন্দ্র ! যথা তে বল্লভা ভবেৎ।
সীতা রাজীবপত্রাক্ষী সকলোকৈকমুন্দরী ॥ ৫৫॥
সাক্ষাজামশু পুরতঃ স্থাতুং ডং ন ক্ষমঃ প্রভা !

মাররা মোহরিদ্বা তু প্রাপ্যাসে তাং রঘূভ্যম্।।৫৬॥
প্রভা তৎ স্ক্রবাকৈয়ক দানমানাদিভিত্তথা।
আশ্বান্থ ভিনিনীং রাজা প্রবিবেশ স্বকং গৃহম্।
ভত্ত চিস্তাপরো ভূদ্বা নিজাং রাত্রো ন লক্কবান্॥৫৭

একেন রামেণ কথং ? মন্ত্র্যান
মাজেণ নকঃ সবলঃ খরো মে।
ভাতা কথং ? মে বলবীর্যাদর্পযুতো বিনকৌ বত রাঘবেণ॥ ৫৮॥
যদা ন রামো মকুজঃ পরেশো
মাং হন্তুকামঃ সবলং বলোঘঃ।
সম্প্রার্থিতোহয়ং জ্বহিণেন পূর্বাং
মন্ত্র্যার্থিপোহস্ত রঘোঃ কুলেহমুৎ ?॥৫৯

নিজাপুথ অনুভব করিতে পারিলনা। ৪৬।৪৭।৪৮।৪৯।৪৯।৪৯।৪৯।৫৫।৫০।৫১।৫২।৫০।৫৪।৫৫।৫৬।৫৭। রাম একাকী সামান্য মধুব্য হইরাও আমার জাতা গরকে কি রূপে সসৈন্যে বিনাশ করিল অথবা রাম মনুষ্য কহেন, আমাকে বিনাশ করিবার জাত্ত বেলা কর্তৃক প্রোর্থিত হইরা মনুষ্য রূপে রঘুবংশে জন্মগ্রহণ ক্রিরাহছ্ন। যদি প্রমাক্ষা রাম আমাকে বিনাশ

বধাে বদি ভাং? পর্যাত্মনাত্থ বৈকুণ্ঠরাজ্যং পরিপালয়েইছম। নোচেদিদং রাক্ষসরাজ্যমেব ভোক্ষ্যে চিরং রামমতো ব্রজামি।।৬০ ইত্যং বিচিন্ত্যাধিলরাক্ষসেশ্রেম। রামং বিদিত্বা পরমেশ্বং হরিম। বিরোধবুক্তাব হরিং প্রায়ামি

জতং ন ভক্তা ভগবান প্রসীদেশ ॥ ৬১ ট

ইতি **শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসম্বাদে** অরণ্যকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

করেন তবে চিরকালের নিমিত্ত বৈকুণ্ঠ রাজ্য পরিপালন করিব অর্থাৎ দাযুজ্য রূপ মোক্ষ প্রাপ্ত ছইব। আর যদি রাম মনুষা হয় ভবে এই রাক্ষ্য রাজ্য ভোগা করিব। অভএব বিরোধ বুজিডেই রামের নিকট গমন করি। রাক্ষ্যেক্ত রাবণ এই রূপ্ চিন্তাকরিয়া রামকে জগদীশ্বর বলিরা ছির করিল। আরঞ্জাবিল ভাঁছার নিকট বিবোধ বুদ্ধিতেই গমন করা উচিত। যেহেতু জগদীশ্বর ভক্তিতে শীত্র প্রসন্ন হন্না। ৫৮।৫৯। ৬০।৬১।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানহেশ্বরসম্বাদে অরণ্যকাণ্ডে পঞ্চমোছঅধ্যায়।

যতে হিধ্যায়ঃ

বিচিটেন্ত্যবং নিশায়াং সং প্রভাতে রথমান্থিতঃ।
রাবণো মনসা কার্য্যমেকং নিশ্চিত্য বুদ্ধিমান্॥।।
যথৌ মারীচসদনং পরং পারমুদস্বতঃ।
মারীচন্তত মুনিবজ্জটাবলকলধারকঃ।। ২॥
ধ্যায়ন্ হৃদি পরাত্মানং নির্গুণং গুণভাসকম্।
সমাধিবিরমেহপশ্যদ্রাবণং গৃহমাগতম্॥ ৩॥
দ্বতাতিখং সুখাসীনং মারীচো বাক্যমন্ত্রবীং॥ ৪॥
সমাগমনমেতন্তে রথেনৈকেন রাবণ!।
চিন্তাপর ইবাভাসি হৃদি কার্যাং বিচিন্তরন্॥ ৫॥

বুদ্ধিমান রাবণ রাত্রি কালে উক্ত রূপ চিন্তা করতঃ "রাম ছইতে মৃত্যুই উত্তম" ইহা ছির করিয়া প্রভাতে রথারোহণ পূর্ব্ধক সমুদ্রের পর পার বন্ত্রী মারীচ নিকেতনে গমন করিল। মারীচ সেই স্থানে মনির ন্যায় জটা বল্কল ধারণ করিয়া হৃদয়ে নিগুণ পরমান্মার ধ্যান করিতে ছিল। ধ্যানানন্তর রাবণকে সমাগত দেখিয়া শীত্র গাত্রোম্থান পূর্ব্ধক আলিজন, যথাবিধি পূজা ও আতিখ্য সৎকার করিল। অনন্তর রাবণ স্থাবৈধি পূজা ও আতিখ্য সৎকার করিল। অনন্তর রাবণ স্থাবৈধি পূজা ও আতিখ্য সৎকার করিল। অনন্তর রাবণ ব্যক্ষাত্র রথে আরোহণ করিয়া আগমন করিয়াছেন ও হৃদয়ে যেন কোন মহৎ কার্য্যের চিন্তা করিতেছেন। গোপনীয় না হইলে তাহা প্রকাশ করুন। যদি ঐ কার্য্য করিলে আমাকে পাপস্পর্শন। করে ও ন্যায় সঙ্গত হয় তবে আমি আপনার প্রিয় কার্য্য সম্পাদন করিব। ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬)

ক্রাহি মে ন হি গোপ্যঞ্চেৎকরবাণি তব প্রিয়ম।
ন্যায্যং চেৎ ক্রহি রাজেন্দ্র বিজনং মাং স্পৃদেশ হি
রাবণ উবাচ।

অন্তি রাজা দশরথঃ সাকেতাধিপতিঃ কিল।
রামনামা স্থতস্ব জ্যেষ্ঠঃ সত্যপরাক্রমঃ ॥ १ ॥
বিবাসয়ামাস স্থতং বনং বনজনপ্রিয়ম্ ॥ ৮ ॥
ভার্যয়া সহিতং ভাজা লক্ষাণেন সমন্বিতং।
স আত্তে বিপিনে ঘোরে পঞ্চবট্যাশ্রমে শুভে।
ভগ্য ভার্যা বিশালাক্ষী সীতা লোকবিমোহিনী॥৬
রামো নিরপরাধাম্মে রাক্ষ্যান্ ভীমবিক্রমান্।
খরং চহন্ম বিপিনে স্থ্যান্তেহ্ভিনির্ভয়ঃ ॥ ১০ ॥

রাবণ কহিল, "অযোধ্যাধিপতি দশরথ নামে রাজা ছিলেন। অমিত পরাক্রম রাম তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র। রাজা রামকে ভার্যা ও ভাতা লক্ষ্মণের সহিত বনবাসী প্রিয়ধনে নির্বাসিত করিয়াছেন, সেই রাম খোর পঞ্চবটী বনে আগ্রাম করিয়া অবস্থান করিতেছেন। ভূবন মোহিণী আয়তলোচনা সীতা তাঁহার ভার্যা; রাম নিরপরাধে প্রভূত পরাক্রম রাক্ষ্মপণ ও ধরকে বিনাশ পূর্বক নির্ভয় হইয়া অথে বাস করিতেছেন, আমার ভগিনী স্প্রণধা তাঁহার কোন অপকার করে নাই, তথাপি ত্রাত্মারামতাহার নাসিকাও কর্ণছেদ করিয়া নির্বরে

ভিগিন্যা মে শূর্পণখ্যা নির্দেষায়াশ্চ নাসিকাম্। কর্ণে চিচ্ছেদ দুঝাত্মা বনে ভিন্ততি নির্ভন্তঃ।। ১১। অতস্ত্রয়া সহায়েন গড়া ভৎপ্রাণবল্লভাম্। আনয়িষ্যামি বিপিনে রহিতে রাঘবেণ ভাম্॥ ১২ তুং ভু মায়ামুগো ভূড়া ছাশ্রমাদপনেষ্যমি। রামং চ লক্ষ্মণং চৈব ভদা সীতাং হরাম্যহম্॥ ১৩ তুং ভু তাবৎ সহায়ং মে কড়া ছাগ্যমি পূর্ববৎ। ইত্যেবং ভাষমাণস্তং রাবণং বীক্ষ্য বিশ্মিতঃ॥ ১৪ কেনেদমুপদিউত্তে মূল্ঘাতকরং বচঃ! স এব শত্রুব্রাশং প্রতীক্ষতে॥ ১৫॥ রামস্য পৌক্ষং শ্বুড়া চিত্তমদ্যাপি রাবণ!। বালোহপি মাং কৌশিকস্য যজ্জসংরক্ষণায় সঃ॥১৬ আগভন্তিযুবৈকেন পাত্র্যামার্স সাগরে। যোজনানাং শতং রামন্তদাদিভয়বিহ্বলঃ॥ ১৭:॥

শ্বা শ্বা তদৈবাহং রামং পশ্বামি সর্বতঃ ॥ ১৮
দণ্ডকেইপি পুনরপ্যহং বনে
পুর্ববৈরমনুচিন্তরন্ ক্লানি ।
তীক্ষ্ণসভ্গরূপমেকদা মাদৃশৈবিছতিরারতোইভারম্ ॥ ১৯ ॥
রাঘবং জনকজাসমন্বিতং
লক্ষণেন সহিতং ত্তরান্বিতঃ ।
আগতোইমধ হন্তমুন্ততো মাং
বিলোক্য শর্মেকমিকিপ্ ॥ ২০ ॥
তেন বিশ্বস্থানের ইমুন্তমন্
রাক্ষণেক্র ! পতিতোইশ্মি দাগরে ।
তথপ্রতাইমিদং স্মাপ্রিতঃ
স্থানমূর্জিতমিদং ভ্রাদ্ধিতঃ ॥ ২১ ॥

অবস্থান করিভেছে। ৭। ৮। ৯। ১০। ১১। অত এব তুমি আমার দহার হইলে আমি গমন করিয়া, যে সময় রাম বনে না থাকিবে সেই সময় তাহার প্রাণবল্লভা সীভাকে হরণ করিয়া আনয়ন করিব। তুমি মায়াময় মৃগ হইয়া রাম ও লক্ষ্মণকৈ আশ্রম হইতে দূরে লইয়া যাইলে আমি সীতাকে হরণ করিব। তুমি আমার সাহায্য করিয়া পূর্ববৎ অবস্থান করিবে"। মারীচ রাবণের এবস্থাকার বাক্য প্রবণ করিয়া কছিল—"সীতা বরবর্ণিনী তাঁহাকে হরণ করা উচিত—এই সর্বনাশকর বাক্য কে তোমাকে উপদেশ দিয়াছে? যে ব্যক্তি এইয়পে তোমার বিনাশ কামনা করিভেছে সে ভোমার শক্তা, স্ভরাং বধার্হ। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ছে রাবণ! আমার চিত্ত অদ্যাপি রামের পুক্ষকার স্মরণ করিয়া অভিমাত্ত বিকল হইভেছে। রাম বাল্যাবস্থার বিশ্বামিত্রের যক্ত রক্ষার নিমিত্ত তপোবনে

গামন করিয়া এক বাণে আমাকে শতবোজন দ্র সাগারে পাতিত করিয়াছেন, আমি ভদববি ভয় বিহ্বল ছইয়া রামের সেই কার্য্য অনবরত স্মরণ করতঃ চতুর্দিক রাম-ময় দেখিতেছি।

1১৬। ১৭। ১৮। একদা আমি পূর্ববির স্মরণ করিয়া পূর্ণবার মাদৃশ রাক্ষ্য গণে বেফিড ছইয়া তীক্ষ্যক্ষ মৃগ রূপবার মাদৃশ রাক্ষ্য গণে বেফিড ছইয়া তীক্ষ্যক্ষ মৃগ রূপবার মাদৃশ রাক্ষ্য গণে বেফিড ছইয়া তীক্ষ্যক্ষ মৃগ রূপবার পাতৃর্বক দশুকারণ্যে গমন করিয়াছিলাম। আর্মা ব্রাদ্থিত ছইয়া সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত রামকে বিনাশ করিতে উদ্যত ছইলা সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত রামকে বিনাশ করিতে উদ্যত ছইলা, রাম আমার প্রতি একটা বাণ নিক্ষেপ করিলেন। ছে রাক্ষ্যক্ষেপ্ত আমি সেই বাণে বিক্ষ-ছদ্ম ছইয়া শোণিত বমন করিছে করিছে সাগরে পতিত ছইলাম। সেই অবধি আমি ভয়পীড়িভান্তঃকরণে রামের অনাগমন ছেতু নির্ভ্রের এই স্থান আত্রর করিয়া কাল যাপন করিডেছি। ভোগাসাধন রাজ্য, রতু, রমণী, রথ, প্রভৃতির শক্ষ শ্রণ করিলে ক্রিয়ে ভীত ছইয়া রামকেই চিন্তা করি, বে ছেতু এই সকল

রামমের সততং বিভাবয়ে ভীতভীত ইব ভোগরাশিতঃ। রাজরত্বরমণীরথাদিকং শ্রোত্তরোর্যদি গতং ভয়ং ভবেৎ॥ ২২॥। রাম আগত ইহেতি শঙ্কয়া বাহ্যকার্য্যমপি দর্ব্যমতালমে। নিজয়া পরিব্রতো যদা স্বপে রামমেব মনসানুচিন্তরন্।। ২৩॥ স্বপ্লদৃষ্টিগতরাঘবং তদা বোধিতো বিগতনিদ্র আস্থিতঃ। তদ্ভবানপি বিমুচ্য চাগ্ৰহং রাঘবং প্রতি গৃহং প্রয়াহি ভো!॥ ২৪॥ রক্ষ রাক্ষসকুলং চিরাগতং তৎস্তো সকলমেৰ নশ্বতি। তব হিতং বদতো মম ভাষিতং পরিগৃহাণ পরাত্মনি রাঘবে ॥ ২৫ ॥

শব্দ 'রীম,' শব্দের ন্যায় রকার যুক্ত। 'রাম এই ছানে আসিয়াছেন' এই শক্ষাতে আমি বাছ্য কার্য্য সকল পরিত্যায় করিয়াছি। আমি নিজিত হইলেও রাম আমার নয়ন পথের পথিক হন অমনি বীতনিত্র হইয়া উপবেশন করি। অভএব আপনিও রাম চল্রের প্রতি ক্রোধ ত্যায় করিয়া য়হে প্রতিশমন ককন।১৯।২০।২১।২২।২৩।২৪। আবহমান রাক্ষ্য কুল্রক্ষা করুন রামের প্রতি আক্রোশ করিবেন না তাহা ছইলে সকলই বিনষ্ট হইবে। আমার ছিত বাক্য গ্রহণ করুন। রামচন্দ্র পর্মাত্মা তাহাতে বিরোধ বুদ্ধি করিবেন না, প্রত্যুত ভক্তিভাবে তাহাকে ভক্তন। করুন, তিনি পরম কাহণিক।

ত্যজ বিরোধমতিং ভর ভক্তিতঃ
পরমকারুণিকো রঘুনন্দনঃ।
অহমশেষমিদং মুনিবাক্যতো
শুণুবমাদিযুগে পরমেশ্বরঃ॥ ২৬॥
ব্রহ্মণাহর্থিত উবাচ তং হরিঃ।
কিং তবেপ্সিতমহং করবাণি তং।
ব্রহ্মণোক্তমরবিক্ষলোচন!
ডং প্রয়াহি ভুবি মানুষং বপুঃ।
দশরথাম্মজভাবমঞ্জদা
ক্রহি রিপুং দশকক্ষরং হরে!॥ ২৭॥

অতো ন মান্তবো রামঃ সাক্ষারারারণাহব্যয়ঃ।
মায়ামান্তববেশেণ বনং যাতোহতিনির্ভয়ঃ॥ ২৮॥
ভূভারহরণার্থায় গচ্ছ তাত ! গৃহং স্থাম্।
ফুডা মারীচবচনং রাবণঃ প্রত্যভাষত॥ ২৯॥
পরমাত্মা যদা রামঃ প্রার্থিতো ব্রহ্মণা কিল।
মাং হন্তং মানুষো ভূড়া যড়াদিহ সমাগতঃ॥৩০

আনি মৃহামূনি নারদ মুখে শুনিয়াছি যে, সত্য যুগো ব্রহ্মা
বিষ্ণুর নিকট প্রার্থনা করিলে ভগবান্ ছরি কছিলেন
"তোমার অভীষ্ট কি বল? আমি ভাহা সম্পাদন করিব"
ব্রহ্মা কছিলেন "হে পুগুরীকাক্ষ! আপনি মনুষ্য শরীর
ধারণ পূর্বাক দশরথের পুত্ররূপে ধরণীতে অবতীর্ণ হইয়া শীজ্র
আমাদিগের শক্রু রাবণকে বিনাশ করুন। ২৫। ২৬। ২৭।"
অভএব রাম মনুষ্য নছেন সাক্ষাৎ অবিনাশী নারায়ণ—ভূভার
হরণ জন্য মায়াদ্বারা মনুষ্য দেহ পরিশ্রেছ করিয়া নির্ভর
চিত্তে বনে আগ্রান করিয়াছেন। হে তাত! রামের সহিত
বিরোধ পরিত্যাগা করিয়া গৃছে গমন কর"।

वायन मात्रीराज्य बाका अवन कतिया कहिल " वाम यहि

করিষাভ্যুচিরাদের সত্যদক্ষপা ঈশ্বঃ।
অতোহহং যত্নতঃ সীতামানেষ্যাম্যের রাঘ্বাৎ॥৩১
বধে প্রাপ্তে রণে বীর! প্রাপ্যামি পরমং পদম্।
যদ্বা রামং রণে হল্পা সীতাং প্রাপ্যামি নির্ভন্তঃ॥৩২
অতোত্তির্চ মহাভাগ! বিচিত্রম্গন্ধপধূক্।
রামং সলক্ষ্মণং শীঘ্ মাশ্রমাদতিদ্রতঃ॥৩৩॥
আরুষ্য গচ্ছ ত্বং শীঘ্র স্থাই তির্চ যথা পুরা।
অতঃ পরং চেদ্যৎকিঞ্জিন্তাবদে মদ্বিভীষণম্॥ ৩৪॥
হনিষ্যামাসিনাহনেন ত্বামত্রের ন সংশরঃ।
মারীচন্তন্তঃ শ্রাড়া স্বাজ্যন্যবানুচিন্তর্বর ॥ ৩৫॥
যদি মাং রাঘ্যো হ্ন্যাত্দা মুক্তো ভ্রার্থিছ।
মাং হন্যাদ্যদি চেদ্রুইন্তদা মে নির্য্যো ফুর্ম্॥৩৬

পরমাত্মা ঈশ্বর হন ও আমাকে বিনাশ করিতে ত্রহ্মাকর্ত্বক প্রার্থিত হইয়া মনুষ্য রূপে সমাগত হইয়া থাকেন, তবে
অচিরেই আপনার সঙ্কপা সত্য করিবেন। অতএব আমি
স্মত্যে সীভাকে হরণ করিব; পরে রাম সংগ্রােমে যদি আমার
মৃত্যু হয়, তবে শ্রেষ্ঠ পদ প্রাপ্ত হইব—অর্থাৎ মুক্ত হইব।
অথবা রামকে রণে নিছত করিয়া নির্ভয়ে জানকী লাভ করিব।

।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।অতএব হে মহাভাগা! উঠ,
বিচিত্র মৃগরূপ ধারণ করিয়া রাম ও লক্ষ্যণকে আশ্রম হইত
দ্রে লইয়া যাও; অনস্তর পূর্ব্ব কালের ন্যায় স্থােশ্ব অবস্থান
কর। ইহার পর যদি আবার ভায়োৎপাদক কোন কথা বল
তবে এই অসি দ্বারা এই স্থানেই নিঃসন্দেহ তোমাকে বিনাশ
করিব"।

মারীচ রাবণের বাক্য ভাবণ করিয়া মনে মনে চিন্তা করিল—"যদি রামচন্দ্র আমাকে বিনাশ করেন তবে এই ভবার্ণিব ছইতে মুক্ত ছইব। আর যদি রাবণ আমাকে বিনাশ করে ভাছা ছইলে নিশ্চয় আমার নরক হইবে" ৩৩। ৩৪।

ইতি নিশ্চিত্য মরণং রামাদুখার বেগতঃ।

অববীদ্রাবণং রাজন্! করোম্যাক্তান্তব প্রভা । ৩৭

ইত্যুক্তবা রথমাস্থার গড়ে রামাশ্রমং প্রতি।

শুদ্ধজাস্থানপ্রথ্যা মূগোহভূদ্রে প্রবিন্দ্রকঃ ॥৬৮॥
রত্ত্বপ্রেলা মনিখুরো নীলরজুবিলোচনঃ।

বিদ্যুৎপ্রভো বিমুগ্ধাস্যো বিচচার বনান্তরে॥ ৩৯॥
রামাশ্রমপদস্থান্তে সীতাদৃটিপথে চরন্॥ ৪০॥

ক্ষণং চ ধাবত্যবভিষ্ঠতে ক্ষণং
সমীপমাগত্য পুনর্ভগ্নারত:
এবং স মায়ামৃগবেশনপথৃক্।
চচার সীতাং পরিমোহয়ন্ খল: ॥ ৪১॥

ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে অরণ্যকাণ্ডে বর্ষ্ঠোহধ্যায়ঃ।

এত। ৩৬। এই রূপে রাম হইতে মৃত্যুই উৎক্ষ স্থির করিয়া
সম্বর গালোখান পূর্বেক কহিল "হে রাজন্! আমি আপনার
আজ্ঞা সম্পাদন করিব" ইছা বলিরা রথে আরোছণ পূর্বক
রামাশ্রমে গমন করিল। পরে মারীচ এক আফর্য্য মৃগরূপ
ধারণ করিল। এ মৃগের বর্ণ স্থবর্ণ সদৃশ, গাত্র রেপিয় ময়—
বিস্কুরাজিতে বিরাজিত, শৃক্ষ রতুময়, খুর মণিময়, নেত্র নীল
রত্ত্বরিজিত, তাছার প্রতা বিভাগে সদৃশ, বদন অভীব স্কুলর।
রামের আশ্রমের নিকট সীতার দৃষ্টিপথে মৃগা রূপ ধারী
মারীচ কখন ধাবিত হয়, কখন অবস্থান করে; কখন বা
নিকটে আসিয়া ভীত হয়, এই রূপে সীতাকে বিমোহিত
করিতে লাগিলা ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে যতে হিধ্যায়ঃ।

সপ্তমোইধ্যায়ঃ।

অথ রামোহপি তৎসর্কং জ্ঞান্তা রাবণ চেটিতম্।
উবাচ দীতামেকাস্তে শ্রু জানকি! মে বচঃ।
রাবণো তিক্ষুক্রপেণ আগমিষ্যতি তেইন্তিকম্।
ত্তন্ত ছারাং জ্লাকারাং স্থাপরিজ্ঞোটজে বিশা। ২ ॥
অ্যাবদৃশুক্রপেণ বর্ষন্তির্জ মমাজ্ঞরা।
রাবণন্ত বধান্তে মাং পূর্ক্বিৎপ্রাপ্যানে শুভে!।। ৩।
ক্রুত্বা রামোদিতং বাক্যং সাহপি তত্ত্ত তথাইকরোৎ
মারাদীতাং বহিং স্থাপ্য স্বর্মন্তর্দ্ধেইনলে॥ ৪
মারাদীতা তদাপশুন্মৃগং মারাবিনির্মিতম্।
হসন্তী রামমভ্যেত্য প্রোবাচ বিনয়ান্বিতা।। ৫ ।।

অনন্তর রামত সেই দকল রাবণের চেষ্টা জানিতে পারিয়া
সীতাকে নির্জ্জনে কছিলেন, ছে জানকি! প্রবণ কর—রাবণ
ভিক্তক রূপে ভোমার নিকট আগমন করিবে। তুমি নিজ আকার
সদৃশীচ্ছায় কূটীর মধ্যে রক্ষা করিয়া অগ্নিপ্রবেশ পূর্বক আমার
আজ্ঞান্তসারে এক বর্ম অদৃশ্য ছইয়া বাস কর। আমাকর্তৃক
রাবণ নিহত হইলে, পুনর্বার তুমি পূর্ব্ব শরীর প্রাপ্ত ছইবে।
। ১ । ২ । ৩। জানকী রাম বাক্য জ্ঞবণ করিয়া তাহাই করিলেন,
মারা সীতা বাহিরে রক্ষা করিয়া আপনি অনলে অন্তর্জ্কিতা
হইলেন, সেই সময় মারা সীতা একটী মারা ক্রিত মৃগ দেখিয়া
হাসিতে ছাসিতে রামের নিকট আসিয়া সবিনয়ে কহিলেন।
ছে রাম! দেখুন কেমন আশ্রুমী রত্নবিভূষিত কনকময় মৃগ
অকুতোভয়ে বিচরণ করিভেছে। উহার গাত্রে চিত্র বিচিত্র বিন্দু
সকল বিরাজ করিতেছে। জাপনি প্রে মৃগ্টী বন্ধ করিয়া আমাকে

পশ্য রামমৃগং চিত্রস্থাকং রত্নভূষিতম্।
বিচিত্রবিন্দৃতির্যু ক্রপ্পরস্তমকুতোভয়ম্। ৬॥
বন্ধা দেহি মম জীড়ামৃগো ভবতু সুন্দরঃ।
তথেতি ধল্লরাদায় গচ্ছন্ লক্ষণমত্রবীৎ॥ १॥
রক্ষ ত্ব্মতিয়ত্বেন দীতাং মৎপ্রাণবল্লতাম্।
মায়িনঃ দস্তি বিপিনে রাক্ষদা ঘোরদর্শনাঃ॥ ৮॥
অভ্যেহত্রাবহিতঃ দাধীং রক্ষ দীতামনিন্দিতাম্।
লক্ষণো রামমাহেদন্দেবায়ং মৃগরপপৃক্।
মারীচোহত্র ন সন্দেহ এবংভূতো মৃগঃ কুতঃ॥ ৯
ব্রীরাম উবাচ।

যদি মারীচ প্রবায়ং তদা হিন্দ ন সংশয়ঃ। মৃগশ্চেদানয়িষ্যামি সীতাবিশ্রামহেডবেঁ। ১০॥

দিন, ঐ স্বন্ধর মৃগের সহিত আমি ক্রীড়া করিয়। রামচক্র তাছাই স্বীকার করিয়া ধমুর্বাণ গ্রহণ পূর্বক গমন কালে লক্ষণকে কহিলেন, তুমি যত্ন সহকারে আমার প্রাণপ্রিরা সীতাকে রক্ষাকর, এই কাননে ঘোর দর্শন মায়াবি রাক্ষ্য সকল আছে, গ্রজন্য গ্রহানে সাবধান হইয়া সাধবী অনিন্দিতা সীতাকে রক্ষাকর। লক্ষ্মণ কহিলেন, দেব! যাহা দেখিতেছেন ইহা মৃগনহে, মৃগরূপ ধারী মারীচ ইছাতে সন্দেহ নাই; রত্নবিভূষিত কনকময় মৃগের সন্তাবনা কোথা? । ৪। ৫। ৬। ৭।৮। ৯। জীরাম্বন্ধ কহিলেন—এই মৃগ যদি মারীচ হয়, তবে নি:সংশই ইহাকে বিনাশ করিব, আর যদি প্রকৃত মৃগ হয়, তবে সীতার

গমিষ্যামি মৃগং বন্ধা হ্যানরিষ্যানি সন্তরঃ।

ত্বং প্রযন্ত্রেন সন্তিষ্ঠ সীতাসংরক্ষণোম্ভতঃ।

ইত্যুক্ত্রা প্রযথে রামো মারামৃগমন্তক্ষতঃ।

মারা যদাশ্রমা লোকমোহিনী জগদাকৃতিঃ॥ ১২॥

নির্বিকারশ্চিদাত্মাপি পূর্ণোহিপি মৃগমন্থগাৎ।

ভক্তান্তকন্পী ভগবানিতি সত্যং বচো হরিঃ॥ ১৩

কর্ত্ব্রু সীতাপ্রিয়ার্থার জানন্ত্রপি মুগং যথে।।

অন্যথা পূর্ণকামস্ত রাম্যা বিদিতাত্মনঃ॥ ১৪॥

মৃগেণ বা স্ত্রিয়া বাপি কিং কার্যাং পর্মাত্মনঃ।

কদাচিদ্দৃশ্যতেহভ্যাশে ক্ষণং ধার্বতি লীয়তে॥১৫॥

দৃশ্যতে চ ততো দূরাদেবং রাম্মপাহরং।

ভতো রামোইপি বিজ্ঞায় রাক্ষ্যোইয়্মিতি ক্ষুটম্

বিব্যাধ শরমাদায় রাক্ষসং মৃগৰপিণম্।
পপাত রুধিরাক্তাস্যো মারীচঃ পূর্বেৰপধৃক্ । ১৭ ।
হা হতোহিন্দি মহাবাহো! ত্রাহি লক্ষণ! মাং জ্বতম্
ইত্যুক্ত্বা রামবদ্বাচা পপাত রুধিরাশনঃ । ১৮ ॥
यয়ামাজ্বোহপি মরণে স্মৃত্বা তৎসাম্যমাপ্লুয়াং!
কিমৃতাগ্রে হরিং পশ্যন্ তেনৈব নিহতোহসুরঃ ॥১৯
তদ্দেহাদুপিতং তেঙ্কঃ সর্বলোকস্য পশ্যতঃ ।
রামমেবাবিশদ্দেবা বিস্ময়ং পরমং যয়ৢঃ ॥ ২০ ॥
কিং কর্মা কৃত্বা কিং প্রাপ্তঃ পাতকী মুনিহিংসকঃ?।
অথবা রাঘবস্থায়ং মহিমা নাত্র সংশয়ঃ ॥ ২১ ॥
রামবাণেন সংবিদ্ধঃ পূর্বাং রামমনুষ্মরন্ ।
ভয়াৎ সর্বাং পরিত্যক্ষ্য গৃহবিস্তাদিকং চ য় ॥ ২২॥

ক্রীড়ার নিমিত্ত আনরন করিব। আমি সত্তর গমন পূর্ব্বক মৃগকে বদ্ধ করিরা আনরন করিব। তুমি স্যত্ত্বে সীতারক্ষণে বদ্ধপরিকর হুইরা অবস্থান কর। রামচন্দ্র ইহা বলিয়া মৃগের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হুইলেন। লোক বিমোহিনী জগৎ কপে পরিণতা মায়া যাহার আত্রেরে অবস্থান করিতেছেন, শেই নির্ব্বিকার, জ্ঞানমর, পূর্ণপ্রক্ষ হরিণের পশ্চাৎ গমন করিলেন, ইহাতে "ভগবান্ হরি যে ভক্তবৎসল" এই কথা সপ্রমাণ হুই-তেছে, যেহেতু "ইহা মৃগ নহে মারীচ" জানিয়াও যেন সীতার প্রিয়সাধন জনাই মৃগের পশ্চাৎ ধাবিত হুইলেন। তাহা না হুইলে পূর্ণমনোরপ আত্মতন্ত্র বিশারদ পরমান্থা রামচন্দ্রের মৃগে বা জ্রীতে কি প্রয়োজন? অনন্তর মায়ামৃগ কথন রামের নিকটে বিচরণ করে, কথন ধাবিত হয়, কথন দৃষ্টিপথের অতীত হয়, কখন বা দূর হুইতে লক্ষিত হয়, এই রূপে রাম চন্দ্রকে বহু দূর আকর্ষণ করিল। অনন্তর রামও "এ নিশ্চয় রাক্ষ্প" জ্বানিয়া শর্প্রেছণ পূর্ব্বিক মৃগরগী রাক্ষ্পকে বিদ্ধ

করিলেন। তখন মারীচ মৃগরপ পরিত্যাগ পূর্বক পূর্বরপ ধারণ করিয়া পতিত ছইল। ১০।১১।১২।১৩।১৪।১৫ ১৬।১৭। তাহার মুখ হইতে শোণিত নির্মৃত ছইতে লাগিল; অনন্তর মারীচ জীরামের ন্যায় উচ্চঃম্বরে "হা হতোমি! হে মহাবাহো লক্ষ্মণ! আমাকে শীব্র রক্ষা কর" এই কথা বলিয়া মৃত হইল।১৮। অপণ্ডিত ব্যক্তিও মরণ সময় রামনাম ম্মরণ করিলে রামের সাম্য প্রাপ্ত হয়। মারীচ রামচক্রকে দেখিতে দেখিতে তাহার বাণে নিহত হইয়া যে সাজ্য্য প্রাপ্ত হইরাছে তাহাতে সন্দেহ নাই। অনন্তর মারীচের দেহ হইতে একটা ডেজঃ উপ্তিত হইয়া রাম শরীরে প্রবেশ করিল। দেবগণ এইরপ ব্যাপার দর্শণে অভিশয় বিশ্বিত হইলেন, মুনিহিংদক পাপী কি কার্যা করিয়া কি পদ প্রাপ্ত হইল, অথবা রামচক্রের মহিমাই এইরপ ইহাতে সংশয় নাই। মারীচ পুর্বের রামবাণে বিশ্ধ হইয়া ভয়ের গ্রহ বিতাদি সমস্ত পরিত্যাগ পূর্বক সর্বদাহ হুমার ক্রামনে ধ্যান করিতে করিতে বিধৃত পাপা হইয়াছিল,

ক্ষণি রামং দদা ধ্যাতা নিধু তাশেষকল্ময়ঃ!

অত্তে রামেণ নিহতঃ পশ্যন্ রামমবাপ দঃ ॥২৩॥

দিলো বা রাক্ষদো বাপি পাপী বা ধার্মিকোইপি বা

ত্যজন্ কলেবরং রামং স্মৃত্যা যাতি পরং পদম্॥২৮
ইতি তেইন্যোন্যমাভাষ্য ততো দেবা দিবং যয়ঃ
রামস্তক্ষিন্তয়ামাদ শ্রিয়মাণোইসুরাধমঃ॥ ২৫॥

হা লক্ষণেতি মন্তাক্যমনুকু র্কন্মমার কিম্?।

শুত্যা মন্ত্যাসদৃশং বাক্যং শীতাইপি কিং ভবেৎ ?
ইতি চিন্তাপরীভান্মা রামো দ্রাম্যবর্ত্ত।

দীতা তন্তাধিতং শুহ্যা মারীচন্ত জুরাল্মনঃ॥ ২৭॥

স্তরাং অন্তিমকালে রাম কর্ত্ব নিছত হইরা রামরপ দেখিতে দেখিতে রামের সাম্য প্রাপ্ত হইরাছে। ব্রাক্ষণ হউক, রাক্ষস হউক, পাপী হউক, বা ধার্মিক হউক, রাম নাম মরণ পূর্ব্বক শরীর ভাগা করিলে অবশাই মোক্ষ প্রাপ্ত হয়। ১৯। ২৭। ২১।২২।২৬।২৪।

দেবগণ এইরপ পরস্পর কথোপকথন করিয়া অর্গ গ্রমন করিলেন। রাক্ষ্যাধন মারীচ মৃত্যুকালে "হা লক্ষ্মণ" এই প্রকার আমার বাকোর অনুকরণ কেন করিল, জানকী আমার স্বর সদৃশ এইরপ স্বকরণ স্বর প্রবণ করিয়া কন্তই উনিয়া ছইবেন, রাম এই প্রকার চিন্তা করিতে করিতে প্রতিনিয়ত্ত ছইলেন। এদিকে শীতা ভ্রম্মা মারীচের সেই বাক্য প্রবণ করিয়া ভীতা ও ভ্রম্বিতা ছইয়া শ্রমণকে কহিলেন—ছে লক্ষ্মণ! শীস্ত্র গ্রমন কর? তোমার জাতা রাক্ষ্য করিছেছ না? লক্ষ্মণ কহিলেন, দেবি! উহা কথনই রামের বাক্য নছে, কোন রাক্ষ্য স্থিমাণ ছইয়া ঐ বাক্য প্রয়োগ করিয়াছে। যে রাম ক্র্ম ছইলেক্ষণকাল মধ্যে জৈলোক্য বিনাশ করিতে সক্ষম, সেই দেব পুক্তে রামচন্দ্র দীন বাক্য কেন বলিবেন ? গীতা লক্ষ্মণের

তীতাতিদু:খনংবিগ্না লক্ষনং ত্বিদমন্ত্রীং।
গচ্ছ লক্ষন ! বেগেন ভাতা তেইমুরপীড়িতঃ॥ ২৮
হা লক্ষনেতি বচনং ভাতুস্তে ন শুণোবি কিম্ ।।
তামাহ লক্ষনো দেবি ! রামবাক্যং ন ভদ্ভবেং॥২৯
যঃ কশ্চিদ্রাক্ষনো দেবি ! শ্রিয়মাণোইন্তরীদ্বচঃ।
রামস্ত্রৈলোক্যমপি যঃ কুদ্ধো নাশয়তি ক্ষণাং॥৩০
ল কথং দীনবচনং ভাবতেইমরপ্রিতঃ।
কুদ্ধা লক্ষ্মণমালোক্য সীতা বাপ্সবিলোচনা॥৩২
প্রাহ লক্ষ্মণ ! দুর্দ্ধে ভাতুর্যুসনমিচ্ছলি।
প্রেষিতো ভরতেনৈব রামনাশাভিকাঞ্চিক্ষণা॥৩২॥
মাম্রেতুমাগতোইদি তং রামনাশ উপস্থিতে।
ন প্রাপ্সাদের ত্বং মামন্ত পশ্য প্রাণাংস্ক্রক্ষমাইম্।৩৩
ন জানাতীদৃশং রামো তাং ভার্য্যাহরণোদ্যতম্।
রামাদন্যং নস্পৃশামি ত্বাং বা ভরতমেব বা ৩৪॥

বাক্য অবণ করিয়া অভ্যস্ত জুদ্ধ ছইলেন, তাঁছার নয়ন মুগল বাষ্প জলে সমাকীর্ণ ছইল—কহিলেন, রে তুর্ব্ব দ্ধে লক্ষণ ! তুমি ভাতার বিপৎ কামনা করিতেছ, ভরত রাজ্য লোভে রামের বিনাশ কামনা করিয়া রামকে বনে পাচাইয়াছে, তুমি কি জীরামের বিনাশানস্তর আমাকে এছণ করিবার জ্বন্য বনে আসিয়াছ ? কিন্তু ইছা নিক্ষয় জানিবে যে, রাম বিপন্ন হইলে কখনই তুমি আমাকে এছণ করিতে পারিবে না—এই দেখ, এখনি আমি প্রাণ পরিত্যাগ করি ৷২৫৷২৬৷২৭৷২৮৷২৯৷০০৷০১৷
৷০২৷০০৷ তুমি যে তাঁহার ভার্যাপছারী ম্বাম. ইছা অবগত লছেন৷ তুমি ইছাও জানিবে যে আমি রামি ভিন্ন ভোমাকে যা ভরতকে স্পর্শন্ত করিব না; ইছা কছিয়া স্বীয় বাহুয়য় ছারা বক্ষতাভ্ন পূর্মক রোদন করিতে লাগিলেন৷ লক্ষন ইছা

केजुंख्या वधामांना ना खवाङ्जार ऋताम ह।
जच्च पा लक्षानः कर्ण शिवां शाजीव मूःथिङः॥ ७०
गाम्बरः जावम हिंखः। थिक् पार नाममूख्याम।
हेजुंख्या वनम्बीजाः नमर्ला जनकाष्रकाम्॥ ०७॥
ययो मूःथाजिनः विद्या तामस्मव गर्मः गर्मः।
ज्ञा ममीलमश्म तिद्या तामस्मव गर्मः।
नीजा नमीलमश्म क्या ताम्ला ज्ञा जिल्दा ॥ ७०॥
निजा नमीलमश्म क्या नप्ता जिल्दा ॥ ७०॥
निजा कम्मूनकनामीन म्या यांगजनववीर।
मूरन । ज्रुक्ष कनामीन विद्यामय यथा स्थम्॥ ७०॥
हेनानीस्मव ज्ञा स्मानियाजि क्या स्थम्॥ ७०॥
विद्यामित ज्ञा सांगजिनववीर ।
स्मानीस्मव ज्ञा स्मानियाजि क्या स्थम्॥ ७०॥
हेनानीस्मव ज्ञा स्मानियाजि क्या स्थम्॥ ७०॥
हेनानीस्मव ज्ञा स्मानियाजि क्या स्थम्॥ ७०॥

শ্রবণ করিয়া হস্ত চারা কর্ণদর আচ্ছাদন পূর্বক হুঃখিত চিত্তে ক্রিলন—হে কোপনে! তুমি আমাকে এইরপ হর্বাকা বলিভেছ তোমাকে ধিক, বোধকরি তোমার ঈদৃশ বৃদ্ধিভ্রংশ কোন অনিট পাতের হেতু হইবে। এই কথা বলিয়া বম দেবতাগণের নিকট সীতাকে সমর্পণ করিয়া অতিশয় হুঃখিতান্তঃকরণে অল্লে আলে রাম সন্নিধানে গমন করিলেন। ইজাবসরে রাবণ দশুকমণ্ডলু ধারণ পূর্বক জিক্লেনেশে সীতার নিকট উপস্থিত ছইলেন। সীতা ভিক্কককে সমাগত দেখিয়া ভল্তিভাবে প্রণাম ও পূজা করিয়া কন্দমূল ফলাদি প্রদাননন্তর স্থাগত জিজ্ঞানা করিলেন, আর কহিলেন—হে মুনে! আপনি এই কলাদি ভোজন করিলেন ও মদি ইচ্ছা হয় তবে এই স্থানে স্থাবিশ্রাম করন, শীস্তই আমার স্থামী আগমন পূর্বক আপনার বিশেষ প্রিয় সম্পাদন করিবেন একণে যদাশি আপনার অভিকৃতি হয় তবে এই স্থানে অবস্থান করন। ও৪।

ভিক্ষুরুষাচ।

কা ত্বং কমলপত্তাক্ষি ! কো বা ভৰ্ত্তা ভবানঘে !। কিমৰ্থমত্ত্ৰ তে বাদো বনে রাক্ষদদেবিতে ? ॥ ৪১॥ ক্ৰিছি.ভডে তেওঃ সৰ্বহং স্বব্নভান্তং নিবেদয়।

পীতোবার্চ।

অবোধ্যাধিপতিঃ শ্রীমান্ রাজা দশরথো মহান্।
তক্ত জ্যেষ্ঠঃ স্থতো রামঃ সর্বলক্ষণলক্ষিতঃ ॥ ৪২ ॥
তক্তাহং ধর্মতঃ পত্নী সীতা-জনকমন্দিনী।
তক্ত জাতা কনীয়াংশ্চ লক্ষ্মণো লাভ্বৎসলঃ ॥ ৪২ ॥
পিতুরাজাং পুরক্তা দশুকে বস্তুমাগতঃ।
চতুর্দশসমাস্তাং তু জ্ঞাতুমিচ্ছামি মে বদ ॥ ৪৪ ॥

ভিক্কুরুবাচ।

পৌলস্ত্যতনয়োহহং তু রাবণো রাক্ষনাধিপঃ। ত্রুৎকামপরিতপ্তোহহং ত্বাং নেতুং পুরমাগতঃ॥৪৫

কমল পত্রান্ধি! তুমি কে? তোমার ভর্তাই বা কে? ছে অন্যে! কি জন্য ভোমরা এই রাক্ষণ সঙ্গুল কাননে বাস করিতেছ। ছে ভক্রে! এই সকল আত্ম রক্তান্ত সবিস্তরে বর্ণন কর। সীতা কছিলেন। আমি অযোধ্যাধিপতি জীমান্ মহারাজা দশরখের জ্ঞোষ্ঠ পুত্র সর্বান্ত্যর রামচন্দ্রের সহ-ধর্মিণী—জনক রাজ ভৃহিতা—নাম সীতা, আমার সহিত্য রামচন্দ্রে ও তাঁহার কনিঠ ল্রাতা লক্ষণ পিতার আজ্ঞায়দশুকারণ্যে চতুর্দশ বৎসর বাস করিতে আসিয়াছেন। আপনি কে? জ্ঞানিতে আমার অতিমাত্র ইচ্ছা হইয়াছে, অভএব আপনার পরিচয় প্রদান করন। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪।

ভিক্ষুক কহিলেন। আমি পৌলন্ত্য তনম রাক্সেশ্র রাবণ—ভৌমার সৌন্ধ্যে বিমুগ্ধ হইয়া ভোমাকে স্থনগরে মুনিবেশেণ রামেণ কিং করিষ্যাদি মাং ভন্ধ।
ভূংক্ষ্ ভোগান্ময়া দার্মং তাজ ফু:খং বনোদ্রবম্ ৪৬
ভ্রুত্বা তত্ত্বচনং দীতা ভীতা কিঞ্চিদুবাচ তম্।
যদ্যেবং ভাষদে মাং ত্বং নাশমেষ্যাদি রাঘ্বাৎ ॥৪৭
আগমিষ্যতি রামোহিপি ক্ষণং তিষ্ঠ দহাসুক্তঃ।
মাং কো ধর্ষরিত্বং শক্তো হরের্ভার্যাং শশো যথা।
রাম্বাণৈরিভিন্নভ্রং পতিষ্যাদি মহীতলে।
ইতি দীতাবচঃ প্রুত্বা রাবণঃ ক্রোধ্যুছি তঃ ॥৪৯॥
স্বরূপং দর্শরামাদ মহাপর্বতদন্নভূম্।
দশাস্তং বিংশভিভূজং কালমেঘ্রমাদ্যুতি॥ ৫০॥
তদ্ষ্যা বনদেব্যক্ষ ভূতানি চ বিত্ত্রস্ত্রঃ।
তত্তো বিদার্য্যধরণীং নথৈক্ষ্ক ত্যু বাছভিঃ॥ ৫১॥

তেরি সির্বার বেথ কিন্তা যথ কিপ্রং বিহারসা।
হা রাম ! হা লক্ষণেতি রুদন্তী জনকাজ্বলা ॥ ৫২।
তরোদ্বিগ্রমনা দীনা পশ্যন্তী ভুবমেব সা।
ত্রুত্বা তৎক্রন্দিতং দীনং সীতায়াঃ পক্ষিসভ্রমঃ ॥৫৩
কটায়ুরুপ্রতঃ শীত্রং নগাগ্রাভীক্ষুত্বকঃ ।
তিষ্ঠ তির্ত্বেঃ তং প্রাহ কো গচ্ছতঃ মমাগ্রতঃ ॥৫৪
মুবিদ্বা লোকনাথস্থ ভার্যাং শূন্যাদ্বনালয়াং ।
ত্রুব্বেণ তীক্ষুত্বেন চুর্ণরামাস তদ্রথম্ !।
বাহান্ বিভেদ পাদাভ্যাং চুর্ণরামাস তদ্বন্ধঃ ॥ ৫৬।
ততঃ সীতাং পরিত্যজ্য রাবণঃ খজ্মাদদে ।
চিচ্ছেদ পক্ষে সামর্য্র পক্ষিরাজস্থ ধীমতঃ ॥ ৫৭।

লইবার জন্য আসিয়াছি। মুনিবেশধারী রাম তোমার কি
করিবে? তুমি আমাকে ভজনা করিয়া আমার সহিত স্থ
ভোগ কর। বনবাস নিতান্ত ক্লেশকর অতএব তাহা পরিভাগ কর। সীতা ভিক্ষুর বাক্য শুনিয়া অভিশয় ভীতা
হইলেন এবং কহিলেন তুমি যথন আমাকে এইরপ কুবাক্য
কহিতেছ তথন রাম তোমাকে অবশাই বিনাশ করিবেন।
তুমি ক্ষণকাল অপেক্ষা কর, রাম লক্ষ্যণের সহিত সত্তর আগামন করিবেন। তুমি মনে করিও না যে আমার প্রতি বল
প্রকাশ করিবে। সিংছের ভার্যাের প্রতি সামান্য পশু কথনই
অত্যাচার করিতে সক্ষম হয় না। তুমি রাম বাণে বিভিন্ন হইয়া
মহীভলে পভিত হইবে। রাবণ সীভার বাক্য শ্রবণ করিয়া
ক্রোধে অধীর হইল, এবং শৈলসদৃশ সমুন্নভ দশ বদন ও
বিংশতি বান্ত শোভিত কালমেশ সদৃশ কান্তিযুক্ত খীয় দেহ
সীতাকে দেখাইল ।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮। ৪৯।৫০। রাবণের
সেই করাল মুর্ভি দেখিয়া বন দেবতা ও বনস্থ প্রাণি সকল

সজ্ঞন্ত হইল। ভয়ানক মূর্ত্তি রাবণ নথ দারা ধরণী বিদীর্থ করিয়া (সীতা ভূমিতে থাকিলে কাছার সাধ্য যে তাঁহাকে উত্তোলন করে।) সীতাকে বাল্ল দারা উত্তোলন পূর্বক রথে নিক্ষেপ করিয়া শীত্র গগনমার্গে গমন করিতে আরম্ভ করিল। জনক কুমারী সীতা ভয়ে একান্ত অধীরা ও দীনা হইয়া পৃথিবীতে দৃষ্টিপাত করিতে করিতে হা রাম! হা লক্ষণ! বলিয়া উচ্চঃম্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। সীতার হৃদয় বিদারক ক্রেন্দন ধনি শ্রবণ করিয়া পর্বত হইতে তীক্ষণভূত পক্ষীক্র জটায়ু শীত্র উপস্থিত হইলেন—আরে পামর! খাক্, খাক্, আমার সম্মুথে শ্রা বন হইতে রামচল্রের ভার্যা অপ্তরণ করিয়া কে গমন করিতে পারে?কুকুর কি কথন মন্ত্রপূত্ত যজীয় পুরোডাশ ভোজন করিতে সক্ষম হয়—এই বলিয়া তীক্ষ চঞ্চ্ব দারা রাবণের রথ চুর্ণ করিল এবং চরণ প্রহারে অধ্ব ও ধরু বিভিন্ন করিয়া দিল। তথন রাবণ ক্রেক্স হইয়া সীতাকে পরিত্যাগ পূর্বক থজা দারা ক্রটায়ুর পক্ষম হ ছেদন

পপাত কিঞ্চিচ্ছেষেণ প্রাণেন ভূবি পক্ষিরাট্।
পুনরন্যরথেনাশু দীতামাদার রাবণঃ ॥ ৫৮ ॥
কোশন্তী রামরামেতি ত্রাতারং নাধিগছতী।
হা রাম! হা জগরাথ! মাং ন পশ্যদি দুঃখিতাম?
রক্ষমা নীয়মানাং স্বাং ভার্যাং মোচর রাঘব!।
হা লক্ষণ মহাভাগ! ত্রাহি মামপরাধিনীম্॥ ৬০
বাক্শরেণ হতন্তং মে হন্তমহ দি দেবর!।
ইত্যেবং কোশমানাং তাং রামাগমনশঙ্করা॥ ৬১॥
ক্রগাম বায়ুবেগেন দীতামাদার দত্তরঃ।
বিহারদা নীয়মানা দীতা পশুদধোমুখী॥ ৬২॥

পর্বতাগ্রন্থিতোন্ পঞ্চ বানরান্ বারিজাননা।
উত্তরীয়ার্দ্বিগণ্ডেন বিষ্চ্যান্তরণাদিকম্ ॥ ৬৩ ॥
বন্ধা চিক্ষেপ রামায় কথয়ন্ত্রিতি পর্বতে।
ততঃ সমুদ্রম্ভব্য লক্ষাং গড়া স রাবণঃ ॥ ৬৪ ॥
স্বাস্তঃপুরে রহস্তে তামশোকবিপিনেহক্ষিপং।
রাক্ষনীতিঃ পরিবৃত্যং মাতৃবৃদ্ধানুপালয়ং॥ ৬৫ ॥

ক্লশাতিদীনা পরিকর্মবর্জিত।
দুংখেন শুষ্যদ্বদনাতিবিজ্ঞলা।
হা রাম! রামেতি বিলপ্যমানা
দীতা স্থিতা রাক্ষসরক্ষমধ্যে॥ ৬৬॥

रेजि खीयमधाषात्रांगात्रात्रां जैयायदश्यत मन्नादम व्यत्नगुकारण मश्रदमारुधाः ।

করিয়া দিল। পক্ষীক্ত আহত হইয়া পতিত হইলেন, কিন্তু ঠাহার প্রাণ বহির্গত হইল না। রাবণ সীতাকে লইয়া অন্য রূপে আরোহণ পূর্ব্বক গমন করিতে লাগিল। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮।

সীতা "রাম রাম" বলিয়া বারস্থার রোদন করিতে লাগিলেন। কিন্তু সে সময় তিনি কাহাকে রক্ষক দেখিলেন না। হা রাম! হা জগলাথ! আমি নিতান্ত ভংশকর অবস্থায় পতিত ছইয়াছি, আপনি কিছুই দেখিতে পাইতেছেন না; আপনার ভার্যাকে রাক্ষস হরণ করিতেছে, শীঘ্র মোচন করুন, হা লক্ষ্মণ মহাভাগ। আমাকে মোচন কর, আমি তোমাকেবাক্-শরে বিদ্ধ করিয়াছি, হে দেবর। তুমি তাহা ক্ষমা কর। সীতা এইরূপে বিলাপ ও পরিতাপ করিতে লাগিলেন। রাবণ শ্রীয়ামের আগমনাশহায় সীতাকে শ্রহণ করিয়া অতি সত্তর বায়্বেগে আকাশ মার্গে গমন করিতে লাগিল। পদ্মুখী জানকী অধামুখী ছইয়া দেখিলেন একটা

পর্কতের অগ্রদেশে পাঁচটা বানর অবস্থান করিতেছে। সীতা অঙ্গ হইতে আভরণ উপোচন করিয়া স্বীয় উত্তরীয়ার্দ্ধে বদ্ধ করিয়া "রামকে আমার বৃত্তান্ত বলিও" এই অভিপ্রায়ে পর্কতোপরি তাহা নিক্ষেপ করিলেন।

অনস্তর রাবণ সমুদ্র উল্লেজ্জ্যন পূর্ব্বক লকার গামন করিয়া স্বীয় অন্তঃপুরবন্তী নির্জন অশোক কাননে সীতাকে রক্ষা করিল। এবং রাক্ষদীগণকে তাঁছার রক্ষণাবেক্ষণে নিযুক্ত করিয়া মাতৃ-ভাবে তাঁহাকে প্রতিপালন করিতে লাগিল। সীতা রাক্ষ্য সমূহ মধ্যে অবস্থান করিতে লাগিলেন। তিনি নিতান্ত কুশা ও দীন ভাবাপারা হইলেন। শরীর সংখ্যারাদিতে তাঁছার আস্থা ছিলনা। তুঃথে বদন মণ্ডল বিশুদ্ধ হইন্তে লাগিল, ভ্রে বিহ্বলা ছইলেন, সর্ব্বদাণ হা রাম! হা রাম! বলিয়া বিলাপ করিতে লাগিলেন। ৫৯।৬০।৬১।৬২।৬৩।৬৪।৬৫।৬৬।

ইতিশ্রীমদধ্যাত্ম রামারণে উমামছেশ্বর সন্থাদে অরণ্যকৃষ্টে সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

অফ মো২ধ্যায়

রামো মারাবিনং হত্বা য়াক্ষদং কামৰূপিণম্।
প্রতন্তে স্বাশ্রমং গন্তং ততো দূরাদদর্শ তম্॥ ১॥
আরাতং লক্ষণং দীনং মুখেন পরিশুবাতা।
রাঘবশ্চিন্তরামাদ স্বাত্মন্যের মহামতিঃ॥ ২॥
লক্ষণস্তর জানাতি মারাদীতাং ময়া কুতাম্।
জ্ঞান্তাপ্যেনং বঞ্চয়িত্বা শোচামি প্রাক্রতো যথা॥ ৩॥
যত্তহং বিরতো ভূত্বা ভূক্ষীং স্থান্তামি মন্দিরে।
তদা রাক্ষদকোটীনাং বধোপায়ঃ কথং ভবেৎ ?॥
যদি শোচামি তাং দুঃখনন্তপ্তঃ কামুকো যথা?।
ভদা ক্রমেণানুচিন্তন্ দীতাং যান্তেইস্তরালয়ম্।
রাবণং দকুলং হত্বা সীতামগ্রে স্থিতাং পুনং॥ ৫॥

মহামতি জীরামচন্দ্র কামরপী মায়াবী রাক্ষসকে বিনাশ করিয়া আত্রমাভিমুখে প্রস্থান করিতেছেন। এমন সময়ে মলিন বদন ও ছুঃখিতান্তঃকরণ লক্ষ্মণকে দূর হইতে পথিনধ্যে অবলোকন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিতে লাগিলেন। ১।২। আমি মায়া সীতাকে পর্ণশালায় রক্ষা করিয়া আদিয়াছি তাহাতে রাক্ষ্সাদি কর্ত্বক প্রকৃত সীতার কোন বিঘ হইবার সম্ভাবনা নাই, কিন্তু লক্ষ্মণ এই সকল ঘটনা কিছুই জানেন না। আমি ভূত, ভবিষ্যত ও বর্ত্তমান সকল ঘটনা জানিয়াও লক্ষ্মণের নিকট প্রাকৃত মনুষ্যের ন্যায় প্রবঞ্চনা করিয়া শোক প্রকাশ করি। যদি উপস্থিত সময় সীতার নিমিত্ত শোক প্রকাশ না করিয়া (মেনি হইয়া) আশ্রমে বাস করি তাহা হইলে আর অন্য কোন্ ছলে কোটি রাক্ষ্ম কুল বিনাশ করিব।

মরৈব স্থাপিতাং নীত্বা যাতাহযোধ্যামতন্দ্রতঃ।
অহং মন্থ্যভাবেন জাতোহয়ি ব্রহ্মণার্থিতঃ॥ ৬।
মন্থ্যভাবমাপন্ন: কিঞ্চিংকালং বদানি কৌ।
ততো মারামন্থ্যদা চরিতং মেহনুষ্ণৃতাম্॥ ৭।
মুক্তিঃ স্থাদপ্রাদেন ভক্তিমার্গানুবর্তিনাম্।
নিশ্চিত্যবং তদা দৃষ্ট্বা লক্ষ্মণং বাক্যমন্ত্রবীৎ॥৮॥
কিমর্থমাগতোহদি তং দীতাং ত্যক্ত্বাম্ম প্রিয়াম।
নীতা বা ভক্ষিতা বাপি রাক্ষ্মের্জনকাল্পজা। ১।
লক্ষ্মণঃ প্রাপ্তলিঃ প্রাহ্ দীতায়া ছ্র্মিচো রুদন্।
হা! লক্ষ্মণেতি বচনং রাক্ষ্মোকং প্রতং তয়া॥১৯

হটয়া শোক করিতে আরম্ভ করি, তাহা হইলে ক্রমশঃ সীতার অনুসন্ধান ছলে রাজসালয়ে গমন করিতে পারিব। লঙ্কায় গমন করিবা মাত্র রাবণকে সবংশে নফ্ট করিয়া আমারট আজ্ঞানুসারে অগ্লি প্রবিধ প্রকার অগ্লি হইতে গ্রহণ পূর্বক অযোধ্যায় প্রতিগমন করিব। আমি ব্রহ্মার প্রথিনানুসারে মনুষ্য ভাবে জন্মগ্রহণ করিয়াছি, অত্তর্বে পৃথিবীতে মনুষ্য ভাব প্রকাশ করিয়া কিছু কাল বাস করিব। এই জগতে আমার মনুষ্য চরিত প্রকাশিত হইলে যাহারা ভক্তিমার্গানুসারী হইয়া উহা প্রবণ করিবে, তাহাদিগের আনায়াসে মুক্তি লাভ হইবে। প্রীরামচক্র মনে মনে এইরূপ নিক্রয় করিয়া সমীপাগত লক্ষ্মণকে কহিলেন। ৫।৬।৭।৮। হে লক্ষ্মণ! তুনি আমার প্রিয়তমা জানকীকে পরিত্যাগ করিয়া কি হেতু আগমন করিলে? হে লাভ:! এতক্ষণে রাক্ষ্মণেরা জনকনন্দিনীকে হরণ বা ভক্ষণ করিয়াছে।৯। অনস্তর লক্ষ্মণ

ত্বনাক্যসদৃশং শ্রুত্বা মাং গছেতি ত্বরাব্রবীৎ।
কদন্তী সা ময়া প্রোক্তা দেবি ! রাক্ষসভাষিতম্।
নেদং রামস্য বচনং স্বস্থা ভব শুচিন্মিতে ! ॥ ১১ ॥
ইত্যেবং সান্তি তা সাধী ময়া প্রোবাচ মাং পুনঃ।
যত্ত্বং ত্বিচো রাম ! ন বাচাং পুরতস্তব ॥ ১২ ॥
কণ্ঠে পিধায় নির্গত্য যাতোহহং ত্বাং সমীক্ষিতুম্।
রামস্ত লক্ষনং প্রাহ তথাপ্যন্তিতং কৃতম্ ॥ ১৩ ॥
তয়া স্ত্রীভাষিতং সত্যং কৃত্বা তাক্ত্রা শুভাননাম্।
নীতা বা ভক্ষিতা বাপি রাক্ষসৈর্নাত্র সংশ্রঃ ॥১৪

ইতি চিন্তাপরো রামঃ স্বাশ্রমং ত্রিতো যথে।।
তত্ত্যাদৃষ্ট্য জনকলাং বিললাপাতিদুঃখিতঃ ॥ ১৫ ।
হা প্রিয়ে! ক গতাসি তুং ? নাসি পূর্ব্যবদাশ্রমে ।
অথ বা মদ্বিমোহার্থং লীলয়া ক বিলীয়সে ? ॥ ১৬ ।
ইত্যাচিন্তুস্থনং সর্বাং নাপশ্যুৎ জানকীং তদা ।
বনদেব্যঃ কুতঃ সীতাং ক্রুবন্তু মম বল্লভাম্ ॥ ১৭ ॥
মৃগাশ্চ পক্ষিণো বৃক্ষা ! দর্শয়ন্তু মম প্রিয়াম্ ।
ইত্যেবং বিলপয়েব রামঃ সীতাং ন কুত্রচিৎ । ১৮

ক্তাঞ্জলি ছইয়া রোদন করিতে করিতে জানকীর হুর্স্বাক্য নকল শীরামের নিকট কহিতে লাগিলেন। হে রাম! জনক-নন্দিনী সীতা "হা লক্ষণ।" এ প্রকার আপনার বাকা সদৃশ রাক্ষদের কপাট বাক্য শ্রবণ করিয়া রোদন করিতে করিতে আমাকে কহিলেন "লক্ষাণ ভূমি শীন্ত আর্থ্যপুত্তের নিকট গমন করিয়া উপস্থিত বিপদের প্রতিকার কর।" অনন্তর আমি আর্ষ্যা জানকীকে কহিলাম,—"দেবি! আপনি বাহা প্রবণ किंदिलन छेश कथनरे औक्षांमहत्त्वत्र वांका नत्र, तमरे मात्रामृत-অপধারী কপটী রাক্ষদাধমের বাকা, হে শুচিক্সিতে! ইর্ধ্ব্যাবলম্বন ককন কোন চিন্তা করিবেন না"।১০।১১। আমি.এই রূপে (नवीरक वरुटत भाखना कविलाम, माध्वी জनकनिननी **आ**यात বাক্যে বিশ্বাস না করিয়া আমাকে যে সকল হর্কাক্য বলিয়া-ছেন তাহা অপিনার অত্যে বলিতে পারিনা। ১২। হে দেব! আমি সেই সময় হস্ত যুগল দ্বারা কর্ণদ্বয় আচ্ছাদন প্রকৃক পর্ণ-শালা হইতে নিৰ্গত হইয়া আপনাকে দেখিতে আসিয়াছি ত্রীরাম কহিলেন, ভ্রাতঃ ! অতিশর অনুচিত কার্য্য করিয়াছ। যেহেতু স্বী জনের বাক্য সভ্য জ্ঞান করিয়া সেই ভভাননা জানকীকে পরিত্যাগ পূর্বাক এস্থানে আসিয়াছ, নিশ্চয়ই দীতাকে রাক্ষ্যেরা গ্রহণ বা ভক্ষণ করিয়াছে । ১৪ 1

জীরামচনদ্র এই প্রকার চিন্তাকুল হইয়া অভি দত্তর আশ্রমে গমনানন্তর সীতাকে সেম্বানে অবলোকন না করিয়া অতি তুঃথিতান্তঃকরণে বিলাপ করিতে লাগিলেন।১৫। হা প্রিয়ে, ভূমি কোথায় গমন করিয়াছ। পূর্ব্ববৎ ভোমাকে আ**শ্রমে দে**খিতে পাইতেছি না । হে প্রিয়ে! তুমি কি আমাকে মুগ্ধ করিবার জন্য লীলাচ্ছলে কোন স্থানে লুকায়িতা হইয়াছ ? 15%। অনন্তর জীরণমচন্দ্র সমস্ত বন মধ্যে জ্বানকীকে অরেষণ করিলেন, কিন্তু কোন স্থানে দেখিতে না পাইয়া—বনদেবতা ও বনবাসি প্রাণি সকলকে জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন। হে বনদেবিগণ! হে মুগাগণ! ছে পক্ষিগণ! হে তক সকল! আমার প্রাণ বল্লভা জানকী কোন স্থানে আছেন তোমরা আমাকে অবলোকন করাও। সর্বজ্ঞ শ্রীরাম এই প্রকার বহুতর বিলাপ করিতে করিতে নানা স্থান অন্বেষণ করিতে লাগিলেন। সীতা कान शादन बाह्न देश मर्व श्रकात कानियां कानियां না। জীরামচন্দ্র আধনন্দময় হইয়াও শোক করিতে লাগিলেন। এবং অচল (অর্থাং ধৈর্যাশালী) শ্লেষ অর্থ, চলংশক্তি বহিত হইয়াও নান। স্থানে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। এবং নির্ম্ম নিরহঙ্কার পূর্ণানল স্বরূপ হইয়াও আমার সীত।

কোথার? ইছা বলিয়া অতি ত্রংথ সহকারে বিলাপ করিতে

नर्ककः नर्कशं कालि नाशनाउपचूनकनः আনন্দোহপ্যস্থশোচতাং অচলোহপ্যমুধাবতি ॥১৯ निर्माया नित्रक्हारतार्भाष्ट्रभाष्ट्रभाममञ्ज्ञान्। মম জায়েতি দীতেতি বিললাপাতি দুঃখিতঃ ॥ ২০ এবং মারামন্থচরন্নসক্তোহপি রঘুত্তমঃ। আসক্ত ইব মূঢ়ানাং ভাতি তত্ত্ববিদাং নহি।। ২১ खवर विष्ठिश्वन् नकनर वनर द्राभः नलकानः। ভগ্নং রথং ছত্রচাপং কুবরং পতিতং ভুবি ॥ ২২ ।। मुखे। लक्षानभारहमः श्रमा लक्षान। क्रिनिट। নীয়মানাং জনকজাং তং জিত্বানো জহার তাম্ ৩২ তচ্ছত্বা রাঘবো দীনং কণ্ঠপ্রাণং দদর্শ হ॥ ২৯॥ ততঃ কঞ্চিদ্ধুবো ভাগং গড়া পর্ব্বতসন্মিভম। क्रिविताक्तवशूर्षस्या द्वारमा वाकामथाखवीर ॥ २८ ॥

লাগিলেন। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। মূঢ়েরা এই সকল ব্যাপার অবলোকন করিয়া রঘুনন্দনকে বিষয়াসক্ত পুরুষের ন্যায় বিবেচনা করিল। কিন্তু তত্ববিৎ প্তিতেরা মায়া মনুষ্য लोलाकाती अनामक भद्रमाया विलया स्थित कविया हित्तन। । ২১। অনন্তর জীরামচন্দ্র লক্ষ্মণের সহিত সমস্ত বন অধে-বণ করিতে করিতে দেখিলেন যে, এক থানি ভগ্ন রথ, ও একটা ভগ্ন ছত্ত্ৰ, ও ভগ্ন ধনু পৃথিবী তলে পডিত রহিয়াছে। । ২২। জীরাম এইরাপ বিশায়কর রণ চিক্ত দর্শন করিয়া লক্ষাণকে কছিলেন—ভাতঃ! অবলোকন কর—এই সকল রণ চিহ্ন षात्रा निक्ठत (वाथ इटेर्डिड्ड (य, क्रांन इत्रांका जनकनिन-নীকে হরণ করিয়া পলায়ন করিতেছিল, অপর কোন বীর পুৰুষ তাহাকে যুদ্ধ ক্ষেত্ৰে জয় করিয়া সীতাকে গ্রহণ করিয়াছে। ২৩। অনস্তর জীরাম অপর কোন পথে গামন

করিয়া এবং পক্ষীন্দ্র জটায়ু রুধিয়াক্ত, পর্বত সদৃশ সমুরত,

শরীর দর্শনানন্তর লক্ষাণকে কছিলেন। ২৪। হে ভাতঃ ! দেখ

এেষ বৈ ভক্ষয়িত্বা তাং জানকীং শুভদর্শনাম। শেতে বিবিক্তেইতিতৃপ্তঃ পশ্য ইন্মি নিশাচরম্ ॥ ২৫ চাপমানয় শীঘুং মে বাণঞ্জ রঘুনন্দন!। তচ্চুত্বা রামবচনং জটায়ুঃ প্রাহ ভীতবৎ ॥ ১৬ ॥ মাং ন মারয় ভদ্রং তে ব্রিয়মাণং স্বকর্মাণা। অহং জটায়ুটে ভার্যাহারিণং সমন্তর্ক্তঃ॥ ২৭॥ রাবণং তত্ত্র যুদ্ধং মে বভূবারিবিমর্দ্দন !। তশ্র বাহন্ রথং চাপং ছিত্তাহং তেন ঘাতিতঃ ॥২৮ পতিতোহিম্ম জগন্নাথ! প্রাণাংস্তাক্যামি পশ্য মাম হস্তাভ্যাং সংস্পৃশন রামোবুংখাশ্ররতলোচন:॥ ৩০

এই হুরাক্মা দর্শনা জানকীকে ভক্ষণ করিয়া অতি ভৃপ্তি সহকারে নির্জ্জনে শয়ন করিতেছে। অতএব এই নিশাচরকে এই দঙেই বিনাশ করিব। তে লক্ষ্যণ। শীত্র ধনুর্বাণ আনয়ন কর ; জটায়ু জীরাম বাকা প্রবণানম্বর ভীত হইয়া কছিল, ছে মহাবাহো! আমাকে বিনাশ করিও না, আমি নিজ কর্ম দারাই বিনষ্ট হইরাছি, হে রাম! তোমার মঙ্গল হউক, আদি ক্রোধ সহকারে তোমার ভার্যাপহারী রংবণের অনুগমন করিয়াছিলাম— ছে অরিমর্দন ! পথিমধ্যে তাহার সহিত আমার যুদ্ধ হইরাছিল—আমি রণক্ষেত্তে ভাহার অশ্ব, রথ, 🤉 ধনুঃ তুও প্রহার দ্বারা ছিন্ন করিয়াছিলাম, অনন্তর ত্ররাঝ। মহাবল পরাক্রান্ত রাক্ষম আমাকে নিদারুণ প্রহার করিয়া ভূমিভলে নিক্ষেপ করিয়াছে । ছে জলরাথ ! একলে আমি প্রাণত্যাগ করি তুমি সন্মুখে দণ্ডায়মান হইয়া আমাকে দর্শন কর। শ্রীরামচন্দ্র শ্রবণ করিয়া কণ্ঠাগন্ড প্রাণ জ্বটায়ুকে অব-লোকন করিলেন্। এবং ড্র: খাত্রু মোচনানম্ভর ছম্তুগুল षात्रा क्रिवेश्वत शांक म्लान कतिया कहिएनन । २৫। २७। २१। २৮।२२।७०। ८६ क्छास्त्रा! जूमि वन आमात ऋवममा

জটায়ে। ক্রহি মে ভার্য্যা কেন নীতা শুভাননা।

মৎকার্য্যর্থং হতোহিনি ত্বমতো মে প্রির্বাক্ষরঃ।।৩১
জটায়ঃ সময়া বাচা বক্তাদ্রক্তং সমুদ্বমন্।
উবাচ রাবণো রাম ! রাক্ষসো ভীমবিক্রমঃ॥ ৩২॥
আদায় মৈথিলীং সীতাং দক্ষিণাভিমুখো যয়ে।।
ইতো বক্তুং ন মে শক্তিঃ প্রাণাংস্ত্যক্ষ্যামি তেইগ্রতঃ
দিন্ত্যা দৃট্টোহিনি রাম ! তং প্রিয়মাণেন মেইনঘ !।
পরমাত্মানি বিষ্ণুত্তং মায়ামনুজন্ধপুক্॥ ৩৪॥
অন্তকালেইপি দৃন্ত্যা তাং মুক্তোইহং রঘুসত্তম !।
হস্তাভ্যাং স্পৃশ মাং রাম ! পুনর্যান্ত্যামি তে পদম্
তথেতি রামঃ পশ্পর্ণ তদক্ষং পাণিনা মায়ন্।
ততঃ প্রাণান্ পরিত্যক্তা জটায়ঃ পতিতো ভূবি॥
রামন্তমন্ত্রণাচিত্রা বন্ধুবং সাক্র্যলোচনঃ।
লক্ষণেন সমানায্য কাষ্ঠানি প্রদদাহ তম্॥ ৩৭॥

ভার্যাকে কোন্ ব্যক্তি হবণ করিয়াছে—হে সংধ! আমারই কার্যার্থ বিনফ ইইয়াছ—এই হেতু তুমি আমার প্রিয়ভ্য স্থা হইতে রক্তবনন করিতে করিছে দুরুবচনে কছিল—হে রাম! ভীম বিক্রম রাক্ষণাধিপতি রাবণ জানকীকে হরণ করিয়া দক্ষিণাভিমুখে গমন করিয়াছে, আর অধিক বলিতে আমার শক্তি নাই, এক্ষণে তোমার অত্যেপ্রাণ পরিভাগা করি তেং। ৩৩। হে অনঘ! তুমি মায়ামনুষাক্রসধারী সাক্ষাৎ পরমান্মা বিষ্ণু, বহুভাগা বলে মরণকালে ভোমাকে দর্শন করিয়া মুক্ত ইইলাম। ৩৪। হে রঘুনন্দন! নিজ করকমল হারা আমাকে স্পর্শ কর, ভাহা ইইলে তোমার পরেম পদ প্রাপ্ত ইব। ৩৫। জ্রীরামচন্দ্র জটায়ু বাকো স্বীকৃত ইইয়া বিশায় সহকারে হস্তবারা ভাহার অন্ধ স্পর্শ করিলেন। জটায়ুও তৎক্ষণাৎ প্রাণ পরিভাগা করিয়া পরম পদ প্রাপ্ত ইইলেন পাঞ্চভে তিক দেহমাত্র ভূতলে পতিত রহিল। ৩৬ জ্রীরামচন্দ্র পরমবন্ধার নাায় জটায়ুর প্রতি শোকাঞ্চ পরিভাগা

রাত্বা দুংখেন রামোহপি লক্ষাণেন সমস্বিতঃ।
হত্বা বনে মৃগং তত্ত মাংসথগুন্তান্ সমস্কতঃ॥ ৬৮
শাদ্বলে প্রাক্ষিপজামঃ পৃথক্ পৃথগনেকধা।
ভক্ষন্ত পক্ষিণঃ সর্বের ভূপ্তে। ভবতু পক্ষিরাট্॥৩৯॥
ইত্যুক্ত্বা রাঘবঃ প্রাহ ক্ষটায়ো! গচ্ছ মৎপদম্।
মৎসারূপ্যং ভক্ষাদ্য সর্বলোকস্ত পশ্ততঃ॥ ৪০॥
ততোহনভরমেবাসে দিব্যরূপধরঃ শুভঃ।
বিমানবরমারুছ ভাস্বরং ভানুস্ত্রিভম্॥ ৪১॥
শঙ্খাচক্রগদাপদ্মকিরীটবরভূষণেঃ।
ভৌতরন্ স্প্রেকাশেন পীতাম্বরধরোহ্মলঃ॥ ৪২॥
চতুর্ভিঃ পাশ্ব দৈব্বিক্ষোন্তাদ্শৈর্ভিপ্তিভঃ।
ন্ত্রাঞ্জান্থা ব্যুন্দ্নম্॥ ৪০॥
ক্তাঞ্জিপুটো ভূত্বা তুফাব র্যুন্দ্নম্॥ ৪০॥

করিয়া লক্ষণধারা কাষ্ঠানয়ন করাইয়। তাঁছাকে দক্ষ করি-লেন। ভণ। অনন্তর লক্ষাণের সহিত ত্রঃথিতান্তঃকরণে স্থান করিখাবন মধ্যে বহুতর মৃণ বধ করিলেন। জীরামচক্র ঐ মৃনমাংস থগু থগু করিয়া দুর্ন্ধ। সমাকীর্ণ ভূমিতলে পৃথক্ পৃথক্ নিক্ষেপানন্তর কহিলেন—পক্ষিপাণ এই স্কল মাংস্থও ভক্ষণ কৰুক তাহ। হইলে পক্ষিরার জটায়ু পরিতৃপ্ত হইবেন। । ৩৮। ৩৯। অনন্তর জটায়ুকে স্বোধন করিয়া কহিলেন— হে জটায়ে৷ সকল লোকে অবলোকন কৰুন, তুমি অন্ত আমার সারপ্য ভজনা কর। ৪০। দিবা রূপধারী জটায়ু পীতাম্বর পরিধানপূর্বক সূর্যাসদৃশ সমুজ্জল বিমানে আরোহণ করিলেন। ভৎকালে তাঁহার শঙ্চক্রগদাপদা ও কিরীট প্রভৃতি ভূষণের অসামান্য প্রভায় দশদিক্ আলোকময় হইল। । ৪১। ৪২। এবং ঐরপ সর্বাভরণভূষিত চারিটী বিফুদ্ত উপস্থিত ছইয়া জটায়ুকে সেবা করিতে লাগিলেন। যোগি-গণও দেই স্থানে উপস্থিত হইয়া বলবিধ শুব বাক্যে দিব্যরূপ-धारी क्रिकारक रूद कहिए आंत्रख कर्त्रलन।

क हो युक्याह।

অগণিত গুণমপ্রমোদ্যাদি হেতুম্।

কলজগৎ স্থিতি সংযামাদি হেতুম্।
উপরমপর মং পরাত্মভূতং

সতভ্যহং প্রণতোহিন্য রামচক্রম্॥ ৪৪
নিরবধি মুখনি নিরাকটাক্ষং
ক্ষপিত মুরে ক্রচতুমুখা দিদু:খন্।
নরবরমনিশং নতোহিন্য রামং
বরদমহং বরচাপবাণহন্তম্॥ ৪৫॥
ত্রিভূবনকমনী রক্ষপমী ভ্যং
রবিশতভামুরমী হিতপ্রদানম্।
শরণমনিশং সুরাগমূলে
কৃতনিলয়ং রঘুননদনং প্রপদ্যে॥ ৪৬॥

পক্ষীত্র জটায়ু রঘুনন্দন রামকে সংখাধন করিয়। ক্তাপ্রলিপুটে স্তব করিতে লাগিলেন। ৪০। যাহার অনস্ত শক্তি
এবং দেশকালাদি দারা যাহাকে পরিচ্ছেদ করা যায় না— যিনি
সকলের আদি ও সমস্ত জগতের স্ফিল্ডিতি সংহার কর্তা সেই
শান্তিগুণমন্ন পরমাত্মাত্মরপা রামচন্দ্রকে আমি সতত প্রণাম
করি। ৪৪। এবং মনুষ্যেরা যাহা হইতে নিত্য স্থলাভ
করিতে পারে এবং যিনি কমলাদেবীর এক মাত্র কটাক্ষ স্থান,
ব্রহ্মা ইন্দ্র প্রম্ভৃতি দেবগণ বিপাৎকালে যাহার শরণাপার
হইয়া সমস্ত ভুঃশ হইতে পরিক্রাণ পাইরা থাকেন, দেই
বরপ্রাদ ধনুর্বাণ ধারী মারা মনুষ্যরূপী রামকে সতত প্রণাম
করি। ৪৫।

যিনি ত্রিভূবনৈক স্থলবরণের শতস্থাসম সমুজ্জন শোভাষ জগৎ আলোকময় করিছেছেন, এবং ভক্ত জনের
চিত্তে বাস করিয়া ডাহাদিগের সকল মতীষ্ট প্রদান করিয়া
খাকেন, আমি সেই স্তৃতিভাজন রঘুনলনের শ্রনাপার

ভববিপিনদবাগ্নিনামধেরং
ভবমুখদৈবতদৈবতং দয়ালুম্।
দম্ব্রপতিসহস্রকোটিনাশং
রবিতনয়াসদৃশং হরিং প্রপদ্যে ॥ ৮৭॥
অবিরতভবভাবনাতিদূরং
ভববিমুখৈরু নিভিঃ সদৈব দৃশ্যম্।
ভবজ্বধিস্থভারণাজ্যিপোতং
শরণমহং রঘুমন্দনং প্রপদ্যে ॥ ৮৮॥
গিরিশগিরিস্থভামনোনিবাসং
গিরিবরধারিণমীহিতাভিরামম্।
স্থবরদ লুজেন্দ্রেভিরামম্।
স্থবরদ লুজেন্দ্রেভিরামম্।
স্থবরদ লুজেন্দ্রেভিরামম্।
পরধনপরদারবর্জিভানাং
পরগুণভূতিযু ভুকীমানসানাম্।

হইলাম। ৪৬। যাহার নাম রূপ পাবক দ্বারা সংসার রূপ ভীষণ কানন দগ্ধ হয়, যিনি মহাদেব প্রভৃতি দেবলা বেরও দেব্তা স্বরূপ এবং যিনি সহস্রকোটি দৈতা নাশ করিয়া পৃথিবীর ভার হরণ করিয়াছেন, আমি সেই যমুনাজল সদৃশ নীলকান্তি শোভিত পরম দয়াময় হরির শরণাপান্ন হইলাম। ৪৭। যিনি সংসার বাসনা সম্পান ব্যক্তিগণের অতি হল্ল ভ এরং সংসার বিমুখ মুনিগণের সর্বদা নয়নগোচর হইয়া থাকেন, যাহার চরণরূপ অসামান্য তরণী ভব সাগর তরণের এক মাত্র উপায়, আমি সেই রঘুনন্দন রামের শরণাপান্ন হইলাম। ৪৮। যিনি হরপার্ক্তীর মানসমন্দিরে সভত বাস করিতেছেন এবং স্বরপতি ও অস্করপতি গণ সতত বাহার চরণ সেবায় নিযুক্ত আছেন, আমি সেই গোবর্জনধারী স্বর্ণ সেবায় নিযুক্ত আছেন, আমি সেই গোবর্জনধারী স্বর্ণ গের ও বরদাতা রঘুনাথের শরণাপান হইলাম। ৪৯। যাহারা

পরহিতনিরতাত্মনাং ফ্লেব্যং
রঘুবরমন্থ কলোচনং প্রপদ্যে॥ ৫০॥
ন্মিতরুচিরবিকানিতাননাজ্ঞমতিস্থলতং স্থারাজনীলনীলম্।
নিতক্ষলক্ষ্চাক্রনেত্রশোভং
রঘুপতিমীশগুরোগুরুং প্রপদ্যে॥ ৫১
হরিক্মলজশস্ত রপতেদাং
ত্বমিহ বিভাদি গুণুত্রয়ানুরক্তঃ।
রবিরিব জলপ্রিতোদপাত্তেব্যারপতিস্তাতিপাত্রমীশমীডে॥ ৫২॥

রতিপতিশতকোটিস্করাকং
শতপথগোচরভাবনাবিদূরম্।
যতিপতিক্সদয়ে সদা বিভাতং

রঘুপতিমার্ত্তিইরং প্রভুং প্রপদ্যে ॥ ৫৩ ॥
ইত্যেবং স্তবতন্ত্র প্রধান হাত্তি অঘূতিমঃ ।
উবাচ গচ্ছ ভদ্রং তে মম বিক্ষোঃ পরং পদম্ ॥৫৪
শ্বোতি য ইদং স্তোত্রং লিখেছা নিয়তঃ পঠেং ।
স যাতি মম সারপ্যং মরণে মৎস্মৃতিং লভেং ॥৫৫
ইতি রাঘবভাষিতং তদা শ্রুতবান হর্ষসমাকুলো ছিলঃ
রঘুনন্দনসামমাস্থিতঃ প্রথমো ব্রহ্মস্পুজিতং পদম্ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসম্বাদে অরণ্যকাণ্ডে অফমোহধ্যায়ঃ।

পরধন ও পরদারে লোভ করে না, এবং পরের গুণ কীর্ত্তন ও পরের সম্পদে যাহাদের চিত্ত সস্তুট্ট হয়, সেই পরহিত্তরত ব্যক্তিরাই যাঁহাকে সেবা করিতে পারে, আমি সেই অর্জ্জলোচন রঘুনাথের শরণাপর হইলাম। ৫০। যে রামচন্দ্রের বদন কমল সর্কাদা হাস্তদারা বিকসিত, যাঁহার নেত্ত্রন্থাল খেতপদ্মের শোভা ধারণ করিতেছে, আমি সেই ইন্দ্রন্থাল খেতপদ্মের শোভা ধারণ করিতেছে, আমি সেই ইন্দ্রন্থাল স্বত্তপত্রির শরণাপর হইলাম। ৫১। হে রাম! যেমন জলপ্রিত পাত্রে এক রবি প্রতিবিঘিত হইয়া বিভিন্নরূপে প্রতীত হট্যা থাকে, তুমি সেইরপ সম্ব রজ্ঞা তমো গুণ জেদে বিষ্ণু, ব্রহ্মা, শিব এই তিন প্রকার মূর্ত্তি ধারণ করিয়া জগতে বিভিন্নরূপে প্রকাশ পাইতেছ—বস্তুগত্যা তুমি একক। হে ভগবন্! তুমি দেবরান্ধ্রেও স্তব্ব পাত্র তোমাকে আমি স্তব্ব করি। ৫২। যিনি শতকোটি কন্দর্পের ন্যায় পরম স্কন্মর

মৃত্তি দারা সমস্ত জগৎ মুগ্ধ করিতেছেন, যিনি নানা পথগামী চিত্ত বিশিষ্ট মনুষাদিগের অতি ছল্ল ভ বস্তু, কিন্তু যতিগণের চিত্তে সর্ব্বদা বিরাজ করিয়া থাকেন, আমি সেই সর্ব্বচুংখ-হারী মহাপ্রভু রযুপতির শরণাপার হইলাম। ৫৩।

শ্রীরাম জটাযু কত শুবে সন্তুষ্ট হইয়া কহিলেন, অটায়ো!
তোমার মন্ধল হইবে। এক্ষণে বিষ্ণুর পারম ধানে গমন কর
।৫৪। যে ব্যক্তি এই জটায়ু কত শুব প্রবণ বা লিপিবন্ধ করিবে,
কিষা সংযত হইয়া প্রতিদিন গাঠ করিবে,সেই ব্যক্তি মরণ সময়ে
আমার শ্বন লাভ করিয়া অন্তে সারপ্য লাভ করিবে। ৫৫।
পরমানন্দিত পক্ষীন্দ্র জটায়ু জীরামের এইরপ বাক্য শ্রবণানন্তর
শ্রীরামের সমতা প্রাপ্ত হইয়া বৈকুঠধানে গমন করিলেন।৫৬।
ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্ব সন্থাদে অরণ্যকাণ্ডে

व्यक्टिमां स्थानिकः।

নবমোইধ্যায়

ততো রামো লক্ষণেন জগাম বিপিনান্তরম্। পুনদু ঃখং সমাপ্রিত্য সীতাম্বেষণতৎপরঃ॥১॥ তত্রাভূতসমাকারো রাক্ষসঃ প্রত্যদৃশ্যত। বক্ষস্তেব মহাবক্তু শ্চক্ষুরাদিবিবর্জিতঃ॥ ২॥ বাহু যোজনমাত্রেণ ব্যাপৃতে ত্রস্ রক্ষরঃ! কবদ্বো নাম দৈত্যেন্দ্রঃ দর্বসন্ত্রবিহিংসকঃ॥ ৩ ॥ তদ্বাস্থোর্মধ্যদেশে তৌচরস্তৌরামলক্ষ্মণৌ। দদর্শভূর্মহাদত্ত্বং ভদ্বাছপরিবেঞ্চিতৌ। ৪ ॥ রামঃ প্রোবাচ বিহসন পশ্য লক্ষ্মণ ! রাক্ষসম। नितः शानविशिताश्यः यमा वक्तम जाननम्।। १।

বাছভ্যাং লভ্যতে যন্তাত তত্ত দুক্ষন্ স্থিতো ধ্রুবম্। আবামপ্যেতয়োর্বাহ্রোর্মধ্যে সক্ষলিতে। ধ্রুবম্ । ৬।। গন্তুমন্যত্ত মার্গোন দৃশ্যতে র্ঘুনন্দন !। কিং কর্ত্তব্যমিতো হক্ষাভিরিদানীং ? ভক্ষরেৎ স নৌ लक्ष्मभ्याद्वारा किः विष्ठारत्न ? तः घव ! । আবামেকৈকমব্যথ্যে চিছ্ন্দ্যাং রক্ষোভুজে ধ্রুবম্। তথেতি রাম: খড়্রেন ভুক্তং দক্ষিণমচ্ছিনৎ। তথৈব লক্ষ্মণো বামং চিচ্ছেদ ভুজমঞ্জদা ॥ ৯॥ ততোহতিবিন্মিতো দৈত্যঃ কৌ যুবাং স্থরপুঙ্গবে\ : মদ্বাছচ্ছেদকৌ লোকে দিবি দেবেষু বা কুতঃ॥ ১০

অনস্তর শ্রীরামচন্দ্র ছৃংথিতান্তঃকরণে সীতান্তেষণ করিতে করিতে লক্ষ্মণের সহিত বনাস্তরে গমন করিলেন। ১। সেই স্থানে একটা বিচিত্ররূপ রাক্ষণ ভাঁছাদের নরন্গোচর ছইল। ঐ রাফদের বক্ষঃছলে একটা বৃহৎ মুখ, উছার চক্ষু কণ কিছুই দৈতে।ক্র কবন্ধ নামে বিখ্যাত ছিল। উহার বিভ্ত বাহ-দয়ের মধ্যস্থলে শ্রীরাম লক্ষ্মণ উভয়ে বিচরণ করিতেছিলেন। কিন্ত তাঁহার। প্রথমতঃ কিছুই জানিতে পারেন নাই। যথন জ্ঞীরাম জানিলেন (য, তাঁছারা রাক্ষস-বাভ ছারা পরিবেফিত হইয়াছেন; তথন লক্ষ্মণকে হাস্ত করিতে করিতে কছিলেন। লক্ষ্মণ! এই রাক্ষ্যের বিচিত্ররূপ অবলোকন কর—ইহার মস্তক প্রতানাই, বক্ষাস্থলে একটা বৃহৎ মুখ, যোজন বিশুত বাহ-

যুগল দ্বারা যাহা সংখ্যাহ করে ভাহাই ভক্ষণ করিয়া এই বনে বাদ করিতেছে। আমুমুগু ইহার বাহুমুয়ের মধাস্থলে পতিত হইয়াছি। ছে রবুনন্দন ! রাক্ষ্দের বাত্রয় মধ্য হইছে নির্বাদনের অন্যপথ নাই, এক্ষণে আমরা কি করি, ছরাঝা এই দতেই আমাদিগকে ভক্ষণ করিবে।২।৩।৪।৫।৬। নাই, তাহার বাজ্যন্ন যোজন পরিমিত, ঐ সর্ক্ক প্রাণি হিংসক । । ৭। লক্ষ্মণ কহিলেন। হে রাঘব! আপনি এ বিষয়ে 💗 বিচার করিয়া বিলম্ব করিতেছেন? আমরা ছই জনে এক একটা করিলা রাক্ষদের বাহুযুগল ছেদ করি বিলম্ব করিবেন ন। ৮। রাম লক্ষাণের বাক্যে সন্মত হইয়া শাণিত থজা ঘারা রাক্ষ্যের দক্ষিণ হত্ত ছেদ করিলেন। লক্ষ্মণও তং ক্ষণাৎ তাহার বাম হস্ত ছেদ করিলেন। ৯। অনন্তর দৈভোক রাক্ষ্ম অতি বিশ্বয়াপর হইরা কহিল—ডোমাদিণের ত্র^ই জনের নাম কি? কোথা ইইতে বা আদিয়া আমার বাত্রী

ভকোহত্রবীদ্ধসম্মের রামো রাজীবলোচনঃ।

অবোধ্যাধিপতিঃ শ্রীমান্ রাজা দশরথোমহান্॥১১

রামোহহং তস্য পুজোহসৌ ভাতা মে লক্ষনঃ স্থবীঃ
মম ভার্য্যা জনকজা দীতা ত্রৈলোক্যস্থন্দরী॥১২॥

আবাং মৃগয়য়া যাতো তদা কেনাপি রক্ষনা।
নীতাং দীতাং বিচিম্বন্তো চাগতো ঘোরকাননে।১৩

বাজভ্যাং বেফিভাবত্র তব প্রাণরিরক্ষয়া।

ছিম্মে তব ভুজো ডং চ কো বা বিকটকপধৃক্?।

কবন্ধ উবাচ।

বন্যোহহং যদি রামস্ত্রমাগতোহসি মমান্তিকম্। পুরা গন্ধর্মরাজোহহং ৰূপযৌবনদর্পিতঃ।। ১৫।।

ভোলন করিলে। অভি আশ্চর্যোর বিষয় যে, দেবলোকে দেবভারা আমার বাহুছেদনে সমর্থ হন নাই, মইলোকে আমার
বাহুছেদনকারি বাক্তির সমাগম কি রূপে হইল!। ১০। অনঝর রাজীবলোচন রাম সহাস্য বদনে কহিলেন—আমরা
অলোধ্যাধিপতি মহারাজ দশরথের পুত্র, আমার নাম রাম, এই
স্তর্ত্তির লক্ষণ আমার কনিষ্ঠ ভাভা, ত্রৈলোক্য স্থলরী জনকনন্দিনী আমার ভার্যা। আমাদিগের সহিত বনে আদিয়াভিলেন। এক দিন আমরা তুইজনে মৃগরার্থ গমন ক্রিরাছিলাম, ঐ অবসরে কোন ভ্রামা রাক্ষস তাঁহাকে হরণ করিয়াছিলাম, ঐ অবসরে কোন ভ্রামা রাক্ষস তাঁহাকে হরণ করিয়াছিআমরা তাঁহার জবেষণ করিতে করিতে এই ঘোর বনে আদিমাছি। ১১। ১২। ১০। হে দৈতোল্ডে! আমরা জোমার বাহুমধ্য পতিত হইয়া প্রাণ রক্ষার্থ ভূদীর বাহুমুগল ছেদ করিয়াছি।
হে মহাবল। ভোমার বিকট রূপ দেখিয়া আমরা বিস্করাপর
ইইয়াছি প্রকণে নিজ্ব পরিচর প্রদান করিয়া আমাদিগের
অভিনায় পুরণ করে। ১৪।

কবন্ধ কহিল, ছে রাম! অদ্য তুমি আমার সন্ধে আদিয়া দর্শন দিয়াছ ইছাতে ধন্য হইলাম। আমার পূর্বে বৃত্তান্ত শ্রবণ কর, আমি গন্ধকদিণের রাজা, পূর্বকালে

বিচরন্ লোকমথিলং বরনারীমনোহরঃ।
তপসা অক্ষণো লকমবধ্যত্বং রঘূত্তম ! ।। ১৬ ॥
অফাবক্রং মুনিং দৃষ্টা কদাচিদহসং পুরা।
ক্রুদ্ধোহসাবাহ দুষ্টা হং রাক্ষসো ভব দুর্মতে ! । ১৭
অফাবক্রঃ পুনঃ প্রাহ্ বন্দিভো মে দয়াপরঃ।
সাপস্থান্তঞ্জ মে প্রাহ্ তপসা স্তোভিতপ্রভঃ ॥ ১৮॥
ত্তেতাযুগে দাশরথিভু তা নারায়ণঃ স্বরম্।
আগমিষ্যতি তে বাহু ছিদ্যেতে যোজনায়তো ॥১৯॥
তেন শাপাদ্বিনির্মুক্তো ভবিষ্যসি যথা পুরা।
ইতি শপ্তোহ্মদ্রাক্ষং রাক্ষসীং তন্মাত্মনঃ ॥ ২০
কদাচিদ্দেবরাজ্ঞানমভ্যদ্রবমহং রুষা।
সোহপি বজেণ মাং রাম ! শিরোদেশেইভ্যতাড্রহ

বরান্ধনা মনোহর রূপ ও যৌবন দর্পে মত্ত হইয়া সমস্ত লোক বিচরণ করিতাম। এবং তৎকালে কমল যোনি আমার ঘোরতর কঠিন তপদ্যার দম্ভট হইয়া আমাকে व्यवश्य दंत निश्च हिलन । ১৫ । ১৬ । (इ त्र पूनक्त ! এक मिन महाक्षेड्रांव छक्षीवक मुनिक (मिथ्रा) होमा क्रिया ছিলাম, মহাতপা অষ্টাবক্ৰ কুদ্ধ হইয়া আমাকে অভিসম্পাভ করিলেন—"রে তুর্মতে, তুই-সভাব! তুই রাক্ষদ হইয়া কালাতি• পাত কর্"। ১৭। আমি শাপ বাক্য শ্রবণ মাত্র ব্যাকুল হইয়া তপোধনকে বছবিধ বিনয় ও বন্দনাদি দারা পরিতৃষ্ট করিলাম। অনস্তর দরা বভাব সম্পর, তপং প্রদীপ্ত ৠবিবর আমাকে শাপান্ত সময় কহিলেন যে, "ত্রেভাযুগে ভগবান নারায়ণ দাশরথি রূপে স্বয়ং অবতীর্ণ ছইয়া এই স্থানে আগমন করিরা তোমার থোজন পরিমিত বাভ দর ছেদন করিবেন ; ভূমি সেই কালে পাপ হইতে মূক্ত ছইরা পূর্ব্বরূপ প্রাপ্ত হইবে।" মহর্ষি আমাকে এইরূপ কহিয়। অন্তর্হি ত হইবা-মাত্র আমি আপনাকে রাক্ষসাকৃতি দেখিতে লাগিলাম।

হে রঘুনদ্ন : এক দিন আমি কোধ পূর্বক রাকসরপে দেবরাজের অনুসরণ করিরাছিলাম। অনস্তর দেবরাজ কুছ তদা শিরো গতং কুকিং পাদে চ রঘুনদ্দন!।

ব্রহ্মদন্তবরান্মৃত্যুর্নাভূম্মে বজুতাড়নাৎ॥ ২২।।

মুখাভাবে কথং জীবেৎ ? অয়নিত্যমরাধিপম্।

উচু: দর্বে দয়াবিস্তা মাং বিলোক্যাম্ভবর্জিতম্॥ ২০
ততো মাং প্রাহ্ মঘবা জঠরে তে মুখং ভবেৎ।

বাহু তে যোজনাযামে ভবিষ্যত ইতো ব্রজ্ঞ ॥ ২৪
ইত্যক্তোহত্র বসমিত্যং বাজভ্যাং বনগোচরান্।
ভক্ষরাম্যধুনা বাহু খণ্ডিতো মে ব্রয়নঘ!॥ ২৫॥
ইতঃপরং মাং শ্বভাম্থে নিক্ষিপাগ্রীন্ধনারতে।

অধিনা দহুমানোহহং ড্য়া রঘুকুলোত্তম।॥ ২৬॥

হইয়া আমার মন্তকে বজ্রাখাত করিলেন, ঐ বজ্রায়াত দারা আমার মন্তক ও পাদবয় কুক্লিদেশে প্রবিষ্ট হইন, কেবল ব্রহ্ম-দক্ত বর প্রভাবে বক্সাবাতেও মৃত্যু হইল না। ১৮। ১৯। ২০। ২১।২২। আমাকে মুখরহিত দেখিলা সকল লোকেই দরা-প্রতন্ত্র হইয়া দেবরাজকে কছিল, হে দেবরাজ! এই রাক্ষ্য मुधवर्জिक इहेम्रा किम्नाल कीवनश्चित्र क्रित्र १।२०। अनस्वत (नवताक कहिलान, (इ द्राक्तन! (कामाद्रावक्रवक्रुशन मूथ अ বাস্তম্বর যোজন পরিমিত হইবে এক্ষণে গমন কর। ২৪। (ছ রাম! আমি দেবরাজ কর্তৃক এইরূপ অভিহিত হট্য়া তৎ-কালাবধি এই স্থানে বাস করিতেছি এবং বিস্তৃত বাছযুগল ঘারা বনা জন্ত সকল গ্রাহণ করিয়া ভক্ষণ করি ৷ একংশ ভোমা কর্তৃক আমার জীবন সাধন সেই বাছ যুগল খণ্ডিত ২টল। হে কঞ্লাময় ! বিলম্ব করিও না অতি সম্বর আমাকে वहछत्र कार्छमञ्भार्क (महीभागान भावत्कद्र खावल लिथा मभ्द স্থারত গর্ভমুথে নিকেপ কর। ছে রত্তম। তোমা কর্ত্ক অগ্নি খারা দত্ত চইলে আমি পূর্বারূপ প্রাপ্ত ইইয়া সীতার সকল বুক্তান্ত কহিব। রাক্ষম এইরূপ কহিয়া নিরুত্ত হইলে লক্ষাণ অতি শীজ্র একটা বৃহৎ গার্ত্ত মিশ্বাণ করিয়া তন্মধ্যে তাছাকে

পূর্বেরপমন্ত্রাপ্য ভার্যামার্গং বদামি তে।
ইত্যুক্তে লক্ষণেনাশু শ্বভং নির্মার তত্ত্ব তম্ ॥ ২৭॥
নিক্ষিপ্য প্রাদহৎকার্কৈস্ততো দেহাৎ সমুশ্বিতঃ।
কন্দর্পদদৃশাকার: সর্ব্বাভরণভূষিতঃ ॥ ২৮ ॥
রামং প্রদক্ষিণং কৃতা সান্তাঞ্চং প্রনিপত্য চ।
কৃতাঞ্জলিক্রবাচেদং ভক্তিগদ্রদয়া নিরা॥ ২৯ ॥
গন্ধর্ব উবাচ।

স্ত্রেমুৎসহতে মেইন্য মনো রামাতিসম্ভ্রমাৎ।

ত্বামনন্তমনাদ্যন্তং মনোবাচামগোচরম্॥ ৩০॥

স্ক্রমং তে ৰূপমব্যক্তং দ্বেহদ্বয়বিলক্ষণম্।

দ্ব্রুপমিতরৎ সর্বাং দৃশ্রুং জড়মনাত্মকম্।

তৎকথং ত্বাং বিজানীয়াদ্ ব্যতিরিক্তং মনঃ? প্রভো
বুদ্ধ্যাত্মান্তানয়োরক্যং জীব ইত্যভিধীয়তে।

বুদ্ধ্যাদিসাক্ষী ব্রক্ষৈব তম্মিলিক্ষিবয়েইখিলম্॥৩২॥

রাক্ষদের দেহ হইতে কলপ সদৃশ পরম স্থলর সর্ব্বাভরণ ভূষিত একটা পুক্ষ নির্গত হুইরা প্রীরামকে প্রদক্ষিণ করণা নস্তর সাফাঙ্গ প্রণিপাত করিয়া ক্রভাঞ্জাল পুটে ভজিগদান বাক্যে কহিল। ২৯। হে রাম! তোমাকে সর্বব্যাপী অনানি অনস্ত এবং বাক্য ও মনের অগোচর জানিয়াও আমার মন অভিশয় প্রীতি হেতু স্তব করিতে উৎসাছ করিতেছে। ৩০। ছে ভগবন্! সে সকল স্তব বাক্য বিফল মাত্র, ভোমার হিরণা গর্ভ মূর্ত্তি ও বিরাট মূর্ত্তি হুইতে বিভিন্ন যে জ্ঞান স্থরূপ সৃদ্ধ ঘ্যাবিদিগেরও ভূজের এতত্তিন্ন দুশা বস্তু মাত্রেই জড়পদার্থ, স্মৃতরাং ভোমা হইতে বিভিন্ন মন ভোমাকে কিরপে জানিবে। ৩১।

ক্ষতি শীজ্র একটা বৃহৎ গর্ত্ত নিশ্মাণ করিরা তন্মধ্যে তাছাকে চিত্ত এবং চিত্তে আন্ত প্রতিবিদ্ধ এই উভয়ের অভেদ জ্ঞান নিশ্বেপ পূর্বক কাঠ দারা দাছ করিতে লাগিলেন। অনন্তর বিষয় পদার্থ, জীব, এ জীব এই সমস্ত জড় পদার্থের সাক্ষী নছে। আরোপ্যতেইজানবশান্তিরিকারেইথিলাক্সনি।
হিরণাগর্ভন্তে স্কাং দেহং স্কুলং বিরাট্ স্ত্র্।
ভাবনাবিষয়ো রাম! স্কান্তে ধ্যাস্মঙ্গলম্।
ভূতং ভব্যং ভবিষ্যক্ত ষ্ত্রেদং দৃশ্যতে জগং॥ ৩৪॥
স্থ লেইগুকোশে দেহে তে মহদাদিভিরারতে।
সপ্তভিরুত্তরগুলৈঃ বৈরাজো ধারণাশ্রয়ঃ॥ ৩৫॥
ভূমেব স্ক্রিকবল্যং লোকান্তেইব্রবাঃ স্মৃতাঃ।
পাতালং তে পাদমূলং পৃাক্ষি স্তব মহাতলম্॥৩৬॥

🖶দ্দ চৈতন্য স্থানপ এক্ষপদার্থই সমস্ত জ্বড় জগতের সাকী ও ও অন্তর্থামী, বেহেতু বাল্পনের অগোচর সেই ত্রহ্ম পদার্থে এই দমস্ত বিশ্বাণ্ড অবস্থান করিতেছে, হে রঘুনন্দন! মন্নুষ্যেরা আপনাকে সেই নির্বিকার সর্বস্থিরণ ব্রহ্মপদার্থ জ্ঞানিয়া আপনাতে অজ্ঞানবশত: সমস্ত লিঙ্গদেহ সমষ্টিরপ হিরণ্য গর্ভ স্তির ও স্লুল দেহ সম**ন্তিরপ** বিরা**ট্**মূর্তির আবোপ করিয়া থাকে।৩২।৩৩। হে রাম! আপুনি নিশ্চিত্ত নহেন যে তেতু আপনার স্বরণকারি ব্যক্তিদিগের স্থপদ প্রদানরূপ মঙ্গল চিন্তা আপশনার সদয় পুগুরীকে দর্বদা জাগরণ করিতেছে, ভূত ভবিষ্যৎ, বর্তমান সমস্ত পদার্থও ঐ চিন্তার বিষয়। ৩৪। হে ভগবন্! আপনার মহত্তত্ত্বিরুত স্কুলতম বিরাজ দেহে বিষধারণা শক্তি আ'চে, হে জগদীর্যর! আপনিই সকলের মৃক্তি দাতা এই সমস্ত লোক আপনার বিরাড মূর্ত্তিরই অবয়বে বাস করিতেছে, যে হেতু পাতাল ঐ দেহের পাদমূলে, মহাতল পাফি দেশে, গুল্ফদ্বের রসাতল, এবং গুল্কোর্ক জানুর অধোভাগে তলাতল, জামুদ্বয়ে সুতল, উক যুগলে বিতল, উক দেশের উদ্ধিত্তঘনের অধোভাগে অতল। হে রাম! এই প্ থিবী ঐ দেছের জন ঘন দেশে আছে, ভূবর্ট লাক নাভিদেশে, উत्रः ऋल्ल अर्गत्नाक, अवः धीवात्तरम मक्तमीक। एक त्रश्-নন্দন! ঐ দেহের মুখমগুলে জনলোক, তপোলোক ললাট-দেশে। হে প্রভো! ঐ দেছের মন্তকে সভ্যালাক আছে। ে রঘ্শ্রেষ্ঠ ! ইশ্রাদি লোকপালগণ আপনার বাভদেশে বাস

রসাতলত্তে গুল্ফো তু তলাতলমিতীর্যতে। কান্থনী হতলং রাম ! উরু তে বিতলং তথা॥ ৩৭॥ অতলঞ্মহী রাম! জঘনং নাতিগং নতঃ। উরস্থলত্তে জ্যোতীংধি গ্রীবা তে মহ উচ্যতে ॥৬৮॥ বদনং জনলোকস্তে তপত্তে শঙ্খদেশগম্। সত্যলোকো রঘুশ্রেষ্ঠ ! শীর্ষণ্যান্তে সদা প্রভো ! ॥ इन्द्राम्या लाकंशांना वाह्वस्य मिनः क्रिजी। অখিনৌ নাদিকে রাম! বক্তুন্তেইগ্লিকদাহ্নত: ॥৪০ চক্ষুত্তে সবিতা রাম ! মনশ্চন্দ্র উদাহ্বতঃ। জুভঙ্গ এব কালন্তে বুদ্ধিন্তে বাক্পতির্ভবেৎ॥ ৪১ ক্রটোইক্ষার্রপত্তে বাচশ্চন্দাং मি তেহব্যয় !। যমন্তে দংফ্রদেশস্থো নক্ষতাণি দ্বিকালয়ঃ॥ ৪২ ॥ হাসে। মোহকরী যায়া সৃষ্টিন্তেইপাঙ্কমোক্ষণম্। धर्माः भूतत्खर्धम्मक भृष्ठे जाग উनी तिष्ठः ॥ ८० ॥ निमित्यात्यायत्व ताजिनिता देवत त्रघृष्ट्य !। সমুদ্রাঃ সপ্ত তে কুক্ষি নাড্যো নস্তস্তব প্রভো!।।৪৪

করিতেছেন এবং কর্ণ্যলে দশদিক, অধিনীকুমার নাসিকাছয়ে, অধি বক্তুমধ্যে, চক্ষ্ হয়ে স্থ্য, মনে চন্দ্র এবং জভন্ধ মধ্যে নিমিষাদি কাল, বুদ্ধিতে রহস্পতি, এবং অহলারে কন্দ্র বাস করিতেছেন। বাক্যে ছলগাণ অর্থাং বেদসকল। হে রাম! ঐ দেহের দশনের মূলদেশে রভান্ত আছেন, এবং দন্তমধ্যে নক্ষ্ত্রগণ বাস করিতেছেন। হে ভগবন্! ঐ দেহের হাল্যে সর্ব্রমোহকরী মারা আছে, এবং নয়নাপালে স্কি, সন্মুথে ধর্ম, পল্টাস্থাগো অধর্ম, এবং নয়নের নিমিষে রাত্রি, উন্ধীলনে দিবা। হে রঘুনন্দন! সপ্তসমুদ্র ঐ দেহের কুন্দিদেশে, নদী সকল নাড়ীমধ্যে; এবং ঐ দেহের রোম সকল রক্ষ ও এবং,

রোমাণি রক্ষেষধয়ো রেতো র্টিস্তব প্রতা! ।
মহিমা জ্ঞানশক্তিতে এবং স্থূলং বপুস্তব।। ৪৫ ॥
য়নিমিং স্থূলৰূপে তে মনঃ সংধার্যতে নবৈঃ।
য়নায়ানেন মুক্তিঃ স্থাদতোহন্যমহি কিঞ্চন।। ৪৬ ॥
আতোহহং রাম! ৰূপতে স্থূলমেবামুন্তাবয়ে।
য়ন্মিন্ধাতে প্রেমরুয়ঃ সরোমপুলকো ভবেৎ ॥৪৭॥
তদৈব মুক্তিঃ স্থাদাম! য়দা তে স্থূলভাবকঃ।
তদপ্যান্তাং তবৈবাহমেতজ্পং বিচিন্তয়ে॥ ৪৮ ॥
ধনুর্মাণধরং স্থামং জ্ঞাবিক্সল্থাবিতম্।
য়পীব্যবয়ৢসং দীতাং বিচিন্তয়ং সলক্ষ্মণম্॥ ৪৯ ॥
ইন্মেব সদা মে স্থান্মান্সে রঘুনন্দন!।
সর্বজ্ঞঃ শক্ষরঃ সাক্ষাৎপার্বত্যা সহিতঃ সদা ॥৫০।

তজ্ঞপনেবং সততং ধ্যায়ন্নান্তে রঘূত্তম !।

মুমূর্ বাং সদা কাঞ্চাং তারকং ব্রহ্মবাচকম্ ॥ ৫১ ॥
রাম রামেত্যুপদিশন্ সদা সন্তুইমানসং ।

অতত্ত্বং জানকীনাথ ! পরমাত্মা স্থুনিশ্চিতঃ ॥ ৫২॥

সর্ব্বে তে মার্য়া মূঢ়াস্তাং ন জানন্তি তত্ত্বতঃ ।

নমস্তে রামভন্রায় বেধদে পরমাত্মনে ॥ ৫৩ ॥

অব্যোধ্যাধিপতে ! তুভ্যং নমঃ সৌমিব্রিসেবিত !

বাহি ব্রাহি জগন্নাথ ! মাং মারা নার্বোতু তে ॥ ৫৪

রাম উবাচ ।

তুটোংহং দেবগন্ধর্ক। ভক্তা স্তত্যা চ তেইনরা। যাহি যে পরমং স্থানং যোগিগম্যং সনাতনম্।।৫৫

লক্ষ্মণের সহিত আমার হৃদয়ে সর্বদা জাগরিত হউক। হে রঘুনন্দন! সর্বজ্ঞানী ভূত ভাবন ভবানীপতি ভবানীর সহিত মিলিত হইয়া সর্কাদা আপনার এই রামরূপ ভাবনা করিতেছেন এবং কাশীক্ষেত্রে মুদূর্য ব্যক্তির কর্ণবিবরে ব্রহ্ণ-বাচক রাম নাম স্বরূপ তারক মন্ত্র উপদেশ করিয়া প্রমানন্দ্ লাভ করিতেছেন। হে জানকীনাথ! এই সকল কারণে আপনাকে পরমাঝা বলিয়া আমি নিশ্চয় করিয়াছি, মূঢ়-ব্যক্তিরা আপনার বিশ্বমোহিনী মারার মুগ্ধ হইরা আপ-নাকে জানিতে পারে না। হে অযোধ্যাপতে! আপনি স্টিকর্ত্তা পরমেশ্বর, আপনার সৌমিত্তি সেবিত রামরূপকে নমক্ষার করি। হে জগন্নাথ! আমাকে রক্ষা করুন, আপনার मर्कालाक दर्भाहिनी भाता आभारक आवत्र ना करत्र । 8 छ। 8 छ। । ৫०। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। तामहत्त्व कहित्नम, (ह शक्तर्य-রাজ! আমি তোমার এইরূপ ভক্তি এবং শুব বাকাদ্বারা সন্তফী হইলাম। এক্ষণে তৃষি আমার সেই নিত্য পরম ধামে গমন কর, যাহা যোগিশাণ বহুতর তপদ্যা হারা লাভ করিয়া

জগন্তি যে নিত্যমনন্যবুধ্যা ভক্ত্যা তৃদুক্তং স্তবমাগমোক্তম্ ্তেহজ্ঞানসমূতভবং বিহায় মাং যান্তি নিত্যামুভবান্থমেরম্। ৫৬।।
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
ত্মরণ্যকাণ্ডে নবমোহধ্যায়ঃ।

জয়লীভ করিয়া অজ্ঞানজনিত সংসার বন্ধন পরিত্যাগ পূর্বক অন্তকালে আমাকে প্রাপ্ত হয়। ৫৬।

খাকে। ৫৫। হে জ্ঞানিবর! যে সকল ব্যক্তি অনন্যমনে ভক্তিপূর্বক ত্বংক্ত শুব গাঁচ করে, তাহারা ইহলোকে সর্বত্ত ইতিশ্রীমনধ্যাত্ম রামায়ণে উমামছেশ্বর সন্থাদে অরণ্যকাণে নবমোহধ্যায়ঃ।

मगटमा ३ था स

লক্ষ্য বরং স গন্ধবিঃ প্রয়াশুন্ রামমত্রবীৎ।
শবর্ষান্তে পুরোভাগে আশ্রমে রঘুনন্দন ! ॥১॥
ভক্তাা স্বৎপাদকমলে ভক্তিমার্গবিশারদা।
তাং প্রয়াহি মহাভাগ! সর্বাং তে কথ্যিষ্যতি ॥ ২॥
ইত্যুক্ত্বা প্রথমো সোহপি বিমানেনার্ক্বর্চসা।
বিষ্ণোঃ পদং রামনামন্মরণে কলমীদৃশম্॥ ৩॥

ত্যক্তবা তদ্বিপিনং ঘোরং সিংহব্যান্তাদিদ্বিত্র শনৈর্থাশ্রমপদং শবর্ষ্যা রঘুনন্দনঃ॥ ৪॥ শবরী রামমালোক্য লক্ষণেন সমস্থিতম্। আয়ান্তমারাদ্ধর্যে প্রভুগ্রােয়াচিরেণ সা॥ ৫ ॥

গন্ধর্বাজ শ্রীরামের নিকট বরণাভ করিয়া গমন করিতেই শ্রীরামকে কহিলেন ছে রঘুমন্দন! ভক্তিমার্গানুসারিণী শবরী নাম্মী ভাপদী আপনার পাদপদ্মে ভক্তি দহকারে মনোনিবেশ করিয়া সন্মুখবর্তী আশ্রমে বাদ করিতেছেন। ১। আপনি তাঁহার নিকট গমন কন্ধন, তিনি দীতা বুক্তান্ত সমস্তই আপ-নার নিকট সবিস্তবে ব্যক্ত করিবেন। ২। গন্ধর্বরাজ শ্রীরামকে এইসকল রকান্ত কহিয়া স্থাসদৃশ সমুজ্জন বিমানে আরোছণ পূর্বক বৈকৃতধামে গমন করিলেন। মনুষ্যের।
রাম নাম স্মরণ করিলে অনায়াসে এইরপ ফল লাভ
করিতে পারে। ৩। অনস্তর রঘুনলন লক্ষণের সহিত সিংছ
ব্যান্তানি দ্বিত সেই ভয়ন্তর বন পরিত্যাগ করির। মৃত্ব মন্দ
গমনে শবরীর আশ্রমে উপস্থিত হইলেন। ৪। ভক্তিপরারণ।
শবরী লক্ষ্যণের সহিত শ্রীরাম্কে সমাগত দেখিয়া সহসা
সাদ্রে গাভোখানানন্তর শ্রীরাম্বে পাদ্ধুগলে পতিত হইলেন।

প্রতিষ্যা পাদরোর থ্রে হর্ষপূর্ণাশ্রুলোরনা।
স্থাগতেনা ভিনন্দ্যাথ স্থাননে সংন্যবেশয়ৎ ॥ ৬॥
রামলন্দ্রণয়োঃ সম্যক্ পাদে প্রক্ষাল্য ভক্তিতঃ।
তক্ষলেনা ভিষিত্যাক্ষম থার্ঘ্যাদি ভিরাদৃতা ॥ ৭ ॥ '
সম্পূল্য বিধিব জামং সম্প্রিমিত্রি সপর্যায়া।
সংগৃহীতানি দিব্যানি রামার্থং শবরী মুদা ॥ ৮ ॥
কলা ন্যমৃতক প্রানি দদে রামায় ভক্তিতঃ।
পাদে সংপূল্য কুসুমেঃ সুগদ্মৈঃ সামুলেপনৈঃ॥৯
কভাতিথ্যং রঘুশ্রেষ্ঠমুপবিষ্ঠং সহান্ত্রন্ম।
শবরী ভক্তিসম্পন্না প্রাঞ্জনির্কাক্যমন্ত্রবীৎ॥ ১০॥
ভাত্রাশ্রমে রঘুশ্রেষ্ঠ। গুরবো মে মহর্ষয়ঃ।
স্থিতাঃ শুশ্রমণং তেষাং কুর্কন্তী সমুপস্থিতা॥ ১১

৫ । এবং আনন্দাক্ষ পূর্ণ লোচনে আগাত সম্ভাষণানন্তর রাম
এ লক্ষ্মণকে উত্তমাসনে উপবেশন করাইরা ভক্তি পূর্ব্বক
ভাছাদের পাদ প্রক্ষালন করিয়া দিলেন। অনন্তর শবরী
রাম লক্ষ্মণের পাদ প্রক্ষালন জল দ্বারা নিজ্ঞ সর্ব্বাঙ্গ অভি
বিক্তা করিয়া অর্থাদি দ্বারা যগাবিধি উভয়ের পূজা করিলেন, এবং তপঃ প্রভাবে জীরামের ভবিষাদাগমন জানিতে
পারিয়া যে সকল অমৃত তুল্য কল সঞ্চয় করিয়া ছিলেন
ভাছাও জীরামকে ভক্তি পূর্ব্বক প্রদান করিয়া স্থগন্ধ ও চন্দন
মিশ্রিত নানাবিধ কুসুম দ্বারা জীরামের পাদ পূজন পূর্ব্বক
আভিথা করিলেন, জীরামও আতিথা স্থীকার করিয়া লক্ষ্মণের
সহিত সেই আশ্রমে অবন্ধিতি করিলেন।

অনম্ভর ভক্তিমতী শবরী ক্রাঞ্জল হট্যা জীরামকে ক্রিলেন।৬:৭৮।৯১০। ছে রঘুলেন্ত! পূর্বকালে এই আগ্রমে আগার পরম ওক মহর্ষিণণ বাস করিতেন, আগনি তাঁহাদিণের দ্বোব নিমিত্ত এই ভানে উপস্থিত ছিলাম।১১। সহর্ষিণণ এই

বছবর্ষসহস্রাণি গতান্তে ব্রহ্মণঃ পদম্।
গমিষ্যভোহকবন্ধাং তং বদাকৈব দমাহিতা ॥ ১২ ॥
রাম্যে দাশরথর্জাতঃ পরমাত্মা দনাতনঃ।
রাক্ষ্যানাং বধার্থায় ঋষীণাং রক্ষণার চ ॥ ১৩ ॥
আগমিষ্যতি চৈকাগ্রধ্যাননিষ্ঠা ছিরা ভব।
ইদানীং চিত্রকূটাজাবাশ্রমে বদতি প্রভুঃ ॥ ১৪ ॥
যাবদাগমনং ভস্ক ভাবদ্রক্ষ কলেবরম্।
দৃষ্ট্যেব রাঘ্বং দক্ষ্যা দেহং যাদ্যদি তৎপদম্ ॥১৫॥
তবৈধ্যাকরবং রাম ! ত্বন্ধানৈকপরায়ণা।
প্রতীক্ষ্যাগমনং তেহন্ত দকলং গুরুভাষিত্ম ॥১৬॥
তব দক্ষানং রাম ! গুরুণানিক্ষি মে নহি।
মোধিমানাহপ্রমাত্মন্ ! হীনজাতিসমুদ্ধা ॥ ১৭ ॥

হানে বহু সহস্র বর্ষ বাস করিয়া ব্রহ্মলোক গমন করিয়া-ছেন, গমন কালে তাঁহারা আমাকে এই আদেশ করিয়াছিলেন যে, "বংদে! তুমি সমাধি অবলম্বন করিয়া এই স্থানেই বাদ কর।১২। সনাতন প্রমান্ম।রাক্ষ্য কুলের বিনাশ ও ঋষিগাণের রক্ষার নিমিত্ত দশরথের পুত্র চইয়া জন্ম গ্রেছণ করিয়াছেন . তিনি সহর এম্থানে আগমন করিবেন, তুমি স্থির চিত্তে ধ্যানা বলম্বন করিয়া সেই বিষ্ণুর সমাগমন প্রতীক্ষা কর। এক্ষণে সেই প্রভু চিত্রকৃট পর্বভের আশ্রমে বাস করিতেছেন। ১৩। ১৪। যে কাল পর্যান্ত ভগবান্ এক্সানে না আসিবেন ভাবং কাল শ্রীর ধারণ কর, ভাগবানকে স্মাগ্রভ দেখিবা মাত্র कानन मध्या निका एम्स नम्रा कतिया विक्रूथाम देवकूर्थ शमन করিবে''। ২৫। ছেরাম! আমি ভোমার শারণ মাত্র অব-লম্বন করিয়া গুরুপদেশানুসারে ভোমার আগমন প্রতীকা করিতেছি, এক্ষণে গুরুষাকা সফল হইল।১৬। হে ভগবন্! আমার গুৰুগণও আপনার দর্শন লাভ করিতে পারেন নাই, হে অপ্রয়োক্তর ! আমি অতি মৃঢ়া ক্রীজাতি এবং হীন কুল-সম্ভবা, আপুনার দাসের শভ সংখ্যোত্তর দাসের দাসীৎ

তব দাসক্ত দাসানাং শতসঙ্গোন্তর্ন্য বা।
দাসীত্বনাধিকারোংক্তি কুতঃ সাক্ষান্তবৈব হি ॥১৮
কথং রামান্ত মে দৃষ্টন্তং মনোবাগগোচরঃ।
ভোতুংন জানে দেবেশ! কিং করোমি? প্রাণীদ মে
শ্রীরাম উবাচ।

পুংস্থে দ্বীতে বিশেষে। বা জাতিনামাশ্রমাদয়ঃ।
ন কারণং মন্তজনে শক্তিরেব হি কারণম্॥ ২০॥
যদজ্জানতপোভির্বা বেদাধ্যয়নকর্মাভিঃ।
নৈব জন্তু মহং শক্যো মন্তক্তিবিমুখৈঃ দদা॥ ২১॥
তশাস্তামিনি! সংক্ষেপাদক্ষ্যেহং ভক্তিদাধনম্।
সতাং দক্ষতিরেবাত্র সাধনং প্রথমং স্মৃতম্॥ ২২॥

কার্য্যেও অধিকারী নহি, অভএব আপনার দর্শন আমার পক্ষে
নিভান্ত অসন্তব। ১৭। ১৮। ছে দাশরথে। আসনি বাজ্যানর
অগোচর পদার্থ—তবে কিরুপে আমি আপনার দর্শন লাভ
করিলাম। ছে দেবদেব। আমি কিছুই জানিনা কি তব
করিব, আপনি নিজ্ঞণে আনার প্রতি প্রসার ইউন। ১৯।

জীরাম কহিলেন, হে বংসে। জী জাতি বা পুরুষ, সজ্জাতি বা অসক্ষাতি, প্রসিদ্ধ বা অপ্রসিদ্ধ নামা, উভমাশ্রমাবলম্বী বা অধমাশ্রমাবলম্বী হউক, ভক্তি থাকিলেই আমার ভক্তনে অধিকারী হউতে পারে, আমার ঐ সকল বাক্তিতেই সমজান আছে। ২০। হে তাপিনি! মন্তক্তি বিমুথ ব্যক্তিরা যক্ত, দান, তপ্রসা, ও বেদ বিহিত কন্মাম্মষ্ঠান করিলেও কথন আমার দর্শন লাভ করিতে পারে না ।২১। হে ভামিনি! সেই হেতু মন্তক্তির উপার ভামার নিকট সংক্ষেপে ব্যক্ত করি শ্রবণ কর।—

न्दम् मख्डित अथम छेशात-मक्षति विवस दामात्रशानि

বিতীয়ং মংকথালাপশুতীয়ং মদ্গুণেরণম্।
ব্যাখ্যাতৃত্বং মদ্বনাং চতুর্বং সাধনং ভবেৎ ॥ ২০॥
আচার্যোপাসনং ভব্রে ! মদ্ব্ধ্যানায়য়া সদা ।
পঞ্চমং পুণুলীলত্বং ব্যাদিনিয়মাদি চ ॥ ২৪ ॥
নিষ্ঠা মংপূজনে নিত্যং বর্ষং সাধনমীরিতম্ ।
নম মস্ত্রোপাসকত্বং সাঙ্গং সপ্তমমূচ্যতে ॥ ২৫ ॥
নহজেদ্ধিকা পূজা সর্বভূতেদু মন্মতিঃ ।
বাহার্যের্যু বিরাগিত্বং শুমাদিসহিত্বং তথা ॥ ২৬।
অক্টমং নবমং তত্ত্ববিচারো মম ভামিনি ! ।
এবং নববিধা ভক্তিসাধনং যদ্য কদ্য বা । ২৭ ॥
ক্রিয়ো বা পুরুষদ্যাপি তির্যাগ্রোনিগত্ম্য বা ।
ভক্তিঃ সঞ্জায়তে প্রেমলক্ষণা শুভলক্ষণে ! । ২৮॥
ভক্তিঃ সঞ্জায়তে প্রেমলক্ষণা শুভলক্ষণে ! । ২৮॥
ভক্তে সঞ্জাত্মাত্রায়াং মন্তত্ত্বানুভবন্তথা ।
মমান্ত্রবিদ্ধন্য মুক্তিস্তান্ত্রের জন্মিনি ॥ ২৯ ॥
মমান্ত্রবিদ্ধন্য মুক্তিস্তান্ত্রের জন্মিনি ॥ ২৯ ॥

চর্চ্চা দিতীয় উপায়—মদ্গুণ কাঁপ্তন তৃতীয় উপায়—মচ্চরিত প্রকাশক উপনিষ্ট্রাথ্যা চতুর্থ উপায়—এবং অকপটে গুরুতে ইশ্বর বৃদ্ধিপূর্বক আচার্যোপাসনা পঞ্চম উপায়—পবিত্র স্বভাব ও যম আসন, প্রাণায়াম, প্রভ্যাহার নিয়ম, ধ্যান, ধারণা, সমাধি এবং প্রতিদিন মং পূজনে তৎপরতা এই কয়েকটা মন্তক্তির বই উপায়—আমার মন্ত্রোপাসনা সপ্তম উপায় এবং মন্তক্ত জনের পূজা, সর্বাভূতে ইশ্বর বৃদ্ধি, বাহ্য হস্ততে বৈরাগ্য ও অক্তরেন্দ্রিয় নিগ্রহ, বহিরেন্দ্রিয় নিগ্রহ এই কএকটা অক্টম উপায়—ভদ্মান খেড কেতো এই সকল বাব্য দার্থ ব্রহ্ম উপায়—ভদ্মান খেড কেতো এই সকল বাব্য দার্থ ব্রহ্ম তত্ত্ব নিরূপণ মন্তক্তির নবম উপায়—হে শুভলক্ষণে! জীপুক্র বা তির্বাগ্রোনিগত যে কোন ব্যক্তির এই নববিধ ভক্তি সাধ্য সম্পন্ন হইলে আমাতে প্রেম লক্ষণা ভক্তি উৎপন্ন হয়। ২২। ২০। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ভক্তি উৎপন্ন হইলেই ব্রহ্ম হন্ধ নিরূপণ হয়, তন্ধ নিরূপণ হন্থলে ভাহারণ এই

স্যান্তস্মাৎকারণং ভক্তির্মোক্ষস্যেতি স্থানিশ্চিত্র। প্রথমং সাধনং যস্য ভবেত্তস্য ক্রমেণ তু॥ ৬০॥ ভবেৎ সর্বাং ততো ভক্তিমুক্তিরের স্থানিশ্চিত্র। যম্মান্মন্তক্তিযুক্তা ত্বং ততোংহং তামুপস্থিতঃ।। ৩১ ইতো মর্দর্শনামুক্তিত্তর নাস্ত্যন্ত সংশয়ঃ। যদি জানাসি মে ক্রহি সীতা কমললোচনা।। ৩২। কুত্রান্তে কেন বা নীতা প্রিয়া মে প্রিয়দর্শনা ?।৩৩ শবর্য্যুবাচ।

দেব ! জানাদি সর্ব্বক্ত সর্বাং ত্বং বিশ্বভাবন !!
তথাপি পৃচ্ছেদে যশ্মাং লোকাননুসূতঃ প্রভো!।।৩৪
ততোইহুমভিধাস্যামি সীতা তত্তাধুনা স্থিতা।
রাবণেন স্থাতা দীতা লক্ষারাং বর্ত্তেইধুনা।।৩৫।

জন্মে মৃক্তি লাভ করিতে পারে, জন্ম জন্মান্তর প্রতীক্ষা করিতে হর না। ২৯।

হে ভামিনি! দেই হেতু ভক্তিই মুর্জির একমাত্র কারণ নিশ্চয় জানিবে, যে সকল ব্যক্তি দিগের প্রথম ভক্তি সাধন ঘটনা হয়, ক্রমশঃ তাহাদিগের অবশিষ্ট উপার সকল সম্পন্ন হইয়া থাকে, স্তরাং তাহারা ভক্তি ও তদনন্তর মুক্তি নিশ্চয় লাভ করিতে পারে। হে ভক্তে! যেহেতু তোমার আমাতে প্রকান্তিক ভক্তি জন্মিয়াছে, সেই হেতু আমি স্বয়ং এ স্থানে উপস্থিত হইয়া তোমার নয়ন গোচর হইলাম। ৩০। ৩১। আমার এই দশনেই ভোমার নিশ্চয় মুক্তি লাভ হইবে, সম্প্রতি আমার কমল লোচনা সীভা কোন স্থানে আছেন—প্রিয়দর্শনা প্রিয়াকে কোন্ য়য়ায়াই বা হরণ করিল, মদি তুমি এ বিষয় কিছু স্বব্রত থাক তবে আমার নিকট ব্যক্ত কর। ৩২। ৩০। শবরী কহিলেন—হে প্রভো! হে দেব ! হে বিশ্বভাবন! আপনি সর্মজ্ঞ—সকলই জানেন—তথাপি লোক ব্যবহারক্রমারী হইয়া আমাকে এবিষয় যদি জিজ্ঞাসা করিলেন, স্বতরাং বলিতে হইল, হে ভগবন্! রাক্রেরর রাবণ সীভাকে হরণ করিয়াছে এক্লণে

ইতঃ সমীপে রামান্তে পশানাম সরোবরম্। প্রায়মুকগিরিনাম তৎসমীপে মহানগঃ। ৩৬।।
চতুর্ভিমন্ত্রিভিঃ সার্কং স্কুঞীবো বানরাধিপঃ।
ভীতভীতঃ সদা তত্র ভিষ্ঠত্যতুলবিক্রমঃ॥ ৩৭॥
বালিনশ্চ ভয়াদ্রাতুক্তদগম্যমুবের্ভয়াৎ।
বালিনক্তর গচ্ছ তং তেন সখ্যং কুরু প্রভো!॥৩৮
স্কুঞীবের্ণ স সর্কং তে কার্য্যং সম্পাদয়িষ্যতি।
অহমিয়িং প্রবেক্ষ্যামি ত্রাগ্রে রঘুনক্ষন!॥৩৯।
মুহূর্ত্তং তিষ্ঠ রাক্তেন্দ্র! বাবদগ্ধা কলেবরম্।
गাস্থামি ভগবল্লাম তব বিক্ষোঃ পরং পদম্॥৪০॥
ইতি রামং সমামন্ত্রা প্রবিবেশ ছতাশনম্।
ক্ষণায়িধূর সকলমবিস্তাক্তবন্ধনম্॥ ৪১॥

তিনি লম্বায় অবস্থিতি করিতেছেন। ৩৪ ।৩৫। হে রাম ! এই স্থানের অনভিদূরে পম্পানামক সরোবর আছে ঐ পম্পা সমীপে ঋষামৃক নামক মহাপর্বত-এপর্বতে মহাবল পরাক্রম বানর রাজ অতি ভীত হইরা চারিজন মন্ত্রির সহিত বাস করি তেছেন। বানর রাজ জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা বালি কর্কুক পরাজিভ ও ছত দক্ষি হইয়া তাঁহার ভয়ে যে ঋষামূক পর্কভ আত্রয় করিয়াছেন এ ঋষামূক পর্মত বালির অগম্য স্থান, যেছেড় বালি ওস্থানে আগমন করিলে ভূতপূর্বে মহর্ষি শাপ নবীভূত इरेज़ा कलवान इरेट्य। अक्टल आंश्रीन (मरे क्यांटन गमन করিয়া বানর রাজ স্থ্রীবের সহিত স্থা করুন, তিনি আপনার অভিলয়িত সমস্ত কার্য্য সম্পাদন করিবেন। ছে রঘুনন্দন! यावर कान जामि जानमात्र मश्रुर्थ जाश्च अरवन भूकं শदीत मध कदिया रेक्क्र थाटम शमन ना कदि, दमरे मूह्र्ड কাল এ স্থানে আপনি অবস্থিতি করুন। ৩৬।৩৭।৩৮। । ৩৯। ৪০। শ্বরী জীরামচন্দ্রের সহিত এইরপ স্প্রারণা खत्र अधि अदिभ कतिहा क्ल कारनत्र मरश्र अविना अनिज मश्मात वामना পরিত্যাগ পূর্বক জীরামের

রামপ্রসাদাচ্ছবরী মোক্ষং প্রাপাতি দুর্ল ভম্।
কিং তুর্লভং জগরাথে শ্রীরামে ভক্তবৎদলে।
প্রসন্মেহধমজন্মাপি শবরী মুক্তিমাপ সা। ৪২॥
কিং পুনর্রাহ্মণা মুখ্যাঃ পুণ্যাঃ শ্রীরামচিন্তকাঃ।
মুক্তিং যান্তীতি ভদ্যক্তিমুক্তিরেব ন সংশয়ঃ॥৪৩॥
ভক্তিমুক্তিবিধায়িনী ভগবতঃ শ্রীরামচন্দ্রন্থ হো!।

অতি তুর্ল যুক্তি লাভ করিলেন । ৪০ । ভক্ত বংসল ।

ভগরাধ জীরামচন্দ্র প্রদান হইলে জগতে কি কোন বস্তু তুর্ল ভ

চইতে পারে ? দেখ নীচকুল সম্ভবা শবরীও শ্রীরাম প্রসাদে

অভি গুর্ল ভ মুক্তিপদ লাভ করিল । শ্রীরামোপাসক পুণ্যশীল

প্রেশান বংশসমূত ব্যাহ্মণের। যে মুক্তিলাভ করিবে ভাহাভে

সন্দেহ কি ? যেহেতু জীরাম ভক্তিই মুক্তির সাধন । ৪২ । ৪৩ ।

৫২ সাব্ধাণ ! এই জগতে রাম ভক্তিই মোক্ষের একমাত্র

লোকাঃ কামদুঘাং দ্বিপদ্মযুগলং সেবধমত্যুৎস্কাঃ
নানাজানবিশেষমন্ত্ৰিত্তিং ত্যক্তা স্থুদূরে ভূশম্।
রামং শ্রামতনুং স্মরারিহ্নদয়ে ভান্তং ভঙ্গধং বুধাঃ

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে
দশ্মোহধ্যায়ঃ।

উপায়। অতএব তোমরা সকলে যত্নের সহিত অভীষ্টপ্রদ শ্রীরামচন্দ্র-চরণারবিন্দযুগল সেবা কর। হে পণ্ডিতগণ! যাগ সজ্ঞাদি মন্ত্র সকল পরিভ্যাগ করিয়া কেবল মহাদেবের হৃদয়রত্ব স্ক্রপ নবদ্ধ্বাদলশ্রাম রামরূপ অনবরত ভাবনধ কর, তাহা ইইলে অবশ্য মুক্তি লাভ হইবে।৪৪।

ইভি জীমদধ্যাস্থার শাস্ত্র উমামহেশ্বর সম্বাদে অর্ণ্যকাতে দশ্রোহধাবিঃ 1

ইতি জীমদধ্যীরবামায়ণে অরণ্যকাণ্ডঃ সমাওঃ।

कि कि क्या को ७ म्।

প্রথমোহধ্যায়ঃ

শ্রমহাদেব উবাচ।

ততঃ সলক্ষণো রামঃ শনৈঃ পশ্পাদরস্ত টম্।
ভাগত্য সরসাং শ্রেষ্ঠং দৃষ্ট্য বিশ্বয়মাযথে ॥ > ॥
ক্রোশমাত্রং স্থবিন্তীর্ণমগাধামলশম্বরম্।
উৎফুল্লাম্ব ক্রকজ্ঞারকুমুদোৎপলম গুতম্।। > ॥
হংসকারগুবাকীর্ণং চক্রবাকাদিশোভিতম্।
জলকুকুটকোয়ন্তিক্রোঞ্চনাদোপনাদিতম্।। ৩ ॥
নানাপুপ্পলতাকীর্ণং নানাফলসমার্ভম্।
সতাং মনঃ স্বচ্ছজ্লং পদ্মকিংজ্ক্রবাসিত্ম্॥ ৪ ॥
ভত্রোপস্পৃশ্ত সলিলং পীড়া শ্রমহরং বিভুঃ।
সানুজঃ সরস্জীরে শীতলেন পথা যথে ॥ ৫ ॥

অনস্তর রাম ও লক্ষ্মণ ধীরে ধীরে পাল্পা সরোবর ভীরে
গমন পূর্বক ভাছার অরপম শোভা সন্দর্শন করিয়া অতিমাত্র
বিশ্বিত ছইলেন। সেই সরোবর কোশ পরিমাণে বিস্তীর্ণ;
ভাহার সলিল অগাধ ও অতীব নির্মাণ; ভাছাতে কমল,
কুম্ন, কহলার প্রস্তৃতি কুম্ম সকল বিক্লিভ থাকার অপূর্ব শোভা ছইয়াতে এবং হংস, কারগুর, চক্রবাক্ প্রভৃতি পক্ষিণাণ সমাকীণ সেই মহাসরোবরে কোষ্ঠি, ক্রৌঞ্চ প্রভৃতি জলচর পক্ষিণাণ কলনান করিতেছে। ভাহার কুলপ্রদেশ বিবিধ ফল কুম্ম শোভিত লভাজ্বালে সমারভ; সংপুক্ষের অন্তঃ- খাষ্যমুক গিরেঃ পাখে গিছে ছো রামলক্ষাণে।
ধল্পবিণকরো দান্তো জাটাবলকলম গুতে।
পশুভো বিবিধান্ বৃক্ষান্ গিরেঃ শোভাং স্থবিক্রমো
স্থাবিস্ত গিরেমু জি চতুর্ভিঃ দহ বানরৈঃ।
ছিত্বা দদর্শ তো যাতো আকরে হে গিরেঃ শিবঃ।
ভয়াদাহ হন্মন্তং কো তৌ বীরবরো ? সথে।
গচ্ছ জানীহি ভদ্রং তে বটু ভূ দ্বা দ্বিজাক্রতিঃ॥ ৮॥

সম্পর্কে অতিমাত্র স্থবাসিত হইয়াছে। রামচক্র ও লক্ষনন নেই সরোবরের স্থানীতল সলিল পান দারা শ্রম নিবারণ করিল। ছায়ার শীতল পথে গমন করিতে লাগিলেন। ১ । ২ । ৩ ।৪। ৫ । জটাবলকল, বিভূষিত ধনুর্বাণধর বিক্রমশালী ইক্রিয় স্থা পরাধ্যুথ রাম ও লক্ষ্মণ ঋষামৃক পর্বতের পার্ম্বে গমন করিতে করিতে বিবিধ রক্ষরাজি ও মহীধ্রের শোভা সন্দর্শন করিতে লাগিলেন। ৬।

সূত্রীব, হত্মান্ প্রভৃতি চারিটা বানরের সহিত সেই পর্বতোপরি বাদ করিতেছিলেন। স্থত্রীব রাম ও লক্ষ্মণকে সমাগত দেখিয়া ভয়ে মহীধরের শিথার দেশে আবরাহণ পূর্বাক হত্মান্কে কহিলেন "হে সংখ! এই সুইটা বীরভার্চ কে?—তুমি বাক্ষাণ বেশ ধারণ পূর্বাক জানিয়া আইম! তোমার মঙ্গল হউক। উহারা কি আমাকে বিনাশ করিবার নিমিত্ত বালি কর্মক প্রেরিত হইয়া আগমন করিয়াছে? যাহা

বালিনা প্রেষিতে কিন্তা মাং হন্তং সম্পাগতে।
তাভ্যাং সম্ভাষণং কৃতা জানীহি হৃদয়ং তয়োঃ ॥

যদি তৌ দুউহৃদয়ো সংজ্ঞাং কুরু করাপ্রতঃ।
বিনয়াবনতো ভূতা এবং জানীহি নিশ্চয়ম্॥ ১০॥
তথেতি বটুরপেণ হৃদুমান্ সমুপাগতঃ।
বিনয়াবনতো ভূতা রামং নত্তেদমন্ত্রীৎ ॥ ১১॥
কৌ যুবাং পুরুষব্যান্ত্রো যুবানো বীরসম্মতো।
ভ্যোতয়ত্রে দিশঃ সর্কাঃ প্রভয়া ভাক্ষরাবিব ॥ ১২
যুবাং তৈলোক্যকর্তারাবিতি ভাতি মনো মম।
যুবাং প্রধানপুরুষো জগদ্ধেভূ জগম্ময়ো ॥ ১০॥
মায়য়া মানুষাকারে চরন্তাবিব লীলয়া।
ভূতারহরণার্থায় ভক্তানাং পালনায় চ॥ ১৪॥

অবতীর্ণাবিহ পরে চরস্তে ক্ষিত্রাক্তী।
জগৎস্থিতিলয়ে সর্বাং লীলয়া কর্ত্মুদ্যতে ॥ ১৫॥
স্বতন্ত্রে প্রেরকো সর্বাহ্ণদারস্থাবিহেশরে ।
নরনারায়ণে লোকে চরস্তাবিতি মে মতিঃ ॥ ১৬॥
শ্রীরামো লক্ষ্মণং প্রাহ পথ্যেনং বটুরূপিণম্।
শব্দশান্ত্রমশেষণ শ্রুতং নুনমনেকধা ॥ ১৭॥
অনেন ভাষিতং ক্রুমং ন কিঞ্চিদপশব্দিতম্।
ততঃ প্রাহ হন্মস্তং রাঘবো জ্ঞানবিগ্রহঃ ॥ ১৮॥
সহং দাশরথী রামস্ত্রয়ং মে লক্ষ্মণোহনুজঃ।
সীতয়া ভার্যয়া সার্দ্ধং পিতুর্ব্রচনগোরবাৎ ॥ ১৯॥
সাগতস্ত্র বিপিনে স্থিতোহহং দগুকে দ্বিজ !।
তত্র ভার্যা ক্ষতা সীতা রক্ষ্মা কেনচিম্মম।
ভামস্বেষ্ট মিহায়াতো ত্বং কো বা ক্ষ্ম বা বদ ॥২০॥

ষ্টক সম্ভাষণ করিয়া উহাদিণের হৃদর অবগত হও। যদি উহারা দুফ্ট বুদ্ধিতে আগমন করিয়া থাকে, তবে হস্ত সংস্কৃতে আমাকে অবগত করাইবে। তুমি বিনয় নত্র হইয়া উহা-দিগের সহিত আলাপ করিবে'। ৭।৮।৯।১০।

হত্মান্ স্থাবের বাকা শ্রবণ করিয়া ব্রাহ্মণ রূপ ধারণ পূর্বক রামের নিকট উপস্থিত ইইলেন ও বিনয়াবনত ইইরা কহিলেন "আপনারা কে? স্থা বেমন প্রভাষারা দশদিক্ আলোকিত করেন—আপনারাও সেই রূপে দশদিক্ আলোকিত করেভেছেন। আপনাদিনের আকারে সম্পূর্ণ বীরভাব লক্ষিত ইইতেছে। আপনাদিনের আকারে সম্পূর্ণ বীরভাব প্রক্ষ বলিয়া প্রভাতি হয়। আমার বোধ হয় আপনারা ত্রিলাকের অধীর্যার ও জ্গতের একমাত্র কারণ—জ্বগন্মার প্রধান প্রক্ষ অর্থাৎ নারায়ণের অবতার, তাহার কোন সন্দেহ নাই। ক্মনতী-ভার বিমোচন ও ভ্রুগণের। প্রতিপালন নিমিত্ত

মারা প্রভাবে মনুষ্যভাবে অবতীর্ণ ইইরা ক্ষজিরাকারে বিচরণ কারতেছেন। আমার বোধ হয় আপনারা জগতের স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ-—দেই স্বাধীন সর্বলোক হানয়বাদী নরনারায়ণ, লীলা প্রকাশের নিমিত্ত এই জগতে বিচরণ করিতেছেন '। ১১।১২।১৩।১৪।১৫।১৬।

রামচন্দ্র লক্ষ্মণকে কহিলেন "হে বংস! দেখ এই ব্রাক্ষণ কিরপ শব্দ শাস্ত্রে জ্ঞানবান, যে সকল বাক্য প্রয়োন করিল তাহার একটিও অপভংশ শব্দ নহে"। অনস্তর হত্ত্য মান্কে কহিলেন "হে ব্রাক্ষণ! জ্মামি মহারাজ দশরথের পুত্র রাম, ইনি আমার কনিষ্ঠ লক্ষ্মণ, পিতৃ বাক্য পালন মিমিন্ত ভার্যা সীতার সহিত দওকারণ্যে আসিয়াছিলাম। সেই কাননে কোন রাক্ষ্ম আমার ভার্যাকে হরণ করিয়াছে। তুমি কে? কাহার প্রেরিত? সবিস্থার বর্ণনা কর ১২৭১৯৮১৯)২০।

वर्षेक्षवाह।

সূত্রীবো নাম রাজা যো বানরাণাং মহামতিঃ।
চতুর্ভিমন্ত্রিভিঃ দার্দ্ধং গিরিমূর্ধনি ভিষ্ঠতি॥ ২১॥
ভাতা কনীয়ান্ সূত্রীবো বালিনঃ পাপচেতদঃ।
তেন নিক্ষাশিতো ভার্য্যা হৃতা তক্সেহ বালিনা ২৩
তদ্ধ্যাদ্ধ্যমূকাখাং গিরিমান্ত্রিতা সংস্থিতঃ।
অহং সূত্রীবসচিবো বায়ুপুজ্রো মহামতে।॥ ২৩॥
হন্দ্মান্নাম বিখ্যাতো অঞ্জনাগর্ভমন্তবঃ।
তেন দখ্যং ত্বয়া যুক্তং সূত্রীবেণ রঘূত্তম।॥ ২৪॥
ভার্য্যপহারিণং হন্তং দহায়ত্তে ভবিষ্যতি।
ইদানীমেব গচ্ছাম আগচ্ছ যদি রোচতে॥ ২৫॥

জীরাম উবাচ।

অহমপ্যাগতত্তেন সখ্যং কর্তুং কণীশ্বর !। স্থ্যস্তস্তাপি যৎকার্য্যং তৎকরিষ্যাম্যসংশয়ম্।।

ব্রাহ্মণ কহিলেন, "বানরগণের অধীশ্বর মহাত্মা স্থাীব চারিটী মন্ত্রির সহিত এই পর্বতে বাস কুরিভেছেন। মহাত্মা স্থাীব পাপ চিক্ত বাণির কনিষ্ঠ ভ্রাতা। বাণি স্থাীবকে রাজ্য হইতে বহিষ্কৃত করিয়া তাঁছার ভার্যাকে হয়ণ করিয়াছে। আমি স্থাীবের সচিব—অঞ্জনা গর্ভসম্ভূত সমীরণাত্মভ্র—নাম হস্মান্। বালি ভয়ে ৠয়য়য়্ব পর্বতি আশ্রে করিয়া অবস্থান করিতেছি। হে রামচন্দ্র! আপনি সেই স্থাীবের সহিত মৈত্রী করুন, তিনি আপনার শক্ত-বধে সহার ছইবেন। যদি ইচ্ছা হয় তবে আগমন করুন বিলম্ব করিবেন না"। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫।

শ্রীরামচন্দ্র কছিলেন 'হে কপীশর! আমি স্থ্রীবের সহিত সধ্য করিতেই আগমন করিরাছি! আমার সহিত তাহার সধ্য সংস্থাপন হইলে আমি তাহার প্রিরকার্য্য অর্থাৎ

হন্মান্ স্বস্বরূপেণ স্থিতো রামমথান্তবীৎ।
আরোহতাং মম ক্ষের্মে গচ্ছামঃ পর্বতোপরি। ২৭
যত্র তিষ্ঠাত স্থাবীবো মন্ত্রিভির্বালিনো ভয়াৎ।
তথেতি তস্থাকরোহ ক্ষন্মং রামোহথ লক্ষ্মণঃ ॥২৮
উৎপপাত গিরেমূর্দ্ধি ক্ষণাদেব মহাকপিঃ।
রক্ষছায়াং সমাপ্রিত্য স্থিতো তৌ রামলক্ষ্মণো ২০
হন্মানপি স্থাবিমূপগম্য ক্রতাঞ্জলিঃ।
ব্যেতু তে ভয়মায়াতো রাজন্! জ্রামলক্ষ্মণো ॥৩০
শীঘুমুন্তিষ্ঠ রামেণ স্থাং তে যোজিতং ময়া।
অয়িং সাক্ষিণ্যারোপ্য তেন স্থাং জ্বতং কুরু ॥৩০
ততোহতিহর্ষাৎ স্থাবিঃ স্মাগ্ম্য রঘূত্রমম্।
রক্ষশাথাং স্বয়ং ছিড়া বিইরায় দদৌ মুদা॥ ৩২ ॥

বালি বধ নিশ্চয় করিব''। অনন্তর হনুমান্ সীয় রূপ পরিগ্রহ করিয়া রামচন্দ্রকে বলিলেন ''আপনারা আমার ক্ষরে আরে। হণ করুন আপনাদিগকে পর্বতোপরি লইয়া যাইব । তথায় মন্ত্রিগণের সহিত স্থাবিব বালিভয়ে অবস্থান করিতেছেন''। অনন্তর রাম ও লক্ষাণ হনুমানের স্করে আবোহণ করিলেন। মহাবল হনুমান্ ক্ষণকাল মধ্যে তাহাদিগকে পর্বতোপরি লইয়া রক্ষছায়ায় অবস্থান করাইল। পরে স্থানীবের নিকট উপস্থিত হইয়া রভাঞ্জলিপুটে কহিল 'হে রাজন্! আপনি ভয় পরিভাগে করুন, শ্রীয়ামচন্দ্র ও লক্ষ্মণ আগমম করিয়াছেন, শীত্র গমন পূর্বক অয়ি সাক্ষি করিয়া তাহার সহিত স্থাস্থাপন করুন । ২৬ ।২৭ । ২৮ । ২৯ । ৩০ । ৩১ । অনন্তর স্থাবি অতিমাত্র আনন্দিত হইয়া রামের নিকট গমন পূর্বক স্থাবি অতিমাত্র আনন্দিত হইয়া রামের নিকট গমন পূর্বক স্থাবি অতিমাত্র আনন্দিত হইয়া রামের নিকট গমন পূর্বক স্থাবি ব্রুমান্ও এক বৃক্ষণাখা ছেদন করিয়া লক্ষ্মণকে উপবেশন

হত্যান্ লক্ষণায়াদাৎ স্থাবায় চ লক্ষণঃ।
হর্ষণে মহতা বিফাঃ সর্ব্ব এবাবত ছিরে॥ ৩৩॥
লক্ষণস্থ ব্রবীৎ সর্ব্বং রামর্ত্তালুমাদিতঃ।
ননবাসাভিগমনং সীতাহরণমেব চ। ৩৪॥
লক্ষণোক্তং বচঃ শ্রুত্বা স্থাবা রামমন্ত্রবীৎ।
অহং করিষ্যে রাজেন্দ্র ! সীতায়া: পরিমার্গণম্।৩৫
সাহায্যমপি তে রাম! করিষ্যে শক্রঘাতিনঃ।
শুণু রাম! মমাদৃষ্টং কিঞ্চিত্তে কথয়াম্যহম্॥ ৩৬॥
একদা মল্প্রিভঃ নার্দ্ধং স্থিতোহহং গিরিমুদ্ধনি।
বিহায়সা নীয়মানাং কেনচিৎপ্রমদোত্ত্যাম্॥৩৭॥
কোশস্ত্রী রামরামেতি দৃষ্ট্রাম্মান্ পর্বতোপরি।
আমুচ্যাভরণান্যাশু স্বোক্তরীয়েণ ভামিনী॥ ৩৮॥
নিরীক্ষ্যাধ্বং পরিত্যজ্য কোশন্থী তেন রক্ষসা।
নীয়াহং ভূষণান্যাশু গুহায়ামক্ষিপং প্রভো!।৩৯॥

করাইলেন। লক্ষ্মণও তাহার এক দেশে স্থগীবকে উপবেশন করাইলেন। লক্ষ্মণ রামের বনবাস ও সীতা হরণ প্রভৃতি লমুদয় র্জ্ঞান্ত বর্ণন করিলেন। স্থগীব লক্ষ্মণোক্ত বাক্য শ্রবণ করিয়া রামচন্দ্রকে কহিলেন "হে রামচন্দ্র! স্থামি দীতার অস্বেষণ ও আপনার শক্ত বিনশীশে বিশেষ সাধায় করিব। হেরামচন্দ্র! আমি যাহা দেথিয়াছি তাহা সবি-শুরে কহিতেছি শ্রবণ করুন।

একদা আমি মরিগণের সহিত পর্কভোপরি অবস্থান করিতেছিলাম, সেই সমলে এক পাপাঝা একটা রমণীকে ছরণ করিয়া আকাশ পথে গমন করিতেছিল। সেই বরবর্নিনী হা রাম! হা রাম! বলিয়া রোদন কবিতে করিতে আমাদিগকে দর্শন করিয়া অঙ্ক হইতে আভরণ উন্মোচন পূর্বক উত্তরীয়ার্দ্ধে বন্ধন করিয়া নিক্ষেপ করি-লেন। হে প্রভা! আমি সেই আভরণ গুলি লইয়া গুহা ইদানীয়পি পশা তং জানীহি তব বা নবা।

ইত্যুক্ত্বানীয় রামায় দর্শয়ামাস বানরঃ।। ৪০॥

বিমৃচ্য রামস্তদ্ ক্র্বা হা সীতেতি মুহুমু হুঃ।

হুদি নিক্ষিপ্য তৎসর্বাং রুরোদ প্রাক্তবা যথা।।৪১

আখাস্থা রাঘবং ভাতা লক্ষ্মণো বাক্যমন্তবীৎ।

আচিরেণের তে রাম ! প্রাপ্যতে জানকী শুভা।

বানরেক্রসহায়েন হত্বা রাবণমাহবে।। ৪২॥

স্থ্রীবোহপ্যাহ হে রাম! প্রতিজ্ঞাং করবাণি তে।

সমরে রাবণং হত্বা তব দাস্থামি জানকীম্।। ৪৩॥

ততো হন্মান প্রজ্বাল্য তয়োরগ্রিসমীপতঃ।

তারুত্বে রামস্থ্রীবাবগ্রে সাক্ষিণি তিষ্ঠতি। ৪৪॥

বাহু প্রসার্য্য চালিক্র্য পরস্পরমকল্মবৌ।

সমীপে রঘুনাথস্থ স্থ্রীবঃ সমুপাবিশ্ব ॥ ৪৫॥

মধ্যে রক্ষা করিয়াছি; এখন আপান দর্শন করুন ঐ গুলি দীতার আতরণ কি না। অনস্তব স্থাীব বস্ত্র বন্ধ অলঙ্কার গুলি জ্ঞীরামচন্দ্রকে প্রদান করিলেন। রামচন্দ্র বস্ত্র গ্রেষ্টি শিথিল করিয়া দীতার অলঙ্কার বলিয়া স্থির করিলেন এবং তাহা হৃদয়ে স্থাপন করিয়া দামান্য মনুষোর মত 'হা দীতা' হা দীতা'! বলিয়া রোদন করিতে লাগিলেন। ৩২। ৩০। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

লক্ষণ শ্রীরামকে সাস্থনা করতঃ কহিলেন "হে আর্যা!
আপনিশোক করিবেন না, বানরেন্দ্র স্থাীবের সাহায্যে আমরা
আচিরে রাবণ বিনাশ পূর্বক জানকীকে লাভ করিব"।
স্থাীবও কহিলেন "ছে রামচন্দ্র! আমি প্রভিজ্ঞা করিতেছি
সংখ্রামে রাবণকে বিনাশ করিয়া আপনার জানকী আপনাকে
দিব।" অনস্তর হত্মান্ অগ্নি প্রজলিত করিলে রাম ও স্থাীব
পরস্পর বাহু প্রসারণ পূর্বক আলিঙ্গন করিলেম। পরে স্থাীব
রামের নিকট উপবেশন করিয়া আক্রেভান্ত কীর্তন করিছে

সোদশং কথয়মাস প্রণয়াদ্রঘুনায়কে

সংখ ! শৃণু মমোদন্তং বালিনা মৎকৃতং পুরা ॥ ৪৬'।

ময়পুলোহথ মায়াবী নায়া পরমন্তর্মলঃ ।

কিন্ধিন্ধাং সমুপাগত্য বালিনং সমুপান্ধয়ৎ ॥৪৭।

সিংহনাদেন মহতা বালী তু তদমর্ঘণঃ ।

নির্যযৌ ক্রোধতান্তান্ধো জ্বান দৃঢ়মুন্টিনা ॥ ৪৮ ॥

কুদ্রাব তেন সমিয়ো জগাম স্বগুহাং প্রতি ।

অমুদুদ্রাব তং বালী মায়াবিনমহং তথা ।

ততঃ প্রবিভীমালোক্য গুহাং মায়াবিনং ক্রমা ॥ ৪৯

বালী মামাহ তিষ্ঠ তুং বহির্গজ্ঞাম্যহং গুহাম্ ।

ইত্যুক্ত্রাবিশ্য স গুহাং মাসমেকং ন নির্যযৌ ॥৫০॥

মাসাদৃদ্ধং গুহাদ্বারান্ধির্গতং ক্রমিরং বছ ।

তদ্ভী পরিতপ্তান্ধো মৃতো বালীতি দুংখিতঃ ॥৫১

গুহাদারি শিলামেকাং নিধায় গৃহমাগতঃ।
তত্যেহক্রবং মৃতো বালী গুহায়াং রক্ষনাহতঃ।।৫২
তচ্চুত্বা দুঃবিতাঃ সর্বে মামনিচ্ছস্তমপুতে।
রাজ্যেহভিষেচনং চক্রুঃ সর্বে বানরমন্ত্রিণঃ॥৫৩॥
শিক্তং তদা ময়া রাজ্যং কিঞ্চিৎকালমরিন্দম।।
ততঃ সমাগতো বালীমামাহ পরুষং রুষা॥৫৪॥
বছ্ধা ভৎসন্থিত্বা মাং নিজ্যান চ মুক্টিভিঃ।
ততো নির্গত্য নগরাদধ্যবং পরয়া ভিয়া।।৫৫॥
লোকান্ সর্বান্ পরিক্রম্য ঋষ্যমূকং সমাপ্রিতং
ঋষেঃ শাপভয়াৎ সোহপি নায়াতীমং গিরিং প্রভে।
তদাদি মম ভার্যাং সংস্থাং ভুংক্রে বিমূদ্ধীঃ।
অতো ত্থুংখন সন্তপ্তো হৃতদারো হৃতাশ্রঃঃ॥৫৭॥

লাগিলেন—ছে সংখ! পূর্বেবালি আমাকে যে রূপে নিরা-ক্লত করিয়াছে ভাহা অবণ করুন।

অতি মারাণী পরমহর্মন নামক মরপুত্র অস্তর কিছিন্ধা।
নগরে আগমন করিয়া সিংহনাদ করত বালিকে সমরে
আহ্বান করিল; বালি তাহার সিংহ নাদে উত্তেজিত
হইরা অতিমাত্র ক্রোধভরে নির্গত হইল ও স্থান্দৃষ্টি
দ্বারা তাহাকে প্রহার করিল। মারাণী সেই মুটি
প্রহারে অতিশার ব্যথিত হইয়া আপনার গুহায় প্রবেশ
করিল। বালী ও আমি ভাহার অনুসরণ করিলাম। অনন্তর
মস্তরকে গুহামধ্যে প্রবিষ্ট দেবিয়া বালী আমাকে কহিল
"তুমি গুহাদ্বারে অবস্থান কর আমি ইহার মধ্যে প্রবেশ করি"
প্রহারের অবস্থান করিলাম, কিন্তু বালী ইহার মধ্য হইতে
নির্গত হইল না। এক মাসের পর গুহা হইতে প্রভূত
শোণিত নির্গত হইল। আমি ভদ্দানে বালীর মরণ অব

ধারণ করিয়া নিতান্ত ভূঃখিত হইলাম। অনন্তর এক থণ্ড প্রস্তর দারা গুহার্থ কল করিয়া গৃহে প্রভ্যাগমন পূর্বাক কহিলাম—রাক্ষম গুহামধ্যে বালীকে নিহত করিয়াছে; ভাহা প্রবণ করিয়া সকলে অভ্যন্ত ভূঃখিত হইল। আমি অনিচ্ছুক হইলেও মন্ত্রিগণ অঞ্জাকে রাজ্যে অভিধিক্ত করিল। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১।

'হে শক্রনিস্বন! আমি কিঞিৎ কাণ রাজ্য শাসন করিতে লাগিলাম। অনন্তর বালী সমাগত হইয়া আমাধেক পক্ষর বাক্যে ভর্ৎ সনা করিয়া মুক্তি প্রহার করিল। আমি ভয়ে নগার হইতে বহির্গত হইয়া সমস্ত লোক পরিভ্রমণ পূর্ব্বক এক্ষণে ঋষ্যমূক পর্কতে বাস করিভেছি। বালী ঋষির শাপে এই পর্বতে আগমন করিতে সক্ষম নহে। হে প্রভো! ঐ বিসূত্র সেই পৃষ্যান্ত আমার ভাষাকে ভোগ করিতেছে। আমি

বনাম্যন্ত ভবৎপাদদংস্পর্শাৎ স্থবিভোম্যাহম্। মিত্রতুঃখেন সন্তপ্তো রামো রাজীবলোচনঃ। ৫৮॥ ভনিষ্যামি তব দ্বেষ্থ শীঘ্রং ভার্য্যাপহারিণম্ । ইতি প্রতিক্রামকরোৎ ফুগ্রীবস্ত পুরস্তদা। ৫৯। সুত্রীবোহপ্যাহ রাজেন্দ্র ! বালী বলবতাং বলী। কথং হনিষ্যতি ভবান্ দেবৈরপি দুরাসদম্॥ ৬০॥ খুণু তে কথয়িষ্যামি তদ্বলং বলিনাম্বর !। कनाहिन्दुन्यु जिनीय यहाकारता महावलः ॥ ७১॥ কিক্ষিদ্রামগমজাম ! মহামহিষরপথক্। যুদ্ধায় বালিনং রাত্রো সমাহ্বয়ত ভীষণঃ॥ ৬২॥ च्छ्याश्मह्यात्नाश्मी वाली প्रतयत्कालनः। মহিষং শৃঙ্গরোধ জা পাতরামাস ভূতলে। ৬০।। পালেনৈকেন তৎকায়মাক্রমাক্ত শিরো মহৎ। হপ্তাভ্যাং ভাময়ং শ্ছিত্বা তোলয়িত্বাক্ষিপভূবি ॥৬৪॥

হু লারও আশ্ররবিহীন হুইয়া বাস করিতেছি। অদ্য আপুনার ध्वन **সংস্পর্শে কথঞিৎ ছঃখ দূর হইল**"। রাজীবলোচন রামচন্দ্র মিত্রভুগ্নে অভিশয় সম্ভপ্ত হইয়। কহিলেন, "নথে! খানি শীন্তই ভোমার ভার্যাপহারী শত্রুকে বিনষ্ট করিব " : 160100160160100180

सूधीव कहिलन, "हि बामहत्त ! वाली वीद्रशालब मध्य ্দ্রিতীয়, দেবগণও তাহাকে পরাজয় করিতে সক্ষম নহেন। শানি সেই বালীকে কিব্লপে বিনাশ করিবেন? ছে বীর-শেষ্ঠ ! আমি বালীর বলবীর্য্যের বিষয় কিঞ্চিৎ বলিতেছি বৰণ কৰুন ৷ এক সময় ছম্মুভি নামে এক মহাবল অস্থ্র মহিৰ রূপ ধারণ করিয়া রাত্তিকালে বালীকে যুদ্ধে আহ্বান ধ্রে, বালী ভাছার দর্প সহ্য না করিয়া অভিশয় ক্রোধ পুর্বাক শৃষ্ণদ্বয় ধারণ করিয়া মহিষকে পৃথিবীতে পাতিত বিল। পরে এক পদ দারা তাহার শরীর আক্রমণ করিয়া। করিতে চরণের অস্তুর্ক দারা তাহা দশ যোজন দূরে নিক্ষেপ

পপাত তচ্ছিরো রাম ! মাতঞ্চাশ্রমগ্রিখে : যোজনাৎপতিতং তম্মামুনেরাশ্রমমগুলে।। ৬१॥ রক্তর্টিঃ পপাতোচৈচ্ ই। তাং ক্রোধমূচ্ছি তঃ। মাতঙ্গো বালিনং প্রাহ যদ্যাগন্তাসি যে গিরিম।।৬৬ ইতঃপরং ভগ্নশিরা মরিষ্যাদি ন সংশ্রঃ। এবং শপ্তন্তদারভ্য ঋষ্যমূকং ন যাত্যদৌ ॥ ৬৭॥ এতজ্ঞাত্বাহ্মপ্যত্র বদামি ভয়বর্জিতঃ। রাম ! পশু শিরস্তম্ম দুন্দুভেঃ পর্ব্বতোপমম। ৬৮॥ তৎক্ষেপণে যদা শক্তঃ শক্তন্তং বালিনো বধে। ইত্যুক্তা দর্শরামাস শিরস্তদ্গিরিসন্নিভম ॥ ৬৯ ॥ দৃষ্টা রামঃ স্মিতং কৃতা পাদাঙ্গুর্ফেন চাকিপং। দশযোজনপর্যান্তং তদন্ত্ তিমবাভবৎ ॥ ৭০ ॥

হস্তবন্ন হারা মন্তক ঘূর্ণিত ও ছিল্ল করিয়া পৃথিবীতে নিক্ষেপ করিল। সেই মস্তক এক যোজন দূরে মাতঙ্গ নামক মহর্ষির আশ্রমে পতিত হওরার তথায় প্রভূত শোণিত র্ফি হইল। তদ্দৰ্শনে মহৰ্ষি ক্ৰোধে অধীর হইয়া বালীকে কহিলেন—হদি ত্মি অদ্য হইতে এই পর্বতে আগমন কর তবে নিশ্চয় ভগ্ন-শিরা হইরা কাল কবলে পতিত হইবে। মুনিশাপ বশতঃ বালী সেই অবধি ঋষামৃকে আগমন করিতে পারে না; আমি ও তাহা জাত হইয়া নিউম্নে এই পর্বতে বাস করিতেছি। হে রাম। ঐ দেখুন ত্বন্দুভির পর্বত প্রমাণ মস্তক পতিত রছিয়াছে। আপনি যদি উহা নিক্ষেপ করিতে শক্ত হন—ভবে নিশ্চয় वानी वृद्ध मक्कम इटेटवन "। এই कथा विनश सूधीव (मह रेजल मन्निक मस्तक हर्मन कर्प्याहिलन । ७०। ७५ । ७२ । ७० । ७८ । ७८ । ७७ । ७१ । ७৮ । ७२ ।

রামচন্দ্র ত্বন্দুভির মস্তক দর্শন করিয়া ঈষৎ হাস্য করিতে

সাধু সাধিতি তং প্রাহ্ স্থ্রীবো মন্ত্রিভিঃ সহ।
পুনরপ্যাহ স্থ্রীবো রামং ভক্তপরায়ণম্।। ৭১ !।
এতে তালা মহাসারাঃ সপ্ত পশ্য রঘূত্তম !।
একৈকং চালয়িত্বাসৌ নিঃপত্রান্ কুরুতেইঞ্জসা।।৭২॥
যদি ত্বমেকবাণেন বিদ্ধা ছিদ্রং করোপি চেহু ।
হতস্ত্রয়া তদা বালী বিশ্বাসো মে প্রক্লায়তে।
তথেতি ধন্তরাদায় সায়কং তত্র সন্দ্রধে।। ৭৩॥
বিভেদ চ তদা রামঃ সপ্তভালান্মহাবলঃ।
তালান্ সপ্ত বিনির্ভিন্ত গিরিং ভূমিং চ সায়কঃ ॥৭৪
পুনরাগত্য রামশ্য ভূগীরে পূর্ববহু স্থিতঃ।
ততোহতিহর্ষাৎ স্থ্রীবো রামমাহাতিবিন্মিতঃ॥৭৫
দেব ! ত্বং জগতাং নাথঃ পরমাত্মা ন সংশয়ঃ।
মৎপুর্বক্রতপুণ্যীঘেঃ সঙ্গতোহদ্য ময়া সহ॥ ৭৬॥

করিলেন। সুগ্রীব তাহা দর্শন করিয়া মন্ত্রীগণের সহিত সাধুবাদ প্রদান পূর্বক পুনর্বার ভক্তবংসল রামকে কহিলেন, 'হে রঘুকুলতিলক! প্র দেখুন অপ্রে সাতটা মহাসার তাল রক্ষ রহিয়াছে—বালী বাভ্রলে উহার এক একটাকে চালিত করিয়া পত্র বিরহিত করিতে সক্ষা। আপনি যদি এ সাভটা তালরক্ষ এক বাণে ছিন্ন করিতে পারেন ভবেই আমার বিশ্বাস হয় যে, আপনি বালীকে নিহত করিতে পারিবেন। রামচন্দ্র স্থাবির বাক্য স্থাকার করিয়া ধহুপ্রহণ পূর্বক তাহাতে শর যোজনা করিলেন ও অনায়াসে সাভটা তাল রক্ষ এক বাবে বিভিন্ন করিলেন। রাম-নিক্ষিপ্ত-বাণ সপ্ততাল, মহীধর ও ধরণী বিভিন্ন করিয়া পূর্বাৎ তৃণীর মধ্যে অবস্থান করিতে লাগিল। রামচন্দ্রের সেই ব্যাপার নিরীক্ষণ করিয়া স্থাবীব অতিশ্ব আনন্দিত ও বিশ্বিত হইয়া কহিলেন, 'হে দেব! সাপনি জগতের ঈশ্বর—পরমান্ধা তাহাতে সন্দেহ নাই; পূর্বন

ত্বাং ভক্ত নি নহালানঃ সংসারবিনির্ভয়ে।
ত্বাং প্রাপ্য মোকসচিবং প্রার্থিরেইহং কথং ভবমং
দারাঃ পূজা ধনং রাজ্যং সর্কং ত্বমায়য়া কৃত্ম।
অতোইহং দেবদেবেশ! নাকাক্ষেইন্যৎপ্রসীদ মে
আনন্দান্তবং তাদ্য প্রাপ্তোইহং ভাগ্যগোরবাং।
মৃদর্বং যতমানেন নিধানমিব সৎপতে!॥ ৭৯॥
অনাদ্যবিস্তাসংসিদ্ধং বন্ধনং ছিয়মদ্য নঃ।
যজ্ঞদানতপঃকর্মপুর্তেকাদিভিরপ্যসে।॥ ৮০॥
ন জীর্যাতে পুনর্দার্ডাং ভক্লতে সংস্তিঃ প্রভো!।
ত্বৎপাদদর্শনাৎ সদ্যো নাশমেতি ন সংশয়ঃ॥ ৮১॥
ক্ষণান্ধমিপ যচিত্তং ত্রি ভিস্তাচঞ্চলম্।
ভস্তাজ্ঞানমনর্থানাং মূলং নশ্ততি তৎক্ষণাং॥ ৮২

জনাৰ্জিত পুণ্যকলে আমি আপনাকে প্ৰাপ্ত ছইয়াছি। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। মহাত্মা ব্যক্তিগণ সংসার গ্রাম্থ্য শিখিল করিবার নিমিত্ত আপনাকে পূজা করিয়: थाक्त, आमि (महे साक्ष्यम जाननांक आध रहेम क्यान সংসারে লিপ্ত হইব না—ক্সী, পুত্র, ধন, রাজ্য, সকলই আপন মারা কম্পিত। হে দেব! আপনি প্রসন্ন হউন, আমি উঠা প্রার্থনা করি না। মৃত্তিকার নিমিত্ত ভূমি থনন করি: করিতে প্রভুত রত্তরাশি প্রাপ্ত হইলে লোক বেমন আনস্ মুভব করে, অন্য ভাগ্যবলে আপনাকে প্রাপ্ত হইরা সেইরু অনির্বাচনীয় আনন্দানুভব করিতেছি। মারাজনিত বি^{ম্ব} বাসনারপ বন্ধন আদ্য বিচ্ছিন্ন হইয়াছে; যজ্ঞ, দান, ভপস জলাশারোৎসর্গাদি করিলেও যাহা শিখিল হয় না, প্রত্যুত দৃঢ়তা ভজনা করে, দেই ভয়ানক সংসার বন্ধন আপনাঃ **চরণ দর্শন মাত্র বিনষ্ট হয় । ৭৭ । ৭৮ । ৭৯ । ৮**০ । ৮১ । যাহার চিক্ত চঞ্চল ভাবে ভোমাকে ক্ষণকাল ধ্যান করে তাছার অনর্থ মূল অজ্ঞান একবারে বিন্ত হয় / ৮২। অতএ

তত্তিষ্ঠতু মনো রাম ! ত্রি নান্তে মে সদা ॥৮৩॥ ∤ সর্বাং ত্রাইছেব মে ভাতি ক মিত্রং क চ মে রিপুঃ। রামরামেতি ঘদাণী মধুরং গায়তি ক্ষণম। দ ব্রহ্মহা স্থরাপো বা মুচ্যতে দর্ম্বপাতকৈঃ ॥৮৪॥ ন কাঞ্চেক্ষহরিজয়ং রাম ! ন চ দারস্থাদিকম্। ভক্তিমেব **मना काएकक इ**शि वश्वविद्याहनीम् ॥৮৫। ত্বনারাক্তসংদারস্তদংশোহহং রঘূত্তম !। স্বপাদভক্তিমাদিশ্য ত্রাহি মাং ভবসম্বটাৎ।। ৮৬॥ পূর্ব্বং মিত্রায়ু দাসীনান্ত্রনায়ার্ভচেতসং। ष्यानत्त्रारुम् । ७व९ शाममर्भनाटमव द्राचव !।। ৮१।।

্ছ রামচন্দ্র ! আমার মন অন্যত্ত ন। থাকিয়া সর্বাদ। ভোমাতে অবস্থান কফক। ৮৩।

যে ব্যক্তি মধুর স্বরে রাম রাম বলিয়া ক্ষণকাল গান করে, দে একহা বা হ্বাপায়ী হউক না কেন সকল পাপ হইতে মুক্ত হয়৷ হে রাম! আমি শক্র বিজ্ঞা, ক্রীও স্থপাদি কিছুই প্রার্থনা করি না, কেবল ভবপাশ বিমোচনী বছুল্ভিই সর্মদা প্রার্থনা করি। ছে রগুশ্রেষ্ঠ ! আমি আপনার অংশ এবং আপ-নারই মারায় সংসারে লিপ্ত হইয়াছি, অতএব স্বীয় পাদপলে ভক্তি প্রদান করিয়া এই ভবপাশ হইতে মোচন করুন। পূর্ব্বে কাহাকে মিত্র-কাহাকে শক্ত ও কোন ব্যক্তিকে বা উদাদীন বলিয়। বিবেচনা করিতাম, যেতেতু আপনার মার্যার আবৃত ছিলাম। এক্ষণে আপনার চরণ দর্শনে সকল পদার্থ ব্রহ্মময় বলিয়া বিবেচনা করিভেছি আর কেছই আমার মিত্র বা শক্ত নাই। লোক যত দিন আপোনার মাধার আবৃত থাকে তাবৎ কাল জগতে কাছাকে শত্ৰু বা কাছাকে মিত্ৰ, কোন বাক্তিকে বা উদাসীন বৃশিষ্কা বিবেচনা করে, এবং যাবং কাল স্বন্ধ-মিতাদি ভাব তিরোছিত ন। ছর, তাবৎ কাল মতুষ্যদিশের মৃত্যুভরে কাতর হইতে হয়, অতএব যে ব্যক্তি সেই মায়াকে সেবা করে সে ভরানক অব্ধকারে নিময় হয়। পুর দারাদি ৰকনের একমাত্র মূল মায়!—হে রযুত্তম! আপনি নিজ দাসী

যাবজ্বনায়য়া বদ্ধভাবদ্ধণবিশেষতা॥ ৮৮॥ मा यावनिष्ठ नानाष्ट्र छावस्ववि नानाथा। যাবন্নানাত্বমজ্ঞানান্তাবৎকালকুতং ভয়ম।। ৮৯॥ অতোহবিতা মুপান্তে যঃ সোহস্কতমিদ মজ্জতি। याशाशृतिमनः मर्साः शूखनातानिवज्ञनम्। **षटा ६ मा त्रा अध्या १ पर मा मी १ उर त्र घुछ म । ॥ २०१** ত্বৎপাদপদ্মার্পিতচিত্ত ব্বতিস্থন্নামসঙ্গীতকথাস্থ বাণী

> ত্বদ্ধক্রমেবানিরতৌ করে মে पुनक्रमक्र लिख्डार यमक्रम ॥ २५ । বম্বিভকান্ স্থকং চ চফুঃ পশ্বত্বস্থ স শ্ৰোভূ কৰ্ণ। ত্বজ্জনাক্র্যাণি চ পাদ্যুগাং ব্ৰজ্জস্ৰং তব মন্দিরাণি। ৯২।

সরুপ দেই মায়াকে উৎসারিত করিয়া আমার প্রতি অহকপ্রা अक्ष ककन । 68 | 66 | 69 | 69 | 60 | 60 व्याप চন্দ্র ! আমার চিত্ত বৃত্তি আপনার চরণে নিমগ্র হউক—আমার বাক্য আপনার নাম সংকীর্ত্তনে নিযুক্ত ছউক--আমার বাছধয় ভবদীয় চরণ দেবায় অঞ্সর হউক এবং আমার অক আপনার অস সৃত্ত লাভে স্ফল ছউক। ৯১। (হ রঘুনন্দন! আমি এই প্রার্থনা করি যে, আগমার নয়নছয় আপনার রামরুং এবং রামরূপ ভক্ত সাধুজন ও গুরুদেবের মূর্ক্তি—এই সকল भार्थ पर्नात मर्जन। इक थाटक **धारः आ**मात्र कर्न यूगन आभागाद जीला अवर्ग मर्कता शिव्य रह धदः भागात भान অঙ্গানি তে পাদরজোবিমিশ্রতীর্থানি বিজ্ঞত্বহিশক্তকেতো!।
শিরস্তুদীয়ং ভবপদ্মস্থাত্যৈ-

যুগল সর্বাদা আপেনার জীমন্দির গমন করিতে বিরত না ছয়।

>>। সে গকড়ধ্বজ্ঞ। আপেনার পাদর্জ মিজ্রিত জল ধারণ
করিয়া আমার স্বাস্থি পবিত্র হউক এবং আমার মস্তক

জু কীং প্রদং রাম ! নমস্বজন্ত্রম্ ॥ ৯৩॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে
কিন্ধিন্দ্যাকাণ্ডে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

আপনার ভববিরিঞ্চি সেবিভ পাদপলে সর্বাদা প্রণিপাত করুক। ১৩।

> ইতিশ্রীমদধ্যবন্ধ রামান্ত্রণে উমামছেশ্বর সন্থাদে কিন্ধিশ্যাকাণ্ডে প্রথমোহধ্যারঃ।

দ্বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ।



ই খং স্বাত্মপরি বৃঙ্গনিধূ তি।শেষক লাষম্।

রানঃ স্থাতীবমালোক্য সন্মিতং বাক্যমন্ত্রবীৎ ॥ ১॥

মারাং মোহকরীং তন্মিশ্বিতেমন্ কার্যাসিদ্ধয়ে।

স্থে ! ড্রুক্তং যর্জমাং সত্যমেব ন সংশয়ঃ॥ ২॥

শীরামচন্দ্র স্থানীবকে স্বকীর শরীরালিক্ষন দারা সর্বা পাপ হইতে বিম্কু দেখিরা স্বকার্য্য সিদ্ধির জন্য কপীস্ক্রের প্রতি সর্ব্বমোহকরী মারা বিস্তার পূর্ব্বক সহাস্য বদনে কহিলেন, সংখ! তুমি আমার নিকট রাবণ বধানি রূপ গুৰুতর কার্য্য সম্পাদনে যে অঙ্গীকার করিলে, তাহা কদাচ মিখ্যা হইবে না । ১ । ২ । কিন্তু আমাকে লোক সকলে কিন্তু লোকা বদিষ্যন্তি মামেবং রঘুনন্দনঃ।
কৃতবান্ কিং কপীন্দায় সত্যং কৃত্যাগ্নিসাক্ষিকম্॥৩
ইতি লোকাপবাদো মে ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ।
তন্মাদাহায় ভদ্রং তে গড়া যুদ্ধায় বালিনম্॥ ৪॥
বাণেনৈকেন তং হত্বা রাজ্যে ত্বামভিষিপ্তরে।
তথেতি গড়া সুঞ্জীবঃ কিদ্ধিক্ষ্যোপবনং ক্রতম্॥৫॥

কহিবে যে, রামচন্দ্র অগ্নি সাক্ষি করিয়া কপীল্রের কার্য্য সাধনে যে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন তাহার কি করিলেন ? তোমার কার্য্য সাধনে বিশম্ব হইলে নিশ্চয়ই আমার উক্ত রূপ লোকাপবাদ হইবে, অতএব তুমি সহর গমন করিয়া যুদ্ধার্থ বালীকে আহ্বান কর অবশ্যই তোমার মঙ্গল হইবে, আমি এক বাপ কৃত্বা শব্দং মহানাদং তমাহ্বয়ত বালিনম্।

তৃদ্ধুত্বা প্রাত্তনিনদং রোষতাশ্রবিলোচনঃ॥ ৬॥
নির্ক্রগাম গৃহাচ্ছীত্রং স্থঞীবো যত্র বানরঃ।
তমাপতন্তং স্থগীবঃ শীত্রং বক্ষশুতাড়য়ৎ॥ ।॥
স্থগীপমপি মুফিত্যাং জ্বঘান ক্রোধমুচ্ছিতঃ।
বালী তমপি স্থগীব এবং ক্রুম্মে পরস্পারম্॥ ৮
অযবেরতামেকরপে দৃষ্ট্বা রামোহতিবিশ্বিতঃ।
ন মুমোচ তদা বাণং স্থগীববধশস্করা॥ ৯॥
ততো ছুদ্রাব স্থগীবো বমন্ রক্তং ভ্রাকুলঃ।
বালী স্বভ্বনং যাতঃ স্থগীবো রাম্মব্রবীৎ॥ ১০॥

ধারা বালীকে নষ্ট করিয়া তোমাকে কিছিদ্ধা রাজ্যে অভি-বিক্ত করিব। স্থাীব তথাস্ত বলিয়া জীরান বাক্যে সমতি প্রকাশ পূর্বক শীস্ত কিছিদ্ধার উপবনে গমনানন্তর মহাভীষণ শব্দ দ্বারা চতুর্দ্দিক্ প্রতিশ্বনিত করিয়া বালীকে যুদ্ধে আফ্রান করিলেন।

মহাবীর বালী জাতার সেই ভীষণ রব প্রবণ করিয়া ক্রোধক্যায়িত লোচনে গৃহ হইতে শীজ্র নির্গত হইয়া যে প্রদেশে স্থাীব অবস্থান করিতেছেন সেই স্থানাভিম্থে আগমন করিতে লাগিলেন। মহাবল স্থাীব বালীকে সমালত দেখিয়া নিজ বক্ষংস্থল তাড়ন করিতে লাগিলেন। ০।৪।। ৫।৬।৭। মহাবীর বালীও ক্রোধাস্ক হইয়া স্থাীবকে মুটি প্রহার করিলেন। স্থাীবও কুদ্ধ হইয়া বালীর প্রতি আরম্ভ করিলেন। ৮। জীরামচন্দ্র একরপ বানরম্বরের মধ্যে বালীকে বিশেষরূপে জানিতে না পারিয়া স্থাীব বধাশক্ষায় বাণ পরিডাগে করিতে পারিলেন না।৯। অনন্তর স্থাীব মহাবল পরাক্রান্ত বালীর মুক্তি প্রহার সহ্য করিতে অশক্ত হইয়া রক্ত বমন করিতে করিতে ভয় বিহ্বলান্তঃকরণে পলায়ন করিতে লাগিলেন; বালীও স্মভবনাতিমুথে গামনোক্ষোগ করিতে লাগিলেন; বালীও স্মভবনাতিমুথে গামনোক্ষোগ

কিং মাং ঘাতয়দে রাম! শত্রুণা ভাতৃরূপিণা?।

যদি মন্ধননে বাঞ্ছা স্থমের জহি মাং বিভো!॥ ১১

এবং মে প্রত্যয়ং ক্ষরা সত্যবাদিন রঘূত্তম!।

উপেক্ষমে কিমর্থং মাং শরণাগতরৎসল!॥ ১২॥

শুরা মুত্রীবরচনং রামঃ সাক্র্রুনিলোচনঃ।

আলিক্ষ্য মান্ম ভৈষীস্তং দৃষ্ট্যা বামেকর্মপিণো॥ ১৩

মিত্রঘাতিত্বমাশক্ষ্য মুক্তবান্ সায়কং নহি।

ইদানীমের তে চিক্তং করিষ্যে ভ্রমশাস্তয়ে॥ ১৪॥

গত্বাহ্বয় পুনঃ শত্রুং হতং জক্ষানি বালিনম্।

রামোহহং ত্বাং শপে ভাতর্হনিষ্যামি রিপুং ক্ষণাৎ

ইত্যাশ্বাস্ত্য স্প্রাবং রামো লক্ষ্মণমন্তবীং।

মুত্রীবস্ত গলে পুপ্রমালামামুচ্য পুপ্রিতাম॥ ১৬॥

রাম ! তুমি ল্রাভ্রমণী শক্র দারা আমার প্রাণ বিনাশে ইচ্ছা করিয়াছ, যদি আমাকে নফ্ট করিতে তোমার নিতান্ত ইচ্ছা হইরা থাকে, তাছাহইলে স্বয়ং আমাকে বিনষ্টকর। ১১ । ছে সভ্যবাদিন ! ছে শরণাগত বৎসল ! ছে রঘূত্রম ! তুমি প্রথমতঃ বাক্য দ্বারা আমার বিশ্বাসোৎপাদন করাইয়া কি কারণে আমাকে উপেক্ষা করিলে ? । ১২ ।

শীরাম স্থাবিধাক্য শ্রবণানন্তর সজলনয়নে তাংগকে আলিঙ্গন করিয়া কহিলেন—সংখ! তুমি ভয় করিও না, আমি তোমাদিগের এক জাতীয় আরুতি অবলোকনে বিশেষ রূপে তোমাকে জানিতে অসমর্থ হইয়া মিত্র বধাশক্ষায় বাণ পরিত্যাগ করি নাই, এইকাণে ভ্রম শান্তির জন্য তোমার গাতে বিশেষ চিহ্ন করিয়া দিব তুমি পুনর্বার সেই স্থানে গমন পূর্বাক শত্রুকে আহ্বান কর এই দণ্ডেই বালিকে নিহত দেখিবে! আতি:! আমি রামচন্দ্র শপ্থ করিয়া কহিতেতি যে তোমার শত্রুকে ক্ষণকাল মধ্যে বিনষ্ট করিব। ১৩। ১৪। ১৫।

জীরামচন্দ্র স্থাবিকে এইরপে আর্খাসিত করিয়া লক্ষ্মণকে কহিলেন, হে ভাতঃ! তুমি স্থানির গলদেশে স্থাপিত

প্রেষয়স্ব মহাভাগ! সুগ্রীবং বালিনং প্রতি। लक्का गेख उन्। वक्का शष्ट्र शरू कि मानतम् ॥ ১৭ ॥ প্রেষয়ামাস স্থগ্রীবং সোহপি গড়া তথাকরোৎ। পুনরপ্যন্ত তং শব্দং কৃত্যা বালিনমান্তরং । ১৮॥ তচ্চুত্বা বি**শ্বিতো বালী ক্রোধেন মহতা** রতঃ। বন্ধা পরিকরং সমাক্ গমনায়োপচক্রমে।। ১৫।। গচ্ছতং বালিনং তারা গৃহীত্বা নিষিষেধ তম্। ন গন্তব্যং ত্বয়েদানীং শক্ষা মেইতীব জায়তে।। ২০ ইদানীমেব তে ভগ্নঃ পুনরায়াতি সত্তরঃ। नहारता वलवार खया किन्द्रानः नमान्यः॥ २५॥

পুষ্পমালা প্রদান করিয়া বালীর প্রতি যুদ্ধার্থ প্রেরণ কর। লক্ষ্মণ শ্রীরামের আদেশানুসারে স্থ্রীবের গলদেশে পুষ্প-माना श्रामान कतिया मानदत किटलन, त्र कशील ! अक्रा তুমি যুদ্ধার্থ গমন কর। স্থাতীব লক্ষাণের বাক্যানুসারে ্রনার্থ পূর্বেস্থানে উপস্থিত হইয়া পূর্ববৎ ঘোরতর চীৎকার इरव वालीक आस्तान कब्रिट लागिरमन। ১७। ১৭। ১৮। মহাবল পরাক্রান্ত বালী পুনর্বার স্থাীবের অন্তভ শব্দ প্রবণা-ন ন্তর বিশায় ও ক্রোধে পরিপূর্ণ হইয়া যুদ্ধ বেশ ধারণ পূর্বক । ষুদ্দেত্ত গমন করিতে উদ্দেশ্য করিলেন। ১৯ ।

অনন্তর ধালীর প্রিয়ত্মা ভার্যা তারা সামির কর ধারণ পূঠক ঠাছাকে যুদ্ধ করিতে বত প্রকারে নিষেধ করিয়া কহিলেন, ছে নাথ! তুমি যুদ্ধ করিতে গমন করিও না, আগমার অভিশয় শল্প উপস্থিত ইংয়াছে, যেছেতু সুঞীৰ কিয়ংক্ষণ পূর্বেই তোমা কর্ত্তক পরাজিত ও পলারিত হইয়া পুনর্বার জি শীঅ যুদ্ধার্থ **আগমন করিয়াছে ইহাতে নিশ্চয়** বোধ ক্ষতেছে যে, সুখীৰ একণে একাকী নছে কোন প্ৰবল সন্থায় সম্পন হট্য়া যুদ্ধ করিতে আসিয়াছে। অনস্তর বালী তারাকে কহিল, হে সুত্র! তুমি সুগ্রীবের প্রতি আশক্ষা করিও না,

'বাদী ভাষাহ হৈ সুক্র শক্ষা তে ব্যেতু তদগতা। প্রিয়ে! করং পরিড্যক্তা গচ্ছ গচ্ছামি তং রিপুন্ रुषा भोष् नमात्रात्य नशात्रख्य का खरार। সহায়ী যদি সুত্রীবস্ততো হড়োভরং ক্ষণাৎ।। ২৩ আয়ান্তে মা শুচঃ শুরঃ কথং তির্চেদ্ গৃহে রিপুম জ্ঞাত্বাপ্যাক্রমানং হি হতা যাস্যামি স্থন্দরি ! তারোবাচ ৷

মত্তোহন্যক্ষু রাজেন্দ্র! শ্রু কুরু যথোচিত্য আহ মামঙ্কদঃ পুজো মৃগয়ায়াং শ্রুতং ৰচঃ ॥২৫॥ অযোধ্যাধিপতিঃ শ্রীমানু রামে। দাশর্ধিঃ কিল। লক্ষণেন সহ ভাতা দীত্য়া ভার্যয়ো সহ।। ২৬।। আগতো দণ্ডকারণ্যং তত্ত্র দীতা হৃতা কিল। রাবণেন সহ ভাতা মার্পমাণোহথ জানকীম্॥ ২৭ ।

আমিও যুদ্ধক্ষেত্রে গমন পূর্ববিক শত্রু বণ করিয়া শীজ্ঞ প্রকাশ গমন করিব; কোন্ ব্যক্তি দেই ভুরাস্থার সহায়তা করিবে यपि (कह जारांत्र महात्रजा करत्र, जाहा इहेरल कनकाल मर्भा উভয়কে নষ্ট করিয়া শীব্র প্রত্যাগমন করিব। হে স্থন্দবি খীর পুরুষেরা শক্ত কর্তৃক আছেত ছইয়া কখন কি স্থছে অব-স্থান করিতে পারে? অভএব তুমি শোক পরিত্যাগ কর, শীস্ত শক্ত বিনাশ করিয়া প্রত্যাগমন করিব। ২০।২১। ২২ ।২৩ । २८। जात्रा कहिलन, (ह ताष्ट्रम: वामात्र व्यना किहू বক্তব্য আছে প্ৰৰণ করিয়া যাহা উচিত হয় কৰুন।

वरम अन्नम এक मिवम मृगन्न। इट्रांड প্রভাগিত হটরা আ মাকে কছিয়াছিল, মাতঃ ! আমি মৃগয়া গমন করিয়া প্রবং করিয়াছি যে, অযোধ্যাধিপতি দশরপাক্ষজ শ্রীমান্ রামচক্র কনিষ্ঠ ভ্রাতা শক্ষণ ও নিজ ভার্য্যা সীতার সহিত দশুকারণ আগমন করিয়াছিলেন, সেই স্থানে রাক্ষসাধিপ রাবণ ছল পূর্কক বে প্রিয়ে! এক্ষণে আমার কর পরিত্যাগ করিয়া গমন কর, । তাঁহার ভার্যা দীভাকে হরণ করিয়াছে, এক্ষণে দেই রাম ও

আগতো ঋষ্যমূকান্তিং স্থাবৈশ সমাগতং।

চকার তেন স্থাবিঃ সথং চানলসান্ধিকম্। ২৮॥
প্রতিজ্ঞাং কতবান্ রামঃ স্থাবীবার সলক্ষণঃ।
বালিনং সমরে হত্বা রাজানং তাং করোম্যহম্॥২৯
ইতি নিশ্চিত্য তৌ ষাতৌ নিশ্চিতং শৃণু মছচঃ।
ইদানীমেব তে ভগ্নঃ কথং পুনরুপাগতঃ॥ ৩০॥
অতন্তং সর্বথা বৈরং ত্যক্ত্বা স্থাবীবমানর।
যৌবরাজ্যেংতিবিঞ্চাশু রামং তং শরণং ব্রন্ধ ॥৩১
পাহি মামঙ্কদং রাজ্যং কুলঞ্চ হরিপুন্ধব !।
ইত্যুক্ত্বাশ্রুমুখী তারা পাদয়োঃ প্রনিপত্য তম্।
হস্তান্তাং চরণো তা রুরোদ ভয়্রিছ্বলা।
ভামালিঙ্ক্য তদা বালী সম্বেহমিদমন্ত্রীৎ॥ ৩৩॥

ত্রীসভাবাদ্বিভেষি ত্বং প্রিয়ে! নান্তি ভয়ং ময়।
রামো বদি সমায়াভো লক্ষাণেন সমং প্রভু:।। ৩৪
তদা রামেণ মে সেহো ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ।
রামো নারায়ণঃ সাক্ষাদবতীর্ণোইখিলপ্রভুঃ॥ ৩৫॥
ভূভারহরণার্থায় শ্রুভং পূর্মেং ময়ানছে!।
স্বপক্ষঃ পরপক্ষো বা নান্তি ভক্ত পরাত্মনঃ॥ ৬৬॥
ভানেষ্যামি গৃহং সাধি! নত্বা ভক্তরণাস্থ জম্।
ভজতোইমুভজত্যেষ ভক্তিগম্যঃ সুরেশ্বরঃ॥৬৭
যদি স্বয়ং সমায়াতি সুগ্রীবো হিন্মি তং ক্ষণাং।
বদুক্তং যৌবরাজ্যায় সুগ্রীয়ন্তাভিষেচনম্॥ ৬৮॥

লক্ষন কিছিলা পর্কতে আগমন করিয়া সুগ্রীবের সহিত মিলিত ছইয়াছেন। স্থাবিত্র উছাদিগের সহিত স্থা করিয়াছেন। স্থাবিত্র স্থা ভাবে আবদ্ধ ছইয়া অগ্নি দাক্ষি করিয়া প্রতিজ্ঞা পূর্কক স্থাবিকে কহিয়াছেন যে, সমরাঙ্গণে বালীকে বিনষ্ট করিয়া ভোমাকে কিছিলা রাজ্যাপ্রদান করিব। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ছৈ নাঝ! ভাছারা এইরূপ নিশ্চর করিয়া আদিয়াছে নতুবা ইতিপূর্কে পরাজিত ছইয়া পুনর্কার যুদ্ধার্থ কেন আদিবে? হে মহারাজ। আমার বাক্যানুসারে বৈর পরিত্যাগ পূর্কক স্থাবিকে আনরন করিয়া শীজ যেবিরাজ্যে অভিষ্কুত কর এবং জ্বীরামের শরণাগত হও, ছে কণীক্র! আমাকেও পুত্র অঙ্গদ, বাজ্যাও বংশ এই সমস্ত ব্লহ্মাকর, অজ্যপূর্ণমুখী তারা বিনর বচনে এইরূপ কহিয়া বালীর পাদযুগলে পতিত ছইলেন। অনন্তর নিজ ছন্তযুগল দ্বারা বালীর চরণদ্বর ধারণ করিয়া ভরবিক্ষণান্তঃকরণে রোদন করিতে লাগিলেন। অনন্তর

বালী তারাকে আলিঙ্কন করিয়া সম্মেছ বচনে কহিলেন।
। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩।

প্রিয়ে! তুমি স্ত্রী হুঠিত বলিয়া ভয় করিছেচ, কিন্তু আমার
কোন ভয় নাই, মহাপ্রভু শ্রীরামচন্দ্র যদি লক্ষ্মণের সহিত
আগমন করিয়া থাকেন ভাহাহইলে তিনি স্থগীব অপেক্ষা
আমার প্রতি নিশ্চয় অধিকতর মেহ প্রকাশ করিবেন, কারণ
স্থগীব অপেক্ষা আমাদারা তাঁহার অধিক কার্যা সিদ্ধির সন্তব।
হে অন্যে! আমি পূর্ব্বে শুনিরাছি যে, অথিল ব্রক্ষাণ্ড পতি
ভগবান নারায়ণ ভূভার হরণের নিমিন্ত রামরূপে অবতীর্ণ
হইয়াছেন, পরমান্ধা রামের স্থাপক্ষ বা পরপক্ষ কেছই নাই।
। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ছে সাধিব! ভোমাকে নিশ্চয় বলিতেছি যে.
আমি শ্রীরামচন্দ্রের চরণ কমলে প্রণাম করিয়া তাঁহাকে প্রভে
আনয়ন করিব, যেতেতু ভক্ত বৎসল দেব দেব দাশর্থি ভক্ত
জ্বনের অভীষ্ট সিদ্ধি করিয়া থাকেন। ৩৭। যদি স্থগীব
একাকী আসিয়া থাকে তাহা হইলে ক্ষণকালের মধ্যে তাহার
প্রাণ বিনাশ করিব। প্রিয়ো তুমি পূর্ব্বে কছিয়াছ যে স্থগীন
বক্ষে আনয়ন করিব। প্রিরো! তুমি পূর্ব্বে কছিয়াছ যে স্থগীন

কথমাত্র্রমানোইহং যুদ্ধার রিপুণা প্রিয়ে!।
শ্রোহং সর্বলোকানাং সন্মতঃ শুন্তলকণে!॥৩৯
ভীতভীতমিদং বাক্যং কথং বালী বদেৎ প্রিয়ে।
তন্মাচ্ছোকং পরিভাজ্য তিষ্ঠ স্থানর ! বেশ্মনি।॥৪০
এবমাশাভ তারাং তাং শোচন্তীমশ্রুলোচনাম্।
গতো বালী সমৃত্যুক্তঃ স্থানিভ বধার সঃ॥ ৪১॥
দৃষ্টা বালীনমারান্তং স্থানিভ বধার সঃ॥ ৪১॥
দৃষ্টা বালীনমারান্তং স্থাবো ভীমবিক্রমঃ।
উৎপপাত গলেবদ্ধপুষ্পমালঃ পতঙ্গরহ।। ৪২॥
মুটিভাগে তাড়রামাস বালিনং সোহপি তং তথা।
আহলালী চ স্থাবিং স্থাবো বালিনং তথা॥৪৩॥
রামং বিলোকরম্নেব স্থাবো যুমুধে যুধি।
উত্যেবং যুধ্যমানো তো দৃষ্ট্য রামঃ প্রভাপবান্॥

বাণমানায় তুণীরা দৈক্রং ধনুষি সন্দধে।
আকৃষ্য কর্ণপর্যন্তমনৃষ্ঠো ক্লেখণ্ডগং ॥ ৪৫ ॥
নিরীক্ষ্য বালীনং সম্যাক্ষ্যং তদ্ধুদয়ং হরিঃ।
উৎসমর্কাশনিসমং মহাবেগং মহাবলঃ ॥ ৪৬ ॥
বিভেদ সশরো বক্ষো বালিনং কম্পায়্মহীম্।
উৎপপাত মহাশকং মুঞ্জন্ স নিপপাত হ ॥ ৪৭ ॥
তদা মুহূর্তং নিঃসংজ্ঞো ভত্বা চেতনমাপ সং।
ততো বালী দদর্শাগ্রে রামং রাজীবলোচনম্।
ধনুরালম্য বামেন হস্তেনান্যেন সায়কম্ ॥ ৪৮ ॥
বিজ্ঞাণং চীরবসনং জ্ঞামুকুটধারিণম্।
বিশালকক্ষসন্তাজ্বনমালাবিভূষিতম্ ॥ ৪৯ ॥
পীনচার্বায়তভুজং নবদুর্বাদলচ্ছবিম্।
সুত্রীবলক্ষ্মণাভ্যাং চ পার্খ্রোঃ পরিদেবিতম্ ॥৫০।

ভ্ৰলক্ষণে! সৰ্ব লোক সমাজে আমি শ্র বলিয়া বিখ্যাত এক্ষণে শক্ত কৰ্তৃক বুদাৰ্থ আহুত হইয়া কিন্তপে ভয় স্থাচক ভোমার ঐ বাক্যে অনুমোদন করিব ? হে স্করে! অভএব শোক পরিত্যান করিয়া গৃহে অবস্থিতি কর আামি বুদার্থ গমন করি। ৩৮। ৩৯। ৪০।

অনস্তর মহালব পরাক্রান্ত বালী শোকাচ্চ্রপূর্ব লোচনা ভারাকে এইরূপে আখাসিত করিয়া স্থ্রীব বধের জন্য উল্লোগী হইয়া গমন করিলেন। ৪১। পুস্প মালা গোভিত ভাম পরাক্রম স্থ্রীব বালীকে সমাগত দেখিয়া পতঙ্গের ন্যার লক্ষ প্রদান পূর্বক মৃষ্টি হারা তাড়না করিলেন, বালীও স্থাবিকে দেইরূপ মৃষ্টি প্রহার তাড়না করিলেন, বালীও স্থাবিকে দেইরূপ মৃষ্টি প্রহার করিল এই রূপে পরস্পরের ধ্যারতর প্রহার আরম্ভ হইল। ৪২।৪৩। স্থ্রীব যুদ্ধ করিতে করিতে মধ্যে মধ্যে জীরামের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিতে লাগিল। মহাপ্রতাপশালী জীরামচন্দ্র ভূণীর হুইতে একটা

ঐন্তরণ প্রহণ করিয়া নিজ ধন্তে সন্ধান করিলেন। অনন্তর বৃক্ষসমূহের অন্তরালে অদৃশ্যভাবে অবস্থিত ভগবান্ হবি বালীর বৃক্ষঃস্থল লক্ষ করিয়া প্র বাণ পরিত্যাগ করিলেন। বন্ত্র সদৃশ বীর্যাশালী দেই বাণ মহাবেগে গমন করিয়া বালীর বৃক্ষঃস্থল ভেদ করিল। অনন্তর মহাবীর বালী বৃক্ষঃস্থল আহত হইয়া ঘোরতর চীৎকার ধনি করিতে করিতে পৃথিবীতে পতিত হইল। বস্থমতীদেবী কপীল্ডের পতন বেগ সহনে অসমর্থা হইয়া বারস্থার কম্পিতা হইতে লাগিলেন। বালী মুহুর্ত্ত কাল অচেতন থাকিলেন, অনন্তর সংজ্ঞা লাভ করিবামাত্র দেখিলেন জটা মুকুট্রারী বিশাল বক্ষঃস্থল বিরাজিত বনমালালক্ষত এবং চীর বসন, আজানুলম্বিত মনোহর পীনবান্থ নবদ্বনিদলশ্যাম রাজীবলোচন রাম বামহত্তে ধনু ও দক্ষিণ হত্তে বাণ ধারণ করিয়া সমূথে দণ্ডারমান রহিয়াছেন, স্থপ্রীব ও লক্ষ্মণ তাঁহার পাশ্ব দেশে দণ্ডারমান হিয়াছেন, স্থপ্রীব ও লক্ষ্মণ তাঁহার পাশ্ব দেশে দণ্ডারমান হিয়াছেন, স্থপ্রীব ও লক্ষ্মণ তাঁহার পাশ্ব দেশে দণ্ডারমান হিয়া দেশা করিতেছেন। ৪৪।৪৫ে।৪৬।৪৭।৪৮।৪৯।৫০।

বিলোক্য শনকৈঃ প্রাহ বালী রামং বিগর্হয়ন্।
কিং ময়াপক্তং ? রাম! তব যেন হতোহ আহম্॥৫১
রাজথর্মমবিজ্ঞায় গর্হিতং কর্মা তে কৃতম্।
রক্ষথণ্ডে তিরো ভূড়া তাজতা ময় সায়কম্॥৫২॥
যশঃ কিং লপ্যসে রাম! চোরবৎ কৃতসঙ্গর:।
যদি ক্ষত্রিয়দায়াদো মনোর্বংশসমুদ্ভবঃ॥৫৩॥
যদ্ধং কৃড়া সমক্ষং মে প্রাপ্যাসে তৎকলং তদা।
সুগুীবেণ কৃতং কিং তে? ময়া বা ন কৃতং কিমু?
রাবণেন কৃতা ভার্যা তব রাম! মহাবনে।
সুগীবং শরণং যাতস্তদর্থমিতি শুশুম॥৫৫॥
বত রাম! ন জানীয়ে মদ্বলং লোক্বিশ্রুতম্।
বাবণং সকুলং বদ্ধ্যা স্থাতং লক্ষয়া সহ॥৫৬॥

অনস্তর বাদী জীরামকে দেথিবামাত্র নিন্দা করিয়া দৃত্ব তানে কছিল, হে রাম! আমি ভোমার নিকট এমন কি অপরাধ করিয়াছি, যে অপরাধে আমাকে নষ্ট করিলে—বোধ করি তুমি রাজধর্ম না জানিয়া এইরূপ গহিত কর্ম কৈরিয়াছ। হে রাম ! ডুমি চেতিরর ন্যায় বৃক্ষের অন্তরালে লুকায়িত হইয়া আমার প্রতি বাণ কেপ করিলে—এই অধর্য যুদ্দে কি যুশো-লাভ করিতে পারিবে ? ভুমি ক্ষজ্রিয় সস্তান বিশেষতঃ মনুর ংংশে জন্ম গ্রছণ করিয়াছ, ভোষার উচিত কার্যা হয় নাই, নি সমূথ যুদ্ধে আমার প্রাণ বিনাশে সক্ষম হইতে ভাহা 🦮 লৈ তোমার যশোলাভ হইভ। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। হে র্যুনক্র ! আমি শুনিয়াছি মহারণ্য হইতে রাবণ তোমার ভাষ্যা ছরণ করিয়াছে, উাহার উদ্ধারের নিমিত সুগ্রীবের শরণাপন্ন হইয়াছ, তাহা কি আমার দারা হইত না ৫৫২ রাম ! তুমি আখার লোক-বিখ্যাত বীর্যা কি জান না ? আমি যদি विका कति जोका बहेरल मूहर्खार्क मर्या मवश्म द्रावनरक वक्त করিয়া লক্ষার সহিত এছানে আনরন করিতে পারি। হে

यनशिम सृष्ट् विश्वाक्षित किक्ट्रीय ताथव !।

सिर्मिक हे कि लाक्टि स्मिन् कथारम त्र सूनस्मन !।। ११।

वानतः वाधवक्ष्ण धर्मः कः लभारम वन ।

यक्ष्मः वानतः माःमः हजा माः किः कित्रियामि ?

हे क्ष्म्य वाखाः वालिनः ताघरवाद्यवी ।

सर्म्म शाखा लाक्टि स्मः महत्ताि म मतामनः ।। १०

यर्मम शाखा लाक्ट्रियः महस्मः भानशमास्म् ।

हि का जिने खां कुर्जिशा है हव छथा सूचा !। ७० ।।

ममा या तमक जामास्मिम्मि विम्हिशेः ।

भाजकी म जू विष्क्रतः मवस्मा ताक्ष्मिः मन्।।।७১

पृष्ठ खाजुः किनर्छ छार्यात्राः तम्म वनाः ।

था का भर्मविन हर्जाशमा वन्न वनाः ।

था कि मह्मिन स्कारत्व खान्न विम्हि यह ।

लाकः भूनानाः मक्षादित त्र खान्न विम्हि यह ।

लाकः भूनानाः मक्षादित त्र खान्न विम्हि ।

রাম! তুমি ধর্মিন্ত বলিয়া জগতে বিশ্বাত—বল দেখি ব্যাধের
ন্যায় গুপ্ত ভাবে বানর বধ করিয়া কি ধর্ম লাভ করিবে?
অভক্ষ্য বানর মাংস ভোমার ভক্তনেও উপধার্মী হইবে না।
। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। বালী এইরপে বছতর ভংদনা
করিলে জ্রীরাম কহিলেন ছে বানরেক্র! আমি ধর্ম্মরক্ষার্থ শরাসন গ্রহণ করিয়া এই জগতে বিচরণ করিতেছি, অধর্মকারী
ব্যক্তিকে নফ্ট করিয়া ধার্মিক ব্যক্তকে প্রতিপালন করাই
আমার কার্যা, ছে কপীক্র! কনাা, ভগিনী, ভাতৃজারা ও পুত্রবধু এই চারই তুল্য এই চারিটার মধ্যে যে কোন একটাতে যে
ব্যক্তি উপগত হয়, সেই মহাপাতকী ধার্মিক রাজগণের বধ্য
ইহা নিশ্চয় জ্রানিবে। ৫৯। ৬০। ৬০। ৫০ পশুরাক্ত গ্রেমিণ্ড
কনিষ্ঠ ভাতার পত্নিক বলপূর্মক রমণ করিতেছে এই ছেতৃ
ধর্মান্তান্ত্রসানের ভোমাকে নফ্ট করিলাম। তুমি বানর জ্ঞাতি
বলিয়া কিছুই জ্ঞাননা—মহন্যজিরা নিজপদ সঞ্চার হারা জ্ঞাং

তচ্ছুত্বা ভয়সন্তত্যে জ্ঞাত্বা রামং রমাপতিম্।
বালী প্রণমা রভসাদ্রামং বচনমন্ত্রীৎ ॥ ॥ ৬৪ ॥
রাম রাম ! মহাভাগ । জ্ঞানেত্বাং পরমেশ্বরম্।
জ্ঞানতা ময়া কিঞ্চিদুক্তং ভং ক্ষন্তমহ সি ॥ ৬৫ ॥
সাক্ষাভ্রুত্বয়াতেন বিশেষেণ তবাগৃতঃ ।
ত্যজাম্যস্থাহাযোগিদুর্লভং তব দর্শনম্॥ ৬৬ ॥
যন্ত্রমান বিবশো গৃহন্ জ্রিয়মাণঃ পরং পদম্।
যাতি সাক্ষাৎ স এবাত্ত মুমুর্বোর্মে পুরঃ স্থিভঃ ॥৬৭
দেব ! জ্ঞানামি পুরুষং তাং প্রিয় জ্ঞানকীং শুভাম্।
রাবণস্থা বধার্থার জাতং তাং ব্রহ্মণার্থিতম্।। ৬৮ ॥

পবিত্র করিয়া সঞ্চরণ করিভেছে। অভএব তাহাদিগের কার্য্যে নিন্দা করিতে নাই; বালি ত্রীরামের এই বাক্য গুনিবামাত্র প্রায়কে স্নাতন বিষ্ণু জানিয়া অভি ভীত ছইলেন স্থানন্তর শ্রণাম করিয়া পরমানশে শ্রীরামকে কছিলেন।৬২।৬৩।৬৪। ছে রাম ! হে মহাভাগ ! থিক্তবে তোমাকে প্রমেশ্বর বলিয়া জানিলাম, ইতিপুৰ্ব্বে অজ্ঞান বশতঃ তোমাকে বে কিছু পরুষ বাক্য কহিরাছি তাহা নিজগুণে ক্ষমা করিতে হইবে।৬৫। হে ভগাবন্! তোমার শরাখাত দারা তোমারই সমূথে এক্ষণে প্রাণভাগ করিব, এরূপ সময় কথন ছইবে না—্যেহেতু একণে যোগি তুল ভ ভোমার দর্শন লাভ করিয়াছি ৷৬৬৷ হে রাম! যদি লোকেরা মরণ সময়ে অবশেক্তিয় হইয়া তোমার নাম জ্ঞপ করে তাহা হইলে মরণাস্তে বৈকুণ্ঠধাম গমন করে—দেই তুমি আমার মরণ সময় আদা সন্থে বিরাজ করিতেছ ইহার পর আমার ভাগ্য কি ? । ৬৭। ছে দেব ! তুমি পরম পুরুষ রাবণ বধার্থ ব্রহ্মা কর্ত্ক প্রার্থিত ছইয়া ভূতলে জন্ম গ্রহণ করিয়াছ, জানকীও সাক্ষাৎ লক্ষ্মী ইছা অবগত হইয়াছি।৬৮।

অনুকানী হি মাং রাম ! যান্তং ত্বপদ্যুত্মন্।

মন তুল্যবলৈ বালে অঞ্চদে ত্বং দরাং কুরু ।। ৬৯ ।।

বিশল্যং কুরু মে রাম ! হৃদরং পাণিনা স্পৃদন্।

তথেতি বাণমুদ্ধতা রামঃ পম্পর্শ পাণিনা।

ত্যক্তা তদানরং দেহমমরেন্দোইভবৰ ক্ষণাৰ ।। ৭০

বালী রঘূত্তমশরাভিহতো বিমৃষ্টো রামেণ শীতলকরেণ স্থাকরেণ। শদ্যো বিমৃচ্য কপিদেহ্মবশুলভ্যং প্রাপ্তঃ পরং পর্মহংসগণৈত্রাপম্॥৭১॥

ইতি শ্রীমনধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্ধিস্ক্যাকাণ্ডে বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

একণে অনুজ্ঞা করুন আপনার বৈকুণ্ঠধানে গমন করি এবং আমার তুল্য বাভ্বীহ্য সম্পন্ন অসদের প্রতি রূপা দৃষ্টি রুকন। ৬৯। হে দাশরথে! আপনি শ্বরং কর কমল দ্বারা আমার বক্ষঃস্থল স্পর্শ করিয়া শাল্য উদ্ধার করুন। জ্রীরাম কপীলের বিনয় বচনে সম্ভক্ত হইয়া তাহার হৃদয় ছইতে স্বরং শল্য উদ্ধার করিলেন, বানর রাজ্ঞ বানর দেহ পরিত্যাগ করিয়া ক্ষণকাল মুখ্যে অমরেল্র দেই ধারণ করিলেন ভদতে মুক্তিলাভ করিবেন। ৭০। রাম-শর-পীড়িত বালী রঘুনাথের স্থাকর সদৃশ শীতল কর স্পর্শে তৎক্ষণাৎ বানর দেহ পরিত্যাগ পূর্বাক পরমহংসগণের ছ্ল্রাপ্য কিন্তু রাম ভ্রুপি

ইতি শ্রীমদধ্যামারগমারণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্দিন্দ্যাকাতে দিতীরেশ্হধ্যারঃ।

তৃতীয়ো>ধ্যায়ঃ।

নিহতে বালিনি রণে রামেণ পরমান্থন।
ছক্রবুর্কানরাঃ সর্বেক কিছিছাাং ভয়বিছ্বলাঃ ॥ ১
তারাসূচুম হাভাগে ! হতো বালী রণাজিরে।
অঙ্কদং পরিবন্ধান্য মস্ত্রিণঃ পরিনোদয় ॥ ২ ॥
চতুর্ব রকপাটাদীন্ বদ্ধা রক্ষামহে পুরীম্।
বানরাণাং ভু রাজ্ঞানমঙ্গদং কুরু ভামিনি ! ॥ ৩ ॥
নিহতং বালিনং শ্রুত্বা তারা শোকবিমুদ্ধি তা।
অতাড়য়ৎ স্বপাণিভ্যাং শিরোবক্ষণচ ভূরিশঃ ॥ ৪ ॥
কিমঙ্কদেন রাজ্যেন নগরেণ ধনেন বা ?।
ইদানীমেব নিধনং যাস্থামি পতিনা সহ ॥ ৫ ॥

ইত্যক্ত্বা স্বরিতা তত্র রুদন্তী মৃক্তমূর্ধ জা।

যথে তারাতিশোকার্ত্তা যত্র ভত্ কলেবরম্ ॥ ৬ ॥

পতিতং বালিনং দৃষ্ট্বা রক্তৈঃ পাংশুভিরার্তম্ ।

রুদতী নাথনাথেতি পতিতা তক্ত পাদয়োঃ ॥ ৭ ॥

করুণং বিলপস্তা সা দদর্শ রঘুনন্দনম্ ।

রাম! মাং জহি বাণেন যেন বালী হতস্ত্রমা ॥ ৮ ॥

গচ্ছামি পতিসালোকাং পতির্মামভিকাজকতে।

স্বর্গেইপি ন স্থাং তক্ত মাং বিনা রঘুনন্দন! ॥ ৯ ॥

পত্নীবিয়োগজং দুঃখমসূভূতং স্বরানঘ!।

বালিনে মাং প্রয়াছাণ্ড পত্নীদানফলং ভবেৎ ॥১০॥

বানবেক্ত বালী প্রমাত্মা জীরাম কর্ত্ত রণ ভূমিতে নিংত হইলে তাঁছার অনুচর বানরগণ ভ্রাকুলিত চিত্তে কিছি-ক্ষার প্রতিগমন,করিয়া তারাকে কছিল—হে মহাভাগে! মহারাজ বালী অদ্য রণভূমিতে শ্রীরাম কর্ত্ত্ক নিহত হইরাছেন—আপনি একণে কুমার অঞ্চনকেও মন্ত্রিগণকে রাজকার্য্য করিতে আদেশ করুন, আমরা চতুর্হারের কপাট বন্ধ করিয়া এই নগরী। রক্ষা করিব । ১ । ২ । ৩ । অনন্তর তার্য কপীক্র বালীর অভ্ত সম্বাদ প্রবণ করিয়া শোকমুন্ছি তান্তঃকরণে বার্যার পাণি যুগল দ্বারা মন্তক্ত ও বক্ষঃস্থল তাজন করিতে করিতে কহিলেন—হে বানরগণ! আমার পুত্র, রাজ্য, নগর ও ধনে কিছুই প্রয়োজন নাই, এক্ষণেই আমি পতির সহমরণ প্রাপ্ত হইব । ৪ । ৫ । অনন্তর আলুলায়িতকেশী রোক্ষামানা

ভারা শোকাকুলান্তঃকরণে মৃতপতির কলেবর দর্শনার্থ সেই রণ ভূমিতে উপস্থিত ইইয়া বানর রাজ্ঞের ধূলীধূদরিত এবং শোণিত-শিক্ত শরীর দন্দর্শনানন্তর তাঁহার চরণম্বরে পতিত ইইয়া—হানাথ! হানাথ! এই প্রকার বহুতর বিলাপ করিতে লাগিলেন ।৬।৭। অনস্তর দয়ুখাগত রঘুনাথকে অবলোকন করিয়া কহিলেন—হে রাম! যে বাণ দ্বারা মহারাজের প্রামি শীন্ত্র পতি সরিধানে গমন করিব—প্রাণপতি আমাকে প্রামি শীন্ত্র পতি সরিধানে গমন করিব—প্রাণপতি আমাকে প্রার্থনা করিতেছেন, হে রখুনন্দন! মহারাজ্ঞ বালী আমাকে প্রার্থনা করিতেছেন, হে রখুনন্দন! মহারাজ্ঞ বালী আমাকে ক্ষাকাল দর্শন না করিলে অর্গেও স্থাস্ভব করিতে পারেন না। ভোমাকে অধিক কি বলিব পত্নী-বিয়োগ জনিত হঃখ ভূমি স্বয়ং অনুভব করিতেছ—শীত্র আমাকে বিনষ্ট করিয়া মহারাজের নিকট প্রেরণ কর তাহা হইলে ভূমি পত্নী দান জনিত ফণ্য লাভ করিবে। ১।১০। অনস্তর স্থাীবের

ন্থগ্রীর ! ত্বং স্থাং রাজ্যং দাপিতং বালিঘাতিনা। বামেণ রুময়া সার্দ্ধং ভুংক্ষু সাপত্মবর্জিতম্ ॥ ১১ ॥
ইত্যেবং বিলপন্তীং তাং তারাং রামো মহামনাঃ।
সান্ত্র্যামাস দ্যুয়া তত্ত্বজ্ঞানোপদেশতঃ ॥ ১২ ॥

खिताय उवाछ।

কিং ভীরু ! শোচনি ব্যর্থং ? শোকস্থাবিষয়ং পতিম্ পতিস্থবায়ং দেহো বা জীবো বা বদ ভত্ত্বতঃ ॥ ১৩ ॥ পঞ্চাত্মকো জড়ো দেহস্তৃত্মাসরুধিরাভি্মান্। কালকর্মগুণোৎপন্নঃ সোহপ্যাস্থেহদ্যাপি তে পুরঃ ॥ মন্যদে জীব্যাত্মানং জীবস্তর্হি নিরাময়ঃ । ন জায়তে ন ম্মিয়তে ন তিষ্ঠতি ন গচ্ছতি ॥ ১৫ ॥

প্রতি অবলোকন করিয়া কহিলেঁন—ছে স্বগ্রীব! এক্ষণে তুমি বালী ঘাতী রামচন্দ্র কর্ম্ভক অর্পিত নিকণ্টক রাজ্ঞা ও নিজ পত্নী ক্যার সহিত পরম স্থে ভোগ কর। ১১।

মহামতি রামচন্দ্র ভাগার বিলাপ বাক্য শ্রবণানন্তর দয়ার্জ হইয়া তল্পজ্ঞানোপদেশ দ্বারা তাঁহাকে সান্ত্রনা করিতে লাগিলেন প্রীরাম কহিলেন, হৈ ভীক ! তুমি অশোচা পতির নিমিত্ত রুথা কি শোক করিতেছ ? যথার্থ বল দেখি এই রণভূমিশয়িত দেহ কিম্বা জীব উভয়ের মধ্যে পতি বলিয়া কাহাকে স্থির করিয়াছ। ১২। ১১। যদি দেহকে পতি বল তাহা হইলে শোকের বিষয় কিছুই নাই, যেহেতু ত্বক, মাংম, কধির ও অস্থি দ্বারা পরিপ্রিত পঞ্চ ভূলাক্ষক জড় দেহ কাল অদৃষ্ট ও সন্তাদি গুণযোগে উৎপন্ন হইয়াছে, ঐ দেহ অদ্যাপি ভোষার সম্মুথে বিদ্যানান রহিয়াছে। ১৯। যদি জীবাস্থাকে পতি বলিয়া দ্বির করিয়া থাক ভাষা হইলেও শোকের বিষয় কিছুই নাই, যেহেতু নিরামন্ধ ভাষার জনন, মরণ, গতি বা স্থিতি কিছুই নাই। ১৫। ক্লীব নহেত

ন স্ত্রী পুমাস্বা বঙ্গো বা জীবঃ সর্বাগতোহবারঃ।

এক এবাদ্বিভীরোহরমাকাশবদলেপকঃ।

নিভ্যো জ্ঞানময়ঃ শুদ্ধঃ স কথং শোকমহ তি ॥১৬॥

তারোবাচ।

দেহোহচিৎকান্তবদ্ধাম ! জীবো নিত্যশ্চিদাত্মকঃ।
স্থাদুংখাদিসম্বন্ধঃ কদ্য স্থাদ্ধাম ! মে বদ ॥ ১৩॥
জীবাম উবাচ।

অহঙ্কারাদিসম্বন্ধো যাবদেহেন্দ্রিঃ সহ।
সংসারস্তাবদেব স্থাদাত্মনস্ত্রবিবেকিন: ॥ ১৮॥
মিথ্যারোপিতসংসারে। ন স্বয়ং বিনিবর্ত্ততে।
বিষয়াস্ক্র্যায়মানস্থা স্বপ্লে মিথ্যাগমো যথা॥ ১৯॥

পরস্ক আকাশের ন্যায় সর্বব্যাপী নির্দেপ স্থতরাং দ্বিতীয় ব্যক্তির সম্বন্ধ রহিত এবং নিতা জ্ঞানময় নির্দাল এক পদার্থ সর্বভূতে সমভাবে বিরাজ করিতেছেন তাছার নিমিক্ত কি শোক করিতেছে?। ১৬। তারা কছিলেন—হে রাম! যদি এই দেহ কার্ছের ন্যায় অচেতন এবং জীবাস্থা জ্ঞানময় নিত্যপদার্থ তবে সংখ ত্বংখাদি ভোগ কাছার হয়? এক্ষণে আমার এই সংশয় ছেদ কর। ১৭।

জ্ঞারাম কহিলেন, যাবৎ কাল জীবাকা অবিবেক বশতঃ
দেহ ও ইন্দ্রিরাদিতে মদীয়ত বুদ্ধি পরিত্যাগ না করেন
তাবৎ কাল পর্যান্ত তিনিই স্থণ ভ্রংথাদি ভোগ করিয়া
থাকেন।১৮। ছে স্থন্দরি! মনুষ্যেরা বিষয় ভাবনা করিতে
করিতে নিজিত হইয়া বেমন স্পপ্রাবস্থায় ঐ চিন্তিত বিষয়ের
মিখ্যা সমাগম লাভ করে এবং ঐ অবস্থায় ঐ অলীক বস্তু
হইতেও স্বরং নিবৃত্ত হইতে পারে না, কিন্তু জাগ্রাদবস্থার
বিবেক শক্তি দারা নির্ত্ত হয়, সেই রূপ জীব দেহাভিমানাবস্থায় মিখ্যা সংসার আবোপ করিয়া ঐ অবস্থায় স্বরং
তাহা হইতে নির্ত্ত হইতে পারে না ১১৯। ছে বংসে! জীবাকা

অনাভিবিদ্যাদসন্ধাত্ত কার্যাহঙ্গু তে তথা
সংসারোহপার্থ কোইপি আ জাগ ছেবাদিসঙ্কু লঃ ॥২০
মন এব হি সংসারো বন্ধ শৈচব মনঃ শুভে । ।
আত্মা মনঃ সমানত্বমত্য তদ্গতবন্ধভাক্ ॥ ২১ ॥
বথা বিশুদ্ধঃ শুটিকোইলক্তকাদিসমীপতঃ ।
তন্ত দ্ব্যা ভান্তি বন্ধতো নান্তি রপ্তনম্ ॥ ২২ ॥
বুদ্ধী ক্রিয়াদিসামীপ্যাদাত্মনঃ সংস্তির্বলাং ।
আত্মা স্বিক্তি মনঃ পরিগৃষ্ঠ তদুভ্বান্ ॥ ২৩ ॥
কামান্ জ্বন্ গুণৈর্ক্তিঃ সংসারে বর্ত্তহেবশঃ ।
আদে মনো গুণান্ সূট্য ততঃ কর্মাণানেকধা ॥২৪
শুক্রলোহিতক্ষণনি গতয়ন্তৎসমানতঃ ।
এবং ক্র্মবশাক্ষীবো ভ্রত্যাভূতসংপ্রবম্ ॥২৫ ॥

সর্ব্বোপদং ছতে জীবো বাদনাভিঃ স্বকর্মভিঃ।
অনাদ্যবিদ্যাবশগন্তিষ্ঠত্যভিনিবেশতঃ ॥ ২৬॥
সৃষ্টিকালে পুনঃ পূর্ব্বাদনামানদৈঃ সহ।
জায়তে পুনরপ্যবং ঘটাষন্ত্রমিবাবশাঃ॥ ২৭॥
যদা পুণাবিশেষেণ লভতে সঙ্গভিং সতাম।
মন্তকানাং সুশাস্তানাস্তদামদ্বিষয়া মতিঃ॥ ২৮॥
মৎকথা প্রবণে প্রদ্ধা দুর্লভা জায়তে ততঃ।
ততঃ স্বরূপবিজ্ঞানমনায়াসেন জায়তে॥ ২৯॥
তদাচার্যপ্রিদাদেন বাক্যার্থজ্ঞানতঃ ক্ষণাং।
দেহেন্দ্রিয়মনঃ প্রাণাহ্ম্ভিভাঃ পৃথক্ স্থিত্ম।
স্বাদ্বান্থভাবতঃ সত্যমানন্দান্থানমন্ত্রম্।
জ্ঞাত্য সদ্যো ভবেমুক্তঃ সত্যমেব মরোদিতম্। ৩১

অবিদ্যা প্রভাবে দেহাভিমানী হইয়া রাগ দ্বেষাদি সঙ্কুল মিখ্যা সংসারে আবন্ধ হন। ২০। ছে কপীন্দ্রপত্নি! অস্তঃকরণই সংসারের কারণ ও স্থ হঃথাদি ভোক্তা জীবান্ধা অস্তঃকরণের সহিত মিলিত হইয়া তদগত স্থ হুঃথাদি ভো্য করিয়া থাকেন। ২১। অলক্ত সন্ধিছত নির্মাল ক্ষটিক মণি স্বভাবতঃ শুক্রবর্গ হইলেও অলক্তের প্রতিবিষ্ণ সম্পর্কে যে রূপ রক্ত বর্ণ লক্ষিত হয়, তত্রপ বিশুদ্ধ আন্মা অস্তঃকরণ ও ইন্দ্রিয়াদি সনিধানে সংসারী বলিয়া প্রতীত হইয়া থাকেন। ছে চাক্ষ ভাবিনি! জ্ঞানাদি গুণ বিশিষ্ট আত্মাকে অস্তঃকরণ দ্বারা অনুমান করিয়া দ্বির করিতে হয়, ঐ আত্মা অস্তঃকরণ সম্বন্ধ বশতঃ অস্তঃকরণের অবিবেক রূপ গুণ লাভ করিয়া বিষয়াদি ভোগা করতঃ রাগবেষাদি রূপ অস্তঃকরণ গুণ আবন্ধ হইয়া অনিচ্ছুক হইয়া ও সংসারে লিও হইয়া থাকেন, জীবান্ধা রাগ ব্রেষাদি রূপ অস্তঃকরণ গুণ লাভ করিয়া সদসংকার্য্য করেন,

দেই সদসংকার্য্য বশতঃ তাহার সদস্পতি লাভ হয়, জীব খণ্ড প্রলয় পর্যান্ত এই রূপে ভ্রমণ করেন, খণ্ড প্রলয় সময়ে বাসনা ও অদ্টের সহিত অন্তঃকরণে মিলিত হইয়। (অর্থাৎ উভয়ে একলা লাভ করিয়া) অনাদ্য বিদ্যায়লীন হইয়া থাকেন পূন্র্বার সৃষ্টি কালে পূর্ববাসনা ও অদ্টের সহিত আবিভূতি হন, এইরূপে জীবাঝা কুলাল চজের ন্যায় ভ্রমণ করিতেছেন ।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।২৭। যে সময় জীব পূর্বকৃত্ত পূণ্য বলে মন্তক্ত শান্ত প্রকৃতি সাধু জনের মধ্যে জয় প্রহণ করেন, সেই কালে আমাতে ভক্তি এবং আমার লীলা অবংগ অতিশয় আদ্বা লাভ করেন; অনস্তর ভক্তি হইলেই তাহার অনারাসে ঈশ্বর অরপ বিজ্ঞান হয়, বিজ্ঞান ইইবামাত্র জীবাঝা আন্চার্য্যোপদিষ্ট শান্ত অবণ ও মনন ও নিদিধ্যসনাদি ঘারা সত্য আনন্দমর আন্থাকে জীবাঝা ইইতে অভিয় এবং দেহ ইক্রিয়, মন, প্রোণ, ও অহন্ধার হইতে বিভিন্ন জ্ঞান করিয়া সদ্যই মৃক্তি লাভ করেন ইহা আমি নিশ্চয় উপদেশ করিলাম।

এবং ময়োদিতং সম্যাগালোচয়তি যোহনিশম্।
তক্স সংসারদুঃখানি ন স্পৃশস্তি কদাচন।। ৩২ ॥
তমপেতেমায়া প্রোক্তমালোচয় বিশুদ্ধীঃ।
ন স্পৃশ্বদে দুঃখল্পালৈঃ কর্মবন্ধাদ্বিমোক্ষ্যদে ৮৩৩।
পূর্মক্রমানি তে স্কুক্র ! কুতা মন্তক্তিরুত্তমা।
অতস্তব বিমোক্ষায় রূপং মে দর্শিতং শুতে ।॥৩৪
ধ্যাত্বা মদ্রুপমনিশমালোচয় ময়োদিতম্।
প্রবাহপতিতং কার্য্যং কুর্মবিত্যপি ন লিপ্যমে।। ৩৫
শ্রীরামেণোদিতং সর্মবং শ্রুত্বা তারাতিবিম্বিতা।
দেহাতিমানলং শোকং তক্ত্বা নত্বা রঘুত্তমম্॥ ৬৬
আত্মানুত্বসন্ত্রী জীবন্মুক্তা বভূব হ।
ক্ষণসঙ্গমমাত্রেণ রামেণ প্রমাত্মনা।। ৩৭ ।

ভাষানিবন্ধং নিধ্র মুক্তা সাপি বিকল্মবা।

মুগ্রীবোহপি চ তচ্ছুত্বা রামবক্তাৎসমীরিতম্।।৩৮
জহাবজ্ঞানমখিলং স্বস্থচিক্তোহতবন্তদা।
ততঃ মুগ্রীবমাহেদং রামো বানরপুক্ষবম্।। ৩৯ ।।
ভাতুর্জ্যেষ্ঠন্থ পুজেণ যত্যক্তং সাম্পরারিকম্।
কুরু সর্মাং যথানায়েং সংক্ষারাদি মমাজ্ঞয়া।। ৪০ ।।
তথেতি বলিভিমু থৈকানেরৈঃ পরিনীয় তম্।
বালিনং পুস্পকে কিপ্তা সর্মর জোপচারকৈঃ ।।৪১
তেরীদুন্তুভিনির্যোধৈত্র ক্লিপ্তা সর্মর জোপচারকৈঃ ।।৪১
যুথপৈর্মাণরৈঃ পৌরক্তঃগ্রয়া চাঙ্কদেন চ ।। ৪২ ॥
গত্বা চকার তৎসর্মাং যথাশান্তং প্রযত্নতঃ।
স্বাত্বা জ্ঞাম রামন্থ স্থাপান্তং প্রযত্নতঃ।

। ১৮। ১৯। ৩০। ৩১। যে বাক্তি এই সমস্ত আমার উপদেশ ৰাক্য গ্ৰাছণ করিয়া অনবরত মনে মনে আলোচনা করে, সংসার দুঃথ ভাছাকে কদাচ স্পর্শ করিতে পারিবে না, ছে ভামিনি! তুমিও পবিত্রাস্তঃকরণ হইয়া মতুপদিষ্ট বাক্য সকল মনে মনে আলোচনা কর তাছা ছইলে সংসাররপ ভুংথ রাশি তেশমাকে স্পর্শ করিতে পারিবে না এবং তুমি কর্মা বন্ধন ছই-তেও মুক্তি লাভ করিতে পারিবে।৩২/৩৩। হে সুত্র ! পূর্বজন্মে ত্মি আমার প্রতি একান্ত ভক্তি প্রকাশ করিয়াছিলে সেই কারণে তোমাকে মুক্ত করিবার জন্য রামরূপে দর্শন দিলাম। ছে ভডে ! তুমি একশে আমার রাম রপা ধ্যান করভঃ মত্প- ф मिक्के वर्षका ज्ञकन मान मान व्यातनाहना करा, जारा इरेल সংসার-প্রবাহ-পতিত কার্য্য সকল করিয়াও সংসারে লিপ্ত হইতে হইবে না। ৩৪। ৩৫। তারা অতি বিষয়ে সহকায়ে জীরামের উপদেশ বাক্য ভাবণ করিয়া দেহাভিমান জনিত শোক পরিত্যাগ পূর্ব্বক রঘূনন্দনকে প্রণাম করিলেন। ৩৬। এবং মির্ডিশয় ত্রন্ধানল অহভব করতঃ জীবন্মুক্তদিগ্রের ন্যায়

व्यवस्था थां थ इहेलन। बीदां महत्त कनकान मर्पा ठावांत সংসার বন্ধন ছেদ করিয়া ভাহাকে নিম্পাপ ও নির্বাণ মোক ভাজ করিলেন; মছাত্মা স্থাতীবও জীরাম মুখ বিনির্গত সহুপ-দেশ বাক্য প্রবর্গানন্তর অজ্ঞান রাশি ছইতে মৃক্ত হইয়া স্কুস্থ অনন্তর রামচন্দ্র বানর-পুষ্ব স্থাবিকে চিত্ত হইলেন। আহ্লান করিয়া কহিলেন। ৩৭।৩৮।৩৯। হে সধে! তুমি ভাতৃস্পুত অঙ্গদ দাবা জোষ্ঠ ভাতা বালির পারনে কিক সংস্কারাদিকার্যা যথাবিধি সম্পাদন কর, সুগ্রীব তথাস্তু বলিয়া জীগামবাকো সন্মত হইয়া কভিপয় প্রধান বানর দ্বারা বাণির মৃত দেহ বছন করাইয়া পুষ্পক সদৃশ বিমানে সংস্থাপন করা-ইলেন। পরিচারকেলা স্থাীবাজ্ঞার রাজার ন্যার সেই মৃত বেহের পরিচর্ক্তা করিতে লাগিল এবং বানরগণ **চতুর্দ্ধি**কে ভেরী ও হন্দুভিধনি দারা কিছিস্কা। নগর পরিপূর্ণ করিল। অন-ন্তর স্থাীব, কভিপন্ন ব্রাহ্মণ এবং মন্ত্রিগণ ভারা ও অঙ্কদ সমভিব্যহারে বিমানাক্ত মৃত বালি-দেহের অনুগ্রমন করিতে নত্বা রামস্থ চরপে স্থানীবং প্রাহ ক্ষেথীং।
রাজ্যং প্রশাধি রাজেন্দ্র! বানরাণাং সমৃদ্ধিন্ত। ৪৪
দাসোহহন্তে পাদপদ্মং সেবে লক্ষ্মণবচ্চিরম্।
ইত্যুক্তো রাঘবঃ প্রাহ স্থাবং সন্মিতং বচঃ॥ ৪৫
ঘনবাহং ন সন্দেহং শীব্রং গচ্ছ মনাক্ষরা।
পুররাজ্যাধিপত্যে ছং স্বাহ্মানমভিষেচর॥ ৪৬॥
নগরং ন প্রবেক্ষ্যামি চতুর্দিশসমাং সথে!।
আগমিষ্যতি মে ভাতা, লক্ষ্মণং পত্তনং তব॥ ৪৭॥
অঙ্কদং বৌবরাজ্যে ঘুমভিষেচর সাদর্ম্।
আহং সমীপে শিশরে পর্যবিত্য সহামুক্তঃ॥ ৪৮॥
বিংশ্রুণকালং পুরে স্থিতা সীতারাং পরিমার্গণে॥৪৯

নাফাঙ্গং প্রনিপত্যাহ স্থ্রীবো রামপাদয়ে।

যদাজ্ঞাপরদৈ দেব ! তত্তবৈ করোমাহম্।। ৫০॥

অনুজ্ঞাতত্ত্ব রামেণ স্থ্রীবস্ত নলক্ষণঃ।

গছা পুরং তথা চক্রে যথা রামেণ চোদিতঃ।।

স্থ্রীবেণ তথা ন্যায়ং পুজিতো লক্ষণস্তদা।

আগত্য রাঘবং শীঘ্রং প্রনিপত্যাপতস্থিনান্।।৫২

ভবো রামো জগামাশু লক্ষণেন সমস্বিতঃ।

প্রবর্গনিরেরজর্ম শিখরং ভূরিবিস্তরম্॥ ৫৩॥

তবৈকং গল্পরং দৃক্ষা ক্লাটিকং দীপ্তিমচ্ছুভুম্।

বর্ষবাতাত্বসহং ফলমূলসমীপগম্।

বাসায় রোচয়ামান তত্র রামঃ সলক্ষণঃ॥ ৫৪॥

লাগিলেন কিয়দ র গ্রমানতর সমুচিভন্থানে অঞ্চ দারা যথা-বিধি সেই মৃতদেহ সংস্থারাদি কার্যা করাইলেন। অনন্তর স্থাীৰ সানাদিকাৰ্য্য সমাপন পূৰ্ব্যক কতিপয় মঞ্জির সহিত শ্রীরাম চরণে প্রণাম করিয়া সহর্ষ জ্বামে কহিলেন-ছে ্রাজেন্দ্র ! তুমিই এই সমৃদ্ধি সম্পন্ন বানর রাজ্য শাসন কর, আমি লক্ষ্মণের ন্যায় আক্ষান্তবর্ত্তী ছইয়া চিরকাল ভোমার পাদপদ্ম দেবা কৰিব। এীবামচন্দ্ৰ স্ত্ৰীবের এইরূপ ভ্কিণৰ্ভ ৰাক্য অবণানস্তর ঈষ্ণ গ্রাস্য করিয়া কছিলেন—ছে সংখ ! তুমি আমা-২ইতে অভিন ইংগতে সন্দেহ নাই, অভএৰ শীজ্ঞ গমন করিয়া আমার আজামুসারে কিফিক্যাপুর রাজ্যাধিপত্যে আত্মাকে অভিষিক্ত কর । ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪: ৪৫। ৪৬। হে কণীক্র! আমি পিতার আক্রাত্বতী হইয়া চতুর্দণ বংসর কাল নগার প্রবেশ করিব না, এই নিমিত্ব দে স্থানে আমি স্বয়ং গ্রন নাকরিয়ালক্ষ্মণকে প্রেরণ করিব, ভ্রাতা লক্ষ্মণ] তোমার গৃহে অবলা গমন করিবেন—হে স্বথে ! তুনি অঞ্চক দমাদর পূর্বেক যৌবরাজো অভিষিক্ত করিবে, যাহা ছউক একণে আমি লক্ষাণের সহিত নিকটবর্তী পর্বেড শিখরে এক

বংশর কাল বাদ করিব, তুমি অপ্পকাল মাত্র পুর মধ্যে অবস্থান করিয়া পশ্চাং সীতাশ্বেষণে মত্রবান হও। অনন্তর স্থ্রীব রামচরণারবিদ্দে সাফ্টাঙ্গ প্রনিপাত করিয়া কহিলেন—হে দেব! আপনি যেরপে আজ্ঞা করিলেন আমি তাছাই করিব, অনন্তর স্থ্রীব লক্ষ্মণের সহিত কিছিল্লা নগবে গমন করিয়া শ্রীরামের আদেশামূরপ সকল কার্ম্য নির্বাহ করিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। মহাবীর লক্ষ্মণ স্থ্রীব কর্ক্ষক যথোচিৎ পুদ্ধিত হইয়া শ্রীরাম সনিধানে আগামন পূর্বক তাঁহাকে প্রণাম করিলেন। ৫২। অনন্তর শ্রীরামচন্দ্র লক্ষ্মণের সহিত মিলিত হইয়া প্রবর্ষণ নামক পর্বতের অতি বিস্তৃত উদ্বতদ্ব শিথরে গমন করিলেন। শ্রীরামচন্দ্র সেই স্থানে ক্ষ্মিক মনিমর স্থাক প্রভাগ সমূজল রিট, বায়ু ও স্কাভপ নিবারক ক্রেটী গছরের এবং সেই গহরর সনিছিত বনস্থিত স্থাতু ফল মূলাদি প্রচুর পরিমানে অবলোকন করিয়া লক্ষ্মণের সহিত প্রায়ানে স্বারাক্ষা ক্ষ্মণের সহিত

দিব্যমূলফল পুষ্পাসংযুক্তে
মৌক্তিকোপমজলে ।
চিত্তবর্ণমূগপ কিশোভিতে পর্বতে

হে পর্বতে বাস করিয়া ছিলেন ঐ পর্বতের বিবিধ স্থচাক ফল মূল পুষ্পা এবং মুক্তাসদৃশ নির্মাণ জল ছারা পরিপ্রিড বহুত त्रचूक्ताख्याश्वम् । (c)।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
কিন্ধিন্দ্যাকাণেও তৃতীয়োহধ্যায়ঃ।
সবোবর ও নয়নানন্দ্রজন বিচিত্র বর্ণ পক্ষিণণ স্থানে স্থানে
লক্ষিত হইত । ৫৫।

ইতি শ্রীমদধ্যাস্থরামারণে উমামছেশ্বরসম্বাদে কিন্ধিল্যাকাণ্ডে তৃতীয়োহধ্যারঃ।

চতুর্থয়োঽধ্যায়ঃ।

তত্র বার্ষিকদিনানি রাঘবো।

লীলয়া মণিগুহাসু সঞ্জারন্।
পক্ষমূলকলভোগতোধিতো
লক্ষণেন সহিতোহ্বসৎ সুখম্॥ ১॥
বাতনুমঞ্জলপূরিতমেঘান্তরস্তনিতবৈদ্যুতগর্ত্তান্।
বীক্ষাবিসায়মগাদ্গজ্যথান্যদ্বাহিতসুকাঞ্চনকক্ষান্

শ্রীরামচন্দ্র সেই পর্কতে ইতন্তত মণিমর গুছা মধ্যে সক্ষরণ করভঃ সুপক ফলমূল ভোজন দারা পরিভৃপ্ত হইয়। সীভা ও লক্ষ্মণের সহিত পরম সুখে এক বর্ষ কাল অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। ১। সেই স্থানে শ্রীরামচন্দ্র কোন দিবস তড়িত সংযুক্ত এবং শক্ষারান বাতসঞ্চালিত সক্ষল ভলদাবলী সন্দর্শন করিয়া সুবর্ণমর পৃষ্ঠান্তরণ শোভিত গম্বন্যুথ ভ্রমে বিন্মরাপর ছইতেন। ২। এবং ঐ স্থানের নর মাস

নবঘাসং সমাসাদ্য হৃষ্টপুষ্ঠমৃগদ্বিজ্ঞা:।
ধাবস্তঃ পরিতোরামং বীক্ষ্য বিক্ষারিতেক্ষণাঃ॥ ত
ন চলন্তি সদা ধ্যাননিষ্ঠা ইব মুনীশ্বরাঃ!
রামং মানুষকপেণ গিরিকাননভূমিষু॥ ৪॥
চরন্তং পর্মাত্মানং জ্ঞাত্বা সিদ্ধাণা ভূবি।
মুগপক্ষিগণা ভূত্বা রাম্যেবানুদেবিরে॥ ৫॥

ভক্ষণ ধারা হাই প্রীক্ত মৃগ পক্ষি গণ ইতন্তত বিচরণ কালে পথি মধ্যে জীরামকে দর্শনান্তর ধ্যানস্থ মুনিগণের নিণর নিজ্পান হইরা জানিমের লোচনে জবস্থান করিত এবং সিদ্ধ গণ গিরি-কানম সঞ্চারী রামকে মানুষ রূপী প্রমাজ্যা নিশ্চর করিয়া মৃগ ও পক্ষি রূপ ধারণ পূর্বক জীরামের জনুগমন করিতে লাগিলেন। ৩18। ৫। একদা ধ্যাননিষ্ঠ জীরামচন্দ্র দৌমিত্রিরেকদা রামমেকাত্তে ধ্যানতৎপরম। সমাধিবিরমে ভক্তা প্রণয়াদ্বিনয়াম্বিভঃ॥ ७॥ অব্ৰবীদেব! তে বাক্যাৎ পূৰ্ব্বোক্তাদ্বিগতো মম। जनामा विमाग खुठः मः भारता ऋषि मः खिठः ॥ १॥ इनानीः खाञ्जिष्णामि किशोमाटर्गन ताघव !। जवनाताधनः (लाटक यथा कुर्वास्त्र (यातिनः ॥ ৮ ॥ इन्ट्रिय मना প्राइट्यांशित्ना मुक्तिमाधनम् । নারদোহপি তথা ব্যাসো ব্রহ্মা কমলসম্ভবং ॥৯॥ ব্ৰহ্মক্তাদিবৰ্ণানামাশ্ৰমাণাং চ মোক্ষদম। ত্রী শূদ্রাণাং চ রাজেন্দ্র ! স্থলভং মুক্তিসাধনং। তব ভক্ত্যায় মে ভাত্তে ক্রহি লোকোপকারকং ॥১০ @ বাম উবাচ।

यस शृंकाविधानमा नाटखारेख त्रघूनन्मन !। তথাপি বক্ষ্যে সংক্ষেপাদ্যথাবদন্তপূর্ব্বশঃ॥ ১১॥

সমাধি সমাধানন্তর নির্জনে উপবেশন করিলে লক্ষণ ভক্তি ও প্রেণয় সহক্রত বিনয় বচনে কহিলেন—হে দেব ! আপনি আমাকে পুর্বেষ্কি যে সকল জ্ঞানোপদেশ করিয়াছেন, ভদারা আমার অবিদ্যা জনিত হানর সংশয় বিচ্ছিন হইয়াছে : কিন্তু যোগিগুণ যেরপ লেকিক পূজাদি নিয়মানুসারে আপনার আরাধ করে ঐ প্রকার প্রজার নিয়ম এবণ করিতে ইচ্ছা করি। ৬ এ হে ভগবন্! নারদ, বাাস, কমলযোনি ব্রহ্মা এই সকল স্ক্রে^{নাগি} সন্ধ্যোপাসনাদি করিবে, ভদনন্তর কন্ম সিদ্ধির নিমিত সংকম্প গণ পূজার নিয়মানুসারে আপনার আবাধনাকে মুক্তি _কি^{সাধন} করিয়া আমা হইতে অভিন্ন বৃদ্ধিতে গুরু পূজা করিবে, তদনন্তর বলিয়াছেন। ৮।৯। হে দরামর! ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় প্রভৃতি চ_{ুল}ীতুর্বার্ণ শিলা নির্মিত মদীয় প্রতিমাতে স্নাল করাইবে মৃত্মরাদি প্রতি-ও ব্রী জাতিরও মোক্ষের স্থলভ উপায়, স্বতরাং সর্ববেলা, কোপ- গভে মার্জন করিবে, তদনভর স্থতি শাস্ত্রোক্ত গন্ধ পুলাদি কারক সেই পূজার নিয়ম গুলি আপনার ভক্ত এ ই কনিষ্ঠ ভাতার প্রতি রূপা প্রকাশ করিয়া ব্যক্ত করুন। ১০ 📜 । 🗃 রাম ংছিলেন—ছে ভ্রাতঃ! আমার পূজা নিরমের ফুরীমা নাই, ভথাপি সংক্ষেপে আসুপুর্বিক কিঞ্চিৎ নিয়ম বি^{শিতেছি} অবণ

সগৃহেণাক্তপ্রকারেণ দ্বিজত্বং প্রাপ্য মানব:। मकानारम खरतार्माजः नक्षा महक्तिमःयुटः ॥ ১২ **ज्य मक्षानिक विधिन्नी एमवा वा भए है ।** क्रमस्य वानरल वार्ट्ड श्रिकारमे विভावस्त्रे । । ।।। শালগ্রামশিলায়াৎ বা পূজয়েশ্মামতব্দ্রিতঃ। প্রাতঃস্নানং প্রাকৃকীত প্রথমং দেহশুদ্ধয়ে ॥ ১৪॥ (विष्ठ खाहिटेक में खिन्न क्लिपन विधानकः। मक्तानिकम्म यञ्चिष्टाः छ०कुर्यग्राविधिना तूथः।।১৫॥ मक्षण्यादमी कूकीं व मिश्रर्थः कर्मानाः सूरीः। স্তারুং পুজারেডক্তা মলুধ্যা পুজাকো মম। ১৬ 1 শিলায়াং স্বপনং কুর্য্যাৎপ্রতিমান্ত প্রমার্জনম। প্রসিদ্ধৈর্গন্ধপুস্পাদ্যৈর্মৎপুজানিদ্ধিদায়িকা ॥১৭ ॥ অমায়িকোইনুরত্ত্যা মাং পূজয়েরিয়তব্রতঃ। প্রতিমাদিষ লঙ্কারঃ প্রিয়ো মে কুলনন্দন ! ॥১৮॥

কর—মনুষ্যেরা যথা শান্তানুসারে দিজত্ব লাভ করিরা সদ্গুক मित्रिशास्त एकि शृर्तिक मञ्ज शहर कविद्य, ज्यास्त्र शक्नामिक विधानाजूमादि आभारकहे शृक्षा कितिरत, औ शृक्षा निक मानएम বা আগ্নিতে কিন্তু। স্থবৰ্গ বজভাদি প্ৰতিমাতে ব্ৰাহ্মণে সুৰ্যামণ্ডলে কিশ্ব। শাণগ্ৰাম শিলাতে অতি প্ৰশস্ত ফলদায়ক। ছে লক্ষ্মণ। পণ্ডিত ব্যক্তি প্রথমতঃ দেহ শুদির নিমিত্ত যথা শাস্ত্র মৃতিকা লেপনাদি বিধানানুসারে প্রাতঃস্থান-তদনভর যথাবিধি পচার দারা ঐ প্রতিমাতে আমার পূজা করিয়া মহুযোরা पंख्ये मिश्वि नाड कदिर्द, किंख एखामि मृना इटेश मश्यम পূর্ণক গুরুপদিষ্ট বিধানারুদারে পূজা করিলেই উক্ত ফলপ্রাপ্ত रहे। मजूरा, अजिके कन रहेर्द ना। (इ क्लममन। व्यक्ति-

অগ্নে যালেত হবিবা ভাক্ষরে স্থান্তিলে যাজেৎ। ভক্তেনোপঙ্গতং প্রীতাৈ শ্রদ্ধয়া মম বার্যাপি ৷১৯॥ কিং পুমর্ভক্যভোক্যাদিগন্ধপুস্পাকতাদিকং। शृकाखनानि नर्कानि नः भारेनावः नमात्रकः ॥२०॥ टेव्ना जिन कूरेमः मगुनामनः পরिकण्णदश्र । তত্তোপবিশ্য দেবস্ত সংমুখেশুদ্ধমানসঃ॥ ২১॥ ততো ন্যাসং প্রকুরবীত মাতৃকাবহিরান্তরম্। কেশবাদি ততঃ কুর্য্যান্ত জ্বন্যাসং ততঃ পরম্ ॥ ২২ মশ্র তি পঞ্জরন্যাদং মন্ত্রন্যাদং তত্তোন্যদেও। প্রতিমাদাবপি তথা কুর্য্যান্নিত্যমডব্দ্রৈত:॥ কলশং স্বপুরো বামে ক্ষিপেৎ পুস্পাদি দক্ষিণে। অর্যাপাত্যপ্রদানার্থং মধুপর্কার্থমেব চ॥ ২৪॥

তरेथवाह्यनार्थः जुनारमः भावहजुकेशम्। হৃৎপত্মে ভামুবিমলাৎ মৎকলাং জীবসংক্তিতাম भारत्र अदे कर विवाद करा वा श्रास्त्र किया है। তামেবাবাহয়েরিত্যং প্রতিমাদিরু মৎকলাম্ ॥২ ৮॥ পাछार्यगारमनीयारेछः स्नानवस्ति वृष्टेनः। যাবচ্ছক্যোপচারের। বুর্চয়েশ্বামমায়য়া । ২৭।। বিভবে সতি কপুরিকুস্কু মাগুরুচন্দরৈঃ। অচ রেক্সন্তবন্ধিত্যং স্থানাকুসুমৈঃ শুভৈঃ ॥২৮॥ मनावतनशृकाः देव ञागरमाकाः श्वकातरहरः । নীরাজনৈধূপিদাপৈটনবেলৈর্বিবিধক্তথা॥ ১৯॥ শ্রদ্ধাপহরেরিতাং শ্রদ্ধাভুগহমীশ্বরঃ। হোমং কুর্য্যাৎপ্রায়ত্ত্বেন বিধিনা মন্ত্রকে:বিদঃ ॥৩০॥

মাদিতে পুজা করিতে ছইলে পুজ্পাদি উপচার আবশাক, জন্মি, সূর্য্য ও স্থৃঞ্জিল মৃত্তের আবশ্যক্ত। (অর্থাৎ মৃদ্দার। অনলাদিতে ছোম করিবে) হে ভ্রাতঃ! ভোনাকে অধিক কি বলিব—ভক্ত ব্যক্তি কেবল জলদারা যদি আমাতে শ্রদ্ধা পুর্বক পূজা করে ভাছা হইলেও আমার প্রীতি হয়, ভক্তি থাকিলে ভক্ষ্য, ভোজ্ঞ্য, গন্ধ, পুষ্পা, অক্ষত্ত ধূপ, দীপা নৈবেদ্য প্রভূতি কোন উপচারের প্রয়োজন থাকেনা, যাগ ছউক এক্ষণে পূজা সমস্ত পূজার দ্রব্য সংআছ করিবে, তদন্তর কুশাসবোপরি অজিনাসন—তত্ত্পরি কম্বাদন আস্ত করিয়া তত্ত্পরি বিশুট চিত্তে উপবেশন পূৰ্ব্বক দেবতা সন্মুখে মাতৃকান্যাস ও আৰ ষাতৃক ন্যাস করিয়া বাছ ন্যাস, অন্তন্যাস, কেশব ক্লডাদি ন্য তদমন্ত্রর তত্ত্বাস, বিষ্ণুপঞ্জর ন্যাস ও মন্ত্র ন্যাস করিবে। ৩ছ मा पर्छ পূৰা করিতে হইলেও এই সকল ন্যাসের আবশ্যতা अवर भूकक वाक्ति वकीत वामकारा क्रमभूव अक**ी क्रम अवर**

मिक्किन जारन श्रूष्ट्रामि ७ वर्षा श्राब शामा, शांक मधुशकेलाल এবং আচমনীয় পাত্র এই চারিটী পাত্র রক্ষা করিবে এবং নিজ क्रमत्र পদ्म ममीत्र कलारक জीবরূপে ভাবনা করিবে, হে অবি ন্ম! পূজক ব্যক্তি নিজ দেছকে ও মদীয় কলাদ্বারা ব্যাপ্ত জ্ঞান করিয়া প্রতিমাদিতে ঐ কলাকে আবাহন করিবে। ১১।১২ 152 1 28 124 126 139 129 120 125 1251 रे ७।२४।२৫।२७। अन्छत्र म्छानि मृना रहेश शामा, নিয়ম বলিতেছি প্রবণ কর—হে লক্ষ্মণ ! সাধক ব্যক্তি প্রথমতঃ অর্থা, আচমনীয়, আনীয়, বস্ত্র, অলক্ষার প্রভৃতি যথা শক্তি উপ চার ६ পরা আমাকে পূজা করিবে; পূজাক বিভবশালী হটলে কর্প_{ুর্মা} কুমকুম, অগুরু চন্দ্র এবং স্থলর স্থান্ধি পূস্প, ধূপ, मील, शिवविध टेनट्रमा ७ लक्षविध नोबाक्सनोनि घाता आमारक পূজা কার্বিবে এবং দশটী আবরণ দেবতার অগস্তা সংহিত্যে জ भूजा कराषि 8 जावगाक 1241 रहा 12% एव वहम ! भूजक वालि अका श्रविक्क यपि कामारक के नकन छेनात क्षान करत काड ছইলে এহ^কে করিব যেহেতু আমি অন্ধার বনীভূত লখন, টে

खनरखारनाक्रमादर्गन कृरखनानमितिख्यः।

जुरुवान्य नमरखन शृश्युरक्रनाथना त्यः॥ ७०॥

खथरनाश्यानमाद्यो ना हक्रमा द्विमा छथा।

छख्काम् नम्प्रथाः मिन्द्राज्यनंजूविख्य्॥ ७२॥

याद्राप्तनन्त्रमधाद्यः ह्यामकात्न मना त्यः।

शाद्राप्तनन्त्रमधाद्यः ह्यामकात्न मना त्यः।

शाद्राप्तनन्त्रमधाद्यः ह्यामकात्न मना त्यः।

शाद्राप्तन्त्रमधाद्यः ह्यामकात्मयः ममाश्रद्यः॥ ७० ।

य्वतामः ह छात्र् नश्चा श्वीजिममित्रजः॥ ७० ॥

यम्र्यामः ह छात्र् नश्चा श्वीजिममित्रजः॥ ७० ॥

यम्र्यामः ह छात्र् नश्चा श्वीजिममित्रजः॥ ७० ॥

यम्र्यामः छ छात्र् नश्चा श्वीजिममित्रजः॥ ७० ॥

यम्र्यामः छ उष्ण् नश्चा श्वीजिममित्रजः॥ ७० ॥

লাত:। মন্ত্র বিশারদ পূজক বাক্তি পূজান্তে আমার প্রীতির িমিত্ত যতু পূর্ব্বক যথা বিধি ছোম করিবে।৩০। তে অরিন্দম! গোম করিতে হটলে কুণ্ডেব আবিশ্যকতা, ঐ কুণ্ড আগস্তা সংহিত্যেক্ত বিধানাত্মারে পণ্ডিত ব্যক্তিরা নির্মাণ করিবে। অনন্তর আমার মূল মন্ত্র ছারা অথবা পুরুষস্তুক ভারা হোম করিবে, ছে ল্রাভঃ ৷ এই যে কুণ্ডে ছোমের বিধি কছিলাম ইছা শুদ্রাদি ও নির্ম্পাক ত্রাক্ষণের কর্তব্য, সাথিক ত্রাক্ষণেরা নিজ উপাস্য অগ্নিজে বত রূপ চক ছারা ছোম করিবে, ভাখাদের কুগু নিশ্মানের আবশ্যকতা নাই। হে বংস ! পণ্ডিত বাব্দিরা হোম कारल व्यनन माक्षा व्याचात मरुख पूर्व ममृण ममूजल अवश সর্বালহার ভূষিত রূপ চিন্তা করিবে-অনন্তর হসুমৎ প্রভৃতি मनीत्र शार्तन दर्गाक विन क्षानाम कवित्रा हाम मगाश कवित् । । ৩১। ৩২। ৩৩। (হ ভাতঃ ! অনন্তর পুত্রক ব্যক্তি বাক্য मश्यम शूर्वक आभारक ठिखा कर र मनीय मृत मह अभ कदिरव, ভদনস্তর সুপ্রীত মনে কর্গ্রাদি মি ভ্রিভ তামুল আমাকে প্রদান করিয়া মৎপ্রীতার্থে স্বয়ং নৃতা গীত ও স্তব পাঠাদি ফ্রিবে, অনস্তর আমাকে হৃদ্যে ভাবনা করতঃ ভূমিতবে দণ্ডবং

শিরস্তাধার মদত্তং প্রসাদং ভাবনামরন্।
পাণিত্যাং মৎপদে মুর্দ্ধি গৃহীত্বা ভক্তিসংযুতঃ ॥ ৩৬
রক্ষ মাং ঘোরসংসারাদিত্যুক্ত্বা প্রণমেৎ স্থবীঃ।
উদ্ধানরেস্তাথা পূর্বাং প্রতাগ্জ্যোতিষি সংশারন্॥ ৩৭
এবমুক্তপ্রকারেণ পূজ্যেদ্বিধিবদাদি।
ইহামুত্র চ সংসিদ্ধিং প্রাপ্রোতি মদমুগ্রহাৎ ॥ ৩৮॥
মন্তক্তো যদি মামেবং পূজাং চৈব দিনে দিনে।
করোতি মম সার্পাং প্রাপ্রোত্যের ন সংশায়ঃ ৪৩৯

ইদং রহস্তং প্রমং চ পাবনং মারৈ সাক্ষাৎকথিতং সনাতনম্। পঠত্যজাস্ত্রং যদি বা শানোতি যঃ স সর্মপুজাফলভাত্ন সংশয়ঃ ॥ ৪০॥

প্রণামানন্তর আমার প্রসাদিত পূজাদি আমাকর্জ্ক অপিত ভাবনা করিয়া মন্তকে ধারণ করিবে এবং মনে মনে ভল্কি পূর্বেক ইছা ভাবনা করিবে যে, ইফ্ট দেবের চরণ যুগল নিজ পাণি যুগল ঘারা গ্রহণ করিয়া মন্তকে ধারণ করিলাম; অনন্তব পরম জ্ঞানী পূজক রুভাঞ্জলি পূটে ছে ভগবন্! আমাকে গোব সংসার হইতে পরি ত্রাণ ককন—এই রূপ আমার নিকট প্রার্থনা করিয়া প্রণাম করিবে, ভদনন্তব হৃদয়স্থ জীব হইতে আবাহিত মহকলাকে বিসর্জন করিবে অর্থাৎ ঐজীবেতে প্রবিষ্ট ভাবনা করিবে। ৩৪:৩৫।৩৬।৩৭। হে লক্ষ্মণ! মন্তক্ত ব্যক্তি যদি এক-বার উক্ত প্রকারে আমাকে পূজা করে তাহা হইলে ইছ কালে ও পর কালে সিদ্ধি প্রাপ্ত হয়, গদাপি প্রতিদিন উক্ত নিয়মে পূজা করে তাহা হইলে ইছ কালে গুলা করে তাহা হইলে হিছ কালে পূজা করে তাহা হইলে ইছ কালে পূজা করে তাহা হইলে ইছ কালে পূজা করে তাহা হইলে হিছ কালে পূজা করে তাহা হইলে হিছ কালে পূজা করে তাহা হইলে নিশ্চয় অন্যার সাজপা প্রাপ্ত হয়। তাহাতা যার সমক্ষে আমি যে অতিপাশন পরম গুহা সনাতন পূজা বিধি কছিলাম—ইছা যে বাক্তি সভত পাঠ বা প্রবণ করিবে সে বাক্তি নিশ্চয় সকল পূজার ফল

তবং পরাত্বা শ্রীরাম: ক্রিয়াযোগ্যমন্ত্রমন্।
পৃক্টঃ প্রাহ্ সভক্তায় শেষাংশায় মহামনে ॥ ৪১ ॥
পূন: প্রাক্তবজামো মায়ামালয়া দুংখিতঃ।
হা সীতেতি বদমেব নিজাং লেভে কথঞ্চন ॥ ৪২ ॥
এতিমায়ন্তরে তত্ত্র কিন্ধিন্তাায়াং স্কর্দ্ধিমান্।
হন্মান্ প্রাহ্ স্থাবিমেকান্তে কিপিনায়কম্ ॥ ৪৩॥
খণু রাজন্! প্রবক্ষামি তবৈব হিতম্ভ্রমন্।
রামেন তে কৃতঃ পৃক্রমুপকারে। হন্ত্রমঃ ॥ ৪৪ ॥
কৃতত্ববভ্রা ফ্নং বিস্ফুতঃ প্রতিভাতি মে।
ভ্রহতে নিহতো বালী বীরক্তৈলোক্যসন্মতঃ ॥৪৫

রাজ্যে প্রতিষ্ঠিতোহদি স্বং তারাং প্রাপ্তোহদি ছর্লভাম্। সরামঃ পর্বতন্তারে
ভারা সহ বসন্ স্থী: ।। ৪৬ ।

হদাগমনমেকাগ্রমীকতে কার্যগোরবাৎ ।

হং তু বানরভাবেন স্ত্রীসক্তো নাবর্ধ্যমে ॥ ৪৭ ॥

করোমীতি প্রতিজ্ঞায় সীতায়াঃ পরিমার্গণম্ ।

ন করোমি ক্রতমুন্তং হন্যদে বালিবদ্দ্রতম্।॥ ৪৮ ॥

হমুমদ্বনং শ্রুত্বাবা ভ্রবিদ্ধানঃ ।

প্রত্রাচ হন্মন্তং সভ্যমেব হুয়োদিতম্ ॥ ৪৯ ॥

শীস্তং কুরু মদাজ্ঞাং হুং বানরাগাং ভরম্বিনাম্ ।

সহস্রাণি দশেদানীং প্রেষয়াশু দিশো দশ ॥ ৫০ ॥

সপ্তদ্বীপগতান্ সর্বান্ ব্যেনরানানয়ন্ত তে ।

পক্ষমধ্যে স্মায়ান্ত্রসর্বে বানরপুক্ষবাঃ ।। ৫১ ॥

ভাগী ছইবে। ৪০। শ্রীরামচন্দ্র জিজ্ঞাসিত হইরা পরম ভক্ত শেষাবভার মহাত্মা লক্ষ্মণের নিকট উক্ত প্রকাব ক্রিয়া যোগ কহিলেন, অনস্তর ক্ষণেই প্রাক্ত মনুষের ন্যায় মারাবলম্বন পূর্বক অতি ভুঃথ সন্থকারে 'হাসীতে,' এইপ্রকার বহু বিলাপ করিতে কবিতে কোন প্রকাবে নিজিত ইইলেন। ৪১।৪২। এই সময়ে কিজিস্ক্রাণ নগরে নির্জ্জনোপবিষ্ট কিশা নারক

এই সময়ে কিছিল্পা নগরে নির্জনোপবিষ্ট কিপা নারক সুপ্রীবিকে সুবৃদ্ধি ছত্মান কহিলেন। ৪৩। ছে মছারাজ! আপনার পরম হিত কিছু বলিতেই শ্রবণ কফন—প্রথমতঃ শ্রীরামচন্দ্র আপনার অভিশয় উপকার করিরাছেন, এক্ষণে আমার বিবেচনা হয় আপনি ভাষা বিশ্বত হইয়া কভরের ন্যায় নিশ্বিত রহিয়াছেন। ছেমহাজাগ! সেই উপকার সামান্য নহে, দেখুন শ্রীরাম ত্রিলোক বিথ্যাত মহাবীর বালিকে ভোমার নিমিত্ত রণ ভূমিতে নিহত করিয়া ভোমাকে কিছিল্বা। রাজ্যে অভিষক্ত করিয়াছেন এবং তাঁহারই সাহায়ে পরম হল্ভ। তারাকে প্রাপ্ত হইয়াছ একণে সেই

শ্রীরামচন্দ্র অনুজের সহিত পর্বাত শৃদ্ধে বাদ করিয়া গুরুতার কার্যানুরোধ বশতঃ ভোমার পথ নিরীক্ষণ করিতেছেন তুমি বাদরত্ব হেতু জীতে আদক্ত হইয়া কিছুই বিবেচনা করিতেছ না। ৪৪ ।৪৫ । ৪৬ । ৪৭ । তুমি শ্রীরামের নিকট দীতাত্বে বণে প্রতিজ্ঞা করিয়াছ একণে কিছুই করিতেছ না; মহারাজ তুমি অতি কৃতত্বের ন্যার ব্যবহার করিতেছ, অতএব শ্রীরামচন্দ্র অতি দল্পরে বালির ন্যার ভোমাকে বিনয়্ট করিবেন। ৪৮ । স্পুরীব হন্মানের বাক্য শ্রবণানস্তর তরাকুল হটয়া কছিলেন, ছে কপিশ্রেষ্ঠ ! তুমি যাহা কছিলে তাহা সত্য জতএব শীদ্র আমার প্রতিজ্ঞা প্রতিপালন কর এই মহাবীর দশ সহজ্ঞ বানর দৈন্য দশ দিকে শীদ্র প্ররণ কর । ৪৯ । ৫০ । ইছারা গমন করিয়া সপ্তম্বীপত্ব বানর সমূহকে এ স্থাজা প্রচারিত হউক যে, এক পক্ষ মধ্যে ক্লডকার্য্য ছইয়া সকলে এই স্থানে প্রভারাত হউক যে, এক পক্ষ মধ্যে ক্লডকার্য্য ছইয়া সকলে এই স্থানে প্রত্যাগ্রমন করে বিনি পক্ষমধ্যে প্রত্যাগ্রমন

যে পক্ষমতিবর্জন্তে তে বধ্যা মে ন সংশয়:।
ইত্যাজ্ঞাপ্য হন্মনতং স্থাবা গৃহমাবিশং ॥ ৫২॥
ন্ত্রীবাজ্ঞাং পুরক্ত্য হন্মনামান্তিদত্ম:।
তৎক্ষণাৎ প্রেম্যামান হরীন্দশদিশঃ স্থাই ॥৫৬॥
ক্ষানিভগুণসভান্ বায়ুবেগপ্রচারান্
বনচরগণমুখ্যান্ পর্যতাকার্রপান।

না করিবেন তিনি নিশ্চয় আমার বধ্য ইইবেন স্থাীব হন্নানকে এরপ আদেশ করিয়া গৃছে প্রবেশ করিলেন । মন্ত্রিবর হন্মান্ স্থাবিরে আজ্ঞামুসাবে দশ দিকে বানর সৈন্য ক্রেরণ করিশেন । ৫১ । ৫২ । ৫৩ । প্রন্নন্ন হন্মান্ অসীমণ্ডণ প্রনহিতক্মার: প্রেষয়ামাস দূতান্ অতিরভস্তরাত্মা দান্মানাদিস্প্রান্॥৫৪॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্ধিক্যাকাণ্ডে চতুর্পোহ্ধ্যায়ঃ।

ও বিক্রম সম্পার বায়ু সদৃশ বেগগামী পর্বতে প্রমাণ বনচর শ্রেষ্ঠ বানরগণকে অর্থ ও সম্মান প্রদান দারা পরিতৃষ্ট করিয়া দেভিত কার্যো প্রেরণ করিলেন। ৫৪।

> ইতি শ্রীমদধাক্ষরামারণে উনামছেশ্বর সম্বাদে কিকিস্কাাকাণ্ডে চতুর্থোহধাায়:।

পঞ্চমাইধ্যায়ঃ।

রামস্ত পর্বভন্তাতো মণিদানে নিশামুখে।
দীতা বিরহক্ষং শোকমদহরিদমত্তবীৎ॥ ১॥
পশু লক্ষণ ! মে দীতা রাক্ষদেন হৃতা বলাং।
মৃতামৃতা বা নিক্ষেতং ন জানেহদ্যাপি ভামিনী॥২

অনন্তর জীরামচন্দ্র সেই পর্বতে শৃংকাপরি মণিময় সাম্তে বিষয় হইয়া রক্ষনী সমাগম কালে দীতা বিরহ জানিত শোকা-বেগ সহন করিতে অকম হইয়া সক্ষমণকে কহিলেন। ১। হে লক্ষ্মণ! আমার প্রাণদ্রিতা জানকী বলপূর্বক রাক্ষ্মণ জীবতীতি মম জ্রেয়াৎকশ্চিদ্বা প্রেয়কুৎসমে।

যদি জানামি তাং সাধীং জীবন্তীং যত্ত কুত্র বা।।৩।

হঠাদেবাহরিয়ামি সুধামিব প্রেমিনিধেঃ।

প্রতিজ্ঞাং শুণুমে ভাতর্যেন মে জনকাত্মজা।। ৪।।

কর্ত্ক অপষ্কতা হইরা এতদিন পর্যান্ত জীবিত আছেন কি না ইহা নিশ্চর করিতে পারিতেছিনা। যদি কোন ব্যক্তি দীতা জীবিতা আছেন এই সম্বাদটী আমাকে প্রদান করে দে বাক্তিকে আমি পরম প্রিয়কারী বন্ধু যদিয়া গণ্য করিব। যদি যে কোন স্থানে সীতা জীবিতা আছেন, ইছা জামি জানিতে নীতা তং ভত্মগৎ কুর্যাং সপুজবলবাহনম্।

হা সীতে ! চন্দ্রবদনে বসন্তী রাক্ষণালয়ে ॥ ৫ ॥

দুংখার্তা মামপশুন্তী কথং প্রাণান্ ধরিষাদি ? ।

চন্দ্রোহিপি ভাত্মবদ্ধাতি মম চন্দ্রাননাং বিনা ॥ ৬॥

চন্দ্র ! তুং জানকীং স্পৃন্ধী করৈর্মাং স্পৃশশীতলৈঃ

স্থাবাহিপি দয়াহীনো তুঃখিতং মাং ন পশুতি ॥

রাজ্যং নিদ্ধাতকং প্রাপ্য স্ত্রীভিঃ পরিরতো রহঃ।

রতন্মো দুশুতে ব্যক্তং পানাসক্রোহতিকামুকঃ ॥ ৮

নারাতি শরদং পশ্যম্পি মার্গয়িত্থ প্রিরাম্।

পূর্ব্বোপকারিণং দুষ্টঃ ক্রতন্মে বিশ্বিতো হি মাম্॥

পারি তাহা হইলে তাঁছাকে যে কোন উপাল্পে হচাৎ আনর্ম করিব, যেরূপ দেবগণ পরোনিধি হইতে হাধা আনমন করিয়া ছিলেন। হে ভ্রাতঃ ! আমি প্রতিক্রা করিতেছি শ্রবণ কর—যে ভরণব্যা আমার প্রিয়ত্ত্যা জানকীকে হরণ করিয়াছে ভাছাকে দমুলে ভন্মশাৎ করিব। হা জনকনন্দিনি গীডে! হা চক্রমুখি। তুমি রাক্ষ্যালয়ে অবস্থিতি করিয়া আমার অদর্শন জনিভ ত্রঃখাতুত্ব করতঃ কিরূপে জীবন ধারণ করিবে—হে প্রিয়ে ! আমিতো তোমার বিরহে বিকল হইয়াছি অধিক কি বলিব ভোমার বিরহে শীতরশ্মি চক্রকে ও প্রচণ্ড-কর মার্ভণ্ড বলিয়া আমার জ্ঞান হইতেছে। ২। ৩। ৪।৫।৬। হে স্থাংশো! ভূমি যে সকল শীত কিরণ ছারাজানকীর গাত্রস্পর্শ করিতেছ ঐ সকল কিরণ দ্বারা আমাকে স্পর্শ কর—তাহা হইলে আমি অপেক্ষাক্লত স্থপ্তা লাভ করিতে পারি ৷ হে লক্ষাণ ! নির্ম্বয় সূত্রীবও নিষ্ণুক রাজ্য লাভ করিয়া নির্দ্ধন স্থানে স্ত্রীগণ পরিবত হইয়া সম্ভোগ সুথ অনুভব করিতেছে—জামার ত্রঃখ এক বারও অব্লোকন করিব না। হে ভ্রাতঃ! পানাস্ক্র অতি কামুক সেই স্থাীবকে ক্লডম বলিয়া সম্পঞ্চ বোধ হইভেচে, যেহেতু উপস্থিত শর্থ কাল অবলোকন করিয়াও সীভাষেষণের নিনিত্ত সেই পাপাস্থ। আগমন করিডেছে না, ইন্মি স্থাবিমপোবং সপুরং সহবাদ্ধবম্।
বালী যথা হতো মেহদ্য স্থাবীবোহিপি তথা ভবেৎ
ইতি রুইং সমালোক্য রাঘবং লক্ষ্মণোহরবীৎ।
ইদানীমেব গড়াহং স্থাবিং দুইমানসম্।। ১১ ।।
মামাজ্ঞাপয় হড়া তমায়াস্যে রাম তেইন্তিকম্।
ইত্যুক্তা ধল্লরাদায় খজ্লং তুনীরমেব চ ।। ১২ ।
গস্তমভূদ্যতং বীক্ষ্য রামো লক্ষ্মণমন্ত্রবীৎ।
ন হস্তবস্তেয়া বৎস ! স্থাবিশ্বা মে প্রিয়ঃ দখা ॥১৩॥
কিন্তু ভীষয় স্থাবিং বালিবল্ল হনিব্যসে।
ইত্যুক্ত্বা শীঘ্মাদায় স্থাবিপ্রতিভাষিতম্ । ১৪ ॥
আগত্য পশ্চাদ্যৎকার্যং তৎকরিষ্যামাসংশয়ম্।
ভবেতি লক্ষ্মণোহগজ্জ্ব্রিতো ভীমবিক্রমঃ । ১৫ ।
ভবেতি লক্ষ্মণোহগজ্জ্ব্রিতো ভীমবিক্রমঃ । ১৫ ।

বোধ করি সেই রুডয় মংরুত পূর্বোপকার বিশ্বত হটব। থাকিবে। ৭।৮৮৯। ছেলক্ষ্মণ! যেরূপ আমি বালীকে বধ করিরাছি, ভদ্রপে স্বান্ধ্রব স্থাীবকেও কিছিক্কা। নগরের সহিত নির্মাল করিবে। ১০।

অনস্তর লক্ষণ জীরামচল্রকে ক্রুক দেথিয়া কহিলেন, ছে দেব!
আপনি আজা করুন আমি এই দণ্ডেই কিছিলা। গমন করিয়া
ঘুন্টচেতা স্থ্যীবকে বিনাশ করিয়া আপনার নিকট পুনঃ
প্রত্যাগমন করিব। অনন্তর জীরামচন্দ্র লক্ষ্মণকে ধরুঃ, খজা
ও তৃণীর গ্রহণ পুর্বেক কিছিলা। গমনোদাত দেখিয়া কহিলেন,
হে বংদ! তুমি আমার প্রিয় দথা স্থ্যীবকে বালীর ন্যায়
বধ করিও না, কিন্তু ভাছাকে ভর প্রদর্শন করাইবে, ভর
প্রদর্শনান্তর স্থাীব যাহা কহিবেন ভাছা এছানে আসিয়া
আমাকে কহিবে। অনন্তর যাহা কর্ত্বর ভাহা করিব। ভীমবিক্রম লক্ষ্মণ ভথান্ত বলিয়া প্রীরানের আজা শিরোধারণ

কিছিল্ক্যাং প্রতি কোপেন নির্দ্ধন্নব বানরান্।।

দর্বজ্ঞা নিত্যলক্ষীকো বিজ্ঞানাত্মাপি রাঘবঃ।।১৬

দীতামস্থ্রশোচার্তঃ প্রাক্কতঃ প্রাক্কতামিব।

বুদ্ধ্যাদিদাক্ষিণস্তম্ভ মায়াকার্য্যাতিবর্ত্তিনঃ।।১৭।।

রাগাদিরহিতম্ভান্ত তৎকার্যং কথমুদ্ধবেৎ।

ব্রহ্মণোক্তমূতং কর্তুং রাজ্ঞো দশরথম্ভ হি।।১৮।।

তপসঃ ফলদানার জাতো মানুষবেশপৃক্।

মায়য়া মোহিতাঃ দর্ব্বে জনা অজ্ঞানসংযুতাঃ।।১৯

কথমেষাং ভবেন্মোক্ষ ? ইতি বিষ্ণুবিচিন্তয়ন্।

কথাং প্রথয়িতুং লোকে দর্বলোকমলাপহাম্॥ ২০

রামায়ণাভিধাং রামো ভূত্যা মানুষচেন্টকঃ।

কোধং মোহং চ কামং চ ব্রবহারার্থসিদ্ধয়ে ॥২১॥

পূর্ব্বিক বানরগণকে যেন ক্রোধানলে দয় করিবার আশ্রে কিষিদ্ধাণ গমন করিলেন। এদিকে সর্ব্বজ্ঞ শ্রীরামচন্দ্র লক্ষ্মী-রূপ নিজ শক্তির সহিত সতত মিলিত এবং বিজ্ঞানময় চইরা ও প্রাক্বত মহয়্য যেরূপ প্রাক্বত স্ত্রীর নিমিত্ত শোক করে, তন্ধ্রপ হুংখ সহকারে সীতার নিমিত্ত শোক প্রকাশ করিতে লাগিলেন, হে শ্রোতৃগণ! বৃদ্ধাদি সাক্ষী মায়াতীত রাগা দ্বোদি রহিত পরমান্থা রামের এই প্রকার চিত্ত বিকার কথনই সন্তব নহে— এই প্রকার আশঙ্কা তোমাদিগের হৃদর মধ্যে কখনই উৎপন্ন না হয়। যেহেতু বৈকুণ্ঠনাথ নারায়ণ ব্রন্ধার প্রার্থনা সিদ্ধি এবং রাজা দশরখের তপাসার ফল প্রদান করিবার নিমিত্ত স্বরুং মহয়রূপে অবতীর্ণ হইয়া মন্ত্র্যুবদ্বাবহার করিয়াছেন এবং ভগবান্ বিষ্ণু একদা চিন্তা করিলেন যে, মদীর মায়া-মোহিত অজ্ঞানী মনুষ্যদিগের কিরপে মুক্তি লাভ হইবে—অনন্তর কিরৎক্ষণ পরে দ্বির করিলেন যে, সর্ব্বলোক পাবনী রামান্থণ নামক মদীর কথা জগতে প্রচারিত হইলে অজ্ঞানীদিগের তত্তৎকালোচিতং গৃহ্বন্ মোহ্মহ্যবশাঃ প্রজাঃ।

অন্তরক্ত ইবাশেষগুণেষু গুণবির্জ্জিতঃ॥ ২২॥

বিজ্ঞানমূর্ত্তিবিজ্ঞানশক্তিঃ সাক্ষ্যগুণাম্বিতঃ।

অতঃ কামাদিভিনিত্যমবিলিপ্তো যথা নভঃ॥২৩॥

বিন্দিন্তি মুনয়ঃ কেচিজ্জানিদ্ধি সনকাদয়ঃ।

ভদ্ভাব নির্মালাস্থাসঃ সম্যক্ জানন্তি নিত্যদা॥ ২৪॥

ভক্তচিতানুসারেণ জায়তে ভগবানজঃ।

লক্ষণোহপি তদা গদ্ধা কিষ্কিন্ধ্যানগরান্তিকম্॥ ২৫

জ্যাঘোষমকরোভীরং ভীষয়ন্ সর্কবানরান্।

তং দৃষ্ট্বা প্রাক্ষতান্তর বানরা বপ্রমুধ্নি॥ ২৬॥

চক্রুঃ কিলকিলাশকং পৃতপাষাণপাদপাঃ।

তান্দৃষ্ট্বা ক্রোধতান্তাকো বানরান্লক্ষ্মণস্তদা॥২৭

অবশ্য মুক্তি হইবে। তদনস্তর ক্ষণেই ভগবান ছরি মনুষ্য রপ হইয়া লৌকিক ব্যবহারোপদেশার্থ তৎ তৎ কালোচিত ক্রোধ, মোহ ও কাম প্রকাশ করিয়া মোছ বশীভূত প্রজাগনকে মুগ্ধ করিরাচ্ছেন : বিজ্ঞানরূপ শক্তি সম্পন্ন এবং সমুং বিজ্ঞান স্ত্রপ দর্ম জগতের ওভাওভ সাক্ষী ভগবান্ ছরি নিও ণ रहेशा अ अनुदान शृं स्व अन जायत कार्या कति ए हम नहीं, কিন্তু কাম ক্রোধাদিতে লিপ্ত নছেন, যেরপ আকাশ-বায় সঞ্চালিত মলাদি বস্তু সংযোগ হইলেও তদারা লিপ্ত হয়েন না। কোন কোন মহর্ষিরা কদাচিং দেই অদিতীয় পুরুষের সাক্ষাৎকার লাভ করিয়াছেন। হরিভক্তি পরায়ণ সনকাদি ঋষিশাণ সর্ব্বদাই ভাঁহার সাক্ষাৎকার করিয়া থাকেন। যে হেতৃ ভক্তবৎসল ভগবান ভক্ত জনের চিত্ত রুত্তির অনুসারী হইয়া তদীয় চিত্তে আবিভূতি হন। এদিকে বীরচ্ডামণি लक्ष्मण किकिसा। नगद ममील गमन कविशा वानद्रगण्य छत्र সম্পাদনার্থ ভয়ন্বর প্রচণ্ড জ্ঞাশব্দ করিতে লাগিলেন। প্রাকৃত বানরেরা লক্ষ্মণকে দর্শনানন্তর রুক্ষ, প্রস্তর গ্রেছণ পুরুক প্রাচীরোপরি আরোহণ করিয়া কিল কিল শব্দ করিছে

নির্মান কর্তু মৃত্যুক্তো ধনুরানম্য বীর্যারান্।
ততঃ শীস্ত্রং সমাপত্য জ্ঞাত্বা লক্ষানমাগতম্ ॥ ২৮॥
নিরার্য্য বামরান্ সর্কানকদো মন্ত্রিসন্তমঃ।
গত্বা লক্ষানসামীয়ং প্রানাম স দণ্ডবং ॥ ২০॥
ততোহক্ষদং পরিষ্ক্র্যা লক্ষানঃ প্রিয়বর্ষানঃ।
উবাচ বংস। গচ্ছ তং পিতৃব্যায় নিবেদয়॥ ৩০॥
মামাগতং রাঘ্যেন চোদিতং রৌদ্রমূর্জিনা।
তথেতি ত্রিতং গত্বা মুগ্রীবায় ন্যবেদয়ং॥ ৩১॥
লক্ষাণঃ ক্রোধতান্তাক্ষঃ পুরত্বারি বহিঃ স্থিতঃ।
তচ্ছুত্বাতীর সন্ত্রন্তঃ মুগ্রীবো বানরেশ্বরঃ॥ ৩২॥
আহুয় মন্ত্রিনাং শ্রেষ্ঠং হৃদুমন্তমধাহরবীং।
গচ্ছ ভ্যসদেনাশু লক্ষাণং বিনয়ান্থিতঃ॥ ৩৩॥

লাগিল। তৎকালে মহাবীর লক্ষ্মণ তাহাদিগকে দর্শন করিয়া জোধ ক্যায়িত লোচন হইলেন। ১১।১২।১৩।১৪:১৫। 781241281681581581581581561581561501 ২৭। এবং বানরগণকে নির্মাল করিবার নিমিত্ত প্রহও কোদও আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। অনস্তর মক্তিশ্রেষ্ঠ অঙ্গদ সেই স্থানে আগমনানন্তর লক্ষ্মণকে দর্শন করিরা বানর- जनक नियाद्रण कदिल्लम खदश नक्कालद निकंड गमन कदिया তাঁছাকে দণ্ডবৎ প্রণাম করিলেম। ২৮। ২৯। প্রিয়বদ্ধন লক্ষ্মণ অঙ্গদকে আলিন্ধন করিয়া কহিলেন, বংস! তুমি পিতৃব্যের নিকট গমন করিয়া নিবেদন কর যে, জীরাম চল্দ্র কুদ্ধ হটয়। লক্ষ্মণকে কিদিদ্ধাায় প্রেরণ করিয়াছেন। অঙ্গদ তথাত্ত বলিয়া শীভ্ৰ গমন পূৰ্ত্তক হুগ্ৰীবের মিকট নিবে-দন করিল। 'মহারাজ ! ক্রোধারুণিত লোচন মহাবীর লক্ষাণ নগরের বহিষ্বারে অবাস্থতি করিতেছেন'। বানররাজ স্থ্রীব অঙ্গদের বাক্য আবণানস্তর অভ্যন্ত সম্ভন্ত হট্যা মন্ত্রীবর হন্মানকে আহ্বন করিয়া কহিলেন, হে ছমুমন্! তুমি অঙ্গদেৱ সহিত শীঅ বহিছারে গমন পূর্বক কুছ মহাবীর সক্ষণকে

সাস্ত্রন্ কোপিজং বীরং শনৈরানর মন্দিরম্।
প্রেষরিত্বা হন্মন্তং ভারামাই কপীশ্বরং॥ ৩৪॥
তং গচ্ছ সান্ত্রন্তী তং লক্ষ্যণং মৃদুভাবিতৈঃ।
শান্তমন্তঃপুরং নীত্বা পশ্চাদর্শর মেইনত্বে!॥ ৩৫॥
ভবড়িতি ভতস্তারা মধ্যকক্ষং সমাবিশং।
হন্মানঙ্গদেনের সহিতো লক্ষ্যণান্তিকম্॥ ৩৬॥
গড়া ননাম শিরসা ভক্তা স্থাগতমন্ত্রবিং।
এহি বীর! মহাভাগ ভবদ্গৃহমশ্ব্রিতম্॥ ৩৭॥
প্রিশ্ম রাজদারাদীন্ দৃষ্ট্যা স্থ্রীব্যের চ!
ঘদাজ্ঞাপরদে পশ্চান্তংস্ক্রাং করবানি ভো!॥ ৩৮॥
ইত্যুক্ত্বা লক্ষ্যণং ভক্তা করেগৃহ্ম স্থানিতঃ।
আনরামাদ নগরমধ্যাদ্রাজগৃহং প্রতি॥ ৩৯॥
পশ্মংন্তন্ত্র মহাসোধান্ যুথপানাং সমন্ততঃ।
জগাম ভবনং রাজ্ঞঃ স্থ্রেক্রভবনোপম্য্॥ ৪০॥

স্বিনয় মৃত্ন বচনে সান্ত্রনা করিয়া এতানে আনরন কর।
স্বাীব হন্মানকে প্রেরণ করিয়া বালী-পালী তারাকে কহিলেন
হে অনঘে! তুমিও গামন কর; মহাবীর লক্ষণকে মৃত্নপুর
বচন হারা শান্ত করিয়া অন্তঃপুর মধ্যে আনরন পূর্বক
আমাকে দর্শন করাও। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩। ৩৪। ৩৫।
তারা তাহাই হউক বলিরা মধাককে গমন করিয়া অবস্থিতি
করিলেন। হন্মান অঙ্গদের সহিত্ত লক্ষ্মণ সন্নিধানে গমন
করিয়া পরম ভক্তি সহকারে প্রণামানন্তর স্থাগত ক্রিজাসা
করিলেন, হে মহাভাগ। আগমন কক্ষন—হে মহাবীর। আপনি
আপনার গৃহে নিঃশক্ষচিত্তে প্রবেশ করিয়া রাজপরিবার এবং
স্থাবিকে দর্শন কক্ষন পশ্চাৎ যাহা আজ্ঞা করিবেন ভাহাই
করিব। ৩৬। ৩৭। ৩৮। প্রন নন্দন হন্মান্ এই রূপ
কহিয়া ভক্তি পূর্বক সক্ষ্মণের কর গ্রহণ করিয়া নগর মধ্য
হইতে রাজ্ঞ গৃহে আনর্যন করিলেন। ৩৯। লক্ষ্মণ চতুর্দিকে

মধ্যকক্ষে গতা তত্ত্র তারা তারাধিপাননা।
সর্বাভরণসম্পন্না মদরক্তান্তলোচনা।। ৪১।
তবাচ লক্ষ্মণং নত্তা স্মিতপূর্ব্যাভিভাষিণী।
ব্যাহি দেবর! ভত্তং তে সাধুন্তং ভক্তবৎসলঃ॥ ৪২॥
কিমর্থং কোপমাকার্যভিক্তে ভৃত্যে কপীশ্বরে।
বহুকালমনাশ্বাসং দুংখমেবানুভূতবান্।। ৪৩।
তদানীং বহুদুংখোঘান্তবন্তিরভিরক্ষিতঃ।
ভবৎপ্রদাদাৎ সুত্রীবঃ প্রাপ্তবেসিখ্যা মহামতিঃ॥৪৪
কামাদক্রো রঘুপতেঃ দেবার্থং নাগতো হরিঃ।
আগমিবান্তি হররো নানাদেশগতাঃ প্রভো!। ৪৫
প্রেবিতা দশসাহস্রা হরয়ো রঘুসভ্ম!।
আনেতুং বানরান্ দিগ্ভোমহাপ্রবিত্সন্ধিভান॥৪৬

বানুরমুখপতিদিগের মহাপ্রাদাদ সকল অবলোকন করিতে করিতে ইন্দ্রভবন সদৃশ রাজভবনে গমন করিতে লাগিলেন। । ৪০। মদাকণিতলোচনা সর্বাভরণভূষিতা স্থাণণ্ডেমুখী জারা মধাকক্ষ সমাগত লক্ষণকে প্রণাম করিয়া ঈষৎ হাস্পূর্বক কহিলেন—তে দেবর ভাগমন কর তোমার মঙ্গল হউক। তে মহাবাহো! তুমি সাধু এবং ভক্তবংশল হইয়া পেবমভক্ত নিজ্ঞদাস কপিরাক্ষের প্রতি কি কারণে কোপ করিয়াছ। দেখ দেবর! কপিরাক্ষ নিরাধান হইয়া বহুকাল হঃখায়ভব করিয়াছেন। ইদানী আপনাবাই উহাকে হঃখতরক্ষ হইতে রক্ষা করিয়াছেন, আপনাদিগেরই প্রসাদে একণে মহামতি স্থান ক্ষণাভ করিয়া কামাশক্তিবশতঃ রঘুনাথের সেবার্থ গমন করিতে পারেন নাই, কিন্তু তাহার কার্যো কধনই উদাস্ত করেন নাই। হে রঘুত্তম! ইতিপূর্বেই নানা দেশগত বানর গণের আনর্মার্থ দ্শনহন্ত বানর সৈন্য প্রেরণ করিয়াছেন,

স্থাবিঃ স্বর্মাগত্য সর্ব্বানর্যুথপৈ:।
বধরিষাতি দৈত্যোঘান রাবণঞ্চ হনিষ্যতি ॥ ৪৭ ॥
ছরৈব সহিতোহদাব গন্তা বানরপুক্ষবঃ।
পশ্যান্তর্ভবনং তত্র পুজদারস্ক্রন্থ তম্ ॥ ৪৮ ॥
দ্বী স্থাবিমভয়ং দত্ত্বা নয় সহৈব তে ।
ভারায়া বচনং শ্রুজা রুশক্রোধোহণ লক্ষনঃ । ৪৯ ॥
ক্রগামান্তঃপুরং যত্র স্থাবো বানরেশ্বঃ ।
ক্রমামালিস্য স্থাবঃ পর্যাক্ষে পর্যাবস্থিতঃ ॥ ৫০ ॥
দ্বী লক্ষাণমতার্থং উৎপপাতাতিভীতবং ।
তং দৃষ্টা লক্ষাণঃ ক্রুদ্ধো মদবিহ্বলিতেক্ষণম্ ॥ ৫১
স্থাবং প্রাহ গ্রুভা । বিশ্বতোহদি রঘূর্ত্বম্ ।
বালী যেন হতো বীরঃ স বাণোহদ্য প্রতীক্ষতে ॥ ৫২

ংইতে এন্থানে আগমন করিবে; ঐ বানরগণ আগমন করিব। মাত্র কপিরাজ তাহাদিগকে সমভিব্যাহারে করিরা গমন পূর্বক রাক্ষসাধ্য বাবণ এবং ওদমুচর দৈত্যগণকে আগুবিনাশ কবি বেন। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭।

হে মহাভাগ! বানররাজ অদ্য ভোমারই সহিত শ্রীরাম
চরণ দর্শনার্থ গমন করিবেন যাহা হউক এক্ষণে অন্তঃপুর
মধ্যে প্রবেশ পূর্ব্বক স্ত্রী, পুত্র ও বন্ধু কর্তৃক পরিরত স্থাীবকে
দর্শন করিয়া অভয় প্রদান পূর্ব্বক নিজ সমভিব্যাহারে লইয়া
জীরাম সন্নিধানে গমন করুন। দরালু লক্ষ্মণ ভারার বচনে
সম্ভুট হইরা জোধ সংহার করিলেন। অনপ্তর অন্তঃপুর মধ্যে
প্রবেশ পূর্ব্বক স্থাীব ভবনে উপত্তিত হইয়া দেখিলেন বানর
রাজ প্রিয় দরিতা কুমাকে আলিঙ্কন করিয়া পর্যাক্ষে অবস্থান
করিতেতেন, বানর রাজ লক্ষ্মণকে দেখিবামাত জতি ভীত্তের
ন্যায় পর্যাক্ষ হইতে অভিশ্র লক্ষ্ম প্রদান করিলেন, সক্ষ্মণ
মধুপান-মন্ত স্থাীবকে দেখিরা জোধ সহকারে কছিলেন।
বে তুর্ব্ ভ ! তুমি এক্ষণে রহুনাথকে বিস্মৃত হইয়াছ, অরে

ত্বমব বালিনো মার্গং গমিষ্যালি ময়। হতঃ।

এবমত্যন্তপরুষং বন্দন্তং লক্ষ্মণং তদা ॥ ৫৬ ॥

উবাচ হন্দুনান্ বীরঃ কথমেবং প্রভাষদে ?।

হত্যোহধিকতরো রামে ভক্তোয়ং বানরাধিপঃ ॥৫।
রামকার্যার্থমনিশং জাগর্ভি ন ভু বিস্ফৃতঃ।

আগতাঃ পরিতঃ পশ্র বানরাঃ কোটিশঃ প্রভো!।

রামিষ্যন্তাচিরেণের সীতায়াঃ পরিমার্গন্ম।

সাধ্যিষ্যতি স্থ্রীবো রামকার্য্যশেষতঃ। ৫৬ ॥

শুজা হন্মতো বাক্যং সৌমিত্রিলজ্জিতোহভবৎ।

স্থ্রীবোপ্যর্যাপাল্যাদ্যৈলক্ষ্মণং সমপ্রস্করং। ৫৭।

আগলিক্ষ্য প্রাহ রাম্যা দাদোহহং তেন রক্ষিতঃ।
রাম্যা তেজ্বা লোকান ক্ষণার্ছেনৈর জেষ্যতি।৫৮

বানর ! যে বাণ বারা বালী নিধন প্রাপ্ত হইয়াছে-দেই বাণ একণে তোমারই মৃত্যু প্রতীক। করিতেছে এই দণ্ডেই তুমি আমা কর্তুক নিহত হইয়া নিশ্চয় বালীর অসুগমন করিবে। বীরবর হতুমান উক্ত প্রকার অভি প্রক্ষ ভাষণে প্রব্রক্ত লক্ষ্যুণকে কহিলেন, হে মহাভাগ! আপনি কি ছেতু মহারাজের প্রতি এই রূপ পরুষ বাক্য প্রয়োগ করিতেচেন ? এই বানর রাজ জীরাম চরণে তোমা অপেক্ষা অধিকতর ভক্তি করিয়া থাকেন এবং দিবারাত্র শ্রীরাম কার্ব্যার্থ জাগরিত আছেন, কগনই রাম কাৰ্যা বিশ্বত হন নাই। হে প্রত্যে। ঐ দেখুন নানা দিগ্-দেশ হইতে সমাগত কোটি কোটি বানর্থাণ কর্তৃক দশদিক্ পরিপরিত হইতেছে। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১ ৫২।৫৩। ৫৪। । ৫৫। অচিবকাল মধ্যেই সমস্ত বানরগণ সীতাবেষণে গমন করিবে, মহারাজ হ্ঞীবত সমস্ত রাম কার্যা স্থাসিদ্ধ করিবেন। । ৫৬। সুমিত্রা ভনর লক্ষ্যাণ হরুমানের উক্তরূপ বাক্য প্রবণ করিয়া লজ্জিত হইলেন। অনস্তর স্থাীব পাদার্ঘাদি দার। লক্ষাণের যথোচিত পূজা পূর্ব্বক আলিম্বন করিয়া কছিলেন, হে বীরেন্দ্র ! আমি শ্রীরাম রক্ষিত দাস, অতএব আমার প্রতি ক্ষা করিতে হইবে। হে প্রতো! জীরামের তেজই ক্ষণাৰ্দ্ধ কাল মধ্যে চতুৰ্দ্দশ লোক জয় কয়িবে—প্যামি ও বানর-

সহায়মাত্রমেবাহং বানরৈঃ সহিতঃ প্রভা!।
সৌমিত্রিপি স্থাবং প্রাহ কিঞ্চিশ্বয়োদিতম্।।
তৎ ক্ষমস্ব মহাভাগ! প্রাণয়াদ্রাবিতং ময়া।
গচ্চামোহদাব স্থাবি! রামস্তিষ্ঠতি কাননে॥ ৬০
এক এবাতিদুঃখার্তো জানকীবিরহাৎ প্রভুঃ।
তথেতি রথমারুছ লক্ষণেন সমন্বিতঃ॥ ৬১॥
বানরৈঃ সহিতো রাজা বামমেবাম্বপদ্যত॥ ৬২॥
ভেরীমৃদকৈর্বজ্ঞক্ষবানরৈঃ
থেতাতপত্রৈর্বজিনেশ্চ শোভিতঃ।
নীলাঙ্কদাদ্যেই মুমৎপ্রধানেঃ
সমারতো রাঘ্বমভ্যগান্ধবিঃ॥ ৬॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
কিক্ষিশ্বাকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যয়েঃ।

গণ উপলক্ষ মাত্র। সেমিত্রি লক্ষ্মণ স্থানিবর বিনয় বচনে সন্তট্য হইগা কহিলেন হৈ মহাভাগ। আমি আপনাকে প্রশ্ব বশতঃ যাহা কিছু বলিয়াছি তাহাও আপনি ক্ষমা করিবেন হে বানরেন্দ্র! উদ্বোগী হও আমরা অদ্যই প্রীরাম সনিধানে গমন করিব, যেহেতু সীতা-বিবছ-কাতর রঘুনাথ একারা কাননে অবস্থিতি করিতেছেন। স্থানি তথাস্ত বলিয়া লক্ষ্মণ বাক্যে সম্মতি প্রকাশ পূর্বক লক্ষ্মণের সহিত রথারোহণ করিয়া বানরগণ সমভিব্যাহারে প্রীরামের নিকট গমন করিলেন। বে। বে। বে। ৬০। ৬০। ৬২। যংকালে হমুমান, নীল ও অঙ্গদ প্রভৃতি বানরগণ ও ঋক্ষণণ বেটিত ছইমা বানর রাজ গমন করিতে লাগিলেন—তৎকালে চতুর্দ্ধিকে বহুতব ভেরী ও মৃদদ্ধ ধনি ছইতে লাগিল এবং বানরেরা কেছ শ্বেতাঙ পত্র ধারণ করিল—কেছবা ব্যজন হারা কিপরাজ্ঞকে বীজন করিতে লাগিল। ৬০।

ইতি শ্রীমদধ্যাস্থরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিমিদ্ধাকাতে পঞ্চনাহধ্যায়ঃ।

यदर्शक्षात्रः।

দৃষ্ট্বা রামং সমাসীনং গুহাদ্বারি শিলাতলে।

চৈলাজিনধরং শ্রামং জটামৌলিবিরাজিতম্ ॥ ১॥

বিশালনয়নং শান্তং স্মিতচারুমুখামু জম্।

সীতাবিরহসন্তপ্তং পশ্যন্তং মৃগপক্ষিণঃ॥ ২॥

রঝাৎ দূরাৎসমুৎপত্য বেগাৎ স্থ্রীবলক্ষাণো।

রামস্য পাদয়োরত্রে পেততুর্ভক্তিসংযুত্রে ॥ ৩॥

রামঃ স্থ্রীবমালিক্ষ্য পৃষ্ট্বানাময়মন্তিকে।

শ্বাপরিত্বা যথান্যায়ং পূজ্রামাস ধর্মবিৎ॥ ৪॥

ততোহত্রবীদ্রঘুপ্রেষ্ঠং স্থ্রীবো ভক্তিনন্ত্রধীঃ।

দেব। পশ্য সমায়ান্তীং বানরাণাং মহাচমুম্॥ ৫॥

কুলাচলাদ্রিসন্ত্ তা মেরুমন্দরসন্থিতাঃ।
নানাদ্বীপসরিকৈছলবাসিনঃ পর্বতোপমাঃ॥ ৬॥
অসঞ্জাতোঃ সমায়ান্তি হরয়ঃ কামৰূপিণঃ।
সর্ববেশংশসন্ত তাঃ সর্বে যুদ্ধবিশারদাঃ॥ ৭॥
অত্র কেচিদ্গজবলাঃ কেচিদ্দশগজোপমাঃ।
গজাযুত্বলাঃ কেচিদনাইমিত্বলাঃ প্রভা!॥৮॥
কেচিদপ্তনকূটাভাঃ কেচিৎকণকমন্নিভাঃ।
কেচিদপ্তনকূটাভাঃ কেচিৎকণকমন্নিভাঃ।
কেচিদপ্তনকূটাভাঃ কেচিড্রাক্ষসনন্নিভাঃ।
গজন্তঃ পরিতো যান্তি বানরা যুদ্ধকাঞ্জিকণঃ॥১০॥

স্থীব ও লক্ষণ রথারোচণ পূর্ক্ক দেই পর্কতে আগমন কৰিয়া দেখিলেন জ্ঞাজ্ট বিরাজ্জিত অজিনয়রধানী বিশাল লোচন এবং সহাস্যবদন নবদ্ব্বাদলশ্যাম রামচন্দ্র সীতা বিরহ সন্তপ্ত হইয়া গুহদার ছিত শিলাভলে উপবেশন পূর্ক্ক ইতন্তত সঞ্চরমাণ মৃগা পক্ষিগণের প্রকৃতি দর্শন করতঃ কথঞ্জিৎ চিত্ত বিনোদন করিতেছেন, অনন্তর উভয়ে দ্র হইতে রখাবতরণ করিয়া জীরাম সন্থিানে আগমন পূর্ক্ক তাঁহার চরণ সমীপে ভক্তি সহকারে পতিত হইলেন। ১। ২। ৩। ধর্মজ শ্রীরাম স্থাবিকে আলিজনানন্তর আনাময় জিজ্ঞাসা করিয়া নিকটে উপবেশন করাইলেন এবং অভ্যাগভ নম্ম মধা যোগ্য সৎকারও করিলেন। অনন্তর রামভক্তি পরায়ণ স্থাীব রম্মাথকে কহিলেন—ছে দেব! আপনি অবলোকন করন এই সকল ক্লাচল গিরি সন্তত্ত

মেকমন্দর সদৃশ সমূরত নানা দ্বীপবাসী এবং নানা নদ নদী বাসী ও পর্কত বাসী অসংখ্য কামরূপী বানর কটক আগমন করিতেছে, ইছারা সকলেই দেবাংশ সম্ভূত এবং যুদ্ধবিশারদ। ৪। ৫। ৬। ৭। হে প্রভো! ইছার কতিপয় কপি এক হন্তির, কতিপয় কপি দশ হন্তির, কতিপয় কপি অযুত হন্তির, বল ধারণ করে; কেহ কেহ বা অপরিমিত পরাক্তম সম্পান্ন আছে।৮। এবং ইংগর মধ্যে কতিপয় বানর অঞ্জন রাশির ন্যায় ক্ষর্বর্গ—কতিপয় বানর কনক রাশির ন্যায় সমূজ্জল এবং কতিপয় বানরের বদন রক্তবর্গ—কতিপয় বানরের লোম আতি দীর্ঘ এবং কতিপয় বানর নির্দাল স্কর্টিক মণির ন্যায় উল্লেখ ও তক্ল বর্গ—কতিপর বানর রাক্ষমাক্ষতি; এই সমূদ্ধ বানরেরা যুদ্ধাধী হইয়া চতুর্দিকে গমন করিছেছে। হে রম্বাশ!

ত্বলজ্ঞাকারিণঃ সর্বেক কলমূলাশনাঃ প্রতো!।

ক্ষমাণামধিপো বীরো জাষবান্ত্রাম বৃদ্ধিমান্॥১১॥

এব মে মন্ত্রিণাং শ্রেষ্ঠঃ কোটিভল্লুকরন্দপঃ।

হন্ত্যানের বিখ্যাতো মহাসন্ত্রপরাক্রমঃ॥ ১২॥

বার্পুজ্রোহতিতেজন্ত্রী মন্ত্রী বৃদ্ধিমতাং বরঃ।

নলো নীলক্ষ্ণ গ্রন্থো গবাক্ষো গন্ধমাদনঃ॥ ১৩॥

শরভো মৈন্দবক্ষিব গজঃ পনস্ব এব চ।

বলীমুখো দধিমুখঃ স্থবেণস্তার এব চ॥ ১৪॥

কেসরী চ মহাসন্ত্রঃ পিতা হন্ত্যতো বলী।

এতে মে যুথপা রাম। প্রাধান্যেন মরোদিতাঃ ॥১৫

মহাত্মানো মহাবীর্যাঃ শক্রভুল্যপরাক্রমাঃ।

এতে প্রত্যেকভঃ কোটিকোটিবানর্যুথপাঃ॥১৬॥

এই বানর কটকের আহারাদি নির্নাহার্থ আপনার কোন
চিন্তা করিতে ইইবে না, ইহারা বন্য কল মূলাদি ভক্ষণ
করিয়া আপনার আজা প্রতিপালন করিব—হে রমুবীর!
এই ভন্তুকরাজ মহাবীর বুদিমান জামুবান আমার মন্ত্রিজনের
মধ্যে শ্রেষ্ঠ, কোটি ভল্লু ক দৈন্য ইহার আজা প্রতিপালন
করে, এবং এই মহাবল পরাক্রান্ত বুদ্দিমান এবং অভি ভেল্লবী
প্রবিথাভ প্রনন্দন হন্মান্—ইনিও আমার মন্ত্রি এবং নল,
নীল, গয়. গরাক্ষ, গল্পনাল, শয়ভ, দৈশ্বর, গল্প, পন্স, বলীমুথ,
দির্ঘ্য, প্রবেণ, তার এবং হসুমানের শিতা মহাবল পরাকান্ত কেলরী ইহারা আমার দেনাপতি। হে রাম! এই সকল
ইন্ত্রত্বা প্রাক্তমশালী মহাবলিষ্ঠ মহামহিম প্রধান প্রধান
বানরগণের নাম আপনার নিক্ট ব্যক্ত ক্রিলাম, ইহারা
প্রভাকে কোটি কোটি বালরগণের নামক। হে রম্বনীর

তবাজ্ঞাকারিণঃ সর্ব্বে সর্বের দেবাংশসন্তবা:।

এষ বালিস্কৃতঃ শ্রীমানকদো নামবিশ্রুতঃ ॥ ১৭ ॥

বালিজুল্যবলো বীরো রাক্ষসানাং বঙ্গান্তকঃ।

এতে চান্যে চ বহবস্থদর্থে ত্যক্তজীবিতাঃ ॥ ১৮ ॥

যোদ্ধারঃ পর্বতাগ্রৈশ্চ নিপুণাঃ শক্রঘাতনে।

আক্রাপয় রঘুশ্রেষ্ঠ! সর্বের তে বশ্বর্ত্তিনঃ ॥ ১৯ ॥

রামঃ স্কুরীবমালিঙ্গা হর্ষপূর্ণাশ্রুলোচনঃ।

প্রাহু স্কুরীব! জানাসি সর্বরং দ্বং কার্য্যগোরবম্।।

মার্গণার্থং হি জানক্যা নিযুক্ত্রু যদি রোচতে।

শুড়া রামস্য বচনং স্কুরীবঃ প্রীতমানসঃ।। ২১ ॥

প্রেষয়ামাস বলিনো বানরান্বানর্যভঃ।

দিক্রু সর্ব্যাস্থ বিবিধান বানরান্প্রেষ্য সন্তরম্।। ১১

দেবাংশ সন্তুত এই সকল বামরগণকে আপানার আজাকারী বলিয়া জানিবেন। হে প্রভা! এই স্থবিখ্যাত বালিপুর বালিতুল্য পরাক্রমশালী মহাবীর এবং রাক্ষসগণের বলনাশক শ্রীমান অলদ আপানার সম্মুথে দণ্ডায়মান আছেন। এই সকল এবং অপারাপর বহুতর মহাবীর বানর মুখণ আপানার নিমিত্ত জীবন পর্যান্ত পরিত্যাগা করিতে প্রজ্ঞাত আছেন। ৯।১০।১১।১২।১০।১৪।১৫।১৬।১৭।
১৮। এই সকল মহাবীর পার্বত শৃক্ষদারা যুদ্ধ করিয়া শক্র নিশাতন করিতে অতি নিপুন। হে রখু শেষ্ঠ ! একণে আপান নিজবশবতী বানরগণকে আজা ককন।১৯। অনতর শ্রীরাম স্থ্রীবিকে আনন্দার্ভ্যপূর্ণলোচনে আলিঙ্গন করিয়া কছিলেন—হে সপে! তুমি সমন্ত কার্যা গোরৰ অবগত আছে।
১০। এক্ষণে জানকীর অবেষণার্থ যদি ভোমার বাসনা খাকে তবে বানরগণকে তদর্থ নিযুক্ত কর। শ্রীরামের বাকা প্রথণ করিয়া প্রীতমনা বালরপ্রেই স্থ্রীব সহাবল পরাক্রম বানর

निक्नार निम्मकार्थर क्षवरच्चन महावलान्। व्वज्ञाबर बाधवस्य हन्मस्य महावलम् ॥ २७॥ ननः सुरवनः भव्रजः रिम्मः विविवस्यव ह। **প্রেব্যামাস স্থ**ীবো বচনং চেদমত্রবীৎ ॥ ২৪॥ विविश्वस्त श्रीवर्ष्ट्रम जरस्त्रा कानकीर श्रीजाम। यामापर्वताक् निवर्षक्षः यष्ट्रामनश्रुतःमताः ॥ २०॥ সীতামদৃষ্ট্ব। বলি বো মাসাদৃদ্ধং দিনং ভবেৎ। তদা প্রাণান্তিকং দণ্ডং মতঃ প্রাপ্সাথ বানরাঃ ॥২৬ ইতি প্রস্থাপ্য স্থতীবো বানরান্ ভীমবিক্রমান। वाममा लास्य जीवामः नद्मा कालविद्यं मः । २१ প্রচ্ছ স্থং মারুতিং দৃষ্ট্রা রামে: বচনমত্রবীৎ। অভিজ্ঞানার্থমৈতমে হাঙ্গুলীরকমূত্রমম।। ২৮ ॥ मन्नामाक्तत्रनः वृक्तः नीठाटेश नीश्रठाः तरुः। অস্মিন কার্য্যে প্রমাণং হি ভ্রমেব কপিসভ্রম।। জানামি সত্ত্ব তে সর্বাং গচ্ছ পন্থা: শুভন্তব ॥২৯

গণকে নানা দিকে সত্তর প্রেরণ করিলেন। দক্ষিণ দিকে

ত্বলান, আৰু বান্, হন্মান্ প্রভৃতিকে যত্ব পূর্থকি প্রেরণ করিলেন

এবং বক্ষমাণ বাক্যও বলিলেন। ২১। ২২। ২০। ২৪। ছে

বানরগণ! শুভদারিনী সাঁতাকে অন্তেরণ কর এবং আমার

আজ্ঞা পালন করত মাসেক মধ্যে সাঁতাবলোকন পূর্বক

প্রত্যাগমন না করিলে আমা কর্ত্ব প্রাণান্তিক দণ্ড লাভ

করিবে। স্ব্রেণীব উক্ত প্রকার ভীমপরাক্রম বানরগণকে প্রেরণ

করত শ্রীরামকে প্রণাম করিরা তৎপার্খ দেশে উপবেশন করি
শেন। অনন্তর শ্রীরাম গমনোদ্যত মাক্ষতিকে দর্শন করিরা

শহিলেন—হে মাক্তে! আমার নামান্তি এই উত্তম

অন্ত্রীরক বিশ্বাসার্থ নির্দ্ধন স্থানে সীতাকে প্রদান করিবে।

হে ১৭ ২৬ ২৭ ২৮। ছে কপিসভ্বম! তুনি সীতাকে রাম

নামান্তিত অস্থাীয়ক প্রদান করিলেই প্রামাণ্য প্রাপ্ত. ইইবে,

এবং কলীনাং রাজ্ঞা তে বিস্ফাঃ পরিমার্গনে।
সীতারা অঙ্গদম্থা বভ্রমুস্তত্র তত্ত্ব হ । ৩০।।
ভমস্তো বিদ্ধার্গহনে দদৃশুঃ পর্বতোপমম্।
রাক্ষ্ণং ভীবণাকারং ভক্ষয়স্তং মৃগান গজান। ৩১
রাবণোহয়মিতি জ্ঞাড়া কেচিদ্বানরপুষ্ণবাঃ।
জন্মঃ কিলকিলাশকং মুঞ্জো মুফিডিঃ ক্ষণাৎ।।
নায়ং রাবণ ইত্যুক্তা যযুরন্যমহন্ত্বন্য।
তৃষার্তাঃ সলিলং তত্ত্ব নাবিন্দন্ হরিপুষ্ণবাঃ।
তৃষার্তাঃ মহারণো শুদ্ধকণ্ঠোষ্ঠতালুকাঃ।
দদৃশুর্গহ্বরং তত্ত্ব তৃণগুল্মার্তং মহৎ।।৩৪।।

অর্থাৎ রাম প্রেরিত দূতত্ব রূপে দীতার প্রমিতি জনক হছবে 🕆 আমি তোমার সমস্ত বল ও প্রাক্রম অবগত আছি ভূমি গমন কর—আমার বাক্যাধীন ভুগম পথও ভোমার স্থাম ছইবে ।২৯। উক্ত প্রকার বানর রাজ সুগ্রীব কর্ত্তক প্রেরিড অঙ্গদ প্রভৃতি বানরগণ বিন্ধা পর্বতে পরি বন মধ্যে দীতার অঘেষণার্থ ভ্রমণ করিতে করিঙে পর্বতে তুল্য ভরানকারুতি এবং মৃগ ও ছন্তির ভক্ষক এক রাক্ষম মৃত্তি অবলোকন করি-লেন। কতিপার বানর রাক্ষসের শরীর গৌরব দর্শন করিয়া এই রাবণ. এরপ অত্যান করত কিল কিল শব্দ অর্থাৎ অবাক্ত নানা প্রকার রব করত মুক্তি দারা রাক্ষদকে ভাড়ন করিলেন। । ०० । ०১ । ०२ । जावन चाकि वीर्यामानी अहे मामाना মৃষ্টি দারা ভাড়নে তাহার ক্লেলের সম্ভব কি-মতএব এ পৌলন্তা-তনর নহে-এই বলিয়া তৃষ্ণার্ত বানরগণ স্থানা-স্তারে গমন করত পানীর লাভে বঞ্চিত ছইল। ৩৩। বানরপর র্জে মহারণ্যে ইতন্তত ভ্রমণ করত কণ্ঠ ওঠ ও ডালুকার ওছত্ব প্রপ্ত হইয়া তুণ লতাদি ধারা আছাদিত তেরানক এক গহরর আদ্র পিক্ষান্ ক্রেঞ্ছিং সায়িঃসূতান্ দদৃশ্বতঃ।
আত্রান্তে সলিলং ফুনং প্রবিশামো মহাগুহাম্॥৩৫
উণ্যুক্ত্রা হকুমানগ্রে প্রবিবেশ তমন্বয়ুং।
সর্কের পরস্পরং পুতা বাত্র্ন বাছজিরুৎ ফুকাঃ।
আদ্রকারে মহদ্রং গত্তাহপশনে কপীশ্বরাঃ।
জলাশয়াশ্বাণিনিভত্তোয়ান্ কল্পজ্জনোপমান্॥৩৭॥
রক্ষান্ পরকলিন আশ্বাধুজোণসমন্বিতান্।
গ্রহান্ সর্বপ্রণোপেতান্ মণিবস্তাদিপ্রিতান্॥৩৮॥
দিব্যভক্ষারসহিতালান্ত্রের পরিবিজি তান্।
বিশ্বিতান্ত্র ভবনে দিবের কণকবিষ্টরে॥৩৯॥
প্রভারা দীপ্রোন্যন্ত্র দদৃশুঃ ব্রিরমেকলাম্।
ব্যারন্তীং চীরবসনাং যোগিনীং যোগমান্থিতাম্।

দর্শন করিল। ৩৪। র্জ গহরে ছইতে আর্দ্রপক্ষ ক্রেপি এবং তংগের নির্থমন দশনে বানরেরা অনুমান করিল যে, ইহার অভান্তরে নিশ্চর জল আছে, অতএব আমরা ক্লভনিশ্চর ইহার মধ্যে প্রবেশ করিব। ৩৫। এই প্রকারে আন্দোলন করিয়া ছনুমান্ পুবঃসর বানরগণ পরস্পার বাভ দারা বাভ বন্ধন করত শৃঙ্গলাবদ হইয়া ঐ গহ্বরে প্রবেশ করিল। ৩৬ ।কলিগণ অত্যন্ধতম কূপ মধ্যে অভি দ্র গমন পূর্বক মণি তুল্য নির্মাল জলাশয় এবং কম্পতির প্রায় স্থপক ফল ভারাবনত বৃক্ষ সকল দর্শন করিল—মণি বস্ত্রাদি দ্বারা পরি-भून प्रमुख वर्किक नामा विश्व एका-खवा युक्त शृह मकन । मर्ग न করিয়া আশ্চর্য্য জ্ঞান করিল এবং কোন গৃহ মধ্যে বিচিত্র স্থবর্ণা-मत्ना পরি উপবিষ্টা যোগদাধিনী, বল্ফল পরিধানা যোগি-নীকে দর্শন করিরা ভক্তি পুরঃসর ভীত হইরা প্রণাম করিল। ঐ দেবী বানরগণকে বলিলেন—হে বানরগণ ! ভোমরা কি কারণে—কোন হান হইতে আগমন করিয়াছ এবং কাছার কর্ছক প্রেরিড? হতুমান্ দেবীর বাক্য প্রবণ করিয়া বলিল- প্রবেশ্বরং মহাভাগাং ভক্তা ভীত্যা চ বানরাঃ।

দৃষ্ট্য ভাষানরান্ দেবী প্রাহ্ যুরং কিমাগভাঃ॥৪১॥

কুতো বা কস্য দূতা বা মৎস্থানং কিং প্রধর্ষথ ?।

তচ্ছুত্বা হনুমানাহ শৃণু বক্ষ্যামি দেবি! তে॥৪২॥
অযোধ্যাধিপতিঃ শ্রীমান্ রাজা দশরথং প্রভুঃ।

তস্য পুল্রো মহাভাগো জ্যেষ্ঠো রাম ইতি শ্রুতঃ॥
পিতৃরাজ্ঞাং পুরক্ষৃত্য সভার্যঃ সামুজ্ঞো বনম্।
গতস্তত্র ক্রা ভার্যা তস্য সাধী দুরাত্মনা॥ ৪৪॥
রাবণেন ততাে রামঃ স্থ্রীবং সামুজাে যথাে।

স্থ্রীবাে মিত্রভাবেন রামস্য প্রিয়বলভাম্॥ ৪৫॥

মৃগয়ধ্বমিতি প্রাহ্ ততাে বয়মুপাগতাঃ।

ততাে বনং বিচিন্থতাে জানকীং জলকাঞ্জিকণঃ॥৪৬
প্রবিষ্টা গল্পরং ঘারং দৈবাদত্র সমাগতা:।

তং বা কিমর্থমত্রািদ কা বা তং বদ নং শুল্ডে! ৪৪৭

হে দেবি! বলিডেছি শ্রবণ ককন। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪০। ৪১। ৪২। অযোধ্যাধিপতি দশরধ নামক বিখ্যাত রাজ্য আছেন—তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র মহাবল পরাক্রান্ত শ্রীরামচন্দ্র নামে বিখ্যাত, তিনি পিডার আজ্ঞা পালনার্থে ভার্যা জাননী এবং অস্থ্র লক্ষ্মণের সহিত বনে গমন করিয়াছেন, ঐ বন মধ্যে জ্রীবাম সহচারিণী পতিব্রতা সীতাকে ভ্রাত্মা রাবণ অপ্রত্যাক করিয়াছে। অনস্তর অস্থ্র লক্ষ্মণের সহিত জ্রীরামচন্দ্র স্থ্রীবকে সখ্যভাব হারা প্রাপ্ত হইলেন, ঐ স্থ্রীব বানরগণকে বলিল—হে বানরগণ! রামপ্রিয়তমা সীতাকে অয়েষণ কর্ম অনস্তর আম্বান বন মধ্যে ইড্স্তুড সীতাকে অয়েষণ কর্ম জলাকাজ্মী হইয়া এই ভ্রানক গহরর মধ্যে প্রবেশ পূর্মক দৈব ক্রমে আগ্রমন করিয়াছি। হে দেবি! তুমি কে ? কি কারণ এ স্থানে অবস্থিতি করিতেছ তাহা আমাদিগের নিকট ব্যক্ত কর। ৪৩। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭।

যোগিনী চ তথা দৃষ্ট্। বানরান্ প্রাহ্ ক্র ইবীঃ।
যথেষ্টং ফলমূলানি জগ্রা পীত্বামৃতং পয়ঃ॥ ৪৮॥
আগচ্ছত ততো ৰক্ষ্যে মম র্ত্তান্তমাদিতঃ।
তথেতি ভুক্ত্বা পীত্বা চ ক্র ইবিলরাঃ॥ ৪৯॥
দেব্যাঃ দমীপং গড়া তে বদ্ধাঞ্জলিপুটাঃ ভি্তাঃ।
ততঃ প্রাহ্ হন্মন্তং যোগিনী দিব্যদর্শনা॥ ৫০॥
হেমা নাম পুরা দিব্যরূপিনী বিশ্বকর্মাণঃ।
পুত্রী মহেশঃ নৃত্যেন ভোষয়ামাস ভামিনী॥ ৫১॥
তৃষ্টো মহেশঃ প্রদদাবিদং দিব্যপুরং মহং।
অত্র স্থিতা দা সুদ্তী বর্ষাণামযুতাযুত্ম ॥ ৫২॥
তত্যা অহং দখী বিফুতৎপরা মোক্ষকাজ্কিনী।
নায়া সয়ংপ্রভা দিব্যগক্ষর্বতনয়া পুরা॥ ৫৩॥

গচ্ছন্তী অন্ধলোকং সা মামাছেদং তপশ্চর।
তবৈর নিবদন্তী হং সর্ব্যপ্রাণিবিবর্জিতে ॥ ৫৪ ॥
ত্রেতাযুগে দাশরপিভূছা নারায়ণোহব্যয়ঃ।
ভূভারহরণার্থায় বিচরিষ্যতি কাননে ॥ ৫৫ ॥
মার্গন্তো বানরাস্তম্ম ভার্য্যামায়ান্তি তে গুহাম্।
পূজরিছাথ তান গড়া রামং জ্বড়া প্রযন্ত ॥ ৫৬ ॥
যাতাসি ভবনং বিফোর্যোগিগম্যং সনাতনম্।
ইত্যেহং গন্তুমিচ্ছামি রামং জ্বন্তুং ভ্রাম্বিতা ॥৫৭
যূয়ং পিদধ্যক্ষীণি গমিষ্যথ বহিপ্ত হাম্।
তথৈব চক্রুন্তে বেগাদ্গতাঃ পূর্বস্থিতং বনম্॥ ৫৮॥
সাপি ত্যক্ত্রা গুহাং শীল্রং যথে রাঘ্বসন্থিম।
তত্রে রামং সমুত্রীবং লক্ষ্যাঞ্চ দদর্শ হ ॥ ৫০ ॥

অনন্তর ছক্ট মানসা যোগিনী বানরগণকে ভ্রুগপীড়িত
দর্শন করিয়া বলিলেন—হে বানরগণ! তোমাদিগের ইচ্ছামুকপ ফল মূল ভক্ষণও সুরা তুল্য জল পান করিয়াআগমন কর,
আমার আদ্যোপান্ত সমস্ত বিবরণ পরে বলিব। বানরগণ
দেবীবাক্য অমুমোদন করিয়া সহর্ষ চিত্তে বন্ধাঞ্জলি হইয়া
দেবী সমীপে দণ্ডায়মান হইল। অনন্তর ঐ চার্কদ্ধী যোগিনী
হত্মানকে লক্ষ্য করিয়া বক্ষামাণ বিবরণ বলিতে আরম্ভ
করিলেন—হে হত্মন্! পূর্ব্বকালে মনোহর রূপবতী হেমা
নামী বিশ্বকর্যার কন্যা নৃত্য গাঁত দারা মহাদেবকে পরিতোয
করিয়াছিলেন—আণ্ডভোষ ভূক্ষ হইয়া হেমাকে এই উৎক্লফ্ট
পুরী প্রদান করিলেন। অনন্তর হেমা এই পুরীতে অযুভাসূত বর্ষ বাস করিয়াছেন। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। তৎকালে আমি মোক্ষাভিলাহিণী ও বিষ্ণু সেবায় অম্লরজা হইয়া
সেই হেমার স্থী ছিলাম—আমি গন্ধব্ব পুত্রী, আমার সাম

ষয়শ্রভা । ৫০। হেনা বন্ধলোকে গমন কালে আমাকে বলিলেন যে, প্রাণি মাত্র রহিত এই স্থানেই বাদ করিয়া তপদ্যাচরণ কর । ৫৪। অব্যয় (অর্থাৎ জন্ম মরণ রহিত) নারায়ণ তেতা যুগে রাজা দশরখের গৃছে জন্ম গ্রহণ পূর্বাক পৃথিবীর ভার অপহরণ নিমিত বনে গমন করিবেন। । ৫৫। বানরগণ দেই রামের ভার্যার অবেষণার্থী হইয়া এই গছ্বর মধ্যে প্রবেশ করিবে, ভাহাদের অভ্যর্জনা পূর্বাক প্রান্থ রাখবের স্তুতি বিধান করিয়া যোগী মাত্রের গম্যা বিষ্ণুর সদনে যাইবে। অভ্যব রাম দর্শনার্থ গমন করিতে অভিলাষ করিতেছি । ৫৬। ৫৭। তোমরা নিদ্রিত হও অনন্তর গুহার বহিদে শেগমন কর, বানরগণ এই বাক্য প্রবণ করিয়া পূর্বাবিছিত বনে গমন করিল। ৫৮। প্রেগেনীও শীত্র গুহা পরিত্যাগ পূর্বাক জীরাম সমীপে গমন করিয়া লক্ষ্মণ ও স্থ্রীবের সহিত রঘুনাধকে দশন

ক্ষণ্থ। প্রদক্ষণং রামং প্রণমা বছশ: সুধীঃ।
আহ গদ্গদয়৷ বাচা রোমাঞ্জিতত সুক্রহা॥ ৬০॥
দাসী তবাহং রাজেন্দ্র! দর্শনার্থমিহাগতা।
বছবর্ষসহস্রাণি তপ্তাং মে জুল্রং তপঃ॥ ৬১॥
গুলায়াং দর্শনার্থং তে কলিতং মেহস্ত তন্তপঃ॥
শুলায়াং দর্শনার্থং তে কলিতং মেহস্ত তন্তপঃ॥
শুলায়াং দর্শনার্থং তে কলিতং মেহস্ত তন্তপঃ॥
শুলায়ার্য নমস্তামি মায়ায়াঃ পরতঃ স্থিতম্॥৬২
সর্বভূতেয় চালক্ষ্যং বহিরস্তরবস্থিতম্।
ব্যাগমায়াজ্বনিকাচ্ছলো মালুষবিগ্রহঃ॥ ৬৩॥
ন লক্ষ্যসেহজ্ঞানদৃশাং শৈল্ফ ইব রূপধৃক।
মহাভাগবতানাং তুং ভক্তিযোগবিধিৎসয়া॥ ৬৪॥

অবতীর্ণোহরি তগবন্! কথং জানারি ? তামনী লোকে জানাতু যং কল্চিন্তব তত্ত্বং রঘূভ্তম ! ।।৬৫। মমৈতদেব কপং তে সদা ভাতু হ্লনালয়ে । রাম ! তে পাদযুগলং দর্শিতং মোক্ষদর্শনম্ ॥৬৬। অদর্শনং তবার্ণানাং সন্মার্গপরিদর্শনম্ । ধনপুত্রকলত্তাদিবিভূতিপরিদর্পিতঃ । অকিঞ্চনধনং স্থাদ্য নাভিধাতুং জনোহর্ছি ॥৬৭।। নির্ভঞ্জার্মারি নিজ্পিন্ধনার তে ॥ ৬৮ ॥ নমং স্বাল্পাভিরামারঃ নিজ্গার গুণাত্মনে । কালকপিনমীশান্মাদিমধ্যান্তবর্জিতম্ ॥ ৬৯ ॥ সমং চরন্তং সর্বত্তি মন্যে তাং পুক্রবং পরম্ । দেব ! তে চেটিতং কল্চিয় বেদ নৃবিভ্ত্তনম্ ॥ ৭০

ক্রিয়াছিলেন। ৫৯। অনন্তর ভক্তি হারা রোমাঞ্চিত গাঁত্রা व्हेश र्याशिनी अनिक्न शृद्धक श्रामहस्राहक वह अकात প্রণাম করত গদগদ বাক্যে বলিলেন। ৬০। ছে রামচক্র ! আমি ভোমার দাসী—ভোমার দর্শনার্থ আগমন করিয়াছি। তোমার দর্শনার্থ গহরে মধ্যে বহুকাল পর্যান্ত যে ভুকর ভপদ্যা করিয়াছি অন্য তোমার দর্শনে সেই ভপ্দ্যা ফল-বভী হইল। তুমি মায়া বহিত মহাস্থা—ভোমাকে নমস্থার করি। । ৬১। ৬২। এবং,তুমি সকল ভূত মধ্যেই অদৃশ্য ভাবে বহি-কেঁশে এবং অন্তঃকরণে অবস্থিতি করিভেছ ভোমার মায়া-রূপ যথমিকা দারা মনুষোরা আছের, অতএব তাহারা কি প্রকারে তোমাকে জানিতে পারিবে ?। ৬৩। যে প্রকার জীবেশ ধারি পুৰুষকৈ ভাস্ত বুদ্ধিরা পুৰুষ বলিয়া জানিতে পারে না সেই প্রকার জ্ঞান নেত্র বিছীন ব্যক্তি তোমাকে পরম পুক্ষ বলিয়া জানিতে পারে না, অর্থাৎ তত্ত্ব জ্ঞানবিদ্যাক্তিরা ভক্তি যোগ দারা তোমাকে জানিতে ইচ্ছা করতঃ জান চক্ষু দ্বারা পরম প্রুব বলিয়া জানিতে পারে। ৬৪। অনন্তর

দেবী বলিলেন—তে ভাগবন্! তুমি এই পৃথিবীতে অবতীৰ্
হইরাছ, আমি অজানারতা, ভোমাকে কি প্রকারে জানিতে
পারিব, যেছেতু ত্রিভ্বন মধে। কোন্ জন ভক্তি গোগদাবা
ভোমাকে, ঈশ্বররূপে ভানে?।৬৫। ছে রামচন্দ্র! মুক্তির
কারণীভূভ ভোমার পদ মুগল আমি দর্শন করিলাম, ভোমার
এই পারম রূপ আমার হৃদয় মধ্যে সর্কানা বিরাজ্ঞ্যান হউক
।৬৬। ভবসংসারের প্ররুদ্ধি নিবারণ এবং মুক্তি পথ দলী
ভোমার পাদপলকে অকিঞ্জন ধন পুত্র কলত্রাদি গর্কিত ব্যক্তি
কি প্রকারে জানিতে পারিবে?।৬৭। ছে রণ্ডম! তুমি ক্ষম
ও ভানবান দিগের পথ শ্বরূপ এবং দরিদ্রের ধন শ্বরূপ ভোমাকে
নমস্কার করি। তুমি কাল শ্বরূপ মহাদেব এবং আদি, অন্তঃ
মধ্য রহিত অথ্য স্কুদ বলিয়া জানে। অতএব ভোমার আচি
রিত ও দ্যালুত্ব নিষ্ঠুরত্ব জ্ঞানে কেইই সমর্থ নছে।৬৮।৬৯।৭০

ন তেহস্তি কশ্চিদ্যিতো ছেষ্যো বা পর এব চ। কথং ছাং দেব ! জানীয়াং স্তোভুং বাহবিষয়ং বিভুম্ ্তশ্মারাপিহিতাত্মানস্তাৎ পশুস্তি তথাবিধম ।। ৭১। অজস্থাকর্রীশস্ত দেব[া] তির্ব্যঙ্নরাদিয়ু। জন্মকর্মাদিকং ষদ্যন্তদত্যস্তবিভূমনম ॥ ৭২।। ত্মাত্রকরং জাতং কথাপ্রবণদির্মে। কেচিৎ কোশলরাজস্থা তপদ ফরঃদিদ্ধয়ে॥ ৭৩।। কৌশলায়া প্রার্থামানং জাতমাছঃ পরে জনাঃ। দুষ্টরাক্ষসভূভারহরণায়ার্থিতে। বিভুঃ ॥ ৭৪॥ ব্ৰহ্মণা নরৰূপেণ জাতো ২য়মিতি কেচন। शृंवि शांत्रस्थि ह रव कथारि त्र त्रूनम्पन ! II ११ II পশ্ববি তব পাদাব্রু ভবার্ণবস্থতারণম্। ত্বারাগুণবদ্ধাহং ব্যতিরিক্তং গুণশ্রের্ম।। ৭৬।।

নমস্থামি রঘুশ্রেষ্ঠং বাণাসনশরান্বিভম্। লক্ষণেন সহ ভাতা স্থাীবাদিভিরন্বিভম্।। ৭৭।। এবং স্ততো রঘুশ্রেষ্ঠঃ প্রদন্নঃ প্রণতাঘহৃৎ। উবাচ ধোগিনীং ভক্তাং কিন্তে মনসি কাজ্জিকতম্। দা প্রাহ রাঘবং ভক্ত্যা ভক্তিং তে ভক্তবৎদল!। যত্র কুত্রাপি জাতায়া নিশ্চলাং দেহি মে প্রভো!। ওছকেরু সদা সঙ্গো ভুয়ান্মে প্রাকৃতে যু ন। किञ्च। যে রামরামেতি ভক্তা। বদতু সর্বদা।। ৮০ মানসং স্থামলং ৰূপং দীতা লক্ষ্যুদংষ তম। भन्नर्द्वागभवः भी छवाममः मुकू हो छ्यु नम् ॥ ५५॥

হেরাম ! এই জ্বাৎ সংসার মধ্যে কোন্ জন তোমার প্রির বা বেষ্য এবং শক্ত নংহ—কেবল ভোমার মায়া দ্বারা মোহিত क्ट्रान्त इंट्रिक्ट्रिक र्क्ष क्षेत्रकार कार्य । १८। इंट्रिक्ट ভোমার জ্বন্ম নাই এবং তুমি কিঞ্মিত্রত কারণ নহ অথচ সক-শের নিয়ন্তা, অভএব ভূজদ ও মনুষ্য প্রভৃতির মধ্যে জন্ম আদি তোমার যে যে কর্ম সকলই বিভ্ননা মাত্র ।৭২। তুমিই নিতা পদার্থ, বাক্য সিদ্ধির নিমিত্ত কোন কোন পণ্ডিভগণ বলিয়। থাকেন যে, তুমি দশরথের তপ্রদার ফলসিদ্ধির ছেতু জ্বিরাছ। 1৭৩_| অন্যান্য পণ্ডিতগণ বলিয়া থাকেন কৌশল্যার সনোরথ দিদ্ধির নিমিত্ত, এবং পৃথীর ভার স্বরূপ হৃষ্ট রাক্ষসগণ বিনাশ করিতে প্রার্থিত হইয়া জন গ্রহণ করিয়াছ। ৭৪। হে রঘু-নন্দন! যে ব্যক্তিরা ভোমার বাকা প্রবণে ও গুণাসুকীর্তনে অমুবক্ত হয়, তাহাল অকেশে অপার ভবদানর উতীর্ণ হইবার

নিমিত্ত ভোষার পালপন্ন-তরণী প্রাপ্ত হয়। আমি ভোমার অগ্নোহিনী মায়ামোহিতা ও ভক্তিহীনা, স্তরাং পরম ব্রহ্ম অথচ দকল গুণাশ্র—ভোমাকে জানিতে ও স্তব করিছে অসমর্থা। হে পুক্ষোত্তম! তুমি অনুত্র লক্ষ্মণ ও স্থাতীবের সহিত বিরাজমান—তেশমাকে নমস্কার করি। ৭৫। ৭৬। ৭৭। এইরূপ স্তৃতি দারা রবুপতি প্রমন্ন হইয়া স্বর্প্রভাইক বলিলেন-তোমার মনের অভিনাষ প্রকাশ কর। १৮। অনতর গোগিনী কুতাগুলি হইয়া রঘুনাথকে কহিতে লাগি-**टान—८६ ७७ अन मरना**देशन! निकृषे वा छेरकृष्टे शास आमाद জন্ম হউক ভাষাতে কিঞ্চিনাত্র অনুভাপ করি না, কিন্ত ভোমাতে নিশ্চন। ভব্তি থাকে, ও তোমার ভক্তের সঙ্গ রহিত যেন না হই - আমার রসনা নিরন্তর রাম নামামৃত পানে যেন স্বা অভিলাষিণী হয়, আমার চিত্তও খেন পীত বসন কৌস্তভ প্রভৃতি ভূষণ সমূহ ছারা ভূষিত তোমার এই মনোহ্ব শ্যামৰ রূপ নিরন্তর অরতে পরামুধ না হয়। ছে ভক্ত-दरमन ! अमामी कमार व्यवा दर्शास्त्र सिनी नःइ। १२। ४०

সঙ্গদৈন্ পুরৈছু কাহারিঃ কৌস্তভকুওলৈঃ।
শাস্তং স্মরতু মে রাম ! বরং নান্যং র্ণে প্রভো ॥
শীরাম উবাচ।

ভবত্বেবং মহাভাগে । গচ্ছ তং বদরীবনম্ । ভবৈব মাং স্মরন্তী তং ত্যক্তেদং ভূতপঞ্চম্। মানেব প্রমাত্মানং অচিরাৎপ্রতিপদ্যমে॥ ৮৩॥

া৮১।৮২। দম্পলুরাম যোগিনীর স্তৃতি বাক্য হারা প্রীত হইয়া বলিলেন—হে প্রমন্ত জদদ্ধে! তোমার মনোরথ স্ববি-লছেই পূর্ণ হইবে, তুমি বদবীবন প্রাপ্ত হইয়া স্থামাকে স্মরণ করত এই পঞ্চৌডিক দেহ পরিত্যাগ পূর্বক স্থামাকে প্রাপ্ত শ্রুতা রঘুত্তমবচোহমূতদারকপ্রম্
পত্বা তদৈব বদরীতরুখগুজুইম্।
তীর্থং তদা রঘুপতিং মনদা সারস্তী
ত্যক্তবা কলেবরমবাপ পরং পদং দা॥ ৮৪ ।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
কিন্ধিন্ধ্যাকাতে বর্চমোহধ্যায়ঃ

ছইবে । ৮৩ । রঘুত্তমের অমৃত কম্প বাণী শ্রবণ করিয়া যোগিনী বদরীকাশ্রম গমন পূর্কক পতিতপাবন জীরামচন্দ্রকে ধ্যান করত কলেবর পরিভ্যাগ করিবামাত্র দেব স্থল ভ বৈরুপ্ত ভবন বাসিনী ছইল । ৮৪।

> ইতি শ্রীমদধ্যক্ষরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে কিছিন্ধাকাতে মটোহধ্যায়ঃ :

मश्रुदमा ३ शर्मा ३ ।

অথ তত্ত সমাগীনা ব্লুকথণ্ডেষু বানরাঃ। চিন্তরন্তো বিমুক্ত সীতামার্গকর্শিতাঃ।। ১॥ তত্তোবাচাঙ্গদঃ কাং শ্চিদ্বানরান বানরর্যতঃ। ভ্ৰমতাং গহ্বারেইস্মাকং মাদো ভূনং গতোইভবৎ মীতা নাধিগতামাভিন কুতং রাজশাসনম্। যদি গচ্ছামঃ কিন্ধিন্ধাং ? স্বতীবোহস্মানু হনিষ্যতি বিশেষতঃ শক্রস্তুতং মাৎ মিষাম্লিছনিষ্যতি। মরি তদ্য কুডঃ প্রীতি ? রহং রামেণ রক্ষিতঃ ॥ ৪ ॥ সর্বদে ভাগ্যসহিতং পুরং দেবপুরোপমম্। ইদানীং রামকার্য্যং মে ন ক্লভং তান্মিষং ভবেৎ। ভক্ত মন্ধননে ভূনং সুত্রীবক্ত দুরাক্সনং॥ c॥

মাতৃকল্পাং ত্রাতৃভাষ্যাং পাপাত্মানুভবত্যদে।। ন গচ্ছেয়মতঃ পার্যং তন্ত বানরপুঞ্বাঃ !॥ ७ ।। ত্যক্যামি জীবিতং চাত্র যেন কেনাপি মৃত্যুন।। ইত্যশ্রুনার কেচিৎ দৃষ্ট্য বানরপুঞ্চবাঃ॥ १॥ ব)থিতাঃ সাক্ষনয়না যুবরাজমধাক্রবন্ ॥ ৮॥ কিমর্থং তব শোকোহত ? বয়ং তে প্রাণরক্ষকাঃ। ভবামো নিবসামোহত্র গুহায়াথ ভয়বর্জিভাং॥ ৯ শনৈঃ পরস্পারং বাক্যং বদতাং মারুভান্মস্কঃ ॥ ১০।

জনস্তর সেই বন মধ্যে সীভার আন্তেষণ ছারা ক্লিফ্ট ও চিত্তাকুণ হৃদর যুবরাজ প্রভৃতি কপিগণ মুগ্ধ হইয়া রুক্ষ সমূহ খৰলখন কবত বানর শ্রেষ্ঠ বালী নক্ষম মর্কটগণকে বলিলেন। হে মর্কটগণ ! এই গহরর মধ্যে বিচরণ করিতে করিতে আমা-দিগোর নিশ্চয় এক মাস অভিবাহিত হটল। ১।২। আমরা বাজাক্তা পালনে অসমর্থ হইয়া কিফিন্তাভিমুখে গমন করিলে स्थीय आभारमत्र निक्त्रहे थानांखिक मध कतित्व ; विरमयणः শামি শত্ৰু তময় বলিয়াই সুগ্ৰীব কোপানল ধাৰা আমাকে বিনাশ করিবে, যেহেতু আমার প্রতি হুরাত্মা সুগ্রীবের প্রীতি উৎপাদনের কারণ মাত্রও লক্ষিত ছইতেছে না; আমি রঘুনাথ কর্ক রক্ষিত হইয়া আছি, ইদানীং রাম কার্যা সম্পাদনে यममर्थ, युज्रबार (मह द्वराया हित्र देवित युखीव (य व्यामारक विनाम क्रिट्र काश्रंत्र मत्मर नाई । ७। ४।। ৫। अठ वर মাতৃ তুল্য ভ্ৰাতৃ-ভাষ্যাস্থ্যামী গুৱাক্মা স্থগীবের পার্য বর্তী ছই ব না, অধি প্রবেশাদি যে কোন উপায় দারা পারি এ জীবন নিশ্চয়ই পরিত্যাগা করিব ; কতিপয় বানরগণ বীরবর অঙ্গাকে এইরপ থিদামান ও সজল নয়ন অবলোকন করিয়া ছঃখি-ভাত্তঃকরণে আত্থান ৰাক্য দারা সাত্তনা করিছে লাগিল।

ছে যুৱৱাৰ ! আপনি কিঞ্মিত্ৰে শোক ভইবেন না, आमत्रा এই वामत बखली कालमात क्रीतन क्रकरण गङ्गवान क्रेस्। এই ভন্নবৰ্জিভ গুহার অভান্তরে স্বৰ্গ তুলা পুৰীতে সক্ষদা বাদ করিব। কশিগণের প্রস্পার এরপা বাকা প্রবণ করিয়া শ্রুত্বাঙ্কদং সমালিক্য প্রোবাচ নয়কোবিদঃ
বিচার্যাতে কিমর্থং ? তে তুর্মিচারো ন যুজ্যতে ॥১১
রাজ্যোহত্যন্ত প্রিয়ন্ত্বং হি তারাপুত্রোহতিবল্লতঃ।
রামশ্র লক্ষ্মণাৎ প্রীতি স্তরি নিত্যং প্রবর্ধ তে ॥ ১:
অতো ন রাঘ্বাদ্ধীতিস্তব রাজ্যো বিশেষতঃ।
অহং তব হিতে সক্তো বৎস! নান্যং বিচারয় ॥১৬
গুহাবাসন্ট নির্ভেদ্য ইত্যুক্তং বানরৈস্ত যৎ
তদেত দ্রাম্বাণানামভেদ্যং কিং ক্ষণজ্রের ? ॥ ১৪॥
বে ডাং দুর্ব্বোধয়ন্ত্রোতে বানরা বানর্ধত!।
পুল্লদারাদিকং ত্যক্ত্রী কথং স্থাক্যন্তি তে ভ্রা॥ ১৫

হতুমান যুৰৱাজকে আালিঙ্গন করতঃ বলিল, হে নীতিজ্ঞ ! এ রূপ কার্যাচরণ নীতিজ্ঞের উপযুক্ত নহে। ৯।১০।১১। বেছেতু তুমি তারার তনয়ও স্থাীবের অভান্ত প্রিয়, এবং ত্রিরামচক্র লক্ষ্মণের প্রতি যেরপ বাৎসল্য প্রকাশ করেন, তোমার প্রতি ভাঁহার ডভোধিক বাৎসল্য দৃষ্ট হয় ।১২। অতএব ভক্ত বংসল রামচন্দ্র ও কপিরাজ সুগ্রিব হইতে তোমার ভারের কারণ মাএ লুকিত হইতেছে না। হেবংস ! আমি সর্বলাই তোমার হিত কার্যা সাধ্যে অনুৱক্ত হইলাম অন্য বিচারে কোন প্রয়োজন নাই, হে যুবরাজ ! তুমি বিবেচনা कृतिया एमध अल्लान किंशिंग विनिष्ठिष्ठ (य, व्यामहा निर्वेश গুহা মধ্যে বাস করিব (অর্থাৎ স্কুগ্রিব সন্নিধানে কলাচ পামন করিব না) এই বাক্য কোন রূপে প্রমিতি জনক ছইতে পারে না, যেহেতু এই ত্রিভূবন মধ্যে কোন্ বস্তু আছে যাহা জীরাম বাণের অভেন্য? জীরাম শরসন্ধান করিলে গুহা মধ্যে কপি-গাণের নির্ভব্নে বাস করা কি রূপে সম্ভব হইতে পারে ? যে বানরগণ তোমাকে তুর্ব্দি প্রদান ছারা ভ্রম বর্দ্ধন করি-রাছে তাহার। পুত্র দারাদি বর্জিত হইরা এই গুহামধ্যে ভোমার সহিত কি প্রকারে বাস করিয়া কাল যাপন করিবে ?

ভাষ্য গ্রহণ বিক্ষা রহস্তং শৃণু যে স্কৃত !।

রামো ন মানুষো দেবং সাক্ষায়ারায়ণাইব্রয়ং ॥১৬

সীতা ভগবতী মায়া জনসংমোহকারিণী।

লক্ষণো ভুবনাধারং সাক্ষাচ্ছেষঃ ফণীশ্বঃ ॥ ১৭ ॥

বৈজ্ঞণা প্রার্থিতাং সর্বের রক্ষোগণবিনাশনে।

মায়ামানুষভাবেন জাতা লোকৈকরক্ষকাং ॥ ১৮ ॥

বয়ং চ পার্যদাঃ সর্বের বিক্ষোবৈরিকুঠবাসিনঃ।

মনুষ্যভাবমাপয়ে স্বেচ্ছয়া পরমাত্মনি ॥ ১৯ ॥

বয়ং বানর্রপেণ জাতান্তিস্যব মায়য়া।

বয়ং তু তপ্সা পূর্বাং আরাধ্য জগতাং পতিম্॥২৬

তেনিবানুগৃহীতা স্মঃ পার্যদ্য মুপাগতাঃ।

ইদানীমপি তস্যব সেবাং কুত্রব মায়য়া॥ ২১ ॥

। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। হে কপিবর অঞ্চল! অন্য গোপনীয় রহস্য কহিতেছি মনোযোগ পূর্বক শ্রবণ কর, যিনি
ক্ষীবোদ সাগরে ভ্রুক্ত শরনে শায়িত আছেন তিনিই সাক্ষাও
অধায় নারায়ণ রানচন্দ্র, এই জগৎ সংসার ঘাঁছার মায়াও
ভারা বদ্ধ হইয়া আছে তিনিই জনক নিদ্দিনী সীতা, যিনি এই
সপ্ত দ্বীপা পৃথিবীকে সহস্র ফণা দ্বারা ধারণ করিতেছেন
তিনিই অনস্তদেব লক্ষ্মণ—ই হারা কেহই মানব নহেন,
কেবল এই জগৎ সংসার উদ্ধার ও অবনীর ভার স্বরপ
রাক্ষ্য কুল নির্দ্ধল করিবার জন্য প্রজাপতি ব্রক্ষা কর্তৃক
প্রাথিতি হইয়া মানব লীলা অবলম্বন করিতেছেন। ১৬। ১৭।
১৮। পূর্বকালে আমরা অতিশয় কঠোরতর তপাসা করিয়া
জগৎ পিতা নারায়ণের আরাধনা করিলে ঐ দ্রাময় ভর্ত্
বংসল দ্রাপরতন্ত্র হইয়া বলিলেন হে তাপ্সগণ! তোমর।
এই তপ্স্যার প্রভাব বশতঃ নিরন্তর আমার স্বমীপবরী
হইয়া স্বনীয় সেবায় ও অতীই কার্ম্য, সম্পাদনে নিযুক্ত

পুনবৈর্প্রধাদান্ত মুখং স্থাদ্যামহে বরম।

ইত্যঙ্গদমথাশ্বাদ্য গতা বিদ্ধাং মহাচলম ॥ ২২ ॥

বিচিম্বজ্ঞাহথ শনকৈর্জানকীং দক্ষিণাম্বুধেঃ।
তীরে মহেন্তাক্ষণিরেঃ পবিত্তং পাদমাযযুঃ ॥ ২৩ ॥

দৃষ্ট্বা সমুজং দৃঃপারমগাধং ভরবর্জনম্।

বানরা ভরসংক্রন্তাঃ কিং কুর্মা ইতি বাদিনঃ ॥ ২৪ ॥

নিষেদুরুদ্ধেন্তীরে সর্বের চিন্তাদমন্বিতাঃ।

মস্তরামান্তরন্যোন্যমঙ্গদান্তা মহাবলাঃ ॥ ২৫ ॥

ভ্রমান্তমেব নো মাদ্যো গতোহত্তৈব গুহান্তরে।

ন দৃষ্টো রাবণো বাহন্ত দীতা বা জনকান্মজা ॥ ২৬॥

হইরা কাল্যাপন কর। অনন্তর ভক্ত বংগল দত্ত এই বর গ্রহণ ক্রিয়া বৈকুণ্ঠনাথের পার্ষদ হইলা ছিলাম, বর্ত্তমান সময়ে পরমাত্মা বিষণু অবনী মণ্ডলের ভার উদ্ধার করিবার জন্য মানব দেহ ধারণ করিয়াছেন সুতরাং ভাচা ছইলে আমরাও মায়া দারা বানর দেছ ধারণ করিয়া তৎকার্যা সম্পাদন করত: পুনর্কার বৈকুও ধামে গানন্দ চিত্তে বাস করিয়া কাল্যাপন বরিব। এই প্রকার যুবরাজকে নানা প্রকার আখাদ বাক্য প্রদান করিলেন। অনন্তর বানরগণ জান নীর আবেষণ করতঃ বিদ্ধা পর্বত প্রাপ্ত হইয়া ক্রমে ক্রমে লবণ সমুদ্রের তীরে মহেন্দ্র পর্বতোপরি গমন করিল। ১৯।২০।২১। ২২। ২৩। অনম্বর বানরগণ পর্বভাক্তি মকন, কুন্তীর প্রভৃতি জলচর জন্ত সমাকীৰ্ণ অভলম্পৰ্শ ভয়ানক সমুদ্ৰ দৰ্শনে ভন্ন সন্তুত্ত মানস হইয়া বিবশের ন্যায় অঞ্চ শিধিল করিয়া কেছ বা भावन-किर वा छेभारवणन कविनः; किन्न भरावन भन्नाकम অঙ্গল প্রভৃতি বানরগণ মন্ত্রণা করিবার জন্য উপবিষ্ট ছইল। 1281 २६। अनल्ड वानत निर्गत **এই ज्ञान मस्त्रा** हित **इहेन**-আমাদিলের বৃথা ভ্রমণে নির্দিষ্ট কাল অভিবাছিত হুইল, অদ্যাবধি রাবণকেও সীভাকে দর্শন করিতে পারিলাম না,

স্থীবন্তীক্ষণপোহমারিহন্ত্যের ন সংশয়:।

স্থীবব্ধতোহমাকং শ্রেয় প্রায়োপবেশনম্॥ ২৭
ইতি নিশ্চিত্য তত্ত্বির দর্ভানান্তীর্য সর্বিতঃ।
উপাবিবেশুন্তে সর্বের্ম মর্নে ক্রুনিশ্চরাঃ॥ ২৮॥
এতমিয়ন্তরে তত্ত্ব মহেন্দ্রাফ্রিগুহান্তরাহ।
নির্মান্তরে তত্ত্ব মহেন্দ্রাফ্রিগুহান্তরাহ।
নির্মান্তরে তত্ত্ব মহেন্দ্রাফ্রিগুহান্তরাহ।
দুষ্ট্রা প্রায়োপবেশেন স্থিতান্ বানরপুক্রান্।
উবাচ শনকৈর্পঃ প্রান্তো ভক্ষোহদ্য মে বছঃ॥৩০
একৈকশঃ ক্রমাৎসর্বান্ ভক্ষয়ামি দিনে দিনে।
ক্রাজ্যা তদ্ গুধুবচনং বানরা ভীত্যানসাঃ॥৩১॥
ভক্ষয়িয়াতি নঃ সর্বানসো গুধ্রো ন সংশয়ঃ।
রামকার্যাং চ নাম্মাভিঃ কৃতং কিঞ্জিন্ধরীশ্রাঃ। ৩২

অতএব মহারাজ স্থানি দৃঢ়তর দণ্ড দ্বারা আমাদিলের প্রাণা-ত্তিক দণ্ড বিধান করিবেন ইহাতে সন্দেহ মাত্র নাই; কিন্তু স্থানি কর্তৃক প্রাণ দণ্ড অপেক্ষা প্রায়োপনেশন দ্বারা প্রাণ তাগ করাই শ্রেষজ্বর, এই রূপ মরণে রুত নিশ্চয় হইয়া স্ব স্থ শরীরে কর্দ্দম শেপন করিয়া কুশাদনোপরি উপবেশন করিল। ।২৬।২৭।২৮।

এই সময়ে পর্বত সদৃশ এক গ্র ক্রোধ পরতন্ত্র হইয়া
মহেন্দ্র গিরির অভ্যন্তর হইতে বহির্গত হইয়া বানর প্রেক্টান
প্রামোপবেশনে উপবিষ্ঠ আছে অবলোকন করত কহিল,
অদ্য আমি বিপুল ভক্ষাদ্রব্য প্রাপ্ত হইয়াছি, অতএব এক
একটা করিয়া প্রতিদিন সকলকে ভক্ষণ করিব। বানরসমূহ
গ্রের বাক্য জ্বন করিয়া ভীতমনা হত্ত পরন্পর কৃছিতে
লাগিল যে, গ্র নিশ্চরই আমাদিগের সকলকে ভক্ষণ করিবে,
অতএব আমাদিগের কর্তৃক রামকার্য্য কিছুই হইল না—হ্ন্ত্রৌ
বর্ত কোন হিতকার্য্য করিতে না পারিয়া রখা বিনাশ

স্থাবিদ পি চ হিতং ন কৃতং স্বাক্ষনামপি।
রথানেন বধং প্রাপ্তা পচ্ছামো যমদাদনম্।। ৩৩॥
অহো জটায়ুর্ধ স্মান্ধা রামদ্যার্থে মৃতঃ স্থাঃ।
মোকং প্রাপ দুরাবাপং যোগিনামপ্যরিক্ষমঃ।॥৩৪
দশাভিন্ত তদা বাক্যং প্রভাগ বানরভাষিতম্।
কে বা যুরং মম ভ্রাভুঃ কর্ণপীয়্ষদন্নিভ্রম্। ৩৫॥
জটান্থ্রিতি নামান্তা ব্যাহারস্তঃ পরস্পরম্।
উচ্চতাং বো ভরং মা ভূমাতঃ প্রব্যসন্ত্রমাঃ।॥ ৩৬
ভমুবাচাক্ষদঃ শ্রীমানুষ্থিতো গৃধুদন্নিধো।
বামো দাশর্থিঃ শ্রীমান্ লক্ষ্মণেন দমস্বিতঃ।। ৩৭।
দীত্রা ভার্যারা সার্ক্ম বিচ্চার মহাবনে।
ভস্য দীতা ক্ষতা সাধী রাবণেন দুরাত্মনা। ৩৮।।

প্রাপ্ত হইয়া যম সদলে গমন করিলাম। হায়, ধীশব্জিপস্পার, ধশ্বাত্মা জ্ঞায়ু রামকাধ্যে নিধন প্রাপ্ত হইয়া যোগিগণের ভ্লব্ভ মোক্ষ লগভ করিয়াছেন ।২৯।৩০।৩১।৩২।৩৩।৩৪।

তথন সম্পাতি বানর ভাষিত বাক্য শ্রবণ করিয়া তাছাদিগকে কহিল—তোমরা কে, কর্ণামৃততুল্য আমার ভ্রাভার
কথা কহিছেই? হে বানর শ্রেষ্ঠগণ! অদ্য ভোমরা পরস্পার
ভাটায়ুর নাম উল্লেখ কর, আমা হইতে ভোমাদিগের কোন
ভর নাই। শ্রীমান্ অন্ধদ উথিত হইরা তৎসন্ধিধানে গমনপূর্বাক
কহিতে লাগিলেন—রাজা দশর্থের পুত্র জ্রীমান্ রামচল্র
কনিষ্ঠ শক্ষাণ ও ভার্য্যা দীভার সহিত মহারণ্যমধ্যে বিচরণ
করিতেছিলেন। একদা পর্ণকৃটির মধ্যে দীভাকে সংস্থাপর
করিয়া শ্রীরাম ও লক্ষ্মন মৃগরার্থ বহির্বাত হইলে ভুগান্মা রাবণ
পাত্রতা দীতাকে অপহরণ করিল, ঐ সমন্ত মহাবল পরাক্রান্ত
পাক্ষিরাল জটায়ু আক্রান্ম পথে "হা রাম। হা রযুক্তম।"
এই রূপ কাকণ্য বিলাপ বাক্য শ্রবণ করিয়া আক্রান্ম পথে
গমন করতঃ দীভার সংরক্ষণার্থ দশানন রাবণের সহিত্ তুমুল

যুদ্ধ করিয়া প্রাণ পরিত্যাগা করিয়াছিলেন। । ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। জনস্তর জীরামচন্দ্র জারাম জার্ম জার্ম করিয়ার রাম-সাযুষ্য প্রাপ্তি হইল। পরে জীরাম অগ্নি সাক্ষি করিয়া কপিবর স্থ্রজীবের সছিত মিত্রতা করিলেন। ৪১। এবং মহাবল পরাক্রাপ্ত কপিরাজ বালিকে বিনাণ করিয়া স্থ্রীবকে বানর রাজ্যে অভিষিক্ত করিলেম। ৪২। অনস্তর বানর শ্রেষ্ঠ স্থ্রতীব সীতার ক্ষম্প্রেরণার্থ জামাদিগকে প্রেরণ করতঃ আদেশ করিলেন যে, ডোমরা মাস মধ্যে প্রত্যান্যমন না করিলে প্রাণান্তিক দণ্ড প্রাপ্ত , ইইবে। জামরা রাজ্যাসন প্রভিপালনার্থ ভ্রমানক বন ও গুহা মধ্যে ভ্রমণ করিয়া মাসাভিবাহিত করিয়াছি, কিন্তু জ্ঞাাশি সীতা ও রাবণের বার্ত্তা প্রবণকরিলাম না, অভএব প্রায়েগাবেশনে লবণ সম্প্রতিরে জীবন বিসর্জন করিতে উদ্যুত্ত হইয়াছি। ৪০।৪৪।৪৫।

যদি জানাসি হে পকিন্! সীতাং কথর নঃ শুভাষ্
আঞ্চল বচঃ শ্রুড়া সম্পাতি শ্রু ইমানসং ॥ ৪৬ ॥
উবাচ মৎপ্রিয়ো ভাতা জটায়ুং প্রবেগশ্বরাঃ!।
বহুবর্ষদহস্রান্তে ভাতৃবার্ত্তা শ্রুড়া মরা।। ৪৭ ॥
বারুহারং করিষেংহং ভবতাং প্রবেগশ্বরাঃ!।
ভাতৃং সলিলদানার নয়ধং মাং জলান্তিকম্।
পশ্চাৎ সর্বিং শুভং বক্ষ্যে ভবতাং কার্য্যসিদ্ধরে।
তথেতি নিম্যুক্তে তীরং সমুদ্রদ্য বিহঙ্গমম্।
বোহপি তৎসলিলে স্নাত্রা ভাতৃর্নত্বা জলাঞ্জলিম্।।
পুনঃ স্বন্থানমাসাদ্য স্থিতো নীতো হরীশ্বরৈঃ।
সম্পাতিঃ কথ্যামাস বানরান্ পরিহর্ষরন্।। ৫০ ॥
লক্ষা নাম নগর্যাক্তে ত্রিকুটগিরিমূর্জনি।
ভত্রাশোকবনে সীতা রাক্ষসীতিঃ সুর্বিক্তা॥ ৫১ ॥
সমুদ্রমধ্যে সা লক্ষা শত্যোজনদূরতঃ।
দৃশ্যতে যে ন সন্দেহঃ সীতা চ পরিদৃশ্যতে ॥ ৫২ ॥

হে পশ্চিবাজ ! শুভদায়িনী মা জানকী !বাবণ কর্ত্বক সভা হইয়া কোন স্থানে বাস করিভেছেন যদি আপনি জ্ঞাত থাকেন তবে প্রকাশ করুন, অঙ্গদের এই রপ বাক্য শ্রণ করিয়া হৃষ্ট মানস সম্পাতি কহিল—হে বানরগণ ! বহু কাল পরে প্রিয়তম ভাতা জ্যায়ুব বার্ত্তা শ্রবণ কবাইলে, অহু এব সীভার অংশ্বেণ কার্য্যে বাকা হারা ভোমাদিগকে সাহায্য করিব, কিন্তু সম্প্রতি প্রিয়তম ভাতা জ্যায়ুর তর্পণ করিবার জন্য আমাকে জ্ঞাশায় সমীপে লইয়া চল, পরে ভোমাদিগের কার্য্য সিদ্ধার্থ সমস্ত সম্বাদ বিস্তার করিয়া কহিব; অনস্তর পক্ষিবর সম্পাতি বানরগণ কর্ত্তক সমৃত্র তীরে নীভ হইলে ঐ জ্ঞান মধ্যে স্থান ও তর্পণ করতঃ প্নর্কার স্থানে সমানীত হইয়া বানরগণের হর্ম সমুৎপাদন করতঃ কহিলেন হে বানরগণ সমৃত্র মধ্য দেশে একুট পর্কাতোপরি লক্ষা নামী পুরী আছে, ভন্মধ্যে অশোক বনে রাক্ষণী বর্ত্বক পরিরক্ষিতা হইয়া বামপ্রিয়তমা সীতা বাস করিছেছেন, প্রফি জাতিব দূরদৃষ্টি বশতঃ শত যোজন দূর

গৃধুস্বাদ্ দূরদৃষ্টিমে নাত্র সংশরিভুং ক্ষমম ।
শতবোজনবিস্তীর্ণং সমুদ্রং যক্ত লক্ষ্যরেও ॥ ৫৩ ॥
স এব জ্ঞানকীং দৃষ্ট্রা পুনরায়াশুতি জনম ।
জ্ঞানকীং দৃষ্ট্রা পুনরায়াশুতি জনম ।
জ্ঞান্ত হন্তার্মেকাকী কিন্তুপক্ষবিবর্জিতঃ ।
বভধমিতি যত্নেন লজ্জিতুং সরিতাম্পতিম্ ।
ততো হন্তা রঘুলের্ছোর্ রাবনং রাক্ষসাধিপম্॥ ৫৫

লক্ষাং প্রবিশ্যাথ বিদেহকন্যকাম্।
দৃষ্ট্বা সমাভাষ চ বারিধিং পুনস্তর্তুং সমর্থঃ কতমো বিচার্য্যতাম ॥ ৫৬॥

শতযোজনায়তং

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে কিন্ধিশ্ব্যাকাণ্ডে সপ্তমোহ্ধ্যায়ঃ।

গথে অবছিতা লহাপুরী ও তম্বাবর্তিনী সীতাকে আমি দর্শন করিতে পারি অতএব সন্দেহ কর্ত্বর নহে। যে জন এই শত্ত যোজন বিস্তীর্গ সমুদ্র লজ্জ্বনে সমর্থ হইবে সেই সীতাকে দর্শন করিয়া প্রত্যাগমন করিতে পারিবে; কি করি আমি পক্ষরিহান না হইলে আতৃহস্তা ভুরাক্মা রাবণকে একাকীই বিনাশ করিয়া যম সদনে প্রেরণ করিতাম। ছে কপিগণ! তোমরা এই সমুদ্র লজ্জ্বনে বত্রবান হও আর রঘুপতি জীবামচন্দ্র ঐ হরাজ্যা রাবণকে বিনাশ করুন। ৫৫। সম্প্রতি এই শত্ত যোজন বিস্তৃত বারিধি লজ্জ্বন পূর্ক্তক লহ্ষাপুরী প্রবেশ করিয়া বাম-প্রিক্রতমা দীতাকে দর্শন ও সম্ভাবণ পূর্ক্তক প্রত্যাগমনে ভোমাদিগের মধ্যে কে সমর্থ—পরস্পর বিচার করিয়া নিশ্চধ কর। ৫৬।

ইতি শীমদধ্যাক্সরামারণে উমামছেশ্বরসন্থাদে কিছিল্যাকাণ্ডে সপ্তমোহধাারঃ!

অফমো২ধ্যায়ঃ।

অথ তে কৌতুকাবিন্টাঃ দল্পাতিং দর্ববানর'ঃ।
পপ্রচ্ছুর্তগবন্! ক্রহি স্বন্দন্তং ত্বমাদিতঃ॥ ১॥
দল্পাতিঃ কথয়ামাদ স্ব্রভান্তং পুরাক্ষত্ম।
অহং পুরা জটায়ুশ্চ ভাতরে কাটোবনো॥ ২॥
বলেন দর্পিতাবাবাং বলজিজ্ঞাসয়া থগো।
স্বর্যামগুমপর্যন্তেং গন্তমুৎপতিতো মদাৎ॥ ৩॥
বছযোজনসাহস্রং গতৌ তত্র প্রতাপিতঃ।
ক্রটায়ুল্বং পরিত্রাজুং পক্রেবাচ্ছাল্য মোহতঃ॥ ৪॥
স্থিতোহহং রশ্মিভির্দন্ধপক্ষোহ্মিন্ বিক্রামূর্জনি।
পতিতো দূরপতনাম্মুচ্ছি তোহহং কপীশ্বরাঃ॥ ৫॥

অনন্তর বানরগণ আনন্দিত হইরা সম্পাতির প্রতি কহিল,
হৈ পদিরাক্ত! আমরা আপনার পক বিহীন অবলোকনে
বিশ্বিত ইইলাম, অতএব আপনি শ্বকীর রক্তান্ত সকল প্রকাশ
করিরা আমাদিগের সংশ্ব ছেদ করন। ১। অনন্তর সম্পাতি
প্রাক্ত শ্বকীয় রক্তান্ত কহিতে প্রব্ত ইইল—পূর্ব্ব কালে
প্রাক্ত শ্বকীয় করিবার জন্য স্ব্যামগুল গামনে উদ্বোগী হইয়া
কে সহস্র ঘোজন পর্যান্ত গমন করিলাম। অনন্তর জটায়ু প্রচণ্ড
রবি কিরণ পরিতাপে মোহ প্রাপ্ত হইল, আমিও জটায়ুর
ভীবন রক্ষা করিবার জন্য পক্ষদ্বর প্রসারণ করত অগ্নি তুল্য
স্ব্রি কিরণে দগ্ধ-পক্ষ হইয়া এই বিশ্ব্যপ্রব্রে উপরিভাগে
পতন নিবন্ধন মৃদ্ধিত ইইয়া দিনত্রের পর্যান্ত এইরপা অচৈতন্য
ইইয়া ছিলাম—শ্বকীয় দেশে—কি পর্ব্বতোপরে বাস করি ছেছি

দিনত্তরাৎ পুনঃপ্রাণসহিতো দক্ষপক্ষকঃ।
দেশং বা গিরিকুটান্ বা ন জানে লাস্ত্যানসঃ॥ ৬॥
শনৈক্ষীল্য নয়নে দৃষ্ট্য তজাশ্রমং শুভুম্।
শনৈঃ শনৈরাশ্রমশু সমীপং গতবানহম্।। ৭॥
চন্দ্রমা নাম মুনিরাট দৃষ্ট্য মাং বিস্মিতোহ্বদং।
সম্পাতে! কিমিদং তেহ্দ্য বিরূপং কেন বা কৃত্যু
জানানি স্থামহং পূর্বমতান্তং বলবানসি।
দক্ষো কিমর্থং তে পক্ষো ? কথাতাং যদি মন্যুসে॥
ততঃ স্বচেটিতং সর্বাং কথিয়িত্বাতিত্বঃথিতঃ।
অক্রবন্ মুনিশাদূলং দক্ষেহহং দাববহ্ন্না।। ১০॥
কথং ধারয়িতুং শক্ষো বিপক্ষো জীবিতং ? প্রেনেঃ
ভিত্যক্তোহ্থ মুনিবীক্ষ্য মাং দয়াদ্র বিলোচনঃ।। ১১

জানিতে অসমর্থ ছিলাম। ২। ৩। ৪।৫। ৬। অনন্তর আমি চৈতন:
প্রাপ্ত ছইয়া অনতি দূরদেশে অপূর্বা এক পূরী দর্শন করিয়া
অতি ক্লেশ পুরঃসর ঐ পুরীর সমীপে গমন করিলাম। ঐ
আশ্রমাধিপতি মুনি শ্রেষ্ঠ চল্রমা আমাধেক দর্শন করত বিশ্বিত
হইয়া কহিলেন—হে সম্পাতে! আমি পূর্বেই ভোষাকে
অসীম পরাক্রম বলিয়া জ্ঞাত ছিলাম, অদ্য কি কারণে ভোমাকে
পক্ষ বিহীন অবলোকন করিতেজি প্রকাশ কর। ৭৮৮৯। অনন্তর
আমিমুনিবর চল্লমার প্রতি পক্ষ দাহের কারণ সমস্ত বিহত
করিয়া কহিলাম।

হে মুনিবর! আমি দাবানলে দক্ষ হইয়া কি প্রকারে জীবন ধারণ করিব? মুনিরাজ চন্দ্রমা আমার এই কাত-রোক্তি শ্রবণ করিয়া দ্যার্জ চিত্তে কহিলেন, হে বংদ!

শুনু বৎস ! বচো মেইদাঞ্জা কুরু যথেপি তম্। দেহমূলমিদং ছঃখং দেহঃ কর্মসমূদ্রবং । ১২ ॥ कर्मा প্রবর্ত্তনে দেহেইহংবুধা পুরুষম্ভ হি। অহন্তারস্ত্রনাদিঃ স্থাদবিদ্যাসম্ভবো জড়ঃ॥ ১৩॥ हिष्डायया मना युक्तख्रश्रायः शिखव ९ मना। ভেন দেহস্য তাদাত্ম্যান্দেহশ্চেতনবান্ ভবেৎ ॥১৪॥ দেহো২হমিতি বুদ্ধিঃ স্যাদাত্মনোইহঙ্গুতে রিলাৎ। তন্ম লং এব সংসারঃ স্থগ্রহুংথাদিসাধকঃ ॥ ১৫ ॥ আত্মনো নিবিক্তিকারস্ত মিথ্যাতাদাৎম্যতঃ সদা। দেহোহহং কৰ্মাকৰ্দ্তাহমিতি সঙ্কল্য সৰ্বাদা ॥১৬ জীবঃ করোতি কর্মাণি তৎফলৈর্ব্বধ্যতেহবশঃ। উদ্ধাধো ভ্রমতে নিভাং পাপপুণ্যাত্মকঃ স্ক্রাম্।। ১৭

क्रुडः यशाधिकः श्रुनाः यक्कनानानि निन्ध्यि । স্বৰ্গং গত্বা স্থুখং ভোক্ষো ইতি সঙ্কল্পবান্ভবেৎ।। তথৈবাধ্যাস ভস্তত্র চিরং ভুক্ত্বা স্থখং মহৎ। कीन भूगाः পতত্যसाक् चनिष्ट्न कर्मा চোদিত: ॥১৯ পতিতা মগুলে চেন্দোন্ততো নীহারসংযুতঃ। ভূমে। প্রিড়া জীফাদৌ তত্ত ভিড়া চিরং পুন: 120 ভূত্ব। চতুর্মিধং ভোক্ষ্যং পুরুষৈভূ ক্যতেঃ ততঃ। রেতো ভূড়া পুনস্তেন শ্লতো স্ত্রীয়োনিদিঞ্চিতঃ॥ ২১ যোনিরক্তেন শংযুক্তং জরায়ুপরিবেটিতম্। দিনেনৈকেন কললং ভূড়া ৰড়ত্বমাপ্লুয়াৎ ॥ ২২ ॥ তৎপুনঃ পঞ্জাত্তেণ বুদ্ব দাকারতামিয়াৎ। সপ্তরাত্তেণ তদপি মাংসপেশীন্বমাপ্পুরাৎ॥২৩॥

থানার বক্ষামাণ বাক্ষার তত্ত্বার্থ গ্রেছণ করিয়া যাহ। ইচ্ছা ভর করিবে। তে প্রিক রাজ্ঞ। দেখ পুরুষের দেই জন্যই সমস্ত তুঃখ ভোগ হয়, ঐ দেহ পূর্বজন্ম রুভ কর্ম জনা ্দ্চোহং অর্থাৎ দেহ আমি—এই রূপ জ্ঞান জন্য পুরুষের ংগ প্রবর্ত্ত হয়। কিন্তু মহস্কার (অর্থাং আমি দেহ,) এই রূপ ানের আশ্রর অনাদি জীব, অজ্ঞানের আশ্রয় লইলে ভাগাকে জড় কিস্বাহ্মচেত্রন বলে। কিন্তু মায়া বিশিষ্ট জীবাক্সা অচেত্রন স্ট্রে**ও শির্ভিত** জ্ঞানময় প্রমাঝার **আভা সংধুক হইরা** দহ ৬ আত্মার অভিন্ন জ্ঞান হইলে চৈতন্য প্রাপ্ত হয়। বেকপ অমি সন্তপ্ত লেছিপিও অমি না হইলেও অমি কার্য্য तलाम्ट्र ममर्थ इस । ३० । ১১ । ३२ । ५० । ५८ । अरहात মর্থাৎ আমি কর্ত্তা এই রূপ জ্ঞান হইলেই আমি দেহী এইরূপ জান হয়—তজ্জ্বন্য সূথ ছঃখাদির কারণ এই সংসার অর্থাৎ শরীর পরিগ্রছ হয়, নির্বিকার জীবায়ায় ও দেহে অভিন্ন জ্ঞান ংশতঃ আমি দেহী ও কর্তা এই রূপ জ্ঞাত হইয়া পাপ

অধোদেশে বাদ করিয়া থাকে. পুনাত্ম। স্বৰ্গলোকে বাদ করিয়া शांदक ; আমি বভ প্রকার স্বর্গ সাধন যজ্ঞ, দানাদি কর্ম করিরাছি তজ্জনা স্বর্গে গানন করিয়া পরম স্থা ভোগ করিব-জীবাত্মা এইরূপ অভিলাষ করিরা থাকেন। পরে এ কর্ম ফল স্বর্গ ভোগা হইলে পুণাক্ষয় বশত চন্দ্রনওলে পতিত হয়—অনন্তর চন্দ্রখণ হইতে নীহার (অর্থাৎ निनित्र) मश्यूक इहेगा এह পृथी मछल धानगानि मना मर्या अविके हम । ७९ । ७७ । ७१ । ७७ । २० । २० । অনন্তর ঐ শস্য নির্মিত চর্কা, চোষ্য, লেহা, পের এই চতুর্বিধ দ্রব্যরূপে পরিণত হইয়া পুরুষ কর্ত্তক ভক্ষিত হইলে রেভ (অর্থাৎ শুক্র) রূপে সম্ৎপন্ন হইরা ঋত কালে যোনি মধ্যে ক্ষরিত হয়। অনন্তর শোণিত সংযুক্ত ও জ্বায় বেষ্টিত ছইয়া এক দিনে কলল ছইয়া তৃতীয় দিবদে কাঠিনা প্রাপ্ত হয়। অনন্তর পঞ্চন নিবদে বুরুদ্বোর, সপ্তম দিবদে পুণা কন্মাচন্ত্ৰ করতঃ ঐ কর্মাধীন হইয়া পাপাক্ষা চিরকাল। মাংসপিত, পঞ্চল দিবতে ঐ মাংস পিত ক্ষিয়াক ১ইয়া পক্ষমাত্রেণ সা পেশী রুধিরেণ পরিপ্লুতা।
তস্যা এবাস্কুরোৎপত্তিঃ পঞ্চবিংশতিরাত্রিয়ু ॥২৪॥
গ্রীবা শিরশ্চ ক্ষন্ধশ্চ পৃষ্ঠবংশস্তথোদরম্।
পঞ্চধাঙ্কানি চৈকৈকং জায়ন্তে মাসতঃ ক্রমাৎ ।২৫
পালিপাদে তথা পার্যঃ কটির্জানুস্তথৈব চ।
মাসদ্বয়াৎপ্রজায়ন্তে ক্রমেণের ন চান্যথা॥ ২৬॥
বিতির্মানেঃ প্রজায়ন্তে ক্রমেণাসচতুষ্টয়ে॥ ২৭॥
নার্না কর্ণে চ নেত্রেচ জায়ন্তে পঞ্চমাসতঃ।
দত্তংক্তির্নথা গুছুং পঞ্চমে জায়তে তথা॥ ২৮॥
অর্বাক্ শ্রাসতশ্ভিতং কর্ণয়োর্ভ্রতি ক্ষুট্র্ম।
পায়ুর্মেচ্মুপস্থং চ নাভিশ্চাপি ভবেয়ুণাম্। ২০॥
সপ্তমে মাসি রোমাণি শিরঃ কেশাস্তথিব চ।
বিভক্তাবয়নতং চ সর্বাং সম্পদ্যতেইন্টমে।। ৩০॥

জঠরে বর্দ্ধতে গর্ত্তঃ স্ত্রিয়া এবং বিহয়ম !।
পঞ্চাম মাসি চৈতনাং জীবঃ প্রাপ্তোতি সর্কাশঃ ॥
নাভিস্ত্রাপারধেণ মাতৃভুক্তায়সারতঃ ।
বর্ধ তে গর্ভগঃ পিপ্তোন ভিয়েত ক্ষকর্মতঃ ॥ ৬২ ॥
স্মৃত্বা সর্কাণি জন্মানি পূর্বকর্মাণি সর্কাশঃ ।
জঠরানলতপ্তোহয়মিদং বচনমত্রবীৎ ॥ ৩৩ ॥
নানাযোনি সহস্রেমু জায়মানোহতবান্ ।
পুত্রদারাদিসমন্ত্র কোটিশঃ পশুবাদ্ধবা ন্ ॥ ৬৯ ॥
ক্টুন্নতরণাসক্ত্যা ন্যায়ান্যায়েধ নার্জনম ।
কৃত্ব নাকারবং বিফুচিন্তাং স্বপ্লেইপি দুর্ভগঃ ॥
ইদানীং তৎফলং ভুপ্তে গর্ভহুংখং মহত্বম্ ।
স্থানাধতে শাম্ববদ্দেহে ভ্রাসমন্তিঃ ॥ ৬৬
স্থার্থিয়েণেবে ক্রবান্ ন কুতং হিত্মান্মনঃ ।
ইত্যেবং বছধা দুঃগমনুভুয় স্বকর্মতঃ ॥ ৬৭ ॥

পঞ্চবিংশতি দিবসে অশ্বুবজু প্রাপ্ত হয়। অনন্তব তিংশদিবসে

ঐ অশ্বুরের জীবা, মন্তক, শ্বন্ধ, পৃষ্ঠ ও উদর এই পাঁচি অতা
সমুংপন্ন হয়। ২:। ২:। ২০। ২৪। ২৫। এবং দিতীয়
মাসে হস্ত, পাদ, পার্শ্ব, কোটি ও জার ক্রমে ক্রমে সমুৎপন্ন
হয়, তৃতীয় মাসে শরীরের সন্ধি ভাল-চতুর্থ মাসে হস্ত ও
পাদের সমস্ত অপুলী-পঞ্চম মাসে নাসিকা, কর্ণ, নেত্র, দন্ত
গ্রেণী, নথ, গুহুদেশ ও গর্ভন্তপিও বমুংপন্ন হয়, স্বন্ন মাসে
কর্ণের বিবন্ধ ও পারু উপস্থ নাভি—সপ্তম মাসে লোম, মন্তক,
ক্রেশ—অস্টম মাসে সমস্ত জ্বেয়ব পৃথক্রপে সম্পন্ন হয়,
হে সম্পাতে! এই প্রকার উদর মধ্যে গর্ভ ক্রমে ক্রমে বর্দিষ্ট
হয়, সপ্তম মাসে চৈতনা প্রাপ্ত হইয়া নাভি প্রে দারা মাতৃভূক্তারের সারাংশ ভোজন ধ্বত স্বীর ক্রম ফল ভোগের

জন্য জীবন ধারণ করে । ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১।
। ৩২। জঠবানল পরিতপ্ত এই জীব পূর্ব্ম পূর্ব্ম জন্ম বিবংশ
অর্থাং গার্ভ যাতনাদি ও পূর্ব্যক্ত শুভাশুভ কর্ম মরণ করিবা
বক্ষামাণ প্রথম কহিল—আমি পাপাত্মা, পশু কীটাদি সহপ্রযোনি জ্বমণ করত গর্ভ্ডযাতনা হংখ ও পুজ্জদারাদি সংস্থাজন্য নানাপ্রকার স্থা অনুভব করিয়াছি এবং পুজ্জদারাদি
ভরণ পোরণে অসমর্থ হইয়া সং ও অসং ক্রাচিয়ণ করল
ধনোপাজ্জন করিয়াছি কিন্তু স্থা, মোক্ষ দাভা জ্ঞানীষ্ঠান্
ব্যাপ্র চিম্বা করি নাই, সংপ্রতি ঐ ক্রাফ্টোল অভিশ্র হার্থ
ভোগ করিতেটি এবং অনিতা দেছে নিত্যজ্ঞান করিয়া নানা
প্রকার নিন্দ্রত কর্মান্ত করিয়াছি, আপানার হিত্তবারক ক্রম

কদা নিষ্কু ৰণং যে স্থাদ্ পর্ক্তান্তির র সন্ধিভাৎ।

ইত উর্দ্ধং নিত্যমহং বিষ্ণুমেবাস্থ্য হৈছে। ৩৮॥

ইত্যাদি চিন্তার স্থাবা যোনিষদ্ধ প্রশিক্তি প্রাটি কিন্তান করকাৎপাত কী যথা। ৩৯॥

পৃতিরেণান্তিপতিতঃ ক্রমিরের ইবাপরঃ।

ততো বাল্যাদিত খানি সর্ব্বে এবং বিভুগ্রতে॥৪০॥

তরা চৈবান্ত ভূতানি সর্ব্বে বিদিতানি চ।

ন বর্ণিতানি মে গুধু! যৌবনাদিষু সর্ব্বতঃ॥৪১॥

এবং দেহোহহমিত্য স্মাদভ্যাসান্তির রাদিক ম্।

গর্ব্রাসাদিদ খোনি ভবন্তাভিনিবেশতঃ॥৪১॥

তন্মাদ্দেহ দ্বরাদন্য মাত্মানং প্রক্রতেঃ পরম্।

ভাত্মা দেহাদিমমতাং ত্যক্ত বিজ্ঞানবান্ ভবেৎ॥৪৩

জাপ্রদাদিবিনিভূকিং সত্য জানবান্ ভবেৎ॥৪৩

জাপ্রদাদিবিনিভূকিং সত্য জানবান্ ভবেৎ॥৪৩

জাপ্রদাদিবিনিভূকিং সত্য জানবান্ ভবেৎ॥৪৩

অর্থাৎ হাগ দানাদি শুভ কর্মমাত্রই ক্বত হয় নাই, এই প্রকার
দ্বীয় কর্মাধীন হইয়া বছধা হুঃপানুভব করত, নরক সদৃশ
গর্ভ হইতে ক্থন নিহ্নত হইয়া প্রতি দিবস জ্বাণীশ্বরকে
পূজা করিব, এইরপ চিন্তা করত জীবাজা হুর্গক ক্ষৃত্ব বিনির্গত
ক্রমির ন্যায় গর্ভ ইইতে অতি হুঃখে নিঃস্বত হইয়া বাল্য,
যৌবন ও বাদ্ধক্য সমুংগর হুঃখ উপভোগ করে। হে
সম্পাতে! তুমি যৌবনাদি কালোৎপার বর্ণনাতীত হুঃখ সমূহ্
বিশেষ রূপে বিদিভ আছ, এবং "আমি দেহ" এইরপ
ভভিন্ন জ্ঞান প্রযুক্তই নরক ও গর্ভবাগাদি হঃখ ভোগ
করিতে হয়, অভএব জীবাজা দেহ হইতে ভিন্ন নিশ্চয়
করিয়া দেহ ও পুত্রদারাদি অনিত্য বিষয়ে মমতা পরিভাগে করত ভবজান লাভ করে। ২০। ১৪। ০৫। ৩৬।
। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। এবং আমার দেহ,
ক্রামার পুত্র কলত্রাদি এইরপ জ্ঞান রহিত জীব জাগ্রত, স্বপ্ন

চিদান্ত্রনি পরিজ্ঞাতে দৃষ্টে মোহেইজ্ঞসন্তবে।
দেহঃ পততু বারক্ষকর্মবেগেন ভিন্ততু ॥ ৪৫ ॥
যোগিনো ন হি দুঃখং বা সুখং বাজ্ঞানসন্তব্য ।
তত্মাদেহেন সহিতো যাবংপ্রারক্ষণকরঃ ॥ ৪৬ ॥
ভাবত্তির্চ স্থাখন তং পৃতকঞ্চুকসর্পবং।
অন্যত্বক্যামি ভে পক্ষিন! শৃণু মে পরমং হিতম্ ॥৪৭
ত্রেতাবুগে দাশর্থিভূ ত্বা নারায়ণোহ্ব্যরঃ ।
রাবণ্যা বধার্থায় দশুকানাগমিষ্যতি ॥ ৪৮ ॥
দীতয়া ভার্যায়া সার্দ্ধং লক্ষ্মণেন সমন্থিতঃ ।
তত্তাশ্রমে জনকজাং আভৃত্যাং রহিতে বনে ॥
রাবণ্যেরবন্ধীতা লক্ষায়াং স্থাপ্রিষ্যতি ।
তক্তাঃ স্থাীবনির্দেশাদ্বানরাঃ পরিমার্গণে ॥ ৫০ ॥

ও সুসুপ্তি এই অবস্থাক্রয় রহিত সতা জ্ঞানাদির লক্ষণ—
অর্থাৎ ভ্রমাদি শূন্য, পাপ পুণা বিধীন যথার্থ জ্ঞান গোচর ও
বিষয় বাসনা শূন্য বলিয়া আগ্নাকে নিশ্চয় করিবে ঐ জ্ঞান
দ্বারা অজ্ঞান জনের মোহ বিনফ্ট হয়। পরে ভৌক্তব্য
প্রারন্ধ কর্ম বিদ্যমান থাকিলে ঐ কর্মকল ভোগ করিবার
ক্রমা জীব দেহের সহিত বিদ্যমান থাকে— ঐ কর্মভুক্ত হইলে
ঐ সময় দেহ ক্রিত্যাদি পঞ্চতুতে লয় প্রাপ্ত হয়। হে
সম্পাতে! যেহেতু যোগিগণের অজ্ঞান জন্য ভূঃথ ও পুল,
কল্রাদি দারা সাধারণ সুখের অনুভব হয়না, অতএব যাবৎ
কাল প্রায়ন কর্ম বিনফ্ট নাহয়, ভাবৎকাল দেহ ধারণ করত,
যোগ দারা তল্পবায়ন ইইয়া পরমানন্দে কালাভিবাহিত কর,
হে পক্রিবর! অন্য এক আশ্রহ্য প্রসানন্দে কালাভিবাহিত কর।

ত্তেতাযুগো ভগবান নারায়ণ অযোধ্যাধিপাত রাজা দশরথের পুত্র রূপে জাবিতুতি ছইয়া সহচারিণী সীতা ও অফজ
লক্ষ্মণের সহিত দশুকারণাে আগমন করিবেন—ছুরাআা রাবণ
ক্রেন মধ্যে শ্রীরাম ও লক্ষ্মণ বিহীন আত্রম হইতে জনক
নন্দিনী সীতাকে চোবের নাায় ছবণ করিয়া লক্ষাপ্রীতে সংস্থা

আগনিষ্যতি জ্বলধেন্তীরং তত্ত্র সমাগমঃ।

ভয়া তৈঃ কারণবশান্তবিষ্যতি ন সংশয়ঃ॥ ৫১॥

তলা দীতান্তিভিং তেভাঃ কথ্যস্থ যথার্থভঃ।

ভটনৰ তব পক্ষো দ্বাবুৎপৎস্থেতে পুনর্গবৌ॥ ৫২॥

সম্পাতিরুবাচ।

বোধয়ামাস মাং চন্দ্রনামা মুনিকুলেশবঃ।
পশ্যন্ত পক্ষো মে জাতে ন্তনাবভিকোমলো॥৫৩
স্বন্তি বোহস্ত গমিষ্যামি সীতাং দ্রক্ষ্যথ নিশ্চয়ম্।
যত্রং কুরুধং দুর্লজ্ব্যসমুদ্রশু বিলপ্তবনে ॥ ৫৪।।

পন করিবে। অনন্তর স্থ্রীবের আদিষ্ট ইইয়া বানরগণেরা সীতার অংহ্যবার্থ সমুদ্র তীরে সমাগত হইলে ভোমার সহিত সাক্ষাৎ ইইবে। তৎকালে জনকনন্দিনী সীতার বাসস্থান বানরগণকে জ্ঞানাইবা মাত্র তোমার ন্তন পক্ষার সমুৎপন্ন হইবে বি৪।৪৫। ১৯।৪৭।৪৮।৪৯।৫০।৫১।

সম্পাতি কহিল—মুনিবর চক্রমা আমাকে এইরপ বাক্য কহিয়াছিলেন। হে বানরগণ! তোমরা দেথ ঐ মুনির বাক্যা-রুসারে সম্প্রতি আমার ন্তন, অভি কোমল পক্ষর সম্প্রার হইয়াছে, এক্ষণে ভোমাদিগোঁর মঙ্গল হউক, আমি এন্থান হইভে অন্তর্হিত হইলাম। ভোমরা এই ত্লাভ্যা সমুদ্র ষয়ায়শ্বৃতিমাত্তভোষপরিমিতং সংসারবারাংনিধিং
তীর্ত্ব গিছতি তুর্জনোষপি
পরমং বিক্ষোঃ পদং শাশ্বতম।
তথ্যৈব স্থিতিকারিণস্তিজ্ঞগতাং
রামস্থ ভক্তাঃ প্রিয়াঃ
যুয়ং কিং ন সমুদ্রমাত্রতরণে
শক্তাঃ কথং ? বানরাঃ!॥ ৫৫॥

ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্ধিন্দ্যাকাণ্ডে অফমোহধ্যায়ঃ।

লজ্মনে চেট্টা করত জলধি সমুত্তীর্ণ ছইরা সীতাকে নিশ্চরত্ত দর্শন করিবে। যে শ্রীরামের নাম স্মরণ করিবা সাত্ত সংসার সমুদ্র সমৃতীর্ণ ছইরা পাপাআও সনাতন বিজপুদ লাভ করিরা থাকে,ছে বানরগণ। ঐ ত্রিজ্ঞগৎ পাতা শ্রীরামের প্রিয়তম ভক্ত ছইরাও কি এই ক্ষুদ্র জলধি অবতরণে সক্ষ ছইবে না?। ৫০। ৫০। ৫৪। ৫৫।

> ইতি জ্ঞীমদধ্যান্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে কিন্ধিক্ষাকাণ্ডে অফ্টমোহধ্যায়ঃ।

नवरमा ३ था गाउँ।

গতে বিহায়দ। গৃধুরাজে বানরপুক্ষবাঃ।
হর্ষেণ মহতা বিক্টাঃ দীতাদর্শনলালদাঃ॥ ১॥
উচুঃ দমুদ্রং পশুদ্রো নক্রচক্রভরক্ষরম্।
তরক্ষাদিভিক্ষমদ্ধমাকাশমিব দুর্গ্রহম্॥ ২॥
পরম্পরমবোচন্থৈ কথমেনং তরামহে।
উবাচ চাক্ষদন্তর পূর্ধং বানরোত্তমাঃ!॥ ৩॥
ভবস্থোহতান্তবলিনঃ শূরাশ্চ ক্রতবিক্রমাঃ।
কো বাত্র বারিধিং তীর্জা রাজকার্যাং করিষ্যতি ?
এতেষাং বানরাণাং দঃ প্রাণেলতা ন দংশয়ঃ।
অতোভিষ্ঠতু মে শীঘ্রং পুরতো যো মহাবলঃ॥ ৫॥
বানরাণাং চ দর্বেষাং রামস্থ্রীবয়োরপি।
দ এব পালকো ভূয়ামাত্র কার্যাণ বিচারণা॥ ৬॥
উত্যুক্তে যুবরাজেন ভূফীং বানরদৈনিকাঃ।
আসম্মোচুঃ কিঞ্চিদপি পরম্পরবিলোকিনঃ। ৭॥

পক্ষিরাজ সম্পাতি বিমান মার্গে গমন করিলে সীতা-দর্শনিনা বানরগণ ছফ্ট চিত্ত ছইল এবং নজাদি নানা জলচরাকীর্ণ ভয়ানক ও আকাশের ন্যায় অপার হুল জ্ব্যা সমুজ্র দর্শনি করিয়া বানরগণ পরস্পার কছিল—আময়া কি প্রকারে এই হুল জ্ব্যা মহাসমুজ্র সমুজীর্ণ হইব। যুবরাজ অঞ্চদ কহিলেন, হে বানরগণ! শ্রবণ কর—মহাবল পরাক্রম ভোমাদিগোর মধ্যে কোন বীর সমুজ লজ্বন করিয়া সীতা-দর্শনরপ রাজ্ব কার্যা সম্পাদন করিতে সক্ষম ছইবে? অভএব যে বীর জামার সম্মুণে শীন্ত উপস্থিত হইবে, সেই এই সমস্ত বানর-দিগোর নিশ্চয় প্রাণ রক্ষা করিবে, এবং প্রাণ প্রিয়ডমা

অঙ্গদ উবাচ।

উচ্চতাং বৈ বলং সর্বেঃ প্রত্যেকং কার্য্যস্ক্রে।
কেন বা সাধ্যতে কার্যাং জানীমস্তদনন্তরম্ ॥ ৮ ॥
অঙ্গদন্য বচঃ শ্রুত্বা প্রোচুর্বীরা বলং পৃথক্।
যোজনানাং দশারত্য দশোন্তরগুণং জন্তঃ ॥ ৫ ॥
শতাদর্ব্বাগ্জাঘ্বাংস্ত প্রাহ মধ্যে বনৌকদাম্।
পুরা ত্রিকিমে দেবে পাদং ভূমানলক্ষণম্ ॥ ১০ ॥
ত্রিঃসপ্তক্রত্যোহহমগাং প্রদক্ষিণবিধানতঃ।
ইদানীং বাধ কগ্রস্তো ন শক্রোমি বিলঞ্জিত্ম্ ॥ ১১

জানকীর বিরহানল-পরিতপ্ত-হৃদয় জীরামের ও তৎসং।
স্ত্রীবের প্রাণ রক্ষক হইবে। বানরগণ যুবরাজ অঙ্গদের
এই বাক্য শ্রবণ করিয়া পরস্পর মুখাবলোকন করত বাক্য
শ্ন্য হইয়া উপবিষ্ট হইল। ১।২।৩।৪।৫।৬।৭।

বানরগণকে বাক্য রহিত দর্শন করিয়। অক্ষদ পুনর্বার কহিলেন—হে বানরগণ! এক্ষণে তোমাদিগের মধ্যে কোন বীরের কতিপর যোজন উল্লেখনে দামর্থ্য তাহা প্রকাশ কর। কপিগণ ব্রহাল অঙ্গদের এই বাক্য শুবণ করিয়। প্রত্যেক বানর স্বাস্থ্য প্রকাশ করত কেহ দশ যোজন, কেছ বিংশতি যোজন, কেছ ত্রিংশৎ যোজন লজ্জনে দামর্থ্য প্রকাশ করিল; এইরপ ক্রমে দশ যোজনাধিক লজ্জনে দামর্থ্য প্রকাশ করত নবতি যোজন পর্যান্ত লজ্জনে দামর্থ্য প্রকাশ করেল, ক্রমে মহাবল পরাক্রান্ত জাম্বুবান্ ক্ছিল—হে জ্জ্ম পূর্বালে দৈত্যরাজ বলিকে ছল করিবার জ্ঞান্ত ভান্বান্ প্রত্যান্ত পৃথিবী পরিমিত চরণ বিস্তৃত করিয়াছিলেন, প্রসমর আমি পৃথিবীকে একবিংশতি বার প্রদক্ষিণ করত

जन्न द्वार पार्ट प्राप्त कार्या भिकार भारत स्वार स्था ।
भूतर्ल द्वार स्वार स्

এবং চেৎপুর্ববৎ দর্ব্বে স্থপ্দ্যামো দন্ত বিষ্টরে।
কেনাপি ন কুতং কার্যাং জীবিজুং চ ন শকাতে।
তমাহ জান্ববালীরো দর্শরিষ্যামি তে স্কৃত !।
যেনাস্মাকং কার্যাসিদ্ধিত বিষ্যত্যচিরেন চ।। ১৫॥
ইত্যুক্ত্বা জান্ববান্ প্রাহ হন্মন্তম্বন্থিতম্।
হন্মন্! কিং রহস্তৃকীং স্থীয়তে কার্যাগোরবে॥১৬

প্রণাম করিমাছিলাম, সক্তর্ভি বার্দ্ধর সময় বলিয়া শত যোজন
সমুদ্র লভ্যন করিতেও সামর্থ্য হয় না। পরে যুবরাজ্ব অঙ্গদ
ক্ষাং কহিলেন আমি এই সমুদ্র উল্লভ্যন করিতে সমর্থ বটে
কিন্তু প্রতিলভ্যন করিতে সমর্থ কি না ভাষা নিশ্চয় কহিছে
পারি না। অনন্তর জাস্থ্রান্ অক্লদকে কছিল—হে যুবরার্জ!
আপনি আমাদিগের নিয়োগ কর্ত্তী রাজা, আপনি যদ্যপি এই
সমুদ্র লভ্যনে সমর্থ হন ভগাপি আপনাকে নিয়োগ করা
যুক্তিসিদ্ধানহে।৮।৯।১০।১১।১২।১১।

মহাবল পরাক্রমশালী বানরগণ বারিধি লজ্মনে অসমর্থ ইইলে যুবরাজ অঙ্গদ হু:খিতাস্ত:করণে কহিলেন, হে বানরগণ! সম্প্রতি আমরা সমস্ত মিলিত হইরা দর্ভবিষ্টরে প্রায়োপবেশন করত: নিশ্চই জ্রীবন পরিত্যাগ করিব। অনন্তর জামুবান যুবরাজকে নানা প্রকার আম্মান বাক্য প্রদান করিরা কহিল, হে বংস! অচির কাল মধ্যে এই সমুদ্র উল্লেখ্যন দক্ষ বীরবর ভোমার সন্মুখে উপস্থিত হুইবে এই মাত্র বলিয়া হন্মানকে কহিল—হে মহাবল! তুমি বান্ধু তুনর বান্ধু তুল্য পরাক্রম-শালী এবং রাম কার্যা সম্পাদনার্থই ক্লন্ম প্রেছণ কবিলাছ, প্রাপ্তেইক্তেনের সামর্থাং দর্শরাদ্য মহাবল !

ত্বং সাক্ষাদ্বায়ুতনয়ো বায়ুতুলাপরাক্রমঃ।। ১৭॥
রামকার্য্যর্থমের ত্বং জনিতোইদি মহাজ্মনা।
জাতমাত্রেণ তে পূর্বাং দৃফ্বোন্তন্তং বিভাবমুম্।১৮
পকং ফলং জিম্কামীত্যুৎপ্লুতং বালচেইরা।
যোজনানাং পঞ্চশতং পতিতোইদি ততো ভূবি॥১৯
অতস্তমমাহাত্মাং কো বা শক্রোতি বর্ণিতৃম্।
উত্তিষ্ঠ কুরু রামস্ত কার্যাং নঃ পাহি মুব্রতঃ॥ ২০॥
প্রুত্ব জান্বতো বাক্যং হম্মানতিহ্বিতঃ।
চকার নাদং সিংহ্ম্য ব্রজ্ঞাপ্তং ক্যেটিয়ন্নির॥ ২১॥
বভূব পর্বতাকার ব্রিবিক্রম ইবাপরঃ।
লপ্ত ঘ্যাত্ম জলনিবিং কুতা লক্ষাং চ ভ্রম্মাণ ॥ ২২

হে হসমান্! তুমি জন্ম গ্রহণ করিবামাত্র বালসভাব বশভ্ তামজনাশক সহস্রাংশুকে পক ফল বলিয়া গ্রহণ করিছে অভিলাব করিয়া পাঞ্চণত যোজন উল্লেখ্যন করঙঃ গৃথিবীতে পতিত হইসা ছিলে অতএব কোন ব্যক্তি তোমার বল মাহাত্ম্য বর্ণন করিছে সক্ষম হয়? হে সুব্রত! তুমি গাত্রোম্থান কর এবং সমুদ্র লঙ্ঘন রূপ রাম কার্য্য সম্পাদন করিয়া আমান দিগকে রক্ষা কর। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। প্রন নন্দন হন্মান মুদ্রিবর জাত্ম্বানের কাক্য শ্রবণ করিয়া বার পর মাই আমন্তির জাত্ম্বানের কাক্য শ্রবণ করিয়া বার পর মাই আমন্তির ইলে ব্রহ্মা উঠিল, অনস্তর বামন রূপী বিষণুর ন্যায় পর্ব্বাকার করিয়া উঠিল, অনস্তর বামন রূপী বিষণুর ন্যায় পর্ব্বাকার পর্বিগ্রহ পূর্ব্বক কহিল এই হল্লভ্যে মহানিধি অবলীলাক্রেমে উল্লেখ্যন পূর্ব্বক রাবণের লঙ্কাপুরী ভ্রমিভূতা করিব; অভঃপর ঐ হ্রাত্মাকে স্বংগ বিনাশ করিয়া জনক হহিছা রাম দক্ষিতাকে আনম্বন করিব। বাবণং সকুলং ইড়ানেষো জনকনন্দিনীম্।

নদ্ধা বদ্ধা গলে রজা রাবণং বামপানিনা॥ ২৩॥

লক্ষাং সপর্বভাং ধৃড়া রামদাাত্রে কিনামাহম।

যদা দৃষ্ট্রৈব যাস্যামি জানকীং শুভলক্ষনাম॥ ২৪॥

প্রজা হন্ত্মতো বাক্যং জাম্বানিদমন্ত্রীৎ।

দৃষ্টে বাগচ্ছ ভদ্রং তে জীবস্তীং জানকীং শুভাম্।

পশ্চাভামেণ সহিতো দর্শয়িষ্যাসি পৌরষ্ম্।

কল্যাণং ভ্রভান্তদ্র ! গাছ্কভন্তে বিহায়সা॥ ২৬॥
গাচ্চন্তং রামকার্যার্থং বায়্স্রামনুগচ্ছতু।

ইত্যাশীর্ভিঃ সমাসন্ত্র্য বিসৃষ্টঃ প্লবগণবিলৈ ॥২৭॥
মহেন্দ্রাজিশিরো গড়া বভূবাদ্ভুতদর্শনঃ॥২৮॥
মহানগেন্দ্রপ্রতিমো মহাত্রা

স্থবর্ণবর্ণোইরুণচারুবক্তঃ।
 মহাফণীক্রাভস্থনীর্ঘবাছ
 র্বোতাত্মকোইদুশাত সর্ববভূতৈঃ॥ ২৯॥

ইতি ঐমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
কিন্ধিদ্যাকাণ্ডে নবমোহধ্যায়ঃ।

করিয়া জনকনন্দিনী সীতাকে আনস্ত্রন করিব অথবা রাবণের গলদেশে রজ্ঞ বন্ধন করিয়া বাম হস্তে লঙ্কাপুরী পারণ করত শ্রীরাম সমীপে নিক্ষেপ করিব, অথবা শুভলক্ষণা জগলাত। সীতাকে দশন করিমা প্রত্যাগমন করিব শুন্থ ২১।২২২৩। মজ্রিবর অতুল বিক্রমশালী পরন-নন্দনের এই রাক্য প্রবণ করিয়া কছিল, হে হন্মন! রাম-প্রিয়তমা দীতাকে দশন করিয়াই প্রত্যোগমন কর—তোমার মঙ্গল হউক; পরে শ্রীরামের সহিত মিলিত হইয়া বল পরাক্রমজানাইবে এবং রাম কর্মা কর্মের সহিত মিলিত হইয়া বল পরাক্রমজানাইবে এবং

বলশালী প্রন ভোমার অন্থামী হইয়া সমুদ্র উল্লেখ্যনে সাহায়। করুন, আমি এই আশিব্যাদ করি। অনস্তর প্রন তনম মহেলু-প্রতের উপরি ভাগে গমন করিয়া আরক্তিম বদ্দ, ভুক্তক্ সদৃশ বাহু যুগল ও প্রভিত প্রায় শরীর ধারণ করত লক্ষ্যাধা রবে অনুভ রূপ প্রদশন করাইল। ২০০২৬। ২৭ + ২৮ + ২৯ ।

> ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরণমায়ণে উমামছেশ্বরসন্থানে কিন্দিন্দাকাণ্ডে নবমোহধায়ঃ।

ইভি এমদধ্যতারামারণে কিন্ধিন্ধ্যাকাওঃ দমাপ্তঃ।

সুন্দ রা কা ও ম্।

প্রথমোহধ্যায়ঃ।

विमहादिव देवां ।

শতবোজনবিন্তীর্ণং সমুদ্রং মকরালয়ম্।
লিলপ্ত্য য়িষুরানন্দ সন্দোহো মারুতা অজঃ॥ ১॥
ধাড়া রাম পরাত্মানমিদং বচনমত্রবীৎ।
পশুল্ত বানরাঃ সর্বের গচ্ছন্তং মাং বিহায়সা॥ ২॥
অমোঘং রামনিমুক্তং মহাবাণমিবাথিলাঃ।
পশ্যাম্য ত্যৈব রামশ্র পত্নীং জনকনন্দিনীম্। ৩॥
কতার্থে হিহং কুতার্থোহহং পুনঃ পশ্যামি রাঘবম্।
প্রাণপ্রযাণসময়ে যক্ত নাম সকুৎ স্মরন্। ৪॥
নরস্তীত্ব ভিবান্ডোবিমপারং যাতি তৎপদম্।
কিং পুনস্বস্ত দুভোহহং তদক্ষাক্ষুলিমুদ্রিকঃ। ৫॥

মহাদেব পার্মতীকে কহিলেন—শতবোজন বিস্তীন জলধি
সমুল্লগুণনে অভিলাষ করিয়া পবন তনয় পরমায়া শ্রীরামকে
চিন্তা করত বক্ষামাণ প্রবন্ধ কহিল—হে বানরগণ! আমি
অব্যর্ম জীরাম বাণ স্থরপ আকাশ পথগামী হইয়াছি অবলোকন কর, আমি অদ্যই জনক নন্দিনী সীতাকে দর্শন
করিয়া পুনর্ম্বার পতিতপাবন শ্রীরামচল্রকে দর্শন পূর্মক জীবনকে
ধন্যবাদ প্রদান করিন, যে রামের নাম একবার মাত্র স্থান
করিলে প্রাণ প্রয়াণ সময়ে পাপায়াও অপার ভব্যমুদ্র
সমুত্তীর্প ইইয়া তৎপাদপদ্ম পরিপ্রাপ্ত হয়—সেই ভগবান্
চল্লের করাক্ষীয়ক যক্ত ও দাদ তৎপাদপদ্ম স্মরণ করিয়া এই

তমেব হৃদয়ে ধ্যাতা লক্ষ্যাম্য শ্বারিধিম্।

ইত্যক্ত হৃদ্যান্ বাহ্ প্রসার্যায় তবালিধিঃ ॥ ৬॥

ঋজুপ্রীবোর্ছ দৃষ্টিঃ সমাকুঞ্জিত পদ দ্বঃ।

দক্ষিণাভিমুখস্ত লং পুপ্লু বেহনিল বিক্রমঃ ॥ ৭॥

আকাশান্ত্রিতং দেবৈবীক্ষিমোণো জগাম সঃ!

দৃষ্ট্রীহনিলস্কতং দেবা গচ্ছন্তং বায়ুবেগতঃ ॥ ৮॥

পরীক্ষণার্থং সন্ত্রম্ম বানর স্থেদমক্রবন্।

গচ্ছন্তে মহাসত্রো বানরো বায়ুবিক্রমঃ ॥ ৯॥

লক্ষাং প্রবেষ্ট্রং শক্তো বা ন বা জানীমহে বলম।

এবং বিচার্যং নাগানাং মাতরং সুরুসাভিধাম্॥ ১০॥

অব্রবীদ্বেবতার দঃ কৌতুহল সমন্ত্রিতঃ।

গচ্ছ ত্বং বানরেন্দ্র কিঞ্জিছিত্বং স্বাচর ॥ ১১ ॥

কিঞিৎকর বারিধি উল্লেড্খনে কি অসমর্থ হইবে ? অনীল বিক্রম প্রবন তনর এই বাক্য বলিরা প্রসারিত বাছ যুগল, স্থাইই লাস্কৃল উদ্ধিদেশে সঞ্চালন পূর্বক উদ্ধি দৃষ্টে ও আকুঞ্চিত পাদ যুগলে দক্ষিনাভিমুখী হইরা উল্লেজন করিল। ১।২।৩।৪।।৫।৬।৭। অনস্তর মহাবল পরাক্রম বায়ু তনরকে আকাশ প্রে বায়ুবেগে গমন করিভে অবলোকন করিরা, দেবগণ নাগমাত। স্রবসাকে কহিলেন—এ নিবিড মেদ সদৃশ বানর প্রাচিব বেক্টিতা ও সহক্র সহত্র বীরগণ পরিরক্ষিতা লক্ষা-পূরী প্রবেশ করিতে সমর্থ হয় কি না, তাহা পরীক্ষা করিবার

ভাতা ভরা বলং বৃদ্ধিং পুনরেহি ত্রাম্বিতা।

ইত্যুক্তা সা যযৌ শীন্তং হমুমদ্বিয়কারণাৎ ॥ ১২ ॥

ভারত্য মার্গং পুরক্তং ছিতা বানরমন্তবীৎ।

এহি মে বদনং শীন্তং প্রবিশ্ব মহামতে । ॥১৩॥

দেবৈন্তং কিশাতো ভক্ষং ক্রুধাসম্পীভিতায়নঃ।

তাম'হ হমুমান্মাভরহং রামদ্য শাসনাৎ ॥ ১৪ ॥

গাচ্ছামি জানকীং দ্রেষ্টুং পুনরাগম্য সত্তরঃ।

রামায় কুশলং ভসাাঃ কথ্যিত্বা ত্বাননম্॥ ১৫ ॥

নিবেক্ষ্যে দেহি মে মার্গং ফুরসায়ে নমোহস্ত তে।

ইত্যুক্তা পুনরেবাহ স্বর্সা ক্রুধিতাম্মহেম্॥ ১৬ ॥

প্রবিশ্ব গছ্ত মে বক্তং নোচেন্ত্রাং ভক্ষরাম্বহম্।

উত্যক্তো হনুমানাহ মুথং শীঘ্রং বিদারের ॥ ১৭ ॥

প্রবিশ্ব বদনং তেইন্ত গচহামি ত্বরাত্বিতঃ।

ইত্যুক্ত্বা বোজনায়ামদেহো ভূত্বা পুরস্থিতঃ।। ১৮।।

দৃষ্ট্বা ইন্থমতো রূপং স্বরুসা পঞ্চবোজনম্।

মুখং, চকার ইন্থমান্ ভিগুণং রূপনাদধৎ।। ১৯।।

ততশ্চকার স্বরুসা বোজনানাং চ বিংশতিম্।

বক্ত্বং চকার ইন্থমাংক্রিংশদ্যোজনসন্মিতম্।। ১০।

ততশ্চকার স্বরুসা পঞ্চাশদ্যোজনারতম।

বক্তবং তদা ইন্থমাংস্ত বভূবাত্বপুর্সালিতঃ।। ২১॥

প্রবিশ্ব বদনং তস্যাঃ পুনরেত্য পুরস্থিতঃ।

প্রবিশ্বে বিদ্যুক্তির বিদ্যালিকার বিশ্ব।

বেবং বদন্তং দৃষ্ট্বা সা ইন্থমন্ত্রবীৎ।

গক্ষ সাধ্য রামস্য কার্যাং বুদ্ধিমতান্বর!। ২৩।।

জ্বনা ভূমি কিঞ্চিরিয় সমাচরণ কর 🕒 ৮ 🕆 ৯ 🕽 ১০ । ১১ । ঔ বানরের বল বৃদ্ধি ও পরাক্রম জ্ঞাত হইয়া অবিলম্বে পুনরাগমন করিবে ; স্থরদা দেব বাকা শ্রবণ করিয়া মাক্তির আকাশ পথ সংক্রম করত অবস্থান করিয়। হন্মানকে কহিল—হে মহামভে ! আমার বিস্তীর্ণ মূখ বিবরে শীত্র প্রবেশ কর, দেবগণ ভোমাকে কুধা পীডিড জনের ভক্ষ দ্রব্য বলিয়া করন। করিয়াছেন। মাকৃতি স্বসার এই বাকা শ্রবণ করিয়া কছিল—হে মাডঃ! আমি क्य पिला अद्भारमञ्जू जानिक रहेश जानकी मन्मर्ननार्थ शमन করিতেছি, সত্ত্র প্রভাগেমন করত দাশরথিকে জ্ঞানকীর মঙ্গল বার্ত্তা অবগত করাইয়া তোমার মুথ বিৰুৱে প্রবেশ করিব; সম্রতি **স্বামার পথ সম্বর**ণ নি**শ্ব ক্ত ককন,আপনা**কে প্রণাম করি। माङ्ख्यि अहे वाका अवग किश्वा श्रूनवीत श्रूतमा कहिल -- (इ হনুমন্! আমি অভাত কুষাণীডিভা—নামার মুথ মধ্যে প্রবেশ করিয়া লক্ষাপুরী গাখন কর, তাহ। না করিলে নিশ্চর ভোমাকে **सक्र क्रिया जामाद क्र्यानम निर्दालन क्रिया ३२ १ ५७ ।** 38 1361361391

বীরবর সুরসার এই বাকা শ্রবণ করিয়া কহিল—ছে স্বরেদ! আপনি মুথ প্রদারণ করন আমি সত্তর মুথ প্রবেশ করিয়া লক্ষাপুরী গমন করিব। অনস্তর সুরসা কপিবরের শরীর পরিমাণ দর্শন করিয়া পথ্য যোজন পরিমাণ মুথ প্রসারণ করিলেন, বীরবর হন্মান্ও তদর্শনে দশ যোজম বিস্তাপ শরীর ধারণ করিলে, স্বরুমা বিংশতি যোজম মুখ বিস্তার করিলে মহাবীর পাবন কুমার ত্রিংশ যোজন পরিমিত শরীর ধারণ করিল। অনস্তর সুরুমা পথ্য বোজন মুথ বিস্তাপ ক্রিলে কুশাত্রিক বৃদ্ধি স্বচতুর পাবন তনয় হন্মান অলু ও পরিমিত স্কুম দেহ ধারণ করত সুরুমার অনির্বাচনীয় মুথ বিবরে প্রবেশ পূর্মক পুনর্মার নির্গত ও স্বরুমার সন্মুথে উপন্থিত হয়া প্রণাম করিল। অনস্তর স্বরুমা কপিবরের বল ও চতুরতা অবগতে হইয়া সহর্ষে কহিলেম—ছে স্বরুদ্ধে । তুমি সত্ত্ব গমন করিয়া অচির কালেই রাম কার্য্য সম্পাদন কর। ছে

লেবৈঃ সম্প্রেষিতাহং তে বলং জিজ্ঞামুভিঃ কপে। নানামণিমরেঃ শৃক্তৈঃস্তমেশপরি নরাকুতিঃ। দৃষ্ট্য সীতাং পুনর্গহা রামং দ্রক্ষ্যদি গচ্চ ভো ! ॥ প্রাহ যান্তং হকুমন্তং মৈনাকোহহং মহাকপে ! ॥ . ইত্যক্তা সা যথে। দেবলোকং বায়ুহ্নতঃ পুনঃ। জগাম বাধুমার্গেণ গরুক্মানিব পক্ষিরাট্।। ২৫।। সমুদ্রে হপ্যাহ মৈনাকং মনিক ঞ্চনপর্বতম । গচ্ছতোৰ মহাসভ্যে হতুমাম্মক্তাত্মাজঃ। ২৬॥ বামস্য কার্যালিকার্থং তস্য স্থ্য সচিবে। ভব। मगरेद्रव्यदि रा यश्वाद श्रुवादः मागरवार्डिय ॥२ १ তদ্যান্বয়ে বভূবাদে রামে। দাশরথিঃ প্রভুঃ। তদ্য কার্যানু দদ্ধর্থং গচ্ছত্যের মহাক্রপি:।। ২৮ त्रमू खिर्क कलाख नंद प्रिति विधामा निष्ठ्य । স তথেতি প্রাদুরভূজ্জনমধ্যাম্মহোমতঃ।। ২৫।।

मञ्द्राल मञ्जानिके खुषि द्या यात्र यात्र राज्य !। আগচ্ছামৃতকল্পানি জগ্ধা প্ৰকল্যানি যে।। ৩১॥ বিশ্রাম্যাত্র কণং পশ্চাদ গমিষ্যার যথাসুখম। এবমুক্তোহধ তং প্রাহ ইন্থুমাঝারুতাতাজঃ।। ১।। গচ্ছতো রামক। গ্রাধং ভক্ষণং মে কথং ভবেৎ १। বিশ্রামো বা কথং মে স্যাদ্য গন্তব্যং ত্ররিতং ময়া॥ ইত্যুক্তা স্পৃষ্টশিখরঃ করাগ্রেণ যথে। কপিঃ। কিঞ্চিদুরং গতস্যাস্য ছায়াং ছায়াগ্রহোইগ্রহীৎ॥ সিংহিক। নাম সা ঘোরা জলমধো ভিতা সদা। আকাশগামিনাং ছায়ামাক্রম্যাকুষ্য ভক্ষয়েৎ ॥৩৫

্প্রেরিভা ছইয়া জাগমন করিয়াছি, ভোমার বিমাচরণ করিবার জন্য সমাধত। হই নাই। তুমি জগন্মতা সীতাকে দৰ্শন করিয়া প্রত্যাগমন করত জীরামকে দর্শন করিবে। ১৮। . ৯। २०। २১। २२! २७। २८। खूतमा এहे वाका व निया (नवरलारक शंभन कदिरान, जनखर महाराल माना हन्मान् প্রাপতি গারুড়ের ন্যায় আকাশ পথে গমন করিল। পরে প্রিমধ্যে আকাশ প্রথামী মাক্তিকে দর্শন করিয়া সরিৎ-পতি মণি কাঞ্চনময় মৈনগকের প্রতি কহিলেন—ছে গিরিবর ্মনাক! সগর বংশা সমুংপান্ন রঘূপতির কার্য্য সিদ্ধার্থ বায়ু जनव नक्षापूरी गमन कदिएएएम, व्यामिश क्षेत्र मगद तांक कर्त्वक বর্জিত ১ইলাছি । ২৫ । ২৬ । ২৭ । অতএব তুমি অতি সহর মহাসত্ত্ব মাক্তির বিভাষার্থ সমুখিত হও, মাক্তি ভোষার উপরিভাগে বিশান পূর্বক গম্ম করুন। গিরিবর জলধির অপুত্রী বছন করত জলমধা হইতে নানা মণিময়ল্প সংশো-

ক্ষপিবর। ভোমার বল বীর্যা পরীক্ষার্থ আমি দেবগণ কর্ক্ক। ভিড সমুখিত হইয়া ঐ পর্ব্যভের উপরিভাগে নর রূপ ধরিণ পূর্বক আকাশ পথে জ্রুতগামী মারুতিকে কহিল, ছে কপিবর 🖰 আমি মৈনাক জলধি কৰ্ডক উপদিষ্ট হইয়া তোমাৰ বিশামাথ জল হইতে উত্থিত হইয়াছি, তুমি এস্থানে আগমন কৰিয়া অমৃত ময় ফল মূলাদি ভোজন করত কিঞ্চিৎ কাল বিশ্রাম कित्रमा यथा भूरथ भ्रमन केत्र। ताब्रु उनस रेमनारकेत्र अने क्र বাক্য প্রবণ করিয়া কহিল--হে গিরিবর! আমি বাম কাষ্য সম্পাদনার্থ আগত হইয়াছি, ক্লতকার্যা না হইয়া জামার ভক্ষণ ও বিশাম কোন প্রকার উপযুক্ত নছে; এই বলিয়া গিরি-বরের সন্মান রক্ষার্থ হস্ত ছারা মৈনাক স্পর্শ করত মাক্তি গমন করিল। অনন্তর কিয়দ্র গমন করিলে জলধি নিবা-দিনী সিংছিকা রাক্ষদী আকাশগামী মারুভিব ছায়া আকর্ষণ क्रव चक्करन चेत्राज। इहेन ।२৮।२৯।०० !७১ : ७२ । ७० !७८। অনন্তর মহাবল হতুমাৰ্ ঐ সিংছিকা কর্ত্তক আকর্ষিত হইয়া সবিশ্ববে মনে মনে এই চিন্তা করিতে লাগিল যে, কোন বিস্ত

তরা গৃহীতো হন্দাং শিচন্তরামাদ বীর্যাবান্।

কেনেদং মে ক্বতং বেগরোধনং বিল্লকারিণা।। ৬৬

দৃশ্যতে নৈব কোহপ্যত্র বিশ্বরো মে প্রজারতে।

এবং বিচিন্ত্য হন্দুমানধোদ্টিং প্রদারয়ৎ।। ৬৭।।

তত্র দৃষ্ট্বা মহাকায়াং দিং হিকাং ঘোরন্ধিণীম্।

পপাত সলিলে ভূর্ণং পদ্যামেবাহনজ্ঞবা।। ৬৮।।

পুনক্রপ্রেত্য হন্দুমান্ দক্ষিণাভিমুখো যথে।

ততো দক্ষিণমাসাদ্য কুলং নানাকলজ্ঞমম্।। ৬৯॥

নানাপক্ষিম্গাকীর্ণং নানাপুস্পলতার্তম্।

ততো দদর্শ নগরং ত্রিকৃটাচলমূর্দ্ধনি।। ৪০।।

প্রাকারের্বহিভির্যুক্তং পরিখাভিশ্ব সর্বতঃ।

প্রাকারের্বহিভির্যুক্তং পরিখাভিশ্ব সর্বতঃ।

প্রাকারের্বহিভির্যুক্তং পরিখাভিশ্ব সর্বতঃ।

কারী গমন পথ স্যুক্তন্ধ করিল, কই এখানেত কাহাকেও অব-লোকন করিভেছি না! অনস্তর অধোভাগে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া দেখিল পর্যব্যাকার সদৃশী—ঘোর রূপিণী সিংহিকা নামী এক রাক্ষণী ভাছার গতি রোধ করিয়াছে, অতঃপর ত্বরিত পদে সাগর সলিল মধ্যে পতিত হয়া মহাবীর্ঘ হন্মান্ দৃত্ পদাঘাতে ঐ রাক্ষণীকে শমন ভবনে প্রেরণ করিল। পরে হস্মান সমুদ্র পারে উত্তীর্ণ ছইয়া বিবিধ ত্মপক কল-ভারাবনত পাদপ ও নানা বিছঙ্কম সমাকীর্ণ ও শ্বেত পীত লোহিতাদি বর্ণ বিশোভিত লকাগুল্মাদি পরিবেন্টিত তীর সম্প্রাপ্ত ইয়া জিক্ট পর্যবত-শৃক্ষোপরি একটা নগরী সন্দর্শন করিল এবং বছবিধ ত্মগ্র ও পরিথা সমাযুক্তা লক্ষাপুরী মধ্যে কি প্রকারে প্রবেশ করিব—এই রূপ চিন্তা করণানন্তর ত্রির করিল যে, স্ক্রম শরীর পরিশ্রেছ করিয়া রাবণ পালিত লক্ষা মধ্যে রক্তনী যোগে প্রবেশ করিব এই রূপ স্থির

রাত্রৌ বেক্ষ্যামি স্ক্রেমাইছং লক্ষাং রাবণপালিতাম
এবং বিচিন্ত্য তত্ত্বৈব স্থিত্বা লক্ষাং জগাম সঃ ॥৪২॥
ধূড়া স্ক্রেমং বপুর্বারং প্রবিবেশ প্রতাপবান্।
তত্ত্র্লক্ষাপুরীং সাক্ষাদ্রাক্ষনীবেশধারিনী ॥ ৪৩॥
প্রবিশন্তং হন্মান্তং দৃন্ত্বা লক্ষা ব্যতর্জ্বরং।
কন্তং বানর্ব্রপেণ মামনাদৃত্য লক্ষিনীম্।। ৪৪॥
প্রবিশ্ব চোর্বদ্রাত্রো কিং ভবান্ কর্জু মিচ্ছতি ?
ইত্যুক্তা রোষতান্ত্রাক্ষী পাদেনাভিজ্যান তম্॥৪৫
হন্মানপি তাং বামম্ন্তিনাবজ্ব্রাহনং।
তদেব পতিতা ভূমৌ রক্তমুদ্ধতা ভূশম্॥ ৪৬॥
উপ্রায় প্রাহ সা লক্ষা হন্ত্রমন্তং মহাবল্ল্য।
হন্মন্! গচ্ছ ভদ্রং তে জিতা লক্ষা ত্রান্য! ॥৪৭॥
পুরাহং ব্রক্ষণা প্রোক্তা হ্যন্টাবিংশতিপর্যয়ে।
তেতারুগে দাশর্থী রামো নারায়ণোহ্বরয়ঃ ॥৪৮॥

করিয়া প্রভাপশালী অনিল তনর রহদাকার আকুঞ্জিত করণানন্তর লক্ষার দারে প্রবেশ করিল। সেই লক্ষাপুরী সাক্ষাৎ রাক্ষনী বেশ ধারিণী—তথার হন্মানকে প্রবেশ করিতে অবলোকন করিয়া লক্ষেণী নামী রাক্ষনী ভাহাকে কহিল, তুমি বানরক্ষপ ধারণ করিয়া আমাকে অবমাননা করত চোরের ন্যায় রজনী যোগে এখানে আদিয়াচ—এই বলিয়া রোধবশা লক্ষেণী হন্মানকে দৃঢ্ভর পদাঘাত করিল। অনভ্র হন্মানও ঐ লক্ষেণীর বক্ষঃ প্রদেশে নাম হন্ত হারা মুষ্ট্যাণ্ ঘাৎ করিল, ব্যথিত হ্লা। ৪২। ১০। ১১। ১৫। ১৫। ১৯। অনভ্র লক্ষেণী সমুথিত। হুইয়া মহাবল নাক্তিকে কহিল—তে হ্লান্! তোমার মঙ্গল হুটক তুলি লক্ষাপুণী জয় করিতে স্মর্থ হুটবে গমন কর। ৪৭।

পূর্বকালে জগৎ ক্ষ্ট। এক্ষা আমাকে কহিনা ছিলেন, স্নাত্ন নারায়ণ পুথিবীর ভাষালোলনের জন্য আমা কঞ্চ ভনিষ্যতে যোগমায়া সীতা জনকবৈশ্বনি।
ভূতারহরণার্থায় প্রাথিতিছেয়ং ময়। কচিৎ ॥৪৯॥
সভার্যো রাঘবো ভাত্রা গমিষ্যতি মহাবনম্।
তত্র সীতাং মহামায়াং রাবণোহপহরিষ্যতি ॥৫০॥
পশ্চাদ্রামেণ সাচিব্যং স্কুত্রীবস্য ভবিষ্যতি।
স্কুত্রীবো জানকীং দ্রুষ্ট্রং বানরান্ প্রেষ্যিষ্বতি ॥৫১
তত্ত্রেকো বানরো রাত্রাবাগমিষ্যতি তেইন্তিকম
ড্রা চ ভর্ম সিতঃ সোহপি ডাং হনিষ্যতি মুন্টিনা॥
তেনাহত। ডং ব্যথিতা ভবিষ্যতি ন সংশ্রং ॥ ৫৩॥
তত্মাজ্বয়া জিতা লক্ষা জিতং সর্বাং ড্রান্য!।
রাবণান্তঃপুরবরে ক্রীড়াকাননমূত্রমম্॥ ৫৪॥
তত্মধোহশোক্বনিকা দিব্যপাদপ্রস্কুলা।

জন্তি তস্যাং মহাব্লকঃ শিংশপা নাম মধাগঃ॥৫৫ প্রোর্থিত হইলা, ত্রেতা যুগো অযোধ্যাধিপতি রাজা দশরথের প্রতি জনপ্রাছণ করিবেন এবং যোগমায়। ভারবতী, রাজ্য জনক গৈতে জন্ম পরিগছ কলিবেন। দাশর্থি জীরাম ভার্যাণ জনকনন্দিনীও অনুজ লক্ষাণের সহিত মহারণ্যে আগামন করিলে, রাধণ মহামায়া সীভাকে অপহরণ করিবে। পরে বানরেক্ত স্থগ্রীভার সহিত প্রমাকা শ্রীরামেরমিত্ততা হইবে, স্থগ্রীব জ্ঞানাতা স'ভাকে অনুষ্ধা করিবার জন্য বানরগণকে প্রেরণ ক্রিবেন। ৪৮।৪৯:৫০।৫১। এ বানরগণ মধ্যে কোন এক ব্যানৰ রজনীযোগে তেমেল সমীপে আগমন করিলে, েমে কর্ত্তক ভংগিত হটবামাত্র তোমার বক্ষঃস্থলে বাম ৩ন্ত দারা মুফ্টি প্রদান করিবে । ছে জনবে । যে সমন্ত তুমি তে মুক্ট্যাঘাৰ দ্বারা ব্যক্তিভাজা ইইবে দে সময় দশানৰ নিশ্চ-য়ই ব্য শ্রন্থে গম্ন ক্রিবে। হে বীরবর ! এক্ষণে ভোমার মুট্টাঘাত দারা আমি ব্যথিতাকা হইয়াছি, অভএব এই লক্ষা-পুরী ও অন্য সমন্ত তান। কর্ত্তক নিশ্চরই পরাভূত হইয়াছে।

তত্তান্তে জানকী ঘোররাক্ষসীভিঃ সুরক্ষিতা।
দৃষ্টৈ ব গচ্ছ ওরিতং রাঘবার নিবেদর ॥ ৫৬ ॥
ধন্যাহমপ্যদ্য চিরার রাঘবস্মৃতির্মমাসীদ্রবপাশ্যোচনী।
ভদ্ধক্ষমহপ্যতিত্বল্ডা মম
প্রসাদতাং দাশর্থিঃ সদা ক্ষ্পি ॥৫৭॥
উল্লক্ষিতেংকো প্রনাত্মজন
ধরাস্কুতারাশ্চ দশাননস্য।
পুস্ফোর বামাক্ষিভুক্স তীব্রং
রামস্য দক্ষাঙ্গমতীন্দ্রিসা॥ ৫৮॥

ইতি গ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বসম্বাদে স্তব্দবাকাণ্ডে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

হে কপিবর! রাবণের অন্তঃপুরস্থ ক্রীড়া কানন মধোনানারক পরিশোভিত অশোক বন আছে ঐ বনে শিংশপানাক মহাতকর মূল দেশে রাক্ষানাগ কর্ত্ব পরিরক্ষিতা হইর। রাম প্রাণাধিকা জ্বনামাতা জানকী অবস্থান করিতেছেন তুমি সাতা দর্শন করিয়া প্রীরাম সমীপে সম্বর গমন করত তাহার কুশল বার্তা নিবেদন কর। ৫২।৫০।৫৪।৫৫।৫৬। তবন্দ্রন নাশক প্রীরাম শ্বরণ করিয়া অদ্য আমি জীবনকে ধনাবাদ প্রদান করিলাম এবং তুমিও প্রীরামের পরম ভক্তন, ভোমাকে ম্পর্লা করিলাম এবং তুমিও প্রীরামের পরম ভক্তন, ভোমাকে ম্পর্লা করিলাম প্রসন্ধ হইয়। আমার হাদিপালে বিরাজ্ঞ করন। । ৫৭ মহাবল পরাক্রমশালী পরন তনর কর্ত্বক ছল জ্বা সমৃত্ত উল্লিভ্রত হইলে জানকী ও দশাননের গাম নেত্র ও বামাপ এবং অতীক্তর প্রামের দক্ষিণ ভূজ ও দক্ষিণ নেত্র অতিশ্ব

ইতি জ্রীমনধ্যাত্মরামায়ণে উমামহের্যর সংবাদে স্থান্য বিভিন্ন প্রথায়ঃ।

দ্বিতীয়োঽধ্যায়ঃ।

= 20=

ততো জগাম হনুমান লক্ষাং প্রমশোভনাম্।
বাত্রো সূক্ষতনুভূ ত্বা বভাম পরিতঃ পুরীম্ ॥ ১ ॥
দীতান্মেণকার্যার্থী প্রবিবেশ নূপালয়ম্।
তর দরিপ্রদেশেষু বিবিচা হনুমান্ কপিঃ ॥ ২ ॥
নাপশ্যজ্ঞানকীং স্মৃত্বা ততো লক্ষাভিভাষিতম্।
জগাম হনুমান্ শীস্ত্রমশোকবনিকাং শুভাম্ ॥ ৩ ॥
সুরপাদপদ্যাধাং বতুসোপানবাপিকাম্।
নানাপক্ষিমৃগাকীর্ণাং স্বর্ণপ্রানালিভাম্ । ৪
কলৈরানন্ত্রশাথাপ্রপাদপেঃ পরিবারিভাম্।
বিচিন্তন্ জানকীং তত্ত প্রতির্ক্ষণ মরুৎসূতঃ। ৫
দদ্শিভংলিহং তত্ত্র চৈত্যপ্রামাদম্বম্ম।
দৃষ্টা বিস্ময়মাপ্রেম্ মণিশুন্তশ্রাহিতম্ । ৬।

দমতীত্য পুনর্গত্বা কিঞ্চিদ্ধরং স মারুতিঃ।

দদর্শ শিংশপারক্ষমত্যন্তনিবিভূচ্ছদম্। ৭!

অদৃষ্টাতপমাকীর্ণং স্থাবর্ণবিহল্পমম্।

৽মালে রাক্ষসীমধ্যে স্থিতাং জনকনন্দিনীম্। ৮।

দদর্শ হনুমান্ বীরো দেবতামিব ভূতলে।

একবেনীং রুশাং দীনাং মলিনাম্বরধারিনীম্। ন।

ভূমো শয়ানাং শোচন্তীং রামরামেতিভাষিনীম্।

আতারং নাধিগজ্জীমুপবাসরুশাং শুভাম্। ১০।

শাখান্তজ্দমধ্যক্ষো দদর্শ কপিকুঞ্জরঃ।

রুতার্থেহিং রুতার্থেহিং দৃষ্ট্য জনকনন্দিনীম্। ১১

ময়ৈব সাধিতং কার্যাং রামস্য পর্মাত্মনঃ।

ত তঃ কিলকিলাশব্দো বভুবান্তঃপুরাছিহিঃ। ১২।

ত তঃ কিলকিলাশব্দা বভুবান্তঃপুরাছিহিঃ। ১২।

অনন্তর যামিনী যোগে স্ক্রম শরীর পরিএহ পূর্বক মাকতি লক্ষাপুরীর চতুদিকে ভ্রমণ করিতে করিতে সীতার অস্থেষণ মানসে রাবণের ভবন মধ্যে প্রবেশ করিল, কিন্তু কোন স্থানে জগনাতা সীতাকে দশ ন না পাইয়া লক্ষেশী পরিভাষিত সীতার অবস্থা স্মরণ কলেপ রক্ষ পরিরত রত্ন সোপান নাস্ত সরোবর স্থানোভিত, নানা প্রকার পক্ষী ও মৃগ গণ সমাকীর্ণ, স্থার ফল ভারাবনত অস্ত্র রক্ষাদি বেকিত ও স্বর্গ নিশ্বিত প্রাসাদাদি পরিশোভিত অশোক বন মধ্যে গমন করিল; অনন্তর এক এক করিয়া সমস্ত বৃক্ষের মূল-দেশে সীতাকে অন্থেষণ করিতে করিতে মণি নিশ্বিত শুন্ত সংযুক্ত আশ্বর্ষণ করিতে করিতে মণি নিশ্বিত শুন্ত

হইল! ১ বি । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । পরে ঐ প্রাদাদ অভিক্রম করিরা কিয়দ্র গমন করিলে, রবিকর নিবারক নিবিড্ভর পতারত শিংশপা নামক এক বৃক্ষ দর্শন করিল, ঐ বৃক্ষ মূলে রাক্ষণীগণ মধ্যবর্ত্তিনী দীনভাবাপরা মলিন বসনা উপবাসকশা "হা রাম! হা রাম!" ইত্যাকার শব্দায়মানা সীতাকে পৃথিবী মণ্ডল সমাগত দেবতার প্রায় পত্র মধ্যে ল্কারিত মাকৃতি দর্শন করিয়া হর্ষ পূব্দক কহিল, আমি অদ্য জগল্পী জানকী সদর্শনে কতার্থ হইলাম ও প্রমাত্মা শ্রীরামের কার্যা সাধ্য করিলাম । অনন্তর রাব্বের অন্তঃপুর বহির্দেশে রাক্ষ্য গণ্ডের অব্যক্ত নানাবিধ শব্দ প্রবণ করিয়া মনে মনে

কিমেতদিতি সল্লীনো রক্ষপত্রেরু মারুতিঃ।
আরান্তং রাবণং তত্র স্ত্রীক্ষনৈং পরিবারিতম।১৩।
দশাস্যং বিংশতিভুক্তং নীলাঞ্জনচয়োপমম।
দৃষ্টা বিশ্বয়মাপয়ো পত্রথণ্ডেম্বলীয়ত।১৪।
রাবণো রাঘবেণাশু মরণং মে কথং ভবেৎ।
দীতার্থমপি নায়াতি রামঃ কিং কারণং ভবেং।
ইত্যেবং চিন্তরয়িত্যং রামমেব সদা হৃদি।
তশ্মিন দিনে পররাত্রে) রাবণো রাক্ষসাধিপঃ।১৬
শ্বপ্লে রামেণ সন্দিষ্টঃ কন্চিদাগত্য বানরঃ।
কামরূপধরং সুক্ষো রক্ষাগ্রন্থোইমূপশ্যতি।১৭।
ইতি দৃষ্টান্ত তং শ্বপ্লং শ্বাম্বন্যোমূচিন্ত্য সঃ।
শ্বপ্লঃ কদাচিৎসত্যঃ স্যাদেবং তত্র করোম্যইম।১৮

আশ্রুষ্য বোধ করিলেন, পরে রাক্সী রুল পরিবেছীছ, নীল পর্বত সদৃশ কলেবর বিংশতি ভূজ দশাস্য রাবণকে সমাগত অবলোকন করিয়া মারুতি বিশ্বরাপর ছইল এবং পত্র খণ্ডে অতি হক্ষারপে লীন ছইয়া রহিল ৷ ৭ ৷ ৮ ৷ ৯ ৷ ১০ ৷ ৷ ১১ ৷ ১২ ৷ ১৩ ৷ ১৪ ৷

অনন্তর রঘুপতি প্রীরামচন্দ্র ছইতে কি প্রকার আমার
নিধন ছইবে এবং পরমাত্মা—সীতার অস্বেষণ করিবার জন্য
কি কারণ এস্থানে সমাগত ছইলেন না; দশানন ক্রদিপত্মে
এই প্রকার সর্ব্বাদা প্রীরামকে চিস্তা করত এক দিবস রাত্রি শেষে
স্থপ্প দেখিলেন যে, অনির্বাচনীয় স্থেছাধীন রূপ ধারণে সমর্থ—
রাম প্রেরিত এক বানর এই লক্ষাপুরী সমাগত হইয়া স্ক্রম
রূপ ধারণ পূর্বক বৃক্ষাগ্রদেশে লুকায়িত ছইয়া জনকনন্দিনী
সীতাকে নিরীক্ষণ করিতেছে। রাবণ এইরূপ আক্রহা স্থপ্প
দেখিয়া—স্থপ্প কোন সময় সত্য ছয়, অতএব অন্দোক বন
নধ্যে গমন করিয়া রাম বিরহ হুঃখিতা সীতাকে হ্বাক্য
রূপ বাণ ছারা তাড়না করিলে অত্যক্ত হুঃথিতা দেখিয়া

জ্ঞানকীং বাক্শরৈর্বিধ্য দু:থিতাং নিতরামহম।
করোমি দৃষ্টা রামায় নিবেদয়তু বানরঃ। ১৯।
ছিত্রেবং চিন্তয়ন সীতাসমীপমগমদ্দ্রভ্রম।
মুপুরাণাং কিন্ধিণীনাং শুড়া সিঞ্জিতমঙ্গনা। ২০।
মীতা ভীতা লীয়মানা স্বাত্মন্যেব স্থুমধ্যমা।
অধ্যেমুখ্যশ্রুনয়না স্থিতরামার্পিতান্তরা। ২১।
রাবণোহপি তদা সীতামালোক্যাহ স্থুমধ্যমে!।
মাং দৃষ্টা কিং রথা সূত্রু! স্বাত্মন্যেব সিলীয়দে ।
রামো বনচরাণাং হি মধ্যে তিষ্ঠতি সামুজঃ।
কদাচিদ্রশতে কৈন্চিৎকদাচিলেব দৃশ্যতে। ২০।
ময়া তু বছধা লোকাঃ প্রেষিতান্তম্য দর্শনে।
ন পশ্যন্তি প্রেয়ত্বন বীক্ষ্যমাণাঃ সমন্ততঃ। ২৪!
কিং করিষ্যান রামেণ ? নিস্পৃহেণ সদা তুয়ি।
তুরা সদালিক্ষিতোহপি সমীপস্থোহপি সর্বাদা। ২৫

প্রতি বানর শ্রীরামকে জানাইবে। দশানন মনে মনে এইরপ্রিরারাক্ষসীগণের সহিত সীতার সমীপে সত্তর গমনকরিল, প্রাসমর রাক্ষসীগণের নৃপ্র ও কিছিণীর শব্দ শ্রবণ করিলে ত্রায়া সুমধ্যমা, তীত্যানসা, অক্ষনয়না, অধাবদনা জানকী প্রমায়া শ্রীরামে মানদার্পণ করিয়া অবস্থিতা ছইলেন। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯।২০।২১। রাবণ সীতাকে নিরীক্ষণ করিয়া কহিল—হে সুমধ্যমে! তুমি আমাকে দেখিয়ার্থা কেন সঙ্কাচিতা হইরা রহিলে—শ্রীরাম বনচর জন্ত মধ্যে লক্ষ্মণের সহিত অবস্থিতি করিছেছে; কথান জন সমাজে উপস্থিত হয়, কথান বা অদৃশ্য ছইয়া থাকে। ২২।২০। শ্রীরামকে দশন করিবার জন্য আমি বহুবিধ চর ও অন্তর্নণণ চতুর্দিকে যতু পূর্বক প্রেরণ করিয়াছি তাছারা চতুর্দিক্ অবেষণ করিয়াছে শ্রীরামকে দেখিতে পায় নাই। তে ভক্ত! রাম তোমাতে সপ্তা শ্রীরামকে দেখিতে পায় নাই। তে

ক্দমেইনা ন চ স্বেহস্তার রামন্য জায়তে। ্ত্বৎকুতান সর্বাভোগাংশ্চ ত্বদ্গুণানপি রাঘবং ।২৬ ভুঞানোহপি ন জানাতি কৃত্য্নে নিও গোহধমঃ। ত্বমানীতা ময়া সাধী দুংখশোকসমাকুলা।। ২৭॥ ইদানীমপি নায়াতি ভক্তিহীনঃ কথং ব্ৰেছে ?। নিঃসত্ত্বো নির্মামো মানী মূঢ়ঃ পণ্ডিভমানবান্ ॥ ২৮॥ নরাধমং ত্রদ্বিমুখং কিং করিষ্যদি ? ভামিনি ! । ত্বাতীৰ সমাসক্তং মাং ভূজস্বাস্থুৱেতিমম্॥ ১৯॥ দেব গন্ধ কিনাগানাং যক্ষকি লর যোষিতাম। ভবিষাদি নিযোক্তী তুং যদি মাং প্রতিপ্রভাদে ॥

ভদ্মারা সুধসভ্যোগ করিবে : দেও যে জ্রীরামকে ভূমি দর্বদা আলিঙ্গন করিয়াছ এবং যে সন্ধদাই তোমার সমীপে অবস্থান চরিয়াচে, এক্ষণে তোমার জন্য সেই রামের স্মেহ মাত্র সম্ৎ- 🖟 পন্ন হয় নাৰ্হে স্কুক্ৰ ! দেখ বাম তোমা কৰ্কুক নানা বিধ ভোগা দ্রবা এবং ভোমার গুণ উপভোগ করিয়াও ভোমাকে স্মরণ করে না অতএব দেই নৱাধম, কতন্ত্র পামর ও নিওঁণ বলিয়া ্লাহইতে পারে। তুমি আমাকর্ত্ত অপজ্ডা হটর। অবধি ভুংখ ও শোক সন্তপ্তে অবস্থান করিতেছ; বে হীন বীর্য্য অদ্যাপি ভোমাকে অবেষণ করিতে অসমর্থ সে তোমাকে কি প্রকার উপভোগ করিবে? ছে ভামিনি। দেখ বলবান, দায়াবী ও মানী পুরুষকেই কামিনী পতি বলিয়া বরণ করিয়া शांत्क किन्छ औ द्वारमव मामर्था, मात्रा छ मधान माजिल नाहे, শতএব ঐ নরাধম তোমার প্রতি বিমুখ তাহাকে পাইয়া কি ত্র্থ সম্ভোগ করিতে? দেখ আমি অসুর জাতির শিরোমণি, তোমাতে সাতিশয় আসক হট্য়াছি; অতএব বাম কি রূপ মনুষ্য তাহা জাত হইবি) জানকীর এইরূপ বাক্য আমাকে ভজনা করিলে দেব, গন্ধকা, নাগা, মক্ষ, রক্ষ, কিন্তুর-প্ৰের ব্রাসনা সকল ভোমার আজাম্বর্তিনী হইবে। ২৪। 381201241261221 0º1

রাবণক্স বচঃ শ্রুত্বা সীতামর্ঘসমন্বিতা। উবাচাধোমুখী ভূহা নিধায় তৃণমন্তরে॥ ৩১॥ রাঘবাদিভাতা ভুনং ভিক্ষুরূপং ত্রা ধৃতম্। রহিতে রাঘবাভ্যাং তং শুনীব হবিরধ্বরে॥ ৩২॥ क्राञ्चानित्र गार नौष्ठ ! जब कन्नर खालारत्रश्वितार । যদা রামশরাঘাতবিদারিতবপুর্ভবান্।। ৩০॥ জ্ঞাস্ত্রে মানুষ্ রাম্ গমিষ্যদি দ্মান্তিকম। সমুত্রং শোষয়িত্বা বা শরৈর্ব্বদ্ধার্থ বারিধিমু।। ৩৪ रुखुः पार ममर्य दार्ग। लक्कार्यन ममस्रि उह । আগিমিষ্যত্যদদেতে। দ্রক্ষদে রক্ষিসাধ্য !॥ ৫৫ ॥ ত্বাং সপুত্রং সহবলং হত্ব। নেষ্যতি যাং পুরম। শ্রুতা রক্ষঃপতিঃ ক্রুদ্ধে। জানকাাঃ পর্ক্ষাক্ষরম্॥ ৬৬ বাকং ক্রোধনম।বিষ্টঃ থজামুপ্তাম্য দত্তরঃ। इसु क्रमकताकमा जनशा जासालाहनः ॥ ७**१**॥

অনন্তর রাবণের ঐ বাক্য শ্রবণ করিয়া নিঃসহায়া অধোবদনা জানকী ভূগ মাত্র সহায় করিয়া কহিলেন, রে হুরাঝন ! তুই ভীত হইয়া ভিক্ষুক বেশ ধারণ করত শ্রীরাম ও লক্ষণের অসমক্ষে, কুকুরে যে প্রকার যজ্ঞ স্থলীয় দেব ভোগ। সংগোপনে ভোজন করে, সেই রূপ আমাকে হরণ করিয়াছিস্। রে পামর! তুই অচির কালেই ইহার সম্চিত ফল পাইবি, রে রাক্ষসাধম! রঘুপতি জীরামচন্দ্র তোমাকে সমরে বিনাশ করিবার মানসে অতুজ লক্ষাণের সহিত আগমন প্র্বাক মহা-নিধি শোষণ অথবা শর দ্বারা পরিবর্দ্ধন করত তোকে সপুত্র বিনাশ করিয়া আমাকে সপুর মধ্যে লটবা বাইবেন সেই সমস্ত প্রবণ করিয়া ভীম পরাক্রম দশানন জোধাবিষ্ট ছইয়া কছিল—রে পাপীরসি জানকি! ভোকে এই খড়্গাঘাত हावा जाम मर्गामज वामना शूप कविव এই विवास यङ्ग মন্দোদরী নিবার্যাহ পতিং পতিহিতে রতা।
ত্যকৈনাং মানুবীং দীনাং ছুংথিতাং কুপণাং কুশাম্
দ্বেগস্বর্কনাগানাং বদ্ধঃ সন্তি বরাঙ্কনাঃ।। ৩৮ ॥
তামেব বর্ণস্তুটিচ্চর্মদমন্তবিলোচনাঃ।। ৩৯ ॥
ততাহত্তবীদ্দশগ্রীবো রাক্ষনীবিক্রতাননাঃ।
বথা মে বশগা সীতা ভবিষ্যতি সকামনা।
তথা যতধং ত্বিতং তর্জনাদরণাদিভিঃ॥ ৪০ ॥
দিমাসাভ্যন্তরে সীতা যদি মে বশগা ভবেং।
তদা সর্ক্রম্থোপেতা রাজ্যং ভোক্ষ্যতি সা ময়া।।
বদি মাসদ্বয়াদ্কিং মচ্ছ্যাং নাভিনন্দতি।
তদা মে প্রাত্রাশায় হত্য কুক্রত মানুষীম্॥ ৪২ ॥

ইত্যুক্ত্যা প্রথমী স্ত্রীভী রাবণোহন্তঃপুরালয়ম্।
রাক্ষস্যো জানকীমেতা ভীষয়ন্তঃ স্বতর্জনৈঃ ॥৪৩৪
তবৈকা জানকীমাহ যৌবনং তে রথা গতম্।
রাবণেন সমাসান্ত সফলং তু ভবিষ্যাতি॥ ৪৪॥
অপরা চাহ কোপেন কিং বিলম্বেন ? জানকীম্।
ইদানীং চ্ছেদ্যতামঙ্গং বিভজ্য চ পৃথক্ পৃথক্॥ ৪৫।
অন্যা তু থজামুদ্যম্য জানকীং হন্তমুদ্যতা।
অন্যা করালবদনা বিদার্যাশুমভীষয়ৎ ॥ ৪৬॥
এবং তাং ভীষয়ন্তীন্তা রাক্ষমীর্কিক্ষতাননাঃ।
নিবার্য বিজ্ঞটা রাক্ষমী বাক্যমন্ত্রীৎ॥ ৪৭॥
খণুধং দুইরাক্ষয়োমদ্বাক্যং বে৷ হিতং ভবেৎ॥৪৮

প্রহার করিতে উদাত হুখন, মন্দোদরী ক্রোধ কম্পিত কলে-বর রাবণকে শান্তনা করত কহিতে লাগিলেন্—হে স্বামিন্! রাম-প্রাণাধিকা জানকী হ্রমফেণনিত শ্রাণয় শ্রন করিতেন, রাম-বিরছ কাতরা, দীন ভাবাপনা কশাসী, দেবগণ সেব্যা সেই জগলক্ষী এট কণ্টক্ষয় শিংশপা বৃক্ষের নিয়দেশে ভূমি শারিনী হইরা বাদ করিতেছেন। ৫ প্রিয়স্থণ! তুমি মদনো-শ্রতা দেব গন্ধর্ম নাগ বরাধন। কর্তৃক আলিপিত হইয়াও মতে। জনকনন্দিনীকে স্পৃহা করিতেছ। ছুরাত্মারাবণ মন্দো-দুরার এই বাক্য শ্রবণ করিয়া বিকট বদন রাক্ষ্মী গণকে क्रिम १७२१७२१ ००१०८। १००१०७। ८४। ८४। ८४। াক্ষ্মীলণ! যাহাতে জনকনন্দিনী স্বেচ্ছাণীনা হইয়া আমার বশীভূতা হয়, ভয় প্রদর্শন ও সমাদরাণি দারা সেই প্রকার সর্ব চেষ্টাকর।৪০। বদি মাদ দুর মধ্যে দীতা আমার নশ্বত্তিনী হয়, তবে আমার সহিত প্রমন্থ্যে রাজ্য সন্তোগ क्षिद्र । 851 अवर यक्ति भागवत्र मक्षा आभाष्क अञ्चन ना করে তবে ঐ মান্ত্রী দীতাকে বজ্ঞা দালা বধ করিয়া আমার প্রাতঃকালীন ভোজনার্থ কম্পনা করিব। রাবণ এইরূপ

আদেশ করিয়া জীরণের সহিত অন্তর্গুর গমন করিল অনন্তর রাক্ষসীগণ বাবণ কর্কুক আদিষ্টা হইনা সীভাব সমীপ্র আগমন করিয়ানানা প্রকার ভংগ্রনা দ্বারা ভয় প্রদর্শন করিছে লাগিল, তন্মধো কোন রাক্ষসী সীভাকে কহিল—হে চার্কাঞ্চি ভোমার এ যৌবন রুখা গভ হইল, কিন্তু রাজা দশানন ভোমাকে সভ্যোগ করিলে ঐ যৌবন সকল হইবে—অন্য এক রাক্ষসী ক্রোধ পূর্বক কহিল—হে জানকি! যদি সত্তর রাবণকে ভজনা না কর ভবে এখনই ভোমার সমস্ত শরীর বিভাগ করিয়া ভক্ষণ করিব—অপরা রাক্ষসী খড়া পারং করিয়া জানকীকে বধ করিবার জন্য উদ্যভা হইল। অন্য এক রাক্ষসী ভয়ানক মুখব্যাদান পূর্বক ভয় প্রদর্শন করিল। ৪২। 1৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬।

এই প্রকার সীতার ভরপ্রদর্শনী কুন্ধা রাক্ষ্যালণকে ত্রিন্ধটা নান্নী এক রন্ধা রাক্ষ্যী কহিল—রে হুন্টা রাক্ষ্যালণ ভোষাদিনের হিত বাধ্য প্রবণ কর—জগজ্জননী সীতাকে ন ভীষরধং রুদ্ভীং নমস্কুরুত জানকীম্।

ইদানীনেব মে স্বপ্নেরামং কমললোচনঃ॥ ৪৯
আরুইছরাবতং শুলুং লক্ষাণেন সমাগতঃ।

দপ্ধা লক্ষাং পুরীং সর্বাং হত্বা রাবণমাহেবে॥ ৫০
আরোপ্য জানকীং স্বাক্ষে স্থিতো স্কটোহগমূর্ধনি
রাবণো গোময়য়্রদে তৈলাভ্যক্তো দিগন্বরঃ॥ ৫১॥
আগাহৎপুল্রপৌলৈশ্চ কৃত্বা বদনমালিকাম্।

বিভীষণস্ত রামস্থ সন্নিধে স্কটমানসঃ॥ ৫২॥
সেবাং করোতি রামস্থ পাদয়েরভিক্তিসংযুতঃ।

সর্বাথ রাবণং রামো হত্বা সকুলমঞ্জনা ॥ ৫৩॥
বিভীষণায়াধিপভাং দত্বা সীতাং শুভাননাম্।
আঙ্কে নিধায় সপুরীং গমিষতে ন সংশয়ঃ॥ ৫৪॥
তিজটায়া বচঃ শ্রুণ্ডাভাতা রাক্ষসন্তিরঃ।

ভূষীমাসংশুত্র তত্র নিদ্রাবশমুপাগতাঃ ॥ ৫৫ ॥
তর্জিতা রাক্ষসীভিঃ সা সীতা ভীতাতিবিহ্বলা।
ত্রাতারং নাধিগচ্ছন্তী দুঃখেন পরিমূচ্ছি তা।। ৫৬ ।
অঞ্চভিঃ পূর্ণনয়না চিন্তয়ন্তীদমন্ত্রবীৎ।
প্রভাতে ভক্ষরিষ্যন্তি রাক্ষ্রেয়া মাং ন সংশ্রঃ
ইদানীমের মরণং কেনোপায়েন মে ভবেৎ। ৫৭

এবং স্থাদু:থেন পরিপ্লুতা সা।
বিমুক্তকণ্ঠং রুদতী চিরায়।
আলম্য শাগাং কুতনিশ্চয়া মৃতে)
ন জানতি কঞ্ছিদুপায়মঞ্চনা।। ৫৮।

ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে স্থান্দরাকাণ্ডে দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

দর্শনা কবিও না প্রণাম কর । অদ্য এইরপ সাক্ষ্য ব্রা দর্শন করিয়াছি দে, ' পরমাত্মা কমললোচন শ্রীরাম লক্ষণের সহিত ঐবাবত অস্থারোহণ করিয়। আগমন করত সমস্ত গল্পাপুরী ভক্ষণাং করিয়া রণভূমিতে সবংশ বাবণকে বিনাশ করিলেন এবং শ্রীরাম সীতাকে ক্রোড়ে স্থাপন করত পর্কভো-পরি পরিলক্ষিত হইতে লাগিলেন । পু্লাদি ব্লুগণের সহিত বিব্যম তৈলাক্ত রাবণ স্বীয় স্বীয় মন্তক ছেদন করিয়া গোময়পূর্ণ গর্ত মধ্যে অবগাছন করিতেছে, বিভীবণ হর্ব চিত্তে গজি পুরংশব শ্রীরামের পাদ দেবা করিতেছে। শ্রীরাম সত্ত্ব সবংশ রাবণকে বিনাশ করিয়া বিভীবণকে সমস্ত রাজ্যাধি-প্র প্রদান করত সাভাবে ক্রোড়ে স্থাপন করিয়া অবোধ্যা পুরী শুমন করিলেন । বিজ্ঞার এইরপ স্থপ বৃত্তাত শ্রুবণে

ভীত্দান্দা হট্রা সমস্ত রাক্ষ্য পত্নী নিজ্ঞা প্রাপ্তা হইল তা দ্মর জানকী রাক্ষ্যীগণের ভর্জন বাক্যে ভ্রম্বারুলা হইলা ছিলেন এবং কাছাকেও হঃখবিমোচনকারী না দেখিলা সজ্জান্দান স্থাত কছিলেন, স্থা বিধাতঃ! এই রাজি প্রভাগ হট্লে ভ্রানকা রাক্ষ্যী সকল নিশ্চরই আমাকে ভক্ষা করিবে, সম্প্রতি এই রাজি মধ্যে কি প্রকারে আমার মধক হইবে—এই প্রকার উচ্চেঃস্বরে ক্ল্যমানা অতি হুঃখিতা জানকী মরণের অন্য উপায় না দেখিরা শিংশপারক্ষের শাধাবলম্বন পূর্বাক মরণে ক্রতনিশ্চরা হইলেন ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১ ৫২। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮।

> ইতি জীমদগাত্মরামারণে উমামছেশ্বরসন্থানে স্বন্দরাকাণ্ডে দিতীয়োইধাায়ঃ।

তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ

উদ্বানন বা মোক্যে শরীরং রাঘবং বিনা।

জীবিতেন ফলং কিং স্যাশ্বম রক্ষোহধিমধ্যতঃ।

দীর্ঘা বেণী মমাত্যর্পমুদ্ধনায় ভবিষাতি।

এবং নিশ্চিতবুদ্ধিং তাং মরণায়াথ জানকীম্। ২।

বিলোক্য হমুমান্ কিঞ্জিদ্বিচার্ট্যেতদভাষত।

শনৈঃ শনিঃ স্থ্রমান্দেপা জানক্যাঃ শ্রোত্রগং বচঃ ৩

ইক্ষাকুবংশসন্তুতো রাজা দশরথো মহান্।

অযোধ্যাধিপতিস্তম্ভ চত্বারো লোকবিশ্রুতাঃ। ৪।

পুত্রা দেবসমাঃ সর্কেঃ লক্ষণৈনপলক্ষিতাঃ।

রামশ্ব লক্ষণেশ্বের ভরতদৈবে শক্রহা।। ৫ ।

ক্রেষ্ঠো রামঃ পিতুর্বাকদ্পেকারণ্যাগতঃ।

লক্ষণেন সহ জাতা সীতয়া ভার্যয়া সহ। ৬।

প্রাণাধিক জীরাম বিবহে রাক্ষসগণের মধাবর্তিনী হইয়া
আমার জীবন ধারণ বিক্ষল, সত্তব আমার স্থলীই বেণী
উদ্ধানের জন্য কম্পিত হইবে, আমি উদ্ধান হারা নিক্ষ এ
জীবন পরিত্যাগ করিব। জানকী এই প্রকার মরণে রুক্নিক্ষা
হইলে স্বর্ছি হন্মান স্থান রূপ ধারণ করত তাহার কর মূলে
কহিল—প্রসিদ্ধ ইক্ষাকু বংশোৎপন বাজা দশ্রণ সর্ব্ব লক্ষ্য
স্পান দেব সদৃশ পুত্র চতুষ্টার উংপাদন করিলেন এবং কিয়ং
কাল রাজ্য শাসন করত সত্য পাশে বদ্ধ হইয়া জ্যোষ্ঠ তনর
রামচক্রকে বন গমনে আদেশ করিলেন, ধন্মপ্রায়ণ রগুনাথ
পিত্রাজ্য পালন করত অনুজ্ব লক্ষ্মণ ও ভার্যা জ্ঞানকীর সহিত্
গৌত্যী নদীর তীরে পঞ্চবটী মধ্যে বাস্থ করিয়াছেন। অনুমান্ধ

উবাস গৌতহীতীরে পঞ্চবট্যাং মহামনাঃ।

তত্ত্র নীতা মহাভাগা নীতা জনকনন্দিনী। ৭।
রহিতে রামচন্দ্রেণ রাবণেন দুরাত্মনা।
তত্যে রামোহতিদুংখার্ত্তো মার্গমাণোহধ জানকীম
জটায়ুষং পক্ষিরাজমপশুর্ধ পতিতং ভুবিঃ।
তথ্ম দত্ত্বা দিবং শীঘ্রং ঋষামূকমুপাগতম্। ৯।
স্থাবিশ কতা মৈত্রী রামশু বিদিতাত্মনঃ।
তদ্যাধ্যাহারিণং হত্বা বালিনং রঘুনন্দনঃ। ১০।
রাজ্যেহভিষেচ্য স্থাবীবং মিত্রকার্যাং চকার সঃ।
স্থাবিস্ত সমানায়্য বানরান্ বানরপ্রভুঃ। ১১।
প্রোরস্ত সমানায়্য বানরান্ পরিমার্গণে।
সীতারাস্ত্র চৈকোইহং স্থাবিস্চিবো হরিঃ। ১০।

রামও লক্ষ্ণ মৃগয়ার্থ গমন করিলে হ্রায়া রাবণ দীতাকে অপহরণ করিল; অনন্তর দীতা-বিরহ-দন্তপ্ত প্রীরাম অনুজেন দহিত ভার্যার অন্তরণ করিতে করিতে বনমধ্যে পক্ষ বিহীন মৃত প্রায় জটায়ুকে দেখিলেন। অনন্তর জটায়ুকে মুক্তি প্রদান করিয়া প্রয়মূক পর্বতোপরি গমন করিলেন। ১।২।৩।৪।
। ৫।৬।৭।৮।৯। ভগারান ব্যুনাথ স্থ্রীবের সহিত্
মিত্রভা সম্পাদন করিয় ভাতৃদারাপহারী হুরায়া বালিকে নিধন পূর্বেক স্থ্রাবকে রাজ্যে অভিষক্ত করিলেন, কলিরাজ স্থ্রীব ও বানরগণকে দীতার অন্তেষণার্থে চতুদ্দিকে প্রেরণ করিলেন, তল্মধ্যে আমি বাজ শাসন প্রতিপাদনের নিমিত্র

সম্পাতিবচনাচ্ছীন্ত্ৰমূলজ্যা শতধোজনম। সমুদ্রৎ নগরীৎ লক্ষাং বিচিম্বন জানকীং শুভাম।। শনৈরশোকবনিকাং বিচিম্বন্ শিংশপাতরুম্। অদ্রাক্ষৎ জ্বানকীমত্র শোচন্তীং ছঃধসংপ্লুভাম্ ॥১৪ রামদ্য মহিষীং দেবীং ক্লুতকুত্যোহ্হমাগত:। ইত্যুক্তেশবরামাথ মারুতির দ্বিমন্তরঃ।। ১৫ भी जो करमण उरमर्त्वर अन्द्रा विश्वश्याग्रयो। কিমিদং মে আকু তং ব্যোমি বায়ুনা সমুদীরিতম্ ॥১৬ স্বপ্নো বা মে মনোভান্তিৰ্বনি বা সভামেৰ তৎ। নিদ্রা মে নান্তি দুংখেন স্থানাম্যেতৎ কুতো ভ্রমঃ ?। যেন মে কর্পীয়ুবং বচনং সমুলীরিতম্। স দৃশ্যতাং মহাভাগঃ প্রিয়বাদী মমাগ্রতঃ॥ ১৮॥

শত ষোজন সমুদ্র উল্লেখ্যন করিয়া এই লঙ্কাপুণীর অভান্তরে ক্লানাভা সীতাকে অংল্বন্ন করত ক্রেন ক্রেন এই অশোক বন মধ্যে শিংশপা ভরুমূলে অভ্যন্ত হুংপ ভাগিনী রাম-মহিধী দৰ্শন ক্রিয়া কুতার্থ হইলাম, এই वित्रा वृक्षिमान মারুতি নির্ত্ত হইল, জানকী বানর ভাষিত এই বাকা শ্রবণ করত বিশ্ববাবিষ্টা হইয়া কহিলেন, আদি আকাশ পর্থে কি'বাযুর यक अवन कतिलाय, कि स्रश्न मर्मन कविनाय, कि आमाद लाखि উপস্থিত ছটল, রাম বির্হান্ত সন্তপ্তা হইয়া আমি নয়ন পথে নিম্রা দেবীকেও স্থান প্রদান করিতেছি না, তবে সপ্রের মন্তব কি—ভাত্তিরও কোন কারণ দেখিভেছি না, যে জন অফুণা ভাবে আমার কর্ণ-বিবরে মধুনময় বাকা বর্ষণ করিলে, সেই প্রিয়ন্ত্র দুশ্য ভাবে আমার অঞ্জেত হও। ১০। ১১। ১২। : ১७। ১৪। ১৫। ১७। ১৭। ১৮। मिध्में भा त्राक्त अख चट्छ সংলীন হইয়া ছন্মান জান কীর এই রূপ হুঃপিত বাকা প্রবণ করিয়া চিট্টক পক্ষীর তুলা রক্ত বর্ণ বদন ও পীত বর্ণ শরীর | তুমি বানর জ্ঞাতি, তোমার সহিত মহুখা জাতি জ্ঞীরামের সংস্ক

শ্ৰুত্বা ভজ্জানকীবাক্যং হন্দ্য।ন্ পত্ৰখণ্ডতঃ। অবতীর্যা শনৈঃ শীভাপুরতঃ সমবস্থিতঃ ॥ ১৯ ॥ কলবি**স্কপ্রমাণাকো** রক্তাস্যঃ পীতবামরঃ। नमात्र मनरेकः नौडाः खाक्कानः श्रृत्रजः चिरुः। २०। দুষ্টা তং জানকী ভীতা রাকণে। হয়মুপাগতঃ। মাং মোছয়িভুমায়াতে। সায়য়া বানরাকুভিঃ॥ ২১ ॥ ইত্যেবং চিন্তরিত্বা সা তৃষ্টীমাসীদধোমুখী। भूनतभार जार मीजार तनती ! यख्य विभक्षा ॥> २ নাহং তথাবিধো মাতস্তাক শক্ষাং ময়ি ভিতাম। দাসোহহং কোশলেন্দ্রনা বামসা প্রমাতান: ॥২৩॥ मिंदिराश्हर इंशेन्डिया सूबीवया सञ्ज्ञादा । বায়োঃ পুজোইইমথিসপ্রাণভূতস্য শোভনে ! ॥২৪॥ তচ্ছত্বা জানকী প্রাহ হন্মসং কুতাঞ্জিম্। বানরাণাং মন্ত্র্যাণাং সাঞ্জ্রতির্ঘটতে কথম্?॥২৫

ধারণ করত ঐ পত্র থও হইতে নির্গত হইয়া জাগালাভা জান-কীঃ সন্মুখে অৰ্ভিডি ক্রত ক্রতাঞ্জলি হইরা বারস্থার প্রণাম করিল, জানকী মাফভিকে দর্শন করিয়া ভীতান্তঃকরণে চিন্তা করিতে জাগিলেন, তুরাকা রাবণ আমাকে মুশ্ব করিবার জনা মারা দ্বারা বানর শরীর ধারণ করত সমুখে সমুপস্থিত হইয়াছে, এই প্রকার চিন্তা করিয়া অধোবদনা ও বাকা রহিতা হটলেনঃ পুনৰ্কার হন্মান কহিল—হে মাতঃ! আপনি আমার আকৃতিকে মাঘাবী রাবণ বলিরা যে শক্ষা করিতেছেন ঐ শক্ষা পরিত্যাগ করুন, জামি রাবণ নহি। হে শুভদে! আমি প্রনাকা জীরামের দাস-জণতের প্রাণ হরূপ বায়ু-তাহার তনর হন্মান, আমি তোমার সন্মুখেই উপস্থিত হইয়াছি।

জ্ঞানকী চনুমানের বাকা ভাবণ করিয়া কছিলেন, চে মারুডে !

যথ বং রামচন্দ্রন্য দাসোহহমিতি ভাষদে ?।
ভামাহ মারুতিঃ প্রীতো জানকীং পুরতঃ স্থিতঃ॥২৬
খবামুকমগাজামঃ শবর্ষ্যা নে দিতঃ স্থবীঃ।
স্থ্রীবো খব্যমুকস্থা দৃষ্টবান্ রামগক্ষাণো ॥ ২৭॥
ভীতো মাং প্রেষয়ামাস জাতুং রামস্য ক্ষ্ণতম্।
ব্রহ্মচারিবপুর্ধ বা গভোহহং রামসন্নিধিম্ ॥ ২৮॥
জ্ঞান্বা রামস্য সন্ভাবং ক্ষাপেরি নিধার তৌ।
নীত্বা স্থ্রীবদামীপ্যং স্থাং চাকরবন্তয়োঃ॥ ২৯॥
স্থ্রীবদ্য ক্ষ্তা ভার্যা বালিনা তং রঘূত্তমঃ।
জ্যানৈকেন বাণেন ভতো রাজ্যেইভ্যবেচয়ৎ॥ ৬০
স্থ্রীবং বানরাণাং সং প্রেষয়ামাস বানরান্। ৬১।
দিগ্ভ্যো মহাবলান্ বীরান্ ভবত্যাঃ পরিমার্গণে।
গচ্ছস্বং রাঘ্রো দৃষ্ট্য মামভাষ্য স্থান্তম্য ॥ ৬২॥

ত্বরি কার্যামশেবং মে স্থিতং মারুতনন্দন!।
ক্রাহি মে কুশলং সরিং সীতারৈ লক্ষণসাচে॥ ৩৩
অঙ্গুলীরকমেতিয়ে পরিজ্ঞানার্থমুক্তমম্।
সীতারৈ দীরতাং সাধু মন্নামক্রেমুদ্রিতম্॥ ৩৪॥
ইত্যক্ত্বা প্রদদেশ মহুং করাপ্রাদঙ্গুলীরকম্।
প্রথত্বেন মরা নীতং দেবি! পশ্চাঙ্গুলীরকম্। ৩৫।
ইত্যক্তা প্রদদেশ দেবৈয় মুদ্রিকাং মারুতাল্লকঃ।
নমস্কৃত্বা স্থিতে দূরাছদ্ধাঞ্জলিপুটো হরিঃ॥ ৩৬॥
দৃষ্ট্বা সীতা প্রমুদ্রিতা রামনামান্ধিতাং তদা।
মুদ্রিকাং শিরসা ধৃত্বা প্রবদানন্দনেত্রজা। ৩৭।
কপে। মে প্রাণদাতা তং বুদ্ধিমানসি রাঘনে।
ভক্তোহসি প্রিয়কারী তং বিশ্বাদেশংস্তি তবৈর হি

কি প্রকার সংঘটন হইল । ১৯ ।২০ ।২১ । ২১ ।২০ । ।২৪ ।২৫ । অনন্তঃ হস্ত মানস মাক্তি জানকীকে কহিল, পেরাম পরায়ণে ! জ্রীম শ্বংমুধ পর্যন্তে লক্ষ্মণের সহিত্ত আগমন করিয়াছিলেন, অনন্তর ঐ পর্যন্তের স্থ্রীব, শ্রীরাম ক লক্ষ্মণকে দশন করত ভীত হইরা জ্রীরামের মানসিক ভাব অবগত হইরার জনা আগাকে প্রেরণ করিয়াছিলেন, আগি ক্রেক্টারীর বেশে জ্রীরাম ও লক্ষ্মণকে অবগের হাপন পূর্বক ভাব অবগত হইয়া জ্রীরাম ও লক্ষ্মণকে স্ক্রোপরি হাপন পূর্বক স্থ্রীব সন্ধিনে আনম্বন করিয়াছিলাম। অনন্তর স্থ্রীব ও রামের সহিত্ব গণাবিধি মিক্তার সম্পাদিত হইলে রমুবর শ্রীরাম স্থ্রীবের ভার্যাপকারী বালিকে এক মাত্র বাল হারা যম সপনে প্রেরণ করিয়া স্থ্রীব্রুক বান্ত্র রাজ্যাভিষিক্ত করিলেন। অনন্তর বান্ত্র রাজ্য স্থ্রীব্রুক বান্ত্র করিলেন, ঐ সময়

শ্রীরাম অংগর পূর্বেক আমাকে কছিলেন—হে পান তনর । ভোনাদ্বারা অনেক কার্য্য সম্পাদিত হইবে আমার কুলল বার্ত্তা সীতাকে জানাইবে, তোমাকে রাম প্রেরিত দৃত বলিয়া জ্ঞানিবার জন্য আমার নামাঙ্কিত অন্ধুরীয়ক প্রাণাধিকা সীতাকে প্রদান করিবে—এইরপ কহির। আমাকে করাপ্র হইতে অন্ধুরীয়ক সমর্পন করেন। ছে দেবি! ঐ অন্ধুরীয়ক যত্র পূর্বেক আনয়ন করিয়াছি অবলোকন করন—এই বলিয়া ক্রপিষর মারুতি সীতাকে অন্ধুরীয়ক প্রেনান করিল, পরে সীতাকে প্রণান করত কিয়ন্দ্রে ক্রতাঞ্জলি হইয়া দণ্ডাম্মান হইল।২৬:

ঐ রাম নামাকিত অঙ্গুরীয়াক দর্শনে জ্ঞানকী এইচনন। হটর। আনন্দাঞ্জ বিসর্জন করিতে করিতে মাকভিকে কছিলেন— ছে কপি বর । তুমি বৃদ্ধিশান্, রামের ভক্ত ও প্রিধকারী নোচেমাৎসন্থিং চান্যং পুরুষং প্রেষয়েৎ কথম ?

হন্যন্ ! দৃষ্টমথিলং মম দুংথাদিকং ত্রা। ৩৯।

লঠং কথয় রামায় ষথা মে জায়তে দয়।

মালবরাববিপ্রাণাঃ স্থানান্তি মম লত্তম। ৪০।

নাগমিষাতি চেলামো ভক্ষয়িষাতি মাং থলঃ।

আতঃ শীজ্ঞং কপীল্রেণ স্থাবিণ সমস্থিতঃ। ৪১।

বানরানীকলৈঃ লাজ্ঞং হত্ব রাবণমাহবে।

পপুল্লং সবলং রামো যদি, মাং মোচয়েৎ প্রভুং॥

তত্তস্য সদৃশং বীর্যাং বীর! বর্ণয় বর্ণিতম্।

অবা মাং তারয়েলায়ো হত্বা শীল্ডং দশাননম্। ৪৩।

তথা যত্ত্ব হন্মন্। বাচা ধর্মমবাপ্রুছি।

হন্মানপি তামাহ দেবি ! দৃক্টো যথা ময়া। ৪৪।

বারঃ সলক্ষণং শীল্মাগমিষ্যতি সায়্রধঃ।

মুগ্রীবেণ সদৈন্যেন হত্ব। দশমুখং বলাহ। ৪৫।
সমানেষ্যতি দেবি! ত্বামগোধ্যাং নাজ সংগয়:।
তমাহ জানকী রামঃ কথং বারিধিমতেতম্। ৪৬।
তীত্বিয়াস্যত্যমেয়ালা বানরানীকপৈঃ সহ?।
হন্মানাহ মে ক্ষলাবারুছ পুরুষর্যভৌ। ৪৭।
আয়াস্তঃ সদৈন্তে মুগ্রীবো বানরেশ্বঃ।
বিহায়সা ক্লেনেব তীত্বি বারিঘিমতেতম্। ৪৮।
নির্দিষ্যতি রক্ষোঘাং ভুৎকৃতে নাজ সংশয়ঃ।
অমুজ্ঞাং দেহি মে দেবি! গজ্জামি তর্য়াস্বিতঃ।৪৯
দেবি! কিঞ্চিনভিজ্ঞানং দেহি মে যেন রাঘবং। ৫০।

প্রিয়া আমার বিশ্বাস ইইয়াছে, নতেং জ্রীরাম অন্য পুক্ষকে
কেন আমার মিকট প্রেরণ করিবেন? ছেহন্মন্! আমার
প্রস্ত হঃবই অবগত ইইয়াছ —আমার প্রতি দয়া করিরা
ক্রীবামকে সমস্ত হঃপ জানাইবে। প্রাণাধিক জ্রীরামণ নাসহর
মধ্যে আমান না করিলে বাক্ষণণ নিক্ষর আমাকে ভক্ষণ
করিবে। 'অভএব স্থাীব ও সমস্ত বানরকুলের সহিত
ক্রীরাম্ যদি স্বংশ রাবণকে রণ ভূমিতে বিনাশ করিয়
আমাকে যোচন করেন তবে বীরণণও তাঁছার বল পরাক্রম
বর্ণন করিবে। পে ইম্মন্! রঘুপতি জ্রীরাম যে কোন উপায়ে
স্বংশ রাবণকে বিনাশ করিয়া সত্তর আমাকে পরিত্রাণ
করিতে পারেন গেই উপায়ই কহিবে—ভদ্বারা ভোমার পুণা
ঘ্রিবে।

अनखत इन्यान् मी ठाःक कश्नि-- १ ८५वि ! आमि जीव

সমীপে গমন করিলেই শক্ষাণ ও সদৈন্য স্থাীবের সহিত্ত প্রীরণম ধনুকাণ ধারণ করিয়া আগমন পূর্বাক সবংশ রাবণকে নিধন করিয়া অচির কাল মধ্যে তোমাকে অ্যোধ্যাপুরী লইয়া যাইবেন—তাহাতে ভিলমাত্র সংশয় নাই।

জ্ঞানকী কছিলেন—হে মাৰুতে! অমেরণত্বা শ্রীরাম ও লক্ষণ বানরকুলের সহিত কি প্রকাবে এই শত গোজন বিস্তার্ণ গল্প জ্বা বারিধি সম্ভরণ করিয়া জ্যাসমন করিবেন।

হস্মান্ কছিল—হে মাতঃ : পুল্যোত্তম রযুনাথ ও লক্ষ্য আগার স্বন্ধারত হইয়া আগামন করিবেন এবং সসৈন্য কপীখর স্থাীব আকাশ পথে ক্ষণকাল মধ্যে এই বারিধি উত্তর্গ হইয়া নিশ্চরই রক্ষকুল ধ্বংশ করিবেন : হে দেবি ! আমাকে আদেশ কলন—আমি বিরহানন-সপ্তথ সামুক্ত প্রীরামকে দর্শন করিয়া শীত্তই আপনার স্থীপে প্রভাগ্যন করিয়। ছে মাতঃ ! এক্ষণে শ্রীরামের বিশ্বাস যোগ্য কোন দ্রব্য আমাকে প্রদান করন।

বিশ্বনেশ্বাং প্রবন্ধেন ততো গন্তা সমূৎস্কুকঃ।
তত কিঞ্চিছিচার্য্যাথ দীতা কমললোচনা। ৫১।
বিমৃচ্য কেশপাশান্তে স্থিতং চূড়ামবিং দদৌ।
অনেন বিশ্বসেন্তামন্ত্রাং কপীন্দ্র ! সলক্ষণঃ।। ৫২॥
অভিজ্ঞানার্থমন্যক্ষ বদামি তব স্কব্রত !।
চিত্রকুটগিরো পূর্বমেকদা রহিনি স্থিতঃ।
মদক্ষেশির আধায় নিজাতি রয়ুনন্দনঃ। ৫৩॥
ঐন্তঃ কাকস্তদাগত্য নথৈস্তুপ্তেন চামক্ষর ।
মৎপাদাক্ষুর্তমারক্তং বিদদারামিষাশায়া। ৫৪।
ততো রামঃ প্রবৃধ্যাৎ দৃষ্ট্যা পাদং ক্লতব্রণম্।
কেন ভব্রে ! কৃতং চৈভদ্বিপ্রিয়ং মে সুরাজ্মনা।৫৫।
ইত্যুক্ত্যা পুরতো পশ্বদায়সন্মাং পুনঃ তুনঃ।
অভিজ্ঞবন্তং রক্তাসং নথভুগুং চুকোপ্য। ৫৬।

তৃণমেকমুপাদার দিব্যান্তেণাভিযোজ্য তথ।

চিক্ষেপ লীনার রামো বারসোপরি তজ্জ্বন্য। ৫৭

অভ্যন্তবদ্বারশত ভীতো লোকনে ক্রমৎপুনঃ।

ইস্তব্রুদাদিভিক্ষাপি ন শক্যো রক্ষিতৃং তদা। ৫৮
রামস্য পাদরোরগ্রেহপতন্তীত্যা দ্যানিখেঃ।
শরণাগতমালোক্য রামন্তমিদমব্রবীথ। ৫৯।

অযোঘমেতদক্তথ যে দত্তৈ কাক্ষমিতো ব্রজ।

সবাং দত্ত্বা ততঃ কাক এবং পৌরুষবানপি। ৬০।

উপেক্ষতে কিমর্থং মামিদানীং সোহপি রাঘবঃ।

হনুমানপি তামাহ ক্রম্ভ সীতান্নভাষিত্য। ৬১।

দেবি! তাং যদি জানাতি হিতামত্র রঘুত্রমঃ।

করিষাতি ক্ষণাদ্ব্যা লক্ষাং রাক্ষসমন্তিতাম্। ৬২॥

আনন্তর কমলাক্ষী জানকী কেলপাল হইতে চ্ডামণি
মোচন করিয়া মাকডিকে প্রদান করত কহিলেন—হে কপীন্তা!
ব্রীরাম ও লক্ষ্মণ এই শিরোরত্ব দর্শনে ডোমাকে বিখাস
করিবেন। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩

৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২।
হে পুরত। বিখাসোৎপাদন জন্য তোমাকে অন্য কোন বিষয়
কহিতেছি প্রবণ কর—"একদা চিত্রকূট পর্বতে অবন্থিতি
সময়ে রঘুমন্দন মদীয় অংক মন্তক সংস্থাপন পূর্বক নিদ্রা
যাইতে ছিলেন, ইভি মধ্যে ইক্র পুত্র বায়স রূপ ধারণ পূর্বক
নথ তুগু ধারা আমার পাদাক্ষ্টে আঘাত করিয়া রক্ত্রণাত
করিয়াছিল। অনন্তর রঘুপতি আমার ব্রণ-সংযুক্ত পাদ সন্দ্রন্দন করিয়া কহিয়া ছিলেন, হে ভক্তে । কোন্ হ্রান্থা আমার
এই বিপ্রিয় কার্যা করিল। ইভাবসরে রক্তাক্ত বায়সকে সমুথে
দর্শন করিয়া কেলিগাবিষ্ট হইলেন। এবং দিবা তৃণান্ত

সংখ্যেক্তন করিয়া তাছার উপরে পরিভাগা করিলেন। বাষ্দ্র রাম বাণ দর্শনে ভীত হইরা ইন্দ্র লোক গমন করিলেও ইন্দ্র ব্রহ্মাপ্রভৃতি দেবগণ ভাহাকে রক্ষা করিতে সমর্থ ছইলেন না পরে অনন্য উপার হইরা কাক করুণা সিন্ধু রামের পাদাওে পতিত হইল, শ্রীরাম বাষ্দ্রকে শরণাগত অবলোকন করিয়া কহিলেন—আমার এই অন্ত্র অমোঘ, অতএব তুমি একটী চক্ষুপ্রদান করিয়া প্রস্থান কর, অনন্তর কাক, দক্ষিণ চক্ষু বিহীন হইরা গমন করিল' ছে মহাসন্ত্র! একণে রঘুপতি আমাকে কি কারণে উপোকা করিতেছেন?। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৪০। ৪০। ৪০। ৪০। ৪০।

হত্মান সীতা ভাষিত বাক্য প্রবণ করিরা ভাঁছাকে কহিল, ১৯ দেবি! আপেনি এখানে অবস্থিতি করিভেছেন যদি রঘ্তন জানিতে পারেন ভাষা হুইদে রাক্ষম মণ্ডিডা লক্ষা পুরী ক্ষত জানকী প্রাহতং বৎস! কথং ত্বং যোৎস্যাসংস্থ বৈঃ?
অতিস্ক্রবপুঃ সর্বের বানরাশ্চ ভবাদৃশাঃ ॥ ৬৩ ॥
শুজা তদ্বচনং দেবৈর পূর্বেরপমদর্শরং !
মেরুমন্দরসঙ্কাশং রক্ষোগণবিতীষণম্ ॥ ৬৪ ॥
দৃষ্ট্বা সীতা হন্দুমন্তং মহাপর্বতিসন্ধিভম্ ।
হর্ষেণ মহতাবিফা প্রাহ তং কপিকুঞ্জরম্ ॥ ৬৫ ॥
সমর্বেহিদ মহাদত্ত্ব ! দ্রুমন্তি ত্বাং মহাবলম্ ।
রাক্ষ্যান্তে শুভঃ পন্থা গচ্ছ রামান্তিকং দ্রুতম্ ।
বুভুক্ষিতঃ কপিঃ প্রাহ দর্শনাৎপারণং মম ।
ভবিষাতি কলৈঃ সর্বৈন্তব দৃষ্টো শ্হিতৈর্হি মে ॥৬৭
তথেত্যক্তঃ স জানক্যা ভক্ষরিত্বা ফলং কপিঃ ।
ততঃ প্রস্থাপিতোহগচ্ছজ্জানকীং প্রনিপত্য সঃ ।
কিঞ্চিদ্দূরম্থো গড়া স্বাত্মনেবানুচিন্ত্রহ্ ॥ ৬৮ ॥

কার্য্যার্থমাগতো দৃতঃ স্বামিকার্য্যাবিরোধতঃ।

অন্যৎকিঞ্চিদসম্পাদ্য গচ্ছত্যধম এব সং। ৬৯।

অতোহহং কিঞ্চিদন্যক কৃত্বা দৃষ্ট্বাথ রাবণম।

সম্ভাষ্য চ ততো রামদর্শনার্থং ব্রজাম্যহম্। ৭০।

ইতি নিশ্চিত্য মনসা রক্ষণগুল্মহাবলং।

উৎপাট্যাশোকবনিকাং নির্কামকরোৎ ক্ষণাৎ ৭

সীতাশ্রনগন্তাক্ত্বা বনং স্থুন্যং চকার সং।

উৎপাট্যকং বিপিনং দৃষ্ট্বা রাক্ষণগোষিতঃ॥৭২॥

অপুচ্ছন্ জানকীং কোইসে বানরাক্তিক্লটেঃ॥

জানক্যুবাচ।

ভবতা এব জানতি মারাং রাক্ষসনির্মিতাম । নাহমেনং বিজানামি দুংখশোকসমাকুলা। ৭৪

বাল মধ্যে ভক্ষপাৎ করিবেন: তচ্ছুবণে জানকী কছিলেন হে বংস! বানরগাণ তোমার ন্যার অতি স্ক্রম কায়, অতএব তুমি অসুরদিগের সহিত কি রূপে যুদ্ধ করিবে? ছত্মান সীতা দেবীর বাক্য শ্রবণ করিয়া রক্ষগণ ভয়দশী মেক্রমন্দর সদৃশ পূর্বে রূপ প্রদর্শন করিল, সীভা হত্মানের মহাপর্বত সয়িভ শরীর সন্দর্শনে অভ্যন্ত হর্বাবিষ্টা হইয়া কপি-কুল্লরকে কহিলেন—হে মহাসক্র! ভোমাকে মহাবল দেবিয়া রুঝিলাম তুমি যুদ্ধ করিতে সমর্থ হইবে। এক্ষণে তুমি সত্তব রাম সমীপে গামন কর, পথি মধ্যে ভোমার মঙ্গল হইবে। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ভলমন্তর অনিল তলয় জ্ঞানকীকে কছিল আপনার দর্শন লাভ করিয়াছি বটে, কিন্তু আমি উপবাসী প্রযুক্ত শ্রান্ত হইয়াছি, এক্ষণে পারণ করিব। হে দেবি! আপনার সমুথবন্তী সমন্ত ফল আমার পারণোপযোগী হইবে। পরে লীতা ঐ ফল ভক্ষণে আদেশ করিলে হম্মান্ নামা বিধ ফল ভক্ষণ করিয়া সীভাকে প্রণাম করেল প্রেয়ান করিল, পরে

কিয়্দ্র গমন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিল—যে দৃত স্থামি কার্যার্থ সমাগত হইরা ঐ কার্যা অবিরোধে সম্পাদন পূর্বক যদি অন্য কোন কার্যা না করিয়া গমন করে, ভবে ঐ দৃত অধম বলিয়া গানা ছইরা থাকে। অভএব অন্য এক অন্তুত কার্যা সম্পাদনানন্তর রাবণকে দর্শন ও সভাযণ করিয়াই জীরাম দর্শনে গমন করিব। মহাবল পরাক্রম মারুতি মনে মনে এইরপ নিশ্চয় করিয়া রুক্ষ সকল উৎপাইন করত ক্ষণ কাল মধ্যে সীতার নিকট্ছ বন ভিন্ন সমস্ত বন রক্ষ শূন্য করিল। ঐ সময় রাক্ষ্যীগণ হন্তুমানকে দেখিয়া কহিল, হে জানকি! বানরের ন্যায় অন্তুতরূপ কে এই আশোক-বন উৎপাইন করিতেছে গেণ্ডা ৬৮। ৬৮। ৬৯। বিত্র বিহান বিহান বিহান বি

জানকী কহিলেন, হে রাক্ষসীগণ! রাক্ষসের মায়া প্রভাব ভোমরাই জানিতে পার—আমি শোক ছুঃখ পরিতপ্তঃ হটঃ ইত্যুক্তান্ত্রিতং গত্বা রাক্ষল্যো ভরপীজ্তা:।

হল্মতা কৃতং সর্বাং রাবণার ন্যবেদয়ন্। ৭৫।

দেব ! কশ্চিমহাসন্ত্রো বানরাকৃতিদেহভূথ।

সীতরা সহ সন্তাষ্য হ্যুশোকবনিকাজ্জ্রণাথ।
উৎপাট্য চৈত্যপ্রাসাদং বভঞ্জামিতবিক্রমঃ।। ৭৬॥
প্রাসাদরক্ষিণ সর্বান্ হয়া তত্রৈব ভস্থিবান্।
তচ্ছুত্বা ভূর্ণমুখ্যার বনভঙ্কং মহাপ্রিয়ম্॥ ৭৭॥
কিস্করান্ প্রেষয়ামাস নিযুতং রাক্ষসাধিপঃ।
নির্ভিয়চিত্যপ্রাসাদপ্রথমান্তরসংস্থিতঃ॥ ৭৮॥
হন্মান্ পর্বাতাকারো লোহস্তন্তক্রতায়ুধঃ।
কিঞ্চলাঙ্গুল্লচলনো রক্তাস্যো ভীষণাকৃতি ॥ ৭৯॥
স্থাপতন্তং মহাসঞ্জবং রাক্ষসানাং দদর্শ সঃ।
চকার সিংহনাদং চ শ্রুত্বা তে মুমুহ্ভূশম॥ ৮০॥

ভাষি অতএব এই বানরকে কি প্রকার জানিব। অনন্তর ভ্রম্যাকুলা রাক্ষণীগণ রাবণ সমীপে সত্তর গমন করিয়া মাকতি কত সমস্ত কার্যাই নিবেদন করিল। হে রাক্ষণাধিণ! মহাবল পরাক্রম বানর-দেহধারী এক বীর সীভার সহিত পরস্পর সম্ভাষণ করত ক্ষণকাল মধ্যে অলোক-বন উৎপাটন করিয়া হৈত্য প্রাসাদ চূর্ণারমান করিয়াছে এবং ঐ প্রাসাদ রক্ষক রাক্ষসগণকে বিনাশ করিয়া নির্ভিগ্ন প্রাসাদের প্রথম থণ্ড মধ্যে অবস্থান করিতেছে। অনন্তর ভূক্ত প্রভাপা-বিত্রমহাবল রাক্ষ্যাধিপ দশানন অভান্ত অপ্রেয় বন-ভক্ষ বৃত্তান্ত করিল। পরে পর্বহাকার লেহি স্তম্ভ ব্রহণ আরুধ্ধারী ভ্রহানকাতি হক্তাস্য হন্তমান্ অপ্য কপ্য লাকুল সঞ্চালন করিতেছিল ইত্যবস্বে সমান্ত রাক্ষ্য দৈল্ল সমূহ দর্শন করিয়া ব্যারতর সিংহনাদ করিল, কিন্তর্যাণ ঐ ভ্রানক নিনাদ প্রবণ

হন্মন্তোমথো দৃষ্ট্বা রাক্ষণা ভীষণাকৃতিম।

নির্ম্পুর্বিবিধান্তোইথঃ সর্ব্যাক্ষণঘাতিনম। ৮১।

তত উপায় হন্মান্ মুদ্গরেণ সমস্ততঃ।

নিষ্পিপেষ ক্ষণাদেব মশকানিব মুখপঃ॥ ৮২॥

নিহতান্ কিঙ্করান্ শ্রুতা রাবণঃ ক্রোধমুন্তিতঃ।

পঞ্চেমনাপতীংস্ত্র প্রেসয়ামাস দুর্মাদান্॥ ৮৩॥

হন্মানপি তান্ সর্বান্ লোহস্তত্তেন চাহনং।

ততঃ ক্রুক্ষো মন্ত্রিস্তান্ প্রেসয়ামাস সপ্ত সঃ॥ ৮৪

আগতানপি তান্ সর্বান্ প্রবিদ্যানরেশরঃ।

ক্ষণাল্লিংশেষতো হত্বা লোহস্তত্তেন মাকৃতিঃ। ৮৫॥

পূর্বেস্থানমুপাপ্রিত্য প্রতীক্ষন্ রাক্ষপান্ স্থিতঃ।

ততো জগাম বলবান্ কুমারোহকঃ প্রতাপবান্॥৮৬

করিয়া মূচ্ছ। প্রাপ্ত ছইল। অনস্তর চৈ চন্য প্রাপ্ত কিম্বরগা গ্রহ্মস ধ্রংসকারী ভয়ানকাক্ততি মাঞ্তিকে দেখিয়া নানা প্রকার অন্ত্র শাস্ত্র বারা প্রহার করিতে লাগিল। পরে কপিবর উথিত ছইয়া যেমন যুথপ মশককে নিম্পেষণ করে সেই প্রকার মারুতি भना बाता ब्राक्रमभागरक निष्ण्यसम्बद्धाः । १०। १८। १४: 1981 49 । 96 192 160 1 62 162 । श्रुद्ध मर्भानन কিহ্নর গণের নিধন বার্তা এবণে কোধ মূচ্ছিত হইয়া মন্তভাপর পঞ্দেনাপতি প্রেণ ক্রিল, ছরুমান্ লেহিগদা দারা এ (मनाপ्रिकांगरक यम मन्दन (श्रवन कदिन । अनस्रद **रका**धाविस् ছইয়া রাবণ সাত জন মজ্রিভনয়কে প্রেরণ করিল বানরেশ্বর পূর্বের ন্যায় ভাহাদিগকে আসিতে অবলোকন করিয়া লে ছ দও হারা ক্ষণকাল মধ্যে ভাহাদিগকে বিনাশ পূর্বক রাক্ষস বৃন্দ নিরীক্ষণ করত পূর্বস্থানে উপবেশন করিল । অনস্তর সহাবল পরাক্রম রাবণ্টনর অককুমারকে সমাগত দেখিয়া মাক্তি আকাশ পথে উল্লক্ষন করত ঐ রাক্ষ্যের मलुटकार्थात्र मुकात बादा जाकृत कतिन, शद्य के मुकावार्थाक

ভমুৎপপাত হন্তমান্ দৃকীকাশে সমুদ্গরঃ। গগনাস্থ্রিতো মূদ্ধি মুদ্দগরেণ ব্যতাড়য়ৎ ॥ ৮৭ । হত্বা তমক্ষং নিংখোষং বলং সর্বাৎ চকার সঃ ॥৮৮॥ ততঃ শ্রুত্বার্স্য বধং রাক্ষ**সপুঙ্গ**বং। ক্রোধেন মহতাবিষ্ট ইব্রুছেতার্মব্রবীৎ । ৮৯॥ পুত্র ! গচ্ছামাহং তত্র ষত্রান্তে পুত্রহা রিপুঃ। হত্বা তমথবা বদ্ধা আন্ত্রিষ্যামি তেইন্তিকম্ ॥ ৯০॥ ইন্দ্রজিৎপিতরং প্রাহ ত্যন্ত শোকং মহামতে।। ময়ি স্থিতে কিমর্থং ত্বং ভাষদে ছুঃখিতং বচঃ ?। বদ্ধানেষ্যে ক্রভং তাত। বানরং ব্রহ্মপাশতঃ। ইত্যুক্তা রথমারুহা রা**ক্ষরৈরছভিত্র ডঃ।** ১২। জগাম বায়ুপুজ্ব্য সমীপং বীরবিক্রমঃ। ততোহতিগর্জিতং শ্রুত্বা স্তম্ভমুদ্যম্য বীর্যাবান্।৯৩ উৎপপাত নভোদেশং গরুক্মানিব সাক্লতিঃ। ততে। खमखः नक्ति इस्मतः भिलीमूर्यः। २८। বিদ্ধা তদ্য শিরোভাগং ইযুভিশ্চাইভি: পুন:। হৃদয়ং পাদ্ৰুগলং বড়্ভিরেকেন বালধিম্।৯৫। ভেদয়িত্বা ততো ঘোরং সিংহ্নাদ্মথাকরে। उट्टार्श्वर्या**क्यू**माश्च**खम्**नामा वीर्यानाम् । २७ क्यान मात्रिंश मार्थः त्रथः ठां हूर्न त्र क्नार। ততোইন্যং রথমাদায় মেঘনাদো মহাবলঃ। ১৭ শীত্রং ব্রহ্মান্ত্রমাদায় বন্ধা বানরপুঙ্গবম্। নিনার নিকটং রাজ্ঞো রাবণস্য মহাবলঃ। ৯৮ যুদ্ধ নাম সভতং জপন্তি যে-২জ্ঞানকর্মাকৃতবন্ধানং ক্ষণাৎ। সদ্য এব পরিষ্চ্য তৎপদং যান্তি কোটিরবিভাস্থরং শিবম্।৯৯।

মূচ্ছ্রি ভ হইয়া অক্ষকুমার কণকাল মধ্যে ধরণীতলে পতিত হইল, মহাবল নাক্তি অক্ষ্কুমার ও সমস্ত রাক্ষ্য সৈনাগাণকে বিনাশ করিলে দশানন কুমারের নিধন বার্ত্তা শ্রবণে অভিশয় ्रकाशिविष्ठे ३इ.स. इस्डाबिश्टक किश्म-(१ शूख! ^१ व्हान প্রাণাধিক কুমারের নিধনকারি মহারিপ্র অবহিত আছে, শানি ঐ স্থানে গামন করত ঐ শক্তকে নিধন করিয়া অথবা রজ্জু দ্বারা বন্ধন করিয়া ভোমার সমূবে আন্যন করিব। ইন্দ্রজিৎ কহিল—হে মহামতে! লোক পরিত্যাগ করুন, আমি ক্রীবিত থাকিতে কি নিমিত্ত হঃখিত হইতেছেন ?—হে ভাত ! ঐ বানরকে ব্রহ্মপাশ দারা বন্ধন করিয়া সত্ত্রই আপনার मत्रीत्भ व्यानम्ब कतिव। महावन हेल्ला मनाननत्क धहेन्नभ ক্ষিয়া বহুত্র রাক্ষ্যগণের সহিত র্থারোহণ করত মাক্তির

मुकाब भारत शृक्षक शिक्तदोख शक्राहर नाम उद्गाप ভ্ৰমণ করিতে লাগিল ঐ সময় ইন্দ্ৰজিং শিলী মুথ পাশ দার रूपानिक वन्नन कवित्रा अके वान वाता मलक, इत्र वान बाबा वकः इन, এक वान बाबा शानयूगन विक कतिया অতি খোরতর সিংহ্নাদ করিল। পরে হতুমান্ সহর্ষে মুকাং ঘারা আর ও সার্রথিকে চুর্ণারমান করিয়া ক্ষণকাল মধ্যে বন্ধ मन्दन (अद्भाग कदिन। अनस्त महावीया स्मानाम द्रशास्त्र আরোহণ করিয়া ব্রহ্মান্ত হারা মাকভিকে বন্ধন পূর্বকে রাক্ষ্যা-क्षिण मुनानरमञ्ज मभीरा शमन कतिम। (व विदारमञ्जनाम নিরস্তর স্বরণ করিলে লোকে অজ্ঞানত্বত কর্ম-পাশ হইতে বিমুক্ত ন্মীপে গমন করিল।৮৩।৮৪ ৮৫ ৮৬/৮৭/৮৮/৮৯ ৯০।৯১/৯২। ইইরা 🗳 পরমান্তা 🕮রামের পাদগদ্ম লাভ করিরা ধাকে, মহাবল মাক্তি ইল্লেঞ্জিতের গ্রহ্জন শব্দ প্রবণ করিছা মাক্তি সেই , জীরামের পাদপ্য সর্বদা ছংপায়ে সংস্থাপন

তবৈয়ৰ রামস্য পদাস্কং সদা হৃৎপদ্মমধ্যে স্থ্যিধায় মাক্তিঃ।

করিয়া **সর্কাণা সমস্ত বন্ধনে নির্মৃক্ত আছে, অতএব সামান্য** পা**শ দারা তাছাকে বন্ধন করা বিফল। ৯৩**; ৯৪। ৯৫।৯৬।৯৭। ১৯৮। ৯৯। ১০০। সদৈৰ নিৰ্ম্মুক্তসমস্তবন্ধনঃ কিন্তুস্য পাশৈরিতবৈক্ত বন্ধনৈঃ ? ॥ ১০০

ইতি শ্রীমনধ্যাত্মরামারণে উনামহেশ্বরদম্বাদে স্থানরাকাতে তৃতীরোহধ্যার:।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে স্ক্রমাকাতে তৃতীয়েশ্হগ্যায়ঃ।

চতুৰ্থো ২ ধ্যায়ঃ।

ষান্তং কপীন্তং ধৃতপাশবন্ধনং
বিলোকয়ন্তং নগরং বিভীতবং ।
অতাড়য়য়ুয়্তিতলৈ সুকোপনাঃ
পৌরাঃ সমস্তাদমুজান্ত ঈক্ষিভুম্। ১।
বক্ষান্তমেনং কণমাত্রসঙ্গমং
কৃত্বা গতং ব্রহ্মবরেণ সত্তরম্।
ভাত্বা হস্মানপি কল্পরব্জুভি
পুতি। যযৌ কার্যবিশেষগৌরবাং । ২।

মহাদেব কহিলেন।—মেঘনাদ কর্জক ব্রহ্মপাশ নিবদ গইরা মাকতি লঙ্কাপুরী দেখিতে দেখিতে ভীত জনের ন্যার গমন কবিতে লাগিল, প্রে সময় পুরবাদী রাক্ষদাণ মাকতিকে দেখিবার জন্য ইচ্ছুক ছইয়া মুক্তি হারা ভাতন কবিতে লাগিল। ব্রহ্মপাশ্বিদ্ধান্তব্ব নিব্দন ক্ষণ কাল মাকতিকে স্পর্শ করত সত্ত্বই অন্তর্হিত হইল। হুম্মান্ ব্রহ্মপাশ ক্ষতিতি হইয়াছে জানিয়াও বাবণকে দেখিবাব জন্য ৰজ্জ বদ্ধ প্রায় গ্যন করিল। ইক্রেজিৎ মাক্তিকে সভা সভান্তরন্থস্য চ রাবণস্য তং
পুরো নিধারাই বলারিজিন্তন্য।
বদ্ধো ময়া প্রকাবরেণ বানরঃ
সমাগতোইনেন ইতা মহাস্করাঃ॥ ৩॥
যদ্যক্তমন্তার্য্য ! বিচার্য্য মন্ত্রিভিরিবিধীরতামেষ ন লোকিকো ইরিঃ।
ততো বিলোকাই সরাক্ষসেশ্বরঃ
প্রাহস্তমন্ত্রে ভিত্তমঞ্জনাদ্রিভম্। ৪।

মধ্যস্থ রাবণের স্মীপে আনয়ন করিয়া কহিল, স্থে আর্যা! আমি এই হ্মুমানকে ব্রহ্মপাশ দারা বন্ধন করিয়া আনয়ন করিয়াছি—মহাস্থর রাক্ষ্মগণ এই মাক্ষতি কর্তৃক নিহত হইয়াছে, অতএব মস্ত্রিগণের সহিত বিচার করিয়া স্থে যুক্তি হয় বিধান করুন, কিন্তু এই বানয়কে সামান্য বলিলা গণ্য করিবেল না। অমন্তর রাক্ষ্মাধিপ স্মুখ্ছ প্রহন্তকে সম্মোধন করিয়া কহিল, হে প্রহন্ত ! এই বানয়কে জিজ্ঞাসা কর, কি কারণ—কোন স্থান হইতে স্মাগত হইয়াছে, এবং কি

श्रद्ध शृटेक नगरमी किमांशकः। কিমত্র কার্য্যং কুত এব বানরঃ। বনং কিমৰ্থং সকলং বিনাশিতং रुजाः किमर्थः सम ताकना वलार । १। ততঃ প্রহন্তে হযুমন্তমাদরাৎ পপ্তক্ত কেন প্রহিতোহসি ? বানর !! ভরং চ তে মাস্ত বিমোক্ষ্যেন ময়া সত্যং বদস্বাথিল্রাজসন্নিধৌ। ৬। ততোহতিহধাৎপ্রনাম্মজো রিপুং নিরীক্ষ্য লোকত্রয়কণ্টকাস্থুরম। বক্ত্রুং প্রচক্রে রঘুনাথসৎকথাং ক্রমেণ রামং মনসা স্মর্মাভঃ ॥ १॥ শুণু স্ফুটং দেবগণান্তমিত্র হে রামশ্র দুতোইহ্মশেবহৃৎস্থিতেঃ। যক্তাখিলেশন্য হৃতাধুনা ত্য়া ভার্য্য স্বনাশায় শুনেব সন্ধবিঃ॥ ৮ ॥ দ রাঘবোহভোত্য মতঞ্চপর্বতং युजीवरिमजीयनमञ्च मनिर्ध)।

অনন্তর প্রহন্ত মাকভিকে সমাদরে জিজাসা করিলু—হে বানর!
তুমি কোন্ জন কর্ত্তক প্রেরিভ হইয়াছ, নির্ভিষ ইইয়া নিথিল
বাজ্যাধিপতি দশাননের সমীপে সভ্য বাক্যে প্রকাশ কর—
ভোমাকে বন্ধন ইইতে মোচন করিব। ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬।

অনন্তর হুনুমান জি ভূবনের কণ্টক শ্বরণ বাবণকে দর্শন করিয়া বারখার গ্রীরামকে মনে মনে শ্বরণ করত জীরামের সং-কথা কহিতে আরম্ভ করিল—ছে দেবামিত্র! যে জ্ঞাদীখর জীরা-মের ভাগ্যা জ্লাজ্জননী সীতা কুরুর কর্জক যজীয় হবি প্রায় ভোমা কর্ত্ব আ্যাকিনাশার্থ অপস্তা ছইরাছেন, আমি সেই শ্রীরাম

কুজেকবাণেন নিহত্য বালিণং স্থুগ্রীব্যেবাধিপতিং চকার উম। ম। স বানরাণামধিপো মহাবলী मश्विकानव्युथ्ट विजिः। রামেণ সার্কং সহ লক্ষণেন ভো প্রবর্ষণে ইমর্বাইবভিন্ন ॥ ১০॥ সংখাদিতান্তেন মহাহরীশ্বরা ধরাম্বতাং মার্গরিতুং দিশো দশ। তত্তাহমেকঃ প্রনাত্মদ্রঃ কপিঃ সীতাং বিচিম্বন শনকৈঃ সমাগতঃ। ১১। দৃষ্ট। ময়া পত্মপলাশলোচনা শীতা কপিড়াদ্বিপিনং বিনাশিতম। দৃষ্টা ততোহহং রভদা সমাগতান মাং হন্তকামান্ প্তচাপদায়কান্ ॥ ১২ ॥ ময়া হতান্তে পরিরক্ষিত্ং বপুঃ थिएता हि (मरहार्श्यमामहिनाद थएका !।

প্রেরত দৃত। ঐ রঘ্বর পর্বভোপরি আগমন করিয়া স্থাটবের
সহিত আনল সমক্ষে মিত্রতা করত এক মাক্র বাণ দারা বাণিকে
নিধন করিয়া ঐ স্থাটীবকে রাজ্যাধিপতি করিয়াছেন। বানরগণের অধিপতি মহাবল পরাক্রম স্থাটীব মহাবল সম্পার কোটি
বানর স্থাও শ্রীরাম লক্ষ্মণের সহিত অবস্থিত হইয়া ধরাআছা
দীতার অন্বেষণার্থ মহা প্রতাপশালী কপিগণকে নানা দিকে
প্রেরণ করিয়াছেন, তরাধ্যে আমি প্রন তনর এক বানর
দীতার অন্বেষণার্থ এই স্থানে স্মাগত হইয়াছি । ৭। ৮।
মাত্রা ২০। ১১।

অনস্তর আমি পালপলাশলোচনা জনক তৃহিতা জানকীকে
নিরীক্ষণ করিয়া বনচর বানবের স্থভাব বশত বন সমূহ নফ
করিয়াছি, অসমরগণ ঐ বিনাশিত বন সমূহ দর্শন করিয়া

ব্ৰদ্ধান্তপাশেন নিবধ্য মাং ডভঃ
সমাগমন্ত্রেঘনিনাদনামকঃ ॥ ১৩ ॥
স্পৃতৈ ব মাং ব্রহ্মবরপ্রাক্তাবতন্তাক্ত্রা গভং সর্ক্রমবৈদ্যি রাবণ ! ।
তথাপ্যহং বন্ধ ইবাগতো হি তং
প্রবক্ত্রেমাং করুণারসার্দ্রমীঃ ॥ ১৪ ॥
বিচার্য্য লোকস্তা বিবেকতে। গতিং
ন রাক্ষ্যীং বুদ্ধিমুপৈছি রাবণ ! ।
দৈবীং গতিং সংস্তিমোক্ষহেত্কীং
সমাশ্রয়াতন্তেহিতায় দেহিনঃ । ১৫ ।
তং ব্রাহ্মণো হা ত্রমবংশসন্তবঃ ।
পৌলন্ত্যপুজোইদি কুবেরবান্ধ্রঃ ।

দেহাত্মহুদ্ধাপি চ পশ্য রাক্ষণে।
নান্তাত্মহুদ্ধা কিয়ু রাক্ষণে। ন হি ॥ ১৬ ॥
শরীরবৃদ্ধীন্ত্রিরহুংখনন্ততিন ডেন চ ডং তব নির্ফিকারত:।
অজ্ঞানহেতোশ্চ তথৈব সন্ততে
রসন্ত্রমন্তা: ত্বপতো হি দৃত্যবং ॥ ১৭ ॥
ইদং তু সত্যং তব নান্তি বিক্রিয়া
বিকারহেতুর্ন চ তেইদ্বরত্বত:।
নথা নতঃ সর্ফাতং ন লিপাতে
তথা তবান দেহগতোহপি স্ক্রাকঃ।
দেহেন্দ্রিরপ্রাণশরীরসঙ্গতত্বাত্মতিবৃদ্ধাথিলবদ্ধভাগ্তবেং ॥ ১৮ ॥

धनूर्व्याग शाहण भूर्वक आमाटक विनाम कतिवाह खना বিহ্নতের নাগে সত্তর সমাগত হইলে আমি স্কীয় শরীর সংবক্ষণার্থ ভাছাদিগকে শমন ভবনে প্রেরণ করিয়াছি, কারণ সমস্ত জীবেরই দেহ অতিশর প্রিয়তম। পরে মেখনাদ আমাকে ব্রহ্মপাশ দারা বন্ধন করিয়া এক্তানে আনয়ন করিয়াছে। চেদশানন। ঐ বন্ধপাশ বন্ধ দত্ত বরাভিভূত হেত আমাকে স্পর্শ করিয়াই অন্তর্হিত হইল, ভাছা क्यानिवां क्यों वि जांगि कि कि कि क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्या क्यों क्या क्यों क চিত্ত হইয়া পাশবন্ধ প্ৰায় তোমার নিকট সমাগত হইয়াছি, হে मश्त्रम! जूमि विटवक वृक्षि बादा श्रद्रशार्थ विज्ञात कद्रज অনর্থহেতু রাক্ষ্য বৃদ্ধি পরিস্ত্যাগ কবিয়া জীবের মৃক্তির হেতুভুভা ेन्दी गिं ममांबार कर- (१ मिंगमन ! एन्ड्रे बाबा व्हेजन অভিন্ন বৃদ্ধি দারা রাক্ষসত্ব প্রযুক্ত এই মুক্তিমার্থে আমার অধিকার হইতে পারে না একখাও বক্তবা হইতে পারে না, যে হেড়ু তুমি উত্তম বংশ সম্ভুত-মুনিবর পুলস্তা-তনর ও कूरवद बाह्यर बाह्यर, जान्यर बाह्यराज मर्बाधार मुक्ति

বার্গে অধিকার বিদ্যমান আছে। দেহ হইতে আত্মা অতিবিক্ত এরপা তেদ বৃদ্ধি করিলেও তুমি রাক্ষম নহ কিছ ব্রাহ্মণ জনঃ শরীর বিশিষ্ট আত্মাও ব্রাহ্মণ বলিয়া অস্ট্রীরুত হইবে, অতএব তুমি নির্ব্বিকার জ্ঞানময় আত্মা শ্বরপাই নিশ্চিত হইবে অতএব তুমি নির্ব্বিকার জ্ঞানময় আত্মা শ্বরপাই নিশ্চিত হইলে শরীর দিও তেমার নহে এবং নির্দ্বিত জনের স্বপ্ন দৃষ্ট মণি রক্তাদি প্রায় অজ্ঞানের কারণীভূত পূক্র দারাদিও সংপদার্থ নহে, হে দশানন! বিকার ও বিকারের কারণ কিছুমারত তোমাতে লক্ষিত হইতেছে না এই যথার্থ কহিলাম। যে প্রকার আকাশ ক্ষিত্যাদি সমস্ত পদার্থ সঙ্গত হইরাও কোন এক পদার্থে সংগিপ্তা নহে, দেই প্রকার তুমি ক্ষম রূপে দেহগত হইরাও ঐ দেহে সংলিপ্তা নহ, দেহত আমি এই রপা অভ্যেদ জানী পৃক্ষই এই অপার তব সংসারে নিবন্ধ, হইরা থাকে জানময় অজনা অনশ্বর আনন্দক্ষরপ, এইরপা দেহ ভিন্ন জানবান্ হইলেই জীবান্থা ঐ ভ্রবক্ষ হইটে

विश्वां वटमवास्य देशास्य करता সানন্তাবোহ্হমিতি প্রমূচ্যতে। (मर्श्शभानामा भूभिवीविकांतरका ন প্ৰাণ আত্মানিল এব এব সঃ॥ ১৯॥ মনোপাহক্ষার্থিকার এব নো ন চাপি বৃদ্ধিঃ প্রকৃতের্বিকারজা। चाचा हिमानक्यदशक्विकात्रवान দেহাদিসজ্বাদ্যাতিরিক্ত ঈশ্বরঃ ॥ ২০॥ निवक्षता मुक्त छेलाधिकः मना জ্ঞাত্ত্বৈ মাত্মানমিতে। বিমুচাতে। অতো ২হমাত্যন্তিকমোক্ষসাধনং বক্ষ্যে খুণুদ্ধাবহিতো মহামতে ! ॥ ২১॥ বিষ্ণোহি ভক্তিঃ সুবিশোধনং ধিয়-স্তত্যে ভবেজজ্ঞানমতীব নিৰ্মালম। বিশুদ্ধতন্ত্ব নুভবো ভবেত্ততঃ मगाबिनिया भवगः भनः खटकः। २२॥

মৃক্তি লাভ করিরা খাকেন এবং নেছ পৃথিবীর বিকার জন্য দাব্বা ছইতে ভিন্ন বায় স্থানপ—প্রাণও আত্মা ছইতে ভিন্ন স্থানপ মনও আত্মা ছইতে ভিন্ন প্রকার করিবার করা বৃদ্ধিও আত্মা ছইতে ভিন্ন কিন্তু আত্মাকে বিকার করি আন্দাকে বিকার করিবার নিকার করিলেই জীব ভব বন্ধন ছইতে বিমৃক্ত ছইরা খাকে। অভএব, হে মহামতে! তোমাকে অভাত্ত মুক্তি লাখন উপদেশ প্রদান করিতেছি অবণ কর —প্রমাত্মা সন্ভিন বিশ্বাত ভক্তি হই নই

লতা ভলমান হরিং রমাণতিং
রামং পুরাণং প্রকৃত্যে পরং নিতৃম্
বিস্কৃত্য মের্ডিং ক্লি শক্তাবনাং
ভলম রামং শর্ণাগভন্তিরম্।
সীতাং পুরক্ত্য সপুল্রবান্ধবেশ
রামং নমক্ত্য বিমৃচ্যুদে ভরাহ ॥ ২৩
রামং পরাদ্ধানমভাবরন্ জনো
ভক্ত্যা ক্লিছং ক্থকপ্রমন্ত্রম্।
কথং পরং তীরমবাপুরাজ্ঞনো
ভবাসুধেদুংগভরক্মালিনং ?॥ ২৪॥
নোচেত্রম্জানময়েন বক্লিনা
ভলস্থাভ্যানমরকিভারিবং।

ভুদ্ধি সংশোধন হয়। পরে অত্যন্ত নির্মাস জ্ঞান সমুৎপন্ন হর জ্ঞানতার বিশুল্প তত্ত্বাহ্মতব হয়, পরে সম্যক তত্ত্ব জ্ঞান লাভ করিয়া জীবাত্মা পরমন্ত্রন্ধ পদে সংলীম হয়—কে দশানন! আদ্য মুর্থতা ও শক্ত ভাব পরিভাগা করিয়া প্রবাভ্যম রমাপতি শরণাগত-প্রিয় জীরামকে ভজনা কর এবং পুদ্র বান্ধবগণের সহিত মিলিত হইয়া জানকীর সহিত শীরামকে মমস্মার করিয়া সমস্ত ভীতি হইতে মুক্তি লাভ কর, হে রাক্ষসাধিপ! যে জন পরমান্ধা সুথ স্থরূপ জীরামকে স্থংপদ্ম ভাবনা করেনা—ঐ হ্বাত্মা জড় মতি—কি প্রকারে হঃও স্থরূপ ভ্রমানা বিশিষ্ট এই ভবাত্মি সমুত্রীর্ণ ইইতে পারিবে? বদি ঐ শরণাগত-প্রিয় শীরামকে ভজনা না কর তবে জ্ঞান স্থরূপ জারি জার। দহামান ভীবাত্মা-সহায় হীম শক্ত প্রার

নরস্তধাহধঃ অক্তেশ্চ পাতকৈবিযোক্ষণকা ন চ তে ভবিষ্যতি ॥ ২৫ ॥
শ্রুষা মৃতাস্থাদসমানভাবিতং
তদ্বায়ুস্নের্দেশকক্ষরোহস্পরঃ ।
অম্ব্যমাণোহতিক্ষা কপীশ্বরং
ক্রগাদ রক্তান্তবিলোচনো জ্বলন্ ॥ ২৬ ॥
কথং মমাগ্রে বিলপস্থাভীতবং ?
প্রবহ্মানামধমোহসি ছুইধীঃ ।
ক এই রামঃ কতমো বনেচরো ?
নিইন্মি সুগ্রীব্যুতং নরাধ্মম্ । ২৭ ।
আং চাদ্য হতা জনকাত্যুজ্ঞাং ততে।
নিইন্মি রামং সহলক্ষ্যণং ততঃ ।
সুগ্রীব্যুতং ব্যানর ! ।

শ্রুত্ব দশ্জীববচ: স মারুতিবিরুদ্ধকোপেন দহলিবাস্থরম্। ২৮॥
ন মে সমা রাবণকোটয়োহধমা
রামস্ত দাসোহমপারবিক্রমঃ।
শ্রুত্বাতিকোপেন হস্মতো বচো
দশাননো রাক্ষসমেকমন্ত্রবীৎ॥ ২০॥
পাখে স্থিতঃ মারয় থগুশঃ কপিং
পশ্যন্ত সর্কেইসুর্মিত্রবান্ধবাঃ।
নিবারয়ামাস ততো বিতীষণো
মহাসুরং সায়ুধমুদ্যতং বধে। ৩০।
রাজন বধাহোঁ ন ভবেৎকথঞ্চন!
শ্রেতাপযুক্তিঃ পররাজবানরঃ।
হতেহিন্মিন বানরে দূতে বার্ত্তাং কো বা নিবেদয়েৎ

পাতক হইতে বিমুক্তি শক্ষাও হইতে পারিবে না । ১২ ! ১৩ ! । ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ২১ | ২২ | ২৩ | । ২৪ | ২৫ |

দেবতা বিরোধী ছ্রাক্সা দশানন মাক্সতির এই অমৃত কপণ ছিতকর বাক্য প্রবণ করত জোধে জলদ্য্রি প্রায় হইয়া আরক্সি নয়নে মাক্সতিকে কহিল—রে ছফ্ট বুদ্ধে : তুমি বানরাধম হইয়া আমার নিকট নির্ভ্তরে প্রলাপ করিতেচ, সেই রাম কে? বনচারী—তুমিই বা কে? আদাই ভোমাকে যম সদনে প্রেরণ করিয়া জনক-তনয়া সীতাকে বিনাশ করিব, পরে রাম লক্ষণ ও বানরগণের সহিত কপীখর স্থ্যীবকে অচির কাল মধ্যে বিনাশ করিব : জনস্তর মাক্তি দশক্ষ

রাবণের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া কোপানলে ভাহাকে ভ্রুসাং করিতে উদ্যত হইয়া কহিল, রে রাবণ ! আমি ত্রিভ্রনেশ্ব শ্রীরামের বিক্রমশালী দাস বটে, কিন্তু ভোমার মত কোটি রাবণও আমার তুলা ছইতে পারে না। দশানন মাক্তরে বাক্য শ্রবণে অতি কোপাত্রিত হইয়া পার্ম্ম থক রাক্ষ্যকে কহিল, হে রাক্ষ্য! এই বানরকে খণ্ড থণ্ড করিয়া যম সদনে প্রেরণ কর। দেবভাগণ, মিত্রগণ ও বান্ধরগণ অবলোকন করুক। অনন্তর মাক্তির নিধনে সমুদ্যত মহাবল রাবণকে নিবারণ করত বিভীষণ কহিল—হে রাজন্! পররাজ্য হইতে সমাগত বিক্রমশালী বানর কদাচ বধার্য হয় না, এই রাম-দ্ভ বানর নিহুত হইলে যে ক্রীরামকে উদ্দেশ করিয়া বানর বধে সম্দ্যক অতো বধসমং কিঞ্ছিদনান্তিন্তর বানরৈ:।

সচিক্ষো গচ্ছতু হরির্বং দৃষ্ট্বা যাস্যতি জ্বভম্ ॥

বামঃ স্থানিসহিতন্ততো যুদ্ধং ভবেন্তব।

বিভীষণবচঃ শ্রুত্বা রাবণোহপ্যেতদন্তবীৎ ॥ ৩৩ ॥

বানরাণাং হি লাঙ্গুলে মহামানো ভবেৎকিল।

অতো বস্তাদিভিঃ পুদ্ধং বেইরিত্বা প্রযন্তবং ॥ ৩৪॥

বহ্নিনা যোজরিত্বিনং ভামরিত্বা পুরেহভিতঃ।

বিসর্জ্বাত পশ্যন্ত সর্কে বানর্যুথপাঃ ॥ ৩৫ ॥

তথেতি শণপট্টেশ্চ বইন্তর্বন্যরনেকশঃ।

তৈলাক্তৈকেইয়ামান্ত্র্লাঙ্ক্লং মারুতেদ্ চুম্॥ ৩৬॥

পুদ্ধাথে কিঞ্চিদনলং দীপরিত্বাথ রাক্ষনাঃ।
রক্ত্ত্ভিঃ স্থদূতং বদ্ধা ধৃত্বা তং বলিনোইস্থরাঃ॥৩৭॥
দমস্তাদ্ভাময়ামাস্থান্টারোইয়মিতি বাদিনঃ।
তূর্বঘোষৈর্ঘায়স্তত্তাড়য়স্তো মুছ্মু ছঃ॥ ৩৮॥
হন্মতাপি তৎসর্বং সোঢ়ং কিঞ্চিচিকীর্মা।
গত্বা তু পশ্চিমদ্বারসমীপং তত্র মারুতিঃ॥ ৩৯॥
স্থান্ধা বভুব বস্ত্বোভাগ নিংস্তঃ পুনরপ্যসৌ।
বভুব পর্বতাকারস্তত উৎপ্লুত্য গোপুরম্॥ ৪০॥
তত্ত্বিকং স্তম্ভমাদার হত্বা তান্ রক্ষিনঃ ক্ষণাৎ।
বিচার্য্য কার্য্যশেষং সঃ প্রাদাদাত্রাদ্ গৃহাদ গৃহম্॥
উৎপ্লুত্যে দক্ষীগুপুচ্ছেন মহন্তা কপিঃ।
দদহে লক্ষামথিলাং সাউপ্রাদাদতোরণাম্॥ ৪২॥

হইরাছ ঐ রামকে সীভার বার্তাইবা কে বিজ্ঞাপন করিবে?
অতএব বানরকে বধ অপেক্ষা কোন এক চিহ্নে চিহ্নিত করাই
কর্ত্রা, বানর এইরপ চিহ্নিত হইরা রাম সমীপে গমন করুক,;
যেরপ চিহ্ন দর্শন করিয়া শ্রীরাম স্থগীবের সহিত সত্তর
আগমন করিলে তাহার সহিত ভোমার যুদ্ধ হইবে, রাবণ
বিতীষণের বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিল—হে রাক্ষ্মণণ!
বানরেরা লাঙ্গুলে অত্যন্ত অভিমান করিয়া থাকে অতএব
মৃত্যক্তি বস্ত্র ধারা লাঙ্গুল বেন্টিত করিয়া অগ্নি প্রজালন করত
প্রমধ্যে চতুর্দ্ধিগে ঘূর্ণিত করিয়া পরিত্যাগ্য কর, বানরগণ
দর্শন করিবে ।২৬।২৭।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।৩৩।

মহাবল অসুরগণ তাহাই কর্ত্তব্য বিবেচনা করিয়া মূতাক্ত শণ বস্ত্র পট্ট বস্ত্র ও অন্যান্য নানাপ্রকার বস্ত্র ছার। মাক্তির লাফুল দৃঢ়রূপে বেক্টিত করিয়া তদএভাগে কিঞ্ছিছিল প্রজ্ঞানিত করিয়া দিল। পরে রজ্জা দুর্বা

নীপে গামন কৰুক; মাক্তিকে দৃঢ় রূপে বন্ধন করিয়া "এই বানর চেরি" এই কথা কহিতে কহিতে চতুর্দিকে ভ্রমণ করাইতে লাগিল, বৃদ্ধ হটবে, রাবণ এবং নানাবিধ বাদ্যোদম করত পুনঃপুনঃ ভাড়ন করিতে তার করিছে আনই করিবার বাসনাম রাক্ষণের ছঃসহ ব্যাপারও কিঞ্চিৎ আনই করিবার বাসনাম রাক্ষণের ছঃসহ ব্যাপারও কিঞ্চিৎ কাল সহ্য করিল। পরে প্রীর পশ্চিম দ্বারে গামন করিয়া স্থা রূপ ধারণ করত রজ্জুবন্ধন হইতে নিঃস্ত হইয়া পুনকারে প্রত্যাকার করিয়া একস্তম্ভ গ্রহণ করত কণকাল মন্ত্যে রাক্ষ্যণাণকে বিবেচনা করিয়া তুর্ণ করিয়া ফেলিল। বৃদ্ধিনান মাক্তি অপার ক্রিয়া এইটি বিশেষ কপ চিন্তা করিয়া প্রাস্থানির উপারি হিয়া তদপ্রভাগে ভাগ হইতে প্রতি গৃহহ ক্রেমণ উল্লেক্ষন করত প্রজ্ঞানত মহা পরে রজ্জু দ্বারা লাজুলি দ্বারা অটালিকা ও ভোরণের সহিত সমস্ত লক্ষ্যণ্রী

হা তাত! পুত্র! নাথেতি ক্রন্দমানাঃ সমস্ততঃ।
ব্যাপ্তাঃ প্রাসাদশিখরেইপ্যার্কা দৈতাযোগিতঃ ॥
দেবতা ইব দৃশ্যন্তে পতন্ত্যঃ পাবকেইথিলাঃ।
বিভীয়ণগৃহং ত্যক্ত্যা সর্বাং গন্মীকৃতং পুরুষ্। ৪৪।
তত উৎপ্লুতা জলঘো হনুমাঝারতাত্মজঃ।
লাঙ্গুলং মজ্জরিত্বান্তঃ স্বস্থচিত্রো বভূব সং। ৪৫।
বারোঃ প্রিয়দখিত্বাক্ত দীত্রা প্রার্থিতোইনলঃ।

ন দদাহ হরে: পুচ্ছং বভূবাত্যস্তশীতল:। ৪৬।
যন্ত্রামনং স্মরণধূতসমন্তপাপাভাপত্রানলমপীহ তরস্তি সন্তঃ।
তক্তৈব কিং রঘুবরস্তা বিশিষ্টদূতঃ
সন্তপ্যতে কথমসৌ প্রাক্কতানলেন ?। ৪৭।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর দহাদে স্থান্দরাকাণ্ডে চতুর্পোইধ্যায়ঃ।

ভশ্দাৎ করিল। বহি পরিবাপ্ত হইলে সমস্ত পুরবাসী
াক্ষদগণ হা তাত! হা পুত্র। হা নাথ। ইত্যাকার শক্
করত চতুর্দিকে রোদন করিতে লাগিল। প্রাদাদ শৃল্পোপরি সমার্ক্যা রাক্ষ্যীশণ অগ্ন মধ্যে নিপতিত হইয়া দেবতা
প্রোয় প্রতীয়মান হইতে লাগিল, বিভীষণের গৃহ বাতীত
সমস্ত ললাপুরী ভশ্মিভূতা হইল। অনস্তর হনুমান মারুতি
উল্লেখন করিয়া জল মধ্যে লাঙ্গুল নিম্ম করত স্কন্থ চিত্তাগ্রভব করিল। হনুমান্ বহির প্রিয় স্থা প্রযুক্ত বিশেষতঃ
সীতা দেবীর প্রার্থনা হেরু অনল মারুতির লাঙ্গুল দহন করে

নাই অভএব অভাপ্ত শীতল হইল। সংখার নাম অবদ করিলে সমস্ত পাপ নিশ্ব ক হইয়া তৎক্ষণাৎ ভাপরস্থান অর্থাৎ আধান্ত্রিক ভৌতিক ও টদ্যী অনল, সন্তব্দ কবিজে পারে এই রামের প্রধান দৃত মাক্তি সাধারণ বহিচ্ছারা কেন পরিভপামান ইইবে গুড্ড। ত্রা ৬৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪১। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭।

> ইতি জীমদধ্যাস্থাবামাস্ত্রেও উদাদাই গ্রস্থানে স্কুল রাকাণ্ডে চতুর্বেহিধায়িঃ।

প্ৰকমোইধ্যায়ঃ।

ততঃ সীতাং নমস্কৃত্য হসুমানব্রবীদ্বনঃ।
আজ্ঞাপয়তু মাং দেবি ! ভবতী রামসিরিধিম্ ।>
গচ্চামি রামস্তাং দুষ্টুমাগমিষ্যতি সামুদ্ধঃ।
ইত্যক্ত্য ব্রিঃ পরিক্রম্য ক্লানকীং মারুতাত্মজঃ ।২।
প্রণম্য প্রস্থিতে। গন্তং ইদং বচনমব্রবীৎ।
দেবি ! গচ্চামি ভদ্রং তে ভূগং দ্রক্ষাসিরাঘবম্॥৩
লক্ষ্যণং চ সমুগ্রীবং বামরাযুতকোটিভিঃ।
ততঃ প্রাহ হন্মন্থং জানকী দুঃথকর্শিতা॥ ৪॥
ডাং দৃষ্ট্য বিক্ষ্তং ছঃখ্যিদানীং তং গমিষ্যসি।
ইতঃ পরং কথং বর্ত্তে রাম্বার্ত্তিং বিনা ?॥৫

মহাদেব কহিতেছেন।—এই প্রকারে লক্ষাপুরী ভন্মীকতা ভইলে মাকতি জগনাভা জানকীকে প্রণাম করিয়া কহিল— হে দেবি! আমি জীরাম দরিধানে গমন করি আমাকে আজ্ঞাককন— প্রীরামচন্দ্র লক্ষাণের সমভিব্যাহারে আপানাকে দেখিবার জ্বনা সভ্র এই স্থানে আগমন করিবেন। এই বলিয়া প্রন ভনয় সীতাকে বারত্ত্বর প্রদক্ষিণ পূর্বক প্রণাম করিয়া কহিল—হে দেবি! আমি এস্থান হইতে গমন করি, আপানার মনের বাসনা পূর্ণ হইবে, অচির কাল মধ্যেই রাম, লক্ষ্মণ ও অযুত কোটি বানরগণের সহিত স্থাীবকে দর্শন করিবেন। অনস্তর জানকী মাক্ষতিকে কহিলেন—হে হমুমন্! আমি তোমাকে দেখিয়া অবধি সমস্ত ছঃথই বিন্মৃত হইয়াছি, এক্ষণে জীরাম সমিধানে গমন কর, কিন্ত ইহার পরে জগতের জীবন খারণ জীরামের বার্তা শ্রবণ করিয়া কি প্রকারে জীবন খারণ করিব ?! ১ | ২ | ৩ | ৪ | ৫ |

মারু ভিক্রবাচ।

যত্তেবং দৈবি ! মে ক্ষন্তমারোহক্ষণমাত্ততঃ।
রামেণ যোজয়িষ্যামি মন্যেদে যদি জানকি ! । ৬
রামঃ সাগরমাশোষ্য বদ্ধা বা শরপঞ্জরিঃ।
সীভোষাত ।

আগত্য বানরৈঃ সার্দ্ধং হড়া রাবণমাহবে।। ৭।।
মাং নরেদ্যদি রামদা কীর্ত্তি বতি শাশ্বতী।
অতো গচ্ছ কথং চাপি প্রাণান্ সন্ধাররাম্যহ্ম॥
ইতি প্রস্থাপিতো বীরঃ সীত্য়া প্রণিপত্য ভাম।
জগাম পর্বতিস্যাত্যে গন্ধং পারং মহোদধেঃ॥ ১।

মাকৃতি কহিল—ছে দেবি! যদি রাম বিরহে এগ প্রকার শোক ব্যাকুলা হয়েন, তবে আমার স্করেশপরি আরো হণ করুন ক্ষণকাল মধ্যেই আপানাকে রামের সৃহিত মিলন করাইয়া শোকানল নির্বাণ করিব।

সীতা কহিলেন—হে প্রনাক্ষজ ! যদি তোমার ক্ষব্ধারোহণ পূর্বক রাম সন্নিধানে গমন করি-তাহা হইলে রামের অন্তঃকরণ আমার প্রতি কুৎদা প্রবর্তনানা হইবে—শ্রীরাম কহিবেন যে অবলা জানকী ন্ত্রী হইয়। বানরের ক্ষকারোহণ করিয়া আমার নিকট আগমন করিয়াছে—হে ভ্রাতঃ ! দ্রী জাতির দেরিরাক্স দর্শন কর—হে বানরসত্তম ! তোমার ক্ষব্ধারোহণ করিয়া গমন না করিবার জ্বনা কারণও কহিতিছে শ্রবণ কর । যদি জ্বীরাম এই মহাসমুদ্রে সেতু বন্ধন করিয়া বানরগণের সহিত এখানে আগমন পূর্বক শ্বর সমূহ

তত্ত্ব গল্পা মহাদল্পঃ পাদাল্যাং পীজ্য়ন্ গিরিম্।

জগান বায়ুবেগেন পর্বতশ্চ মহীতলম্। ১০।

তত্যে মহীসমানজং জিংশদ্যোজনমুচ্ছিতঃ।

মাক্রতির্গগনাস্তত্যে মহাশব্দং চকার সং॥ ১১॥

তং প্রজ্বা বানরাঃ সর্বে জ্ঞাল্বা মাক্রতিমাগতম্।

হর্ষেণ মহলাবিষ্টাঃ শব্দং চক্রুমহাস্থনম্। ১২।

শব্দেনৈব বিজ্ঞানীমঃ ক্রতকার্যাঃ সমাগতঃ।

হন্দানেব পশুধং বানরা বানরর্গতম্॥ ১০॥

এবং ক্রবৎমু বীরেয়ু বানরেয়ু স মাক্রতিঃ।

অবতীর্যা গিরেমু ক্রিবানরানিদ্যন্তবীৎ। ১৪।

দৃষ্ট্বা সীতা ময়া লক্ষা ধর্ষিতা চ সকাননা।
সন্তাবিতা দশগ্রীবস্ততোহহং পুনরাগত:॥ ১৫॥
ইদানীমের গচ্ছামো রামস্থাীবসন্নিধিম।
ইত্যুক্ত্বা বানরা: সর্বের হর্ষেণালিক্ষ্য মারুতিম। ১৬।
কেচিচ্চ্ চুম্ব লাক্ষ্ নন্ত্: কেচিদ্ ৎ স্থকাঃ।
হন্মতা সমেতান্তে ক্ষর্য: প্রস্রবণং গিরিম। ১৭।
গচ্ছন্তো দদ্শুর্বরা বনং স্থাীবরক্ষিতম।
মধুসংজ্ঞং তদা প্রাক্তরক্ষদং বানর্ষভাঃ॥ ১৮॥
কুমিতাঃ ম্মো বরং বীর! দেহ্যস্ক্রভাং মহামতে।
ভক্ষরামঃ কলান্যদ্য পিবামোহমৃতবন্মধু। ১৯।
সন্তুটা রাঘবং দ্রন্তং গচ্ছামোহদার সামুজম্।২০

দারা যুদ্ধ করিয়া সবংশ দশাননকে বিনাশ করিয়া আমাকে গ্রাহণ করেন তাহা হইলে ত্রিভুবনে রামের চিরছারিনী কীর্ত্তি সংস্থাপিত ছইবে। অতএব ছে কপিবর! তুমি রামের নিক্ট গমন কর কোন রূপে ক্লেশ্বে সহিত জীবন ধারণ করিব। এই প্রকার সীতা কর্ত্ব আদিফ হইয়া হরুমান্ সীভাকে প্রনিপাত করিয়া সমুদ্রের উত্তর পারে গমন করিবার জন্য পর্বভের ভাগ্রভাগে গমন করিল, মহাবল মাক্তি ঐ পর্বতে গমন করত পাদ ছারা পর্বতকে পীড়িত কবিরা উল্লেক্ষ্য করত বায়ুবেণে সমুদ্র লঙ্ঘন করিয়া গমন করিল, ঐ সময় জিংশং যোজন সমূত্রত পর্বত মাক্তির পাদভরে নত হইয়া পৃথীতলের সমভাবাপর হইল। মারুডি আকাশপথে উত্তিত হইয়া ঘোরতর নিনাদ করিল, ঐ নিনাদ ধনি প্রবৰ্ণে মাক্তি সমাগত ছইতেছে নিশ্চর করিয়। বানরগণ অতিশয় হৃষ্ট চিত্তে প্রতিশ্বনি করিয়া কহিল—আমরা ঐ শব্দ শ্রবণ করিয়। ক্লডকার্য্য মারুভি সমাগত হইরা**ছে নিশ্চয়** করি-फिक्कि, ६६ वानवर्गन धारे वानवातार्थ इनुमानक मर्गन कत, ইত্যুবসাৰে মাৰুভি পৰ্বজোপৱিভাগে আনন্দিত চিত্তে এই

প্রকার ভাষ্যমান্ বানরগণ মধ্যে অবতীর্ণ ইইয়া ভাষ্যদিগকে কহিল—হে কপিগণ ! আমি জনকনন্দিনী সীতাকে দর্শন করিয়। আসিয়াছি এবং কাননের সহিত লক্ষাপুরী ভল্মিভূতা ইইয়াচে, পরে দর্শাননকে সম্ভাষণ করিয়া পুনর্কার প্রভাগামন করিয়াছি। এক্ষণে আমরা সকলে মিলিত ইইয়া প্রীরাম ও স্থ্যীবের সয়িধানে গমন করিব, বানরগণ এই বাকা শুবন করিয়া হর্ষ মানসে মাক্তিকে আগলিসন করিয়া লাক্সলে চুম্বন করিতে লাগিল, কেহ বা হৃতা করিতে লাগিল। পরে মাক্তির সহিত বানরগণ প্রস্তাব করিছে গমন করেত কপিরাজ স্থাীব সংরক্ষিত মধু বন দর্শন করিয়া যুবরাম অজ্পাকে কহিল—হে বীর ! আমরা অত্যন্ত ক্ষুধা পীডিত ইইয়াছি—আজ্ঞা কক্ষম আদ্য মানা প্রকাব ফল ভক্ষণ ও মধু পান করিয়া সম্বোধ চিন্তে শ্রীরাম ও লক্ষ্মণকে দেখিবার জন্য গমন করি। । ৬। ৭। ৮। ৯ 1 ১০। ১১ । ১০। ১৪। ১৫। ১৬।

व्यक्त हेवाह।

হনুমান্ কৃতকার্য্যে ছিরং পিবতৈত থে প্রাদত ।

ক্রন্ধং ফলমুলানি ত্রিডং হরিসভ্নাঃ। ২১।

ততঃ প্রবিশ্ব হরয়ঃ পা ভুমারেভিরে মধু।
রক্ষিণস্তাননাদৃত্য দধিবজেণ নোদিতান্। ২২।
পিবতস্তাজ্য়ামাস্ত্রানরান্ বানরর্যভাঃ।

ততস্তামা বিভিঃ পাদৈশ্চ্ণরিত্বা পপুর্মধু। ২৩।
বানরান্ রুরুধুং সর্বান্ নিজপ্ল শ্চাপি ভূরুইেঃ।

ততঃ সর্বে মহৌজক্ষা ধৃত্বাদধিমুথং কপি। ২৪
ব্যপোথয়ন্ ধরণ্যাং বৈদ্ধিবজ্ব স্যাচাননম্

চপোটেমু ফিভিশ্চাপি ভূশং জন্মুঃ কপীশ্বাং॥ ২৫

ততঃ কৃচ্ছাৎ সমুপ্রায় কপি পোথিত বজুকঃ।

ততো দিবমুধঃ ক্র দ্ধঃ স্থাবিদ্যা দ মাতুল:।

কগাম বক্ষিডিঃ দার্দ্ধং যত্র রাজা কপীশ্বর: ॥২৬॥
গড়া তমব্রবীদ্দেব! চিরকালাভিবক্ষিতমু।
নফং মধুবনং তেইদ্য কুমারেণ হন্মতা॥ ২৭॥
গড়া দিবমুখেনোক্তং স্থাবা ক্রফমানদঃ।
দৃষ্ণী গতো ন সন্দেহঃ দীতাং প্রনন্দনঃ॥ ২৮॥
নো চেম্মধুবনং ফেইং দমর্থ: কো ভবেম্ম।
তত্রাপি বায়ুপুত্রেণ রুতং কার্যাং ন সংশয়ঃ। ২৯॥
গ্রুতীব্রকানং ক্রফো রামস্তমন্ত্রবীং।
কিম্চাতে ড্রা রাজন্! বচঃ দীতা কথাস্বিতম্ গ়॥
স্থাবিস্ত্রবীদ্বাক্যং দেব! দৃষ্টাবনীস্থতা।
হন্মৎপ্রমুখাঃ সর্ব্রে প্রবিষ্টা মধুকাননম্। ৩১।

অনন্তর যুবরাজ অঙ্গদ কহিলেন—তে হরিসভ্নগাণ!
হনুমান্দীতা দর্শনে ক্তকার্য্য হইরা সমাগত হইরাছে এক্ষণে
দেই জন্য অন্তোপম মধুপান এবং নানা প্রকার সূপক ফল
মূল ভক্ষণ কর। অনন্তর বানরগণ বন-রক্ষক বানরগণকে অনাদর পূর্ব্বক বনমধ্যে প্রবেশ করিয়া অমৃভোপম মধুপান করিতে
আরম্ভ করিল, ঐ সময় বন-রক্ষক বানরগণ দিয়মুখের আদেশ
প্রাপ্ত হইরা মধুপায়ী বানরগণকে ভাড়ন করিতে লাগিল।
পরে ভাড়িত বানরেরা মুটি ও পদাঘাত দারা রক্ষকগণকে
চুর্ণারমান করিয়া ঐ মধুপান করিতে লাগিল। অনন্তর দধিমুখ
ও অন্যান্য রক্ষকণণ জভ বেগো গমন করিয়া চতুর্দিকে অবভিত্ত
মধুপায়ী বানরগণকে রোব পূর্বক বক্ষ ঘারা তাড়ন করিছে
লাগিল। পরে মহাবল মাক্তি প্রভৃতি বানরগণ দধিমুখকে
খারণ করিয়া ধরণীতলে ভাহার মুথ নিস্পেষণ করিল। অনন্তর

পীডিদ বক্তা দনিমুথ ক্লেণ ক্রমে ধরণী হইতে সমুখিত হইরা অতিশয় ক্রোধ পূর্বক রক্ষকগণের সহিত কলিবাজ্ঞ সূথ্রীব সন্নিধানে গমন করিয়া কছিল—হে দেব! যুবরাজ্ঞ অঙ্গদ ও মান্ধতি কর্ক্ত চিররক্ষিত মধুবন বিনাশিত হইয়াছে। দধিমুখের বাকা শ্রুবণে কিশারাজ প্রফুলান্তঃকরণেকছিল—মান্ধতি নিশ্চরই সীভাকে সন্দদর্শন করিয়া সমাগভ ইইয়াছে, নতুবা আমার মধুবন বিনাশ করিতে কোন্ জন সমর্থ হইবে গ দুতাপ্রোগণ্য বামু জনর নিশ্চরই সীভাপহারকের আনিফ্ট কার্য্য সম্পাদন করিয়াছে। ২১। ২২। ২০। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭।

শীরাম স্থাীবের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া সাহলাদচিত্তে কহিলেন—হে রাজন্! আমার প্রাণাধিকা সীতার কথা কি কহিছেছিলেন? স্থাীব কহিল—হে দেব! সীতাকে দর্শন প্র্কাক মাকতি প্রভৃতি প্রত্যাগত বানরগণ মধুবনে প্রবিট হইরা বররক্ষক বানরগণকে তাড়ন করত ফল মূল সমস্ত ভকণ

ভক্ষরতি সা সকলং তাড়রতি সা বক্ষণ:।

অক্তা দেব ! কার্যাং তে জন্টাং মধুবনং মম। ৩২॥
ন সমর্থান্তাে দেবী দৃষ্টা সীতেতি নিশ্চিত্রম্।
রক্ষিণাে বাে ভয়ং মাপ্ত গড়া ক্রত মমাজ্রাে। ৬৩।
বানরানকদমুখানানয়ধং মমাত্রিকম্।
ভক্তা স্থাবিবচনং গড়া তে বায়ুবেগতঃ । ৩৪॥
হনুমৎ প্রমুখানুচুর্গচ্ছতেশ্বরশাসনাং।
দুষ্মানতীব দৃষ্টান্তে ত্রয়ন্তি মহাবলাঃ।
তথেতায়রমাসাদ্য যযুন্তে বানরােভ্রমাঃ । ৬৬॥
হনুমন্তং পুরক্তা যুবরাজং তথাকদম্।
রামস্থাবিয়ার্থাে নিপেতুর্তি সম্বরম্।৩৭।

হন্মান্ রাঘবং প্রাহ দৃষ্টা সীতা নিরাময়া।

সাফালং প্রণিপভাগ্রে রামং পশ্চাদ্ধরীশ্বম্। ৩৮
কুশলং প্রাহ রাজেন্দ্র। জানকী ত্বাং শুচান্বিতা।
অশোকবনিকামধ্যে শিংশপামুলমান্রিতা॥ ৩৯॥
রাক্ষনীভিঃ পরিব্রতা নিরাহারা রুশা প্রতাে!।
হা রাম! রামরামেতি শোচন্তী মলিনাম্বরা। ৪০।
একবেণী ময়া দৃষ্টা শনৈরাশ্বাদিতা শুভা।
রক্ষশাখান্তরে শ্বিত্বা স্ক্রমম্বেপণ তে কথাম্।।৪১॥
ক্রমারভ্য তবাত্যর্থং দশুকাগমনং তথা।
দশ্ননেন হরণং জানক্যা রহিতে ত্রি॥ ৪২॥
স্ত্রীবেণ যথা মৈত্রী রুতা বালিনিবর্হনম্।
মার্গণাঞ্চ চ বৈদেন্তাং স্ত্রীবেণ বিদ্বর্জিতাং ॥৪৩॥
মহাবলা মহাসত্ত্বা হরয়ো জিতকাশিনং।
গতাঃ সর্ব্রত্ব সর্বের বৈ ভব্রেকোইহ্মহাগতঃ ॥ ৪৪।

করিরাছে,যেহেতু কপিগণ আপানার কার্যা সম্পাদক না করিরা
মধুনন বিনাশ করিতে কখনই সমর্থ হর না, অভএব কপিগণ
সীভাকে নিশ্চরই সম্পান করিরাছে। পরে স্থাীর রক্ষকগণকে
সংখাধন করিরা অঙ্গদপ্রভৃতি বানরগণকে আমার সঞ্জিধানে
আনায়ন করি করিবাজ স্থাীর কর্তৃক সমাদিষ্ট হইয়া রক্ষক
গণ বায়ুবেগো গল্প পুর্বাক বানরগণকে কছিল—হে বানরগণ! কপীপ্তর স্থাীবের আদেশাসুসারে রাজ্ঞ সল্লিধানে
গামন কর, স্থাীর জ্ঞারাম ও লক্ষ্মণ ভোমাদিগোর প্রতি পরিভূষ্ট হইয়াছেন ও ভোমাদিগকে দর্শন করিতে ইচ্ছুক ছইয়াছেন।পরে বানরগণ মাফতি ও অঞ্চলকে অগ্রসর করিয়া জ্রভবেগে আকাশপথে গমন পূর্বাক শ্রীরাম ও স্থাীবের সমাপে
উপন্থিত হইল।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।৩০।৩৪।৩৫।
জনস্তর মাক্তি শ্রীরাম ও স্থাীবেক সাক্টাকে প্রণাম

করিয়া কহিল—আমি নিরাময়া সীতাকে দেখিয়া আদিয়াছি ছে রাজেলা ! শোকাষিতা জানকী আপনাকে কুশল বার্তা কহিয়াছেল, ছে প্রভা! অশোক বন মধ্যে শিংশপার্কার মূলবর্তিনী রাক্ষসী পরিবৃতা, নিরাহারা, কুশা হঃ রাম! হা রাম! ইত্যাকার শব্দায়মানা, মলিন বদনা, কোন কোন রাক্ষসী কর্তৃক আখাসিতা সীতাকে দেখিয়া স্থাম রূপ ধারণ পূর্বেক বক্ষের শাধা মধ্যে ল্ল্কায়িত হুইয়া জ্যাবিধি রাম রন্তান্ত, রামের দশুকারণাে সমাগমন ও রাম বিহীন বন হুইতে দশানন কর্তৃক জানকীর হরণ রন্তান্ত, স্থাবির সহিত মিত্রতা পূর্বক রাম কর্তৃক বালীর নিধন বার্তা, সীতার অংশ্রহনার্থ প্রথীব কর্তৃক মহাবল বানরগণকে নানা বেশে প্রেরণ বার্তা প্র বানরগণ মধ্যে স্থাবিরর মন্ত্রী

অহং স্থীবদচিবো দাদোহহং রাঘবশু হি।

দৃষ্ট্য যজ্জানকী ভাগ্যাৎপ্রস্নাসঃ কলিতোহদ্য যে॥

ইত্যুদীরিতমাকর্ণ্য দীতা বিক্ষারিতেক্ষণা।

কেন বা কর্ণপীযুষং প্রাবিতং মে শুভাক্ষরম্॥৪৬॥

যদি সতাং তদা যাতু মদ্দর্শনপথং তু সঃ।

ততোহহং বানরাকারঃ স্ক্মরূপেণ জানকীম্।৪৭।

প্রবিষ্ঠাইহং দীত্রা কন্ত্রিস্ত্যাদিবছবি স্তরম্॥ ৪৮॥

ময়া দর্মং ক্রমেণের বিজ্ঞাপিতমরিন্দম্!।

পশ্চান্মরার্পিতং দেব্যৈ ভবদ্ত্যাঙ্গুলীরকম্ব্রহ্ন।

তেন মামতিবিশ্বস্তা বচনং চেদমত্ত্রী ।

যথা দৃষ্টান্মি হনুমন্! পীডামানা দিবানিশম্। ৫০
রাক্ষসীনাং তর্জ নৈস্তৎসর্কাং কথয় রাঘবে।

ময়্মেক্তং দেবি ! রামোহপি ছচ্চিন্তাপরিনিষ্টিতঃ॥

পরিশোচত্যহোরাত্রং ছদ্বার্তাং নাধিগম্য সঃ।

ইদানীমেব গড়াহং স্থিতিং রামায় তে ক্রবে॥ ৫২
র মঃ শ্রবণমাত্রেণ স্থ্রীবেণ সলক্ষ্মণঃ।

বানরানীকপৈঃ দার্ঘ্যমাগমিষাতি তেইন্তিকম্। ৫৩
রাবণং সকুলং হড়া নেষ্যতি ছাং স্থকম্পুরম্।

অভিজ্ঞাং দেহি মে দেবি! যথা মাং বিশ্বসেদ্বিভূঃ

ইত্যক্ত্রণ সা শিরোরত্বং চূড়াপাশে স্থিতং প্রিরম্।

দত্ত্বা কাকেন যদ্রত্বং চিত্রকুটগিরৌ পুরা। ৫৫।

জীবামের দাস আদি এক বানর এই সন্ধাপুরীভে সমাগত চইরাছি, বেছেত্ ভাগা বলতঃ সীতাকে দেবিরাছি এবং আদা ভাগাবশভঃ আসনকে দেবিরা আমার আগামন সফল হইরাছে, এই রূপ বাকাবসী কহিয়াছিলাম। ৩৬ । ৩৭। ৩৮। ১৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৬।

চঞ্চল নরনা আনকী মাক্ষতির এইরপ বাক্য শ্রবণ করিয়া কছিলেন —কর্ণপীযুধ শ্ররপ রাম নামাধিত এই শুভ বাক্য কে আমাকে শ্রবণ করাইল ? যদি সভাই শ্রীরামের বর্তাবহ কোন বানর সমাগত হইরা থাকে তবে আমার দৃষ্টি পথে সমাগত হইরা অবস্থিতি ককক। হে প্রস্তো! পরে ক্ষুদ্র বানররপ ধারণ করিয়া সীতার দৃষ্টিগোচর হইরা ক্ষতাঞ্জলিপ্টে তাহাকে প্রনাম করিয়া কিয়দ্রে অবস্থিত রহলাম। অনস্তর তুমি কে, কোধা হইতে সমাগত ছইয়াছ এইরপে জানকী আমাকে নানা প্রকার প্রশ্ন করিলেন। ছে অরিন্দম! পরে ক্রমে ক্রমে সমস্ত বৃতান্ত গীতাকে বিজ্ঞাপন করিয়া ঐ রাম নামান্ধিত শ্রবাসুরীয়ক প্রদান করিলাম। অনস্তর অভিশন্ধ বিশ্বাস

পূর্বাক জ্ঞানকী আমাকে কছিলেন —ছে ছমুমন্! দিবারাও রাক্ষ্পী কর্ত্বক তওঁ সিতা হইরা আমি যে প্রকারে কালাতিপাত করিতেছি ভাছা প্রীরামের নিকট সমস্ত জানাইবে। আমি কহিলাম—হে দেবি! তোমার চিস্তাপরায়ণ প্রীরামচন্দ্রও আপনার সংবাদ প্রাপ্ত না হইরা দিবা রাত্র শোক ব্যাকুল হইরা রহিয়াছেন অতএব অদ্যই আমি গমন করিয়া আপনার সমস্ত বৃত্তান্ত জ্রীরামের নিকট অবগত। করিব। রামচন্দ্র প্রবাণ মাত্রই লক্ষ্যণ স্থত্তীব ও অন্যান্য বীরগণের সহিত তং সমিধানে আগমন করিয়া সবংশ রাবণকে বিনাশ করত আপনাকে স্বতীয় পুরে লইরা যাইবেন। হে দেবি। প্রেড্ জ্রীরাম যদ্বারা এই সমস্ত বিশ্বাস করিতে পারেন এইরূপ একটি চিচ্ছ আমাকে প্রদান করন। পরে চূড়া পার্ম ভ্রুতি মনোহর শিরোরত্ব আমাকে প্রদান করিলেন—সঞ্চল নয়না জ্ঞানকী চিত্রকূট পর্বতের উপরিভাগের কাকের রন্তান্তও তদপ্যাহাজ্রপূর্ণাক্ষী কুশলং ক্রহি রাঘবম।
লক্ষণং ক্রহি মে কিঞ্চিদ্দুরুক্তং ভাষিতং পুরা ॥৫৬
তৎ ক্ষমস্বাজ্ঞভাবেন ভাষিতং কুলনন্দন!।
তারয়েশ্বাং যথা রামস্তথা কুরু রুপান্বিতঃ। ৫৭।
ইত্যুক্তা রুদতী দীতা ছংখেন মহতারতা।
ময়াপ্যাশ্বাদিতা রাম! বদতা দর্বমেব তে॥ ৫৮
ততঃ প্রস্থাপিতো রাম! ত্বদমীপমিহাগতঃ।
তদাগমনবেলায়াং অশোকবনিকাং প্রিরাম্॥৫৯॥
উৎপাট্য রাক্ষদাংস্তত্ত্ব বহুন্ হত্বাক্ষণাদহম্।
রাবণস্থ স্কুতং হত্বা রাবণেনাভিভাষ্য চ॥ ৬০॥
লক্ষামশেষতো দগ্ধা পুনরপ্যগমং ক্ষণাৎ।
শুত্বা হন্মতো বাক্যং রামোহত্যন্তপ্রক্রম্।
উপকারং ন পশ্বামি তব প্রত্যুপকারিণঃ॥ ৬২॥

বলিয়া কহিলেন—ছে মাকতে! জ্রীরামকে আমার মঙ্গল বিজ্ঞাপান করিবে এবং কুলনন্দন লক্ষ্মণকে কহিবে—আমি পূর্ব্বে
অজ্ঞানত্ব বশতঃ যে ভুর্বোকা কহিয়াছি তাহা ক্ষ্মা করেন এবং
দরামর রামচন্দ্র যে প্রকারে হউক সত্তর আমাকে এই ভুঃথার্গর
ছইতে মুক্ত করেন আমার এই নিবেদন জ্ঞানাইবে। হে
রঘুত্তম! অতি ভুঃথিতা জনকনন্দিনী আমাকে এইরপ কহিয়া
রোদন করিতে লাগিলেন। ঐ সময় আমি নানা প্রকার
বাক্য বারা সীতাকে আশ্বাস প্রদান করিয়া আপনার সনিধানে আগমন করিবার সময় রাবণের প্রিয়তম আশোক বন
উৎপাটন পূর্বক রাবণ তনয় অক্ষ্কমার ও অন্যান্য রাক্ষ্যগণকে বিনাশ করিয়া রাবণের সহিত আলাপ করনানন্তর সমস্ত
লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করিয়া ক্ষণকাল মধ্যে সমাগত গ্রহ্মাছি।
মাক্ষতির এই সমস্ত বাক্য শ্রবণে হৃষ্টিতিত হইয়া রামচন্দ্র
কহিলেন—হে মাকতে! তুমি দেবতাদিগেরও ছুঃসাধ্য সমুদ্র

इनानीः एक श्रीवक्तां मित्रवा सम्भाकतः ।
इन्नानीः एक श्रीवक्ता मान्य नाम् विकास मान्य ।
मार्च (नाम मान्य नाम्य नाम श्री विभयान मः ।
इन् मन्य प्राप्त । इन् मन्य प्राप्त । इन् मन्य प्राप्त । इन् मन्य प्राप्त । इन् मन्य प्राप्त ।
प्राप्त । इत् । इत्

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সম্বাদে স্থান্দরাকাত্তে পঞ্চমোধ্যায়ঃ।

লজ্মনাদি নানা প্রকার উপকার করিবাছ, এক্ষণে কোন বস্তু দ্বারা তোমার প্রত্যুপকার করিব? তোমাকে সর্বার প্রদান করিলাম। পরে কপিবর মারুভিকে গাঢ় আলিঙ্কন করিরা বজল নরন রঘুবর অত্যন্ত পরিভৃপ্ত হইয়া কহিলেন— হে বানবোক্তম। তুনি আমার প্রিয়তম ভক্ত হইয়াছ সেই কাবণে পরমায়া ব্রূপ আমার প্রস্তুভ আলিঙ্গন লাভ করিয়াছ। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। । ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১ ৬২। ৬৩।

অনন্তর মহাদেব কহিলেন—ধাঁহার পদাপুঞ্জ হর তুলসী, পুজ্প, চলনাদি হারা পূজা করিয়া মুণিগণ বিষ্ণুতা প্রাপ্ত হইয়া থাকেন, সেই রাম কর্ত্ক কি ক্লন্তপ্ণ্যরাশি এই বায়ু-তনয় সমালিকিত হইল। ৬৪। ৬৫। ৬৬।

> ইতি জ্ঞামদধ্যাত্মরামারতে উমামছেশ্বরসন্থাদে স্থলরাকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যারঃ।

यू क को ७ म्

প্রথমাইধারঃ

बियशामित डेवाह।

যথাবন্তাষিতং বাকাং প্রুত্বা রামো হনুমতঃ।
উবাচানস্তরং বাকাং হর্ষেণ মহতারুতঃ॥ ১॥
কার্যাং ক্লভং হনুমতা দেবৈরপি স্থাদুষ্করম্।
মনসাপি ষদন্যেন স্মর্জুং শক্যং ন ভূতলে॥ ২॥
শতযোজনবিন্তীর্ণং লক্ষ্ময়েৎকঃ পয়োনিধিম্।
লক্ষাঞ্চ রাক্ষসৈপ্ত প্রাং কো বা ধর্ষরিজুং ক্ষমঃ॥৩॥
ভূত্যকার্যাং হনুমতা কুতং সর্বমশেষতঃ।
স্থ্যীবস্থাদুশো লোকে ন ভূতো ন ভবিষ্টি॥ ৪।

অহং চ রঘুবংশশ্চ লক্ষ্মণশ্চ কপীশ্বরঃ।
জানক্যা দর্শনেনাদ্য রক্ষিতাং স্মো হন্ত্মতা॥৫॥
সর্বিথা স্কৃতং কার্যং জানক্যাঃ পরিমার্গণম্।
সমুদ্রং মনসা স্মৃত্যা সীদতীব মনো মম।।৬॥
কথং নক্রবাকীর্যং সমুদ্রং শতযোজনম্।
লক্ষ্ময়িত্বা বিপুং হন্যাং কথং দ্রক্ষ্যামি জানকীম্?॥ ৭
ক্ষেত্বা তু রামবচনং স্থাবিঃ প্রাহ রাঘবম্।
সমুদ্রং লক্ষ্ময়িব্যামো মহানক্রবাক্লম্।।৮॥
লক্ষাঞ্চ বিধমিষ্যামো হনিষ্যামোইদ্য রাবণম্।
চিস্তান্ত্রান্ধ রঘুপ্রেষ্ঠ ! চিন্তা কার্য্যবিনাশিনী॥৯॥

মহাদেব কহিলেন—গ্রীরামচন্দ্র হুনুমানের বাকা প্রবশানন্তর যার পর নাই হর্ষাবিষ্ট হুইয়া কহিলেন—দেবতারা যে কার্য্য মহা কষ্টে সম্পাদন করিতে পারেন, অদা সেই কার্য্য মাক্তি দারা স্ক্রমপান হুইয়াছে, ধরণীমগুলে অপার কেছ মনে মনেও চিন্তা করিতে সমর্থ হয় না, কোন্ বাজি এই শত গোজন পরিমিত মহাসমুদ্র উল্লেখন করিয়া লক্ষা ও রাক্ষ্য সমূহ ধংশ করিতে সমর্থ হুইত ? পাবন-ডনয় সর্ক্র বিধায়ে ভূত্যের কার্য্য সমাধা করিয়াছে—অভ্রেব ইহলোকে স্ম্প্রীব্রে নাায় ভৃত্য কাহার কখন হয় নাই এবং কথন হইবেও

না। অদ্য হর্মান্ জানকী দর্শন করিরা আমাকে, রঘ্বংশ, লক্ষাণ ও স্থানীবকে রক্ষা করিয়াছে। আপাডভঃ জানকী দর্শন কার্য্য সর্বভোভাবে সম্পন্ন হইয়াছে, কিন্তু আমার মন সমুদ্র শারণ করিরা সাভিশন্ন ভীত হইভেছে, শভ বোজন বিস্তৃত ও নজাদি সমাকীর্ণ এই সমুদ্র কিরপে উত্তীর্ণ হটরা বস্থানা-কন্যা জানকীকে বা কি প্রকামে দর্শন করিব ? কপীশ্বর স্থানীব প্রাবাম বাক্য শ্রবণ করিয়া ভাঁছাকে কছিলেন, আমি মহানজাদি পূর্ণ সমুদ্র উলক্ষন করিব, হে রঘ্নশ্রেই! আপনি চিন্তা পরিত্যাগ ককন—কারণ চিন্তা কার্যা বিনাশিনী,

এতান্ পশ্য মহাদত্ত্বান্ শ্রান্ বানরপুসবান্।

রংপ্রিয়ার্থং সমুপ্ত কোন্ প্রবেষ্ট্রাপি পাবকম্॥১০॥

সমুত্রতারে বৃদ্ধিং কুরুষ্ প্রথমং ততঃ

দুষ্ট্বী লক্ষাং দশগ্রীবো হত ইভ্যেব মন্মহে। ১১ ।

নহি পশ্যাম্যহং কঞ্চিজিয়ু লোকেয়ু রাঘব!।

গহীতধনুষো যত্তে তির্পেদিভিমুখো রগে॥ ১২॥

সর্বাথা নো জয়ো রাম! ভবিষ্যতি ন সংশায়ঃ।

নিমিত্রানি চ পশ্যামি তথাভূতানি সর্বাশঃ॥ ১৩॥

স্থ্রীব্বচনং শ্রুড়া ভক্তিবীর্যাসমন্বিতম্

অঙ্গীরুত্বাবিধীদামো হন্মস্বং পুর:ভি্তম্। ১৪।

যেন কেন প্রকারেণ লক্ষ্যামো মহার্ণবম্।

লক্ষাস্থরপং মে ক্রহি ছঃসাধ্যং দেবদানবৈঃ॥১৫॥

জ্ঞাত্বা তহ্য প্রতীকারং করিষ্যামি কপীশ্বর!।

শ্রুবা রামহ্য বচনং হন্দুমান্ বিনয়ান্থিকঃ॥ ১৯॥

উবাচ প্রাঞ্জলিদেব। যথাদৃষ্টং অনীমি তে

লক্ষা দিব্যা পুরী দেব! ত্রিকূটশিখরে স্থিতা॥ ১৭

স্বর্ণপ্রাকারসহিতা স্বর্ণান্তালকসংযুতা।

পরিথাভিঃ পরিব্রতা পুর্ণাভিনির্মলোদকৈঃ॥ ১৮॥

নানোপবনশোভাচ্যা দিব্যবাপীভিরাব্রতা।

গৃহৈর্কিচিত্রশোভাট্যেম্নিক্তজ্ঞময়ৈঃ শুইতঃ। ১৯!

পশ্চিমদ্বার্মাসান্ত গজ্বাহাং সহস্রশঃ

উত্তরে ত্বারি তিষ্ঠন্তি সাশ্ববাহাঃ সপত্রয়ঃ॥ ২০॥

তিষ্ঠন্ত্যবুদ্দং শ্রোকাঃ প্রাচ্যামপি তথেব চ।

রক্ষিণো রাক্ষমা বীরা দ্বারং দক্ষিণ্মাশ্রিতাং॥ ২১

পামি লকা বিশ্বংস করিয়া রাবগকে বিনাশ করিব—দেখুন এই সমস্ত মহাসত্ত্ব আমিত ভেজা বানর শ্রেষ্ঠ আপুলার প্রির কাল্য করিবার জন্য জলন্ত পাবক মধ্যে প্রবেশ করিছেও সমবাত আছে—ই মহামতে! প্রথমতঃ সমৃদ্র উত্তীর্ণ ছইবার জন্য উপায় দেখুন—পরে লক্ষা পরিদর্শন করিয়া দশ্রীবিক বিনাশ করিব ইহা আমরা নিশ্চর করিয়াছি ।১।২।৩।

্ছ বাঘব। স্থান মর্জ পাতাল এই জিভ্বন মধ্যে কোন

কেন্ট্র বুর্বাণ গ্রহণ করিয়া আপেনার সহিত সমরে অগ্রবর্ত্তী

চরবে এরপ নয়ন গোচর হয় না। হে রামচক্র । আমি সকল
বিশ্বেই মজল দেখিতেছি—আমাদিগের সর্বভোভাবে জ্বয়

শাল হইবে ভাহাতে সন্দেহ নাই। রামচক্র ভক্তি ও বীর্যা
পুল স্থ্রীব-বচন জ্ববন করিয়া ব্যুধ্বর্ত্তী হয়ুমান্ সমক্ষে

অসিকার পূর্বক কহিলেন—মহার্থ শোষ্য করিয়াই হউক—

বা সেতু বন্ধন করিয়াই হউক—বা দেব দানবগণ সত ছঃসাধযুগে প্রবেশ করিয়াই ১উক—বে কোন উপায়ে মহাসমুক্ত উত্তীপ ১ইব। অতএব ওক্ষণে লক্ষার স্বন্ধ গ্রন্থ বর্ণন কর—৫ কবীধর! ঐ সমস্ত অবগত ১ইয়া আমি প্রতিবিধান করিব।
১১০।১৩।১৪।১৫।১৬।

ইনুমান্ জীরাম বাক্য গ্রবণ করিয়া বদ্ধাঞ্জলি পূর্বাক বিনর
সহকাবে কছিল—হে দেব! আমি সেরুপ দেপিয়াছি ভাষাই
বণন করিব, লক্ষা সর্বা তুল্য পুরী, ত্রিকুট পর্বাভ-শিপরে
অবস্থিতা, স্বর্ণ নির্মিত প্রাচীরে পেইটিঙা, স্বর্ণাট্টালিকার
পরিপূর্ণা, নির্মাল সলিলপূর্ণা পরিপা দারা পরিবেইটিঙা, নানা
উপরন পরিশোভিতা, উত্তম দোগানমুক্ত দিবাবাপী পরির্ভা,
মণিমর শুক্ত বিশিষ্ট গৃহ সমুছের বিচিত্ত শোভার স্মুশোভিতা
হে দেব! লক্ষার পশিচম বারে সহস্র সংখ্যক হন্তী, উত্তর দ্বারে
গোটক, পূর্বারারে থক্টিদ সংখ্যক হয় হন্তী এবং দক্ষিণ দ্বারে

মধ্যকক্ষেহপাসং খ্যাতা গজাখ্রথপন্তরঃ।
রক্ষয়ন্তি সদা লক্ষাং নানাস্ত্রকুশলাঃ প্রভা । ।২২।
সংক্রমৈর্বিবিধল স্কা শতল্পীভিশ্চ সংযুতা।
ক্রবং স্থিতেইপি দেবেশ! শুণ্ মে তত্ত্র চেন্টিতম্ ॥
দশাননবলোঘদ্য চতুর্থাংশো ময়া হতঃ।
দগ্ধা লক্ষাং পুরীং স্বর্ণপ্রাদাদো ধর্ষিতো ময়া ॥২৪
শতল্পঃ সংক্রমাশ্চিব নাশিতা মে রল্পুরুম!।
দেব ! ওদর্শনাদেব লক্ষা ভ্রমীক্ষুতা ভ্রেছ ॥ ২৫ ॥
প্রস্থানং কুরু দেবেশ! গচ্ছামো লবণামুধেঃ।
ভীরং সহ মহাবীরৈর্বানরে বৈঃ সমন্ততঃ ॥ ২৬ ॥
শ্রুণ হন্ত্রমতো বাক্যমুবাচ রল্পনদনঃ।
স্থীব সৈনিকান্ স্রান্ প্রস্থানায়াভিনোদ্য় ॥ ২৭।

इनानीयित विकास सूङ्कः शितिवर्डा ।

श्राम्स प्राप्त निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठा । ২৮॥

मश्राम प्राप्त निष्ठा निष्ठा । मिला कि क्रू बंदा । ।

श्राप्त निष्ठा निष्ठा । या पिका क्रिक्त व्याप्त ।

श्राप्त निष्ठा मिला वानताना स्वित्र क्रू बंदा । ।

श्राप्त प्राप्त । स्वाप्त श्राप्त ।

श्राप्त प्राप्त । स्वाप्त श्राप्त ।

श्राप्त प्राप्त । स्वाप्त स्वाप्त ।

श्राप्त । स्वाप्त । स्वाप्त स्वाप्त ।

श्राप्त । स्वाप्त । स्वाप्त । स्वाप्त ।

श्राप्त । स्वाप्त ।

নগবেশালী রাক্ষণমণ অবস্থিত হইরা লক্ষাপুরী সভত বক্ষা গরিভেছে। হে প্রভো! প্রীর কক্ষ মধ্যে নানাক্ত কুশলী, শসংখ্যা মাজাশ্ব, রখা, পদাতী সর্ব্যাই লক্ষা রক্ষা করিতেছে। গ্রে দেবেশা! বিবিধ শভন্নী সংযুক্ত থাকিলেও আমি লক্ষা মধ্যে যেরপে বাবহাব করিয়াছি তাংশ শ্রবণ কর্কন। ১৭ | ১৮। ১৯।২০। ২১ | ২১ | ২২ |

আমি দশাননের চতুর্থাংশ বল বিনাশ করিয়াছি এবং
দক্ষা দক্ষ করিয়া স্থাটালিকা উৎপাটন করিয়াছি, হে
বছুত্তম! শত্তা সন্থলিত সিংহ দার আমা কর্ত্তক বিনাই ইয়াছে।
হে দেব! আপনি দর্শন করিবা মাত্র লহা ভস্মীভূতা ইইবে,
অত্তব প্রমন্দ্রেম কর্ত্তন, আমরাও মহাবলশালী বানরগণ
সম্ভিব্যাহারে লবণ সমুদ্র তীরে গমন করি। রঘুনন্দন
হত্তমান্ বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন—হে হতুমন্ স্থাবিইদন্য স্মহতে লক্ষা গ্রনের নিমিত্ত সাহ্বান করা, এখনই

বিজয় লাভ হইবে—রাক্ষসপূর্ণ প্রাকার বেটিত লঙ্গাপুরীতে মৃতত মধ্যে গমন করিয়া স্বংশ রাবগতে বিনাশ করণানন্তর আমার সীতাকে আনরন করিব, যেহেতু আমার দক্ষিণাক্ষি প্র অধঃ ক্ষুবিত ইইতেছে। বানর সৈন্য সমস্ত লঙ্কাপুরী গমন করক এবং জন্মুবান সদৃশ সেনাপতিগণ সৈন্যের অগ্র, প্রকাংও পার্ম্ব বর্তী ইইয়া তাহাদিগকে রক্ষা কর্কক— অনন্তর আমি হল্মানের ক্ষে আরোহণ করিয়া অপ্রোগমন করি, পরে লক্ষ্ম অন্তন্দ কন্ধে গমন করক, কিন্ত হে স্থানীব! তুমি আমার সহিত্
গমন কর; অবশেষে গায়, গবাক্ষ, গবয়, সৈন্দ, নল, নীল, স্বেণ, জাল্পুবান প্রভৃতি শক্ষাতি সেনাপালগণ গমন করক।
ব্রীরামচন্দ্র বানরগণকে এই রূপ আদেশ করিয়া লক্ষ্মণ সম্ভিব্যাহারে প্রস্থান করিলেন। ২৪ বিধান হত ২৭ বছা ২৯।

স্থাবিসহিতো হর্ষাৎ সেনামধ্যনতো বিভূঃ।
বারণেন্দ্রনিভাঃ শর্মে বানরাঃ কামরূপিণঃ। ৩৪।
ক্ষেলন্তঃ পরিগর্জন্তো জগ্মুন্তে দক্ষিণাং দিশম্।
ভক্ষয়ন্তো ময়ুঃ সর্মের ফলানি চ মধুনি চ॥ ৬৫॥
ক্রবন্তো রাঘবন্তাগ্রে হনিষ্যামোহন্তা রাবণম্।
এবং তে বানরপ্রেষ্ঠা গচ্ছন্ত্যভুলবিক্রমা । ৬৯॥
হরিভ্যামুহ্মমানে তৌ শুশুভাতে রঘুন্তমে।
নক্ষরৈঃ সেবিতৌ যদ্বচন্দ্রস্থাবিবাদ্বরে। ৬৭।
আর্ত্য পৃথিবীং ক্রংস্নাং জগাম মহতী চমুঃ।
প্রক্ষোট্যন্তঃ পুচ্ছাগ্রান্ উদ্বহন্ত পাদপান্।৬৮।
কৈলানাগেহয়ন্ত জগ্মুন্সাক্রতবেগতঃ।
ক্রম্থাতাক্ষ সর্ব্র বানরাঃ পরিপ্রিভাঃ। ৩৯।
ক্রটান্তে জগ্মুরভ্যর্থং রামেণ পরিপালিভাঃ।
গতা চমুর্দিবারাত্রং ক্রিয়াসক্ষত ক্ষণম্। ৪০।

কাননানি বিচিত্তাণি পশ্যমালয়দহ্যোঃ।
তে সহং সমতিক্রম্য মলয়ং চ তথা গিরিম্। ৪১।
আয়্শ্চানুপূর্ব্যেণ সমুদ্রং ভীমনিঃস্বন্ম্।
অবতীর্য্য হন্ত্মদন্তং রামঃ সুগ্রীবসংযুতঃ।। ৪২।।
সলিলাভ্যাশমাসাল্য রামো বচনমত্রবীৎ।
আগতাঃ স্মো বয়ং সর্ব্যে সমুদ্রং মকরালয়ম্। ৪৩
ইতো গন্তমশক্যং নো নির্নপায়েন বানরাঃ।
অত্র সেনানিবেশোহস্ত মন্ত্র্যামোহন্ত তারণে। ৪৪।
শুজ্ব। রামন্ত বচনং সুগ্রীবঃ সাগরান্তিকে।
সেনাং ন্যবেশয়ৎ ক্ষিপ্রং রক্ষিতাং কপিকুপ্পরৈঃ।।
তে পশ্যন্তো বিষেদুস্তং সাগরং ভীমদর্শনম্।
মহোম্বতরক্ষাত্যং ভীমনক্রভয়স্করম্। ৪৬।

শ্রীরামচন্দ্র হর্ষাবিষ্ট হইরা স্থাীর সহ সৈনোর মধ্যবর্তী হইলেন এবং গজেন্দ্র সদৃশ কামরুশী অতুল বিক্রমশালী বানর সমস্ত মহা গর্জন, ফল ভক্ষণ ও মধুপান করিতে করিতে বৃদ্ধগতিতে দক্ষিণাভিমুখে গমন করিতে লাগিল এবং শ্রীরাম স্নামধানে কহিল আমরা অদাই বাবণকে বিনাশ করিব।

অনস্তর জীরাম বেণে মাকতি ক্ষেদ্ধ ও লক্ষ্মণ অঙ্গদ ক্ষেদ্ধ আক্স্থমান হুইলে গগন মার্গস্থ চন্দ্র সূর্য্যের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিলেন এবং অন্যান্য বানরগণ নক্ষত্র সদৃশ বোধ হুইতে লাগিল। অসংখ্য বানর দেনা পৃথিবী ব্যাপৃত করিয়া গমন করিল। অসংখ্য বামর সর্ব্যে পরিপুরিত হুইয়া বায়ু-কোণে পর্যতাগোহণ করিতে লাগিল। রাম কর্ম্কুক পরিপালিত

হইয়া বানর চমু হাউান্তঃকরণে দিবারাত্র অবিরল ভাবে গমন করিছে লাগিল। ক্রমে বিচিত্র কানন অবলোকন করিছে করিতে সহা পর্বান্ত ও মলয় গিরি সমুত্তীর্ণ হইয়া ভীম-গর্জন সমুদ্র তীরে উপস্থিত হইল, অনস্তথ জীরাম ও স্থ্রীব অবভ্রথ করিলে জীরামচন্দ্র দলিল সন্নিধানে গমন পূর্বাক কহিলেন. আমরা এক্ষণে মকরালয় সমৃদ্র নিকটে সমাগত হইয়াছি এবং বানরগণ এখান হইতে গমন করিতে অক্ষম ছইয়াছে স্প্তরাং আপাতভঃ এখানে শিবির সন্ধিবেশ করিয়া সমুদ্র ভারণ জনঃ পরামর্শ করা থাউক। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪৪।

স্থাীব জ্ঞীরামচক্রের বাক্য জ্ঞাৰণ করিয়া সাগরতীরে
কপি কুঞ্জুরদ্বারা স্থরক্ষিতা শিবির সন্ধিবেশিত করিলেন

অগাধং গগণাকারং সাগরং বীক্ষা তু: বিতাঃ।
তরিষ্যাম: কথং ঘোরং সাগরং বরুণালয়ম্?।৪৭
হস্তব্যোহস্মাতিরতৈ বরাবণো রাক্ষসাধমঃ।
ইতিচিন্তাকুলাং সর্বের্ম রামপাশ্রে ব্যবস্থিতাঃ।৪৮
রামঃ সীতামনুস্মৃত্য দু:থেন মহতারতঃ।
বিলপ্য জানকীং সীতাং বছধা কার্য্যমানুষঃ। ৪৯।
অদ্বিতীয়শ্চিদালৈরকঃ পর্মাত্মা সনাতনঃ।
যন্ত জানাতি রামস্য স্থরপং তত্ত্বতো জনঃ॥ ৫০॥
তয়ঃ স্পৃশতি দুঃধাদি কিমুতানক্ষমব্যয়ম্?।
তঃগ শোকে ভয়ক্রোধলোভ্যোহ মদাদয়ঃ।। ৫১।
অক্তানলিক্ষানোতানি কুভঃ সন্তি চিদাত্মনি?।
দেহাভিমানিনো দুঃধং নাদেহস্ত চিদাত্মনঃ। ৫২।

সম্প্রসাদে দ্বরাভাবাৎ স্থানাত্তং হি দৃষ্ঠতে।
বুদ্ধাদ্যভাবাৎ সংশ্বদ্ধে তুঃখং তত্ত্ব ন বিদ্যুতে।
আহো দুঃখাদিকং সর্বাং বুদ্ধেরের ন সংশরঃ ॥ ৫৩।
রামঃ পরাক্ষা পুরুষঃ পুরাণো
নিত্যোদিতো নিতাস্থাে নিরীহং।
তথাপি মারাগুণসঙ্গতোহসৌ
সুখীব তুঃখীব বিভাব্যতে বুধৈঃ ॥ ৫৪ ॥

रेणि औमनधाणात्रामात्रत्न उमामत्रभात मचादन युक्तकार ७ श्रथदमाधारायः।

্সনাগণ অত্যুক্ত তরঙ্গময় নকাদিপূর্ণ অতলম্পর্শ ভয়ানক সম্দ্র নিরীক্ষণে ছঃথিত ছইয়া কি প্রকারে এই ভয়ানক সমুদ্র সম্ভরণ করিয়া অদ্যই রাক্ষসাধম দশাননকে বিনাশ করিব—এই কপ চিন্তাকুল ছইয়া জীরামের পার্ম দেশে অবস্থান করিছে লাগিল। জীরাম সাডিশয় ছঃখ সন্তপ্ত ছইয়া সীতাকে স্মরণ করত বিলাপ করিতে লাগিলেন এবং মনুষ্য না হইয়াও মনুষ্যের ন্যায় বছবিধ কার্য্য করিছে লাগিলেন। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯।

ষে জ্ঞান অভিতীয় চিদানন্দ স্নাত্তন প্রমাত্মা স্বরূপ জ্ঞানকে প্রম তত্ত্ব স্বরূপে চিস্তা করে তাছার ভ্রংথাদি ইতি জীগদ গোক্সরামারণে উমামহেশ্বরসন্থাদে

যুদ্ধকাণ্ডে প্রথমোহধারেঃ I

দ্বিতীয়ো ২ধ্যায়ঃ

রাবণস্থা বচঃ শ্রুছা রাক্ষসান্তমথাক্রবন্।
দেব ! শঙ্কা কুতো রামান্তব লোকজিতো রণে? ॥৬
ইন্দ্রন্ত বন্ধা নিক্ষিপ্তঃ পুজেণ তব পত্তনে।
জিত্বা কুবেরমানীর পুপ্পকং ভুজ্যতে ত্বা।। ৭।।
যমো জিতঃ কালদপ্তান্তরং নাভুত্তর প্রভো!।
বরুণো ভঙ্কুতেনৈব জিতঃ সর্ব্বেইপি রাক্ষদাং। ৮।
ময়ো মহাসুরো ভীত্যা কন্যাং দত্ত্বা স্বয়ং তব।
তদ্বশে বর্ত্ততেইদ্যাপি কিমুতান্যে মহাসুরাং ?॥ ৯
হন্মদ্বর্ধণং যত্ত্ব তদবক্তাকুতং চনঃ।
বানরোইয়ং কিম্মাক্ম্ম্মিন প্রেক্ষ্মদর্শনে। ১০॥

মহাদেব কহিলেন—দশানন লকাপুনীতে মাকতি কর্ত্ব দেবতাদিগের ত্রংসাধ্য কার্যা সম্পন্ন দশনে লজ্জিত ছইরা অধাবদনে সমস্ত মন্ত্রিগণকে আহ্বান করিয়া কহিল—হে মন্ত্রিগণ! হরুমান্ যে সকল কার্য্য করিয়াছে ভাষা ভোমরা দর্শন করিয়াছ—মার্কতি হ্রাক্রমা লক্ষাপুনী,প্রৈবেশ করিয়া সীতা দর্শন পূর্বাক মহাবল রাক্ষসগণ ও মন্দোদরী তনর অক্ষ্ কুমারকে বিনাশ করিয়া সমস্ত লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করত ক্ষমারকে বিনাশ করিয়া সমস্ত লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করত ক্ষমারকে বিনাশ করিয়া সমস্ত লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করত ক্ষম্ব শরীরে পুনর্বার সমৃত্র উল্লেখন পূর্বাক গামন করিয়াছে, এক্ষণে আমাদের কি করা কর্ত্ব্য ভাষার মন্ত্রণা কর—রাবণের বাক্য শ্রাণ করিয়া রাক্ষ্মগণ কহিল—হে দেব! আপুনি ভূবন বিজ্ঞা, কি ক্ষন্য রামকে শক্ষা করিভেছেন? আগুনার পুত্র মেবনাদ দেবরাক্ত ইন্তাকে পাশ ছারা বন্ধন করিয়া নিক্ষেপ

করিয়াছিল এবং ধনাধিপ কুবেরকে পরাজয় করিয়া পুল্পক
রথ আনমন করিয়াছে, ভাহা আপনি উপভোগ করিতেছেন।
হে প্রভো! আপনা কর্তৃক যমও পরাজিত হইয়াছে, অভএব
কালদণ্ড ছইডেও আপনার ভয় নাই, অলপতি বরুণ আপনার
হুয়ার ধনিতেই পরাজিত হইয়াছে, তুবন জয়ী ময়দানব
পরাজিত হইয়া আপনাকে কন্যা দান করিয়া অদ্যাপি আপনার
বশীভূত হইয়া আছে, নিশ্চয়ই অনাান্য অলুর্বাণ আপনা
কর্তৃক পরাভব ছইবে—যে ছয়মান্ লঙ্কাপুরী পরাভব করিয়াছে,
ঐ সামান্য বানরকে বিনাশ করিলে পৌক্ষম মাত্রই লক্ষিত
হয় না—এইয়প বিবেচনা করাতেই সে আমাদিগের রক্ষিত
লঙ্কাপুরী ধর্ষণ করিয়া জীবন ধারণ পূর্বাক গমন করিয়াছে,
আমরা প্রমন্ত হইলে কি ঐ বানর লঙ্কাপুরীকে পরাত্ব করিতে

ইত্যুপেক্ষতমন্মাভিধ র্বণং তেন কিং ভবেৎ।
বরং প্রমন্তাঃ কিং তেন বঞ্চিতাঃ ম্মো হন্মতা?।।
জানীমো যদি তং দর্ফে কথং জীবন্ গ্রিষ্যতি?
আজাপয় জগৎক্ষমবানরমমান্র্যম্। ১২।
কুড়া যাম্মামহে দর্ফে প্রত্যেকং বা নিয়োজয়।
কুড়াকর্ণস্তদা প্রাহ্ রাবণং রাক্ষদেশ্বরম্। ১৩।
আরক্ষং যত্ত্বয়া কর্মা স্বাজ্যনাশায় কেবলম্।
ন দুটোইদি তদা ভাগ্যাত্তং রামেণ মহাজ্যনা। ১৪
যদি পশ্রতি রামন্তাং জীবন্নায়াদি রাবণ!।
রামোন মানুষো দেবঃ সাক্ষান্নায়ায়বেণাহ্বয়েঃ॥১৫
সীতা ভগবতী লক্ষ্মী রামপত্নী যশস্বিনী।
রাক্ষমানাং বিনাশায় ত্রানীতা স্কমধ্যমা। ১৬।

বিষপিগুনিবাগীর্য মহামীনো যথা তথা।
আনীতা জানকী পশ্চান্ত্রা কিং বা ভবিষ্যতি। ১৭
যদ্যপ্যন্তিতং কর্মা ত্বয়া ক্রতমজানতা।
সর্বাং সমং করিষ্যামি স্বস্থৃচিন্তো ভব প্রভো!।১৮
কুম্ভকর্ণবচঃ শ্রুড়া বাক্যমিন্দ্রজিদন্তবীৎ।
দেহি দেবি! মমানুজ্ঞাং হত্বা রামং স লক্ষ্যণম্।
স্থাবিং বানরাংকৈচব পুনরায়াস্য তেইন্তিকম্।। ১৯
ভন্তাগতো ভাগবতপ্রধানো

বিভীষণো বুদ্ধিমতাম্বরিষ্ঠ:।
শ্রীরামপাদ্ধর্যএকতানঃ
প্রণম্য দেবারি মুপোপবিষ্ট:॥ ২•॥
বিলোক্য কুন্তশ্রবণাদিদৈত্যান্
মন্তপ্রমন্তানতিবিক্ময়েন।

শমর্থ হইত ? এবং আমরা সকলে এ বানরকে বিদিত হইলেই কি জীবন ধারণ করিবা গমন করিতে পারিত ? হে রাজন্! আদেশ করুন, আমরা সমস্ত রাক্ষ্যণণ মিলিত হইয়া নিখিল জগতের কানর ও মহুষ্য সমস্ত বিনাশ করিয়া প্রভ্যাগমন করিব, আমাদিগের এক এক রাক্ষ্যকে নিযুক্ত করিলেই সমস্ত বানর ও মনুষ্যগণ বিনাশিত হইবে ৷ ১ ৷ ২ ৷ ৩ ৷ ৪ ৷ ৫ ৷ ৷ ৬ ৷ ৭ ৷ ৮ ৷ ৯ ৷ ১ ০ ৷ ১১ ৷ ১২ ৷

অনন্তর কুন্তকর্ণ রাক্ষসেশ্বর রাবণকে কছিল—হে আর্য্য!
আপনি যে কার্যা করিতে আরম্ভ করিয়াছেন, তাহা কেবল
আত্মবিনাশার্থই পরিকিশ্যিত ছইয়াছে—ভাগ্য বশত রামচন্দ্র
আপনাকে দেখিতে পান নাই, মহাত্মা রাম আপনাকে দর্শন
করিলে জীবন ধারণ পূর্মক আপনাকে আর প্রভ্যাগমন
করিতে হইত না—হে দশানন! রামচন্দ্র মহ্বা নহেন—

অনাদি স্বরং নারারণ দেব মন্থ্যা রূপে জ্যা গ্রন্থ করিয়াছেন, এবং ভগবতী লক্ষ্মী স্বরং দীতা রূপে জ্যা গ্রন্থ করিয়াছেন গে প্রকর মহামীন আত্মবিনাশার্থ বিধমিপ্রিত মাংসপিও ভক্ষণ করিয়া থাকে. দেই প্রকার আপানি রাক্ষণ কুলের বিনাশার্থ স্মধ্যমা রাম-পত্নী দীতাকে আনরন করিয়াছেন এক্ষণে কি হইবে তাহাও নিশ্চর করা যার না—যদাপিও না জানিয়া অনুচিত কর্ম করা হইয়াছেতথাপি আমি সেমমুদারের প্রতিকার করিতে প্রস্তুত আছি—হে হাভো! আপনি স্বস্থ মানদে অবন্থিতি কহন। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। কুস্তর্করের বাক্য প্রবণ করিয়া ইন্দ্রজিৎ কহিল—হে দেব আদেশ করুণ আমি লক্ষ্মণের দহিত রাম লক্ষ্মণ ও বানরগণকে নিধন করিয়া ক্ষণকাল মধ্যে আপানার সমীপে আগগমন করিব। ঐ সময় জ্বিরা প্রদাপিত মানসং স্বৃদ্ধি বৈশ্বরে ক্রিয়া

বিলোক্য কামাতুরমপ্রমন্ত্রা
দশাননং প্রাহ বিশুদ্ধরুদ্ধিঃ॥ ২১॥
ন কুন্তুকর্ণেক্র জিলে। চ রাজন্!
তথা মহাপার্শ নহোদরে তে।।
নিকুন্তুকুন্ত্রো চ তথাতিকারঃ
স্থা গুং ন শক্তা যুধি রাঘবস্থা॥ ২২॥
সীতাতিধানেন মহাগ্রহেশ
গ্রন্থেইসি রাজন্! ন চ তে বিভোক্ষঃ।
তামের সংকৃণ্য মহাধনেন
দন্ত্রাভিরামার সুখী ভব তুম্।। ২৩॥
যাবল্ল রামদ্য সীতাঃ শিলীমুখা
লক্ষামভিব্যাপ্য শিরাংি রক্ষ্মাম্।
ছিন্দন্তি তা জন্মুনায়ক্স্য ভো!
তাং জানকীং তুং প্রতিদাতুমহ্সি। ২৪

মাবন্ধগাভাঃ কপয়ো মহাবলা
হরী ক্রভুল্যা নখদং ইন্ট্রাধিনঃ।
লঙ্কঃং সমাক্রম্য বিনাশয়ন্তি নো
তালক্রভং দেহি রঘুত্তমার তাম্। ২৫।
যাবন্ধ রামেণ বিমোক্ষসে ত্বং
গুপ্তঃ স্থুরেক্রৈরিপি শঙ্করেশ।
ন দেবরাজাঙ্কগতো ন মৃত্যোঃ
পাতাললোকানপি সংপ্রবিক্ষঃ। ২৬।
শুভং হিতং পবিত্রং চ বিভীষণবচঃ খলঃ।
প্রতিজ্ঞাহ নৈবাসৌ ভ্রিয়মাণ ইবৌষধম্। ২৭।
কালেন নোদিতো দৈত্যো বিভীষণমথাহত্তবীৎ।
মদত্রতোগৈঃ পুটাক্ষো মৎসমীপে বসন্ধপি। ২৮

বাবণকে প্রণাম পূর্মক উপবেশন করিল এবং কৃষ্ণকর্ণ প্রভৃতি
দৈতাগণকে অভিশয় প্রমত্ত দর্শনে বিস্মাপন হওড নিস্তর্ধ বৃদ্ধি
কামাতুর দর্শাননকে কহিল হে দেবারে! কৃষ্ণকর্ণ ইন্দ্রজিৎ
এবং মহাপার্য মহোদর নিকৃষ্ণ কৃষ্ণ ও অভিকায় প্রভৃতি
মহাবল রাক্ষ্য পে যুদ্ধ মধ্যে রাম সমুখে অবস্থিতি করিতে
কেই সমর্থ হইবে না হে গাজন! সীতা নামক মহাগ্রুহ অর্থাৎ রাত্ত ভোমাকে গ্রাস করিয়াছে—এ গ্রাস হইতে
ভোমার মুক্তিহইবে না; অভএব মহাবল রামচন্দ্রের সংকার
পূর্বক সীতা সমর্পণ করিয়া পর্ম সুথে কাল বাপন কর, যাবৎ
কাল বাম-নিক্ষিপ্ত শিলী মুখ বাণ লন্ধার প্রবেশ করিয়া
বাক্ষ্যাণের মন্তক সমুহ বিচ্ছির না করিবে সেই পর্যাও

নানকী সনর্পণে তোমার অধিকার থাকিবেক. যে পরান্ত সিংছ তুলা নথদণ্ড যোদ্ধা পর্বতাকার কপিগাণ লক্ষাপুর্বা আক্রমণ করিয়া আমাদিগকে বিনাশ না করে ভাবৎকাল মধ্যে রম্বরে সীতা সমর্পণ কর, ঐ মনোভিরাম শ্রীরামে সীতা সমর্পণ না করিলে, মহাদেব ও অন্যান্য সমস্ত দেবতা রুল কর্ত্বক রক্ষিত ছইলে—কি দেবরাক্ষ ইন্দ্রের ও প্রলম্বকারি যমরাজ্বের ক্রোড়গত ছইলে—কি পাভাললোকে প্রবেশ করিলেও প্রীরাম হইতে বিমুক্ত হইতে পারিবে না। যে প্রকার মুর্বাজন যম কর্ত্বক আকৃষ্ট ছইলে রোগা নাশক ঔষধী সেবনে বিরভ ছইয়া থাকে, সেই প্রকার পাপাত্মা দশানন বিভীষণের ছিলকর ও পবিত্রতম বাকা উপেক্ষা করিয়া কহিল, এই বিভীষণ আমার অন্ন ভোক্তন হারা প্রথাক ছইয়া এবং আমার সমীগে প্রতীপমাচরত্যেষ মথৈব হিতকারিণ:। মিত্রভাবেন শক্রমে জাতো নাস্ত্যত্ত সংশয়ঃ।২৯। व्यनार्थि क्रजरञ्जन मक्रिया न युकाराज। বিনাশমভিকাজ্জনি জ্ঞাতীনাং জ্ঞাতরঃ সদা। ৩০ (यार्नाटखुविश्वधः जन्नाश्वाकाटमकः निभावतः। হিন্ম ভাষ্মিন ক্ষণে এব ধিক ভাং রক্ষঃকুলাধমম্॥ वावरगरेनव मूक्तः मन् शक्रवः म विजीवनः। উৎপপাত मভाমধ্যাৎ গদাপাণিমহাবলঃ॥ ৩২॥ চত্র্ভিমন্ত্রিভিঃ দার্দ্ধং গণনস্থোংত্রবীদ্বচ:। ক্রোধেন মহতাবিষ্টো রাবণং দশকন্ধরম । মা বিনাশমুপৈহি ত্বং প্রিয়বাদিনমেব মাম্॥৩৩ धिकतािष ज्याि पः स्वार्का जाजा निषुः मयः

कांत्ना ताघवकरभव कांट्या मन्त्रथानरम ॥ ७८ ॥ काली मीठा डिधारनन काठा सनकनिमनी। তারুভাবাগতাবত ভূমের্ভারাপমুপ্তয়ে ॥ ৩৫ ॥ তেনৈব প্রেরিভন্তং জু ন খূণোষি হিডং মম। শ্রীরামঃ প্রাক্ততেঃ দাক্ষাৎপরস্তাৎ দর্বদা স্থিতঃ।। বহিরন্তুশ্চ ভূতানাং সমঃ সর্ব্<u>ব</u>ত্ত সংস্থিতঃ। नां मक्तां निष्डितन उद्धमा इरोमलः । ७१॥ যথা নানাপ্রকারেয়ু রক্ষেধ্যেকো মহানলঃ। তত্তদাক্তিভেদেন ভিদ্যতে জ্ঞানচক্ষুধাম্॥ ৬৮॥ পঞ্কোষাদিমেদেন তত্ত্বয়য় ইবাবভো। নীলপীতাদিযোগেন নিশ্মলঃ ক্ষটিকো যথা॥ ৩৯

অবস্থিতি করিয়াও অহিতকারি রামের অনুকূদতাচরণ করি-তেছে, ছুরাঝা আমার মিত্রতা প্রকাশ পূর্ব্বক শত্রু হইয়া জন গ্রহণ করিয়াছে তাখাতে সংশয় মাত্র নাই, অভএব এ মুর্প ক্রভন্মকে আমার সংদর্গ রাখা যুক্তিসিদ্ধ নছে, জ্ঞাতিগণ জ্ঞাতিগণের বিনাশ ইচ্ছা করিয়াই থাকে, কিন্তু নিশাচর মধ্যে অনাযে কোন জন আমার নিকট এই রূপ পাকা কছিবে তাহাকে তৎক্ষণাৎ বিনাশ করিব। হে বিভীষণ! তুমি রাক্ষ্য কুলের অধন—তোমাকে ধিকৃ। ২৯। ৩০। ৩১।

রাবণ এইরূপ কটু বাক্য কহিলে মহাবল বিভীষণ গাদা গ্রহণ পূর্ব্বক মন্ত্রি চতুষ্টারের সহিত সভা হইতে উথিত হইয়া গমন করিল এবং গাগনমণ্ডলে অবস্থিতি করত অতিশয় ক্রোধাবিষ্ট হুইয়া দশাননকে কছিল—হে রাবণ! তুমি বিনাশ প্রাপ্ত হটবে না, আমি ভোমার প্রিয় বাকা কহিয়াছি,

ভাৰা, পিতৃ তুল্য ভোমাকে আর অধিক কি কহিব—মন্তকারী কাল রাজা দশরখের গৃহে রামরূপে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন এবং অন্তকারিণী কালী সীতা রূপে জনক গৃছে জন্মগ্রহণ করিয়া-ছেন, জাঁহার। উভয়ে মিলিত ছইয়া পৃথিবীর ভাব হরণ করিবার জন্য সমাগত হইয়াছেন, তুমি ঐ কাল প্রেরিত হইয়া আমার হিতকর বাকা শ্রবণ করিতেছ না। জ্ঞীরাম প্রকৃতির সাক্ষাং পরম পুরুষ-সর্ব ভূতের বহির্দেশে ও অন্তঃকরণে সমভাবে অবস্থিতি করিভেছেন, কেবল ভিন্ন ভিন্ন নাম ও ভিন্ন আফুতি বশত একমাত্র নিখল প্রদাত্ম ভিন্ন ভিন্ন রূপে প্রতীয়মান হইতেছে--যেমন নানাবিধ রক্ষ সমূহ মধ্যে প্রজালিত মহায়ি রক্ষ মন্তের আকৃতি ভেদ বশত অজ্ঞান চকু ধারা ভিন্ন জনে দৃশা হটয়া থাকে সেই প্রকার ক্ষিত্তি, জল, তেজ, বায়ু, আকাশ এই পঞ্ছু শ্মাক দেছের ভেন বশত ঐ দেহাবস্থিত অদ্বিভীয় প্রমপ্রুষ ও ভিন্ন ভিন্ন রূপে তথাপি আমাকে ধিকার করিতেছ—তুমি আমার ভাষ্ঠ প্রকাশিত হন, যেরপ এক মাত্র ক্ষ্টিক-পিও নীল পীতানি

দ এব নিত্যমুক্তোষ্পি স্বমায়াগুণবিষিতঃ।
কালঃ প্রধানং পুরুষোহ্ব্যক্তং চেতি চতুর্বিধঃ॥
প্রধানপুরুষাভ্যাং দ জগৎ কৃৎস্নং সৃজত্যজঃ।
কালৰপেণ কলনাং জগতঃ কুঁরুতেহ্ব্যয়ঃ॥ ৪১॥
কালৰপী দ ভগবান্ রামৰপেণ মায়য়া॥ ৪২॥
বিস্থাণ প্রাধিতো দেবস্তুদ্ধার্থমিহাগতঃ।
তদন্যথা কথং কুর্যাৎ? দত্যসঙ্কণ্ণ ঈশ্বঃ॥৪৩॥
হনিষ্যতি তাং রামস্ত দপুজ্বলবাহ্নম্।
হন্যমানং ন শক্ষোমি দ্র্যুং রামেণ রাবণ!॥ ৪৪

ত্বাং রাক্ষসকুলং কুৎস্নং ততো গচ্ছামি রাঘনং। ময়ি যাতে সুখী ভূত্বা রমস্ব ভবনে চিরম্ ॥ ৪৫ ॥

> বিভীষণো রাবণবাক্যত: ক্ষণাৎ বিসূজ্য সর্বাং সপরিচ্ছদং গৃহং। জগাম রামদ্য পদারবিক্ষরো: সেবাভিকাঞ্জনী পরিপূর্ণমানসং॥ ৪৬॥

ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্বাদে
যুদ্ধকাণ্ডে দিতীয়োহধ্যায়ঃ।

লানা বর্ণের ছায়াগত ছইলে নীল ক্ষাটিক, পীত ক্ষাটিক ইত্যাদি রূপে ব্যবহৃত হইয়া থাকে, সেই প্রকার নিত্যযুক্ত নির্মূল পার-মাঝা স্বকীয় মারা গুণ ছারা প্রতিবিশ্বিত হইয়া কাল প্রধান পুরুষ অব্যক্ত এই চতুর্ভাগে বিভক্ত হইয়া প্রধান ও পুরুষ শক্তি ছারা সমস্ত জগৎ স্কুন করেন। কাল স্বরূপ ভগবান্ পরমেশ্বর বিরিঞ্চি কর্তৃক প্রার্থিত হইয়া স্বকীয় মায়া ছারা রাম শরীয় ধারণ পূর্প্রক ভোমাকে বিনাশ করিবার জন্য এই পৃথিবী মণ্ডলে সমাগত ইইয়াছেন, সত্য-সঙ্কপ্প প্রমেশ্বর কি প্রকারে ভাহার জন্যথা করিবেন—হে রাবণ ! জীরাম আসিয়া পুজ সৈনাদির সহিত তোমাকে ও সমস্ত রাক্ষসকুল যে বিনাশ করিবেন ভাহা দর্শন করিতে আমি সমর্থ হইব না, অভএব আমি জীরাম সমীপে গমন করিলে তুমি স্থকীয় ভবনে প্রম স্থেশ কাল যাপন কর। অনস্তর বিভীয়ণ রাবণের বাকা শ্রণ করিয়া ক্ষণকাল মধ্যে গৃহাদি সমস্ত পরিভাগে পূর্ব্বক শ্রীরাম পাদ সেবাভিলাধী হইরা সাহলাদচিত্তে গমন করিল। তিহাতে ৩৪।৩৫।৩৬।৩৭।৩৮।৩৯।৪০।৪১।

ইতি শ্রীমদধ্যবস্থানায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে

যুদ্ধকাণ্ডে বিভীরোহধ্যায়ঃ।

তৃতীয়োইধ্যায়ঃ।

বিভীষণো মহাভাগশচতু ভি শান্তি ভি: সহ।
আগত্য গগনে রামসন্মুখে সমবস্থিত: ॥ ১॥
উচৈক্রবাচ ভো স্বামিন্! রাম! রাজীবলোচন!
রাবণস্যান্তেজাংহং তে দারহতু বি ভীষণ:॥ ২॥
নালা ভাতা নিরস্তোহহং আমেব শরণং গতঃ।
হিতমুক্তং ময়া দেব! তস্য চাবিদিতালুন:॥৩॥
সীভাং রামায় বৈদেহীং প্রেষয়েতি পুনঃ পুনঃ।
উক্তোহিপি ন শৃণোত্যেষং কালপাশবশং গতঃ॥৪
হন্তং মাং খজামাদায় প্রাদ্রবদ্রাক্ষসাধমঃ।
ততে৷ চিরেণ সচিবৈশ্চতুর্ভিঃ সহিতো ভয়াৎ॥ ৫

বাদেব ভবমোক্ষার মুমুক্কু: শরণং গতঃ।
বিভীষণবচঃ প্রজা স্থাবা বাকামপ্রবীৎ ॥ ৬ ॥
বিশ্বাসাহোঁ ন তে রাম! মায়াবী রাক্ষণাধমঃ।
সীতাহতু বি শেষেণ রাবণস্যানুক্ষো বলী ॥ ৭ ॥
মাদ্রিভিঃ সায়ুধৈরক্মান, বিবরে নিহনিষ্যতি ॥ ৮ ॥
তদাজ্ঞাপর যে দেব! বানরৈর্হ ন্যতাময়য়্।
মামেবং ভাতি তে রাম! বৃদ্ধাা কিং নিশ্চিতং বদ
শ্রুতা স্থাবিষদাং রামঃ সন্মিতমপ্রবীৎ ॥ ৯ ॥
ঘদীক্ষামি কপিশ্রেষ্ঠ! লোকান্ সর্বান্ মহেশ্বরান
নিমিষার্দ্ধেন সংহন্যাং সূজামি নিমিষার্ধতঃ॥১০॥
আতো ময়াভয়ং দত্তং শীঘ্রমানয় রাক্ষণম ॥১১॥

মহাদেব কহিলেন—মহামতি বিভীষণ মন্ত্রি চতুষ্টারের সহিত গাগন মণ্ডলে রাম সন্থ্য অবস্থিত হইয়া উচিচঃস্বরে কহিল—হে থামিন্! আমি আপনার ভার্য্যাপহারী দশাননের অনুজ্ঞ বিভীষণ নামা রাক্ষ্য প্রান্ত্র কর্ভ্রুক পরিজ্ঞ হইরা আপনার শরণাগত হইলাম, হে দেব! আমি ভ্রান্ত্রা রাবণের এই রূপ হিভকর বাক্য পুনঃ পুনঃ কহিয়াছিলে, হে দশানন! তুমি জগদীশ্বর প্রীরাধ্য দীঙা সমর্পণ কর, রাক্ষ্যাধ্য ভ্রান্ত্রা কাল পাশের বশতাপত্র হইয়া ঐ হিতকর বাক্য উপেক্ষা করিয়া থজা গ্রহণ পূর্বেক আমাকে নিধন করিতে সমাগত হইয়াছিল, অনস্তর ভীত হইয়া মন্ত্রি চতুক্টরের সহিত এই অপার ভ্রসংগার সন্তরণ পূর্বেক মুক্তিলাভ করিবার আশায়ে আপনার শরণাগত হইয়াছি। স্থাীব

বিভীষণের এই বাক্য শ্রমণ করিয়া কছিল—হে ঞীরামা এই
মায়াবী রাক্ষ্যাধম বিখাস যোগ্য হইতে পারে না, কারণ
দুরাঝা রাবণের কনিষ্ঠও অত্যন্ত বলবান্," ঐ অন্তর্ধারী মরিগণ দ্বারা আমাদিগকে পর্বত গুলার মধ্যে নিক্ষেপ করত
বিনাশ করিবে। হে দেব ! আদেশ করুন বানরগণ বিভীষণকে
যম সদলে প্রেরণ করুক—হে রাম ! আমার এইরপ অনুমান
হইতেছে আপনি যাহা ভির করিয়াছেন ভাহা প্রকাশ করুন।
পারে স্প্রীবের বাক্য শ্রমণ করিয়া জীরাম হাস্য বদনে
কহিলেন—হে কপিবর! আমি ইচ্ছা করিলে সন্থারের সহিত
এই ত্রিভ্রন নিমেবার্দ্ধ মধ্যে বিনাশ ও স্কোন করিতে পারি

সক্লেব প্রপন্নার তবাস্মীতি চ যাচতে।
অভয়ং সর্বভূতেভোগ দদাম্যেতদ্বতং মম ॥ ১২ ॥
বামস্য বচনং শ্রুত্বা স্থুত্রীবো ক্ষর্টমানসঃ।
বিভীষণমথানাষ্য দর্শরামাস রাঘ্যম্ ॥ ১৩ ॥
বিভীষণস্ত সাফাঙ্গং প্রাণিপত্য রঘুত্তমম্।
হর্ষগঙ্গাদ্যা বাচা ভক্ত্যা চ পররাম্বিতঃ ॥ ১৪ ॥
বামং শ্যামং বিশালাক্ষং প্রদন্তমুখপক্ষত্মং।
ধনুবাণধরং শাস্তং লক্ষ্যণেন সমন্বিতং ॥ ১৫ ॥
কৃত্যঞ্জিপিপুটো ভূষা স্থোভূং সমুপচক্রমে ॥১৬॥
বিভীষণ উবাচ।

নমস্তে রাম ! রাজেন্দ্র ! নমঃ দীতামনোরম ! নমস্তে চণ্ডকোদণ্ড ! নমস্তে ভক্তবৎসল ! ॥ ১৭ । নমাহনস্তায় শাস্তায় রামায়ামিততেজনে।

মুগ্রীবমিত্রায় চ তে রঘূণাং পত্য়ে নমঃ॥১৮।

জগদূৎপত্তিনাশানাং কারণায় মহাত্মনে।

তৈলোক্যগুরবেহনাদিগৃহস্থায় নমো নমঃ॥ ১৯॥

তুমাদির্জগতাং রাম! তুমেব স্থিতিকারণম।

তুমস্তে নিধনস্থানং স্বেচ্ছাচারস্ত্মেব হি।২০।

চরাচরাণাং ভূতানাং বহিরস্তশ্চ রাঘব!।

ব্যাপ্যব্যাপক্রপেণ ভবান্ ভাতি জগম্ময়ঃ। ২১

তুমায়য়া স্কৃতজ্ঞানা নফীত্মানো বিচেত্দঃ।

গতাগতং প্রপদ্যন্তে পাপপুণ্যবশাৎসদা। ২২।

অভএব তোমাকে অভয় প্রদান করিলাম তুমি শীত্র ঐ নিশাচরকে আনহন কব, যে জন 'আমি আপনার শরণাগভ ইলাম'
এইরূপ প্রার্থনা করিবে আমি ভাষাকে অভয় প্রদান করিব,
আমার এইরূপ সঙ্কপিত ব্রভ বিদ্যমান রহিয়াছে।১।২।
তা৪।৫।৬।৭।৮।১।১০।১১।১২।

রামের এইরূপ বাক্য শ্রবণে স্থাবি হর্ষ প্রকাশ পূর্ব্বক বিভীষণকে আনমন করিয়া জীরামকে দর্শন করাইল, বিভী-ষণ সাফাজে প্রণাম করিয়া ক্লভাঞ্জলিপুটে গদগদ বচনে ভক্তি দহকারে প্রসন্নবদন ধনুর্বাণিধারী জীরামকে স্তব করিজে আরম্ভ করিদ। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬।

হে রাম ! ছে রাজেন্দ্র ! তোমাকে প্রণাম করি—তুমি প্রচণ্ড
ধমুধ বিন করিরাছ, তোমাকে প্রণাম করি—তুমি ভক্ত জনে
বাৎসল্য বিতরণ করিতেছ অতএব তোমাকে প্রণাম করি—তুমি
সাক্ষাৎ অনন্তদেব ও শান্ত মূর্ত্তি তোমাকে প্রণাম করি — তুমি

সর্ব্ব সাধারণের মনোরম্য ও অপরিমিত তেজশালী ভোমাকে প্রণাম করি—তুমি কপিরাজ স্থ্রীবের অভিশয় প্রিয় মিত্র ভোমাকে প্রণাম করি—তুমি রঘুকুলের কর্তা ভোমাকে প্রণাম করি—তুমি জগৎ সংসারের উৎপত্তি ও বিনাশের কারণ স্বরূপ তোমাকে প্রণাম করি—তুমি স্বর্গ মর্ত্ত পাতাল ত্রি-ভ্বনের গুরুদেব ভোমাকে প্রণাম করি –তুমি আনাদি গৃহও তোমাকে প্রণাম করি—হে রাম তুমি জগতের উৎপত্তি ও স্থিতির কারণ ও অন্তকালে নিধন স্থান, তোমাকে প্রণাম করি—তুমি খেচছা বশভ সমস্ত কার্য্য করিতেছ, হে রাঘব তুমি চর ও অচর ভূতদিগের বহির্দেশে ও অন্তঃকরণে ব্যাপা ও ব্যাপক রূপে জগন্ময় অর্থাৎ নশ্বর পদার্থের প্রায় প্রকাশিত হইরাছ। জীবাক্সা তোমার মায়া দারা হত জ্ঞান ও বিনই চিত্ত হইয়া পাপ পুণা বশতঃ অনবরত জন্ম ও মরণ প্রাপ্ত হইবে, যেমন ভ্রম বশত শুক্তি (অর্থাৎ ঝিমুক) রজভরণে প্রতীয়মান হট্য়া থাকে ঐ রূপ মিখ্যা বিনশ্বর এই জগৎ সংসার সভ্যরূপে প্রতীয়মান হইবে। ১৭। ১৮। ১৯।২০। 125 | 22 |

তাবৎসতাং জগন্তাতি শুক্তিকারক্সতং যথা।

যাবন্ন জ্ঞানতে জ্ঞানচেত্রসা নাম্বগামিনা।।২৩॥

ত্বনজ্ঞানাৎসদা যুক্তাঃ পুজ্ঞদারগৃহাদিয়ু।
রমন্তে বিষয়ান্ সর্বানন্তে ছুঃখন্প্রদান্ বিভো!॥২৪

ত্থিক্রোইগ্লির্থমো রক্ষো বরুণশ্চ তথানিকঃ।

কুবেরশ্চ তথা রুদ্রন্ত্রমেব পুরুষোত্তমং॥২৫॥

ত্বমণোরপাণীয়াংশ্চ শুলাৎ শুলতরঃ প্রভো!

ত্বং পিতা সর্বলোকানাং মাতা ধাতা ত্বমেব হি॥

আদিমধ্যান্তরহিতঃ পরিপূর্ণোইচুাতোইব্যয়ঃ।

ত্বং পাণিপাদরহিতশুকুঃশ্রোজবিবর্জিতঃ॥২৭॥

শ্রোতা দ্রকী গৃহীতা চ জবনস্ত্রংখরান্তর্কঃ।

কেন্থেত্যা ব্যতিরিক্তন্ত্রং নির্গুণো নিরুপাশ্রয়ঃ॥

হে প্রভা তিনামকে না জানিয়াই মূচ জনেরা পুল্র, দারা, গৃহা দিতে আশান্ত হইয়া তুঃগদায়ক সমস্ত বিষয়ে রমণ করিয়াথাকে। বাস্তবিক দেবরাজ ইন্দ্র জায়ি, যম, রক্ষ, বরুণ, বায়ু, কুবের, পুরু-মোত্তম নারায়ণ প্রভৃতি সমস্ত দেবতাগণই ডোমার অংশ প্রহণ করিয়া স্ফোদি কার্যা সম্পাদন করিতেছেন, এবং তুমি স্ক্রম হইতেও স্ক্রমতর ও স্কুল হইতেও স্কুলতর এবং সমস্ত লোকের মাতা পিতা ও ধাতা অর্থাৎ সমুদায় জীবকে সম ভাবে পালন করিতেছেন। হে রাম! তুমি আদি, মধ্য ও অন্তর্বহিত অব্যয় ও অচুচ্ছ, তুমি হন্ত, পদ, চক্ষু ও কর্ণ বিহীন অর্থাচ সকল বিষয়ই প্রবণ করিডেছ—দর্শন করিতেছ—প্রহণ করিছেছ এবং অরময়, প্রাণময়, মনময়, বিজ্ঞানময় ও আনন্দ্রময় প্রথ কোশ ব্যতিরিক্ত নিশ্তণ ও আধারান্তর রহিত।

নির্মিকপো নির্মিকারো নিরাকারো নিরীশবঃ।

যড়ভাবরহিতোহনাদিঃ পুরুব প্রাক্ততেঃ পরঃ॥ ২৯।

নারয়া গৃহ্যমাণস্তং মন্ত্রমা ইব ভাব্যদে।

ভাছো ডাং নির্গুণমজং বৈক্ষরা মোক্ষগামিনঃ॥৩০

অহং ছৎপাদস্থাক্তিনিশ্রেণীং প্রাপ্য রাঘব!।

ইক্ষামি জ্ঞানযোগাবং সৌধমারোচুমীশ্বর!॥৩১

নমঃ সীতাপতে! রাম! নমঃ কারুণিকোত্তম!।

রাবণারে! নমস্তভাং ত্রাহি মাং ভ্রমাগরাং॥ ৩২

ততঃ প্রসন্ত্রঃ প্রোবাচ শ্রীরামো ভক্তবংসলঃ।

বরং রণীযুভদ্রক্ষে বাঞ্ছিতং বরদোহস্মাইম্॥৩৩॥

বিভীষণ উবাচ।

ধন্যোহিশ্ম কৃতকৃত্যোহিশ্ম কৃতকার্য্যেহশ্মি রাঘব ট ত্রুপাদদর্শনাদের বিমুক্তোহিশ্মি ন সংশয়ঃ । ৩৪

হেরাম! তুমি নির্বিকশপ, বিকারশূনা, নিরাকার, নিরীধর ও প্রকৃতির যড ভাব রহিত, জনাদি প্রম পুক্ষ, তুমি মায়া দাব। গৃহ্যমাণ হইয়া মহয় তুলা ভাবনা করিয়া থাক, কিন্তু বৈশুবেরা ভোমাকে নিগুণময় জানিতে পারিয়া মোক্ষ প্রাপ্ত হয়। হে রাঘব! আমি ভোমার পাদপা্মে ভক্তিরপী আরোহিনী প্রাপ্ত হইরা জ্ঞান যোগরপ প্রাসাদে আরোহণ করিতে বাসনা করি। হে রাম! তুমি সীতাপতি—ভোমাকে নমস্মার করি—তুমি ককণাময় ভোমাকে নমস্মার করি—দে রাবণ শত্রো! ভোমাকে নমস্মার করি—আমাকে ভবসাগর হইতে পরিত্রাণ কর। ভক্তবংদল শ্রীরামচক্তা বিভীষণের বাক্য শ্রবণ প্রসাহ ইয়া কহিলেন—ভোমার মঙ্গল হটক— এক্ষণে ভোমার বাঞ্জিত বর, গ্রহণ কর ঘেহেতু আমি ভোমাকে বর প্রদান করিব। ২০। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯।

বিতীয়ণ কহিল—হে রাঘব! তোঁমার পাদপাম দশনে

नास्ति यहमहर्त्मा धरना नास्ति यहमहर्माः छि हिः ।
नास्ति यहमहर्त्मा लाक्ति द्वाम ! पृत्म द्विनर्गनाह ।।
कर्मावक्षविनामाम् पृत्र्मकानः छक्तिनक्षनम् ।
प्रम्यानः श्रद्मार्यः ह एम्हि स्य त्रपूनक्षन ! । ५७॥
न याद्व द्वाम ! द्वास्तिक ! स्वरं विषयमः छवम्।
पृष्शानक्षरत्व महास्त्र स्या । ५१॥
ध्विष्णुक्वा श्रूनः हीत्वा तामः त्वाचाह द्या ॥ ५१॥
ध्विष्णुक्वा श्रूनः हीत्वा तामः त्वाचाह ताक्षमम् ।
ध्विष्णुक्वा श्रूनः हीत्वा तामः त्वाचाह विवत्नाविनाम् ।
ध्विष्णुक्वा श्रुनः विवाद वमाम् विनाद वीवत्नाविनाम् ।
ध्विष्णुक्वा निवाद वमाम् व न महम्माः ॥ ७२॥
ध्वाषुः मर्त्वमा मास्तः मर्त्वकत्वावविक्वः ।
सार श्राष्ट्रा स्वाक्षात्र विवाद स्वावमः मात्रमावत्र ।

সেওি মেত ৎপঠে ছান্ত লিখেন্য: শৃণু রাদিপি।
মংগ্রী হয়ে মমাতী ইং সারূপ্য: সমবাপ্রু রাং ॥ ৪১॥
ইত্যুক্ত্বা লক্ষ্য পথে প্রাই জীরামো ভক্তভক্তিমান্।
পশ্য তিদানী মেবৈষ মম সক্ষর্শনে কলম্॥ ৪২॥
লক্ষারাজ্যেই ভিষেক্ষ্যামি জলমানর সাগরাং।
যাবক্ষমে স্থ্য ক্র যাবভিষ্ঠতি মেদিনী ॥ ৪৩॥
যাবক্ষম কথা লোকে তাবদ্যাজ্যঃ করোত্সো।
ইত্যুক্ত্বা লক্ষ্য গেবাস্থ্য হানায়্য কলশেন তম্॥ ৪২॥
লক্ষারাজ্যাধিপত্যার্থমভিষেকং রমাপতিঃ।
কারয়ামাদ স্টিবৈর্লক্ষ্য পেন বিশেষতঃ॥ ৪৫॥
সাধু সাধিতি তে সর্বের বানরাজ্য ইত্রুর্ভ্শম্।
স্থা গ্রাইপি পরিষ জ্যবিভীষ্ণম্থান্ত্রীৎ॥ ৪৬॥

তামি ধন্য হইলাম—কৃতকৃত্য হইলাম আমার মনোরথ
পূর্ণ হইল—এবং আমি বিমুক্ত হইলাম তাহাতে কোন সন্দেহ
নাই। হে রাম! তোমায় মূর্তি দর্শনে এই ত্রিভ্বন মধ্যে আমা
সদৃশ ধন্য নাই—আমা সদৃশ শুচি নাই এবং আমাতুল্য লোকও
নাই। হে রঘুনন্দন! সংসার-কর্ম বিনাশ হেতু আমাকে
ভক্তি লক্ষণ বিজ্ঞান ও তোমার পরমার্থ ধান প্রদান কর।
হে রাম, রাজেক্তা! আমি বিষয় সম্বলিত স্থম প্রত্যাশা করিনা
কেবল তোমার পাদামুক্তে আমার ভক্তি যেন সর্বাদাই নাশু
থাকে। প্রীরাম তাহার এই বাক্য শুনিরা প্রীভান্তঃকরণে
রাক্ষদকে কহিলেন।—হে ভক্তা! আমরা রহস্য কহিতেছি

আমি মন্তক শান্ত বীভরাগী যোগীদিগের হৃদর মধ্যে গীতার সহিত সর্বাদা বাদ করিয়া থাকি ভাহাতে কোন সন্দেহ নাই, সেই নিমিত্ত তৃমি সর্বা পাণ খূন্য ও জিতে ক্রিয় হুইয়া আমাকে ধান করিয়া ঘোর সংসার সাগর হুইতে মোক্ষ

লাভ করিতেছ—বে ব্যক্তি আমার স্থোত্ত পাঠ করে, লিংখ অথবা শ্রবণ করে সে আমার প্রীতি হেতু মমাভিলষিত সাযুত্য প্রাপ্ত হইরা থাকে। ভক্তবংসল শ্রীরাম এই প্রকার কহিরা লক্ষমণকে বলিলেন—এই বিভীষণ আমাকে সন্দর্শন করিয়াছে অভএব ইহার এছিক ফল দর্শন করে। এক্ষণে সাগার হইভে জলানয়ন কর আমি ইহাকে লক্ষা রাজ্যে অভিষেক করিব—যাবৎ কাল পর্যন্ত চন্দ্র, সুর্যাও পৃথিবী দেদীপ্যমান্ থাকিবে এবং আমার কথা প্রচার থাকিবে তাবৎ কালাবিধ বিভীষণ রাজ্য ভোগ ককক। অনন্তর লক্ষ্মণ কলশ পূর্ব জল আনয়ন করিলে লক্ষ্মীপতি রাম মহাত্মা লক্ষ্মণের সহিত একত্রিত হইরা সস্চিব বিভীষণকে লক্ষা রাজ্যে অভিষক করিলেন। বানর সমস্ত পরিতৃষ্ট হইরা ভাঁহাকে সাধুবাদ প্রদান করিছে লাগিল। অনস্তর স্থানীব ভাহাকে কহিল্—হে বিভীষণ।

বিভীষণ ! বয়ং সর্কে রামস্য প্রমাল্পন:। কিঙ্করাস্তত্ত্ব মুখস্ত্রং ভক্ত্যা রামপরিগ্রহাৎ। ৪৭। রাবণদ্য বিনাশে ত্বং সাহায্যং কর্ মহাসি। বিভীষণ উবাচ।

অহং কিয়ান সহায়ত্বে রামশু পর্মাত্মনঃ। কিন্তু দাস্যং করিষ্যেহং ভক্ত্যা শক্ত্যা ত্বমায়য়া॥ ৪৮ দশ্জীবেণ সন্দিষ্টঃ শুকো নাম মহাস্থারঃ। সংস্থিতো ছবরে বাক্যং স্থাবিমিদ্য ববীৎ ॥ ৪৯ ॥ মাবধিষ্টেতি রামস্তান্ বারয়ামাস বানরান্॥ ৫৫ ॥ ত্বামাহ রাবণো রাজা ভাতরং রাক্ষসাধিপঃ। মহাকুলপ্রস্তত্ত্ব রাজাসি বনচারিণাম। ৫০॥ মম ভাতৃদমানস্তং তব নাস্তার্পবিপ্লবঃ। অহং যদহরং ভার্য্যাং রাজপুজ্রস্তা কিন্তব ?॥ ৫১।

কিঞ্চিদ্ধাং যাহি হরিভিল্কা শক্যা ন দৈবতৈঃ। প্রাপ্তং কিং মানবৈর পাসত্ত্বৈধিনর মুখপৈ: ? ॥ ৫২ তং প্রাপরস্তং বচনং ভূর্ণমুৎপ্লাভ্য বানরাঃ। প্রাপদান্ত তদা ক্ষিপ্রং নিহন্তং দৃঢ়মুষ্টিভিঃ।।৫৩।। वानदेवर्रमानस्य शुरका वामग्याखवीए। न मृष्ठान् प्रस्ति রাজেন্দ্র ! বানরান্ বারয় প্রকো:। রামঃ শ্রুতা তদা বাক্যং শুক্সা পরিদেবিত্য। **भू**नवृत्रवामाना एकः सूखीवमवीर। ক্রহি রাজন ! দশগ্রীবং কিং বক্ষ্যামি ? ব্রজান্যহম সুত্রীব উবাচ।

যথা বালী মম ভাতা তথা তং রাক্ষসাধম !। হন্তব্যস্ত্রং ময়া যত্নাৎ সপুজ্রবলবাহন: । ৫৭ । '

আমরা সকলেই পরমাজা জীরামের কিন্ধর, তল্মধো তুমি প্রধান রূপে শ্রীরাম কর্তৃক পরিগৃহিত ছইরাছ, অতএব একণে বাবণ বিনাশের সাহায্য করা উচিত হইতেছে। ৩৯। ৪০। 1 28 3 8 3 8 1 8 8 1 8 8 1 5 8 1 5 8 1 5 8 1

বিভীষণ কহিলেন--অপমি পরমাত্মা জীরামচল্ডের কি দাহায্য করিব ? কেবল যথা ভক্তি ও শক্তি দ্বারা অকপটরপে তাহার দাসাত্মত্তি করিব। ইত্যবস্থে ওক নামক মহাস্থ্র দ্রশানন কর্ত্তক প্রেরিড ছইয়া আকাশ পথে অবস্থান পূর্বক প্রতীবকে কহিতে লাগিল—গ্রাক্ষণাধিপতি রাবণ তোমাকে বলিরাছেন যে, তুমি মহন্তংশ সম্ভূত বালবদিগের রাজা, আমার লাত তুল্য, আমা কৰ্ক তোমার অর্থনাশ নাই, তবে আমি ষে রাজপুত্রের ভাষাপিছরণ করিয়াছি তাহাতে তোমার কি হট্যাছে? তুমি বানরদিগের সহিত কিছিকাার প্রত্যা-

গমন কর। কারণ দেবতারাও লক্ষা জন্ম করিতে সক্ষম নঙ্গে তবে অত্যপে বল-যুক্ত বানর-যুগপ দহ একত হটয়া মানব কি প্রকারে লক্ষা জয় করিবে ? শুকের বচন প্রবণ করিরা বানর সকল উল্লম্ফন পূর্ব্বক মুফ্ট্যাঘাভ ছারা ভাছাকে বিনাশ করিতে উদ্যত হইল। অনন্তর শুক বানরগণ ছারা বিনষ্ট হইতে দেখিয়া রামকে বলিল—হে রাজেন্ড ! দৃত অবধা, অত-এব প্রভো! বানরগণকে নিবারণ করুন। • জীরামচন্দ্র তাহার বাক্য শ্রবণ করিয়া উদ্যত-স্বভাব বানর সকলকে নিরুত্ত করিলেন, শুক আকাশ পথে পুনরায় গমন করিয়া স্থাবিকে কহিল—হে রাজন ! আমি এখনই গমন করিব, অভএব দশা-ननत्क कि विनिव ? । १४ म । १२ । १० । १८ । १८ । १८ । १८ । 1001001

স্তাীৰ বাঙ্গছলে কছিল—ছে রাক্ষ্পাধ্য ! বেমন বানী আমার ভ্রাতা তুমিও সেইরপ—এবং আমাকর্তক তুমি ও সপুত্র

ক্রহি মে রামচন্দ্রস্য ভার্যাং হৃত্য ক যাস্যাস ?
ততো রামাজ্বরা ধৃত্য শুকং বদ্ধান্বরক্ষরং ॥ ৫৮ ॥
শাদু লোহপি ততঃ পূর্বেং দৃষ্ট্য কপিবলং মহৎ।
যথাবৎকথয়ামাস রাবলায় স রাক্ষরং ॥ ৫৯ ॥
দীর্ঘচিন্তাপরো ভূত্য নিঃশ্বসন্ত্রাস মন্দিরে ।
ততঃ সমুদ্রমাবেক্ষা রামো রক্তান্তলোচনঃ । ৬০ ।
পশ্য লক্ষন ! দুটোহসৌ বারিধির্মামুপাগতম্ ।
নাতিনন্দতি ছুন্টাত্মা দর্শনার্থং মমানঘ ! । ৬১ ।
জানাতি মানুমোহরং মে কিং করিষ্যতি বানরৈঃ ?
অদ্য পশ্য মহাবাহো! শোষ্মিষ্যামি বারিধিম ॥
পাদেনৈব গমিষ্যন্তি বানরা বিগতজ্বাঃ ।
ইত্যুক্ত্বা ক্রোধতান্তাক্ষ আরোপিতধন্ধরঃ ॥ ৬০।
তূলীরাদ্বান্মাদায় কালাগ্রিসদৃশপ্রভম্ ।
সক্ষায় চাপমাক্ষয় রামো বাক্ষেথাব্রবীৎ ॥ ৬৪ ॥

পশান্ত সর্বভ্তানি রামস্য শর্কিক্রমন্।

ইদানীং ক্রমসাৎকুর্যাং সমুদ্রং সরিভাশ্পতিম্ ।৬৫

এবং ব্রুবতি রামে তু স শৈলবনকাননা।

চচাল বস্থাদৌশ্চ দিশশ্চ তমসারভাই।।৬৬।।

চুক্কুভে সাগরো বেলাং ভ্রাদ্যোজনমত্যগাং।

তিমিনক্রবা মীনাঃ প্রতপ্তাই পরিতন্তস্তই। ৬৭।

এতিমিন্নক্রবা মীনাঃ প্রতপ্তাই পরিতন্তস্তই। ৬৭।

এতিমিন্নক্রবা মীনাঃ প্রতপ্তাই পরিতন্তস্তই। ৬৭।

এতিমিন্নক্রবা মীনাঃ প্রতপ্তাই পরিতন্তস্তই। ৬৭।

ক্রিয়াভরণস্পান্ন: স্বভাস্য ভাসান্ন দিশই।।৬৮।।

সাস্ত্রদিব্যরত্বানি করাভ্যাং পরিগৃষ্ঠ সঃ।

পাদয়োঃ পুরতই ক্রিপ্তা রামস্যোপান্ননং বহু। ৯৯

দশুবৎপ্রণিপত্যাহ রামং রক্তান্তলোচনম্।

ন্তাহি ন্রাহি ক্রগন্তার। বাম! বৈলোক্যরক্ষক!।

ক্রিভাইং রাম! তে সৃষ্টঃ সূজ্তা নিবিলং জগং।

স্বভাবমন্যথা কর্তুং কই শক্তো ং দেবনির্মাতম্।

স্বভাবমন্যথা কর্তুং কই শক্তো ং দেবনির্মাতম্য

দশপ্রীব বিনাশ যোগ্য—হে শুক, তুমি রামচন্দ্রের ভার্য্যাপ-হরণ করিয়া কোথায় যাইবে। অনস্তর জ্ঞীরামের আদেশ অনুযায়ী স্থ গ্রীব বানরদিগের দাগে তাহাকে বিনাশ করিলেন। অনস্তর শাদ্দূলও বছতর কপি দৈন্য দর্শন করিয়া রাবণকে যথায়থ বলিয়া যায় পর নাই চিস্তাপরতন্ত্র হইল। ৫৭। ৫৮।

অনন্তর জ্ঞারামচ্জ সমুদ্রাবলোকন করিয়া আরক্তলোচনে
লক্ষণকে বলিলেন—দেথ লক্ষ্মণ, ঐ হুন্তীআ, পাপিন্ট বারিধি
মন্দর্শনার্থ সন্নিকটবর্ত্তী হইয়াও আমার অভিনন্দন করিতেছে
না যেহেতু সে কুভনিশ্চয় হইয়াছে বে ঐ মানব বানর সহিভ
মিলিত হইয়া আমার কি করিতে পারিবে? হে মহাবাহেণ!
আমি অদ্য বারিধি শোষণ করিব এবং বানরগণ পদত্রজ্ঞেই
লক্ষায় গমন করিবে, ইহা বলিয়া শ্রীরাম ক্রোধে লোহিত
লোচন হইয়া কালাগ্রিমূর্ত্তি পরিগ্রহণানস্তর তুণীর হইতে বাণ

তাহণ করিয়া ধহকে জ্ঞারোপ করিয়া কহিলেন—সমস্ত জীব রামের শর বিক্রম দর্শন কৰুক আফ সরিৎপতি সমুদ্রকে ভক্ষ সাৎ করিয়া, শ্রীরামচন্দ্র এইরূপ বিলয়া শরসন্ধানজনা চাপা-কর্ষন করিলেন বন, পর্বত, স্বর্গ ও মর্ত্ত কম্পমান এবং দশ-দিক ভমসাচ্ছন্ন ছইল—সাগার ভয়প্রযুক্ত যোজনপর্যান্ত শুদ্দ হইলে তিমি নক্রাদি মৎস্য সমস্ত পরিভপ্ত ছইয়া জল হইডে বহির্গত ছইল। কিয়ৎক্ষণ পরে সাগর স্বয়ং দিব্য রূপধারী, দিব্যাভরণ ভূষিত হইয়া জ্ঞীরামচন্দ্রের জন্য নানাবিধ রত্তাদি উত্তোশমপূর্বাক স্বছন্তে গ্রহণ করণানস্তর ক্রোধাক্তলোচন রামচন্দ্রকে প্রাথিত করিয়া কহিল—ত্রিলোক রক্ষক রাম! পরিত্রাণ করুন, ছে রামচন্দ্র! এই নিধিল ক্লগৎ ভোমারই স্থাইবস্তা, স্কভরাং আমি ক্লভপদার্থ অভএব দেবনিন্দ্রিত স্বভাব অন্যথা করিতে কে সমর্থ ছইভে পারে? পঞ্চভূত বিশিষ্টভূল- স্কানি পঞ্চতুতানি জড়ান্যের স্বভাবতঃ।
স্কানি ভবতৈতানি ত্বনজাং লক্ষ্যন্তি ন।। ৭২।
ভামসাদহমো রাম। ভূতানি প্রভবন্তি হি।
কারণান্তগমান্তেষাং জড়ত্বং তামসং স্বতঃ॥ ৭৩।
নিপ্ত ণত্তং নিরাকারো ষদা মায়াগুণান্ প্রভো!।
লীলয়াঙ্গীকরোষি ত্বং তদা বৈরাজনামনান্। ৭৪
গুণাস্থানো বিরাজণ্চ সন্ত্বাদ্দেবা বভূবিরে।
রজোগুণাং প্রজেশাদ্যা মন্যোভূতপতিস্তব ॥৭৫॥
ভামহং মায়য়া চ্ছয়ং লীলয়া মানুষাকৃতিম্। ৭৬।
জড়বুদ্ধির্জিড়ো মূর্যঃ কথং জানামি নিপ্ত ণম্?।
দশু এব হি মুর্খাণাং সন্মার্গপ্রাপকঃ প্রভো!॥ ৭৭
ভূতানামমরশ্রেষ্ঠ। পশ্নাং লপ্তড়ো যথা।
শরণং তে ব্রজামীশ। শরণ্যং ভক্তবৎসল!।
জভরং দেহি মে রাম! লঙ্কামার্গং দ্বানি তে ॥ ৭৮

পদার্থ সমস্ত স্থালাবিকই জড়, অতএব তোমার স্থিটিসমূহ ছোমার দড় জ্বপ আজ্ঞা কথনই লজ্ঞ্যন কবে না—ছে রাম্! পদার্থ নিচৰ প্রথমতঃ তামসারত থাকিরা অহঙ্কারে প্রমত হয় প্রতাং কাষ্যগুণাসুরোধে জড়ত্বরূপ অহঙ্কার স্থভাবতই উৎপার হয়—হে প্রভো! তুমি নিগুণ ও নিরাকার হইরা লীলা হারা মায়া গুণসমস্ত প্রকাশ করিবাছ—তোমার সন্ত্ঞ্যণ হইতে দেবতা সকল, রজগুণ হইতে সনকাদি প্রজেশ সমস্ত এবং তম হইতে সংহার কর্তা ক্রজ উৎপার হইরাছেন—আমি নায়া হারা আছের এবং তুমি লীলা প্রযুক্ত মানবরূপী হইরাছ, আমি জড়বুজি—মূর্থ, তুমি নিগুণ, আমি তোমাকে কিরপে ভানিব—হে প্রতো! সৎ পথ প্রশ্বকি—তুমি মূর্ণদিবার দণ্ড স্কর্মণ —হে সর্ব্ব প্রাণি ও অমরগণশ্রেষ্ঠ, জ্বাদীশ্বর রাম!

এীরাম উবাচ

অমোঘোহরং মহাবাণঃ কম্মিন্দেশে নিপাত্যতাম।
লক্ষং দর্শর মে শীব্রং বাণস্থামোঘপাতিনঃ ॥ ৭৯॥
রামস্থ বচনং প্রুড়া করে দৃষ্ট্রা মহাশরম্।
মহোদধির্মহাতেজা রাঘবং বাক্যমন্ত্রবীৎ ॥ ৮০॥
রামোজরপ্রদেশে তু ক্রুমকুল্য ইতি প্রুড়:।
প্রদেশস্তন্ত বহবং পাপাত্মানো দিবানিশ্য ॥৮১॥
বাধস্কে মাং র ! তত্ত্ব তে পাত্যভাং শরঃ।
রামেণ সৃষ্টো বাণস্ক ক্ষণাদাভীরমপ্রসম্ ॥৮২॥
হত্বা পুনঃ স্মাগত্য তুলীরে পুর্ববং স্থিতঃ।
তত্তোহন্ত্রবীদ্রঘুশ্রেষ্ঠং সাগরো বিনয়াস্থিতঃ ॥ ৮৩॥

শীত্র লক্ষ্য দর্শন কর—ইহা কোন্ দেশে দিপতিত হইরা ইহার অমোঘ বল প্রকাশ করিবে ? মহাতেজা বারিধি শ্রীরাম বাক্ষ প্রবাধনতার রাম হত্তে মহাশর দর্শন করিয়া কহিল—হে রাম ! উত্তর দেশে ক্রমকুল্য নামক প্রদেশ আছে সেখানে অনেক পাপাত্মা আমাকে ক্লেশ প্রদান করে অতএব হে রঘুন্তেন্ত ভূমি শর সেই দিকে পরিত্যাগ কর।

অনন্তর রামশর আভির মণ্ডল সমূহ বিনাশ করিরা পুনরা-গামন পূর্বক তৃণীর মধ্যে পূর্ববিং অবস্থিত হইল। অনন্তর সাগর নলঃ সেতৃং করোত্বশিন জলে মে বিশ্বকর্মণঃ।
মতে ধীমান্ সমর্থাহশিন্ কার্য্যেলকবরে হরিঃ॥
কীর্ত্তিং জানন্ত তে লোকাঃ সর্বলোকমলাপহাম্।
ইত্যুক্ত্বা রাঘবং নতা যযৌ সিন্ধুরদৃশ্যতাম্ তি দি
ততো রামস্ত স্থ্রীবলক্ষণাভ্যাং সমন্থিতঃ।
নলমাজ্ঞাপয়চ্ছীদ্রং বানরৈঃ সেতৃবন্ধনে।। ৮৬॥

ততোঃ তিহ্ন ইঃ প্লবগেক্র যূথপৈমহানগেক্ত প্রতিষ্যুতোহনলঃ।
ববন্ধ দেওুং শতযোজনায়তং
মুবিস্তৃতং পর্বতপাদপৈদৃ দিম্॥ ৮৭॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
যুদ্ধকাণ্ডে ভৃতীয়োহধ্যায়ঃ।

বিনয়াবনত হইয়া রাখবকে কহিল—বিশ্বকর্মার ধীশক্তি সম্পর পুত্র ব্রহ্মার বর দারা দেতু বন্ধন কার্য্যে দক্ষতা প্রাপ্ত হইয়াছে, অতএব সে আমার এই জলে দেতু বন্ধন করুক, বোক সমস্ত তোমার সন্ধলোক পাপছারিণী কীর্ত্তি অবগত হউন, সির্ এইস্কপ বলিয়া জীরামকে প্রণাম করত অন্তর্মান হইলে জীরাম লক্ষণ ও স্থ্রীব সমাস্কত ছইয়া নলকে কহিলেন তুমি বাদর সক্ষে মিশিত ছইয়া সেতু বন্ধন কর। ৩ৎ শবণে বানবেন্দ্র নল সাভিশয় তুইটাতঃকরণ ছইয়। নহাপর্কতিগভিমুক্ত গমন করিয়া পর্বতত্ত্ব পাদপ সমূহের সহিত বহুন পুর্বেক স্বিস্তিত শত্থোজনায়ত সেতু বন্ধন করিল। ১৮৮০ ৮১। ৮২। ৮২। ৮৬। ৮৬। ৮৬।

ইতি জ্ঞানদধ্যাত্মরামারণে উন্নত্তংখন ১৫০০ যুদ্ধকান্ডে ভৃতীরোংধ্যারন

চতুৰ্থো>ধ্যায়ঃ।

সেতৃমারভমাণস্ত তত্ত্র রামেশবং শিবম্। সংস্থাপ্য পুজয়িত্বাহ রামে। লোকহিতার চা ১ । প্রাণমেৎ সেতৃবন্ধং যো দৃষ্ট্রা রাল্পের শিবম্। ব্রহ্মহত্যাদিপাপেভ্যো মুচ্যতে মদমুগ্রহাৎ ॥ ২ ঃ

সেতু বন্ধন কাৰ্য্য আরম্ভ ছইলে **জ্ঞানাচন্দ্ৰ সৰ্ক্ষো**ক বিশিলেন যে ব্যক্তি সেতৃবন্ধ রামেশ্বর শিবকে দশন করিয় ছিত কামনায় রামেশ্বর শিব সংস্থাপন পুর্কাক পূজা করিয়া। প্রণাম করিবে সে আমার অনুগ্রহ ফেডু এফ ছতা। পাপ সেতৃবন্ধে নরঃ স্বাড়া দৃদ্যা রামেশ্বং হরম্
সঙ্গণনিয়ভো ভূড়া গড়া বারাগদীং নরঃ ॥ ৩ ॥
আনীয় গঙ্গাদলিলং রামেশমভিষিচ্য চ ।
সমুদ্রে ক্ষিপ্তভারো ব্রহ্ম প্রাপ্রোভাদংশয়ম্॥ ৪
কুতানি প্রথমেনাক্ষা যোজনানি চতুর্দশ
ছিতীয়েন তথা চাক্ষা যোজনানি তু বিংশভিঃ ।
ভূতীয়েন তথা চাক্ষা যোজনানে তু বিংশভিঃ ॥৫॥
চতুর্বেন তথা চাক্ষা ঘারিংশভিরিভি প্রচহম্ ॥ ৬ ॥
পঞ্চমেন ব্রয়োবিংশদ্যোজনানি সমস্ততঃ ।
ববন্ধ দাগরে দেতুং নলো বানরসন্তমঃ ॥ ৭ ॥
ভেনৈব জগ্মঃ কপয়ো যোজনানাং শতং জতম্
অসপ্যাতাঃ স্থাবলাদিং ক্রপ্তঃ প্রবগোত্তমাঃ ॥৮ ॥
আরহ্য মাকভিং রামো লক্ষাণোচপাঞ্চদং তথা ।
দিদুক্ষু রাঘ্রো লক্ষামাক্রবাহাচলং মহৎ ॥ ৯ ॥

দৃষ্ট্বা লক্ষাং স্থবিন্তীনাং নানাচিত্রপ্বজাকুলাম্।
চিত্রপ্রাসাদসম্বাধাং স্বর্ণপ্রাকারতোরণাম্ ॥ ১০ ॥
পরিশাভিঃ শভদ্মীভিঃ শংক্রমিশ্চ বিরাজিতাম্
প্রাস্পদোপরি বিস্তীর্ণপ্রদেশে দশকন্ধরঃ ॥ ১১ ॥
মান্ত্রভিঃ সহিকো বীরৈঃ কিরীটদশকোজ্জ্লাঃ ।
নীলাদ্রিশিখরাকারঃ কালমেঘসমপ্রভঃ ॥ ১২ ॥
রত্ত্বদথিঃ সিতচ্ছত্রৈরনেকৈঃ পরিশোভিতঃ ।
এতন্মিমন্তরে বদ্ধো মুক্তো রামেণ বৈ শুকঃ ॥ ১১
বানরৈস্তাড়িতঃ সমাক্দশানমমুপাগতঃ ।
প্রাহ্বমন্তরারণঃ প্রাহ্ব পীজ্তিঃ কিম্পরৈ ইশুকঃ ।১৪॥
রাবণস্থ বচঃ শ্রুদ্বা শুকো বচনমন্ত্রীৎ
সাগরস্যোক্রে তীরেইক্রবস্থে ব নং ব্রুদ্বা ১৫
তত্ত উৎপ্লাভ্রে কপ্রো গৃহীত্বা মাং ক্ষণ ব্রুদ্বা ১৫

হইতেও মোচন হইবে। যে নর শেতুৰকে স্মান করিয়া বামেগর শিবকে দর্শন করে এবং ছির চিত্ত ছইয়া বারাণসী গমন পূর্বক গঙ্গাজল আনেয়ন করত রামেশ্বকে অভিষেক করিবে দে নিশ্চয়ই পার্ম প্রক্ষা প্রাপ্ত ছইবে ।১।২।৩।৪।

বানর সন্ত্রম নল প্রথম দিবসে চতুর্দশ যোজন, বিতীয় দিবসে বিংশতি যোজন, তৃতীয় দিবসে একবিংশতি যোজন, চূর্ত্ব দিবসে ছাবিংশতি বোজন, পঞ্চম দিবসে এয়োবিংশতি বোজন সেতৃ বন্ধন করিল। কপিগণ তাহাছারা শত যোজন গমন করিল এবং অসংখ্য বানরশ্রেষ্ঠ ত্রিকূট পর্বত আচ্ছন্ন করিয়া কেলিল। ৫। ৬। ৭।৮।

জনস্বর শ্রীরাম মাক্তি ক্ষকে এবং লক্ষ্মণ অঙ্গদেশপরি

আরোহণ পূর্বেক মহাচলে অধিক্লত্ হইরা লক্ষাপ্ত লগবিদশন করিতে লাগিলেন—বহু বিস্তৃতা, নানাবিধ চিঞ্জানত প্রকল্প প্রতাকার উড্ডীয়মানা, বিবিধ চিত্রিত প্রায়াদ ও স্থা প্রাকার যুক্ত সিংহ দার সম্বলিতা, পরিশা, শতরী ও দোপান বিরাজিতা লক্ষাপুরী অবলোকন করণানন্তর দোখলেন হে, অতি বিস্তৃত প্রায়াদ প্রদেশে নীলাদ্রি শিবরাকার, ঘোর কাদদ্বিনী প্রভ নিক্ষানন্দন দশানন দশান বিভাগ উজ্জল কিরীট পরিধান করত রত্ত্ব দশু ও অনেক শ্রেড্রত্র দ্বারা পরিশাভিত হইরা মহাবীর মিজিস্ট উপবেশন ক্রিণ আছে। ইত্যবস্বে রাম-মুক্ত ভক বানর তাড়িত ইইরা বদ্ধানী পূর্বিক উপগতি ইইলে দশানন হাসিতে হাসিতে কহিল—হে শুক্ত কেছ কি ভোমাকে পীডন করিয়াছে?। ১০০১৪।

শুকু রাধন বাক্য শ্রবণ করিরা বলিল—সাপ্তরের উত্তর তীবে

মৃথিভির্নখদদৈশত হন্তং লোপ্তং প্রচক্রম্য ।
ততো মাং রাম ! রক্ষেতি ক্রোশন্তং রঘুপুঞ্ব । ১৬
বিস্কাতামিতি প্রাহ বিস্কৌহহং কপীশ্বরৈ: ।
ততোহমাগতো ভীত্যা দৃষ্টা তদ্ধানরং বলম্ ॥ ১৭ ।
রাক্ষদানাং বলে ঘন্ত বানরেন্দ্রবলম্ভ চ ।
নৈতরোর্বিদ্যতে সন্ধিদে বদানবরোরিব ॥ ১৮ ॥
পুরপ্রাকারমায়ান্তি ক্ষিপ্রমেকতরং কুরু ।
সীতাং বাব্দে প্রথছান্ত মুক্ষং বা দীয়তাং প্রভো!
মামাহ রামন্তং ক্রহি রাবণং মদ্বচঃ শুক ! ।
যদ্ধাং চ সমাপ্রিত্য সীতাং মে ক্রতবানসি ॥ ২০ ॥
তদর্শার মথাকামং সন্ধৈন্যঃ সহ বান্ধবঃ ।
শ্বঃকালে নগরীং লক্ষাং সপ্রাকারাং সতোরণাম্ ।
রাক্ষমং চ বলং পশ্য শরৈবিধংসিতং ময়া ।
থোরব্রোধ্যহং মোক্ষ্যে বলং ধারয় রাবণ ! ॥ ২২

উপস্থিত হইরা কথা কহিবামাত্র কপিগণ উল্লফন পূর্ব্বক ক্ষণকাল মধ্যে আমাকে আক্রমণ করত মুফি ও নখ দন্ত বারা হলন
করিতে উপক্রম করিলে—অনস্তর আমি হা রাম, হা রঘুনন্দন
বলিরা চীৎকার করিলে। শ্রীরাম আমাকে বিমোচন করিতে
আদেশ প্রদান করিলেন কপিগণ আমাকে মুক্ত করিরা দিল—
পরে সেই সমস্ত বানর সৈন্য অবলোকম করিরা ভীভান্তঃকরণে আগমন করিয়াহি, একণে রাক্রস ও বানর সৈন্য
পর্যাবেক্ষণ করিয়া বুঝিলাম বে, যেমন দেব ও দানবদিগের
দন্ধি কথনই নাই সেই রূপ ইহাদিগের মধ্যে সন্ধি কখনই
হইতে গারে না। রাম সসৈন্যে পূর্ব্ব প্রাকার সমীপবর্ত্তী
হইতেহেন অতএব যত শীস্ত্র পারেন মৃক্ষ সক্ষা করন, না

ইত্যুক্তোপররামাধ রাম: কমললোচন:।

একস্থানগতা যত্ত্ব চন্থার: পুরুষর্যভা:॥ ২৬॥

শ্বীরামো লক্ষণশৈচর মুগ্রীবশ্চ বিভীষণ:।

এত এব সমর্থান্তে লক্ষাং নাশরিজুং প্রভো!॥ ২৪
উৎপাট্য ভশ্মীকরণে সর্বে ভিষ্ঠন্ত বানরা:।

তক্ত যাদৃগ্রলং দৃষ্টং রূপং প্রহরণানি চ॥ ২৫
বিধিয়তি পুরং সর্বাং একস্থিন্ঠন্ত তে ত্তর:।

পশ্য বানরসেনাং ভামসংখ্যাতাং প্রপূরিভাম্।২৬
গর্জন্তি বানরান্তত্ত্ব পশ্য পর্বতসন্নিভা:।

ন শক্যাক্টে গণরিজুং প্রাধান্যেন ত্রবীমি তে॥ ২৭
এব যোহভিমুখো লক্ষাং নদন ডিইতি বানর:।

যুধপানাং সহস্রাণাং শতেন পরিবারিজ:। ২৮
মুগ্রীবসেনাধিপতিনীলো নামাগ্রিনশ্বন:।

এব পর্বতশৃক্ষাভ: পদ্মিকঞ্জক্ষসন্নিভ:। ২৯।

হয় রামকে সীতা সমর্পণ ককন—রাম আমাকে বলিয়াছেন যে, হেশুক! তুমি রাবণকে বলিও যে, তুমি বে সৈন্যাশ্রম করিয়া আমার সীতাকে ছরণ করিয়াছ যথেচচুক ছইয়া সৈন্য ও বান্ধব সহিত ভাছা সন্দর্শন করাও—হে রাবণ! দেখ আমি খোর রাগ পরিত্যাগা করিয়া প্রাতঃকালে ভীর ও প্রাচীর বেষ্টিত লক্ষা নগরী এবং রাক্ষ্য বল বিনাশা করিব, রাম এই বলিরা নিবৃত্তি হইলেন। হে প্রভো! ব্রীরাম, লক্ষ্মণ, স্থাীব ও বিভীষণ এই চারি পুরুষ সিংছ যখন একত্রিত হইরাছে তখন তাছারা লক্ষা বিনাশ করিতে সমর্থ হইরাছে—এবং শ্রীরামের মেরূপ বল ও প্রহরী দর্শন করিলাম তাহাতে বানরগণ লক্ষা উৎপাইন করিয়া দন্ধ করিছে সমুৎস্কক ছইরা আছে। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২০। ২৪। ২৫।

তাহাৰা ভিন জনে একত্ৰ হইয়া থাকুক তাহা হইলে সমস্তই কাৰ্য্য সকল হইবে। এক্ষণে অ্যাণ্য বানর সৈন্যে পরিপূণ ক্ষেটিয়ত্যভিশংরকো লাঙ্গুলং চ পুনঃ পুনঃ।

যুবরাজাইঙ্গদো নাম বালিপুজোইভিবীর্য্যবান্ ॥৩০

যেন দৃষ্ট্যা জনকজা রামস্তাভীব বল্লভা।

হনুমানেষ বিক্ষাভো হতো যেন ভবাল্মজঃ ॥ ৩১

শ্বেতো রজভদস্কাশো মহাবুদ্ধিপরাক্রমঃ।
ভূর্ণং সুগ্রীবমাগম্য পুনর্গ ছিভি বানরঃ ॥ ৩২ ॥

যন্তেম নিংহদস্কাশঃ পশ্যভ্যভুলবিক্রমঃ।
রন্তো নাম মহাসত্ত্বো লঙ্কাং নাশয়িতুং ক্রমঃ ॥৩৩

এম পশ্যভি বৈ লঙ্কাং দিধক্ষন্ত্রিব বানরঃ।
শরভো নাম রাজেন্দ্র! কোটিযুপপনারকঃ ॥ ৩৪ ॥

পনসক্ষ মহাবীর্যো মৈন্দ্রক্ষ দ্বিদন্তথা।
নলক্ষ সেতুকত্র (মে) বিশ্বকর্মস্রভো বলী। ৩৫

বানরাণাং বর্ণনে বা সংখ্যানে বা ক ঈশ্বরঃ।

শূরাং সর্ব্রে মহাকারাং সর্ব্রে বুদ্ধাভিকাজিক্রণঃ।৩৬

হইরাছে অবলোকন কর—দেখ ঐ পর্বত সমিহিত বানর সমূহ গর্জন করিতেছে, আমি বলিতেছি তোমার কেইই সেধানে যাইতে সক্ষম নহে; পর্বত শৃঙ্গ সদৃশ উচ্চ ও পদ্মকিঞ্লাক-প্রভ ঐ স্থ্যীব সেনাধিপতি মহাবলশালী যুবরাজ্য অক্ষদ বারম্বার ভূপৃঠে লাসুল আঘাত করিতেছে—ঐ দেখ মহাধীশক্তি সম্পন্ন অতুল বিক্রমশালী যে বানর স্থ্যীব সমীপে শীস্ত্র আদিয়াই পুনর্বার গমন করিতেছে উহার নাম স্বেত, দেখ দেখ ঐ সেংহ সদৃশ মহাবলশালী বানর সমস্ত অবলোকন করিতেছ ও সর্বপ্রধান কছা বিনাশ করিতেও সক্ষম উহার নাম রম্ভ—ঐ দেখ যে বানর দিক সমস্ত দগ্ধ করিতেছে ও গেলী যুখপের নায়ক উহার নাম শারভ—মহাবলশালী পনশ, মৈন্দ, দ্বিদিদ, এবং মহাবলী বিশ্বকর্মার পুক্ত নল প্রভৃতি বানরদিগের বল বর্ণন করিতে বা সংখ্যা করিতে কোন্ ব্যক্তি সমর্থ হইবে—ভাহারা সকলেই মহাকায় ও মহাশ্র যুদ্ধ করিতে

শক্তাঃ সর্ব্বে চুর্ণয়িতুং লক্ষাং রক্ষোগলৈ সহ।

এতেষাং বলসংখ্যানং প্রত্যেকং বচ্মি তে শৃণু ॥

এষাং কোটিসহস্রাণি নব পঞ্চ চ সপ্ত চ।

তথা শঙ্খাসহস্রাণি তথারু দশতানি চ।। ৩৮।।

মুগ্রীবসচিবানাং তে বলমেতৎপ্রকীতি তম্।

অন্যেষাং তু বলং নাহং বক্তৃং শক্তোহিম্ম রাবণ

রামো ন মানুষঃ সাক্ষাদাদিনারায়ণঃ পরঃ।

সীতা সাক্ষাজ্জগক্ষেতু শিচছেক্তির্জ্জগদান্মিকা॥ ৪০॥

তাভ্যামেব সমুৎপন্নং জগৎ স্থাবরজঙ্গ নম।

তত্মাদ্রামশ্চ সীতা চ জগতন্তম্ভু বশ্চ তৌ॥ ৪১॥

পিতরৌ পৃথিবীপাল! তয়োবৈরী কথং তবেং ?

অজানতা ত্রা নীতা জগম্মাতৈব জানকী। ৪২।

ক্ষণনাশিনি সংসারে শরীরে ক্ষণভঙ্গরে।

পঞ্চতুতাত্মকে রাজন্ / চতুর্ব্বিংশতিভত্ত্বকে। ৪৩।

অভিলাষী, লকা ও রাক্ষদগণকে চূর্ণ করিতে সক্ষম—একণে তাহাদের প্রত্যেক সংখ্যা বর্ণন করিতেছি প্রবণ কর—ইছাদিগের কোটি সহস্র নব, পঞ্চ, সপ্তা, শব্ধ ও অর্কাদ সহস্র সেনা
বল আছে স্থাবি সচিবদিগের দৈন্য বল কছিলান, কিন্তু ছে
রাবণ! অন্য সমস্তের বল অগাণ্য অতএর বলিতে অসক্ষম।
শ্রীরামচন্দ্র মাত্রর নহেন তিনি সাক্ষাৎ পরম পুরুষ আদি নারারণ—সীতা জগৎ স্বরূপা সাক্ষাৎ আদ্যাশক্তি—তদ্বারাই স্থাবর
ও জক্ষমাত্মক সংসার সমুৎপন্ন হইয়াছে। ছে পৃথিবীপাল!
সেই মাতা পিতার কিরপে শক্ত ছইবে? তুমি না জানিরাই
জগন্মাতা প্রানকীকে আন্যান করিয়াছ—হে রাজ্ঞন্! এই
কণ-বিশ্বংশি সংসারে ও ক্ষণভক্ষ্র দেহ মধ্যে মূল প্রকৃতি
মহৎ অহক্ষার মনঃ পঞ্চন্দাত্র, পঞ্চজানেন্দ্রির, পঞ্চক্ষেন্দ্রির,
পঞ্চমহাতৃত এই চতুরিংশতি প্রকার তন্ত্ব অবস্থিত আছে,

বৈবাস্থা ব্যতিবিক্তম্য কামে তব ক্ষড়ালকে ?। ৪৪

যৎকৃতে ব্রহ্মহত্যাদিপাতকানি কৃতানি তে।
তোগভোক্তা তু যো দেহং স দেহোহত্ত পতিষ্যতি
পূল্যপাপে সমায়াতো জীবেন সুখছুংখয়োঁঃ।
কারণে দেহযোগাদিনাত্মন কুরুতোহনিশম,। ৪৬

যাবদেহোহমি কর্ত্তামীত্যাত্মাহং কুরুতেহবশং।
অধ্যাসান্তাবদেব স্যাজ্জম্মনাশাদিসত্তবং ॥ ৪৭ ॥
তত্মাত্ত্বং তাক দেহাদাবভিমানং মহামতে!।
আত্মাতিনির্মালং শুদ্ধো বিজ্ঞানাত্মাচলোহব্যয়ং।৪৮
স্যাজ্ঞানবশতো বন্ধং প্রতিপদ্য বিমুক্তি।
তত্মাত্বং শুদ্ধভাবেন জ্ঞাত্মানং সদা স্মর।৪৯।
বিরতিং ভক্ষ সর্বত্র পুজ্ঞদারগৃহাদিয়।
নিরয়েষ্পি ভোগং স্থাচ্ছু সুকর্তনাবপি। ৫০।

দেহং লবধা বিবেকাতাং দ্বিজ্বন্থ চ বিশেষতঃ।
তত্ত্বাপি ভারতে বর্ষে কর্মভূমৌ স্থাদুর্মভ্রম। ৫১।
কো বিদ্বানাতাুসাৎকৃত্বা দেহং ভোগান্থগো ভবেৎ
অভন্তঃ ব্রাহ্মণো ভূত্বা পৌলন্তাতনয়ন্চ সন্। ৫২।
অজ্ঞানীব সদা ভোগানসুধাবসি কিং মুধা?।
ইতঃ পরং বা তাক্ত্বা দং সর্মসঙ্গং সমাশ্রয়। ৫৩।
রামমেব পরাত্যানং ভক্তিভাবেন সর্মদা।
সীতাং সমর্পা রামায় তৎপাদানুচবো ভব। ৫৪।।
বিমুক্তঃ সর্মপাপেভ্যো বিষ্ণুলোকং প্রান্মান।
নো চেদ্র্রামিষ্যসেইধাধঃ পুনরায়্তিবর্জিতঃ।
অঙ্গীকুরুষু মদ্বাক্যং হিত্তমেব বদামি তে। ৫৫।

তোমার জড়াছ হ দেহে মল মাংস অছি প্রভূত তুর্গন্ধ ব্যক্তিরিক্ত আর কোন্ পদার্থ আছে? যে দেহ ত্রন্ধ হত্তাদি কার্যা
করিয়াছে—যে দেহ শ্বরং ভোগ ভক্ষক এরপ শুলে দেহ পতন
হর। স্থ্য তৃঃথাদির কারণ হেতু পুন্য ওপাপ জীবের সজে
সজে আসিরা উপন্থিত হয় স্তরাং পুন্য ওপাপে দেহ
যোগাদির সন্থিত আপনার স্থাও তৃঃথ ভোগ করিয়া থাকে।
বাবৎকাল দেহ আমার ও আমি কর্তা এবং আত্মাকে বলীভূত
করি তাবৎকাল অহঙ্কার হেতু জন্ম নাশাদির সক্ষ্যুর্ণ সম্ভব।
হে মহামাতঃ! সেই নিমিত্ত দেহাভিমান পরিভাগে কর—
ভাত্মা অতি বিমল ও শুদ্ধ হউক, আপনার অজ্ঞানতা বশ্ত
লবীরাদি সম্বন্ধ হইয়াও পুনঃ পুনঃ কর্মে প্রবর্ত হয়, সেই হেতু

তুমি বিশুদ্ধ ভাবে পরমান্ত্রাকে জানিরা তাঁহাকে সর্বনাই
প্রবণ কর—পুত্র জ্রী গৃহাদি সুখ ভোগে ও নরকের হুট্ট
ভোগে বিরত হও—দেথ এই কর্ম ভূমি ভারতবর্ষে সুত্রদ ভ
আচ্য যোগ্য দেহ বিশেষতঃ দিজত্ব প্রাপ্ত হুইয়া কোন্ বিদ্ধান্ত দিহকে আজাদীন করিয়া দেহভোগাহবর্ত্ত্রী হয় ? অতএব তুমি পুলস্ততনয় ব্রাহ্মণ হুইয়া অজানীর ন্যায় সর্বাদাই
রখা ভোগাল্বভ হুইতেছ ? এক্ষণে সর্বাদ্ধান্ত পরিভাগি
পূর্বাক পরমান্ত্রার আগ্রয় গ্রহণ কর—সর্বাদা ভক্তিভাব হারা
পরমান্ত্রা প্রীরামকে সীতা সমর্পণ করিয়া তাঁহার পাদপদ্মের
অমুচর হও, তাহা হুইলে তুমি সর্ব্ব পাপ হুইতে বিমুক্ত হুইয়া
বিষ্ণু লোকে গমন করিবে নচেৎ উদ্ভমলোক হুইতে বজি ত
হুইয়া অধ্যঃ পত্তিত হুইবে—এক্ষণে আমার বচনে অঙ্গীকার
কর কারণ ভোমার হিত বাক্য ক্ছিতেছি। সংসক্ষ গ্রহণ

সংসক্ষ তিং কুরু ভজস্ব হরিং শরণাং শ্রীরাঘবং মরকভোপলকান্তিকান্তম্। দীতাসমেতমনিশং ধৃভচাপবাণং মুঞ্জীবলক্ষাণবভীষণদেবিতাঞ্জিন্ম্। ৫৬। ইতি এমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশরসম্বাদে
যুদ্ধকাতে চতুর্পোহধ্যায়ঃ।

করিয়া মরকত মণির তুল্য শ্যাম কায় প্রীহরি রামচন্দ্রের শরণ লও এবং স্থাীব লক্ষ্মণ বিভীয়ণ যাছার চরণ সেবা করিতেছে ভূমি সেই ধন্থ্রিণধারী সদীতা প্রীরামচন্দ্রের চরণ শীজ্র দেবা কর ।২৬।২৭।২৮।২১।৩০। ৩১।৩২।৩০।
> ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামছেশ্বর সংবাদে যুদ্ধকাণ্ডে চতুর্থোহধ্যায়ঃ।

পঞ্চমাইধ্যায়ঃ।

শ্রুত্ব প্রক্ষ পোদ্গীতং বাক্য ক্রাননাশনম্।

রাবণঃ ক্রোধতা ব্রাক্ষা দহন্নিব তমত্রবীৎ ১১।

অনুক্রীব্য স্ক্রেব্দ্ধে! গুরুবন্তা ষদে কথম্?।

শাসি ভাহং ত্রিকগতাং ত্বং মাং শিক্ষা লক্ষ্রদে?।

ইদানীমেব হিন্ম ডাং কিন্তু পূর্ব্বকৃতং তব।
স্মরামি তেন রক্ষামি ডাং যদ্যপি বধোচিতম্। ৩।
ইতো গচ্ছ বিমৃত্! ত্বেবং শ্রোতুং ন মে ক্ষমম্।
মহাপ্রদাদ ইত্যুক্তা বেপমানো গৃহং যথে। ৪।

রাবণ শুক মুখে অজ্ঞান নাশক বাকা, শুবণ করিয়া ক্রোধ ক্ষায় লোচনে তাহাকে কহিল—রে সত্তর্জে! তুই আমার সেবক হইয়া কি রূপে গুরুর ন্যায় আমাকে সন্থাধণ করিছে-ছিন্? আমি ত্রিজ্ঞাৎ শাসন করি তুই আমাকে শিক্ষা দিতেছিস্ ইছাতে কি তোর লজ্জা করে না? এখনি তোরে বিনাশ করিতাম, কিন্তু তোর পূর্ব্বক্সয় কত কার্য্য শ্বরণ করিয়া. তুই বধ্য হইলেও তোকে রক্ষা করিলাম। রে মৃঢ়! তুই এ স্থান ছইতে পলায়ন কর তোর বাক্য শুনিতে আর ইচ্ছা হয় না, ইছা আমার পরম সৌভাগ্য বলিয়া শুক গৃছে গমন

শুকেং পি ত্রাহ্মণ: পূর্বাং ত্রন্ধি ত্রে বিত্তমঃ
বানপ্রস্থিবিদ্যাল বনে তির্চন্ স্থকর্ম কংল। ৫।
দেবানামভির্দ্ধার্থং বিনাশার স্থরদ্বিষাম্।
চকার যজ্ঞবিত তিমবিচ্ছিল্লাং মহামতিঃ। ৯।
রাক্ষণানাং বিরোধােহভুচ্ছকো দেবহিতোদ্যতঃ।
বন্ধাংইতি খ্যাভস্তবৈকো রাক্ষণো মহান্। ৭।
অন্তরং প্রেপ্ সুরাতির্চ্ছ কাপকরণােদ্যতঃ।
কদাচিদাগতােহগল্ডান্তম্যাশ্রমপদং মুনেঃ। ৮।
তেন সংপ্রতিহিগল্ডার্যাশ্রমপদং মুনেঃ। ৮।
তেন সংপ্রতিহিগল্ডার্যাশ্রমপদং মুনেঃ। ৮।
বতন সংপ্রতিহিগল্ডার্যাশ্রমপদং মুনেঃ। ৮।
বতন সংপ্রতিহিগল্ডার্যাল্যমপদং মুনেঃ। ৮।
বাজ লাজুং মুনে কুন্তমন্ত্রে প্রাপ্য চান্তরম্। ৯।
অগল্ডারপধৃক সোহপি রাক্ষনং শুকমন্তবীং।
বিদি দাস্যি মে ব্রন্ধান্ ভোজনং দেহি সামিষ্যা
বহুকালং ন ভুক্তং মে মাংসং চাগাঞ্চসন্তবম্।
ভথেতি কার্যামাস মাংসভোজ্যং সবিল্ডর্ম্। ১১

করিল। শুক ও পরম ধার্মিক ত্রাহ্মণ ছিলেন, এবং বাণপ্রস্থ বিধানানুসারে স্থকর্ম হেতুবনে অবস্থিতি করিয়া সুরবিদ্বেষীর বিনাশ এবং দেবতাদিগের ক্রন্ধির জ্বন্য বিস্তর জ্ঞাকরিয়া ছিলেন। ১।২।৩।৪।৫।৬।

দেবহিত্তরত শুকের প্রতি রাক্ষ্য দিগোর বিশেষ বেষ বুজি থাকার, বক্রদং ট্র নামে-জৈলোক্য বিখ্যাত এক রাক্ষ্য শুকের অপকারে উদাত ছিল। এক দিন অগস্ত্য ঐ মুনির আ্লাশ্রমে সমাগত হইলে তৎকর্ত্তক সংপ্রিত ছইয়৷ ভোজনের নিমিন্ত অগস্তাকে নিমন্ত্রণ করিল। কুন্ত যোগে অবশর ক্রমে স্মান করিয়৷ অগস্তা রূপ ধারণ পূর্মক ঐ রাক্ষ্য শুক্তকে কহিল। ছে ব্রহ্মন্! যদি আমাকে ভোজন করান তবে সামিষ ভোজন করিব। আমি বহুকাল হইল ছাগাদির মাংস ভোজন করি নাই অতএব আমাকে প্রচুর পরিমাণে মাংস ভোজন করিও।

উপবিষ্টে মুনো ভোক্তৃং রাক্ষসোহতীব সুন্দরম্।
শুকভার্যাবপুর্গু তাং চান্তমে হিয়ন্ থলং ! ১২।
নরমাংসং দদৌ তদ্মৈ স্থপকং বছবিশুরম্।
দিল্পৈবান্তর্দধে রক্ষন্ততো দৃষ্টা চুকোপ সং । ১৩।
অমেধ্যং মানুষং মাংসমগন্ত্যঃ শুকমন্তবীৎ।
অভক্ষ্যং মানুষং মাংসং দন্তবানদি চুর্মতে ! ॥১৪
মহুং তুং রাক্ষ্যো ভূত্বা ভির্চ তুং মানুষাশনঃ।
ইতি শপ্তঃ পুরো ভীত্যা প্রাহাগন্ত্যং মুনে ! তুয়া ॥
ইদানীং ভাষিতং মেহল্ল মাংসং দেহীতি বিস্তরম্।
তথৈব দত্তং মে দেব! কিং মে শাপং প্রদাস্যসি?।
শুজা শুক স্য বচনং মুহূর্ত্তং ধ্যানমান্থিতঃ।
ভাত্বা শুক স্য বচনং মুহূর্ত্তং ধ্যানমান্থিতঃ।
ভাত্বা স্থক স্থা বদনং মুহূর্ত্তং ধ্যানমান্থিতঃ।
ভাত্বা শুক স্থা বদনং মুহূর্ত্তং ধ্যানমান্থিতঃ।
ভাত্বা প্রক্যা স্থা স্থা বিজ্ঞা প্রাহ্ শুকং স্থাঃ।১৭
তবাপকারিণ। সর্বাং রাক্ষ্যেন কৃতং ত্রিদ্য্।
আবিচার্ট্যব মে দত্তঃ শাপন্তে মুনিস্তুম ! ।১৮ ।

হে মুনিসভায়! ভোমার অপকারি রাক্ষ্ম কর্তৃক এই

তথাপি মে বচোহমোঘমেনমেন ভবিষ্যতি।
রাক্ষাণ বপুরাস্থায় রাবণন্য দহায়ক্রছ। ১৯।
তির্ভ তাবদ্যদা রামো দশাননবধায় হি।
আগনিষ্যতি লক্ষায়াঃ সমীপং বানরৈঃ সহ।। ২০।।
প্রেষিতো রাবনেন স্থং চারো ভূতা রধুত্তমম্।
দৃষ্ট্য শাপাদ্বিনিম্ ক্রো বোধয়িত্বা চ রাবণম্ ॥ ২১॥
তল্পজ্ঞানং ততো মূল্তঃ পরং পদমবাপ্স্থাসি।
ইত্যক্রোহগন্তামুনিনা শুকো ব্রাহ্মণসন্তমঃ।।২২॥
বভূব রাক্ষাঃ সদ্যো রাবণং প্রাপ্য সংস্থিতঃ।
ইদানীং চাক্রনপেণ দৃষ্ট্য রামং সহামুজম্ ॥ ২৬॥
রাবণং তত্ত্বিজ্ঞানং বোধয়ত্বা পুনক্রতম্।
প্র্বিবদ্রাক্ষাণো ভূত্বা স্থিতো বৈখানসৈঃ সহ॥ ২৪

ততঃ সমাগমভৃদ্বো মাল্যবান্ রাক্ষণো মহান্।
বৃদ্ধিমানীতিনিপুণো রাজেল মাতৃঃ প্রিয়ঃ পিতা ।২৫
প্রাহ্ তং রাক্ষনং বীরং প্রশান্তেনান্তরাত্মনা।
খুণু রাজন্! বচো মেহদ্য প্রুত্বা কুরু যথেপ্রিতম্।
যদা প্রবিক্টা নগরী জানকী রামবল্লভা।
তদাদি পুর্যাং দৃশান্তে নিমিতানি দশানন!। ২৭
ঘোরাণিনাশহেভূনি তানি মে বদতঃ খুণু।
খরস্তনিতনির্ঘোষা মেঘা অভিভয়ক্ষরাঃ । ২৮ ।
শোণিতেনাভিবর্ষন্তি লক্ষামুক্ষেন সর্বাদা।
রুদন্তি দেবলিক্ষানি স্বিদ্যন্তি প্রচলন্তি চা ২০ ॥
কালিকাঃ পাশুরুদ্বিদ্যন্তি প্রহ্নস্ত্যপ্রতঃ স্থিতা।

সমস্ত কার্য্য করা হইয়াছে এবং আমিও অবিচার পূর্ব্বক ভোমাকে শাপ প্রদান করিলেও আমার বচন অবোঘ হইবে স্তরাং রাবণের সহার সম্পন্ন হইয়া তুমি রাক্ষ্য শরীর প্রাপ্ত হইয়া দশানন বিনাশের নিমিন্ত প্রীরাম চক্ত্র, বানরগণ সমজিবাহারে বড দিন পর্যান্ত লঙ্কাপুরী মধ্যে আগমন না করিবেন ভাবৎকাল তুমি ঐ অবহার অবহান কর, পরে তুমি বানর কর্তৃক প্রেরিভ হইয়া প্রীরামচক্তকে দর্শন পূর্বক রাবণকে তত্ত্ব জ্ঞান প্রদান করিলে শাপ হইতে বিমুক্ত হইবে। আনন্তর মুক্ত হইয়া তত্ত্ব জ্ঞান প্রান্ত করিয়া পরমণদ প্রাপ্ত হইবে। বাক্ষণসভ্য তক্ত্ব প্রইরূপ উক্ত হইলে, তথানই রাক্ষ্যরূপ হইল এবং রাবন্ধের নিকট্ট অবস্থিতি করিল অধুনা সহাস্থ প্রীরামচক্তকে চাক্ষ রূপে দর্শন করিয়া রাবণকৈ পূনঃ প্রত্ব প্রান্ত প্রের্থ বার্মণ হইয়া বার-ক্ষর পূর্বের নাার ব্রাক্ষণ হইয়া বার-

প্রস্থার অবস্থান করিল। অনস্তর নীতিনিপুণ বুদ্ধিমান রাজমাতার প্রিয় পিতা রুদ্ধ মাল্যবান্ মহারাক্ষস আগগনন করিয়া প্রসাস্তচিত্তে রাক্ষ্পবিত্তে কহিলেন—হে রাজন্! প্রবণ কর—অদ্য আমার বাক্ষা প্রবণ করিয়া যথাতিল্যিত কার্য্য কর। ১৮। ১৯।২০।২১।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।

ছে দশানন! যে দিনে রাম বল্লভা জানকী নগরীতে প্রবেশ করেন সেই দিনাবধি আমি পুরীমধ্যে ঘোরতর উৎপাত সমূহ দেখিতেছি। অভএব ইহা কেবল সর্ব্বনাশের মূল নিশ্চর বলিতেছি আপনি প্রবণ করন। স্থাভীর ভীশন বনাবলি কঠোর গর্জনে বজ্ঞ পভন শব্দ প্রতিপ্রনিত হউতেছে । ক্রারও দেখুন দেব দেবীর প্রতিমৃত্তি সকল বিলাপ পরিতাপ করত সচঞ্চল হইতেছে। প্রত্যেক রাক্ষ্যদিগের পুরবর্তিণী কালিকা পাতুবর্ণ দম্ভ বিক্রিত করিয়া সমুদার রাক্ষ্যদিগকে ভক্ষণ করিব বিলয় হাস্ত করিতেছেন। আর বিভাল ও নকুলের সহিত্র

খরা গোষু প্রজায়ন্তে মূষকা নকুলৈ: সহ। ৩০॥
মার্জারেণ তু যুধান্তি পল্লগা গরুড়েন তু।
করালো বিকটো মুগুঃ পুরুষ: রুফপিঞ্চল:॥ ৩১॥
কালো গৃহাণি সর্বেষাং কালে কালে ওবেক্ষতে।
এতান্যন্যানি দৃশ্যস্তে নিমিন্তান্ম্যন্তবন্তি চ। ৩২।
অতঃ কুলস্য রক্ষার্থং শান্তিং কুরু দশানন!।
সীতাং সৎকৃত্য সধনাং রামায়াশু প্রযুক্ত ভো!।৩৩
রামং নারায়ণং বিদ্ধি বিদ্বেষং তাজ রাঘবে।
যৎপাদপোত্যাপ্রিত্য জ্ঞানিনো ভবসাগরম্ ১৩৪
তরন্তি ভক্তিপুতান্মা ততো রামো ন মানুষঃ।
ভক্তস্ব ভক্তিভাবেন রামং সর্বক্রদালয়ম্। ৩৫॥
যদ্যপি তুং দুরাচারো ভক্তা পুতো ভবিষ্যদি।

মন্ত্রিক্তর রাজেন্ত ! কুলকে শলতেত্বে ॥ ৩৬ ততু মাল্যবতো বাক্যং হিতমুক্তং দুশাননঃ । ন মর্যয়তি ছুকীত্বা কাল্য্য বশ্যাগতঃ ॥ ৩৭ ॥ মানবং কুপণং রামং একং শাখামৃগাশ্রয়ম্ । সমর্থং মন্যমে কেন ? হীনং পিত্রা মুনিপ্রিয়ম্ । রামেণ প্রেষিতো মূনং ভাষ্যে ভ্রমগলিক্য ॥ গছে ক্লোছির বন্ধুন্তং সোঢ়ং সর্বাং ন্থােদিত্র ॥ ইতা মহকর্ণপদবীং দহত্যেভ্রুতক্তব । ইত্যুক্তা সর্বাসচিবৈঃ সহিতঃ প্রক্তিতক্তা ॥ ৪০ ॥ প্রামাদাত্রে সমাসীনং পশ্যন্ বান্যবিদ্যিকান্ । যুদ্ধারাবােজরৎসর্বাক্ষ্যান্ সমুপন্থিতান্ । ৪১ । রামােছিপ ধন্তরাদার লক্ষাণেন সমাক্তিম্ ।

ব্যিকদিগের কলহ, গকড়ের সহিত সপের বিবাদ, ভরানক বিকটাকৃতি পিদ্ধলবর্ণ কালস্বরূপ এক পুরুষ সারং প্রাভ এই উভর সময়েই প্রভাক গৃহেতে আবিভূতি হইতেছে। এই প্রকার বিবিধ নিমিক্ত সমূহ সমুদ্ধ্ হইয়াছে অবলোকন করিলাম। ২৭।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।

হে দশানন! এই কারণবশতঃ কুলের হিতসাধনার্থ শান্তি
বিধান করুন। আর এই দীনা সীতাদেবীকে সবিনয়ে প্রত্যাপর্ণ করুন। আপনি রামচন্দ্রকে নারায়ন বলিয়া জানিবেন
অতএব রাঘবে বিহেষ পরিত্যাগ করুন। কারণ ভক্তিপূতাত্মা জ্ঞানীগণ খাঁহার প্রপদ নেকা আশ্রেয় করিয়া ভবসাগর উত্তীর্ণ হইয়া থাকেন—সেই রাম তিনি সানব নহেন;
তিনি সর্বান্তর্যামী, অভএব ভাঁহাকে ভক্তিভাবে ভজনা করুন।
হে রাজেন্দ্র! কুলের নঙ্গলসাধনার্য আমাব বাক্য রক্ষা

করন্। যদিও আপনি আচার ভ্রন্ধী, তথাপি আপনার দেহ ভক্তিসহকারে পবিত্র হইবে।৩১।৩৪।৩৫।৩৬।

হৃষ্টাঝ। দশানন কালের বশতাপন্ন হইরা মাল্যবান কৰিত হিতবাক্যে অভিনন্দন করিলেন না। অধিকন্ত কহিলেন— সামান্য ঝানরাশ্রিভ হর্জল মানবমাত্র; কোন ব্যক্তি দোহার সমর্থ গণনা করে? আর নিশ্চর জানিলাম যে, সেই রামের প্রেরিত হইরা তুমি যে সমস্ত কথা বলিলে, ইহা কেবল বন্ধ ও রুদ্ধ বলিয়া সন্থ করিলাম এক্ষণে এহান হইতে গমন কর। কারণ তোমার বদন বিনিঃস্ত বচনাবদী আমাকে দহন করি-তেছে। এই বলিয়া মন্ত্রিগণ সমভিব্যাহারে তথা হইতে প্রস্থান করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩৯।৪০।

অনস্তর রাজা প্রাদাদে বাণরগণ উপবেশন করিরাছে দেখিরা সমুধস্থিত সমস্ত রাক্ষস দিগকে যুদ্ধার্থ উদ্যোগ করিতে আদেশ করিদেন। ক্রোধ পরিপূর্ণ হৃদরে রামচক্র ও সক্ষাণ দৃষ্ট্বা বাবণমাসীনং কোপেন কল্বীকৃতঃ ॥ ৪২ ॥
কিরীটীনং সমাসীনং মন্ত্রিভি: পরিবেষ্টিভম্।
শশাক্ষার্থনিভেনের বাণেনৈকেন রাঘর: ॥ ৪৩ ॥
খেতছত্রসহস্রাণি কিরীটদশকং তথা।
চিচ্ছেদ নিমিষার্ধেন তদন্ত ত্রমিরাভবং ॥ ৪৪ ॥
লক্জিতো রাবণস্তৃণং বিবেশ ভবনং স্বকম্।
আচ্র রাক্ষ্যান্ সর্বান্ প্রহন্তপ্রম্থান্ থল: ॥ ৪৫ বানরৈ: সহ যুদ্ধার নোদরামাস সত্তর:।
ভতো ভেরীমৃদক্ষাদ্দেশিং পণবানকগোমুখৈ: ॥ ৪৬ ॥
মহিষোইট্: খরৈ: দিংহৈশ্রীপিভি: কৃভবাহনা:।
খজ্লশ্লধনু:পাশর্টিভোমরশক্তিভি: ॥ ৪৭ ॥
লক্ষিতা: সর্বভো লক্ষাং প্রভিদ্বারম্পারযু:।
ভৎপূর্ব্বেমর রামেণ নোদিভা বানর্বভা: ॥ ৪৮ ॥

উদ্যমা গিরিশৃকাণি শিধরাণি মহান্তি চ।
তরুংশ্চোৎপাট্য বিবিধান্ যুদ্ধার হরিষ্থপাঃ ॥৪৯
প্রেক্ষমাণা রাবণস্থ তান্যনীকানি ভাগশঃ।
রাঘ্বপ্রিরুকামার্থং লক্ষামারুক্রন্তন্তনা ৫০॥
তে ক্রেমঃ পর্বভাব্রেশ্চ মৃষ্টিভিশ্চ প্রবক্ষমাঃ।
ততঃ লহস্র্থাশ্চ কোটিষ্থাশ্চ য্থপাঃ ॥ ৫১॥
কোটাশত্যুতাশ্চান্যে রুক্র্পুর্ন গরং ভূশম্।
আপ্রবন্তঃ প্রবন্তনা লক্ষ্মণ্শ্চ মহাবলঃ।
রাজা জয়তি স্থাবা রাঘ্বেণান্যপানিতঃ ॥ ৫৩॥
ইত্যেবং ঘোষরস্তান্চ সমং যুষ্ধিরেহ্রিভিঃ।
হন্মানক্ষদশ্চেব কুমুদো নীল এব চ ॥ ৫৪॥
নলশ্চ শরভ্বিদ্ব বৈদ্যা দ্বিবিদ্ এব চ।

সহিত ধনুর্বান গ্রহণপূর্বক মন্ত্রিন পরিবেঠিত মুকুটধারী রাবণকে অবলোকন করিয়া শশাক্ষনিত একমাত্র সরাঘাতে খ্রেডচ্ছত্র শোভিত মস্তক ভূবিত দশমুকুট নিমেবার্দ্ধ বধ্যেই থণ্ড বস্তু করিলেন কিন্তু তৎকালে অতি অন্তুত ব্যাপার সম্পন্ন ইইয়াছিল। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪।

প্রহন্ত প্রমুথ সমস্ত রাক্ষণদিগকে আহ্বান করত ক্রেমতি রাবণ লজিত হইয়া সত্তর ত্থার তবনে প্রবেশ করিলেন। তৎ-কালে পলব, অলক, গোমুখ, তেরী, মৃদক প্রভৃতি বাদ্যোদ্যমে সম্পৃথিত হইয়া বানরগণের সহিত দলবদ্ধ হইয়া রামচক্র যুদ্ধার্থ উদ্যোগ করিলেন। মহিষ, উট্র, ধর, সিংহ, সার্ক্ষ্ আদি বাহনে আরাচ হইয়া ঘোদ্ধাগণ খড়গা, শেল, শূল, ধরুপাশ, বৃত্তি, তোমর, শক্তি প্রভৃতি অল্পে ভৃষিত হইয়া সর্বতো-

ভাবে চতুর্দিক অবলোকন করত লক্ষায়ারে উপস্থিত হইল।
কিন্তু বানরগণ তৎপুর্বেই রামের আদেশামুসারে প্রেরিত হইরা
বিপুল গিরিশৃক সকল উত্তোলন ও বিবিধ রক্ষসমূহ উৎপাটন করত রাবণের তৎপ্রদেশস্থ সেই দৈন্যদল অবলোকন
করিয়া তৎকালে রাম্বের হিতসাধনার্থ লক্ষা পুরীতে আরোহণ করিয়াছিল। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০।

তদনস্তর উর্জাধঃ শক্ষপ্রদান ও তর্জন গর্জন করত দেই বারনগণ বিপুল পর্বতেশৃঙ্গ ও রক্ষসমূহ উপলক্ষিত মাত্রেই প্রাণাঢ় রূপে সহস্র সহস্র কোটা কোটা দলবদ্ধ হইরা নগরকে অবরোধ করিল। অতি বীর্যাবান রামচন্দ্র, মহাবল লক্ষ্মণ ও জরমুক্ত হউন এবং মহারাজ স্মগীব রাঘবামুপালিত হইরা জয়লাত করুন। এই প্রকারে চতুর্দিক্ ঘোষণা, করত পরম জামবান্দধিবক্তৃশ্চ কেশরী তার এব চ । ৫৫ ॥

জন্যে চ বলিনঃ সর্বের ঘূথপাশ্চ প্লবক্ষমাঃ ।

জারাণ্ডপ্লাতা লক্ষারাঃ সর্বতাে করুপুর্ভূশম্ ।

তদা রক্ষৈমহাকায়াঃ পর্বতাে গ্রেশ্চ বানরাঃ ॥ ৫৬ ॥

নিজমুস্থানি রক্ষাং সি নথৈদিকৈশ্চ বেগিতাঃ ।

রাক্ষসাশ্চ তদা ভীমা ভারেভাঃ সর্বতাে রুবা ॥৫৭

নির্গত্য ভিত্তিপালৈশ্চ খড়েলঃ শূলৈঃ পরশ্বৈঃ ।

নিজমুর্বানরানীকং মহাকায়া মহাবলাঃ । ৫৮ ॥

রাক্ষসাংশ্চ তথা জামুর্বানরাজিতকাশিনঃ ।

তথা বজুব সমরো মাংসশােণিতকর্দমঃ । ৫৯॥

রক্ষসাং বানরাণাং চ সম্ভূবান্ত্রাপ্রমঃ ।

তে হয়ৈশ্চ গলৈকৈব রথৈঃ কাঞ্চনসন্থিতঃ । ৬০ ।

রক্ষোব্যান্তা যুযুধিরে নাদয়স্তো দিশো দশ।
রাক্ষসাশ্চ কপী আশ্চ পরস্পরক্ষ বৈনিওঃ ॥ ৬১ ॥
রাক্ষসান্ বানরা জন্ধ বিনেরাং শ্চৈব রাক্ষসাঃ।
রামেণ বিষ্ণুণা দৃষ্টা হরয়ো দিবিজাংশজাঃ। ৬২
বভূর্বলিনো ক্ষান্তদা পীতাম্তা ইব।
সীতাভিষর্বপাপেন রাবণেনাভিপালিতান্। ৬৩।
হত ঐকান্ হতবলান্ রাক্ষ নান্ জন্ম রৈজেনা।
চভূর্পাংশাবশেষেণ নিহতং রাক্ষমং বলম্। ৬৪।
স্বিন্যং নিহতং দৃষ্ট্য মেঘনাদোহথ ছ্যুধীঃ।
ব্রহ্মদন্তবরঃ শ্রীমানস্তর্ধনিং গভোঃ স্থরঃ। ৬৫।
সর্বান্তবরঃ শ্রীমানস্তর্ধনিং গভোঃ স্থরঃ। ৬৫।
নানাবিধানি শস্তাণি বানরানীক্মর্দরন্। ৬৬।

শক্ত রাক্ষসদিগের সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিল। তৎকালে হয়মান, অঙ্গদ, কুমুদ, নীল, লন, শরভ, নৈন্দী, দ্বিদি, জাখবান, প্রভৃতি মহাকার বলবান বানরগণ বৃক্ষ ও পর্বকাদি
ধারা লক্ষাঘারে উপদ্থিত হইরা নিবীদ্ধ রূপে সর্ববভোতাবে
প্রতিরোধ করিল। এবং নথ ও দস্তদ্বারা প্রবলবেগে ভীষাকৃতি রাক্ষসদিগকে ছির ভিন্ন করিল। তদর্শনে মহাকার মহাবলবান রাক্ষসগণ স্থানদেশ বিনির্গত হইরা রোষপত্রবশে,ভিণ্ডিপাল, পাশ, পরও ধজা, প্রভৃতিদ্বারা কৃতিপর বানর দৈন্য সংহার
করিল। এবং বানরগণও পরাস্ত হইরা পুনরার আক্রমণ
করিল এই প্রকারে সমর ভূমি মাংস ও শোণিভ্যারা কর্দমমন্ন
হইরা উঠিল। অত এব রাক্ষ্য ও বানর এই উভন্ন দলমধ্যে অভি
আশ্রেষা উপমা সম্ভূত হইরাছিল, এইরপে পরস্পর ক্রমাভিদাবী বানর ও রাক্ষ্য দল অ্বর্ণস্থল রথ, গ্রন্ত, অব, প্রস্পর ক্রমাভিত্তি

পরিপূর্ণ ও দশদিক প্রমদিত হওত রণাতিমুখে উদ্বোগ করিল। ৫১/৫২/৫৩/৫৪/৫৫ / ৫৬ / ৫৭ / ৫৮ /৫১ /৬০ ৬১

দেবাংশজাত ধানরগণ রাক্ষসদিগকে বিনাশ করিলে রাক্ষসাগও তাহাদিগকে সংহার করিল। ইহা রামচন্দ্র অব-লোকন করিবামাত্রেই তৎকালে জ্বীনবীর্যাবানরগণ ভেজন্বী হইরা যেন অমৃত পান করিয়াছে এইরপ হুইচিতে সীতা-দেবীর গাত্রস্পর্শজনা সংজাত পাপপূর্ণ কলেবর রাবণের প্রতিপাশিত রাক্ষসগণ শ্রীভ্রম্ট ও হীনবীর্যা হওরাতে তাহা-দিগকে চতুর্থাংশের অবশিষ্টাংশ বলহার। সমস্ত রাক্ষসদশ নিহত হইল। ৬২। ৬৩। ৬৪।

ইত্যবসরে মেঘনাদ তুইমতি সমুদার আত্মিন্য নিছত দেখিরা ব্রহ্মদন্ত বরপ্রাপ্তে অন্তর্জান ছইলেন। নানাবিধ-শাস্ত্র স্থাক্ষিত হইরা নভোমগুলে ব্রহ্মান্ত্রদার মানাপ্রকার অন্তপ্রয়োগ করত বানর কটক সম্যকরণে উৎপীড়িত হওরাতে ববর্ষ শরকালানি ভদদ্ভুভমিবাভবৎ।
রামোহিপি মানয়ন্ প্রাক্ষমক্রমক্রবিদাম্বরঃ। ৬৭।।
ক্ষণং ভূফীমুবাসাথ দদর্শ পতিতং বলম্।
বানয়াণাং রঘুভোর্চশচুকোপানলসন্নিভঃ। ৬৮।
চাপমানয় সে মিত্রে! প্রক্ষাক্রেণাস্বরং ক্ষণাং।
ভক্ষীকরোমি মে পশ্য বলমদ্য রঘুভ্তম!। ৬৯।
মেমনাদোহিপি ভক্তুত্বা রামবাক্যমভক্তিঃ।
ভূপং জগাম নগরং ময়য়য়া মায়িকোহস্বরঃ॥ ৭০
পতিতং বানয়ানীকং দৃষ্ট্বা রামোহিতিয়ঃথিতঃ।
উবাচ মায়ভিং শীঘ্রং গত্বা ক্ষীয়মহোদ্ধিম্। ৭১
তত্র জোণগিরিনাম দিব্যোষ্ধিসমুক্তবঃ।
ভমানয় জভং গত্বা সঞ্জীবয় মহামতে !॥ ৭২॥
বানয়েবিদ্যম্বান্ মহাসজ্বান্ কীর্ভিন্তে স্থান্থরা ভবেৎ।
আক্রাপ্যমাণমিভ্যক্ত্বা জগামানিলনক্ষনঃ॥ ৭৩॥

আনীয় চ গিরিং সর্বান্ বানরান্ বানরর্ষতঃ।
জীবয়িত্বা পুনস্তত্ত স্থাপয়িত্বা যথে জ্বতম্ ॥ १৪॥
পুর বিষেরমাপয়ে বানরাশাং বলে বিভঃ।
ক্রেত্বা বিষারমাপয়ে রাবণাে বাক্যমন্ত্রী ॥ १৫॥
রাঘবাে মে মহান্ শক্তঃ প্রাপ্তাে দেববিনির্মিতঃ।
হন্তং তং সমরে শীন্তং গচ্ছে মম যুথপাঃ॥ ৭৬॥
মন্ত্রিণাে বাদ্ধবাঃ শ্রা যে চ মৎপ্রিরকাজ্জিক।।
সর্বে গচ্ছন্ত যুদ্ধায় তরিতং মম শাসনাৎ ॥ ৭৭॥
যে ন গচ্ছন্তি যুদ্ধায় তীরবঃ প্রাণবি প্রবাং।
তান্ হনিষ্যাম্যংং সর্বান্ মচ্ছাসনপরাজ্মধাম্ ॥ ৭৮
তচ্ছুতা ভয়সন্তর্তা নির্জ্বায়্রণকােবিদাঃ।
অতিকায়ঃ প্রহুশ্চ মহানাদমহােদ্রে । ৭৯।

শরজাল বিস্তার করিলেন। অনস্তর সমর প্রবীন অস্ত্র বিসারদ ক্রোধোজলিত দ্বিতীর অনলরপ্রধারী। রঘুবীর রাম-চন্দ্র ও ব্রাহ্ম অস্ত্রকে স্থান করত ক্ষণকালজন্য তুফীভাব অব-লম্বন করিলেন পরে সৈন্যসমূহ নিপতিত অবস্থা অবলোকন করিলেন। ৬৫। ৬৬ ৬৭ ৬৮। ৬৯ ৭০

রামচন্দ্র অতি হঃখিত চিত্তে বানর সৈন্যসমূহ নিপাতিত দেখিয়া ক্ষীরসমুদ্রতটে শীজ গমন করিয়া পরন পুল্ল হন্-মানকে বলিলেন। দিব্য ঔষধিসমুদ্ধূত জোণ নামক প্রক পর্বেত আছে। হে মহামতে! তথায় সত্তর গমনপূর্বাক সেই ঔষধি আনমন করিয়া জীবন রক্ষা কর। ইহাতে তুমি অবি-চলিত কীর্তিলাত করিবে। তদনস্তর অনিলনন্দন বে আজ্ঞা এই কথা বলিয়া গমন করিল। তৎপরে ঐ পর্বত আনরন করিয়া সমস্ত বানরগণের জীবন প্নজীবিত করাইয়া প্রনরায় সেই স্থানে সেই পর্বত সংস্থাপন করত সত্ত্ব প্রভাগনগমন করিলেন। রাবণ পূর্ববিৎ বানরদিগাের ভৈরব নাদ শ্রবণ করত বিশ্বয়াপার হইয়া কছিলেন। আমার প্রবল শক্র এই রাঘবকে বিনাশ করিবার জন্য ভৌমরা শীজ দলবন্ধ হইয়া সমরে গমন কর। যাহারা হিতাভিলাষা বীর্য্যবান বান্ধব ও মন্ত্রী তাহারা সকলে আমার শাসন বশতঃ সত্ত্র যুদ্ধার্থ গমন কর। যাহারা প্রাণভারে ভীত হইয়া যুদ্ধার্থ গমন না করিবে তাহারা আমার শাসন বিমুখ হইলেও সকলকেই বিনাশ করিব। ৭১।৭২।৭০।৭৪।৭৫।৭৬।৭৭।৭৮।

একণে অতিকার, প্রহস্ত, মহানাদ দেবশক্র, মিকুস্ত, দেবা-

দেবশক্রনিকৃত্তশ্চ দেবাস্তকনরান্তকৌ।

অপরে বলিন: সবে যুর্যুদ্ধায় বানরৈ:।৮০।

এতে চানো চ বহব: শুরা: শতসহস্রশ:।

প্রতিশা বানরং দৈনাং মমন্ত্র লদর্পিভা:।৮১।

ভূপুতৈতি প্রিনিকেল বাবৈ: খকৈ: পরশ্বনি:।

অনৈকে বিবিধেরক্রৈনির্জন্ম হার্যুথপান্।৮২।

প্রোনিবিনাচয়ামান্ত: সর্বরাক্ষদ্য্থপান্।৮২।

রামেণ নিহতা: কেচিৎ সুত্রীবেণ তথাপরে।

হন্মতা চাঙ্গদেন লক্ষণেন মহাত্মনা।৮৪।

যূথপৈর নিরাণাং তে নিহতাং সর্বরাক্ষসাং।
রাম্তেজঃ সমাবিশ্য বানরা বলিনোহভবং। ৮৭
রামশক্তিবিহীনানামেবং শক্তি কুতো ভবেং।৮৬

সর্কেশ্বঃ সর্কময়ো বিধাতা

মায়ামনুষ্ত্বিভূষনেন।

সদা চিদানন্দময়োহপি রামো

যুদ্ধাদিলীলাং বিতনোতি মায়াম্।৮৭।

ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসমাদে

যুদ্ধকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

স্তক, নরাস্তক, অন্যান্য বলবান রাক্ষ্মগাণ সেই বাক্য শ্রবণ করিয়া বানরদিগের সহিত সমরাভিমুখে গমন করিল।৭৯।৮০।

অন্যান্য শত সহত্র বহুদংখ্যক বীর্যাবান রাক্ষসসমূহ বানর সৈনা দলে প্রবেশ করিয়া প্রচণ্ড প্রবল প্রভাগে মন্থন করিতে লাগিল। ভূশণ্ড, ভিণ্ডিপাল, পর্ভ, খজা, প্রভৃতি নানাবিধ অন্ত ধারা দিংহ সমত্ল্য যুখপতি বানরগণকে সংহার করিল। কিছু সেই বানরগণ বৃক্ষ, পর্বাত, নখা, দন্তা, প্রভৃতি ধারা সমস্ত রাক্ষসদিগের প্রাণ সমূহ বিমোচিত করাইল। ইত্যবসরে রামচক্র কতক্ঞ্লিকে নিহত করিলেন। স্থাীব, ছমুমান, অঙ্গদ, মছাত্মা বন্ধমণ, অপর কতিপর বিনাশ করিবেন। বানরগণ দলবদ্ধ ছইরা সেই সমস্ত রাক্ষস-গণকে সংহার করিলে, রামশক্তি প্রাপ্ত ছইরা সকলেই অবনীল ছইল।৮১৮২।৮৩/৮৪।৮৫/৮৬।

সর্বাক্ষা সর্বেশ্বর বিধাতা রামচন্দ্র তিনি সচ্চিদানন্দরণী হটলেও মনুষাদিগাের অনুকরণ করিবার জন্য মায়াদ্বারা সমর প্রভৃতি কম্পিত জীড়া বিস্তার করিতেছেন ৮৭

ইভি অনদধ্যাত্মরামারণে উমামহেখর সংবাদে
যুদ্ধ কাঙেপাঞ্চনোহধ্যারঃ।

यद्धी ३ था शह

শ্রুত্ব বলং নইমতিকারমুধং মহৎ।

রাবণো ছংখনত্তা কোধেন মহতারত:। ১।

নিধায়েক্ত জিডং লক্ষারক্ষণার্থং মহাদ্যুতি:।

স্বরং জগাম যুদ্ধার রামেগ সহ রাক্ষন:। ২।

দিব্যং স্কুলনমারহ্য সর্বাশস্ত্রান্ত্রসংযুত্ম।

রামমেবাভিদুজাব রাক্ষ্যেক্তের মহাবল:। ৩।

বানরান্ বছশো হত্বা বাণৈরাশীবিষোপনৈ:।

পাত্রামাস স্কুতীব প্রমুখান্ যুধনারকান্। ৪।

গদাপাণিং মহাসন্তং তত্ত্র দৃষ্টা বিভীষণম্।

উৎসমর্জ মহাশক্তিং ময়দত্তাং বিভীষণে। ৫।

তামাপত खो মালোক্য বিভীষণ বিঘাতি নীম্।

দত্তাভয়ে হয়ং রামেণ বধাহোঁ নামমাসুরং। ৬।

ইত্যুক্তা লক্ষণো ভীমং চাপমাদায় বীর্যবান্।

বিভীষণস্য পুরত: স্থিতোহক পাইবাচলং। ৭।

সা শক্তিল ক্ষণত লুং বিবেশামোঘশক্তিত:।

যাবস্তঃ শক্তমো লোকে মায়ায়াং সম্ভবস্তি হি।৮।

তাদামাধারভূতস্য লক্ষণস্য মহাত্মনং।

মায়াশক্ত্যা ভবেৎ কিং বাং শেষাংশস্য হরেস্তনো

তথাপি মানুষং ভাবমাপয়ন্তদমুব্রত:।

মুক্তি তং পতিতো ভূমো তমাদাতুং দশাননং।১০।

রাবণ যুদ্ধে বহুদেন। এবং মহাবল মহাকার, অভিকার
নিধন ছইরাছে প্রবণ করিয়া, তুঃখ খোকে সম্ভপ্ত ও অভিশর ক্রোধারিত ছইলেন। ইল্রেক্সিডকে লকারকার্থে আদেশ
করণানতর অরং সেনাগণ সমভিবাছারে বিবিধ অস্ত্র শক্ত
সংযুত দিব্য রখে আরোহণ করিয়া, রাম সহ যুজার্থে রামন
করিলেন। অতঃপর রাম কটক লিম্বানে উপনীত হইয়া, সর্প
সদৃশ বিবিধ বাণঘারা অপ্রো অশেষ বানরগণ বিনাশ করত,
স্ফ শক্ত প্রথাতি স্থাবিকে ভূমিতলে নিপাতিত করিবেন,
অমনি সন্মুখে গলাপাণি বিভীবণকে অবলোকন করত
ক্রোধান্ধ হইয়া ভাছার নিধন সাধনে ময়দানবদন্ত শক্তি
বিক্ষেপ করিলেন। বিভীবণত দেই মীবননাশী শর খার নিধন

সাধনে সমাপত দেখিরা, তারে রাম লক্ষ্মণ সরিধানে পমন করিলেন। তাঁহারা উভরেই বিভীষণকে অভর প্রদান করিয়া লক্ষ্মণ, ধমুর্জারণ করত বিভীষণের অগ্রে অচলের ন্যার দণ্ডারমান ছইলেন। সেই অমোঘশক্তি লক্ষ্মণের বক্ষঃস্থল ভেদ করিয়া ভূতলে প্রবেশ করিল। অমনি লক্ষ্মণ ও সেই শক্তির আঘাতে মুক্তি তহইরা ধরাতে নিপতিত হইলেন। আছা। জগানীবরে কি মহিমা; বিনি শ্বয়ং অনন্তদেব, সর্ব্বে জীবের শক্তিধর ছইরাও সামান্য শক্তির আঘাতে বিচেতন প্রায় ছইলেন। কেবল কাল মাছাস্ম্যো সাধারণ মহ্যা ভাব ধারণ করিরাছেন বিলয়াই এরপ স্টিল; নতুবা সকলের মূলস্বরূপ সাক্ষাৎ অনন্তদেবকে কে বিশ্ব করিয়া ভূতলশারী করিতে সক্ষ্ম হর বিহাও। ৪০০। বিচালা ১০০

হতৈত্তোলয়িতুং শক্তোন বভুবাতিবিশিতঃ।
সর্বাস্য জগতঃ সারং বিরাজং পর্মেশ্বং। ১১।
কথং লোকাশ্রাং বিষণং তোলয়েল্লঘু রাক্ষাং ?
গ্রহীতকামং দৌমিত্তিং রাবণং বীক্ষ্য মারুতিঃ।১২
আজ্বানোরলি কেনো বক্তকশেন সৃষ্টিনা!
তেন ঘুটিপ্রহারেণ জামুজামপতভুবি। ১৩।
আহিন্যান মনো রখোপশ্য উপাবিশং। ১৪।
বিহুর্বমান মনো রখোপশ্য উপাবিশং। ১৪।
আথ লক্ষ্যমানার ইমুমান্ রাবণাদি তম্।
আনম্যাম্যামীপ্যং বাছ্ড্যাং পরিগৃহ্য তম্। ১৫
হনুমতঃ সুক্তভুন ভক্ত্যা চ পর্মেশ্বঃ।
লঘুত্মগমদেশো গুরুণাং গুরুরপ্যকং। ১৬।

দশানন লক্ষ্মণকে ভূমিতলে নিপাতিত দেখিয়াতাঁহাকে হস্তদ্বারা উদ্রোলন পূর্বক লইরা যাইতে উলাত হইলেন কিন্তু
তুলিতে অসক্ষম হইরা যার পর নাই বিশ্বিত হইলেন। আছা!
যিনি সমস্ত জগতের দার পরমেশ্বর,—রাক্ষ্য হইরা সেই
সর্বলাকের আশ্রের অনস্তদেবকে উত্তোলন করিতে কিরপে
সমর্থ হইবে? মাক্ততনর রাবণকে অমিত্রানন্দন গ্রহণে ইচ্ছুক
সন্দর্শনে সাতিশার কুপিত হইরা তাহাকে বক্সদৃশ এক মুস্টাণঘাত করিল। রাবণ ইন্মানের মুক্তি প্রহারে ভূপতিত হইলেন। অনস্তর মুখনৈত্ত ও প্রবণ মধ্য হইতে কলপরিমানে
ক্ষির বমন করিতে করিভেও বিঘ্ণিত নম্বনে রখোপরি উপবেশন করিলেন; ইতাবসরে হন্মান্ ভক্তিপুর্বক রাবণাক্ষিত
লক্ষ্মণ দেবকে উত্তোলন করিয়া প্রস্থান করিল।১১।১২।১৩।১৪।

অনন্তর রাবণ, বিঞ্চিত সুস্থ হট্যা, ক্রোধে শরাসম আছণ পূর্ব্বক, রাম সন্নিধানে গমন করিল। ভদ্দর্শনে রাম ও অত্যন্ত রাগান্তিত ছইয়া, কোদগুলামক শরাসন আছণ পূর্বক

দা শক্তিরপি তং ত্যক্তা জ্ঞাত্বা নারায়ণাংশজম্। রাবণস্য রথং প্রাগাদ্রাবণোহপি শনৈস্ততঃ ।১৭। मः कामवाना कथा र वागमनमत्था क्या। রামমেবাভিছ্জাব দৃষ্ট্বা রামোহপি তং ক্রধা ৷১৮ আরুছ জগভাং নাথো হতুমন্তং মহাবলম্। तथन्द्रः तावनः मृख्ना चिक्तमाव ताचवः ॥ ১०॥ জ্যাশব্দসকরোতীত্রং বজ্রনিশ্পেষ্নিছ্রন্। রামো পত্তীরয়া বাচা রাক্ষণেক্রমুবাচ ২।২০। ताकनायम ! जिर्छामा क गमियानि (म शूतः ?। कृषालवाध्यायः य गर्वेख नम्पर्मिनः २५ । (यन वार्षम निर्ठा वाक्रमांटि क्रमालर् । তেনৈৰ ত্বাং হনিব্যামি ডিষ্ঠাদ্য মম গোচৰে : ১১ জীরামস্য বচ শ্রুতা রাঘণো মার্কার্জম্। বহন্তং রাঘবং সংখ্যে শরৈন্তীক্ষৈরতাডুরৎ। ২৩ : হতন্যাপি শরৈন্তীক্মৈর্বায়ুস্নোঃ স্বতেজনা। वावर्ष ज श्वनत्खरका ननमं ह महाकि । 28।

হত্মানের আরে আরোহণ করত, বক্সম জ্ঞা শব্দে জগৎ পূর্ণ করিলেন। ডাছাতে প্রাণীমাত্তেই কম্পিত কলেবরে বিশ্বিত হইতে শার্মিল।১৫/১৬/১৭/১৮/১৮/১৯

অনস্তর রাম গন্তীর বাকো রাবণকে বলিতে লাগিলেন; ওরে রাক্ষদাধম! তুই ক্ষণেক আমার দম্পে থাক, তোকে শীন্তই শমনাক্রয়ে প্রেরণ করিতেছি। রাবণ, জীরামের এইরূপ সগববাকা প্রাবণ করিয়া, জোধে প্রতীক্ষ্ণ শবজালে গবন প্রেবে
বিদ্ধ করতে তাড়না করিতে লাগিল। অমনি হত্যান ও
নিমেষমধ্যে স্বীর শরীর বর্ষিত করিয়া সৃত আরম্ভ করিল

ততো দৃষ্ট্বা হন্তুমন্তং সন্ত্ৰণং রঘুসত্যঃ।
ক্রোধমাহারয়ামাস কালরুদ্ধ ইবাপরঃ। ২৫।
সাশ্বং রথং ধকং স্কুতং গজ্যোঘং ধন্মরঞ্জনা।
ছত্তং পতাকান্তরনা চিচ্ছেদ শিতসায়কৈঃ। ২৬।
ততো মহাশরেলান্ত রাবলং রঘুসন্তমঃ।
বিব্যাধ বক্রকপ্রেন পাকারিরিব পর্বতম্। ২৭।
রামবালহতো বীরক্ষচাল চ মুমোছ চ।
হন্তান্নিপতিভক্তাপন্তও সমীক্ষ্য রঘুত্তমঃ। ২৮।
অধ চল্ছেদ তিছেদ তৎকিরীটং রবিপ্রভম্।
আনুজানামি গচ্ছত্মিদানীং বাণপীড়িভঃ। ২৯।
প্রবিশ্ব লক্ষামাশান্ত শ্বঃ পশ্যসি বলং মম।
রামবানেন সংবিদ্ধো হত্মপোহ্ব রাবণঃ। ৩০॥

মহত্যা লজ্জ্যা যুক্তো লক্ষাং প্রাবিশদাতুর:।
রামোহপি লক্ষণং দৃষ্টা মুচ্ছি তথ পতিতং জুবি।
মামুষরমুপাশ্রিতা লীলয়ানুশুশোচ হ।
তত: প্রাহ হল্মন্তং বৎস! জীবন্ন লক্ষণম্য ৬২॥
মহৌষধীং লমানীয় পুর্ববৎ বানরানপি।
তথেতি রাঘবেণাকো জগামাশু মহাকণিং॥ ৩৩
হল্মান্ বায়ুগেন ক্ষণাতীজ্বা মহোদধিম্।
এতিমিল্লন্তের চারা রাধণাল ন্যবেদপ্রন্থ ৩৪॥
রামেণ প্রেষিতো দেব! হন্মান্ ক্ষীরসাগরম্।
গতো নেতৃং লক্ষণশু জীবনার্থং মহোষধীং॥ ৫৫॥
গ্রুণা ভজারবচনং রাজা চিন্তাপরোহতবং।
জগাম রাজ্বাবেকাকী কালনেমিগৃহং ক্ষণাং॥ ৩৬॥

কিন্ত ক্ষন্তদেহ মাক্ষতিকে দর্শন করিরা, রাম রোশ পরবর্গ হাইরা, তীক্ষ্ণরে রাবণের অখ্ রুগ হাজ, স্ত, ধসুঃ, শর, ছত্ত ও পতাকা ছেদ করিরা, তখনই অশনিসদৃশ বিবিধ বাবে বৈরী শবীর ক্ষন্তবিক্ষত করিয়া কেলিলেন।২০।২১।২২।২৩। ।২৪।২৫/২৬/

অনন্তর ইক্ত থেমন অচলকে ভেদ করিয়াছিলেন, দেইরপ রাম, রাবণকে বিদ্ধ করিলে, বিভীবণাথানা, বিচল হইরা খীর সন্দনোপরে কণকাল মোহ প্রাপ্ত ছইল। অমনি ভাছার হস্ত হইতে শরাসন নিপতিত দর্শনে রাম, অন্ধচল্র বাণে—রাব-ণের শরাসন ও প্র্যাসম প্রভা বিশিষ্ঠ কিরীট, থও খণ্ড করিয়া ফেলিলেন। আর বলিতে লাগিলেন; ওরে ভ্রম্টদশা-নন! ভূই একণে আমার শর্ম্ভালে প্রপীড়িত হইরাছিস; আজা করিভেছি, অদ্য গৃছে গমন কর। কলা স্বস্থ হইরা আবার আমার বল দেখিস্। অমনি বিক্ষিতাক হতদর্প রাক্ষসপতি শক্ষার বিন্তবদনে, অভিসত্তর শহার রাজভবনাভিমুণে গমন করিলেন।২৭।২৮।২৯।৩০। অনস্তর, রঘ্বর, লক্ষ্মণকে মুচ্ছি ত ও ভূমিওলে বিলুঠিত দেখিয়া, কালবশে নরভাবপ্রযুক্ত বহুশোক করিতে লাগিলেন এবং হুমানকে আহ্বান করত কহিলেন। বংগ হন্মান্! শীত্র মহোষধি আনিয়া, লক্ষ্মণের ও যুদ্ধাহত কপিকুলের প্রাণক্ষণ কর। প্রনাক্ষণ্ণও যে আজ্ঞা বলিয়া, ক্ষণকালের মধ্যে বায়ুবেগে মহাসমুদ্রের পর পাবে উত্তীর্ণ হইল। ইতিন্দ্রেই রাবণের চর, লক্ষ্মণের প্রাণদানের নিমিক্ত মহেধিধ আনিতে সমুদ্র পারে হন্মান, গমন করিতেছে; এই সমস্ত কথা রাবণ-সন্ধিনে নিবেদন করিলে; দ্পানন, চিন্তাযুক্ত হুইলেন।৩১।৩২।৩১।৩৪।৩৫।

ভানন্তর নিশীব সমরে রাবণ, একাকী কালনেমি গ্রে গমন করিয়া, পুরেষাক্ত সমুদার কথা কালনেমি সমিধানে বর্ণন করিলে; কালনেমি, অর্থাদিয়ারা পূজা করিয়া কভাঞ্জনি-পুটে এই কথা বলিতে লাগিলেন। ৩৬। গৃহাগতং সমালোক্য রাবণং বিন্দায়াদ্বিতঃ।
কালনেমিরুবাচেদং প্রাপ্তলির্জারিছালঃ।
অর্য্যাদিকং ততঃ রুত্বা রাবণস্থাপ্রতঃ দ্বিতঃ ॥ ৩৭ ॥
কিন্তে করোমি ? রাজেন্দ্র ! কিমাগমনকারণম্ ?
কালনেমিরুবাচেদং রাবণো ছংগপীড়িতঃ ॥ ৩৮ ॥
মমাপি কালবশতঃ কউমেতছপদ্বিতম্।
ময়া শক্ত্যা হতো বীরো লক্ষ্যণঃ পতিতো ভুবি ॥
তং জীবয়িতুমানেতুমোষধীর্হন্তমান্ পতঃ।
যথা তম্ভ ভবেদ্বিত্বং তথা কুরু মহামতে ! ॥ ৪০ ॥
মায়য়া মুনিবেশেণ মোহয়ত্ব মহাকপিম্।
কালাত্যযো যথা ভূয়াৎ তথা কুত্বিছি মন্দিরে ॥৪১॥
রাবণস্থ বচঃ শুত্বা কালনেকিরুবাচ তম্।
রাবণেশ ! বচো মেহস্ত শুণু ধারয় তত্ত্ব ঃ ॥ ৪২ ॥

হে রাজন্! আপনার কি কার্যা সাধন করিতে হইবে এবং এরপ নিলীথ সময়ে আপনার আগমনেরই বা কারণ কি? তথন লকাধিপতি রাবণ, হংখানলে দগ্ধ-ছদয় ছইরা, ফালনেমিকে কহিতে লাগিল। দেখ মাতুল! কালমাছাত্মা-গুণে আমার এই সমস্ত মানসিক হংখ উপদ্থিত হইরাছে; মহাবীর লক্ষ্মণ, আমার শক্তিশেল দারা আহত ছইরা, ভূতণে নিপতিত হইয়াছে; প্রধান কপি ছমুমান তাহার জীবন রক্ষার নিনিত, ঔষধী আনয়ন করিতে গ্রমাদনে গ্রমন করিয়াছে। এক্ষণে হে মছামতে! বাহাতে ভাহার বিম্ন উপন্থিত হয়, সেই মন্ত করিছে ইবৈ। অতথ্য ভূমি, মুনি-বেশ পরিগ্রহ পূর্মক, সেই মহাক্লিকে মোছিত করিয়া, বাহাতে কাণ বিশ্বহর, সেইরূপ করিও ত্থাত্যাত্ম/৪০।৪১। ভ্রম্বর রাগ্রের বাধ্যাবশান, কাণনেনি কহিতে

প্রিরং তে করবান্যের ন প্রাণান্ধারয়াম্যহম্।
মারীচন্ত যথারণ্যে পুরাভূম্গ্রাক্সিণঃ ॥ ৪৩ ॥
তথৈর যে ন সন্দেহো ভবিষ্যতি দশানন!।
হতাঃ পুজান্চ পৌজান্চ বান্ধবা রাক্ষনান্চ তে ॥৪৪
ঘাতরিত্বাহম্পরকুলং জীবিতেনাপি কিন্তব?
রাজ্যেন বা সীতয়া বা কিন্দেহেন জড়ান্থনা? ॥ ৪৫
সীতাং প্রযক্ত রামায় রাজ্যং দেহি বিভীষণে।
বনং যাহি মহাবাহো! রম্যং মুনিগণাশ্রম্ ॥ ৪৬॥
স্নাত্বা প্রাতঃ শুভজলে কৃত্বা সন্ধ্যাদিকাঃ ক্রিয়াঃ।
তত একান্তমাশ্রেত্য স্থাসনপরিগ্রহঃ ॥ ৪৭ ॥
বিস্ত্য সর্বাতঃ সঞ্জমিতরান্থিবয়ান্ বহিঃ।
বহিঃ প্রব্রাক্ষণণং শনৈঃ প্রত্যক্ প্রবাহয় ॥ ৪৮ ॥

नाशिन-एर कर्क् वर्थाछ ! चना चामात बाका खरन कतिहा, তাহা রক্ষা কর। আবিও প্রতিজ্ঞা করিছেছি; তোমার প্রিয় কার্য্য না ক্রিয়া কথনই জীবন ধারণ ক্রিতে পারিব না टर बाजन्! शूटर्स मृशंक्रभाशी मात्रीठ (यक्रभ रुदेशाहिन, আমারও শরীর সেইরূপ হইবে। কিন্তু দেখ-পুত্র, পৌত্র; বন্ধু, বান্ধ্ব প্রভৃতি রাক্ষরকুণ নির্মূণ হইলে, ভোমার জীবনে আবে প্রয়োজন কি? আবে তুচ্ছ রাজ্য ধনে কিছা পরবধূ দীতা লইয়া কি ফলোদর আছে? অতএব হে মহাবাহো! व्यामात्र भन्नामार्स, बिदामारक मीछा, ध्वर विक्रीयनाक जाका थानान कतित्र। श्रद्धाः अकाको मूनिगानद मानाहत आध्यमणाए গামন করত, প্রতিদিন প্রাভঃকালে নির্মণ সলিলে স্মান ও मञ्जादिक्नां कि बादा (पर शविक करा ७९ शद देउद वाश विषय ७ मर्क मन পরিভাগ পূর্বক, একান্তে প্রথাসনে আদীন रहेता, भारतीय मश्यक क्या ४२। ४०। ४४। ४४। ४४। ४५। ष्णकः शत्र शांभविशीन करणवरत वाका विवत्र करेट অক্ষিচয়কে ফিরাইরা, সংযত অন্তঃকরণে আবাকে প্রকৃতির

প্রক্তেভিন্নমাত্মানং বিচারয় সদানঘ। চর চরং জগৎ রুৎসং দেহবুরী ক্রিয়াদিকম্ । ৪৯ । আবিকান্তৰপৰ্য্যন্তং দৃখ্যতে শ্ৰেরতে চ যৎ। দৈষা প্রকৃতিরিভাক্তা দৈব মায়েতি কীতি ভা ॥৫०॥ সর্গন্থিতিবিনাশানাং জগদ্রক্ষ কারণ্য। लाश्विष्धकृष्णिकाः मृज्ि म प्रमा । १)॥ কামক্রোধাদিপু ল্রান্তান্ হিং দাভৃষ্ণ দিকন্যকা। মোহয়ত্যনিশং দেবমাত্মনং তৈরগুলৈরিভুম্॥ ৫২ কভূ হিভোক্তমুখান্ অগুণানাক্ষনীশ্বরে। আরোপ্য স্বৰশং কৃতা তেন ক্রীড়তি সর্বদা। ৫৩ শুদ্ধোহপ্যাত্ম। যয়া বুকো পশুতী । সনা বহিঃ। বিস্মৃত্য চ স্বমাস্থানং মায়াগুণবিমোহিড:। ৫৪। যদা সদ্ভক্ষণা যুক্তো বোধ্যতে বোধক্ষপিণা। নির্ত্তদৃষ্টিরাশ্লানং পশ্তত্যের সদা ক্ষুটম্। ৫৫। की तमा कः मना रमही मूहारा धाक्ररेज छ रैनः। ত্মপ্যেবং সক্ষত্মানং বিচার্য। নিরতে ক্রিয়ঃ। ৫৬

প্রক্তেরন্যতালানং আছা মুক্তো ভবিষাদ।

যাতৃং যদাসমর্থেছিদি সপ্তণং দেবমাশ্রা।। ৫৭।

হৎপদ্মক্তিকে স্বর্ণপীঠে মনিগনান্ধিতে।

মৃত্লাক্ষকরের তত্ত্র জানকা। সহ সংস্থিতম্। ৫৮।

বীরাসনং বিশালাক্ষং বিদ্যুৎপূঞ্জনিভাষরম্।

কিরীটহারকেয়ুরকোস্ত ভাদিভিরন্বিভম্। ৫৯॥

মৃপুরি: কটকৈর্ভাতং ভবৈব বন্যালয়া।

লক্ষানেন ধনুত্ব ন্দুকরেন পরিসেবিভম্।

এবং ধ্যাত্বা সদাত্যানং রামং সর্বহাদিস্থিতম্।

ভক্ত্যা পরময়া যুক্তোম্বাতে নাত্র সংশয়ঃ ॥ ৬১

খুণু বৈ চরিতং তন্ত ভক্তৈনিভ্যমনন্যী:।

এবং চেৎকৃতপ্র্বানি পাপানি চ মহাস্ত্যাপ।

ক্ষাদেব বিনশ্রম্ভি যথাহয়েন্ড ল্রাশয়ঃ ॥ ৬২ ॥

বিভিন্ন ভাব প্রাপ্ত করাও। এই সমুদার চরাচর জগৎ
দেহ, বৃদ্ধি ইন্দ্রিয়াদি এবং আব্রন্ধ শুস্ব পর্যান্ত বাছা
কিছু অবলোকন করিছেছ বা শ্রবণ করিছেছ; সেই
সমুদারকে প্রকৃতি বলে। আবার বিজ্ঞ পণ্ডিতেরা, সেই
প্রকৃতিকে মারা বলিরা ব্যাখ্যা করেন। সেই মহামারা
স্থিটি স্থিতি বিনালোর এবং জগৎরূপ রক্ষের মূল স্বরূপ।
তিনিই শ্বেড, পাত, নীল, গোহিত প্রভৃতি বিবিধ বর্ণের জীব
সমূহ স্প্তী বরিতেছেন। কাম কোণাদি রিপুরাণ ভাঁহার

কন্যা। সেই ৰায়া, নিজন্তণে অহনি লি আত্মাদেবকৈ মুদ্ধ করিছেন। এবং কর্ছন্ব, ভোচ্ছন্ত প্রভৃতি স্থবচর এবং ত্মীয় গুণ সমূহ, আ্মারূপী ঈশ্বরে আরোপ করিয়া, আর উক্ত সকলকে নিজ বলে রাখিয়া সর্বাদা সেই আ্মা দেবের সহিত ক্রীড়া করিতেছেন। অতএব ত্মি সর্বাদা জ্ঞানথান্ গুরু হারা উপদেশ লইয়া, কার্যা কর তাহা হইলে স্বয়ং জৌবন্মুক্ত হইয়া উদ্ধার পাইবে, নতুবা এ পাপ দেহে আর ফল নাই। দেখ আপনার ছদপলে সেই জানকীর সহিত বীরাসনে সংস্থিত; ধনুবান করে লক্ষ্মণহারা পরিসেবিত ছ্বাস্কাল লামানলবর্ণ, ক্রিটি, হার, কেন্তুর ক্ষেত্তাদিল্লারা অলহ ত,

ভদ্দ রামং প্রিপূর্ণমেকং বিহার বৈরং নিজ্জক্তিযুক্তঃ। হৃদা সদা তাবিতভাবরপ-

বনমালা—বিরাজিত রাম্মণ চিন্তা করিয়া, আস্থাকে ওলা কর

মনামৰূপং পুরুষং পুরাণমূ। ৩৩। ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে যুদ্ধকাণ্ডে ষর্ফোহধ্যায়ঃ।

তাহা হইলে, তুমি ইহকাণে ও পরকালে উদ্ধার পাইবে। ৪৮। |৪৯|৫০|৫১|৫২|৫৩|৫৪|৫৫|৫৬|৫৭|৫৮'৫৯'৩০।৩১।৩২।৬২

> रेखि वियमधात्मतामात्रत्न छेमामास्त्रतमसारम युक्तकारण यहर्श्वारशात्रः।

সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

কালনেমিবচ: শ্রুণা রাবণোষ্মৃতসন্মিত্তম্।
জন্মাল ক্রোধতান্ত্রাক্ষাক্ষং সর্পিরন্তিরিবাগ্নিমত ॥ ১ ॥
নিহ্মি ডাং দুরাত্মানং মজ্যাসনপরাজ্মুখম্।
পরেঃ কিঞ্চিৎ গৃহীড়া ডং ভাষসে রামকিক্ষরঃ॥
কালনেমিরুবাচেদং রাবশং দেব ! কিং ক্রুধা ?।
ন রোচতে মে বচনং যদি ? গড়া করোমি তথে। ও

অনম্ভর রাবণ, কালনেমির এতাদৃশ অমৃততুল্য বাক্য শ্রবণ করত প্রতাক্ত হতাসনের ন্যায় ক্রোধে চক্ষুষর তাত্রবর্ণ করিরা থেলিয়া উঠিলেন এবং কহিলেন—তুই রাম কিছবের ন্যায় আমাকে সম্ভাষণ করিতেছিস্, বুঝিলাম তুই আমার শাসনের বিপরিত কার্যা করিতেছিস্ অভএব তুই ত্বরাচার তোকে এক্ষ-এই বিনাশ করিব। কালনেমি রাবণকে কহিল—হে দেব! ভোমার ক্রোধে আবিশাক কি ? যদি আমার বাক্ষ্যে তোমার ইত্যুক্তা প্রথমে শীন্তং কালনেমির্মহামুরঃ।
নাদিতো রাবণেনৈব হন্তুমদ্বিম্নকারণাও ॥ ৪ ॥
দ গড়া হিমবৎপার্শং তপোবন্যকলপারও।
তত্ত্র শিব্যোঃ পরিব্রতো মুনিবেশধরঃ খলঃ॥ ৫ ॥
গচ্চতো মার্গমাসাদ্য বায়ুস্থনোর্মহাত্যুনঃ।
তত্তো গড়া দদর্শাথ হন্তুমানাশ্রমং ফুভ্ম্। ৯ ।

মনোমত না হয় তবে তৃমি যাহা বলিতেছ আনি তাহাই করিব।
অনস্তর মহাস্থর কালনেমি প্রননন্দনের বিশ্ব সাধন মানমে
অতি ত্রাল্লিত হইয়া গমন করিলে, এবং হিমাজির পার্থ বর্ত্তী
ইইয়া শিষাধাণ পরিবেক্টিত হওয়ানন্তর মুনিবেশ পরিপ্রাহ
পূর্বক তপোবন কম্পানা করিয়া লইলে মহাত্মা প্রন তন্ত্রের
গত্তর পথ প্রাপ্ত হইল। অনস্তর প্রনায়জ মুনিমঙলাকীর্ণ
অন্তব আশ্রম পদ সন্দর্শন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিতে

চিন্তা না দ্ না শ্রী নান্পবননদনঃ।
পুরা ন দৃ ই মেত শ্রে মুনিমণ্ডল মুন্ত মম্॥ १॥
নার্গো বিজংশিতো বা মে জমো বা চিন্ত সম্ভবঃ।
মন্ত্রা শ্রী শ্রী মুনিমশেষতঃ। ৮।
পীড়া জলং ততো বামি জোণাচল মনুন্ত মম্।
ইত্যুক্ত্বা প্রবিবেশাপ সর্বতো যোজনায়ম্। ৯।
আশ্রমং কদলীশাল ধর্জুরপনদাদিভিঃ।
সমারতং পককলৈর শাবৈশ্চ পাদপৈঃ॥ ১০॥
বৈরভাববিনিমুক্তং শুদ্ধং নির্মল লক্ষণম্।
তিন্মিন্মহাশ্রমে রম্যে কালনেমিঃ স রাক্ষসঃ॥ ১১
ইক্রযোগং সমাস্থায় চকার শিবপুলনম্।
হত্মানতিবাদ্যাহ গৌরবেণ মহাস্থরম্॥ ১২॥
ভগবন্! রামদূতোহহং হন্মায়াম নামতঃ।
রামকার্যোণ মহতা ক্ষীরাকিং গল্ভমুন্ততঃ॥ ১০॥

লাগিল যে, আমার গমন পথের ভ্রংশ ও চিত্ত বৈকলা হইবার সন্তব, অতএব এই মুনির দিব্য আশ্রমপদে গম্ন করিয়া
তথার অল পান করতঃ ছিমান্তি গমন করিব এই ভাবিয়া
যোজন বিস্তৃত আশ্রম পদে প্রবেশ পূর্বক দেখিল যে আশ্রমটী
কদলী, শাল খছুর, পনস, আম প্রভৃতি বিবিধ স্থাক ফল
ভারাবনত রক্ষে পরিপূর্ণ এবং বৈরভাব বিনিমুক্তি ও সর্বাধা
ত জ ও নির্মাল—তথায় মায়াবেশধারী কালনেমি, রাক্ষদর্যণ
পরিরত হইয়া ইক্রজাল বিস্তার করতঃ শিবপূজা করিতেছিল, হন্মান সেই মহাম্মরকে অভিবাদন করিয়া কহিল—
তে ভগবন্! আমি শ্রীরামচন্দ্রের দৃত, আমার নাম হত্মান্
আমি রাম কার্য্য সাধ্যে গমন করিতেছি; কিন্ত এক্ষণে আমি

ভ্ষা মাং বাধতে ব্রহ্মন্! উদকং কুত্র বিদ্যতে।

যবেচ্ছং পাতুমিচ্ছামি কথ্যতাং মে মুনীশ্ব ! ॥১৪

তচ্ছুত্বা মাক্রতের্ব্যক্তাং কালনেমিস্তমত্রবীৎ।

কমগুলুগতং ভায়ং মম ত্বং পাতুমহ সি॥ ১৫॥

ভুংক্ষ্ব চেমানি প্রকানি ফলানি তদনন্তরম্।

নিবসন্ত সুখেনাত্র নিজামেহি ত্বরাস্ত মা॥ ১৬॥

ভূতং ভব্যং ভবিষ্যঞ্চ কানামি তপ্সা স্বয়ম্।

উপ্রিতো লক্ষ্মণ সর্বের বানরা রামবীক্ষিতাঃ॥ ১৭

তচ্ছুত্বা হ্মুমানাহ কমগুলুজলেন মে।

ন শাম্যত্যধিকা ভূকা ততো দর্শর মে জলম্ ১৮

তথেত্যাক্রাপ্রামাস বটুং মায়াবিকিশ্বতম্।

মুনীশ্ব ! কোন হানে সলিল আছে, আমাকে বলিয়া দিন, আমি তাহা পান করিয়া স্মৃত্ব ই ।৭৮৮৯।১০ ১১।১২।১৩।১৪।
অনস্তব কালনেমি পবন তনরের এইরূপ কথা শ্রবণ করিয়া
মধুর বাক্যে কহিছে লাগিল। আমার এই কমগুলু মধ্যে
জল আছে, যত ইচ্ছা হয় পান করিয়া পরে এই সমস্ত ফল
তক্ষণ কর। পরে স্মৃত্ব হইরা আমার আশ্রমে বাস করত
স্থেথ নিদ্রা যাও। আমি তপদ্যার বলে ভূত ভবিষাৎ
সকলই জানি। বোধ করি এতক্ষণ মহাবীর লক্ষ্মণ ও
যুদ্ধাহত বানর্বাণ জীবিত হট্রা শ্রীরামকে দর্শন করিতেছে।
হন্মান, কালনেমির এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া প্রস্কুলান্তঃ-করণে কহিছে লাগিল—মুনিবর! আমার সমধিক তৃষ্ণা
হট্রাছে, আপনার কমগুলু জলে এত্কা নিবারণ হইবে না।
অতএব একটা ব্রাহ্মণ তনরকে আজা কঞ্চন আমাকে জলাশর দেখাইয়া দেয়। অমনি বটুবেশধারী জ্বৈক্ষ রাক্ষ্য,

তৃষ্ণায় অভ্যন্ত কাতর হইয়া জল অন্নেষ্ণ করিতেছি; ছে

বটো ! দর্শর বিস্তীর্ণং বায়ুস্থনোর্জ্বসাশয়ম্।১৯।
নিমীল্য চাক্ষিণী ভোয়ং পীত্বাগচ্ছ মমাস্থিকম্।
উপদেক্ষ্যামি তে মক্সং যেন জক্ষ্যাসি চৌষধীঃ॥ ২০
তথেতি দর্শিতং শীস্ত্রস্থান সলিলাশয়ম্।
প্রবিশ্য হন্ত্যান্ তোরমপিবন্ধীলিতেক্ষণঃ ॥ ২১
ততক্ষ্যান্তারমপিবন্ধীলিতেক্ষণঃ ॥ ২১
ততক্ষ্যান্তারমপিবন্ধীলিতেক্ষণঃ ॥ ২১
ততক্ষ্যান্তারমায়া মহাকপিম্।
অগ্রসন্তাং মহাবেগাৎ মাক্ষতিং ঘোরন্ধপিণী ॥ ২২
ততো দদর্শ হন্ত্যান্ প্রসন্তীং মকরীং ক্রমা।
দারয়ামাস হস্তাভ্যাং বদনং সা মমার হ॥ ২৩॥
ততোহন্তরীক্ষে দদৃশে দিব্যন্ধপরাক্ষনা।
ধান্যমালীতি বিধ্যাতা হন্তুমন্তমথাত্রবীৎ ॥ ২৪॥

ত্বংপ্রসাদাদহং শাপাদ্বিযুক্তান্মি কপীশ্ব!।
শপ্তাহং যুনিনা পুর্কমপ্ররা কারণান্তরে॥ ২৫।
আশ্রমে যন্ত তে দৃষ্টা কালনেমির্মহান্তরঃ।
রাবণপ্রহিতো মার্গে বিশ্বং কর্ত্বং তবানঘ!।। ২৬
মুনিবেশধরো নাদে মুনির্ক্রিপ্রবিহিংসকঃ।
জহি দুষ্টং গচ্ছ শীত্রং দ্রোণাচলমন্ত্রমম্। ২৭।
গচ্ছাম্যহং ব্রহ্মলোকং ত্বংস্পর্ণাদ্ধু তকল্মধা।
ইত্যুক্ত্বা সা যথে স্বর্গং হন্তুমানপ্রথাশ্রমম্। ২৮
আগতং তং সমালোক্য কালনেমিরভাষত।
কিং বিলম্বেন মহতা তব ? বানরসপ্তম !॥ ২৯।
গৃহাণ মন্তো মন্ত্রাংস্ত্বং দেহি মে গুরুদ্বিক্রণাম্।
ইত্যুক্তো হন্তুমাম্মুফিং দৃঢ়ং বদ্ধাহ রাক্ষসম্। ৩০।

কালনেমির আজ্ঞায় বায়ুপুত্রকে সন্নিহিছ রুহৎ জলাশয় দেখাইয়া বলিল—হত্মন্! ভূমি জলপান করিয়া অভি সত্তর আইস, কারণ মন্ত্র শিক্ষা করিয়া ঔষধী অন্বেষণ করিয়া লইবে।১৫।১৬।১৭।১৮।১৯।২০।

অনস্তর তৃষ্ণাতুর মহাবীর পাবনপুত্র রক্ষদর্শিত জলাশরের জলে প্রবেশ করিবামাত্র, ভীমরুপিনী মকরী তাহার পদ গ্রাস করিল। তদর্শনে হস্তমান্ রাগান্থিত হইরা, স্থীর পদগ্রাসিনী ঘোররুপিনী মকরীকে হস্ত মারা ধারণ করির। বদন বিদারণ পূর্বক শমন সদনে প্রেরণ করিবামাত্র অস্তরীক্ষে পরমরূপ লাবণাবতী এক কামিনী দর্শন করিল, পরে সেই দিব্যাঙ্গনা, ক্ষণকাল আকাশ মার্গে অবস্থিতি করিয়া হুম্মানকে আস্ক্রণরিচ্যাদি সমস্ত বিষয় বর্ণন করিছে লাগিল—হে কণীশ্বর। পূর্বের আমি ধান্যমালী নামী অপ্সরা ছিলাম, কোন বিশেষ কারণ বশতঃ অভিশপ্তা হুইয়া এই জল মধ্যে বাস করিতে

ছিলাম। অন্য আপনার প্রসাদে সেই শাপ হইতে বিমুক্ত হইরা পূর্ব্বদেহ প্রাপ্ত হইলাম; কিন্তু হে অনঘ! তুমি যাহার আশ্রমে আসিরাছ, সে মহাস্তর কালনেমি; তোমার বিদ্ধ করিবার মানদে রাবণ কর্ত্বক প্রেরিত হইরা মুনিবেশ ধারণ করত এই কম্পিত আশ্রমে বাস করিছেছে। অতএব এক্ষণে তুমি ত্বরিত প্রে গমন করিয়া ঐ ছফাশর কালনেমিকে শীত্র বিনাশ কর। আমিও তোমার সংস্পর্শে বিগছ পাপা হইরা ব্রহ্মলোকে গমন করি, এই বলিয়া দিব্য রূপধারিণী কামিনী স্বর্গে গমন করিল। হন্মানও সেই আশ্রমে আসিরা উপ্রিত হইল, কালনেমি তাহাকে কহিছে লাগিল—হে বানর সন্থম! তোমার এত অধিক বিলম্বের কারণ কি? এক্ষণে আমার নিকট হইতে মন্ত্র গ্রহণ করিয়া গুক্ম ছক্ষিণা প্রদান করা। ২১।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।২৭।২৮।২১।

গৃহাণ দক্ষিণামেতামিত্যুক্তা নিজ্বান তম্।
বিসূজ্য মুনিবেশং সং কালনেমিম হাস্তরঃ। ৩১।

য়ুমুধে বায়ুপুজেন নানামায়াবিধানতং।
মহামায়িকদূতোহসে হমুমাম্মায়িনাং রিপুঃ॥৩২।
জ্বান মুফিনা শীফি ভয়মুধা মমার সং।
ততঃ ক্ষীরনিধিং গল্পা দৃষ্টা দ্যোণং মহানিরিম্।
আদৃষ্ট্য চৌষধীক্তর নিরিম্ৎপাট্য সল্বঃ।
গৃহীলা বায়ুবেশেন গল্পা রামস্য সন্নিধিম্। ৬৪।
উবাচ হমুমান্ রামমানীতোহয়ং মহানিরিং।
যত্যুক্তং কুরু দেবেশ। বিলয়ো নাত্র যুজ্যুতে। ৩৫
ক্রেলা হন্থুমতো বাক্যং রামঃ সন্তুষ্টমানসং।
গৃহীলা চৌষধীঃ শীঘুং স্কুষেনেন মহামতিং। ৩৬।

চিকিৎনাং কার্য্নামান লক্ষ্মণায় মহাত্মনে।
ততঃ সুপ্রোত্মিত ইব বুদ্ধা প্রোবাচ লক্ষ্মণঃ। ৩৭
তির্চ তির্চ ক গস্তানি হন্মীদানীং দশানন!।
ইতি ক্রবন্ ভমালোক্য মুর্যু বিঘায় রাঘবঃ। ৩৮।
মারুতিং প্রান্থ বৎসাদ্য ত্বপ্রসাদান মহাক্রপে?
নিরাময়ং প্রপশ্যামি লক্ষ্মণং ভ্রান্তরং মম। ৩৯।
ইত্যুক্ত্বা বানরৈঃ নার্দ্ধং স্থুগ্রীবেণ নমস্থিতঃ।
বিভীষণমতেনৈর যুদ্ধায় সময়ন্থিতঃ।। ৪০।।
পাষাণৈঃ পাদপৈন্দের পর্ম্বতাগ্রিশ্চ বানরাঃ।
যুদ্ধায়াভিমুখা ভুদ্ধা যযুঃ সর্ক্ষে যুখুৎসবঃ। ৪১॥
রাবণো বিব্যথে রাম্বাণৈর্ফিছো মহাস্করঃ।

কালনেমির এই কথা শ্রবণ করতঃ মহাবীর হনুমান দৃচ্
রূপে মৃষ্টি বছ করিবা 'এই ডোমার গুৰু দক্ষিণা লও' বলিরা
মুক্ট্যাঘাছে ভাষাকে বিচলিত করিরা ফেলিল। মহাস্কর
কালনেমিও বিবিধ মারাজাল বিস্তার করিরা বায়ুপুভের সহিত
যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিল। কিন্তু মারাবী-শক্ত মহামায়িক
হনুমান আর এক মুফ্টাাঘাতে কালনেমির মস্তক চূর্ণ করির।
ফলিল, কালনেমিও মুহুর্ভ মধ্যে পঞ্চত্ব প্রাপ্ত হইল।

অনন্তর মহাস্তর হতুমান ক্ষীর সমুদ্র তীরে গমন করিয়া ক্রোণ গিরি সন্দর্শন করিল। তথায় ঔষধী অদর্শনে গিরি উৎপাটন পূর্ব্বক মন্তকে ধারণ করিয়া বাস্তুবেগে রাম সমিধানে গমন করিল; এবং কহিল—হে রঘুনাথ! আমি এই মহা-গিরি আনয়ন করিয়াছি, এক্ষণে বাহা যুক্তিযুক্ত হয় ভাহাই করুন, আর বিলম্বের প্রয়োজন নাই ৩০।৩২।৩২।৩২,৩৪।৩৫। শীরামচক্র হন্ত্যানের এই বাকা শ্রবণ করিয়া আৰম্পিত হইলেন। পরে সুষেণ দ্বারা ঔষধী গ্রহণ করত মহান্ধা লক্ষ্যপের চিকিৎসা আরম্ভ করিলেন। ক্ষণকাল মধ্যে লক্ষ্যণ
বীর জীবন প্রাপ্ত হইয়া স্প্রোথিতের ন্যায় উথিত হইলেন,
এবং কহিলেন—গুরে দশানন! ডুই কোথার যাস্? ক্ষণকাল
অবস্থান কর্, আমি ডোরে শীন্তই যমালয়ে প্রেরণ করিতেছি
লক্ষ্যণ এই কথা বলিছেছেন—ইভ্যবস্বে শ্রীরামচক্র তাঁছাকে
আলিঙ্গন দিয়া মন্তক আরাণ করিলেন। ৩৬। ৩৭। ৩৮।

অনন্তর প্রীরামচন্দ্র, বায়ুপুত্রকে বলিয়াছিলেন; বৎস হুমুমান্! অদ্য ভোমার প্রসাদে আমার ভাতা নিবর্তাধি হইল; অভএব আশীর্কাদ করি, তুমিও সুছু থাক। পবন নন্দনকে এই কথা বলিয়া, বযুবংশাবতংগ শ্রীরাম, বিভীষণের পরামর্শে সুগ্রীব সহ কণিকুল সমভিব্যাহারে যুদ্ধ করিতে রণছলে উপস্থিত হইলেন। অমনি প্রস্কু আজ্ঞার পাষাণ, পাদপ ও পর্ব্বতাগ্র হস্তে ধারণ করিয়া বিবিধ বানর নিকর, সর্ব্বাগ্রে মাতঙ্গ ইব সিংহেন গক্তভেনের পন্নগং। ৪২।
অভিভূতোইগমজান্ধা রাঘবেণ মহাত্মনা।
সিংহাসনে সমাবিশ্র রাক্ষমানিদমন্ত্রবীৎ ॥ ৪৩॥
মানুষেনৈর মে মৃত্যুমাহ পূর্বং পিডামহং।
মানুষে হিন মাং হন্তং শক্তোইন্তি ভূবি কশ্চন।
ততো নারায়ণং সাক্ষামানুষোইভূন্ন সংশয়ং।
রামো দাশর্থিভূত্য মাং হন্তং সমুপন্থিতং। ৪৫।
অনরণ্যেন যৎপূর্বিং শপ্তোইহং রাক্ষসেশ্বরা!।
উৎপ্রস্যুতে চ মত্বংশে পর্মাত্মা স্নাতনঃ। ৪৬।
ক্রে তুং পু্লুপৌল্রেশ্চ বাদ্ধবৈশ্চ সমন্থিতং।
হনিষাসে ন সন্দেহ ইভুক্ত্যা মাং দিবং গতং।৪৭।

দ এব রামঃ দঞ্জাতো মদর্থে মাং হনিষ্যতি ।
কুন্তুকর্ণস্ত মূঢ়াতানা দদা নিজাবশংগতঃ । ৪৮ ।
তং বিবোধ্য মহাদল্পমানমন্ত মমান্তিকম্।
ইত্যুক্তান্তে মহাকায়ান্তর্গং গড়া তু যত্নহঃ । ৪৯ ।
বিবোধ্য কুন্তপ্রবর্গং নিস্কুরোবণদল্লিধিম্।
নমস্কৃত্য দ রাজানমাসনোপরি দংস্কিতঃ । ৫০ ।
তমাহ রাবণো রাজা ভাতরং দীনয়া গিরা ।
কুন্তুকর্ণ ! নিবোধ তুং মহৎকন্তমুপন্তিত্ম । ৫১ ।
রামেণ নিহতাঃ শুরাঃ পুর্জাঃ পৌজ্ঞান্চ বান্ধবাঃ ।
কিং কর্মব্যমিদানীং মে ? মৃত্যুকাল উপন্তিতে ।৫২

পাৰন করত, রাক্ষসগণ সজে সমর আরম্ভ করিল। যেমন মাতজ সিংহ কর্জক, এবং পারগ গারুড় কর্জক আক্রমিত হর; সেইরপ মহাস্থর স্বাধিপতি রাবণ, রাম কর্জক আক্রমিত ও ও রাম শারে জর্জ্জবিত হইয়া, প্রাণ ভরে স্বীর ভবনে প্রবিষ্ট হইল। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২।

তনস্তর দশানন, রত্ন খচিত স্থাচিত্র স্বর্ণ সিংহাসমে উপবিষ্ণ হইরা, সভান্থ রাক্ষসদিগকে এই বলিয়াছিল; দেখ
সভান্থ পারিষদগণ! পূর্বে পিতামছ ব্রহ্মা আমাকে বলিয়া
ছিলেন। যে, 'মনুষা হস্তে তোমার মৃত্যু হইবে। আর ও
পূর্বে স্থ্য বংশীর জনৈক ভূপতি, কোন বিশেষ কারণে
আমাকে অভিশন্পাৎ করেন যে, ওছে রাক্ষসেশ্বর! আমি
নিশ্চর বলিতেছি জানিবে—সাক্ষাৎ পরমাত্মা সনাতন
আমার বংশে জন্ম গ্রহণ করিয়া, ভোমাকে পূল্ল, পেতি
এবং বান্ধবাদির সহিত, যুদ্ধে নিঃসন্দেহ নিহত করি
বেন'। পিতামহ আমাকে এই সমস্ত কথা বলিয়া, শ্বর্ণে গমন

করিলেন। আমিও বোধ করি সেই পারমাত্রা, আমার জন্য রযুক্লে দশরথের ঔরসে রামরপে জন্ম প্রাহণ করিরান্দ্রমার আমাকে সম্লে নিমূল করিবেন। নতুবা এই ভূমওলে এমন কোন নর দেখিতে পাইনা যে যুদ্ধে আমাকে সবংশে বিনাশ করে। সে যাহা হউক এক্ষণে হে রাক্ষস নিকর! মূঢ়াত্রা কুস্তকর্ণ সর্বাদাই নিম্রোভিভূত আছে তাহাকে বোধ প্রদান করিরা, আমার নিকটে আন্যান কর। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮।

রাক্ষস পতি রাবণ, এই আজা করিবামাত্র, রাক্ষস গণ তারিত পদে গমন করত নিজা ভল্প করাইরা কুস্তকর্ণকে রাবণ সন্নিধানে আনরন করিল কুস্তকর্ণও জ্যেষ্ঠ জাভাকে প্রণতি প্রঃসর, তদাজা ক্রমে এক অপূর্ব্ব আসনে উপবিষ্ট ছইলেন। তথন রাবণ, ভাভাকে দীন বচনে কছিতে লাগিল। দেখ, কুস্তকর্ণ! হোমার অসমরে নিজা ভঙ্গ করিবার কারণ এই, আমার অভ্যন্ত হুঃখের সময় উপস্থিত ইইয়াছে; স্থ্রো-বংশোদ্ভব দশরথ ভনর রাম, পুত্র পৌত্র, বন্ধু বাক্ষবাদি বহু রাক্ষসদিগকে রণে নিছ্ত করিয়াছেল; ভাহাতে লহা এক এষ দাশরধী রামঃ স্থাবিসহিতো বলী।

সমুদ্রং সবল জীর্ছা মূলং নঃ পরিক্লস্তি। ৫৩।

যে রাক্ষদা মুখ্যতমান্তে হতা বানরৈঘু ধি।

বানরাণাং ক্ষয়ং যুদ্ধে ন পশ্যামি কদাচন। ৫৪॥

নাশয়স্ব মহাবাহো! যদর্থং পরিবোধিতঃ।

ভাতৃরর্থে মহাসত্ত্ব! কুরু কর্মা স্তত্ত্বরুম্। ৫৫।

শ্রুজ তের্জাবণেক্রস্তা বচনং পরিদেবিতম্।

কুজকর্ণো জহাসোত্তর্বেচ্নং চেদমত্রবীং। ৫৬।

পুরা মন্ত্রবিচারে তে গদিতং যন্ময়া নৃপ!।

তদ্য তামুপগতং কলং পাপস্য কর্মণঃ। ৫৭।

পুর্ববেবে ময়া প্রোক্তো রামো নারায়ণঃ পরঃ।
নীতা চ যোগমায়েতি বোধিতোইপি ন রুধানে। ৫৮
একদাহং বনে সানো বিশালায়াং ছিলো নিশি।
দৃষ্টো ময়া মুনিঃ সাক্ষায়ায়দো দিব্যদর্শনঃ। ৫৯।
তমক্রবং মহাভাগ। কুতো গস্তাসি মেবদ।
ইত্যুক্তো নারদঃ প্রাহ দেবানাং মন্ত্রণে স্থিতঃ॥
তব্রোৎপল্লমুদন্তং তে বক্ষ্যামি শৃণু তত্ত্বতঃ।
য়ুবাভ্যাং পীজ্তা দেবাঃ সর্বেবিফুমুপাগতাঃ॥
উচুন্তে দেবদেবেশং স্তত্ত্বা ভক্ত্যা সনাহিতাঃ।
জহি রাবণমক্ষোভ্যং দেব! তৈলোক্যকন্টকম্ ॥৬২

বারেই রাক্ষ্য ও বীর শ্না হইরাছে। এক্ষণে কি করা কর্ত্বা কিছুই হির করিতে পারিতেছি না। বোধ হয় আমার মৃত্যু কালও সমাপত হইরাছে, কারণ দেই দাশরথি রাম, বীরবর কপিকুল-ছিলক স্থ্রীবের সহিত মিলন করত সঠননো মহা শম্ত পার হইরা, লক্ষার আগমন পূর্ব্বক, আমাকে সমূলে নিমূল করিতেছেন। যে যে প্রধান প্রধান রাক্ষ্য ছিল, ভাহারা যুদ্ধে নামর বারা শমন সদনে গমন করিয়াছে। কিন্তু এই আশ্র্যা দেখিতেছি, রণে বানরের ক্ষয় নাই। অভএব, হে মহাবাছো! কপিকুল ক্ষয় করত বৈরী বিনাশরণ, ত্রুকর কার্যা দিছ কর, তাহা হইলে আমি পরম পরিভোষ লাভ করিব।

অনস্থর কুন্তকর্ণ রাবণের এইরুপ বাক্য প্রবণ করিয়া, উচ্চৈঃস্বরে হাস্য করত এই কথা বলিয়াছিল। মহারাজ! পূর্বেমন্ত্র বিচারে আমি আপনাকে যে কথা বলিয়াছিলাম, এক্ষণে আমার সেই বাক্য সফ্ল হইল পাপের ফল উপগত হইয়াছে: পূর্ব্বে আমি বলিয়াছিলাম—রান মানুষ নয় সাক্ষাং নারারণ; আর সীতাও মানবী নয় সাক্ষাং যোগমায়া, ইহা আপেনি জানিয়াও বুঝিলেন না। এক দিন নিশীথ সময়ে আমি মহারণ্য মধ্যে পর্বতে শিথরস্থ এক বৃহৎ শিলার উপরে বাস করিতেছিলাম, এমং কালে নারদ মুনিকে সেই স্থান দিয়া গমন করিতে দেখিয়া উহাকে জিল্ঞাসা করিশাম; হে মহাভাগ! এমন সময়ে আপেনি কোথায় গমন করিতেতি ছেন আমাকে বলুন ? ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪।৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯।

অতঃপর কৃতত্বর্গের বাক্য শ্রবণ করিয়া নারদ মূনি কহিতে লাগিলেন—হে রাবণানুজ! আমি তোমার বলিছেছি শ্রবণ কর—তোমাদের দারা সকল দেবতারা নিপীড়িত হইয়া বিফুকে অগ্রগামী করত দেবেশের নিকট গমন করিয়াছিলেন এবং সকলে সমাহিত ংইয়া তাঁহাকে বিবিধ স্তব করভ বলিয়াছেন—হে দেব! দেবতা ও তিলোক কটক দশাননকে

মানুষেণ মৃতিস্কস্ত কল্পিত। ব্রহ্মণ। পুরা।
অতস্তং মানুষো ভূড়া ক্ষহি রাবণকণ্টকম্। ৬৩
তথেত্যাহ মহানিফুঃ সত্যসঙ্কল্প ঈশ্বরঃ।
আতো রঘুকুলে দেবো রাম ইত্যভিবিশ্রতঃ। ৬৪।
স হনিষাতি বঃ সর্বানিত্বাক্তা প্রযথো মুনিং।
অতো জানীহি রামং ছং পরং ব্রহ্ম সনাতনম্। ৬৫
ত্যক্র বৈরং ভজস্বান্ত মারামানুষক্রপিণম্।
ভক্ততো ভক্তিভাবেন প্রসীদ্তি রঘুত্তমঃ।৬৬।
ভক্তিজনিত্রী জ্ঞানস্থ ভক্তিমোক্ষপ্রদায়িনী।
ভক্তিহীনেন যৎকিঞ্জিং ক্লতং সর্ব্যমসংসমম্। ৬৭।

অবতারাঃ স্থবহবো বিক্ষোলীলামুকারিণঃ।
তেষাং সহস্রসদৃশো রামো জ্ঞানময়ঃ শিবঃ। ৬৮
রামং ভজন্তি নিপুণা মনসা বচসানিশম্।
অনায়াদেন সংসারং তীর্তা যান্তি হরেঃ পদম।৬৯

যে রামমের সততং ভুবি শুদ্ধসন্ত্রা
ধ্যায়ন্তি তহা চরিতানি পঠন্তি সন্তঃ।
মুক্তান্ত এব ভবভোগমহাহিপাশৈঃ
নীতাপতেঃ পদমনস্তম্পং প্রয়ান্তি॥ ৭০॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
যুদ্ধকাণ্ডে সপ্তমোহধ্যাত্রঃ।

বিনাশ করুন। পুর্বের ব্রজা বলিয়াভিলেন দে, 'রাবণ মনুষ্য মান্ত বিনষ্ট হইবে'; জাতএব আপনি মনুষ্যরূপী হইয়া স্বর্গ, মন্তা ও পালগুলের কণ্টিয় বিনাশ করুন। এড চ্ছুবণে, জগ-দীশ্র মহাবিষ্ণু 'তথান্ত বিলিয়া বিগ্রত হইবো, দেবতা সকলেই স্বাস্থ্যবান প্রস্থান ব্যৱহান।

অনন্তর ত্রিলোক নাথ মহাবিষ্ণু রঘুবংশে জ্যাগ্রহণপূর্বক রাম নামে খ্যাও হইয়া, কোন বিশেষ কারণে লঙ্কার আগগমন করতঃ তোমাদিগকে বিনাশ করিবেন, এই বলিয়া দেবর্ষি শেরদ প্রস্থান করিলেম।—অভএব এক্ষণে প্রীরামকে পারম এক সনাবন জানিবেন, স্মহরাং বৈরভাব পরিভাগে করিয়া সেই মায়া মান্ত্যরূপী রামচন্দ্রকে আদাই ভজনা করুন। এবং ভিলভাবে শরণাপার হইলে রঘুবংশাবতংগ শ্রীরাম প্রসার হই-বেন, কারণ ভিল্ভই জ্যানের জন্ম প্রস্বিনী ও ভিল্ভই মোক প্রদাবিনী কানিবেন; তবে ভিল্ভ হীন ইয়া ধে কোন কার্যা

করা থার সে সমস্তই অসতের সমান! বিষ্ণু সীয় লীলাবশতঃ
নানারপে অবভার হইয়া ধারণীতলে অবভীর্ণ হইরাছেন,
তর্মাধ্য শ্রীরামচন্দ্র সহস্রাংশে জ্ঞান ধারণ করিয়া থাকেন
সেই জন্য জ্ঞানী ব্যক্তিরা মন ও বাক্যাধারা দিবানিশি শ্রীরামবেভক্তনা করতঃ অনায়াসে এই ভবসাগর উত্তীর্ণ হইয়া শ্রীহরির
পাদপদ্ম প্রাপ্ত হয়। যে সকল ব্যক্তি বিশুদ্ধচিন্ত হইয়া
শ্রীরামকে ধ্যান করে এবং তাঁহার চরিত্র পাঠ করে তাহারা
সংসার ভোগরপ মহাপাশ হইতে বিমুক্ত হইয়া সীভাপতির
পাদ কমলরপ স্থাপ্তাপ্ত হইয়া থাকে। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩।
১৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০।

ইতি জীমদধ্যাক্সরামায়ণে উমামহেশ্বরসন্থাদে
যুদ্ধকাণ্ডে সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

অফমো২ধ্যায়ঃ

কুন্তকর্ণবচঃ শ্রুত্বা ভুকুটীবিক্টাননঃ।
দশপ্রীবো জগাদেদমাসনাছৎপতন্ত্রিব ॥ ১॥
ত্বমানীতো ন মে জ্ঞানবোধনায় স্তবুদ্ধিমান্।
ময়া কুতং সমীকৃত্য যুদ্ধস্থ যদি রোচতে?॥ ২॥
নো চেদ্গচ্ছ স্তযুপ্তর্থং নিদ্রা ত্বাং বাধতেহধুনা।
রাবণস্য বচঃ শ্রুত্বা কুন্তকর্নো মহাবলঃ। ৩।
কুন্টোহয়মিতি বিজ্ঞায় তুর্গং যুদ্ধায় নির্ম্বো।
ন লজ্জ্যয়িভা প্রাকারং মহাপর্বভসন্তিভা।৪।
নিয়্যো নগরাভূর্গং ভীষরন্ হরিদৈনিকান্।
স ননাদ মহানাদং সমুদ্ধমভিনাদয়ন্॥ ৫॥
বানরানু কাল্যামাস বাভভ্যাং ভক্ষয়ন ক্রুয়া।

কুষ্ঠ কর্ণং তদা দৃষ্টা সপক্ষবিব পর্যভয় ॥ ৬ ॥

ছজুবুর্ব নিরাং সর্ফ্রে কালান্তকমিবাথিলাঃ।

অনন্তং হরিবাহিন্যাং মুদ্গরেণ সহাবলম্। ৭।
কালয়ন্তং হরীন্ বেগাৎ ভক্ষয়ন্তং সমন্ততঃ।

ছুর্ণয়ন্তং মুদ্গরেণ পাণিপাদৈরনেকধা॥ ৮ ॥

কুষ্তকর্ণং তদা দৃষ্টা গদাপাণিবি ভীষণঃ।
ননাম চরণো ভন্ম ভাতুর্জ্যেষ্ঠন্ম বুদ্ধিমান্॥ ৯ ॥

বিতীধণোহহং ভাতর্মে দয়াং কুরু মহামতে।।
রাবণস্ত ময়া ভাতর্ফ্রধা পরিবোধিতঃ॥ ১০॥

মীতাং দেহীতি রামায় রামঃ সাক্ষাজ্জনাদিনঃ।
ন শুণোতি চ মাং হন্তং খজ্মমুদ্যম্য চোক্ষবান॥১১

মহাদেব কহিয়াছেন—বিকটানন দশানন ক্ষুকর্ণের বাক্য শাকা শুনিয়া জভজে হেন জাগং বিদ্যা করিবার র্জনা উথিত হুইয়া বলিলেন—তুমি স্কুদ্ধি ইইয়া আমাকে জ্ঞান প্রদান করিবে বলিয়া ভোমাকে আদ্যান করি নাই, মংকৃত যুদ্ধ করিতে বদি ভোমার অভিকৃতি হয় তবে যুদ্ধযাত্রা কর, নচেং তুমি নিজা যাণ্ড, কারণ এক্ষণে নিজা তোমাকে কই দিভেছে। মহা-বীর ও পর্বত্তকায় কুন্তকর্ণ রাবণবাক্য শ্রবণ করিয়া ব্রিলেন. ফে, জ্যেষ্ঠ অভিশয় কুন্ধ ইইয়াছেন। অনন্তর ত্রিত পদে প্রাকার উল্লেখন পূর্বাক যুদ্ধার্থ বহির্গত হইল; বানর সৈন্যাগণকে বিভীষিকা প্রদেশন ও স্বকীয় মহানাদে সমুজ্রের প্রতিশ্বনি উপ্রতি করিতে করিতে সত্ব নগ্র ইইতে নির্গত হইল;

আনতার ক্রোধপরতান্ত হইয়া বানার দিগকে ধারণ করতঃ ভক্ষণ করিতে লাগিল; পরে বানারগণ পর্বাত সদৃশ কুন্তকর্পকে কালান্তকের ন্যায় বানার-বৈন্য মধ্যে বিচরণ করিতে অবলোকন করিয়া পলায়ন করিতে আরম্ভ করিল। পদাপাণী বিভীবণ সম্মুখে কুন্তকর্পকে সন্দর্শন করিয়া প্রভ্যুষ্ঠ ভ্রাতার চরণযুগলে প্রণতি পুরঃসর কহিতে লাগিলেন; হে ভ্রাভ মহা মতে! আমি বিভীষণ, আমাকে কুপা করুল। আর পূর্বের আমাদিগের উভয়ের জ্যেষ্ঠ লকাপতিকে বলিয়াছিলাম—ভাত! জীরামকে সীতা সমর্পণ করুন, কারণ তিনি সাক্ষাৎ গোলকল পতি জনাদ্দন। জ্যেষ্ঠ আমার এই কথা , তানিবামাতে ক্রেগণাকতে বিন প্রজ্ঞালিত হইয়া তীক্ষ অসি ধারণ করতঃ আমাকে

ধিক্ ত্বাং গচ্ছেতি মাং হত্বা সদা পাপিতিরারতঃ
চতুর্তিমন্ত্রিতিঃ সার্চ্চং রামং শরণমাগতঃ ॥ ১২ ।
তচ্চুত্বা কুন্তকর্ণোহপি জ্ঞাত্বা ভাতরমার্গতম্ ।
সমালিঙ্গ্রা চ বংস ! ত্বং জীব রামপদাশ্রারং ॥ ১৯ ॥
কুলসং ক্রেণার্থার রাক্ষ্যানাং হিতার চ ।
মহাভাগবতোহিদ ত্বং পুরা যে নারদাচ্চ্যুত্রম্ ।
গচ্চুত্ তাত ! মমেদানীং দৃশ্যতে ন চ কিঞ্চন ।
মদীরো বা পরো বাপি মদমত্তবিলোচনঃ ॥ ১৫ ॥
ইত্যুক্তোহশ্রুম্বো ভাতুশ্রেণাবভিবন্দা সং ।
রামপাশ্রম্পাগতা চিন্তাপর উপস্থিতঃ ॥ ১৬ ॥
কুন্তকেণাহপি হস্তাভ্যাং পাদাভ্যাং পেষ্যন্ হরীন্

চচার বানরীং সেনাং কালগ্ন্ গন্ধ হস্তিবং ॥ ১৭ ॥
দৃষ্ট্যা তং রাঘবং ক্রুদ্ধো বায়ব্যং শস্ত্রমাদরাং ।
চিক্ষেপ কুন্তকর্ণায় তেন চিচ্ছেদ রক্ষসং ॥ ১৮ ॥
সমূদ্গরং দক্ষহস্তং তেন ঘোরং ননাদ সঃ ।
সহস্তং পতিতো ভূমাবনেকানর্দয়ন, কপীন্ ॥ ১৯ ॥
পর্য্যস্তমাপ্রিভাঃ সর্ব্বে বানরা ভয়বেপিতাঃ ।
রামরাক্ষসয়োর্য্ দ্বং পশুন্তঃ পর্যাবস্থিতাং ॥ ২০ ॥
কুন্তকর্ণ ক্রিছ্রুং শালমূদ্য বেগতঃ ।
সমরে রাঘবং হন্তং ছুদ্রাব ভমথোইচ্ছিনং ॥ ২১ ॥
শালেন সহিতং বামহস্ত মৈন্দ্রেণ রাঘবঃ ।
ছিন্নবাভ্যথায়াতং নর্দন্তং বীক্ষা রাঘবং ॥ ২২ ॥

প্রহার করিতে উদ্যত হইলেন, এবং কহিলেন—গুরে মূচ্মতে রাক্ষসাধম! তোরে ধিক্, তুই এক্ষণেই আমাকে পরিত্যাপ করিয়া পাপাঝা চারিজন মন্ত্রীর দহিত রামের শরণাগত হ, নতুবা আমার হন্তে তোর পরিত্রাণ নাই। এই বাক্যশ্রবণে কুন্তকর্প, আমার কনিষ্ঠ ভাতা আসিয়াছে জানিয়া সমাক প্রকারে আলিঙ্গন প্রদান করতঃ কছিতে লাগিলেন। বংস! তুমি রাম পদাশ্রমী হইয়া, প্রাণ রক্ষা কর। পূর্বের আমি নারদ মুখে শুনিয়াছিলাম; তুমিই বংশ রক্ষার্থে এবং রাক্ষসের হিতের নিমত্ত দীর্ঘ জীবন প্রাপ্ত ইইয়া, মহাভাগ্যধর হইবে। অনন্তর ধর্মপরায়ণ বিভীষণ,মহাকায় মহাবীর কুন্তকর্ণের এইরপ অমৃত্তন্য আপন বিভীষণ,মহাকায় মহাবীর কুন্তকর্ণের এইরপ অমৃত্তন্য আপন বিভীষণ,মহাকায় মহাবীর কুন্তকর্ণের এইরপ অমৃত্তন্য আপন করিয়া কহিতে লাগিল; হে ভাতঃ! তবে এক্ষণে আপনি গামন করুন; আমি আপনার কি অপবের সক্ষণ দেখিতেছি না। এই বলিয়া, অঞ্পূর্ণ নয়নে মধ্যম সহেলেরের চরণে অভিবাদন পূর্ব্বক, রামপাধ্যে উপনীত

হইয়া চিন্তা করিতে লাগিল । ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৬ । ৭ । ৮ । । ৯ । ১০ । ১১ । ১২ | ১৩ | ১৪ | ১৫ | ১৬ ।

এদিকে ভীষণাকতি কুন্তুকর্ণ, হস্তপদন্থারা বানরগণকে প্রেষণপূর্দ্ধক, বানরীদেনার মধ্য দিয়া বিচরণ করন্তঃ, নলবনে মন্তমান্তজের ন্যায়, বস্ত্রপাত সদৃশ, বারস্থার হুভঙ্কার ছাড়িভেলাগিল। তাহাতে সমস্ত দৈনাই বিনফ্ট হইতে লাগিল। তদ্দর্শনে রাম মহাকুদ্ধ হইয়া, ভৎক্ষণাৎ বায়্বয় অস্ত্রহাবা কুন্তকর্ণের মুলার বিশিষ্ট দক্ষিণ হস্ত খণ্ড করিয়া ফেলিলেন। সেই সমস্ত শরীর খণ্ড, উভয়্ন পক্ষীয় বহু সেনাসফ্ ধরাশারী ছইল। ভদ্দর্শনে অমনি ভয়কম্পিত বানরগাণ, সমুদ্রনভীরন্থ প্রাকারে উপবিষ্ট ছইয়া রাম রাক্ষসের ভুমুল সংগ্রাম অবলোকন করিতে লাগিল। ১৭।১৮।১৯।২০।

এমৎকালে মহাণীর ছিলৈকহন্ত কুন্তকর্ণ, অতি প্রকাশু এক শালরক্ষ বাম হন্তে ধারণ করিয়া রঘুনাথকে প্রহার করিতে, তৎসন্ধিধানে বেগে গমন করিলে, জীরাম, বিবিধাস্ত্র প্রয়োপ-

দ্বাবধ চল্ডে নিশিতাবাদায়াক্ত পদদ্রম। চিচ্ছেদ পভিতে পাদৌ লক্ষাদ্বারি মহাম্বনো ॥২৩ নিক্সপাণিপাদোহপি কুন্তকর্ণোহতিভীষণ। বড়বামুখবদ্বন্তুং ব্যাদায় রঘুনন্দনম্ ॥ ২৪ ॥ অভিত্নভাব নিনদন রাভশ্চক্রমদং যথা। অপূর্য়ৎ সিতাপ্রিশ্চ সায়কৈস্তদ্রত্ত্ব: 🛚 ২৫ 🖡 শরপূরিভবক্ত্যোহদে চুক্তোশাভিভয়ঙ্করঃ। অথ সূর্য্যপ্রতীকাশমৈন্ত্রং শর্মনুত্রমমু ॥ ২৬ ॥ বজ্রাশনিদমং রামন্চিক্ষেপাস্বমৃত্যবে। স তৎপর্বভদঙ্কাশং ক্ষুরৎকুওলদংফ্রকম্ । ২৭ ॥ চকর্ত্ত রক্ষোধিপতেঃ শিরো ব্লভমিবাশনি⁸।

তচ্ছির: পতিতং লক্ষাদারি কায়ো মহোদধৌ ৷ ২৮ निद्रारुख (ताध्यम्बातः कार्या नकाम्रह्नं यर। ততো দেবা: म अवरहा शक्तर्याः প्रमुगाः थगाः ॥ २२ দিকা যক্ষা গুহ্নকাশ্চ অপুসরোভিশ্চ রাঘ্বম। ঈড়িরে কুমুমাদারৈর্দ্বর্যন্তশ্চাভিনন্দিতাঃ । ৩০ আজগাম তদা রামং দ্রষ্টুং দেবমুনীশ্বর:। নারদো গগনাত্র্ণ স্বভাস। ভাসয়ন্ দিশ: ॥ ৩১ রামমিক্দীবর**ভামমুদারাঞ্ধনুর্দ্**রম্। ঈষতাত্রবিশা**লাক্ষ**মৈন্দ্রাস্ত্রাঞ্চিত্রগান্ত্রম্ ॥ ৩২। দয়ার্ড দৃষ্ট্যা পশ্যন্তং বারনরান শরপীড়িতান।

मृष्टे_। शम्शम्या वाहा ज्ञा (खाष्ट्र श्राहकत्य। ०० नात्रम खेवाह।

দেবদেব। জগন্নাথ। প্রমাত্মন্। স্নাত্ন।।

দ্বারা, শাল-তক সহ ভাহার বাম হস্তও ছেদন করিরা ফেলিলেন। পরে কর বিহীন কুন্তকর্ণ, পদ বারা বানরী সেনা-দিগকে পেষণ করিতে লাগিল। তথনি রামচন্দ্র ছই নিশিত অদ্ভিন্ত বাবে ভাহার পদদর ছেদন করিয়া, মহাশকে লক্ষার ভোরণ ঘারে নিক্ষেপ করিলেন, তথাচ কর পদ শ্না ভীষণাকার কৃত্তকর্ণ, বাড়বানল সদৃশ বিকটাকার বদন ব্যাদান করিয়া ভয়ঙ্গর চীৎকার ধ্বনি করভঃ স্থধাংশু গ্রাদে-চ্চুক বাজ্র ন্যায়, রগুনন্দনকে আদ করিতে উদ্যত হইয়। বায়ুবেশে ভৎসারধানে আগামন করিলে, রঘুত্তম, স্থা্-প্রতিভা সদৃশ ভয়ানক একৈ বাণ ধারণ পূর্বাক, অশনি নিনাদে ক্ষেপণ করিয়া, ভাছাকে শমন সদনে প্রেরণ করিলেন। কভকগুলি প্রভাষিত শর, কুম্বকর্ণের দম্বপংক্তি মধো প্রবেশ করিয়া ভাষার মন্তক বিচ্ছিন্ন করভঃ লক্ষার দারদেশে নিক্ষেপ করিল, এবং দেহ সমুদ্র মধ্যে পদ্ধিত

ছইরা, সাগার গর্ভন্থ নক্রাদিকে পঙ্গে প্রোথিত করিল। ২১। 122 | 20 | 28 | 26 | 28 | 29 | 25 |

অনন্তর দেব, ঋষি, গন্ধর্মা, পন্নগা, যক্ষা, গুহাক, সিদ্ধ, এবং অপ্সরাগণ প্রভৃতি সকলেই মহা আনন্দিত হইয়া খূনামার্গ ছট্তে শ্রীরামের উপরে পুষ্পর্কী করিতে লাগিলেন; আর कुछकर्ग त्रात निधन श्रेम मिथिया मिवर्थि नांत्रम मह यक मित-शन, अजन मादर्श व्यागमन शूर्वक, दर्गमण्यभाजी, जेवजानवर्ग ्विभालाक, छेनांत्र हाँबङ, क्रेन्सीयत गामिकत्लयत, बल्कनाश्वत. জটাধারী শ্রীরামচন্দ্রকে শর নিপীড়িত বানরগণের উপর সদয় চিত্ত দেখিয়া, ভক্তি সহকারে গদশদবচনে স্থৃতি পাঠ করিতে व्यात्रस्य कतितमन । २३ । ७० । ७১ । ७२ । ७० ।

অত্যে নারদ বলিতে লাগিলেন; হে দেবদেব জগনাথ!

নারায়ণাপিলাধার ! বিশাসাক্ষিয়মোহস্ত তে ॥৩৪
বিশুদ্ধজ্ঞানৰপোহপি তং লোকানতিবঞ্জন।

যায়য়া য়য়ৢজাকার: স্বব্দ্ধাদিমানিব ॥ ৩৫ ॥
তং মায়য়া গৃহ্মান: সর্বেষাং হৃদি সংস্থিত:।

য়য়ং জ্যোতি:স্বভাবস্তং ব্যক্ত এবামলাল্পনাম্। ৬৬
উন্মালয়ন সৃক্ষেততয়েতে রাম ! জগজয়ম্।
উপসংহিয়তে সর্বং তয়া চকুর্নিমীলনার ॥ ৬৭ ।
য়য়য়ায় কিঞ্জিলোকেই লিন্ তলৈ তে ভদ্ধণে নমঃ।

থায়ায় কিঞ্জিলোকেই লিন্ তলৈ তে ভদ্ধণে নমঃ।

থাকুতিং পুরুষং কালং ব্যক্তাব্যক্তস্বর্ধিণম্।

ং জানন্তি মুনিশ্রেষ্ঠাস্তলৈ রামায় তে নমঃ।
১৯

বিকাররহিতং শুদ্ধং জ্ঞানন্ধ শং শ্রুভির্জুগো।

ত্বাং সর্ব্বেগদাকারমূর্ত্তিং চাপ্যাহ সা শ্রুভিঃ ॥ ৪০

বিরোধো দৃশ্যতে দেব! বৈদিকো বেদবাদিনাম্।

নিশ্চয়ং মাধিগজ্জি ত্বপ্রেদাদং বিনা বুধাঃ। ৪১।

মায়য়া ক্রীড়তো দেব! ন বিরোধো মনাগপি।

রশ্মিজালং রবের্যদ্দশ্যতে জ্লবদ্ধ মাধা ৮২ ॥

অভিজ্ঞানাত্তথা রাম্! ত্রি সর্ব্বং প্রকণ্প্যতে।

মনদো বিষয়ো দেব! ন্ধাং তে নিপ্ত নং পরম ॥

কথং দৃশ্যং ভবেদেব! দৃশ্যাভাবে জপেৎ কথম্

শ্রুত্ববাতারের নাপানি নিপুণা ভুবি ॥ ৪৪॥

ভজ্জি বুদ্ধিসম্পন্ন: স্তর্গ্রের ভবার্ণংম্।

কামকোধাদয়ন্ত্রে বহুবঃ প্রিপন্থিনঃ ॥ ৪৫॥

তুনিই পর্যাত্রা স্নাতন সাক্ষারারারণ, নিবিশ জাগতের আধার ভূত, এবং বিশ্বদংসাবের সাক্ষিশ্বরা — অতএব তোমাকে নমস্তার করি। তুমিই নির্মাণ জ্ঞানস্বরূপ বলিয়া সদা সমস্ত লোকের অভিব গ্রুনীয়—কেবল মারা ঘারা মহ্বয় পেটী ছইয়া, স্থা ছংগভোগী ছইয়াছ। তুমিই মায়াঘারা অভি গোপনে সকলের হৃদরে বাস করিছেছ; আর তুমিই নির্মালারাদিশের নিক্ট স্বাং জ্যোতিঃস্বরূপ হইয়া, প্রকাশিত আছ। তুমি চক্ষু উন্নীলন করিয়া, ত্রিভূবন স্ক্রমপূর্মক পালন করিছে; আবার আপনিই চক্ষুনিমীলন করিয়া, জ্বগজ্য় সংহার করিছে। এবং বাঁহাতে এই চরাচর বিশ্ব, প্রকাশ গাইতেছে, সেই ব্রহ্মশ্বরূপ পরমাস্থাকে বার্হার নমকরি।

মুনিগণ, যাঁধাকে প্রাক্ততি, পৃক্ষ, কাল এবং ব্যক্তাব্যক্ত-স্ক্রপ বলিয়া জাগেন, বিকার শূন্য, নির্মূল জ্ঞানরপী, সর্বব জগতাকার, বেদাদি বিবিধ শাস্ত্রময়, মৃত্তিমান দেই ব্রহ্মকে। আমি বাচস্বার নমস্তার করি।

হে দেব! বেদবাদীর বৈদিক নিষ্ক্লে অর্থাৎ বেদমধ্যে বিরোধ শক্ষিত হর, কিন্তু আপনার অন্ত্রাহ ব্যতীত পণ্ডভোগ তাহা হইতে কথনই উত্তীর্ণ ইইতে পারে না। আপনার মায়া প্রযুক্তই দেবতারা সর্কাদা ক্রীড়া কারিয়া থাকেন; বস্তুত তাহার। মন মধ্যেও কোন বিরোধ উপান্থিত করেন না। ভূর্বের রাখ্যালে যেমন ভ্রম হেতু জগৎকে জলবং পরিলক্ষিত হইতে থাকে সেইরপ ভ্রান্তিজ্ঞান বশতঃ তোমাতেই সমস্ত্র পরিকাশিত হয়। মন মধ্যে মানর বিষয় পর্যন নিগুণিমন্ত্র বে ভোমার রাম্বরণ ক্রিকাশিক প্রকাশে ক্রিকাশিক ক্রেকাশিক ক্রিকাশিক ক্রেকাশিক ক্রিকাশিক ক্রেকাশিক ক্রিকাশিক ক্রেকাশিক ক্রিকাশিক ক্রিকাশিক ক্রিকাশিক ক্রিকাশিক ক্রিকাশিক ক্রিকাশিক

ভীষয়তি সদা চেতো মার্জারা মূষকং যথা।
তথ্যমান স্মরতাং নিতাং ত্বজ্ঞপনির মানসে ॥ ৪৬ ॥
তথপুজানির তানাং তে কথামৃতপরাত্মনাম্।
তত্তকসঞ্চিনাং রাম! সংসারো গোপ্পদায়তে । ৪৭।
অতত্তে সগুণং ৰূপং ধ্যাত্মাহং সর্বাদা হৃদি।
মুক্তশ্বামি লোকেযু পুর্জ্যোহহং সর্বাদৈনতৈ:॥
রাম! ত্বয়া মহৎকার্যাং ক্লতং দেবহিতে হুয়া।
কুত্তকর্ণবধেনাতা ভূতারোহয়ং গতং প্রতো! ॥৪৯
খো হনিব্যতি সৌমিন্তিরিক্রক্তে তারমাহরে।
হনিব্যতে বামত্তং পরখো দশকল্পরম্। ৫০।

পশ্যামি সর্কং দেবেশ ! সিদ্ধৈ: সহ নভো গতঃ।

অনুগায়ীৰ মাং দেব ! গমিষ্যামি স্থবালয়ম্। ৫১।

ইত্যুক্ত্বা রামমামন্ত্র্য নারদো ভগবান ঋষিং।

যযৌ দেবৈং প্রসানো ব্রহ্মলোকমকল্মষম্ ॥৫২

ভাতরং নিহতং শ্রুষা কুন্তকর্গং মহাবলম্।

রাবণং শোকসন্তপ্তো রামেণাক্রিফকর্মণা ॥ ৫৩॥

মুচ্ছিত গতিতো ভুমারুপায় বিল্লাপ হ।

পিতৃব্যং নিহতং শ্রুষা পিতরং চাতিবিহ্নলম্॥ ৫৪

ইন্দ্রভিৎ প্রাহ শোকার্তং ত্যুদ্ধ শোকং মহামতে।

মগ্রি জীবতি রাজেন্ত্র ! মেঘনাদে মহাবলে ॥ ৫৫

বুদ্ধিম,ন্বাজিরা সেই নবমেঘ সদৃশ ভোষার রূপ, মন মধ্যে চিম্বাকরত% এই মুন্তর ভবদাগর মক্রেশেই উত্তীর্ণ হইতেছে। মাউক্রার মুদিকদিগকে ভর প্রবর্শন করিলে, ভাহারা যেমন গর পলারন করে দেইরূপ যন মধ্যে আপনার নাম স্মরণ, किशा जालनात निकलय जल हिला कतिला, उरक्षशांट काम কোধাৰি বিপ্সমূহ আ্ৰান্তৱিত হয়। অভএর মনুবাগৰ, মানদে ভোমার দেই অধাময় নাম স্বরণ, োমার দেই অহ-প্ম রূপ চিন্তা করতঃ ভোমার পূজায় নিরম্ভর নিরত পাকিয়া, এবং ভোমার অমৃত তুলা কথা আবেশ করিয়া, এই ছুন্তর ভব-সাগরকে গোপাদের নায় জ্ঞান করে। হে দেব! এই জন্য আমি সর্বাণা হৃদয়ে তোমার সেই সন্তণ রূপ চিন্তা কংডঃ দেব-গৰের পূজ্য হইয়া ত্রিলোকে পরিভ্রমণ করিয়া থাকি। হে প্রভা! অদ্য আপনি সমারে কুম্বকর্ণকৈ নিহত করিয়া, ্দ্বভাদিশের কি মহৎ কার্য্যই সিদ্ধ করিয়াছেন। এক্ষণে আমি বলিতেছি-কলা যুদ্ধে মহাবীর সেমিত্রি ইন্তাজিৎকৈ এবং প্রশ্ব আপুনি দশাননকে নিধন করিবেন; নভো-

গত বিদ্ধানহ দেবলোক তাহা সন্দৰ্শন পূৰ্বকি সানন্দ জয়ধনি কঃতঃ ত্ৰোপারি পুষ্পার্কী কাইবেন। হে ভূভার-হর। একণে আপানি অপ্রসন্ন হইরা আজা করুন; আনি স্থালারে গমন করিব। এই বলিয়া দেব ঋবি নারণ ব্রহ্মলোকে গমন করিলেন। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। [৪২।৪৩|৪৪।৪৫।৪৬|৪১।৪৮।৪৯।৫০।৫১।৫১।

অনন্তর দশানন রণে রঘুনাথ দারা মহাবল ক্স্তকর্ণ প্রভা নিহত হইয়াছে প্রবণ পূর্বকে, শোকসন্তপ্ত হ্বদরে মুচ্ছিতি ইইয়া ভূমে পতিত ইইলেন। কিয়ৎকাণ পরে সংজ্ঞা লাভ করিয়া সিংহাসনে উপবেশন পূর্বকে, বহু বিলাপ ও পরিভাপ করিছে লাগিল। এমং কালে ইন্দ্রজিৎ, পিতৃষ্য নিহত ইইয়াছে প্রবণ পূর্বকি পিতাকে শোকে বিহবণ অবলোকন করতঃ, পিতৃ সমীপে কভাঞ্জলি পুটে বঙায়মান ইইয়া কহিছে লাগিল। ছে মহামতে। শোক পরিভাগে ককন; দেবা-স্তক, মহাবল পরাজায় ইন্দ্রজিৎ মেঘনাদ জীবিত থাকিছে আপনার আর হঃধের অবসর কোথায় ? অভএব মাণ্নি पूःथमगावमतः कृत (पवास्क ! महामटि !

तिगृ (उ पूःथमिनः सम्मा कर महीलाः । १६।

मर्काः ममीकतियामि हिनयामि ह ते तिशृन्।

गदा निकृष्णिनः महास्तर्भाष्ट्रा क्रामनम्। १९।

नव् श तथापिकः क्याप्रकाशं हरः क्रामग्रतः।

हेजूर्जा प्रतिष्ः गदा मिक्छिः हवनस्रमम्। १६।

तक्रमानगम्तर्भता तक्रभक्षान्रस्मभनः।

निकृष्णिनास्रस् (मोनी हवनारम्भवक्तस्म। ६०।

विकीयाग्रस्म (मोनी हवनारम्भवक्तस्म। ५०।

थाह तमाम मक्रमः (हामात्रस्य पूर्वास्नः।

ममाभाष्ट (हिकारमाह्यः (स्थनाप्तम पूर्वास्वः।

क्राह्मस्ता करवारमाह्यः (स्थनाप्तम पूर्वास्वः।

क्राह्मस्ता करविष्ठाम । (स्थनाप्तः स्वास्वरेदः। ७०।

আতঃ শীব্রং লক্ষণেন ঘাতরিষ্যামি রাবণিম।
আজ্ঞাপর ময়া সার্দ্ধং লক্ষ্মণং বলিনাং বর্ম।
হনিষ্যতি ন সন্দেহো মেঘনাদং তবানুক্তঃ ॥ ৬১।
জীরামচন্দ্র উবাচ।

আহমের গমিষামি হন্তমিন্দ্রজিতং রিপুম্।
আগ্রেমেন মহাস্ত্রেণ সর্মরাক্ষসঘাতিনা। ৬২।
বিভীষণাহপি তং প্রাহ্ নাসাবন্যমিহনাতে।
যন্ত দাদশবর্ষাণি নিজাহারবিবর্জিতং। ৬৩।
তেনৈর মৃত্যুনি দি ফো ব্রহ্মণাসা দ্রাহ্মানং।
লক্ষ্মণস্ত অযোধ্যায়া নির্গম্যায়াত্ম্মা সহ। ৬৪।
তদাদি নিজাহারাদীর জ্ঞানাতি রঘূত্ম!।
সেবার্থং তব রাজেন্দ্র! জ্ঞাতং সর্মমিদং ম্য়া। ১৫

এই সমস্ত মিথ্যা শোক পরিত্যাগ পূর্ব্বক সুত্ম ছউন। আমি
প্রতিজ্ঞা করিয়া বলিতেছি; আপনার সমস্ত রিপু বিনাশ
করিয়া, অবিলয়েই লক্ষাত্ম সমস্ত কর্ব্ব রুলকে সুত্ম করিব
এক্ষণেই রথাদি প্রাছণ পূর্ব্বক নিকুন্তিলা যজ্ঞাগারে গমন
করতঃ প্রজ্জনিত ভ্রতাশনে আহুতি প্রদান করিয়া, তাঁছাকে
সন্তোয় করিব। তাছা ছইলেই ভিনি আমাকে সমরে অরাতি
অজেয় বর প্রদান করিবেন। এই বলিয়া নিফ্রান রক্তাশর
রক্তমাল্য ধর হইয়া সর্বাচ্ছে বক্তা চন্দন অন্তলেপন করতঃ সত্তর
নিকুন্তিলা যজ্ঞাগারে প্রবেশ পূর্ব্বক, মেনি তাবে যজ্ঞের
আয়োজন করিতে লাগিল। এ দিকে বিভীষণও মেঘনাদের
চেইত সমস্ত প্রবণ করিয়া, জীরাম সন্ধিন্নে গমন পূর্ব্বক
চরাত্মা ইম্রুজিতের অভিপ্রেত সমস্ত বিষয় কীর্ত্তন করিতে
লাগিল। কে প্রত্যা রঘুনাথ! অদ্য ইম্রুজিৎ নিকুন্তিলা যজ্ঞাগারে যক্ত সমাপন করিলে, সুরাস্বর কেইই তাহাকে যুদ্ধে

পরাজর করিতে পারিবেন না। অতঞ্জব আমার সহিত বীরাগ্র-গাণা লক্ষ্মণকে যাইতে আজাকরুন; আমরা উভয়ে নিকুন্তিলার গামন পূর্বক, যে রূপে হউক রাবণী নিধন সাধন করতঃ পুন-রার এই স্থানে আগমন করিব। আপনার অভ্যন্ত নিঃস-ন্দেহই মেখনাদকে বিনাশ করিবেন। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬।

অনন্তর শ্রীরাম ভাষাকে বলিলেন, দেখ সথে বিভীষণ!
আমিই নিকুন্তিলায় গমন করিয়া সর্বরাক্ষসঘাতী আগ্নেয় নামক
মহান্ত ছারা পরম শক্ত ইন্তজিতের নিধন সাধন করিব।
শ্রীরামের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া, অমনি বিভীষণও তাঁহাকে
বলিলেন প্রভো! ভ্রাত্মা ইন্তর্জিৎ অন্যের বধ্য নয়; যে
ব্যক্তি ছাদশবর্ষ নিজাহার পরিভাগে করিয়াছে; দেই জন,
মহাবল ইন্তর্জিৎকে বিনাশ করিতেপারিবে; পূর্বে স্থিকছা

তদক্তেপের দেবেশ !লক্ষ্মণং স্বর্য়া ম্য়া।

হনিষ্যতি ন সম্পেহঃ শেষঃ সাক্ষ্যকাধরঃ। ৬৬।

স্বমেব সাক্ষ্যজ্ঞগতামধীশো

নারার্ণো লক্ষ্যণ এব শেবঃ।

বুবাং ধরা ভারনিবার ণার্থং
জাতে জিগন্নাটক সূত্রধারে । ৬৭।।
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্রসম্বাদে
যুদ্ধকাওে অফীমোহধ্যায়ঃ।

প্রপা এইরপ নির্দিষ্ট করিরাছিলৈন। হে রঘূত্তম! যে সমরে নগবীর লক্ষন, আপনার সমভিব্যাহারে অবোধ্যা হইতে নির্গত্তন, সেই দিবস হইতেই আহার নির্দা পরিভাগে করতঃ, আপনার আজাবহ হইরা দিন্যামিনী অভিবাহিত করিয়াছেন, আমি তাহা বিশেষরূপে অবগত আছি। যিনি সাক্ষাৎ অনন্ত দেব, তাঁহার কি না সাধ্য হইতে পারে? অভ-বর আজা করুন, আমরা উভ্যে শীঘ্র তথার গমন করিরা, প্রবল রিপু ইন্দ্রজিৎকে বিনাশ করি। আপনি সাক্ষাৎ জগত্বল রিপু ইন্দ্রজিৎকে বিনাশ করি। আপনি সাক্ষাৎ জগত

ভের একাধীপ নারায়ণ এবং লক্ষ্মণ ঠাকুর সাক্ষাও অনস্ত্র-দেব; ইংগ কি একবারও মনোমধ্যে বিবেচনা করেন না । কেবল মাত্র ভূজারহরণ জনা, আপনারা হই জ্বনে, জগংকপ রঙ্গভূমির স্ত্রধার স্বরূপ হইয়া, ইহ সংসারে নরদেহ ধারণ করতঃ জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন। ৬২। ৬০। ৬৪। ৩৫। ৬৬ ৬৭।

ইতি জ্ঞীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানহেশ্বর সংবাদে
যুদ্ধশতে অফ্রমোহধ্যায়ঃ।

ন্রমোইধ্যায়ঃ।

বিভীষণবদঃ শ্রুত্বা রামো বাক্যমথাত্রবীৎ। জানামি তদ্য রোদ্রদ্য মায়া ক্লৎস্নাং বিভীষণ!। ১

অনস্তর জীরাম, বিভীষণের এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিরা গাহাকে বলিজে লাগিনেন; দেখ সখে বিভীষণ! আমিড কিবার মহাবল ইম্রজিতের মায়। দর্শন করিয়াছি; সে রিস্তর স হি ত্রন্ধান্তবিচ্ছুরো মারাবী চ মহাবলং। জানামি লক্ষাণস্যাপি স্বরূপং মম সেবন্মু। ২।

বিদ্যান শিক্ষা করিয়াছে। এবং কেবল আমার স্বরূপ মহা-বীর লক্ষ্যণের ক্ষমতা বিশেষরূপে জ্ঞাত আছি; কিন্তু ভবি-যাতে সেই মায়াবী কোন বিশেষ বিশ্ব না ঘটায়; এই চিন্তার জ্ঞাত্বৈবাসমহং তুকীং ভবিষ্যৎকার্য্যগোরবাৎ।
ইত্যুক্ত্বা লক্ষ্যণং প্রাহ রাম্যে জ্ঞানবভাম্বর:। ৩
গচ্ছ লক্ষ্যণ! দৈন্যেন মহতা জহি রাবণিম।
হন্মৎপ্রমুখে: সর্বৈর্থিপ: সহ লক্ষ্যণ!। ৪।
জাম্বানৃক্ষরাজোহয়ং সহ দৈন্যেন সম্তঃ।
বিভীষণক্ষ সচিবৈঃ সহ তামভিষাস্যতি। ৫।
অভিজ্ঞস্যা দেশস্য জানাতি বিবরাণি সঃ।
রামস্য বচনং শ্রুত্বা লক্ষ্যণ: স্বিভীষণ:। ৬।
জগ্রাহ কাম্মুকং শ্রেষ্ঠমন্যন্তীমপরাক্রমা।
রামপাদামুজং স্পৃশ্য ক্রম্ফা: দেশমিত্রির্রেবীৎ।।।
অত্য মৎকার্ম্কার্কা: শরা নির্ভিন্য রাবণিম্।
গমিষ্যন্তি হি পাডালং স্লাতুং ভোগবভীজলে।৮।

কণকাল দ্বির ইইরাছিলাম। এই বলিরা, জ্ঞীরাম, ছৎক্ষণাৎ বীরচুড়ামণি লক্ষ্মণতে আজ্ঞা করিলেন—লক্ষণ। তুমি শীঅ সৈন্যগণ সমভিব্যাহারে গমন করিরা, রাবণীকে বিনাশ কর।

অনন্তর লক্ষ্মণ, মহাবীর হন্মান্ প্রমুখ অশেষ বানরীসেনা এবং ঋক্ষপতি প্রমুখ বিবিধ ঋক্ষসেনা, সমতিব্যাহারে করিয়া মেঘনাদ সহ যুদ্ধ জন্য, গমন করিতে উদ্যত হুইলেন, অমনি বিভীষণ মন্ত্রীবর্গে পরিবেটিভ হুইয়া, তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিবার উপক্রম করিতে লাগিলেন। ইভাবসরে কায়ুক লইয়া, লক্ষ্মণ, অত্যে জ্ঞারামের যুগলচরণ গ্রহণ করতঃ, প্রফুল্ল হ্লমের বিভিত্ত লাগিলেন—হে দেব! অদ্য আমার কায়ুক নিয়ুক্তি শর সমূহ প্রবিণকে ভেদ করিয়া, রসাভলে ভোগবতীর পরিত্ত জলে আন করিবার জন্য গমন করিবে। লক্ষণ,

এবমুক্তা দ দোমিতিঃ পরিক্রম্য প্রণম্য তম্।
ইন্দ্রজিরিধনাকাক্ষমী যথে ছিরিত্রিক্রমঃ ॥ ৯ ॥
বানর্বৈর্বিছ্লাইস্রের্ন্স্নান্ পৃষ্ঠভোইস্বগাৎ।
বিভীষণত সহিতো মন্ত্রিভিস্তরিতং যথো ॥ ১০ ॥
জাষ্বৎপ্রমুখা ঋষ্ণাঃ দোমিত্রৎ ছররাস্বপ্তঃ।
গড়া নিকুদ্বিলাদেশং লক্ষণো বানরৈঃ সহ ॥ ১১ ॥
অপশ্র্রায়ম্য সোমিত্রির্ঘাক্ষর্যক্ষর্যায়
ধন্তরায়ম্য সোমিত্রির্ঘাক্ষর্যান্ রাক্ষরাধিপঃ।
তদা বিভীষণঃ প্রাহু সোমিত্রিং পশ্র রাক্ষরান্ ॥১৩
যদেওদ্রাক্ষ্যানীকং মেঘশ্যামং বিলোক্যতে।
অক্ষানীকশ্র মহতো ভেদনে যতুবান্ ভব। ১৪।

ত্রীরামকে এই বলিয়া, প্রণতি প্র:সর প্রদক্ষিণ করতঃ
গরিতপদে ইক্রজিরিধনাশার তথা হইতে প্রস্থান করিলেন।
করিতে লাগিল, অমাত্যচয় সমভিবাছারে বিভীষণ, এবং
করিতে লাগিল, অমাত্যচয় সমভিবাছারে বিভীষণ, এবং
ক্ষক্ষণণ পরিবেক্তিত জাম্ববান্ জ্বাহিত ছইয়া, সৌমিত্রির অন্তর্গামী হইল। ক্রমে লক্ষ্মণ, অমাত্য, গ্রহ্ম এবং বানরীসেনং
সমভিব্যাহারে নিকুন্তিলা দেশ প্রাপ্ত হইলেন। তথার উপছিত হইয়া দর হইতে দেখিলেন বহুসংখ্যক রাক্ষ্য একত্র
সমবেত হইয়া রহিয়াছে। তথন বাহবিক্রেশালী সৌমিত্রি
কার্ম্ব প্রহণ পূর্কক জ্যা আরোপন করিতে লাগিলেন।
ভদ্দিনে অঙ্গদবীর, জাম্ববান্ এবং বিভীষণকে বলিয়াছিল;
দেখুল, যদি মহাবীর লক্ষ্মণ, যুদ্ধে প্রস্ত ইইলেন তবে
আমাদের আর বিলম্বের আবশ্যক কি? যেহেতু নিবিড
মেঘাকার রাক্ষ্যসিন্য স্মাজ্যিত হইয়া সমুধ্যে দণ্ডায়মান
রহিয়াছে; এক্ষণে অতিশীত্র ভেদ করিতে যত্রবান্ হও,

রাক্ষনেনদ্রহতোপ্যান্থিন্ ভিল্লে দৃশ্যো ভবিষাতি।
অভিদ্রবাশ্য যাবদৈ নৈতৎকর্ম সমাপ্যতে। ১৫॥
কহি বীর! দুরাত্মানং হিংসাপরমধার্মিক্ম।
বিভীষণবচঃ শুড়া লক্ষাণঃ শুভলক্ষণঃ। ১৬।
ববর্ষ শারবর্ষাণি রাক্ষনেন্দ্রস্থতং প্রতি।
পাষাণৈঃ পর্বভাগ্রিশ্চ রক্ষেশ্চ হরিষুথপাঃ॥ ১৭॥
নির্দ্রদুর্গনিরানীকং তদা শব্দো মহানভূং।
স সংপ্রহারস্তম্লঃ সঞ্জে হরিরক্ষসাম্। ১৯।
ইংদ্রজিতৎ স্ববলং সর্বমন্ত্রিমানং বিলোক্য সং।
নির্কুদ্রলাঞ্চ হোমঞ্চ তাজ্যা শীঘ্রং বিনির্গতঃ। ২০

রথমারুহ্ সধনঃ ক্রোধেন মহতাগমৎ।

সমান্ত্ররিতা সেমিত্রিং যুদ্ধার রণমূর্দ্ধনি। ২০।

সৌমিত্রে! মেঘনাদোহহং মরা জীবর মোক্ষাদে।

তত্ত্র দৃষ্ট্বা পিতৃব্যং স প্রাহু নিষ্ঠ্রভাষণম্ ॥ ২২

ইহৈব জাত: সংব্রদ্ধঃ সাক্ষাদ্ভাতা পিতৃর্মম।

যন্তং স্বজনমূৎসূজ্য পরভূত্যত্মাগতঃ ॥ ২৩॥

কথং জ্বার প্রার ? পাপীয়ানসি হুর্মাতিঃ।

ইত্যক্তা লক্ষাণং দৃষ্ট্বা হন্ত্যৎপ্রতঃ স্থিতম্ ॥ ২৪

উদ্যদাযুধনিস্ত্রিংশে রথে মহতি সংস্থিতঃ।

মহাপ্রমাণমূদ্যমা ঘোরং বিক্ষারয়ন্ ধন্তঃ ॥ ২৫॥

তাহা হইলে হিংসাপর অতি অধান্মিক হুরায়া রাবণ পুত্র, লক্ষ্মণের লক্ষ্য হইয়া, অতি সম্বর বধ্য হইবে। নতুবা সে অনলে পূর্ণান্ততি প্রদান করিলে, কেছই তাহাকে নফ্ট করিতে সক্ষম হইবে না। এস আমরা সকলেই, হুন্টমতির বিশ্বাশায় সম্বর সমরে প্রস্তুত্ত হই। এইরূপ প্রামর্শেরি পর, সকলেই প্রাণপণে, পাযাণ, পাদপ ও পর্বভাগ্র হস্তে ধারণ করিয়া, রাক্ষ্য সেনাগণ সমভিব্যাহারে যুগপৎ যুদ্ধ করিতে লাগিল। তাহাতে মেঘনাদের সমস্ত সৈনাই শমন সদনে গমন করিল। । ৪। ৫। ৬। ৭।৮। ৯। ২০। ১১। ১২। ১০।১৪।। ১৫। ১৬। ১৭।১৮।১৯।

অনন্তর মহাবল ইব্রুক্তিৎ মেঘনাদ, স্বীয় সৈন্যগণ বিনষ্ট ৬ বজ্ঞের বস্তু বিল্ল উপস্থিত অবলোকনে মহা ক্রুদ্ধ হটয়৸ প্রিত্যাংগ কর চঃ, নিকুন্তিলা যজাগার ছইতে বেগে বহির্গত হইল; এবং আপনার সুসজ্জিত স্যান্তনে আরোহন পূর্বাক, ধনুৰ্বাণ প্ৰাছণ কৰিয়া দে মিজিকে যুদ্ধে আহ্বান করত: ममत्राक्षत्न व्यविष्ठ इहेन अवश् कहिए मानिन-(इ मोमिछ । সমরে মারাজীবী মেঘনাদ উপদ্বিত ছইয়াতে, ক্লণেক ত্রি इ' अक्र १ रे या था हिन अ जिक्न अनान क्रि एक है । इंग-বসরে, পিড়ব্য বিভীষণকে সম্মুখে উপন্থিত অবলোকন করিয়া অভি নিষ্ঠুর বচনে বলিতে লাগিল—হে চুর্মতে ! পরাল্ল-ভোগী! তুমি আমার পিতার সাক্ষাৎ ভাভা, অতএৰ একংটে আমার সন্থ হইতে পলারন কর, থেফেভু ভূমি মহারাজ লকাধিপতি রাবণের কনিষ্ঠ হইয়া, আত্মীয় শুজন পরিত্যাগ পূৰ্ব্বক আনোর দাসত্ব স্বীকার করছ: পুজের অনিষ্টাচরণে উদাত হইরাচ, এই কারণ আমি আর কথনই তোমার মুখ দর্শন করিব না। পিতৃব্য বিভীষণকে এইরূপ বাক্য প্রয়োগা-নস্তর হ্রাত্মা মেঘনাদ, মহাবীর লক্ষ্মণকে হ্রুমান ক্ষরতিত मन्मर्मन कत्रष्टः, আপনার উৎকৃষ্ট রথে আরোহণ পূর্বেক, ন্মতীক্ষায়ুধ এবং অসি হন্তে ধারণ করিয়া তাঁহাকে প্রহায়

অদ্য বো মামকা বাণাঃ প্রাণান্ পাস্যন্তি বানরাঃ।
ততঃ শবং দাশরথিঃ সন্ধায়ামিত্রকর্ষণঃ। ২৬।
সমর্জ রাক্ষসেন্দ্রায় জ্বঃ সর্প ইয় শ্বসন্।
ইন্দ্রজিদ্রক্তনয়নো লক্ষ্ণং সমুদৈক্ষত ॥ ২৭ ॥
শক্রাশনিসমস্পর্টার্লক্ষ্মণেনাহতঃ শবৈঃ।
মুহুর্ত্বমন্ত্রন্মুঢ়ঃ পুনঃ প্রত্যাক্ষ্ডেন্দ্রিয়ঃ ॥ ২৮ ॥
দদর্শাবন্থিতং বীরং বীরো দশরথাত্মজ্ম।
দোহভিচক্রাম সৌমিত্রিং ক্রোধসংরক্তলোচতঃ ২০
শরান্ ধনুষি সন্ধায় লক্ষ্ণং চেদমন্ত্রবীৎ।
যদি তে প্রথমে যুদ্ধে ন দৃষ্টো মে পরাক্রমঃ ॥ ৩০
অদ্য তাং দর্শয়িষ্যামি তির্চেদানীং ব্যবন্থিতঃ।
ইত্যক্রা সপ্রভিবাণিরভিবিব্যাধ লক্ষ্ণম্। ৩১।

করিকে উদ্যত হইলে রঘুবংশাবতংস দক্ষনণ, ক্রোধান্থিত ভ্লক্ষের ন্যায়, সীয় শর ও শরাসন গ্রহণ পূর্ব্বক, তাহা নিবারণ করিতে যত্নবান্ হইলেন এবং মেখনাদকে বলিতে লাগিলেন— বে ছ্রাক্ষন্! অদ্য আমার শর সমূহের শক্তি সন্দর্শন কর্
বিপক্ষ বিনাশ করিয়া বানর দিগকে রক্ষা করিবে।।২০।২১।
।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।২৭।১৮।

এই কথা বলিয়। অয়াতিমর্দন দাশরথি লক্ষ্মণ, সুতীক্ষ্ণ শর্মনিকরে মেঘনাদের সর্বাদ্ধ কতে বিক্ষণ করিয়া ফেলিলেন। সেই অশনি সম শরাঘাতে ইন্দ্রজিৎ, ক্রোধে ময়নদ্বয় রক্তবর্গ ও ঘ্রায়মান করতঃ ক্ষণেক ছির হইয়া রহিল, পরে স্বীয় শর ও শরাসন গ্রহণ পূর্বক, মহাবীর লক্ষ্মণকে বলিতে লাগিল, ওছে রামান্তক্ষ! যদি তুমি প্রথম মুক্ষে আমার পরাক্রম না দেখিয়া থাক, তবে ক্ষণকাল এই স্থানে ছির হও, অভি শীত্রই দেখাইতেছি। এই বলিয়া মেঘনাদ অগ্রো

দশতিশ্চ হন্যন্তং তীক্ষধারে: শরোন্ত নৈ:।
তত্তঃ শরশতেনৈর সংপ্রমুক্তেন বীর্যারান্॥ ৩২ ॥
ক্রোধিদ্ধিশনংরক্ষো নির্বিভেদ বিভীষণন্।
লক্ষণোহিপি তথা শত্তং শরবর্ষরবাকির । ৩৩ ।
তত্ম বাণৈ: স্থানংবিদ্ধং করচং কাঞ্চনপ্রভন্ম।
ব্যাশীর্যত রথোপত্থে তিলাশং পতিতং ভূবি ॥ ৩৪ ॥
ততঃ শরসহস্রেণ সংক্রেরা রাবণাত্মজঃ।
বিভেদ সমরে বীরং লক্ষ্মণং ভীমবিক্রমম্। ৩৫ ।
ব্যাশীর্যতাপতদ্বিয়ং করচং লক্ষ্মণস্য চ ।
ক্রেপ্রাতিক্রতান্যোহনাং বভ্রত্রহিদ্ধেতৌ ॥ ৩৬ ॥
অভীক্ষণ নিশ্বসন্থে তৌ যুদ্ধে তাংতুমুলং পুনং।
শরসংব্রত্রর্কিকে সর্বাক্রে সর্বাক্রেরাকিতে । ৩৭
দ্বীর্যকালং তৌ বীরাবন্যোন্থে নিশিতেঃ শরিঃ।
অন্থ্রেতাং মহাদত্থে জয়াজয়বিবির্জিতে । ৩৮

শরে পিভূবা বিভীষণকে বিদ্ধ করিয়া, অশেষান্ত্রহারা কপি-কুলকে ছিন্ন ভিন্ন করিয়া ফেলিল। ২৯।৩০।৩১।৩২।

তদ্দর্শনে বীরকুলরবি লক্ষ্মণ, মহাক্র্ছ হইরা, সুশাণিত বিবিধ বাণ দ্বারা, মেঘনাদের কাঞ্চন-প্রভ-কবচ থণ্ড থণ্ড করিয়া সালন হইতে ভূমিতলে নিক্ষেপ করিলেন। তাহাতে রাবণাক্ষ্মজ, দণাহত বিষধরে ন্যায় মহাক্র্ছ হইরা, সহস্র শর-দ্বারা লক্ষ্মণের দিবা কবচ থণ্ড থণ্ড করিয়া, বাণাণ্ডো সর্বর শরীর কধিরাপ্ল ত করিয়া ফেলিল; এইরূপে বীরহরের তুম্ল তর সংগ্রামে মেদিনী মুহ্মুহ চঞ্চলা হইতে লাগিল তিও। ৩৪।

এমংকালে লঘুহস্ত মহাবীর লক্ষাণ, স্থভীক্ষ পঞ্চাণ দারা বাব-নির সার্থি, অখদম, রথ এবং কার্ম্ব ছেদন করিয়া ফেলি- এত নিমন্তরে বীরো লক্ষাণঃ পঞ্চতিং শরৈ: !।

রাবণে: সার্থিং সাখং রথং চ সমচূর্ণয়ৎ ॥ ৩৯ ॥

চিচ্ছেদ কার্মাকং তদ্য দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম।

দোহনাস্ত কার্মাকং তদ্য দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম।

দোহনাস্ত কার্মাকং তদ্রং সক্ষাং চক্রে ত্রাস্থিতঃ।

তচ্চাপমপি চিচ্ছেদ লক্ষাণস্তিতিরাস্তরা:

তমেব ক্রিয়ধন্তানং বিন্যাধানেকদায়্কৈঃ। ৪১।

পুনরন্যং সমাদায় কার্মাকং তীমবিক্রমঃ।

ইন্দ্রজিল্লক্ষাণং বাণৈঃ শক্তরাদিত্যসন্ধিতঃ। ৪২।

বিভেদ বানরান্ স্দান্ বাণেরাপ্রয়ন দিশঃ।

তত ঐদ্রেং সমাদায় লক্ষাণো রাবণিং প্রতি॥৪৩॥

সন্ধায়াক্রম কর্ণান্থং কার্মাকং দ্রনির্ছ্রম।

উবাচ লক্ষাণো বীরং মারন্ রামপদাস্ক্রম্। ৪৪॥

ধর্মায়ো সত্যসক্রশ্চ রামো দাশরথির্যদি।

ব্রলোক্যামপ্রতিত্বন্তর্দেনং কহি রাবণিম্॥ ৪৫॥

বিলোক্যামপ্রতিত্বন্তর্দেনং কহি রাবণিম্॥ ৪৫॥

ইত্যুক্ত্বা বাণমাকণা দ্বিক্ষয় তমজিকাগম্।
লক্ষ্মণ: সমরে বীর: সমজেক্তিজিতং প্রতি । ৪৬॥
সশর: সশিরস্ত্রাণং শ্রীমজ্জ্বলিতকুগুলম্।
প্রামধ্যেক্তিজিত: কারাৎ পাত্রামাস ভূতলে ॥৪৭
তত: প্রামুদিতা দেবা: কীর্ত্তরমার রঘূত্রমম্।
বর্ষ্: পুপ্সবর্ষাণি স্তবন্তক্ত মুভ্যুভ: ॥ ৪৮॥
জহর্ষ শক্রো ভগবান্ সহ দেবৈর্মহর্ষিভি:।
আকাশেহপি চ দেবানাং শুক্রাত্রিশ্বধারিণী।
নিহতং রাবণিং দৃন্টা জরজ্পসমন্বিত: ॥ ৫০॥
গতপ্রম: স সৌমিত্রি: শঞ্জামপ্রয়দ্রণে।
দিংহনাদং ততঃ কুড়া জ্যোশক্ষমকরো দ্বিভূ:॥ ৫১॥
বেন নাদেন সংক্ষী বানরাশ্চ গতপ্রমা:।
বানরেক্রেশ্চ সহিত: স্তুব্ভিক্ ক্রমানসৈঃ ॥ ৫২॥

লন। তথনি মেঘনাদ অনা শ্লাদন গ্ৰহণ কৰিলে, রামানুজ লাহাও তদণ্ডে খণ্ড থণ্ড করিরা, বাণ দারা, মেঘনাদকে রথাশ্ব ধনুর্বিগীন এবং লঘুহন্ত প্রদর্শন পূর্বক, ভাছার কার্ম্ম ক চেদন করিলেন; মেঘনাদও ভৎক্ষণাৎ কার্ম্ম ক গ্রহণ করিবানাত্র লক্ষ্মণ দেবও শীঘ্র হন্তে ভিনটী শর দারা ভাহাও থণ্ড খণ্ড করিলেন। অনন্তর মহাবল রাবণ অন্য চাপ ধারণ পূর্বক শত সূর্যা প্রভা সমন্বিভ বাণ দারা লক্ষ্মণকে এবং বাণ সমূহ দারা দশ দিক আচ্ছন্ন করিয়া বানরগণকে বিদ্ধ করিল। খনস্থা লক্ষ্মণদেব ঐস্তাবাণ গ্রহণ করিয়া তাছা সন্ধান করিবার আশার অনুদ্দ কার্ম্মক আকর্ণ সমাকর্ষণ পূর্বক, ভাহাকে বিদ্ধানার ভিন্ন লাম্মক রাম-পাদ-পদ্ধা ধ্যান করিয়া নে

নতুবা এখণেই তোবে শমন সদলে প্রেরণ করিতেছি। বীব চূড়ামণি লক্ষমণ, এই বলিয়া, ঐ আদিত্য সন্ধিভ এক বাণদাবা, মেঘনাদের শরীর হইতে দীপ্তমান কুগুণ বিশিষ্ট উফীষ বদ্ধ মস্তক ছেদন করিয়া ভূতলে নিক্ষেপ করিলেন। তদ্দর্শনে দেবতারা আনন্দে ভুলুভিশ্বনি করত, লক্ষণের উপবে মুভ্যুভিঃ পূজাবর্ষণ পূর্কাক স্তব আরম্ভ করিলেন। অনা দিকে দেবতা সকল মহর্ষাণে পরিবেফিত হইরা, ভগবান ইন্দ্র, কুসুম বিকীরণ সহ আনন্দে লক্ষ্মণের যশঃ কীর্তন করিতে লাগিলেন। এদিকে রাবণি নিছত দর্শনে, গগণ নিশ্মল ভাব এবং বসুমতী ক্রিভাব ধারণ করিল। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০।

অনন্তর লক্ষণ সীরহত্তে মেঘনাদ বিনষ্ট হইল দেখিয়া, আনন্দিতাপত করণে শহাধনি ও সিংহনাদ করতঃ কার্মা,কে টকার লক্ষনং পরিভুক্টাত্মা দদর্শান্ত্যেত্য রাঘবম্।

হন্তমন্ত্রাক্ষনাভ্যাং চ সহিতো বিনয়ান্থিতঃ ॥ ৫৩

ববন্দে ভাতরং রামং ক্যেষ্ঠং নারায়ণং বিভূম্।

ত্রুপ্রসাদান্তযুগ্রেষ্ঠ ! হতো রাবণিরাহবে ॥ ৫৪ ॥

শ্রুত্বা তলক্ষনণান্তক্ত্যা ত্যালিক্য রঘুত্যঃ।

মুদ্র্যিন্ত্রায় মুদ্তিঃ সম্মেহমিদমন্ত্রীং ॥ ৫৫ ॥

সাধু লক্ষনণ ! ভুক্টোংম্মি কর্মা তে জ্ব্ধরং কৃত্ম্।

মেঘনাদস্ত নিধনে জিভং সর্ক্মরিন্দ্ম ! ॥ ৫৬ ॥

অহোরাত্রৈন্তিন্ত্রীরঃ কথংচিদ্বিনিপাততঃ।

নিঃসপত্বঃ কুতোংস্মাদ্য নির্যাস্থিতি হি রাবনঃ ॥৫৭

পুজ্রশোকান্মরা যোদ্ধৃং তং হনিষ্যামি রাবণম।
মেঘনাদং হতং শ্রুড়া লক্ষণেন মহাবলম। ৫৮ ।
রাবণং পতিতো ভূমৌ মূচ্ছিতঃ ভুনরুগ্যিতঃ।
বিললপোতিদীনাত্মা পুজ্রশোকেন রাবণঃ॥ ৫৯॥
পুজ্রমা গুণকর্মাণি সংস্মরনু পর্য্যদেবয়ৎ।
অদ্য দেবগণাঃ সর্বে লোকপালা মহর্ষয়ঃ॥ ৬০॥
হতমিক্রিজতং জ্ঞাত্ম স্থাং স্বপ্যান্তি নির্ভ্রাঃ।
ইত্যাদিবভূশা পুজ্রলালদো বিললাপ হ।
ততঃ পরমসংজু ছো রাবণো রাক্ষসাধিপা।
উবাচ রাক্ষসান্ সর্বান্ নিনাশয়িযুরাহবে॥ ৬২॥
স পুজ্রধসন্তপ্তঃ শূরং ক্রোধবশাং গড়ঃ।
সম্বীক্ষা রাবণো বুদ্ধা হন্তং সীতাং প্রদুদ্ধবে॥ ৬২॥

প্রদান করিলেন। বেই ভয়হ্ব আনন্দ স্থচক শব্দে, বানরগণ গতপ্রন হইরা, লক্ষ্যুণের চতুদ্দিকে পরিবেফন করতঃ আহলাদে ভয় জ্বা ধনি আবস্থ করিল। অতঃপর সে মিত্রি, বিভীষণ, জাদ্বধান, এবং কপিকুলকে সমভিব্যাহারে করিয়া রাম সন্নি-ধানে উপাস্থত হইলেন; এবং স্থোষ্ঠের চরণ্ডয় বন্দনা করতঃ কহিতে লাগিলেন: সে রস্বাধা আনি আপনার প্রদাদে আদ্য ইন্দ্রজিৎকে যুদ্ধে নিহত করিয়াছি। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪।

এই কথা শুনিবামাত্ত রব্বর রাম, অন্নজকে সানন্দে সমাক প্রকারে আবিজন প্রদান পূর্বক, মন্তকান্ত্রাণ ও মুখ-চুন্ধন করেওঃ বলিতে লাগিলেন, লক্ষাণ! তুমি সাধু! আমি তোমার এইরপ ছুদ্ধর কার্য্য দশনে, অত্যন্ত তুই হইয়াছি; হে অরিন্দম! এক্ষণে জানিলাম যে, অবিলয়েই অজের রাবণ অগ্যাদিগার হন্তে নিঃসন্দেহ নিধন প্রাপ্ত হইবে। কিন্ত গলিভেডি যথন রাধণ প্রশোকে কাত্র হইয়া, আগমন করিবে: সেই সময় অভি সাবিধানে যুদ্ধ করিও; কারণ সে এদিকে লকাধিপতি রাবণ, মহাবল মেঘনাদ বংগ নিহণ হইরাছে প্রবণ করতঃ, বাতাহত রক্ষের ন্যায় মৃচ্ছিত্ত হঠঃ।
ভূতণে পতিত হইল এবং পুনর্বার উপিত হইরা, শোকাকুলিং
চিত্তে বহুবিশাপ ও পুত্রের গুণ কর্মাদি স্মরণ করতঃ বিজ্ঞাপ করিতে লাগিল। আর বলিল—অদ্য যুদ্ধে ইন্দ্রতিং
নিহত হইরাছে প্রবণ করিরা, মহর্মিগণ দেবগণ ও লোকপাল
সকলে নিশ্চরই অন্তরে স্থানন্দ অনুভব করতঃ জয় ধনিতে জগং
পূর্ণ করিবে ইত্যাদি বহু বিদাপের পর পরম ক্রেম্ম হইরা
রাক্ষ্যেশ্বর রাবণ, সন্ধিহিত রাক্ষ্যদিগকে বলিল—ওং
রাক্ষ্যাণ (তামরা আমার সঙ্গেচল; গুলা অত্যে সীতাকে
বিনাশ করিয়া, পুত্র শোক নিবারণ করিব। এই বলিয়া
তীক্ষ্মধার অতি সূহৎ এক অনি হস্তে ধারণ করত ক্রতে প্রে
সীতা সন্ধিধানে গমন করিতে লাগিল। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১।

খজাপানিমথায়ান্তং ক্ৰুছং দৃষ্ট্য দশানন্য।
রাক্ষদীমধ্যগা দীতা ভয়শোকাকুলাভবৎ ॥ ৬ × ॥
এতিমিয়ন্তরে ওশু দিনিবা বুদ্মিনান্ শুটিঃ।
স্থপাশো নাম মেধানী রাবণং বাক্যমন্ত্রীৎ।। ৬৫
নত্ত নাম দশগ্রীব। দাক্ষাদৈপ্রবিণান্ত্রকঃ।
ভেদবিদ্যান্তভন্নাতঃ দকর্মপরিনিষ্ঠিতঃ॥ ৬৬॥
অনেকগুণদশ্যাঃ কথং স্ত্রীবধ্মিচ্ছদি?।
অম্মাতিঃ দহিতো যুদ্ধে হত্বা রামং চ লক্ষ্মণ্ম।
প্রাপ্রাক্তঃ দকলীং শীন্ত্রিকেঃ দ ন্যুক্তি ॥ ৬৭

ততো তুরাত্মা সুক্ষদা নিবেদিতং বচ: সুধর্মাং প্রতিগৃহ্য রাবণঃ। গৃহং জগামাশু শুচা বিমুদ্ধীঃ পুনঃ দভাং চ প্রথমো সুক্ষত্তঃ। ৬৮।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে

যুদ্ধকাণ্ডে নবমোহধ্যায়ঃ।

ভাদিকে রাক্ষনী পরিবেকি গা সীতা দশাননকে ধড়াইন্তে ক্রণান্তর নায়ে আগমন করিতেছে, দশনি করিয়া ভয়-বাকেলিও চিত্তে কপোস্থিতা কলেবরা হইলেন। ইতাবসরে অপাশ্ব নাম। রাবণের জনৈক বুদ্ধিসম্পন্ন কপাবান্ মন্ত্রী, তাহার সন্থ্য দণ্ডারমান হইয়া বলিতে লাগিল; হে লক্ষাধিপ দশ্বীব! আপনি ব্রহ্মকুলেজনা গ্রহণ করতঃ, বেদজ্ঞ, নিষ্ঠাপর, বৃদ্ধমান্ এবং বহুগুণ বিশিষ্ট হুইয়া কি জনা জ্রী বধে উদাত হুইয়াছেন । অনাের কথা দূরে থাক, দেখুন আপনি ত্রিদশ লিগকেও পরাজ্ঞিত করতঃ অবশে রাথিয়া, যশে ত্রৈলাক্য পূর্ণ

করিয়াছেন; তবে কি জনা স্ত্রী বধে অভিলাধী ছইভেছেন? অতএব বলিভেছি, অভি ত্মরায় রণসজ্জা করুন; যুদ্ধে রাম লক্ষ্মণকে বিনাশ করিরা, অবিশক্ষেই নির্বিয়ে জানকীর সহ স্থা অনুভব করিবেন। এই বলিরা দে ক্ষান্ত হইলে; মূঢ়মভি চরায়া রাবণ, স্বধন্ম বাক্য প্রতিগ্রহ পূর্বেক ভদ্দণ্ডে গৃহমধ্যে প্রবেশ করিল; আবার তৎক্ষণাৎ শোকে বিহ্নল হইয়া, উন্যত্তের ন্যায় সভার আগমন পূর্বেক প্রধান প্রধান স্কর্ষণ দচীবদিগাকে আহ্বান করতঃ রাজাসনের উভয় পাছে উপ্রেশন করিতে আদেশ করিল। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮।

ইতি জ্ঞামদধ্যাক্সরামারতে উমামক্টের্নলাদে
যুদ্ধকাথে লবনো২ধ্যারঃ

मगदमा३शांश

স বিচার্য্য সভামধ্যে রাক্ষলৈ: সহ মন্ত্রিভি:।
নির্যথা যেহবশিষ্টান্তৈ রাক্ষলৈ: সহ রাঘবম্ ॥ ১
শলভ: শলভৈত্ব ক্র: প্রজ্বলন্ত মিবানলম্।
ততাে রামেণ নিহতাঃ দর্ফো তে রাক্ষসা যুধি। ২
স্বরং রামেণ নিহতন্তীক্ষবাণেন বক্ষসি।
ব্যথিভত্তবিতং লক্ষাং প্রবিবেশ দশাননঃ। ৩।
দৃষ্ট্রা রামন্ত বহুশ: পৌরুষং চাপ্যমানুষম্।
ব্যবণাে মাক্রতেইশ্চব শীঘ্ং শুক্রান্তিকং যথাে। ৪

নমক্ত্য দশগ্রীবং শুক্রং প্রাঞ্জলির ব্রবীৎ।
ভগবন্! রাঘনেশৈবং লক্ষা রাক্ষমযুথপৈ:। ৫।
বিনাশিতা মহাদৈত্যা নিহতাঃ পুল্রবান্ধবাঃ।
কথং মে ছুংখসন্দেহস্তায় তিষ্ঠতি সদ্প্রেরী ? ৩।
ইতি বিজ্ঞাপিতো দৈত্যপ্তকঃ প্রাহ দশাননম।
হোমং কুরু প্রস্তুন রহসি ছুং দশানন।। ৭।।
মদি বিশ্লোন চেদ্যোমে তহিঁ হোমানলোপিতঃ।
মহান্রথক্ট বাহাক্ট চাপতুনীর সায়কাঃ।
সন্ত্রিধ্যন্তি তৈর্য ক্তন্ত্রমক্লেরো ভবিষ্যি । ৯।

শার্কভৌ সরিধানে মহাদেব কহিরালেন। অনস্তর, সচীব সন্ধদ পরিবেটিত রাক্ষসেশ্বর রাবণ, সভাস্থলে কিরংক্ষণ মন্ত্রণা করত, যুদ্ধাবলিফ্ট রাক্ষস-সৈনিকগণ সমভিব্যাহারে রাম ও লক্ষ্মণ সহ যুদ্ধার্থে যাত্রা করিল। মেমন শলভেরা স্বেচ্ছার প্রজলিত অনলে শরীর সমর্পণ করিয়া জীবন পরিভ্যাগা করে, সেই রূপ রাবণের সমস্ত্র সেনাই রাম শরাগ্নিতে দেহ প্রদান করিয়া বিনফ্ট হইল, রাবণ জ্যোধে অধীর হইয়া বিপক্ষ পক্ষের উপরে অসংখ্যা শর নিক্ষেপ করিল, ভাহাতে রাম কিঞ্চিৎ কফ্ট হইয়া, এক বাণেই দশাননের বর্মাচহাদি বক্ষঃ-স্থল, সচ্ছিত্র করিয়া দিলেন, তাহাতে লক্কাপতি অভিশর বাণিত হইয়া রাম, লক্ষ্মণ ও মাক্তির বীরত্ব, অস্তরে অরণ করত ভীত হইয়া রাম, লক্ষ্মণ ও মাক্তির বীরত্ব, অস্তরে অরণ

ক্রমে তাঁহার সন্ধিনে উপনীত হইয়া, ক্রতাঞ্জলিপুটে নমস্কার পূর্বকৈ বলিতে লাগিল—ভগবন্! রাঘবদ্বর, লঙ্কার আগমন পূর্বকৈ রণে আমার পূল্র, পোন্ত, আন্ধীয় বান্ধবদিগকে বিনই করিয়া তথার মহানন্দে অবস্থান করিতেছে। এক্ষণে, জাপনি সদাকু থাকিতে আর কে আমাকে এ বিষম বিপদ-সাগর হইতে পার করিতে সক্ষম হইবে? অভএব শীঘ্র উপার দ্বির করিয়া দিন।১।২।৩।৪।৫।৩।

রাবণ এই বলিরা ক্ষান্ত হইলে, দৈত্যগুৰু দশাননকে বলিতে লাগিলেন—হে রাক্ষ্যেশ্বর রাবণ ই তুমি গোপনে অগ্নি ক্রজ্জলিত করিরা হোমের অনুষ্ঠান কর, নচেৎ জ্ঞানিও অবিলয়ে তোমার বহু বিদ্ব ঘটিবার সম্ভাবনা আছে। অভএৰ অতি শীত্র তুমি আমার মন্ত্র গ্রহণপূর্বক রশ্ব, অশ্ব, চাপ, তুলীর এবং শার্ক যুক্ত হইরা, জন শূন্য স্থানে গমন করত মেনিভাবে

গৃহাণ মন্ত্রাশ্বদন্তান্ গচ্ছ হোমং কুরু দ্রুতম্।

ইত্যক্তস্থরিতং গত্বা রাবণো রাক্ষদাধিপ:। ১০।
গুহাং পাতালসদৃশীং মন্দিরে স্বে চকার হ।
লক্ষাদ্বারকপাটাদিবদ্ধা সর্দ্রির মৃত্যুতঃ। ১১।
হোমদ্রব্যাণি সম্পাদ্য যান্ত্যকানাভিচারিকে।
গুহাং প্রবিশ্য চৈকান্তে মৌনী হোমং প্রচক্রমে।১২
দ্বৈতিং ধূমমালোক্য মহান্তং রাবণানুক্তঃ।
রামার দর্শরামাদ হোমধূমং ভ্রাকুলঃ। ১৩।
পশ্য রাম! দশগ্রীবো হোমং কর্তুং সমারভং।
যদি হোমঃ সমাপ্তঃ স্থান্তদালেয়ো ভ্রিষ্যুতি॥ ১৪
গ্রেতা বিঘার হোমস্থা প্রেষণান্ত হরীশ্বরান্।
হথেতি রামঃ স্থ্রীবসন্মতেনাঙ্গণং কপিম্। ১৫।

হন্মৎপ্রমুখান্ বীরান্ আদিদেশ মহাবলান্।
প্রাকারং লজ্বয়িত্বা তে গতা রাবনমন্দিরম্। ১৬!
দশকোটাঃ প্রবঙ্গানাং গতা মন্দিররক্ষকান্।
চূর্ণয়ামাসুরশ্বাংশ্চ গজাংশ্চ নাহনন্ ক্ষণাং। ১৭।
ততশ্চ শরমা নাম প্রভাতে হস্তদংক্তয়া।
বিভীষণম্য ভার্যা সা হোমস্থানমসূচয়ং। ১৮।
গুহাপিধানপাঝাণমক্ষদং পাদঘট্টনৈং।
চূর্ণয়িত্বা মহাসত্ত্বঃ প্রবিবেশ মহাগুহাম্। ১৯।
দৃষ্ট্বা দশাননং তত্র মীলিতাক্ষং দৃঢ়াসনম্।
ততোহঙ্গদাক্ষয়া সর্কেবানরা বিবিশুক্তত্র্ম। ২০।
তত্র কোলাহলং চক্রুস্তাড্রন্ত্রশ্চ সেবকান্।
সন্তারাংশিচ্পিকপুত্র হোমকুণ্ডে সমস্তভঃ। ২১।
স্থাবাংশিচ্পিকপুত্র হোমকুণ্ডে সমস্তভঃ। ২১।

দানন দেবের আরাধনা কর, তাহা হইলে তিনি সন্তুফ হইরা হামাকে ভোমার অভিলবিত বর প্রদান করিবেন। এই বিষা শুক্রাচান্য স্থির হইলে, কর্ব্তর-পতি লক্ষায় আগমন পৃত্রক নিজ্ঞ গৃহের অভ্যন্তরে পাতাল তুলা গুহা খনন করিয়া তন্মধ্যে প্রবেশানন্তর, লক্ষারার কবাটাদি সম্ভ্রেক্তক করতঃ মৌনভাবে অগ্নি প্রজ্ঞানত করিবার উপক্রম করিতে লাগিল। বাবলায়জ্ঞ বিভীষণ বহুপরিমাণে ধূমোথিত হইতে দেখিয়া ভ্রাকুলিছ চিত্তে জীরামকে হোম ধূম সন্দর্শন করাইলেন এবং কহিলেন—দেখুন, দশানন হোম আরম্ভ করিয়াছে। এক্ষণে যদি হোম সমাপ্ত হয় তাহা হইলে সে অজ্ঞের হইবে; অভ্যাব হোমের বিশ্ব সম্পাদন করিবার জন্য কপীশ্বরদিগকে প্রেণ্ড ক্রন। অনন্তর শ্রীরাম হ্ত্যীবের সন্মতি অনুসারে ক্রদ, মহাবলীয়ান্ হন্মান ও অন্যান্য কপিদিগাকে হোম

তদনস্তর অগদাদি বানর নিকর, গহ্বরে প্রবেশ পূর্ব্বক তথার মিণিতাক্ষা শুভাসনোপবিস্ট দশাননকে দশন করিয়া ডাহার সেবক সৈনিকদিগকে দুরীকরণানপ্তর, হোমকুণ্ডের চতুর্দ্ধিকে আবর্জনাদি নিক্ষেপ করতঃ মহাকোলাহলের সহিত সূত্য আরম্ভ করিল। তদর্শনে রাবণ, ক্রোধে অধীর হইয়া, তেনৈব সঞ্জ্যানাশু হল্মান্প্লবগাঞ্জীঃ ॥ ২২ ॥

য়ুলি দলৈক কাঠে কি বানারাস্তমিতস্ততঃ।

ন জহে রাবণো ধ্যানং হতোহিপি বিজিগীষয়া ॥ ২৩
প্রবিশান্তঃপুরে বেশান্তঃস্লো বেগবন্তরঃ।

সমানয়ৎ কেশবন্ধে ধূরা মন্দোদরীং শুভাম্ ॥ ২৪ ॥
রাবণশ্রৈব পুরতো বিলপন্তীমনাথবং।

বিদ্দারাক্ষদস্তশাঃ কঞ্কং রত্নভূষিত্ম। ২৫ ।

মুক্রা বিমুক্তাঃ পতিতাঃ সমস্তাদ্রস্পর্য়ঃ।

শ্রোণিস্ত্রং নিপ্তিতং ক্রটিতং রত্নচিত্রিত্ম্। ২৬
কটিপ্রদেশাদ্রিস্তা নীবী তদ্যেব পশ্রতঃ।
ভূষণানি চ সর্বাণি পতিতানি সমন্ততঃ ॥ ২৭ ॥

দেবগন্ধবিকন্যাশ্চ নীতা হৃটেইঃ প্লবক্ষমৈঃ।
মন্দোদরী রুরোদাথ রাবণস্যাগ্রতো ভূশম্॥ ২৮॥
কোশন্তী করণং দীনা জগাদ দশকন্ধরম্।
নির্লজ্জোহদি পরেবেং কেশপাশে বিক্লম্যতে।২৯
ভার্যা তবৈব পুরতঃ কিং জ্লোষি ন লজ্জদে?।
হন্যতে পশ্যতো যস্য ভার্যা পাপেশ্চ শক্রভিঃ॥
মর্তব্যং তেন তবৈব জীবিতাশ্মরণং বরম্।
হা মেঘনাদ! তে মাতা ক্লিশ্যতে বত বানবিঃঃ॥
ঘ্রি জীবতি মে ছংখনীদৃশং চ কথং ভবেৎ ?।
ভার্যা লক্জা চ সন্ত্যক্তা ভর্তা মে জীবিতাশ্রা।৩২

১ন্তর্গরা শ্রুব আছোদন পূর্মক, সহসা উপস্থিত মহা অনর্থ চিন্তা করতঃ ধানে নিমগ্ন হইল। এমৎ কালে বানরাপ্রাণী হসুমান, দশাননের হস্ত হইতে বলপূর্মক, শ্রুব প্রহণ করতঃ, ভদ্মারা ও দন্ত, নথ এবং কাঠাদি দ্বারা ভাষার মস্তকে নিদা-কণ প্রহার করিতে আরম্ভ করিল। তথাপা লঙ্কেশ্বর বৈরী-বিজ্য়েচ্ছায় সেই কঠিন আঘাত সহ্ম করতঃ, ধানভঙ্গ করিল না। তাহা দেখিয়া, অঙ্গাদি কয়েক জন প্রধান প্রধান বানর, অন্দরে প্রবেশ পূর্মক, রাবণের প্রধানা মহিনী মন্দো-দর্মার কবরী ধারণ করিয়া, ভাষাকে তথায় আনয়ন করিল। সেই পরম রূপলাবশ্যবতী ময়দানবকনাা মন্দোদরী ও আনা-খার ন্যায় রাবণাপ্রে দণ্ডায়মানা হইয়া বিস্তর বিলাপ ও প্রিতাপ করিতে শাগিল। অমনি বালীবাজতনয় অঙ্গদ ভাষার বিবিধ-রত্ম-থচিত-কঞ্চ স্ববলে গ্রহণ পূর্মক, নথ-ছায়া থণ্ড থণ্ড করতঃ, দূরে নিক্ষেপ করিল; ওদ্ধানে অপরা-প্র প্লবঙ্গমেরা ভাষার সমস্ত গাত্রাভ্রণ ও বন্ধ্যুক্ত কর্ণ ভূষণাদি নথ দক্ত দারা ছিন্ন তিন্ন করতঃ, বস্থধায় বিক্ষিপ্ত করিল, অমনি কটিদেশ ইইতে বসন শ্লেপ ইইল; তদ্ফেলনর দ্বারা আনীতা, রাবণ-হতা যত দেব গন্ধার্ম কন্যার। ভয়ে থর থর করিয়া কাঁপিতে লাগিল ।২০।২১।২২।২৬।

পরে ঈদৃশী অবস্থাপন্না মন্দোদরীও রাবণান্তো দণ্ডায়মানা হঁইয়া, সমধিক রোদন করভঃ দশাননকে করুণ দীন
বচনে বলিতে লাগিল। দেখ নাখ! ভূমি অভি নির্লুজ্জ
কারণ, সন্মুথে সামানা শক্তাণ, কেশাকর্ষণ করিয়া, যাহার
মহিমীর এরপ ভ্রবস্থা করে, দে ছীন বল ছইলেও কধনই
দ্বির থাকিতে পারে না; তবে ভূমি কেন দ্বির ভাবে অবস্থান
করিভেছ? অভএব জানিলাম; সকলই সময়ের অধীন।
হা ধিকৃ! ছা পুত্র মেঘনাদ! ভূমি এখন কোখায় রহিয়াছঃ
বন্যপশু শাখামূগ বানরেরা ভোমার জননীর কিরপ ছর্দশা
করিয়াছে, এক বার আদিয়া দেখ। বৎস!ভূমি জীবিভ
থাকিলে, ভোমার জননীর এরপ অশমান দেখিয়া কথনই

শ্রুত্ব তদেবিতং রাজা মন্দোদর্যা দশানন:।
উত্তর্জ্ব ধজুমাদার তাজ দেবীমিতি ক্রবন্। ৩৩
জঘানাক্ষদমব্যপ্র: কটিদেশে দশানন:।
ভতোৎসূজ্য মৃথু: সর্ক্রে বিশ্বংসা হবনং মহৎ। ৩৪
রামপার্শ মুপাগম্য তস্তু: সর্ক্রে প্রেইঘিতা:।
রাবণস্ত ততো ভার্যামুবাচ পরিষান্ত্রন্। ৩৫।
দৈবাধীনমিদং ভদ্রে! জীবতা কিন্তু দৃশ্যতে?।
তাজে শোকং বিশালাক্ষি! জ্ঞানমালয়্য নিশ্চিত্ম।

নহা করিতে সক্ষম হইতে না। হা নাথ! ভার্যার লক্ষ্য করিতে পরতঃ স্বামীই রক্ষা করিয়া থাকেন ; কিন্তু আমার ত্রুভাগাবশতঃ, সেই স্বামী বর্ত্তমান থাকিতে, অদ্য তাহার বিপরীত, দেখিতেছি, এই আশত্যা! রে দগ্ধ প্রাণ! বলিতেছি তুই এক্ষণে আমার দেহ পরিত্যাশ কর, নতুবা আর কচক্ষণ এ সব যন্ত্রণা সহ্য করিবি !।

মন্দোদরীর এইরপ বহু বিলাপের পর, দশানন আর নিশ্চিম্ত থাকিতে না পারিয়া অগ্রে মহিনীকে শাস্ত্রনা করছঃ, ক্রোধে অধীর ছইয়া, এক স্থতীক্ষ্ণ অসি করে গ্রহণ পূর্বক, প্রথমেই অঙ্গদের কটিদেশে নিদাকণ প্রহার করিল। তদ্দর্গনে তত্তক্ষ্ব অপর বানরেরা অঙ্গদ সহ ক্রমে প্রদায়ন করতঃ সানন্দে রামপাশ্বে উপনীত ছইয়া, স্থাে অবস্থান করিতে লাগিল। বিচাহন। ২০। ৩১। ৩২। ৩০। ৩৪। ৩৫।

জ্বনন্তর লক্ষেশ্বর রাবণ, ভার্যাকে বিলেষ রূপে শাস্ত্রনা করতঃ বলিভে লাগিল! দেখ, ভদ্রে! যাহা কিছু ঘটনা ঘটি-তেছে, সে সকলই দেবাধীন, ইহা কি তুমি দেখিরাও দেখি-ভেছ না? জ্বতএব ছে বিশালাকি ! তুমি জ্বানাবলম্বন পূর্ব্বক এই মিখ্যাশোক ত্যাগ করতঃ স্থান্তর হও। তুমি জানিও,

অক্তানপ্রভবং শোকং শোকো ক্তানবিনাশকং।
অক্তানপ্রভবাহংধী: শরীরাদিধনাক্সম্থ ॥ ৩৭ ॥
তন্মূলং পুল্লদারাদিসমকঃ সংসৃতিস্ততঃ।
হর্ষশোকভয়কোধলোভমোহস্প্রাদয়ঃ।। ৩৮ ॥
অক্তানপ্রভবা হেতে জন্মমৃত্যুজরাদয়ঃ।
আত্মা তু কেবলঃ শুদ্ধো ব্যতিরিক্তো হ্যলেপকঃ ॥
আনন্দর্বপো ক্তানাত্মা সর্বভাববিবর্জিতঃ।
ন সংযোগো বিযোগো বা বিভাতে কেনচিৎ সতঃ।
এবং জ্ঞাত্বা স্থ্যাত্মানং ত্যুক্ত শোকমনিন্দিতে!।
ইদানীমেব গচ্ছামি হত্বা রামং সলক্ষ্যাম্ । ৪১।
আগমিষ্যামি নো চেম্মাং দার্য়িষ্যতি সায়কৈঃ।
শ্রীরামো বজ্ঞকল্পিক্ট ততো গচ্ছামি তৎপদম ॥৪২

অজ্ঞান ছইতে শোক উৎপত্তি হয়; আবার শোকই জ্ঞানকে বিনাশ করে অজ্ঞান হইতে উৎপত্তি যে অহং বুদ্ধি, ভাহা আত্মা ভিন্ন বাহ্যিক অনিত্য শরীরাদিতে ব্যাপিয়া আছে। সেই অজ্ঞান জ্ঞান্ত অহং ইত্যাকার জ্ঞানের মূল শর্মপ হে. পূজ্র-দারাদি সম্বন্ধ-জ্ঞান, ভাহা হইতে হর্য, শোক, ভ্রম, ক্রোধ, লোভ, মোহ, মদ, মাৎস্থ্য, জ্ঞ্মা, মৃত্যু এবং জ্ঞাদির উৎপত্তি হয়। আত্মাকে কেবল নিদ্ধা অলেপক, আনন্দ-স্বন্ধপ, জ্ঞানমন্ন এবং সর্বভাব বিবর্জ্জিত বিদিরা জ্ঞানিবে। আত্মার কোন কালেই সংযোগ বিয়োগ নাই। অতএব হে আনন্দিতে! স্থার আত্মাকে এইরপ জ্ঞান করিয়া, এ অনিত্য শোক ভ্যাগ কর। আমি এক্ষণেই যুদ্ধে চলিলাম্। অদ্য রাম লক্ষ্মণকৈ আমার হতে নিধন, কিলা জ্ঞানিয়ের অশনি সদৃশ শারে জামি পরম

তদা তয়া মে কর্ত্বরা ক্রিয়া মচ্ছাদনাৎ প্রিয়ে!।
দীতাং হত্বা ময়া দার্ছিং তং প্রবেক্ষ্যদি পাবকম্॥
এবং শ্রুত্বা বচন্তদ্য রাবণদ্যাতিদুঃথিতা।
উবাচ নাথ! মে বাক্যং শ্রুত্ব দত্যং তথা কুরু॥ ৪৪
শক্যো ন রাঘবো জেতুং তৢয়া চান্যেঃ কদাচন।
রামো দেববরঃ দাক্ষাৎ প্রধানপুরুষেশ্রঃ॥ ৪৫ ॥
মৎদ্যো ভূত্বা পুরা কল্পে মনুং বৈবস্বতং প্রভূঃ।
ররক্ষ সকলাপড়্যো রাঘবো ভক্তবৎদলঃ॥ ৪৬॥
রামঃ কুর্মোহভবৎপূর্বং লক্ষ্যোজনবিন্দৃতঃ।
দমুদ্রমন্থনে পুর্চে দধার কনকাচলম্।। ৪৭ ॥
হিরণ্যাক্ষোহতিদুর্ব তো হতোহনেন মহাত্মনা।

জোড় ৰূপেণ বপুষা কোণী মুদ্ধরতা কচিন্ ॥ ৪৮ ॥
ভিলোককণ্টকং দৈত্যং হিরণ্যকশিপুং পুরা।
হতবালার সিংহেন বপুষা রঘুনন্দনঃ ॥ ৪৯ ॥
বিক্রমৈস্তিভিরেবাদো বলিং বদ্ধা জগজয়ম্।
আক্রমাদাং হ্রেক্রায় ভ্তায় রঘুসন্তমঃ ॥ ৫০ ॥
রাক্ষনাং ক্ষভিয়াকারা জাতা ভূমের্ভরাবহাং।
তান্ হত্বা বহুশো রামো ভূবং জিত্বা হৃদামুনেঃ ॥
স এব সাম্প্রভং জাতো রঘুবংশে পরাৎপরঃ।
ভবদর্থে রঘুশ্রেক্রো মানুষমুপাগতঃ ॥ ৫২ ॥
তস্য ভার্যা কিমর্থং বা হ্রভা সীতা বনাদ্বলাৎ ?।
মম পুজ্বিনাশার্থং স্বস্যাপি নিধনায়।চ ॥ ৫৩ ॥
ইতঃ পরং বা বৈদেহীং প্রেষয়্ম্ব রঘুন্তমে।

পদ নিশ্চর পাপ্ত হইবে। পরে তুমি আমার অন্ত্যেক্টিক্রিরার পূর্কে সীভাকে বিনষ্ট করিয়া, আমার দহিত পাবকে প্রবেশ ১৩৬।৩৭।৩৮।৩৯।৪০।৪১।৪২।৪৩।

অনন্তর মন্দোদরী, রাবণের এইরপ নিদাকণ বচন শ্রবণ করিয়া, অতি হঃথিতাস্তঃকরণে স্বামীকে বলিতে লাগিল। দেখনাথ! তুমি যাহা স্থির করিয়াছ ভাগা অবশাই হইবে, কিন্তু বলিতেছি, তুমি কি অন্যে, রলে রাঘবকে কখনই পরা-জয় করিতে সক্ষম হইবে না। অতএব তুমি লানিও, শ্রীবাম মানুষ নয়, সাক্ষাৎ প্রধান পুরুষেশ্বর নারায়ণ। পুরাকল্পে মংসাবভার হইয়া, বৈবস্থত মনুকে সকল আপদ হইতে বক্ষা করিয়াছিলেন, এই হেতু ভক্তবংসল রাম মানুষ নয়। আবার সেই রাম, প্রকালে লক্ষ্যোজন বিস্তৃত শরীর ক্র্মাবতার হইয়া, সমুদ্রমন্থন সময়ে পুটে কনকাচল ধারণ করিয়াছিলেন, আতএব তাঁহাকে মনুষ্য বলিয়া, নির্দেশ করা যায় না। আরও বলি, যে রাম, পূর্বকালে ছুর্ত্ত ছিরণাক্ষকে নিধন করতঃ,

বরাহরপথারণ পূর্বক, ভীষণ দস্ত ঘারা উর্দ্ধীর উদ্ধার সাধন করিয়াছিলেন। আরও যিনি পূর্বকালে নর-দিংহ রূপ ধারণ পূর্বক স্থীর শরীর ঘারা ত্রিলোক কণ্টক দৈত্য হিরণ্য কশিপুকে বিনাশ করিয়াছিলেন। আবার বের্য়ুত্তম রাম বামন রূপে ছলনা পূর্বক বলিকে বদ্ধ করিয়া ত্রিভুবন আক্রেমণ করতঃ দেবরাজ্ঞ ইক্রুকে ভত্য ভাবে গ্রহণ করিয়াছিলেন। আর যিনি ভূভার হরণ জন্য ধরায় বারস্থার জন্ম গ্রহণ পূর্বক অসংখ্য রাক্ষ্য ও ক্ষল্রেরদিগকে বিনাশ করিয়াছিলেন। দেই পরাৎপর পরমপুক্ষ রাম সম্প্রতি আপনার জন্য মানব দেহ ধারণ করিয়া রঘুবংশে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন। অভ্যাব এক্ষণে জানিলাম, আমার প্রবিনাশের নিমিত্ত এবং আপনার বধের কারণ রাম-মহিমী বৈদেহীকে বন হইতে বলপুর্বক হরণ করিয়াছ। দে যাহা

বিভীষণায় রাজ্যং তু দল্পা গচ্ছামহে বনম্। ৫৪।
মন্দোদরীবচঃ শ্রুণা রাবণো বাক্যমন্ত্রবীৎ।
কথং ভদ্রে! রণে পুজান্ ভাতৃন্ রাক্ষমশগুলম্।।
ঘাতয়িত্বা রাঘবেণ জীবামি বনগোচরঃ?।
রামেণ সহ যোৎস্যামি রামবানৈঃ সুষীদ্রপৈঃ।।৫৯
বিদার্যমাণো যাস্যামি ভদ্নিকোঃ পরমং পদম্।
জানামি রাঘবং বিষ্ণুং লক্ষ্মীং জানামি জানকীং।
কাত্বৈব জানকী সীতা মধা নীতা বনাদ্বলাৎ।
বামেণ নিধনং প্রাপ্য যাস্যামীতি পরং পদম্।
বিষ্কুয় ডাং তু সংসারাক্ষমিষ্যামি সহ প্রিয়ে!।৫৮

পরানন্দময়ী শুদ্ধা সেব্যতে যা মুমুক্সুভি:!
তাং গতিং তু গমিধ্যামি হতো রামেণ সংযুগে ॥
প্রকাল্য কল্মধাণীই মুক্তিং যাস্যামি ছুর্লভাং ॥

ক্লেশাদিপঞ্চতরঙ্গয় পং ভ্রমান্তং
দারাত্মজাগুধনবন্ধুভূষাভিষুক্তং।
ঔর্জানলাভনিজরোষমনকজালং
সংসারসাগরমতীত্য হরিং ভ্রজামি ॥৬১॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে
যুদ্ধকাণ্ডে দশমোহধ্যায়ঃ।

ঘটিবার ঘটিয়াছে, এক্ষণে যাহা বলি প্রবণ কর—আথো বৈদেহী রামকে পারে রাজ্য বিভীষণকে প্রদান করিয়া চল বনে গমন করি। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। । ৫০। ৫৩। ৫৪।

মন্দোদরীর এইরূপ সুধাময় বাক্য প্রবণ করিরা, ল্কামিণতি রাবণ বলিতে লাগিল—

হে ভারে! রাখব কর্ত্বক পুত্র, জাতা প্রভৃতি রাক্ষণ সম্হকে সমরে বিনষ্ট করিয়া বমচারী হওত কিরপে জীবন ধারণ
করিব ! রাম সহ যুদ্ধ করিয়া অতি শীজই তাঁহার বাণে
বিদীণ হইয়া সেই শরম বিষ্ণুর পাদপদ্ম প্রাপ্ত হইব। আমি
রাঘবকে বিষ্ণু ও জানকীকে শক্ষমী বলিরা অবগত আছি,
এবং সীভাবে ঐ রপ আনিরাই বন হইতে বনপূর্ব্বক আন-

রন করির।ছি; এক্ষণে রাম কর্জুক বিনই ইইরা পরম শদ প্রাপ্ত হইব, হে প্রিয়ে! ভোমাকে বিমুক্ত করিরা আমি সংসার ছইতে গমন করিব। মুমুক্ষু ব্যক্তিরা যে আনন্দ সস্তোগ করিরা থাকে আমি রাম কর্জ্ক নিহত ইইরা ঐ গতি প্রাপ্ত ছইব; রক্ষ-দেহ-ক্ত পাশ সমূহ রাম নাম আরণ হারা দ্বীভূত করিরা তুর্ল ভ মুক্তি প্রাপ্ত ছইব। জ্রী, পুত্র, বন্ধু, প্রভৃতি ব্যক্তি সন্তুক রাগা ছেয়াহি পঞ্চ ক্লেল পাইরাছি, এক্ষণে অনঙ্গন ও সংসার-সাগর উত্তীর্ণ ছইরা ছরির পাদপদ্ম লাভ করিব। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৩০।

'ইতি জীমনধ্যাত্মরামারণে উমানহেশ্বরসভাগে বৃদ্ধকাথে দশমেহধ্যারঃ !

একাদশো২ধ্যায়ঃ।

ইত্যুক্তা বচনং প্রেম্ণা রাজ্ঞীং মন্দোদরীং তদা।
রাবণঃ প্রায়ে বাদে সহ সংযুগে। ১।
দৃঢ়ং সান্দনমাস্থায় রতো ঘোরৈনি শাচরেঃ।
চক্রৈঃ ঘোড়শভিযুক্তং সবরবং সকুবরং। ২।
পিশাচবদনৈর্ঘোরৈঃ খরেষুক্তং ভয়াবহম্।
সর্বাস্ত্রশস্ত্রসহিতং সর্বেগিক্ষর সংযুত্ম্। ৩।
নিশ্চকামাথ সহসা রাবণো ভীষণাক্রতিঃ।
আয়ান্তং রাবণং দৃষ্ট্বা ভীষণং রণকর্কশম্॥ ৪॥
সক্রস্তাভ্তদা সেনা বানরী রামপালিতা॥ ৫॥
হন্সানথ চোৎপ্লুডা রাবণং যোদ্ধুমায্যে।
আগত্য হন্মান্রকোবক্ষস্যভুলবিক্রমঃ॥ ৬॥

মৃক্তিকং দৃদ্ধ বদ্ধা তাড়য়ামাস বেগতঃ।
তেন মৃক্তিথে বিবেশ স্থানুত্যামপতজ্পে । ।
মৃক্তি তোহও মুহুর্তেন রাবণঃ পুনরুপ্থিতঃ।
উবাচ চ হন্তমন্তং শুরোহ্যি মম সন্মতঃ । ৮ ।
হন্তমানাহ তং ধিজ্ঞাং যন্ত্যং জীবসি রাবণ!।
তং তাবন্ম্কিনা বক্ষো মম তাড়য় রাবণ।॥ ৯ ॥
পঞ্চাম্ময়া হতঃ প্রাণাম্মোক্ষসে নাত্র সংশয়ঃ।
তথেতি মুক্তিনা বক্ষো রাবণেনাপি তাড়িতঃ ॥১০॥
বিঘুর্ণমাননয়নঃ কিঞ্জিৎকশ্মন্মায়যে।।
সংজ্ঞামবাপ্য ক্পিরাট্ রাবণং হন্তমুদ্যতঃ ॥১১॥

প্রেম ভরে মন্দোদরীর সহিত এই রূপ কথোপকথন করিয়া, দশানন জীরাম সহ যুদ্ধ করিতে যাতা কারণ, স্ফুদ্টু সালনো-পরি উপবিষ্ট, ভরানক নিশাচর ও পিশাচ,পরিব্রভ যোড়শ চক্র রথ গুল্ডি যুক্ত, এবং নানাবিধ অন্ত্র সন্ত্র ও যুদ্ধোপকরণ সং দশানন ভীষণাক্ষতি হইয়া সহসা বহির্গত ইইল। রাম-পর্ণাণত বানরী সেনা রাবণকে ভীষণ রণ-কর্মশ শব্দ করিতে করিতে আসিভে দেখিয়া ভীত ইইল। আনস্তর হুমুমান রাবণের সহিত যুদ্ধ করিবার আশামে উল্লেফন পূর্মক উপস্থিত

হইয়া এবং মুক্তি বন্ধ করত অতি বেগে রাক্ষণের বক্ষঃ
লেখে আঘাত করিল, রাবণ তাহাতে রখোপরি নিপতিত
হইল, এবং কণ কাল মুদ্ধিত হইরা পুনরায় উন্ধিক হইরা
হত্মানকে কহিল—হে হত্মশৃ! তুমি যথার্থ বীর। হত্মান
কহিল—হে রাবণ! আমাকে ধিক, কারণ তুমি জ্ঞীবিত আছ:
হে রাবণ! তুমি আমার বক্ষ ভাড়ন কর, পশ্চাৎ আমি
ভোমাকে প্রাণে বিনষ্ট করিব, তাহাতে তুমি মোক্ষ প্রাপ্ত
হইবে—ইহাতে কোন সন্দেহ নাই। অনন্তর রাবণ মুক্তি হারা
হত্মানের বক্ষ ভাড়ন করিল; হলুমান বিঘ্ণারমান নয়ন
হইরা সংজ্ঞাহীন হইরাই আবার সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইরা রাবণকে

ততোহনাত গতো ভীত্যা রাবণো রাক্ষসাধিপ:।

হনুমানক্ষদদৈব নলো নীলস্তথৈব চ । ১২ ॥

চত্বার: সমবেতাত্রে দৃষ্ট্যা রাক্ষসপুক্ষবান্।

অগ্নিবর্গং তথা সর্পরোমাণং খজারোমকং ॥ ১৩॥

তথা রশ্চিকরোমাণং নির্জন্ম: ক্রমশোহস্থরান্।

চত্বারশ্চভুরো হত্বা রাক্ষসান্ ভীমবিক্রমান্ ॥১৪॥

দিংহনাদং পৃথক্ কৃত্বা রামপার্ম মুপাগতা:।

ততঃ ক্রুদ্ধো দশগ্রীবং সন্দশ্য দশনচ্ছদ্ম্ ॥১৫॥

বিশ্বত্য নয়নেক্রুরো রামমেবস্থোবত।

দশগ্রাবো রথস্থ্য রামং বজ্রোপনিং শবর:॥ ১৬॥

আজ্ঘান মহাঘোরেধারাভিরিব ভোষদং।

রামস্য পুরতঃ সর্কান্ বানরানপি বিব্যথে॥ ১৭॥

ততঃ পাবনসংকাশেঃ শবৈঃ কাঞ্চনভূষপে:।

অভ্যবর্ষদ্রশে রামো দশগ্রীবং সমাহিতঃ। ১৮।
রথস্থং রাবণং দৃষ্ট্বা ভূমির্চং রঘুনন্দনম।
আহ্ম মাতলিং শক্রো বচনঞ্চেদমন্ত্রবীৎ ॥ ১৯ ॥
রথেন মম ভূমির্চং শীন্তং যাহি রঘুত্তমম।
ছরিতং ভূতলং গড়া কুরুকার্য্যং মমানঘ।। ২০।
এবমুক্তোহর্থ তং নত্বা মাতলির্দেবসার্থিঃ।
ততো হরৈশ্চ সংযোজ্য হরিতঃ স্যান্দনোত্তমম ॥
স্বর্গাক্তর্যার্থং রামস্য ভ্যুপচক্রাম মাতলিঃ।
অন্তর্বীচ্চ ততো রামমপ্রতর্ক্যর্থেন্ত্তঃ।
প্রাঞ্জলিন্দেবরাজেন প্রেষিতোহন্মি রঘুত্তম।।২০।
রথোহয়ং দেবরাজস্য বিজয়ায় তব প্রভো।।
প্রেষিতশ্চ মহারাজ। ধনুরৈক্রং চ ভূষিতম্।২৩

বিনাশ করিতে উদ্যত হইল। অনস্তর রাক্ষ্যাধিপ রাবণ ভাতান্তঃকরণে প্রথান করিল। হুনুমান, অক্ষদ, নল ও নীল সমবেত হইয়া অগ্নিবর্গ, সর্পমান, অক্ষদ, নল ও নীল সমবেত হইয়া অগ্নিবর্গ, সর্পমান, অক্ষদ, নল ও নীল বেরামাণ রাক্ষ্যানিগাকে সর্মূথে নির্গত হইতে দেখিয়া ভীম বিক্রেম চারি জনকে বিনস্ত করিল, এবং প্রত্যেকেই দিংহুনাদ করিতে করিতে রাম পাছে উপানীত হইল। অনস্তর দাশগ্রীব ক্রোধ পারতন্ত্র হইরা আর্ব্রু লোচনে রাম দিকে ধাবিত হইল এবং রথস্থ হইয়া আর্বামাপরি বরিবার ধারার ন্যায় বজোপম শর মমূহ পরিত্যাগ করিতে লাগিল। ভাহাতে রাম-সন্মুখবর্তী বানরগাণ ব্যথিত হইতে লাগিল। অনস্তর রামচন্দ্র কাঞ্চণ ভূষণ জড়িত পাবক সঙ্কাশ বাণ বারা দাশা-

ননকে সমাজ্যদন করিলেন। এই সময় ইন্দ্র রাবণকে রথোপরি ও রঘুনাথকে ভূতলে দর্শন করিয়া মাতলিকে আহ্নান
পূর্বক কছিলেন—ভূমি আমার রথ লইয়া ভূতলে গমন
পূর্বক রাম সন্নিধানে উপস্থিত হও—হে অনঘ! ভূমি আমার
এই কার্যা কর। জনস্তর মাতলি তাঁহাকে নমস্কার পূর্বক
হরিছ বর্ণের জন্য আগমন করিল, এবং রাম সন্মুথে উপনীত
হইয়া কহিল—হে শ্রীরাম! আমি দেবরাজ ইন্দ্র কর্ত্ব প্রেরিত
হইয়াছি, হে প্রভো! আপনার বিজয়ের জন্য দেবরাজের
এই রথ উপস্থিত, এবং ছৎকর্ত্ব ধর প্রে ইন্দ্র বাণ প্রেরিত
হইয়াছে। ১ ২। ০। ৪। ৫। ৩। ৭। ৮। ১। ১০। ১১। ১২
১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩

আক্রে করচং খজাং দিব্যভূণীযুগং তথা।
আক্রে চ রথং রাম! রাবণং জ্বি রাক্ষদম্ ।২৪।
ময়৷ সারথিনা দেব! রুত্রং দেবপতির্যথা।
ইত্যক্তস্তং পরিক্রম্য নমক্ষ্ত্য রথোত্তমম্। ২৫।
আকরোহ রথং রামো লোকান্ লক্ষ্যা নিযোজয়ন্
ততোহতবন্মহাযুক্তং তৈরবং রোমহর্ষণম্ ।২৬।
মহাত্মনো রাঘবদ্য রাবশদ্য চ ধীমতঃ।
আগ্রেরন চ আগ্রেরং দৈবং দৈবেন রাঘবঃ।২৭।
আস্রং রাক্ষদ্য জ্বান পরমান্ত্রবিৎ।
তেতস্ত সমৃজে ঘোরং রাক্ষদং চান্ত্রমন্ত্রবিৎ।২৮।
ক্রোধেন মহতাবিষ্টো রামস্যোপরি রাবণঃ।
রাবণদ্য ধরুমুক্তাঃ দর্পা ভূত্বা মহাবিষাঃ।

শরাঃ কাঞ্চনপুঞ্জাভা রাঘবং পরিভোহপতন্।২৯
তৈঃ শরৈঃ সর্পবদনৈর্ব্যন্তিরনলং মুখৈঃ।

দিশশ্চ বিদিশশ্চিব ব্যাপ্তান্তত্ত্র ভদাভবন্। ৩০।
রামঃ সর্পাংস্তত্যে দৃষ্ট্যা সমস্তাৎপরিপুরিভান্।
দৌপর্গমন্ত্রং তৎ ঘোরং পুরং প্রাবর্ত্তরন্তরে। ৩১
রামেণ মুক্তান্তে বাণা ভূত্রা গরুড়কপিণঃ।
চিচ্ছিত্বঃ সর্পবাণাংস্তান্ সমস্তাৎসর্পশত্রবং।৩২।
অত্রে প্রভিহতে বুদ্ধে রামেণ দশকন্তরঃ।
অভাবর্যস্ততো রামং ঘোরাভিঃ শরুর্স্তিভিঃ।৩৩ঃ
ততঃ পুনং শরানীকৈ রামমক্রিফকারিণম্।
অদিয়িত্বা ভু ঘোরেণ মাতলিং প্রত্যবিধ্যত।৩৪।
পাতরিত্বা রথোপত্তে রথকেতুং চ কাঞ্চনম্।
প্রশানশ্বানভাহনজাবণং ক্রোধ মুচ্ছি তিঃ।৩৫।
বিষেদুর্দ্দেবপন্ধর শিচারণাং পিতরন্তথা।
মাত্রিকারং হরিং দৃষ্ট্যা ব্যথিতাক্ষ মহর্ষয়ঃ।৩৯।

ছে শ্রীরাম! তিনি অভেদ্য কবচ, খজা, দিব্য ভূণীর দ্বয়ও প্রেরণ করিয়াছেন; অতএব আপনি রখে আরোহণ করিয়া দেবপতি যেমন এই সারখি সমভিব্যাহারে করিয়া বৃত্তাভূরকে বিনাশ করিয়া ছিলেন, সেই রপে দশাননকে বিনাশ করুন। মাতলি এই রূপ কহিলে রামচন্দ্র রখকে নমস্কার করিয়া, রাবণ বধের অপপ কালাবশিষ্ট আছে বোধে, অনন্দিত ভইয়া, রখোপরি আরোহণ করিলেন। ২৪। ২৫

অনন্তর রাম ও রাবণে তুমুল সংগ্রাম হইতে লাগিল।
পারমান্ত বিশারদ রামচন্দ্র রক্ষপতির আগ্নেরবাণ এবং দৈববাণ
খণ্ড খণ্ড করণান্তর মহা ক্রোধাবিষ্ট হইরা রাবণ প্রতি খের অন্ত্র পরিত্যাগ করিলেন, রাবণ ও ক্রোধ পরভক্ত ছইরা রামোপরি বাণ নিক্ষেপ করিতে লাগিল এবং ঐ বাণ ভদ্ধক- মুক্ত ছইরা মহাবিষ দর্প হইল এবং তাছারা মুখ হইতে জনল নির্গত করিতে করিতে চারিছিকে পরিব্যাপ্ত ছইল; প্রীরাম চক্ত ভদর্শনে সোপণান্ত পরিত্যাগ করিলেন, ঐ বাণ পরিত্যক্ত ছইবা মাত্র দর্শক গরুত্বপী ছইয়া দর্প বাণ ছেলন করিল হালার পরের্ফি করিতে লাগিল। অনুস্তর রাবণ প্রকাশ আরিফ রামকে অসংখ্য শর দ্বারা বিদ্ধ করিবা পরে মাতলিকে বিদ্ধ করিল। এবং জোধ-মুক্তি ত হইয়া কাঞ্চণ মর ধ্বজা ছেলন ও অখু সমূহ বিদ্ধ করিল। দেব, গন্দর্মে, চারণ, খবি প্রভৃতি গোক সমস্ত রামকে বিহুবল দেখিয়া সাতিশর ব্যথিত

বাথিতা বানরেন্দ্রশ্চ বভুরুং সবিভীষণংঃ।
দশান্তো বিংশতিভুজঃ প্রসৃহীতশরাসনঃ। ৩৭।
দদৃশে রাবণস্ত্র মৈনাক ইব পর্যক্তঃ।
রামস্ত ভুকৃটিং বদ্ধা ক্রোধসংরক্তলোচনঃ॥ ৩৮ ॥
কোপং চকার সদৃশং নির্দিহ্নিব রাক্ষ্পম্।
ধল্পরাদায় দেবেন্দ্রধল্পরাকারমন্ত্রম্। ৩৯।
গৃহীত্বা পাণিনা বাণং কলোনলসমপ্রান্ধ্র ।
নির্দিহ্নিব চক্ষুত্রিং দৃদৃশে রিপুত্রন্তিকে॥ ৪০॥
পরাক্রমং দশ্রিভুং তেজসা প্রস্তুলরিব।
প্রচক্রমে কালকণী সর্বলোকস্থা পশাতঃ। ৪১।
কিরুষা চাপং রামস্তা রাবংং প্রতিবিধ্য চ।
হর্ষরন্ধান্ত্রমিক কালান্তক ইবাবন্ধে।॥ ৪২॥
ক্রেদ্ধার্মিক ব্লান্ত্রক চ্লান্ত্রক হবাবন্ধে।
ভ্রেন্থান্ত্রানি চচাল চ বস্তুরা।। ৪৩॥

রামং দৃষ্টা মহারে জিমুৎপাতাংশ্চ স্থলারণান্।

তত্তানি সর্বান্ত্রানি রাবণং চাবিশন্তরম্। ৪৪।

বিমানস্থঃ স্থরগণাঃ সিদ্ধগদ্ধবিকিয়রাঃ।

দন্তঃ স্থমহাবুদ্ধং লোকসম্বর্তকোপমন্।

ঐক্তমস্রং সমাদার রাবণশ্ত শিরোহচ্ছিনং ॥ ৪৫ রা

মূর্দ্ধানো রাবণশ্তাথ বহবো রুধিরোক্ষিতাঃ!

গগনাৎপ্রপতন্তি স্ম তালাদিব ফলানি হি ॥ ১৬ রা

ন দিনং ন চ বৈ রাত্রির্ম সন্ধাা ন দিশোহবি বা।

প্রকাশন্তে ন তদ্ধপং দৃশাতে তত্ত্ব সঙ্করে ॥ ৪৭ রা

ততা রামো বভূনাথ বিস্মানবিক্ষমানসঃ।

শতমেকোতরং ছিল্লং শিরসাং চৈকবর্তসাম্॥ ৮৮

ন চিব রাবণঃ শান্তো দৃশাতে জীবিতক্ষরাৎ।

ততঃ সর্বাস্ত্রবিদ্ধীরঃ কৌশল্যানন্দর্ভনঃ ॥ ৪৯ ॥

কইলেন; কপীশ্বরগণ ও বিভীষণ রাবণকে বিংশতি হস্তে লগাসন প্রহণ করিতে দেখিয়া, বাথিতমনা হইলেন। এবং রাবণকে যেন মৈনাক পর্বেত সদৃশ বোধ ছইতে লাগিল। তদর্শনে শ্রীরামচন্দ্র কালানল-সমপ্রভ বাণ করে প্রহণ করিয়া, চক্ষাগ্রি দ্বারাই যেন শক্ত দগ্ধ করিবার নিমিত্ত চারিদিকে পর্যাবেক্ষণ করিতে লাগিলেন; এবং তেজ দ্বারা প্রজ্ঞালিত হইয়া সর্বলোক সমক্ষে শ্রীয় পরাক্রম পরিদর্শন করিয়া, রাবণবিনাশ জন্য কালরপী ছইলেন। শ্রীরামচন্দ্র চাপাকর্ষণ পূর্বক রাবণকে বাণ দ্বারা বিদ্ধ করিয়া, যানরগণের হর্ষোৎপাদন করতঃ, কালান্তকের ন্যায় উপস্থিত ছইলেন; তাহার ক্রোধাণ্ডিপূর্ণ বদনমন্তল দর্শনে সর্ববি প্রাণি ভীত হইছে শাগিল এবং বন্ধন্ধরা কম্প্রানা ছইলেন। শ্রুগ, মন্ত্র ও

পাতানস্থ পোক সমস্ত প্রীরামকে মহা কোণাছিত ও দশপ্রীরকে সন্দর্শন করিয়া ভয় বিহ্বল হইল। স্মরগণ,
সিদ্ধাণ, গদ্ধর্মগণ ও কির্মাণ বিমান হইতে সর্মানোক প্রলম্ম
যুদ্ধ দর্শন করিতে লাগিলেন। ইত্যবসরে প্রীরাম ঐন্তরণণ
প্রহণ করিয়া ক্রমে ক্রমে রাবণের সমস্ত শিংশেছনন করিলেন,
স্থভরাং রাবণের মস্তক হইতে প্রভূত শোগিত ক্ষরিত হইতে
লাগিল, রাবণ-মন্তক বিচ্ছিন্ন হইয়া ভূতলে পতিত হওয়াতে
বোধ হইতে লাগিল যেন গাগণ হইতে তাল কল সমূহ নিপ্রভিত
হইতেছে। দিবা নাই, রাজি নাই, সন্ধাণ নাই, দিক্ নাই,
রাবণের সহিত প্রীরণদের স্থোতির সংগ্রাম হইতে লাগিল,
রামচন্দ্র একশত এক বার ভূলাভেন্দ্রী মন্তক ছেদন করিলেন।
কিন্ত প্রায় মন্তর্ক পরিদ্লামান হইল, ভাছাতে রঘুনন্দর
সাতিশ্য বিশ্বরাবিন্ট হইকেন। রাবণ ক্ষমপ্রাপ্ত হইতে জীবন
পাইয়াও বিগত তেন্ট হইলনা। অনন্তর সর্মান্ত বিশারদ

অত্তৈশ্ব বছনির্যক্ত শিব্যামান রাঘনঃ।
বৈথির্ব নৈহতা দৈতা। মহাসন্ত্বপরাক্তমাং। ৫০।
ত এতে নিক্ষলং মাতা রাবণস্ত নিপাতনে।
ইতি চিন্তাকুলে রামে সমীপস্থে বিভীষণং॥ ৫১॥
উবাচ রাঘবং বাকাং ব্রহ্মদত্বরো হৃদ্যে।
বিচ্ছিয়া বাহবোহপান্য বিচ্ছিয়ানি শিরাংনি চ।
উৎপৎসারি পুনং শীব্রমিত্যাহ ভগবানজঃ।
নাতিদেশেইমৃতং তম্ম কুগুলাকারসংস্থিতম্। ৫৩
তচ্ছোষরানলাস্ত্রেণ তম্ম মৃতুস্তেতা ভবেং।
বিভীষণবচং শ্রুদ্বা রামং শীব্রপরাক্তমং। ৫৪।
পাবকাস্ত্রেণ সংযোজ্য নাভিং বিব্যাধ রক্ষসং।
অনন্তরং চ তিচ্ছেদ শিরাংনি চ মহাবলঃ॥ ৫৫॥

বাহুনপি চ সংব্রধা বাবণকা ব্যুক্তমঃ।
ততো ঘোরাং মহাশক্তিমাদার দশকল্পরঃ। ৫৬॥
বিতীষণবধার্থরে চিক্ষেপ ক্রোধবিহ্বলং।
চিচ্ছেদ রাঘ্রো বানৈক্তাং শিতৈহে মভূষিতৈঃ।৫৭
দশ্জীবশিরংশ্ছনকোলা ভেঁজো বিনিগতম্।
স্লানকপো বভূবংথ ছিল্লৈঃ শীর্ষেভ্রাক্তরিং॥ ১৮॥
একেন মুখাশিরদা বাহুভাং রাবণো বভৌ।
রাবণস্ত পুনংক্রুদ্ধো নানাশস্ত্রাস্তর্ফিভিঃ। ৫৯॥
ববর্ষ রামং তং রামক্তথা বংশিক্বিবর্ষ চ।
ততে। যুদ্ধমভূৎ ঘোরং ভুমুলং লোমহর্ষণম্॥ ৬০
অথ সংস্মারয়ামাদ মাতলী রাঘ্রং তদা।
বিস্ক্রাস্তং বধায়াদ্য ব্রাক্ষণ শীব্রং রঘুত্ম। ॥৬১

কেশিল্যানন্দ্ৰহ্মন রামচন্দ্র যে যে বাণ পরিত্যানা করিয়াছিলন, সেই দকল মহাপরাক্রমদৈত্যকে নিপাত করিতে অসমর্থ হওরার, তিনি চিন্তাকুলিত হুইলে, বিভীষণ তাঁহার সমীপার্ক্তী হুইরা, রাঘবকে ব্রহ্মনন্ত বর বিষয় উল্লেখ করিলেন এবং কহিলেন—হে রামচন্দ্র! ভগবান্ ব্রহ্মা ইহাকে এই বর দিয়াছিলেন যে, তাঁহার মন্তক বার বার বিচ্ছিল্ন হুইলেও গুনরার উৎপন্ন হুইবে, কিছুডেই মৃত্যু হুইবে না। ৪০ [৪১ | ৪২ | ৪৩ | ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ |

হে রাঘব! রাবণের মাওলাকার নাভিগতে অমৃত আছে, আপনি আয়োক্স ছারা ভাষা লোষণ করিলে উহার মৃত্যু ইইবে; রামচন্দ্র বিভীষণের বাকা প্রবণ করিরা লঘু হত্তে পাব-কাস্ত্র শরাসনে নর্টী শর সংবোজন পূর্বক রাজসের নাভিদেশ বিশ্ব করিলেন, অনন্তঃ ভাষার মন্তক ছেদন করিরা ভাষার বাত সমস্ত আক্রমণ করিলেন। পরে দশানন ক্রোধ বিহ্বল হইর' আহি তীষণ মহাশক্তি প্রহণ পূর্বক বিভীষণকে বিমাশ কবিবার আশরে তাছা পরিভ্যাগ করিল,রাঘবও হেমভূষিত তীক্ষ্র বাণ ছারা তাছা ভেদন করিরা ফেলিলেন। দশাননের ছির শীর হইতে তেজ্ঞোপগম হইতে লাগিল, স্মুভরাং রক্ষ বিকৃতরূপী হইল; রাবণ প্রধান মন্তক ও হস্ত সম্বলিত হইয়া রিংল; পরে প্নর্বার কোপান্থিত হইয়া বিবিধ অন্ত শত্র জ্বালে রাম্চিন্তকে আক্রম করিল, প্রারাপ অবরল ধারার শার রক্ষিক্তিতে লাগিলেন, অনন্তর ফুইজানে লোম হর্ষণ তুমুল সংগ্রাম হইতে লাগিল। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮।

অমন্তর ইক্ত সাংখি মাতলী জীৱামচক্তকে আয়বণ করাইরা দিলা কঞ্লি—হে রঘুবর! রাবণ বিনাশ হেতু ব্রহ্ম অন্ত শীঅ বিনাশকালং প্রথিতো যাং সুরৈং সোহস্ত বর্ত্ত ।

জিত্মান্তং ন চৈত্রা ছেত্রবাং রাঘব ! জ্যা । ৬২

নৈব শীংক্ষ প্রভা ! বধাে বধ্য এব হি মর্মাণি
ততঃ সংস্মারিতাে রামস্তেন বাক্যেন মাতলেঃ ৬৩

জ্ঞাহ সশরং দীপ্তাং নিংশানন্তমিবােরগম্ ।

যার পাশ্যে তু পবনং কলে ভাক্ষরপাবকে । ৬৪।
শ্রীর্মাকাশ্যমং গৌরবে মেরুমন্দরে ।
প্রবিশ্বি চ বিন্যন্তা লােকপালা মহে জাল্লামনিং বপুষা শান্তভাক্ষরবর্চ লা ।
তমুগ্রমন্ত্রং লােকানাং ভয়নাশ্নমন্ত্রম্ । ৬৬ ॥
অভিমন্ত্রা হতাে রামস্তং মহেষুং মহাভুজঃ ।
বেদপ্রেণ্ডেন বিধিনা সন্দধে কাম্বিক বলী ॥ ৬৭

গবিতাগা ককন, উহার বিনাশ বিষয়ে দেবতাদিগের দ্বারা বাহা কথিত হইয়ছে তাহা অন্যই ছইবে, কিন্তু হে রাঘব! জনা কোন শর হারা উহার মন্তক ছিল্ল ছইবে না, হে প্রভা উহার মন্তক ছিল্ল ছইবে না, হে প্রভা উহার মন্তক ছেলন বিনাশ নাই, তবে উন্নতন বিদ্ধার্থই ভিহার মৃত্যু হইবে। মাতলি বাক্যে শ্রীরামচন্তের স্মরণ পথে রাবণবধ বিষয় জাগরেক হইলে, তিনি সগর্জ্জ আশিবিষ সদৃশ ও স্থলীপ্রায়মাণ শর আহণ করিলেন; ভাহার পার্ছে পারন—ফলকে স্থাায়ি সমন্তিত—গরীর আকাশময় অর্থাৎ ব্যাপকতা ছেতু ছিরণাগর্ভ—গৌরবে মেক পর্বত সদৃশ —মহাতেজ্জ ব্রীরামাণ সকলের বল্পকাশ পায়—বাহার দেহের কান্তি মাধ্যাত্রিক সৌর কিরণকেও লক্ষিত করে—মহাতেজ্জ প্রীরামচন্তর প্রি দোর্মণ্ড, সর্বলোক ভ্রনাশী অন্তুত বাণ বেদোক্তাম্যায়ী মন্ত্রপুত করিয়া শরাসনে

তিষ্মিন্ সন্ধীয়মানে রাঘবেণ শরোন্তমে।
সর্বাস্তানি বিজেক্লচাল চ বস্থারা।। ১৮॥
স বাবণায় সংক্রুদ্ধা ভূশমানম্য কার্মাক্রম্।
চিক্ষেপ পরমায়ত্তসমন্তং মর্মাঘাতিনম্। ১৯॥
স বজ্ঞ ইব দুর্দ্ধবো বক্তপাণিবিসর্জিতঃ।
কতান্ত ইব ঘোরাস্যো নাপতজাবণোর্দি! ৭০।
স নিম্প্রো মহাঘোরঃ শরীরান্তকরঃ পরঃ।
বিভেদ হৃদয়ং ভূণং রাবণস্য মহাত্মনা। ৭১।
রা ণ্যাহরৎপ্রাণান্ নিবেশ ধর্ণীতলে।
স শরো রাবণং হতা রামভূণীরমাবিশ্র ॥ ৭২॥
তস্য হস্তাৎ প্রাণাশ্র সশরং কার্মাক্থ মহ্র।
গতাস্ত্র মিবেগেন রাক্ষ্যেভ্লোহপতন্ত্রি।। ৭৩
তং দৃষ্ণী পতিতং ভূমৌ হতশেষান্ট রাক্ষ্যাঃ।
হতনাথ ভয়ত্ত্রা তুক্রেরুং স্ক্রিতো দিশম্যা ৭৪॥

আরোপন করিলেন, রঘুবীর সেই মহাশর সন্ধান করিলে সমস্ত জীব ভয়াকুলিত ও বসুন্ধরা কম্পনানা হইতে লাগিল। ১৬১১ ৬২ ১৬৬ ১৬৪ ১৬৫ ১৬১ ১৬৭ ১৬৮।

মহাবীর রামচন্দ্র সাভিশন্ন ক্রুছ হইরা চাপাকর্ষণ পূর্বাক সেই সর্ব্বাভী মহান্ত্র পরিভাগে করিলেন—বাণ রামচন্দ্রের বজু ভুলা হল্ত পরিভাজ হইরা ক্রভাতের ম্যান্ত্র দশাননের উপরে নিপতিত হইল। সেই শরীরান্তকর ম্হাম্বোর শর পতিও হইরা মহাত্মা রাবণের হুলন্ত্র অতি শীন্ত্র ভেদ করিল; অনস্তর রাবণ সংজ্ঞা বিহীন হইরা ধরণীতলে নিপতিত হুইলে ঐ মহাত্র রক্ষণতিকে বিনাশ করিয়া প্রভাবর্ত্তন পূর্বাক রামচন্দ্রের ভুণীর মধ্যে প্রেবেশ করিল। অনন্তর রাবণের হল্ত হুইতে সশর শরাসন শীন্ত্র স্থিলিত হুইল—এবং অবশিষ্ট রাক্ষ্যেরা দশাননকে ধ্রণীতলে পতিত দেখিয়া মহা আসিত হুওত চারিদিকে প্লায়ন করিতে লাগিল। এদিকে বানরেরা রাবণ দশগ্রীবস্য নিধনং বিজয়ং রাঘবস্য চ।
ততো বিনেচঃ সংস্থা বানরা জিত কাশিনং ॥৭৫।
বদন্যে রামবিজয়ং রাবণস্য চ তদ্ধম্।
অথান্তরীক্ষে ব্যনদং সৌম্যান্ত্রিদশদুন্তুভিঃ।। ৭৬
পপাত পুল্পর্ফিল্চ সমস্তাদ্রাঘনোপরি।
তৃষ্টুরুমুনয়ং সিদ্ধাশ্চারণাশ্চ দিবৌকসং।।৭৭॥
অথান্তরীক্ষে ন্সূত্রং সর্বতোহস্পরসো মুদা।
রাবণস্য চ দেহোপ্থং জ্যোদিরাদিত্যবং স্কুরং।৭৮
প্রবিবেশ রঘুশ্রেষ্ঠং দেবানাং পশ্যতাং সতাম্।
দেবা উচুল্ছা ভাগ্যং রাবণস্য মহাত্মনঃ। ৭৯।
বয়ং তু স ত্রিকা দেবা বি স্থাং কারণ্যভাজনাং।
ভয়দুংখানিভিব্যপ্তাঃ সংসারে পরিবন্তিনঃ॥ ৮০

শ্বরং তুরাক্ষণঃ ক্রের ব্রহ্মহাতী তোমসং।
পরদাররতো বিশ্বদেষী তাপসহিংসকং। ৮১।
পশাৎস্থ সর্বাভূতেষু রামমেন প্রাবিটনান ।
এবং ক্রবৎস্থ দেবেষু নারদং প্রাহ সন্মিত: ॥ ৮২
শূর্তাক্র স্বরা! যুরং ধর্মাহল্ববিচক্ষণাঃ।
রাবণো রাঘবদেষাদনিশং হাদি ভাবরন্ ॥ ৮৩॥
ভূতৈয়ং সহ সদা রামচরিক্রং দ্বেষশংযুতঃ।
শ্রুতা রামাৎ স্থনিবনং ভ্রুংৎ সর্বক্র রাঘবম্ ॥৮৪
পশ্যান্ত্রিনং স্থার রামমেনানুপশ্যতি।
ক্রোধোহণি রাবণন্যান্ত গুরুবোধাধিকে। হতন্ত্র রাম্যন নিহতক্যান্তে নিধৃ তিশোবকল্মবঃ।
রামসাযুজ্যমেবাপ রাবণো মৃক্তবন্ধনং ॥ ৮৬॥

নিধন প্রাপ্ত হইরাছে ও শ্রীরামচন্দ্র বিজ্ঞানী হইরাছেন সন্দর্শনে যার পর নাই হুট্রননা হইল—এবং কেহ"রাম জয়" "রাম জয়" শব্দ কেহ তৎকর্ভ্র রাবণ বধ শব্দ আরম্ভ করিল—ওদিকে অন্তরীক্ষে সেমিটভাবানপর দেবগণ সানন্দে হুন্দুভি ধনি এবং মধ্যে মধ্যে রাঘবোপরি প্রস্পান্তি করিছে লাগিলেন। ভংকালে মুণিগণও সিদ্ধা, চারণ এবং গদ্ধর্ম প্রভৃতি দিবেকিস্কাণ প্রধান শক্ত নিধনে সহাস্য বদন হইলেন এবং অপ্সরাগণ সাহলাদে হৃত্য করিছে লাগিল। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২ । ৭০। ৭১। ৭২ । ৭০। ৭১। ৭২ । ৭০।

এক্ষণে রাবণের দেছ হইতে সূর্যোর ন্যার জ্যোতি বছির্যাত
ছইয়া দেবতাদিগের সমক্ষে য়য়ুশ্রেই রামচল্রের শরীর মধ্যে
প্রথশ কবিল—তদ্দর্শনে উঁথারা পরস্পর কহিতে লাগিলেন
যে, মণাজা রাবণের কি সৌভাগ্য! আমরা সাজ্তিক দেবতা—
বিস্তুর দয়ার পাত্র, ভয় হুংগাদি পরিব্যাপ্ত, এবং সংসারে
বিপ্ত থাকিয়া কেবল ইতস্ততঃ করিয়া থাকি, কিন্ত এই রাক্ষস

क्य, विकाशिकी, माहिन्य श्रेष्ठा, श्रेष्ठी हत्त छर्भ। विक्रु (विक्रे (विक्रे) स्ति हिश्मक रहेश, एम्थ एम्थ म्यं छून म्याप्त श्रीत श्रेष्ठ क्रिया क्रिया क्ष्रिया क्ष्या क्ष्रिया क्ष्या क्ष्रिया क्ष्रिया क्ष्रिया

মহাত্মা রাবণ হেষ সংযুক্ত হইলেও ওক সারণদির নিকট ভূত।
সমব্যাহারে জীরাম চরিত্র শ্রবণ করিরাও ভাঁহার হুদর মধ্যে
শ্রীরামকে সর্বাণ ভাবনা করিরা— এবং জীরাম হইতে পীর নিধন
হইবে ওমিরা ভয়প্রযুক্ত কি স্বপ্রে কি জাপ্রাভাবস্থায় সক্ষদাসকল
সমর রাম দর্শন করিভেন; এক্ষণে জীরামকে সমুবে দেখির।
অভি ক্রেছ হইলেও শুরুপদেশ খেতু ভাহার দিবা জ্ঞান
জ্মিরাছে—অধুনা রামকর্জ্ক নিছত হইরা রাবণ সক্ষ পাপ ও
বন্ধন হইতে বিমুক্ত হইরা জীরামের সাযুক্তা প্রাপ্ত হইলেন।
১৮৩ ৷ ৮৪ ৷ ৮৫ ৷ ৮৬ ৷

পাপিজো বা ছুরাত্মা প্রধনপরদারেষ সজো যদি স্যামিত্যং স্নেহাৎ ভরাত্বা রঘুকুলতিলকং ভাবয়ন সম্পরেতঃ।
ভূতা শুদ্ধান্তরকো ভবশতক্রিতানেকদোধৈবিম্কাং
স:ভা বামস্য বিক্ষোঃ স্ববর-

বিশ্বতং যাতি বৈকুণ্ঠনাদ্যম্ । ৮৭ ।

গ্লা যুদ্ধে দশাস্যং ত্রিভুবনবিষমং বামহস্তেন চাপং
ভুমৌ বিষ্টভ্য তিষ্ঠন্নিত রক্রপৃতং ভ্রাময়ন্ বাণমেকম্
আর্জোপাস্তনেত্র: শরদলিভবপু:ফুর্যাকোটিপ্রকাশো
বীরঞ্জির্বাক: ত্রিদশপভিমুতঃ পাতু মাং বীররামঃ

ইতি জ্রীমদধ্যাক্সরামারণে উমামহেশর সম্বাদে
বুদ্ধকাণে একাদশোহধ্যার:।

বছালি রাবণ পাপাত্মা বা চুরাত্মা ছইরাও কিন্তা নিরস্তর পর-ধন ও পরদারে সাহজ থাকিরাও প্রতিদ্বিদ ভক্তিভাবে কিন্তা ভবে রমুকুণতিলক শ্রীরামকে চিস্তা করত মরিরাছে; জ্ঞাত্তবে সে শুদ্ধাত্মা ও সংসার শতজনিত বছদোধ ছইতে বিমুক্ত চহয়া, ভংক্ষণাং প্রথমেই মহাবিষ্ণু শ্রীরানের স্থাবর সেবিত বৈকৃত্বধানে গমন করিরাছে। যুদ্ধে তিসুবনকতক

দশানমকে বিনাশ করিরা, বামছতে চাপা ভূমে রক্ষা করতঃ
এবং দক্ষিণ হল্তে একটা বাণ ধারণ করির। ঘূর্ণায়মান করতঃ
চক্ষুদ্ধর আরক্তবর্ণ করিয়া দশুগ্রমান কোটাস্থাপ্রভারিত
শরক্ষতপ্রীর, বীরাপ্রাণগ্য, বন্ধুর-অঙ্গ, এবং ভিছপ পতির ক্ষত
এইরূপ মহাবীর শ্রীরাম নিরতঃ আমাকে বক্ষা করুণ।

ইতি শ্রীষদধ্যাক্ষরামায়নে উমাসছেশ্বরস্থাদে মুদ্ধকাণ্ডে একাদশোহধ্যায়ঃ।

द्योपर भारता ।

রামো বিভাষণং দৃষ্ট্বা হন্মন্তং তথাঞ্চনম ।
লক্ষণং কপিরাজং চ জাম্বন্তং তথাপ্রান্ ॥ ১
পরিতুষ্টেন মনসা সর্বানেবাত্রবীদ্ধচঃ।
ভবতাং বাহ্নবীর্যেণ নিহতো রাবণো ময়া ॥ ২ ॥
কীর্ত্তিঃ স্থাস্তি বঃ পুণ্যা যাহচ্চন্দিবাকরৌ।
কীর্ত্তিরিষ্যন্তি ভবতাং কথাং তৈলোক্যপাবনীম্ ॥ ৩
যযোপেতাং কলিহ্রাং যাস্যন্তি প্রমাং গতিম্।
এতস্মিন্নন্তরে দৃষ্ট্বা রাবণং পতিতং ভূবি ॥ ৪ ॥
মন্দোদরীমুখাঃ সর্কাঃ স্ত্রিয়ো রাবণপালিতাঃ।

পতিতা রাবণিয়াথে শোচন্তাঃ পর্বান্তান্ ॥ ৫ ।
বিভীষণঃ শুশোচার্তো শোকেন মলভারতঃ।
পতিতো রাবণিয়াথে বছধা পর্যাদেশ দি । ৬।
রামস্ত লক্ষ্মণং প্রাহ বোধান্ত বিভিন্ন ।
করোতু ভাতৃসংক্ষারং কিং বিল্পেন ? ানদ!
স্তিয়ো মন্দোদরীমুখ্যাঃ পতিতা বিলপ্তি চ।
নিবর্য়তু তাঃ সর্বা রাক্ষনী রাবণপ্রিয়াঃ ৮ ॥
এবমুক্তোহ্থ রামেণ লক্ষ্মণোইগাদ্বিভীষণম্।
উবাচ মৃতকোপান্তে পতিতং মৃতকোপম্মু।। ১ ॥

অনন্তর জীহর জীপাক্ষণী সন্ধিবনে বলিয়াছিলেন।
অনন্তর জীরামচন্দ্র যুদ্ধান্তে বিভীষণ, হসুমান, অঙ্গদ, লক্ষ্মণ,
কপিরাক স্থানির, জারবাদ্ এবং অন্যান্য বানরগণকে স্থীর
সন্নিধানে উপন্থিত অবলোকন করিয়া সন্ত্রইচিত্তে কহিতে
লাগিলেন—হে বীরগণ! অদ্য তোমাদিগেরই বীর্যাবলে ও
সাহাস্যে বাবণ আমা কর্ত্বক রণে বিনদ্ধ ইইল; অভএব আমি
বলিভেতি, দিবাকর ও নিশাকরের অন্তান কাল পর্যান্ত ভোমাদিগের ত্রৈলোক্য পাবনী পুণ্য-কীর্ত্তি মেদিনী স্থায়িনী
হইবে; আরু কলিকালে এই ভূলোকে লোকে আমাযুক্ত ভোমাদিগের এই সমস্ত পুণ্য কথা কীর্ত্তন করিয়া মুনিগণান্দ্রাধ্যা পরমা গতি প্রাপ্ত হইবে। এই রূপে জীরাম সপক্ষ ধোদ্ধ বর্গকে বলিভেছেন, ইত্যবস্থার মন্দোদ্ধী প্রভৃতি রাবণ

পালিতা ন্ত্রীগণ, লক্ষেশ্বকে রণে নিহত এবং ধরায় নিপ্তিত দর্শনে, ভাছার পাদ যুগলের অগ্রে পতিত হইয়া উচ্চঃস্বরে বহু বিলাপ ও পরিতাপ কবিতে লাগিল। ১।২।৩।৪।৫। অনস্তর জীরাম, বিভীষণ ও মন্দোদরী প্রভৃতি ন্ত্রীগণকে সাম্বনা করিবার নিমিত্ত, লক্ষ্মণকে আজ্ঞা প্রদান করিলেন। সহিবেকী লক্ষ্মণও জ্যেতের আজ্ঞা শিরোধার্গ্য করিয়া অত্যন্ত শোকাবিফ ও রোক্ষদ্যমান বিভীষণকে বলিতে লাগিলেন, হে ধার্মিকবর বিভীষণ! তুমি অপ্রো স্থীয় শোক পরিত্রাগ পূর্বক স্থামী সমুধে নিপ্তিতা বিলাপবারিণী মন্দোদরী প্রভৃতি জ্যেতি জাত্বধূদিগকে সাম্বনা করতঃ প্রক্ষাং জাত্ সংস্কার কর, আর বিলম্ব করিবার প্রয়োগন নাই। দেখ, সংখ বিভীষণ! তুমি যাহার জন্য তে চঃগ ও

শোকেন মহতাবিউং সৌমিত্তিরিদমন্ত্রীৎ!।

যং শোচলি ত্বং দুংখেন কোহয়ং তব ? বিভীষণ।

ত্বং বাল্য কতমঃ সৃষ্টেঃ পুরেদানীমতঃপরম্।

যদ্বত্তোযৌঘপতিতাঃ লিকতা যান্তি তদ্বশা। ১১।

সংযুদ্ধান্তে বিযুদ্ধান্তে তথা কালেন দেহিনঃ।

যথা ধানাস্থ বৈ ধানা তবন্তি ন তবন্তি চ। ১২।

এবং ভূতেযু ভূতানি প্রেরিতানীশমায়য়া।

ত্বং চেমে বয়মন্যে চ ভূল্যাঃ কালবশোদ্ভবাঃ। ১৩

কম্মভূয় যদা যন্মাত্রদা তন্মান্ত্রিষতেঃ।

ঈশ্রং সর্বভূতানি ভূতিঃ সৃজতি হন্যজঃ॥ ১৪॥

আার্মনুষ্টিরস্বত্ত্রেরনপেক্ষোহপি বালবং।

লেহেন দেহিনো জীবা দেহাজেহোঃ ভিজায়তে ॥
বীজাদেব যথা বীজং দেহান্য ইব শাশ্বতঃ।
দেহিদেহবিভাগোয়মবিবেকক্ষতঃ পুরা।। ১৬।।
নানাত্বং জন্মনাশন্দ ক্ষয়ো ব্লাছ ক্রিয়াফলম্।
দেই রাভান্তভেদ্ধা যথাই গ্রেদ ক্রিবিকিয়াঃ ॥ ১৭ ॥
ত ইমে দেহসংযোগাল্যনা ভস্তাসদ্প্রহাৎ।
প্রথা যথা তথা চান্যৎ ধাায়তো সদসদ্প্রহাৎ।
প্রস্থায়ানহং ভাবান্তদা ভাতি ন সংস্তিঃ।
জীবতোইপি তথা তল্পিম্কেস্যানহক্ষ্তেঃ ॥ ১৯ ॥
তক্মান্ম রামনোধর্মাং জহাহংম্যতাভ্রম্।
রামভজে ভগবতি মনো ধেহ্যাত্মনীশ্বরে ॥ ২০ ॥

শোক করিতেছ, এ বাজি তোমার কে ? আর স্থীর পূর্ষে,
তুমিই বা ইচার কে ছিলে? এক্ষণেই বা কে হয়, এবং
পরেই বা কে হইবে? যেরপে জলজ্যেতে পভিন্দ বালী
সকল, তদশভাপার হইয়া সর্বক্ষণ সংস্কৃতি বিস্তই হইতেছে,
যেমন যবাদির মধ্যে কোনটী উর্দিকে কোন কোনটী
অধোদিকে রন্ধি পার এবং স্মির্বহেতু কোন কোনটী নফ্ট হয়;
দেইরপ জীবাআরে কালবশে শ্রীর সহ নিরন্তর সংযোগ
বিয়োগ প্রাপ্ত হইতেছে। এবং প্রেরিড জীব সমূহ জীবেই
সংযুক্ত হয়।

অভএব তুমি, আমি এবং অন্যে এই সমস্তই তুলা ও কাল-বশতাপন্ন। যে দিবস যে সময়ে যাহার জন্ম, এবং যে দিন যেইক্ষণে যাহার মৃত্যু ছইবে, তাহা কেছ উল্লেখন করিতে দক্ষম নছে। কেবল স্টিকর্তা অজ্ঞা, সর্বাক্ষণ আগনার স্থয় এবং অস্বাধীন ভূতদান ভূত সকলকে স্জ্ঞনও সংহার ক্ষরিতেছেন। স্টেক্তা এইরেপ সার্বিফা নির্গ্লেক ছইয়া বালকের নাায় ক্রীড়া করিতেছেন। নিত্য আয়া সর্বাদা দেহ
সংযোগে জ্রীব হয়; যেমন থিজ হইতে বীজের উৎপত্তি ইইয়া
থাকে। সেইরপদেহ হইতে পুন: দেহের উৎপত্তি ইয়। এই দেহী
ও দেহের বিভাগা পূর্কে করা হয় নাই; একারণ তুমি শোকে
এরপ কাতর হইতেছে। কর্ম জন্য ফল, জ্রম্ম, নাশ, ক্রর ও
রাজি নানা প্রকার হইয়া থাকে; সেই সমস্ত ধর্ম দ্রফার নিকটি
প্রকাশ পায়। যেমন অগ্রিতে কাঠের বিকার প্রাপ্ত হয়;
বস্তাতঃ কাঠের কিছুই নফ হয় লা, কেবল অসদ্জ্ঞান প্রমৃত্তর্ক
দেই সকল ধর্ম গুলি আয়াতে প্রকাশ, পায়—বেরপা জ্ঞান
ছত্ত্রে ক্রেমে জীব সকল মিলিত হইয়া, ক্রমশঃ স্থানান্তরে
গমন করে, সেইরপ সংসারে মিলিত হইয়া জীবগ সমরে
সকলেই স্থানাত্তরিভ হয়। বেরপ প্রস্তুপ্ত জনের জীবন সংস্কৃত্তি
গ্রহং ইত্যাকার জ্ঞানের অভাবে সে সময়ে স্মরণ হয় না,
সেইরপ জীবয়ুক্ত জনও অহজার হইতে বিমৃক্ত ইইয়া
থাকে। সেই হেতু মায়ার কার্যা যে অহ্মার ও মমতা, তাহা

সর্ব্বভূতাত্মনি পরে মায়ামানুষকপিণি। ৰাহ্যেনিদ্রিয়ার্থসম্বন্ধাৎ ত্যাজ্য়িত্বা মন: শনৈ:। ২১ তত্ত্ব দোষান দর্শায়ত্বা রামানন্দে নিযোক্ষয়। দেহ বুদ্ধ্যা ভবেষাতা পিতা মাতা স্বৃহুৎপ্রিয়: ॥২২ বিলক্ষণং যদ। দেহাৎ জানাত্যাত্মনমাত্মনা। তদা ক: কস্য বা বন্ধুভ্ৰতো মাতা পিতা স্থৃহুৎ ? 🏾 মিথ্যাজ্ঞানবশাজ্জাতা দারাগারাদয়: সদা। मकामग्रम्छ विषया विविधारेम्छ मन्नामः ॥ २८॥ বলং কোশো ভৃত্যবর্গো রাজ্যং ভূমিং স্থদাদয়ং। অক্তানলত্বাৎদর্বে তে কণ্সঙ্গমভঙ্গুরা:। ২৫।

ভূতং ভবিষাদভক্ষন্ বর্ত্মানমথাচরন্। विरुत्तच यथाना। १९ ७ वटमारेषन निशारम ॥ १९ ॥ আজ্ঞাপয়তি রামস্তাং যদ্ভাতু: সাম্পরায়িকম্ তৎ কুরুষ যথাশাস্ত্রং রুদতীশ্চাপি যোষিতঃ।। ২৮ নিবারয় মহাবুছে। লক্ষাং গচ্ছন্ত মা চিরম্। শ্ৰুত্বা যথাবদ্বচনং লক্ষণস্য বিভীয**ণ**ঃ। ২৯। তাজা শোকং চ মোহং চ রামপাশ মুপাগমৎ। বিমুশ্য বুদ্ধা। ধর্মজ্ঞো ধর্মার্থসহিতং বচং ॥ ৩০ ॥ রামদৈরবানুরত্যর্থমুত্তরং পর্য্যভাষত। নৃশংসমনৃতং ক্ররং ত্যক্তধর্মব্রতং প্রভো ! ॥ ৬১: অথোত্তিষ্ঠ হৃদা রামং ভাবয়ন্ ভক্তিভাবিতম্ ॥২৬॥ নাহে গাইমি দেব ! সংকর্তং পর্দারাভিমর্শিনম ।

क्रांश कवित्रा, क्रशंतान् वामञ्ज नेचद्व मनानिद्यम कव। 1011112120122 | 25 | 25 | 26 | 26 | 24 | 24 | 1221221201

সর্ব্বভূতের আত্মান্তরণ মারা মাত্ররপী। আর বাহ্যেন্ত্রিরের বিষয় সম্বন্ধ হইতে মনকে নিব্লত করাইয়া, ভাহাতে দোৰ নেখাইরা সভত রামানন্দে নিবিষ্ট কর। তাহা হইলেই অন্তে मुक्ति भन (महे भार्म भन गांड कतित्व। (करन व्यनिहा (मह-चुक्ति बात्रा निजी, माठी, जाठी, ऋश्वृ এवः श्रिज्ञांकि श्रिज्ञवन्त्र ৰলিয়া বোধ ছয়। কিন্তু যথন আন্মাশরীর হইতে বিল্লিষ্ট হয়, তথন কে কাহার ৰত্ন, বা কে কাহার ভাতা, পিতা, খাতাও স্কৃদ্ ইয়া থাকে? ওন্ধ মিথ্যা জালের বশতাপর अक्षम ब्हेश क्र न छत्र व नात्रांगातानि न कानि दिवत, विविध मालान, ৰল, কোষ, ভ্তাবৰ্গ, রাজা, ভূমি এবং প্ৰাদি সকল আপনার বোধ ছইরা থাকে। অভএব বলিভেছি তুমি শীস্ত গাত্রোপান করিয়া, ছদত্ত্বে ভাত্তিভাবে রামরূপ চিত্তাকরতঃ

তাঁহার দেবার নিযুক্ত হও; এবং প্রতিদিন আবন্ধ রাজ্যাদি ভোগকরত:, ভূত, ভবিষাৎ, বর্ত্তমান ভজনা সমাচরণ পূর্ব্বক সভ্যপথালায়ী হইয়া বিহার কর, লান্তিক্রমেও ভবদোষে আর লিপ্ত হইও না। দেখ, জীরাম ডোমাকে আজা করিয়াচেন তুমি অবিলম্বে যথাশান্ত ভােঠলাভার শেষ ক্রিয়া কর, আর (माकार्छ। (दाक्नामाना शांवणमहियीशंगत्क निवादण कव्रछः, সত্তর লক্ষায় প্রতিগমন করিতে আদেশ কর।

আনস্তর অভিবৃদ্ধি সৃষ্ণার ধার্মিকবর বিভীষণ, মহাস্কা লক্ষ্মণের এইরূপ হিত্তানক বাতা আবন পূর্বক, শোক মোহাদি পরিত্যাগ করিয়া রামণাখে আগমম করতঃ ক্লভা-क्षनि शूर्षे मखात्रभान रहेन।

অভঃপর ধর্মপরারণ বিভীষণ সক্ষাবের সেই সমস্ত ধর্মার্থ সংহিত্বাকা বৃদ্ধিবারা মনে মনে বিবেচনা কিরিয়া, কেবল জীরামের সেবার নিমিত্ত উত্তর প্রদান করিল। ছে প্রিয় বন্ধো! অপপনি আমাকে ওরপ আঞা করিবেন মা, দেপুনা

শ্রুরা ভদ্বতং প্রীতো রামো বচনমন্ত্রবীৎ।। ৩২॥ মরণান্তানি বৈরাণি নির্কৃতং ন প্রয়োজনম্। ক্রিয়ভামস্য সংক্ষারো মমাপ্যেষ যথা তব। রামাজ্ঞাং শিরদা পূজা শীঘুমের বিভীষণং। সাস্ত্রাক্যৈর্দ্ধিং রাজ্ঞীং মন্দেদেরীং ভদা ।৩৪ সাল্ব্রামাস ধর্মাজ্ঞা ধর্মবুজিবি নীষণং। জররামাস ধর্মাজ্ঞা ধর্মবুজিবি নীষণং। জররামাস ধর্মাজ্ঞা সংক্ষারার্থং স্ববান্ধাবান্।। ৩৫॥ চিত্যাং নিবেশ্য বিধিক্ৎপিতৃমেধ্বিধানতং। আহিতাগ্রেগ্থা কর্যেং রাবণস্য বিভীষণং। ৩৬। তথৈর সর্ব্যাক্ষর্যাক্ষিত্র সহ মন্ত্রিভিঃ। দদৌ চ পাবকং তন্ত্র বিধিযুক্তং বিভীষণং। ৩৭॥ স্থাজা চৈরাজ বিজ্ঞো তিলান্দ্র বিধিপুর্ব্যক্ষ । ৩৮। উদকেন চ সন্মিশ্রান্ প্রদায় বিধিপুর্ব্যক্ষ । ৩৮।

ঘে জ্বন নির্দার, মিধ্যাবাদী, অভিশয় খল, অধর্মত্যাণী এবং
নিয়ত পরদারাশক; ভাছার অস্ত্রেষ্টি ক্রিয়ারপ সংক্ষার
করিতে আমি কোন অংশেই যোগ্য নহি। তথন জীরাম
বিতীবণের এইরপ সগর্ম বাক্য জ্বন পূর্বক, আহ্লাদে পুলকিত হইয়া, ভাছাকে প্ররুদ্ধি দিবার মানসে বলিতে লাগিলেন। দেখ সথে! মহুধ্যের বৈরভা ভাছার মরনান্ত পর্যান্ত,
একবার মরিলে আর শক্রভায় ফল কি? অভএব বলি সত্বর
ইংরে সংক্ষার কর। ৩২। ৩৩।

অনস্তর ধর্মাজ্মা ধর্মপর বিভীষণ, শীরামের আগজ্ঞা মস্তাক ধারণ পূর্বক তৎকালে বৃদ্ধিমতী মন্দোদরী রাজীকে প্রবোধ বাক্যে সাজনা করভঃ, স্বীয় বাস্ক্রবাণ সমভিব্যাছারে করিয়া, স্বাহিশীজ জ্যোষ্টের অতে বিক্রিয়া করিতে প্রায়ত ছইলেন।

ঁ শনস্তব ৰাশ্বিকৰৰ বিভীষণ, আজীয় বন্ধু বং বাশ্বৰণণ

প্রদার চোদকং তথ্য মূর্দ্ধা চিনং প্রণমা চ।
তাং ব্রিয়েংসুনরামাস সাস্থ্যকা পুনং পুনং ॥ ৬৯
গমাতামিতি তাং সর্বা বিবিশুর্নগরং তদা।
প্রবিষ্টাস্থ চ সর্বাস্থ রাক্ষণীয়ু বিভীষ্ণং ॥ ৪০ ॥
রামপাশ মূপাগতা তদা তিষ্ঠ ছিনীতবং।
রামোহিপি সহ দৈনোন স্থাবাং সহলক্ষ্ণং ॥ ৪১ ॥
হর্ষ লেভে রিপুন্ হড়া যথা রব্ধে শতক্রত্থা।
মাতলিশ্চ তদা রামং পরিক্রমাভিবন্দ্য চ । ৪২ ।
অনুজ্ঞাতশ্চ রামেণ যথো স্বর্গং বিহারসা।
তত্তো ক্রেমনা রামো লক্ষ্মণং চেদ্মপ্রবীৎ ॥ ৪২ ॥

তদনন্তর ভারাম লক্ষণ, স্থানি ও দৈন্যগণ সন্থ র্ত্তাক্সকে বিনয় ক[ি]য়া র্ত্তহার ন্যায়, প্রম শক্ত লক্ষাধিপতি রাবণকে নিধন করতঃ অভিশয় আনন্দ লাভ করিলেন। ইতাবসত্বে বাসবদার্থি মাত্লী জীয়ামকে ক্ষান্তলিপুটে প্রথক্ষিণ ও প্রথায় বিভীষণায় মে লক্ষারাজাং দন্তং পূরেব হি।

ইদানীমপি গড়া ডং লক্ষামধ্যে বিভীষণম্॥ ৪৪॥

অভিষেচয় বিশৈচ মন্ত্রবিদ্ধিপূর্ফকম্।

ইজুাক্তো লক্ষাণস্তর্গং জগাম সহ বানরৈঃ॥ ৪৫॥

লক্ষাং সূবর্ণকলশোঃ সমুদ্রজলসংযুতৈঃ।

অভিষেকং শুভং চক্রে রাক্ষসেন্দ্রস্য ধীমতঃ॥ ৪৬

ততঃ পৌরজনৈঃ সার্দ্রং নানোপায়নপাণিভিঃ॥

বিভীষণঃ সদেশমিত্রিরুপায়নপুরস্কৃতঃ॥ ৪৭॥

দশুপ্রণামসকরোজামস্যাক্রিইকর্মণঃ।

রামো বিভীষণং দৃষ্ট্যা প্রাপ্তরাজ্যং মুদান্বিতঃ।৪৮

কৃতকৃত্যনিবাত্মানমন্ত সহালুজঃ।

স্থীবং চ সমালিক্য রামো বাক্যনথান্তবীৎ ॥৪৯॥

সহায়েন ত্বয়া বীর! কিতো মে রাবণো মহান্।

বিভীষণোহিপি লক্ষায়ামভিষিক্তো ময়ান্য ! ৫০॥

ততঃ প্রাহ হন্ত্মন্তং পাশ্ব স্থং বিনয়ান্বিতম্।

বিভীষণস্যান্ত্মতে গচ্ছ ত্বং রাবণালয়ম্।! ৫১॥

কানকৈয় সর্ক্মাখ্যাহি রাবণস্য বধাদিকম্।

কানক্যাঃ প্রতিবাক্যং মে শীন্তমেব নিবেদয়॥ ৫২

এবমাক্তাপিতো ধীমান্ রামেণ প্রনাত্মকঃ।

প্রবিবেশ পুরীং লক্ষাং প্রসামানে। নিশাচরেঃ ॥৫৩

পুরঃসর তাঁহার অনুজাত হইয়া লকা পরিত্যাগ করতঃ অর্গে গামন করিল। অতঃপর জীরাম আনন্দিতান্তঃকরণে অনুজ লক্ষাণকে বলিলেন—দেখ লক্ষাণ, আর বিলবে প্রয়োজন নাই, অপ্রো লক্ষার রাজ্য বিভীগণকে দেওরা হউক, তবে একণে তুমি সত্ত্র লক্ষা মধ্যে প্রবেশ করিয়া বিভীষণকে দিজদিগোর ঘারা বিধি পূর্বকে লক্ষার রাজসিংহাসনে বসাইয়া সমন্ত্রক অভিষেক করাও। ৪২। ৪৩। ৪৪।

অমনি লক্ষণ জ্যোষ্ঠের আজা শিরোধার্য্য করিয়া বানরগণ সমভিব্যাহারে অবিলক্ষে লক্ষার প্রবেশ পূর্ব্বক অণ্ডো সমুদ্র-বারি পরিপুরিত, আদ্রেশাখা সমন্তিত স্থবর্গ-কলসচয় সভা মধ্যে সংস্থাপন করিয়া পরম মিত্র বিভীষণের অভিষেক ক্রিয়া সমাপ্তি ক্ষরিলেন। অনস্তর বিভীষণ পেরিক্রন হস্তে বিবিধ উপ-চৌকন অর্পণ পূর্ব্বক সেমিত্রি সহ প্রীরাম সমিধানে আগমন ক্রিলেন। অমনি ভাহাকে দশুবৎপ্রণাম প্রঃসর ক্রতাঞ্জি-পুটে ভাহার পাত্রে দশুগ্রমান হইলেন। জ্রিরামণ্ড বিভীষণকে অত্যানন অহতব করিয়া, সহানুদ্রে তাঁহাকে আলিজন দান করতঃ আত্মাকে ক্লতক্তার্থ জান করিলেন। পরে স্থাবিকে আহ্বান করতঃ, আলিসন প্রদান পূর্বক, কহিতে লাগি-লেন।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮।৪১।

হে বীর! অদ্য ভোমাদিণের সাহায়ে। আমাকর্জ্ক পরম
শক্ত হৃদ্দান্ত দশানন নিধন প্রাপ্ত আর বিভীষণও
নিরাপদে রাজ্যাভিষিক হইল। তাহার পর পার্থ স্থার ভক্ত মহাবীর হুমানকে সমুখে তাকিয়া বলিলেন। হে পরম হিতকারী হুমান। তুমি শীদ্র বন্ধুবর
বিভীষণের অনুমতি গ্রহণ করিয়া রাবণালয়ে গমন কর।
তথায় উপস্থিত হইয়া, জানকী সমীপে গমন করভঃ, অগ্রে
রাবণ বধাদি আন্দোপান্ত সমন্ত বিষয় বর্ণনা পূর্কক, পশ্চাৎ
আমাদিগের শুভ সংবাদ বিজ্ঞাপন করিবে। ৫০। ৫১। ৫২।
এইরূপে শ্রীরাম কর্তুক আ্রাপিত হুইয়া, ধীশক্তিসম্পর পরন
পুত্র হন্মান লক্ষাপ্রী প্রবেশপূর্কক নিশাচর্যাণ দ্বারা পূর্কিত
হইল। ক্রমে অতি সমিহিত রাবণ গুহে প্রবেশ পূরঃসর

প্রিশার রাবণগৃহং শিংশপামূলমাপ্রিভাম।

দদর্শ জানকীং তত্ত্ব কুশাং দীনামনিন্দিভাম। ৫৪।

রাক্ষনীভিঃ পরির্ভাং ধ্যায়ন্তীং রামনেব হি!

বিনয়াবনতো ভূত্বা প্রবিষয় পবনাত্মকং॥ ৫৫॥

কুচাঞ্চলিপুটো ভূত্বা প্রেল্ফো ভক্ত্যাগ্রভঃ স্থিতঃ।

তং দুফ্টা জানকী ভূফীং স্থিতা পূর্বিস্ফৃতিং যথে।॥

জাত্বা তং রামদূতং দা হবাৎদোম্যমুখী ভবং।

দ তাং দৌম্যমুখীং দৃষ্ট্বা তদ্যাঃ পবননন্দনঃ।

রামদ্য ভাবিতং দর্কমাখ্যাভূমুগচক্রমে॥ ৫৭॥

দেবি! রামঃ দফুগ্রীবো বিভীষণদহায়বান্।

কুশলী বানরাণাং চ দৈনোন্চ দহ লক্ষণঃ। ৫৮॥

রাবণং সম্ভং হত্বা সবলং সহ মান্তিভিঃ।
ত্বামাহ কুশলং রামো রাজ্যে কৃত্বা বিভীষণম্ ॥৫৯॥
ত্রুত্বা ভর্ত্ত্ব্যু প্রিয়ং বাক্যং হর্ষদ্গদরা গিরা।
কিংঁতে প্রিয়ং করোম্যদ্য ? ন পশ্যামি জগজ্ঞে ॥
সমস্তে প্রিয়বাক্যমা রত্বান্যাভরণানি চ।
এবমুক্তস্ত বৈদেহাা প্রভূবাচ প্রবঙ্গমঃ ॥ ৬১ ॥
রত্বোঘাদ্বিধাদ্বাপি দেবরাজ্যাদ্বিশিষাতে।
হতশত্রং বিজয়িনং রামং পশ্যামি স্থান্থরম্ ॥৬২ ॥
তস্য তদ্বচনং ক্রত্বা মৈথিলী প্রাহ্ মাক্রতিম্।
সর্বে সৌম্যা গুণাঃ সৌম্য! ত্রেয়ব পরিনির্ভিতাঃ
রামং দ্রক্ষ্যামি শীন্ত্রং মামাজ্ঞাপরভূ রাঘবঃ।

ভণার শিংশপা তক ম্লাশ্রিভা রাক্ষনী পরিরতা চিন্তাপরা অনিন্দিতা কশান্ধী জনকনন্দিনী সীতাকে সন্দর্শন করিল। ক্রমে তথার যাইয়া তাঁহাকে প্রণতি প্রঃসর ভক্তিপূর্বক ক্রতাঞ্জলিপুটে তাঁহার সন্মুখে দণ্ডারমান হইল। তথন জ্ঞানকী নহাবীর হন্মানকে নিকটে নিরীক্ষণ করিয়া, ক্ষণেক স্থিরভাবে অবস্থান করতঃ চিন্তা করিতে লাগিলেন, পরে পূর্বে কথা অরণ হওয়াতে যথন শ্রীরামের দৃত বলিয়া পিরিজ্ঞাতা হইলান, তৎক্ষণাৎ স্মিত্রুখে অতিশয় আনন্দ অনুভব করিতে লাগিলেন। অমৎকালে পাবনপুল্ল মহাবীর জ্ঞাক-ভৃতিতাকে হাস্যমুখী দেখিরা আনন্দিতাপ্তঃকরণে রাম-ভাষিত সমস্ত করিল করিতে আরম্ভ করিল। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭।

হে দেবি! প্রীরাম স্থাীব ও বিভীষণের সহায়তায়, জাম্বান্ লক্ষমণ এবং বানরগণ সম্ভিব্যাহারে করিয়া মন্ত্রী, বল ও সূত সহ ভ্রাম্মা রাবণকে বিনাশ করতঃ লহারাজ্য विजीयनटक ध्वमान भूर्त्तक, धक्करन निकल्डेक इरेब्राइन । ८৮।

হরুমানের এইরপ আনন্দজনক বাক্য শ্রবণ করিরা, জানকী হর্ষোৎ কুল নয়নে গদ্গদ বচনে ছন্মানকে বলিতে লাগিলেন; দেখ হন্মান্ ! তুমি জাদ্য আমাকে যেরপ প্রিয় কথা শুনাইলে, আমি ত্রৈলাকো এমন কোন বস্তু দেখিতে পাই না যে, এক্ষণে ভোমাকে জর্পন করিয়া সম্ভোষ লাভ করি। ভ্রথন সীতার এই কথা শ্রবণে হন্মান্ সহাস্য বদনে তাঁছাকে প্রত্তান্তর প্রদান করিতে লাগিল। ৬০। ৬১।

হে দেবি ! আমার বিবিধ রত্ন সমূহে আর রাজ্যাদি কিছুতেই প্ররোজন নাই। কেবল শক্রজর করিরা, স্কৃত্বির ভাবাপল্ল জীরামের মুনিগণারাধ্য চরণ বৃগল দর্শন করিব, নিরন্তর্ত্তর
এই বাসনা। অনন্তর মাক্তির এই বাক্য জ্ঞাবণ করিয়া,
নৈখিলী পুনর্বার তাহাকে বলিতে লাগিলেন; দেখ বৎস
অনিলকুমার! ভবে এক্ষণে সমন্তই সেমাগুণণাল ইইলাক্তে,

তথেতি তাং নমক্তা যথে। छुछै, त्र श्रुष्ठ म म् ॥ ७८ का नका। ভাষিতং সর্বাং রামদায়ে এ নাবেদর । यि प्रिसिट । यि प्रिसिट । कर्मा नार कर्मा नार कर कर्मा नार कर कर मा न । ७० ॥ छाः प्रिसिट । भारत कर है। एक में प्रिस्ति । एक में प्रिस्ति । एक में प्रिप्ति । एक में प्रिप्त

বিভীষণােঃপি ডচ্ছু তা জগাম সহ মারুতিঃ।

রাক্ষণীতিঃ সুর্দ্ধাতিঃ স্নাপরিতা তু মৈথিলীম ।

দর্বাভরণসম্পন্নামারোপ্য শিবিকোন্তমে।

যাধীকৈর্বহু ভিন্ত প্রাং কঞ্চুকোন্ডাং বিভিন্ত ভামু

তাং দ্রুষ্ট্যাগতাঃ দর্বে বানরা জনকাল্যজাম্।

তান্বাররদ্যো বহবঃ সর্বভো বেজপাণ্যঃ ॥ ৭১ ॥

কোলাহলং প্রক্রিস্তো রামপার্ম মুপাযয়ঃ।

দৃষ্টা তাং শিবিকাণােং দুরাদ্ধ রঘুন্তমঃ ৭২ ।

বিভীষণা কিমর্থং তে ? বানরান্ বার্যন্তি হি।

পশ্যন্ত বানরাঃ সর্বে মৈথিলীং মাতরং যথা ॥ ৭ এ

এবং তুনিও স্থান্তির হইয়াছ জানিলাম; কিন্তু যাহাতে আমি অভিশীস্ত্র জীরামকে দেখি, এবং তিনি আমাকে লইয়া যাইতে অনুমতি করেন, এইরপ করিও। ৬২। ৬২।

অনস্তর প্রন্দলন, সীতাকে যে আজ্ঞা কিয়া, প্রণতি পুরংসর জার রাম লক্ষে প্রিরাম দর্শনে গমন করিল। ক্রমে হন্মান রামসমীপে উপছিত ছইয়া তাঁছার অপ্রে দন্তারমান পুর্বক ক্রডাঞ্জলিপুটে জানকীর কথিত সমস্ত বিষয় নিবেদন করিয়া বলিল, ছে দেব! যাঁছার জন্ম এই সমস্ত ব্যাপার ঘটিল, সেই সমাপিত কর্মের ফল পরপা জনক-তৃহিতা, অদ্যাপি রাবণগৃছে অবস্থাম করতঃ আপনার জীচরণ দর্শনাভিণাবে নিরস্তর সমুৎস্কা রছিয়াছেন; অত এব তাঁছাকে এখানে আনিতে লীজ অনুমতি ককন। তবন অতি বিজ্ঞতম রঘুক্লতিলক শ্রীরাম, হন্মানের বাক্য জাবণ করিয়া, মায়ান্দীতা পরিত্যাগ পুর্বক, অনলন্থিতা বিশুদ্ধচিরিত্রা জানকীকে প্রেণ্ড করিবার মানসে পরম্মতি বিভীষণকে বলিরাছিলেন, ছে রাজন্। তুমি লীজ গ্রমন্ত বিভীষণকে বলিরাছিলেন, ছে রাজন্। তুমি লীজ গ্রমন্ত বিভীষণকে হছিতাকে স্থানাতে শুল্ডবিত্র আন্থানন ও সর্বাভিত্র ভূষিত করতঃ, জামার নিকটে জান্মন কর। ৬৪। ৬০। ৬০। ৬০। ৬৮।

অতংপর বিভীষণ জীরামের এইরপা আজা জাবণ মান্ত
অভিমান্ত বাবা হইয়া ত্রিভপদে পাবনপুত্র সহ সাঁতাসনিধানে
উপনীত হইয়া দেখিল, অতি ব্লন্ধা নিশাচনীগণ, তাঁহাকে
মান করাইরা, অতি উৎক্রম্ট বহুমূল্য বল্লে আচ্ছাদন ও সর্বাদ্দারে ভূষিত করতঃ, অতি যথে শিবিকোপরি আরোহণ
করাইতেছে। তথান বিভীষণ, ভানকীর গাত্রে কঞ্চুক এবং
মন্তকে মৃকুট প্রাদান পূর্বেক বহুসংখ্যক যফিধারী রক্ষণ ছারা
শিবিকার চতুর্দিকে সুরক্ষিত করিয়া, ত্রারামের নিকটে
আনক্রম করিতে লাগিল। এমংকালে ব্যারগণ জানক্সমানে হইল। কিই
বেল্লপাণি রক্ষকেরা ওৎক্ষণাৎ ত ছাদিগকে নিবারণ করতঃ
তথা হইতে ছানান্তরিত করিয়া দিল। তাহাতে বানর নিকর
যথেষ্ট অভিমানিত হইরা মহাকোলাছলের সহিত রামপাথে
আনিয়া উপন্থিত হট্ল। ৬৯ । ৭০ । ৭১ । ৭২ ।

অনস্তব শ্রীরাম, ভ্র হইতে সীভাকে শিবিকার্ক। এবং কপিকুলকে নিকৎসাহ ও সানমুখ সন্দর্শন করিয়া, কিঞ্ছিৎ ক্ষটভাবে বিভীষণকে বলিতে লাগিলেন। দেখ মধে বিভীষণ! लानहादिन मा बाबू कानको मय मिश्विस्।
क्रिया उद्धामयहनः निविकानविक् मा १ १८ ॥
लानहादिन सन्देकतान्न ताममिश्विम ।
बादमार्थल मृक्षेत्र जाः मात्रामीजाः कार्यार्थनिर्म्याजाम्
व्यवाह्यामान वङ्गः श्रीह जाः त्रयूनम्मनः।
व्यवाह्यामान वङ्गः श्रीह जाः त्रयूनम्मनः।
व्यवाह्यामान वङ्गः श्रीह जाः त्रयूनम्मनः।
विवामार्था मा भीजा वहनः त्राघटवानिष्म् ॥ १७॥
विवामार्थः हि ताममा लाकानाः श्रीखात्र ह ॥११२
ताघवमा मञः क्राया लाकानाः श्रीखात्र ह ॥११२
त्रायवमा मञः क्राया लाकानाः श्रीखात्र ह ॥११२॥
व्यवशास्त्र कृषा जालित्र इल्लोकन्यः॥१४॥।
व्यवशास्त्र कृषा जालित्र इल्लोकन्यः॥१४॥।
व्यवशास्त्र कृषा व्यव्यो व्यवस्य क्रिकनः वृष्णा ॥१०॥

তুমি কি জ্বন্য বানর দিগকে নিবারণ করিলে ? উহারা নীতাকে নিজ নিজ গার্ভধানিশীর ন্যার সন্দর্শন করুক। আম দীতাও পাদচারে আমার নিকটে আগমন করুন। নৈথিলী জ্ঞীরামের এইরপ বাকা জ্ঞাবন করিয়া, শিবিকা হইতে অবভরণ পুর্বেক শনৈঃ পদত্রজে শ্রীরাম সন্নিধানে আগমন করিতে লাগিশেল। ক্রেমে শ্রীরাম তাঁহাকে খীর স্মুনেউপত্তিত। অবলোকন করিয়া আনন্দিভাতঃকরতা স্বন্ধায় নির্মিতা মারাগীত তেন বছ অবাচা বাক্য বলিতে আরম্ভ করিলেন। ভপন মৈথিলী শ্রীরামের ক্ষিত্ত সেই সমস্ভ অপ্রেয় বাক্য মনে বিবেচনা লা করিয়া, অভি ত্বংগিতচিত্তে দেবর লক্ষ্মণকে বলিয়াছিলেন; লক্ষ্মণ ! তুমি শীত্র আমার নির্মিত স্থানন প্রশালিক করে। রাষ্ট্রের বিশ্বাসের জ্বনাও লোকের প্রভারের

পশাতাং সর্বলোকানাং দেবরাক্ষসয়ে বিতাম।
প্রথমা দেবতাভাক ব্রাক্ষণেভাক মৈথিনী। ৮০।।
বন্ধাঞ্চলিপুটা চেদমুবাচাগ্রিদমীপরা।
যথা.মে ক্ষদমং নিতাং নাপদর্পতি রাঘবাং ॥৮১
তথা লোকস্থ সাকী মাং সর্বতঃ পাতু পাবকঃ॥৮২
এবমুক্ত্বা তদা সীতা পরিক্রম্য হুতাশনম্।
বিবেশ জ্লনং দীশুং নির্ভয়েন ক্ষদা সতী॥৮৩

নিনিও সত্তর গ্রহ্মানিত জনগে প্রেকেশ করিব; আনি রাহ্-বের এই অভিপ্রায় জানিকাছি। এ৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯।

অভংগর অবিন্দম লক্ষ্য, সীতার এইরুপ বাকা প্রবণ পূর্বক, অতি বিষয় সদরে কাঠচর আছরণ করতঃ, পারক প্রজ্ঞালিত করিয়া, ছির ভাবে রামপার্যে আদিরা অবস্থান করিছে লাগিলেন। এমন সমটো জনকনদিনী, ভক্তি সহক্ষারে অগ্রেরামচন্দ্রকে, ক্রেম দেবতা ও রাক্ষানিগকে প্রণতি পূরঃসর, দেব রাক্ষ্য, নরলোক এবং যোবিৎগণ সমক্ষে অগ্রি সমীপে গামন করতঃ ক্রভাঞ্জিপিটে দহারমানা ছইরা, এই বাকা বলিতে লাগিলেন। দেব, তোময়া সকল লোক সাজী রছিলে; যদাণি কথনও রামচন্দ্র আমার হৃদয় হইতে স্থানান্তরিত না হইয়া থাকেন, তাহা ছইলে যেন এই প্রদীপ্ত ভাশন আমাকে সকা প্রকারে বক্ষা করেন। এই কথা বলিয়া সীলা অগ্রিকে প্রণাম ও প্রদক্ষিণ করতঃ নির্ভাষ্টে প্রনাণ প্রতিত সকলে অর্থান ও প্রদক্ষিণ করতঃ নির্ভাষ্টি প্রত্যাণ প্রভৃতি সকলে অগ্রিয়াতা জনকন্তি তাকে জীবিতা নিরীক্ষণ করিয়া, আশ্রুষ্টা বোধে প্রশেব বলিতে লাগিলে

দৃষ্টা ততো ভূতগণ'ঃ সনিদ্ধাঃ সাতাং মহাবহিদগতাং ভূশার্তাঃ। পরস্পারং প্রাছরহো স সীতাং

আহা ! মহাত্মা রামচজ্র কি কথনও স্বীর সহধ্যিণী সীতাকে পরিক্রাণা করেন নাই ! অভএব ধন্য সীতা, ধন্য সীতা রানঃ প্রিরং স্থাং কথমতা জজ্জঃ? ॥৮৪॥ ইতি শ্রীনদধ্যা সুরামায়ণে উমনেহেশুর সন্থাদে বুদ্ধকাণ্ডে দ্বাদশোহধ্যায়ঃ।

বলিতে বলিতে সকলে যুগপৎ দীতার উপরে পুশর্ষ্টি কবছঃ, স্ম্থানে প্রস্থান করিল।৮০।৮১ ।৮২।৮৩।

ইভি শীমদধ্যাক্সরামারণে উমামত্ররসকারে

যুদ্ধকাওে বাদশোহধ্যার: ;

ब्राम्त्रां ३४गात्रः।

ততঃ শব্রং সহস্রাক্ষো যমক বরুণশুধা।
কুবেরক মহাতেজাঃ পিনাকী রুষবাহন: ॥ ১ ॥
ব্রহ্মা ব্রহ্মবিদাং শ্রেষ্ঠো মুনিজিঃ সিছ্কচারগৈঃ।
পিতরো শ্লুময়ং সাধ্যা গন্ধর্মাপ্রসোরগাং ॥ ২ ॥
এতে চানো বিমানাগ্রোরাজ্যুর্ত রাঘ্বঃ।
ভাক্রন্ প্রমাশ্লানং রামং প্রাঞ্নয়ক তে ॥

অনস্তর অর্গাধিপতি সহজ্ঞাক ইন্তা, যস, বহুণ, যক্ষপতি
মহাতেলা কুবের, রহবাহন ব্যোসকেশ, ব্রম্ঞানীর শ্রেষ্ঠ
ক্রমা, পিতৃগণ এবং মুনি, প্লাবি, সিদ্ধা, সাধ্য, গান্ধর্য, অভ্যরগণ আর অনাগন্য ত্রিদিবস্থ নির্জ্ঞর নিকর, ব্যোপ্যানে
আর্মাহণ পূর্বাক, ক্রমণঃ জীর্মি সন্নিধানে আগ্যন করিয়া,
ক্তার্কিপ্টে তাহার সমুধ্যে দণ্ডার্মান হ্ইলেন। অননি

কর্ত্ত, ত্বং সর্বালোকানাং সংক্ষী বিজ্ঞানবিপ্রহং।
বস্থনামটমোহসি ত্বং রুদ্রাপাং শঙ্করো ভবান্।। ৪
আদিকর্ত্তাসি লোকানাং ব্রহ্মা ত্বং চতুরাননং।
অস্থিনৌ ঘাণভূতে তে চফুমী চন্দ্রভাকরে ॥ ৫॥

সর্ব্বাত্রে দেবগণ বছাঞ্জল হইয়া প্রমান্ত্রারূপী জীরামের তব আয়ন্ত করিলেন।১।২।৩।

হে দেব! আপনি সকলের কর্তা, এবং জ্ঞানময় দেছ
ধারণ করিয়া, সর্ক্রকণ সর্ক্রজীবের প্রত্যক্ষীভূত হইছেছেন; আপনি অফবস্থর প্রধান বস্থ এবং শ্বরং একাদশ
কল্রের মধ্যে প্রধান কন্ত-শহর আর আপনি, লোক
সকলের আদিকর্তা চতুরানন ব্রশ্বাও। অশ্বিনীকুমারঘর আপনার আণভূত, চন্ত্র স্থ্য আপনার দুই চক্

लाकानामानितः खार्शन निजा बकः नदमानिजः।

मना खकः नना तृषः नना मृत्कारुखत्वारुषः ।

प्रमाशानः ब्रुकानाः प्रः जानि मानुष्यिक्षः।

प्रमाम स्मृत्कानाः प्रः जानि मानुष्यिक्षः।

प्रमाम स्मृत्कानाः प्रामा जानि निर्माष्टः। ।

प्रमाम स्मृत्कानाः प्रामा स्मृत्कानाः।

प्रमाम जिल्ला कृषेः भूनः धार्थः भनः स्मृत्म ।

प्रमाम जिल्ला कृषेः भूनः धार्थः भनः स्मृत्म ।

वरः खन्यः प्रतिष् ब्रुका नाक्षार्थभिकामः।

स्मृत्विष्यः।

समृत्विष्यः।

सम्तिष्यः।

বন্দে দেবং বিষ্ণুমশেবস্থিতিহেতুং
ত্বামধ্যাত্মজানিভিরত্তর্শনি ভাবাম্।

उद्यावाठ।

অভএৰ আপনি সর্বাদ নিত্য, এক ছট্রা ধরার সর্বাদ প্রকাল প্রকালিত আছেন। আর আপনিই সদা শুল্ক, সদা বোধনীর, সদা শুণ্যুক্ত, ও সদা শুণ-প্রকাশক। আপনিই মায়ামর ছইরা সর্বাক্তন বসুষাদেছে বিরাজ করিতেছেন। এই ধরণীতলে যে জন আপনার অমৃত্যয় রাম নাম একবার শ্বরণ করে, আপনি সেই ক্ষণ ছইতেই ভাহার অস্তার জ্ঞানমর হইরা প্রকাশিত থাকেন। দেখুন, চ্বাখা হুর্জর হুট্ট দশানন, দোর্দ গুপ্রতাপে আমাদিশের স্থান হ্বণ করিরাছিল; আদ্য আপনি স্বরং সেই চ্রাভি লক্ষাপতিকে নিহত করার, আম্বা প্রকার স্বীর স্থান প্রান্ত ইইলাম। ৪ বি ভি । ৭ । ৮ । ৯ ।

দেবগণ এইরণ শুব করিলে পর, তিলোক পিতামহ জন্মা শ্রীরামের সন্মুধে দণ্ডায়মান হইরা প্রণতি পুরঃ-দরঃ গলগরীকৃতবাদে ও কভাঞ্চল পুটে কহিতে গাগি-শেন। ছে রাম! তুমি মছাবিফু, অশেব স্থিতি ছেতু, এবং শাস্ক্রজানীদিশোর ছাবরে সদা প্রকাশিত, অতএব তোমাকে रशारश्यक्षिविश्वेतः श्रास्त्रः ।

नेखानावः नर्वक्षिण्यः पृणिक्शम् । ১० ॥

व्यानाशाद्यो निक्यव्द्याः क्रिक क्रक्ष्णः

क्रिका नर्वः नः न्यायनेयः विषयोधान् ।

श्राद्यो नर्वः नः न्यायनेयः विषयोधान् ।

श्राद्यो नर्वः नः न्यायनेयः विषयोधान् ।

श्राद्या न्यायः व्रक्षक्री हैः विव्यानम् ॥ ১১ ॥

माञ्चा क्रिकः नायवमानाः क्रानानिः

माना क्रिकः स्मार्थनानः व्यापित्यानः श्रिश्र्वः

व्याणित्यात्रः यागित्यानः श्रिश्र्वः

व्याणित्यात्रः यागित्यानः श्रिश्र्वः

व्याणित्यात्रः यागित्यानः श्रिश्र्वः

व्याणित्यात्रः विक्षक्षणाकः व्रम्नोग्रम् । ३२ ।

ভावा ভाव व्याव्यक्षक्रितः व्यवस्थानः

व्यापात्रः विक्षकः वृक्षमनस्यः व्यववायाः

वर्षः वामः वीवमानस्यवः व्यववायाः

वर्षः वामः वीवमानस्यवः व्यववायाः

বলনা করি। আর তুমি তালা অত্যক্তা বিষয় বিছীন, সক্ষান্তেই, সভামাত্র, সক্ষাণীর ছদমত্ব এবং দর্শনীয়রপ প্রাণাপান বায়; যভিপশ্তিতেরা নিক্ষল বুদ্ধিয়ার। সক্ষান্তম বন্ধ ও বিষয় সমূহ ছেদ করতঃ ছদরের তোমাকে দেখিভেছে। অভএব রত্ব কিরীটবুজ স্থাপ্রভামিত ডোমাকে বন্দনা করি। তুমি মারাজীত, আদিবিষ্ণু, জনতের আদিভূত, মনোভীত, মোহবিনাশকারী, মুনিবন্দা; যোগীধ্যের, যোগবিধানকারী, রমনীয়, লোক পূজিত এবং পরিপূর্ণ; অভএব ভোমাকে অভ্নক্ষণ বন্দনা করি। ১০ । ১১ । ১২ ।

ইহ সংসার মিধ্যার পদ্মিপূর্ণ হইলেও ভোষাভে কোনরূপ ভাষাতার প্রতার হীন পরিলক্ষিত হয় না, সতএব ভোগমত- पर तम नार्था नाथिजकार्याधिमकलकाती।

मानाजीत्वा माध्यकार्याधिमकार्याः।

फक्ता शंरमा जाविजकार्या जवहाती

त्याशाजारेमजाविज्ञहान्यः महनती ।

प्रामागावः त्याक्रकानाः भत्रमानः

काकानाः तम त्याक्रकानाः भत्रमानः

काकानाः तम त्याक्रकानाः भत्रमानः

काकानाः तम त्याक्रकानाः भत्रमानः

काकानाः तम त्याक्रकानिक्रमानिक्रमान्

काकानाः द्रम्पत्रमान्योवक्रमान्यः।

द्रम्पात्रभा माध्यः। भारका म्रनिमानामः।

द्रम्पात्रभा विम्पद्रमात्रक्रमाः

द्रम्पात्रभा विम्पद्रमात्रक्रमाः

व्यक्षवस्यः। ১७॥

নানাশান্তৈর্বেদকদ্যি: প্রতিপাদ্যং
নিত্যানন্দং নির্কিষয়জ্ঞানমনাদিম।
মংসেবার্থং মানুষভাবং প্রতিপন্নং
বৈশে রামং মরকতবর্গং মুর্বেশং ॥ ১१।
শ্রুজাবুজাে যা পঠতীনং স্থব্যাদ্যং
শ্রোক্ষাং ব্রক্ষানবিধানং ভূবি মৃত্যুঃ।
রামং শ্যামং কামিভকামপ্রদমীশং
ধ্যাড়া ধ্যাড়া পাতকজালৈর্কিগতঃ সাহে।
শ্রুজা স্ততিং লোকগুরোর্কিভাবস্থঃ
শ্বাক্ষে স্মাদায় বিদেহপুজ্রিকাম্।
বিজ্ঞান্ত্রাং দিব্যবিভূষণাশ্বিতাম্॥ ১৯॥

লিবাদির পুজিত তোমার চরণযুগণ বন্দনা করি—হে জীরাম!
তুমি ত্রিকালব্যাপ্ত,মায়া বিহীন, জানস্বরূপ, অনন্ত, কঁকার ও
সর্ব্বনৈতা নালক, অতএব তোমাকে বন্দনা করি। তুমি
জামার নাগ, তুমি প্রাথিত কার্যা সমস্তের কর্তা, তুমি দেশকাল ও রূপ এই ত্রিবিধ পানিজ্বদ শ্ন্য, তুমি লক্ষ্মীপতি এবং
অধিল জগতের কর্তা, তুমি ভক্তের প্রাণ্য ও প্রাপ্তরূপী ইইয়া
সংসার নাশ করিভেছ, তুমি যোগাভ্যাসে পবিত্রীকৃত অভঃকরণের সহচারী—হে রাঘব! তুমি পরস্পারের ক্ষাদি ও অতঃ
শোক সমুদ্যের পালন কর্তা, লেকিক প্রমাণে তুমি জামাদিনের অজ্ঞের, ভক্তি ও ভক্ষভাবাবনস্বীদিনাের সেবা, অতএব
তুম্বর ইন্দীবরলাাম কলেবর তোমাকে বন্দনা করি। ১৬।
১৯৪। ১৫।

হে মাধ্ব! তুমি সর্বাত্ত আতি ব্যাপক, তুমি গত-মান ক্ষুত্রাং মানাসক্ত কোন ব্যক্তিই তোমাকে জানিতে পারে বা, ক্ষুয়াবতারে বুলাবনে দেবত ব্লু তোমাকে অভিবাদন করিরাছিলেন, অতএব তুমি শিবাদির অভিবন্ধা, ভোমাকে
নমস্থার করি। বিবিধ শাস্ত্র নিগীত বেদ সমূহ ভোমাতে
নিত্যানন্দ এবং বাহু বিষয়ক জ্ঞান বিষয় বর্ণনা করিরাছে,
তুমি মৎদেবার্থ অর্থাৎ রাবগাদি বিনাশ করিবার জন্য মানবরূপী হইয়াছু এবং ক্ষণাবভার হইবার অভিপ্রায়ে অ্রেগ শক্তরতে মথুরা রাজ্য প্রদান করিয়াছিলে, অভএব মরকভ বর্ণ মথুরেশকে নমস্কার করি।

শ্রমান হইয়া যে ব্যক্তি অত্যে এই ন্তব পাঠ করে এবং ইছ জগতে ত্রস্মজ্ঞান বিধান অভীক্ট বস্তু দাতা শ্যাম কলেবর শ্রীরামকে ধ্যান করে,সে ব্যক্তি সর্ব পাপ ছইতে বিমুক্ত ছয়। হুতাশন লোক গুরু ত্রস্মার শুব শ্রবণ করিয়া সর্বাক্ত শুমুরী, বিমল অঞ্জ জ্যোতির্মনী, বক্ত বন্তু পরিধানা, দিব্যাভরণ বি্ছু-বিতা বিদেহি কন্যাকে নিজ ক্রোড়ে গ্রহণ পূর্মক জ্বগুরু প্রেরার সাকী কর্গতাং রঘুত্তমং
প্রপন্নসর্বাতি হরং ছতাশনঃ।
গ্রাণ দেবীং রঘুনাথ ! জানকীং
পুরা ত্বা ময্যবরোপিতাং বনে। ২০॥
বিধার মায়াজনকাত্মজাং হরে!
দশাননপ্রাণবিনাশনার চ।
হতো দশাস্যং সহ পুজবাজাবৈনিরাক্লতোহনেন ভ্রো ভুবং প্রভো!। ২১॥
তিরোহিতা সা প্রতিবিশ্বরূপিনী
কুতা যদর্থং কৃতকৃত্যতাং গতা।
তেতোহতিজ্ঞাং পরিগ্র্জানকীং
রামঃ প্রজ্ঞাং প্রিগ্র্জানকীং
ব্যান্ধে স্মানেশ্য সদানপায়িনীং
বিল্লাং ত্রেলোকীজননীং প্রিয়ঃ প্রিং।

দৃষ্ট্রাথ রামং জনকাত্মজাযুহং
প্রিয়া করেন্তং স্থরনায়কো মুদা ॥ ২০ ॥
ভক্তা গিরা গদ্গদরা সমেতা
ক্রাঞ্জনিং ভোতুমথোপচক্রে ।
ইক্রে উবাচ ।
ভক্তেইং সদা রাম্মিন্দীবরামং
ভবারণ্যদাবানলাভাভিধানম্।
ভবানীক্রদা ভাবিতানন্দরূপং
ভবাভাবহেতুং ভবাদিপ্রাপন্নম্। ২৪ ॥
স্থরানীকতঃথোঘনালৈকহেতুং
নরাকারদেহং নিরাকারমীডাম্।
পরেশং পরানন্দরূপং বরেণ্যং
হরিং রাম্মীশং ভজে ভারনাশ্ম্। ২৫ ॥
প্রশান্তিলানন্দদোহং প্রপন্নং
প্রপন্নার্তিলানন্দদোহং প্রপন্নং

নাকী কৰিয়া বহুনাথকৈ কহিলেন, ছে রাষ্ব্! আপনি অরণা মধ্যে জানকীকে আমার নিকট অর্পণ করিয়াছিলেন অধুনা তাঁহাকে গ্রহণ ককন। হে হরে! লকাধিপতি দশাননের প্রাণ বিনাশ দেতু জানকী-সদৃশী মায়া-সীতা স্তত্বন করিয়া স্বান্ধর দশাসাকে বিনাশ করিয়াছেন, অভএব ছে প্রভা! এক্ষণে পৃথিবীর ভার নিরাক্ত হইরাছ। আপনি যে মায়াসীতা করিয়াছিলেন, এক্ষণে সেই প্রতিবিশ্বরূপিণী জনকায়জা তিরোক্তি। ছইয়াছেন; অনস্তর রামচক্র প্রহাই চিত্তে গদানক্ষমী জানকীকে প্রহণ করিয়া ভ্রাশনকে প্রতিপূলা করিলেন। ত্রিপতি ত্রিলোক-জননী জ্রীকে নিল জ্রোড়ে উপবেশন করাক্তি, বিদ্বান্ধ ইক্র তাঁহাকে জনকছ্হিত্যকুক্ত আনক্ষিত্ত

সন্দর্শন করিরা পরম আফ্লাদিত ছইলেন; অনস্তর সাদ্ধাদ বচনে ভক্তি সহকারে ক্লডাঞ্চিপ্ট ছইরা স্তব আগস্ত করি-লেন। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩।

আমি ভক্তিসহকারে নীলোৎপল আভাসংযুক্ত সংসার অরণোর দাবানলাভিধান,পতিভপাবনী ভগবভীর ক্ষমভাবিও সদানক্ষের রূপ, নহাদেব পরিসেবিত সংসার ক্লেশ নিবারক্ষরাসচক্রকে ভক্তনা করি। দেবভাদিগের অপার হুংগ বিষাশ হৈছু যিনি মানবদেহ (বস্তুতঃ নিরাকার ব্রহ্মাদি শ্রেষ্ঠ) পরি-গ্রহ করিয়া ভূভার হুরণ করিয়াছেন, আমি দেই এইরি স্বাধ-

उत्पारवागरगागीमञ्जाविञ्जादः
केशीमानिशिदः ज्ञाक त्रांशशिद्धः । २७॥
मना (जानजाकाः अनूत् तिज्ञासः
मना (वानजाकाशनृत विज्ञासः।
विनानमकम्मः मना तापत्यमः
विद्याश्वानमक्षरः अपिता ॥ २०॥
सहारवानभागावित्यवास्युरक्ताः
विज्ञानीम । लीलानताकात्रव्रक्तिः ।
ज्ञानमक्ष्मा ज्ञाक्यापूर्वकर्गाः
कनानमक्ष्मा ज्ञाक्यापूर्वकर्गाः
कनानमक्ष्मा ज्ञाक्यापूर्वकर्गाः
कनानमक्ष्मा ज्ञाक्यापूर्वकर्गाः
विज्ञानीमा ज्ञाक्यापूर्वकर्गाः
कनानमक्ष्मा ज्ञाक्यास्य अभ्यत्वा

ইদানীং ভবৎপাদপদ্মপ্রসাদাৎ
বিলোকাধিপত্যাভিমানো বিনফঃ ॥ ২৯ ॥
ক্ষুরজন্বকৈয়্রহারাভিরামং
ধরাভারভূতাসুরানীকদাবস্।
শরচক্তবক্ত্রং লসৎপদ্মনেত্রং
ছ্রাবারপারং ভক্তে রাঘবেশম্॥ ৩০ ॥
স্থরাধীশনীলাভনীলাঞ্চলান্তিং
বিরাধাদিরকোবধাল্লোকশান্তিম।
কিরীটাদিশোভং পুরারাভিলাভং
ভক্তে রামচক্রং রঘুণামধীশম্। ৩১।
লসচক্রেকোটিপ্রকাশাদিশীঠে
সমাধীনমঙ্কে সমাধার দীতাম।

চক্রকে ভজনা করি। িনি শ্রণাপরদিণাের আল্লের দিরা থাকেন, বিনি তপ ও যােগ নীরত বােী দিগে অভিভাবক এবং যিনি কপীন্দ্র স্থােবাদির সহিত স্থাতা নিগড়ে আব্দ্র হইয়াছেন, আনি নেই রামচন্দ্রকে ভক্রনা করি। ধিনি ছজ্জান থিয়ে স্বৃত্ব সংসারা এমীনিগাের ছইতে স্ব্রুবতী রাথিয়া আত্মজান বিষর সমস্ত গােগী দিগাের অতি নিকটে অফ্লেণ রক্ষা করিল পাকেন, বিনি সমুদ্র চেতনদিগের ও বৈদেছী জানকীর আনন্দ বর্দ্ধন করিয়া থাকেন, আনি সেই বযুবংশাবভংস রাঘ্বকৈ নমস্থার করি। হে জ্বাদীশ্বঃ! মহাযােগামাল গুণ ঘারা যেমন ভ্রানি অনুস্তা ইইয়া ফটিক বং আভা প্রকাশ করে, সেইকপ যােলালা দালা হোমার মানবাঞ্জি উজ্জলতা বিকাশ হরিলা থাকে, অভএব ইছ জগালে সমুদ্য লোক তোনার ললা কথাম প্রমানন্দ লাভ

্ স্থানি অহস্বার ও সুরাদিতে উন্ত, এবং লোকে ভূমাদি-

প্রযুক্ত থেরপ অভিমান করিয়া থাকে, গানি দেইর প অভিমানিত হইয়া তোমাকে জানিতে গারি নাই; হভগাং এক্ষণে হোমার জীপাদ পদ্মের অনুপ্রাহে ত্রিলোকের অধিপত্যাভিমান দ্রী-ভূগ হইরাছে। বিনি রত্ব কেন্ত্র ও হারভূবিত এবং পৃথিবীর ভারত্বরপ অনুষ্টেশ্যের দাবানল সদৃশ, বাঁচরে শারচন্দ্র সন্ধিন বননমণ্ডল এবং আকর্ণ-পদানেত, আমি দেই ভুত্তর পারাবার পার রঘুবংশধর জীবামচক্রকে ভজনা করি। ২৯।৩০।

বাঁহার ইক্রনীলমণির ন্যায় নীলকান্তি, বাঁহার বারা বিরাধপ্রভৃতি রাক্ষসগণ বিন্ত হইরা সর্গ মন্ত পাভালত সম্দার লোক অংলাভ করিলাছে, যিনি যত্নপ্রাণ্য নিধ্যাদি সক্ষ এবং কির টানি ভূষণে শোভিত হইরাছেন, আমি সেই রঘুনংশ চূড়ামনি ভগদীশ্বর রামচন্দ্রকে ভজনা করি। বাঁহাতে কোটিচন্দ্রনা দেদীপ্রধান আগত, যিনি থেম বর্ণা ও বিজ্ञালা সদৃশী জনক ত্রতাকে খীয় অংক এইণ করিয়াছেন এবং

ক্তু রদ্ধেমন্থিং তড়িৎ পুঞ্জ তাসাং
তক্তে রামচন্দ্রং নির্ত্তার্তিতক্তম্ । ৩২ ।
ততং প্রোরাচ জগবান তবান্যা সহিতো তবং
রামং ক্যলপত্রক্তং বিমানস্থো নতন্তলে ।। ৩৩ ॥
আগমিন্যামাঘোধ্যারাং দ্রন্টুং তাং রাজ্যসংক্তম্
ইদানীং পশ্য পিতরমন্ত দেহন্ত রাঘ্ব! ॥ ७৪ ॥
ততোহপণ্যদিন্যানস্থং রামো দশর্থং পুরং।
ননাম শির্পা পাদে মুদা তত্যা সহানুক্তঃ ॥ ৩৫
আলিন্তা মুর্যবিদ্রার রামং দশর্থোহ্রবীং।
তারিতোহন্মি ত্রা বৎস! সংসারাদ্দুংখনাগরাং॥
ইতুক্ত্রা পুনরালিক্ষ্য যথে রামেণ প্রিত্তা।
রামেহিপি দেবরাজং তং দৃষ্ট্য প্রাহ কৃতাঞ্জনিম্ন।

মৎক্তে নিহতান, সংখ্যে বানরান্ পতিতান্ ভুবি

কীবরাশু স্থারতাা সহস্রাক্ষ । মমাজ্ঞরা ॥ ৬৮ ॥
তথেতামূতর্তাা তান্ জীবরামাল বানরান্ ।
যে,যে মৃতা মৃধে পুরিং তে তে সুপ্তােশিতা ইব ।
পূর্বেনদ্বলিনো ক্ষা রামপাশ্মপাযযুং ॥ ৬৯ ॥
নােশিতা রাক্ষাহত্ত পীযুষস্পর্শনাদিপি ।
বিভীষণস্ত সাফাক্ষং প্রাণিপত্যাক্রনীঘচঃ ॥ ৪০ ॥
দেব ! মামনুগ্রাধ্ব মরি ভক্তির্যদা তব ।
মঙ্গলমান্যদা ত্বং কুরু সীতাব্যন্থিতঃ ॥ ৪১ ॥
সলক্ষান্যদা ত্বং কুরু সীতাব্যন্থিতঃ ॥ ৪১ ॥
সলক্তা সহ ভাতাে শ্রো গ্রিষ্যামতে ব্রন্ধ ।

যিনি নিজে। ও আলসা পরিশূন্য ছইরাছেন, আমি সেই রামকে ভজনা কলি ৩১ ৩২।

অনন্তর মহাদেব গিরিরাজ কন্যা ভগবতীকে সমভিবাণ-ধারে করিলা বিমান মার্গে অবস্থান পূর্পক কমলগোচন রামকে কছিতে লাগিলেন—হে রাঘব! তুনি রাজ্যপ্রাপ্ত ইইলে আনি ভোমাকে দর্শন করিবার জান্য অযোধ্যায় আগমন করিব, কিছু অধুনা ভোমার দেহের জনয়িত্কে অবলো-কন কর। ৩৩। ৩৪।

অনন্তর শ্রীরাম আকাশ পথে সর্বাত্রে দশরথকৈ দেখিতে
পাইয়া অকুজ লক্ষাণের সন্থিত তাঁহার পাদপান স্পর্শ করিয়া
ছাইমনে মন্তকাবনত পূর্বেক প্রণাম করিলেন। দশরপত্ত
আপিন্দন করিয়া মন্তকাত্রাণ পূর্বেক রামচক্রকে কহিলেন—
বংস! আমি তোমা কর্তৃক এই সংগারের অপার ভ্রংশসাগর
ইইভে উত্তারি ছইরাছি এই ব্রিয়া শ্রীরামত্ব প্ররালিন্দন

প্রদান করিলেন এবং জীরাম তাঁহাকে পূচা করিলে দশরখন অস্থানে প্রস্থান করিলেন; অনন্তর রাগচন্দ্র দেবগাল্ ইন্দ্রকে অবলোকন করিয়া বন্ধাঞ্জিন পুরেকি বনিতে লাগিলেন। ৩৫ । ৩৬। ৩৭।

হে সহ গণেচন! আমাকপ্তক অসংখ্য বানর রুদ্দ নিহত হইরা ধরাতলে পতিত বহিরাছে, অতএব অধুনা আমার নিদেশাল্লাবে স্থাবর্যণরারা উহারা জীবিত হটক। অমস্তর যে সমুদর বানর নিকর হত ও আহত হইরাজিল স্থাবর্ষণে ভাহার সমন্তই স্থাপ্তির ন্যায়, গাত্রোপান করিয়া বেপিল যে পূর্বের ন্যায় সকলই থলিছ, তথন তাহারা জীবামের পার্থ দেশে আসিরা উপহিত হইল—বিভীষণ পীযুষ স্পর্শে রাজনদিগকে উঠিতে না দেখিলা হানচক্রকে সালিল প্রেপাত পুসর্ক কছিলেন—হে দেব ! আপানি বখন আমাকে ভক্তি কলিলা থাকেন, তথন আমাকে অলুগ্রহ কর্মন যে, অন্য আপানি সীতাসন্থিত হইলা মগলন্নান ক্ষমন এবং অমুদ্দ লস্মণের সহিত্যানাভ্রণে ভ্রতি হউন, পরে

বিভীষণবচঃ শ্রুদ্ধ। প্রভ্যুবাচ রঘূত্তমঃ ॥ ৪২ ॥

মুকুনারোহতিভক্তো মে ভরতো মামবেকতে।

কটাবক্কলধারী দ শব্দক্রক্সমাহিতঃ ॥ ৪০ ॥

কথং তেন বিনা স্নানং অলস্কারাদিকং মম ?।

হুত্রীবমুখ্যাংস্তং পুদ্ধরাশু বিশেষতঃ । ৪৪॥

পুজিতেযু কপীল্রেষু পুজিতোহহং ন সংশয়ঃ।

ইত্যুক্তো রাঘবেণাশু স্বর্গরন্ধানি চ ॥ ৪৫॥

বন্ধ রাক্ষ্যশ্রেষ্ঠো যথাকামং ম্থারুচি।

তভন্তান্ পুজিতান্ দৃষ্ট্রা রামো রবৈশ্চ যুথপান্।৪১

অভিনন্দ্য যথানারং বিস্কর্জ হরীশ্বরান্।

বিভীষণসমানীতং পুপ্রকং সুর্যুবর্চ সম্॥ ৪৭॥

আক্রেরাই ততো রামন্তিমানমন্ত্রমম্।

আজে নিধার বৈদেহীং লক্ষমানং যশন্তিনাম্। ৪৮
লক্ষানন সহ প্রাপ্তা নিজ্ঞান্তেন ধচুম্বতা।
আরবীচ্চ বিমানস্থঃ প্রিরামঃ সর্কাবানরান্।। ৪৯ ॥
সুগ্রীবং হরিরাজং চ অঙ্গদং চ বিভীষণম্।
নিত্রকার্যাং কুতং সর্কাং ভবন্তিঃ সহ বানরৈঃ।। ৫০
অমুক্তাতা ময়া সর্কো যথেকীং গল্পমর্হথ।
সুগ্রীব! প্রতি যাহাশ্রে কিছিন্দাং সর্কাইংনিকৈঃ।৫১
স্বরাক্ষো বস লক্ষায়াং মম ভক্তো বিভীগেণ!।
ন ডাং ধর্ষয়িতুং শক্তাঃ সেন্দ্রা অপি দিবেকিসঃ!
অযোধ্যাং গল্ভমিক্ছামি রাজধানীং পিতুর্মম।
প্রেমুক্তান্ত রামেণ বানরান্তে মহাবলাঃ। ৫৩।।
উচুঃ প্রাপ্তলয়ঃ সর্কে রাক্ষমশ্চ বিভীষণঃ।
আযোধ্যাং গল্ভমিক্ছামন্তরা সহ রঘুত্তম!॥ ৫৪॥

আমান দকলই অঘোধাার গমন করিব। রঘুনাথ বিভীবণের বাক্য প্রবণ করিবা বলিতে লাগিলেন—আমার অভি ভক্ত দ্রোভা ভরত জটাবলকল পরিধান পূর্বেক, প্রণণ স্বত্র সমা-হিত হইরা আমার জনা অপেকা করিভেছে অভএব স্ক্রু মার ভরত বিনা আমার স্নান বা ভূষণে প্রয়োজন কি? অধুনা ভূমি গানর রাজ স্থোীবাদিকে বিশেষ রূপে পূজা কর। ভাষা হইলেই আমার পূজা হইবে, ইহাতে আর সংশ্র নাই।

বামচন্দ্র এইরপ কছিলে রাক্ষ্যেক্স বিভীবন নানাবিধ রত্ন ভা বজ্ঞাদি বংগছা প্রদান করিতে লাগিলেন। অন-স্তার রামচন্দ্র যুগপতি বানরদিগকে বিবিধ রত্ন দারা পূজিত সন্দর্শন কবির। বানরশ্রেষ্ঠ নিগকে অভিনন্দন পূর্বাক, বিভীবণ আনত প্রারেশ্যি সদৃশ পুষ্পক রথ সুসজ্জীভূত করিলেন। অনতার প্রায়েদন্দ্র সুসক্ষ বশ্বিনী জনক তমন্ত্রাকে জনেক

আরোগিত করিয়া অত্যুৎক্র ইবিমানে আবোহণ করিলেন, এবং
মহাপথাক্রমণাণী ধর্মধারী লক্ষ্মণ সমাতিব্যাহারে বিমানস্থ হইরা
সানর রাজ স্থাবি, জলদ ও বিভীষণকে বলিতে লালিলেন,
তোমরা বামরদিগার সহিত মিলিত হইয়া সমস্তই বন্ধুর
ন্যায় কার্য্য করিয়াছে। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৮। ৪৮। এক্ষণে,
ছে স্থাবি! আমার আদেশে তুমি গমন করিতে পার—
অভএব তুমি সমস্ত সৈন্য লইরা কিছিল্যার প্রতিগমন কর—
ছে বিভীবণ! তুমি আমার পারম ভক্তে, অতএব নিজ রাজ্যা
লক্ষা মধ্যে বাস কর—দেখ দিবেকিস বা ইন্দ্র তোমার প্রতি
অত্যাহার করিতে সক্ষম নহে। এক্ষণে আমি পিত্রাজ্যো
গমন করিতে বাসনা করিয়াছি। সামচন্দ্র এইরপ বলিবামাত্র
মহাবলবান বানর সমূহ এবং রাক্ষ্যাধিণতি বিভীষণ ক্লা—
গ্রাপ্রার সহিত অব্যাধ্যার যাইতে ইছা করি। ছে প্রভা!

দৃষ্টা ছামভিধিকং ভু কেশিল্যামভিবাদ্য চ।
পশ্চাদ্রণীমহে রাজ্যমনুজ্ঞাং দেহি নঃ প্রভো!
রামস্তথেতি সুগ্রীব! বানরৈঃ সবিভীষণঃ।
পুশ্পকং সহম্মাংশ্চ শীঘুমারেছে সাম্প্রতম ॥ ৫৬
ততন্ত পুশ্পকং দিবাং সুগ্রীবঃ সহ সেনয়া।
বিভীষণশ্চ সামাতাঃ সর্বের চাক্রক্ছকে তম্। ৫৭।
তেষ্। করেছু সর্বেষু কোবেরং প্রমাসনম্।
রাঘ্রেণাভ্যনুজ্ঞাতমুৎপ্রপাত বিহায়সা॥ ৫৮॥

বভে তিন বিমানেন হং স্থুক্তেন ভাস্বতা।
প্রেক্সফট তদা রামশ্চতুমুথ ইবাপরঃ ॥ ৫৯॥
ততো বভে ভাস্করবিশ্বভুল্যং
কুবেরয'নন্তপসামুলক্ষম্।
রামেণ শোভাং নিতরাং প্রপেদে
সীতা সমেতেন সহামুক্তেন ॥ ৬০॥

ইতি শ্রীমদধ্যাস্থরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে

যুদ্ধকাণ্ডে ত্রয়োদশোহধ্যায়ঃ।

আপনার অভিষেক সন্দর্শন এবং কেশিলা। দেবী অভি-গদন প্রঃসর স্থার রাজ্যে প্রভ্যাবর্তীন করিব, এই অফ্ডা। প্রদান কক্ষণ ৫১।৫২।৫৩।৫৪।৫৫।

শ্রীরাম 'ভথাস্তা' বলিয়া,কহিলেন — হে স্থ্যীব ! সমস্ত বানর, বিভীবণ ও হন্মান সমভিব্যাহাবে পুষ্পক রথে শীস্ত্র আরোহণ কর। অনন্তর স্থাীব বানরীসেনা সহিত ও বিভীষণ অমাত্যপরিস্কৃত ছইয়া দিবা পুষ্পক রথে সত্তর আরোহণ করিল। ভাহারা সকলে আরেত ছইলে কৌবের সমস্ত রাঘ্য কর্ত্বক অনুজ্ঞাত হইয়া গাগণমার্গ ছইতে উল্লেফন করিতে লাগিল। প্রহৃত্যমনা রামচক্ত হংসবাহন পুল্পক রথে আবোহণ করিরা চতুমু খ ব্রহ্মরে নাগ্য বিমানমার্গে শোভা পাইতে লাগিলেন। অনন্তর তপোলন্ধ কুবেরের রণ ভাস্কর-বিষের নাগর শোভা পাইতে লাগিল। এবং অনুজ লক্ষ্মণ ও জনকার্মজা পরিবৃত হইয়া জীরামচক্রের শোভা পরিবর্দ্ধিত হইতে লাগিল। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫১। ৬০।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামছেশ্বরসভাবে
যুদ্ধকাতে ত্রেরাদশোহধ্যায়ঃ।

চতুৰ্দ্বেশাংখ্যায়ঃ।

পাতরিত্বা ততশংকু: সর্বতো রঘুনন্দন:। অব্রবান্মৈথিলীং সীভাং রামঃ শশীনিভাননাম্। ত্রিকুটশিখরাগ্রন্থাং পশা লক্ষাং মহাপ্রভাম। এতাং রণভুবং পশ্য মাংসকর্দমপঙ্কিলাম্॥ ২॥ অসুরাণাং প্লবঙ্গানামত্র বৈশ্যনং মহৎ। অত্র মে নিহতঃ শেতে রাবণো রাক্ষদেশরঃ।। ৩॥ কুন্তকর্ণেন্দ্রজিম খ্যাঃ সর্ব্বে চাত্র নিপাতিভাঃ। এেষ সেতুম্য়া বদ্ধ° সাগরে সলিলাশয়ে॥ ৪॥ এতচ্চ দৃশ্যতে তীর্থং সাগরস্য মহাত্মনঃ। সেত্বন্ধমিতি খ্যাতং ত্রৈলোক্যেন চ পুজিতম্।। ৫

এতৎপবিত্তং প্রমং দর্শনাৎ পাতকাপ্তম্। সত্র রামেশ্বরো দেবো ময়া শস্তু: প্রতিষ্ঠিত:॥ ৬॥ অত্র মাং শরণং প্রায়েপ্তা মন্ত্রিভিশ্চ বিভীষণঃ। এষা সুজীবনগরী কিছিক্যা চিত্তকাননা ॥ ৭॥ তত্ত্র রামাজ্রা তারাপ্রমুখ। হরিযোষিতঃ। আনরামাদ তুর্জীবং দী হায়াঃ প্রিয়ক মায়া॥ ৮ । তাতিঃ সহোথিতং শীঘুং বিমানং প্রেক্টরাঘবঃ:: প্রাহে চাজিং ঋষ্যমূকং পশ্য বাল্যত্র মে হতঃ।। ৯ এষা পঞ্চতী নাম রাক্ষ্মা যত্র মে হতা।। অগন্ত্যস্য স্থাক্ষ্ণ প্রভাষে পদে শুভে॥১০॥

অনস্তর রযুকুলভিলক রামচন্দ্র চারিদিক নিরীক্ষণ করিয়া শশিনিভাননা মিথিল-রাজ-ছহি হা সীতাকে বলিলেন, ত্ত্রিকূট পর্বত নিধরস্থ মহা প্রভাষিতা নম্বাপুরী ও মাংস-कर्मन-शक्षिण युक्तत्क्व व्यवतात्कन क्वा वे ज्ञातन वानता-সুরদিগোর মহাযুদ্ধ হইয়াছিল, রাক্ষণেশ্বর দশানন ঐ স্থানে निश्क रहेका পठिछ रुवेबाहिल। धे द्यान महावीत कूछ-কর্ণ ও ইল্রজিৎ নিপ্তিত হইয়াছিল, এবং মহাসাগরোপরি আমি সেতু বন্ধন করিয়াছি অবলোকন কর। ১। ২। ৩।

 এইটি মহাস্থা সাগরের তীর্থ—স্বর্গ মর্ত্ত পাতালম্ভ লোক সমুদাায়র পূজিত ছইয়া সেতুবক নামে বিথাতি **হইয়াছে**।

रेमिथिनि । शाशीदा इंश नर्मन कदिएन मन्त्रं भाभ इहेटन विमुख्न হইবে। ধর্মনিরত বিভীষণ মন্ত্রিগণ সমভিব্যাহারে এট স্থানে আমার শরণাপন্ন হইরাছিল, এবং এইটি স্ত্রীবের চিত্র কাননা कि हिका। नगती। धे छात्न छातीय बामनितनगत्नी इहेबा <u> গীতার মৃদ্রণাকাজ্ফিণী ভারা প্রভৃতি বানর যোষিদাণকে</u> আনয়ন করিয়াছে। শ্রীয়ামচন্দ্র তাঁহাদিগের সহিত বিমান ছইতে দর্শন করিলেন এবং সীভাকে কহিলেন ঐ দেখ গিরি-বর ঋষামৃক পর্বত—এই স্থানে বালী আমা কর্ত্ব বিনয় ছইরা ছিল।৫।৬।৭।৮।৯।

হে শুভে! এ পঞ্চবটী বন অবলোকন কর—অগস্ত্য এখানে আমি বামেখ্র নামে মহাদেব প্রতিষ্ঠা করিয়াছি। হে মুনির আশ্রমপদে রাক্ষসদিগতে নিহত করিয়াছি। তে

এতে তে তাপদাঃ দর্মে দৃশান্তে বরবণিনি!।
আসৌ শৈলবরো দেবি! চিত্রকুটঃ প্রকাশতে॥ ১১
অত্র মাং কৈকরীপুত্রঃ প্রসাদরিত্মাগতঃ।
তরদ্বাজাশ্রমং পশ্য দৃশাতে বমুনাতটে॥ ১২॥
এবা তাগীরথী গঞ্চা দৃশাতে লোকপাবনী।
এবা সা দৃশাতে দীতে! সর্য্পুসমালিনী। ১৩॥
এবা সা দৃশাতেহ্বোধ্যা প্রণামংকুরু ভামিনি!।
এবং ক্রমেণ সম্প্রাপ্তো ভর্ত্বাজ্ঞাশ্রমং হরিঃ॥ ১৪
পুর্ণে চতুর্দ্বশে বর্ষে পঞ্চম্যাং রঘুনন্দনঃ।
তরদ্বাজং মুনিং দৃষ্ট্যা ববন্দে সানুজঃ প্রভুঃ॥ ১৫
পপ্রচ্ছ মুনিমাদীনং বিনয়েন রঘুর্ম:।
শূণোধি কচিচন্তরতঃ কুশল্যান্তে সহাত্রাঃ। ১৬।

ফুডিকা বর্ড তেইবোধ্যা জীবন্তি চ হি মাতরঃ।
ফুডা রামস্য বচনং ভরদ্ধান্তঃ প্রকৃষ্টিই ১৭।।
প্রাহ্ সর্বের কুশলিনো ভরতস্ত মহামনাঃ।
ফলমূলকুতাহারো জটাবলকলধারকঃ ॥ ১৮ ॥
পাদুকে সকলং নাস্য রাজ্যং তাং মুপ্রতীক্ষতে।
যৎযহকুতং তুয়া কর্মা দশুকে রঘুনন্দন! ॥ ১৯ ॥
রাক্ষানাং বিনাশং চ সীতাহরণপুর্বিকম্।
সর্বেং জাতং ময়া রাম! তপসা তে প্রসাদতঃ ॥
তং ব্রহ্ম পরমং সাক্ষাদাদিমধ্যান্তরজ্জিতঃ।
ত্মপ্রে সলিনং সৃষ্ট্য তত্র মুপ্রোহ্যি ভূতকুৎ ॥ ২১
নারায়ণোসি বিশায়ন্! নর্বোমন্তরাত্মকঃ।
ত্মাভিকমলোৎপ্রো ব্রহ্মা লোকপিতামহঃ॥ ২২

নংবর্ণিন ! ঐ তাপসরন্দ এবং চিত্রকৃট্ট পর্মত দেখা যাইতেছে, এই হানে কৈকেরীপুত্র ভরত প্রসাদ প্রাছণে সমাগত হইরাচিল, ঐ দেখ যমুনাতটে ভরছাক্রাশ্রম দেখা যাইতেচে। হে সীতে! ঐ দেখ গোক পবিত্রকারিণী ক্রহ্মকনা। গলা ও সরয় মুগপৎ লক্ষিত হইতেছে, অতএব প্রণাম কর। এইরূপে জীহরি ক্রমণঃ ভরষাক্রাশ্রমে উপন্থিত হইলেন।১০।১১।১২।১৩।১৪। চতুর্দ্দশ বংসর অভীত হইলে পঞ্চমীতিখিতে রঘুনন্দন ভরহাজন্মুনিকে দন্দন্ন করিয়া সাহক্র ভাষাক্রের ক্রমণ।

রঘুনাথ সবিনয় আসনোপবিষ্ট ভরম্বাজ্ঞকে জিজ্ঞাসা করিকোন—কে মুনিবর! আপনি ভরত ও শক্রমের কোন কুশল সংবাদ কি শ্রবণ করিয়াছেন ? অযোধ্যা মধ্যে স্থাভিক্ষা

আছেত ? আমার জননীরা জীবিতা আছেন ত ? শ্রীরামের বাক্য শ্রবণে ভরম্বাক্ত মুনি হুইন্তঃকরণে বলিলেন—ফলমূল—ভোজী জ্বটাবলকলধারী মহামতি ভরত প্রভৃতি সকলেই কুশলে আছেন, আর সমুদার রাজ্ঞা আপনার পাছকার নাল্ড ইইরা আপনারই জনা প্রতীক্ষা করিতেছে—হে রগ্নকন! দশুকারণে রাক্ষ্য বিনাশ, সীতাহরণ প্রভৃতি যে যে ঘটনা ঘটিরাছে, তৎসমুদারই আমি তপঃ প্রভাবে এবং আপনার প্রসাদে অবগত ইইরাছি। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯ ০০। হে রঘুনাথ! আপনি আদি, মধ্য ও অত্ত বিবর্জিত—সাক্ষাৎ পরম ব্রহ্ম, আপনি প্রথমে সলিল ক্ষ্তন করিরা ভ্রপরি শ্রম করিয়াছিলেন। হে বিশ্বাক্তন্ গ্রাণনিই নারায়ণ—মন্ত্রাদিগেব অন্তর্মকা; আপনার নাভিপ্য ইইনেত লোকপিতামছ ব্রহ্মা উৎপর ইইরাছেন, অত এব আপনি অথিব জ্বগতের পত্তি—

অতন্ত্রং জগতানীশং সর্বলোকনমক্তঃ।

ত্বং বিশ্বুর্জানকী লক্ষ্মীঃ শেষোহরং লক্ষ্মণাতিধঃ ॥

আর্মনা স্ক্রসাদং ত্রাত্মন্যেবাত্মমার্যা।

ন সজ্জনে নভোবন্ত্বং চিচ্ছক্ত্যা সর্বসাক্ষিক:।

বহিরস্তুক্ত ভূতানাং ত্মেব র্যুনন্দন!।

পুর্ণোহপি মূদ্দ্দীনাং বিচ্ছিন্ন ইব লক্ষ্যসে ॥২৫

জগত্ত্বং জগদাধারস্ত্মেব পরিপালক:।

ত্মেব সর্বভ্তানাং ভোক্তা ভোজ্যং জগৎপতে!

দৃশ্যতে শ্রেরতে বদ্যৎ স্মর্য্যতে বা র্যুত্ম!।

ত্মেব সর্ব্যধিলং ত্রিনান্যা কিঞ্চন ॥ ২৭ ॥

মারা সৃজতি লোকাং ক্ষ স্থাবিত্রমাদিভিঃ।
বৃদ্ধ ক্রিতা রাম! তুমা ক্র্যাপচর্যাতে । ১৮
যথা চুম্বকগারিধ্যাচল ত্রৈবারসাদরঃ।
জড়া তথা দ্বরা দৃষ্ট্য মারা সৃজতি বৈ জগৎ।।২৯
দেহদ্বরমদেহদ্য তব বিশ্বং রিরক্ষিষোর।
বিরাট্ স্থলং শরীরং তে স্তুরু ফুক্মমুদাক্ষ্তম্।৬০
বিরাজঃ সম্ভবস্থাতে অবভারাঃ সহস্রশঃ।
কার্যান্থে প্রবিশস্তোবে বিরাজং রঘুনন্দন!।৬১।
অবভারকথাং লোকে যে গায়ন্তি গুণন্তি চ।
অনন্যমনদাে মুক্তিক্তেধামেব রঘূত্তম!।৬২।
ত্বং ব্রহ্মণা পুরা ভূমেন্তারহারায় রাঘব!।
প্রার্থিতস্তপদা ভুকত্বং জাতোহদি রঘােঃ কুলে।।

সমস্ত লোকে আপনাকেই নমস্কার করিয়া থাকে—হে রঘুনাথ! আপনি বিষ্ এবং জানকী লক্ষ্মী। আপনি আপনা ছইতে এই জ্বগৎ স্তন্ধ করিয়াছেন, কিন্ত আপনি মায়া ছারা আশক হয়েন না, এবং নভোষগুল যেমন সর্ব্ব দর্শক আপনিই সেইরপ চিছ্জি ছারা সমস্ত পরিদর্শন করিতেছেন স্তরাং আপনি সর্ব্ব সাক্ষ্মী। ২১। ২২। ২২। ২৪।

হে রনযুন্দন! আপনি সকল জীবের অন্তরে ও বাছিরে অবস্থান করিতেছেন, এবং পূর্ণ ব্রহ্ম হইলেও মৃঢ় বাক্তিদিগের নিকট যেন বিচ্ছিন্নের ন্যায় লক্ষিত ছয়েন। আপনি জগলের আধার, এবং আপনি জগতের প্রতিপালক; হে জগৎপতে! আপনিই জীবসমুদায়ের ভোক্তা এবং ভোজা। ছে রঘ্বর! ইভন্ততঃ যাহা কিছু দেখিতে পাই, শুনিতে পাই, এবং আরণ পথে উপন্তিত হর তাহা সমস্তই আপনি—মর্থাৎ সকল পদার্থে, সকল জীবেই আপনি পরিদ্ধানান্ আছেন। ছে প্রীরাম! মারা জীব সকলকে ক্ষিক্তি করিয়াছে ও আপনারই গুণে অহুকারাদি সমুৎপর

হইরাছে এবং আপনার হারাই প্রেরিড, নেই কারণেই আপনাতে প্রষ্টুত্ববংবাবহার হইরা ধাকে। যেমন চুম্বক প্রস্তুও বের আকর্ষণে লেছি আকর্ষিত হইরা প্রস্তুরে সংমিলিড হওরানন্তর একস্থানে অবস্থিতি করে ডক্রেপ আপনি বস্তুর সমুদায় জ্বৃড় সন্দর্শন করিলে মারাই জ্বন্থ সমুদাহ পরিপ্রাহ করিরা ব্রহ্মাণ্ড মণ্ডল রক্ষা করিছেছেন, হে রঘুনন্দন ! আপনি প্রায় করিরা ব্রহ্মাণ্ড মণ্ডল রক্ষা করিছেছেন, হে রঘুনন্দন ! আপনি প্রায় করিয়া বিরাজমান হইরা পরে স্বীয় কার্য্য অবসানে পুনরার লয়প্রাপ্ত হইরা বিরাজমান হইরা পরে স্বীয় কার্য্য অবসানে পুনরার লয়প্রাপ্ত হইরাছেন। হে রঘুজ্বন ! যে ব্যক্তি আপনার অবভার কথা গান করে বা ব্যাখ্যা করে ডাহার নিশ্রেই মুক্তিলাভ হর। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ১৯। ২০। ৩১। ৩২।

ছে রাঘব ! পুর্বের ব্রহ্মার তপদ্যায় পরিতৃষ্ট ছইরা আপনি পৃথিধীর ভার অপনোদনের জন্য রয়ুকুলের জয় দেবকার্যমেশেষেণ কুতং তে রাম ! চুক্রেম্। বহুবর্ষসহস্রাণি মানুষং দেহুমান্ত্রিভঃ। ৩৪। কুর্রন দুদ্ধরকর্মাণি লোকদ্বরহিতার চ। পাপহারীণি ভুবৰং যশদা পূর্য়িব্যাদ। ৩১ । প্রার্থানি জগন্ধাথ! পবিত্তং কুরু মে গৃহম্। 'স্থাদা ভুক্তা দবলঃ শ্বো গমিষাসি পত্নম্।। ৩৬ তংগতি রাঘণো**ংতিস্ত মিলাশ্রম** উত্তনে। সদৈন্যঃ পুঞ্জিতস্তেন দীতয়া লক্ষ্মণেন চ। ৬৭। ততো রামশ্চিত্রিয়া মুহার্ত্থ প্রাহ মারুতিমু। উতো গচ্ছ হন্ত্মংস্তম যাধ্যা**ং প্রতি স**ত্তর ॥ ৩৮ | জানীহি কুশলী কচ্চিজনো নুপতিমন্দিরে। শুঙ্গিবেরপুরং গড়া ব্রাহি নিত্রং গুহুং মম॥ ৩৯॥

কারের। বজ সহজ বংসর মানবদেছ ধারণ পূর্বক ভ্রুত্র দেব কার্য্য সাধন করিখাছেন এবং ইছলোক ও পার গোকের মজলের নিমিত্ত ছম্মর কাষ্য সৃষ্ঠ সমাণ করিয়া যশে পৃথিবী প্রপূর্ণ। করিয়াছেল । ৩০। ৩৪। ৩৫। হে জ্বানাথ ! আপনি আমার গৃহ পণিত্র ককন এবং অদ্য এখানে থাকিয়া ভোজ-निरुष्ठ प्यट्याक्षाय गमन करून এই स्नामि প्रार्थना कति। जन ঘাজ মুনি এইরূপ কহিলে—জ্রীরামচক্ত মহর্ষির উত্তমাজ্ঞমে টেগন্য, লক্ষ্মণ ও সীতা সহিত মুনি কর্ত্ব পূজিত হইয়া আব-স্থান করিলেন। ৩৬। ৩৭।

অনন্তর রামচন্দ্র মুভূর্তকাল চিন্তা করিসা প্রন কুমারকে কহিলেন—হে মাকতে ! তুমি শীত্র অযোধ্যায় গামন করিরা ভথাকার লোক সমুদাশের কুশল বার্তা অবগত হও এবং শুন্ধিবের নগরে গ্রমন কবিয়া মিত্র গুহকে আমার সংবাদ প্রদান কর। তদনন্তর তুমি নন্দিত্রামে যাইয়া আমার ভ্রাতা। গুংকের সাক্ষাংকার গাভ করণানপ্তর সানন্দ চিত্তে ও মধ্ব

জানকী লক্ষণোপেত্যাগতং মাং নিবেদয়। নন্দিগ্রামং ভতাে গড়া ভাতরং ভরতং মম।। ৪০।। দৃষ্ট্ৰী ক্ৰহি সভাৰ্য্য সভাৰুং কুশলং মম। मोञाপহরণ দীনি রাবণদ্য বধাদিক ম্॥ ৪১॥ ক্রহি ক্রমেণ মে ভাতুঃ সর্বাং তত্ত্র বিচেটি ভ্র্। হত্বা শক্রগণান্ সর্বান, সভার্যঃ সহলক্ষাণঃ। ১২। উপয়াতি সমৃদ্ধার্থঃ সহ ঋক্ষহরীশ্বরৈঃ। ইত্যুক্তা তত্ত্র হাতান্তং ভরতদ্য বিচেষ্টিতম ॥ ৪২ ॥ সর্বিং জ্ঞাতা পুনঃ শীঘ্রমাগচ্ছ মম সলিধিম্। তথেতি হন্ত্মাংস্তত্ত মান্ত্ৰং বপুরাস্থিতঃ ॥ ৪৪ ॥ निक्ति वांगर यत्मी कूर्गर वांग्रु दिरान माक् विः। গরুত্মানিব বেগেন জিঘুক্ষন্ ভুক্তগান্তমম্। ৪৫ শৃঙ্গিবেরপুরং প্রাপ্য গুহুমাস দ্য মারুতিঃ। উবাচ মধুরং বাকাং প্রাক্ত ফেনা দুর জ্বনা । ১৬।।

ভরতের সহিত সাক্ষাৎ করিবে এবং তাঁচার কুশল সংবাদ জিজ্ঞাসা করিয়া সীতাহরণ প্রভৃতি রাবণের বিনাশাদি সমস্ত বিষয় ভাহাকে বলিবে। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

আমার ভাতা ভরত সমস্ত বিষয় সচেষ্ট হট্টা জিজা দা করিলে তুমি বলিবে যে, রামচন্দ্র ভার্য্যা জানকী ও অস্ত্র লক্ষাণের সহিত থাকিয়া সমুদায় বৈরী বিনাশ পূর্বক মহৈ-শ্বর্যাশালী হইরা রাক্ষ্য ও বানরপতি দিবোর সহিত উপাগ্যন ক্রিয়াছেন, ভাঁহার অন্থেষিত রুত্তান্ত কৃতিয়া এবং সমস্ত বিবর অবগত হইয়া পুনর্কার আমার সলিধানে শীদ্র আগমন করিবে। এ:চ্ছুবণে প্রন নন্দন মনুষ্যদেহ পরিতাহ করিয়া গরুড় ও প্রন সদৃশ অভিবেগে নন্দিআমাভিমুণে প্রস্থান করিল। ৪২/৪৩/৪৪/৪৫/

অনন্তর পাবন কুমার শৃজিবের পুরীতে উপস্থিত ছইরা

রামো দাশরথিঃ প্রামান্ দখা তে সহ সীতয়া!
সলক্ষণস্থং ধর্মাত্মা ক্ষেমী কুশলমন্তবীং ।। ৪৭ ॥
অনুজ্ঞাতোহদ্য মুনিনা ভরদ্বাজেন রাঘবং ।
আগমিষ্যতি তং দেবং জক্ষ্যদি তং রঘুত্তমম্ ॥৪৮
এবমুক্ত্যা মহাতেজাং সংপ্রক্ষ্যতস্কুহম্ ।
উৎপপতে মহাতেগো বায়ুবেগেন মার্কতিং ॥৪৯ ॥
সোহপশ্য জাম নীর্পং চ সর্যুং চ মহানদীম্ ।
ভামতিক্রম্য হনুমান্ত্রনিক্রামং যথো মুদা ।। ৫০ ॥
তোশমান্তে ত্বোধ্যায়াশ্চীরক্ষ্যাজিনাম্বর্ম্ ।
দদর্শ ভরতং দীনং কুশ্যাশ্রমবাসিন্ম্ ।। ৫১ ॥
মলপক্ষবিদিক্ষাক্ষং জাটিলং বিক্রাম্বর্ম্ ।।
ক্রম্বুলকুতাহারং রাম্চিত্রাপ্রায়্ব্যুন্ ॥ ৫২ ॥

বাকে; তাঁহাকে বলিতে লাগিল,—আপনার প্রিয় মিত্র ধর্মান্ত্রা দাশবিথ জীমান রামচন্দ্র সীণা ও লক্ষনের সহিত আপনার নিকট কুশল সংবাদ বলিবার জনঃ আমাকে প্রেরণ করিয়াছেন; ভবলাজ মূনির নিদেশান্ত্বতী ইইয়া তিনি আগমন করিবেন, আপনি তাঁহার সহিত সাক্ষাং করিবেন। মহাতেজন্দ্রী পবন-ভনর এই বাক্য বলিয়া প্রস্থান্তঃকরণে অনিলবেগে উল্লেখন প্রদান করিয়া রামতীর্থ ও মহানদী সরম্ অবলোকন করিল। পরে সে সমুদার অভিক্রেন করিয়া পরমহর্ষে নন্দিগ্রামে উপ-নীত হইল। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০।

আযোধ্যার ক্রোশাস্তর ছইতেই অনিলতনয় দেখিল— ভরতের রুফাজিন ও বল্কল পরিধান,—অবস্থা দীন—শরীর ক্লণ ও নল পত্ত লিগু—মস্তকে জনাভার—আহার বন্য ফল মূল এবং বদর নাম্চিত্তাও আকুল। ভিনি বাদ-পাহ্বাছয় সন্মুণে

সংস্থাপন পূর্বক কাষায় বসন প্রিধারী হইলা প্রধান সচিত-গণের সহিত পৃথিবী শ্বাসন করিছেছেন। প্রনক্ষার ভরতকে সাক্ষাৎ মৃত্তিমান ধর্মের ন্যায় উপবিক্ত অবলোকন করিছা কর্মোড়ে কহিতে লাগিল,—আপনি সে রামের জ্বনা চিন্তা পর হইরাছেন, শেরাম তাপদ বেশে দশুকারলো অবভিতি করিষাছিলেন, এবং মঁছার জ্বন্য অনুক্ষণ পরিতাপ করিতে-ছেন সেই ইক্ষাকু বংশোস্তব রামচন্দ্র আপনাকে ক্শল সংবাদ শ্রেরণ করিয়াছেন। ৫১। ৫১। ৫৪। ৫৫।

ছে দেব! আপনি মহৎ শোক পরিত্যাগ করুন,—আমি
আপনার নিকটে প্রিরসংবাদ কহিতেছে—এই নৃত্তেই জাতা
জীরামের সহিত আপনার স্মিশন হইবে। রামচন্দ্র যুদ্ধক্ষেত্রে
লক্ষাধিপতি দশান্দকে বিনাশ করিয়া সীতাকে উদ্ধারক্রণানন্তর অতুল প্রির্যাশালী ছইয়া অনুজ লক্ষ্মণ ও জনক
ছহিতা সীতা সমভিবাছারে আগমন করিতেছেন। ৫৬। ৫৭।
হন্সাম এই গুভসংবাদ প্রদান করিতে, কৈকেন্দ্রীর প্রিক্স

আনিক্ষ্য ভরতং শীঘুং মারুতিং প্রিয়বাদিনম্।
আনক্ষেরশ্রুক্তার সিষেচ ভরতং কপিম্। ৫৯।
দেবো বা মানুষো বা ত্বমনুক্তোশাদিহাগতঃ।
প্রিয়াখ্যানস্য তে দৌম্য! দদামি ক্রবতং প্রিয়ম্।৬০
গবাং শতসহস্রঞ্জ প্রামাণাং চ শতং বরম্।
সর্বাভরণসম্পন্না মুগ্ধাং কন্যাস্ত্র ষোড়শ্ ॥৬১।
এবমুক্ত্বা পুনং প্রাহ ভরতো মারুতাতালম্।
বহুনীমানি বর্ষাণি গতস্য স্থমহন্তনম্। ৬২।
শ্রেণাম্যহং প্রীতিকরং মম নাখন্য কীর্ত্তনম্।
কল্যাণী বত গাথেরং লৌকিকী প্রতিভাতি মে।।
এতি জীবন্তমানন্দো নরং বর্ষশ্বাদিপি।
সাঘ্যক্ত হ্রিণাঞ্চ ক্থমানীৎ সমাগ্মঃ। ৬৪॥

পুর মহাবলবান্ তরত জানন্দে মৃচ্ছু পিল্ল ইইয়া ভূপুঠে নিপ্তিত হটলেন ; এবং পুনকখান পূর্বক, ওভসংবাদ দাতা মকতাক্মজ হন্মানকে শীস্ত্র সনালিক্ষন করতঃ আনন্দাক্ষ বিসক্তনে মহাকপিকে অভিষিক্ত করিয়া কেলিলেন এবং কহিতে লাগিলেন—আপনি দেবতা না মানব দয়া পরতিক্ত ইইয়া এখানে আগমন করিয়াছেন ? হে সোমা! আপনি প্রিরবাদী খতএব আমি আপনাকে কি প্রিরবস্তু প্রদান করিব? শত সহস্ত গাভী, এক শত বৃহৎ গ্রাম ও সর্বাভরণভূষিতা সর্বাজ স্থানী ঘোড়শী কন্যা দান করিব। এইরূপ কভিন্না ভরত প্রনন্দ্রনক্ষে পুনর্বার বলিলেন—আমার নাথের মহারণা মধ্যে এই সমস্ত বংসর বিগত হইয়াছে, অভএব ভাঁহার প্রীভিক্ত কীর্ভন প্রবণ করিব, কারণ ঐ সমস্ত আমার সভ্য বলিয়া প্রতীতি হইতেছে, অধিকন্ত রাঘ্রের সহিতে বানরদিগের সমান্যাম কিরপে হইল, আবণ করিলে অপার আনন্দ উপস্থিত হয়,

তত্ত্বনাথ্য হি ছাতং তে বিশ্বদেয়ং বচন্তব।

এবমুক্তোহথ হন্দুনান্ ভরতেন মহাত্মনা॥ ৬৫॥

আচচক্ষেহথ রামস্য চরিতং ক্লংশ্রশঃ ক্রমাং।

শুজ্য তু পরমানন্দং ভরতো মারুতালু লাং॥ ৬৬

আজ্ঞাপয়চ্ছক্রহণং মুদাযুতং মুদাস্থিতঃ।

দৈবতানি চ যাবন্তি নগরে রঘুনন্দন!। ৬৭।

নানোপহারবলিভিঃ প্রস্তর্জ মহাধিয়ঃ।

সুতা বৈতালিকান্চিব বন্দিনস্তুতিপাঠকাঃ। ৬৮।

বারমুখ্যান্চ শতশো নির্যান্ত্রিদাব সজ্ঞারঃ।

রাজদারাত্তথামান্যা সেনাহস্ত্যশ্রপরণ । ৬৯।

ভরত্না বচঃ প্রস্তা শক্রমুপরিচোদিভাঃ।

ভরত্না বচঃ প্রস্তা শক্রমুপরিচোদিভাঃ।

অলঞ্জুন্ন্চ নগরীং মুক্তারত্বময়োজ্জ্বলৈঃ॥ ৭১॥

অলঞ্জুন্ন্চ নগরীং মুক্তারত্বময়োজ্জ্বলিঃ॥ ৭১॥

ভরতের বাক্য শুনিয়া শত্রুর নানামুক্তা রত্নহারা নগরীকে স্মক্ষীভূতা করিলেন ; তোরণে বিবিধ চিত্র বিচিত্র পতাকা তোর গৈশ্চ পতাক: তির্নির চিত্র। তির নেকধা।
আলক্রিন্তি বেশ্মানি নানাবলিবিচক্ষণাঃ ৭২।
নির্য্যান্তি রন্দশঃ সর্নের রামদর্শনলালসাঃ।
হয়ানাং শতসহস্রং গজানামযুতং তথা। ৭৩।
রথানাং দশসহস্রং স্বর্ণস্তুত্রবিভূষিতম্।
পারমেষ্ঠীন্যুপাদায় জব্যাণ্যুচ্চাবচানি চ॥ ৭৪॥
ততন্ত শিবিকার্চা নির্যু রাজ্যোষিতঃ।
ভরতঃ পাত্তকে নাস্য শিরস্যেব ক্তাঞ্জলিং। ৭৫॥
শক্রম্বাহিতো রামং পাদ্চারেণ নির্য্য।
তদৈব দৃশ্যতে দূরাদ্বিমানঞ্জুসন্নিভম্॥ ৭৬॥
পুষ্পকং স্থ্যসন্ধাশং মনসা ব্রহ্মনির্ম্মিভম্।
এত্সিন ভাতরো বীরো বৈদেন্থা রামলক্ষ্মণে ॥
মুগ্রীবন্চ কপিশ্রেষ্ঠো মন্তিভিন্চ বিভীষণঃ।

উচ্চীরমান। হইল—ভবন সমুদার নান। আভরণে জলক্কত হইল। শত সংজ্ঞ অধ্য হস্তি, দশ সহজ্ঞ স্থাব বিভূষিত রথর্ক রাম দশন লালসার নিগত হইল; অনস্তর রাজ যোষিদ্ধর্ম নানা উপচার দ্রেরা সমূহ সমভিব্যাহারে করিয়া শিবিকার আরোহাহণ পূর্বক বহির্গত হইলেন, পরে ভরত রামচন্ত্রের পাছুকা স্বীয় মন্তকে সংস্থাপন করিয়া শত্রের সভিত পদত্রজ্ঞে রুভাঞ্জালিপ্রট হইয়া গমন করিছে লাগিলেন। ইভাবদরে, দূর হইতে বিমানস্থ ব্রহ্মা নিম্মিত স্থা সন্ধান পূস্পক রথের উপরি মহাবীর শ্রীরাম ও অমুজ লক্ষ্মা এবং বিদেহপুল্রী জানকী উপবিষ্ট থাকার বিমান যেন চন্দ্রের নার পরিলক্ষিত হইতে লাগিল। ৭০। ৭২ । ৭৩:৭৪। বিরোধিত গ্রহণ প্র।

দুশাতে পশ্যত জনা ইত্যাহ প্রনাত্যুজঃ ॥ ৭৮॥
ততো হর্ষসমুদ্ধ তো নিঃস্বনো দিরমস্পূশ্ধ।
স্ত্রীবালমুবরুদ্ধানাং রাশ্যাহয়মিত কীর্ত্তনাং ॥ ৭০॥
রথকুঞ্জরবাজিছা অবতীর্য্য মহীং গতাঃ।
দদুশুস্থে বিমানস্থং জনাঃ দোমসিগামরে ॥ ৮০॥
প্রাঞ্জলির্তরতো ভুত্বা প্রাহ্নস্থোর রাঘ্যোমা,খাঃ।
ততো বিমানাপ্রতং ভরতো রাঘ্যং মুদা ॥ ৮১॥
ববন্দে প্রণতো রামং মেরুস্থমিব ভাক্ষরম্।
ততো রামাত্যমুক্তাতং বিমানমপতদুবি ॥ ৮২
আরোপিতো বিমানং তদ্ভরতং সানুজস্তনা।
রামমাসাদ্য মুদিতঃ পুনরেবাভ্যবাদয়ং ॥ ৮০
সমুপ্রাপ্য চিরাৎ দৃষ্টং ভরতং রঘুনন্দনঃ।
ভাতরং স্বাক্ষমারোপ্য মুদা তং পরিবস্থকে ॥ ৮৪ঃ

অনন্তর হন্মান কহিতে লাগিল ঐ দেখ কলি ছেন্ত স্থানি এবং মন্ত্রি পরিস্তৃত বিভীষণকে দেখা যাইভেছে, অনতি পরে প্রী, বালক, ব্বা ও স্থান্ধরা শ্রীরামচন্দ্রকে অবলোকন করিবা মাত্র "ঐ শ্রীরাম আদিতেছেন" ইত্যাকার হর্ষ স্চক শদ গগণ স্পর্শ করিল। পরে অখারোহী অধ্ হইছে, গজারোহী গজ হইতে ও রথারোহী রথ হইতে, অবতীর্ণ হইরা বিমানস্থ রামচন্দ্রকে গ্রাণাধ্যুত্ব চন্দ্রের ন্যায় সন্দশন করিতে লাগিল,

অনন্তর ভরত অভিশয় হর্ষসহকারে বন্ধাঞ্জলি হটয়া বিমানাপ্রত প্রীরামচন্তের সমুথবর্তী হইলেন এবং পর্বতে শিগরত ভাত্মরের ন্যায় রামচন্ত্রকে বন্দনা করিতে লাগিলেন,অমনি রামচন্ত্রক প্রভৃতির আদদশবর্তী হইয়া রথ ধরণী নলে অবভীপ হটল, তখন ভরত ও শক্রম পুত্পক রথ আবোপিত করিয়া এবং রামচন্ত্রকে প্রাপ্ত হইয়া পুনরায় তাঁহাকে অভিবাদন করিলেন। অনন্তর রঘুনাথ রামচন্ত্র ভরত্কে বিলক্ষে উঠিতে

মুগ্রীবং জামন্ত্র চ যুবরাজং তথাক্ষদম।

নৈশ্দদিবিদনী নাংশ্চ ঋষভদ্পের সম্বজে ॥ ৮৬ ॥

মুবেলং চ নলং চৈর গরাক্ষং গদ্ধমাদনম্।

শরভং পনগং চৈর ভরতঃ পরিষম্বজে । ৮৭ ।

শর্কে তে মান্ধং রূপং কুত্বা ভরতমাদৃতাঃ।

পপ্রজ্বঃ কুশলং সৌম্যাঃ প্রদৃষ্টাশ্চ প্রক্ষমাঃ ॥৮৮

৬ তঃ মুগ্রীবমানিক্সা ভরতঃ প্রাহ ভক্তিতঃ।

ত্বশহামেন রাম্ম্য জ্যোহভূদ্রাবণো হতঃ॥ ৮৯ ॥

ত্মম্মাকং চত্বর্মাং ভু জাতা মুগ্রীব! পঞ্চমঃ।

শক্রম্শ্চ তদা রাম্মতিবাদা সলক্ষণম্। ১০।

নীভারাশ্চরণে পশ্চাত্বশেদ বিনয়ান্তিতঃ।
রামো মাতরমাদাদা বিবর্ণাং শোকবিজ্বলাম্। মঃ
জ্ঞাহ প্রণতঃ পাদে মনো মাতঃ প্রদাদয়ন্।
কৈকেয়ং চ স্থমিত্রাঞ্চ ননামেতরমাতরঃ ॥ মহ ॥
ভরতঃ পাতৃকে তে তু রাঘবদা স্পৃজিতে।
যোজয়ামাদ রামস্থা পাদরোভক্তিদংযুতঃ। ম৩।
রাজ্যমেতয়াদভূতং ময়া নির্যাতিতং তব ।
অদ্য মে দফলং জন্ম ফলিতো মে মনোরথঃ। ম৪
যৎপশ্যামি দমায়াভমযোধ্যাং তামহং প্রভো!।
কোষ্ঠাগারং বলং কোশং কৃতং দশগুণং ময়া। ম৫
ত্তেজ্বা জগল্লাথ! পালরস্থ পুরং স্কম্।

পেরিয়া মিত্রত্ব ভিতৃ তাঁহাতে স্থীর জোডে সাহলাদে উপ-বেশন করাইলেন। তৎপতে ভরজ লক্ষণকে সভিবাদন পূর্বক সনকরাজ ছহিলার নাম সঙ্কীর্ত্তন কবিলেন; পশ্চাৎ তিনি বার পর নাই প্রীত ও প্রেম-বিহ্বল হইয়া, সুগীব, জাহ্ববান, সুব্যাক্ত অহ্নদ, নৈন্দ, বিবিদ, নীল, খ্বভ, স্কুষেণ, নল, গ্রাক্ষ, বাধ্যাদন, শ্বভ ও পন্সকে অভিবাদন করিতে লাগিলেন। ৮১ ৮২ এত । ৮৪ এচ । ৮৬।

সমস্ত প্লবদম মনুষ্যরূপ পরিত্রাং পূর্বক ভরতকে সমাদ্য করতঃ ভাঁছার কুশল সংবাদ জিজ্ঞাসা করিল। অমন্তর মহামতি ভরত কুর্ত্রীবকে আলিক্ষন প্রদান করিয়া ভক্তি সংকারে কহিতে লাগিলেন, আপনার সাহায়ে শ্রীরামচন্দ্র মহাবীর দশাননকে বিনাশ করিয়া যুদ্ধে বিভয়ী হইয়াছেন; ছে স্থাীব! আপনি আমাদিণ্যের চারি জাতার পঞ্চম। পরে শাক্ষ প্রথমতঃ রামচন্দ্রকে অভিবাদন করিয়া, পরে লক্ষ্মণকে জাভিবাদন করিলেন, অনন্তর বিনয়াবনত ছইয়া জানকীর চর্বুণ ন্যক্ষার করিলেন। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০।

শীরাম সীর জননী কোশলাকে মলিনা ওংশোক বিহলনা দর্শন করণানপ্তর উছোর চরণে সাহীজে প্রশিপাত করিলেন, পরে স্থমিত্রা, কৈকেয়ী প্রভৃতি অপরাণর জননী-দিগের চরণে প্রণাম করিলেন। ভরত রামচন্দ্রণ যে পাহকণ্ছম চতুর্দ্দশ বর্ষ পূজা করিভেছিলেন, তাহা এক্ষণে অভিশর ভক্তির সহিত শীরামের পাদপদ্ম সংযোজিত করিয়া দিলেন, এবং কহিলেন, হে রঘুনাথা আপনার রাজ্ঞা এই কাট পাছকায় নাস্ত ছিল, অন্য আমার মনোনাঞ্ছা ফলবতী হইন এবং আনার জন্মও সার্থিক ছইল। ১১। ১২। ১৩। ১৪।

তে প্রভা ! অন্য আমি আপনাকে অযোধা নগরীকে
সমাগত সন্দর্শন করিলাম ; হে জগরাথ ! আমি অরাদি
ভাপন গৃহ, মেনা ও ধন দশগুণ পরিমাণে বৃদ্ধি করিরাছি,
এক্ষণে আপনি অয়ং স্থার ভেজে পৃথিবী পোলন কক্ষন কপীভাষণ ভারতকে এইরপ বলিতে শুনিরা যংপরোমাত্তি

ইতি ক্রনাণং ভরতং দৃষ্ট্য সর্বের কপীশ্বরাঃ । ৯৬
মুমুচুর্নেক্রজং ভোরং প্রশশংস্মুদিন্তিতাঃ।
ততো রামঃ প্রস্থান্তা ভরতং স্বাস্করণ মুদা। ৯৭
মযৌ তেন বিমানেন ভরতস্যাশ্রমং তদা।
অবরুহ্ তদা রামো বিমানাগ্র্যাশ্বহীত সম্। ৯৮।
ভারবীৎপুষ্পকং দেখো গচ্ছ বৈশ্রবণং বহ।
অনুগচ্ছানুজানানি কুবেরং ধনপালকম্। ৯৯॥

রামো ৰশিষ্ঠন্য গুরোঃ পদায়ুক্তং
নতা যথা দেবগুরো: শতক্রতুঃ ।
দত্ত্বা মহার্হাননমূত্যং গুরোকাপাবিবেশাথ গুরো: সমাপতঃ ॥ ১০০ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যা হারামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে দ্বকাণ্ডে চতুর্দিশোহধ্যার:।

আনন্দিত হইয়া অশ্রু বিসর্জন করিতে করিতে ভাঁহাকে প্রশংসা করিতে গাগিল।

অনস্থর রামচন্দ্র প্রাক্ষঃকরণে ভরতকে আপনার জন্য একখা জ্যোতে লইরা, সেই বিমানে আবোহণ পুক্তি ভরতের ওকর সমী আগ্রমে সমন করিলেন: তথার বিমান হইতে ধরণীতলে অব- । ১০০ জীব হইয়া পূজাককে কহিলেন, একণে তুমি প্রতিন্মন করিয়া ফুবেগ্রকে বছন করে, কারণ সামি জ্যানি তুমি সেই ধন পালকের্ড ইউ অনুগ্রম করিয়া থাক। প্রে শচিপ্তি ইস্তা যেমন দেবগুক্তকে

নমস্থাৰ কৰিয়া থাকেন, শীর'মচন্দ্র পুণগুৰু বলিট লেবের পাদপাল সেই লপে প্রাছণ করিলেন, এবং গুৰুর উপ্রেশনের জন্য একখানি মহামূল্য উত্য জাসন প্রদান করিয়া স্বরং গুৰুর স্থীপে উপবিষ্ট হুইলেন : ৯৫ ৷ ১৬ ৯৭ ৷ ৯৮ ৷

> ইতি জীমদগাক্ষিণামারার উমানক্ষিক্ষ ক্ষাক্ষি মূজকাণ্ড চতুকলোহধারঃ ।

शकप्रभा ३ शा श

ততন্ত্ব কৈকেরীপুল্লো ভরতো ভক্তিস যুতঃ।
শির্গাঞ্জলিমাধার জ্যেন্ঠং প্রাভরমন্ত্রীৎ।১।
মাতা মে সংক্রতা রাম! দক্তং রাজাং দ্বরা মম।
দদামি তত্তে চ পুনর্যথা দ্বনদা মম।২।
ইতৃত্ত্বো পানলোর্ভল্যা সাফাক্ষং প্রাপিপ্তা চা
বছপা প্রার্থান্য কিকেয়া গুরুণা সহ। ৩।
তথেতি প্রতিদ্রাহ ভরতান্তর্জামীশ্বরঃ।
মায়ামান্ত্রির সকলাং নরচেন্টানুপাগতং। ৪।
শ্বরম্বান্ত্রানক্রিশিং প্রমান্তরঃ।
নির্ম্বাতিশ্বানক্রিশিং প্রমান্তরঃ।

মামুৰেণ ভুরাজ্যেন কিং তস্য জগনীশিভুঃ ?।

যস্য লভক্ষমাত্ত্রেণ তিলোকী নশাতি কণাছ। ৬

যস্যানুগ্রহমাত্ত্রেণ ভবন্ত্যাথগুলপ্রিরঃ।
লীলাস্টমহাসুটেং কিয়দেভদ্রমাপতেঃ ৭।

তথাপি ভক্তাং নিতাং কামপুরবিধিৎসয়।।
লীলামান্ত্র্যদেহেন স্প্রিনপানুবর্ত্তে॥ ৮॥

ততঃ শক্রম্বচনামিপুণঃ শাক্রন্তর্কঃ।
সংভারাশ্যভিষেকার্থং আনী হা রাঘ্যস্য হি॥।

অনন্তর কৈকেয়ী পুত্র ভবত জ্যেষ্ঠ জাতার মন্তকোপরি ভক্তিপুর্বাক অঞ্চলিবদ্ধ করিয়া বলিলেন—হে রামচক্র ! আমার জননী আমাকে বাঝা প্রদান করিয়া আপনাকে বনবাসী করিয়াছিলেন, আপনিই আমাকে রাজ্যা প্রদান করিয়াছিলেন একলে আপনাকৈ পুনর্বার দেই রাজ্যা প্রদান করিয়াছিলেন একলে আপনাকৈ পুনর্বার দেই রাজ্যা প্রদান করিয়াছিলেন একলে আপনাকৈ পুনর্বার দেই রাজ্যা প্রদান করিছেছি। এই বলিয়া ভরত বামচজ্রের পাদপ্যে সাষ্টাঙ্গে প্রবিপতি পুর্বাক কৈকেয়ীর সহিত বহু প্রকারে প্রার্থনা করিলেন যে, আপনি স্কিদানন্দ অত্তবে এই ভরতের নিকট হইতে রাজ্য পুন্ত্র হণ্ড কর্মনান্দ রূপ

জান উত্তরই তুলা; অতএব মনুষ্য ইইরা এই বিস্তৃত রাজে।
প্রহোজন কি ? যাঁহার জভদিমার তিলোক ক্ষণান্ধ মধ্যে
বিনষ্ট ইইরা যার, যাঁহার অনুপ্রত্যাত আত্তর জীনমুভূতা
থাকে— যাঁহার লীলার এই মহ কঠি কজভ ইইরাছে, ধে
রমাপতে ! তাঁহারই এই অলোধা। বাজো ১ । ২ , ৩ ।
। ৫ । ৬ । ৭ ।

ভক্তদিগের অভিনার পূর্ণ করিবার ক্ষমা আপনি স্থকীর লীপাহারা মহ্বাদেছ ধারণ করিয়া লোক সমস্তকে ,শিক্ষা প্রান্ত নের নিমিত্ত মহ্বাবৎ ব্যবহার কবিভেছেন। অনস্তর ক্ষেত্রকারেরা শক্তদ্বের আদেশ প্রাপ্ত হইয়া দাশরশির অভিধেকজন্য সাগর সলিল আনম্যন করিল। প্রথমতঃ ভরত, মহাস্কা পুর্বাং তু ভরতে স্নাতে লক্ষাণে চ মহান্থানি।
স্থানীবে বানরেন্দ্রে চ রাক্ষানেন্দ্রে বিভীবণে॥ ১০
বিশোধিতজ্ঞ সাতন্দিত্রমাল্যান্থলেপনং।
মহাহ বিদনোপেতস্তম্থে তত্ত্ব শ্রিয়া জ্বলন্। ১১!
প্রতিকর্দ্মং চ রামস্য লক্ষাণক্ষ মহামতিং।
কারয়ামাস ভরতং সীতারা রাজেযোধিতং॥ ১২।
মহাহ বস্ত্রাভর নৈর লঞ্চক্র: স্থমধ্যমাম্।
ততো বানর পত্নীনাং সর্কাসামেব শোভনা। ১৩
অকারয়ত কৌশল্যা প্রস্থাই পুত্রবৎসলা।
ততং স্যান্দনমাদায় শক্রম্বাহনাৎ স্থাইং॥ ১৪॥
স্থায়ের ক্রথং রামং সত্য ধর্মপ্রায়নংং। ১৫।
স্থাবা মুবরাজন্য হস্মাংক্ষ বিভীধ্রং।
স্থাবা মুবরাজন্য হস্মাংক্ষ বিভীধ্রং।

রামমন্বীয়ৢরত্রে চরথাশগজবাহনাং।

য়্ঞীবপত্নাং সীতা চ ষ্য্থানিং পুরং মহৎ :৭ ।

বজ্ঞপাণিযথা দেবৈহারত।শ্বথে স্থিতং।
প্রথমো রথমাশ্বায় তথা রামো মহৎপুরম্॥ ১৮

সারথাং ভরতশ্বকে রত্ত্বপ্রং মহাদ্যুতিং।
শ্বেতাতপত্রং শক্রেয়ো লক্ষণো ব্যক্তনং দধে॥ ১৯

চামরং চ সমীপশ্বো ন্যবীজয়দরিক্দমং।
শশিপ্রকাশং ত্বরং জ্ঞাহামূরনায়কং॥ ২০॥
দিবিজৈঃ সিদ্ধেস্তিক্দ ঝাষ্ডিদিব্যদশ্বিং।
স্তুয়মানস্য রাম্যা শুক্রুবে মধুরধ্বিং। ২১।
মানুষং ক্রপমাশ্বায় বানরা গজবাহনাং।
ভেরীশঞ্জনিনাদেশ্চ মুদ্ধপণবানকৈং। ২১।

লক্ষমণ, বানরেন্দ্র প্রত্মীণ, রাক্ষসাধিপতি বিভীরণ কেশ সংক্ষরনানস্তর ক্ষত্মাত হইরা, অঞ্জক, চন্দন কুম্মমালা ও মুকান্ল্য বসন ধারণ করিয়। অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। মুধান্মা লক্ষমণদেব জীরামচক্রের বেশভূষা কলাইয়া দিলেন এবং ভ্রন্থ দার্থ পাত্নীগণ দীতার বেশ বিন্যাস করিয়া দিলেন। ৮। ১০১০ ১১ ১০ ।

ভানতর পোরজনেরা মহামূল্য বসন ও বিবিধ ভূষণে জানতীকে অলফ্টা কবিলেন এবং বানরপত্নীদিনেরও বেশ ভূষ কবিরা দিলেন। তদনতার স্থান্ত্র শক্ষর বাকা ভারণে স্থানকাশ রথ লাইরা রামাতো উপস্তিত হুইলে সতা-ধ্যাপ্রায়ণ বান্তন্ত্র বিমান্তরাহণ করিলেন। স্থানি, যুব-

রাজ অঙ্গদ, হত্মান ও বিভীষণ স্নানানন্তর দিবাগন্তর পরিধান করিলেন ও দিব্য ভূবণে ভূবিত হইলেন; অশ্বারেগহী, গজা-রেহী, রপী ও পদাভিদল শ্রীরামের অগ্র পশ্চাং গমন কবিতে লাগিল, এবং স্থাীরপত্নী ও সীতা বিমানারোহণ পূর্বক অযোগ্যাপুরী গমন করিলেন। সহজ্ঞাক্ষ যেমন স্বরাণ পরি-বৃত হইয়া ছরিত মন্থ সংযোজিত রথে আরোহণ করিতেন; সেই রূপ রামচন্দ্র পরিজন থেটিত হইয়া রপারোহণ পূর্মক আন্যাধ্যাপুরী গমন কবিলেন; মহাভেজা ভরত রতু দত্ত গোহণ করিয়া দার্থি কার্যো নিগুক্ত হইলেন—শক্রম খেতাভপত্র ধারণ ও লক্ষ্মণ চামর ব্যক্তন করিলেন। ১০ ১৪/১৫ ১৬/১৭। ১৮। ১৯। স্মিকট্রজী অরিন্দম স্থাতীব চামর ব্যক্তন করিতে লাগিল এবং অস্তরনায়ক বিভীষণ সচ্ছপ্রকাশ ধারণ করিলেন। সিদ্ধ-সক্তম ও দিব্য দর্শন শ্রেষাণ শ্রীরাদের স্তাতি বাদ ধর্যন ম্বুরবং কর্গেচির ক্রিডে লাগিলেন; গল্বাছ্ম প্রাথয়ে রাঘনশ্রেষ্ঠ ন্তাং পুরীং সমলক্তাম। দদৃশুতে সমায়ান্তং রাঘনং পুরবাসিনঃ॥ ২৩ ॥

দূর্বাদলশ্যামতনুং মহাহ —
করীটরত্বাভরণাচিতাঙ্কম্।
আরক্তকঞ্জারতলোচনান্তং
দৃষ্ট্যা যযুর্দ্যোদমতীর পুণ্যাং॥ ২৪।।
বিচিত্রব্বাঞ্চিত্রবাঞ্চতস্থ্রনদ্ধ—
পীতান্বরং পীন্ভুজান্তরালম্।
অন্থ্যমুক্তাকলদিব্যহারে—
বিবেরাচমানং রঘুনন্দনং প্রকাঃ । ২৫।
মুগ্রীবমুখ্যেইরিভিঃ প্রশাবৈদ্দিব্যমাণং রবিভুল্যভাসম্।
কন্থ্যমাণং রবিভুল্যভাসম্।
কন্থ্যমাণং রবিভুল্যভাসম্।
কন্থ্যমাণং রবিভুল্যভাসম্।

শ্রুণ ব্রেয়ো রামমুপাগতং মুদা
প্রহর্ষবেগোৎকলিভাননপ্রিয়ঃ।
অপাস্য সর্মাং গৃহকার্য্যমাহিতং
হম্যাণি চৈবারুক্তঃ স্বলক্ষ্তাং॥ ২৭॥
দৃষ্ট্বা হরিং সর্মানুভংশবাক্তিং
পুল্পোঃ কিরন্তঃ মিতশোভিতাননাঃ।
দৃগ্ভিঃ পুননে ব্রমনোরসায়নং
স্থানন্দ মূর্ত্তিং মনসঃ ভিরে ভিরে॥ ২৮
রামং মিতস্বিপ্রদ্শাঃ প্রজান্তথা
পশুন্ প্রজানাধ ইবাপরঃ প্রভুঃ।
শনৈর্জ্কগামাথ পিতুঃ স্বলক্ষ্তং
গৃহং মহেন্দ্রালয়সন্ধিতং হরিং॥ ২৯॥

বানর সকল মনুষ্যরূপ পরিপ্রান্থ করিয়া, ভেরী, শাস্কা, মৃদক্ষ ও পাণব নিনাদে চারিদিক্ প্রতিশ্বনিত করিল; রাঘব শ্রেই সম-লঙ্কুত অযোধ্যাপুরীতে প্রবেশ করিলেন, ইত্যবসরে পুরবাদীগণ নবভুর্ব্বাদলশ্যাম, মহার্ছ কিরীট রজ্বাভরণ বিভূষিত, আরক্ত কমল লোচন রামকে সমাগত দর্শনে অপার আনন্দ সাগারে ভাসমান হইতে লাগিল।২০ / ২১ / ২২ / ২৩ / ২৪ /

রথ্নন্দন বিচিত্র রত্নযুক্ত অর্ণময় কটিস্ত্রহার। পীভায়ার বন্ধন করিয়া, মহামূল্য দিব্য মুক্তাহার কঠেধারণ
করতঃ অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিলেন : কস্তুরিকাও অঞ্জ চন্দনে রামচন্দ্রের সর্বাগে অমূলিপ্ত ও কপ্তজন মালা কঠলম্বিত হইলে, স্থাীব প্রভৃতি প্রশাস্তচিত্র বানরগণ রবি কিরণ সরিভ রামচন্দ্রের দেবাহরক্ত ছইল: পুরবাসিনী জ্রীগণ প্রীরাম আগমন করিতেছেন প্রবণ করিরা
সমস্ত গৃহকার্য্য পরিভাগে পূর্বাহ্ব অলফ্ তা ছইয়া, আনন্দোচ্ছাসিত বদনে প্রসাদোপরি আব্রোহণ করিল; রামচন্দ্রের
কান্তি যেন সর্বাদিক আনন্দে উচ্ছলিত করিতে করিতে
আগমন করিতেছে দেখিয়া, সন্মিত বদনা রমণীগণ প্রফুল
হুদরে যেন চক্ষু ও মন দ্বারা তাঁহাকে আলিজন করিতে
লাগিল। প্রজাপতি বন্ধা যেমন লোক সম্হুকে পরিদর্শন
করেন, সেইরূপ রমানাথ রামচন্দ্র ঈষদ্ধাস্য সংযুক্ত হুইয়া
প্রজাপ্ত পরিদর্শন করিতে লাগিলেন; এবং মহেন্দ্র যেরূপ
স্বরালরে গমন করেন, প্রীহরি রামচন্দ্র দেইরূপ মণি মাণিক্য
খচিত জনকগ্রে নৃত্নন্দ গমনে প্রবেশ করিলেন। ২৫। ২৬।
১২৭। ২৮। ২৯।

প্রবিশ্য বেশ্মান্তরসংস্থিতো মূদা রামো ববন্দে চরণো স্বমাঙু । ক্রমেণ সর্বাঃ পিতৃযোধিতঃ প্রভু-র্নাম ভক্ত্যা রঘুবংশকেতুঃ॥ ৩০॥

ততো ভরতমাহেদং রামঃ সত্যপরাক্রমঃ।
সর্ববিদ্পৎসমাযুক্তং মম মন্দিরমুগুমম্॥ ৩১॥
মিত্রার বানরেন্দ্রার স্থাবীবার প্রদীয়তাম্।
সার্বেভাঃ স্থবাসার্থং মন্দিরানি প্রকশ্পার॥ ৩২॥
রামেনৈর সমাদিকো ভরতশ্চ তথাকরোও।
উবাচ চ মহাতেজাঃ স্থাবিং রাঘ্যামুজঃ। ৩৩।
রাঘ্যস্তাভিষেকার্থং চ্জুঃসিম্কুদ্ধলং শুভুম্।
আনেতুং প্রেষয়স্বান্ধ দূতাংশুরিত্বিক্রমান্। ৩৪
প্রেষয়ন্দ্রম্ স্থাবার জাস্বান্তং মক্রৎসূত্র ।
অস্কদং চ সুষ্ণেণং চ তে গড়া বায়ুরেগতঃ॥ ৩৫।

রঘুবংশকেতু রামচন্দ্র স্থাত ভবনে প্রবেশ করিয়া কেশিলা চরণে প্রণিগত করিলেন, পরে ক্রমে ক্রমে পিতার অপরাপর জ্রীদিগকে প্রণাম করিলেন। অনন্তর সভা পরাক্রম রামচন্দ্র ভরতকে কহিলেন, হে ভাতঃ! আমার গৃছ অতি উত্তম ও সমস্ত সম্পদে সমাযুক্ত ছইয়াছে, প্রক্রেণ আমার প্রিয় মিত্র কপিরাজ স্থ্রীবকে গৃছ প্রদান কর, পরে অন্যান্য বানর্যাণ ও বিভীষণের নিমিত্র বাসস্থান নির্দেশ করে। রাম এইরপ আদেশ করিবামাত্র ভরত সমুদার নির্দেশ করিয়া দিলেন। অনন্তর মহাতেজা রাঘবানুক্ত কহিলেন, রঘুনাথের অভিষেকার্থ চতুঃসাগর হইতে পবিত্র জল আম্বান করিবার জন্য অতি বিক্রমণালী দৃত সকলকে প্রেরণ করন। তচ্ছুবণে কপিরাজ স্থ্রীব জাধবান, হতুমান, অঙ্গদ প্রাণ্ড ব্রবণে গ্রহণ করিবান, ভাহারাও অতি বেগো গ্রম

জনপূর্ণংশ্ছাতকুস্তকলশংশ সমানয়ন্।
আনীতং তীর্থসলিলং শক্রয়ো মন্ত্রিভিঃ সহ॥ ৬৯
রাঘবস্যাভিষেকার্থং বশিষ্ঠায় নাবেদয়ং!
ততস্ত্র প্রেণতো রদ্ধো বশিষ্ঠো আন্ধানৈং সহ। ৩৭।
রামং রত্ময়ে পীঠে সসীতং সন্ধাবেশয়ং।
বশিষ্ঠে৷ বামদেবশ্চ জাবালিরো তিমস্তথা॥ ৩৮॥
বাল্মীকিশ্চ তথা চক্রাঃ সর্বে রামাভিষেচনম্।
কুণাগ্রত্বলাযুক্তপুণ্যগন্ধজলৈমুদা॥ ৩৯॥
অভাবিঞ্চন্ রঘুশ্রেষ্ঠং বাসবং বসবো যথা।
ঋতিপ্তিপ্রশানেং প্রেষ্ঠেং কন্যাভিঃ সহ মন্ত্রিভিঃ॥
সর্বেষ্ঠারদৈশ্চব দৈবতৈণ্তিল স্থিতৈঃ।
চতুতি লোকপালৈশ্চ স্তবন্ধিঃ সগণেত্রথা॥ ৪১॥
ছত্রং চ তস্য জগ্রাহ শক্রমঃ পাণ্ডুরং শুভম্।
স্থাবরাক্ষসেক্রো তৌ দ্বতুঃ শ্বেতচামরে। ৪২।

পূৰ্বক সুৰ্বৰ্ণ কলশপূৰ্ণ জ্বল আনমন করিপ। অনন্তর শক্রম আমাতাগণ পরিস্তি ছইয়া বশিষ্ঠ দেবের নিকট রামাতিধেক বিষয় নিবেদন করিলেন। ৩০। ৩১। ৩২। ৩১। ৩৪। ৩৫।

অনস্তর ছবির বশিষ্ঠ দেব ব্রাহ্মণগণ সমভিব্যাহারে
সদীত রামচন্দ্রকে রজু সিংহাদনে উপবেশন করাইলেন,
পরে বামদেব, জাবালি, গোতম, এবং বাল্মীকি কুশাগ্রে
ও তুলদী সংবৃক্ত স্থান্ধি পৰিত্র সলিল দ্বারা রাম
চল্রকে অভিষেক করিলেন। বিষ্ণু যেমন বাদবকে অভিষেক
করিরাছিলেন দেইরূপ ঋতিক ব্রাহ্মণগণ অমাত্য পরিবৃত্ত হইরা
তাঁহাকে রাজ্যাভিষিক্ত করিলেন। দেবতা সকল নভোমণ্ডলে অবস্থিতি করিরা এবং বশিষ্ঠ, চতুর্লোকপাল ও স্বজন
প্রিত্ত হইয়া সর্ব্বেষ্ধীরদে রামচল্রকে অভিষেক করিলেন।
শক্রব ছতি শোভা সম্পন্ন খেন্ডছ্র তাঁহার মন্তকে ধারণ

মালাং চ কাঞ্চনীং বায়ুর্দদে বাসবচোদিতঃ।

সর্ব্রন্থসমাযুক্তং মনিকাঞ্চনভূষিতম ॥ ৪৩ ॥

দদে হারং নরেন্দ্রায় স্বয়ং সক্রন্ত ভক্তিতঃ।

প্রজ্ঞতের্দ্রবাস্বর্ধন নন্তুশ্চাপ্সরোগণাঃ ॥ ৪৪ ॥

দেবদুন্তুভয়ো নেতঃ পুল্পর্ফি: পপাত খাং।

নবদূর্ব্যাদলশ্যামং পদ্মপত্রায়তেক্ষণম্ ॥ ৪৫ ॥

রবিকোটিপ্রভাযুক্তকিরীটেন বিরাজিতম্।

কোটিকস্পর্গলাবশ্যং প্রতিষ্বরসমার্তম্ ॥ ৪৬ ॥

দিব্যাভরণস্পন্নং দিব্যুচন্দনলেপনম্ ।

অযুতাদিত্যসন্ধাশং দিভুজং রঘুনন্দন্ম্ । ৪৭ ।

করিলেন, স্থাব ও রাক্ষণাধিপতি বিভীষণ খেত চামর ব্যক্তন করিতে লাগিলেন। বায়ু বাসব প্রেরিড সর্বরিত্ব সম্বরিত্ব সমাযুক্ত মণি কাঞ্চন বিভূষিত কাঞ্চনী ও মালা প্রেদান করিলেন। স্বয়ং দেবরাজ ভক্তি সহকারে রয়ুপতিকে হার প্রদান করিলেন। দেব গন্ধর্ব সকলেই আগমন করিয়াছিলেন এবং অপ্যরাগণ আনন্দে স্ত্যা আরম্ভ কণিল। স্বর্গে ভুজুভি শ্বনি এবং পদ্মপ্লাশলোচন নবদ্র্বাদল শ্যাম রামচক্রোপরি অবিরল ধারার ক্সম বৃষ্টি হইতে লাগিল; কিরীট মধ্যে যেন কোটি স্বর্য্যের আভা বিরাজিত হইতে লাগিল, তাঁহার কান্তি কেন্দের ন্যায় হইল, এবং তিনি দিব্য পীতাম্বর পরিধান করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩।

ভিনি দিব্যাভরণ সম্পন্ন ও দিব্য অগুৰু চন্দনাস্থালপ্ত হুইলেন; তাঁহার বাহুদ্বমে অযুত আদিত্য সন্ধিভ আভা বহি-ভূতি হুইতে লাগিল। এবং বামভাগে বিবিধ ভূষণ বামভাগে সমাদীনাং দীতাং কাঞ্চনসন্ধিভাম্।

নর্ব্যাভরণদপরাং বামাস্কে সমুপস্থিতাম্ ॥ ৪৮ ॥
রক্তোৎপলকরান্তোজাং বামেনালিক্ষ্য সংস্থিতম্।

সর্ব্যাতিশয়শোভাচ্যং দৃষ্ট্যা ভক্তিসমস্থিতঃ ॥ ৪৯ ॥
উময়া সহিতো দেবঃ শক্ষরো রঘুনন্দনম্।

সর্বাদেবগণৈযুক্তঃ স্থোতুং সমুপচক্রমে ॥ ৫০ ॥

बियशामिव छेवाह।

নমেংস্ত রামার সশক্তিকার
নীলোৎপলশ্যামলকোমলার।
কিরীটহারাঙ্গলভূষণার
কিংহাসনস্থার মহাপ্রভার।। ৫১॥
ত্মাদিমধ্যাস্তবিহীন একঃ
সূজস্যবস্থান চ লোকজাতম্।
ত্মায়রা তেন ন লিপ্যসে তং
যৎ স্থেইজস্রতোহনবদ্যং॥ ৫২॥

বিভূষিতা হিরপায়ী জনকত্বছিত। জানকী আসীনা ছইলেন এবং রক্তোৎপল বামকর দারা সমালিসনে সর্ব্বাজিশয় পোড়া দর্শন করিয়া পিণাকপাণি মহাদেব দুশানী সমভিব্যাহারে সর্বাদেব পরিব্রত হইয়া প্রশাঢ় ভক্তির সহিত রামচন্দ্রের শুব আরম্ভ করিলেন । ৪৭ । ৪৮ । ৪৯ । ৫০।

ছে দেব! আপনি মারাশক্তাবতার সীতার সহিত অবস্থিতি করিতেছেন, আপনার কান্তি নীলকমলের ন্যায় শ্যামল ও কোমল—আপনি কিরীট, হার, কেরুর ভূষণে ভূষিত, আপনি মহাপ্রতাম্বিত সিংহাসনে উপবিষ্ঠ, আপনাকে নমস্কার করি।

লীলাং বিধৎসে গুণসম্ভত্তং
প্রপন্ধ ভক্তানু বিধানহেতা !।
নানাবভারৈঃ সুরুমানুষা দৈয়ঃ।
প্রতীয়সে জ্ঞানিভিরেব নিভ্যম্। ৫৩॥
স্থাংশেন লোকং সকলং বিধায় তৃং
বিভর্ষি চ তৃং তদধঃ ফ্লীশ্বরঃ।
উপর্যধো ভাস্বনিলোডুপৌষধীপ্রবর্ষরপোহ্বসি নৈক্ধা জ্গছ॥ ৫৪॥
তৃমিহ দেহভূতাং শিখিরপঃ
প্রচিন ভক্তমশেষমজন্ত্রম্।
প্রনপঞ্চকরপ্রহারো
জ্গদখণ্ডমনেন বিভর্ষি॥ ৫৫॥

আপুনি একাই আদি, মধ্য ও অন্ত বিহীন-আপুনি নিজ মায়ায় লোক স্ষ্টি ক্রিয়াছেন, কিন্তু স্বয়ং ঐ মারায় লিপ্ত নহেন্য আপান মায়াবারা জীবাদি স্কল করিয়াছেন এবং ঐ জীব বিনাশ প্রাপ্ত ছুইলেও আপনি ভদ্দোষ ভাগী নছেন, অতএব আপনাকে নমস্কার করি। আপনি নানা গুণপূর্ণ ছইয়া শাংণাগত ভক্তদিগোর মোক্ষ বিধানের নিমিত্ত উপেন্দ্রাদি ও রামক্কফাদি নানা অবতার দারা স্ববীয় লীলা প্রকাশ হেতু; আপনাকে নিত্য জ্ঞানীয় ন্যায় প্রতীয়মান হয়। অভএব আপনাকে নমস্কার করি। আপনি নিজ অংশে লোক সকল স্ক্রন করিয়া আধো-ভাগে কণীশ্বর এবং উপরে স্থা, বায়ু, চক্র, ব্রীফাদি, মেঘ প্রভৃতি বল্রপে অবস্থিতি করিতেছেন। ইং লগতে আপনি দেহাভাতরকু জঠরানল ইইয়া সমুদায় পরিপাক করিতেছেন; আপনি প্রাণ, অপান, সমান, উদান ও ব্যান २ इत्रा व्यानी मार्जित रे न्या अत्र मांजा। (र ज्यानीन! हता, यश छ विक् मत्या त्य ७७ छेकुछ इत्र , ठाइन्डे भद्गीतिनित्शव टेहउना, চন্দ্রহালিখিমধ্যগতং

যত্তের ঈশ! চিদশেষতনূনাম.।
প্রাভবন্তনুভূতামিই ধৈর্যাং
শৌর্যমায়ুরখিলং তব সন্ত্বুম্॥ ৫৯॥
ন্তঃ বিরিঞ্জিশিব বিষ্ণুবিভেদাৎকালকর্মশিশিস্থ্যবিভাগাৎ।
বাদিনাং পৃথগিবেশে! বিভাসি
ব্রহ্মনিশ্চিতমনন্যদিহৈকম্॥ ৫৭॥
মৎস্যাদিরপেণ যথা ঘনেকঃ।
শুন্তৌ পুরাণেষু চ লোকসিদ্ধঃ।
তথৈব সর্বাং সদস্বিভাগন্ত্রেমব নান্যন্তবতো বিভাতি॥ ৫৮॥
যদ্যৎসমুৎপর্মনন্তস্টে
উৎপৎস্যতে যুচ্চ ভবচ্চ যুচ্চ।

অনভ্তদিগের শোহা এবং ধৈষ্য, এই অথিল ব্রহ্মাণ্ডের আয়ু, কিন্তু এই সমন্তই আপনার স্বভাব। ৫১। ৫২। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ছে পর্মেশ্বর! শিবপরারণ ব্যক্তিশিবকে, বিশ্বপারণ ব্যক্তিবিশ্বকে, বিশ্বপারণ ব্যক্তিবিশ্বকে, বিশ্বপারণ লোক স্থাকে জগদীশ্বর বলিয়া অভিমান করিয়া থাকেন, বস্তুতঃ তৎ সমস্তই আপনি। প্রাণে কথিত আছে, আপনি যেমন মৎস্যাদি ভিন্ন ভিন্ন দশরপ ধারণ করিয়াছেন, শেইরূপ লোকে আপনাকে সদস্বিভাগ করিয়া থাকে। এই অনস্ত স্টিভে স্থাবর জন্মাদি যে সমুদ্য বস্তু স্ট হইরাছে, ছইছেছে ও ইইবে তৎমুদ্রের কোনটিও আপনা ছইতে বিভিন্ন বলিয়া উপলক্ষিত হয় না। মনুষ্যমাত্রই আপনার মাযায় স্মার্ভ আছে। স্ক্রাং আপানার তন্ত্রাবগত হইডে অক্ষম, কিন্তু আপনাতেই ভন্তুসংল্য আছে। ব্রহ্মাদি কেন্তুই আপনার চৈতন্যরূপ অবগত নহেন, তবে বহির্থ

न मुनारक ऋष्वतकक्रमारमी ত্য়া বিনাতঃ পরতঃ পরস্ত্রম। ৫৯। তত্ত্বং ন জানস্থি পরাত্মনস্তে শ্রনা: সমস্তাস্তব মার্য়তি:। ত্বদ্ধক্র সেবামল মানসানাং বিভাতি তত্ত্বং পরমেকমৈশম্॥ ৬০ 🛭 ব্ৰহ্মাদয়স্তেন বিদুঃ স্বৰূপং চিদাত্মতত্ত্ব বহিরর্থভাবা:। ততো বুধন্তামিদমেব ৰূপং ज्का ज्वमाकिम्टेश**डाइ:४:। ५**५। অহং ভবন্নাম গুণন্ কুতাৰ্থো वनामि कामाग्यनिषः छवाना। मृत्र्व मानसा विमुख्य दिश् দিশামি মস্ত্রং তব রামনাম ॥ ৬২ 🛭 ইমং স্তবন্ধিত্যসনন্যভক্তা খৃণ্ডি গায়তি লিখন্তি যে বৈ। তে দর্মদোখ্যং পরমং চ লব্ধা ভবৎপদং যান্ত ভবৎপ্রসাদাৎ 🛚 🐯 🤊 🖟 इस डेवाह।

রক্ষোহধিপেনাখিলদেবদৌধ্যং হৃতং চ মে ত্রহ্মবরেণ দেব !। পুনশ্চ দর্মিং ভবতঃ প্রসাদাৎ প্রাপ্তং হতো রাক্ষসমৃক্ষশক্তঃ ॥ ৬৪॥

(मवा छेट्टः।

क्ठा यक्क छाता भत्रादम्यमञ्जा मृतादत ! भटमनामिटेमट्डान विद्या ! ! इट्डारमा पृता द्या दिखाटनम् छाताः भूत्रावस्वविषास्ति युक्षस्थ्यमामार ॥ ७० ॥

পিতর উচু:।

হতোহদ্য ত্রা ছুফ্লৈড্যো নহান্তন!
গ্রাদে নরৈর্দতিপিগুদিকার:।
বলাদ্তি হতা গৃহীতা সমস্তাল
নিদানীং পনর্লন্ধসত্যা ভ্রামঃ। ১৮১

ভাবাপর ব্যক্তির ন্যার পণ্ডিভেরা জ্ঞান সমর্থ ছইয়া আগনার প্রকৃত দৃশ্যমানরপ ধ্যান করতঃ মুক্তি প্রাপ্ত ছর। হে প্রীরাম!আমি জীবন্যুক্তির জন্য জীবের নিদান সমরে আগনার রোম'নামরূপ মহামন্ত্রে ভাহাদিগকে দীক্ষিত করিব। যে ব্যক্তি অনুন্যচিত্ত ছইয়া ভক্তি সহকারে এই শুব পাঠ করে, প্রান্ত করিব। করে, অথবা লেখে, সে আগনার প্রিম্ম স্থাতা লাভ করিবা আপনার প্রদাদে আপনার পাদপ্র প্রাপ্ত ছয়। হব। হে । ১০। ১০। ১০। ১০। ১০। ১০। ১০।

ইক্স কহিলেন—হে দেব। রাক্ষসাধিপতি দশনিন একা-কর্ম্ক বর প্রাপ্ত হইরা আপনার অধিল দেবরাক্ত্যের মিউড। হরণ করিরাছিল, এক্ষণে ভবদীর প্রসাদ হেতু সেই মুফ্ট শক্ত রাক্ষস অপিনার হারাই বিনয় হইরাছে। ৬৪।

দেৰভাৱা কহিলেন—হে মুরারে, বিকো! ভূদেৰ যজ-ভাগ প্রদান করিলে বলস্বভাব রাক্ষ্যভাবা ভাহা অপদ্ধত হয়, এক্ষণে রাবণোৎপত্তির প্রাক্ষালে যেম্ম যজ ভাগ প্রাপ্ত হই-

यका উচুঃ।

সদা থিষ্টিকর্মাণ্যনেনাভিযুক্তা বহামো দশাস্তং বলাৎ দু:খযুক্তাঃ। দুরাত্মা হতো রাবণো রাঘবেশ ! ত্বয়া তে বয়ং ছু:ধজাতাদিমুক্তাই।। ৬৭।।

গন্ধৰ্ব। উচু:।

বয়ং সঙ্গীতনিপুণা গায়ন্তত্তে কথামৃতম্। আনেক।মৃতদক্ষেত্রকাঃ পূর্ণাঃ স্থিতাঃ পুরা। ৬৮ পশ্চাদ্দুরাক্সনা রাম ! রাবণেনাভিবিজ্ঞাঃ। তমেব গায়মানাশ্চ তদারাধনতৎপরাঃ ॥ ৬৯॥ স্থিতান্ত্রা পরিব্রাতা হতে হয়ং ভূফরাক্ষন। এবং মহোরগাঃ সিদ্ধাং কিন্নরা মরুতস্তথা। ৭০। ৰসবো মুনরো গাবো গুছকাশ্চ পতত্তিণঃ। मश्रकाপতয় শৈচতে ভথা চাপারদাং গণাঃ। १১।

ভাম, অন্য আপনার শ্রীচরণ প্রসাদে আমাদিলেরই সেই মজ্জীয় ভাগ হইবে। ৬৫। ৬৭।

পিতৃলোক কহিলেন—হে মহাস্মন্! অদ্য ভোমাকৰ্ছক इके रेनजा विनक्षे व्हेन, क्षे इके गन्नारकत्व मनूसानल निश्तान বলপূর্ব্বক গ্রহণ করিবা ভোজন করিত, এক্ষণে দেই পিণ্ড भूनः आख इहेव । ७৮ ।

যক্ষ কহিলেন—হে রাষবেশ! আমরা এই হুট রাক্ষ্য বর্ভুক িন্টি কম্মে প্রেরিড হইভাষ, একণে আমাদিগের অপার হুঃগ অপনোদনের নিমিত্ত আপনি সেই তুরাত্মাকে বিনাশ করিয়া- সর্কের রামং সমাসাদ্য দৃষ্ট্র। নেত্রমহোৎসবম্। স্তব্য পৃথক্ পৃথক্ সর্কৈর রাঘবেণাভিবন্দিতাঃ॥ ৭২ ययुः प्रः प्रः भन्र मर्द्य बन्तक्षकः नवस्था । প্রশংসম্ভো মুদা রামং গায়ন্তন্তন্ত চেটিতম্। ৭৩॥ ধ্য য়ন্তন্ত্ৰিষেকাদে সি তালক্ষণসংযুত্ম। সিংহা**সনস্থ: রাজেন্ত্রং য**যু**ঃ সর্বে হাদিস্থিত**ম্ । ৭৪। খে বাদ্যেষু ধনৎম্ব প্রমুদিত-क्रमरेश्रम वहरेकः खनकिः বর্ষন্তিঃ পুষ্পর্কিং দিনি মুনি-

निकरेत्रश्रीकामानः ममनार।

রাজ্যের পূর্ব্ব হইতেই আপনার অমৃত্যরী কথা গান করিয়া পুণানন্দিত ও আপনার বিষয় সন্দিহান চিত্ত হুইয়া অবস্থান করিতাম ; পরে ছে রামচন্দ্র । হরাআ। রাধণ আমাদিগকে বল পূর্বক স্ববশে আনিলেও আনবা আপনার আবাধনার ভংগর হইয়া, আপনারই সঙ্গীত গান করিতাম। এফণে আপনি সেই হুষ্ট রাক্ষদকে নিহত করিয়া মহোরগ, দিল, কিলব, মকং, বসু, মুনি, পো, গুহাক, বিহন্ধম, প্রজাপতি, অপ্সরা এবং গণ সমূহকে রক্ষা করিয়াছেন । ৬৯। ৭০। ৭১। অধুনা সকলেই রামচন্দ্রকে প্রাপ্ত হইয়া এবং তৎকর্ত্ত সকলই অভিবন্দিত হইয়া, প্রভ্যেকই মতোৎসবে তাঁহাকে তাব করিছে लाशिम।

অনস্তর, ব্রহ্মা, মহাদেব প্রভৃতি দেবতা সকল আমনন্দিত মনে রামচন্ডের প্রশংসা ও গীত সংকীর্ত্তন করিতে করিতে স্ব স্থানে প্রস্থান করিলেন ; রামচন্দ্র, সীতা ও লক্ষণের সহিত রাজ্যাভিষিক্ত হইয়া সিংহাসনে উপবিষ্ট ছইলে, সকলেই তাঁছাকে হ্বদয়স্থ করিয়া ধ্যান করিতে করিতে প্রস্থান করিল। ছেন। গ্রন্থ কহিয়াছেন, আমরা সঙ্গীত নিপুণ গন্ধর্ক রাবণ | বিমান মার্গ্রে বাদ্যধনি ছইতে লাগিল, দেবভাগা প্রমুদিত

রামঃ শ্রামঃ প্রসন্ন স্মিতরুচির-মুখঃ সুর্যাকোটীপ্রকাশঃ সীতাদে\মিত্রিবায়াজ্যজমুনি- হরিভিঃ দেব্যমানো বিভাতি । ৭৫॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
দ্বকাণ্ডে চতুর্দিশোহধ্যায়:।

লদরে স্তব করিতে লাগিল—সর্গ চইতে পুশার্কী হইতে লাগিল। মহর্ষির। ইতস্ততঃ স্তুতি পাঠি আরম্ভ করিল ; নব-নুকাদিলশ্যাম ঞীগাম প্রদার ফুইগা স্মিতমুথ ছইলে এবং সীতা, শোমিত্রি, প্রনাক্ষজ ও মুনি প্রভৃতিসকলের দ্বারাপরিসেব্যমান হইয়া কোটি স্থাঁ প্রকাশের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিলেন। ৭২।৭২।৭৪।৭৫।

ইতি জ্ঞামদধ্যাত্মরামায়নে উমামভেশ্বরসন্থাদে

্ যুদ্ধকাণ্ডে পঞ্চলোহধায়ঃ;

যোড় শো ২ ধ্যায়

श्रिशादि डेवाह।

রামেইভিষিক্তে রাজেন্দে সর্বলোকসুখাবহে।
বসুধা শাস্সম্পান্না কলবন্ধো মহীরহাঃ ॥ ১।
গক্ষহীনানি পুম্পাণি গদ্ধবন্ধি চকাশিরে।
সহস্রশতমশ্বানাং ধেন্দুনাং চ গবাং ভথা। ২।

মহাদেব কহিলেন— প্রীরাম রাজ্যাভিষিক্ত হইলে প্রজ্ঞাপুঞ্জ প্রভৃতি লোক সমৃদয় স্থাসাগরে ভাসমান হইতে লাগিল,
বস্মতি শাসপুর্ণা হইলেন, পাদপাবলি ফলবান হইল, সৌরভ
বিহীন কুস্মচন্ন সৌগন্ধ জাদান করিতে আরম্ভ করিল। রত্বনন্দন আন্দান দিগকে শত সহস্র অন্থ, হ্যাবভীবেনু প্রথমতঃ দান
ক্ষিবিলেন; পরে জিংশত কোটি স্থা মুদ্রা ও অসংখ্য ব্য বিতরণ

मत्मी भाष्ठद्रयान् श्रृक्तः विद्याला उपूनन्मनः।
जिः भाष्ट्रत्वा जिः स्वर्गस्य खाष्मत्गरणा मत्मी श्रूनः॥
विद्याण्यत्रवृत्ति खाष्मत्गरणा सूमा ज्या।
स्र्याकास्त्रिमस्थियाः मर्क्तवष्ट्रसङ्गः स्वस्य ॥ ४
स्थीवाः मत्मी खीजा बायत्वा चळ्वस्मनः।
स्वस्ताः मत्मी मित्या श्रुक्तम् ब्र्यूनस्मनः। तः।

করিলেন। অনস্তর ভক্তবৎদল লাখব যার পর নাই ছবিভ হইমা আক্ষণ দিগকে বস্ত্র, আভরণ, রত্ন, দান করিয়া কলিবাঞ্জ সুপ্রীবকে সুর্যা কান্তি সরিভ সর্পরত্বমী মালা এবং যুবগাঞ্জ অঙ্গাকে কেয়ুর প্রদান করিলেন। পরিশেষে রযুকুলভিলক চনদ্রকোটপ্রতীকাশং মনিরত্বতিত্বিতম্।
দীতায়ৈ প্রদদৌ হারং প্রতিয়া রযুকুলোত্তমঃ। ৬
অবমৃচ্যাত্মন: কণ্ঠাৎ হারং জনকনন্দিনী।
অবৈক্ষত হরীন্ সর্বান্ ভর্তারং চ মৃত্যু হঃ। १॥
রামস্তামাহ বৈদেহীমিঙ্গিতকো বিলোকরন্।
বৈদেহি। যস্য ভুকালি দেহি উন্মৈ বরাননে। ॥।
হন্মতে দদৌ হারং পশ্যতে রাঘবস্য চ।
তেন হারেণ শুশুভে মারুতিগৌরবেণ চ।। ৯
রামোহিলি মারুতিং দৃষ্ট্যা কুভাঞ্জালিমুপস্থিতম্।
ভক্ত্যা পরময়া ভুক্ট ইদং বচনমন্ত্রীৎ। ১০।
হন্মংত্তে প্রসম্লোহন্মি বরং বরর কাঞ্জিতম্।
দাস্যামি দেবৈরলি যদ্ তুল্ভং ভুবনজারো। ১১।
হন্মানমিল তং প্রাহ্ নত্বা রামং প্রক্রেট্রীঃ।

শ্রীরাম কোটিচন্দ্র প্রভাষিত মণিরত্ব বিভূষিত হার সহাস্যাস্যের সীভার কঠদেশে প্রদান করিলেন, জ্বনক নন্দিনীও বামর-গণ ও রাম সমক্ষে আপনার কঠ হইজে হার উন্মুক্ত করিয়া ভাহাদিশ্যের প্রতি বাবস্থার নয়নপাত করিছে লাগিলেন। ১।

জীরাম বৈদেছীকে ইলিতে অবলোকন করিয়া কহিলেন,
তে বরাননে! তুমি যাহার প্রতি পরিতৃষ্টা আছ ভাষাকে হার
প্রদান কর। অমনি বিদেহ পুত্রী-সীতা রাম সমক্ষে হয়মানকে রত্ত্বার প্রদান করিলেন, মাক্ষতি দেই রত্ত্বারে
স্থাোভিড হইল। ব্র্যুনন্দন প্রনক্ষারকে প্রণাঢ় ভক্তি
সহকারে ক্রতাঞ্জলিপুট ছইয়া সীর সন্নিধানে উপনীত
সন্দর্শন করিয়া অতি সক্ষোষ চিত্তে ভাষাকে বলিলেন—হে
হর্মন্: আমি ভোমার উপর প্রসন্ন হইয়াছি, অভতার এই
ত্রিত্বন মধ্যে দেব হল্লভি বর প্রার্থনা কর আমি ভোমাকে
প্রদান করিব। ৮। ৯।১০।১১।
হত্ত্যাম প্রহৃত্তি প্রঃসর জীরাসকে কহিল, হে

ত্বরামন্দ্রতোরাম। ন তৃপাতি মনো মন। ১২।
অভত্তরাম সততং নারন্ স্থাস্থামি ভূতলে।
যাবৎ স্থাসতি তে নাম লোকে তাবৎকলেবরম্।
মম তির্চ্চ রাজেন্দ্র! বরোহরং মেহ তিকাজিকতঃ
রামন্তথেতি তং প্রাহ মুক্তন্তির্চ্চ যথামুখম্॥ ১৪॥
কণ্ণান্তে মম সায়ক্ষাং প্রাপ্রসাদে নাত্র সংশারঃ।
তমাহ জানকী প্রীতা যত্র কুত্রাপি মারুতে।॥
স্থিতং তামনুষাসান্তি ভোগাং সর্ব্বে সমাজ্রা।
ইত্যুক্তো মারুতিস্তাভাগং ঈশ্বরাভাগং প্রক্রমীঃ।।
আনন্দান্ত্রপরীতাকো ভূরোভূরঃ প্রণমা তে।।
কৃচ্ছাদ্যথো ভপত্তপুং হিমবন্তং মহামতি:॥ ১৭॥
ততো গুহং সমাসাদ্য রামঃ প্রাক্তবিরমনুত্রমম্॥ ১৮
সেখে। গচ্চ পুরং রম্যং শ্লিবেরমনুত্রমম্॥ ১৮

রঘুনন্দন! আপনার নাম শ্বনণ করিরাও আমার ভৃতি হয়না.
অতএবইছলোকে আপনার নাম যত দিন থাকিবে আমিও তাহা
আমরণ নতত শ্বনণ করিয়া অবস্থিতি করিব—ছে রাজেন্দ্র!
মদাকাখিত এই বর আমাকে প্রদান ককন, রামচন্দ্র 'তথাজ্ব'
বলিয়া তাহাকে কহিলেন—ভূমি কীব্যুক ছইমা যথা প্রথে
অবস্থান কয়; কপ্পান্তে—ভূমি নিঃসন্দেহই আমার সাযুক্তা
প্রাপ্ত হইবে, অমনি আনকীও কহিলেন—হে মাকতে! ভোগ
সমূছ আমার আজ্বুসারী হইয়া তোমার অন্থ্যমন করিবে।
উহার এইরপ কহিলে প্রক্রন্তামনা মহামতি প্রন্দন আনক্রেক্তপ্নি নর্বন ইইয়া স্পীত রামকে ব্রিস্থার প্রণাম করতঃ
রাম ধর্মন বিরোগ ছেতু তপ্রা করণভিলাবে হিমালয়াত্তিমুখে প্রস্থান করিল। ১২। ১৬। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭।

অনন্তৰ রামচন্ত্র গুছককৈ প্রাপ্ত ইইরা বন্ধাঞ্জলি পূর্বক উছোকে কহিলেন—হৈ সংখ! ভূমি অভ্যন্তম শ্লিবের পুরিতে গমন পূর্মক আমাকে অফুল্প চিন্তা করতঃ যোগার্জিউ মানেব চিন্তয়য়িতাং ভুংক্ষা ভোগায়িকার্জিতান্।
ভাজে মনৈব সার্বপাং প্রাথ্যসে ছং ন সংশয়ঃ।১৯
য়ত্যুক্ত্বা প্রদদে তিমা দিব্যান্যাভরণানি চ।
রাজ্যং চ বিপুলং দক্ত্বা বিজ্ঞানং চ দদে বিভুং।২০।
য়ানেণালিকিতো ক্রফো যমে সভবনং গুয়ঃ।
যে চান্যে বানরাঃ প্রেষ্ঠা অযোধ্যাং সমুপাগতাঃ॥
অমূল্যভেরণৈর্বস্তৈঃ পুজয়ামাস রাঘবঃ।
ফ্রীবপ্রমুখাঃ সের্ব্র বানরাঃ সবিভীষণাঃ। ২২ ॥
ঘথার্হং পুজিতান্তেন রামেণ পর্মাত্মনা।
প্রক্রিমনসঃ দর্ব্রে জ্মারেব ঘথাগতম্॥ ২৩॥
স্থীবপ্রমুখাঃ সর্ব্রে ক্রিক্ষ্যাং প্রযুমুনা।
বিভীঘণস্ত সম্প্রাপ্য রাজ্যং নিহ্তকন্টকম্॥ ২৪॥
রামেণ প্রজিতঃ প্রীত্যা যমে লক্ষামনিন্দিতঃ।
রাঘবো রাজ্যমথিলং শশাসাথিলবৎসলঃ॥ ২৫॥
আনিক্টয়পি বামেণ যৌবরাক্যেইভিষেচিতঃ।

জন্ন ভোগা কর, পরে মৃত্যু সময়ে আমার সাযুজ্য নিশ্চরই প্রাপ্ত হইবে। এই বলিয়া তিনি তাছাকে দিব্য ভূষণ, বিপুল রাজ্য এবং বিজ্ঞান প্রদান করিয়া আলিক্ষন করিলেন; গুছ রামালিঙ্গনে আছ্লাদিত হইয়া স্বভবনে প্রস্থান করিল। অপ-রাপর যে সমস্ত বানর শ্রেষ্ঠ অযোধ্যার উপনীত হইয়াছিল, রাঘব ভাছাদিগকে অমূল্য বস্ত্র ও আভরণ দাবা পূজা করিলেন। ১৮। ১৯। ২০। ২১।

সূত্রীব প্রভৃতি সমস্ত বানর শ্রেষ্ঠ ও বিভীষণ পরমান্ত্রা রাঘব কর্ত্বক পূজিত ছইয়া আনন্দিতান্তঃকরণে যবাস্থানে প্রস্থান করিল; পরে স্থাবাদি বানরগণ কিছিক্যা নগরীতে গামন করিল; বিভীষণ নিজ্পীক রাজ্য প্রাপ্ত ছইয়া রাম কর্ত্বক সানন্দে পূজিত ছওনানন্তর লহাভিমুখে প্রস্থান করি-লেন। অধিল বৎসল রাঘব সমস্ত রাজ্য শাসন করিতে লক্ষনণঃ পরয়া ভক্তা রামদেবাপরোহতবৎ ॥ ২৬॥
রামন্ত পরমাত্মাপি কর্মাধ্যক্ষোহপি নির্মালঃ।
কর্ত্তিত্বাদিবিহীনোহপি নির্মিকারোহপি সর্বাদা ॥২৭
স্থানন্দেনাপি তুইং সন্ লোকানামুপদেশক্রং।
অধ্যেধাদিযকৈশ্চ সবৈ বিপুলদক্ষিণঃ ॥ ২৮ ॥
অধ্যত্তপরমানন্দো মান্তবং বপুরাশ্রিতঃ।
ন পর্যাদেবিশ্বধবা ন চ ব্যালক্তং ভয়ম্॥ ২৯॥
ন ব্যাধিকং ভয়ং চাসীদ্রামে রাজ্যং প্রশাসতি।
লোকে দম্যভয়ং নাসীদনর্ধো নাস্তি কশ্চন ॥
রদ্ধেরু সৎস্থ বালানাং নাসীন্মৃত্যভয়ং তথা।
রামপ্রজাপরাঃ সর্ব্বে সর্বের রাঘ্বিচন্তকা ॥ ৬১॥
বর্ষ র্ল্জনান্তোয়ং যথাকালং যথাক্রিছ।
প্রসানির রামোহপি জুগোপ পিতৃবৎপ্রজাঃ।
সর্বলক্ষণসংযুক্তাঃ সর্ব্বধর্মপরায়ণাঃ। ৩৩।

লাগিলেন এবং লক্ষ্মণদেব অনিচচুক থাকিলেও প্রীরাম ঠাহাকে যেবিবরাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন, কিন্ত তিনি দৃঢ় ভক্তির সহিত রামচন্দ্রের সেবামুরক্ত হইলেন। নির্মাল পর্মাত্মা রামচন্দ্র কার্যাধ্যক হইলেও, অনুক্রণ নির্দ্ধিনানী ও বিকার শূন্য হইরা স্বকীরানন্দে লোকদিগকে উপদেশ দিবার জ্ঞান বিপুল দক্ষিণার সহিত, যজানুষ্ঠান করিলেন। ।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।২৭।২৮।

দেহ সম্বলিত প্রমানন্দ রাসচন্দ্র লোকরঞ্জন করিতে লাগিলেন, রাজ্ঞা মধ্যে সর্প, ব্যান্ত, অনার্থিভিয়, ব্যাধি, দক্ষ্য ও অনর্থ ভয় তিলান্ধি মাত্র ইছিল না। ব্রন্ধিগের মধ্যে বালকদিগের মৃত্যু ভয় পরিশূন্য হইল এবং পকলেই রাঘ্ব চিন্তাপর ইইয়ারামপূজায় নিরত হইল। মেঘ সন্থে জল দান করিতে লাগিল, বর্ণাশ্রম প্রস্থাপঞ্জা স্বধ্য নিরত

দশবর্ষসহস্র। পি রামেশ রাজ্যমুপাক্ত সঃ॥ ৩৪॥

ইদং রহস্তং ধনধান্যক্ষদ্ধিন্দ্।

দীর্ঘাধুবারোগ্যকরং স্থুপুন্যদম্।

পবিত্রমাধ্যাত্মিকসংক্তিতং পুরা

রামারণং ভাষিতমাদিশস্তুনা । ৩৫ ।

স্বাোতি ভক্ত্যা মন্তুজ্ঞ মানসং।

ভক্ত্যা পঠেদা পরিভুক্তমানসং।

সর্বাঃ সমাপ্নোতি মনোগতাশিষো

বিমূচ্যতে পাতককোটিভিঃ ক্ষণাৎ । ৩৬ ।

রামাভিষেকপ্রয়তঃ শুণোতি যো

ধনাভিলাষী লভতে মহদ্ধনম্।

পুল্রাভিলাষী স্তুতমার্যসম্মতং

প্রাপ্রোতি রামারণমাদিতঃ পঠন্ ॥ ৩৭ ॥

শূণোতি যোহধ্যাত্মিকরামসংহিতাং

হইন। রামচন্দ্র ভাষাদিগকে পুদ্রবৎ স্থেষ্ট্র করিতে লাগি-লেন, সর্বলক্ষণ সম্পান্ন সর্বা ধর্মপরায়ণ প্রজ্ঞারাও তাঁছাকে পিতার ন্যার ভক্তি প্রদর্শন করিতে লাগিল। দাশর্থি দশ সহস্র বংসর রাজ্য শাসন করিয়াছিলেন। পূর্বের মহাদেব স্থাং ধন ধান্য সমৃদ্ধি সম্পার দীর্ঘ জীবনারোগ্যকারী স্থপুণাদ, পবিত্র আধ্যান্মিক রামায়ণ বর্ণনা করিয়াছিলেন। ২৯।৩০। ১১।৩২।৩০।৩৪।৩৫।

শে ব্যক্তি সমাহিত চিত্তে রামারণ শ্রবণ এবং প্রিতৃষ্ট মনে ও ভক্তির সহিত পাঠ করে, সে বাক্তি সর্ব্ব প্রকার আলীর্বাদ প্রাপ্ত হইয়া কোটি কোটি পাপ হইতে তৎক্ষণাৎ বিমৃক্ত হয়। যে বাক্তি অর্থাভিলাষী হইরা শ্রীরামের অভিধ্যক বিষয় স্মত্তে শ্রবণ করে, সে বিপুল ধন প্রাপ্ত হয়। যে পুশ্রাশয়ে রামারণের আদান্ত পাঠ করে সে শিষ্ট সম্মত পুল্র লাভ করে। যে রাজা আধ্যান্মিক রাম সংহিতা শ্রবণ

প্রাপ্রোতি রাজা ভুবমৃদ্ধদশদম্। শক্রবিদ্যত্যারিভিরপ্রধর্ষিতে।। ব্যপেতদুংখো বিজয়ী ভবেরুপং॥ ৩৮॥ ব্রিয়োহপি শ্ণুস্ত্যধিরামসংহিতাং ভবন্তি তা জীবস্থতাশ্চ পৃক্তিতাঃ। বন্ধ্যাহপি পুত্ৰং নভতে মুৰপিণং কথামিমাং ভক্তিষুতা শূণোতি যা।। শ্রহান্বিতো যং শ্রহাৎপঠেররো বিজিতা কোপং চ তথা বিমৎসরঃ। पूर्गानि मर्सानि विकिट्य निर्ह्या ভবেৎ সুখী রাঘবভক্তিসংযুতঃ।। ৪০। মুরা: সমস্তা অপি गান্তি তুইতাং বিয়াঃ সমস্তা অপ্যাত্তি শৃণুতাম্ । অধ্যাত্মরামায়ণমাদিতো নৃণাং ভবন্তি সর্কা অপি সম্পদঃ পরাঃ। ৪১। রজস্বা বা যদি রামতৎপরা

করেন, তিনি সমস্ত শক্ত বিনাশ করিয়া ও সর্ব্য হৃঃথ ছইকে উত্তীর্ণ ছইয়া অতুল প্রেশ্বর্যা প্রাপ্ত হন। যে নকল কামিনী অধাক্ষরামায়ণের আখ্যান শ্রবণ করে, ভাছারা জীবস্থতা দারা পৃষ্ঠিতা হয়; যে বন্ধ্যা জী ভক্তি সংযুক্তা হইয়া রামায়ণ কথা শ্রবণ করে, সে অভিলাষ অমুরূপ সন্তান লাভ করে, যে নর জীরামের উপর ভক্তি প্রদর্শন পূর্ব্বক বিশুদ্ধ চিত্তে রামায়ণ কথা শ্রবণ বা পাঠ করে, সে বিমৎসর, কোপ ও সর্ব্ব হুঃথ জয় করিয়া পরম স্বন্ধ লাভ করে। রামায়ণ অধ্যয়ন বা শ্রবণ করিলে দেবভারা পরিতৃষ্ট হয়েন, বিশ্ব সমুদায় বিনষ্ট ও সর্ব্ব সম্পাদ সম্পান্ন হয়। যদি রাম ভৎপরা রজন্মণ কামিনী রামায়ণ শ্রবণ করে, তৎপ্রেসবিত পুত্র শ্বয়িদ্গের ন্যায় দীর্ঘ

শৃংগতি রামায়ণমেতদাদিতঃ।
পুত্রং প্রস্তুতে ঋষভঞ্জিরায়ুষং
পতিব্রতা লোকস্পুজাতা ভবেৎ। ৪২।
পুজরিয়া তু যে ভক্ত্যা নমক্ষুব নি নিতাশঃ।
সর্বৈণ পাপৈর্বিনিমুক্তা বিক্ষোর্যান্তি পরং পদম্
অধ্যাল্লরামচরিতং কংশং শ্বৃনি ভক্তিতঃ।
পঠিত বা স্বয়ং বক্তান্তেষাং রামং প্রদীদ্ভি ॥৪৪
র ম এব পরং ব্রহ্ম তিশ্মংস্তুটেইখিলাত্মনি।
ধর্মার্থকামমোকাণাং যদাদিচ্ছাত্ত তন্তবেৎ॥ ৪৫
শ্রোত্বাং নিয়মেনৈত্দ্রামায়ণমখণ্ডিতম্।
ভারেষ্যমারোগ্যকরং কল্পকোট্য্যনাশনম্॥ ৪৬।
দেবাল্চ দর্বে তুর্যন্তি গ্রহাং দর্বে মহর্ষয়ঃ।

রামারণন্য প্রবনে তুষান্তি পিতরন্তথা। ৪৭।

অধ্যাত্মরামারণমেতদন্ত তং

বৈরাগ্যবিজ্ঞান্যতং পুরাতনম্।

পঠন্তি শৃণুন্তি লিখন্তি যে নরা—
স্তেমাং ভবেহস্মিন্ন পুনর্ভবো ভবেহ। ৪৮।
আলোড্যাথিলবেদরাশিমসক্ষণ্যতারকং ক্রমা
তদ্যামো বিষ্ণুরহস্যমূর্ত্তিরিতি যো বিজ্ঞান্ন-ভূতেশ্বঃ
উদ্ব্যাথিলদারসংগৃহমিদং সংক্ষেপ্তঃ প্রস্কৃতং
শ্রীরামস্ত নিপূত্তজ্বমথিলং প্রাহ প্রিয়ার্থৈ ভবং।৪৯
ইতিশ্রীমদ্ধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে

ভীবন প্রাপ্ত হয়, এবং পতিব্রতা রমণী সর্বলোক পূজিতা হয়েন। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪০। ৪১। ৪২। মাহারা ভক্তি সহকারে গদ্ধপুল্প দারা রামচন্দ্রকে নিত্য পূজা করিয়া নমক্ষার করে, তাহারা সর্ব্ব পাণ হইতে বিমৃক্ত হইয়া বিষ্ণুর পরম পদ লাভ করে, যিনি অধ্যাত্ম প্রীরামের চরিত্র বিশুজ চিত্তে ও ভক্তির সহিত অধ্যয়ন বা ত্ময়ং বর্ণনা করেন, প্রীরাম ঠাহার উপরে পরিতৃষ্ট হয়েন। রামচন্দ্র স্বয়ং পরমক্রন্ম, তিনি তৃষ্ট থাকিলে অথিল সংগার সম্ভূষ্ট থাকে, এবং ধর্মার্থ কাম মোক্ষ প্রোপ্ত হওয়া মায়; এই অথিতেত অধ্যাক্ম রামায়ণ পরমায় রিজি, রোগ অপনোদন, ও কোটি কম্প পাপ জনিত নিরয়গমন নিবারণ করে, অতএব নিরমিতরূপে ইহা প্রবণ করা কর্ত্ব্য। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬।

রামারণ শ্রবণ করিলে দেবতা, গ্রহ, শ্ববি এবং পিতৃলোক সমস্ত সন্তোধ লাভ করিরা থাকেন। যাঁহারা বৈরাগ্য বিজ্ঞান যুক্ত পুরাতন অধ্যাত্ম রামায়ণ অধ্যয়ন করেন, গ্রবণ করেন এবং লিখেন এই ভবসংসারে ভাঁহালিগার আর পুন জন্ম হর না। ভূতেশ্বর মহাদেব স্বয়ং অখিল বেদরালি বিলোড়ন করিয়া তারকত্রদ্ধ শ্রীরামকে বিষ্ণুব রহস্য মৃত্তি অবগত হইরা, উপনিষদের সারভূত অর্থ সংগ্রহ পূর্ম্বক, তাঁহার এই নিগুড় তত্ম ভবানীকে সংক্ষেপে কহিয়াছিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯।

যুদ্ধকাণ্ডে যোড়শোহধ্যায়ঃ।

ইতি **জ্ঞান**ধ্যাত্মরামারতে উমামহেশ্বরসন্থানে

যুদ্ধকাণ্ডে যোড়শোহধ্যারঃ।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে যুদ্ধকাও সমাপ্তঃ

উত্তর কাণ্ডম।

জয়তি রঘুবংশতিলকঃ কোশন্যাহ্রদয়নন্দনো রামঃ
দশবদননিধনকারী দাশরথিঃ পুগুরীকাক্ষঃ। ১।
পার্ববভূবোচ।

অথ রামঃ কিমকরোৎকোশল্যানন্দবর্দ্ধন:।

হণ্যা মৃথে রাবণাদীন রাক্ষণান্ ভীমবিক্রমঃ ?। ২।
অভিধিক্তস্ত্রেয়াধ্যায়াং সীতরা দহ রাঘবঃ।
মায়ামান্ন্যভাং প্রাপ্য কতিবর্ষাণি ভূতলে ?॥ ৩
ভিতবান্ লীলয়া দেবঃ প্রমাত্মা সনাতন:।
অত্যজন্মান্ন্যং লোকং কথমন্ত্রে রঘূদ্ধহঃ ?। ৪।
এতদাখ্যাহি ভগবন্! শ্রাদ্ধত্যা মম প্রভো!।
কথাপীয়্বমান্ধান্য ভূঞা মেহতীব বর্দ্ধতে।
রামচক্রমা ভগবন্! ক্রহি বিস্তরশং কথাম্। ৫।

দশানন নিধনকারী পুঞ্রীকাক্ষ রঘুবংশ ভিলক কেশিল্যা-হৃদয় নদন দাশরথি রামের জন্ম হউক।

পার্কতী মহাদেবকে বলিয়াছিলেন—কৌশলাগনন বর্জন অনিত তেলা জীরাম দশানন প্রভৃতি রাক্ষসদিগকে যুদ্দে বিনাশ করিবার পর আব কি কি কার্য্য করিয়াছিলেন ? রঘুবংশগবতংশ রামচন্দ্র অবোধ্যায় সীতার সহিত রাজ্যে অভিবিক্ত হইয়া মায়ামান্ত্র রূপে আব কভ কাল এই ধরাধামে অবস্থিতি করিয়াছিলেন? পারমবন্ধ সনাতন শীরাম স্বকীয় শীলায় অবস্থান করিয়া ইহলোক কি স্কপে পরিতাগে করিলেন ? হে ভগবন!রামচন্দ্রের অমৃত্যয়ী কথা শ্রবণে, তাঁহার বিষম্ন অবগত হইবার জন্য আগনার পিপাসা উত্তরোভ্র বন্ধিত ইইতেছে অভএব উক্র বিষয় বর্ণন করিয়া আমার কোত্হল পরিতৃপ্ত ক্রন। ১। ২। ৩৪।৫।

बिमहारम व डेवाह।

রাক্ষসানাং বধং কৃত্বা রাজ্যং রাম উপস্থিতে।

আয়েযুর্নয়ং সর্বে জীরামমতিবন্দিতুম্। ৬।

বিশ্বামিত্রাহসিতং কণ্যেদুর্ব্বাসা ভৃগুরঙ্গিরাং।
কশ্যপো বামদেবোইত্রিস্তথা সপ্তর্গরিহাং।
আগস্তঃ সহ শিব্যৈক মুনিভিঃ সহিতোইভ্যগাৎ।
আহি রামায় মুনয়ঃ সমাগত্য বহিঃস্থিতাং।
আগস্তঃপ্রমুখাঃ সর্বে আশীর্ভির্জিনন্দিতুম্॥ ৯॥
প্রতিহারস্তারীদ্বাক্যং বিন্যাবনতঃ প্রভুম্॥ ১০॥
নমক্ত্যারবীদ্বাক্যং বিন্যাবনতঃ প্রভুম্॥ ১০॥

মহাদেব কহিলেন—জীরামচন্দ্র রাক্ষণ দিগকে বিনাশ করিয়া রাজ্য মধ্যে উপনীত হইলে, মহর্ষি বিশ্বামিত্র, অসিত্ত, কণ্, হর্কাদা, ভৃগু, অন্ধিরা, কশাপ, বামদেব, অত্তি ও আগর আর মহর্ষি তাঁহাকে অভিবাদন করিবার জন্য অবোধ্যায় আদিরা উপন্থিত হইলেন ; পরে অগস্ত্যমুনি শিষ্যগণ পরিরত হইয়া রামচন্দ্রের ঘারদেশে উপনীত হইয়া হারপাণকে কৈহিলেন—তুমি সত্তর গিয়া রামচন্দ্রকে বল যে, অগস্ত্য প্রভৃতি মুনিশ্রেদণ আপনাকে আশীর্কাদ ঘারা অভিনন্দন করিছে আগমন করিয়া বহিদ্বারে দণ্ডায়মান রহিয়াছেন। প্রতিহারী আগস্তোর বাক্য প্রবণানস্তর ক্রভপদে রামসন্ধিরানে গমন করিয়া নমস্কার পূর্বক কৃতাভ্নিপ্রে কহিল, প্রতে।! অগস্ত্য প্রভৃতি

কুতাঞ্জলিকবাচেদমগম্যো মুনিভিঃ সহ।

দেব ! স্দর্শনার্থায় প্রাপ্তো বহিরপস্থিতঃ ॥ ১১॥

ভমুবাচ দ্বারপালং প্রবেশয় যথাস্থ্যম্।

পূজিতা বিবিশুর্কেশ্ম নানারত্বিভূষিতম্।। ১২॥

দৃষ্ট্বী রামো মুনীন্ শীন্তং প্রত্যুত্থার কুতাঞ্জলিং।

পাদ্যার্য্যাদিভিরাপুজ্য গাং নিবেদ্য যথাবিধি ॥১০

নত্বা তেভ্যো দদৌ দিব্যান্যাসনানি যথাহ ভঃ।

উপবিষ্টাঃ প্রাক্তাশ্চ মুনয়ো রামপ্রজ্ঞাঃ ॥ ১৪॥

সংপৃষ্টকুশলাঃ সর্কে রামং কুশলমক্রবন্।

কুশলং তে মহাবাহো! সর্ক্ত্রে রত্মনদ্দন !॥ ১৫॥

দিন্টোদোনীং প্রপ্রশ্রামে হতশক্রমরিন্দম !।

নহি ভারঃ স তে রাম। রাবণো রাক্ষসেশ্বঃ ॥ ১৬

দধনুত্তং হি লোকাংস্ত্রীন্ বিক্রেতৃং শক্ত এব হি।

দিন্ট্যা দ্বরা হতাঃ দর্বের রাক্ষনা রাবণাদয়ঃ॥ ১৭

সহামেতঝহাবাছো! রাবণম্য নিবহণম্।
অম্বর্থেতিৎ ক্র্রাপ্তর্গাদয়ে মুধে।
অন্তর্গতিমর্ব্রাণেই তাল্তে রাঘুনত্তম!॥ ১৯॥

দতা চেয়ং দ্বরাহ্মাকং পুরা ক্রভ্রন্দিনা।

হত্যা রক্ষোপণান্ সল্প্রে ক্রতক্তোহদ্য জীবনি॥২০

ক্রান্ত্রিমং পরমং গত্তা রামঃ প্রাক্রির্ব্রবীৎ॥২১॥

রাবণাদীনতিক্রম্য কুন্তক্ণিদিরাক্ষনান্।

ত্রিলোকজয়িনো হিত্যা কিং প্রশংনথ রাবণিম ?॥

মহর্ষিগণ আপসনাকে দর্শন করিবার অভিলাবে দারদেশে উপস্থিত গইরাছেন। প্রতিহারী বাক্য শ্রবণ করিয়া রামচন্দ্র কহিলেন, প্রমসমাদরের সহিত তাঁহাদিগকে পথ প্রদর্শন পূর্বাক বিবিধ মণি মাণিক্য থচিত উত্তম গৃহ মধ্যে আনয়ন কর: ১১।১২।

অনন্তর রামচন্দ্র মহর্ষিদিগকে অবলোকন করিয়া বন্ধাক্রেলি হওত শীত্র গাত্রোপান করিলেন; এবং পাদার্য্যিদি দারা
পূজা করণানন্তর মধুপর্কার্থ বৃষক্ত বিধানামুসারে নিবেদন করিয়া
সাফাঙ্গে প্রণিপাত পূর্বেক যথাযোগ্য আসন প্রদান করিলেন
এবং তাঁহোরা রাম কর্ত্তক পূজিত হইয়া সানন্দ চিত্তে উপবেশন করতঃ জ্রীরামকে অনাময় জিজাগা করিতে লাগিলেন—হে
মহাবাহো রঘুনাথ! আপনার সমস্ত মঙ্গল ত ? হে অরিন্দম!
অধুনা আহ্লাদের বিষয় যে, শক্রু নিপাত হইয়াছে। হে
রামচক্র! রাক্ষ্যাধিপতি রাবণ আপনার আর ভারস্ক্রপ
নাই। আপনি ধনুপ্রতিণ করিলে স্বর্গ, মর্ত্ত ও পাতাল এই
জিত্বন ক্রম করিতে নিশ্চরত্ব সমর্থ হন, দেশুন আপনি রাব-

ণাদি রাক্ষদগণকে অবলীলাক্রমে নিপাত করিয়াছেন; সে মহাবাহো। আপনি অনায়াদেই রাবণ বিনাশ করিয়াছেন, কিন্তু রাবণি ইন্দ্রজিতের মৃত্যুতেই অসহ্য হইয়াছিল; হে রঘুসত্তম! সমরান্ধনে কুন্তুকর্ণ প্রভৃতি রাক্ষ্ণেরণ কালান্তকের ন্যায় প্রতীয়মান হইয়াছিল বটে কিন্তু আপনি কালোপম শর নিক্ষেপে ভাহাদিগকে অনারাদে বিনম্ভ করিয়াছেন। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯।

পূর্ব্বে আপনি আমাদিগকে অভয়দান করিয়াছিলেন, এক্ষণে রক্ষঃনিগকে যুদ্ধে নিহত করিয়া তাহার সফলতা সম্পন্ন করিয়াছেন। অতএব অদ্য কুতকুত্য হইয়া আপনার জীবন শ্লাখনীয় ছইল। ঈশ্বরপরায়ণ বিশুদ্ধচেতা মুনিদিগের বাকা শ্রাবণ গোচর করিয়া বিশ্বয়াপন্ন হইয়া রামচক্ষ কৃত্যগুলিপুটে বিনীভ ৰচনে কহিলেন, আপনারা স্বর্গ, মর্ত্ত, পাতাল বিজ্ঞাই আমিতকেন্ডা দশানন ও অভুল বল্পালী কুন্তুকর্গকে অভিক্রম করিয়া কি কারণে রাবণিকে এত প্রশাস্থা করিতেছেন?

ততসদ্ধনং প্রার্থিবিদ্য মহাত্যুনঃ।

কুন্তবানির্মহাতেজা রামং প্রতিয়া বচাহত্তবীৎ।

শ্রাম! যথা রতং রাবণে রাবণদ্য চ।

জন্মকর্মবরাদানং দজ্জেকপাদ্যদতো মম॥ ২৪॥
পুরা কৃত্যুগে রাম! পুলস্ত্যো ত্রাহ্মণঃ মৃত্যঃ।
তপস্তপ্তং গতো বিদ্বান্ মেরোঃ পাশ্বং মহামতিঃ
ভূগবিন্দোরাপ্রমেহনে। ন্যবসন্মুনিপুঙ্গবঃ।
তপস্তেপে মহাতেজাঃ স্বাধ্যায়নিরতঃ দদা॥ ২৯
তত্তাপ্রমে মহারম্যে দেবগদ্ধবিদন্যকাঃ।
গায়ন্ত্যো নন্তৃস্তত্ত হদন্ত্যো বাদয়ন্তি চ॥ ২৭
পুলস্ত্যম্য তপো বিদ্বং চক্রুঃ সর্বা অনিন্দিতাঃ।
ততঃ ক্রুদ্ধো মহাতেজা ব্যাজ্যার বচো মহৎ ২৮
যা মে দৃ্ষ্টিপ্রথং গজ্ছেৎ দা গর্তং ধার্যিষাতি।
ভাঃ সর্বাঃ শাপ্সমিগ্রা ন তং দেশং প্রচক্রমঃ। ২৯

অন্তর মহামতি রাঘবের স্কৃণ বাক্য প্রবণ করিরা
মহাতেজ। ক্তবোদি অন্তা শ্রীরামকে প্রদা করিরা
কহিলেন—হে রঘুনন্দন! দশাননাস্থাজ ইম্পজিতের জন্ম কর্ম
ও বর্ধাদির রভান্ত সংক্ষেপে কহিতেছি, মনোনিবেশ পূর্বক
প্রবণ করুন।—হে রঘুনাথ! সভার্গে ব্রহ্মাপুত্র ক্রতবিদ্য
মহাত্মা পুলস্তামুনি তপাসা করিবার নিমিত্ত মহাপ্রবিত্র
পার্থ দেশে গানন করিরাছিলেন। খ্যিসভান ভ্গবিন্তর স্থাপ্রম মধ্যে অবস্থিতি করিয়া অনুক্ষণ কঠোর তপাসা করিতে
পারন্ত করিলেন; কিন্ত ঐ মহারণ্য মধ্যে দেব ও গান্ধর্বকন্যারা
প্রতানলরে স্মধুর সঙ্গীত, নৃত্যাদাদি দ্বারা আমোদ
প্রমোদ করিত: এইরপে ভাষারা পুলস্ত্যের তপোবিদ্ধ করিতে
শাগিল—সন্তর মহাতেজন্মী মহর্ষি ভপস্থার বিশ্বাবলোকনে
ক্রোধ পর্বতন্ত্র হইয়া এই অভিশাপ করিলেন যে, যে আমার
দৃষ্ট প্রথ উপাণ্ড হইবে ভাছাকেই গার্ত্রধারণ করিতে ইইবে, তৃণবিন্দান্ত রাজর্ষেঃ কন্যা তর্যাশ্রোছিচঃ।
বিচ্চার মুনেরত্রে নির্ভরা তং প্রপশ্যতী। ৩০।
বন্তুব পাঞ্রতন্মর্রাঞ্জিভান্তঃশরীরক্ষা।
দৃষ্ট্যা সা দেহবৈবর্ণং ভীতা পিতরমন্বর্গাৎ॥ ৩১।
তৃণবিন্দুশ্চ তাং দৃষ্টা রাজর্ষিরমিত্ত্যুতিঃ।
ধ্যান্থা মুনিক্তং সর্বমবৈদ্ধিক্তানচক্ষুষা। ৩২।
তাং কন্যাং মুনিবর্ষার পুলস্ত্যায় দদে পিতা।
তাং প্রগৃহাত্রবীৎকন্যাং বাঢ়মিত্যেব স দ্বিভঃ।
দাস্যামি পুলমেকন্তে উভয়োর্বংশবর্ষান্ম। ৩৪
ততঃ প্রান্থত সা পুলং পুলস্ত্যালোকবিশ্রুতম্।
বিশ্রবা ইতি বিধ্যাতঃ পৌলস্ত্যো ভ্রদ্বিনুমুনিঃ॥

কিন্তু তাহার। শাপ্রাপ্তাহ হইয়াও ঐ মহারণ্ পরিত্যান করিল না। ২০ । ২৪। ২৫ । ২৬ । ২৭ । ২৮ । ২৯ ।

মহামুনি এইরপ অভিশক্ষাত প্রদান করিলেন বটে কিও রাজর্মি তৃণবিন্দুর কন্যা ঐ বাক্য প্রবণ করে নাই, সভরার একদা সে অসংস্কৃতিত চিত্তে ঐ মুনির অপ্রে বিচরণ করিতেছিল। ইতাবসরে মুনিকনাগর গার্ভসঞ্চার হইবামাত্র ভাগার বণ পাশুর হইল, তদ্দর্শনে ভ্রগকুলিভ মনে পিতৃসরিধানে আদিরা উপনীতা হইল। অমিভতেজা রাজর্মি তৃণবিন্দু কন্যার অবস্থা অবলোকন করিয়া ধ্যানোপবেশনপূক্ষক বিজ্ঞান চম্মুদ্বারা মুনি রুভ সমস্ত ব্যাপার অবগত হইলেন; অনন্তর িনিক্যাণকে সমভিব্যাহারে করিয়া মুনিসরিধানে উপস্থিত হইরা কহিলেন—আপনি এই কন্যাটি প্রহণ করেন। আমি আপনাকে অর্পণ করিলাম; পুলস্ত্য রাজর্মি বাক্য প্রবণে তথান্ত বলিয়া প্রহণ করিছে অঙ্গীকার করিলেন। ৩০। ৩১। ৩৪।

মহর্ষি পুলস্তা তৃণবিন্দ্ কন্যার গুঞাষায় পরিভুক্ট হুইখা তাহাকে বলিলেন আমি ভোমার পরিচর্য্যায় যার পর নাই সন্ধ্যট হুইয়াছি অতএব তোমার গর্ভে এরূপ সন্তান জন্ম ভদা শীলাদিকং দৃষ্ট্য ভরদ্বজো মহামুনিং।
ভাষ্যার্থং স্থাং ছহিতরং দদৌ হিশ্রবদে মুদা। ৩৬
ভক্তান্ত পুজ্ঞঃ দঞ্জজে পৌলস্ত্যাল্লোকদমহঃ।
বিভূত্নো বৈশ্রবদো ত্রহ্মণা চান্ত্রোদিতঃ॥ ৩৭
দদৌ তত্তপদা তুটো ত্রহ্মা তদ্মৈ বরং শুভুম্।
মনোহভিল্মিতং তদ্য ধনেশত্বমথপ্তিভুম্। ৩৮॥
ভক্তো লক্ষবরং দোহপি পিতরং দ্রষ্টুমাগতঃ।
পুপ্পকেন ধনাধ্যক্ষো ত্রহ্মদতে ন ভাস্বতা॥ ৩৯॥
নসস্কৃত্যাথ পিতরং নিবেদ্য তপ্দঃ ফল্ম্।
প্রাহ্মে ভগ্রান্ ত্রহ্মা দত্তা বর্মনিন্দিত্ম। ৪০

নিবালার ন মে স্থানং দন্তবান্ পরমেশবঃ।
ক্রিহি মে নিয়তং স্থানং হিংলা যত্ত্র ন কন্যটিং ॥
বিশ্রবা অপি তং প্রাহ্ লক্ষা নাম পুরী শুলা।
রাক্ষলানাং নিবালার নির্মিতা বিশ্বকর্মণা॥ ৪২॥
তাজ্যা বিষ্ণুভরাদৈতা বিবিশ্বস্থে রলাতলম্।
লা পুরী ছংপ্রধর্ষানার্মাধ্যেলাগরমাস্থিতা। ৪০।
তত্ত্র বালার গচ্ছ তং নান্যে লাখিটিতা পুরা।
পিত্রাদিকস্থানী গড়া তাং পুরীং ধনদোহবিশং ৪৪
ল তত্র স্থানিরং কালমুবাল পিতৃসন্মতঃ।
কন্যচিত্র্থ কাল্যা সুমালী নাম রাক্ষনং॥ ৪৫॥

গ্রহণ করিবে বে, সে অকীয় মাতৃ এবং পিতৃক্ল পরিসদ্ধন করিবেক। অনন্তর তৃণবিক্র হুছিতা এক পুল প্রাস্থ করিলেন এবং ঐ সন্তান পুলস্তা মূলি হইতে জন্ম প্রাহণ করিলাছে বলিমা স্পাত খোগিত হইল, স্কুত্রাং সে বিশ্রবা ও অপারারণ পোলস্তা মূলি নামে সাক্ত বিধ্যাত হইলেন। অনতর তাংগার স্বভাব ও চরিত্র পরিদেশনে মহামুনি ভরদ্বাজে পরম শ্লকিত মনে তাঁহাতে স্কীয় তুহিতা সম্পাণ করিলেন
ত্তঃ তিওঁ। ৩৬।

খনন্তর ব্রন্ধা প্রদানত ববে ভরদ্বান্ধ ছুহিতার গর্ব্তে ও পৌলস্ত্য মূনির ঔরদে সকলোক বিখানত বৈপ্রবেগ নামে পিতৃত্বা এক নতান জ্বন্মিল। এ পুত্র বোর তপানা প্রবৃত্ত হইলো কমলবোনি ব্রহ্মা পরম পরিতৃত্ত হইয়া তাঁহাকে অতৃল ধনেব অবিপতি করিয়া দিলেন। অনন্তর ধনাধিপতি কুবেরব্রহ্মা-দত্ত অপূর্ব্ব পুষ্ণাক রথে আরোহণ করিয়া পিতৃদর্শনে বীমন করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩৯।

ধনাধ্যক পিতৃ সমীপে উপস্থিত হইরা উাহাতে প্রণাম পূর্বক তপস্যার ফল রক্তান্ত নিবেদন করিয়া কহিলেন— জাণীশ্বর আমার বাস স্থান নির্দেশ করিয়া দেন নাই; স্থানার নির্দান বাই, অতএব যেখানে হিংসাদি কিছুই নাই এরপ স্থান আমাকে বলিয়া দিন, আমি তথায় বাস করিব; ভদ্জুবনে বিশ্রবা কহিলেন—পূর্ণে বিশ্বক্ষা রাক্ষ্যদিশের নিবাস হেতু লক্ষানায়ী এক অতি স্থানেভনা বকপ্রী নির্মাণ করিয়াছিলেন, এক্ষণে বিশ্বরুব ভবে নৈভা সমূহ ভাষা পরিভাগে করিয়া পাভালে প্রবেশ করিয়াছে, সেই পুরী অন্য শক্রঘারা বিজিত হইবার কোন আশক্ষা নাই। কারণ উহা সমুদ্রের মধ্যে অবস্থিত; অভএব ভূমি ঐস্থানে গিয়া বাস কর। বৈশ্বণ পিতার আদেশে ঐ পুরী মধ্যে বহুকালাবধি বাস করিছে লাগিলেন । ৪০ । ৪১ । ৪২ ।

একদা স্থালী নামক মাংসভোজী এক রাক্ষণ অপূর্বরূপা লাবণাবতী স্থীর কন্যা নমভিব্যাহারে রসাভল
হইতে আগনন করিয়া মর্তলোকে বিচরণ করিতেভিলেন,
ইত্যবস্থা ধনপতিকে পুস্তুক রথে বিচরণ করিতে অবলোকন
করিয়া সাস্থাহিত প্রছন্ত হইয়া ভাঁহার কৈক্নীনামী কন্যাকে

রসাতলামার্ক্তালোকং চচার পিনিতাশনঃ। গৃহীত্বা তনয়াৎ কন্যাৎ সাক্ষাদেবীমিব প্রিয়ম্। ৪৬ অপশাদ্ধনদং দেবং চরন্তং পুষ্পাকেণ সং। হিতার চিত্তরামান রাক্ষনানাং মহামনাঃ। ৪৫। উবাচ তনয়াং তত্ত্ৰ কৈকসীং নাম নামতঃ। বংসে! বিবাহকালত্তে যৌবনং চাতিবৰ্ত্ততে॥ ৪৮ প্রত্যাখ্যানাচ্চ ভীতৈত্ত্বং ন বরৈগৃ ছ্লে শুভে !। সা ত্র বর্য় ভদেং তে মুনিং ব্রহ্মকুলোদ্ভবম্ । ৪১ স্বর্মের ততঃ পুজা ভবিষ্যন্তি মহাবলাং!। ঈদৃশাঃ সর্ব্বশোভাচ্যাः ধনদেন সমাঃ শু:ভ !।৫১। তথেতি সাশ্রমং গড়া মুনেরগ্রে ব্যবস্থিতা। লিখন্তী ভুবমগ্রেণ পাদেনাধোমুখী স্থিতা॥ ৫১॥ তামপৃচ্ছৎ মুনিঃ কা ত্বং কন্যাসি ? বরবর্ণিনি !। সাববীৎপ্রাঞ্জলিব দিন্! ধ্যানেন জ্ঞাতুমহ'সি । ততো ধ্যাত্ব। মুনিঃ দর্বং জ্ঞাত্বা তাং প্রত্যভাবত। জ্ঞাতং তত্ত্বাভিল্বিতং মন্তঃ পুল্রানভী ন্যান ॥ ৫৩

কহিলেন—বংসে! একণে তোমার যেবিনকাল উপস্থিত, অতএব ডোমার উবাহ সময় হবয়াছে: কিন্তু তুমি ভয়পরতন্ত্রা হইরা ব্রহ্মকুণোদ্ভব মহর্ষির নিকট হইতে সুদূরবর্ত্তিনী
হওয়ায় বরপ্রার্থনা ক্র নাই, তথাপি হে শুভে! সর্বসম্পদ
সম্পন্ন ধনদেবের নাায় তোমারও মহাবলবান সন্তান উৎপর
হইবে; অনভার কৈকসী মুনির আশুমে উপনীত হইয়া
লজ্জাবনতমুখী হওও স্বীয় পাদদিকে নয়নপাত কিয়া রহিল।
মহর্ষি কহিলেন—হে বরবর্ণিনি! তুমি কি জাতীয়া, কাছার
কন্যা, আমাকে প্রকাশ করিয়া বল। কৈকসী মুনি বাক্য
শ্রেবণে বর্দাঞ্জলি হইয়া কহিল, হে ব্রহ্মণ! আপেনি আমাকে
বৃধা জিজ্জাসা করিভেছেন, কারণ ধ্যানযোগে আসীন ইইলে

দাৰণায়াং তু বেলায়ায়৾য়তাসি সুমধামে!।
অতত্তে দারুণী পুজে রাক্ষরে সম্ভবিষ্যত:। ৫৪
সাব্রনিমুনিশাদূলি! ডুজোহপ্যেরশ্বিধে সুকোই।
তামাহ পশ্চিমো যন্তে ভবিষ্যতি মহামতিং॥ ৫৫
মহাভাগবতঃ শ্রীমান্রামভক্ত্যেকতৎপর:।
ইত্যুক্তবা সা তথা কালে সুষুবে দশকন্সরম্।।
রাবণং বিংশতিভুজং দশশীর্ষং স্থলারণম্।
তদ্রকোজাতমাত্রেণ চচাল চ বস্কুরা। ৫৭।
বভূবুর্নাশহেভূনি নিমিন্তান্যখিলান্যপি।
কুন্তুকণিত্তা জাতো মহাপর্বত সন্ধিতঃ ৮৫৮।
ততঃ শূর্পনথা নাম জাতা রাবণসোদরা।
ততো বিভীষণো জাতঃ শান্তাত্যা স্যোমদর্শনঃ।।

আপনি সমস্ত অবগত চইতে পারেন। অনন্তর মহর্ষি ধ্যানাবলয়ন পূর্বক তাচার আদ্যোপাত সমস্তই জানিতে পারিয়াকহিলেন আমি ধ্যান বলে জানিয়াছি যে, তুমি পূলাকাজিক নি চইয়া এখানে আসিয়াছ অভএব এক্ষণে যেমন নিদাকর সময়ে আমার নিকট আগমন করিয়াছ ডজপে তুমি ভয়ানকরাক্ষম পূত্র সম্ভবা হইবে। অনন্তর সেই ললনা কহিল, হে মুনিশার্দ্দিশ আপনার বাকো এবছিধ পূল্ল উৎপন্ন হইবে সন্দেহ নাই, কিন্তু সেই পূল্ল কি মহামতি, এবং পরম বৈয়য় শ্রীমান্ রামচল্রের ভক্ত হইবে? অনন্তর ঐ কন্যা যথাসময়ে বিংশতিভুক্বিশিষ্ট, দশলীব, ভয়ানক রাবণকে প্রস্ম করিল এবং ঐ রাক্ষম প্রস্মবিত হইবামাত্র বস্মতী কম্পানা হইলেন অধিকস্ত রক্ষ:বংশের ও অথিল জ্ব্যাতের বিনাশ কারণ ও সমুস্তুত হইল ়া ৪৫।৪৯।৪৭।৪৮।৪৯।৫০।৫১।

অনন্তর মহমেকসদৃশ কুভকণ জন্মগ্রহণ করিল পরে রাবণ সহোদরা শূর্পমিখা ভূমিট হইল, শেষে বেদাধারন স্বাধ্যারী নিগত হারী নিত্যকর্মপরারণ:।
কুন্তুকর্ণস্ত দুউ আ দিজান সন্তুটটেতস: ৬০।
কুন্তুকর্ণস্ত দুউ আ দিজান সন্তুটটেতস: ৬০।
কুন্তুকর্ণস্ত আহিলাক্রণ:।
বাবণোহপি মহাসত্ত্বা লোকানাং ভয়দায়ক:।
বরুধে লোকনাশার স্থামরো দেহিনামিব ॥ ৬১ ॥

রাম ! বং সকলান্তরস্থমভিতো জানাসি বিজ্ঞানদৃক্।
সাক্ষীসর্বাহৃদিক্টিতে। হি পরমো
নিত্যোদিতো নির্মাল:।
বং লীলানমুজাকৃতিঃ স্থমহিমা সায়াগুনৈনাজ্যমে
লীলার্থং প্রতিটোদিতোহদা
ভবতো বক্ষ্যামি রক্ষোন্তবম্ ॥ ৬২॥

নিরত, সংযতাহার, নিত্যকর্মপরায়ণ, স্থালীল ও শান্ত মৃথি নিতাষণ জন্মগ্রহণ করিলেন। ভয়ানক মূর্ত্তি ভ্রাত্ম। কুন্তকর্ণ রোক্ষণ ও ক্ষিয় হিংলা করিয়া সাহলাদহনু ইতন্ততঃ বিচরণ করিতে লাগিল। এদিকে রাবণণ্ড লোক-ভয়াবছ জীবমাত্রেরই ব্যাধি সর্প হইয়া লোক বিনার্শের জন্য পরিবর্দ্ধিত হইতে লাগিল। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১।

হে রামচন্দ্র ! আপেনি বিজ্ঞান স্বরূপ এবং সর্ববাস্তর্যামী

ইরা সকলেরই অন্তরন্থ যাবভীর বিষয় অবগত আছেন। অভভব আপনি সাক্ষাৎ দ্রষ্টা । ভাহা না হইলে আমি মহ্বা হইরা
কি প্রকারে আমার ঈদৃশ ভাব উপদ্মিত হর । হে রয়ুনাথ !
আপনি সকলের হাদয়ন্থ হইরা সর্ব্যালাই বিমল ভাবে উদিত

হরেন । আপিনি সীয় লীলা বশভঃ মনুষ্য দেহ পরিপ্রাহ করিরা
ছেন বস্তুভঃ আপনি মহ্বা নহেন, আপনার মহিমা আপনিই
অবগত আছেন, অপরে ঐ মহিমা কিরপে জানিতে পারিবে।
আপনি মায়া দ্বারা সমুদায়ই আচ্ছন্ন করিরা রাধিয়াছেন,কিন্ত
স্বয়ং কোন রূপ স্পাশ করেন না—আপনি সর্বজ্ঞ, আপনার

কানমি কেবলমনস্তমচিন্ত্যশক্তিং
চিমাত্রমক্ষরমক্তং বিদিতাপ্ততন্ম।
বং রাম। মূঢ়নিজকপমনুপ্রব্রন্তা
মুট়োহপ্যহং ভবদমুগ্রহতক্ষরামি॥৬৩॥
এবং বদস্থমিনবংশপবিত্রকীর্ত্তিঃ
কুন্তোদ্ভবং রযুপতিঃ প্রহসন বভাবে।
মায়াপ্রিতং সকলমেতদনন্যকত্বাৎ
মৎকীর্ত্তনং ক্রগতি পাপহরং নিবোধ॥৬৪॥
ইতিশ্রীমদধ্যাপ্ররামারণে উমামহেশ্র সন্বাদে
উত্তরকাণ্ডে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

সমুখে বাকা বিন্যাস করা আমার পক্ষে নিভান্ত অনুচিত, ভবে লোক সমুদায়ের অবগতির নিমিত্ত আপনি যে সমস্ত বলিয়াছিলেন অদ্য আমি দেই রক্ষঃ বংশের বিষয় বর্ণনা করিব। হেমহাত্মনৃ! আপনি আমাকে জ্ঞানবিদ্ বলিরা উল্লেখ কবিতেছেন, কিন্তু আমি আপনাকে এক মাত্র বলিয়া জানি—আপনি অনাদি অনন্ত, আপনার শক্তি চিন্তার বহিন্ত ত, আপনি চৈতন্য স্থরপ, আপনি অক্ষর অর্থাৎ আপনার ক্ষরণ নাই, আপনি অন অর্থাৎ কাছার গর্ভে জন্ম গ্রহণ করেন নাই। আপনিই আপনার ভব্ব অবগত আছেন, আপনার রূপ বিষয় অভিশয় গুঢ় কেহই জানিতে সমর্থ নছে। অতএব আমি মৃঢ় হইয়াও আপনার প্রদর্শিত প্রবৃত্তিমার্গ আবলম্বন করিয়া ইচলোকে পর্যাটন করিতেছি। রঘুপতি সুর্যা বংশের পবিত্র কার্তিরপ অমৃত কথা কছিতে শ্রবণ क्रिया छे श्क्रू हा खः कत्रा मर्श्वित विलिस -- महर्स ! व्यामाव অনন্যক্ত হেতু পৃথিবীর সমস্ত লোক মারার আচ্ছর হ্টয়া আছে, অতএব আমার এই অবতার গ্রহণের মুখ্য উদ্দেশ্য এই যে, এই জ্বগন্মগুলে আমি স্বয়ং মৎকীর্ত্তম আলাপ করিলে সমুদায় পাপ বিনষ্ট হইবে। ৬২ । ৬৩ । ৬৪।

> ইতি জীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বরস্থাদে উত্তরকাথে যোডশোহধ্যারঃ।

শ্বীনামবচনং ক্রন্থা পর মানন্দনির্ভরঃ।

মুনিঃ প্রোবাচ সদসি সর্ক্রেবাং তত্ত্ব শৃণুতাম্॥ ১॥

অথ বিত্তেশ্বরো দেবক্তত্ত্ব কালেন কেনচিৎ।

আয়যৌ পুশুসকারতঃ পিতরং দ্রুই মঞ্জুসা॥ ২°॥

দৃষ্ট্বা তং কৈকসী তত্ত্ব ভালসানং মহৌজসম।

রাক্ষমী পুলুসামীপ্যং গহা রাবণমত্ত্ববীৎ॥ ৩॥

পুল্র! পশ্য ধনাধ্যক্ষং জ্লন্তং স্বেন তেজ্পসা।

ত্বমপ্যেবং যথাভূয়ান্তথা যত্ত্বং ক্রে প্রভো!॥ ৪॥

তচ্ছ,ত্বা রাবণো রোষাৎ প্রতিজ্ঞামকরোদ্দ্রতম্।

ধনদেন সমো বাপি হাধিকে। বা চিরেণ তু॥ ৫॥

ভবিষ্যাম্যয়! মাং পশ্য সন্তাপং ত্যুক্ত স্থত্তে!।

ইত্যুক্ত্বা দুক্ষরং কর্ত্তং তপঃ স দশকক্ষরঃ॥ ৬॥

আগমৎ ক্লসিদ্ধ্যর্থং গোকর্ণং তু সহামুদ্ধঃ।

স্বং স্বং নিয়মমাস্থায় ল্লাতরক্তে তপো মহৎ॥ ৭॥

আছিতা দুদ্ধরং ঘোরং সর্বলোকৈকতাপনম্।
দশবর্ষসহস্রাণি কুন্তকরণেহিকরোন্তপঃ ॥ ৮ ॥
বিতীমণাহিপি ধর্মাত্মা সভাধর্মপরায়ণঃ।
পঞ্চবর্ষসহস্রাণি পাদেনৈকেন তন্থিনান্ ॥ ৯ ॥
দিব্যবর্ষসহস্রাণ পাদেনৈকেন তন্থিনান ।
পূর্ণে বর্ষসহস্রাণ নব তন্যাতিচক্রমুঃ ॥ ১০ ॥
অথ বর্ষসহস্রাণি নব তন্যাতিচক্রমুঃ ॥ ১০ ॥
বহু ব্রমস্যা ধর্মাত্মা প্রাপ্তশাহাথ প্রজাপতিঃ।
বহু ব্রম দাস্যামি যক্তে মনসি কাভিক্ষতম্ ॥ ১১ ॥
দশ্রীবোহপি তচ্জমুয়া প্রক্রেনান্তরাত্মনা ।
অমরত্বং রণোমীশ ! বরদো যদি মে ভবান্।
স্বপ্রবাগ্যক্ষাণাং দেবতানাং তথাস্কুরঃ ॥ ১২ ॥

মহর্ষি অগস্তা শ্রীরামের বাক্য শ্রবণ করিয়া অপার আনন্দ সাগরে ভাসমান হটয়া কছিলেন—অভঃপর ভোমরা শ্রবণ কর, বিতেশ্বব কুবের কিচুকাল তথার অবস্থান করিয়া এক দিন পূজাক রথে আরোহণ পূর্বাক পিতাকে দর্শন করিবার মানসে আগমন করিলেন; তথায় কৈকসী দীপ্তমান কুবেরকে সন্দর্শন করিয়া স্পুত্র রাবণকে কহিল, হে পুত্র! দেখ ধনাধ্যক্ষ সকীর উজ্জলভার পবিশোভিত ইয়া আগমন করিয়াছে, অভএব তুমিও যাহাতে ঐরপ হও হাহার চেন্টা কর। রাবণ মাতার বাক্য আকর্ণন করিয়া কোধাবেগে প্রতিক্রা করিল, আমি ধনদের সমান অথবা ভাহার অলেকা ধনশালীও পরিশোভমান ইইব। অভএব ছে মাতঃ স্প্রতে! এক্ষণে সন্তাপ পরিহার কক্ষন, এই বলিয়া দশানন কঠোর তপদ্যা হারা ফলদিদ্ধি করিবার নিমিত্ত অমুজ ভাতা হয় সমভিব্যাহারে গোকর্ণে আগমন করিল। তথার ভাতাত্রর স্বাস্থানরমাবলম্বন পূর্ত্তিক সর্ব লোক ভ্রদশী অতি কঠোর তপাসা। আরম্ভ করিল। ক্স্তকর্ণ দশহাজার বংসর ঘোরতর তপঃ করিয়াছিল। ১০২। ৩০। ৪০৫। ৬০। ৭০৮

সভাধরা পারারণ বিভীষণ পঞ্চ সহন্দ্র বংসর এক পদে অবদ্বিতি করিরাছিলেন। দশানন অগ্নিতে আন্তৃতি প্রদান পূর্বক
সহন্দ্র বংসর অনশনে থাকিরা খোরতর তপদ্যা করিল। ঐ
সহন্দ্র বংসর অতীত হইলে আপনার এক এক মন্তক ছিল্ল
করিরা নর হাজার বংসর ব্যাপিরা তপ্সা করিতে লাগিল।
অনন্তর দশম বংসর উপস্থিত হইলে দশম মন্তক জিল্ল করিতে
উদ্যত হয়, তথন প্রজাপতি ব্রহ্মা উপনীত হইরা কহিলেন
বংস, দশ্রীব! ভোমার তপ্সায় আমি নিরতিশয় প্রৌত্
হইরাছি এক্ষণে তোমার অভিল্যিত বরপ্রার্থনা কর। দশ্যন
পদ্যযোনি ব্রহ্মার বাক্য শ্রবণে আন্নন্দোৎক্ল্লমনে কহিল. তে
জগদীশ! যদি আমাকে অমুগ্রহ করিয়া বরদান ক্রেন

অবধ্যত্বং তু মে দেহি তৃণভূতা হি মানুষা:। তথা স্থিতি প্রজাধ্যক্ষঃ পুনরাহ দশাননম্। ১৬। অগ্নৌ হুতানি শীষ নি যানি তেইফুরপুঞ্চব !। ভবিষ্যন্তি যথাপূর্য্তমক্ষয়াণি চ সত্য!। ১৪। এবমুক্তা ততো রামো। দশগ্রীবং প্রজাপতিঃ। বিভীষণমুবাচেদং প্রাণতং ভক্তবৎসলঃ। ১৫। বিভাষণ ! ত্য়া বৎস ! কুতং ধন্মার্থমুত্মম্। তপস্ততো বরং বৎস ! 'ব্লীব্রাভিমতং হি তম্।১৬ কুম্ভকর্ণস্ত দুষ্টাত্মা চিন্তরামাদ ছু:খিতঃ। विजीयां । इति उर ने जा श्रीक्षितिका का मजिते । দেব! মে দর্মাদা বুদ্ধির্ধর্মে তিষ্ঠতু শাশ্বতী। মা রোচয়ত্বধর্মো মে বুদ্ধিঃ সর্বত্ত সর্বাদা। ১৭।। ততঃ প্রজাপতিঃ প্রীতো বিভীষণমথারেবীৎ।

ভবে, এই বরদান করুন আখি যেন আমর ছই অর্থাৎ স্থপর্ন, নাগ, যক্ষ দেবভা বা অস্ত্র কেছই যেন আমাকে বিনাশ করিতে সক্ষম হয় না। যথন আমি মনুষাদিগকে ভূণের নাায় জান করি তথন আমাকে অমরত্ব বরপ্রদান করুন; প্রজাপতি ব্রহ্মা তণাস্ত বলিয়া পুনরায় তাহাকে কছিলেন —হে অসুর শ্রেষ্ঠ ! তুমি শে সকল মস্তক অগ্নিতে আলুতি দিয়াছ (न नमछ्डे बक्क स इडेर्ट । क । 50 । 55 । 52 । 50 । 58 । . ে রামচন্দ্র ! ভক্তবৎসা ব্রহ্মা দশত্রীবকে এই কথা বলিয়া প্ৰণত ধৰ্মাত্ম। বিভীষণকে কছিলেন—হে বিভীষণ! তুমি ধর্মাভিলাষী হইয়া তপ্স্যা করিয়াচ, এক্ষণে তোমার মনোমত বরপ্রার্থনা কর। বিভীষ্ণ ভাঁছার কথা শ্রবণ कतिया उँ। हारक लागा कतिया क्रवाक्षित्रभूति कहिलान, **(इ (नव ! আপনি আমাকে এই বরদান করুন, যেন আমার** বুদ্ধি সর্বাট ধর্ম পথে অবস্থিতি করে, কার্ণ আমার বুদ্ধি সর্বাদ। দর্বতা ধর্মে অভিক্রচি করিয়া থাকে। অনস্তর বন্ধা তাঁহার প্রতি যারপর নাই প্রতি প্রদর্শন পূর্বক

वरम ! पुर धर्माभीत्मार्शन उत्थव ह छविषानि ॥১৮ অবাচিতোহপি তে দাস্যে হ্যারতং ্বিভীষণ!। কুন্তু কর্ণমথোবাচ বরং বরয় স্থুব্রত !। ১৯। বাণ্যা ব্যাপ্তোহ্থ তং প্রাহ কুম্বকর্ণঃ পিতামহম্। স্বপ্ৰ্যামি দেব! ৰগাসান্দিনমেকং তু ভোজনম্ এবমস্ত্রিতি তং প্রাহ ব্রহ্মা দৃষ্ট্রা দিবে কিনঃ। স্বরস্বতী চ তদ্বক্রান্নির্গতা প্রযথে দিবম। ২১। অন্তিপ্রেত্রমবাস্যাৎ কিং নির্গত্মহো বিধিঃ 1২২ স্মালী বরলকাংস্তান জ্ঞাত্বা পৌল্রান নিশাচরান ! পাতালায়ির্ভয়: প্রায়াৎ প্রহত্তাদিভির্দ্বিতঃ ।২৩ ৷ দশগ্ৰীবং পরিষদ্যা বচনং চেদমত্রৰীৎ। দিন্টা তে পুত্র ! সমৃত্তো বাঞ্জ্তো মে মনোরখ⁸।

কহিলেন—ছে বৎস ! তুমি পরম ধর্মণীল, প্রার্থনা না করি-লেও আমি তোমাকে অমরত্ব প্রদান করিলাম। ১৫। ১৬।

অনস্তর পিতামছ ব্রহ্মা কুন্তকর্ণকে কহিলেন—ছে সুর 🕛 তুমি বরপ্রার্থনা কর; কুস্তুকর্ণ ভাষার বাক্য প্রবণ করিয়া কহিলেন—হে দেব! একদিবস ভোজন করিয়া ছয় মাস নিদ্রা ভোগ করিব এই বর প্রদান করুন, একাও তথাস্ত কহিলেন। একণে স্বরস্থী তাঁহার বদনু হইতে নির্গতা হইরা স্বর্গে গমন করিলেন। অভঃপর ছষ্টমতি কুম্ভকর্ণ হুঃখিত চিত্তে চিঙা করিতে লাগিল যে, বিধাতার বিড়ম্বনা প্রযুক্ত আমার অনভিপ্রেত বরণাভ হইগ। সুমাণী আপনার নিশাচর পেণ্ডেরা বরণাভ করিয়াছে অবগত হইয়া প্রহস্ত প্রভৃত্তি রাবণ সেনাপতি পরিরত হইয়া পাতাল হইতেনির্ভন্নে আগমন পুর্বাক রাবণাদির দমীপে উপস্থিত হইল ১১৯১২০ ১২১১২১১১ অনস্তর দশগ্রীব রাবণকে কছিল—ছে পুত্র! ভূমি পর্ম

যদ্ভরাচ্চ বরং লঙ্কাং ত্যক্তবা বাতা রদাতন্ম।
তদ্যতং না মহাবাহো! মহদ্বিষ্ণুক্তং ভরম্। ক
অস্মাতিঃ পূর্দামুবিতা লক্ষেরং ধনদেন তে।
ভারোক্রান্তামিদানীং ত্বং প্রত্যানেতুমিহাই দি.। ২৬
সামা বাঘ বলেনাপি রাজ্ঞাং বন্ধুঃ কুতঃ স্কৃতং ।
ইত্যুক্তো রাবণং প্রাহ্ নাহ স্যেবং প্রভাষিতুম্ ২৭
বিত্তেশো গুরুরস্মাক্ষমেবং প্রত্যা তমন্ত্রীৎ।
প্রহন্তং প্রশ্রিতং বাক্যং রাবণং দশক্ষারম্। ২৮।
প্রাণাং বিত্তেম বাক্রান্তে নীতিশাস্ত্রং তথৈব চ। ২০।
প্রাণাং ন হি দৌল্রান্তং প্রণ্ডু মহাবলাং। ৩০।
কশাপ্র্যা স্কৃতা দেবা রাক্ষ্যাশ্চ মহাবলাং। ৩০।

সেলি লাগ্য বশতঃ বরপ্রাপ্ত ইইয়াছ, অত্তবে এক্কণে আমার চিরাভিলবিত মনোরথ সফল ছইল; হে মছাবাছো! যে ভয়ে আমারা লক্ষা পরিভাগা করিয়া পাভাল মধ্যে পলায়ন করিয়াছিলাম এক্ষণে সেই বিফুর ভর অপনোদিত হইল। পুরের আমরাই এই লক্ষাপুরীতে বাস করিতাম কিন্তু, ভোমার জাতা কুবের ভোমাকে আক্রমণ করিতাম কিন্তু, ভোমার জাতা কুবের ভোমাকে আক্রমণ করিলেও তুমি সৈন্য সমস্ত সাহাযো লক্ষা পুরী অবলীলাক্রমে স্বাধীন করিতে সমর্থ হইয়াছ। এইরূপ কহিলে দশানন স্থমালীকে কছিল—দেশুন আপনার মুথে একরণ কথা উপযুক্ত নহে। কারণ গ্রমণতি আমাদিগাের, গুরুল রাবণ সেনাপতি প্রহস্ত ভাছার বাক্য শ্রমণ করিরা অতি বনীত বচনে কছিল—হে রাবণ! গ্রাপনি এইরূপ কহিতেছেন, কিন্তু উহা আপনার পক্ষেত্রপুক্ত। অভএব আপনি যেমন রাজ্যধ্র্ম এবং নীতিশাল্জ অধ্যরন করেন নাই সমহিত চিত্রে আমার বাক্য শ্রমণ করন। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯।

ং প্রভা! আমি সমস্তই বলিতেছি শ্রবণ ককন—
স্রদিবোর মধ্যে কিছুই স্থাতা নাই, দেখুন, কল্যপের পুত্র

পরস্পরমযুধ্যন্ত ভুক্তল্বা সেইদমাযুধি:।

নৈবেদানীন্তনং রাজন্। বৈরং দেবৈরমুষ্ঠিতম্। ৩১
প্রহস্তম্য বচঃ শ্রুত্বা দশ্রীবো ছর'ত্মন:।
তথেতি ক্রোধতান্ত্রাক্ষস্ত্রিকুটাচলমন্থ্যাহ।
দূতং প্রহস্তং সংপ্রেষ্য নিষ্কাশ্য ধনদেশ্বর্ম।
লক্ষামাক্রম্য সচিবৈ রাক্ষনৈ: সুখ্যান্ত্রিতঃ। ৩৩।
ধনদঃ পিতৃবাক্যেন ত্যক্তবা লক্ষাং মহাযশাং।
গত্মা কৈলাসশিখরং তপদ্বা তোষর্মিছ্বম্। ৩৪।
তেন স্থ্যমনুপ্রাপ্য তেনৈব্ পরিপালিতঃ।
আলকাং নগরীং তত্ত্র নির্মানে বিশ্বকর্মাণা। ৩৫।
দিক্পালত্বং চকারাত্র শিবেন পরিপালিতঃ।
রাবণো রাক্ষসৈঃ সাধ্যভিষিক্রঃ সহান্ত্রিঃ ॥ ৩৬॥

দেবতা ও মহাবল পরাক্রান্ত রাক্ষসদিয়ের মধ্যে তিলার্দ্ধমাত্রও স্থাতা ছিল না। তাহারা কেবল যুদ্ধে চিরকালই অভিবাহিত করিভেছে। হেরাজন্! এই বিবাদটি সূতন বলিয়া মনো-মধ্যে স্থাম দিবেন না-কারণ অতি প্রাচীনকাল হইতে এই বেষ চলিমা আসিতেছে। ত্রুষ্টমতি দশানন প্রহস্তের বাকা অবণ করিয়া ক্রোধাগ্নিময়নে চিত্রকূট পর্বতে প্রস্থান করিল, সচিব বর রক্ষঃগণ প্রছন্তকে দ্তরূপে প্রেরণ করিয়া ধনদেশ্য কুবেরকে ৰহিষ্কৃত করিরা লক্ষা আক্রমণ করিল এবং পারম স্থা অবস্থান করিল। মহাযশা কুবের পিতার আদেশ ক্রমে লকা-षील পরিভাগে পূর্বক কৈলাল পর্বতের লিখর দেলে গমন করিরা তপস্টা মারা দেবাদিদেব মহাদেৰকে পরিভুক্ত করি-লেন, অনস্তর ভৎকর্ত্ব স্থাতা নিগড়ে আৰম্ভ এবং পরি-পালিত ছইয়। তথার ুবিশ্বকর্মা দারা অলকানগরী নির্মাণ क्रताहेलन; এथान म्मामन अभाराप्तत्व घारा अतिभानिङ ছইয়া কণিষ্ঠ ভ্রাতা ও অপরাপর রাক্ষসগণের সহিত লয়া-রাজ্যে অতিষ্ঠিক হইয়া স্বীম রাজ্য রক্ষার নিষিত্ত দিক্পাল-

রাজ্যং চকারাস্তরাশাং ত্রিলোকং বাধয়ন্ থল:।

ভিনি কলিপঞ্জায় দদে বিকটকপিনীং। ৩৬।

বিচা জ্জন্ত্রায় নামানে মহামায়ো নিশাচর:।
ভতো ময়ো বিশ্বকর্মা রাক্ষ্যানান্দিভে: মৃত:। ৩৭

য়ভাং মন্দোদরীং নামা দদে লোকৈক মৃন্দরীম্।
বাবেণায় পুন: শক্তিমমোঘাং প্রীভমানস:॥ ৩৮॥
বৈরোচনস্য দে হিত্রীং রক্তজালেভি বিশ্রুভাম্।
সয়ং দন্তামুদবছৎ কুন্তুকর্ণায় রাবণঃ॥ ৩৯॥
গক্ষর্মরাজস্য মৃতাং শৈল্মস্য মহাম্মনঃ।
বিভীষণস্য ভার্যার্থে ধর্মজ্ঞাং সমুদাবছৎ ॥ ৪০॥

সরমাং নাম মৃত্রগং সর্বাক্ষণসংযুত্তাম্।
ভতো মন্দোদরী পুল্রং মেঘনাদমজীক্ষমৎ॥ ৪১॥

জাতমাত্রস্ত যো নাদং মেঘবৎপ্রমুমোচ হ।

দিগকে নিযুক্ত করিল, এ৭ অন্থর দিগকে বাধ্য করিরা স্থর্গ মর্ভ ও পাতাল রাজ্য ভোগ করিতে লাগিল। ৩০। ৩১। ৩২। ৩১।৩৪। ৩৫। ৩৬।

অনন্তর কালখন্ত্ বংশোংপার মহামানিক মিশাচর বিত্যুজিল্কার সহিত আপনার বিকট রূপিনী ভূগিনী শূর্পনথার
পরিণর কার্যা সমাধা করিল। পশ্চাংকশ্যপপত্নীস্কৃত মরদানব
দশাননকে স্বীয় ভূহিতা মন্দোদরী প্রদান করিলেন। এই সমরে
বিশ্বকর্মা প্রীতি-প্রফুল্ল হইরা স্বহস্ত নির্মিত অমোঘা শক্তি
রাবলকে প্রাদান করিলেন। ৩৭। ৩৮।

রাবণ স্বয়ং বৃত্তজালা নামা লোক বিশ্বাত বিরোচন পুত্তের
পৈছিত্রীর সহিত কুস্তকর্ণের উদ্বাহ কার্য্য সম্পন্ন করিলেন;
মহামতি গান্ধকার্ধিপিতি শৈলুষের পরমর্থা পরায়ণা সোভাগ্যবতী সর্ক্য স্লক্ষণসম্পন্না সরমা নামী কন্যার সহিত বিভিবণের পরিণন্ন কার্য্য সম্পাদিত লইল। অনস্তর বাবণ মহিষী
মন্দোদনী একটা সন্তান প্রস্ব করিলেন, ঐ পুত্র ভূমিষ্ঠ
হইবা মাত্র মেঘনির্ধোষের ন্যায় গভীর শক করিরাছিল

ততঃ সর্ব্বে ক্রবন্মেঘনাদোহয়মিতি চাসক্রং ॥ ৪২ ॥
কুস্তকর্ণস্তঃ প্রাহ নিদ্রা মাং বাধতে প্রভান্ ॥ ৪৩
তত্তক কারয়ামান গুহাং দীর্ঘাং স্কৃবিস্তরান্ ॥ ৪৩
তত্ত্ব সুষ্পি মুঢ়াক্সা কুস্তকর্ণো বিঘুর্ণিতঃ ।
নিদ্রিতে কুস্তকর্ণে তু রাবণো লোকরাবনঃ ॥ ৪৪ ॥
ব্রাহ্মাণান্ ঋষিমুখ্যাংশ্চ দেবদানব্দিম্নরান্ ।
দেবপ্রিয়ো মনুষ্যাংশ্চ নিক্সপ্নে স মহোরগান্ ॥ ৪৫॥
ধনদোহপি ততঃ শ্রুড়া রাবণস্যাক্রমং প্রভুঃ ।
অধর্মং মা কুরুষেতি দূতবাক্রের্ন্রাবারয়ৎ ॥ ৪৬ ॥
ততঃ ক্রুদ্ধো দশ্মীবো জগাম ধনদালয়ম্ ।
বিনির্জিত্য ধনাধ্যক্ষং জহারোত্তমপুষ্পকম্ ॥ ৪৭ ॥
ততো যুদ্ধা বরুণং নির্জিত্য সমরেহস্তরঃ ।
স্বর্গলোকমগান্ত্র্পং দেবরাক্ষিক্র্যাংসয়া ॥ ৪৮ ॥

বলিয়া সকলেই ভাহার নাম মেখনদে গ্রাধিল। ৩৯।৪০। ।৪১।৪২:

আনন্তর কুন্তকর্ণ দশাননকে কহিল, হে প্রভা ! 'নিজা আমাকে যারপর নাই কন্তপ্রদান করি তেছে। এই বলিরা ম্টাক্সা এক অতি স্প্রশস্ত গুছা মির্মাণ করাইরা তন্মুধ্য বিঘূর্নিত ছইরা নিজে। যাইতে লাগিল, কুন্তকর্ণ নিজিত ছইলে সর্বাক্তেরপ্রদ হর জ,দশানন ব্রাহ্মণ শ্বিষ পূক্তব, দেবতা,দানব, কিরর,দেবপ্রী,মন্থ্যাও মহোরগ সমস্তকেই বিনাশ করিতে আরম্ভ করিল। ধনপতি কুবের রাবণের এইরপ অহিতাচরণ প্রবণ করিয়া ভাছাকে অধ্যাচরণ করিতে নিষেধ করিয়া বলিয়া পাঠাইলেন। কিন্তু কুর্কু দ্বি দশানন কুবেরের এই হিতকর বাক্য আকর্ণনে জ্রোধানলে বিদক্ষ হইরা যক্ষপতির আলয়ে গমন করিল, এবং তাঁহাকে যুদ্ধে পরাভব করিয়া পূপ্যক রশ্ব অপ্যাহরণ করিল; অনন্তর মহাবলবান অস্তর যম ও বক্তবের সহিল সমরাঙ্গনে ব্যাপৃত ছইয়া উাহাদিগকে পরাভূত করিয়া তিদ্বাধিপতি দেবরাক্স ইস্তাকে বিনাশ করিবার

ততোহতংলহত্য জামিন্দেণ সহ দৈবতৈঃ।

ততোহিতংলহত্য বহল জিদশেশ্বরং॥ ৪৯॥

তত্তি রাবণমত্যেত্য বহল জিদশেশ্বরং॥ ৪৯॥

তত্তি রাবণমত্য নেঘন দিং প্রতাপবান্।

কর্মা ঘোরং মহন্তাদ্ধং জিল্পা বিদশপুষ্ণবান্॥ ৫০॥

কর্মা বহারে মহন্তাদ্ধং জিল্পা বিদশপুষ্ণবান্॥ ৫০॥

কর্মা তু ক্রিমান্দা তত্তেন স্থাং চকার লং॥ ৫০॥

কর্মা তু ক্রিমান্দা তত্তেন স্থাং চকার লং॥ ৫০॥

কর্মা তু ক্রিমান্দা তত্তেন স্থাং চকার লং॥ ৫০॥

করাবণঃ পরমপ্রীত এবং লোকাম্মানারণ:।

তবা বর্মা তু কের্মানার স্থান কর্মা স্বভবনং যথে। ॥ ৫২॥

কর্মা ব্রামান্দা ব্রামান্দা কর্মানার ক্রেমানার নিহ্ন কর্মানার নিহ্ন কর্মানার নিহ্ন কর্মানার নিহ্ন কর্মানার কর্মানার নিহ্ন কর্মানার কর্

আশাষে সর্গালোকে অতি সত্ত্ব গমন করিল ; সেথানে দেবরাজ ইজের লাহিত ভাছার তুমুল সংগ্রাম উপস্থিত ছটল, কিন্তু রাবণই বিজ্ঞীত হট্যা তৎকর্ত্ব বন্দীভূত হটল ; ৪৩।৪৪।৪৫। ৪৬।৪৭:৪৮।৪৯।

মহাপরাক্রান্ত মেঘনাদ পিতার ছ্রবস্থা শ্রবণ করিয়া বিদশনাথের সহিত ঘোরতর যুদ্ধ করতঃ তাঁহাকে পরাজিত ভ দৃঢ় রূপে আবদ্ধ করিয়া পিতাকে মুক্ত করিল, এবং ইন্দ্রকে বন্ধন করিয়া স্বপুরে আগমন করিল। প্রজ্ঞান পতি ব্রহ্মা ইন্দ্রের ভুগতি দর্শনে ক্ষ্ক ছইয়া মেঘনাদের নিকট হইতে তাঁহাকে মোচন করণানন্তর সভবকে প্রস্থান করিলেন। বেছার ব্রহা

মহাবলশালী রাবণ ক্রমে ক্রমে সমস্ত লোক জার করিলা পরিঘ সদৃশ কৈলাস গিরি স্বীর বাজ দালা উত্তোলন করিয়াছিল ভদশনে নদীকেশ্বর কোপাছিত এইরা ভাষাকে এই অভিশাপ দিয়াছিলেন যে, বানর ও মনুষ্য ধারা ভোষার বিনাশ ছইবে

ততোহপি বলমাসাদ্য জিঘাংসুহ রিপুঙ্গবম। ধৃতত্তেনৈৰ ক**ংকণ বালিনা দশকন্ধর** ॥ ৫**৬** ॥ ভাময়িতা ভূচভুরঃ সমুদ্রান্রাবণং হরিঃ। বিসর্জয়ামাদ ততন্তেন সখ্যং চকার সং॥ ৫৭ । রাবণঃ প্রমপ্রীত এবং লোকামহাবল:। চকার স্বশে রাম ! বুভুজে স্থমেব তান্।। ৫৮॥ এবং প্রভাবো রাজেন্দ্র! দশ্জীবঃ সহেন্দ্র ছি। ত্রা বিনিহত: সঞ্জো রাবণো লোকরাবণ: ॥ ৫১। মেঘনাদশ্চ নিহতো লক্ষ্ণেন মহাজ্ঞা। ভবারারারণঃ লাক্ষাজ্জগতামাদির ছিভুং। ত্বস্বাপমিদং সর্কং জ্গৎস্থাবরজঙ্গমম্। ৬১। দশানন অভিশপ্ত হইয়া শাপের বিষয় চিত্তা করিতে করিতে সহস্রার্থন নগরে গ্রান করিল সেখানে কাত্রীয়া দাগা বন্ধ হইল: মহর্ষি পুলস্তা ধার্ণের বন্ধনাবস্থা শ্রবণে সেখানে ত্রিত পদেগমন করিয়া ভাষাকে বিমুক্ত করিলেন। মহাতেজ-রাবণ বল প্রাপ্ত হইয়া জিলাংসা রুত্তি পরিতৃষ্ট করিবান মানসে বানর শ্রেষ্ঠ বালির নিকটে গমন করিল, তথায় ছবি পুষ্পৰ বালি দশগ্ৰীৰকে কক্ষের ভিতর বাণিয়া অবক্ষ করি লেন। বালি ভাগাকে চারিসমুদ্রের উপরে জমণ করাইয়: অবশেষে 'সমুদ্রে বিস্তর্জন করিলেন, পরে রামণ সমুচি । প্রতিফল প্রাপ্ত হইয়া ভাঁহার স্থিত স্থাতা ভাগন করিল। । ६७ । ৫६ : ८६ । ८७ । ८५। ८३ त्रोमहत्त्वाः শामी (भीनारकात्र मभूमत्र (लाक खनरम खानत्रन कदित्र পরম প্রীত মনে রাজ্য সম্ভোগ করিতে লাগিল 🥴 বাজেজ ! ইক্রজিংও দশান্নের এইরপ প্রভাব ছিল বটে কিন্তু আপনি ঘোর যুদ্ধে নর্কলোক বিজয়ী রাবণকেও বিনাশ করিয়াছেন। মহামতি লক্ষণদেব মেঘনাদকে যুদ্ধে বিনষ্ঠ করিয়া-ছেন এবং আপনি মহামেক সদৃশ কুন্তকর্ণকে বিনাশ করিয়া-

ছেন। হে বিভেগ! আপনি সংক্ষাৎ না গায়ণ, অপেনি জগতের

ত্ব্যতিকমলোৎপয়ো একা লোকপিতামহঃ।
আগ্নিস্তে মুখতো জাতো বাচা সং রঘুস্তম ! । ৬২ ॥
বাহুত্যাং লোকপালোহাশ্চক্ষুত্নং চন্দ্র শকরো ।
বিদশ্চ বিদিশন্চৈব কণা ভ্যাং তে সমুপ্রেতাং ।৬০
আগাৎপ্রাণঃ সমুৎপদ্মশ্চামিনো দেবসন্তমো ।
জজ্মাজানুরজঘনাত্ত্বলো কিলেয়েছিতবন্ । ৬৪ ।
কুক্ষিদেশাৎ সমুৎপদ্মাশ্চতারঃ নাগরা হরে ! ।
ত্তনাভ্যামিশ্রেকানো বালখিল্যাশ্চ রেভসঃ । ৬৫ ।
ব্যেচাদ্যমো গুদামুতু মনো রুদ্রস্তিলোচনঃ ।
অস্থিতাং পরিতা জাতাং কেশেভ্যো মেঘসংহতিঃ।
ও্যধ্যস্তব রোমভ্যো নথেভ্যান্চ থ্রাদ্যঃ ।
৩ং বিশ্বকাং পুরুষো মায়াশক্তিসমন্থিতঃ ॥ ৬৭ ॥

স্ফিকর্তা : এই স্থাবর জন্তমাত্ম গ জ্বৎ সমস্ত আপনাওই স্বরূপ, হে রয়ন্তম ! আপনার নাভিপদ হইতে লোক পিতানহ এনা উংপন্ন হইয়াছেন, অগ্নি আপুনার মূথ হইতে বাক্রের সহিত জ্ম গ্রেছণ করিরাচেন, আপসনার বাছদ্দ হইতে লোকপাল, নয়নদ্বয় হইতে নিশাকর ও ত্র্য এবং শ্রবণ যুগল হইতে দিক্ ওবিদিক সমূৎপত্ম ২টয় (ছে; হে ঐছেরে! আপনার আত্রাণ তইতে প্রাণবায় ও দেবজ্ঞেষ্ঠ অধিনী কুমারদয়, জ্ঞা জানু, উক্ত জন্মদেশ হইতে ভ্ৰলোক সমুদায় সংট হইয়াছে এবং আপেনারই কুঞ্চিদেশ বহির্গত হইলা চারিটী মহাসাগর অথিল জগৎ পরিব্যাপ্ত করিয়া রাখিয়াছে। আপনার শুনদ্ম ুটতে ইন্দ্র ও বৰুণ প্রভৃতি দেবতা দকল, রেত হইতে বাল-খিলা মুনি, মেটু ছইতে যম, গুছাদেশ ছইতে মৃত্যু অৰ্থাৎ ত্রিলোচন রুদ্র আপনার অস্থি হইতে মেরু এবং কেশ হইতে মেঘ সংছতি সমুৎপন হইলাছে; হে রমানাথ! ঔষধ বুমুদার আপনার রোম হইতে এবং গ্রাদি সমস্ত আপনার নথ হইতে উৎপন্ন হইয়াছে। আপনই বিশ্বরূপ পুরুষ-নাম্বা-

নানারপ ইবাভাসি গুণব্য তিকরে সতি।

থামাপ্রিতার বিরুধাঃ পিবস্তাভ্তমধ্রে। ৬৮।
থয়া সৃষ্টমিদং সর্বাং বিশ্বং স্থানেরজঙ্কমম্। ৬৯।
থামাপ্রিতার জীবন্তি সর্বের স্থানরজঙ্কমাং। ৬৯।
থদুক্তিমথিলং বস্তু ব্যবহারেইপি রাঘর!।
ক্ষারমধ্যগতং সর্প্রথা ব্যাপ্যাধিলং প্রঃ। ৭০।
থক্ত সা ভাসতেইকাদি ন থং তেনাবভাসদে।
সর্বাণং নিত্যমেকং থাং জ্ঞানচক্ষুর্বিলোকয়েও।
নাজ্ঞানচক্ষুণ্ডাং পশ্যেদক্ষদৃক্ লাক্ষরং যথা।
যোগিনস্তাং বিচিন্নন্তি স্বদেহে প্রমেশ্বর্ম। ৭২
মতারিরসনম্থৈর্বেদশীধেরহর্নিশম্।
থ্রুপাদভ্তিতলেশেন গৃহীতা যদি যোগিনঃ। ৭৩।

শক্তিসম্বিত হইয়া বকা বিফ্ও ককে প্রভৃতি নানারণে প্রকাশমান আছেন। ৫৮ । ৫৯ - ৬০ | ৬১ : ৬২ | ৮২ : ১৬৪ | ৬৫ | ৬৫ | ৬৭ | ৬৮ |

হে ভগৎপতে। দেবতা দকল আপনাকে আশ্রয়,করিয়া
যজ্ঞ্বানে অমৃত পান করিয়া থাকেন; এই স্থাবর জঙ্গনাপ্রক
বিশ্ব আপনার সারাই স্থাই হইয়া আপনারই আশ্রেম্নত্তা
ইইয়াছে এবং অদ্যাবধি বর্ত্তমান বহিলাছে: তে রাগব! য়ন্ন
যেমন ক্ষীরমধ্যগত হইয়া সন্দার প্রঃ পরিব্যাপ্ত করিয়
থাকে,দেইরপ আপনিও অখিল জগতে ব্যাপ্ত হইয়া আছেন।
অর্কাদি সমস্ত আপনার বিষয় প্রকাশ করিতেছে, তজ্জনা
আপনি স্বয়ং স্বীয় বিষয়ের কিছুই প্রকাশ করেন না; হে
ব্যক্তি জ্ঞান চক্ষু প্রাপ্ত হইয়াছেন তিনিই কেবল আপনাকে
নিত্য ও সর্ব্বত্ত অবলোকন করিয়া থাকেন। ৬৯ বিলা বিদ্যা
ভামসাজ্জর স্থানে দিবাকর যেমন পরিলক্ষিত হয় না তজ্ঞান
অক্তান চক্ষু ব্যক্তিরা আপনাকে সন্দর্শন করিতে পারে না,
কেবল তপন্যানিরত তপোলক যোগিগণ স্ব স্থাবীরাভ্যন্তরে

বিচিন্ন হো হি পশান্তি চিম্মাত্রং তাং ন চানাথা।

মহা প্রলপিতং কিঞ্চিৎ সর্বাক্তস্য তবাপ্রতঃ।

কল্তমহ সি দেবেশ! তবান্তগ্রহভাগহম্। ৭৪।

দিগদেশকালপরিহীনমনন্যেকং

চিন্মাত্তমক্ষরমজং চলনাদিহীনম্।
সর্বজ্ঞনীশ্বর্থনন্ত গুণবুদেন্তমারং ভজে রঘুপতিং ভজতামভিন্মম্ । ৭ ।
ইতি শ্রীমদধ্যাতারামায়ণে উমামহেশ্বরসম্বাদে
উত্তরকাথে দিতীয়োহধ্যারঃ।

আপনার প্রমেশ্ররপ অবলোকন করিয়া থাকেন, অর্থাৎ আপনি সর্বাদা সর্বাত চৈত্র স্থারপে বিদ্যান আছেন; নিজীবন বদন উপনিষদে আপনার পুরুষ বা প্রকৃতি রূপের বিষয় কিছুই নাই, তবে আপনার চরণকমলে ভক্তি থাকায় যোগিয়া আপনার দ্বারা অমুগৃহীত হইয়া থাকেন, হে দেবেশ! বিচার করিয়া দেখিতে হইলেউপনিষদেই আপনাকে চিল্ময় বলিয়া প্রাপ্ত হওয়া যায়। তদ্কিয় অপর কোন স্থানেও আপনার প্রকৃত তদ্ধ অবগত হওয়া যায় না, কিন্তু আপনি সর্বজ্ঞ অর্থাৎ সমস্তই বিদিত আছেন, অত্ঞব

আমি আপনার নিকটে গাছা কিছু কহিলাম, তবিষরে তিতীকা প্রদর্শন করিবেন, কারণ আমি আপনার অনুগ্রহের পাত্র। হে রঘুবর! আপনি দিক্,দেশ ও কাল পরিছীন, আপনি ইহ জগতের এক মাত্র আগাধা, আপনি চিম্মার চিম্মাত্র আপনি স্মস্তুন আপনি চলনাদি বিহীন, আপনি সর্বজ্ঞ, আপনি জর্মর, আপনি নিরস্তময় আপনি ভক্তদিগোর অভিন্ন অতএব আপনাকে ভক্তনা করি। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫।

ইতি শ্রীমদধ্যাস্থারামায়ণে উমামহেশ্বরসন্থাদে উত্তরকাণ্ডে দিতীব্যোহধ্যায়ঃ।

তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ

শ্রীরাম উবাচ।
বালিস্থীবয়োর্জন্ম শ্রোভুনিচ্ছামি ভত্তঃ।
রবীন্দ্রে বানরাকারে জঞ্জাত ইতি নঃ শুতেঃ। ১

শ্রীরাম কহিলেন—হে মহর্বে! আপনার নিকট বালি ও স্থাীব প্রভৃতির জন্ম রক্তান্ত শ্রবণ করিতে ইচ্ছা করি, এবং রবীক্ত প্রভৃতি দেবতা সকল বানরাকার পরিগ্রেহ করিয়া-ছিলেন, এইরূপ স্থামাদিশের প্রাণান্তর্গত বিক্ততি সমূহ বর্ণন অগস্ত্য উবাচ।
মেরোঃ স্বর্ণময়য়স্যাদ্রেশ্মধ্যশ্লে মণিপ্রভে।
তিমানু সভাত্তে বিস্তীর্ণা ব্রহ্মণঃ শতবোজনা। ১ ।

কক্ষন, জাবণ করিব। অগান্তা কহিলেন, মহাপর্বতের অন্তর্গত স্বর্গময় শৃক্ষ ছিল। তথায় লোকপিতামহ ব্রহ্মার শত বোজন বিস্তৃত আশ্রম ছিল; এক দিবস চতুর্মুখ ব্রহ্মা যোগাসনে উপ্ৰিষ্ট আছেন, ইতাবসরে তাঁহার নেত্র হইতে বল্প বিমাণে তनाः हरूर्यः म कार्कनाहित्सानमाञ्चि छः। নেত্রভায়ং পতিতং দিব্যমানন্দসলিলং বছ। ৩। তদ্গহীয়া করে জ্ঞা ধ্যাত্ম কিঞ্চিদত্যঙ্গৎ। ভূমে। পতিত্যাত্তেণ তত্মাজ্জাতো মহাকপিঃ। ৪। তমাহ জেহিণো বৎদ! কিঞ্ছিৎকালং বসাত্ত মে। সমীপে সর্বশোভাটো ততঃ শ্রেয়ো ভবিষ্যতি ॥ ইত্যুক্তো ন্যবস্তুত্ত ব্রহ্মণা বানরোত্তমঃ। এবং বছতিথে কালে গুতে ঋক্ষাধিপঃ সুধী:। ৬। কদাচিৎপর্য্যটন্ধকৌ ফলমূলার্থমূদ্যতঃ। অপশ্যদিব্যস্লিলাং বাপীং মণিশিলাস্থিতাম্। १ পানীরং পাতুম।গচ্ছত ত্র ছারামরং কপিম। দৃষ্টা প্রতিকপিং মহা নিপপাত জলাস্তরে। ৮। তত্তা দৃষ্ট্রা হরিং শাঘুং পুনরুৎপ্লুত্য বানরং। অপশ্যৎ সুন্দরীং রামামাত্যানং বিস্ময়ং গতঃ।> দিবাণননাজা নিপ্তি চইল, চিনি তাহা করতলে ধারণ করিয়া ধ্যান করতঃ কি'ঞ্চৎ পৰিত্যাগ করিলেন,ঐ জল ভূমি-ভলে পতিত হইবা মাত্র তাহা ইতে এক মহাকপি সমুৎপন্ন ১ইল। অনন্তর ব্রহ্মা সেই মহাকপিকে কছিলেন, বংস! তুমি আমার নিকট কিঞিৎ কাল অবস্থান কর, তুমি সর্ব্য শোভাষিত ও সেভাগ্যশালী হইবে। ব্রহ্মা এই রূপ কছিলে, বানরোভ্রম দেখানে অবস্থান করিল, এবং বছ কাল বিগত ছইলে এক দিবস ঋকপতি ফল মূলাদি ভক্ষণে সমৃদ্যত ছইয়া পর্কতোপরি পরিভ্রমণ করিতে লাগিল। পথি-यत्था मनिमञ्ज त्रांशांन मयाब्द ज्यावियम क्रमांन मन्मर्गन করিয়া জলপানাভিলাবে তৎসমীপে উপনীত হইলে ধল সধ্যে ভাছার প্রভিবিশ্ব নিপভিভ হওয়ার মনে মনে ভাবিল বে, জনমধ্যে অপর বানর অবন্থিতি করিতৈছে, এই क्ष क्र बिना इहेबा (म जे बान मर्दा बन्ल आर्मा क्रिन, িক্ত দিতীয় বানরকে দেখিতে না পাইয়া ঐ মহাকপি পুনর্কার

তত: সুরেশো দেবেশং পুর্দ্ধার। চতুর্ম্বার্থন্।
গচ্ছমাধাক্ষণময়ে দৃষ্টা নারীং মনোরমাম্। ১০।
কন্দর্পনরবিদ্ধাক্ষপ্তকেবান্ বীর্যায়ুক্তমম্।
তামপ্রাপ্রেব তদ্বীদ্ধং বালদেশে পতন্তু বি। ১১॥
বালী সমস্বল্পত্ত শক্তবুল্যপরাক্রমঃ।
তক্ত দল্ভা সুরেশানঃ স্বর্ণমালাং দিবং গতঃ ১২॥
ভানুরপ্যাগতন্তক্ত তদানীমেব ভামিনীম্।
দৃষ্টা কামবশো ভূড়া গ্রীবাদেশে সূক্তমাহৎ॥ ১৩
বীদ্ধং তদান্তেঃ সদ্যো মহাকাম্যেই ভবদ্ধরিঃ।
তদ্যা দল্ভা হনুমন্তং দহারার্থং গতে। ববিঃ॥ ১৪॥
পুক্রদ্বং দমাদার গড়া দা নিজিতা ক্রিং।
প্রাত্তংপশ্যদান্থানং প্রবিদ্ধানরাক্রতিম্॥ ১৫॥

উল্লেফন পূর্ব্ব দেখিল যে, একটা অপূর্ব্ব রূপবতী কামিনী ভাছার সমুখ্যর্শ্বনী ছইরাছে। তদ্দানে সে বিশাগাপন হইল। ১/২।৩।৪।৫।৬।৭।৮।৯।

অনন্তর সুরপতি ইক্স চতুরানন ব্রহ্মাকে পূজা করিরা মধ্যাক্ষ কালে সহরাভিমুথে গামন করিতে করিতে ঐ মনোরমা রমণীকে দর্শন করণানন্তর কন্দর্পশরে একান্ত জর্জিতি কণেবর হইরা তাহার সহিত মিলনের অভাব হইলেও বার্য্য পরিস্তাগা করিলেন, ঐ বীয় বালদেশে নিপতিত হইল, এবং তাহা। হইতে ইক্সের ন্যার পরাক্তমশালী বালী সমুৎপর হইল। সুরেশ্বর ভাছাকে একটা স্বর্ণমালা প্রদান করিলেন। ১০০১ ১০০। অনন্তর স্থ্য সেই জানর্ব্ধচনীর রপলাবণারতী ভামিনীকে নারন গোচর করিয়া মদন সান্তকে নিতান্ত ব্যথিত হইরা প্রিবাদেশে বহু পরিমাণে বীর্যা স্থি করতঃ পরিস্তাগ করিলেন; ঐ বীর্যা ছারা রপাবতী কামিনীর একটা মহাকার বানর সদ্য সমুত হইল; রবি বালীকে ভাহার সহার স্বরূপ ঐ সদ্য জাত হত্মানটী প্রদান করিয়া প্রশ্বান করিলেন। একদা ঐ কামিনী পুঞ্জ ব্যর্থ ব্যর্থ শীইরা নিত্রা যাইতেছিল,

ফলমূল দিভিঃ সার্দ্ধং পুল্লাভ্যাং সহিতঃ কপিঃ।
নতা চতুর্মা থস্যাথ্যে ঋক্ষরাক্ষঃ ছিভঃ সুধীঃ ॥ ১৬ ॥
তত্তাহত্তবীৎ সমাস্থান্য বহুলাঃ কপিকুঞ্জরম্।
তত্তিকং দেবতাত্ত্যাহ্যামরসন্ধিত্য ॥ ১৭ ॥
গচ্ছ দৃত ! মরাদিকৌ গুহীতা বানরোন্তমম্।
কিন্ধিলাং দিবানগরীং নির্মিতাং বিশ্বকর্মাণা ॥ ১
সরিসৌভাগবেলিভাং দেবৈরপি ছুরাসদাম্।
তস্যাং সিংহাসনে বীরং রাজানমভিষেচর। ১৯।
সপ্তত্তিপগতা যে যে বানরাঃ সন্তি দুর্জ্জরাঃ।
সর্বে তে ঋক্ষরাজ্বন ভবিষ্যন্তি বশেহনুগাঃ ॥ ২০
যদা নারায়ণঃ সাক্ষাদ্রামা ভূত্বা সনাতনঃ।
ভূতারাস্থরনাশার সপ্তবিষ্যন্তি ভূতলে। ২১।

তদা সর্বে সহাবাথে তিসা গচ্চন্ত বানরাঃ।

ইত্যুক্ত্যে ব্রহ্মণা দূতো দেবানাং স মহামতির্বি ব্যক্তির প্রথা চক্তে ব্রহ্মণা তং হরীশ্বম্।

দেবদূতস্ততো গহা ব্রহ্মণে তয়্মবেদয়ৎ॥২০॥

তদাদি বানরাণাং সা কিষ্কিষ্ণাভূম্পাশ্রয়ঃ।

সর্বেশ্বস্থানারীং ব্রহ্মণাহ্রিদানীং ব্রহ্মণাহ্রিদানীং ব্রহ্মণাহ্রিদানীং ব্রহ্মণাহ্রিদানীং নিত্রমুক্তিদায়নঃ॥২৪
ভূমের্ভারে স্তঃ ক্রম্মন্ত্রা লীলান্দেহিনা
সর্বভূতান্তরস্থা নিত্রমুক্তিদায়নঃ॥২৫

অথণ্ডানন্দ্রপান ক্রিয়ানের পরাক্রমঃ।

তথাপি বণ্যতে সন্তিলীলামানুষ্কপিণঃ॥২৬

রজনী প্রভাত হইলে দেখিল যে, আংপনার সন্তান দয় পূর্কের ন্যায় বানরাকার প্রাপ্ত হইয়াছে; অনন্তর পক্ষরাজ ফল মূণাদি আছ্য়ণ পূর্বেক পুত্রদিগকে সমভিবাছারে করিয়া লোকপিডামহ চতুর্দুগব্রদার সন্নিধানে উপনীত হইরা তাঁহাকে নমক্ষার পূর্বক অব্যতিতি করিল; পরে তিনি কপিকুঞ্রকে বিবিধ প্রকারে সনাম্বাস প্রদান করিয়া অনর-গণু সরিধানে এক দেবতা গৃতকে আহ্বান কবিয়া কছিলেন— হে দৃত! তুমি আমাকর্ক আদিষ্ট ছইলা বানব শ্রেষ্ঠ নিগকে গ্ৰহণ করিয়া বিশ্বকর্ম। বিনিশ্বিত কিছিদ্ধা নামী দিবা নগরীতে গমন কর। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। সেই নগরী দেবতা দিগোর দারা পরম সেভাগা সংযুকা ১ইয়াচে, অতএব ভাহার সিংহাসনে মহাবীব বালীকে অধি-বেশন করাইয়া ভাহাকে রাজ্যাভিষিক্ত কর,আর সপ্তরীপ মধ্যে নে সমস্ত হুদ্ধর্ব বানর আতে, ভাহারা সকলেই ঐ ঋকরাজের ৰশবৰ্তী ছইবে; যথন সাক্ষাৎ সমতিন নারায়ণ পৃথিবীর ভার অপনোদনের নিমিত্ত অর্থাৎ অন্তর্দিগকে বিনাশ ক্রিবার জন্য রাম্রপে প্রিধীতে ভাবতীর্ণ ছইবেন, ভুখন

ঐ বানর সমস্ত ভাঁহাকে যাহাত্য করিবার নিমিত গমন করিবে। অনম্বর দূত ব্রহ্মার নিদেশবারী চইরা হরীধাকে রাজ্যপদে অধিষ্ঠিত করিয়া পুমর্কার তৎসন্থিগনে গমন করতঃ সমুদায় রক্তান্ত ভাহার নিকট নিবেদন করিল। ২০০২১

ছেল, অধুনা ক্রমানার প্রের বানর দিরের আন্তর্গ ছিল, অধুনা ক্রমানার প্রার্থিত হট্যা তুমি সমস্ত বানরের রাজা হইলে। হে দেবেশ! আপনি হীয় লীলা অবভ্রন করিবার নানসে মনুব্যদেহ পরিপ্রাহ করিবাছেন। আপনার দেহে এভদ্র পরাক্রম বে, আপনি ভূভার হরণ করিবাছেন। আপনার বে লোক আপনাকে আক্রমমর্থণ করিয়া কেবল মাত্র আশানাকেই জ্ঞান্ত আক্রমমর্থণ করিয়া কেবল মাত্র আশানার রূপ অথও আনন্দ্রময় হইলেও সাধারণের প্রাপ্রার্থ অবলা ও হালার মুল্লিলার ক্রম্প্রাক্রম নিতান্ত আশার্মা থাকেন। বে, ব্যক্তির আশার্মার্থাকেন। বে, ব্যক্তির আশার্মার প্রথমের ক্রম্বার্থা ও স্ব্রোব্র মহতী করিছি দোষণা করে তাহার জন্ম

ষশন্তে দক্ষলোকানাং পাপহতৈর সুধার চ।

ব ইদং ক ব্রেক্মর্তো বালিস্থাবিরার্মহং। : ৭

জন্ম দ্বাশ্রেষ্ণ স্বাত্তে দক্ষপাতকৈ।
অথান্যাং সম্প্রক্র্যানি কথাং রাম! দ্বাশ্রয়াম্।২৮

সীতা ক্রতা যদর্থং দা রাবনেন ছ্রাল্মনা।
পুরা কৃত্যুগে রাম! প্রক্রাপতিস্তং বিভূম্।২৯

সনংকুমারমেকাক্তে দুমাদীনং দশানন:।
বিনয়বেনতো ভূদ্বা হাভিরাদ্যেদ্যবেবীং॥ ৩০॥
কো স্বন্মিন্ প্রবরো লোকে দেবানাং বলবন্তরং?
দেবাশ্ব যং স্মাপ্রিত্য যুদ্ধে শক্রং জ্যান্তি হি ?।
কং রজন্তি দ্বিজা নিত্যং কং ধ্যায়ন্তি চ যোগিনং ?

এতম্মে শংস ভগবন! প্রশ্নং প্রশ্নবিদামর!॥ ৩২

জাত্বা তন্য ক্রিক্রং যন্তদশ্রেণ যোগদুক্।।

দশাননমুবাচেদং শুণু বক্ষ্যামি পুজ্রক!॥ ৩৩॥

আপনারই আশ্রয় ভূত হয় ও সে সক্র পাপ হইতে বিনিম্ভি ইয়া যায়। ২৪ । ২৫ । ২৬ । ২৭ ।

দেশানন বে কারণে জনকাথজা সাঁতাকে হরণ করিয়ালিল, কহিছেছি, শ্রবণ করুন। হে রানচন্দ্র! . এক দিন ক্রত্যুগে দশগ্রীব লোক পিতামহ ব্রহ্মার মানসপ্ত সনৎক্ষারকে নির্জন প্রদেশে সমাদীন সন্দর্শন করিয়া বিনরাবনত হইয়া অভিবাদন পূর্বক কহিল—হে ভগবন্! ইহ লোকে দেবতাদিগের মধ্যে কে অধিক বলবান্ আছে যে, তাছার আশ্রয়ভূত ছইয়। দেবতারা সমগ্রন্দন শক্র জয় করে ? ব্রাহ্মণেরা কাছাকে নিজ্য জ্ঞান করেরা দানার এই সংশয় জ্ঞান করিয়া দিন। রাবণের মনোন্মধ্যে ইচ্ছা মৃত্যু অবগত হইয়া গোগা বিশারদ সনৎকুমার দশাননকে কছিলেন, ছে পুক্রক! আমার বাক্য শ্রবণ কর—

ভর্তা যো জগতাং নিতাং বাগ জন্মাদিকং নহি হারাস্থরৈ হারাভাগে হারানারার নাহ্বারঃ ॥ ৩৪ । বাগি কিলাজানে বালালি বিশ্বস্থা লালি । তাইং যেনৈর সকলং জগৎ স্থাবরজ্ঞ মন্ ॥ ৩৪ ॥ তং সমান্তিতা বিশ্বধা জয়তি সমরে রিপুন । বাগিনে বাগেনে তানে বাল্লপতি তি । ৩৬ মহর্ষের্ক চনং ক্রছা প্রভাগের জলাননঃ । বৈত্যানি ব্রহাণ বিষ্ণু না নিহিতানি চ ॥ ৩৭ কাং বা গতিং প্রপদানে প্রভাগে বিজ্ঞানি নিহিতানি চ ॥ ৩৭ কাং বা গতিং প্রপদানে প্রভাগে বিজ্ঞানি বিশ্বদানি হ ॥ ৩৭ কাং বা গতিং প্রপদানে প্রভাগে বাক্রানারিপ ন্ ৩৮ ॥ বৈত্যানি মুনিলের্ডো রাবণং রাক্ষণারিপ ন্ ৩৮ ॥ দৈনতি নিহ্তা নিতাং গড়া সর্গমনুত্রমন্। ভোগক্ষয়ে পুনস্তমান্ত্রী ভূমো ভবন্তি তে ॥ ৩৯

যিনি এই জগৎ প্রতিপালন করিতেছেন, যাঁহার জন্ম বা
মৃত্যু কিছুই নাই, দেব, হক্ষ, রক্ষপ্রসূতি বাঁহাকে
অচ্যুত নারায়ণ বলিধা সর্বাদা নমক্ষার করে, যাঁহার নালি
কমল ছইতে বিশ্বস্থী কন্তা ব্রহ্মা উৎপন্ন হট্টাছেল,
স্থানর জন্ম সমুদায় জগৎ স্টে হইয়াছে, প্রিভেরণ ভাঁহাকে
আপ্রায় করিয়া সমরে শক্র জ্বয় করিয়া থাকেন. শেলিরা
যোগাসনে উপ্রেশন করিয়া নির্ভ্যুর ধানে করিয়া থাকেন।
১৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৩০। ৩৪। ৩৫। ৩৬।

দশানন মহর্বির বাক্য শ্রবণ করিয়া তাঁহাকে বলিলেন বিষ্ণুকর্ত্ক দৈতা দানব ও রাক্ষণ সমন্ত নিহত হুট্নাচে কিন্তু হে মুনি পুসব! তাহাদিগের কি গতি হুইবে. অন্তর্গুট্ করিয়া প্রকাশ কঞ্চন; মহর্বি রক্ষাধিপতির বাক্যাকণন করিয়া কহিলেন, তাহারা দেবতাগণ কর্তক নিহত হুইয়া নিতা পরমপবিত্র স্বর্গামে গদন করিয়া থাকে, কিন্তু ভাহাদিগোর ভোগক্ষর হুইলে স্বর্গুট্ট হুইয়া পুন্রার পুথিবীতে নিগতিত হয়। হে রক্ষণতি ৮ পুর্ব্বস্থাক্ষিত পুণা ও পাণ হেতু তাহারা স্থা-লোকে ও ভূলোকে অব্ভিন্তি श्रृक्वार्किरेजः शूनाशारेश श्रित्रत्य (ठाळविष्ठ ठ। বিষ্ণা যে হতান্তে তৃ প্রাপ্লুবন্তি হরেপতিম্। ৪০ क्षजा मूनिमूशेष मर्स्यः त्रावत्ना ऋष्ठेमानमः। যোৎস্যেহং হরিণা দান্ধিমিতিচিন্তাপরোহভবৎ। ৪১ মনঃভিত্ পরিজ্ঞাত্ব রাবর্ণস্য মহামুনিঃ। উবাচ ব**ৎম** ! তেইভীষ্টং ভবিষ্যতি ন সংশয়ং ॥ ৪২ কঞ্চিৎকালং প্রতীক্ষম্ব মুখী ভব দশানন!। এবমুক্তনা মহাবাহো! মুনিঃ পুনরুবাচ তম্। ৪৩। তদ্য স্বৰূপং বক্ষ্যামি হ্ৰপ্স্যাপি মায়িনঃ। ञ्चाव दत्र मुह मदर्कियु न दिश्व ह न नीय ह । ८८। ওঁ কারলৈচব সত্যং চ সাবিত্রী পৃথিবী চ সঃ। সমস্ত জগদারঃ শেষৰ পধরে। হি সং। ৪৫। नर्स्त (नराः नमूखान्द्र कानः सूर्यान्द्र हम्प्रमाः। स्ट्राम्ट्रा मिनाताबी यमरेक्ट ज्थानिलः । १७। করিয়া থাকে, আর বিফ্ বাঁছাকে বিনাশ করেন তিলি মৃক্তি পদ লাভ করিয়া :গোলোক ধামে থাকেন। ৩৭। ৩৮। 1081601

হুট্মানস রাবণ মুনিম্প হুট্তে সমুদার জ্রবণ করিয়।
ভগবন্ধারাবশ ও তমোগুণ প্রধানত্ব হেতু বিফুবেরী হইয়া
আমিও তাহার সহিত বৃদ্ধ করিব বলিয়। চিন্তা পরতক্ত্র হইল।
মহামুনি দশত্রীবের মনের বাসনা অবগত হইয়া কহিলেন—
বৎস! গোমার মনাভিলাধ পূর্ণ হইবে, ইহাতে ভিলার্জমাত্রও সংশর নাই, অভএব হে দশানন! কিঞ্ছিৎকাল
অপেকা কর, স্থী হুট্রে। ৪১ । ৪২ । এই বলিয়া
মহামুনি সন্থ কুমার রাবণকে পুনর্জার বণিলেন, হে মহাবাহো! আমি সেই মহামায়ী নিরাকার সনাতন বিষ্ণুর অরপা
ভল্ক কহিছেছি—তিনি রক্ষ ওপ্রতাভ্যন্তরে, নদ ও নদী
মধ্যে বাপ্তি হইয়া আছেন। তিনি সর্জ বাজ্ব ক্রার,তিনি সম্ভা
সত্য ও সাবিজী, তিনি পৃথিবীর সর্জন্তে পরিব্যাপ্ত, ভিনি
সমুদার জগতের আধার ও অনন্তদেব। সমস্ত দেবতা, সমুদ্র,

অয়িরিক্তর্থা মৃত্যুঃ পর্জন্যো বসবস্তথা।
বিদ্যাততি জ্বলত্যেষ পাতি চাণ্ডীতি বিশক্তং।
ক্রীড়াং করোত্যব্যযাল্পা সোহরং বিষ্ণুঃ সনাতনঃ।
তেন সর্বমিদং ব্যাপ্তং ত্রৈলোক্যং সচরাচরম্।
নীলোৎপলদলশ্যামো বিদ্যুদ্ধগান্তরাক্তঃ। ৪৯।
শুদ্ধজাস্থুনদপ্রখ্যাং শ্রিয়ং বামাক্ষ্ণংস্থিতা। ৫৯
সদানপায়িনীং দেবীং পশ্যমালিক্য তিষ্ঠতি। ৫৯
তেইং ন শক্যতে কৈশ্চিদ্বেদানবপ্রার্থা।
বিদ্যুদ্ধানিক্য তিষ্ঠতি। ৫৯
বিদ্যুদ্ধানিক্য তিষ্ঠতি। ৫৯।
বিদ্যুদ্ধানিক্য তিষ্ঠিত। ৫৯।
বিদ্যুদ্ধানিক্য তিষ্ঠিত। ৫৯।
বিদ্যুদ্ধানিক্য তিষ্ঠিত। ৫৯।
বিদ্যুদ্ধানিক্য তিষ্ঠিত। ৫৯।
বিদ্যুদ্ধানিক্য তিয়ালিকিঃ।

কাল, দিবাধর, নিশাকর, দিবস, রজনী, ধর্মরাজ ঘম, অনিল, অনল, ইন্দ্র, মৃত্যু, পজ্জ ন্য, বসুগণ, প্রজাপতি বন্ধা ক্সে, এবং অপরাপর দেব দানব সমূহের বহিত সেই মহাবিষ্ণ সনাতন ক্রীড়া করিয়া পাকেন অর্থাৎ উপরোক্ত সমুদায়ই ভাঁহার ক্রীড়ার বস্তু সদৃশ; তিনি অর্গ, মর্ত্ত, পাতাল ও हत्राहृद विश्व **मःमा**ट्य প्रतिवाख, नीलक्यत्नव नाम्य मा∤्रमण, বিছাদ্বৰ্ণ সৃদৃশ পীতবসনে আর্ত। নিমাল স্বৰ্ণ সন্ধিভঞী তাঁহার বামকোড়ে সংস্থিতা আছেন, তিনি সেই অপার विशीना (पवीष्क ममाबलाकन कतिया (व्यर्था९ श्रीय पर्गाव স্ফিব্যাপারাদিতে প্রব্রুত ছইরা) তাঁহাকে সমালিঙ্গন পূর্ব্বক অবস্থান করিতেছেন। ৪৩।৪৪।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮।৪৯।৫। ic>। (नवडा इडेक, मानव रहेक भाव शक्ता इडेक, डाइन्टक मर्गन क्रिडिं (क्रेड्स मर्थ इत्र मा ।. ज्राव क्रिन यात्रात्र ज्रेशत्र অনুগ্ৰহ ক্ৰিয়া পাকেন সেই ব্যক্তিই তাঁহাকে দেখিতে সক্ষম হয়, नाइट बंख कंद्र, जन्मा कंद्र, मान कंद्र, अधारन कंद्र, अधारन অপরাপার ইতর উপার অবলয়ন কর, কিছুতেই ভগবানকে দর্শন করিতে দক্ষম ছইবে না; কিন্তু তাঁছার প্রতি ভক্তিপ্রদর্শন কর, তাঁহার প্রিয়কার্যো প্রাণ উৎসর্গ কর, তাঁহার চিত্তের সহিত ভোমার চিত্ত নাস্ত কর, বিগত পাপ হও, তবে বেদান্তের বিমল দৃষ্টি দারা ভগবান নারারণের দর্শন পাইবে। ৫১। ৫২। ৫৩।

হে লক্ষাধিপতি দশানন! তোমার তগবান দর্শনের
বিষয় আরও কহিতেছি, অবণ কর। সেই তগবান নারারণ
দেব ও মর্ত্য লোকের মঙ্গল জন্য ত্রেভাযুগে ইক্ষাকু বংশাবতংশ রাজা দশরপের ওরসে মহাবলপরাক্রান্ত রামচন্দ্র জন্ম
গ্রহণ করিয়া রাজকলেবর ধারণ করিবেন। তিনি পিভার
নিদেশাম্বর্তী হইয়া অনুষ্ঠ লক্ষ্মণ ও ভার্যা জানকীর সহিত
দওকারণ্যে গামন করি বেন, এবং স্থকীয় মারা বিভার
করিয়া জগজ্ঞননী জানকীর সহিত বনর্থা পরিত্রমণ করিয়া
বেড়াইবেম। তে রাবণ। আনি ভোরার নিক্ট শবিত্তার
সম্পার কহিলাম, এক্ষণে অটপ ভক্তির সহিত শীমান্রামচল্রকে ভক্তনা কর্যাত্র প্রিশ্বের বিভার

ত্বং শ্রুত্বা সুরাধ্যকো ধ্যাত্বা কিঞ্ছিতিবি চি ।

ত্বা সহ বিরোধেপুত্র ব্লে রাবণো শহান । ৫৮

বৃদ্ধার্থী সর্বাজ্যে লোকান প্রাটন সমবিছিতঃ।

তত্ববি মহারাজ ! রাবণোহতীব বৃদ্ধিমান্।

হ্বান জানকীং দেবীং ভ্রাত্মবধকাককরা ॥ ৫৯ ॥

ইমাং কথাং যং শুণুরাৎপঠেতা

সংপ্রাব্যেত্বা প্রবণার্থিনাং সদা ।

আল্বামারোগ্যনস্থ্যেশিং
প্রাপ্রোতি লাভং ধনমক্ষরং চ । ৬০ ।

ইতি প্রীমদধ্যাত্ব্রামায়ণে উমামহেশ্রসম্বাদে

সুরাধ্যক্ষ এবস্থিধ জ্ঞাবণ করিয়া কিঞ্চিৎ কাল মনে মনে
চিন্তা করিয়া ছির করিলেন রাবণ ডমোগুণ প্রধানত্ব প্রযুক্ত
আপনার সহিত বিরোধ করিবার জন্য যুকার্থী হইয়া সমস্ত
লোক পর্যাটন করিয়াছিল—হে মহারাজঃ সুবুদ্ধি রাবণ আপনার হল্তে প্রাণ বিসক্ষন দিবে বলিয়াই জনকতনয়া, সীতা
দেবীকে হরণ করিয়াছিল। যে ব্যক্তি রামচন্দ্রের এই সমস্ত
কথা প্রবণ করে, পাঠ করে, প্রবণস্কুক দিগকে সর্বনাই জ্ঞাবণ
করায়, সে ব্যক্তি দীর্ঘ জীবন প্রাপ্ত হয়, জনস্ত মিত্রতা এবং
জ্ঞাম ধন লাভ করে । ৫৮। ৫৯। ৬০।

উত্তরকাথ্ডে ভূতীরোহধ্যায়ঃ।

देखि अमन्धास्त्रामात्रत्न खेमामाद्यस्त्रमञ्चातः डेस्ट्रकारथः जुडोत्त्राश्यातः।

চতুর্থো ২ধ্যায়

একদা ব্রহ্মণো লোকান্দ্রী নহাইব্রীছচঃ। ১
পর্যাটন্ রাবণো লোকান্দ্রী নহাইব্রীছচঃ। ১
ভগবন্! ক্রহি মে যোদ্ধং কুল্ল দক্তি মহাবলাঃ।
যোদ্ধমিচ্ছামি বলিভিন্তং জ্ঞাতানি জগজন্ম॥ ২
মুনিধ্যাতাই সুচিরং খেতনীপনিবাদিনঃ।
মহাবলা মহাকানান্ত্র যাহি মহামতে!॥ ৩
বিষ্ণুপুজারতা যে বৈ বিষ্ণুনা নিহতাক যে।
ত এব তত্ত্ব সঞ্জাতা অজ্যোক্ত সুরাসুরৈঃ॥ ৪।

কোন সময়ে দশানন ত্রিভ্রম পরিভ্রমণ করিতে করিতে পথি-মধ্যে দেবর্ষি নারদক্ষে ব্রহ্মলোক হইতে আগমন করিতে অবলাকন করিরা তাঁহাকে প্রণিপাত পূর্বক কহিল—ভগবল্! আপনি অর্গ, মন্তা ও পাতালের সমন্তই অবগত আছেন। একংগ বললালী দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে ইক্ষা করিতেছি। অভএব কোন্ প্রদেশে মহাবল পরাক্রমী বাস করে, আমাকে অনুপ্রাহ করিয়া বল্ন; দেবর্ষি রাবণের বাক্য প্রবণ করিবামাত্র ধানন করিয়া বলিলেন, হে মহামতে! খেত্রীপ নিবাদীরা 'মহাবলশালী ও মহাক্ষার বিশিক্ষা তাহারাবিষ্ণু পূজার অনুক্ষণ নিরত, বিষ্ণুও ভাহাদিগকে নিহত করিয়া থাকেন, স্তরাং সুরাস্থর ভাহাদিগকে জয় করিতে সমর্থ হন নাই, অভএব তুমি সেই ছানে গ্রম্ব কর; তক্ত্রণে সমর্যাভিলারী রাবণ সচিবল্যণ পরিক্রত হইয়া পূজাক রথে আরোহণ পূর্বক অভি সম্বর বেত দ্বীপ সমীপে আসিয়া উপনীত হইল। সেই দ্বীপ প্রভা

শ্রুতা তদ্রাবংশা বেগামান্তিভি: পুস্পকেশ তান্ । যোজকামঃ সমাগত্য শেত্ৰীপসমীপতঃ । ।।। তৎপ্রভাহততেজকং পুস্পকং নাচনততঃ। তाक्त। वियानः ध्यस्यो मञ्जिल्क नभाननः ॥ ७। প্রবিশন্নেব ভদ্দীপং ধৃতো হল্ডেন যোষিতা। পৃষ্টশ্চ জুং কুতঃ কোহসি প্রেষিতঃ কেন বা বদ ॥ ৭ ইত্যক্তো লীলয়া স্ত্রীভিহ সত্তীভিং পুনংপুনং। कृष्ट्राक्ष छाविनिस् उल्लामार खीनार मनाननः। ৮ चाम्ठरीप्रज्वः नवशा विख्यामात्र पूर्माजिः। বিষ্ণুনা নিহতো যামি বৈকুণ্ঠমিতি নিশ্চিতঃ ॥ ৯ মরি বিষ্ণ্র্যাধা কুপোত্তথা কার্য্যং করোম্বহন্। ইতি নিশ্চিত্য বৈদেহীং জহার বিপিনেহসুরঃ॥১০ দারা পুষ্পাক রণ প্রতিক্ষাগতি হইল স্মতরাং রাবণ ও সচিব বর্গ বিমান পরিভাগে পূর্বক পদত্রজে গমন করিতে লাগিল। ভारात्रा बील म्द्या व्यदिन कतिया मौत व्याधिम्गन मना-मन क रख दात्रा धातन कतिया कहिन, जूमि कांचा रहेए আসিরাছ ? কোন ব্যক্তিই বা ভোমাকে প্রেরণ করিয়াছে ? আর কেনই বা এখানে আসিয়াছ? শীক্ষ বল। ১। > ৩। 81019191

সেই দ্রীগণ ছাস্য করিতে করিতে পুন: পুনঃ এইরপ কহিলে নৈছিক ক্লেশ হেডু সেই কামিনীদিগের হত হইতে বিমুক্ত হইরা দশানন আশ্রুমাছিত ছুইরা চিন্তা করিতে লাগিল আমি বিফ্ কর্ত নিহত ছইরা বৈকুঠধামে গমন করিব। বিফু বেমন আমার প্রতিকৃপিত, আমিও সেইরপ জানারের পরাত্মান দ জহারাবনী মৃত্যাম্।

সাত্বৎপালয়ামাদ ত্তঃ কাজ্জার্থং স্বর্কম্। ১

রামন্ত্বং পরমেশরে হিদ্যা দকলং জানাদি বিজ্ঞানদৃক
ভূতং ভব্যমিদং ত্তিকালকলনা সাক্ষী বিকল্পোঞ্জিতঃ
ভক্তানামনুবর্ত্তনার দকলাং কুর্বন ক্রিয়াদঃ হতিং
হাশৃস্থান্য জারুতির নিবলো ভাদীশ লোকাচিতঃ ॥১২
স্তব্যেং রাম্বং তেন পুজিতঃ কুন্তদন্তবঃ।
স্থান্য ম্নিভিঃ দার্জং প্রেয়ে ক্রেমন্ত্রঃ।
সংসারীর রমানাথো রম্মাণোহ্বদদ্যুহে। ১৪।
অনাসক্তোহপি বিষয়ান্ রভুজে প্রিরেষ্টিতঃ। ১৫।
হত্বমৎপ্রমুখেঃ দন্তির্বানরেঃ পরিবেষ্টিতঃ। ১৫।

কার্যাকরিব। হৈ রঘুনাথ ! এইরপ রুত নিশ্চর ছইরা দশানন অরণ্য মধ্যে বিদেহ রাজ চনরাকে হরণ ক্রিয়াছিল এবং আননাকে প্রমাক্ষা অংগত হইরা ও আপনার দারাই স্কীয় বিনাশ ছিরসিদ্ধান্ত জানিরা অবনী স্থতাকে হরণ ক্রিয়া জননীর ন্যায় প্রতিপালন ক্রিয়াছিল ৷ ৮ ৷ ৯ ৷ ১ • ৷ ১১ ৷

হে রামচন্দ্র! আপনি পর্মেশ্বর, আপনি সমুদারের প্রতি আঅতুলা জ্ঞান করিয়া থাকেন। আপনি ভূভ, ভবিষং ও বর্তমান এই ত্রিকালের সমস্তই অবগত আছেন, সেই জন্য আপনি এই ত্রিকালের সামনী, ভক্তদিনের কর্মক্তের প্রেইভি দিবার নিমিত মন্ত্রীয়াইভি পরিস্তাই করিয়া মনুষাবং ক্রিয়া করিয়াছন এবং ইন্টোদি দেবভাদিশের হারা আর্চিত ইইরাও মংসদৃশ মুনিদিশের বাক্য আছেনোচর করিয়া পরিশোভিত হইরাও মংসদৃশ মুনিদিশের বাক্য আছেনোচর করিয়া ও ব্যাহ তংক্ত পুলিত ইয়া মুনিগণ সালে আক্রাভাইকরণে মার্মার

পুল্পকং চাগমদ্রামমেকদা পুর্ব্ববংগ্রহণ ।
প্রাহ দেব ! কুবেরেণ প্রেবিতং স্থামহং ততঃ ॥ ৬
কিতং তং রাবণেনাদে পশ্চাদ্রামেণ নির্ক্তিম্।
অহন্তং রাঘবং নিজাং বহু যাবদ্বসেন্ত্রি ॥ ১৭ ॥
যদা গক্তেম্যুশ্রেষ্ঠে বৈকুঠং যাহি মাং তদা।
তচ্চ, হা রাঘবঃ প্রাহ পুশ্সকং কুর্যানন্তম ॥ ১৮
যদা স্মরানি ভদ্রং তে তদাগচ্ছ মমান্তিকম্।
তিষ্ঠান্তধার সর্বত্র গক্তেদানং মমান্তকম্।
ই হ্যুক্ত্বা রামচনেন্দাহিপি পৌরকার্যাণি সর্ব্বশঃ।
আতৃতির্মান্তিভিঃ সার্বিং যথান্যায়ং চকার সঃ। ২০
রাঘবে শাস্তি ভূবং লোকানাথে রমাপতে
বসুধা শ্রাসম্পন্না ফলবস্তান্চ ভূক্ত্বাঃ ॥ ২১ ॥

बीदांगहत्त्व व क नक्यो मीजा, जर्बादा ७ महिन्दार সহিত সংসারীর ন্যায় জীড়া কবিতে বাগিলেন। বিষয় উপ-टिशारिक म्लाहा होने हरेबां का नारक व नाव थीन थिया कानकी ও সাধুগণের সহিত সংসার উপভোগ করিতেছেন ই ্যব-मात श्रूष्ट्रक अकामन जिल्लाम मगीरा छेननी छ इहेता करन्त्र छ-कहिन, (रु एवर ! जामि चार्ननात चाएममंबर्डी व्हेश दूरवर-সমীপে গমন করিয়াছিলাম। তিনি আমাকে পুনরায় আপনাব নিকট পোরণ করিশ্লাছেন এবং জালাকে বলিয়াছেন যে, তুমি অত্যে বাবন কৰ্ত্তক বিভিন্ন ছইয়া পাব শ্ৰীরামহাবা ভিত ভইরাছ অধুনা তুমি মহামুনি আগতত কে এবং ব্যুক্লভিলক वामहासारक वहन कहा यथन ब्रधुमाथ देवकू (१) भन कविट्य তথন তুমি আমার স্মীপে পুনর:গ্যন করিবে। রাঘণ ক্রি-প্রভাসন্থিত পূষ্পকের ব্যক্ষা কর্ণগোচর করিরা কহিলেন, যথন আমি ভোমাকে সারণ কৰিব তথন তুমি আমারি সমীলে व्याशमम कवि ७, अक्टल व्यामात मिर मनाकूत्राहत के छ । । म रहेशा नकन स्थान व्यवस्थान करा। अनस्य द्वांमहत्त जाना उ জনা ধর্মপরাঃ সর্বে পতিভক্তিপরাঃ জিয়ঃ।
নাপশ্যৎপুত্রমরণং ক শ্চু দ্রাজনি রাঘ্রে॥ ২২॥
সমাক্ষ বিমানাগ্রাং রাঘ্রঃ দীভয়া দহ।
বানরৈত্রাভৃতিঃ দার্ছং দঞ্চারাবনিং প্রভুঃ। ২
আমানুষাণি কার্যাণি চকার বছশো ভুবি।
ত্র'ক্ষণস্য স্তুং দৃষ্ট্রা বালং মৃত্যকালতঃ॥ ২৪॥
শোচন্তং ত্রাক্ষণং চাপি জ্ঞাড়া রামো মহামতিঃ।
তপস্তুং বনে শ্রুং হড়া ত্রাক্ষণবালকম্।
জীবরামাদ শ্রুদ্যা দদৌ স্বর্গমনুত্তমম্। ২৫।
লোকানামুপদেশার্থং পর্মাত্মা রলুত্মঃ। ২৬।
কোটিশঃ ভাপরামাদ শিবলিক্ষানি দর্বেশঃ।
সীতাং চর্ময়ামাদ সর্বভোগের্মানুবিঃ॥ ২৭॥

মন্ত্রিগণের সহিত অপত্য নির্বিশেষে প্রজাপালন করিতে লাগিলেন; লোকনাথ রমাপতি রাঘ্বের স্থাসনে বসুমতি প্রচুর শাস্থালিনী হইল এবং মহীকহ সকল অপ্রাথি ফলদান করিতে লাগিল। প্রজাপুঞ্জ ধর্মপরায়ণ, সিমন্তিনীগণ পতিসেবার অহরত এবং অকাল মৃত্যু এককালে তিরোহিত হইল। ১৬।

একদা , বামচন্দ্র পুল্দককে স্মরণ করিবায়াত পুল্পক
তাঁচার সন্মুখে আদিরা উপনীত হইল এবং তিনি সীতা সমভিব্যাহারে ভাষাতে আবোহণ পূর্মক বানর ও প্রাভূ সহ বিমান
মার্গে প্র্যাটন করিতেছেন, ইত্যবসরে কোন ব্রাহ্মণের একটা
সন্তান অকালে কালের করাল কবলে পতিত হইরাছে অবলোকন করিয়া নানাবিধ জলে কিক কার্যা করিয়াছিলেন। ব্রাহ্মণ
প্র পোকে নিভান্ত বিহলে হইরাছেন দেখিরা মহামভি রারচন্দ্র
বোর অরণ্যথাে এক শ্রু ভলসাা করিভেছিল সন্দর্শন করিয়া
ভাষার মন্তক ছেলন করভঃ ভাষাকে অভ্যুত্তম স্বর্গ বাহম
প্রেরণ করিলেন, এবং ঐ মৃত ব্রাহ্মণ বালককে পুন্ধীরিত
করিলেন। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬।

অনন্তর পরমাক্ষা রামচক্ত মহুবাদিগকে উপদেশ দিবার

শশাস রামো ধর্মেণ রাজ্যং পরমধর্মবিৎ।
কথাং সংস্থাপরামার রুর্বেলাক্মলাপহাম, । ২৮।
দশবর্ষসহস্রাণি মারামান্ত্রবিগ্রহঃ।
চকার রাজ্যং বিবিধল্লোকবন্দ্যপদাস্থ কং। ২৯।
একপত্নীত্রতো রামো রাজর্ষিং সর্বাদা শুচিং।
গৃহমেধীরম্বিলমাচরন্ শিক্ষরন্ জনান্॥ ৬০॥
সীতা প্রেমাহরা সাধী ভাবজ্ঞা দা হৈরা ভিরা। ৩১।
একদাক্রীড়বিপিনে সর্বভোগসমন্থিতে।
একান্তে দিব্যভবনে স্থাসীনং রঘুত্তমম্। ৬২।
নীলমাণিক্যসক্ষাশং দিব্যাভরণভূবিত্য।
প্রসন্ত্রদনং শাস্তং বিদ্যুৎপুঞ্জনিভাষরম্। ৩।

উদ্দেশে কোট কোট শিবলিক সর্বাত্ত সংস্থাপন করিবেন
ও অলে কিকভাবে সর্ব্ব ভোগা উপভোগা করিয়া জনকনদিনী
সীতার সহিত বিহার করিতেল গিলেন। পরম ধার্মিক রামচন্দ্র
ধর্মের সহিত রাজ্য শাসন করিয়াছিলেন এবং সর্ব্ব লোক
পাপনাশিনী অটবিত্ত বিষয়ী কথা সংস্থাপন করিয়া সর্ব্বলোক কর্জক বিধিবৎ পরিপুঞ্জিত হইয়া দশ সহস্প বংসর
রাজ্যশাসন করিয়াছিলেন । রাজবি রামচন্দ্র সর্বান্ধা এক
পত্নীর প্রতি অসুরক্ত থাকিরা বিশ্বজ্ঞাবে মহ্বাদিগকে ভগবন্ধাচরণ শিক্ষা দিবার নিমিত্ত গৃহ মধ্যে অবস্থিতি করিতে
লাগিলেন; জনকত্বিতা সারী সীতা রামচন্দ্রের উপর প্রগাঢ় প্রেম প্রদর্শন করিয়া নিরক্তর অবিলেহনভাবে থাকিতেন
এবং তাঁহার অসুষ্টিত ইন্সির নির্মান্ধনি হইয়াছিলেন। ২৭ ।
১৮ / ২৯ । ৩০ । ৩১ ।

এক বিৰু সুৰ্বভোগসমাযুক্ত আমে দৰানৰত্ব বিবা হৰ্মামধো নীসমাণিকা, ভেজোহাণি দিব্যাত্ত্বৰ বিজুবিত প্ৰসন্ত বচন শান্তপ্ৰকৃতি তড়িক্সতা নিভাগত্ত প্ৰামচক্ত একাকী নিৰ্দ্ধনে নীতা কমলপত্তাকী দৰ্বভিত্তন ভূষিতা।

রামমাহ করভাগে দা লালয়ন্তী পদামুদ্রে। ৩৪

দেবদেব ! জগন্ধা ! প্রমান্ধন্ ! দ্বাতন !।

চিদানন্দাদিমধ্যান্তরহিতাশেষকারণ !। ৩৫।

দেব ! দেবা: দ্বানাদ্য মানেকান্তেইক্রবস্থাতা।

বহুশোহর্ষমানান্তে বৈকুপ্তগমনং প্রতি। ৩৬।

ত্রা সমেতশ্চিচ্ছুজ্যা রামন্তিষ্ঠি ভূতলে।

বিস্ক্র্যাম্মান্ স্বকং ধাম্ বৈকুপ্তং চ স্নাতনম্। ৩৭

আন্তে ত্রা জগদ্ধাত্তি। রামাং ক্মললোচনং।

অগ্রতো যাহি বৈকুপ্তং তুং তথা চেদ্রুত্তমং। ৩৮

আগ্রতা যাহি বৈকুপ্তং স্বাথান্ন: করিষ্যতি।

ইতি বিজ্ঞাপিতাহন্তম্যা বিজ্ঞাপিতে। তবান্।

যদ্যুক্তং তৎ কুরুষ্ণা নাইমাক্তাপয়ে প্রভো!।

সী হায়ান্ডদ্বঃ ক্রুষ্ণা রামো ধ্যাত্বাইত্রনীৎ ক্ষণমা ৪০
দেবি! জানামি সকলং তত্ত্তোপায়ং বদামিতে।
কল্পায়িত্বা মিষং দেবি! লোকবাদং ত্বদাশ্রম্ ৪১
দেনি জাং বনে লোকবাদালীত ইবাপর:।
ভবিষ্তঃ কুমারৌ দ্বো বাল্মীকেরাশ্রমান্তিকে ৪২
ইদানীং দৃশ্যতে গর্ভঃ পুনরাগত্য মেহন্তিক্ম।
লোকানাং প্রভায়ার্থং ত্বং কুত্রা শপ্রমাদরং ৪৯
ভূমেবিরুমাত্রেণ বৈকুপ্তং যালালি ক্রুহ্ম।
পশ্চাদহং গমিষ্যামি এষ এব স্থুনিশ্রমঃ। ৪৪।
ইত্যক্ত্রা ভাং বিস্ক্র্যার্থ রামো ক্রানৈকলক্ষণঃ।
মক্রিভিশ্যস্তত্ত্রিক্রেলমুখ্যুক্ত সংক্রুঃ। ৪৫।

উপবিষ্ট আছেন অবলোকন করিয়া ক্মণলোচনা সর্বাশকার ভূষিতাজনক হুহিতা সীতা শ্রীরামের পাদপন্ম হক্তেধারণ করিরা কহিলেন, হে দেব! হে জগলাখা হে প্রমাক্ষ্ন, হে সনাতন! जाशिन मिकिमानम, जाशनात जाति नारे, मधा नारे ७ जाउ নাই। আপনি অশেষ জগতের কারণ; ছে দেব! 🗮 দি দেবতাগণ আশাকে বিগনে প্রাপ্ত হইর। আসনার বৈকুঠ গমন मयद्भ व्यामात्र निकृष्ठे विविध श्रार्थन। किन्द्र। विवेताहितन,-"द्रामहत्त्व आमानिशत्क अन्तर्भ (शांत्माक श्राम शद्रिकार्ग পূर्वक माधाक्रभी हरेबा जानमात महिल बदामस्ट्रान ज्यान्हिल করিতেছেন। ছে জগদাত্তি ! অত্যে আপনি বৈকুঠে গমন ককন, তাহা ছইলে পছজানেত্ৰ রঘুনাথও স্বৰ্গ ধামে আগামন কৰিঃ শ্মামাদিগকে সনাথ করিবেন।" ভাঁছারা আমাকে এইরূপবলিরা हित्न এवर आयित अक्त जाननाद्य कहिएकि। अर्थित टर नाथ ! याद्या युक्ति युक्त दश, अना काशरे करून । किक CE প্রভো! আদিআপনাকে (बाम तेश आका क्रिडिह मा, आनि (दन। ७२। ७०। ७४। ७৫। ७७। ७१। ७৮। ७०। म्रामद्रिष

 তত্ত্বাপবিকং জ্রামণ কুইনেং পর্গেশনত।

হাস্প্রেটে কথা স্থান হাসরস্তঃ স্থিতা হরিম। ৪৯ ॥
কথা প্রসঙ্গাৎপ প্রচ্ছে রামো বিজয়নামকন্।
পোরা জানপদা মে কিং বদস্তী হ শুভাশুভম্ ? ৪৭
সীতাং বা মাত গং বা মে জ্রাভ্রা কৈকরীমথ।
ন তেতবাং স্বরা জ্রাহি শাপিতোহিদ মমোপরি ।৪৮
ইত্যুক্তঃ প্রাহ বিজ্বো দেব! সর্ফে বদন্তি তে।
কৃতং স্কুদ্ধরং সর্ফাং রামেণ বিদিতাম্বা। ৪৯।
কিন্তু হল্বা দশগ্রীবং সীতামাহ্নত্য রাঘবঃ।
অমর্ষং পৃষ্ঠতঃ কৃত্য় স্ববেশা প্রত্যাপদয়ৎ॥ ৫০॥
কীদৃশং হৃদয়ের তন্য সাতা সন্ত্যোগজং ক্রথম্।
যা হ্লতা বিজ্বনেহরণ্যে রাবণেন দুরাম্বনা॥ ৫১॥

সিংছাসনে উপবেশন করিলেন এবং উপাসক স্কেছর্গ নানাবিষয়িনী কথায় তাঁছার চিত্ত বিনোদন করিতে লাগিল;
কথা প্রস্তান ও জানপদবাসীরা জামার গুডাশুভ বিবরে কে কি
বলিতেছে? সীতারই হউক বা জামার কনমীরই, হউক বা
লাভাদিগেরই হউক অথবা কৈকেরীরই হউক, যাহারই হউক
নির্ভন্ন চিত্তে বল, আমি শপথ করিয়া বলিতেছি ভোমাদিগের কোন ভর নাই। ৪৫। ৪৬। ৪৭।

রামচন্দ্র এইরপ কহিলে, বিশ্বর বলিল, হে দেব! সকলেই আপনাকে বলিরা অপকে যে, বিশিভাতা রঘুনাথ ভ্রুর কার্যা লকল করিরাছেন বটে, কিন্তু দশাননকে সমরে নিছত করিরা রাঘব ক্রোধ অপরিদর্শন পূর্বক সীতাকে প্নর্বার অভবনে জানাল করিয়াছেন। আর ছ্রান্থা রাবণ যে সীতাকে বিজন অরণ্য ছইতে বলপূর্বক হরণ করিয়াছিল, দেই সীতা তাহার ক্ষান্ত কিরপে অ্বদারিলী হইল ই অতএব আমাদিগের জীবা যদি কোন হৃদ্ধ করে, তবে তাহাদিশেরও ক্ষমা

আন্দাকমপি চ্ছার্ম যে বিভাগ মর্থা ভবেছ।

যাদৃক্ ভবিত বৈ রাজা তাদৃশ্যো নিয়তং প্রজাঃ।

তহা তছ্বনং রামঃ স্বজনান্ পর্যাপ্রছত।

তহিপি নত্বকেবন্ রামমেবমেতয় সংশায়ঃর ৫৩।

ততা নিস্তা সচিবান্ বিজয়ং স্ক্রনন্তথা।

আহ্য় লক্ষাণং রামো বচনং চেদমন্ত্রী । ৫৪॥
লোকাপবাদস্ত মহান্ দীতামাপ্রিত্য মেহতবং।

শীতাং প্রাতঃ দমানীয় বাল্মীকেরাশ্রমান্থিকে॥৫৫॥

ত্যক্ত্বা শীত্রং রথেন ত্বং পুনরায়াহি লক্ষাণ!।

বক্ষানে য্দি বা কিঞ্জিন্তদা মাং হতবানিদি॥ ৫৬

ইত্যুক্তো লক্ষাণো ভীতা৷ প্রাহরুত্থাপ্য জানকীম্
স্থান্তব্য রথে ক্রা জ্বাম সহসা বনস্॥ ৫৭॥

বাল্মীকেরাশ্রমন্যান্তে ত্যক্তা শীতামুবাচ সঃ।
লোকাপবাদভীত্যা ত্বাং তাক্তবান রাঘবো বনে॥

হইতে পারে। কারণ রাজা যেরপ জাচরণ করিবেন প্রাান রাও সেইরপ করিবে। রামচন্দ্র তাহার কথা শুনিয়া আর্মীয় পরিজনকে ঐ বিষয় জিজাসা করিলেন—কিন্তু তাহারাও তাঁহাকুক নমস্কার করিয়া কহিলেন,ইহাতে কোন সন্দেহ নাই। । ৪৮।৪৯।৫০।৫১।৫২।৫৩।

অনম্বর প্রমুপতি সচিববর্গ, বিজয় ও ক্ষেববর্গকে পরিত্যার পূর্বক লক্ষাণকে আহ্বান করিয়া কহিলেন —হে লক্ষাণ! দীতাকে আত্রার ডয়ানক কলক উপন্থিত হইয়াছে, অত্রব কল্য প্রাতে তুমি সীতাকে অন্তঃপুর হইতে লইয়া বাল্মীকির আগ্রম প্রেদেশে পরিত্যাগা পূর্বক পুনর্বার রখানিরে কার্যা অতি শীজ প্রত্যাবর্ত্তন করিবে। যদি তুমি ইহাডে কিছু বিকক্তি কর, তবে তুমি আগ্রাকে হলন করিবে। রাখব এইরপ ক্ষিলে লক্ষ্যণ ভীতাত্তঃকরণে জ্ঞানকীকে অতি প্রাতে গাজোশান করাইয়া স্থমজের রখে আহেলছণ পূর্বাক সহগা বন্ধপ্রে প্রত্যা করিলেন। অন্তর বাল্মীকির আগ্রমের

त्मारमा न किन्य योजर्गक् श्राम्प्रसः ।
इज्रुक्ता लक्षमः भीष् १ श्रुवान् द्राममिश्विम् ॥ ८ भीषा श्रिक्त लक्षमः भीष् १ श्रुवान् द्राममिश्विम् ॥ ८ भीषा श्रिक्त क्षा कि वाल्यो विलम्भाषा जिस्स्रेय ।
भिरेषाः क्षम कि वाल्यो किः नीजाः काषा म मिवाम्क ज्ञापि । विल्ला क्षियाः मक्त्रमार्थामा के कानकीम् ।
काषा किवयः मक्त्रमार्थाम्य विल्ला मित्र मित्र काषा अवाद्य स्वाद्य स्व मीजाः क्ल्या मित्र मित्र काषा अवाद्य स्व क्ष्योः भूनिवादकान त्यां विल्ला ।
त्रवाः किक्षः मना क्रमा विल्ला मिल्ला स्वादः । ७० भ

রাহ্বাহপি দীতারহিতঃ পরাত্মা বিজ্ঞানদৃক্ষেবল আদিদেবঃ। দস্তাজ্ঞা ভোগানখিলান্ বিরক্ষো মুনিত্রতোহভূন্মুনিদেবিতাও ্যিঃ। ৬৪।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সম্বাদে উত্তরকাণ্ডে চতুর্থোহধ্যায়ঃ।

এক প্রান্ত ভাগে সীতাকে পরিছার করিয়া লক্ষণ তাঁছাকে কছিলেন—লোকাপবাদ ভবে শ্রীরাম আপনাকে অরণ্য মধ্যে পরিত্যাগ করিলেন—ছে মাতঃ! আমার ইছাতে কিছু মাত্র দেখে নাই। এক্ষণে আপনি মুনির আশ্রম পাদে, গামন করুন, এই বলিয়া লক্ষণ রামসিরিধানে শীম্ম আদিয়া উপনীত হইলেন। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০।

এদিকে দীতা পতি বিরহানলে দহুদানা হইয়া মুক্তকণ্ঠে বাদন করিতে করিতে বহুবিধ বিগাপ করিতে লাগিলেন, দিবাদৃক্ বাল্মীকি শিষাগাণ প্রমুখাৎ ক্রন্সন বিষয় অবণপুর্বক দীতাকে অবগত হইয়া অহ্যাদিয়ারা পুলা করণানস্তর তাঁহাকে বিবিধ প্রকারে আহাদ প্রদান করিলেন এবং ভাবি বিষয়

সমস্ত জানিতে পারিয়া যোষিয়র্গ নিযুক্ত করিয়া দিলেন তাহারা মুনি-প্রম্থাৎ সীতাকে পরমাআ। বিষ্ণুর লক্ষ্মী অবগত হইয়া প্রতিদিন পূজা এবং পরম আদরের সহিত তাঁহাকে নিরস্তর পরিচর্যা করিয়াছিল। ওদিকে আদি দেব পরমাআ। রামচক্ষ্য বিজ্ঞান দৃক্ হইয়া সীতা পূন্য প্রযুক্ত একাকী অবস্থান করিয়াছিলেন এবং সমস্ত ভোগ বিষয়ে বিরক্ত ও অনাসক্ত হইয়া মুনিবৎ কার্যা করিয়াছিলেন। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪।

ইতি শ্রীনদধ্যাস্থরাময়েণে উমামহেশ্ব সন্থাদে । উত্তরকাণ্ডে চতুর্থে হিধ্যায়ঃ।

প करमा ३ शां यः।

রামগীতা।

শ্রীমহাদেব উবাচ।
ততো জগদাকলমকলাজনা
বিধার রামারণকীর্তির্ত্তমান্
চচার পুর্বাচরিতং রঘুত্তমো
রাজর্ষিবর্টারভিদেবিতং যথা। ১।
সৌমিত্রিণা পৃষ্ট উদারবৃদ্ধিনা
রামঃ কথাঃ প্রাহু পুরাতনীঃ শুভাঃ।
রাক্ষঃ প্রমন্তন্য দাপতো
ভিজ্ঞা তির্যাক্তমথাহ রাঘ্যঃ।
বদাচিদেকান্ত উপন্থিতং প্রভুং
রামং রমালালিতপাদপক্ষম্।
সৌমিত্রিলাদাদিত্রক্ষতাবনং
প্রণম্য ভক্ত্যা বিনরাস্থিতোহন্তবীৎ। ৩।

মহাদেব কহিলেন—বাঁহা ছইছে জগতের সমুদার মদল বিধান ছইডেছে এবং বিনি আন্তি—ক্থ—কর অমৃতারমান রামারণরপ উত্তম কীর্ত্তি সংস্থাপন করিরাছেন, সেই রযুপতি রামচক্র প্রিতমা সীতাকে পরিহার করিরা প্রদানপান ও সংক্থা প্রবণাদি কার্য্যে কালাতিপাত করিছে লাগিলেন। অনন্তর ক্মিত্রা নক্ষর উত্তার কৃত্তি লক্ষরণ প্রাচিন র'জা দিগের ধর্মাধর্ম নির্ণরার্থ জীরামকে জিজ্ঞাসা করিলে, রযুনাথ প্রমত তৃপতি রাজ্মণের ব্রহ্মন্ত অপহরণ জন্য ভিন্ন কর্তক অভিশপ্ত ছইরাছিলেন,ত্রিষ্র আধান করিরাছিলেন।

ত্বং শুর্দ্ধবোধে হিনি হিন করি দেহিনামাতানাধী দোহিনি নিরাক্ক তিং স্বরম্।
প্রতীরদে জ্ঞান দৃশাং মহামতে!
পাদাজভূসাহিত দক্ষ কিনাম্। ৪।
আহং প্রপন্নোহিমি পদাঘুজং প্রভে!!
ভ্রাপবর্গং তব যোগি ভাবিতম্।
যথাঞ্জনাজ্ঞানমপারবারিধিং
কুথং ভরিষ্যামি ভথাতুশাধি মাম্॥ ৫॥
প্রাহ্ণ দৌমিত্রিব চোহিখলং ভদা
প্রাহ্ণ প্রসার্তিহরং প্রসন্নধিঃ।

ভগবত্ক সংক্ষা শ্রবণে শুদ্ধান্তঃকরণ ইইরা স্থানিনা নদ্দন কোন সময় রামচন্দ্রকে বিজ্ঞানে প্রাপ্ত হইরা। তাঁহাকে গুকু নির্দেশ করতঃ ভক্তি সহকারে তাঁহার চরণ কমলে প্রণিপাত পূর্বক বিনীত ভাবে কহিলেন, হে মহামতে। আপনি নিরবজিয় হৈতনারপী, সর্বান্তঃহামী, আপনি আকার বিহীন অথচ আপনার পদায়ুক্ত সংলগ্নান্তঃকরণ ভক্তালিগের সমুখে ক্ষয়ং প্রতীয়মান হইভেছেন; হে প্রভা! যোগিরা আপনার পাদপাল সংসারের অপবর্গ চিন্তা করেন। এক্ষণে আমি আপনার পাদপাল সংসারের অপবর্গ চিন্তা করেন। এক্ষণে আমি আপনার সেই সর্ব্বেশারাধ্য চল্লে আশ্রম লইলাম। অসার জান সংসারের মুখ্য কারণ এবং বাহাতে অনায়ানে পরিজ্ঞান পাই আমাকে তাহাই শিক্ষণ প্রদান ক্ষম। ভক্তালিগের সংসার মুখ্যপাহারী, রাজন্য দিগেব ভ্রণ, ভক্তবৎসল রামচন্দ্র অর্জের বাহ্য শ্রবণ করিয়া

विकान स्कान उद्या श्रामा छ द्य क विकाम स्कान उद्या श्रामा छ द्याः क पा निर्माण कर्मा खान कर्माः क पा निर्माण क स्कूष्ट क्ष्मा स्वानः निर्माण क स्कृष्ट क्ष्मा खान कर्माः । निर्माण क स्कृष्ट क्ष्मा खान कर्माः । किया महीरता खत्र स्कूष्ट खुता मृजाः थिया खिर्मा (क) क्ष्म क्ष्मा क्ष्मा । यर्मा कर्मा क विकाम किया क्ष्मा क्ष्मा हिन्द क्ष्मा हिन्द क्ष्मा क्षमा हिन्द क्ष्मा क्षमा हिन्द क्ष्मा हिन्द क्ष्मा क्षमा हिन्द क्ष्मा क्षमा हिन्द क्ष्मा क्षमा हिन्द क्षमा क्षमा हिन्द क्षमा किया हिन्द क्ष्मा क्षमा हिन्द क्षमा क्षमा हिन्द क्षमा क्षमा हिन्द क्षमा किया हिन्द क्षमा क्षमा हिन्द क्षमा क्षमा हिन्द क्षमा किया हिन्द क्षमा किया हिन्द क्षमा क्षमा हिन्द क्षमा किया हिन्द क्षमा क्षमा किया हिन्द क्षमा हिन्द हिन्द क्षमा हिन्द क्ष नाक्षानहातिर्वः हात्रमक्षकः ।

७८२७७: कर्षः मरमावक्षकः ।

७७: পूनः मरण्डित्रशानातिणाः

७ प्राम्त्रथा कानिहात्रान् ७८२९॥ ३०॥

नस् किशार्यम्यस्य कामिणः

यदेशव निमार्श्यम्यस्याधनस्य।

कर्त्त्राकाः व्यापक्षकः व्याकामिणः।

विमार्श्यक्षकृष्टेशकि का भूनः॥ ১১॥

प्रशः किया ने सामारे निवयं मानीत हरें (काइन क्या विशः य काम रे पूर्व काइन अवह के काइनिकित हिनके कि दिवाद काम क्या क्या क्यांस मूल्य हमने कहा करीर कर्डश, किस काम हाजा कि क्रांन विश्वके हह, करें कानका एडज़ विद्याक्रण कान, क्यांन क्या मूनक इसम कहा करा यात्र मान विद्याक्रण कान, क्यांन क्यांन क्या मूनक विश्वक करा यात्र मान

निछा रैनिविषक क्रिकासनारण विद्राप मा शिकरण थ आसातित अथवा क्रिकास क्रि

অজান তিমির বিনাল করিবার নিমিক্ত ভাছাকে আছা-ভত্তজান প্রদান করিতে লাগিলেন। ৩।৪।৫। এ।

হে লক্ষণ। তত্ঞান লাভ করিতে ছইলে ক্রমলঃ বহিরল ও অন্তর্গের সাধন কার্যা অর্থাৎ অব্যোধন করিয়া বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বজালাদি রূপ ক্রিল সমত প্রাধন করিয়া অন্তঃকরণ বিশুক্ষ করণানন্তর লাম দম্যদি ধর্মানুষ্ঠান পূর্বক জাজ্ঞান লাভ করিবার জনা ব্রহ্মনিটা করণ সংযুক্ত সদ্প্রকর পরিচ্না। করা উচিব। চক্র বেমন পরিক্রমণ সম্বরে ক্রমার কার্যা অনবরত ই ছইডেছে বলিয়া ক্রমিত ছইরা ধাতে, স্তরাং প্রাক্রমানী ছইরাছ, কোন অধ্য ক্রিনা ও কোন ক্রমান কার্যা অনবরত ই ছইরা ব্যাক্রমার ক্রমার ক্রমা

कर्माहरणे माममान अपिकंडिंग।

उत्तादनमा कार्गामनः सम्मूला।

नम् पण्डा अनकार्गमाति।

विमान किश्विनमानारम्करण ॥ ५२॥

न नणकार्गामिन कि महत्वतः

थकाक्करण्डमानिन कार्यमिकान्।

उरेश्व विमा विश्विक श्वानिरेष
र्विनिमारण कर्षिणस्त्रमानिक अप्रकारिकान्।

रक्षिणमण्डीणि विस्कृत्वानिकः

उन्नमण्डीणि विस्कृत्वानिकः

उन्नमण्डीणि विस्कृत्वानिकः

रक्षिणमण्डीणि विस्कृत्वानिकः

रक्षिणमण्डीणिकः

विस्वानिकानिरिकामकानिकः

विस्वानिकानिरिकामकानिकानिकानिकानिकानिरिकामकानिकानिरिकामकानिकानिरिकामकानिकानिरिकामकानिकानिकानिरिकामकानिकानिरिकामकानिकानिरिकामकानिरिकामकानिरिकामकानिरिकामकानिकानिरिकामकानिरिकामकानिकानिरिकामकानिरिका

ना किया जिल्ल कार्य जन्मामन कवित्व जावर्ष, महनव पाया किलिए जन्माक व्यवस्थ जाना किलिए जन्म किलिए जन्म किलिए जन्म किलिए जन्म किलिए जन्म केलिए जन्म केलिए जन्म केलिए जन्म केलिए जन्म किलिए व्यवस्था किलिए व्यवस्था किलिए व्यवस्था किलिए व्यवस्था केलिए किलिए केलिए जन्म किलिए किलिए जन्म केलिए किलिए केलिए जन्म केलिए किलिए केलिए किलिए किलि

হেলকাণ ! কোন কোন বিজ্ঞান লাটানা বলেন হৈ, আন কিলা হইতে সুকি আন্ত ছঞা বাদ, কিল আহা প্ৰবাদ যেনন কৰা বোক সাধন অসং—ভজ্ঞান ভাষান স্ক্ৰিত ব্যৱস্থ বিশিত হইলেও জাকা কলং প্ৰবাদ্ধিক চুক্তা আন্ত হেন্দ্ৰীমজেল ৷ এ বিজ্ঞান ক্ষেত্ৰ কেন্দ্ৰিমান ক্ষ্তিৰ জিলা

नित्रविश्विष्ठ इरेडा बाटक बन्दर (य वांक्तित अहद्वीत विनेक्ट इहे-याट्ड डाशद विमेग्रेट श्रीमुक्त; श्रीतृष्ट्य द्वारा दानग्र मितित्व तिहांत्र कतित्व व्यात्र ब्राकात आकात ७ अछः-क्रम इंखि व्याख रुउद्रा गात्र, अवर खे हत्रमा विना -- विवक्त (नद्द! विनारिक एकमा कराम ; शूनम्ह कन्न कर्खवा कार्यापित অব্দের সহিত কলোৰুখী হয় আবার বিদ্যা কর্ম্মাদি বুদিকে विसडे करका विका धवर कर्ष अवस्था विद्योष समा मुगुक्-অনেরা নৈবিভিক ক্রিয়া পরিত্যাগ করিয়া পরবাদ পরমেখ-त्वत अकि सङ्घर्मन हिन्द न्वर्गन कविता शाक्त, कर्णार नमछ वैक्ति दर्शक्त विर्म वर्षक अनुत वरेता गर्सना मिल्यानका व्याकारम । ७०१वन वटाव । (इ. ममाकृतामिन ! बाबी व विशासी एकट्ट कार्या कडा कर्डवा, त्यावे विवय करिएक्कि अवन अव। मनीक मरना मनी अवना वानर कान अवस्थित कांबर कांबरकान विकित कर्मन कार्या कराहे वाराज्यम्बर्धवर्गाः चर्निकृत्विद्यः जनसम्बद्धाः स्टब्स् चरगार वरेत्रा, नवृत्ताम विकास अविकास कविका बाटकन । ३४ ।

 ন। তৈজি নী ব কৰি নাৰ বং
ন্যাসং প্ৰপত্তাখিলকৰ্মনাং ক্ষুট্ম।
এতাৰ দিত্যাই চ বাজিনাং ক্ষুট্ম।
এতাৰ দিত্যাই চ বাজিনাং ক্ষুট্ম।
কলং বিমোকার ন কর্ম নাধনম। ২১।
বিদ্যালমত্বে তু দলিত হুরা
কত্র দৃষ্টান্ত উলাক্ষ্ড: নম:।
কলৈ: পৃথকভাইজিনাইকৈ: ক্রুতুঃ।
সংসাধাতে জ্ঞানমতো বিপর্যারম্। ২২।
সপ্রত্যাবারা ক্ষ্মি তানাত্যনাত্মধী:।
অভ্যাত্মি ব তু ত হুদলিন:।
তত্মাদ্রুখৈন্ডাজ্যমণি ক্রিরাত্মতিবিধানত: কর্ম্বিধিপ্রকালিত ম্। ২৬।

आत्रा পरिस्क रहेका जगरीब्दरक अरः कीट्यक आवार স্হিত পরস্পর বিভেদ লক্ষিত হয়, ঐ বিজ্ঞান প্রভাকর चीत लकान भीना लाजाबाता देवत दृष्टि नम्मात छेन्सर्वन পূর্মক একাকার অপশু ভুত্তির আগর বখন কিবণ প্রথান করে তথ্য মারা ক্লাবর আগু কর্মের বহিত সমিদির रहेता नीज विमाण ब्याब एक, व्यक्तिक बारा विमाने रहेता मःगार वर्षाद किया सांगध छेनावित रहा। **धरे मन्छ व्या**ड अमान बाबा विमके बरेबा के कविना किबरन कार्या नाविनी চ্চুবে ? অৰ্থাৎ ভাষার আর উত্তৰ হয় না, কারণ অভি-পৰিত বিভীয়াম বিষয়ৰ বিচাৰ বাজ वर्षेट वर्षा निनि-शामन कान कान काना अक्षादम निमान क्रमा कार, तारे कना रक् एक नर्गवर बाह्य माह्य केशव बाह्य छेरनीक स्वेत्व ना श्मि उद्यक्षान विकानकारी व्यक्तिश श्रवता छैश्यत ना वहन उटन कात्रदश्य आधान आगृत्क "आधित देवतम कवा" अवेति कि क्षकाद्य अरदर्शिक बहेरक नार्ष्य ! ध्यह रिकू वर्गवानव बहेन क्षत्र विद्वारणक एरेश बादक मा, अवर की कारन वर्णां है दिली-

চন জন্য অগহারের ন্যার শোভনান হর । ঐ প্রাস্থা তৈতিরীর অর্থাৎ বজুর্বেক শাবানহন্তীর ক্রতি সবিভার প্রবেধিত
কার্য্যের পরিহার অতি আদন ও পরিকাট রূপে ক্ষিত
হুইয়াছে, প্রবং ঐরপ বাজসুদেরীদিশের অর্থাৎ বজুর্বেক
শাবাইগাড়ীদিশের জান বিশ্বুতি সাবনের পাকে কার্যাকর
নহে। হে সমুক্তরবানিক। তুলি অন্তিটোম প্রভৃতি বিদ্যা সমভাবে পরিষর্পা করিয়াই বৈট, বিজ্ সম্পারের উপাছরপ
সমান রূপে আন্তত হব নাই : ক্রতের বলতঃ প্রবং অনিটোম
প্রভৃতি কার্যা নমতা ও অভিমান রূপ—অন্তর —বাহাহুলবালাহি নিয়ন কর্মীক আ্লি সাধিত হুইয়া থাকি, এই
লারণে আন্তের বিশ্বুত বিশ্বুত রূপে প্রকৃতি হুইরাছে
নত্তব ক্রি জারা করিবে সাম্য হুও নাই। কর্ম পরিভাগি করিবে, আমি নিস্কেইই পাপ-ভারপ্রের্জ হুইব,
বাহানা প্রাশ্বী প্রবংশক্ষী বিশ্বুত রাহানিকের নিষ্ঠ
অনুর্বিক বাণিক প্রবং ভর্মজান বিশ্বুত রাহানিকের নিষ্ঠ

হইতে পারে না, এমন কি তল্পদর্শীরাও ওরপ হইতে অকম, সেই কারণে পণ্ডিভেরা ক্রিয়া কলাসক্ত চিন্ত বিশিষ্ট লোক দিগোর বিধানাসুখারী বিন্তি প্রকাশিত কর্ম পরিহার করিয়া থাকেন। যে ব্যক্তি নিক্ষা করিয়া করিয়া থকিন। যে ব্যক্তি নিক্ষা করিয়া করিয়া থকিন। যে ব্যক্তি নিক্ষা করিয়া করিয়া থকীয় মনকে প্রিশুদ্ধ করিয়াছেন, ভগর মন গুরু পাল্লা বিখাসে সংযোজিত হইরাছে এবং গুরুর প্রসাদে ব্রক্ষ জ্ঞান প্রাপ্ত হইরা, এবং খুকীর ও অপরাপর লোক দিগের একালা অবগত হইরা, গিরি রেরুপ কিছুতেই বিচালিত হর না সেই রূপ বিব্যাভিলাই ঘারা অক্যোভিত না হইরা সম্পার সুধ্রহীন হর। ১৮০১৯। ২০০২১ বহু বিভাগিত ব

सम श्रीमा शरिक टायुक वाकार्य विकार्तन छैरणाँ है स्थान अव अवर भगार्थ कर्याक करता मिक्स दे द्यानि ; अवर अन अवस्था अ

वकाज्यकाकारकी म महत्वर उशादकारकारकारिकारका। (मारतर नमानीविक जानका। वृत्वाज्ञकारकारकारकारकारकारका। तमा विभक्षीकृत्वकृत्वनक्षरः (जातानतर इःश्वश्वाविकर्यकाः महीद्रमानाक्ष्यकानिकर्यकः मातामकः कृत्वभूनाविकाज्ञाः । २৮।

বিরোধ পরিহার পুর্বাক তোমা কর্তৃক সমাক্ বিচারিত ভত্ত্ পদ বক্ষমাণ লক্ষণ দারা লক্ষিত তত্ত্বপদ উপস্থিত বিষয়ক একাব্যা জানোদয় চিৎ স্বরূপ প্রাপ্ত হট্রা থাকে। সভাবতঃ একাত্মক প্রযুক্ত স্বার্থভ্যাগবভী লক্ষণা (অর্থাৎ যেমন গ্রাহ (याय-वहे कृत्न शक्नाभनात्वंत धेवार (याय मर्कारकालात পরিত্যার জন্য তীর্রপার্থ লক্ষণা) কখনই সম্ভব হইতে পারে ना धवः काक कर्कुक मधि प्रका कवरण यमम कांक शामत मधि छेनशां छका नक्ता (महे श्रकांत्र विद्वाश्यमंत्रः औ नक्ता मछाविक स्रेट्ड भारत ना, अहे कांत्र न नक्त नक्ता मश्या क्षित इत्र : भूद्वाक त्रारम् अनावश्युक वर्षाद श्रमाः न्यात्र वन्त्रः कृष्टाख त्यम् । (क्ष्वन्त्रः भराद्यं (मर्गान-विविक्षेत्रकृष्ट्रमाम (बहम्मकार्व अक्षकृष्ट इत्र। शृथिवानि পঞ্জুত সম্ভুত সাৰ্থ এক চিত ছইলা অসুদাৰ বিধা বিভাগ नुष्यं काषात्र अक कानदक हाविकारण विकित करनामसन ভাহার অংশ সমূহের অপ্রাণর ত্ত চতুটার অর্চানা চতু-हैं। बारा नःयुक्त करिया अक अक्री नकाश्वक कुठ छेरना हत, अवर व्यक्ति शतिवाद्य विकित करतात श्रीवाद्यापित या वद्य देश गरमा भी ত্ব ব্রথ কর্ম সহজের ভোগাশ্রর, कुछ छेरेनछ । बार्मानवृक व्यानकारीय क्य करा बाहा-मन अवीर विकासमूख अरे भीन जानना हरेएरे जुनहा लास इरेगार्ड धरेमन क्षिक जारह। २६। २७ । २१। २४।

দ্কাং মনোর বিদ্যালিইয়গুতং
প্রাবৈরপানী ক্রতভ্তনভ্তন
ভাল স্থানের ভ্রাভানের ব্যাঃ ॥ ২ ৯ ॥
ভালানির্বাচামগীক কারণং
মায়াপ্রধানক পরং শরীরকম্।
উপাধিভেদাত বৃতঃ পৃথক্ছিতং
ভালানমাত্যনার্ধারয়েৎ ক্রমাং ॥ ৩০ ।
কোষের্য়ং তেরু তৃ তত্তদাক্তিবিভাতি সঙ্গাং ফাটিকোপলো যথা।
ভাসক্রপোহ্যমজো ঘতোহ্বয়ে।
বিজ্ঞায়তেহিমান পরিতো বিচারিতে ॥ ৩১॥

এক্ষণে পণ্ডিভেরা লিক্স দেহাক্সক ছুল শরীর সমর্জি হইতেছে জানিরা কছিয়াছেন যে সংকশ্পাক্ষক মন,নিশ্চরাক্ষক বৃজ্জি,আণেন্দ্রির, রসনা, দর্শনেন্দ্রির, শ্রবণেন্দ্রির ও তুক্ এই ছর জানেন্দ্রির এবং বাক্, পানি, পান, পারু ও উপস্থ এই পঞ্চ-কর্মেন্দ্রির—এবং প্রাণ, অপান, ব্যান, উদান ও সমান এই পঞ্চ প্রাণ সমুদারে এই সপ্রদান ইন্দ্রির ছারা সংযুক্ত হইরা অপ্রীকৃত ভূত সম্ভব; অভএব অনুশ্য তথা পুথ তৃঃখাদির অনুভব সাধন ভূল শরীরাকুরাত ভোগ লাভ ছইরা থাকে।

হে বৎস ৷ ইং জগতে লোকে উৎপত্তি বিহীন, সন্থা-সন্থ নিৰ্মাচা, জগৎ প্ৰপঞ্চপতি, ব্ৰহ্মানা, প্ৰমাজা উপাধি তেও একমাত্ৰ চৈতন্য, ভেদ বৃদ্ধি বিবরে পুথক জগৎপাতা জ্বাদীৰ-রকে সর্ম্ম পঞ্চপ উপাধি পরিত্যাগ করিলা ও প্রবেশ বুনুন নিদিধ্যাসন ছালা ক্রমণ্য জানিতে পাবে; আনক্ষমন্ত্র বেলেতে প্রাণমন্ত, মনোমন, বিজ্ঞানমন, ও অলমন এই ঠাছার চারিলী কোবদধ্যে তৎসম্ভীন আক্রতি বেনীপামান আছে জ্বণিৎ যেমন জ্বাদি কুল্ম ফুটিক সংগ্রুক হইলে সামা- वृत्कि जिथ। इश्वित श्री र मृणार्ड चक्षानि रूपन श्रुवे विश्वास है। चार मार कार कि स्वास का कि हो है है। मिर्डा श्रुवे ज्ञानि स्वास मिर्टे । ५२।। मिर्टे स्वास स्वास स्वास है। मिर्टे स्वास स्वास स्वास है।। मिर्टे स्वास स

ৰিধ আকৃতি পরিদৃশামান হয়, সেই প্রকার আনন্দমর জগদীখর ও জীব সমূহ পরস্পর স্মিলিত ছইলে কোর-মধ্যে তাঁছার বিবিধ রূপ লক্ষিত হয়; এই মহাবাক্য স্মাক্ রূপে বিচার করিয়া বেখিলে এ আত্মাকে অয়াদি সঙ্গ রহিত ব্রন্ত্ও অবর বলিরা পরিলক্ষিত হইতে অর্থাৎ অজ্ঞাদি জনেরা তত্ত থকোষসঙ্গ প্রযুক্ত ক্ষটিকবৎ বোধ করিবে, কিন্ত ভত্ত্ত ব্যক্তি দিনের দে রপ প্রভীতি হইবে না। এই আত্মা মধ্যে জাগরিতাবভার যে তিনটী রত্তি অবলোকিত হয় তাহাই গুণ্তহাতাৰ সত্ব বন্ধ ও তমৰূপ গুণ ত্ৰের বৃদ্ধির वर्ष बर केक अवदाबदाइ मृतकष (रजू वरे विश्वनावदाइ अवस्थान अहे सामारे पहेंद्रा शास्त्र, अन्याना वाजिनावाद्या-बतात वात्रपटः वार्यक (क्लू वर्शकाणिन वार्शावन वा व्यव्धित পভাব হয় ৷ সেই জনা এ ছুইটার না থাকার পারপার বাভি-চার উপদ্বিত হয়, প্রেরাং আগনার অবাশর প্রযুক্ত উৎপত্তি वा नाग तिहीन, शहर तक ७ जानम तथ जगहीत्रदव প্রতি ব্যক্তিচার ধর্ম অসম্ভব। আপনার দেহ, ইবিক্স, প্রাণ, मन ଓ हिट्डिय अविक्रिक इत्राव अवका तृषि इत्रिक अध्यम्न कातरन क्रक नकना बाररकान श्रीतन्त्र करेंद्र छावर छ मःनाद्वत छेर शक्ति इहेटत । उम्भान बहुकाक्त्वत देशनकन माज তালে শেবং জনদান্ত্রন্থ । ৩৪।

কলাচিলাজ্যা ন স্তো ন জারতে

ন ক্ষায়তে নাপি বিবর্তি হনবং।

নিরন্তর্কাতিশরং সুধাজ্যকং

সরংপ্রতং সর্বাগতাহ্যমন্তরং।

এবং বিধে জ্ঞানায়ে স্থাজ্যক

কথং ভবো তুংখনরং প্রবাগতে ।

ভানে বিলীয়েত বিরোধতঃ ক্ষণাং ॥ ৩৬।

এবং রজঃতম অপেক্ষা প্রধান বুদ্ধি দেই জন্য সংসারের নিমিত্ত সর্বভোষ্ঠাবে পরিভাষ্ঠা। বিনি এই সমস্ত প্রমাণ লইরা জগৎকে मियाक्रिट्र निकृष्टी इन्हेबाट्ड वाथ करतम ७ कत्त्र मध्य দাব্দিক মমধারা চিল্লক্ষণ ও হুণ সমাস্বাদন করিয়াছেন, তিনি পরিণাম ছঃখ প্রযুক্ত সন্তিরের ম্যায় ইইয়া অশেব জগৎ, দেহ, विक्रिक्ति मृंगा मध्द পরিত্যাগ করেন, অধন রঞ্চত্যাগের छिलामान विश्वत कार्या करतेन ना, ध्वर देखियानित वाता তথ্য ভাষ লাভাশনে কি অকাৱে উপজীবোর পরিছারাশকার দুটান্ত পরিদর্শন কবিয়া পরিছার কর্মেন; বেমন তৃষ্ণার্ড জন माजिएकत कतानि आक्षेत्र कितिया अध्यति अक्रेस उनामिन इत्र, (महेक्क्ष्ण अस्ति मृत्या आकारण उपाद्ध वर्षेतात समा लाक मिश्रात व्यादक (इन कान करतना। नहीत है-পত্তির পর আহার নমুদ্ধ ভারত থাকে, জীপান্তা কব্যক लाख हरू ना, ट्राने कांब्रट्न विकास विकास करिक अक्किक সর্ব্ধ বড়ভাব বিশারবং অনিতা হইয়া বিবাসকার करत दिनिया (बाथ क्या कांक्री छेकात अक्रमून जिल्हा है। प्तार कार्या प्रमान, वार्वाना हे तार्वाति सात अन्तर कारक अरुका कामारक काम वक्त कामा क्रिका क्रम विकास मुना काम्यान क्रम मनगानि व्यत्ताक क्रम गरमारव

যদক্ষণ কৈ বিভাবন কৰা

অধ্যাসনিত ক্ষিত্ৰ কৈ বিভাবন কৰা

সম্পূতি হৈ বিভাবন কৰা

রক্ষাদিকে ভবদশীবারে জগবা ৩৭॥

বিকল্পনায়ারহিতে চিদাজকে
হকার এষা প্রথমঃ প্রকলিতঃ।

অধ্যাস এবাজনি স্ক্রারণে

নিরাময়ে ব্রক্ষণি কেবলে পরে॥

১৮।

কি প্রকারে ভীত ছওয়া বার ? ছুঃথ প্রচুর অজ্ঞানের মূল : এট প্রকার বিকার শূন্য আত্মার জন্ম মরণাদি প্রবাহ রাপদংসার ভাবতে কি প্রকারে শহা করা যাইতে পারে? অজ্ঞান মূলক দেহান্তঃকরণাদিতে আমার অধ্যাগবশাসুবতী বশতঃ ভ্রান্তিরপ প্রতীদ্ধি, এবং ঐ সংসার ছইতে কি প্রকারে মিবৃত্তি হর? তদপ্রোদ্দার্থ কথিত আচে যে বেষম আমা রপা রজ্জ তে দর্পের লয় হর সেই প্রকার काम खाविक एकर्ठ लाहात महिल खालारनत निर्वाध रहेल क्रम काम माबा काउन हेल क्रिक कड़, क्री काउन कृष काकान विमक्षे इहा, खबर ले विभाग कार्यावाता गरमाद्भार किन्द्र व्याख क्या दिशम जम क्या पार (कर् क्रमांक बंक्ट्रांड मर्ग वनिद्या (वास क्रमा विषक्रातिका क्रमांज विवत करिताहरू, त्यम्य बुक्क जन्म इटेल्स जित्रका-Dबिंड देश किस के नार्ष छटतक यून कावन बच्च करर के क्ष्म व मार्थ जनदर्गाका जनस्मित्र जनार कर्मार एकान नरगाडाच्या नमूर चाच कानाकार रण छः वनावेदर चनाव रुक्ता नाजा। जन्म विकरण काश्य माका महिल, वलाहः उर्वत के किए अर्थकार्य किर्यक्षण श्रेस अर्थका चार्यमध्य नर्भ निकास-पूर्ण मुना जिल्लान कसकी वन अति साल वाक्षात जन्मक वर्षात विकित्ति वर्षात वर्षात वर्षात वर्षात

ইছে দিয়ালা দিকৰা নিধ কিবাং

সদা ধিয়া সংস্কৃতি হৈছে বং পরে।

যাত্রাং প্রকৃতি বিভাগতে হি নঃ ॥ ৩৯ ॥

অনাদ্য বিদ্যান্ত বকুতি বিবিতাে

জীবং প্রকাশোহর মিতীর্ঘতে চিহঃ।

আত্রা ধিয়াং সান্দিতয়া পৃথক্ বিতাে

ব্রা পরিচিন্নপরং স এব হি ॥ ৪০ ॥

চিহিন্নসান্তা জিবাং প্রস্কৃত

ক্রতে বাসাদনলাক্তালোহবং।

অন্তোল্যমধ্যাসবশাং প্রতীয়তে

কড়াজড়ত্বং চ চিন্নাজানেত সোঃ ॥ ৪১ ॥

শুরো: সকাশাদ্ধি বৈশ্বাক্যতঃ
সঞ্জাতবিদ্যাত্মতবা নিরীক্ষা তম্।
আত্মানমাজস্মুপাধিবর্জিতঃ
ত্যজেদশেবং জড়মাজগোচরম্ ॥ ৪২ ॥
প্রকাশরপাহহজোহহমছয়ো
কৃষিভাতোহহমতীব নির্মানঃ
সম্পূর্ণ আনন্দময়োহহমজিয়ঃ॥ ৪০ ॥
সদেবস্জোহহমচিন্তাশক্তিমান
ন গ্রীন্দ্রিজানমবিজিয়াজকঃ।
আনন্তপারোহ্মহর্নিশং বুধৈর্বিভাবিতোহহং হৃদি বেদবাদিভিঃ ॥ ৪৪ ॥

নুদ্ধান্ত সমস্ত সংসাবের কারণ। সর্ব্যাক্ষী আন্ধা ভাসমান সংসাবের কারণ অর্থাৎ ভূত ভবিষাৎ ও বর্ত্তমান
কালিন উপেকা, রাগ, কুথ, চুংবানির ঘন্দ ধার্মিকা—বৈ
কারণ বলতঃ প্রস্তুত্তির অর্থাৎ বৃদ্ধি রতির অভাব প্রবৃদ্ধ
আরা আমাদিগের কুথ অরপে অর্থাৎ ক্ষরপ্রারা নিক্রীকত হয়। প্রক্ত তর্পদার্থ বিষয় সম্বন্ধে এইরপ ক্ষিত্ত
ভাতে, অর্থানি হিলা হইতে উৎপন্ন অন্তঃকরণের প্রতিবিশ্বিত
ভিত্ত হইতে জীবের উদ্ভব হয়,এবং পরমান্থা বৃদ্ধির সাক্ষ্যী হতরার ধীধর্মক হইতে পৃথকভাবে অর্থান্ত বাকে অভ্তর্থ
বৃদ্ধির লক্ষণ সমূহের পরিজেন বিহীন হয়, অর্থাৎ পরমান্থাত
ভান হারা প্রতিবিধানর বিলর প্রতি হইলে প্রান্ধীর পরমান্ধার ন্যায় প্রতিবিধানর বিলর প্রতি হইলে প্রান্ধীর পরমান্ধার ন্যায় প্রতিবিধানর বিলর প্রতি হইলে প্রান্ধীর ক্ষান্ধ
ভীবান্ধা হইতে জড়ব প্রতীম্নান্ধ হয়, অভ্যব পরিস্তান্ধা
গরমান্ধারণ চিত্তের ভার্কিক ব্যবহার প্রথা জীবান্ধার জড়ব

উরেথ করিরাছেন, এছলে আর্থাবছারই করিরা থাকেন;
যেষন অগ্নিচগুলিছিল অনলের ধর্ম রক্ষা করে, অর্থাৎ
ভাহার দাহিকা শক্তি হর, এবং লোহের বর্ত্ত লম হৈছে অনলে
ভারমান হর। গুরুর সমীলে বেগৰাক্য আকর্ণন করির্থা
যে বাজি বিলাগোড করিয়া, চন্দারা জানখরণ আপোনাকে
অন্তব করিতে সক্ষর ছরেন, ভিনি সেই চিদানন্দ শ্রমণ—
কিপাধি বিলছিভ জালানন্দ্র শ্রীর হন্তরন্ধ অবন্দেকন
করিয়া দুশা জড় পরিস্থান করেন, অর্থাৎ একন ইলিন উদাসীন ছবেন। ৩০। ৩১। ৩২। ৩০। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮।
। ৩০। ৪০। ৪১। ৪২।

কে সন্ধান আনি আগনাকেই প্রকাশ করিবা থাকি, আমি জন্মানি বিছীম, অভাতীর বিতীয় বিবহিত, আনি সংগ্রত-নিলোর অন্যা, আমি অভীব নিশান সারা ফুডাবর্ডীরণ বিক্ষেপ বিরহিত, বিশুদ্ধ বিজ্ঞান বম, কর্তৃত্ব অভিবাস পরিপ্না, দেশ তবং সদাস্থানমথণ্ডিভাস্থানা
বিচারমাণস্য বিশুদ্ধভাবনা।
হন্যাদবিদ্যামচিরেণ কারকৈবসায়নং যদ্মপাদিভং রুজঃ॥ ৪৫॥
বিবিক্ত আসীন উপারতেন্দিয়ো
বিনির্জিভাস্থা বিমলান্তরাশয়ঃ।
বিভাবয়েদেকমনন্যসাধনো
বিজ্ঞানদৃক্ কেবল আত্মসংস্থিতঃ॥ ৪৬॥

কাল, পরিছেদ বিহীন; আমি আনন্দরপ ও পরিণাম শ্ন্য । পণ্ডিভেরা ভূত ভবিবাৎ ও বর্ত্তমান অর্থাৎ অমুক্ষণ সমন্ত ধর্ম বিরহিত অচিন্ত্যা শক্তি সম্পন্ন পরমাত্মাকে ইন্দ্রিয়াতিরিক্ত জ্ঞানরূপ অপরিণামীকে—অনস্ত ও দেশকাল পরিছেদ সদৃশ পরমাত্মাকে মনোনধ্যে চিন্তা করিয়া থাকেন। ৪৩। ৪৪।

এইরপ ভাবনা করিলে ভাহার ফল এই যে, বিষয়ে মন: সর্বপন্ন না করিরা বে আত্মার প্রতি মন:সংযোগ করিরা বিচারপূর্বাক সর্বাদা থানে করে, ভাহাতে পরমন্তব্যের আকার অন্তঃকরণ রক্তি—ইভ্যাদি অতি পরিত্র ভাবনা উদিত হর, পরে দেছ ও অন্তঃকরণ কর্ম্ম সমুদ্রের সহিত, স্মচাক পরিসেবিভ রসারন বেমন পীড়াকে বিনাশ করে, গৈইরপ অবিদ্যা অতি শীত্র দুরীভূতা হর। অনন্তর ধ্যান বিষরের কর্ত্তব্যভা এই মিশ্চর হইরাছে যে, ইক্সিরাদি ভার্ম্য সমস্ত নির্ভি করিরা অর্থাৎ শমদমাদি সম্পন্ন ছইরা বিজন প্রদেশে যথোচিত পদ্মাস্মোপরি উপরিক্ত ছইরা প্রাণান্তান কর্ম্ব জর্ম করেণ অবদ্য সাধন অর্থাৎ তত্ত্ব জানাভিত্রিক মুক্তি সাধন শ্রম বিরহিত, বিষর কার্য্যে যেমন অন্তর প্রবিষ্ট করিরা থাকে সেই প্রকার পরমাজার জিত সমর্থন পূর্মক প্রেমণিড়া জগাণীখনরের চিন্তা করে। ৪৫। ৪৬।

বিশ্বং যদেওৎপরমান্ত্রদর্শনং
বিলাপয়েদান্ত্রনি সর্বকারণে।
পূর্ণশ্চিদানন্দ্রয়োহবভিষ্ঠতে
ন বেদ বাহাং ন চ কিঞ্চিদান্তরম্ ॥ ৪৭
পূর্বং সমাধেরখিলং বিচিন্তয়েৎ
ভূঁজারমাত্রং সচরাচরং জগৎ।
তদেব বাচ্যং প্রণবো হি বাচকো
বিভাব্যতেইজ্ঞানবশান্ন বোধতঃ ॥ ৪৮ ॥
অকারসংজ্ঞঃ প্রুষধাে হি বিশ্বকো
হ্যকারকন্তৈজ্ঞস স্বর্যতে জ্রমাৎ।
প্রাজ্ঞো মকারঃ পরিপ্র্যতেইখিলৈঃ
সমাধিপূর্বং ন তু তত্ততো ভবেৎ ॥ ৪৯

অধিকন্ত ভ্ত, ভবিষাৎ ও বর্ত্তমান বিশ্ব সংসার ও পরমাঝা দর্শন কারণে মায়ার নিকটবর্ত্তী সর্ব্বোপাদানাভি-মতে আব্দার প্রতি বিলাপ করিয়া থাকে অর্থাৎ উপাদানসন্তাবাভিরিক্ত কার্য্য স্থা দেখিতে না পাওয়ায় সর্বাদা চিদানন্দমর ছইয়া অবস্থান করে। অর্থাৎ বাহ্য, অন্তর বা দ্বা কিছুই জানিতে পারে না, সর্ব্বন্ত পরমন্তর্বাক পরিদর্শন করে। সমাধির অর্থাৎ সকল বিষর ব্যাসন্ধ নিবৃত্তি পূর্বক ব্রহ্মাকার রভির পূর্বে চরাচর অথিল ব্রহ্মাতে উলার মাত্র লোকে চিন্তা করে প্রথাণ বাচ্ক দিনোর নিকটই প্রসিদ্ধ, কিন্তু এই চিন্তা অজ্ঞানতা করা অনুষ্ঠিত হর মা। 'অ'কার সংজ্ঞ প্রকৃত্তই বিশ্বের ভাতাং সান্দী, অনন্তর ভি'কার স্থা পুরুষই অর্থাৎ লিজনেহাভিমানী হিরণ্য মার্ক্তিকারক স্থা নাজী—অনন্তর প্রকৃত্তি সান্দী প্রাক্তিকারক স্থা নাজী বিশ্বন্ত সান্দী প্রাক্তিকারক স্থা নাজী বাহ্ন স্থা বিশ্বন্ত সান্দী প্রকৃত্তিকার স্থা বিশ্বন্ত স্থা বিশ্বন্ত স্থা নাজী বিশ্বন্ত স্থানী বিশ্বন

বিশ্বং স্বকারং প্রক্ষং বিলাপরেং
উকারমধ্যে বহুধা ব্যবস্থিতম্।
ততো মকারে প্রক্রিলাপ্য তৈজদং
বিতীয়বর্গং প্রাণম্য চান্তিমে॥ ৫০॥
মকারমপ্যান্তানি চিন্দ্রনে পরে
বিলাপরেংপ্রাজ্ঞমশীই কারণম্।
সোহহং পরং ব্রহ্ম সদাবিম্ক্তিমবিজ্ঞানদৃষ্যুক্ত উপাধিতোহমলঃ॥ ৫১
এবং সদা জাতপরাত্মভাবনঃ
স্থানন্দভূষ্ঠঃ পরিবিশ্বভাবিলঃ।
আত্তে স নিত্যাত্মস্বপ্রকাশকঃ
সাক্ষান্তিম্ভোহ্চলবারি সিম্কুবং॥ ৫২

এবং সদাহভাক সমাধিয়ে গিনে।
নির্ভসর্বেজিন গোচরস্য হি।
বিনির্জিতাশেষরিপোরহং সদা
দৃশ্যো ভবেয়ং জিতবড় গুণাত্মনঃ ॥ ৫৩॥
ধ্যাকৈবমাত্মানমহর্নিশং মুনিস্তিতেৎ সদা মুক্তসমন্তবন্ধনঃ।
প্রারক্ষমন্ত্রভিমানবর্জিতো
মধ্যেব সাক্ষাৎপ্রবিলীয়তে ভতঃ॥ ৫৪
আদৌ চ মধ্যে চ তথৈব চান্ততো
ভবং বিদিয়া ভয়শোককারণম্।
হিয়া সমস্তং বিধিবাদ্চোদিতং
ভচ্ছেৎ সমাত্মানম্থাথিলাত্মনাম্॥ ৫৫॥

ভি'কার মধ্যে সূল দেহাভিমান বিশ্বপুক্ষ বছবিধ রূপে বাবছিত আছেন, এবং উক্ত 'অ'কার তাহাতে বিদীন হয়, অনন্তর লিসদেহাভিমানী প্রণবের বিতীয় 'উ'কার বর্ণ ম'কারে বিলীন হয়। প্রাক্ত কারণত্বাভিমানী 'ম'কার ইছার পরে আত্তাতেই লয় প্রাপ্ত হয়, অনন্তর প্র সর্ববিলাশা-ধিচান পররক্ষ বিভাগিত হয়েন, পরে সর্বলা বিমৃত্তির ন্যায় নিজ্য মুক্ত রাগ হেবাবি মলিন বন্ধ মুক্তি কি রূপে পাইকে পারে, অন্তর্গ্র বিজ্ঞান দ্বীক্ষান-লিবিধ্যাসন ৪ তৎ-সাক্ষাৎফারে লাখন হইয়া প্রক্রে ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০।

অতএব উক্ত আকারে যে ব্যক্তি লগত আত্মাত আতি ভাবনা উপ্তিক হক্ষা অভীয় পুত্র ও বেহাদি সমস্ত প্রি-বিস্মৃত হয়, অধ্যাপানদে প্রিমুক্ত হয় অর্থাৎ বিষয়াদশে যাহার পরিণামে তৃঃথ হেতু আর বিয়ক্তি নাই, নিতা আছাতেই সুধ প্রকাশ হইয়া বাকে, জীবলুক্ত নিক্ষণ বারে
স্থানিত সিল্পুর ন্যায় অর্থাৎ বিষয় নম্মন্ত রূপে নার করে, সমস্ত ইন্দ্রিযানি হইতে বিষয় বাপার নিব্রত্ত করে, কানানি বিপুক্তর
বলীভূত করিরাছে, আনি প্র ক্তকের দৃশ্য অর্থাৎ আদি
তাহার দৃতি পথে উপনীত আছি। যে মুনি সমুনার সংসার
বন্ধন হইতে বুক্ত হইরা নিবা রাত্র পরমান্তাকে ধান করে
ও নীবলুক প্রাহন্ধ বলাসুবর্তীর বালা অভিযান বর্জিত
হইরাছে, তিনি আমাতে বিলীল হবেন ! আদিতে
মধ্যে ও অভ্যান বিশ্বত ত্র পোক করেণ অবগত
হইরা ও এ কার্মীভূত বিধি বাদ প্রোক্ত ক্রাম্বা ভোগ
পরিতালা করিরণ অথিল জীব বিনের ক্রমণভূত পরমেন

আত্মগ্রভেদেন বিভাবয়য়দং
ভবত্যভেদেন ময়াত্মনা তদা।

যথা জলং বারিনিধো যথা পরঃ
কীরে বিয়দোল্লানিলে যথানিলঃ॥ ৫৬॥
ইঅং যদীক্ষেত হি লোকসংস্থিতো
জগন্ম বৈবেতি বিভাবযন্মনিঃ।
নিরাক্তভাচ্ছ তিযুক্তিমানতে।
যথেন্দুভেদো দিনি দিগ্ভমাদয়ঃ॥ ৫৭॥
যাবন পশ্যেদখিলং মদাত্মকং
তাবন্মদারাখনতংপরো ভবেৎ।
ভারালুরভাজিতভক্তিলক্ষণো
যস্তম্য দুশ্যোখমহনিশং জদি॥ ৫৮॥

রহস্তমেতচ্ছ তিসারসংগ্রহং

ময়া বিনিশ্চিত্য তবোদিতং প্রিয়া।

যক্তেলালোচয়তীহ বৃদ্ধিনান্

সম্চ্যতে পাতকরাশিভিঃ ক্লণাং ॥ ৫৯ ॥

ভাতর্বদীদং পরিক্লত্য চেতসা।

মন্তাবনাভাবিত শুদ্ধমানসং

স্থী ভবানন্দ্রমান নিরাময়ঃ ॥ ৬৭ ॥

যঃ সেবতে নামগুণং গুণাংপরং
হলা কলা বা যদি বা গুণাপুকম্।

বরকে উল্লাকরেন।৫১ ৫২।৫০।৫৪।৫৫। বেমন নদী
লমুদ্রে প্রবিষ্ট হইলে তাহার জল সমুদ্রের নাার হর,
দুল্ল মধ্যে জল মিপ্রিড করিলে যেনন ক্ষারবং হর, চল্ম
ভাত্তিকালির অবিক্রির বায়ু মহাবায়ুর সাহত সংমিলিত হইর।
বেমন একাকার হয়, সেই রূপ আত্মার সমস্ত অধিষ্ঠান
থাকার আমাতে রেরুপ জীব অভেদ রূপে অবিত্তি করে
ক্তরাং আমার ও পর্মেশরের আত্মা অভিন্ন রূপে অবথিত আছে। জীবন্ধুকি দুলার প্রারক বশতঃ লোক
বালহার করিয়া, জগংকে মিখ্যা ভাবনা করেয়া যদি মুনিরা
একাত্মা জানিতে সক্ষম হয়; প্রতি সুক্যাত্ম্যারে জগং
মিথ্যা পরিদ্বামান হর, যেমন চক্র এক, কিন্তু প্রম্

ষ্ঠিত হয়। যাবৎ কাল অথিল জাৎ মধ্যে আমার অধিষ্ঠানত দশন না পাইবে তাবৎ কাল আমাকে পাইবার জনা অত্যবদারাধন তৎপর, দৃঢ় বিশ্বাসবান হইয়া আমাকে আর ধনা করিবে এবং আমিও তাহার হুৎপাল মধ্যে দিবা রাজ দৃষ্ঠ হইরা থাকি। ৫৬। ৫৭। ৫৮। হে প্রিয়! আমি আচতিসার সংগ্রহ এই সমস্ত রহসোর স্থির নিশ্চর করিয়াছি ইছ জগতে যে বৃদ্ধিনান এই বিষয় সমূহ আলোচনা করে সে পাতক রাশি হুইতে তৎক্ষণাৎ মুক্ত হয় হে লাতঃ! যাল এই জগৎ পরিদৃষ্ঠ হয় ভাহা হুইলে সমস্তই মায়া অবগত হইরা চৈতন্য লাভ করণান্তর সমস্ত (বজ্ব পরিত্যাগ্য করিয়া আমাকে চিন্তা করিবার নিমিত) বিশ্বন মান্তরে নিরামর হইরা স্থী হও। করিবার নিমিত্য

যে ব্যক্তি বিষশাস্তঃকরণে আমার প্রকৃত সহ হল ও তম তথা বহিছ, সাজিদান্দকে ধা দৃশ্যমান রূপকে বেবা সোহহং অপাদাঞ্চিতরেণ্ডিঃ স্পৃশন্
পুনাতি লোকত্রিতরং যথা রবিঃ ॥ ৬১ ॥
বিজ্ঞানমেতদ্ধিলং শুতিসারমেকং
বেদান্তবেদ্যচরণেন নয়ের গীতম্।

যঃ **প্রসাং পরিপঠেদ্**বভক্তিযুক্তো। যক্তপনেতি যদি মন্বচনেত্র ভক্তিঃ॥ ৬২॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর স্থাদে উত্তরকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

কার সে অপাদ পারের পার্শ করাইরা, স্থ্য যেমন জানের অক্ষার হরণ করে, দেই রূপ লোক ত্রেরে পবিত্র সাধ্য ক্ষিয়া ব্যাকে; এই শ্রুভিসার অধিল বিজ্ঞান গীত জামি বেদান্ত চরণে স্যাবেশিত ক্রিয়াছি। অভঞ্জ যে ভক্তি যুক্ত ছইরা পাঠ করে, দে **আমার বাক্যান্না**রে আমাঃ সাযুক্তা প্রাপ্ত হয়। ৬১। ৬২।

> ইতিশীনদধ্যব্যবামায়ণে উন্নামহেশ্ব সন্থানে উত্তৰকাণ্ডে পঞ্চনোহধ্যায়ঃ

यर्छा>शांबः।

श्रीबहारम्य छवाह।

একদা মুনয়ঃ সর্বে যমুনাতীরবাসিনঃ।
আজগ্মু রামবং দেউুং ভয়াল্লবণরক্ষসঃ॥ ১॥
কুত্বাতো তু মুনিজেঠং ভাগবং চ্যবনং দিজাঃ।

मशास्त्र शास्त्रिक कहिलन, अकर्त प्रमृता जीत्रवाकी महर्दिशंग लवन माटम शाकरनंत्र जात शनात्रमध्य स्टेंडा

অসম্যাতাঃ সমায়াতা রামাদ্ভয়কাজ্মিণঃ ॥ ২ ॥
তান্ পূজ্মিত্বা প্রয়া ভক্ত্যা রঘুক্লোভমঃ।
উবাচ মধুরং বাক্যং হর্যমন্ত্রিমণ্ডলম্ ॥ ৩ ॥

রামচন্দ্রকে দর্শন করিতে আসিরাছিলেন। প্রাশ্বনের। মুনি শ্রেষ্ঠ ভার্গবিকে অপ্রবন্ধী করিরা কহিলেন, এই অসংখ্যা থবি প্রামচন্দ্রের নিকট হইছে লবন বিদ্যালাকাত্রকী হইরা করবাণি মুনিজেনাঃ ! কিবাগননকারণম্ ? ।

বন্যাংশি ক্ষি বৃহং মাং প্রীজাক্ত মিহাগভাঃ ॥৪॥

ত্বরং চাপি যৎকার্য্য ভবতাং তৎকরোম্যহম্ ।

আজ্ঞাপয়স্ত মাং ভৃত্যং ব্রাহ্মনা দৈবতং হি মে ॥ ৫॥

তচ্ছুত্বা সহসা হাউশ্চাবনো বাক্যমব্রবীং ।

মধুনামা মহাদৈত্যঃ পুরা কৃত্যুগে প্রভো ! ॥ ৬ ॥

আসীদতীব ধর্মাত্মা দেবব্রাহ্মণপুরুকঃ ।

তত্ত ভূটো মহাদেবো দদে শ্লমসূত্মম্ ॥ ৭ ॥

প্রাহ চানেন যং হংসি স ভূ ভন্মীভবিষ্যতি ।

রাবণস্থাস্কা ভার্যা তস্য কুন্তীনসী প্রুতা ॥ ৮ ॥

তত্তাং ভূ লকণো নাম রাক্ষ্যো ভীমবিক্রমঃ ।

আসীদ্তুরাত্মা তুর্ধর্যো দেবব্রাহ্মণহিংসকঃ ॥ ৯ ॥

পীড়িতান্তেন রাজেন্ত ! বরং ছাং শরণং গতাঃ ।

তচ্ছ ছা রাষবোহপান্ত মা তীর্বো মুনিপুসবাং ! ॥১০

লবণং নাশরিক্ষামি গক্ত বিগতকরাং ।

ইত্যক্ত্বা প্রাহ রাজেনিপি জাতুন কো বা হনিষ্যতি
লবণং রাজ্যাং দদ্যাদ্ত্রাক্ষাণেভ্যাভয়ং মহং ।

তচ্ছ ছা প্রাপ্তলিং প্রাহ ভরতো রাষবায় বৈ ॥ ১২ ।

অহমেব হনিষ্যামি দেবাজ্ঞাপয় মাং প্রভো ! ।

ভতো রামং নমস্কৃত্য শক্তালো বাক্যমন্ত্রীং ॥ ১০ ॥

লক্ষাণেন মহংকার্যাং কৃতং রাঘ্য ! সংমুগে ।

নন্দিগ্রামে মহাবৃদ্ধির্ভরতো তুঃখময়ভূৎ ॥ ১৪ ॥

অহমেব গমিষ্যামি লবণস্য বধায় চ ।

ছৎপ্রসাদান্তযুজের্ছ ! হন্যাং তং রাক্ষসং মুধি ॥১৫।

স্থাগত হইরাছেন। রঘুকুলোত্তম রামচক্র প্রমা ভাইনর
সহিত তাঁহাদিগকে পূজা করিয়া মূলি মণ্ডলীর মধ্যে
আনল উৎপাদন করাইয়া নধুর বাকো কহিলেন—হে মূলি
ক্রেইয়াণ! আমি আপনাদিগাের কি কার্য্য করিব,আর আপনাদিগের আরার্মনেরই বা কারণ কি? বলি আপনারা আনজিত
ভইরা আয়াকে দেবিবার জন্য আসিরা থাকেন, তাহাহইলে
আমি ধনা চাহাতভা, আপনাদিগের যে যে সাধ্যাতীত কার্য্য
আচে উৎসম্পাধ এই ভূতোর প্রতি আদেশ কর্মন,
এখনই সম্পাদন করিডেছি; জীরাদের বাকা অবণ করিয়া
চারন মহানন্দে কহিলেন—হে প্রভা! সভা বুগ হইতে
সধুনামক এক নহানৈতা আছে। এই কৈতা পূর্কে বার শর
আরি ধ্যাজা ও দেব ভারণ পূজাক ছিল। এক সমর মহানের
আরার প্রতি পরিভুক্ত বইয়া এক, আতি উত্তম শ্লা আবান করিয়া

বলিরাছিলেন যে, এই শ্ল যাহার উপর নিক্ষেপ করি থে ভাষা তৎক্ষণাৎ ভন্মীভূত হইরা যাইবে। হে জানানন্দ ! রাধ্বের কনিটা ভারানী কুন্তীনসী তাহার ভার্য্যা তাহার গার্ভ্জাত লবণনামে ভীম বিক্রম ছুরান্ধা রাক্ষ্য সাভিশর হর্জর্ব ওদেবত। ও ব্রাক্ষণদিয়ের হিংলক। হে রাক্ষেপ্র আমরা তৎক্ষ্ক গীড়িছ হইরা আপুনার শরণাগত হইলাম । রাহ্ব বলিলেন হে মুনি পুস্বগণ! আপুনাদের আর ভর নাই। আপুনারা বিগভভর হইরা অভ্যাগ্রম ক্ষম, আমি লবপকে বিনাশ করিব। এই বলিয়া আভাদিগকে বলিলেন হোমাদের মধ্যে কে লবণকে বিনাশ করিবে। বাল্মণেরা প্র রাক্ষ্যের ভবর মহাভীত হইরাহে। এতৎ ক্ষরণ করিরা গ্রহক বল্পাঞ্জী হইরা রাঘ্বকে কহিলেন, হে প্রভ্জো। আমাদের আন্তের ক্ষম, আমি প্র ভূটা রক্ষকে বিনাশ করিব : আম্বার ক্ষম, আমি প্র ভূটা রক্ষাকে বিনাশ করিব : আম্বার ক্ষম, আমি প্র ভূটা রক্ষাকে বিনাশ করিব : আম্বার ক্ষমন, আমি প্র ভূটা

তচ্ছু বা বাকমারোপ। শক্তমং শক্তস্নন: ।
প্রাহাদ্যবাভিষেক্যামি মথুরারাজ্যকারণাৎ ॥ ১৬
অনায্য চ স্থসন্তারান্ লক্ষণেনাভিষেতনে ।
অনিচ্ছন্তমপি স্বেহাদভিষেক্ষকারয়ৎ ॥ ১৭ ॥
দত্তা তথ্যে শরং দিব্যং রামঃ শক্তম্মব্রবীৎ ।
অনেন জহি বাণেন লবণং লোককণ্টকম্ ॥ ১৮ ॥
স তু সংপূজ্য তচ্ছুলং গেহে গচ্ছতি কাননম্ ।
ভক্ষণার্থং তু জন্তুনাং নানা প্রাণিবধায় চ ॥ ১৯ ॥
স তু নায়াতি সদনং যাবছনচরো ভবেং ।
ভাবদেব পুরন্ধারি তিষ্ঠ স্থং ধৃতকাম্মুকঃ ॥ ২০ ॥

যোৎস্থতে স ষয়া ক্রুক্তদা বধ্যো ভবিষ্যতি।
তং হথা লবণং ক্রুং তদ্বনং মধুসংক্তিতম্॥ ২১॥
নিবেশ্য নগরং তত্র তির্চ খং মেহমুশাদনাৎ।
অখানাং পঞ্চাহস্রং রথানাং চ তদর্শকম্॥ ২২॥
গল্পানাং ষট্শতানীহ পঞ্জীনাময়ুতক্রয়ম্।
আগমিষ্যতি পশ্চাক্তমত্রে সাধ্য রাক্ষসম্॥ ২৩॥
ইতুত্বো মূর্দ্ধ্রবেষায় প্রেষয়ামাদ রাঘবঃ।
শক্রন্থং মুনিভিঃ সার্দ্ধমাশীর্ভিরভিমন্দ্য চ॥ ২৪॥
শক্রন্থে মুদ্ধে গ্রামকরোৎপুরীম্॥ ২৫॥
ফীতাং জনপদাং চক্রে মথুরাং দানমানতঃ।
সীতাপি সূমুবে পুত্রো দ্বো বাল্মীকেরথাশ্রমে॥২৬

করিয়া কছিলেন, ছে রাখব! লক্ষ্মণ আপনার সমভিব্যাহারে थाकिया महरकार्या कतियारह्न। भेक्याव वांका व्यवनानखंत्र मक्तित्रमम वायहस्य डाहाटक चकीत त्कार् छेन्द्रमम करा-ইয়া কহিলেন, আমি অত্যে ভোমাকে মধুরা রাজপুনে প্রভিষ্ঠিত कत्रित ; এই दिनवा नक्षा एक व्यक्तित्व ख्रा अपूर व्यक्ति क्रम করিতে আদেশ দিলেন। লক্ষণও অতি সত্তর বাবতীয় জবা আবোজন করিলেন, পরে শক্তম মথুরা রাজসিংহাসনে উপ-বেশন করিতে অনিচ্ছুক থাকিলেও নামচন্দ্র স্বেছ পরভয় इवेश कूनश्रक बनिहानि आक्रगतिशक चानक्रम कराविका তাছাকে মধুরা রাজপদে অভিবেক করাইলেন। অনন্তর तामहत्व डांबाटक निया भन्न क्षानाम कतित्रा करिरनम, जुमि এই नव बावा त्नाक करीक नवगरक कर कव। नवन शृहस्था নীয় শূল রাখিয়া বন্য জীব ও অপ্রাণর প্রাণী বিনাশ कतियात निविद्य कानने मट्या विकास कतिया थाटक ; दम विभिन হইতে যতক্ষণ প্ৰতিগন্ধন না করিবে,তৎকালাবধি তুমি কাল্পুক भारत भूर्सक छारात जाराकात जिल्ह्याद अवहान करित ;

দে প্রতিনিয়ন্ত হইরা যথন ভোমাকে পুরুষারে অবলোকন করিবে, ভখন জোধসংরক্ত নরন হইরা ভোমার সহিত যুদ্ধ করিতে উদ্যত হইরা অচিরাৎ বিনফ হইবে; অনন্তর সেবিনাশ প্রাপ্ত হইলে,কানন মধ্যে মধুনামে স্ববিধ্যাত এক নগর আছে, তৃমি ভখার প্রবেশপূর্কক আমার নিদেশবর্তী হইরা পাঁচ সহজ্ঞ গজারোহী ও অযুভন্তর পদাতি সইরা অবস্থান কর, পরে আমার নিকটে আগমন করিবে। এই বলিয়া প্রায় শক্রমের মন্তকাজাণ করিরা ভাষাকে আশীর্কাদ পূর্কক মুনিদিগের সমন্তিব্যাহারে প্রেরণ করিলেন। ১৬। ১৭। ১৮।

শীরাম শক্রমকে থেরপ উপদেশ দিরাছিলেন ভিনিও সেই-রপ বাবতীর কার্য সমাধা করিলেন, অর্থাৎ মধুতনরকে সমর কেতে বিনাপ করিরা মধুবানারী নগরীকে ভাষার রাজধানী করিলেন। একণে মধুবা নগরী মহানমুদ্ধিশালী জন পদ হইরা উঠিল। এই সময়ে সীতা বাল্মীকির আজমপদে-চুইটা মুমুক্ত সন্তান প্রস্থান করিলেন। সহর্ধি বাল্মীকি জ্যোঠের নাম

মুনিস্তয়োর্নাম চকে কুশো জ্যেকেছিলুকো লবঃ। ক্লমেণ বিদ্যাসম্পন্নো সীতাপুর্ত্তো বস্থুবতুঃ ॥ ২৭ ॥ উপনীতো চ মুনিনা বেদাধ্যয়নতৎপরো। ক্ৰু রামায়ণং **প্রাহ্ কাব্যং বাল**কয়োমু নিঃ ॥২৮॥ শঙ্করেণ পুরা প্রোক্তং পার্ববৈত্য পুরহারিণা। বেদোপরুংহণার্থায় তাবদগ্রাহয়ৎ প্রভুঃ ॥ ২৯ ॥ क्यारतो अतम्भारतो ज्ञन्तर्वारिय। তন্ত্রীতালসমায়ুক্তো গায়ন্তো চেরতুর্বনে ॥ ৩০ ॥ তত্র তত্র মুনী ।ং তে সমাজে সুররূপিণে। গায়ন্তাবভিতো দৃষ্ট্রা বিক্ষিতা মুনয়োহব্রুবন্ ॥৩১॥ शक्षर्विषद् किन्नरत्र कृति वा त्मरवर् तमवानरत्र পাতালেম্বথ বা চভূর্ম্মুখগৃনে লোকেমু সর্বের্চ।

অস্মাভিশ্চিরজীবিভিশ্চিরতর দৃষ্ট্রা দিশঃ সর্বতে।। নাজ্ঞায়ীদৃশগীতবাদ্যগরিমা নাদর্শি নাশ্রাবি চ ॥৩২॥ এবং স্তবন্ধিরখিলৈশু নিভিঃ প্রতিবাসরম। আসাতে স্থ্যেকান্তে লাল্মীকেরাপ্রমে চিরুম্॥৩৩॥ অথ রামোহখমেধাদীংশ্চকার বহুদক্ষিণান্। যজ্ঞান স্বৰ্ণময়ীং সীতাং বিধায় বিপুলচ্যুতিঃ ॥ ১৪ ॥ তিশ্বিতানে ঋষয়ঃ সর্কেরাজর্ষয়স্তথা। ব্রাহ্মণাঃ ক্ষতিয়া বৈশ্যাঃ সমাজগ্মুর্দিদৃক্ষবঃ।। ৩৫ ॥ বাল্মীকিরপি সংগৃহ গায়ন্তো তেট কুশালবো। জগাম ঋষিবাটস্য সমীপং মুনিপুঙ্গবঃ ॥ ১৬॥ তত্রৈকান্তে স্থিতং শান্তং সমাধিবিরমে মুনিম। কুশঃ পপ্রচছু বাল্মীকিং জ্ঞানশাস্ত্রং কথান্তরে॥ ৩৭॥

कून ७ कनिए इत नाम नव दाशितन। मिन निन मखान पत শশিকলার ন্যায় উত্তরোত্তর পরিবর্দ্ধিত ও নানা বিদ্যায় স্বিশেষ স্থাৎপত্তি লাভ করিতে লাগাল। কিয়দিবস পরে মুনি বালকদিগের উপনয়ন কার্যা সমাধান করিয়া ভাছাদিগকে বেদাভাগে করাইতে লাগিলেন এবং মহাদেব পার্বভীর নিকট যেরপ রামায়ণ বর্ণন ক্রিরাছিলেন,তিনিও দেইরপ্ তাহাদিগকে **व्यापन कार्या कान्यमा क**रिवात निमिक्त दामादन কাৰ্য বৰ্ণন ক্রিতে লাগিলেন। অতি কপলাবণ্যময় কুমার-দ্ব স্মধুর স্বনম্পর এবং ভক্তীতাললর বিবরে অভান্ত নিপুণ হইয়া কানন ভিতরে পান করিরা বেড়াইতে লাগিল ৷ মুদ্রি शन ऋतकरी क्यांत्र बत्रक निर्देश किए शान कतिए दिश्या विन्यत्वादकृत काठत विलादन, शञ्चर्तातादक, किञ्चनत्वादक ভূলোকে, দেবলোকে, পাতালে, ব্রহ্মলোকে অথবা সমুদায় জিলাসা করিবেন। হে ভগবন্ এই অথিল সংসারের বন্ধন

लाक मर्या जेमून गामक कमानि मर्मन वा कमानि जेम् গীত অবণ করি নাই। অধিল তুরমান মুনিগণের সহিভ সীতার তনর হুইটা বাল্মীকির আশ্রমপদে পরম স্থাধ অবঙান क्तिएक नार्तिन। २६ । २५। २१। २৮ (२৯ । ७० । ७)। 1021001

কিছ দিবস পরে পরম শোভাময় জীরামচক্ত হিরক্ষী সীতা-প্রতিকৃতি নিশ্মাণ করাইয়া বহুদক্ষিণা সমেত অখনেধ বজ্ঞ আরম্ভ করিলেন ; মহর্বি, রাজর্বি, ব্রাক্ষণ,ক্ষথির, বৈশ্য প্রভৃতি যাবতীয় त्नाक नामामिक् (मन इहेट आमित्रा (महे यक्कद्रल नम्दर्क ছইলেন। মুনিপুসৰ ৰাল্মীকিও গীত দিপুৰ কুলীলবকে সমভি-वाहादा कतिता अधिनगरवे चारम छेनमी छ इंदेलन । एथात कूममभावि विद्राप्त अनित्क निक्षमञ्चादन छे प्रविष्ठे मलर्गन করিয়া বিবিধ কথা প্রানঙ্গে জ্ঞান শাস্ত্র বিবর সহছে প্রা ভগবন্! শ্রেছিমিছামি সঞ্জেশপান্তবিভাইথিশম্।
দেহিনঃ সংস্তিবিবারঃ কথমুৎপদ্যতে দৃঢ়ঃ ?॥৩৮॥
কথং বিমুচ্যতে দেহী দৃঢ়বন্ধান্তবাভিধাৎ ?।
বক্তুমুহসি সব্বিজ্ঞঃ! মহুং শিষ্যায় তে মুনে!॥ ৩৯
বালীকিকবাচ।

শূণু বক্যামি তে সর্বাং সজ্জেপাদ্ধনমোক্ষয়ে। সরপং সাধনং চাপি মন্তঃ শ্রুত্বা যথোদিতম্ ॥ ৪০ ॥ তথৈবাচর ভদ্রং তে জীবন্মক্তো ভ্ৰিষ্যসি। দেহ এব মহাগেহমদেহস্য চিদাত্মনঃ ॥ ৪১ ॥ তত্যাহস্কার এবাত্মিমন্ত্রী তেনৈব কল্লিতঃ। দেহগেহাভিমানং স্থং সমারোপ্য চিদাত্মনি ॥ ৪২ ॥

তেন তাদাত্মাপাসঃ স্বচেষ্টিতমশেষতঃ।
বিদধাতি চিদানন্দ তন্তাসিতবপুঃ স্থাম্॥ ৪৩॥
তেন সংক্ষরিতো দেহী সক্ষরিনগড়ারতঃ।
পুল্রদারগৃহাদীনি সক্ষরিতি চানিশম্ ॥ ৪৪ ॥
সক্ষরান্ স্থাং দেহা পরিশোচতি সর্বদা।
তামস্তাহমো দেহা অধ্যোভ্যমধ্যমাঃ ॥ ৪৫ ॥
তমঃসত্ত্রজঃসংজ্ঞা জগতঃ কারণং স্থিতেঃ।
তমোরপাদ্ধি সক্ষরারিত্যং তামসচেষ্টয়া ॥ ৪৬ ॥
অত্যতঃ তামসো ভূষা কৃষিকীটত্তমাপ্র বাং।
সত্তরপো হি সক্ষরো ধর্মজ্ঞানপরায়ণঃ ॥ ৪৭ ॥
অদ্রমোক্ষসান্তাজ্যঃ মুখরপো হি তিন্ঠতি।
রজোরপোঁ হি সক্ষরো লোকে স ব্যবহারবান্ ॥৪৮॥

কি প্রকারে দৃঢ়রূপে উৎপন্ন হয়, আপনার নিকট তদিষর
সহকে কিছু প্রবণ করিছে ইচ্ছা করিরাছি—হে সর্বজ্ঞ নহামুনে! শরীরীক এই সংসারের দৃঢ়তর বন্ধন ছইতেই বা কিপ্রকারে বিমুক্ত হয়, ডৎ সমুদার আপনার এই শিষ্তকে বলিতে সমর্থ হয়েন। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯।

বাল্মীকি কহিলেন—হে বৎস! আমি বন্ধন ও মোক্ষ বিবরের সমন্তই ভোমার নিকট সংক্ষেপে কহিতেছি প্রবণ কর। আমার নিকট আকর্ণন করিরা আমার বর্ণিত অরপ ও সাধন যেরপ ছইবে, তুমি দেই গুলি অন্তি যতুসহকারে সংরক্ষা কর, তাহা হলৈ ভোমার মন্তন ছইবে, এরং জীবমুক্তি প্রাপ্ত হলৈ। দেহ সম্বন্ধীন ব্যক্তির দেহ যেমন আপনার নর, চিদান্ধার দেহও সেইরপ জানিবে। এই দেহ মধ্যে অহলারই সর্ব্বপ্রধান ও মন্ত্রী এবং যে সমৃদার অব-শোকন করিতেছ সেম্বন্তই অহলার পরিক্পিত; অহলার ষকীর গেছ অর্থাৎ বিষয়াভিমানকে আবোপিত করিয়াছে।
সেই চিদাআ কর্তৃক অভেদ যুক্ত ছইরা সংচন্টিত পরমানন্দ
সচিদানন্দের প্রতি প্রধাবিত ছয়। ঐ অছ্ছার হারা লরীরী
সমুদার সঙ্গণিত এবং সঙ্গণারপ লৃখনে আবন্ধ হইরা
প্রত্র, ত্রী ও গৃহাদির উপর বাসনা হইরা থাকে। অষম
উত্তম ও মধ্যম এই গুণতারযুক্ত দেহীর প্র কামনা
অসম্পূর্ণা ছইলে দে অমুক্ষণ পরিতাপ করিয়া থাকে; ভমঃ
সত্ত ও রক্ষঃ এই তিনটা অধিল জগতের অবছিতির কারণ
জানিবে এবং তমোগুণের হারা যাবভীর সন্ধরিত ছইরা থাকে;
লোক সমূহ অতাত ভ্যোগুণমর ছইলে ক্ষমি বীটিল প্রাপ্ত
ছয়। বাছারা সন্ত্রণ অলক্ষ্ত, ভাহারা ব্রক্ষান প্রায়ণ
ছইরা সর্বাস্থাপারক সন্নিক্টবর্তী মোক্ষ সামাজ্যের ন্যায়
অবস্থান করেন; এবং বিনি রক্ষোগুণাজার করিয়া থাকেন,

পরিতিষ্ঠতি সংসারে পুত্রদারামুরপ্রিতঃ।
ত্রিবিধং তু পরিত্যক্ষ্য রূপবেতন্মহামতে ! ॥ ৪৯ ॥
সক্ষঃ পরমাপ্রোত্তি পদমাস্থাপরিক্ষরে।
দৃষ্টীঃ সর্ববা পরিত্যক্ষা নির্ম্য মন্স। মনঃ ॥ ৫০ ॥
সবাহাভ্যন্তরার্থসা সক্ষরস্য ক্ষয়ং ক্রকঃ।
যদি বর্ষসহত্রাণি তপশ্চর্মি দারুণম্॥ ৫১ ॥
পাতালম্ম্য ভূস্কুম্য স্বর্গস্বস্থাপি তেহন্য!।
নান্যঃ কশ্চিত্রপায়োহন্তি সক্ষরোপশমাদৃতে ॥ ৫২ ॥
অনাবাধেহন্ত্রিকারে স্বে স্থ্রে পরম্পাবনে।
সক্ষরোপশ্বে ষত্রং পৌরুবেণ পরং কুরু ॥ ৫০ ॥

তিনি ইছ লগতে ব্যবহার যোগ্য ছইর। পুত্র ও দ্রী প্রভৃতির উপর প্রীত সম্পাদন করতঃ সংসারে অবস্থিতি করেন; কির্ব ছে মহানতে! এই ত্রিবিধ গুণ পরিছার্য্য উপযোগী বিনিরা বিনি পরিভাগে করেন, তিনি লাম্যতা প্রাপ্ত হরেন।

৪০ । ৪১ । ৪২ । ৪৩ । ৪৪ । ৪৫ । ৪৬ । ৪৭ । ৪৮ । ৪৯ । ৪০ । ৪৯ । ৪৫ । ৪৬ । ৪৭ । ৪৮ । ৪৯ । এবং তিনি পরম পদ লাভ করিয়া থাকেন; মর্থাৎ সম্ভূমণ সক্ষাপ সর্ব্ধ সম্ভন্ন নাশে পরিগত ছইরা প্রাপ্তক দূর মোক্ষত্ব বির্দ্ধনা কর্মণানন্তর আন্দ্র সম্পাদ ইরা সম্পার ইন্দ্রির জ্ঞাম পরিভাগে পূর্বাক রাছ বিষয় ছইতে মনকে নিরন্ত করা তোমার সর্ব্ধভোভাবে কর্মনা । বিনি সহল বংসর কঠোর ও পদা। করিতে ইন্দ্রা কর, ভাহা ছইলে বাছেল্লির বিষয় সহিত অভ্যন্তরেক্তা কর, ভাহা ছইলে বাছেল্লির বিষয় সহিত অভ্যন্তরেক্তা কর, ভাহা ছইলে বাছেল্লির বিষয় সহিত অভ্যন্তরেক্তা কর, ভাহা ছইলে বাছেলির বিষয় স্থিত আন্দ্রিরার করিব বিষয়ার্থ লাক, বা পাড়ালে ভাষা প্রের্ণ ভাইলির কর, অর্থাৎ যেখানেই থাক, বা পাড়ালে ভাষা প্রের্ণ ভাইলার বিষয়া প্রের্ণা প্রিরার করিব বিষয়া প্রের্ণা কর, বাংলির কর, ভাষাৎ যেখানেই থাক, বা পাড়ালে ভাষার উপনম বিষয়া ভোরার করিব বিষয়ার বাংলির কর, তার্মাণ বেলানেই থাক, বা পাড়ালের ভাষার উপনম বিষয়া ভোরার

সহলততে নিধিলা ভাষাঃ প্রোক্তাঃ কিলানছ।।
ছিলে ততো ন জানীমঃ ক যান্তি বিভবাঃ পরাঃ ॥৫।
নিঃসহলো যথাপ্রাপ্তব্যবহারপরো ভব।
ফরেসহজালক্ত জীবো ব্রহ্মহমাপ্রাৎ ॥ ৫৫ ॥
অধিগঙপরমার্থতামূপেত্য
প্রসভ্যবাস্থা বিকল্পজালমু চৈচঃ।
অধিগন্ধ পদং তদ্দ্বিতীয়ং
বিত্তস্থায় স্বপ্তচিত্রক্তিঃ॥ ৫৬ ॥

ইঙ্ শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্বাদে উত্তরকাণ্ডে যঠোহধারেঃ।

অন্য কোন উপার নাই; সাক্ষরণো সুধনাত করিব। বাসনা থাকিলে অতীব ভূঃথ ও বিষয় সম্বন্ধ বিহীন না ছইবে ভাহা প্রাপ্তির জন্য অপর কোন উপায় নাই, অতএব সকলা উপায় করিবার নিমিত্ত সাহসে নির্ভিত্ত করিয়া হতু বান হও। ৫০। ৫১। ৫১। ৫১।

হে অন্দ! এই সমুদার জগৎ সংসার সকল ক্ত্রে আবহ কিন্তু ক্ত্র বিচ্ছিত্র ছইলে ঐ বিভব কোধার প্রস্থান করে অবগত নহি। অভএব সকল বিহীন হইরা বধা প্রাপ্ত ব্যবহার কর, এবং সকলে জাল এককালিন ছিল ছইলে জীব সমূহ পারস্ত্রমাত্ত করে। সহসা সংশ্র জাল বিচ্ছিল করিরাও অধিগত ব্রম্ভন্ত প্রাপ্ত হইরা সেই অধিতীর পর্ম ব্রমের শদপ্রাপ্ত হব এবং অস্ক্রেছ্ণা স্থের নিষ্তি ব্রমাকার চিত্ত র্ভির সাদৃশা প্রাপ্ত হও। ৫৪। ৫৫। ৫৬।

> हे विश्वक्रमा अवासायरण केवाबर व्यव निवास के जुलकारण वर्रकाश्यावः।

সপ্তমো>ধ্যায়ঃ।

বাল্মীকিনা বেধিতোহকো কুশঃ সদ্যোগতজ্ঞঃ।

অন্তর্যুক্তো বহিঃ সর্ব্যমুক্কংশ্চচার সঃ।। ১।।

বাল্মীকিরপি তো প্রাহ্ সীতাপুজো মহাধিয়ো।

তত্র তত্র চ গায়স্থো পুরে বীথিয়ু সর্বতঃ॥ ২॥

বামস্যাত্রে প্রগায়েতাং শুক্রায়ুর্যদি রাখবঃ।

ন প্রাহ্থং বৈ যুবাভ্যাং তদ্যদি কিঞ্ছিৎপ্রদাস্যতি॥৩॥

ইতি তো চোদিতো তত্র গায়মানো বিচেরতঃ।

যথোক্তং ঋষিণা পূর্বং তত্র তত্রাভ্যগায়তাম্॥ ৪॥

তাং স শূল্রাব কাকুৎস্থঃ পূর্ব্বচর্যাং ততন্ততঃ।

অপূর্ব্বপাঠজাতিং চ গেয়েন সমভিপ্লুতাম্॥ ৫॥

বালয়ো রাঘবঃ ক্রুড়া কোভূহলমুপেয়িবান্।

অথ কর্মান্তরে রাজা স্থাহুয় মহামুনীন্॥ ৬॥

কুশ বাল্যাকি কন্তৃক উপদিন্ত ছইলে সদ্য বিগত জ্ৰম ও নিধিধ্যাসনামন্ত সাধন-সম্পন্ন হইরা চারিদিকে বিচরণ করিতে লাগিল। মহর্ষি বাল্যাকি ধীশক্তিসম্পন্ন, সুরাগা-ভাল-লয়-বিশুক, সঙ্গীতনিপুণ, সর্বাত্ত গীঞারমান সীতা পুত্রব্যকে কহিলেন, ভোমরা ত্রীরাম সমীপে সংগীত করা, কিন্তু ভিনি যদি মেহ পরভন্ত ছইয়া কিঞ্চিৎ অর্থ প্রদান করেন, তাহা প্রহণ করিবে না। কুমারবন্ধ শবি কর্তৃক এইরপ আদিন্ত ছইরা সংগীত করিতে করিতে জারস্ত করিতে জারস্ত করিতে জারস্ত করিছে অপুর্ব গঠন রীভি ও ভাহাদিবোর সমধ্র কণ্ঠন্মর শবিত্ব অপুর্ব গঠন রীভি ও ভাহাদিবোর সমধ্র কণ্ঠন্মর শবেশ করিয়া যার পর নাই ক্রেত্রণাক্রান্ত ছইলোন; জানন্তর মরবাান্ত রামচন্দ্র জার কার্যাপ্র কণ্ঠন্মর স্বিদ্যাক করিয়া যার পর নাই ক্রেত্র কার্যান্ত স্বান্ত স্বান্ত স্বান্ত স্বান্ত করের বিল্লান্ত করের বাল্যাপিক ও ব্যাকরণবিদ্ যত রক্ষ ত্রাক্রণ

রাজ্ঞানৈচব নরব্যান্ত্র: পণ্ডিতাংশৈচব নৈগমান্।
পৌরানিকাংশছকবিদো যে চ বৃদ্ধা বিজ্ঞাতয়ঃ॥ ৭॥
এতান্ সর্ব্যান্ সমান্ত্রয় গায়কৌ সংপ্রবেশয়ং।
তে সর্ব্বে হৃষ্টমনসো রাজ্ঞানো ব্রাহ্মণাদয়ঃ॥ ৮॥
রামং তৌ দারকৌ দৃষ্ট্রা বিশ্মিতা ছানিমেষণাঃ।
অবোচন্ সর্ব্ব এবৈতে পরস্পরম্বাগতাঃ॥ ৯॥
ইমৌ রামস্য সদৃশো বিস্বাদ্বিদ্ধমিবোদিতো।
জাটিলো যদি ন স্থাতাং ন চ বক্ষলধারিণো॥ ১০॥
বিশেষং নাধিগচ্ছামো রাঘ্বস্থানয়োন্তদা।
এবং সম্বদ্ধাং তেষাং বিশ্মিতানাং পরস্পরম্॥ ১১
উপচক্ষমতুর্গাভুং তাবুভো মুনিদারকো।
ততঃ প্রবৃত্তং মধুরং গান্ধব্বমতিমানুব্বম্॥ ১২॥

ছিলেন, সকলকেই আহ্বান পূর্মক গীত নিপুণ কুশীলব সমতিবাছারে সভা মণ্ডপে প্রবেশ করিলেন, এবং রাজন্যগণ ও ত্রাহ্মণবর্গ সামক্ষচিতে সাজান্থনে আসিরা উপনীত
ছইলে, রামচন্দ্র বালকবরের প্রতি অনিমেরলোচনে
অবশোকন করিরা সাতিশর বিশ্বিত হইলেন এবং সকলেই
পরস্পর বলিতে লাগিলেন, যদি এই বালক মুইটীর মন্তকে
জটাত্তরণ এবং পরিধান বলকল না থাকিত ভাহা ছইলে
ইহাদিগকে শ্রীরাম্চন্দ্রের প্রতিবিষ বলিয়া কিছুতেই সংশ্বর
থাকিত না। আহা ! রাম্চন্দ্র ও বালক্ষরের মধ্যে কিছুই
প্রতেদ লক্ষিত হইতেছে না। সভাছ সমুবার লেক্ষে এই
রূপ বলিতে বলিতে বিশ্বরাশর ছইতে লাগিলেন ইত্যবদ্বর
মূনি বালকবর মধ্যেকিক মধুমর সংগীত আরক্ষ করিল। ৫।
১৬। ৭। ৮। ১০। ১০। ১০।

শ্রুণ তন্মধ্বং গীতমপরাত্নে রঘ্তমঃ।

তবাচ ভরতং চাভ্যাং দীয়তামযুতং বস্থ ॥ ১৩ ॥

দীয়মানং স্বর্ণস্ত ন তজ্জগ্রহস্তদা।

কিমনেন স্বর্ণের রাজনো বন্যভোজনো ? ॥ ১৪ ॥

ইতি সংত্যজ্য সংদত্তং জ্বাহুমুনিসন্নিধিম্।

এবং শ্রুণ্ডা তু চরিতং রামঃ স্বন্যেব বিস্মিতঃ ॥ ১৫॥

স্প্রায়া সীতাকুমারে তৌ শক্রুণ্থং চেদমত্রবীৎ।

হন্মন্তং স্থাবেশ্চ বিভীষণমথাঙ্গদম্॥ ১৬ ॥

ভগবন্তং মহাত্মানং বাল্মীকিং মুনিস্তমম্।

আনয়ধ্বং মুনিবরং সঙ্গীতং দেবসন্মিতম্॥ ১৭॥

শ্রুণান্ত পর্বদো মধ্যে প্রত্যাহং জনকাত্মজা।

করোতু শপথং সর্বের জানস্ত গতকল্পবাম্॥ ১৮॥

রঘুনাথ প্র শিশু ছুইটার মনোছর গীত প্রবণ করিয়া ভরতকে কছিলেন, 'ইংদিগাকে অযুত স্বর্ণ মুদ্রা প্রদান কর।' এই
প্রকার আদিষ্ট হইরা ভরত স্বর্ণ মুদ্রা প্রদান করিতে গমন
করিলেন,কিন্তু বালক বর প্রত্যাখ্যান করিয়া কছিল, হে রাজন!
আমরা বন্য-কল-মূলাশী, স্বর্ণ মুদ্রা করিয়া কি করিব? এই
বলিয়া ভাছারা বাল্মীকির নিকট প্রস্থান করিল। রামচন্ত্র
ভাছারিত কথা শুনিয়া বারপর নাই বিশ্বরাপর
হইলেন। ১০। ১৪। ১৫।

অনন্তর রাষ্চত্ত প্র ছইটা বালককে অভাগিনী বনবাসিনী
সীতার গল্পান বলিয়া জানিতে পারিলেন এবং শক্রেত্ত,
হন্মান, ক্ষেণ, বিজীরণ ও অজনকে, বলিন্তন যে, এই
বালকেরা নিশ্চরই সীভার সন্তান, অভএব একনে ভগরান্
মহাত্মা, মুনিসভান বাল্যাকির সমভিবাহাত্র সীভাতে
আনরন কর; এবং সীঙা তাঁহার বিভন্ন চরিত্র সকলকে

সীতাং তদ্বচনং শ্রুছা গতাঃ সর্বেহতিবিশ্বিতাঃ।
উচুর্যথোক্তং রামেণ বাল্মীকিং রামপার্ষদাঃ। ১৯॥
রামস্থ হৃদ্গতং সর্ববং জ্ঞাদ্বা বাল্মীকিংরব্রবীং।
শ্বঃ করিষ্যতি বৈ সীতা শপথং জনসংসদি।। ২০॥
যোষিতাং পরমং দৈবং পতিরেব ন সংশয়ঃ।
তচ্ছুদ্বা সহসা গন্ধা সর্বের প্রোচুমু নের্ববচঃ।। ২১॥
রাঘবস্যাপি রামোহপি শ্রুছা মুনিবচন্তথা।
রাজানো! মুনয়ঃ! সর্বেশ শূণুধ্বমিতি চাব্রবীং॥ ২৯
সীতায়াঃ শপথং লোকা বিজ্ঞানস্ত শুভাশুভম্।
ইত্যুক্তা রাঘবেণাথ লোকাঃ সর্বের দিদৃক্ষবঃ ২৩
সীতাপ্রবেশনং দৃষ্ট্বা সর্বং সম্যোহিতং জগ্রং।
রামস্ত স্বর্বং জ্ঞাত্তির ভবিষ্যংকার্য্যগের)ব॥ ৪৮

অবগত করাইবার নিমিত্ত সভামধ্যে শপথ করুন, তাল হইলে পৃথিবীস্থ সম্পর লোক তাঁহাকে নিজ্পাপী বলিব অবগত হউক। সভাস্থ লোক সমুদার রামচন্দ্রের বাক্য ও দীতার বিষর প্রবণ করিয়া সাতিশার বিস্মিত হইলেন: অনস্তর শীরামের পারিষদগণেরা তাঁহার অভিপ্রায় বাল্মীকিকে কছিলে, বাল্মীকি রামচন্দ্রের হৃদরগত ভাব বুঝিতে পারিয়া কহিলেন, সীতা এই সভামধ্যে শপথ করিবেন।
। ১৬/১৭/১৮/১৯/২০/

নভাদু যাবতীয় লোক মছর্বির বাক্য প্রবণ পূর্বাণ সহসা গাবোখান পূর্বাক কচিলেন, ব্রীলোকের পাকে পতি পরম দেবতা, ভাষার কোন সন্দেহ নাই; রামচন্দ্রও মুনি বাক্য বিন্যাস আকর্ণন করিয়া সভাদু সকলকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, ছে বাহন্যাগণ ও মুনিগণ। আপ্রনারা প্রবণ কর্নন, আপ্রনারা জনকছ্ছিতার শপ্ত প্রবণ করিয়া তাহার ধর্মাধর্ম নির্গয় ক্রন। এই বলিরা তিনি সভাদ্ধ যাবতীয় লোকের প্রতি দৃষ্টিপাত করিছে লাগিলেন। ত্রাহ্মণ বান্ধাণঃ ক্ষতিয়া বৈশ্যাঃ শ্দ্রাশ্চেব মহর্ষাঃ।
বানরাশ্চ সমাজগা; কোতৃহলসমন্বিতাঃ।। ২৪।।
ততো মুনিবরস্তৃর্গং সসীতঃ সমুপাগমং।
অগ্রতন্তম্বিং কৃত্যু যান্তী কিঞ্চিদবাধাপী।। ২৫।।
কৃতাঞ্জলিব্বাপাকঠা সীতা যজ্ঞং বিবেশ তম্।
দৃদ্যু। লক্ষ্মীমিবায়ান্তাং ব্রহ্মাণমসুযাযিনীম্॥ ২৬॥
বাল্মীকেঃ পৃষ্ঠতঃ সীতাং সাধ্বাদো মহানভূং।
তদা মধ্যে জনোঘস্য প্রবিশ্য মুনিপুঙ্গবঃ॥ ২৭॥
সীতা সহায়ো বাল্মীকিরিতি প্রাহ চ রাঘণ্ম্।
ইয়ং দাশরথে। সীতা স্বত্তা ধর্মাচারিনী।। ২৮॥
অপাপা তে পুরা ত্যক্তা মমাক্রমসমীপতঃ।
লোকাপবাদভীতেন ত্রা রাম। মহাবনে॥ ২৯॥
প্রভায়ং দাস্যতে সীতা তদসুজ্ঞাতুমইসি।
ইমৌ তু সীতাতনয়ো ইমৌ যমলজাতকোঁ॥ ৩০॥

করির, বৈশ্য, শুদ্র, বানর ও মছর্বি প্রভৃতি সমস্ত লোকই রাঘ্বের কথা অভিনোচর করিয়া বার পর নাই কেত্ছলাক্রান্ত হইলেন। অনন্তর মহর্বি বাল্মীকি সীড়াকে সম্ভিব্যাহারে করিয়া সভা হলে উপনীত হইলে, সীভা মুনিকে
অপ্রবর্তী করিয়া নীরক্তেলাগামন করিতে লাগিলেন এবং বন্ধাক্রান্ত হইলা বাম্পাক্ল লোচনে বজ্জন্ত উপনীতা ছইলেন।
পারমন্তব্যর অমুগানিনী লন্ধীকৈ বাল্মীকির প্রভাব প্রস্থা
হইল, পরে মন্ধামুনি বাল্মীকি সীভা সংগত যজ্জন্ত উপনীত
হইল, পরে মন্ধামুনি বাল্মীকি সীভা সংগত যজ্জন্ত উপনীত
হইলা রাম্যচক্তকে কহিলেন, হে দালর্বে আল্পানার
ফ্রভাবল্যিনী অর্থন রক্তিনী সীভাকে প্রহণ কলন; হে
রাম্যচক্তা আপুনি লোকাপ্রাদ ভারে এই নিস্পাণা অনক
ছহিতাকে পুর ছইতে বহিন্ধত করিয়া মনীর আজ্ঞান স্মিন্ধানে

হতে তু তব হুধর্ষে তথ্যমেতদ্ববীমি তে।
প্রচেত্রনাহহলশমঃ পুরো রঘুক্রোদ্ধ ! ॥ ৩১॥
অনৃতং ন স্থায়ক্তং যথেমো তব পুরকৌ।
বহুন্ বর্ষগান্ সমাক্ তপদ্দর্যা ময়া ক্তা॥ ৩২॥
নোপান্নীয়াং ফলং তক্তা ছুক্টেয়ং যদি মৈখিলী।
বাল্যীকিনৈবমুক্তস্ত রাঘবঃ প্রত্যভাষত॥ ৩০॥
এবমেতন্মহাপ্রাজ্ঞ ! যথা বদসি স্থাত্ত ! ।
প্রত্যেয়া জনিতো সহং তব বাকৈর্কিলি হৈঃ॥ ৩৪॥
লক্ষায়ামপি দর্ভো মে বৈদেহ্যা প্রত্যেয়া মহান্।
দেবানাং পুরতন্তেন মন্দিরে সংপ্রবেশিতা॥ ৩৫॥

পরিত্যাগা করিয়াছিলেন। সীতা আপেনার প্রত্যের উৎপাদন করিভেছেন, আপেনিও তাহা অবগত হইতে নক্ষম হয়েন; এই সীতা গার্ভক যমক সন্তান হর আপেনারই । ২১ বিহাতি । ২৪ বিধা হড়। ২৭ বিহাতি । ২৯ বিধা হড়। ২৯ বিহাতি ।

হে রযুকুলধ্বন্ধর ! জামি লপথ করিরা বলিতেটি যে, এই ছইটী আপনারই ছন্ধর্য তনর—হে রামচন্দ্র ! আমি বহুকাল ব্যাপিরা তপন্যাচরণ করিরাছি জানিবেন, অতএব আমি মিধ্যাকে কথন আত্রর প্রদান করি না, এই পুত্রন্থর আপনারই, আমার বাক্য কথনই মিধ্যা নহে ; যদি মিধিলা রাজকন্যা কোনরণ দোষ করিরা থাকেন, তথাপি তাহার প্রতি ওরপ করা কোন মতেই কর্ত্ব্য হয় নাই । বালীকি এই প্রকার কহিলে রাঘব তাহাকে বলিলেন, হে মহাপ্রাক্ত ! তোপনি সমস্তই কহিলেন, এবং আপনার শার্ম প্রতি বাক্যে আলার সম্পূর্ণ বিখাসও জনিয়াহেন হৈ মুনে! লহার বিদেহ পুত্রী অগ্নিমধ্যে প্রবেশ করিয়া আহার বিখাস উৎপাদন ও দেবভানিগের সন্মুথে তিনি ক্ষিত্র ইয়ো প্রবেশ ক্রিয়াছেন। ৩১ ৷ ৩২ ৷ ৩২ ৷ ৩৫ ৷

সোজা নিয়া পরিত্যক্তা ভবান্ তৎ কল্পমর্হিন ॥ ৩৬ ॥
মনৈব জাতো জানামি পুলাবেতো কুশীলবো ।
শুদ্ধায়াং জগতীমধ্যে দীতায়াং প্রীতিরস্ত মে ॥ ৩৭ ॥
দেবাঃ দর্বেব পরিজ্ঞায় রামাভিপ্রায়মুৎস্ককাঃ ।
ব্রহ্মাণমগ্রতঃ কৃত্বা দমাজগ্রুঃ দহস্রশঃ ॥ ৩৮ ॥
প্রজাঃ দমাগমন্ ছন্টাঃ দীতা কোষেয়বাদিনী ।
উদল্প থী ছধোদৃষ্টিঃ প্রাপ্তলিকাক্যমত্রবীৎ ॥ ৩৯ ॥
বামাদন্যং যথাহং বৈ মন্দাপি ন চিন্তরে ।
তথা মে ধরণী দেবী বিবরং দাতুমইতি ॥ ৪০ ॥
তথা শপস্তাঃ দীতায়াঃ প্রাত্রাদীনাহাদ্ভূতম্।
ভূতলাদিব্যমত্যর্থং দিংহাদনমনুত্রমম্ ॥ ৪১ ॥

নাগেকৈ প্রীয়মাণং চ দিব্যদে হৈরবিপ্রভম্।
ভূদেবী জানকীং দোর্ভ্যাং গৃহীত্বা স্লেহসংযুক্তা ॥৪২॥
স্বাগকং তাম্বাকৈনাং আদনে সম্ব্যেশরং।
সিংহাসনস্থাং বৈদেহীং প্রবিশক্তীং রসাক্তলম্ ॥ ৪৩॥
নিরস্তরা পুস্পর্ষ্টির্দিব্যা সীতামবাকিরং।
সাধ্বাদশ্চ স্থমহান্ দেবানাং পরমান্ত্তঃ।। ৪৪॥
উচুশ্চ বহুধা বাচো হন্তরীক্ষণতাঃ স্থরাঃ।
অন্তরীক্ষে চ ভূমো চ সর্বে স্থাবরজঙ্গমাঃ॥ ৪৫॥
বানরাশ্চ মহাকায়াঃ সীতাশপথকারণাং।
কেচিচিন্তাপরান্তস্তাঃ কেচিন্ধ্যানপরায়ণাঃ॥ ৪৬॥
কেচিদ্রামং নিরীক্ষন্তঃ কেচিৎসীতামচেত্সঃ।
মূহুর্তুমাত্রং তৎসর্বং ভূক্ষীভূত্মচেত্নম্॥ ৪৭॥

হে ব্ৰহ্মণ ! জ্বক ছহিভা নিজাপা হটলেও আমি লোকা-প্রাদ ভবে তাঁহাকে পরিস্যাগ করিরাছিলাম, কিন্ত न्यानि जाबादक क्या कडिट मर्थ श्राम : क्नीनव प्रामाद केत्राम कवाधारण कित्रवाहरू, यादा ठेक, এकरण আমার ভ্রমতি জানকী প্ররার শপথ করিরা জগবাওলে व्यविष्ठि भूर्सक माम्स हिला इडेम्। डेश्कर्शक्ति मह-প্ৰাক্ষ প্ৰভৃতি দেবতাৱা জীৱামচন্দ্ৰের অভিপ্ৰায় অবগত হইরা बचाटक अध्ययस्त्री कवित्रा आभागम कतिरामा। कही सः कत्र প্ৰজা সমাগম অৱস্থোকন করিয়া কেবিয় বাসিনী ৰাষ্প্ৰা-क्रमपूरी अत्थारममा अमक्ष्यश्चि क्रडाक्रामिश्रहे कहिएड लातित्नन, कामि त्यमन मत्नोमत्था त्राम जिन्न जनगरक ক্ষম চিন্তা করি নাই, মাজা বহুৰরা আমার পাডাল প্রবেশ क्ता (यम क्रिक्रज़र्ग शथ धारान कतिए मनर्थ। इस ; সীতা এইরপে শপথ করিতেছেল ইতি মধ্যে ভাঁহার নিমিত্ত चाउ बहुर, पिरा, बहुासम निश्शामन ভূटन वहेरा आठाकः উचित्र रहेन । २७ । २१ (०৮ । २२ । ४० । ४४ । ४४० ।

লোক সমুদারের আশ্চর্যা উৎপাদনের জন্য সীভার কলেবর স্থেয়ির ন্যার দীন্তি ধারণ করিল এবং পৃথিবী দেবী স্নেছ পরভন্তা হইরা তাঁছাকে গ্রছণ পূর্বাক স্থাত কহিতে কছিতে তাঁছাকে আদনে উপবেশন করাইরা, রসাতল মধ্যে প্রবেশ করিলেন; সাক্ষাৎ লক্ষী সীতাকে এইরপ অবস্থাপর হইলে স্থাইতে অবিরল কুসুম বর্ষণ হইতে লাগিল এবং দেবভারা যার পর নাই আমালিভ চিত্ত হইয়া অভভূ সাধুবাদ চারিদিকে বিকীপ করিতে লাগিলেন। অন্তরীক্ষন্ত স্বর সমূহ 'ছে সীতে! আপনার এরপ্রশ্রুম্য অযোগ্য' ইত্যাদি নানাবিধ বাক্য কছিতে লাগিলেন। কি অস্তরীক্ষন্ত হাবর অক্ষম সমুদার লোক থে প্রকার কছিতে লাগিল। ৪২।৪৩।৪৪৪৫।

নীভার শপথ হৈতু মহাকার বানরনিব্যের মধ্যে কেছ বা থেরপ কথা বলিভে লাগিল—কেছ বা'কানকী কোথার গমন করিলেন', ইত্যাকার চিন্তা করিতে লাগিল—কেছ বা তাঁহার পাতাল গমন কালিম রূপ ধ্যান করিতে লাগিল—কেছ বা রামচন্দ্রের প্রতি লক্ষ করিতে লাগিল—কেছ বা বেন সাতা প্রবেশনং দৃষ্ট্র। সর্বাং সম্মোহিতং জগং।
রামস্ত সর্বাং জ্ঞাতিব ভবিষ্যৎকার্য্য গোরবষ্ ॥ ৪৮ ॥
অজানমিব ছঃথেন শুনোচ জনকাস্থজাম্।
ব্রহ্মণা ঋষিভিঃ সার্দ্ধং বোধিতো রম্মুনন্দনঃ ॥ ৪৯ ॥
প্রতিবৃদ্ধ ইব স্থপাচ্চকারানন্দরাঃ ক্রিয়াঃ।
বিসদর্জ ঋষীন্ সর্বান্ ঋতিজ্ঞো যে সমাগতাঃ ॥ ৫০॥
তান্ সর্বান্ ধনরত্নাদ্যৈ স্থোধ্যামগ্রমং প্রভূঃ ॥ ৫১ ॥
ভূলাদার কুমারো তৌ জুযোধ্যামগ্রমং প্রভূঃ ॥ ৫১ ॥
ভূলাদিনিস্পূহো রামঃ সর্বভোগের দর্বদা।
আত্রচিন্তাপরো নিত্যমেকান্তে সমুপ্রিভঃ ॥ ৫২ ॥
একান্তে ধ্যাননিরতে একদা রাঘ্রে সতি।
ভূলাহা নারায়ণং সাক্ষাংকোশল্যা প্রিয়বাদিনী ॥ ৫৩ ॥

নীতাকেই দর্শন করিতে লাগিল, পরে মুহর্ত মধ্যে সকলেই আচেতনবৎ তৃত্বীস্থাব ধারণ করিল। রামদরিতা সীতার রসাতলে প্রবেশ সন্দর্শন করিয়া সম্পার জাগৎ মুখ ছইল। রামচন্দ্র ভবিষ্যতের সমন্ত বিষয় অবগত হইরাও জনকান্ধ্রমার নিমিত প্রাকৃতজ্বনের ম্যার স্কুংগ ও পরিভাগ করিতে লাগিলেন। এবং ব্রহ্মা ও পরিভাগ ভাহাকে প্রবেশ দান করিতে লাগিলেন। ৪৬। ৪৭। ৪৯। ৪৯।

রামচক্র শ্রাবন্ধার অবগত হইরা বজের অবশিষ্ঠ কার্যা সমাধা করিলেম, অবস্তর পবি ও পড়িক্ দিগাকে বহুলপরি-মাণে ধন ও কল্প কাম করিয়া কার পর নাই সভক্ত করিয়া বিদার করত: কুলার বন্ধকে আহণ পূর্মক অংবাধ্যাপুরীরব্যে আগামন করিলেম। ৫০। ৫১।

একণে রামচল বাবতীয় পার্বি প্রে সর্মনাই প্রাপুনা হত্তান এবং আপনার চিন্তার উৎক্তিত হায়া প্রতিদিন

ভক্তাগত্য প্রসন্ধং তং প্রণতা প্রান্থ হৃষ্টিথীঃ।
রাম ! তং অগতামাদিরাদিমধ্যান্তবর্জিতঃ ॥ ৫৪ ॥
পরমাত্মা শরানন্দঃ পূর্ণঃ পুরুষ ঈশ্বরঃ।
জাতোহদি মে গর্ভগৃহে মম পুণ্যাতিরেকতঃ ॥ ৫৫ ॥
অবসানে মমাপ্যদ্য সময়োহভূদেঘূত্তম !।
নাদ্যাপ্যবোধজঃ কৃৎস্মো ভববনো নিবর্ততে ॥ ৫৬ ॥
ইদানীমপি মে জ্ঞানং ভববনানিবর্তকম্।
যথা সংক্রেপতো ভূয়াতথা বোধয় মাং বিভো ! ॥৫৭॥
নির্বেদবাদিনীমেবং মাতরং মাতৃবৎসলঃ।
দয়ালঃ প্রাহু ধর্মাত্মা জরাজজন্মিতাং শুভাম্॥ ৫৮

বিজন ছানে উপবিষ্ঠ থাকিতেন। একদিন রামচক্র একান্তে উবেশন করিয়া ধানমান ছইলে প্রিরভাবিনী রামজননী কৌশল্যা তাঁহাকে সাক্ষাৎ নারারণ জানিতে পারিয়া সাভিশর ছান্তাতঃকরণে ও ভক্তিসহকারে আগানন পূর্বক সঁদানন্দ রামচক্রকে প্রথাম পুরংসর কহিলেন, ছে রাম! ভূমি অখিল ব্রক্ষাণ্ডের আদি, মধ্য ও অন্ত বিবর্জিড; ভূমি পদ্মাত্মা, পরমানন্দ, পূর্বজন জন্মর, আমার প্রগ্যাধিকা প্রযুক্তই আমার জঠরমধ্যে জন্ম গ্রেছণ করিয়াছ। ছে রন্ত্রম! আমার বার্ত্তর দলা উপছিত, ভোষারও অবভার লীলা অবদান প্রায় হইরাছে, কিন্ত ভোষার আমুখলিকতা বন্তঃ এই নামানা সংসার বন্ধন ছইতে আমার কোন রূপ নিত্নন্তি ছইতেছে না; অভ্যাব হে বিজ্ঞো। এই অবসাম সময়ে ভব্বদ্ধন নিত্নন্তি নম্বন্ধীর জান বিষয়ক কিছু সংক্রিপ্ত ভল্ক আমাকে প্রমান করা এই । ইকাং।

নরালু, ধরাজা ও বাতৃপরারণ রামচন্দ্র আনকীর বাক্য জ্ঞানিটের ক্রিরা নির্বেদ্বাদিনী, জ্বাল্লার্ডিকেইলব্রা, ওড-লক্ষণসম্পারা স্বীয় গার্ডধারিণীকে কছিলেল, হে বাতঃ! আয়ি মার্গান্ত্রেয়ে ময়া প্রোক্তাঃ পুরা মোক্ষাপ্তিদাধকাঃ। কর্মযোগে। জ্ঞানযোগে। ভক্তিযোগশ্চ শাশ্বতঃ ॥৫৯॥ ভক্তির্বিভিদাতে মাতস্ত্রিবিধা গুণভেদতঃ। স্বভাবো যস্তা যন্তেন ওস্তা,ভক্তি বিবভিদ্যতে ॥ ৬০॥ यञ्ज हिश्माः ममुक्तिशा मञ्जः मारशार्यस्म वा। ভেদদৃষ্টিশ্চ সংরম্ভী ভক্তো যে তামসঃ স্মৃতঃ ॥ ৬১ ॥ ফলাভিদন্ধিভোগার্থী ধনকামো যশস্তথা। অর্চাদো ভেদবুদ্ধ্যা মাং পূজয়েৎ দ তু রাজদঃ ॥৬২॥ পরিশ্রিন্নপিতং যস্ত্র কর্ম্মনির্হরণায় বা। কৰ্ত্তবামিতি বা কুৰ্যান্ডেদবুদ্ধ্যা সমাত্ত্বিকঃ॥ ৬৩ ॥ यन्खनां व्ययनां प्रवास्त्र मया नख्छनां नर्य। অবিচ্ছিন্না মনোবৃত্তির্যথা গঙ্গান্ধুনোহন্বুধো । তদেব ভক্তিযোগস্থ লক্ষণং নিগুণস্থ হি॥ ৬৪॥ অহৈতুক্যব্যবহিতা যা ভক্তিশ্ময়ি জায়তে। সা যে সালোক্য সামীপ্য সাষ্টি সাযুজ্যমেব বা ॥৬৫॥

ইতি পূর্ব্বে বেদসমত তিমার্গ বিষয় অর্থাৎ কর্মবোগ, জানযোগ
ও তৎপরে ভাক্তিবোগ উল্লেখ করিয়াছি। হে জননি! তম, রজঃ
ও সদ্ধ এই তিনটার গুণভেদামুসারে ভক্তি তিন ভাগে বিভক্ত
হয়, অর্থাৎ মাহার যেরূপ স্কোব, ভাহার সেই স্থভাবহারা
ভক্তি বিভিন্ন লক্ষিত হয়। যে ব্যক্তি হিংসা, লক্ষর দন্ত,
পূর্তালাভাদি, ফলরূপ মাধুসর্যা অর্থাৎ পরগুণঘেষ অরিমিত্রাদি
বিষয়ে আগ্রহ করে, সেই জামার তামস ভক্ত বলিরা উল্লিখিত
হয়; যে ব্যক্তি অর্থ ভোলোক্ষা, প্রহিক বলঃ ও অর্থাভিলার
প্রকাল করিয়া পাকে এবং ভেদ বৃদ্ধি, স্থভিলাদি পূর্জা
স্থান সংগ্রহ করিয়া আমাকে উপাসনা করিয়া থাকে সেই
রাজস; যে ব্যক্তি পাপ বিশাশ জন্য পূর্জা করিয়া আমাকে
সমর্পণ করে এবং নিজবুদ্ধিদারা শান্ত কথিত অবস্তু করেবা

দদাত্যপি ন গৃহুস্তি ভক্তা মং দেবনং বিনা।

স এবাত্যন্তিকো যোগো ভক্তিমার্গস্ত ভামিনি । ॥ ৬৬॥

মন্তাবং প্রাপ্ত অভিক্রমা প্রণক্রেম্ ।

মহতা কামহীনেন স্বর্ণ্মাচরণেন চ ॥ ৬৭॥

কর্মযোগেন শন্তেন বজিতেন বিহিংসনম্।

মদর্শনস্ততিমহাপুজাভিঃ স্মৃতিবন্দনৈঃ ॥ ৬৮॥

ভূতেয়ু মন্তাবনয়া সঙ্গোসতাবর্জনৈঃ।

বহুমানেন মহতাং তুঃখিনাম্মুকম্পয়া॥ ৬৯॥

স্বস্মানেয়ু মৈত্রা চ যমাদীনাং নিষেবয়া।

বেদান্তবাক্যশ্রবণাশ্মম নামান্তকীর্ত্রনাৎ॥ ৭০॥

কার্যা সমূহ সম্পাদন করে, সেই সান্ত্রিক । ৫৮।। ৫৯।৬০।। ৬১।৬২।৬৩।

আমি অনস্তঃগের অধার; যেমন জাহনী জল দাগার মধ্যে মিলিত হইলে অভেদ বিষয়ত্ব হয়, দেইরপ আমার গুণ হইতে অবিচিছর মনোরতি আমাতে সংমিলিত হইয়া অভেদত্ব প্রাপ্ত হয়। হে মাতঃ! ভক্তিযোগ ও নিশুনের লক্ষণ ঠিক ঐরপ জানিবেন। বিনা কারণে আমার উপার যে অব্যবহিতা ভক্তিই অমিরা খাকে দেই ভক্তি মুক্তি আমার দামীপ্য, অরপতা ও সাযুজ্য প্রাপ্ত হয়; যিনি আমার সেবা নিরত হইরা মোক্ষাভিলাষী হয়েন, তিনি আমার প্রেরত ভক্ত। হে ভামিনি! আমার দেবা না করিলে ভক্ত, কাছাকেও গ্রহণ করেন না। তিনি ভক্তি যোগ্যারা মারা অতিক্রম করিয়া, অতি মহৎ, কাম বিহীন, নিজ্য, নৈমিভিকরণ সর্ক্ষণ্যাচয়ণেও মদৈক্য প্রাপ্ত হয়েন। ৬৪ । ৬৫ । ৬৬। ৬৭ ।

যিনি কর্ম-যোগ সাধন করিয়া থাকেন, হিংসা বিবহিত হইয়া পুলা, ভতি ও বন্দনাদি করিয়া থাকেন, ভিনিই আমার সাক্ষাংকার লাভ করিয়া থাকেন, আমাকে চিন্তাপথে রক্ষা করিছে ছইলে চুক্টসঙ্গ পরিহার, অনত্য বিস্ত্ত্রন, মহৎ ব্যক্তিদিধের বছমান, ছঃখীদিধের প্রতি দরা, আপনার দমানাবহাপ্রদিধের সহিত মিত্রতা, ব্যনির্ম, প্রাণারাম

সংসদেশ। জবৈনৈৰ ফ্ছমঃ পরিবর্জনাং।
কাজ্জ্য়া মম ধর্ম্ম্য পরিশুদ্ধান্তরো জনঃ॥ ৭১॥
মদ্গুণশ্রবণাদেৰ যাতি মামঞ্জ্যা জনঃ।
যথা বায়ুবশাং গন্ধঃ স্বাঞ্জ্যাদ্ত্রাণমাবিশেং॥ ৭২
যোগান্ত্যাসরতং চিত্তমেবমাস্থানমাবিশেং।
সর্বেয় প্রাণিজাতেয় ফ্ছমান্ত্রা ব্যবস্থিতঃ॥ ৭৩॥
তমজ্ঞারা বিমৃঢ়ান্ত্রা কুরুতে কেবলং বহিঃ।
ক্রিয়োৎপর্মের্নিকভেদৈক্র ব্যৈমের্নাম্ব। তোষণম্।
ভূতাবমানিনার্চায়ামর্চিতোহহং ন প্রজিতঃ॥ ৭৫॥

তাবস্মামর্চয়েদেবং প্রতিমাদো স্বক্সতিঃ।

যাবৎসর্বেষ্ ভূতেষু স্থিতং চাজনি ন স্মরেৎ।। ৭৬॥

যস্ত ভেদং প্রকুলতে স্বাজ্মনশ্চ পরস্ত চ।

ভিন্নদৃষ্টের্ভয়ং মৃত্যুস্তস্ত কুর্যান্ন সংশয়ঃ॥ ৭৭॥

মামতঃ সর্ববভূতেষু পরিচ্ছিন্নেষু সংতিস্থম্।

একং জ্ঞানেন মানেন মৈজ্যা চার্চ্চেদভিন্নধীঃ॥ ৭৮॥

চেতসৈবানিশং সর্বভূতানি প্রাণমেৎ স্থাঃ।

জ্ঞাত্বা মাং চেতনং শুদ্ধং জীবরূপেণ সংস্থিতম্॥ ৭৯॥

তত্মাৎকদাচিনেক্ষেত ভেদমীশ্বরজীবয়োঃ।

ভক্তিযোগো জ্ঞানযোগো ময়া মাতক্রদীরিতঃ॥৮০॥

নিষেবন, বেদাস্ত বাক্য আকর্ণন, আমার নামসন্ধীর্ত্তন, সংস্থানির সহিত সরল বাবহার, অহং "কর্ত্তা" এই বুদ্ধিদারা আমার পূজাদিতে ইচ্ছা বিধান করা, পরিগুদ্ধান্তঃ করণ লোকের অবশ্য কর্ত্ব্যা যেমন গন্ধবহদারা বাহিত হইরা সৌরভ নাসারদ্ধে প্রবেশ করে, ভক্রপ যে ব্যক্তি আমার চরিত্র বিষয় শ্রবণ করে, দে আমার সাযুজ্য প্রাপ্ত হয়। ৬৮। ১৬৯। ৭০।

যে চিত নিরন্তর যোগাত্যালে আসক্ত হয়, সেই
প্রমান্মায় প্রবিস্ত হয়; হৈ মাতঃ! আমি সর্ব্যাহ চৈতন রপে
বিরাজনান আছি, প্রতরাং প্রাণি সমুদার ক্রপ্রেছণ করিবা
মাত্র আমি ভাহাদিগের চেতন সম্পাদন করিবা থাকি; হে
অংছ! আমাকে সর্ব্যভূতের চৈতন্য সম্পাদক জানিরা
বিমৃত ব্যক্তিরা গাকপুশুধুপাদিঘারা পূলা করিরা আমার
সন্তোয উৎপাদন করে না; সর্ব্বপ্রাণির অপমানকারী ব্যক্তি
যাবৎকাল আনার প্রতিমা পূলা না করে, তাবৎকাল আমার
পূলা বা অর্চনা কিছুই হয় না। ৭৩। ৭৪। ৭৫।

आमि मर्स्तवानित मर्सा अविष्ठ आहि, करेंगे लाक যতদিন না আপন শাৃতি পথে আনয়ন করে, অর্থাৎ অবগত না হয়, তদৰ্ধি পুলামিতে তাহার অধিকার নাই। যে ব্যক্তি আপনার এবং অপারের মধ্যে ভিন্ন জান করে, ঐ ভেন দৃষ্টি বশতঃ তাহার মৃত্যু ভন্ন উপস্থিত হয়, তাহাতে কোন गश्नत नारे; जामार्क ७ मर्कवानि मक्षा भतिष्क्रित्रकाल সংখ্যিত ছবলৈও অভিন্ন स्मन्न সর্বত্ত এক জ্ঞানে ও এক मन्त्र मर्स्ववागित छेलत मिळ्छाटत जामाटक जर्छन। कटत আমাকে সর্বাভূতে জীবনরূপে সংস্থিত অবগত ছইরা চেতনা প্রযুক্ত পণ্ডিত লোকে যাবভীর প্রাণীকে প্রণাম করিয়া থাকেন मिरे कांत्रण कांशित क्लाहिए क्षेत्र ए कीन महश्र कानवन প্রভেদ পরিদর্শন করেন না। হে মাতঃ ! আমি জ্ঞান যোগ ও ভক্তি যোগের সহিত প্রস্তারিত করিয়াছ। পুরুষ কেবল ভক্তি योगचाता পরিণামে **ভান যোগ আগু हरेवात ज**ना जामि ভক্তি যোগে जीव नम्हद समग्रह रहेना जाहि। हर মাতঃ! আপনি; আমাকে পুত্ররূপে নিরস্তর সরণ করিয়া আলব্যৈকতরং বাপি পুরুবঃ শমসূচ্ছতি। পুত্ররূপেণ বা নিত্যং শ্বৃত্ব। শান্তিমবাল্যাদি। প্ৰজন্ম স্থা বচনং কৌশ্ল্যানন্দ সংযুক্ত। ॥ ৮২ ॥ तामः गन। किन शाका हिका गःमातवक्वनम् । অতিক্ষ্য পতীক্তিভোহপ্যবাপ পরমাৎ গতিম্ ॥৮৩॥

ক্রিকেয়ী চাপি যোগং রঘুপতিগদিতং পূর্বমেবাধিগম ততে। মাং ভক্তিযোগেন মাতঃ ! সক্ষ হাদিছিতম্ ।৮১ শ্রদ্ধাভক্তিপ্রশাস্তা হাদি রঘুতিলকং ভাবয়স্তী গতামুঃ। গত্বা স্বৰ্গং ক্ষুব্ৰন্তী দশর্থসহিতা মোদমানাবতক্ষে মাতা জ্ঞীলক্ষণস্ঠাপ্যতিবিমলমতিঃ প্রাপ ভর্তুঃ সমীপম্

> ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে উত্তরকাতে সপ্তমোহধ্যায়।

শান্তিভোগ করিবেন; কেশিল্যা রাষচক্তের বাক্য প্রবণ করিয়া সাতিশর আনন্দিতা হইলেন। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮°। 1821821

दाब क्रममी (क्षिणा मःमाद वद्यम विक्रित क्रिया श्रमत मध्या त्रायहच्यात व्यक्ति शामि कत्रतः मस्त्रतः ७ वम अहे शुन्दत्र অতিক্রম পূর্বাক প্রমাগতি প্রাপ্ত ছইলেন। অনস্তর কৈকেয়ী পরিতদ্ধ, ভক্তিসংযুক্ত ও প্রশাস্ত অন্ত:করণে রমুনাথকে

স্মরণ করিয়া চিত্রকৃট পর্বতে গমন পুর্বক রযুকুলচুড়ামণ রামচন্দ্রকে চিন্তা করিতে লাগিলেন, পরে সাহলাদম অর্থ গমন করিয়া বাজা দশরথের সহিত কেলি সংযুক্ত হইয়া অবস্থান করিলেন এবং এক্ষণে অভি বিমল হৃদঃ শ্রীলক্ষ্মণ জ্বনী সুমিত্রা রুপুরাজ দলরখের সঙ্গ প্রাত इहेर्निम । ५० | ५८ |

> इंडिजीमनशांच्यद्वामावर्ग छेमामरङ्खद मचारम **छे छ दकार्ट्ड म खर्मा** २४।। यह

অফীমো২ধ্যায়ঃ।

শ্রীমহাদেব উবাচ।
অথ কালে গতে কস্মিন্
ভরতো ভীমবিক্রমঃ।

যুবাজিতা মাতুলেন ছাহুতোহগাং সসৈনিকং॥ ১॥
রামাজ্ঞয়া গতাস্তত্র
হত্বা গন্ধর্বব নায়কান্।
তিজ্ঞঃ কোটাঃ পুরে দে তু
নিবেশ্য রঘু নন্দনঃ॥ ২॥
পুকরং পুস্পরাবত্যাং
ভক্ষং ভক্ষশিলাহ্বয়ে।
অভিষিচ্য স্থতো ভত্র

ধনধান্য স্থহদ্রুতো ॥ ৩॥

প্নরাগত্য ভরতো

রাম দেবাপরোহভবৎ ।

ততঃ প্রীতো রঘুপ্রেচো

লক্ষনং প্রাহ সাদরম্ ॥ ৪ ॥

উভো কুমারো সোমিত্রে !

গৃহীত্বা পশ্চিমাং দিশম্ ।

তত্র ভিল্লান্ বিনির্জিত্য

দুষ্টান্ সক্রাপকারিণঃ ॥ ৫॥

অঙ্গদশ্চিত্রকৈতৃশ্চ

মহাসত্ত্ব পরাক্রমো ।

দ্বয়ো দ্বে নগরে কৃত্বা

গজাশ্ব ধনরত্বকৈঃ ॥ ৬ ॥

অভিষিচ্য স্থতো তত্র

শীত্রমাগচ্ছ মাং পুনঃ ।

মহাদেব কহিলেন, অনস্তর কিছুকাল অতীত হইলে মহাবল পরাক্রান্ত ভরত খদেশ নিকটবর্তী গন্ধ বধার্থ মাতুল কর্তৃক আচত হইলে সসৈন্য বছির্গত হইরা রামাজ্ঞার ভিনকোটী গন্ধনায়ক বিনাশ করিলেন; অনস্তর তিনি পুকর এবং পুকর-বভাগ নামক নগরীমর ধনধান্য প্রপুরিত ও বন্ধু বান্ধব পরিবৃত্ত করিরা স্কীর প্রহর ভক্ষ ও ভক্ষশীলকে তথাকার রাজ পদে অভিবিক্ত করিলেন। অনস্তর ভরত প্রভাবর্ত্তন পূর্বক শ্রীরাম-চন্দের সেবার নিযুক্ত হইরা রহিলেন। পরে রঘুজ্ঞেষ্ঠ

রামচন্দ্র পরম প্রীতান্তঃকরণে ও সাদরে ভাতৃপারায়ণ অমুত্র লক্ষণকে কহিলেন, হে সেমিতে! তুমি স্বীয় পুজ্রুর সমভি-বাহারে পশ্চমদিকত্ব সর্বাপহারী তুরাত্মা ভিল্লদিগকে জর করণানস্তর্গুভুইটা নগর গজায়, ধন ও রত্ব হারা বিভূষিত করিয়া মহাবল পরাক্রান্ত অভ্যন ও চিত্রকেতৃকে ভথার অভিবেক পূর্বক পুনর্বার শীজ প্রত্যাবর্তন করিবে। সেমিতি লক্ষ্মণ শ্রীরাম-চক্তের আদেশ শিরোধার্যা করিয়া, হয়, হল্তি ও সৈন্যাদি

রামস্থাজাং পুরস্কৃত্য গজাম বলবাহনঃ॥ १॥ গত্বা হত্বা রিপূন্ স্বর্ণন্ স্থাপয়িত্বা কুমারকৌ। সৌমিত্রিঃ পুনরাগত্য রামদৈবাপরোহভবৎ॥৮॥ ততস্তু কালে মহতি প্রয়াতে রামং দদা ধর্মপথেস্থিতং হরিম। **क्ट्रे** नगागान् विदन्धाती । কালস্ততো লক্ষ্মণমিত্যুবাচ॥॥৯॥ নিবেদয়স্বাতিব্লদ্য দূতং মাং দ্রস্ট্রকামং পুরুষোত্তমায়। রামায় বিজ্ঞাপনমস্তি তস্থ মহর্ষিমুখ্যক্ত চিরায় ধীমন্ ! ॥ ১০॥ তম্ম তম্বচনং শ্ৰুত্বা সৌমিত্রি স্থরয়াবিতঃ।

আচচক্ষেহ্থ রামায় স সংপ্রাপ্তং তপোধনম্ । ১১॥ এবং ক্রবস্তং প্রোবাচ লক্ষণং রাঘবো বচঃ। শীঘ্ৰং প্ৰবেশ্যতাং তাত! মুনিঃ সৎকার পূর্বকম্॥১২॥ লক্ষণস্ত' তথেত্যক্ত্যা প্রাবেশয়ৎ তাপসম্। স্বতেজ্যা জ্লন্তং তং ঘ্বতসিক্তং যথানলম্। ১৩॥ সোহভিগম্য রঘুশ্রেষ্ঠং দীপ্যমানঃ স্বতেজ্যা। মুনির্ম্মধুরবাক্যেন বর্ধস্বেত্যাহ রাঘবম্॥ ১৪॥ তিয়ে দ মুনয়ে রামঃ পূজাং কৃত্বা যথাবিধি।

এছণ পূর্বাক যাবতীর শক্ত বিনাশ করিলেন এবং কুমার দরকে তথাকার রাজ পদে অভিষিক্ত করিয়া পুনশ্চ প্রত্যাবর্তন পূর্বাক জীরামের সেবার অহরক্ত হইলেন। ১। ২। ৩। ৪। ৫।৬।৭৮। এইরপে বহুকাল বিগত হইলে,একদিন শ্ববিশেধারী কাল নির-ভার ধর্মামুরাগী জীরামচজ্জের সহিত সাক্ষাৎ করিবার মানসে লক্ষণ সমীপে উপনীত হইয়া কহিলেন, ছে বীমান্। আমি পুক্ষোত্তম রামচজ্জকে দর্শন করিবার জান্য আগমন করিবারি, অভএব অভি শীত্র গমন করিয়া শ্বিশ্রেষ্ঠের বিজ্ঞাপন বামচজ্জের নিকট নিবেদন করে। লক্ষ্যাণ্ডনের উচ্ছার বাক্য

প্রবণ করিয়া অতি ক্রত পদে জীরাম সমীপে উপনীত ছইয়া
থাবির আগমন বার্তা বিজ্ঞাপন করিলেন; রযুনাথ অন্তরের
বাক্যাকর্ণন করিয়া কহিলেন, হে তাত! তুমি মুনিকে অতি
সমাদরে সৎকার পূর্বাক শীব্র গৃহমধ্যে আনমন কর। ম।
১০।১১।১২। লক্ষণ লোকের আজ্ঞা শীরোধার্য্য করিয়া
সম্ভদ্যতাশনের নাগর অতেজ ক্রলম্ভ তপোধনকে পরম সমাদরে
গৃহাস্তাম্ভরে আনমন করিলেন; অনস্তর অতেজ, দীপ্তিমান,
মুনিপ্রব রযুনাথের নিকট গামন করিয়া অতি মধুর বাক্যে
রাষ্বকে বলিলেন, আপনি ভুরাজ্য অপেক্ষা অর্গরাজ্য লাভে
উদ্যোগী হউন। রাষ্চক্র মহর্ষিকে সমাগত দেখিয়া মধোন

1

পৃষ্টানাময়মব্যপ্রো রামঃ
পৃষ্টোহথ কেন সঃ ॥ ১৫ ॥

দিব্যাসনে সমাসীনো
রামঃ প্রোবার্চ তাপসম্।

যদর্থ মাগতোহিদ

হমিহ তৎপ্রাপয়স্থ মে ॥ ১৬ ॥

বাক্যেন রোদিত স্তেন
রামেণাহ মুনির্ববিচঃ।

ঘল্মেব প্রয়োক্তব্যম্

আনালক্ষ্যন্ত তঘ্বচঃ ॥ ১৭ ॥

নাত্যেন চৈতৎ প্রোতব্যং
নাখ্যাতব্যং চ কদ্য চিৎ।

শৃণুয়াদ্ বা নিরীক্ষেদ্ বা

যঃ স বধ্যস্তুয়া প্রভো! ॥ ১৮॥

তথেতি চ প্রতিজ্ঞায়
রামো লক্ষ্মণম্ অবীৎ।
তিষ্ঠ স্থং দ্বারি সৌমিত্রে!
নায়াত্বত্র জনো রহঃ ॥১৯॥
যদ্যাগচ্ছতি কো বাপি
দ বধ্যো মে ন সংশয়ঃ।
ততঃ প্রাহ মুনিং রামো
যেন বা স্থং বিসন্তিভ্রতঃ ॥২০॥
যতে মনীষিতং বাক্যং
তদ্ বদস্থ মমাগ্রতঃ।
ততঃ প্রাহ মুনির্ব্রাক্যং
শৃণু রাম! যথাতথম্॥২১॥
ব্রহ্মণা প্রেষিতেহিক্সং প্রভো!।
কার্যার্থে তেহস্তিকং প্রভো!।

পাযুক্ত বিধানানুসারে তাঁহাকে পূলা করিলে, মুনি তাহার অনাময় জিজ্ঞাসা করিলেন ; প্রীরামপ্ত তাঁহার কুশল বার্তা জিজ্ঞাসা করিলেন। অনস্তর প্রীরামচক্র দিব্যাসনে উপবেশন করিয়া ওপোধনকে বলিলেন, আপনি এথানে যাহার নিমিত্ত আগমন করিয়াছেল ভবিষয় আমার নিকট সবিস্তার প্রকাশ ককন। রামচন্দ্র এইরূপ বলিলে,মুনিবর কহিলেন,আমার বিশেষ গৃঢ় রহস্য আছে, কিন্ত ভাহা অন্যের নিকট অব্যক্তব্য বলির অতি গুপ্তভাবে কহিব ; হে প্রভা! আপনি ভিম অপর। কেইই ভাহা শ্রবণ করিবে না বা আপনি কাহাকেও বলিবেন না। স্বীকার করুন, যে, যদি কেছ অন্তরাল হইতে প্রবণ বা নিরীক্ষণ করে সে আপনার বধ্য। রামচন্দ্র মহর্মির বাক্যে

প্রতিজ্ঞা করিয়া লক্ষণকে বলিলেন, হে সে মিত্রেয়! তুমি এই দারদেশে অবস্থান কর, দেখিও কেহ ধেন এই রহস্য হানে না আইসে, কিন্তু যদি কেহ উপনীত হয়, সে নিশ্চরই আমার বধ্য। পরে মুনি কহিলেন, যে কোন লোক যাউক নাকেন কিন্তু তুমি বিস্কৃতিত হইবে। ১৩ । ১৪ । ১৫ । ১৬ । ১৭ । ১৮ | ১৯ । ২০ |

অনন্তর জীরাম কছিলেন, একণে আপনার মনোভিণ্যিত বাক্য আমার নিকট প্রকাশ করুন, তংশ্রবণে মুমি ব্লিলেন, ছে শ্রীরাম! একণে আমার সত্য বাক্য শ্রবণ করুন। ছে প্রভা, হে জ্বাদীশ্বর! কোন বিশেষ কার্ব্যোপদক্ষে প্রদা আমাকে আপনার নিকট প্রেরণ করিরাছেন। ছে দেব! ছে অহং হি পূর্বেজো দেব!
তব পুত্রং পরস্তপ!॥২২॥
মায়া সঙ্গমজো বীর!
কালঃ সর্বহরঃ স্মৃতঃ।
ত্রন্মা জামাহ ভগবান্
সর্বেদেবর্ষি পূজিতঃ॥২০॥
রক্ষিতুং স্বর্গ লোকস্থ
সময়স্তে মহামতে!।
পুরা জমেক এবাসীলোকান্ সংহৃত্য মায়য়া॥২৪॥
ভার্যয়া সহিত স্তঃ
মামাদো পুত্রমজীজনঃ।
তথা ভোগবতং নাগমনন্তমুদকেশয়ম্॥২৫॥

মায়য়া জনয়িত্ব। তুং (की ममारको ग्रहावरली। मध्रिक छे छ रको रेम र छा। হত্য মেদোহস্থিদঞ্যুম্॥ ২৬॥ ইমাং পর্বত সম্বদ্ধাং মেদিনীং পুরুষর্বভ! পদ্মে দিব্যার্ক সংকাশে নাভ্যামুৎপাদ্য মামপি॥ ২৭। মাং বিধায় প্রজাধ্যক্ষং ময়ি সর্ববং ন্যবেদয়ৎ। সোহহং সংযুক্তসংভার-স্থামবোচং জগৎপতে! ॥২৮॥ রক্ষাং বিধৎস্ব ভূতেভ্যো যে মে বীর্য্যাপহারিণঃ। ততস্ত্ৰং কশ্যপাজ্জাতো বিষ্ণুক্বামনরূপ ধূক্॥ ২৯॥

পরন্তপ! আমি আপনার সর্বজ্যের পুত্র অর্থাৎ স্থাতির অনেক পূর্ব্বে আপনি আমাকে স্কুলন করিয়াছেন। হে বীর'! আমি বিশুগাছা, মহামতে! একণে স্ব্রেলেবির্ধি পূজিত ভগবান ব্রহ্মা আপনাকে বলিরাছেন যে, আপনার অবভার অবসান হইরাছে, অতএব একণে বর্গ লোক রক্ষা করিবার সমর উপস্থিত হইরাছে। পূর্ব্বে আপনি মারা ধারা অনার্ত খাকিরা অভেদরপে একই ছিলেন; অথ্যে আমাকে মারার সহিত প্রক্রপে, পরে ভোগবত অনন্ত নাগকে স্থলন করিরাক্রি, অতঃপর আপনি নিজ্ঞমারা ধারা স্পরাক্রমী মধুকৈটত নামে সুইটি মহাবলশালী দৈত্যকে স্কুলন করিরা। পুনর্বার

তাহাদিগকে সংহার পূর্বক মেদান্থি সঞ্চর অরপ এই পরত সম্বদা বস্থ করা স্কান করিয়াছেন। ত্রুণ অরণ সদৃশ আপনার নাভি পদ্ম হইতে আমাকে উৎপাদন করিয়াছেন,ছে অগৎপতে। আপানি আমাকে প্রজ্ঞাপুঞ্জের অধ্যক্ষ করিয়া আমার উপর তাহাদিগের উৎপাদন, লালনপালনাদি যাবডীয় ভার অর্পণ করিয়াছেন। আমিও প্র কার্য্য করিবার নিমিও অলীকার করিয়া অকীর কার্যা সম্পাদন করিছে—কিছ অর্থনা আমার প্রজ্ঞাপীভনকারী হরাআদিগের বংসাধন করিয়া আমাকে রক্ষা ককন, হে ধরণীধর! আপানি প্র কারণ পরত্ত হইয়া কল্যপের উরলে বামনরশী হইয়া জন্ম গ্রহণ পূর্বক রাক্ষরণ বিনাশ করিয়া পৃথিবীর ভার দূরীভূত

কংবানিদি ভূভারং
বধা দ্রক্ষো গণস্ত চ।
সর্বাসূৎ সার্য্যাণাস্থ
প্রজাস্থ ধরণীধর! ॥ ৩০ ॥
রাবণস্থ বধাকাক্ষ্যী
মর্ত্তালোক মুপাগতঃ।
দশবর্ষ সহস্রাণি
দশবর্ষ শতানি চ॥ ৩১ ॥
কৃষা বাসস্থ সময়ং
ত্রিদশেষাত্মনঃ পুরা।
স তে মনোরথঃ পূর্ণঃ
পূর্ণে চাযুষি তে নৃষু॥ ৩২ ॥
কালস্তাপদ রূপেণ
তৃৎ সমীপ মুপাগমম্।

ততো ভূয়৳ তে বৃদ্ধি
যদিরাজ্য মুপাদিতুম্॥ ৩৩॥

তত্তথা ভব ভদ্রং তে

এবমাহ পিতামহঃ।

যদি তে গমনে বৃদ্ধি
দেবলোকং জিতেন্দ্রিয়়!॥ ৩৪॥

সনাথা বিষ্ণুনা দেবা

ভবস্ত বিগত জ্বাঃ।

চতুম্মুখস্ত তদ্ বাক্যং

শুত্বা কালেন ভাষিতম্॥ ৩৫॥

হনন্ রামস্তদা বাক্যং
কুৎস্নস্যান্তকম ব্রবীৎ।

শুতং তব বচো মেহদ্য

মমাপীইতরং তু তৎ ॥ ৩৬॥

করত: প্রণীড়িত প্রজা সমূহকে রক্ষা ককন; আপনি লক্ষাধিপতি দশাননকে বিনাশ করিবার মানসে মর্ত্যলোকে আসিরা দশসহজ্ঞ ও দশশত বংসর কাল অবস্থিতি করিতে-ছেন। ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ১৩। ৩১।

ইতিপুর্বে ত্রিদির মধ্যে অকীর অবস্থিতির কাল সমৃতীর্ণ হইলে, আপনি নরলোকে অবতীর্ণ হইরাছেন। আপাততঃ আপনার অবতরণ সমর প্রার অতীত হইতে দেখিলা আমি "কাল" তাপসরপ পরিগ্রহ পুর্বাক আপনার সরিকট্টে আগমন করিবাছি। অধুমা কনীর মনোরম রাজ্য স্থ উপভোগা করিতে যদি আগনার বাসনা থাকে, ভাষা ছইলে ছে জিতেজির ! গিতামহ বলিরাছেন, বে,আপনি ভব সৌভাগ্য সজোগা ককন, নচেৎ যদি দেহলোকে গমন করিতে আগনার ইছো হর, তাহা হইলে দেবতারা বিক্লুকে প্রাপ্ত ছইরা সনাথ এবং বিগত জর ছইবেন। ৩২ । ৩৪ ।

কাল মুখে চতুত্ব বন্ধার কথা অবণ করিব। জীরাম হাস্য করিব। কালকে কহিলেন, আজ ভোষার নিক্ট হইতে আমার ইয়াতর বাকা সমুদার শ্রবণ করিবাম। কটা সন্তোষঃ পরমো জ্ঞেয়স্থাগমন কারণাৎ।
ত্রাণামপি লোকানাং
কার্যার্থং মম সম্ভবঃ ॥ ৩৭॥
ভদ্রং তেহস্তাগমিষ্যামি
যত এবাহ মাগতঃ।
মনোরথস্ত সংপ্রাপ্তো
ন মেহত্রাস্তি বিচারণা॥ ৬৮॥
মৎসেবকানাং দেবানাং
সর্বাকার্যােষ্টু বৈ ময়া।

হে কাল ! তুমি মুমিবেশ পরিগ্রেহ করিয়া আমার সহিত माकार कदिवाद मानत्म मर्जातमारक व्यागमन कवित्राष्ट्र अनित्रा, আমার সাতিশয় সন্তোধ লাভ হইয়াছে। একণে আমার পক্ষে স্বৰ্গ, মন্ত্য, ও পাতালের কার্য্য দর্বতোভাবে সম্পাদন করা কর্ত্তব্য; আপাভত: ভূলোকের কার্য্য অবসান ছইয়াছে, স্তরাং এখানে আর অধিককাল অবস্থানের প্রয়োজন নাই। ছে কাল! তোমার মঙ্গল ছউক্; আমি যে কারণ অবল্বন ক্ষিয়া মর্জ্যলোকে আগমন ক্ষিয়াছিলাম, সেই কারণেই পুন-स्रोत हेइलाटक चानगर कतिन, जाहारण जिनमां ज न्नर माहै। किन हेमानीर जूमि द्व आभाग निक्षे आमिशाष्ट्र, जाशां हे আমার মনোরথ সিক্ষাত্ইরাছে, স্তরাং আমার আর कानजार विकादबन व्यवसायका नाहे। मंत्रीव्राप्तवा श्रवेश्व (एवडा मखनी पिरांत याचडीब कार्या ज्यामात बाता मन्यानिक रहेशा शांक । (ए श्रृञाः कामिरव मोत्री वात्राहे में मूचात्र भमार्थ व्यवहानभीम वर्षार देउल्ड (व मम्छ यस व्यवस्थाकन করিতেছ, তৎসমূলারই মারা কর্তৃক প্রজিত ও রক্ষিত, এবং | স্থাতব্যং মায়য়া পুত্র !

যথা চাহ প্রজাপতিঃ ॥ ৩৯ ॥

এবং তয়োঃ কথয়তোহুর্বাসা মুনিরভ্যগাৎ।

রাজ ভারং রাঘবসাদর্শনাপেক্ষয়াদৃতম্ ॥ ৪০ ॥

মুনিল ক্ষণমাসাদ্য

হুর্বাসা বাক্যমন্তবীৎ।

শীত্রং দর্শয় রামং মে

কার্যং মেত্যন্তমাহিতম্ ॥ ৪১ ॥

তচ্ছুত্বা প্রাহ সোমিত্রিমুনিং জলনতেজসম্।

রামেণ কার্যং কিং তেহদ্য
কিং তেইভীক্টং করোম্যহম্ ? ॥৪২॥

পিতামহ প্রজাপতিও এবিষয় সন্থমে কছিয়াছেন।৩৭। ৬৮। । ৩৯।

শ্রীমচন্দ্রের সহিত কালের এইরপ কথোপকথন ছইছেছে,
ইত্যবসরে প্রকাসা মুনি রকুনাথ সম্পর্নি গালসার লক্ষাণ রক্ষিত
বারদেশে আসিয়া উপনীত হইলেন, অনস্তর তিনি লক্ষাণদেবকে সন্মুখে অবলোক্ষা করিয়া বলিলেন, আমি কোন
বিষয়কার্যানুবোধে শ্রীমাচন্দ্রের সহিত সাক্ষাৎ করিবার
কর্মা আগমন করিয়াছি, অভএব এক্ষণে তুমি লীজ তাঁহার
সহিত সাক্ষাৎ করাত ; রামানুজ মুর্কালার বাকা শ্রবণ করিয়া
পাবক সভূপ তেতঃপুঞ্জালী মুনিকে কহিলেন, অন্য শ্রীরামের
সহিত আপনার কি কার্যা আহছে, আর আপনার বাসমাই বা কি

রাজা কার্যান্তরে ব্যথ্যে।
মুছুর্ত্তং সংপ্রতাক্ষতাম্।
তচ্ছ ত্বা ক্রোধসন্তপ্তে।
মুনিঃ সৌমিত্রিমন্তবীৎ ॥ ৪৩ ॥
অম্মিন্ ক্ষণে তু সৌমিত্রে!
ন দর্শয়দি চৈদ্বিভূম্।
রামং সবিষয়ং বংশং
ভশ্মীকুর্য্যান্ন সংশ্বয়ঃ ॥ ৪৪ ॥
শ্রুত্বা তদ্বচনং ম্বোরমুষে তুর্ব্বাসসো ভূশম্।
স্করপং তদ্য বাক্যদ্য
চিন্তবিত্বা দ লক্ষ্যণঃ ॥ ৪৫ ॥
সর্ব্বনাশাদ্বরং মেহদ্য
নাশো হেক্স্য কারণাৎ।

নিশ্চিত্যবং ততো গছা
রামায় প্রাহ লক্ষ্মণঃ ॥ ৪৬ ॥
দৌমিত্রের্বচনং প্রুছা
রামঃ কালং ব্যসর্জ্জয়ৎ।
শীঘ্রং নির্গম্য রামোহপি
দদর্শাত্রেঃ স্কুতং মুনিম্॥ ৪৭ ॥
রামোহভিবাদ্য সংপ্রীতো
মুনিং পপ্রছ সাদর ।
কিং কার্যাং তে করোমীতি
মুনিমাহ রঘৃত্রমঃ ॥ ৪৮ ॥
তচ্ছুছা রামবচনং
হর্বাসা রামমন্ত্রীৎ।
আদ্য বর্ষ সহস্রাণামুপবাস সমাপন্ম॥ ৪৯ ॥

অনুত্রহ করিয়া বলুন, আমি করিভেছি; করিণ মহারাজ অপর কার্য্যে সাভিশর ব্যস্ত, অভএব মুহুর্ত্তকাল প্রভীক্ষা করন। তচ্ছুবণে মহর্ষি ক্রোধান্ধ হইরা অমিক্রানলনকে কহিলেন, "রে সেমিত্রে! এই দতে বলি তুই জ্ঞানীখন রামকে না দেখাস্, তাহা হইলে রামকে বিশেষতঃ রত্তংশ একবারে ভন্মাভূত করিয়া ফেলিব, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।" লক্ষাণ মহাত্তেজ্বাম্ মহর্ষি হ্র্কাসার এইরপ ভ্রাবহ বচন আমকর্ণন করিয়া, তাহার বাক্যের স্বরূপত্ব বিষয় ইতভ্তঃ চিতা করিতে লাগিলেন, গরে ছির করিলেন যে, এক মহর্ষি হ্র্কাসার কারণে সর্কোভেল হওয়া অপেক্রা, অন্যানারই মৃত্যু সর্কভোভাবে ক্রের্কর। এই প্রকার ক্রুনিক্রর হইয়া লক্ষণ মুনিকে হারদেশে রক্ষা ক্রিয়া অভি ক্রেপ্রে

জীরামচজের সমীপে উপনীত ছইরা সমুদার র্ভাত্ত নিবেদন করিলেন। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬।

রযুক্লতিলক রামচন্দ্র অহন্তের বাক্য প্রবণ করিয়া কালকে পরিভাগে পূর্মক ত্রিভ পদে বহিদ্দেশে আগমন করিয়া অতিপুত্র হর্মাসা মূনির সহিত সাক্ষাং করিলেন এবং যার পর নাই প্রীতাত্তঃকরণে তাঁছাকে পালাহাদি হারা অতিবাদন পূর্মক পরম সমালরের সহিত কহিলেন, হে মুনিপুলব ! আমাকে আদেশ করুল, আপনার কি কি কার্য্য সম্পাদন করিতে হইবে। হুর্মাসা জীরামের বাক্য তনিয়া কহিলেন, আমি এক সহল বংসর কাল উপবাদ করিয়া আছি, এক্সণে দেই উপবাস সমাপ্ত হইয়াছে, অতঞ্জর, হে রমুবর!

অতে ভোজনমিছামি

সিদ্ধং যতে রঘুতম ! ।

রামো মুনিবচঃ শ্রুড়া

সম্ভোষেণ সমন্বিতঃ দ ৫০ ॥

সসিদ্ধমন্ধং মুনম্বে

যথাবং সমুপাহরং ।

মুনির্ভুংজ্বান্ধময়তং

সপ্তান্ধং পুনরভ্যগাং ॥ ৫১ ॥

সমাঞ্জমং গতে তন্মিন্

রামঃ সম্মার ভাষিতম্ ।

কালেন শোক ছঃথার্ডো

বিমনাশ্চাতি বিহুলাঃ ॥ ৫২ ॥

অবাঙ্ মুথো দীনমনা

ন শশাকাভিভাষিতুম্ ।

মনসা লক্ষণং জ্ঞাত্ব।
হতপ্রায়ং রঘুদ্বহঃ॥ ৫৩॥
অয়াঙ্মুখো বস্থবাথ
তৃষ্ণীমেবাথিলেশ্বরঃ।
ততো রামং বিলোক্যাহ
সৌমিত্রিছুঃখসংপ্লুতম্ ॥ ৫৪॥
তৃষ্ণীং ভূতং চিন্তুন্নন্তং
গর্হন্তং স্নেহ বন্ধনম্।
মৎ কৃতে তাজ সন্তাপং
জহি মাং রঘু নন্দন!॥ ৫৫॥
প্রতিঃ কালস্য কলিতা
পূর্ব্বমেবেদৃশী প্রভো!।
অয়ি হীনপ্রতিজ্ঞে তৃ
নরকো মে জ্রবং ভ্রেৎ॥ ৫৬

ইদানীং দিন্ধার ভোজন করিতে ইচ্ছা করিতেছি; রামচন্দ্র মহর্ষির বাক্য শ্রুতিগোচর করিয়া বংশরোনান্তি পরিতৃষ্ট হইলেন এবং মহর্ষির নিমিক্ত বংশাপদুক্ত দিন্ধার সমাহরণ করিয়া তাঁছাকে ভোজন করাইলেন; ত্র্কাগাও অমৃততৃল্য অরাদি ভোজন করিয়া পরম পরিতৃষ্ট হইয়া প্রভাবর্ত্তন করিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১।

এক্ষণে মছর্ষি স্বান্ধর প্রতিনিব্রত হইলে কালের নিদারণ বাক্য রমুনাথের আতি পথে আগক্ষ হইল এবং তৎক্ষণাৎ তিনি পোক ও চঃথে নির্বিভাগর বিমনা ও বিহুবল হইলের। এক্ষণে আগনার স্বেহাপান অমুক্ষ লক্ষণ নির্বানিত হইতেছে মনে মনে এই ভাবির। কিং কর্তব্য বিষুচ্ হইলেন। আর কাহার মুখ হইতে বাক্য নিঃসরণ হর না—মন স্বর্ম নাই ক্ষতি দীনভাবাপর সুতরাৎ লক্ষণকে কালের রতান্ত কিছুই বলিতে সক্ষম হইলেন না। ৫২। ৫৩।

অনস্তদেব লক্ষণ এদাওপতি রামচন্দ্রকে নিকা বিদন ত্রীভাবাপর এবং নিরভিশর বিষয় সন্দর্শন করিরা কহিলেন, হে রমুনাথ! আমার উপর আপনার অকপট স্থেছ নিবলন আপনি মৎপ্রতি কোনস্ত্রপ অছিডাচরণ করিতে অক্ষম, এবং ঐ ক্ষেহ ছেডু আমাকে বিনাশ করিতে অশক্ত—কিন্তু ভাছা না করিলে আপনাকে প্রতিজ্ঞা ভর-রূপ পালে লিপ্ত হইতে হয়, মনমধ্যে এই সমুদার বিষয় আন্দোলন করিয়া আপনি মোনাবলম্বন করিয়াছেন। হে প্রত্যো আপনি আমার জন্য সন্তাপ পরিহার পূর্বেক আমাকে বিনাশ ক্ষম; কালের গতি পদ্ধিক্ষর অসাধ্য, ইয়া অম্বাজ্ঞারী—দেখুন আমার বিষয় চিন্তা ক্ষরিলে আপনি নৃত্যু প্রতিক্ষা ক্ষরিলে আমার

ময় প্রীতি র্যদি ভবেং
দ্যুক্ত্রাহ্মতা তব ।

দ্যুক্ত্যাহ্মতা তব ।

দ্যুক্ত্যাহ্মতা তব ।

মা মা ধর্মাং জ্যুজ প্রভা ! ॥ ৫৭ ॥

দোমিত্রিণোক্তং ভচ্ছু ভুগ
রামণ্চলিত মানসং।
আহুয় মন্ত্রিনঃ সর্কান্
বিশষ্ঠং চেদ মত্রবীং ॥ ৫৮ ॥

মুনে রাগমনং শত্রু
কালস্থাপি হি ভাষিতম্।
প্রতিজ্ঞা মাত্মনশ্চৈব

সর্কা মাবেদয়ৎপ্রভু: ॥ ৫৯ ॥
প্রুজ্বা রামস্থা বচনং

মন্ত্রিণঃ সপুরোহি হাঃ।
উচুঃ প্রাঞ্জলয়ঃ সর্কের
রাম মক্লিইচকারিণম্॥ ৬০॥
পূর্বেমেব হি নির্দ্দিইং
তব ভূভার হারিণঃ।
লক্ষ্মণেন বিয়োগন্তে
জ্ঞাতো বিজ্ঞান চক্ষুষা॥ ৬১।
ত্যজাশু লক্ষ্মণং রাম!
মা প্রতিজ্ঞাতে পরিত্যক্তে
ধর্ম্মো ভবতি নিম্ফলঃ॥ ৬২॥
ধর্ম্মেন ইংখিলে রাম!
তৈলোক্যং নশুতি ধ্রুবম্।
দং ভূ সর্বস্থা লোকস্থা
পালকোহদি র্ঘ্ ত্রম!॥ ৬০

বেন এবং আমাকেও নিশ্চর নিরব্রগামী ছইতে হইবে ; যদি আমার প্রতি আপনার প্রসন্ধতা এবং অমুগ্রহ থাকে, ভাছা গইলে, হে প্রভো! শোক ও মােহ পরিভাগা করিরা আমাকে বিমন্ত করুন—হে প্রভো! কদাপি ধর্ম পরিভাগা করিবেন না, কারণ তাহা ছইলে আপনার প্রভিজ্ঞা পালনই ক্রিরদিগার প্রধান ধর্ম, অভএব ধর্ম বর্জন করিবেন না—করিবেন না। ৫৪।৫৫। ৫৬।৫৭।

রযুক্লভিলক রামচন্দ্র শক্ষাণের এবস্তুত বাকা প্রবণ করিয়া বিচলিভ্যনা হইলেন, অনস্তর সমস্ত নত্রী ও বলিষ্ঠদেরকে সভাছলে আনর্থন করিয়া মহর্ষি ছুর্মানার আধানন র্ডান্ত কাল কর্ত উল্লি—এবং স্থান প্রতিজ্ঞা উচ্চাদিগের নিক্ট সম্বার বহিতারে প্রকাশ করিলেন। রাম্চন্দ্র প্রমুশাৎ এই নিদার্গ্য নাক্য প্রবণ করিবানার কুল- পুরোহিত বলিষ্ঠ ও বান্তবর্গ বছাঞ্জলি হইরা অক্রিইকারী বব্নাথকে কহিলেন, হে রাজন্! আপনি ভূভার অপনোদন-কারী, অতএব পূর্ব্ব ইইভেই আশনার সমুদারই নির্দিষ্ঠ হই রাছে, অর্থাৎ লক্ষণের সহিত আপনার বিরোগা সংঘটন আপনি বিজ্ঞান চক্ষু ঘারা অবগত আছেন, অতএব হে রামচক্র! আপনি লক্ষ্যণকে শীত্তই শরিত্যাগ ককন, হে প্রভো! আপনি প্রতিজ্ঞা লক্ষ্যন করিবেন না, কারণ প্রতিজ্ঞা লক্ষ্যন করিলে ধর্ম নিজ্ঞাকর, হে রযুত্তম! এই অধিল জাগান্ধো রাজার ধর্ম বিনাই ইইলে কার্ম, মর্ত্তাও পাতাল এই ত্তিলোক নিজ্যাই বিনাল প্রাপ্তা হইলে, অধিকত্ত শাপনি সমুদ্ধির লোকের ধর্ম-

মেবৈত্যক্ত্বা লক্ষ্মণকং
তৈলোক্যং ত্রাতু মর্হলি
মারো ধর্মার্থ সহিতং।
বাক্যং তেষা মনিন্দিভম্॥ ৬৪॥
সভামধ্যে সমাক্র্যত্য
প্রোহ সৌমিত্তি মঞ্জুদা।
যথেক্টং গছ্ছ সৌমিত্তে!
মাভূদ্ধর্মস্ত সক্ষ্ময়ং॥ ৬৫॥
পরিত্যাগো বধো বাপি
সতামেবোভয়ং সমম্।
এব মুক্তে রঘুভ্রেষ্ঠে
তুঃখ ব্যাকুলিতেক্ষণঃ॥ ৬৬॥

রামং প্রণম্য দৌমিত্রিঃ
শীস্ত্রং গৃহমগাৎ স্বক্ষ্।
তত্তোহগাৎসর্যূতীরমাচম্য স কৃতাঞ্জিলঃ ॥ ৬৭ ॥
নব্দারাণি সংযম্য
মূর্ধ্বি প্রাণ মধারয়ৎ।
যদক্ষরং পরং ব্রহ্ম
বাস্থদেবাথ্য মব্যয়ম্॥ ৬৮ ॥
পদং তৎ পরমং ধার্ম
চেতসা সোহভ্যচিস্তয়ৎ।
বাল্ল রোধেন সংযুক্তং
সর্বে দেবাঃ সহর্ষয়ঃ ॥ ৬৯ ॥
সাগ্রেয়া লক্ষ্মণং পুল্পৈস্তর্ষ্টুবুশ্চ স্মাকরন্।

রক্ষক, অভএব ধর্ম বিনষ্ট করিবেন না; হে মহারাজ! কেবল লক্ষ্যাকে পরিভাগে করিলেই ত্রিলোক রক্ষা করিতে সমর্থ হইবেম। রযুক্লচ্ডামণি রামচন্দ্র সভান্থ বশিষ্ঠ প্রভৃতির যথোপর্ক অনিলিত ধর্মার্থ সংযুক্ত বাক্ষা প্রবণ করিরা প্রমিত্রা-তমরকে ভংক্ষণাৎ করিবেন—হেনেমিত্রের! যথেষ্ট হইরাছে। এক্ষণে যেন ধর্মের ক্ষরপ্রপ্রেকা হর, ধর্মনিষ্ঠ সাধু ব্যক্তি-দিগের পক্ষে বিনাশ ও পরিহণের উভরই সম্ভূলা, অভএব ভোমার বাহা অভিক্রতি হয় ভাছাই কর। ৫৮। ৫৯। ৬০। । ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫।

রযুবের্চ রায়চন্ত্র অন্থলের প্রতি এইরূপ কহিলে, ছঃধা ব্যাক্ত্রিত লোচন ক্রিলানশন জীরামচন্তের পদস্যতে প্রতি-পাত পূর্বাক গুরিত পদে অকীয় গৃহ মধ্যে গমন করিলেন। অনন্তর সরযুর তীরদেশে উপস্থিত হইয়া বছাঞ্জলি হইরা সলিলতাহণ পুর্বেক আচমন করিলেন, ও নবদ্বার সমূহ অর্থাৎ চক্
কর্ণ, নাসিকা,মুখ, পারু, উপস্থ ও ব্রহ্মরন্ধ্র সংযম পূর্বেক শীর্ষ
দেশে প্রাণ ধারণ করিয়া 'অহং অব্যন্ধ বাস্থদেবাখ্য' পরম ব্রহ্ম
এই অক্ষরাব্যস্থন পূর্বেক চিত্তমধ্যে তাঁছার পরব পদক্ষল
চিত্তা করিছে লাগিলেন। মহর্ষি প্রভৃতি দেবভারা অনতদেবকে বারু ক্ষরক্ষ পূর্বেক ধ্যানে নিমন্ত্র সন্ধ্রনা নাতিশার সম্ভক্ষ হইলেক এবং কৃত্যমন্ত্রারা ভাঁছাকে আরুত করিলেন,
পারে বাস্থক ইয়ান্থকে বেক তাঁছাকে লক্ষ্য করিছেও পারেম
নাই; অক্ষর বেবরাঞ্জ ও দেববিরা বিশ্ব র চতুর্ভাগ লক্ষ্যণ-

অদৃশ্যং বিবুধৈঃ কৈশ্চিৎ
শরীরং স বাসবঃ ॥ ৭০ ॥
গৃহীত্বা লক্ষাণং শক্রঃ
স্বর্গলোক মথা গমৎ।
ততো বিষ্ণো শ্চত্তিগিং
তং দেবং স্থর সভ্যাঃ।
সর্বে দেবর্ধয়ো দৃষ্ট্যা
লক্ষ্যণং সমপুজয়ন্॥ ৭১ ॥

দেবকে স্বর্গধামে অবলোকন করির। পুজা করিলেন। লক্ষ্ণ-দেব স্থর্গে আগমন করিলে, সিদ্ধলোকস্থ বোগীরা ব্রহ্মার সহিত মিলিত হইরা যার পর নাই হর্ষেৎকুল হওত অনস্ত- লক্ষাণে হি দিবমাগতে হরে।

সিদ্ধলোকগতযোগিনস্তদা।

ব্রহ্মণা সহাসমাগমমুদ।

দ্রেষ্টুমাহিতমহাহি রূপকম্॥৭২॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে উত্তরকাণ্ডে অপ্রমোহধ্যায়ঃ।

দেবকে দেখিবার জান্য আগ্রমন ক্রিলেন। ৬৬। ৬৭।৬৮। । ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২।

> ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে উত্তরকাণ্ডে অফ্রমোহধ্যারঃ।

नवरमा ३ था अ

শীমহাদেব উবাচ।
লক্ষনং তু পরিত্যজ্য
রামো হুঃখ সমন্বিতঃ।
মন্ত্রিণো নৈগমাংশৈচব
বশিষ্ঠং চেদ মত্রবীং॥১॥
শভিষেক্যামি ভরত
মধিরাজ্যে মহামতিম্।
শাল্য চাহং গমিষ্যামি
লক্ষনস্থা পদাসুগঃ॥২॥
এব মুক্তে রঘুশ্রেষ্ঠে
পৌর জানপদা স্তদাশ

হঃধার্তাঃ পতিতা ভুবি॥৩॥
মুচ্ছি তো ভরতো রাপি
শ্রুত্বা রামাভি ভাষিত্রম্।
গর্হয়ামাস রাজ্যং স
প্রাহেদং রাম সমিধো ॥৪॥
সত্যেন চ শপেনাহং
ছোং বিনা দিবি বা ভুবি।
কাজ্যে রাজ্যং রঘুশ্রেষ্ঠ !
শপে ত্বৎ পাদয়োঃ প্রভো !॥৫॥
ইমো কুশীলবো রাজন্!
অভিষিপ্তস্ব রাঘব!।
কোশলেয়ু কুশং বীরমুত্তরেয়ু লবং তথা ॥৬॥

মহাদেব বলিলেন, রাজীবলোচন রামচন্দ্র অমুক্ত লক্ষাণকে পরিবর্জন করণামন্তর নাভিশর তঃথাকুল হইরা সচিব, মৈণায় ও কুলপুরোহিত বলিন্তদেবকৈ কহিলেন, অদ্য আমি মহানতি ভরতকে এই অযোধ্যা রাজ্যে অভিবেক পূর্বকি লক্ষাণের পদচিক্ষ লক্ষা করিরা তাঁহার সহিত নামিলিত হইব। রয়ুক্লোদ্ধ রাষ্চন্দ্র সর্বসমক্ষে এইরপ মনোগাত ভাব প্রকাশ করিলে পৌরভনেরা নিরভিশর জুঃথে বিহ্নল হইরা ছিরমূল ভেকর ন্যার ভূপুঠে নিপ্তিত হইতে লাগিল। রাহ্বের

এই নিদাকণ বাক্য ভরতের আহতিগোচর হইবা মাত্র ভরতও মৃক্তিত হইলেন, অতঃপর রাজ্যকে অশেব প্রকারে নিজা করিরা শ্রীরাম সরিধানে এই নিবেদন করিলেন হে রঘুজেন্ত! অর্থামেই হউক, অথবা এই ধরণীতলেই হউক, আমি আপনার অনুজ, সভ্য ও শপথ করিরা বলিভেছি বে, আপনি বিদ্যমাম না থাকিলে কখনই রাজ্যাভিলাব করিনা; হে প্রভো! আমি আপনার শ্রীচরণ স্পর্শ কহিতেছি, আমি কদাপি এই রাজ্যের প্রত্যাশা করি না। হে রাজনং! হে রঘুবংশাবভংস গচ্ছস্ত দূরাস্থরিতং
শক্রমানয়নায় হি ।
অস্মাকমেতদ্ গমনং
স্বর্কাসায় শৃণোতৃ সং॥৭॥
ভরতেনোদিতং শ্রুত্বা
পতিতস্তাঃ সমীক্ষ্য তম্।
প্রজাশ্চ ভয় সমিয়া
রাম বিশ্লেষ কাত্রাঃ॥৮॥
বশিষ্ঠো ভগবান রামমুবাচ সদয়ং বচঃ।

বীরচ্ডামণে! আমি আপনার চরণাববিন্দে এই প্রার্থনা করি যে, আপনি লব ও কুশকে এই রাজ্যে অভিবিক্ত করুন, অর্থাৎ মহাবীর কুশকে কোশল রাজ্ঞ সিংহাদনে প্রভিত্তিত করুন এবং অকুভোদাহদী লবকে উত্তর রাজ্য প্রদান করুন। গে রঘুবর! এক্ষণে শক্রম মথুরা নগরীতে অবস্থান করিতেছে, অত এব তাহাকে এসানে আনম্বন করিবার নিমিত্ত দ্ প্রেরণ করুন, কারণ আমরা যখন সকলেই প্রস্থানের নিমিত্ত লাগেল। করিতেটি, তথন সে আমাদিগের প্রস্থানের বিষর প্রবণ করুক। এদিকে প্রীরামচন্দ্রের বিচ্ছেদামলে দহ্যমান প্রেলাপ্র যার পর নাই কাতর হইরা ধূলাম বিলুণ্ডিত হইতে লাগিল; অপর দিকে ভরত প্রমুখাৎ অভি ভরত্বরী কথা তাহাদিগের প্রবণ বিবরে প্রবিষ্ঠ হইবা মাত্র, ভাছারা ভরতের প্রতি অমিমিষ নম্বনে নিরীক্ষণ করিবা অধিক্তর ভয় ব্যাকুল হইরা প্রভিত। ১ ব ব ব ব ব

অনন্তর ভগবান্ বলিচদেব প্রজাবর্গকে ধুদাবলুঠিত ছইতে অবলোকন করিয়া করুণারদার্ফ চিত্তে প্রজাবংসল পদ্য ভাতাদরাৎসর্কাঃ
পতিতা ভূতলে প্রজাঃ ॥ ৯ ॥
তাসাং ভাবানুগং রাম !
প্রসাদং কর্ত্ব্যুহিদি।
শ্রুদ্ধা বিশিষ্ঠ বচনং তাঃ
সমুখাপ্য পূজ্য চ ॥ ১০ ॥
সম্মেহো রঘুনাথন্তাঃ
কিং করোমীতি ! চাব্রবীৎ।
ততঃ প্রাঞ্জলয়ঃ প্রোচুঃ
প্রজা ভক্ত্যা রঘুবহম্ ॥ ১১ ॥
গল্ত মিচ্ছদি যত্র
দ্বমনুগচ্ছামহে বয়ম্।

রামচন্দ্রকে কহিলেন—হে তাত! আপনার প্রকামগুলী ধরণীতলে নিপতিত হইরা রহিরাছে, একবার অবলোকন ককন; হে রাজীবলোচন রামচন্দ্র! একনে আপনার পক্ষে এই কর্ত্তব্য ছইতেছে বে, আপনি ভাছাদিগের মনোগত অভিপার অবগত হইরা ভাহাদিগের উপর কপা বিভরণ করেন। প্রজামগুলী কুলগুরু বলিষ্ঠদেবের এই শুভমন্নী কথা প্রবণ করিরা মহানন্দে গাজোখান পূর্কক জীরামচন্দ্রের পাদপান পূকা করিলে, জীরামচন্দ্র ভাহাদিগকে কহিলেন—বংস প্রজাগণ! তোমরা নিভাত্ত হুংথ বিহ্বল ছইরাছ, অভএব আমি ভোমাদিগের কি কার্য্য করিব প্রকাশ করিরা বল। অনস্তর ভাহারা কৃতাঞ্জলি হইরা অতি বিনয়-মত্র ও দীনবচনে কহিল, হে র্যুমক্ষম! আপনি বেথানে গমন করিতে বাসনা করিরাছেন, আমরাও তথার

অন্মাকমেয়া প্রমা শ্রীতির্ধ**র্ম্মো** য্**মক্ষ**য়ঃ॥ ১২। তবাসুগমনে রাম! হালতা নো দৃঢ়া মকিং। পুত্রদারাদিভিঃ সার্দ্ধ-মনুযামোহদ্য সর্বথা ॥ ১৩ : তপো্বনং বা স্বৰ্গং বা शूतः ना तसू नन्दर!। জ্ঞাত্বা তেষাং মনো দার্চ্যৎ কালস্য বচনং যথা ॥ ১৪ ॥ ভক্তং পোরীজনং চৈব বাঢ় মিত্যাহ রাঘবঃ।

কুত্রিব নিশ্চয়ং রাম-ন্তি স্থামেবাহনি প্রভুঃ॥ ১৫॥ প্রস্থাসাস চ তৌ রামভক্রঃ কুশীলবৌ। অষ্টো রথ সহস্রাণি সহস্রকৈব দস্তিতাম্ ॥ ১৬ ॥ ষ্টিং চাম্ম সহস্রাণা-(मरेककरेम्रा मरनो वलः। বহুরত্নৌ বহুধনৌ হুট পুষ্ট জনারতো ॥ ১৭॥ অভিবাদ্য গতে বামং ক্লছেণ তু কুশী লবৌ। শত্রখানয়নে দূতান্

यात शत माहे श्रिट्राय ध्वर व्यक्त श्रिशी कि म व्हेटवं। रह রহুকুলভিলক রামচ<u>ন্দ্র !</u> আপেনার পশ্চাৎ গমন কবিবার নিমিত্ত আমাদিগোর হৃদর মধ্যে একান্ত অভিদাষ জন্মিগছে ৷ অভএব আমরা জ্রী, পুত্র ও অপরাপর বন্ধ্বান্ধর সমভিব্যাহারে অদাই আপনার অনুগমন করিব; হে ব্যুনাথ! আপনি মছবিদিগের দিবা জাশ্রম পদেই যাম, কিন্তা স্থানি-त्राह्न हे ककम — अथवा शूत्रमार्था है अवश्वाम करून, रगशानिहै यान, आवडा जाभनात अन्हान्सामी इहेर, हेराटण विहू माज मत्मर नारे। २ । १० । ११ । १२ । १७ ।

नवनृद्धाननभामि बायहस्य ध्यकामधनीत अवस्थकात गरमा-গত অভিপ্রায় অবগভছইয়া কালের বাক্য স্মৃতিমার্গে আন্দো-लन शूर्लक, भव्रमञ्च शूर्वजनराजी अन्नांभक्षक करिलन-

আপনার অনুগামন করিতে ইচ্ছা করিতেছি, ইছাতে আমাদের হে মন্তক্ত প্রস্তাগণ! তোমাদিগের আন্তরিক বাসনঃ স্বিদ্ধ করিব। মছাপ্রভূ রামচক্র ভাছাদিগকে এইরপ ক্তনিশ্চর করিয়া **যেখানে কুশীলব অবন্থিতি** করিতে ছিলেন সেই স্থানে প্রস্থান ক্রিলেন। অনস্তর আটি সহস রথ, এক সহত্র ছন্তী, ছর সহত্র আখ এবং বহু সেনা ভাষাদিশের প্রভাককে প্রদান ক্রিলেন; এতদাভীত বছবিধ রত্ব ও প্রচুর ধন তাহ্যদিগের প্রত্যেককে প্রদান করিলেন 🦂 অনন্তর কুশীল্ব ভাগান বাসচন্তের বিয়োগ জনিত इः ए नाडियात कांडत रहेता डाँहात हत्र कमरन छिल मञ्कारत श्राणिशंक कतिया श्राचन कविरानन । >8 1 > @ 1 1261591

> অন্তর বহুনক্র রামচক্র শক্রমকে অযোধ্যামধ্যে আনয়ন করিবার নিমিত্ত অভি জত গমনশীল দুভগণকে প্রেরণ

প্রেষয়ানাস রাঘবঃ।
তে দূতাস্ত্ররিতং গত্তা
শক্রন্ম ন্যবেদয়ন্ ॥ ১৮॥
কালস্যাগমনং পশ্চাদক্রিপুজ্রস্য চেস্থিতম্।
লক্ষণসা চ নির্ধাবং
প্রাভিষেচনং চৈর
সর্বং রামচিকীর্যিতম্।
ক্রাভন্তবচনং
শক্রন্থ কুলনাশনম্॥ ২০॥

ব্যথিতোহপি ধৃতিং লবা পুত্রাবাহুয় সম্বরঃ। অভিষিচ্য স্থবাহুং বৈ মথুরায়াং মহাবলঃ॥ ২১॥ যূপকেতুং চ বিদিশা-নগরে শত্রুস্থনঃ। অযোধ্যাং ম্বরিতং প্রাগাৎ স্বরং রাম দিদৃক্ষয়া॥ ২২॥ দদর্শ চ মহাম্যানং তেজসা জ্বন প্রভম্।

হরিলেন, ভাহারাও রামাজা প্রাপ্ত হইরা যৎপরোনান্তি ক্রত বেগে গনন করিয়া শক্রম সরিধানে উপনীত হইল, এবং অন্যোধ্যামধ্যে যে সমস্ত ঘটনা হইরাছিল তাহারা একে একে নমুদার তাঁহার সমীপে কহিতে লাগিল যে, হে ভাত! প্রথমতঃ কাল মহরি বেশ প্ররিপ্রেহ করিয়া রঘুনাথের নহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্য আগমন করেন, তিনি গোমচন্দ্রের সহিত নিভ্ত স্থানে কথোপকথন করিতেছেন ইতিমধ্যে অতিপুত্র মুর্কাসা লক্ষণ রক্ষিত ঘারদেশে উপনীত হইরা মহারাজ রামচন্দ্রের সহিত সাক্ষাৎ করিবার বাসনা প্রকাশ করিলে লক্ষ্মণদেব রাজ্যাদেশ অকুসারে তাঁহাকে নির্ভ করাতে ক্ষোধকশায়-লোচন মুর্কাসা তাঁহার কথায় কর্পাত করিলেন না স্ক্ররাৎ কাল ও রাম্যান্দের নিষেধ প্রীরামচন্দ্রকে আদ্যোপান্ত র্তান্ত বর্ণন করিলেন, স্তরাং প্রীরামের প্রতিজ্ঞা অমুযারী লক্ষাণদেব বিবর্জিত হইরুণ্টেন। ছে দেব! অনন্তর রঘুনাথ শ্বরং ইহলোক পরিত্যাগ করি-বার বাসনা প্রকাশ করিয়া কুশীলবকে রাজ্যাতিষিক্ত করিরাছেন। মহাবল পরাক্রান্ত শক্তম দৃত্যুথে রঘুবংশের অবসান হইতেছে অফতিগোচর , কল্পিয়া যার পর নাই ব্যথিত হইলেন বটে, কিন্ত ছলরমধ্যে সহিষ্ণুতা অবলম্বন পূর্বক অনতিবিশম্বে কুমারম্বরকে আহ্বান করিয়া পাঠা-ইলেন: পরে স্বাচ নামে জ্যেষ্ঠ পুত্তকে মধুরা রাজ্যে অভি-বিক্তা করিলেন, অনন্তর কনিষ্ঠ তন্ত্র মুপ্তেত্কে বিদিশার রাজসিংহাসনে অধিনিত্ত করিয়া শক্তমিস্থান শক্তম স্থাবংশ-কেতু প্রীরাম্বন্তকে সন্তর্গন করিবার মানসে মধুরনাগরী হইতে বহির্গত হইরা অভিনত্তর অযোধ্যা রাজ্যে আলিয়া উপনীত হইলেম ১৯৮০ ১৯ ২০ ২২ ২২

মহাত্মা রামচন্দ্র দিবা রাজবেশ পরিছার পুর্রাক চীরাহর

তুকুলযুগ সন্থীতং

থাষিভিশ্চাক্ষয়ৈ র তুম্॥ ২৩॥
অভিবাদ্য রমানাথং
শক্রন্মো রম্পুঙ্গবম্।
প্রাঞ্জলির্ধর্ম সহিতং
বাক্যং প্রাহ মহামতিং॥ ২৪॥
অভিষিচ্য স্থতো তত্র
রাজ্যে রাজীবলোচনং!।
তবামুগমনে রাজন্
বিদ্ধি মাং কৃতনিশ্চয়মূ॥ ২৫॥
ত্যক্তবং নার্হসি মাং বীর

ভক্তং তব বিশেষতঃ।
শক্রম্য দৃঢ়া বৃদ্ধিং
বিজ্ঞায় রবু নন্দনঃ॥ ২৬॥
সজ্জী ভবতু মধ্যাক্তে
ভবা নিত্য ত্রবীষচঃ।
অথ ক্ষণাৎ সমুৎপেতৃব্বানরাঃ কামরূপিণঃ॥ ২৭॥
ঝকাশ্চ রাক্ষ্মাশ্চৈব
গোপুচছাশ্চ সহস্রশঃ।
খ্যীণাং দেবতানাঞ্চ

পরিধান করতঃ স্বকীর তেজ সম্ভূত উজ্জান প্রভা সম্মানত হইর। অতি দীর্ঘনীবী বশিষ্ঠাদি মহর্ষিগণ পরিবৃত ছইর। অবস্থান করিতেছেন ইত্যুবদরে শক্রম্ম উপনীত ছইরা তাঁছাকে দর্শন করিলেন।

মহামতি, সুমিত্রান্তনর শক্রম, রমুক্লতিলক সীতাপতি রামচন্দ্রের চরণ কমলে সাফালে প্রণিপাত করিলেন, অনস্তর কৃতাঞ্জলিপুট হইরা ধর্ম সম্বালফ বাকো কহিতে লাগিলেন, হে রাজীব লোচন! অনি স্বকীর কুমার্থরকে মধুরা ও বিদিশ নগরে অভিবিক্ত করিরা আদিরাছি, এক্সণে—হে রাজন! আমি আপনার পশ্চালামী ছইবার মানসে আপনার নিকটে আগমল করিয়াছি ইহা আমি গ্লোমধ্যে হিরীকৃত হইয়াছি জানিবেন ।২০।২৪।২৫। হে বীরবর! আমি আপনার অনুজ্ঞ, বিশেষতঃ আপনার পরম ভক্ত, অনা ভাবে গ্রহণ করিয়া আপনি আমাকে পরিতাগ পূর্বক গমন করিতে কখনই সমর্থ নহেন। অতএব আমি বিনয় মন্ত বচনে বলিতেছি দয়া পরতন্ত্র হইয়া আমাকে সমভিব্যাহার করিয়া লউন রয়ুনন্দন অনুজ্ঞ শক্রয়ের যারপর নাই দৃঢ়া বৃদ্ধি অবগত হইয়া ভাঁহাকে কহিলেন—হে শক্রয়! যদি তৃমি আমার সহিত গমন করিতে অভিসায করিয়া থাক ভাহা হইলে এই মধ্যাক্ত সমরে সজ্জীভূত হও, জনভর তামরপরারী হরিপুল্বগণ ঋক্ষ সমস্ত রক্ষ বংশ সভ্ত যাযভীয় রাক্ষসগণ এবং গোপুছ্ছ সম্পায় এখনই এয়ান ছইছে উলগমন কক্ষ। বিজ্ঞন বিপিন নিবাসী মহর্ষিদিগের দেবতাদিগের এবং জ্ঞীরামচন্দ্রের ভনরেরা রয়ুবংশধর সীতাপতির বহির্গমন বিষয়ে বানর ও

শ্রুহা প্রোচ্ রযুশ্রেষ্ঠং
সর্বের বানর রাক্ষসাঃ।
তথাসুগমনে বিন্ধি
নিশ্চিতার্থং শুনঃ প্রভাে!॥ ২৯
এতস্মিমস্তরে রামং
ফ্রীবোহপি বনঃ
যথা বদভি বাদ্যাহ
রাঘবং ভক্তবংসলং।
শ্রুভিবিচ্যাঙ্গদং রাজ্যে
আপতাে হস্মি মহাতেজ।
তথাসুগমনা বিন্ধি মাং
রাম কুতনিশ্চয়ম্॥ ৩০॥

প্রান্ত বিষ্ণাং দূচং বাকাং

থাক বানর রক্ষদাম।

বিভীষণ মুবাচেদং

বচনং মৃত্ত সাদরম্ ॥ ৩১ ॥

ধরিষ্যতি ধরা যাবং

প্রজান্ত প্রাথাবং

প্রজান্ত প্রাথাবং

বচনাদ্রাক্ষণং রাজ্যং

শাসিতোহসি মমো পরি ॥ ৩২ ॥

ন কিঞ্ছিত্তরং বাকাং

গ্রমা মং প্রিয়কারণা।

এবং বিভীষণং ত্যক্ত্ব।

হন্মন্ত মথা ব্রবীং ॥ ৩৩ ॥

বচনা মাকতে ত্বং চিরং
জীবমমাজ্ঞাং মামুষ কুথাং।

বাক্ষদের। রমানাথের বচন কর্ণপাত করিয়া নিরভিশয় ভক্তি

এবং বিনয় প্রদর্শন পূর্মক তাঁছাকে কহিল, হে প্রভা!

আপনি ইছলোক পরিভাগে করিয়া বৈকৃষ্ঠ প্রতিগমন করিবেন
বটে, কিন্তু আমরাও আপানার সন্থিত গমন করিব এ বিবয়ে
আপনি কুতনিশ্চর হইয়া থাকিবেন । ২৬ । ২৭.। ২৮ । ২৯ ।

কিরৎক্ষণ পরে মহাবলপারাক্রম ক্পিরাক স্থানীব
ভক্তামুরাগা রাজীবলোচন রখুনাবকে ম্থানিধি অমুসারে
অভিবাদন পূর্মক করপুটে কহিল, হে প্রীরাম! আপানার
ভাচরণে আমার এই নিবেদন যে আমি অতুল বিক্রমশালী
ঘুবরাল অলদকে কিছিল্লাণ রাজ্যে অভিবিক্ত করিব। অলভ্রম
আপনি যথার গমন করিবেন আম্মিও আপনার সক্রিক
আপনি যথার গমন করিবেন আম্মিও আপনার সক্রিক
ব্যাহাতে প্রস্থান করিব, আনি জনম মধ্যে এইটা বিক্রম
করিয়াছি জ্যানিবেন। শাশর্মির অল ব্যক্তর ও বাক্ষসনিব্যার
প্রতিজ্ঞান্তন আন্তর্গন করিব। সাশর্মীর অল ব্যক্তর ও বাক্ষসনিব্যার

পরোনাতি আদর সহকারে এবং অতি মৃত্ মুধ্র বাকে কিছিতে লাগিলেন, হে ধর্মপরারণ বিজ্ঞীবণ! যতদিন অবধি এই বলুদ্ধরা অবস্থারিনী থাকিবে তাবৎ কাল তুমি আমার বচনাকুবারী হইরা প্রজ্ঞামগুলীর সভােষ উৎপাদন ও রক্ষঃ সম্বন্ধীর রাজ্য প্রতিপালন কর—বিদ্ ভূমি ইছাতে আমাকে অনা কোন রূপ বাক্য বল, তাহাহইলে ভূমি আমার বিনাশ ক্ষিত পাত্তক কল্যিত হইবে; অভ্তাহ ওলাে হে বাবনাস্তাং আমার উদ্ধানাকের তিল মাত্র প্রভিবন্ধক প্রদান করিও না

প্ৰন কুমার হতুমানকে বলিলেন, ছে মাক্তে তুমি চিন্তীবী

জামবন্ত মথ প্রাহ

তিষ্ঠহং দ্বাপরান্তরে ॥ ৩৪ ॥

ময়া সার্জং ভবেদ্যুক্ষং

যং কিঞ্চিৎ কারণান্তরে

তত স্তানুষ্বিং প্রাহ

মে ঋকবানরাক্ষসান্ ॥ ৩৫ ॥

সর্বানেব ময়াসার্জং
প্রযাতেতি দয়াম্বিতঃ ।

ততঃ প্রভাতে রম্বংশনাবো

বিশালবক্ষা: শিতকঞ্জলোচনঃ ॥ ৬৬ ॥

পুরোবসং প্রাহ বশিষ্ঠমার্ড্যং

বিল্মিহোত্তাপি পুরো শুরোমে ।

ততে। বশিষ্ঠোইপি চ কারদর্বং
প্রান্থানিকং কর্মমহদ্বিধানাৎ॥ ৩৭॥
ক্ষোমান্তরো দর্ভপবিত্রপাণির্মাহাপ্রয়াণায় সৃহীত বৃদ্ধিঃ।
নিক্ষমা রামো নগরাৎ সিতল্রোচ্ছশীবয়াতঃ শশিকোটিকান্তিঃ॥
রামস্থ সব্যে শিতপদ্মহস্তা
পদ্মাগতা পদ্মবিশাললোচনা।
পাশ্বেহিথ দক্ষেক্ষণ কঞ্জহন্তা
শ্যামায্যো জীরপি দীপ্যমানা॥ ৩৮

হটয়া এই ধরণীতলে অবস্থান কর—হে প্রন্নন্দন । আমার
আজা কথনই মিথা। হইবার নহে লানিবে। অভঃপর রয়ুনন্দন
রামচন্দ্র জাষবানকে সম্বোধন কবিরা কহিলেন,ছে জাষবান !
ক্রেডা বৃগ অভিক্রান্ত হইলে দাপর বৃগ আপিরে, ভূলি দীর্ঘজীবী হইরা নেই দাপর বৃগ পর্যান্ত এই পৃথিবী তলে অবস্থিতি
কর ; হে লাম্বরান ! কোন কারল প্রায়ন্ত আমার নহিত
ভোমার ত্মুল নংপ্রায় হইবে,ভালারলর ভূমি অর্পে গলন করিবে,
ইহাতে রভনিভার শান্দিবে। পরিবেশ্ব অব্দুল ভিলক
ভগবান নারারণ অপরাপর ক্ষান্দিকন ভালনা ও নালবগণের উপর
কপা কটাক্ষপাত করিরা ব্যাহ্রান কহিতে পার্ব

অন্তর বজনী প্রজ্ঞাতা হইলে প্রস্কুল্নলাম বিলাক্ত্রক পল্প প্রাদ লোচন মুদ্ধংশপতি সাম্কী বলত কাবচন্দ্র বস্থা- আনার প্রস্থানের সময় উপস্থিত হইরাছে, অতপ্রব আপানি অথ্য আয়াহোত্রাদি কার্য্য সম্হের আয়োজন করুন, তিনিও রয়ুনাথের বাক্য প্রবণ করিয়া তাঁহার মহাপ্রহানোপযুক্ত যাবতীর কর্ম রীভিমত বিধানামুসারে সমাধা করিলেন অর্থাৎ সুবৃদ্ধি সম্পান কৃষণ্ডক বশিষ্ঠানের রামচন্দ্রের মহা প্রয়াণের নিমিত্ত হকুল পরিধান ও দর্ভবিনিশ্বিত পরিত্র বন্ধ সমুদার আরোজন করিলেন। হার ; কোলী শলি কান্তি পরম ব্রুক্ষ পরমায়া রামচন্দ্র মহা প্রস্থানের নিমিত্ত বিবিধ মল্লাচরন করিয়া আনোধান নগরী হইতে নিজান্ত হইলেন। জনক ছহিতা নীতা কোলানাক্ষত প্রত্ত করিয়া কর্ম হইতে সমাগ্যমন পুরুক্ত বিশাল কর্মা লক্ষ্ম আহণ করিয়া করি হইতে সমাগ্যমন পুরুক্ত বিশাল কর্মা লক্ষ্মী নারামণ একত হইয়া প্রথম করিতে গাগিলেন। নস্মাত্রণর প্রায়ক্ষ্ম আব্রুক্ত প্রিক্তির ব্যুক্ত বিশ্বন শস্তানিশাস্তানি ধকুশ্চবাণা
জগ্মপুরস্তাদ্ধ্র বিগ্রাহাস্তে।
দেবাশ্চ সর্বে ধ্বত বিগ্রাহান্ত
যযুশ্চ সন্বেমুনরশ্চ দিব্যাঃ।। ৩৯॥
মাতাপ্রুলনাং প্রণবেণ সার্দ্ধং
যযৌহরিং ব্যাক্তভিঃ সমেতা।
গচ্ছস্তমেবাকুগতা জনাস্তে
সপুঞ্জদারাঃ সহ ব্দ্ধুবর্গিঃ।
অনার্ভদারমিবাগবর্গং
রামং ব্রজস্থং যযুরাপ্রকামাঃ॥ ৪২॥
সাত্তঃপুরং সাকুচরঃ সভায্যঃ
শক্রদ্বুক্তো ভরতোহকুযায়াৎ।

গচ্ছ নুমালোক্য রমাসমেতং

ক্রীরাঘবং পৌরজনাঃ সমস্তাঃ ॥ ৪৩॥
সবালর্দ্ধান্ট যমুদ্ধিজাগ্র্যাঃ
সামান্ত্রবর্গান্ট সমস্তিনো যমুঃ।
সর্বের গতাঃ ক্ষত্রমুখাঃ প্রস্থাটী
বৈশ্যান্ট শূদ্রান্ট তথাপরে চ॥ ৪৪॥
স্থাীবমুখ্যা হরিপুক্ষবান্ট
স্নাতা বিশুদ্ধাঃ শুভশক্যুক্তাঃ।
ন কন্টিদামীক্তবহুঃখ্যুক্তো
দীনোহথ বা বাছ্মুখেরু সক্তঃ॥ ৪৫॥
আনন্দর্রপান্ত্রগতা বিরক্তা
যযুন্ট রামং পশু ভূত্যবর্ধিঃ।

সমভিব্যাহারে গমন ক্রিভে লাগিলেন; লাজ, শজ, ধমু,
ও বামনিকর ভীষণ আকার পরিপ্রেছ পূর্বাক অগদীখন রাম—
চক্রের অপ্রে অপ্রে গমন করিতে লাগিল। স্থানীর দেবভারা
বিপ্রেছ মুর্ভি ধারণ করিলা তাঁহার প্রকারতী হুই লেন, সনকাদি
মহর্ষি প্রেভৃতি ও ভাঁহার অমুগমন করিতে লাগিলেন; এবং
বেদমাভা সাধনী গারতী এবং প্রণান করিতে লাগিলেন; এবং
বেদমাভা সাধনী গারতী এবং প্রণান ব্যাহাভি সমভিব্যাহারে
করিলা প্রিংকর স্বিধানের গমন করিলেন। লোকে বেমন
আর্গসমূক ঘারদেশে অবলীলাকেলে গমন করিলাথাকে সেইরপ
অবোধাবালী বাবতীর প্রজা মণ্ডলী আপ্রাণন পূত্র, পরিবার
ও বন্ধুবার্ব সমভিব্যাহারে লইলা অকীর বাসনা নিন্ধি করিন
বার জন্য গমনশীল প্রমান্ধা লাশনখির প্রকাৎ প্রন্তাহ গমন
করিতে লাগিল। প্রাণান্ত স্বভাব কৈকেরী প্রত্র অমুচর বর্গকে

স্বামুগামী করিয়া স্বকীয় ভার্যা ও শক্রেয়কে সমভিব্যাহাবে লটয়া জ্যোষ্ঠের অমুগমন করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩৯। १०। । ৪১। ৪২। ৪৩।

ইতাবসুরে পুরক্তন বাসীরা প্রাংপর রামচক্রকে লক্ষ্মী সমভিব্যাহারে মহাপ্রকাণ করিতে অবলোকন করিরা,কি বালক, কি র্মা সমন্ত বাল্ধনো আমুব্দিক লোকদিয়ের সহিত তাঁহার অনুসমন করিলেন; অমাতাবর্গেরা ও পরিশেষে বৈশ্য এবং শ্রে সমন্ত সাক্ষাদান্তঃকরণে রঘুনাথের পশ্চাক্ষামী হইল। বানর পুশ্বেরা শরীরাহ্মগাছন পুরুক স্মান করিরা এবং সর্ক-ভোভাবে বিশুকাত্মা হইরা কশিল্পান স্থাীবের অপ্রবর্তি হইরা মহান্দদে মন্তন ভূচক শক্ষরিছে করিতে গ্রমন করিতে লগিল। ওক্ষণে কেছই সংলার নিবন্ধন তুঃও প্রশীতিত ছিলনা অথবা দীন ভাষাশের বা সাংসারিক কর্ম স্থুণ সন্তোগ্য অভিলাধী ছিল না। স্তর্গং প্রে সমুদার লোক এবং নগরীত্ব বাবতীর কিছর- ভূতাম্বদৃশ্যানি চ যানি তত্র
যে প্রাণিনঃ স্থাবরজঙ্গনাশ্চ ॥ ৪৬
সাক্ষাৎ পরাস্থানমনন্তশক্তিং
জগ্ম বিবিরক্তাঃ পরমেকনীশম্।
নাদীদযোধ্যানগরে ভূ জন্তঃ
কশ্চিত্তদা রামমনা ন যাতঃ ॥ ৩৭
শূন্যং বভূবাথিলমেব তত্র
পুরং গতে রাজনি রামচন্দ্রে।
ততোহতিদুরং নগরাৎস গদ্ব।
দৃষ্ট্রা নদীং তাং হরিনেত্রজাতাম্ ॥ ৪৮।

ননন্দ রামস্মৃতপাবনোহতে।
দদর্শ চাশেষমিদং ক্লদিশ্বম্।
অথাগতন্তর পিতামহো মহান্।
দেবাশ্চ সর্বের ঋষয়শ্চ সিদ্ধাঃ ॥ ৪৯
বিমানকোটীভিরপারপারং
সমারতং থং স্থরসেবিতাভিঃ।
রবিপ্রকাশাভিরভিক্ষুরৎস্বং
জ্যোতির্দ্ময়ং তত্র নভো বস্তুব ॥ ৫০ ॥
স্বয়ং প্রকাশৈর্মহতাং মহন্তিঃ
সমারতং পুণ্যক্তাং বরিষ্ঠৈঃ।
বর্শ্চ বাতাশ্চ স্থগন্ধবন্তা।
বর্ষ রৃষ্ঠিঃ কুসুমাবলীনাম্ ॥ ৫১ ॥

গণ ভব সুখে বিরক্ত হইরা অপার আনন্দ সাগরে সম্ভরণ দিতে দিতে সাক্ষাৎ বৈকুঠনাথ রাখবের অনুগমন করিল, অপারাপর শাবতীয় জীব এবং ছাবর জন্দমাল্লক প্রাণিনিকর সাহলাদ চিত্তে এবং অলক্ষিতভাবে রঘুনাথের অনুগামী হইতে লালিল। । ৪৪। ৪৫। ৪৬।

সংসার সন্তোগ বিরহিত ব্যক্তিরা সাক্ষাৎ প্রমেশ্ব সনাতন অনন্তশক্তি পরমান্তা ত্রিভূবনেশ্বর রামচন্দ্রের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে লাগিল; তাঁহার এই মহাপ্রয়াণের সময় অবোধ্যা নাগরীতে এমন কোন জীব ছিলনা,যাখারা রামরূপ ধানে নিমগ্ন হয় নাই অর্থাৎ যাবতীয় জীব রাম নাম মন্ত্রে দীকিত হইয়া তাঁহার অম্বর্তী হইয়াছিল।মহারাজ দাশরধির মহাপ্রেছান গত হইলে অধিল ব্রহ্মান্ত এককালে শ্বামর অর্থাৎ যাবতীয় জীব রাম নাম মন্ত্রে দীক্ষিত হইয়া তাঁহার অনুবর্তী হইয়াছিল; অনস্তর ভগবান্ রামচক্ত্র পরম লোভাবিত অ্যোধ্যানগরী ছইতে অধিকদ্র গমন করিয়া পরিশেষে ক্রিহির নয়নোৎশন্ত্রা সরগ্নদীর তীরদেশে উপনীত হইলেম। লক্ষ্মীপতি রাঘ্য তথায় উপদ্বিত হুইয়া স্বনীয় বিরাট

দেহ স্থৃতিপথে আনয়ন পূর্বাক তদানক্ষ বর্জন করিতে লাগিন লেন অতঃপর আপনার হৃদয় মধ্যে এই অপরিসীমা জগং অবস্থিতি আছে, এইরপ সক্ষর্পন করিলেন। ইতিমধ্যে তাঁহার মহাপিতামহ, ইস্রাদি দেবতা সকল এবং সনকাদি মহর্ষি প্রভৃতি রামচন্দ্রের সরয়ুর তীরে আগমন সংবাদ শ্রবণ করণান্তর সকলই তাঁহার সমীপে সমাগমন করিলেন। এক্ষণে অপরিসীম গাণ্যকল দেবতাদিগের কোটি কোটি বিমানে সমাজ্য হইল অর্থাৎ স্থায়র দেবতা প্রভৃতি লোক সমূহ দিবা দেববানে আল্লেছন করিলা স্বিত্ত ত গণ্যমণ্ডলে আসিয়্য উপনীত হইলেনা ইহাতে বোধ হইতে লাগিল যেন, স্থায়ের উদয়ে মক্ষতাবলী প্রচ্ব ল্যোতিশ্বর হইয়া আকাশ পথে অব-ছিতি করিতেছে; যে সমন্ত্রাক্তি এই জগল্পথে অতি পবিত্র কার্যা সমূহ সমাধা করিয়াছেন, ভাঁহারই স্বর্গে অপরাপেক্যা আধিপতা প্রাপ্ত হইরাছেন এবং গ্রাণমার্গ করত এখন উপস্থিতে দেবমুদঙ্গনাদে
গায়ংস্থ বিদ্যাধর কিম্নরেষ্।
রামস্ত পদ্যাং সরযুজলং সকুং।
স্পৃষ্ট্বা পরিক্রামদনন্তশক্তিঃ॥ ৫২
ব্রহ্মা তদা প্রাহ
কুতাঞ্জলিস্তং
রামং পরাত্মন্!
পরমেশ্রস্তম্।
বিক্রঃ সদানন্দময়োহসি পূর্ণো
জানাসি তত্ত্বং নিজবৈশ্যেকম্॥ ৫৩॥

তথাপি দাসস্থ মমাথিলেশ ! কুতং বচো ভক্তপরোহসি বিদ্ধন্ ! দ্বং জাতৃভিবৈষ্ণবমেকমাদ্যং প্রবিশ্য দেহং পরিপাহি দেবান্ ॥ ৫৪ যদ্ব। পরো বা যদি রোচতে তং প্রবিশ্য দেহং পরিপাহি নন্তম্। দ্বমেব দেবাধিপতিশ্চ-বিষ্ণুর্জানন্তি ন দ্বাং পুরুষা বিনা মাম্॥ ৫৫॥

রামচন্দ্রকে অবলোকন্ করিতেছেন; আবে সমীরণ পতিত— পাবন রামচন্দ্রের উপর স্থান্ধ কুসুম বর্ষণ করিতে লাগিলেন। । ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১।

দেবভাদিগের মৃদ্ধ নিনাবে চারিদিক প্রতিধ্বনিত হইল এবং বিদ্যাধর ও কিরব কামিনাগণ স্থরতানগরে সংগীত আরস্ত করিল। বাঁছার শক্তির সীথা নাই, সেই অপরিসীম শক্তি রাজীবণোচন রামচন্দ্র সরযুর পবিত্র স্নিল স্পর্শ করিয়া প্রদক্ষিণ করিলেন; ইতাবসরে পিতামছ ব্রহা কতাঞ্জলিপুটে শতারমান গইয়া তাঁছাকে কছিলেন, হে পরমাত্মন্! আপনি পরমেশ্বর—জগৎ স্কিন্থিতি ও বিদর কর্তা, আপনি নম্যু —আপনি স্থানন্দ্রময়—আগনি প্রক্র—আপনিই এক-মাএ ঈশ্বর, আমি আগনার কোন ভদ্ধই জানি না। আপনিই আপনার ব্রহ্মরূপ অবগত আছেন। হে দেব-দেব জগদীবর!

আমি জানি, ত্রহ্মরপের শরীর পরিপ্রহণ কখনই হইতে পারে না, কিন্ত ভক্তদিগোর উপর আপনার বিশেষ অম্প্রহ আছে বলিয়া, আপনি মানা ঘারা সমুদার স্কন করিয়াছেন, অভএব হে বিহন ! এক্ষণে চারি ভ্রাতার সহিত মিলিভ হইরা অগ্রে বৈক্ষব দেহে প্রবেশ করিয়া দ্বেভাদিগকে পরিত্রাণ করন। ৫২।৫২।৫২।

হে ভবভারসংহারিন্ রামচক্র ! যদি আপনি পরদেহ
অভিলাষ করেন, তাহা হইলে আপনি তল্পা প্রবিষ্ঠ ইইয়া
পুনরার জন্মগ্রহণ পূর্বেক আমাদিগকে পরিত্রাণ করুন;
হে দেব! আপনি দেবতাদিগের অধিপতি পুরুষোভ্য বিষ্কৃ,
কেবল আমিই আপনাকে নারায়ণ বলিয়া অবগত আছি,
কিব অপর কোন ব্যক্তি আপনাকে জানিতে সক্ষম নহে।

সহস্রকৃত্বস্ত নমো
নমস্তে প্রসীদ
দেবেশ ! পুনর্নমস্তে ।
পিতামহপ্রার্থনয়া
স রামঃ পশ্যৎস্থ
দেবেরু মহাপ্রকাশঃ॥ ৫৬॥
মুক্তংশ্চ চক্ষৃংষি দিবৌকসাং তদ!
বস্থব চক্রাদিযুত্শচতুর্ভুজঃ ।
শেষো বস্থবেশ্বরতল্পস্তঃ
সৌমিত্রিরত্যজুতভোগধারী ॥ ৫৭
বস্থবতুশ্চক্রদরৌ চ
দিব্যৌ কৈকেরি-

সূত্রল বণান্তকশ্চ।
সীতা চ লক্ষ্যারভংপুরৈব
রাম্যা হি বিষ্ণুঃ
পুরুষঃ পুরাণঃ ॥ ৫৮ ॥
সহামুজঃ পূর্বশরীরকেণ
বভূব তেজাময়দিব,মূর্ত্তিঃ।
বিষ্ণুং সমাসাদ্য স্থরেক্রমুখ্যা
দেবাশ্চ সিদ্ধা মুনয়্শচ যক্ষাঃ ॥ ৫৯ ॥
পিতামহাদ্যাঃ পরিতঃ পরেশং
স্তবৈগ্ণন্তঃ পরিপূজয়ন্তঃ।
আনন্দসংপ্লাবিতপূর্ণচিত্তা

বভূবিরে প্রাপ্তমনোরথান্তে॥ ৬ ।।।।

হে দেইবর্ষর ! আপনি সহস্র ক্রত এব আপনাকে নমস্তার করি—আপনি প্রসর হউন। ১ জগদীশ্বর ! পুনর্বার আপনাকে নমস্কার করি। ইন্তাদি দেবতারা রঘুনাথকে সন্দ-শন করিতেছেন, এই অবস্থার পিতামহ পদ্মবানি ব্রস্পার প্রার্থনাহসারে পরমব্রস্ক স্নাতন বিষণ্ণ, তাহাদিগের প্রতি । প্রসর ছইয়া শ্বরং প্রকাশিত হইলেন। ৫৫। ৫৬।

এক্ষণে দিৰৌকস দিলের চফু সমূহ বিজ্ঞান দৃষ্টি প্রাপ্ত ইইল বিবং বৈক্ঠপতি নিজ মায়া ঘারা এতাবংকাল ছিভুজ পরিপ্রাহ করিয়া পৃথিবীত্ব সমূদায় লোকদিবের নয়নগোচর ইইয়া এই ধরাতলে অবস্থিতি করিয়াছিলেন; কিন্তু এখন শন্ধ, চক্রে, গদা, পদ্ম বিশিষ্ট চারিটী হস্ত ধারণ করিশেন; কিন্তু কি আফচর্যের বিষয় যে, লক্ষ্মণ দেবলোকান্তর প্রাপ্ত হইলেও রামচক্রের চতুর্ভুক্ম ধারণ সময়ে তাঁহার দেহ শ্রহার রঘুনাথের সমীপে উপনীত ইইল।লবণ রাক্ষ্য সংহারী কৈকেয়ী আক্ষ

অনতিবিলম্বে দিবা চক্র ও শঙ্কা রূপ পরিপ্রতাণ করিলেন—জনক হহিতা রামমনোরমা সীতা পূর্বে লক্ষ্মী ছিলেন, এক্ষণে আর্যাপুত্রকে চতুর্ভুজ ধারণ করিতে সন্দুর্শন করিয়া লক্ষ্মীরূপে নিজ পতির বামপায়ে আসিয়া উপনীতা ছইসেন অত্তর রামচন্দ্র স্থান, প্রতিস্থর্গ, বংশা, মন্তর, বংশামুরচিত এই পঞ্চ লক্ষণাক্রান্ত ব্যাসাদি মুনি প্রণীত গ্রেম্থোলিখিত রামচন্দ্র পরমন্ত্রকা সনাতন বিষ্ণু। পরমস্বাতন রামচন্দ্র অনুজ-দিগোর চতুরংশশভূত দেহ একত্রীকৃত ছইয়া দিবা তেক্লো মর বিষ্ণুরূপ পরিপ্রাহ্ করিলেন। ত্রিদিবেশ্বর ও দেবতারা এবং সিদ্ধাণ, মহর্ষি গণও যক্ষাদি প্রভৃতি দেবযোনিরা ও পিতামহাদি দেব সকল গোলক পতি চতুর্ভুজ বিষ্ণুকে সংপ্রাপ্ত ইয়া সাজিশ্ব হর্ষোৎকুলান্তঃকরণে বিবিধ স্তব ঘারা তাঁহার গুণ গান এবং পূজা করিছে লাগিলেন; এখন তাঁহাদিনের চিত্ত অপার আনন্দ ভরক্ষে উচ্ছদিত হইল, লক্ষ্মীগণিকে প্রাপ্ত হইবার বাসনা রূপ উর্ল্য বহুকাল ভদাহ বিফুজছিণং
মহাত্ম এতে হি ভক্তা
ময়ি চাকুরক্তাং।
যান্তং দিবং মামকুয়ান্তি
দর্বে তির্যাক্শরীরা অপি
পুগারুক্তাং॥ ৬১॥
বৈকুঠসাম্যাং পরমং
প্রয়ান্ত সমাবিশ্বাশু
মমাজ্য়া জদ্।
ক্রায় হরেকাক্যমথাত্রবীৎকঃ
শান্তানিকান্যান্ত
বিচিত্রভোগান্॥ ৬২॥

লোকামদীয়োপরি দীপ্যমানাং-স্তদ্ধাবযুক্তাঃ কৃতপুণ্যপুঞ্জাঃ। যে চাপি তে রাম! পবিত্রনাম গৃণন্তি মত্যা লয়কাল এব ॥ ৬৩॥ অজ্ঞানতো বাপি ভজস্ত লোকাং স্তানেব যোগৈরপি চাধিগম্যান্। ততোহতিহৃষ্টা হরিরাক্ষসাদ্যাঃ স্পৃষ্ট্যা জলং ত্যক্তকলেবরাস্তে॥ ৬৪

#ইতে তাহাদিগোর হৃদয়ে প্রণাত্য ১ইতেছিল একণে তাহা শুসম্পাদিত হইল। (৬) ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০।

ভগবানের বিষ্ণু রূপে বৈকুঠে অবস্থান বিষয় ভারতের
মভা পর্কে—স্বাদিকপাল সভাবণনে—ক্ষমূতা প্রস্তাবে
ক্ষিত আছে যে, দাশর্থি রামচল্র যমের সভাবও
পরিদৃশ্যমান হইরাছিলেন, দেবয়ি নারদ ভংপ্রতিবাদ করিয়।
বলিয়াছিলেন যে, ভগবান বিষ্ণুর রামাবতার পরিপ্রেই করিবার
ছুইটি প্রয়োজন ছিল, প্রথমটা ছফ্টান্মা লোকদিগকে বিন্যুট করিয়া শিক্টাচারী ব্যাক্রদিগকে প্রতিপালন করিবেন এবং
অপরটী স্বয়ং লোকবং ব্যবহার প্রদর্শন করিয়া পৃথিবীস্থ্ মাবতীয় লোকদিগকে ধন্ম ও মর্য্যাদা রূপ জ্ঞানালোকে
আলোক্ষিত করিবেন এবং ব্যবহার প্রদর্শনে ভাহাদিধ্যের
প্রস্তি উৎপাদিত ছইবে। স্ক্রাল্যদশী বাদ্যীকৈ প্রস্তৃতি
নহর্ষিদিগের ভূত ও ভবিষ্যৎ ভত্ত্তান আছে—দেবতার।

কহিতেছেন, ইতাবসরে রাশি রাশি পুন্য আহরণ করিয়া পুৰুষোত্তম ভগবান রামচন্দ্র পিতামহ অন্ধাকে বলিলেন যাগারা আমার অনুসমন করিরাছে তাহারা সক্রেট আমার পারম ভক্ত এবং আমাতে সাতিশয় অনুরক্ত আর তিয়াক জাতিরাও পুনাযুক্ত হুইয়া আমার সহিত স্বর্গে আগমন করুক, হে ব্রহ্মণ ! অামি তোমাকে কহিতেছি যে,ভূমি আমার আদেশ গ্রহণ পূর্বকে আমার প্রম স্থান বৈকৃষ্ঠ সদৃশ লেশকে তাহাদিগকে শীত্র লইয়া যাও। পিভামহ ব্রহ্মা ভগবান নারা-য়ণের বাক্য শ্রবণ করিয়া বলিলেন ভাহারা বিচিত্র সূপ ভোগ সমন্বিত সান্তানিক লোকে প্রস্থান করুক :-- (২ সূত---ভাবন নারারণ। যে সমস্ত ব্যক্তি অন্তিম সময়ে আপনার পরম পবিত্র 'রাম' নাম গ্রেহণ করিয়া থাকে, ভাছারা আমার উদ্ধন্তন লোকে অর্থাৎ ব্রহ্ম লোক অভিক্রেম করিরা ভদ্ দ্ধ ভাগত্তি সাভিশয় উজ্জন লোকে প্রস্থান করে, অধিকন্দ্র যাহারা অজ্ঞান বশতঃ আপনাকে ভক্তৰা করিয়া থাকে. ভাগারাও ঐ লোকে গমন করিয়া থাকে। অনম্বর ধানর স্ত্রমণণ, ব্রাক্ষ্ণগণ ও অপ্রাপর যে সম্পার বোক বযু-নাধের অফুগমন করিয়াছিল,ভাছারা যার পর নাই আহ্লাদিত হইয়া সর্যুর সলিল স্পর্শ করিয়া মলবাছী কলের পরিভাগে क्त्रिल। ७১। ७२। ७७। ७८।

প্রপেদিরে প্রাক্তনমেব রূপং যদংশজা থাক্ষহরীশ্বরাস্তে। প্রভাকরং প্রাপ হরিপ্রবীরঃ সুগ্ৰীব আদিতাজ বীৰ্য্যবত্ত্বাৎ ॥৬৫॥ ততো বিষয়াঃ मत्रयुक्ततम् नताः পরিত্যজ্য মনুষ্যদেহ্য। আরুহ্য দিব্যাভরণা বিমানং প্রাপুশ্চ তে সান্তনিকাথ্যলোকান্॥ ৬৬॥ তিগ্যক্পজাতা অপি রামদৃষ্টা জলং প্রবিষ্ট দিবমেৰ যাতাঃ! দিদৃক্ষবো জানপদাশ্চ লোকা রামং সমালোক্য বিমুক্তসজ্ঞাঃ॥ ৬৮ ॥

স্মুহা হরিং লোকগুরুং পরেশং म्लुके। कनः सर्गगवालूतक्षः। এতাবদেবোত্তরমাহ শস্তুঃ শ্ৰীরামচক্রস্য কথাবশেষম্॥ ৬৮॥ যঃ পাদমপ্যক্র পঠেৎস পাপাৎ-বিমুচ্যতে জন্মসহস্রজাতাৎ। দিনে দিনে পাপচয়ং প্রকুর্বান্ পঠেনরঃ শ্লোকমপীহ ভক্তা ॥ ৬৯ ॥ বিমুক্ত সর্ববাঘচয়ঃ প্রযাতি রামেতি সালোক্যমনন্যলভাম।

অনস্তর ঋক এবং হরি পুসবেরা যে যে বংশ হইতে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিল, তাহারা মেই পূর্বে জন্মার্জিভ রূপ প্রাপ্ত ০ইল, বানরদিগের অধিপতি মহাবল পরাক্রান্ত স্থগ্রীব দিবা-করের বীর্যা হইতে জন্ম পরিগ্রন্থ করিরাছিলেন,প্রভরাৎ বানর সভাষ কিষিদ্ধারোজ প্রভাকরের সহিত বিলীন হইলেন। অনপ্তর ভগবান রামচন্দ্রের পশ্চাদগামী যাবভীর মনুষ্য উছা-নিলের ক্রপান্তর সন্দর্শন করিয়া অতি ব্যেতা সহকারে সর্যু নদীর সলিলে নিমগ্ন হুইয়া মানব কলেবর পরিভাগা করিলেন, শরিশেষে বিবিধ মণি মানিকা থচিত বিমানে আবোহণ করিয়া শুস্ফ চিত্তে সাম্ভনিকা নামক লোকাভিন্থে প্রস্থান করিতে লাগিলেন। ভিয়ত্ত্ যোলিৱা সীভা নাগকে সন্দর্শন করণাস্তর मिलन मध्य প্রবেশ করিয়া বিগত পাপা হইল ও তৎক্ষণাৎ অর্গারোছণ ক্রিল: জুনপদ বাদীরা উত্থাদিগের ঐরপ অব- বিশাসন রঘুনামক কর্ত্তক রচিত এবং অতি প্রাকালে অয়ং

স্থানস্তর পরিদর্শন করিয়া লোকাভিরাম রঘুনাথকে স্লার্শন ও সাফীক্ষে প্রণিপাত করণান্তর সংসার বন্ধন ছইতে বিনিশ্ম জ इहेटन अकरा मच्चूर्न ज्ञा रेवतागावनयन शूर्वक ताक छक প্রমেশ্বর শ্রীহবিকে স্মৃতিপথে আনমন এবং সরমূর জল স্পশ র্ণারবা মাত্র স্বর্গারোহণ করিল। অধুনা শ্রীরাম ভক্তিভান্ধন শহর শ্রীরামচক্রের কথা জ্ববেশ্য করিয়া কছিল যে—যিনি রামায়ণের একচরণ স্লোক মাত্র মনোনিবেশ করিয়া ভক্তি পূর্বাক পাঠ করেন, ভিনি সহস্র বার জন্ম গ্রাহণ করিরা নে সমুদার পাপ করিয়াছেন, তাঁহার সেই সমুদার কলুষ রাশি ভস্মীভূত হইরা যায়,আর যিনিপ্র তিদিন পাপ কার্য্য করিয়াও আন্তরিকভক্তির সহিত একবার এক চরণ শ্লোক পাঠ করিয়া থাকেন, তাঁহার সেই পাপ বিনাশ প্রাপ্ত হয়, অর্থাৎ রামা-গণ অধায়ন করিলে সমস্ত পাপ ডিরোছিড ছইয়া যায় এবং পডিছপাবন রামজ্রের সালোক্য প্রাপ্ত হয়; এই রামারণ

আধ্যানমেতদ্রযুদয়কস্থাস্থ
কৃতং পুরা রাঘবচোদিতেন ॥ ৭০ ॥
মহেশ্বরেণাপ্তভবিষ্যদর্থং
শ্রুত্বা ছু রামঃ পরিতোষমেতি ।
রামায়ণং কাব্যমনস্তপুণ্যং
শ্রীশঙ্করেণাভিহিতং ভবানৈয় ॥ ৭১ ॥
ভক্ত্যা পঠেদফঃ শৃণুয়াৎ স পাপৈ
ব্যিম্চাতে জন্মশতোদ্ভবৈশ্চ ।
স্থধ্যাত্মরামং পঠতশ্চ নিত্যং
শ্রোত্ম্চ ভক্ত্যা লিখিতুশ্চ রামং ॥ ৭২ ॥

অতিপ্রসন্ধন্দ সদা সমীপে

দীতাসমেতঃ প্রিয়মাতনোতি ॥ ৭০ ॥

রামায়ণং জনমনোহরমাদিকাব্যং

ব্রহ্মাদিভিঃ সুরবরৈরপি সংস্তৃতমে।

শুদ্ধান্তিঃ পঠতি সঃ শৃণুয়ান্তু নিত্যং

বিফোঃ প্রয়াতি সদনং স বিশুদ্ধদেহঃ ॥৭৪॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমান্তেশ্বরসন্বাদে উত্তরকাতে নবমোহধ্যায়ঃ।

রম্বনাথ কর্ত্তক প্রেরিড **হইয়াছে । ৩৫ । ৬৬ । ৬৭ । ৬৮ ।** । ৬৯ । ৭ •

রাজীবলোচন রামচন্দ্র দেবদেব মহাদেব কর্ক্ক রামারণ সহকে ভবিষয়াণী প্রবণ করিয়া যারপর নাই পরিতোষ হইলেন, থরং ভবানীপতি এই অপরিসীত প্ণ্যপ্রদ শ্রীরামচরিত কাবা ভবানীর নিকট কহিয়াছিলেন। যে ব্যক্তি ভক্তি-সংকারে অধ্যাক্স রামারণ পাঠ করে, সে ব্যক্তি শভজন্ম পদ্ধ পাপ হইতে বিমুক্ত হয়। শ্রীরামচ্জ্র অপদ ঘঠিত অধ্যাক্স রামারণ প্রশ্ব যার পর নাই ভক্তিসহকারে প্রতিদিন পাঠ ও শ্রবণ করিয়া সাতিশয় প্রসন্ন হৃদরে সর্বাদা সীভাব সমীপে উপবেশন করিয়াছেন। ত্রকাদি সুরগণ লোক সহ্বদয় রঞ্জন আদি কাব্য রামচরিত বিষয় শুভিবাদন করিয়া থাকেন। যিনি শ্রহার সহিত রামায়ণ পাঠ করেন অথবং অবহিত চিত্তে প্রতিদিন শ্রবণ করেন তিনি পরিমার্জিভ শরীরে বিষ্ণুর সরিধানে গমন করিয়া থাকেন। ৭১। ৭২।৭৬।

> ইতি **জ্ঞান**ধ্যাস্থ্যবাশারণে উমামছেশ্বরসম্বাদে উত্তরকাণ্ডে নবনোহশ্যায়ঃ।

শ্রীরাম স্তবঃ।

ত্রীগণেশায় নমঃ।

অস্থ্য প্রীরামচন্দ্রন্তবরাজন্তোত্তমন্ত্রস্থ সমৎক্ষার
ক্ষিঃ। অসুষ্ঠুপ্ ছলঃ। প্রীরামো দেবতা। দীতাবীজম্। হলুমান্ দক্তি:। প্রীরামপ্রীত্যর্থে জপে
বিনিয়োগঃ।

সূত উবাচ। সর্বাশাস্ত্রার্থতত্বজ্ঞং ব্যাসং সভ্যবতীহতম্ ! ধর্মপুত্রঃ প্রহান্তা প্রত্যুবাচ মুনীখনম্ ॥ > ॥

ভগবন্যোগিনাং শ্রেষ্ঠ সর্ব্বশাস্ত্রবিশারদ।
কিং ভদ্ধং কিং পরং জাপ্যাং কিং ধ্যানং মুক্তিসাধনং॥
খ্যোতৃষিচ্ছামি তৎ সর্ববং ক্রিছি মে মুনিসভম।

যুখিতির উবাচ।

বিশ্বনাশক গণপ্তিকে নম্মার করি। স্বংকুষার মুনি ভগবাস্ রামচন্ত্র শুব ও শুোত বলিরাছিলেন,—জীরামচন্ত্র দেবতা, জানক হছিতা দীভার আদি, পবন কুমার হত্তমামের শক্তি, অভএব জীরামচন্ত্রের প্রীতির নিমিত্ত জপ করি।

স্ত কছিলেন—ধর্মপুত্র বৃধিষ্টির সাহ্বাদান্তঃকরণ হইরা সর্বাদ্যর বিশারদ ভন্তভানবিদ্ মুনিসন্তম সত্যবতীনন্দন ব্যাসকে বলিরাছিলেন—ছে ভগবন্! আপনি বোগিগণের শ্রেষ্ঠ, আপনি সর্বাদ্রের পারদর্শী, অভত্রব তত্ত্বই বা কিরপে অবগভ হইব—পরম পুক্রকেই বা কিরপে অপ করিতে হইবে—ধ্যানই বা কিরপে করিতে হইবে—মুক্তি সাধনই বা কিরপে হুইবে—হে মুনি সন্তম! আবি আপনার নিক্ট ত্র

বেদব্যাস উবাচ।

ধর্মরাজ মহাভাগ শৃণু বক্ষ্যামি তত্ত্বতঃ ॥ ৩ ॥
যৎপরং যদ্গুণাতীতং যক্ষ্যোতিরমলং শিবং।
তদেব পরমং তত্ত্বং কৈবল্যপদকারণং ॥ ৪ ॥
শ্রীরামেতিপুরং জাপ্যস্তারকং ব্রহ্মসংস্কৃকং ।
ব্রহ্মহত্যাদিপাপত্মমিতি বেদবিদো বিছঃ ॥ ৫ ॥
শ্রীরামরামেতি জনাযে জপস্তি চ সর্ব্বদা।
তেষাং ভুক্তিশ্চ মুক্তিশ্চ ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ॥ ৬ ॥
স্তব্যাজং পুরা প্রোক্তং নারদেন চ ধীমতা।
তৎসর্ব্বং সম্প্রবক্ষ্যামি হরিধ্যানপুরঃসরং ॥ ৭ ॥

সমুদার জানিতে ইচ্ছা করিরাছি, অন্বগ্রহ করিরা আনাকে বলুন। ১ / ২ ।

বেদব্যাস কহিলেন—ছে ধর্মরাজ্ঞ তি তামার অভিলবিত ভব বিষয় সমূহ বলিভেছি অবহিত মনে অবশ্ কর। ৩।

ছে যুধি ঠির! যিনি পরং ব্রহ্ম, যিনি গুণাভীত, বাহার জ্যোতিঃ নির্মণ ও মললমন, বেদজ্ঞ ব্যক্তিরা উাহার ভত্ত্ব বিষয় এই বলেন যে, মোক্ষ প্রাপ্ত হইবার কারণই ঠাহার জ্যান্তরণারবিক্ষ—জীবাম এইটি জ্ঞাপ করাই উচিত, তিনি এই সংসার নিস্তার কর্তা, ভিনিই পর্য ব্রহ্ম নাম ধারণ করেন, তাঁহার শ্রণাগত হইলে ব্রহ্মহত্যাদি পাপ ছইতে মুক্তি পাওরা যার। ৪। ৫।

বে মহাত্মা ব্যক্তিরা তাঁহাকে সর্বাদাই অপ করিরা থাকেন তাঁহাদিগের ভক্তি এবং মুক্তি হইবে ইহাতে তিলমাত্র সংলর নাই। ৬। তাপত্তয়ায়শমনং সর্বাঘোষনিক্তনং।

দারিত্রেছ্ঃখশমনং সর্বসম্পৎকরং শিবং॥৮॥

বিজ্ঞানফলদং দিব্যং মোকৈকফলসাধনং।

নমস্কত্য প্রবক্ষামি রামং কৃষ্ণং জগলমং॥ ৯

অযোধ্যানগরে রম্যে রত্তমশুশানখাণে।

স্মরেৎ কল্লতরো কৃলে রত্তমশুশানং শুভং॥ ১০॥

তল্মধ্যেইদলং পদ্মং নানারত্ত্বশুশানং শুভং॥ ১১॥

পিতৃরক্পতং রামমিক্রনীল্মণিপ্রভ্ম।

কোমলালং বিশালকং বিত্রম্বর্ণাম্বরার্তম্॥ ১২॥

ভাত্তোটিপ্রতীকাশং কিরীটেন বিরাজ্বিত্য

বক্তর্থবেষ্টের্ররত্বকুগুল্মপ্রিত্য ॥ ১৩॥

বক্তর্থবেষ্টের্ররত্বকুগুল্মপ্রিত্য ॥ ১৩॥

রত্বক্ষণমঞ্জীরং কটিসূল্জৈরলস্কৃত্ন্।

ত্রীবংসক্রেজভারক্ষং মুক্তাহারোপণোভিত্র ॥১৪॥

দিব্যরত্বসমাযুক্তমুজিকাভিরলস্কৃত্র।

রাঘবং দ্বিভুলং বালং রামমীবংশ্বিতাননম্॥ ১৫॥

তুলসীকুল্মন্দারপুল্পমাল্যেরলক্কৃত্যু।

কর্পরাঞ্জককন্ত রিদিব্যগন্ধানুদেশেশন্ম্॥ ১৬॥

যোগশাল্রেঘভিরক্তং বোগীশং বোগদারকম্।

সদা ভরতসৌমিত্রশক্তিক্রেকশশোভিত্র । ১৭॥

বিদ্যাধরস্করাধীশসিদ্ধান্ত ক্রমানমহর্নিশম্॥ ১৮॥

বিশ্বামিত্রবিশিল্পিটিং শরিসেবিভ্রন্।

সনকাদিমুনিভেটি র্বোগির্কেশ্চ সেবিভ্রন্। ১৯

ধীশক্তি সন্মত দেবর্ষি নারদ পুর্বেষ্ট যাহ। বলিয়াছিলেন আমিও ভগবান্ শ্রীহরির ধ্যান এবং অপরাপর বাবতীরই কছিতেছি। ৭।

তাপত্রস্থানল বিনাশকারী, পাপরাশি নিধনকারী, যাবতীয় দ্যিত্রদিয়ের হঃথাপছারী, সমুদার বিতৰ দাতা সর্ব্ধ মঙ্গলমর দিব্য বিজ্ঞান ফল প্রদানকারী, মোক্ষ ফল সাধন জগদাপক রাম ক্ষাকে নমস্বার করিয়া তাঁছার বিষয় বলিতেছি। ৮।

মরোছন অযোধানগরত রজাদি থচিত মওপাবছারী কংপা তকর মূলদেশে সংখিত শুভমর রজুসিংহাসন স্মরণগথে আনম্বন করিবে; অন্তর্ম তাহার মধ্যত্তি অফ্টাল কমল, কৈবিধ রজালি পরিবেটিত তনর রঘুনাথকে সরণ করিবে 10-100 ৷

ইজ নীলমণিথাত কেয়নগাল বিশাসনম্ম বিজ্ঞাগিবারত পিতৃত্যোত্গত শীয়ানমচক্রকে শারণ করিবে; কোট দিনমণি শালুণ কিরীট বিয়াজিত রম মণ্ডিত কের্র নূপুর এবং কুকল সমাযুক্ত রঘুনাথকে অরণ করিবে; রত্ন কছণ সমাযুক্ত কটি স্ক্রোছ্ত জীবৎস কোভড মণিযুক্ত মুক্তাহারে স্থাভিড সীভানাথকে অরণ করিবে। ১২।১৩1১৪।

দিবা রত্ন সমাযুক্ত মুক্তিকার অবস্কৃত ক্রমদাসাবদন বিভ্জা বিশিক্ষ বালক বযুপতিকে স্মরণ করিবে; তুলসী, কুল, মন্দার তক কুন্ম মাল্যে অলম্কুত—কপূর অগুরু কন্ত, রি দিবা সুগস্ধাম্বলিশু রাঘবকে স্মরণ করিবে; যিনি যোগশাছে সর্কাণ অমুরক্ত, যিনি যোগীল ও যোগদারক, যিনি অনুক্ষণ ভরত সোমিত্রি ও শত্রুক্ত উপশোভিত, হইরা আছেন ভাঁচাকে স্মরণ করিবে ১৫।১৬।১৭।

বিনি বিদ্যাধন এবং সুরদিগের অধিপতি, যিনি শিদ্ধ গদ্ধকা, কিন্তুরগণ এবং নারদ অভৃতি যোগীবরদিগের ভারা বিবানিশি ভূষমান ভইয়া খাকেন ভাঁহাকে অভুক্ষণ সরণ করিবে। যিনি বিশামিত ও বশিক্ত প্রভৃতি মুনিদিগের ভাবা পরিসেবিভ ভ্ইন্তা থাকেন, যিনি সনকাদি যোগীর্ক কর্তৃক সর্বালা ভশাবিত ভ্ইনা থাকেন তাঁহাকে ক্ৎপদ্মে সর্বাল সম্মন রামং রঘুবরং বীরং ধনুবেদিবিশারদম্।

মঙ্গলায়তনং দেবং রামং রাজীবলোচনং ॥ ২০

মর্বিশাস্তার্থতত্ত্ত্তমানন্দকরন্থন্দরং।

কৌশলানন্দনং রামং ধনুবাণধরং হরিম্॥ ২১

এবং সঞ্জিন্তরন্ বিষণুং মজ্জোতিরমলং বিভুং।

শ্রহারমানসো ভূতা মুনিবর্ঘঃ স নারদঃ॥ ২২ ॥

সর্বলোকহিতার্থায় ভূতাব রঘুনন্দনং।

কৃতাঞ্জলিপুটো ভূতা চিন্তয়য়য়ৢতং হরিম্॥ ২৩

যদেকং যৎপরং নিতাং যদনভ্ঞিদাত্তকং।

যদেকং ব্যাপকং লোকে ভজ্লাং চিন্তয়াম্যহং। ২২

বিজ্ঞানহেত্বং বিশ্বনায়তাকং
প্রজ্ঞানরূপং স্বস্থাথকহেত্বং।
জ্ঞীরামচক্রং হরিমাদিদেবং
পরাৎপরং রাম্মহং ভদ্ধামি॥ ২৫॥

কারবে। বহুকের বিশারদ মঙ্গলায়তন লোচন, মহাবল প্রাক্রম রাজীবলোচন রত্বর প্রীরামচন্দ্রকে নিরন্তর স্মরণ করিবে; যিনি সর্কা শাস্ত্র ও বিজ্ঞান তত্ববিষর অবগত আছেন, যিনি আনন্দকর ও স্ক্রয়, যিনি কোশস্যাতনয় সেই ধ্রুকাণধারী প্রীহরি রামচন্দ্রকে স্মরণ করিবে। দেবর্ষি নারদ মহাজ্যোতি সম্পান বিমল বিভূ বিঞ্হে জ্বর মধ্যে এইরপ ভাবনা করিয়াও প্রজ্ঞাই মনে কৃতাঞ্জলিপুট হইরা সর্কালোক মঙ্গল কামনার নিমিন্ত রত্নন্দনকে পরিভূই করিলেন;—যিনি জগতের একমাত্র সম্বল—যিনি পরম প্রুক্তন—যিনি নিত্য, খাহার অন্ত নাই, গিনি চিলাত্মক, যিনি ইহলোকে এক মাত্র বাগেক, উহার সেই রূপ চিন্তা করি; বিনি বিজ্ঞানের কারণীভূত, খাহার নমন বিমল ও আয়ত, খাহার রূপ প্রজ্ঞানে পূর্ণ, বিনি একমাত্র স্ক্রমণ দ্রানান, বিনি আদিদেব, আমি সেই পরাৎপর প্রীরামচন্দ্রকে ভ্রমনা করি। দেবর্ষি নারদ মহাকবি অনাদি, প্রক্ষোন্তম,

কবিং পুরাণং পুরুষং পুরস্তাৎ
সনাতনং যোগিনমীশিতারং।
অণোরণীয়াং সমনস্তবীর্ঘাং
প্রাণেশ্বং রামমদৌ দদর্শ॥ ২৬॥

नात्रम छेगाठ।

নারায়ণং জগন্নাথমভিরামং জগৎপতিং।
কবিং পুরাণং বাগীশং রামং দশরথাত্মজং॥ ২৭॥
রাজরাজং রঘুবরং কৌশল্যানন্দবর্ধনম।
ভর্গং বরেণ্যং বিশ্বেশং রঘুনাথং জগদ্গুরুম্॥ ২৮
সত্যং সভ্যপ্রিয়ং শ্রেষ্ঠং জানকীবল্লভং বিভুম্।
দৌমিত্রি পূর্বজং শান্তং কামদং কমলেক্ষণং॥ ২৯
আদিত্যং রবিমীশানং স্থানিং সূর্য্যমনাময়ম্।
আনন্দর্মপণং সৌম্যং রাঘবং করুণাময়ং॥ ৩০॥

সন্তন, যোগী প্রধান, অতি স্ক্র, অনন্ত বীর্যা প্রাণেশর জীরাম-চক্রকে দর্শন করিলেন । ১৮ ৷ ১৯ ৷ ২০ ৷ ২১ ৷ ২২ ৷ ২৩ ৷ ২৪ ৷ ৷ ২৫ ৷ ২৬ ৷ .

নারদ কহিলেন—নারারণ জগ্রাথ, অভিরাম জগৎপতি, অনাদি, বাক্যের ঈবর, ত্রীরামচন্দ্র রাজা দশরথের তনর। তিনি রাজাদিগের রাজা, রঘ্বর, কৌশল্যার আনন্দ বর্জ ন ; তিনি ভগ অর্থাৎ ঐর্থা বীর্ঘ বলঃ দৌভাগ্য জ্ঞান ও বৈরাগ্য এই ছর প্রকার শক্তি; তিনি প্রধান, বিশ্বসংসারের ঈবর, তিনি রঘ্বংশের প্রত্, তিনি জগভের শুরু। তিনি শত্য, সভাপ্রির, শেষ্ট; তিনি জানকীবরত ও বিভু; তিনি সৌমিত্রির পূর্বজ, শাস্ত, অভীইদান্তা, এবং কমলেকণ। তিনি আদিতা, রবি, ঈশান তিনি হৃদি, তিনি প্র্যাও অনামর; তিনি আনন্দরপী, শাস্ত রঘ্বুলান্তর করণামর। ২৭। ২৮।২৯।৩০।

ভামন্ত্রণে তপোমূর্তিং রামং পরশুধারিণম্।
বাক্পতিং বরদং বাচাং শ্রীপতিং পক্ষিবাহনম্॥৩১॥
শ্রীশাঙ্গ থারিণং রামং চিমায়ানন্দবি গ্রহম্।
হলধৃথিকুমীশানং বলরামং কুপানিধিম্॥ ৩২ ॥
শ্রীবল্লভং কপানাথং জগন্মোহনমচাভম্।
মংস্টাকুর্মবরাহাদি রূপধারিণমবায়য়्॥ ৩৩ ॥
বাস্থানেশং জগদেয়ানিমনাদিনিধনং হরিম্।
গোবিন্দং পোপতিং বিষ্ণুং গোপীজনমনোহরম্॥ ৩৪
গোপোলালপরীবারং গোপকত্যাসমার্তম্।
বিহাৎপুঞ্জ প্রতীকাশং রামং কুষ্ণং জপন্ময়য়্॥ ৩৫ ॥
গো গোপিকা সমাকীর্ণং বেণুবাদনতৎপরম্।
কামরূপং কলাবন্তং কামিনীকামদং বিভুম্॥ ৩৬ ॥
মন্মর্থং মথুরানাথং মাধ্বং মকরপ্রজং।

তিনি জামদগ্য, তপেশম্ভি পরশুধারী রামচক্র; তিনি বাক্পতি ববন, বাচা, লক্ষ্মীপতি, এবং পক্ষিবাহন; জিনি শ্রীশাঙ্গ পারী রামচক্র। জিনি চিনার, আনন্দ ও বিগ্রহরূপী; তিনি স্থিশান ও কপানিধি হলধারী বলরাম। তিনি শ্রীনাথ, কপানাথ, জগনোহন অচ্যত; তিনি মৎস্য, কৃর্ম, বরাহ গুভ্জি রূপ-বারী অবার; জিনি জ্বন্মৎ যোনি বাহ্মদেব, অনাদি নিধন শ্রীহরি; তিনি গোবিন্দ, গোপভি, গোপীমনমোহনকারী পর্ম বিষ্ণু; তিনি পৃথিবীর পালক এবং গোপাল ও গোপকনাায় সমাস্কৃত ওবং বিত্যৎবালি সদৃশ; তিনি শ্রীরাম ও শ্রীকৃষ্ণ সমুদার জগতে প্রিবাধ্য হইয়া আছেন। ৩১। ৩২। ৩২। ৩৫।

ভিনি গো এবং গোণিকারণদারা সমাকীর্ণ বংশিধ্বনি করিতে থারপর নাই তৎপর; তিনি কামরূপী ও কলাবৎ, তিনি কামিনী-দিন্তের কামদ, সর্বাময় জগদীখন। তিনি মশ্মধ এবং মধ্রানাধ্য; শ্রীবরং শ্রীকরং শ্রীশং শ্রীনিবাসং পরাৎপরম্॥ ৩৭॥
ভূতেশন্ত্পতিং ভদ্রং বিভূতিং ভূতিভূষণং।
সর্ববৃহথহরং বারং তুইদানববৈরিণং॥ ৩৮॥
শ্রীনৃসিংহং মহাবাহুং মহান্তং দাঁগুতেজসং।
চিদানন্দময়ং নিত্যং প্রণবং জ্যোতিরূপিণম্॥ ৩৯॥
আদিত্যমগুলগত্তং নিশ্চিতার্থ স্বরূপিণং।
ভক্তপ্রিয়ং পদ্মনেত্রং ভক্তানামীপ্সিতপ্রদং ॥ ৪০॥
কোশল্যেয়ং কলামূর্ত্তিং কাকুৎস্থং কমলাপ্রিয়ং।
সিংহাসনেসমাসীনং নিত্যব্রত্মকল্মষং॥ ৪১॥
বিশ্বামিত্রপ্রিয়ং দান্তংস্বদারনিয়ত্বতং।
যত্তেশং ষ্ত্রপুরুষং যজ্ঞপালনতৎপরং॥ ৪২॥

তিনি মাধব ও মকরধ্বজ্ঞা, তিনি প্রীধর, প্রীকর, প্রীশা, প্রীনিবাদ এবং পরাংপর পরংব্রহ্ম। তিনি ভূত সম্পারের ঈশ্বর, ও ভূ-পতি; তিনি ভ্রন্ত. বিভূতি এবং ভূতিভূষণ; তিনি সর্ব্যত্নগণ্ডর মহাবীর ও হুইায়া দানবদিগের শক্ত। তিনি নুসিংচ ও মহাবাহ ; তিনি মহান্ত এবং দীপ্ত ভেল্ঞা, চিদানন্দমর ও নিতা, তিনি প্রণার সর্বাজ্ঞাতি রূপী, তিনি স্থামগুলের মধান্তলে অবস্থিত আছেন; তিনি নিশিচ্ত বিষরের স্বরূপী; তিনি ভক্ত জ্ঞানের প্রিয় ও পদ্মনেত্র এবং ভক্তদিগের বাঞ্ছিত পদার্থ প্রদান করিয়া শাকেন। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০।

তিনি কোশলতনয়ার কলা মৃত্তি—কাকুৎ স্থু কমলাপতি;
সিংহাসনোপবিষ্ট নিতাধর্মাবলম্বী নিত্পাপ রামচন্দ্র; তিনি
বিশ্বামিত্রের প্রিয়শক্রদিগের দমনকারী, সর্কাদা উদারব্রতে ব্রতী;
তিনি যজ্ঞের ঈশ্বর, তিনি যজ্ঞ পৃক্ষ এবং যজ্ঞ পালনে তৎপার।
তিনি সতাসক্ষ এবং ক্রোধকে প্রাভয় করিয়াছেন; তিনি,
শরণাপ্রদিগকে সন্তামের ন্যায় সন্দর্ভান ও সর্কাক্রেশ বিদ্বিত
করিয়া থাকেন; তিনি ধার্মিকবর বিভীষ্ণকে বর প্রদান
করিয়াছিলেন। তিনি রেশ্রি অভএব দক্ষরাভার মন্তক ছিল

সত্যসন্ধং জিতজোধং শরণাগতবৎসলং।
সর্বক্রেশাপহরণং বিভীষণ বরপ্রদং ॥ ৪০ ॥
দশগ্রীবহরং রৌদ্রুং কেশবং কেশিমর্দ্দনং।
বালিপ্রমথনং বীরং দুগ্রীবেপ্সিতরাজ্যদং ॥ ৪৪ ॥
নরবানরদৈবৈশ্চ সেবিতং হুমুমৎপ্রিয়ং।
শুদ্ধং সূক্ষ্মং পরং শাস্তং তারকব্রহ্মারপিণং ॥ ৪৫ ॥
সর্ববিধারণকর্তারং নিদানং প্রক্রন্তেঃ পরং ॥ ৪৬ ॥

করিরাছিলেন, তিনি কেশীবিনাশী কেশব। তিনি কিছিকা।
রাজ বালিকে মণিত করিরা সুগ্রীবের অভিলবিত রাজা
প্রদান করিয়াছিলেন; তিনি নর বানর ও দেবতাদিগের দ্বারা
পরিদেবিত এবং পবন নন্দন হন্মানের প্রিয়; তিনি শুদ্ধ,
তিনি স্কুল্লন, পরংব্রহ্ম, শাস্ত ও তারক ব্রহ্মরপী। তিনি যাবতীর ভূতের আত্মা ও সমুদার ভূতের অন্তর্গত এবং সমস্ত
পদার্থের আধার ও সনাতন; তিনি চতুর্দ্দিকস্থ্যাবভীয় বস্তুর
কারণ ও কর্ত্তা তিনি নিদান ও প্রকৃতির পরম ব্রহ্ম অতএব
ভাঁচাকে নমস্কার করি। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬।

হে বিভো! আপনি নিরাশ্রয়,নিরাভাস, নিরবৎ, নিরঞ্জন, নিতাানন্দ, নিরাকার, অবৈত, তম ও পরমন্ত্রন্ধ; আপনি পরাংপরতর, তজু, সভাানন্দ, চিদার্মক মনে ও শীর্ষদেশে নিরস্তর অবস্থান করিতেচেন অতএব আপনাকে নমস্থার করি। ছে রঘুনার্থ! আপনি স্থামণ্ডলের মধ্যে অবস্থিত আছেন, আপনি দীভা রুমন্বিত রামচন্ত্র, আপনি পুণুরীকান্ধ, অমের ও গুরুতৎপর অতএব আপনাকে নমস্থার করি। আমি জ্যোতিক পদার্থপত্তি বাস্থদেবকে নমস্থার করি। আমি জ্যোতিক পদার্থপত্তি বাস্থদেবকৈ নমস্থার করি—জগদানন্দর্রপী রামচন্ত্রকে নমস্থার করি। আপনি যোগী ও বন্ধবাদীদিগের বেদাক্ষিত্র এবং জনদেবীদিগের মান্ত্রামর নিজ্ঞান্তের জন্য উদ্ভব ছইরাছেন অতএব আপনাকে নমস্থার করি। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫১।

नितायशः निताजामः नितवनाः नितक्षनः। নিত্যানন্দং নিরাকারমহৈতং তমসঃপরং॥ ৪৭ 🛚 পরাৎপরতরং তত্ত্বং সত্যানন্দং চিদাত্মকং। মনসাশিরসা নিত্যং প্রণমামিরঘৃত্রং ॥ ৪৮ ॥ सूर्वामधनमधायः तामः मौजाममयिकः। নমামিপু গুরীকাক্ষমমেয়ং গুরুতৎপরং॥ ৪৯॥ নমোহস্তবাম্বদেবায় ক্ষ্যোতিষাংপত্য়ে নমঃ। নমোহস্ত রামদেবার জগদানন্দর্রপিণে।। ৫০।। नरमारवनाञ्चनिष्ठात्र त्याशिहनं जन्मवानित । যায়াময় নিরস্তায় প্রপন্নজনসেবিনে॥ ৫১॥ বন্দামহেমহেশান চত্তকোদত্থতনম্। क्षानकी एक मग्रानन्त वर्षनः त्र पुनन्तन्य ॥ ८२ ॥ উৎফুল্লামলকোম লোৎপলদলশ্যামায়রামায়তে কামায় প্রমদামনোহরগুণগ্রামায়রামাত্মনে। যোগারত্যুনীক্রমান্স সরোহংসায় সংসার-বিধ্বংসায় ক্ষুরদোজদে রঘুকুলোতংসায়পুংদেনমঃ

প্রচণ্ড কোদন্ত খণ্ডনকারী মনোছর বন্দনা করি। জানকীর হাদরানন্দ বর্জন রঘুনাথকে নমস্কার করি। স্প্রোমল বিকচ কমল নরন নবদ্র্বাদলন্যাম প্রমদা মহেশপুণকাম
৪ আশেব গুণগ্রাম প্রমোন্তম রামচন্দ্রকে নমস্কার করি;
যোগাসনাসীন মুনীক্ত মানস-সর হংস সংসার বিধ্বংসকারী
মহাদীপ্তি রযুক্লজাভ প্রবোন্তম রযুনাথকে নমস্কার করি।
এই সংসারোৎপত্তি-কারণ বেদবিদ্ জনের অপ্রাধান্য, আদিত্যচন্দ্র স্প্রভা সমন্বিত অনন সর্বান্তক সর্বজীবগভ স্বরূপ রাম
চন্দ্রকে অগ্রে নমস্বার করি। নিরঞ্জন, প্রতিম-কিছীন নিরীছ
নিরাশ্রম, নিক্ষণ, মহামান্না, নিত্য নিক্ষর বিষয় পূনা স্বরূপ

ভবোদ্ধবং বেদবিদাং বরিষ্টমাদিত্য চন্দ্রাননস্থপ্রভাবম্।
দক্ষাত্মকং দক্ষগতস্বরূপং
নমামিরামং তমসংপরস্তাৎ॥ ৫৪॥
নিরপ্তনং নিম্পাতিমং নিরীহং
নিরাপ্রাং নিক্ষলমপ্রপঞ্চম্।
নিত্যপ্রবং নির্কিষয়স্বরূপং
নিরন্তরং রামমহং ভজামি॥ ৫৫॥
ভবাকিপোতং ভরতাগ্রজন্তম্
ভক্তপ্রিয়ং ভামুকুলপ্রদীপম্।
ভূততিনাথ ভূবনাধিপস্তম্
ভজামি রামং ভবরোগবৈদ্যম্॥ ৫৬
দক্ষাধিপত্যং দমরাঙ্গবিরং
দত্যং চিদানন্দ্রয়স্বরূপম্।

সত্যং শিবং শান্তিময়ং শরণাং
সনাতনং রামমহং ভজামি॥ ৫৭॥
কার্যাক্রিয়াকারণমপ্রমেয়ং
কবিং পুরাণক্ষমলায়তাক্ষম্।
কুমারবেদ্যং করুণাময়ত্
কল্পক্রমং রামমহং ভজামি॥ ৫৮॥
তৈলোক্যনাথং সরসীরুহাক্ষং
দয়ানিধিং দক্ষবিনাশহেভুম্।
মহাবলং বেদনিধিং স্করেশং
সনাতনং রামমহং ভজামি॥ ৫৯॥
বেদান্তবেদ্যং ক্রিমীশিতারমনাদিমধ্যান্তমচিত্যমাদ্যম।
অগোচরং নির্মালমেকরূপং
নমামিরামং তমসঃ পরস্তাং॥ ৬০

রামচন্দ্রকে অমুক্ষণ ভজনা করি ।৪৭।৪৮।৪৯।৫°।৫১। ৫২।৫৩।৫৪।৫৫।

ভবজলধির তরণী ভবভাগ্রজ সেই ভক্তপ্রিয় প্র্যাবংশ ভজনা করি প্রদাপ রামচন্দ্রকে যাবজীয় ভৃতিদিধের শ্রীপতি প্র্যা, মর্ত্রাও প্রতেজ পরিং পাতাল ত্রিভ্বনাধিপতি সেই ভবরোগ বৈদ্য জীরামকে ভজনা মণ্ডল মধ্যে জ করি। সর্বাধিপতি সমরাল ধীর সত্য, চিদামল্ময় সরপা, অভএব আপ্রাব, শান্তিময় শরণ্য সনাতম রামচন্দ্রকে ভজনা করি। হে ।৬১ ।৬২। ভগবদ্ ! আপনি কার্যাও ক্রিয়ার কারণ, অপ্রবেদ্ধ—কবি, চিদামল্ম প্রাণ, কমলায়ভাক্ষি, কুমার বেদ্য ক্রপাময় সেই ক্রক্রম রাম্ব চন্দ্রকে নমকা চন্দ্রকে আভএব আপ্রাণ, ক্রমার বেদ্য ক্রপাময় সেই ক্রক্রম রাম্ব চন্দ্রকে নমকা চন্দ্রক্রমার ক্রিলালাকানি ত্রেলোক্যনাপ, ক্রিলিগের থে প্রক্রমার, দ্রার সাগার দক্ষ বিনালা কারণ, মহাবদ, বেদের আপনি যোগী

পারাবার, স্বরেশ সনাতন রামচন্দ্রকে জ্জনা করি; আপনি অপার ও স্থা স্থানপর রামচন্দ্র, অতএব আপানাকে জ্জনা করি; আপনি তত্ত্ব স্থান্য প্রেল পরিপুরিত বিষ্ণা, আপনি রাখাদিশের রাজাও স্থা মওল মধ্যে অবস্থিত, আপনি এই নিখিল জগতের ঈশ্বর বামচন্দ্র অতএব আপনাকে জ্জনা করি । ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯।৬০।

চিদানন্দমর রযুবংশপতি লোকাভিরান মুকুন্দ জীহরি রাম চক্রকে নমস্বার করি। তে রযুবর! জাপনি বিদ্যাধিপতি কবিদিগের শ্রেষ্ঠ, অভএব জাপনাকে প্রথাম করি। তে রাম! আপনি যোগীদিগের শ্রেষ্ঠ ও সভাসক্ষ—জাপনাকে সকলে ভাগেরবদাত্মকমাদ্যম্।

অপারদন্দিৎস্থানেকরপং
পরাৎপরং রামমহং ভজামি॥৬১।

তত্ত্বরপং পুরুষং পুরাণং
সতেজনা পুরিতবিশ্বমেকম্।
রাজাধিরাজং রবিমগুলক্তং
বিশ্বেশ্বরং রামমহং ভজামি॥৬২॥
লোকাভিরামং রলুবংদানাথং
হরিফিদানন্দময়ং মুকুন্দম্।
ভাশেষবিদ্যাধিপতিং ক্রীক্রং
নমামিরামং তমসং পরস্তাৎ॥৬৩॥
বোগীক্রদান্দেশ্বশ্বস্থানরামানং

সেবা করিয়া থাকে—আপনি নির্মাণ আদিদেব নারায়ণ ও লগতের একমাত্র পতি, অককার আদিভারপ ধারণ করিয়া- ছেন অভএব আশনাকে প্রতিদিন নমস্বার করি। আপনি বিভূতিপ্রদ অর্থাৎ অণিমা; লবিমা, বাজি, প্রাকার্য্য, মহিমা ঈশিও, ব শত্ব, কামাবসান্নিত প্রদান করিয়া থাকেন ও বিশ্ব সংসার স্থণন করিয়াছেন, আপনি বিলাম—বাজ্ঞাদিগের উক্ত বযুবংশাধিপতি জ্বসাদীশ্বর—আপনি চিন্তাতীত বাক্যাভাতি জ্বোভিশ্বর অনন্তম্পূর্তি রামচক্ত অভএব আপনাকে ভজনা করি। ১৯। ৬০। ৬১।

আপনি এই অশেষ বিশ্ব সংসাবের বিহার হীন আদিতা গুৰু পূর্ণ সুধাতিরাম বাবতীর বস্তুর সাক্ষিদীপ্তিময় নারারণ বিষণু অভএব আপনাকে ভল্পনা করি—মুনীক্ত গুছা পরিপূর্ণ কান—আপনি চক্ত পাণবিনাশ কারণ পরাৎপর পর ক্রম পবিত্র ; মহানু রামচক্তকে ন্মস্থার করি, ছে রয়ুন্দান ! জাপনি ব্রহা

নারায়ণং নির্মালমাদি দেবম্। নটোহিম্মিনিতাং জগদেকনাথ-মাদিত্যবর্ণ: তম্দঃ পরস্তাৎ ॥ ৬৪ ॥ বিভূতিন্দবিশ্বস্তজংবিরামং রাছেন্দ্রমীশং রঘুবংশনাথম্। অচিন্তামব্যক্তমনস্তমূর্ত্তিং জ্যোতির্ম্মাং রামমহং ভজামি॥ ৬৫। অশেষসংসার্বিহারহীন-মাদিত্যগং পূর্ণস্থাভিরামম্। সমস্তসাক্ষিং তমদঃ পরস্তাৎ নারায়ণং বিষ্ণুমহং ভজামি॥ ৬৬ ॥ यूनीक्षथशः পরিপূর্ণকামং কলানিধিস্কলাষনাশহেতুম্। পরাৎপরং যৎপরমং পবিত্রং নমামিরামং মহতোমহাস্থম্॥ ১৭ ॥ ব্রহ্মাবিফুশ্চ রুদ্রশ্চ দেবেলো দেবতান্তথা। আদিত্যাদিগ্রহাদৈচৰ স্বয়েবরঘূনন্দন ॥ ৬৮ ॥

বিষ্ণু ও মহেশ্বর — আপনি দেবতা ও দেবতাদিগের ইন্দ্র এবং আদিতা ও গ্রহ, আপনি তাপল, ঋষ, দিদ্ধ, দাধা। ও মকং— অপান বিপ্রে বেদ ও বজ্ঞ এবং পুরাণ ও ধর্ম সংছিতা, ফক্ল, রাক্ষস, ও গান্ধব্য প্রভৃতি কাপালিক দিগা গাভদিগের বর্ণা শুন ধর্ম ও বর্ণ সমস্তই আপনি; হে রঘু পুলব! আপনি সনকাদি মুনিদিগের শ্রেষ্ঠ আপনি অফ্টবস্থ— আপনি তিকাল ও একাদশ কন্তে। হে রঘুনন্দন! আপনি তাবকা ও দশক— সপ্রবীপ ও সমুদ্র—নগ সদ ও ক্রম; হে রঘুনায়ক আপনি স্থাবর ও ক্ষম আপনি দানব দিগের অন্তকাণী; তে রঘুবল্লভ্রাণ

তাপদাঝ্যয়ঃ দিহ্নাঃ সাধ্যাশ্চ মক্তভ্তপা। বিপ্রা বেদান্তথাংযজ্ঞাঃ পুরাণংধর্মাদংহিতানা ১৯৯ वर्गाञ्चमाञ्ज्यां स्त्री वर्गसन्त्री छ रेशवह । যক্ষরাক্ষম গন্ধর্কাদিক পালাদিগগন্ধাদিভিঃ॥ ৭০ ॥ সনকাদিমুনিভোষ্ঠাস্ত্রমেব রছাপুঙ্গব। वमरवाश्रको खग्नः काला अन्द्रा अकाम मान्नु छा । १५ ॥ कांत्रकामभाषिक् हिवद्याय त्रश्चम्मन । সপ্তৰীপাঃ সমুদ্রাশ্চ নগানদ্যস্তথাক্রমাঃ। ৭২।। স্থাবর। জন্মান্চেব ছমেব রঘুনায়ক। দেবতিৰ্য্যঙ্মকুষ্যাণাং দানবানাং তথৈবচ ॥ ৭৩ ॥ মানা পিতা তথা ভাতা ছয়েব রঘুবল্লভ। मर्त्वियाः चः भन्नः खन्ना इनागः मर्व्वत्मवि ॥ १८ ॥ হুসক্ষরং পরং জ্যোতিস্কুমের পুরুষোত্তম। ত্রমেব তারকং ব্রহ্মত্বভোহন্যরেবকিঞ্চন ॥ ৭৫॥ শান্তং সর্ব্বগতং সূক্ষাং পরং জন্মসনাভনম্। রাজীবলোচনং রামং প্রণমামি জগৎপতিম। ৭৬॥

ব্যাস উবাচ।
ততঃ প্রসন্ধঃ জ্রীরামঃ প্রোবাচ ম্নিপ্সবম্।
তুপ্তোহিম্ম মুনিশাদুলি রুণাম্বরমুভ্রমম্॥ ৭৭॥

আপনি মাতা পিতা ও ভাতা—ক্ষাপনি সমস্তই পর্ম বৃক্ষ ও ভবার । ৬১। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৮। ৭৪।

হে পুরুষোত্তম! আপনি আকর ও পরম, আপনি ক্লোতি-শ্বরূপ, আপনি ভারকব্রন্ধ, আপনার অন্য কোনরূপ তত্ত্ব নাই; আপনি শাস্ক, সকল বস্তব অন্তর্গত ও হল্প; আপনি পরং বন্ধ সনাতন ও রাজীবলোচন রামচন্দ্র এবং অগতের পতি, অতএব আপনাকে প্রনিপাত,ক্লবি । ৭৫। ৭৬।

নারদ উনাচ।

যদিতৃপ্থিংদি সর্বজ্ঞ জীরাম করণানিধে।
ত্বমূর্ত্তিদর্শনেনৈর কৃতার্থাংহং চ সর্বদা॥ ৭৮॥
ধন্যাংহং কৃতকৃত্যাংহং পুণ্যােহ্ছং পুরুষোত্তম।
ত্বদ্য মে সফলং জন্মজীবিতং সফলঞ্চমে॥ ৭৯॥
ত্বদ্য মে সফলং জ্ঞানমদ্য মে সফলন্তপঃ।
ত্বদ্য মে সফলং কর্ম্ম ছৎপাদান্তোজ দর্শনাং।
ত্বং পর্যসন্পীতঃ স রামঃ প্রাহ্নার্বম্মান্তা

ব্যাস কহিলেন! অনস্তর জীরামচক্র ভাঁছার শুবজাবণে সাতিশন পরিতৃষ্ট হইরা মুনিপুঞ্চবকে বলিলেন,ছে মুনিশার্দি,ল ! আমি ভোমার শুব আকর্ণন করিয়া যার পর নাই সম্বন্ধ ছই-রাচি অভএব এক্ষণে উক্তম বরপ্রার্থনা কর। ৭৭।

নাবদ কহিলেন। হে সর্বজ্ঞ, ককণামর ত্রীরামচক্রণ যদিও
আপনি আমার প্রতি সন্তুষ্ট ইইরাছেন বট্টে, কিন্তু আলা আপনার মূর্ত্তি সন্দর্শন করিয়া আমি কতক্কতার্থ ইইলাম ; হে
পুরুষোত্তম, আমি ধলা ইইলাম, কতক্তা ইইলাম—আমি প্ণাশীল, অদা আমার জনা ও জীরন স্টুল ইইল ; আপনার পাদপদ্ম দর্শন হেতু অদা আমার জান সার্থক ইইল, ভপশু। স্টুল
ইইল, আমার যাবতীয় কার্য্য স্টুলন প্রদাব করিল, অবিকস্ক
আপনার নাম স্বরণ করিয়া অদা আমার সমস্তই সফল
ইইল, অত্তব ছে রাঘব! আপনার পাদপ্রাক্রপ তরণীতে
যাহাতে আমার দুঢ়া ভক্তি থাকে, ভাহাই প্রদান কর্কর।
অন্তরে রাম্চক্র প্রম্ন পরিভুক্ত ইইয়া নার্দকে কহিলেন। ৭৮।
৭৯।৮০।৮১।

জীরাম উবাচ।

মুনিবর্যমহাভাগ মুনেত্বিষ্টং দদামি তে। যন্ত্রয়া চেপ্সিতং সর্ববং মনসা তন্ত্রবিষাতি । ৮২॥

नात्रम खेवाछ।

বরং নথাচে রঘুনাথ বুশ্মংপাদাজভক্তিঃ সততং মমাস্ত।
ইদং প্রিয়ং নাথবরং প্রফাচে
পুনঃ পুনস্তামিদমেব যাচে॥৮০॥
ব্যাস উবাচ।

ইত্যেবমীড়িতো রামো প্রাদান্ত সৈবরান্তরম্। বিররাম মহাতেজাঃ সচ্চিদানন্দ বিগ্রহঃ ॥ ৮৪॥ অবৈত্যমলং জ্ঞানং ত্বমামশ্বরণং তথা। অন্তর্ধায় জগন্নাথঃ পুরতন্তস্তারাঘ্যঃ॥ ৮৫॥

শীরাম বলিলেন। ছে মুনিশ্রেষ্ঠ মহাভাগ নারদ! আমি ভোষাকে উলাই প্রদান করিলাম। অধিকত্ত তুমি মনে বাছা অভিলাধ করিবে ভোমার ভাছাই প্রফল হউবে। ৮২।

নারদ কছিলেন। হে রবুনাধ! আমি আপনার নিকট অদ্য কোনরূপ বর যাচ্ঞা করি না, কেবল আপনার জীপাদ-কমলে যেন আমার ভক্তি থাকে এই মাত্র প্রিয়বর পুনঃ পুনঃ প্রার্থনা করি। ৮৩।

বাস কছিলেন—নারদকর্ত্বক এইরপ শুত ছইলে সচিদানন্দ অমিততেলা রামচন্দ্র তাঁহাকে অপর একটা বরদান করিলেন যে, অলৈক অমলজ্ঞান এবং ভরাম শরণ ধাকিবে—অনস্তর তাঁহার সম্পৃথেই অগরাথ অন্তর্হিত হইলেন।—রয়ুনাধ রাম-চল্রের এই অফ্ডেম সর্বাদোভাগ্য সম্পান্তি ও মুক্তিপ্রদ এবং ভভমর গুবরাক্ষ ব্রন্ধার পুত্রধারা বেদের সারাংশ হইতে হে দেব! আপনার অভিগৃত্ সেহ যদতঃ প্রক্রীন্তিত হইরাছে। বিনি ক্রিসন্ধ্যা ও শ্রহাবান্ হইরা এই শুব পাঠ বা শ্রবণ করেন ইতি জীরঘুনাথস্যস্ত বরাক্তমত্ত্তমন্।

সর্বাদোভাগ্যসম্পত্তি দারকজুজিদং শুভন্ ॥ ৮৬ ॥

কথিতং ব্রহ্মপুত্রেণ বেদানাং সারঘুজ্ঞমন্ ।

শুভাদস্ভতমং দিব্যং তবমেহাৎপ্রকীর্তিতম্ ॥ ৮৭ ॥

যঃ পঠেচছু পুয়াদ্বাপি জিসন্ধাং শুদ্ধমানিতঃ ।

বেলাহত্যাদিপাপানি তৎসমানি বছুনি চ ॥ ৮৮ ॥

মর্ণস্থেমী হারাপানী শুক্তক্লাঘুতানিচ ।

গোবধাছ্যপপাপানি অনৃতাৎসম্ভবানি চ ॥ ৮৯ ॥

সর্বৈঃ প্রমূচতে পালেঃ কলাম্ত্রশতোদ্ভবৈঃ ।

মানসম্বাদিকং পাপং কর্মাণ্যস্পার্জিভন্ ॥ ৯০ ॥

জীরামম্মরণেনেব তৎক্ষণামশ্যতি গ্রুবন্ ।

ইদং সত্যমিদং সভ্যং সভ্যমেতদিহোচ্যতে ॥ ৯১ ॥

রামং সভ্যং পরংব্রহ্ম রামান্তিক চিম্নবিদ্যতে ।

তত্মান্তামমন্ত্রপোহয়ং সভ্যং সভ্যমিদং করাহ ॥৯২ ॥

শ্রীরামচন্দ্রব্ পুক্ষবরাজবর্ঘ্যরাজ্যের রামরঘুনায়ক রাঘবেশ।
রাজাধিরাজ রঘুনন্দন রামচন্দ্র
দাসোহহ মদ্য ভবতঃ শরবাগতোহন্দ্রি॥৯৩॥

তিমি ব্রহ্মহত্যা এবং গোবধ জানিত পাপ চইতে অথবা মমোগত হউক, বাচনিক হউক, কিখা অপর কর্ম সম্ভূত পাপ হউক, বাবতীয় পাপ হইতে নিফ্তি লাভ করেন; এবং শ্রীরামচক্রকে সরণ করিলে সমুদর কর্মহ তৎক্ষণাৎ ক্ষয়প্রাপ্তি হর, ইকা সর্ক্ষণ পড়া ভাছার সংশ্র মাই।৮৪।৮৫।৮৬।

রাষ্টল পতা ও পর্যবন্ধ, ভিনি ব্যতীত আর কিছুই নাই, শেই জভ সমুদারই রামখন্নপ সুভরাং প্রগৎ সত্য। গ্রীরাম-চন্দ্র রযুবংশলাভ রালাদিধার প্রেট রযুবারক রাঘব প্রগদীখর, বৈদেহী সহিতং স্থ্যক্রমতলেহৈমে মহামগুপে মধ্যে
প্রপ্রকমাসনে মণিময়ে বীরাসনে সংস্থিতম্।
অগ্রেবাচযভিপ্রভং জনস্থুতং তত্ত্বং
মুনীলৈপ্রং ব্যাখ্যাতং ভরতাদিভিঃ
পরিরতং রামং ভজেশ্যামলম্॥ ৯৪॥
রামং রত্নকিরীটকুগুলযুতং কেয়ুরহারান্বিতং
সীতালক্কত্বামভাগ্যমলং সিংহাসনম্থ বিভুম্
স্থাীবাদি হরীশ্বরৈঃ স্থরগণৈঃ সংদেব্যমানং সদা
বিশ্বামিত্রপরাশ্রাদিমুনিভিঃ সংস্কৃয়মানং প্রভুম্ ॥৯৫॥
সকল গুণনিধানং যোগিভিঃস্কুয়মানং

ভূজবিজিতসমানং রাক্ষসেন্দ্রাদিমানম্।
মহিতন্পভয়ানং সীতয়াশোভমানং
স্মৃতক্ষরবিমানং ব্রহ্মরামাভিধানম্॥ ৯৬॥
রঘুবর তবম্র্তির্মামকে মানসাজে
নরকগতিহরং তেনামধেয়ং মুখে মে।
অনিশমতুলভক্ত্যামস্তকং ত্বংপদাজেভবজননিধিময়ং রক্ষমামার্ভবদ্ধো॥ ৯৭॥
রামরত্বমহং বন্দে চিত্রকৃটপতিং হরিম্।
কৌশল্যাভিক্তিসন্তৃতং জানকীকঠভূষণম্॥৯৮
ইতি শ্রীসনংক্মারসংহিতায়াং নারদোক্তং শ্রীরামচক্রস্তবরাজস্তোত্রং সম্পূর্ণম্।

তিনি রাজাদিগের রাজা রযুনন্দন, আমি তাঁহার কিছর অতএব আমি স্মরণাপ্র হইবাম। ৯৩।

ক্রভক (কল্পতক) মৃলহিত ছিরপার মহামওপ মধ্যত্ব কুর্ম ও মণিমর বীরাসনোপবিষ্ট রামচন্দ্রকে এবং যতিপ্রভ কনস্ত ভবযোগিজন কবিত ভরত প্রভৃতি প্রাতৃ চতৃষ্টর পরিবৃত্ত নবদ্ব্যাণলাগাম রঘুমাধকে ভলনা করি। কিরীটি ও কুওলযুত এবং কেয়ুরহার পম্বিত বামপার্খে পবিষ্টানীভালত্বভ স্থানিক গিংহারনোপবিষ্ট বিভ্ রামচন্দ্রকে—আর বিনি স্থানীবাদি বানর প্রেট ও দেবগণনার। নিরন্তর পরিলেব্যনান হটরা বাকেন—মিলি বিবাহিত ও পরাশর প্রভৃতি, মুনিদিপের ভর্মান হটরা বাকেন ক্রামি সেই প্রভৃতি, মুনিদিপের

সকল গুণ নিধান যোগিগণ সংস্কৃত্যমান, দশানন প্রভৃতি রাক্ষসেশব বিজ্ঞিত ভ্রুপণ্ড সমষিত রাজগণপুজিত জনক ভূহিতা
শোভমান শ্বতক্ষদরবিমাল রামাভিধান রগুনাবকে বন্দন।
করি। হে রঘ্বর! আমার মানসাজ মধ্যে আপনার মূর্ত্তি
চিন্তা করি; আপনি নরকগতি হরণ করেন, আমি সংসারাপবে নিমগ্র হইয়া আছি, অভএব অভুল ভক্তি সহকারে
আপনার শ্রীচরণারবিন্দে আমার মন্তক প্রণত করি—আমাকে
রক্ষা করুন; কৌশল্যাভক্তিসভ্ত জানকী কঠাভরণ চিত্তক্তিপতি রামগ্রন্থ শ্রীহরিকে বন্ধনা করি। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮।
ইতি শ্রীসনৎকুষার সংহিতা নারদোক শ্রীরামচন্তের

खद मण्णूर्ग इहेग।

অথ সংক্ষিপ্তমূলরামায়ণপ্রারম্ভঃ।

তপংস্বাধ্যায়নিরতং তপস্বীবাগ্নিদাস্বরম্।
নারদং পরিপপ্রচহ বাল্মীকিমুনিপুঙ্গবম্॥ ১॥
কোষন্মিন্ সাম্পুডং লোকে গুণবান্কশ্চনীর্ঘ্যবান্।
ধর্মজ্ঞশ্চ কৃতজ্ঞশ্চ সত্যবাক্যোদৃঢ়ব্রতঃ ॥ ২॥
চারিব্রেণচ কে৷ যুক্তঃসর্বস্থেতেয়ু কোহিতঃ।
বিদ্যান্কঃ কংসমর্থশ্চ কশ্চৈকঃ প্রিয়দর্শনিঃ॥ ৩॥
আত্মবান্ কে৷ জিতক্রোধো হ্যুভিমান্কো নস্য়কঃ।
কন্সবিভাতিদেবশ্য জাতরোষস্থা সংষুগে॥ ৪॥
এতদিচ্ছামাহং প্রোভুং পরং কোভূহলং হি মে।
মহর্ষেত্রং সমর্থোহিস জ্ঞাভুষেবংবিধং নরম্॥ ৫॥

শ্রুতামিতি চামন্ত্রপ্রস্থার বিরুদ্ধি । ৬॥
বহবো তুর্লভাশ্চের যে ত্ব্বা কীর্ত্তি ভাগাঃ।
মুনেবক্ষ্যাম্যহং বুধ্বাতৈ যুক্তঃ শ্রেম্ব্রাং নরঃ॥ ৭॥
ইক্ষ্যাকুবংশপ্রভবো রামোনামজনৈঃশ্রুতঃ।
নিয়ভান্তা মহাবার্য্যাত্যুতিমান্ধৃতিমারশী॥ ৮॥
বৃদ্ধিমানীতিমারাগ্যা শ্রীমাংচ্ছক্রনিবর্হণঃ।
বিপুলাংনে। মহাবাহুঃ কমুগ্রীবো মহাহুনুঃ॥ ৯॥
মহোরক্ষো মহেম্বানো গৃচজক্রেরনিক্ষঃ।
আজাকুবাহুঃ স্থানাং স্থললাটঃস্বিক্রমঃ॥ ১০॥

मःकिथ्रमूल तामायन।

একদা বালীকি তপংখাধার নিরত তপশী বাগ্বিদাশন মুনিশ্রেষ্ঠ দেবর্থি নারদকে ক্ছিলেন, ছে মুনে! সম্প্রতি এই জগতে গুণবান্ বীর্যাবান্, ধর্মাজ্ঞ, কৃতজ্ঞ, সভাবাক্ ও দৃঢ়ব্রত কোন বাক্তি আছে—ধর্মাচরণযুক্ত ও সর্বজীবের হিতকারী বিদানই বা কে, কেই বা প্রিয়দর্শন, ইহ জগতে কোন্ ব্যক্তি আহ্বান্ ও সমর ক্ষেত্রে জ্রোধকে পরাক্তর করিয়াছেন। আমি সমুদর শ্রবণ করিছে ইচ্ছা করিতেছি, কারণ ঐ সমস্ত ভানিকে আমার যার পর নাই কোত্হল জ্বিয়াছে, ছে মহর্ষে! আপনি এবন্ধি মন্থ্যের বিষয় আয়াকে অবগত করাইতে সক্ষম। ১। ২। ৩। ৪। ৫।

ত্রিলোকজ দেবর্ষি নারদ বাল্যীকির এবত্থকার বাক্য শুবন করিয়া তাঁহাকে সন্তাষণ পূর্কক পরম সন্তোষ প্রদর্শকের বিদলেন, ছে মুনে! তবে শ্রবণ কর। তুমি যে সমস্ত গুনের বিষয় কীর্ত্তন করিয়াছ তৎসমুলার মহুযো সংশ্লিষ্ট থাকা অভি হুর্গত। কিন্ত,ছে মুনে! যে মহুবা ঐ সমস্ত গুণে ভ্বিত আছেন, আমি তাঁহারই বিষয় কহিতেছি শ্রবণ কর—লোকপ্রমুগাৎ শুনিয়াছি ইক্ষাকুবৎশোদ্ধর শ্রীরামচক্র সংযুতাত্মা, মহাবীর ইাতিমান্ ও শ্বতিমান্। তিনি বুদ্মিন্, নীতিমান্, বাগ্মী, শ্রিমান্, শত্রু বিনাশক। তিনি পৃথিবীর অংশভূভ ও মহাবাছ; তাঁহার গ্রীবা শন্ধের স্থায়, রাওত্তলোপরিভাগ প্রশস্ত ; তিনি মহোরত্ব মহাধমুধর, গৃঢ় জক্র, ও অরিন্তান, তাঁহার বাহ জ্ঞান্থদেশ পর্যান্ধ লখমান্, শীর্ষদেশ উক্তম, ললাটপ্রশস্ত ও মহাবিক্রেম্বানী; তাঁহার অক্ সমুদ্র সমভাগে বিভক্ত,

সমঃ সমবিভক্তা সং স্নিশ্ববর্ণ প্রভাপবান্।
পানবক্ষা বিশালাকো লক্ষাবাঞ্ভলক্ষণঃ॥ ১১॥
ধর্মজ্ঞঃ সত্যসক্ষণ প্রজানাঞ্চিতেরতঃ।
যশসীজ্ঞানসম্পূর্ম শুচির্বস্থাঃ সমাধিমান্॥ ১২॥
প্রজাপতি সমঃ শ্রীমান্ধাতারিপুনিস্দনঃ।
রক্ষিতা জীবলোকস্থা ধর্মস্থা পরিরক্ষিতা।॥ ১৩॥
রক্ষিতাস্থা ধর্মস্থা সজনক্ষ চ রক্ষিতা।
বেদবেদাক্ষভন্তভো ধনুর্বেদে চ নিষ্টিতঃ॥ ১৪ ॥
সর্ববিশাস্তার্থ তন্তভঃ স্মৃতিমান্ প্রতিভানবান্।
সর্বিদাহতিগতঃ সন্তিঃ সমুদ্র ইব সিন্ধুতিঃ।
শার্মঃ সর্বাসমশৈচর সদিব প্রিয়দর্শনঃ॥ ১৬॥
স চ সর্বিশ্বমান্থেতঃ কোশল্যানন্দর্কনঃ।
সমন্দ্র ইব গাস্ত্রীর্যো ধ্রের্যোহিমবানির ॥ ১৬॥

বর্ণ সিথাকর, প্রতাপ অসীম, বক্ষঃদেশ উন্নত, নয়ন বিশাল; লক্ষী দেদীপামান্ত লক্ষণ শুভময়। ৩ । ৭ । ৮ । ৯ । ১০ । ১১ ।

ভিনি ধর্মজে, সভ্যসৃত্ধ ও প্রকা সমূহের হিজের জন্ত নিরস্তর নিরস্তর নিরস্ত, ভিনি বশস্থী, জ্ঞানসংপর, শুচি ও সমাধিমান্। ভিনি প্রজ্ঞাপতির সদৃশ্য শ্রীমান্, বিধাতা ও অরিনিস্থলন ; তিনি জ্ঞাব-দিগকে রক্ষা করেন এবং ধর্মও পরিরক্ষণ করিয়। থাকেন, এমন কি আপনার ধর্ম যে ভাবে রক্ষা করেন, স্বজন সমূহের ধর্মও সেই ভাবে রক্ষা করিয়। থাকেন। তিনি যেমন বেদ বেদালদেশী। ওজাপ ধন্থাকোদেও নিষ্ঠিত। তিনি সর্কা শান্তের অর্থভব্জ, স্মৃতিমান্, ও অসাধারণ বৃদ্ধিশালী; সর্কালোকের প্রির্ভ্ত সাধু এবং অদীনাত্মা ও বিচ্কাণ। ১২। ১৯। ১৫।

দিশুর সহিত বেমন সমুদ্র মিণিত হইরাছে, তিনিও তজপ সাধু বাক্তির সহিত সকলা গতিবিধি করিয়া থাকেন,এবং যাবভীর আহাকে সমান ভাবে সকলা দশন করেন। তিনি উঁহোদিগের গ্রিয় দশন, সমস্ত সদ্ গ্রুণে বিভূষত, ক্লোশনার আনন্দ বর্জন,

বিকুনাসদৃশোবীর্য্যে সোমবংপ্রিয়র্শনঃ।
কালাগ্রিসদৃশংক্রোধে ক্ষময়া পৃথিবীসমঃ॥ ১৮॥
ধনদেন সমস্তাবে সত্যে ধর্মইবাপরঃ।
তমেবং গুণসম্পন্নং রামং সত্যপরাক্রমম্॥ ১৯॥
জ্যেষ্ঠং প্রেষ্ঠগুণৈযুক্তং প্রিয়ং দশরথাক্রজম্।
প্রকৃতীনাং হিতৈযুক্তং প্রকৃতি প্রিয়কাময়য় ॥ ২০॥
যৌবরাজ্যেন সংযোক্ত্রমেচ্ছৎ প্রীত্যামহীপতিঃ।
তস্যাভিষেকসম্ভারান্ দৃষ্ট্যা ভার্যাহথ কৈকেয়ী॥২১॥
পূর্বাং দত্তবরাদেবী বরমেনম্যাচত।
বিবাসমঞ্চ রামস্থ ভরতস্যাভিষেচনম্॥ ২২॥
স সত্যবচনাদ্রাজা ধর্মপাশেন সংস্কৃতঃ।
বিবাসয়য়ামাসমূতং রামং দশরথঃ প্রিয়্ময়্॥ ২০॥
স জগাম বনং বীরঃ প্রতিজ্ঞামমুপালয়ন্।
পিতুর্বাচননির্দেশাৎ কৈকেয়্যাঃ প্রিয়্মকারণাৎ॥ ২৪

সমুদ্রের লায় গন্তীর এবং শর্কতের মন্ত অটল। তিনি বীর্ণো বিক্ষরসদৃশা, সুধা বর্ষণে চন্দ্রের সদৃশা, কোধে কালাধির তুলা এবং দীতীকার পৃথিবীর মত ভিলেন। তিনি স্বস্তুত্যাগ বিষয়ে ধনদেবের মত ও সভ্যে ধর্মের তুলা ছিলেন। সভ্যপরাক্রেম রামচক্রই এই সমস্ত গুণসংযুক্ত ছিলেন। প্রকৃতির প্রেরকামনা হেতু মহারাজ দশরবের প্রির জ্যেষ্ঠ পুত্র শীরামই দর্ক লেষ্ঠ গুণে অলহুত ছিলেন। ১৬ । ১৭ । ১৮ । ১৯ । ২০ ।

মহারাজ প্রীত হইয়া রামচন্দ্রকে বৌবরাজ্যে অভিবিক্ত করিতে ইচ্ছা করিলেন, এবং তাঁহার অভিবেক প্রবাদি আরো-জিত হইতে দেখিয়া, রাজমহিষী কৈকেয়ী মহারাজের নিকট পূর্বালীকৃত বরষম প্রার্থনা করিলেন—এক বরে, শ্রীরামের বন-বাদ ও অপর বরে ভরতের রাজ্যাভিষেক। রাজা সত্যরূপ ধর্ম-পালে আবন্ধ থাকায় প্রিয়পুত্র রামচন্দ্রকে বনে নিক্ষাসন করিলেন। মহাবীর রামচন্দ্র পিতার আদেশ ও কৈকেয়ীর প্রিয়কারণ হেতু তং ব্রজন্তং প্রিয়োত্রাতা লক্ষ্মণোসুজগামহ॥
স্ক্রোনিয়সম্পন্ধঃ স্থানিবানন্দবর্দ্ধনঃ॥ ২৫॥
ভাতরং দয়িতোভ্রাতুঃ স্নোভ্রাত্রমনুদর্শয়ন্।
রামস্ত দয়িতোভ্রাতুঃ স্থানিত্রমনুদর্শয়নঃ॥ ২৬॥
জনকস্ত কুলেজাতা দেবমায়ৈর নির্ম্মিতা।
সর্বলক্ষণসম্পন্ধা নারীণামুভ্রমাবধূঃ॥ ২৭॥
সীতাপ্যনুগভারামং শশ্লনং রোহিণী যথা।
পৌরৈরনুগতে দূরং পিত্রা দশর্থেন চ॥ ২৮॥
শৃঙ্গবেরপুরে সূতং গঙ্গাকূলে বাসর্জ্রয়ং।
গুহমাসাদ্য ধর্মাত্মা নিষাদাধিপতিং প্রিয়ম্॥ ২৯॥
গুহেন সহিত্যোরামো লক্ষ্মণেন চ সীত্রয়।
তে বনেন বনং গড়া নদীন্তীত্বা বহুদকাঃ॥ ৩০॥
চিত্রকৃট্যনুপ্রাপ্য ভরদ্যাজ্যত্ত শাসনাং।
রম্যাবস্থাং কুষ্য রম্মাণা বনে ত্রয়ঃ॥ ৩১॥

দেবগন্ধর্বসক্ষাশা স্ত্রতে বেসক্ষুথ্ম।

চিত্রকুটং গতে রামে পুত্রশোকাত্রস্তদা ॥ ৩২ ॥

রাজা দশরথং স্বর্গং জ্বাম বিলপকাতুম্।

মৃত্রে তু তাম্মিন্ ভরতো বশিষ্ঠপ্রমুখৈদ্বি কৈঃ ॥ ৩৩॥

নিযুজ্যমানো রাজ্যায়

নৈজ্জাজ্যং মহাবলঃ

স জ্বাম বনং বীরো

রামপাদপ্রসাদকঃ ॥ ৩৪ ॥

গত্তুমহাত্মানং রামং সত্যপরাক্রমম্।

অযাচদ্জ্যতরং রামমার্জ্জনামপুরস্কৃত্ম্॥ ৩৫ ॥

তথ্যেব রাজা ধর্মজ্ঞ ইতি রামং বচোহত্রবীৎ।

রামোহপি পরমোদারঃ স্থুম্থঃ স্থমহায়শাঃ॥ ৩৬ ॥

নচৈচ্ছৎ পিতৃরাদেশাদ্রাজ্যং রামে। মহাবলঃ।
পাত্তকচাস্য বাজ্যায়ন্যাসং দ্বা পুনঃ পুনঃ॥ ৩৭ ॥

বনে শ্রন্থান করিলেন। বিনয়সম্পন্ন স্থামিজানন্দবর্দ্ধন রামান্থল লক্ষণ প্রিন্ন জাতাকে বনগমনোদ্যক্ত দেখিরা তাঁহার অনুগমন করিলেন। শ্রীরামচন্দ্রের প্রণায়নী জনকবংশোদ্ধবা দেবমারা নিশ্মিজা, সর্ববিক্ষণ সম্পন্না, নারীপ্রেন্ড। জামকী লক্ষণের সৌভ্রাজ্ত সন্দর্শন করিয়া, রেমহিণী যেমন নিশাকরের অনুগামিনী হইয়াছিলন, তজেপ শ্রীরামের পশ্চাস্গামিনী হইলেন এবং প্রবাসীয়া ও তাঁহার পিতা দশরশুও কিয়দ্ধুর পর্যাক্ত তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়া গুহকে প্রাপ্ত হইয়া গলাতীরত্ব শ্রন্থারে প্রের পুত্রেক পরিজ্যাল করিলেন । ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। । ২৬। ২৭। ২৮। ২৯।

রামচন্দ্র গুহ, কল্মণ ও সীতার সহিত বছবন তীর্থ ও জলাশর অভিক্রম করিয়া পরিশেষে ভরদ্বাক নির্দিষ্ট চিত্রকৃট পর্ক্ষতে
উপস্থিত হইয়া, ভ্রম্য আবাস নির্দাণ করিয়া ভল্পায়ে বাস

করিতে লাগিলেন। দেবতা গন্ধর্ম সকাশ প্রভৃতি চিত্রকৃত পর্বতে পরম স্থাধ বাস করিতেন। রামচন্দ্র চিত্রকৃত শিথরে প্রদান করিলে পর, রাজা দশরধপ্রশোকে বিহবণ হইয়া জীবন পরিহার পূর্বকৈ অর্গে গমন করিলেন। অনস্তর বলিষ্টাদি রাজ্মণের। ভরতকে রাজ্যাভিষিক্ত করিবার নিমিত্র সক্ষণ্ণ করিলে, তিনি রাজ্যভোগ করিতে অনিচ্ছা প্রকাশ করিয়া জোষ্টের পদ প্রসাদের জন্য বনোদ্ধেশ প্রস্থান করিলেন তেন্তঃ। ৩২০০০০৪। ভরত সভ্যপরাক্রম মহাক্ষা রামচন্দ্রের নিক্ত উপনীত হইয়া অত্যেক্ষমা প্রার্থনা করিয়া কহিলেন, হে তাত। আপনিই রাজ্যা ও ধর্মাক্র। রামচন্দ্রত বার পর নাই উদার চরিত্রে, মিইভামী ও মহামালা; এক্ষণে পিন্টার আদেশক্রমে বনরামন করিয়াছেন, স্তরাং পুনর্বার রাজ্যভোগ করিতে ইচ্ছুক হইলেন না। পরে

ভরতের মন্তক্ষাণ পূর্কক জাপনার পাতৃকা প্রদান করিয়া

নিবর্তমানাস ততো ভরতং ভরতাগ্রহঃ।

স তু কামনবালৈবে রামপাদাবুপস্পূপন্ ॥ ১৮॥
নন্দি গ্রাথেইকরোন্ধাজ্যং রামাপমনকাজ্জয়া।
গতেতু ভরতে শ্রীমান্সতাসক্ষোজিতেক্রিয়:॥ ৩৯॥
রামস্ত পুনরালক্ষ্য নাগরস্থ জনস্য চ।
তত্রাগমননেকাথ্যো দশুকান্ প্রবিবেশহ ॥ ৪০॥
প্রবিশ্যতু মহাইরব্যং রামো রাজীবলোচনঃ।
বিরাধং রাক্ষ্যং হলা শরভঙ্গং দদর্শহ ॥ ৪১॥
স্থতীক্ষ্পপ্রাপত্তাক অগন্তাভ্রাতরং তথা।
অগল্ডাবচনাচৈত্র জগ্রাহৈক্রশ্রাসন্ম্॥ ৪২॥
থত্যাক পরমং প্রতিশুলীচাক্ষরসায়কো।
বসতন্তস্য রাম্যা বনে বনচরিঃ সহ ॥ ৪০॥
খব্যোভ্যাগমন্তস্বের বধায়ান্মররক্ষসাম্।
স তেষাংপ্রতিশুলার রাক্ষ্যানাং তথা বনে ॥ ৪৪॥

প্রতিজ্ঞাতশ্চ রামেণ বধঃসংযতিরক্ষসাম্ !

থাবীণামগ্রিকল্লানাং দণ্ডকারণ্যবাসিনাম্ ॥ ৪৫ ॥

তেন তত্ত্বিব বসতা জনস্থাননিবাসিনী ।

নিরূপিতা শূর্পণথা রাক্ষসীকামরূপেণী ॥ ৪৬ ॥

ততঃ শূর্পণথাবাক্যাত্ত্বাক্তান্তস্ব্রাক্ষসান্ ।

খরং ত্রিশিরসকৈব দ্যণকৈব রাক্ষসম্ ॥ ৪৭ ॥

নিজঘান রণে রামন্তেষাকৈব পদামুগান্ ।

বনে তত্মিরিনবসতা জনস্থাননিবাসিনাম্ ॥ ৪৮ ॥

রক্ষসাং নিহতান্যাসভসহস্রাণি চতুর্দশ ।

ততে। জ্ঞাতিবধং প্রুচ্ছা রাবশঃ ক্রোধম্ন্তিতঃ ॥ ৪৯॥

সহায়ং বরয়ামাস মারীচং নামরাক্ষসম্ ।

বার্যমাণঃ মুবছনো আরীচেন স রাবণঃ ॥ ৫০ ॥

ন বিরোধো বলবতাক্ষমো রাবণ তেন তে।

খনাদৃত্য তু ভদ্বাক্যং রাবণঃ কালচোদিতঃ ॥৫১ ॥

থনাদৃত্য তু ভদ্বাক্যং রাবণঃ কালচোদিতঃ ॥৫১ ॥

ভরতাগ্রজ রামচক্ষ ভরতকে নিবৃত্ত করিলেন এবং সভাসক, জিভেলির রামানুজ শ্রীমান্ ভরতও অপ্রক্ষের পাকস্পর্শ করিয়। নন্দিগ্রামে অবস্থান পূর্বক শ্রীরামের প্রত্যাবর্তনের প্রতীক্ষা করিয়া তথার রাজ্যভোগ করিছে লাগিলেন। শ্রীরাম পুনর্ব্বার নাগরিক লোকদিগতে তথার আগেমন করিতে দেখিয়া, চিত্রকৃট পরিস্তাগ পূর্বক দওকারণ্যে প্রবেশ করিলেন। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৩১। ৩১। ৩১।

রাজীবলোচন রাখব দণ্ডকারণ্যে প্রবেশ করিয়াই বিরাধ নামক রাক্ষসকে বিনাশ পূর্ব্ধক শর্ভক্ষকে দর্শন করিলেন। অনস্তর তিনি স্তীক্ষ্, অগজ্য ও অগস্তা ব্রাকাকে দর্শন করিলা, অগস্তোর বাক্যামুসারে ইন্দ্রশাসন গ্রহণ করিলেন; এবং অপর বড়ল, অক্ষয়ত্নীর ও সায়কগ্রহণ পূর্বক বনচরদিপের সহিত বাস করিতে গালিলেন। অনস্তর বাহ্নির রাক্ষ্য-পুরদিগকে ধ্বংস করিবার নিমিক্ত প্রীরাস সরিধানে কাগমন করিতে গাণিকেন। তিনিও উাহাদিগের মুখে তত্ত্তা রাক্ষস সমুহের কথা প্রবণ করিয়া, দশুকারণাবাসী অগ্নিকপা ঋষিদিগের সমক্ষে রাক্ষস বধের প্রতিজ্ঞা করিলেন ।৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫।

পরে তিনি জনস্থান নিবাসিনী থামরূপা শূর্পণথানামী রাক্ষসীকে লক্ষ্য করিলেন; অনস্তর শূর্পণথার বাক্ষোত্তিক্তি হইরা
খর,দ্বণ এবং ত্রিশিরা শ্রীরামের সঙ্গে যুদ্ধমানসে আগমন করিলে,
তিনি ভাহাদিগকে অমুচরগণ সমেত সংগ্রামে নিহত করিলেন।
সেই জন-স্থান নিবাসী চতুর্দশ সহস্র রাক্ষ্য এবং জ্ঞাতি বধ প্রবণ
করিয়া মহাতৃদ্দিশ রাবণ জোধে মৃচ্ছিত হইল। জনস্তর লক্ষাধিপতি মানীচনামক রাক্ষ্যকে বরপ্রদান পূর্বক ভাহার সহায়তা
করিতে অভিলাধ প্রকাশ করিল। মারীচ কহিল—হে ন্ধাবণ!
বলবানের সহিত বিরোধ করা কোনমতে উচিত নহেই। কিছ
মহাকাল প্রেরিড বাবণ ভাহার ব্যক্য জনাদ্ধ করিয়া তৎসহ

জনাম দহ মারীচন্ত সাঞ্জেম পদং তদা।
তেন মায়াবিনা দ্রমপবাছন পাল্পজে ॥ ৫২
জহার ভার্যাং রামসা গৃধুং হলা জটারুষং।
গৃধং চ নিহতং দৃষ্ট্রা ক্ষতাং শুরুল চ মৈথিলীং।
রাঘবং শোকসন্তপ্তো বিললাপাকুলেন্দ্রিয়ঃ।
ততন্তেনৈব শোকেন গৃধুং দয়্যা জটায়ুষং॥ ৫৪
মার্গমাণো বনে সীভাং রাক্ষসং সন্দদর্শই।
কবন্ধং নামরূপেন বিকৃতং খোরদর্শনমং॥ ৫৫॥
তং নিহন্তা মহাবান্থ দ্দাহ স্থর্গতন্দ সঃ।
স চাস্য কথ্যামাস শবরীং ধর্ম্মচারিনীমং॥ ৫৬॥
শ্রমণীং ধর্ম্মনিপুণামভিগচ্ছেতি রাঘবমং।
সোহভিপচ্ছমহাতেন্ধাঃ শবরীং শক্রেস্থ্দনঃ॥ ৫৭
শবর্যা পৃদ্ধিতঃ সমা্রামো দশর্থা ক্রজঃ।
পাল্পাভীরে হন্মভা সঙ্গভো বানরেণ্ড ॥ ৫৮॥

হত্মমন্বচনাকৈব স্থানীবেণ সমাগমঃ।

স্থানীবায় চ তৎসর্কাং শংসদ্রামো মহাবলঃ ॥ ৫৯ ॥

আদিতস্তদ্যধারতং সীতায়াশ্চ বিশেষতঃ।

স্থানিশ্চাপি তৎসর্কাং শ্রুণ্ডা রাম্ন্য বানরঃ॥ ৬০ ॥

চকার স্থ্যং রামেণ প্রীতশৈচনায়ি সান্দিকং।

ততো বানররাক্ষেননৈরাস্ক্রথনং প্রতি॥ ৬১ ॥

রামায়াবেদিতং সর্কাং প্রণয়া ছুঃথিতেন চ।

প্রতিজ্ঞাতং চ রামেশ তদা বালিবধং প্রতি॥ ৬২ ॥

বালিনশ্চ বলং তত্র কথয়ামান বানরঃ।

স্থানীবঃ শৃক্ষিতশ্চানীন্নিত্যং বার্যোণ রাঘ্যে ৬৩

স্থানি প্রত্যার্থস্ত স্থলুভেং কায়মূত্রমং।

দর্শয়মান স্থানে। মহাপর্কাত্মন্নিভং ॥ ৬৪ ॥

উৎস্থারিশ্য মহাবাহ্যং প্রেক্ষচান্থিং মহাবলঃ।

পাদাসুষ্টেন চিক্ষেপ সম্পূর্ণং দশ্যোজনং॥ ৬৫

সেইআতিমপদে উপনীত হইল। আনস্তর মাধীন বাককুমাব ধরকে মারাধার। দূরে আনয়ন করিলে রাবণ বামচন্দের পত্নী সীভাকে হরণ করিল, ও পথিমধ্যে গ্ধুবাচ ভটায়ুকে নিহত করিয়াছিল। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২।

জীরামচন্দ্র পৃধুরাল বিনষ্ট এবং মৈবিলী অপহ্ন চা চইরাছে বাবণ করিলা বার পর নাই শোকার্স্ত হইলা আকুলচিত্তে বিলাপ করিছে লাগিলেন। ভিনি ছংসহ শোক সম্বর্ধ চইলেও গুনুরাজ কটায়ুর অলিসংস্কার করিলেন। অনন্তর বনে বাইকে যাইতে পথিমধ্যে খোরদর্শন বিক্ততিরূপ কবনকে দেখিতে পাইলেন, এবং মহাবাস্থ ভালাকে নিহত করিলা দাহ করিলেন। সে স্বর্ণে প্রস্থান কালে ধর্মচারিণী শ্বরীকে কহিল—অলি ধর্মানিপুণে! ভূমি রামচন্দ্রমাণে গমন কর। ইতিমধ্যে শক্রনিধনকারী মহাতেজ্ঞা রামচন্দ্র শ্বরীর নিকট গমন করিতে করিছে গমনপথে ভদ্যবা

বানবরণী হতুমানের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইল ও হতুমানের বচনে স্থ্রীবের সহিত তাঁহার সমাগম হইল। মহাবল রঘুনক্ষন নিক্ষের আমুপুর্নিক সমস্ত বিষর্গ স্থ্রীবকে বলিলেন ; বিশেষতঃ সীতাঁর আদ্যোপান্ত র্জ্ঞান্ত অবগড করাইলেন। মহাকণি স্থ্রীব জীরামের বাকা প্রবণ করণান্তরে অগ্নিসাফি করিয়া ভাঁহার সহিত সন্ধ্যকা স্থ্রে বদ হইল। কণিবর প্রশার তাঁহার সহিত সন্ধ্যকা স্থ্রে বদ হইল। কণিবর প্রশার নিকট নিবেদন করিল,রঘুনাবও তথন তৎসমক্ষে বালিবধের প্রতিক্ষা করিলেন। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬।। ৫৭। ৫৮।। ৫৭। ৫৮।। ৫০। ৬০। ৬১। ৬১। ৬১। ৬৪।

বানর বালির বন বিষয় সর্বেদাই বলিত এবং রাষ্ট্রের বীর্ষাসম্বন্ধে সন্দেহ করিছে লাগিল। অনকর স্থাীব ভাঁছার বসপ্রতারের জন্য মহাপর্বত সমূদ হন্দুভির উত্তম, দেহ সন্দর্শন করাইল; মহারাহ মহারল রাঘ্য উথিত হইয়া ভাহার

1--

বিভেদ চ পুনস্তালান্ সব্তৈকেন মহেষুণা।
গিরিং রসাতলং চৈব জনয়ন্ প্রত্যয়ং ভদা॥ ৬৬॥
ততঃ প্রীমতনাস্তেন বিশ্বস্তঃ স মহাকপিঃ।
কিছিন্ধাং রামসহিতো জগাম চ গুহাং তদা॥ ৬৭
ততো গর্জন্ধবিবরঃ স্থগ্রীবো হেমপিঙ্গলঃ।
তেন নাদেন মহতা নির্জামে হরীশ্বরং॥ ৬৮॥
অবমন্য তদা তারাং স্থগ্রীবেণ সমাগভঃ।
নিক্ষান চ তত্তিবং শ্রেণৈকেন রাঘবং॥ ৬৯॥
ততঃ স্থগ্রীব বচনাদ্ধত্বা বালিনমাহবে।
স্থগ্রীব্যেষ তলাজ্যে রাঘবং প্রত্যপাদয়ৎ॥ ৭০॥
স চ সর্বান্ সমানীয় বানরান্বানরর্বভঃ।
দিশঃ প্রস্থামাদ দিদ্কুর্জনকাত্যজাম্॥ ৭১॥
ততে। গৃধুস্থ বচনাৎ সম্পাতেইনুমান্ বলী।
শতযোজনবিস্থার্ণং পুগুবে লবণার্ণবম্॥ ৭২॥

তত্ত লক্ষাং সমাসাদ্য পুরীং রাবণপালিতাম্।
দদর্শ সীতাং ধায়ন্তীমশোকবনিকাগতাম্। ৭০॥
নিবেদয়িত্বাভিজ্ঞানং প্রবৃত্তিং বিনিবেদ্য চ।
সমাশ্বাস্থ চ বৈদেহীং মর্দরামাস তোরণম্। ৭ ॥
পক্ষসেনাগ্রগান্ হত্বা সপ্তমন্ত্রিস্থতানপি।
শ্রমক্ষঞ্চ নিম্পিষ্য গ্রহণে সমুপাগতম্ ॥ ৭৫॥
অস্ত্রেণোমুক্তমাত্মানং জ্ঞাত্বাপৈতামহাদ্বরাৎ।
মর্ষয়ন্ রাক্ষসান্ বীরোমন্ত্রিণস্তান দৃছয়া॥ ৭৬॥
ততে। দঝা পুরীং লক্ষামতে সীতাঞ্চ মৈথিলীম্।
রামায় প্রিয়মাখ্যাত্বং পুনরায়ান্ মহাকপিঃ ॥ ৭৭॥
গোহভিগম্য মহাত্মানং কত্বা রামং প্রদক্ষিণম্।
ন্যবেদয়দ্ময়াত্মা দৃক্টা সীতেতি তত্ত্বতঃ ॥ ৭৮॥
ততঃ স্থ্যীবসহিতো গত্বা তীরং মহোদধেঃ।
সমুদ্রং ক্ষোভয়ামাস শরৈরাদিত্য সন্ধিভঃ॥ ৭৯॥

অন্ধি দর্শন করিয়া পাদাস্ত্রীরা। দশবোকন দূরে নিকেপ করিলেন এবং পুনব্রীর বাণবারা সগুভালভেদ করিলেন। বাণ সপ্তাল ভেদ করিয়া গিরি ভেদ করজঃ রসাভলে প্রবেশ করিল, তথন স্থীবের দৃঢ়প্রতার জ্ঞান্ত্রল; জনস্তর মহাকপি সমাক বিশ্বস্থ ছইরা অভিপ্রীতমনে রাষ্ববের সহিত কিছিলার বামন করিয়া গুহার প্রবেশ করিলেন। ৬৫। ৬৬। ৬৭।

অন্তর পিক্সরর্গ মহাকপি স্থাীর সিংহনাদ করিলে, ক্লপীশ্বর বালি ঐ নিনাদ আকর্ণন করিয়া বহিগত হইলেন এবং
তাবার বাকা উপেকা করিয়া স্থাীবের সহিত সংগ্রামে প্রার্ভ
হইলেন রাঘর স্থাীবের বাক্যাস্থারে এক শরে বালিকে
বিনাশ করিয়া স্থাীবকে কিছিলা রাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন।
স্থাীব রাজসিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত হইয়া জনকত্হিতার অস্থেমণার্থ বান্ত্রস্ক্তে চারিশিকে প্রেরণ করিলেন। মহাবলী

হন্মান গৃধু সম্পাতির বচনে শত বোজন বিভীর্ণ লবণ সমূদ্র উল্লেখন করিল এবং সমূদ্র উত্তীর্ণ ছইরা রাবণ--- পালিভা লক্কাপুরী দেখিতে পাইল। অভঃপর অন্যোকবনোপবিফা চিন্তাকুলা সীতাকে দশ্ল করিল। ১৮। ১৯। ৭০। ৭১। ৭২।

হত্বমান বৈদেহীকে অভিজ্ঞানস্চক নিদর্শন প্রদর্শন করিয়া তাঁহার অবেষণ বার্জা বিজ্ঞাপন করিল এবং আখাদ প্রদান করিয়া তোরণছার ভগ্ন করিল; পরে পাঁচটী প্রধান সেনাধ্যক্ষকে নিপাত ও আর সাত মিরি স্কুটকে নিছ্ফ করণানস্তর রাবণের তিন পুত্রকে বিনষ্ট করিল। পরি-শেষে মহাশ্ব অক্ষর্মারকে উপনীত দেখিরা ভাষাকে নিম্পে-বিত করিল। মহাবীর হ্নুমান অস্ত্রোল্যক্ত কানিরাও রাক্ষদ এবং সরিদিগকে ক্ষমা করিল; এবং মৈথিনী বাতীত দর্শরামাস চান্তানং সমুদ্রং সরিতাং পতিঃ।
সমুদ্রবচনাট্চেব নলঃ সেতু মকারয়ৎ ॥৮০॥
তেন গন্ধা পুরীং লঙ্কাং হন্তা রাবণমাহবে।
রামং সীতামকুপ্রাপ্য পরাংব্রীড়ামুপাগমৎ॥৮১॥
তামুবাচ ততো রামং পুরুষং জনসংসদি।
তামুবাচ ততো রামং পুরুষং জনসংসদি।
তামুবামাণা সা সীতা বিবেশ জলনং সতী॥৮২॥
ততোহিমি বচনাৎ সীতাং জ্রান্থা বিগতকল্মমান্।
কর্মণা তেন মহতা ত্রৈলোক্যং স চরাচরম্॥৮৩॥
স দেবর্ষিগণং তুন্তং রাঘবস্য মহাল্মনঃ।
বভৌরামঃ স্কুসংহান্তঃ পূজিতঃ সর্ব্বদৈবতৈঃ॥৮৪॥
অভিবিচ্য চ লঙ্কায়াং রাক্ষসেন্দ্রং বিভীষণম্।
কৃতকৃত্যস্তদারামো বিজ্বঃ প্রমুমোদ হ॥৮৫॥

সমূদায় লক্ষাপুরী দগ্ধ করিয়া রামচক্সকে সমস্ত বৃক্তান্ত অবগত করিবার নিমিত আরাম সরিধানে প্রত্যাসমন করিল। ক্রুমান মহাক্সা রাঘবের নিকট উপনীত হইরা ওঁগহাকে প্রদক্ষিণপূর্ণক সীভাদশন ও লঙ্কাদগ্ধ বিষয় আফুপূর্ব্বিক নিবেদন করিল। রামচক্র স্থাবির সহিত মহাসমৃদ্ধের তীরে উপনীত হইয়া আদিতাসন্তি শর্মারা সম্জ বিক্ষোভিত করিতে লানিলেন, পরে স্রিৎপতি স্বয়ং উথিত হইরা দশন দিলেন। এবং সম্ক্রবচনে নল সেতু নিশ্মাণ করিল। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯।৮০।

রামচন্দ্র সেই সেতু দিয়া লক্ষাপুরী গমন পূর্বক রণক্ষেত্রে রাবণকে বিনাশ করিয়া সীতাকে প্রাপ্ত হইলেন বটে, কিন্তু যার পর নাই ত্রপাসংবৃদ্ধ হইলেন। তিনি লোকসভামধ্যে দীতাকে আত্ম বিষয় জিজাসা করিলেন, নিপাপা সাধ্বী জনক-ছহিতা জ্বলন্তপাবক মধ্যে প্রবেশ করিলেন। খ্রীরাম আগ্রির বাক্যামুসারে তাঁহাকে বিগতপাপা অবগত ছইলেন এবং দীতার সেই কর্ম্মে ত্র্পি মন্ত্রিও পাতাল্য সকলেই তাঁহাকে পাপবিহীনা জানিল। পরে দেবর্ষিগণ মহাত্মা খ্রীরামের প্রতি পরিতৃষ্ট হইলে সমস্ত্র দেবতা কর্তৃক তিনি প্রতিত হইলেন;

দেবতাভ্যো বরং প্রাপা সমুখাপা চ বানরান্।
অযোধাং প্রস্থিতো রামঃ পুষ্পাকেণ স্থল্ব কঃ ॥৮৬
ভরদ্ধাজাপ্রমং গন্ধা রামঃ সত্যপরাক্রমঃ।
ভরতস্যান্তিকং রামো হমুমন্তংব্যসর্জয়ৎ ॥ ৮৭ ॥
পুনরাথায়িকাং জল্পন্ স্থারীবসহিতস্তদা।
পুষ্পাকং তৎসমাক্রন্থ নিদ্যামং যযৌ ভদা ॥ ৮৮ ॥
নন্দিগ্রামে জটাং হিন্ব। প্রাভৃতিঃসহিতোহনন্যঃ।
রামঃ দীতামনুপ্রাপ্য রাজ্যং পুনরবাপ্রবান্ ॥ ৮৯ ॥
প্রস্থাদতোলোকস্তক্তঃ পুক্তঃ স্থান্মিকঃ।
নিরাময়েছে রোগশ্চ তুর্ভিক্ষভরবর্জিতঃ ॥ ৯০ ॥
ন পুক্রমরণং কেচিদ্ দ্রাক্রান্তি পুরুষাঃকচিৎ।
নার্যাশ্চা বিধব। নিতাং ভবিষ্যন্তি পতিব্রতাঃ ॥ ৯১ ॥
ন চামিজং ভয়ং কিঞ্জিলাপ ত্রক্রতং তথা ॥ ৯২ ॥
ন বাতজং ভয়িক্রিলাপি জ্বক্রতং তথা ॥ ৯২ ॥

অন্তর রঘুমাথ রাজনেজ বিভীবণকে সঙ্কারাজ্যে অভিধিক করিয়া বিগভ্জার হটয়া কুড্কুছা হইলেশ ।৮১।৮২।৮৩। ।৮৪।৮৫।

অরিনিস্দন রামচন্দ্র দেবতাদিগের বরপ্রাপ্ত ইইয়া সমুদার মিতত বানরদিগকে পুমন্ধীবিত করিয়া পরে স্বস্থাপ পরিব্রত তইয়া পূলাকরথে আরোহণ পূর্বক অযোধাাভিমুখে গ্রন্থ করিলেন। সত্যপরাক্রম রামচন্দ্র ভরহাজাল্লমে উপনীত হইয়া অভ্যক্ত ভরতের নিকট ছমুমানকে প্রেরণ করিলেন। পরে ভাষার প্রভাবর্ত্তনে রাঘ্যর স্থগীবসহ পুস্পকরণে আরোহণ করিয়া মন্দ্রিপ্রামে প্রস্থান করিলেন। তথার উপনীত হইয়া অন্য রাম্চল্র লাভ্যম্য জন্টা পরিভ্যাগ করিলেন এবং সীতাকে প্রাপ্ত ইইয়া পুনর্ব্বারে রাজ্য ভোগ করিতে লাগিলেল। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ১০। ১১।

वाषान्त्र, महायम मण्यान, व्यक्तकेष्ठित, পরিতৃষ্ট এবং ক্রধা-

নচাপি কুছুরং তত্ত ন তক্ষরভয়ং তথা।
নগরাণি চ রাষ্ট্রাণি ধনধন্যযুতানি চ ॥ ৯৩॥
নিতাং প্রমুদিতাঃ সর্বের যথা কৃতমুগে তথা।
অশ্বনেধশতৈরিফী বহুবস্ত স্থবর্গকৈঃ ॥ ৯৪॥
গবাং কোটিযুতং দত্বা ব্রহ্মালোকং গমিষ্যতি।
অসংখ্যেয়ং ধনং দত্বা ব্রাহ্মাণেভ্যো মহাযুশাঃ ॥ ৯৫ ॥
রাজবংশাচ্ছতগুণান্ স্থাপয়িষ্যতি রাঘবঃ।
চাতুর্বের্গিঃ চ লোকেহিমান স্বেস্থে ধর্ম্মে নিয়োক্ষতি।
দশবর্ষসহস্রাণি দশবর্ষশতানি চ।
রামে। রাজ্যমুপাগিত্বা ব্রহ্মালোকং গমিষ্যতি॥ ৯৭ ॥

ইদং পবিত্রং পাপত্রং পুণাং বেদৈশ্চ সন্মিতম্।

যঃ পঠেদ্রামচরিতং সর্ববিপাপেঃ প্রমূচ্যতে ॥ ৯৮ ॥

এতদাখ্যানমায়ুষ্যং পঠন্ রামায়ণং নরঃ।

সপুত্রপৌত্রঃ সগণঃ প্রেত্য স্বর্গে মহীয়তে ॥ ৯৯ ॥

পঠন্দ্বিজে। বাগ্যভত্বমীয়াৎ

পঠান্দ্ৰ বোগ্যভত্বমায়াৎ
ক্ষত্ৰস্তথাভূমিপতিত্বমায়াৎ।
বিণিগ্ভনঃ শস্তফলত্বমীয়াভ্জনশ্চশৃডোহপি মহত্বমীয়াৎ॥ ১০০॥

ইত্যার্ঘে শ্রীমন্ত্রামায়ণে বাল্মিকীয়ে আদিকাব্যে নারদবাকো সংক্ষিপ্তঃ প্রথমঃ সর্গঃ॥ ১॥

শ্বিক হইরা উঠিল। আমার বোগ ও তুর্ভিক্ষ ভয় দুরীভূত ১টল। পুরের মৃত্যু আগর কাহাকে দেখিতে হইল না। প্রতিব্রতা স্বী আর বিধবা হইল না। অমি হইতে কোমরূপ ভর থাকিল না। জ্বন্ত সমূহ গলে আর নিমগ্ন ইইবে না, বাত হইতে আর কোন ভয় নাই এবং জরা আগর কাহাকেও আক্রমণ করিবে না। নগর ও রাষ্ট্রসমূহ ধন ধানাযুক্ত হইল; সকলেই নিভা বহুবস্তাও স্বর্গ সমাযুক্ত অখমেধের যজ্ঞ সমাহিত করিবে। পোক সমূহ ব্যাক্ষণিগকে কোটি কোটি ধেমু এবং অসভ্যা ধনদান করিয়া ব্রহ্মলোকে গমন করিবে। ১০। ১১। ৯২। ৯০।

রঘুনাধ রাজবংশ হইতে শততাণ রাজ্য সংস্থাপন করিলেন

এবং ইহলোকে চারি বর্ণকে স্থ স্থ ধর্মে নিরোক্তেকরিলেন, তিনিদশসহল ও দশ শত বংসর রাজা ভোগ করিয়া ব্রহ্মলোকে গমন করেন, যে বাজি এই বেদ সন্মিত পাপদ্ম পরম প্রিত্ত শীরামচরিত্র শ্রবণ করে দে সর্ক্রপাপ হইছে বিমুক্ত হইরা যার, মনুষা এই রামারণ আখ্যান পাঠ করিয়া সপুত্র পৌত্র ভ সজন পরিবৃত্ত হইরা স্থর্গে গমন করে। ত্রাহ্মণ পাঠ করিলে থামীজা প্রাপ্ত হরেন, ক্ষত্রির ভূমিপতিত্ব লাভ করেন, বিশ্ব শাসা ও কলপ্রাপ্ত হর এবং শৃত্রও মহত্বপাস্ত করে। ৯৬।

ইতি বালিকীর আদি কাব্যে রামায়ণে নারদ প্রোক্ত সংক্ষিপ্ত প্রথমত্বর্গ সমাপ্ত।

অথ রামাফপ্রারম্ভঃ

ভক্তে বিশেষহৃন্দরং সমস্তপাপথগুনম্।

অভক্তিভরঞ্জনং সদৈব রামমন্বয়ম্॥ ১॥

অভক্তিভরঞ্জনং ভক্তেং সমস্তপাপনাশনম্।

অভক্তিভিঞ্জনং ভক্তেং রামমন্বয়ম্॥ ২॥

নিজস্বরূপবাধকং রূপাকরং ভবাপহম্।

সমং শিবং নিরঞ্জনং ভক্তেং রামমন্বয়ম্॥ ৩॥

সপ্রপঞ্চকল্লিভং হানামরূপবাস্তবম্।

নিরাকৃতিং নিরাময়ং ভক্তেং রামমন্বয়ম্॥ ৪।

নিপ্রপঞ্চ নির্কিক্ল নির্মাণ্ড নিরাময়ং।

চিদেকরূপং সভতং ভক্তেং রামমন্বয়ং॥ ৫॥

রামাষ্ঠক প্রারম্ভঃ।

যিনি পারম স্থান্দর ও সমুদার পাপ থওন করেন, যিনি আপনার ভক্তজনের হৃদর প্রেন করেন, আমি সেই অদিভীর রামচক্রকে সর্ব্বদাই বন্দনা করি। যিনি জটাসমুহে পরিশাভিত ছইরাছিলেন এবং যাবতীয় করার বিনস্ক করিরাছেন, যিনি আপনার ভক্তজনের ভবভর গুঞ্জন করিরাছেন আমি সেই অম্বর শ্রীরামকে বন্দনা করি। যিনি সকলকে আপনার শ্বরণ জান করিরা সকলেরই উপর কুপা বিভরণ করেন, এবং ভববিদ্ধ অপাহরণ করেন, যিনি সমদশী, মঙ্গলময় ও নিরঞ্জন, আমি সেই অম্বিভীর রামচক্রকে ভক্তনা করি: ১ : ২ : ৩ :

স্প্রপঞ্চ কম্পিড নামধারী, নিরাকার নিরামর দেই অহর

ভবানিপোতরপকং হংশেষদেহক রিতং।
গুণাকরং রূপাকরং ভজেহ রামসদ্বয়ং॥ ৬॥
মহাবাক্যবাধকৈ বিবিরাজমানবাকৃপলৈ:।
পরব্রহ্মব্যাপকং ভজেহ রামসদ্বয়ং॥ ৭॥
শিবপ্রদং স্থপ্রদং ভবচ্ছিদং জমাপহং।
বিরাজমানদৈশিকং ভজেহ রামসদ্বয়ং॥ ৮॥
রামান্টকং পঠতি য়ং স্তকরং স্থপুণ্যং
ব্যাসেন ভাষিতমিদং শৃণু তে মন্ত্র্যাঃ।
বিদ্যাং প্রিয়ং বিপুলসৌখ্যমনস্তকীর্তিং
সম্পাপ্য দেহবিলয়ে লভতে চ মোক্ষং॥৯॥
ইতি রামান্টকং সম্পূর্ণং।

দীভানাথকে বন্দনা করে। নিশুপ্ঞ, নির্ফ্তিকল, নিশ্মন, নিরা-ময় চিদ্দেকরপী অন্ধুয় রাঘ্বকে সূত্ত । দ্ধনা করি। ভ্রাণ্ব ভরণিরূপী সর্ব্ধৃঞ্গাকর, করুণা-নিধি অদ্য সীভাপতিকে বন্দ । করি। ৪। ৫। ৬।

মহাবাক্যবোধক বাক্পদ বিরাজ্ঞয়ান পর্যত্রক্ষর্যাপক আছর দশরগাত্মজ্ঞকে বন্দনা করি। মঙ্গল ও পুষ্প্রাদ, ভবদ্ধমাপহারী, বিরাজ্ঞ্জনে বন্দনা করি। বে মন্ত্র্যা প্রাক্ষ্মান, অবর ঈর্যর প্রীরামকে বন্দনা করি। বে মন্ত্র্যা প্রকর ও পুপ্রা বাংলোজ এই রামান্ত্রক প্রবণ করে, সে বিদ্যা, প্রী, বিপুল সুখ্যতা এবং অনস্তকীর্ত্তি প্রাপ্ত হইরা দেহ বিলয় স্মরে মোক্ষণাভ করে। ৭।৮।৯।

हैकि बीद्रामाष्ट्रकः मन्मूर्गम्।

নারায়ণ স্তবঃ

যোগেন সিদ্ধবিবৃধৈঃ পরিভাব্যমানং
লক্ষ্যালয়ং তুলসিকাচিতভক্তভুক্ষন্।
প্রোত্তুক্রক্তনথরাক্স্লিপত্রচিত্রং
গঙ্গারসং হরিপদাস্কুজমাপ্রয়েহহন্॥ ১॥
গুক্তনানিপ্রহাটিতরাজহংশসিপ্তৎস্থাপুরযুতং,পদপদার্ভ্তম্।
পীতামরাঞ্লবিলোলচলৎপতাকং
স্বর্গিত্রক্রিক্রাল্যামি॥ ২॥
জ্ডের স্থাপ্রনানীলম্বিপ্রদ্ধে
শ্রোভাস্পান্ক্রম্মিবিদ্যাতিচুকুমধ্যে।

যোগসিদ্ধ পশুতগণ নকলে বাঁছার চিন্তা করিয়া থাকেন, বিনি লক্ষীর আশ্রের, বাঁগার ভক্তরপ ভ্রেরণ তুলদী হারা ব্যাপ্ত থাকে, বাঁছার দাতিশর, রক্তবর্ণ-নথযুক্ত অঙ্গুলিরপ প্রবারা গঙ্গাকল চিল্লিভ রছিয়াছে, উদৃশ ছরিপাদপদ্মের আশ্রের গ্রেছণ করিলামণ ১

বিষ্ণুর যে চরণ-কমলর ও প্রক্ষিত মণিসমূহ দারা ঘটিত ও রাজ্বংসের নাার শব্দারান শোভন মূপুরে সুসজ্জিত রহিরাছে, যাহা পীত বসনো চঞ্চল জঞ্চল দারা প্রচলিত পতাকার নাার শোভা পাইতছে, যাহাছে সুবর্ণমিশ্বিভ ত্রিবক বলর দীন্তি বিস্তার করিতছে, সেই চরণ-কমল-রস্ত সরণ করি। ২। যাহা গক্জেরগলদেশত্ব নীলকান্ত মণির সদৃশ, যাহার মধ্যত্বলে বিনতক্ষলনের জ্বকণবর্ণ-মণি-তুল্য চত্ত্বর পোতা বিস্তার করিতেছে, বাহার নিয়ে লহমান ঈবৎ

ভারক্তপাদতললম্বনশোভমানে
লোকেক্ষণোৎসবকরে চ হরেঃ স্মরামি ॥
তে জামুনী মথপতেভুজ্মুলসঙ্গ
রঙ্গোৎসবার্ততড়িছসনে বিচিত্রে।
চঞ্চৎপত্তমুখনির্গতসামগীতবিস্তারিতাত্মশসী চ হরেঃ স্মরামি ॥ ৪।
বিস্ফোঃ কটিং বিধিক্তান্তমনোজভূমিং
জীণাওকোষগণসঙ্গ কুল্মধ্যাম্।
নানাগুণপ্রকৃতিপীতবিচিত্রবন্ধাং
ধ্যায়েমিবদ্ধবসনাং থগপৃষ্ঠসংস্থাম্॥ ৫॥
গাতোদরং ভগবতস্ত্রিবলিপ্রকাশম্

রক্তবর্ণ-প্রদানল শোঁভা পাইতেছে, য়াহা ভক্তর্কোর লোচনের আমনসদায়ক, হরির সেই উজ্জাবর গরণ করি। ৩।

উৎসবার্থ ক্লকদেশে অর্পিত বিছাৎসমূল পীত্রসন প্তিত হওরাতে বাহা বিচিত্রবর্ণ ছটরছে, চঞ্চল গরুড়মুখে বিনির্বতি সাম্যান ধারা বাহার মাহাজ্য বিস্তার হইতেছে। বিফুর সেই জাত্মর ক্ষরণ করি। ৪।

যাহা বিধাতা যম ও কলপের স্বাধার অর্থাৎ যাহা সৃষ্টি ছিতি এ প্রালরের কারণ, ত্রিগুণা প্রাকৃতি পীত ও বিচিত্র বদন-রূপে বেথানে অবস্থান ক্রিতেছে, খীবগণের বীজের আগধার সংযুক্ত তৃক্ল যে স্থলে শোড়া পাইডেছে, সেই স্থগপ্টস্থিত বিষয়ুর ক্টিখেশ চিন্তা করি। ৫। কাবর্ত্তনাভিত্তিকস্বিধিজন্মপদ্মন্।
নাড়ীনদীগণরসোথসিতান্ত্রসিন্ধুং
ধ্যায়েহওকোষনিলয়ং তনুলোমরেশন্॥ ৬॥
বক্ষঃ প্রোধিতনয়াকুচকুস্কুমেন
ছারেণ কৌস্তুত্তমণিপ্রভয়াবিভাত্তম্
শ্রীবংশলক্ষম হরিচন্দনজ্পপ্রস্থনমালোচিতং ভগবতঃ স্বভগং স্মরামি ॥ ৭॥
বাছু স্থবেশসদনো বলয়াঙ্গদাদিশোভাস্পদো গুরিতদৈত্যবিনাশদকো।
তৌ দক্ষিণো ভগবতশ্চ গদাস্থনাভতেজাজিতো স্থললিতে মনসা স্মরামি॥ ৮॥
বামো ভুজো মুররিপোধ্ তপদ্মশন্থো
শ্রামো করীন্দকরবন্মণিভূষণাটো।।

যাগতে ত্রিবলি শোভা পাইংছে, যে হলে আবর্ত সদৃশ নাভিসরোবধে ব্রহার জন্মহানরপ পদা বিকসিত হইয়া বছিয়াছে, বে হানে নাড়ীরপে নদীগণের রদ দারা অন্তরপ সিন্ধু
উল্লিড হউভেছে, যাহা ব্রহ্মাণের আধারস্থরপ যাহাতে
স্বাবোমরাজি শোভা সম্পাদন করিভেছে, ভাগবানের ভাদৃশ
কীণ উদর অরণ করি। ৬।

লক্ষমীর কুচকুঙ্গুমহারা, হার হারা ও কেপিস্তভ্যনির প্রভা দারা বিরাজ্যমান জীবংস্চিক্তি ংরিচন্দনজ্ঞাত কুসুম্মালা দারা বিভূষিত প্রম রুম্বীয় তগ্বানের বক্ষঃতল অবণ করি।৭।

ধে বাত্ৰয়, সুবেশনিলয় ও বলর অসদ এভ্তি অলফার দারা শোন্তমান; যে বাত্দ্বর, তৃদ্ধান্ত দৈত্যগণকে বিনাশ করি-নাতে; যে বাত্ৰর, গলা ও স্থাশন চাক্রের তেজেশ দারণ সকলকে অভিতৰকরিতেতে; ভগবানের সেই সুস্লিত দক্ষিণ বাত্দ্যল মনো হারা স্থাপ করি। ৮।

মূরবিপুর বে বাম ভূজদর করিকরসদৃশ খ্রামবর্ণ ও শৠ-পদ্দ-বারী, বাছাতে মণিভূষণ শোভা পাইতেচে, যাছার রক্তবর্ণ র ক্রাঙ্গলিপ্রচয়চুষিতজ। মুমংধার্য
পদালয়াপ্রিয়করের ক্রচিরের স্মরামি॥ ৯॥
কণ্ঠং মৃণালমমলং মুগপক্ষজন্ত
লেথাত্ররেণ বনমালিকয়া নিবীতম্।
কিংবা বিমুক্তিবসমন্ত্রকসংফলন্ত
রন্তং চিরং ভগবতঃ স্কভগং স্মরামি॥ ১০॥
রক্তাম্মজং দশনহাসবিকাশরমাং
রক্তাধরে ভবরকোমলবাক্স্থাচ্যম্।
সন্মানসোদ্রবচলেকণপত্রচিত্রং
লোকাভিরামমমলঞ্জ হরেঃ স্মরামি॥ ১১
শ্রাজাজাবস্থগন্ধবিদং স্থনাশং
লপল্লবং স্থিতিলয়োদয়কর্ম্মাক্ষম্।
কামোৎসবঞ্চ ক্ষলাহাদয়প্রত্রকাশং
দংচিন্তয়ামি হরিবক্রবিলাসদক্ষম্॥ ১২॥

মন্দ লিসমূহ জ্বান স্প্রপ করিয়াছে, প্রমালয়ার প্রির নেই মনোহর কর্মুগণ স্বরণ করি। ৯। মুখপারের মৃগালস্ক্রার নির্মাল রেগাত্রয়্তুক বন্দালাবিভূষিত ও মুক্তাবস্থার এব স্থিতির মন্ত্রপারমণীয় ফলের রক্তাব্রম্ব পারম স্থলর ভগ্রা

কজপদ্ধ, রক্তাধ্রোষ্ঠ দারা কমনীর, হাভাগালে বশন্তিকাশ হওয়াতে পরম স্থানর, বচনত্তপ হাধাসম্পন্ন, মনীর্ প্রীতিকর, চঞ্চল-নয়নপত্রদারা চিত্রিত, লোকের মনোবঞ্জন হরির বদন-কমল স্থাব করি। ১।

যাছা ছইতে যন সদনের গান্ধ আজাল করিতে হর না,
বাহার সর্নিধানে উত্তম নার্কিন শোভা পাইতেছে, যাছা
ছইতে জগতের ক্ষি ছিতি প্রালয় ছব, যাছা হইতে নদনমছোৎসৰ প্রকাশ হইরা গাকে, যদশনে কমলার জনম
বিক্সিত হয়, ছবির মুখপক্ষে যাহা শোভমান হইতেছে,

কণো লসন্মকরক্ গুলগগুলোলো
নানাদিশাক্ষ নভসশ্চ বিকাসগৈহোঁ।
লোলালক প্রচয়চ্ম্বনকু কি ভাতো
লয়ো হরের্মাণিকিরীট ভটে স্মর্মান ॥ ১৩ ॥
ভালং বিচিত্রভিলকং প্রিয়চারুগন্ধগোরোচনারচন্যা ললনাক্ষিসথান্থ।
ভবৈদ্যকামনিকান্তকিরীট্যুইং
ধ্যায়েন্মনোনয়নহারক মীশ্বরস্থ ॥ ১৪ ॥
ভীবাস্থানে বিচকুরং কুটিলং নিরুদ্ধং
নানাস্থান্দির কু স্থান্দির বিজাং
নানাস্থান্দির কু স্থান্দির বিজাং
ধাায়েহন্ম বাহরু চিরং কু দ্যাক্রমধ্যে ॥ ১৫ ॥
মোনাক্রারং সোন্দ্র্যাপ্রকাশং
স্থান্দাং শক্রচাপেক মান্ম্য্।
লোকাভীতং পু গুরীকায়তাক্ষং

গণ্ডস্থলে চঞ্চল মকরাকার কুণ্ডল স্বাধা বাংগ বিভূষিত রচিয়াছে, যাহা হারা নামাদিক প্রেশালমণ্ডল প্রকাশিত হয়, বাহার অগ্রভাগ চঞ্চল অলক-মূহ স্পর্শে কিঞিৎ কুঞ্জিভের ন্যায় প্রভীয়মান হইতেছে, বাহা মণিময়-কিরীট-প্রান্তে সংলগ্ন বহিয়াছে, হারর ঈদৃণ কণ্ডয় মুরণ করি ১২৩।

যাহা বিচিত্র তিলকভার। বিভূষিত, প্রিয় ও মনোছর গল্প-বিশিষ্ট-গোরোচনার রচিত প্রাবলি হারা যাহা কামিনীর নয়ন-সাদৃশ্য ধারণ স্থিয়াছে, যাহা ব্লের একমাত্র আশ্রয়, হেখানে মণিনর রমণীয় কিরীট রহিরাছে, যাহা সকলেরই মন ও নয়ন হরণ করে, ঈশ্বর ছরির ভাদৃশ ললাট শ্রণ করি। ১৪

স্থান কর্তিক সমাণর পূর্বক নানা স্থান্তি কুস্থন ছার।
বন্ধ, কুটিল, দীর্ঘ, লক্ষীর মনোভব-নিবারণকারী, (বায়ু ছার।
দিবং) কম্পিত, কুফ্মেছের স্থায়, ক্টির, প্রীবাস্থদেবের
কেশপাল, দ্বংপদমধ্য চিন্তা করি। ১৫।

নাটা বাধার শারীর মোলর জার, বাধার (নয়নদম) চক্র ও চর্মানের ভার, ইশুধনুঃসদৃশ বাঁছার শোভন জান্গল, বাঁহার বিহুচেনকাশ্রমেইং ইপ্র্মি। ১৬॥
দীনং হীনং সেবয়া বেদবতা।
পাপৈস্তাপৈঃ পূরিতং মে শরীরম্।
লোভাক্রান্তং শোকমোহাধিবিদ্ধং
কুপাদৃষ্ট্যা পাহি মাং বাস্থদেব।॥১৭॥
যে ভক্তাদ্যাং ধ্যায়মানাং মনোজ্ঞাং
ব্যক্তিং বিষ্ণোঃ ষোড়শশ্লোকপুলৈঃ
স্তুদ্ধা মুক্তা ব্রহ্মদৌথ্যং প্রয়ান্তি॥১৮॥

পদ্মেরিতমিদং পুণ্যং শিবেন পরিভাষিতং। ধন্যং যশস্তমায়ুষ্যং স্বর্গং স্বস্ত্যয়নং পরং॥ ১৯॥ পঠন্ডি যে মহাভাগাস্তে মৃচ্যস্তেহ্ছসোহথিলাৎ। ধর্মার্থকামমোক্ষাণাং পরত্রেহ ফলপ্রদং॥ ২০॥

॥ हेकि नांत्रायम (छाज्यः मण्पूर्नः॥

নাসিক। দীর্ঘ, যাছার পল্লের নদৃশ স্থার্ঘ নয়ন্তর, যাঁচার (পীত) বদৰ বিদ্যুংসদৃশ, উদৃশ অপুর্ব্য-মূর্ত্তি বিষ্ণুর আশন এখণ করি। ১৬।

মামি মতি দীন ও বেদবিছিত-সেবাদিবিহীন। মানার শনীর পাপভাপে প্রপূরিত, লোভাক্রান্ত এবং শোক মোচ ও মানসী ব্যথা দারা অভিভূত। অতএব বাস্থদেব! কপাদ্ধি দারা আমাকে ক্লা কর। ১৭।

যে সকল বাজি ভজিপুর্মক বিষ্ণুর এই আদ্য মনোগর মূর্ত্তিধ্যান করিরা যোড়শ-শ্লোক-রূপ পূজা দারা তাব কবিরা নমন্তার ও পূজা করিবে, সেই সকল বিধিক্ষ বাজিনরা শুল ও মূক্ত হইরা একানন্দ ভোগা করিবে।১৮ 1

পদ্মা কৰ্জ্ক কৰিত শিবপ্ৰোক্ত এই (তব) অতীব পৰিত্ৰ ধন্য যশক্ষর আয়ুষ্য অর্থকলদায়ক ও পরম অন্তায়ন। ১৯।

এই স্তব্ প্রলোকে ধর্ম অর্থ কাম ও মোক রূপ কণপ্রদ। যে সকল মহাআরো এই স্তব পাঠ করিবেন, ওঁছোরা সমু-দার পাপ হইতে মুক্ত হইবেন। ২০।

हे ि नाताम (खाज मनाखः।